युग पुरुष
सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज
(जीवन चरित्र)



डॉ. दयाल "आशा"



पुरस्कार योग्यता का एक पैमाना भी है और प्रसिद्धि की ओर एक डग भी। परन्तु योग्यता व प्रसिद्धि दोनों पाकर भी न इतराने वाले कम ही होते हैं। उल्हासनगर के चाँदीबाई हिम्मतमल मनसुखाणी कॉलेज के प्राचार्य डॉ. दयाल 'आशा' भी इनमें एक हैं। डॉ. आशा को उनकी पुस्तक 'ॿारो अचो त ॻायूं' के लिए राष्ट्रीय शिक्षक अनुसंस्थान और प्रशिक्षण परिषद ने पुरस्कृत किया है।

संस्कृत व सिन्धी के उद्भट् विद्वान भारतीय संत परम्परा के ध्वज वाहक, प्रवचनकर्ता, लेखक, समाजसेवी डॉ. 'आशा' के कई परिचय हैं।

प्राचीन ऋषिकुल परम्परा में उनकी अदम्य निष्ठा उनके आचार-व्यवहार में अनुप्राणित है। वे जनता-जनार्दन परिषद के संस्थापक सदस्य तथा देश भर की दानदात्री संस्थाओं में प्रमुख पदों से जुड़े हैं।

महानगर ही नहीं, देश भर में फैले सिन्धी समाज के स्नेह और सम्मान के पात्र डॉ. दयाल 'आशा' निर्धन विद्यार्थियों, बेसहारा महिलाओं व अनाथ बच्चों की आशा हैं।

(नवभारत टाइम्स, २८ मार्च १९९३ से)

ॐ

श्री सत्नाम साक्षी

जय श्री कृष्ण जय श्री कृष्ण

युग पुरुष

सत्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज

जीवन चरित्र

लेखक

डॉ दयाल कोटूमल धामेजा ''आशा''

एम.ए,पी.एच्छ डी, 'डी.लिट्ट'

पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष सिन्धी विभाग,

चाँदीबाई हिम्मथमल मन्सुखाणी कालेज, सिन्धूनगर-४२१००३

डिस्मबर २००७ मूल्य ५० रुपये

प्रकाशकः

स्वामी देवप्रकाशजी महाराज

स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम,

स्वामी शान्तिप्रकाश मार्ग, सिन्धुनगर-४२१००५

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

एक पुष्प

बचपन में ही पूज्य माता पारीबाई, माता सदोरीबाई, पिताश्री कोटूमल सोभराज धामेजा, पिताश्री विशनदास सोभराज धामेजा, पूज्य भक्त टहिलियाराम के धार्मिक सस्कारों की फुलवाड़ी में मैं पनपा। दस वर्ष की आयु में, देश विभाजन के कारण सिंधु भूमि को छोड़कर भव्य भारत भूमि में आया। विद्यार्थी जीवन में पूज्य सत्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाशजी महाराज, पूज्य स्वामी लीलाशाहजी महाराज, श्री हूंदराज दुखायल, श्री परसराम 'ज़िया' का संग मिला। तत्पश्चात् दादा साधु टी. एल. वासवाणी एवं दादा जशन वासवाणी जी का भी सान्निध्य प्राप्त हुआ। सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का भी आर्शीवाद मिला।

वंदनीया देवी मां सरस्वती , पूज्य सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज, पूज्य दादा जशन वासवाणी की दास पर असीम कृपा रही है। उनके उपकारों को भूल नहीं सकता। मेरे मित्र श्री मोटूमल खेराजमल चांडवाणी ने मुझे पूज्य सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी के जीवन चरित्र लिखने के लिए प्रोत्साहित किया और प्रकाशन की भी व्यवस्था की।

मेरा सौभाग्य था कि मैं पूज्य सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के सान्निध्य में रहा, उनकी सेवा करने का और उनके अमृतवचन श्रवण करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। उनकी अहैतुकी कृपा से ही मैंने सत्गुरु महाराज का जीवन चरित्र हिन्दी भाषा में लिखा है, जिसका प्रकाशन आज हो रहा है। मुझे आशा है कि हज़ारों प्रेमी पाठक यह जीवन चरित्र पढ़कर लाभान्वित होगें।

डॉ. सी.एल.प्रभात जी की भी दास पर कृपा दृष्टि रही। प्रथम संस्करण १९९४ में प्रकाशित हुआ और शीघ्र ही बिक गई। प्रेमियों की मांग पर इस ग्रंथ का दूसरा संस्करण भाई मनोहर रामचन्द रामचन्दाणी के सहयोग से पूज्य स्वामी देवप्रकाशजी महाराज प्रकाशित कर रहे हैं। श्री ओमप्रकाश लालवाणी ने इस ग्रंथ के प्रूफ पढ़े मैं उनका अत्यंत्र आभारी हूँ।

दयाल आशा

८ अगस्त १९९८

स्वामी शान्तिप्रकाश निवास

निज धाम मार्ग, सिंधुनगर ४२१००५

ॐ

श्री सत्नाम साक्षी

दो सुमन

"सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज का जीवन चरित्र" हिन्दी में लिखकर अपने को कृतार्थ करने वाले प्यारे दयाल 'आशा' हैं। बहुत दिनों से जिज्ञासुओं की अभिलाषा थी कि पूज्य सत्गुरु महाराज जी का जीवन चरित्र हिन्दी भाषा में प्रकाशित हो। प्रभु परमात्मा की कृपा से उस कार्य का श्रेय डा. दयाल 'आशा' को मिला। मुझे निश्चय है कि भक्तगण इस जीवन चरित्र को पढ़कर, अपना जीवन भी उसी तरह बनाकर मनुष्य जीवन सार्थक करेंगे। सत्गुरु महाराज के जीवन में विशेषताएं थी, जैसे अपने सत्गुरु पूज्य स्वामी टेऊंराम जी महाराज के पावन श्रीचरणों में निष्ठा, गुरुमंत्र निष्ठा, गुरुधाम (श्री अमरापुर) निष्ठा, गुरुलीला निष्ठा। गुरु को भगवान जैसा महत्व देना। जैसा कहना वैसा करना तो कोई पूज्य स्वामीजी से सीखे। संतों की सेवा में सभी कुछ समर्पित करना। समाज सेवा में भी पूज्य सत्गुरु महाराज का बड़ा योगदान रहा। पूज्य सत्गुरु महाराज की बहुमुखी प्रतिभा के आगे सभी नतमस्तक हो जाते थे। वे प्रेम के उमड़ते हुए सागर थे। वे हर दिल में प्रभु प्रेम जगाते थे! उनके गुणों का क्या वर्णन करें! उन्होंने नाम के अनुरूप काम किये। सम्पूर्ण विश्व को शान्ति का संदेश दिया और आध्यात्मिक प्रकाश द्वारा मार्गदर्शन किया एवं अभी भी कर रहे हैं और आगे भी करते रहेंगे। सत्गुरु महाराज जैसी विभूति न भूतो न भविष्यति।

प्यारे दयाल "आशा" ने यहां वहां से सद्गुरु महाराज जी का जीवन वृतान्त, प्रयत्न करके एकत्रित कर एक सुन्दर जीवन-चरित्र के रूप में लिखकर अपने को धन्य किया है। सत्गुरु महाराजजी का उन पर सदैव आशीर्वाद रहेगा।

शेष भगवद् कृपा

कृपाकांक्षी

स्वामी देवप्रकाश

-आरती-

श्री १०८ सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज की

ॐ जय गुरु शान्ति प्रकाश, स्वामी जय गुरु शान्ति प्रकाश
प्रेम के सागर सत्गुरु मेरे, मन में करो निवास ॐ जय

१. मात पिता थे धर्म की मूर्ति, उपजा पूत सुपूत,
बचपन में ही मन में जागी, कृष्ण दर्श की प्यास, ॐ जय

२. टेऊँराम के श्री चरणों में, जीवन सौंप दिया,
उनकी दया से परम पद पाया, अद्भुत किया विकास, ॐ जय

३. वेद वाणी और गुरु वाणी का, पाया ज्ञान भण्डार,
प्रेम प्रकाश मण्डल में चमके, सूरज सम सुखरास, ॐ जय

४. देश विदेश में भ्रमण करके, सबको मोह लिया,
सत्नाम साक्षी मंत्र जपाकर, काटी यम की फांस, ॐ जय

५. देश धर्म की रक्षा के हित, सब कुछ त्याग दिया,
दीन जनों की सेवा में ही, पाया परम हुलास, ॐ जय

६. एकादशी और गौ सेवा का, खूब किया प्रचार,
कण कण में श्री कृष्ण को देखा, किया भेद भ्रम नाश, ॐ जय

७. जो जो दर्श करे सत्गुर का, मन में रख विश्वास,
आशा उसकी पूर्ण होवे, कारज होवन रास, ॐ जय

८. पूर्ण श्रद्धा से जो प्रेमी, आरती यह गावे,
सुख सम्पति और सुमति पावे, अमरापुर हो वास, ॐ जय ।

पुष्पांजलि

दादा जशन वासवाणी

परमात्मा अपने प्रतिनिधि संत प्रत्येक देश व जाति में भेजता है। हजारों वर्ष पूर्व भी सिन्ध में संत महात्मा रहते थे। सिन्ध के ऐतिहासिक नगर लाड़काना जिला के डोकरी स्टेशन के समीप जब मोहन जो दड़ो की ख़ुदाई की गई तो वहां से कुछ मोहरें (मुद्रा) प्राप्त हुईं। एक मोहर पर एक योगी की मूर्ति थी, जो ध्यान मुद्रा में बैठा था। इस से प्रमाणित होता है कि पांच हजार वर्ष पूर्व भी सिन्ध प्रदेश में योगी, संत-महात्मा रहते थे।

पूज्य दादा साधु टी.एल. वासवाणी समय-समय पर हमें सिन्ध के संतों दरवेशों के सम्बन्ध में बताते थे। संत वह है जो एकांत व शान्ति में बैठकर आत्मचिन्तन कर साक्षी रूप को पहचानकर, सब प्राणियों में प्रभु का दर्शन कर दुखी लोंगों की सेवा करे। दुनिया बहुत दुखी है। "नानक दुखिया सब संसार" संत संसार में आकर दीन दुखियों, पशु पक्षियों की सेवा करते हैं। ऐसे महापुरुषों में से हमारे संत स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज स्तुति योग्य हैं। उन्होंने आत्म साक्षात्कार कर संसार को प्रेम व शान्ति का प्रकाश दिया।

पूज्य स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज ने लाखों लोगों का मार्ग दर्शन किया। उनके जीवन में स्मरण, सेवा, सत्य, सादगी, स्नेह एवं सहानुभूति की सुगंधि थी। उनके रोम-रोम में पीड़ितों के प्रति हमदर्दी थी।

'वैष्णव जन तो तेणे कहिये, जो पीड़ पराई जाणे रे'

सच्चा संत वह है जो पर पीड़ा को अपनी पीड़ा समझकर उसे दूर करने का प्रयास करता है। कहीं भी यदि प्राकृतिक विपदा आती थी तो स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज न केवल सेवकों को, पीड़ितों की सहायता के लिए वहां भेजते थे किन्तु वे स्वयं भी वहां जाकर पीड़ितों को स्नेह व सहानुभूति देते थे। उनके मन में पशु-पक्षियों के प्रति भी सहानुभूति थी। वे यत्र तंत्र मांस भक्षण के विरुद्ध प्रचार करते थे। वे महान विद्वान थे, भगवान श्रीकृष्ण के अनन्य उपासक

थे, भक्त थे, ज्ञानवान थे साथ ही विनम्रता की मूर्ति थे । वे सिन्ध में महान संत परम पूज्य स्वामी टेऊँरामजी महाराज की गादी पर विराजमान होते हुए भी स्वयं को दास कहते थे । उन्होंने अपनी अमृतवाणी में भी अपने सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज के नाम का प्रयोग किया है । पूज्य स्वामीजी समाज सुधारक भी थे तो आध्यात्मिक मार्गदर्शक भी थे ।

संतों महात्माओं के जीवन चरित्र एवं शिक्षाएं अमूल्य निधि हैं । डॉ. दयाल 'आशा' ने अपने गुरुदेव स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का जीवन चरित्र हिन्दी भाषा में लिखकर उत्तम कार्य किया है । इस सुन्दर पुस्तक में न केवल पूज्य स्वामीजी का जीवन विवरण है किन्तु उनके उपदेश एवं शिक्षाएं भी संकलित हैं । इस जीवन चरित्र के पढ़ने से अशान्त लोगों को शान्ति की प्राप्ति होगी, जीवन में परिवर्तन होगा। पाठकों के मन में सद्गुणों का समावेश होगा ।

डा. दयाल 'आशा' विद्वान हैं, प्रवीण है, उसे कई उपाधियां प्राप्त हुई हैं, किन्तु वह कितना न विनम्र है ! वह कितना न कार्य करता है ! एक बड़े कालेज का प्राचार्य है, दीन दुखियों, वृद्धों एवं पशु पक्षियों की सेवा करता रहता है सुंदर पुस्तकें भी लिखता है । उसे कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, शान्ति का अभ्यास करता है, एकांत में बैठकर प्रभु के प्रेम में आंसू बहाता है, प्रेम से पुकारता है, गीत गाता है । ये गीत उसके अन्तःस्थल से निकलते हैं, इसलिए हमारे मन को छूते हैं । सदैव प्यारे दयाल 'आशा' पर परमात्मा, प्यारे दादा साधु वासवाणी एवं पूज्य स्वामी शान्तिप्रकाश महाराजजी का आशीर्वाद बना रहे जिससे वह इससे भी अधिक समाज व साहित्य की सेवा करता रहे ।

मुझे आशा ही नहीं अपितु विश्वास है कि पूज्य स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराजजी का यह जीवन चरित्र पढ़ने से कई प्रेमियों को नई दिशा मिलेगी और वे लाभान्वित होंगे ।



परम पूज्यनीय सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज



परम पूज्यीय सद्गुरु स्वामी सच्चिदानन्दजी महाराज के साथ
परम पूज्यीय सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज



परम पूज्यनीय स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज
अपने पूज्य पिताश्री आसदामल पहूजा के साथ



परम पूज्यनीय सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज



स्वामी देव प्रकाश जी महाराज

पूज्य सत्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश महाराज

डा. दयाल 'आशा'

सत्गुरु मेरे दीन दयालु, राम की राह बताते थे ।
सत्नाम साक्षी मंत्र देकर, नाम का जाप जपाते थे ॥

स्वामी शान्ति प्रकाश हमारे, संत सच्चे सैलानी थे ।
ब्रह्म नेष्ठी, ब्रह्म श्रोत्रिय, ध्यानी ब्रह्म विज्ञानी थे ॥

स्वामी टेऊंराम ने इनमें, ज्ञान की ज्योति जगाई थी ।
स्वामी सर्वानंद की सूरत, उनमें ही तो समाई थी ॥

प्रेम प्रकाश मंडल के चन्द्रमा, शीतलता आनंद दिया ।
दर्शन द्वारा स्वामीजी ने, तन मन का दुख दूर किया ॥

जोगी जादूगर थे स्वामी, प्रेम की बीन बजाई थी ।
अमृत वचनों रूपी गंगा, जिसने मुख से बहाई थी ॥

दीन दुखियों की सेवा की, वे मज़लूमों के हामी थे ।
आत्मिक रहस्य बताया उन्होंने सत्गुर अंतर्यामी थे ॥

'जय श्रीकृष्ण' 'सत्नाम साक्षी', श्रेष्ठ मंत्र वे जपते थे ।
ऊठत बैठत सोवत जागत, नाम प्रभु का रटते थे ॥

प्रेम दया के सागर स्वामी, मेरे जीवन के वे सहारे थे ।
परोपकारी परम प्यारे, मेरी आँखों के वे तारे थे ॥

स्वयं स्वामी कष्ट झेलकर, दुखियों के दुख हरते थे ।
भूकम्प, सूखा, बाढ़ के पीड़ित, उनकी सेवा करते थे ॥

लोगों का हित करने के लिए, अपना सुख कुर्बान किया।
जनता में भगवान समझकर, सबको सुख प्रदान किया ॥

कर्मयोगी थे स्वामीजी, कर्म का पाठ पढ़ाते थे ।
अपनी मीठी वाणी द्वारा, स्वामी हमें जगाते थे ॥

ज्ञान के थे गुलज़ार स्वामी, ज्ञान की सुरभि फैला के गये।
मधुर मधुर मुस्कान थी उनकी, मंत्र मुग्ध बनाके गये ॥

मदिरा मांस का विरोध किया, जीव दया की जगाई ज्योति।
रग रग में थी करुणा उनके, करुणा से थे ओतप्रोत॥

गऊशाला और नारी शाला, वृद्धाश्रम निर्माण किया ।
उपचार किया बीमारों का, व विधवाओं को आश्रय दिया॥

मार्ग दर्शक लाखों के, स्वामी बड़े सुधारक थे ।
देश भक्त वे ईश भक्त, संत कवि और दार्शनिक थे ॥

कृष्ण की थे मूर्ति स्वामी, प्रेम की मुरली बजाते थे ।
गोपी ग्वाल थे लाखों प्रेमी, उनसे रास रचाते थे ॥

'आशा' जीवन भर आभारी, कभी न उनको भूलेगा।
कितना है उपकार उन्हों का, उनके झूले झूलेगा ॥

ॐ

श्री सत्नाम साक्षी जय श्री कृष्ण

युग पुरुष सतगुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जीवन चरित्र

बंदऊं गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु वचन रविकर निकर ।।

सिन्ध की पावन भूमि जहां ऋषि मुनियों एवं संतों महात्माओं ने आत्मज्ञान एवं वेदान्त का संदेश दिया, सूफी दरवेशों ने प्रेम का पैगाम दिया, जहां सिन्धु सभ्यता का श्री गणेश हुआ, जिस सिंधु नदी के तट पर वेदों की रचना हुई, उस पुण्य भूमि पर ऐसी विभूतियों ने जन्म लिया जिनकी कार्य सुरभि ने न केवल सिन्ध-हिन्द को सुरभित किया किन्तु विश्व को सुगंधित किया।

बीसवीं शती की ऐसी महान विभूतियों में से प्रेम प्रकाश मण्डलाचार्य सतगुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज एवं सतगुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज और उनके धर्मपीठ के अधिकारी सतगुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने अपने आध्यात्मिक उपदेशों से विश्व का मार्गदर्शन किया। महान कर्मयोगी संत सतगुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज ने हजारों प्यासियों को नाम का अमृत पिलाकर तृप्त किया।

स्वामी शान्ति प्रकाशजी महाराज महान ज्ञानवान एवं विद्वान थे। वे प्रेम व करुणा के सागर और विनम्रता की मूर्ति थे पूज्य स्वामीजी न केवल मानव मात्र को किन्तु पशु पक्षियों को भी प्यार करते थे। प्रत्येक प्रेमी ऐसा अनुभव करता था कि स्वामीजी उसे ही अधिक प्यार करते थे। जैसे सूर्य का प्रकाश एवं चन्द्रमा की चांदनी सारी सृष्टि के लिए है, गंगा जल सभी प्राणियों की प्यास पूरी करता है उसी प्रकार स्वामीजी का स्नेह सबके लिए वैसा ही था। दूसरों का दुःख देखकर स्वामीजी का मन पिघल जाता था। भक्त नरसी मेहता कहते हैं:

वैष्णव जन तो तेणे कहिये, जो पीड़ पराई जाणे रे।

सच्चा संत वही है जो परपीड़ा को अपनी पीड़ा समझकर उसे दूर करने का प्रयास करता है । स्वामीजी भी सदैव दीन-दुखियों का दु:ख दूर करने के लिए तत्पर रहते थे । नाम स्मरण के साथ साथ वे अनाथों, अपंगों, असहायों की न केवल स्वयं सेवा करते थे किन्तु प्रेमियों को भी सेवा करने के लिए प्रेरित करते थे । वे महान कर्मयोगी संत, ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मध्यानी, ब्रह्मनिष्ठ, ब्रह्मश्रोत्र भी थे तो समाज सुधारक, समाज सेवक भी थे । वे आध्यात्मिक मार्गदर्शक भी थे तो दार्शनिक भी थे, संत कवि भी थे तो उपदेशक भी थे । स्वामी युगदृष्टा भी थे तो युगसृष्टा भी थे । शायर इकबाल का शेर है:

हजारों साल नरगिस अपनी बे नूरी पे रोती है ।
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा

पूजनीय स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज का जन्म सन् १९०७ ई. नारियल-पूर्णिमा रक्षाबन्धन के पवित्र दिन सिन्ध के सक्खर जिले के 'चक्क गांव' में श्री आसूदोमल पहूजा के घर में हुआ । श्री आसूदोमल भक्तजन एवं संतोषी संत-सेवी थे । वे सब्जी एवं अनाज की दलाली का व्यवसाय करते थे । स्वामीजी के जन्म का नाम 'श्री खेराज' था । उनकी माता जी का नाम जुगलबाई था । जुगलबाई भी प्रभु की प्रेमिन थी । स्वामी जी को बाल्यावस्था में उनकी माता संतों व भक्तों के जीवन चरित्र सुनाती थी । प्रभात को जब वह चक्की चलाती थी तो गुरुवाणी एवं संतों की वाणी का उच्चारण करती थी । माता पिता के धार्मिक संस्कारों का बालक स्वामीजी पर बड़ा प्रभाव पड़ा। बालक स्वामीजी सबेरे उठकर पहले प्रार्थना करते थे, तत्पश्चात् नाश्ता खाकर विद्यालय जाते थे । वे अन्य बालकों से निराले थे । उनकी स्मरण शक्ति तीक्ष्ण थी । वे श्री सीतलदास वनवाड़ी, श्री वीरूमल, श्री जीअलदास व महमद सचल अध्यापकों के पास पढ़े । हिन्दू व मुस्लिम अध्यापक उन्हें प्यार करते थे । ११ वर्ष की आयु में जब वे चौथी कक्षा में पढ़ते थे तब अचानक चेचक के कारण उन्होंने बाह्य चक्षु गंवाए । माता पिता बालक की ऐसी स्थिति से बहुत चिन्तित हुए । उन्होंने बालक श्री खेराज का इलाज करवाया किन्तु उनके प्रयास विफल गये। स्वामीजी के पिता श्री आसूदोमल ने कोई और उपाय

न देखकर बालक स्वामीजी को शाहपुर थल्हे वाले संत स्वामी हरिचूराम साहब के पास ले गये । संत हरिचूराम साहब सिद्ध पुरुष थे । पूज्य स्वामीजी के पिताश्री को आशा थी कि संत हरिचूराम की अनुकम्पा से बालक स्वामीजी को नई रोशनी मिल जायेगी ।

बालक स्वामीजी, सांई हरिचराम साहब, सांई धर्मूराम साहब एवं शाहपुर थल्हे पर आये हुए अतिथियों की सेवा करते रहे । वे वहां बर्तन भी मांजते, तो पानी भी भरते, पंखा भी झुलाते और सेवा कार्य भी करते रहते थे । संत हरिचूराम साहब उनकी सेवा से अत्यन्त प्रसन्न होते थे । प्रज्ञा चक्षु होते हुए बालक स्वामीजी कितनी न निष्ठा के साथ सेवा करते थे ।

एक दिन स्वामीजी के पिता श्री आसूदोमल ने संत हरिचूराम साहब से प्रार्थना करते हुए कहा 'आप दयालु हैं, शक्तिवान हैं, कृपया बालक को प्रकाश प्रदान करें ।' संत हरिचूराम साहब ने उत्तर दिया 'इस बालक ने बाह्य चक्षु गंवाए हैं, इसकी चिन्ता मत करो, इसकी आंतरिक आंखें खुल जायेगीं, यह बालक सिन्ध की दक्षिण दिशा की ओर जायेगा और संत होगा तुम्हें और पुत्र संतान होगी ।' संत हरिचूराम साहब का यह उत्तर सुनकर श्री आसूदोमल को संतोष हुआ । कुछ वर्षों बाद संत हरिचूराम साहब की भविष्यवाणी साकार हुई । श्री आसूदोमल बालक स्वामीजी को चक्क (गांव) ले गये । कुछ वर्षों बाद उन्हें संतान हुई, जिसका नाम भोजराज रखा गया । तत्पश्चात् दूसरा पुत्र भी हुआ जिसका नाम चांडूमल रखा गया ।

चक्क में युवा स्वामीजी एवं उनके साथी श्री उद्धवदास मिलकर भजन गाते थे । विक्रम सं. १९७८ के कार्तिक मास में सिन्ध की दक्षिण दिशा से प्रेम प्रकाश मण्डलाचार्य ब्रह्मनिष्ठ, ब्रह्मश्रोत्र, ब्रह्मज्ञानी सत्गुरु स्वामी श्री टेऊंरामजी महाराज अपनी मंडली के साथ चक्क में पधारे । स्वामीजी के पिताश्री आसूदोमल पहूजा, श्री जशनमल पहूजा एवं अन्य प्रेमियों ने सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज का स्वागत किया। इसी शुभ अवसर पर स्वामीजी ने भजन गाया:

सत्गुर साहब संत मिलाया, जागया भाग हमारा जी
१- नित अवतारी पर उपकारी, कर्म भ्रम की काटत जारी,
लेकर ज्ञान कटारा जी ।
२- द्वैत बिना जे संत विदेही, प्रकट नाम सुणावहं सेई,
हरत अज्ञान अंधारा जी ।
३- जो घर बिछड़ा सो घर पाया, हरि संतों को शीष निवाया,
भवसागर जिन तारा जी ।
४- कहे टेऊँ पुण्य पूर्व फलिया, संत सजन मन मेली मिलया,
वर्षे अमृत धारा जी ।

सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने सात दिन चक्क में ज्ञान, प्रेम भक्ति की सरिता प्रवाहित की । वे जब इक्तारे पर भगवद् भजन गाते थे तो श्रोतागण मंत्र मुग्ध हो जाते थे । बालक स्वामीजी भी नियम से उनके सत्संग में आकर ध्यान से उनका प्रवचन सुनते थे । वे उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व से अत्यन्त प्रभावित हुए । उन्होंने अपने साथी श्री उद्धवदास के साथ १२ तारीख कार्तिक को सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज से गुरुमन्त्र की दीक्षा ली । उनके भाग्योदय हुए कि उन्हें महान तेजस्वी संत स्वामी टेऊँरामजी महाराज सत्गुरु रूप में प्राप्त हुए ।

तीर्थ नहाए एक फल संत मिले फल चार ।
गुरु मिले अनेक फल कह कबीर वीचार ।।

बालक स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज से अनुरोध किया कि अपने दास पर दया दृष्टि कर नाम दान दिया है अब मैं यहां चक्क में नहीं रहूंगा । अब आप मुझे अपने चरण कमलों में स्वीकार करें । मैं सदैव आपकी सेवा में ही रहना चाहता हूं, इसलिए आप मुझे अपने साथ ले चलें । स्वामी टेऊँरामजी महाराज बालक स्वामीजी की ऐसी दृढ़ भावना देखकर उन्हें अपनी मंडली के साथ ले गये । श्री उद्धवदास भी उनके साथ थे । स्वामी टेऊँरामजी महाराज विभिन्न स्थानों पर सत्संग वर्खा कर अमरापुर स्थान टंडे आदम में लौट आये । उसी समय स्वामी टेऊँरामजी महाराज के गुरु संत आसूरामजी भी वहां आये हुए थे । स्वामीजी ने संत आसूराम जी को दंडवत

प्रणाम किया। संत स्वामी आसूरामजी ने उन्हें सस्नेह गले लगाया।

स्वामीजी अमरापुर स्थान पर सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज, स्वामी ग्वालानन्द महाराज, स्वामी गुरुमुखदास महाराज, स्वामी सर्वानन्द महाराज एवं अन्य सन्तों की सेवा में तत्पर रहते थे। वे कभी बर्तन मांजते तो कभी पंखा झुलाते थे। प्रज्ञा चक्षु होते हुए भी श्रद्धा व उत्साह के साथ सेवा में संलग्न रहते और साथ गुरु मंत्र का अभ्यास भी करते रहते थे। अमरापुर स्थान पर नियमित सत्संग होता था। स्वामीजी सत्संग के आरंभ में भजन गाते थे। उनकी विनम्रता एवं सेवा भावना देखकर सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज प्रसन्न होते थे, इसी कारण शीघ्र ही वे गुरु की कृपा एवं स्नेह के पात्र बन गये।

संत सांई हरिचूराम साहब वि. सं. १८८० सन् १९२३ संसार की यात्रा समाप्त कर ब्रह्मलीन हुए। यह समाचार सुनकर स्वामीजी सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज से आज्ञा लेकर शाँहपुर थल्हे पर आये। वहां उन्होंने सांई हरिचूराम साहब के स्थूल शरीर को प्रणाम किया और उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए वैराग्य वाणी गाई। १४ दिन के बाद वे फिर अमरापुर स्थान पर लौट गये।

कराची में माता अतुर बाई ने स्वामीजी को प्रज्ञा चक्षुओं की लिपि सिखायी, किन्तु स्वामीजी का मन उसमें नहीं लगा। सत्गुरु स्वामी टेंऊँराम महाराज की आज्ञानुसार उन्होंने हैदराबाद सिन्ध के ऋषि दयाराम गिदूमल संस्कृत पाठशाला में संस्कृत भाषा का अध्ययन आरंभ किया। बचपन से ही स्वामीजी में ज्ञान ग्रहण करने की चाहना थी। जब वे हैदराबाद में थे, तब यदि कहीं भी किसी संत महात्मा का सत्संग होता था स्वामीजी वहां जाकर ज्ञानार्जन करते थे। साधु टी.एल. वासवाणी के प्रवचन श्रवण करने का अवसर भी उन्हें वहीं मिला उन्होंने धार्मिक ग्रन्थों का भी अनुशीलन किया। सत् शास्त्रों के अधिक अभ्यास के लिये वे हरिद्वार गये जहां उन्होंने श्री चेतनदेव की कुटिया में स्वामी शंकरानन्द भारती एवं महंत श्री गुरुमुखदास जी से शिक्षा ग्रहण की। वृत्तिप्रभाकर, विचारसागर, वृतिरत्नावली, तत्वुसंधान एवं अन्य तत्वज्ञान सम्बन्धी ग्रन्थों का अभ्यास करते हुए, स्वामीजी के मन में यदि कोई शंका उत्पन्न होती थी, तो वे गुरुजनों से उस शंका के समाधान के

लिये नम्र निवेदन करते थे। स्वामी शंकरानन्द महाराज सहर्ष उनकी शंकाओं का समाधान करते थे। स्वामीजी के साथ पं. शीतलदास, स्वामी क्षमयानन्दजी भी थे। स्वामी शंकरानन्द महाराज, स्वामीजी की स्मरण शक्ति एवं बुद्धिमता देखकर उन्हें उत्साहित करते रहते थे। स्वामी शंकरानन्दजी जो कुछ उन्हें पढ़ाते थे, स्वामीजी उसे कंठस्थ कर लेते थे। सत् शास्त्रों के अध्ययन एवं अनुशीलन के साथ साथ स्वामीजी शेष समय नाम स्मरण में मग्न रहते थे।

स्वामीजी श्री गुरु ग्रन्थ साहब के अध्ययन एवं आंतरिक अर्थ की उपलब्धि के लिये अमृतसर में गये। वहां उन्होंने कर्मसिंह का कटरा स्थान पर ज्ञानी हमीरसिंह के मार्गदर्शन में 'श्री गुरु ग्रन्थ साहब' 'श्री सदमे ग्रन्थ' एवं 'भाई गरुदास की वार' का गहन अध्ययन किया। जब हमीरसिंह उपर्युक्त ग्रन्थों की वाणी की व्याख्या करते थे तो स्वामीजी श्रवण करते ही कंठस्थ कर लेते थे। स्वामीजी को श्री गुरु ग्रन्थ साहब की अधिकतर वाणी कंठस्थ थी। दो वर्षों तक स्वामीजी अमृतसर की पावन भूमि पर रहे। प्रज्ञा चक्षु होते हुए भी जितना अध्ययन स्वामी जी ने किया उतना चक्षु वाले भी नहीं कर सकते। उनका जीवन एक अभ्यासी का जीवन रहा। इतने ज्ञान के बावजूद भी यदि उन्हें सफर करते हुए या यूंही कहीं भी समय मिल जाता था तो वे शास्त्र एवं नई नई पुस्तकें श्रवण करने में समय सफल करते थे।

हरिद्वार व अमृतसर में सत् शास्त्रों का अभ्यास कर वे सिन्ध में पधारे। वे पहले शाहपुर थल्हे पर दंडवत प्रणाम करने के लिये गये। वहां संत धर्मूराम साहब, सांई हरिचूराम साहब के धर्मपीठ के अधिकारी थे, किन्तु वे मस्त दरवेश थे। वे अज्ञात लोक की वाणी बोलते थे। उन्हें सदैव नाम की खुमारी चढ़ी रहती थी। स्वामीजी को संत सांई धर्मूराम साहब की मंजिल की जानकारी थी। स्वामीजी जैसे ही उस स्थान पर आये तब उन्होंने मन में विचार किया कि उन्होंने बीड़ी पीने का परित्याग किया है यदि संत धर्मूराम साहब ने उन्हें हुक्का पीने के लिये कहा तो उनके लिये नहीं करना भी बहुत कठिन होगा। स्वामीजी ने जैसे ही संत धर्मूराम साहब को प्रणाम किया तब संत धर्मूराम साहब ने प्रेमियों से कहा कि भाई खेराज आया है उसे हुक्का दो, फिर स्वयं ही उन्होंने स्वामी जी से कहा तुम हुक्का मत पीना

पढ़े लिखे हुक्का नहीं पीते । यह सुनकर स्वामीजी विस्मय में पड़ गये कि संत धर्मूराम ने उनके सिद्धान्त की कैसे रक्षा की । संत घट घट की जानते हैं । स्वामीजी दो दिन वहां ठहरे तत्पश्चात् वे अमरापुर स्थान आये और आकर सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज को दंडवत प्रणाम किया, और अन्य संतों को भी चरण वंदना की । स्वामीजी सत्गुरु स्वामी टेऊंराम महाराज एवं अन्य संतों की सेवा एवं स्मरण में समय सफल करने लगे । सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज अन्य संतों के साथ स्वामीजी को भी अपने साथ नाम प्रचार के लिये विभिन्न नगरों में ले जाते थे । स्वामीजी ने स्वामी ग्वालानन्द महाराज, स्वामी गुरुमुखदास, स्वामी सर्वानन्द महाराज, स्वामी बसन्तराम एवं प्रेम प्रकाश मण्डल के अन्य संतों से ज्ञान ग्रहण किया । सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज की भांति स्वामीजी भी भजनों की रचना कर सत्संग के समय गाते थे । वे अपने भजनों में अपने नाम का प्रयोग न कर सत्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज के नाम का प्रयोग करते थे । इनकी विनम्रता एवं सेवा भावना देखकर सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज प्रसन्न होते थे । गुरु की कृपा से स्वामीजी भक्ति के रंग में लाल होते गये ।

सन् १९२८ ई. में संत सांई धर्मूराम साहब ब्रह्मलीन हुए । यह समाचार सुनकर स्वामीजी शाहपुर थल्हे पर आये । स्वामीजी के मन में सांई धर्मूराम साहब के प्रति अगाध श्रद्धा थी । उन्होंने वैराग्य वाणी गाते हुए, संत धर्मूराम को भाव भीनी श्रद्धाजंलि अर्पित की ।

सन् १९३३ ई. में चक्क, रुक और लाड़काणे में बाढ़ आई । स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिये स्वामीजी, संत उद्धवदास एवं संत भजनदास को भेजा वहां स्वामीजी ने बाढ़ग्रस्त लोगों की तन, मन, धन से सेवा की ।

सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज के सान्निध्य में स्वामीजी भगवद् भक्ति के मार्ग में अग्रसर हुए । गुरु की अनुकम्पा से उनके जीवन में ज्ञान भक्ति एवं कर्म की ज्योति प्रज्वलित हुई । सन् १९३७ ई. में स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने प्रेम प्रकाश मण्डल के संतों के साथ स्वामीजी को दीक्षा देकर उनका नाम 'शान्तिप्रकाश' रखा । स्वामी टेऊंराम जी महाराज ने उनका यथा योग्य नाम रखा । जैसा उनका

नाम था वैसे ही उनके कार्य थे । पूज्य स्वामीजी ने न केवल भारत किन्तु विश्व को अपने ज्ञान द्वारा शान्ति का प्रकाश प्रदान किया । स्वामीजी तीन चार वर्ष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज के साथ सिन्ध के विभिन्न गांवों एवं नगरों में नाम प्रचार के लिये भ्रमण करते रहे। सत्संग के आरम्भ में स्वामीजी भजन गाते थे ।

२४ दिसम्बर १९४१ सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज मण्डली सहित कुम्भ मेला में सम्मिलित होने के लिये प्रयाग गये । स्वामीजी भी उनके साथ गये । वहां वे कई संतों महात्माओं के सम्पर्क में आये और उनसे ज्ञान गोष्ठी भी की । कुम्भ मेला के पश्चात् स्वामीजी सत्गुरु महाराज के साथ लखनऊ गये । वहां १२ दिन सत्संग वर्खा करने के बाद वे कानपुर में आये वहां आठ दिन सत्संग वर्खा प्रवचन किया और तत्पश्चात् स्वामीजी सत्गुरु महाराज के साथ अहमदाबाद में आये। वहां भी स्वामीजी ने सत्गुरु महाराज के साथ सत्संग प्रवचन किया। वहां से स्वामीजी सत्गुरु महाराज के साथ 'अमरापुर' स्थान पर लौट आये।

स्वामी माधवदास जी के अनुरोध पर सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज संत माधवदास के स्थान हैदराबाद में पधारे । स्वामीजी भी उनके साथ थे । वहां सत्गुरु महाराज एवं स्वामीजी नित्य नियम सत्संग करते थे । एक दिन प्रवचन करते हुए सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने अमरलोक प्रस्थान करने का संकेत किया किन्तु यह कोई नहीं समझता था कि वह प्रवचन सत्गुरु महाराज का अंतिम प्रवचन है । ४ ज्येष्ठ मास वि.सं. १९९९, मई १९४२ महान विभूति सत्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज ने अचानक ही संसार की यात्रा समाप्त की । चारों ओर ग़म की घटाएं छा गई । सभी प्रेमियों की आंखों में आंसू थे । सत्गुरु महाराज का पार्थिव शरीर अमरापुर स्थान पर लाया गया । हज़ारों प्रेमी सत्गुरु महाराज के अंतिम दर्शन के लिये आये । दूसरे दिन सत्गुरु महाराज के पार्थिव शरीर को डोली में रखकर जुलूस निकाला गया, जिस में संत, सूफी, हिन्दू एवं मुसलमान प्रेमी सम्मिलित हुए । स्थूल शरीर का अग्नि संस्कार किया गया । कई प्रेमी आंसू बहाते रो रहे

थे। प्रेम प्रकाश मण्डल के संतों एवं अन्य महात्माओं ने सत्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज को भावभीनी श्रद्धाजंलि अर्पित की। पूज्य स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज ने भी श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए करुणा स्वर में भजन गाया।

तेरहवें दिन अमरापुर स्थान पर संतों का भंडारा हुआ और सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज की गद्दी पर पूज्य स्वामी सर्वानन्दजी महाराज को विराजमान किया गया।

पूज्य स्वामीजी तीन महीने अमरापुर स्थान पर सत्संग संकीर्तन करते रहे। पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज से आज्ञा लेकर उन्होंने भ्रमण के लिये प्रस्थान किया। पहले वे रोहड़ी में संत खिलूराम के स्थान पर पधारे। वहां उन्होंने दस दिन संत खिलूराम से ज्ञान-गोष्ठी की। १५ सितम्बर वे लाड़काणे में आये वहां उन्होंने दस दिनों तक अपने सत्संग प्रवचन द्वारा प्रेमियों को मंत्र मुग्ध कर दिया। एक दिन उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा:

पूरन गुर के वचन में पूरन जहं विश्वास।
कह टेऊं तिस दास को होवे ज्ञान प्रकाश॥

परमात्मा एवं सत्गुरु में पूर्ण विश्वास होना चाहिये। 'श्रद्धावान लभते ज्ञानम्'। संत दादू जी की गुफा के बाहर संत मोहनदास रहते थे उन्हें आंखों में मोतिया बिंदु हो गया था। उनके प्रेमियों ने आंखों का इलाज कराने के लिये अनुरोध किया, परन्तु वे न माने। उन्होंने प्रेमियों से कहा "जब सत्गुरु महाराज की कृपा होगी तब नेत्र स्वयं ठीक हो जायेंगे।" संत मोहनदास का अपने गुरु संत दादू जी महाराज में पूर्ण विश्वास था। एक दिन संत मोहनदास गुरु की गुफा के सम्मुख बैठकर भजन में तल्लीन हो गये। अचानक उनकी आंखों में नई ज्योति आ गई। गुरु की अनुकम्पा से उन्हें नया प्रकाश मिला। सत्संगी प्रेमियो! परमात्मा सत्गुरु एवं संतों में पूर्ण विश्वास रख कर उनकी शरण लो तो तुम्हारे जीवन की नैया पार लग जायेगी। एक गुरु भक्त अपने गुरु के अतिरिक्त और किसी साधु संत की सेवा नहीं करता था। उसके गुरु की इच्छा थी कि वह अन्य संतों की भी सेवा करे। एक बार वह प्रेमी तीर्थ यात्रा करने के लिये जा रहा था, जाने से पहले

वह अपने गुरु के पास उनका आशीर्वाद लेने आया । गुरु ने उसे कहा कि तुम तीर्थ यात्रा करके आओ तो तुम्हें उत्तम शिक्षा दूंगा । वह प्रेमी तीर्थ यात्रा करके जिस दिन अपने गांव में लौटा उसी दिन उसके गुरु ब्रह्मलीन हुए । अन्य प्रेमी गुरु के स्थूल शरीर को डोली में रखकर श्मशान भूमि की ओर ले जा रहे थे । वह प्रेमी दौड़ता श्मशान भूमि की ओर आया । उसने अन्य प्रेमियों से कहा 'आप ठहर जाइये! मैं जब तीर्थ यात्रा पर जा रहा था तब गुरु महाराज ने मुझे कहा था कि तू जब तीर्थ यात्रा से लौटेगा तो तुम्हें शिक्षा दूंगा। मैं अभी अभी तीर्थ यात्रा कर लौट आया हूं । मेरे गुरु महाराज परिपूर्ण हैं, वे अवश्य मुझे शिक्षा देकर अपना वचन पूरा करेंगे ।'' यह सुनकर सब प्रेमी आश्चर्य में पड़ गये कि अब यह कैसे सम्भव हो सकता है । उन्होंने कहा कि अब तो गुरु महाराज संसार से चल बसे, अब वे कैसे तुम्हें उपदेश देंगे! उस गुरु भक्त का अपने गुरु में पूर्ण विश्वास था । उसने कातर स्वर में प्रार्थना करते हुए कहा ''सत्गुरु महाराज मैं अब तीर्थ यात्रा कर लौट आया हूं, आप मुझे उपदेश देकर अपना वचन पूरा करें ।'' शिष्य के अटूट विश्वास की विजय हुई । ब्रह्मलीन सत्गुरु, सजाई हुई डोली में उठकर बैठ गये । सभी लोग आश्चर्य में पड़ गये । गुरु ने उस विश्वासी शिष्य को उपदेश देते हुए कहा 'प्यारे! आज से तुम सभी संतों महात्माओं की सेवा करते रहो, यही मेरी सीख है ।'' शिष्य ने कहा ''गुरु महाराज! मैं आज से ही आपकी आज्ञा का पालन करता हूं, किन्तु आप स्वयं देखें कि मुझे अन्य संतों की सेवा बराबर करनी आती है या नहीं ।'' उसी संत ने उस प्रेमी शिष्य की प्रार्थना स्वीकार की और पुनः एक वर्ष तक जीवित रहे। उस प्रेमी ने अपने गुरु के उपदेश के अनुसार तत्काल ही श्रद्धा के साथ अन्य संतों की सेवा प्रारम्भ की । प्रेमियों ! आप भी संतों और सद्गुरु के उपदेशों पर आचरण करें तो लाभान्वित होंगे और आत्म ज्ञान की उपलब्धि होगी ।

२६ सितम्बर सन् १९४२ में पूज्य स्वामीजी 'पीरग़ोठ' (सिन्ध) में संत आत्मप्रकाशजी के स्थान पर पधारे । संत आत्मप्रकाशजी स्वामीजी को अगाध स्नेह देते थे । स्वामीजी ने उनके जीवन से कई गुण ग्रहण किये । स्वामी जी स्वयं कहते थे कि आतिथ्य सत्कार का गुण मैं

ने संत आत्मप्रकाशजी से सीखा । स्वामीजी ने एक महीना वहां सत्संग प्रवचन किया । उन दिनों संत रामकृष्ण स्वामीजी के साथ हारमोनियम बजाते थे । प्रतिदिन पहले स्वामी रामकृष्ण प्रवचन करते थे, तत्पश्चात् स्वामीजी सत्संग प्रवचन करते थे । एक दिन स्वामीजी ने 'दान एवं उदारता' विषय पर प्रवचन करते हुए कहा कि उदारता एवं दान करना कोई सीखे तो दानवीर कर्ण से सीखे । कर्ण को महादानी कहा जाता है । एक बार भगवान श्री कृष्ण, कर्ण की उदारता की प्रशंसा कर रहे थे, उसी समय अर्जुन ने कहा "भगवान्! धर्म पुत्र युधिष्ठिर कर्ण से अधिक दानवीर एवं उदारचित्त हैं ।" भगवान श्री कृष्ण ने कहा "अर्जुन! यह बात मैं किसी और दिन प्रमाणित कर दिखाऊंगा कि सब से अधिक कौन उदारचित्त एवं दानवीर है ।'

कुछ दिनों के बाद भगवान श्री कृष्ण एक बूढ़े ब्राह्मण का रूप धारण कर साथ में अर्जुन को लेकर युधिष्ठिर के पास आये और अर्जुन को पीछे खड़ा कर युधिष्ठिर से कहा "महाराज! मुझे एक मन चंदन की लकड़ियां चाहिये ।" युधिष्ठिर ने किसी नौकर को एक मन चंदर की लकड़ियां खरीदने के लिये भेजा । वर्षा ऋतु थी कहीं से भी चंदन की लकड़ियां नहीं मिली । युधिष्ठर ने कहा "महाराज! चंदन की लकड़ियां तो उपलब्ध नहीं, जो मैं आपकी इच्छा पूर्ण कर सकूं, और कुछ चाहिये तो आज्ञा करें ।" वह ब्राह्मण रूपी श्रीकृष्ण अर्जुन को साथ लेकर कर्ण के पास गये और उनसे एक मन चंदन की लकड़ियां मांगी । कर्ण ने विचार किया कि वर्षा ऋतु के कारण अब चंदन की लकड़ियां मिलना संभव नहीं किन्तु बूढ़े ब्राह्मण को निराश भी लौटाया नहीं जा सकता । उसने अपने चंदन के पलंग एवं चंदन के दरवाजे तोड़कर उस बूढ़े ब्राह्मण के सामने रखकर कहा कि अब जितनी चंदन की लकड़ियां आपको चाहिये ले सकते हैं । यह देखकर अर्जुन आश्चर्य में पड़ गये और उसने अनुभव किया कि युधिष्ठिर के यहां भी इसी प्रकार चंदन के पलंग एवं दरवाजे थे किन्तु उसके द्वार से भगवान निराश लौट आये । भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन से पूछा "बताओ बड़ा दानी एवं उदारचित्त युधिष्ठिर है या कर्ण?" अर्जुन ने कहा "प्रभु! आपने जो कर्ण के दानवीरता एवं उदारता की प्रशंसा की वह उसके योग्य है ।" प्रेमियों! आप भी दान करने में देर मत करें और उदारचित्त

होकर दान करें।

सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के अनुज स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज अचानक सन् १९४२ ई. में हैदराबाद सिन्ध में ब्रह्मलीन हुए। वहां स्वामीजी ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज मेरे लिये सत्गुरु तुल्य थे। वे महान विद्वान एवं ज्ञानवान थे। उनके कंठ में सरस्वती का निवास था। वे उच्च कोटि के संत कवि भी थे और वेदों के मर्मज्ञ भी थे। जब वे प्रवचन करते थे एवं भजन गाते थे तो श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर देते थे।

पूज्य स्वामीजी सक्खर में पधारे। उन्होंने वहां नापुरनि धर्मशाला में एक सप्ताह सत्संग प्रवचन किया। उन दिनों सारे देश में आज़ादी का आन्दोलन चल रहा था। स्वामीजी सत्संग प्रवचन करते हुए राष्ट्रभक्ति का भी संचार करते थे। एक दिन वहां उन्होंने व्याख्यान करते हुए कहा कि मातृभूमि स्वर्ग से भी महान है। देश की स्वतंत्रता के लिये कई देश भक्तों ने अपने जीवन का बलिदान दिया है। अंग्रेज शासक अमानवीय अत्याचार कर रहे हैं। हमें सचेत होकर भारत माता को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त कराने का दृढ़ संकल्प करना चाहिये। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना चाहिये। आप महात्मा गान्धी के आदर्शों का अनुकरण करें।

सक्खर में एक दिन स्वामीजी ने जीव दया विषय पर प्रवचन करते हुए कहा कि जीव दया करने से प्रभु प्रसन्न होते हैं। दया धर्म की जड़ है, संत तुलसीदास जी भी कहते है:

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िये, जब लग घट में प्रान॥

यदि हम दूसरों पर दया करेंगे तो परमात्मा भी हम पर दया करेंगे। कुछ अज्ञानी लोग देवी माता को प्रसन्न करने के लिये देवी माता की मूर्ति के समक्ष कभी किसी पशु तो कभी किसी मनुष्य को मार कर उसकी बलि चढ़ाते हैं। कैसी न मूर्खता है! जीव हत्या से देवता कभी प्रसन्न नहीं होंगे। यह हमारा भ्रम है। हमारी इस निर्दयता पर प्रभु एवं देवता अत्यन्त असंतुष्ट होंगे। सभी प्राणी उस प्रभु की संतान हैं। बलि देना यह असभ्यता की निशानी है। आज के सभ्य एवं

प्रगतिशील समाज को यह कुप्रथा शोभा नहीं देती । सभी पशु पक्षियों के वध पर प्रतिबंध लगाना चाहिये । समस्त प्राणियों को जीने का अधिकार है । जो लोग मांस भक्षण करते हैं, जो पशुवध करते हैं, उन्हें कड़ी सजा भुगतनी पड़ेगी ।

एक बार एक गांव में कुछ दुर्गा माता के उपासक जंगल से एक संत बिन्दुस्वामी को पकड़ कर, उसे बलि चढ़ाने के लिये दुर्गा माता के मन्दिर में ले आये । उसी संत बिन्दुस्वामी ने, श्री दुर्गा माता से प्रार्थना करते हुए कहा, "माताजी! रक्षा करो!" उसी समय जैसे ही बलि चढ़ाने वालों ने बिन्दुस्वामी की बलि के लिये शस्त्र उठाये तो उसी माता की मूर्ति से साक्षात दुर्गा माता प्रकट हुई, उस 'शेरांवाली' ने बलि चढ़ाने वालों को मौत के घाट उतारा, बिन्दुस्वामी माताजी के चरण कमलों में गिर पड़े, माताजी फिर अतर्ध्यान हो गई । यह कौतुक देखकर गांव वाले आश्चर्य में पड़ गये । उसी दिन से उस गांव वालों ने बलि चढ़ाने पर प्रतिबंध लगा दिया । यह धारणा गलत है कि बलि चढ़ाने से देवता संतुष्ट होते हैं । प्रेमियों! सभी प्राणियों को प्यार दें, हिंसा का परित्याग करें, जीवन में दया व प्रेम की ज्योति जगाएं ।

२८ जनवरी १९४३ पूज्य स्वामीजी अमरापुर स्थान पर लौट आये। सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज को प्रणाम कर के अन्य संतों से मिले । वे तीन चार महीने वहां ही सत्संग एवं सतगुरु महाराज की सेवा करते रहे ।

अमरापुर स्थान पर प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव बड़े उत्साह के साथ मनाया गया । इस उत्सव में सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज, स्वामी गुरुमुखदास, संत माधवदास, संत बसंतराम, कवि पहिलाजराम, संत जीवनमुक्त, संत मुरलीधर, संत ऊद्धवदास एवं स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज ने सत्संग प्रवचन द्वारा प्रेमियों को लाभन्वित किया । प्रो. हासानन्द जादूगर ने अपने जादू खेल द्वारा शिक्षाप्रंद भाषण किया । पूज्य स्वामी जी सामाजिक एवं राष्ट्रीय कार्यों में भाग लेते थे । इस लिए कई कार्यकर्ता उनके पास आते थे । उत्सव के अवसर पर प्रो: हासानन्द उनके कमरे में ठहरे थे और उन्होंने उनके साथ सामाजिक एवं देश सम्बन्धी विषयों

पर विचार विमर्श किया । देव समाजी हो या आर्य समाजी, चाहे कांग्रेसी कार्यकर्ता हो, स्वामीजी का सबसे सम्पर्क रहता था । प्रो ताराचन्द गाजरा एक महान इतिहासकार, विद्वान एवं देश भक्त थे । वे भी स्वामीजी के पास आकर विचारों का आदान प्रदान करते थे । शाहपुर चाकर के श्री तुलसीदास, श्री घनश्यामदास जो देव समाजी थे, वे भी स्वामीजी से ज्ञान गोष्ठी करते थे । पूज्य स्वामीजी विशाल हृदय थे एवं सभी को सन्मान एवं स्नेह देते रहे ।

पूज्य स्वामीजी को सत्संग प्रवचन करते समय जो भी भेंट मिलती थी, वे वह भेंट सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के चरणों में अर्पित कर देते थे । स्वामीजी गरीब विद्यार्थियों को पैसों की सहायता कर उन्हें पढ़ने के लिए उत्साहित करते थे । स्वामीजी महात्मा गांधी की स्वदेशी हलचल से प्रभावित हुए । उनके मन में देश भक्ति की भावना भरी हुई थी । वे अपने प्रवचन में ईश्वर भक्ति के साथ साथ राष्ट्रीय भक्ति का भी वर्णन करते थे, राष्ट्रीय चेतना का संचार करते थे ।

१२ आगस्त, १९४४ को वे स्वामी सर्वानन्द जी महाराज से आशीर्वाद लेकर संत ऊद्धवदास जी के साथ चक्क में आये । वहां उन्होंने दस दिन सत्संग सुधा की वर्खा की । एक दिन पूज्य स्वामी जी ने प्रवचन करते हुए कहा :

आलस तज उदम करो, राम जपन के हेत ।
भोग रोग मय जानके स्मरन कर धर चेत ।।

जैसे हम विद्या अध्ययन, माया संग्रह के लिए पुरुषार्थ करते हैं, वैसे भगवत् भजन के लिए भी उद्यम करना चाहिए । संसार के भोग दुखमय हैं और नाम स्मरण ही सुखमय है । संसार के कार्य व इच्छाएं कभी पूरी नहीं होंगी । इस लिए जीव को जागृत होकर नाम स्मरण करना चाहिए ।

जब तक है ये जिन्दगी, फुर्सत न होगी काम से ।
कुछ समय ऐसा निकालो प्रेम करलो श्री राम से ।।

एक सज्जन की पत्नी भगतिन थी । वह प्रतिदिन नाम स्मरण करती थी और अपने पति को भी नाम स्मरण करने के लिए बार बार प्रार्थना

करती थी। किन्तु पतिदेव कहते थे कि भगवद् भजन करने के लिए बहुत आयु पड़ी है अभी क्या आवश्यकता है! ऐसा कहते कई वर्ष बीत गये किन्तु उस सज्जन ने नाम स्मरण नहीं किया। अचानक वह बीमार पड़ गया। उसकी पत्नी उसके लिए दवाई ले आई किन्तु उसने उसे जानबूझकर दवाई नहीं दी। पति देव ने दवाई मांगी। पत्नी ने कहा कि दवा पीने में क्यों जल्दबाजी करते हो, दवाई पीने के लिए बहुत आयु पड़ी है। यह सुनकर पति ने क्रोधित होकर कहा "पागल! मैं बीमारी भुगत रहा हूँ और तू कहती है कि दवाई पीने में क्यों जल्दी करता है! मैं मर रहा हूं और तू दवाई नहीं पिलाती। पत्नी ने कहा "स्वामीजी! आपकी इतनी जल्दी मृत्यु कैसे होगी। आप तो कहते हैं बहुत आयु शेष है, तत्पश्चात भगवद् भजन करेंगे।" पत्नी का उत्तर सुनकर वे मन में समझ गये जैसे बीमारी को मिटाने के लिए दवा की आवश्यकता है, वैसे सांसारिक दुखों से मुक्त होने के लिए नाम स्मरण की अत्यन्त आवश्यता है। जैसे दवा लेने में विलम्ब नहीं करना चाहिए वैसे भगवद् भजन करने में भी विलम्ब नहीं करना चाहिए।

२३ आगस्त, १९४४ को पूज्य स्वामी जी "अब्दू" में पधारे। वहां उन्होंने एक सप्ताह तक सत्संग प्रवचन किया। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा सांसारिक सुखों को देखकर प्रभु को मत भुलाओ। कई लोगों ने सांसारिक पदार्थों में फंस कर परमात्मा को भुला दिया है। यदि तुम उसे नहीं भूलोगे तो वह भी तुम्हें नहीं भूलेगा। परम पिता परमात्मा जो अटल है, अमर है, उसे छोड़कर जो सांसारिक भौतिक पदार्थों की प्राप्ति के लिए दौड़ता है वह भूल करता है। संसार के पदार्थ तो नश्वर हैं, उनसे आनन्द की उपलब्धि नहीं होगी और प्रभु की प्राप्ति भी नहीं होगी। प्रभु की शरण लेने से ही तुम्हें आनन्द की उपलब्धि होगी और स्वयं प्रभु की प्राप्ति भी होगी।

१ सितम्बर, १९४४ पूज्य स्वामीजी इजमत गांव में पधारे, वहां स्वामी जी ने संत ऊद्धवदास जी के साथ दस दिन तक सत्संग वर्खा की। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि सत्संग में एकाग्रचित्त होकर कथा श्रवण करनी चाहिए तत्पश्चात् मनन एवं निध्यासन करना चाहिए। डाक्टर किसी बीमार को दवाई भी दे, यदि वह बीमार दवाई का प्रयोग नहीं करेगा तो वह स्वस्थ नहीं होगा। संत महात्मा उपदेश

देते हैं यदि हम उन उपदेशों का अनुसरण नहीं करेंगे तो क्या लाभ? कुछ लोग सत्संग में इसलिए आते हैं कि लोग उन्हें सत्संगी समझें, कुछ लोग समय व्यतीत करने के लिए आते हैं । सत्संग में सद्गुणों को ग्रहण करने के लिए आना चाहिए ।

एक दुकानदार कथा श्रवण करने के लिए मंदिर में जाता था, उस समय के लिए उसका नौकर दुकान चलाता था । एक बार एक थोक खरीददार आया और उस समय दुकान पर नौकर बैठा था । दुकानदार मंदिर में कथा श्रवण कर रहा था । मंदिर दुकान के नजदीक था । नौकर मालिक को बुलाने के लिए मंदिर में गया और मालिक ने कहा कि मैं थोड़े समय के बाद आता हूं । उस समय सत्संग में महात्मा जी प्रवचन कर रहे थे कि सभी जीवों में परमात्मा व्यापक है, सभी प्राणियों से प्रेम करो । यह वचन सुनते ही नौकर दुकान पर लौट आया और ग्राहक को चाय पिलाई उसी समय एक गाय दुकान के बाहर गेहूं की बोरी में मुंह डालकर गेहूं खाने लगी । नौकर तो अभी अभी कथा श्रवण करके आया था कि पशु-पक्षी भी प्रभु की संतान हैं उन पर दया दृष्टि करो । उसने गाय को गेहूं खाने से रोका नहीं । इतने में वह दुकानदार भी आ गया । उसने गाय को गेहूं खाते देखकर लाठी उठाकर गाय को मारी और नौकर पर भी क्रोधित हुआ । नौकर ने नम्रता से कहा कि आधा घंटा पहले मैं आपको मंदिर में बुलाने आया तब संतजी प्रवचन में कह रहे थे कि ये पशु-प्राणी प्रभु की संतान हैं उन्हें भी प्यार करें । मैंने संत का यह वचन सुना, फिर मैं कैसे गाय को गेहूं खाने से रोक दूं और उसे लाठी मारुं । नौकर का यह उत्तर सुनकर वह दुकानदार आग बबूला हो गया और कहने लगा कि मूर्ख ! मै मंदिर में इसलिए जाता हूं कि लोगों का मुझ में भरोसा हो कि मैं धार्मिक व्यक्ति हूं । यदि तुम दुकान ऐसी चलाओगे तो लाभ तो नहीं होगा, मेरी आर्थिक हानि अवश्य होगी । मैं कान रस के लिए कथा सुनता हूं ।

प्रेमियो ! कथा कीर्तन कान रस के लिए नहीं मन रस के लिए सुनें। सत्संग की शिक्षाओं का अनुसरण कर मानव जीवन सफल बनाएं ।

१२ सितम्बर, पूज्य स्वामी जी चक्क में पधारे वहां स्वामीजी ने एक सप्ताह सत्संग प्रवचन किया। स्वामी जी ने प्रवचन करते हुए कहा कि प्रभु प्राप्ति करने के कई मार्ग हैं। किसी भी मार्ग पर श्रद्धा व प्रेम के साथ चलने का प्रयास करना चाहिए। संत दादूजी कहते हैं:-

श्वासों श्वासों संभालता, इक दिन मिल हैं आय।
स्मरण पैंडा सहज का सतगुरु दिया बताय॥

प्रेमियो! भगवत् प्राप्ति के लिए नाम स्मरण ही सहज मार्ग है। श्वास श्वास से सहज भाव से स्मरण करने से प्रभु की प्राप्ति होगी। शारीरिक, मानसिक एवं सांसारिक दुखों से निवारण के लिये भी "राम राम" अमूल्य औषधि है।

ब्यावर की एक बहन जानकी बाई पुष्कर में रहती थी। घर का काम काज करते भी स्मरणी से नाम स्मरण करती रहती थी। उसका राम नाम में इतना तो विश्वास था कि जब भी उन्हें कोई दुख दर्द होता तो वह विश्वास रखकर स्मरणी फेरती थी और उसका दुख दर्द दूर हो जाता था। एक बार दादू पंथी स्वामी नारायणदास मलारणा गांव में संध्या के समय प्रेमियों सहित नाम कीर्तन कर रहे थे, तो नागा संत, बिच्छू के डंक से व्यथित अपने एक शिष्य को वहां ले आये। उस नागा संत ने स्वामी नारायणदास से प्रार्थना करते हुए कहा कि इसे बिच्छू ने डंक मारा है, यदि बिच्छू के डंक का विष खत्म करने का कोई मंत्र तुम्हें याद हो तो कृपया वह मन्त्र पढ़कर इसकी पीड़ा दूर करें। स्वामी नारायणदास ने कहा मुझे कोई मंत्र याद नहीं, आओ तो सभी मिलकर इस जवान की पीड़ा को दूर करने के लिए प्रभु से प्रार्थना करें।" उसी समय स्वामी नारायणदासजी ने संत दादूजी का दोहा उच्चारण कर राम नाम कहते उस पीड़ित जवान पर मोर पंख घुमाया तो वह जवान ठीक हो गया। संतों की वाणी व राम नाम उचारण से बिच्छू के डंक के विष का असर खत्म हो गया। नागा संत एवं वह जवान अत्यन्त प्रसन्न हुए और वे स्वामी नारायणदासजी का आभार मानने लगे। संत नारायणदासजी ने उस नागा सन्त से कहा कि मैं कोई मन्त्र तन्त्र नहीं जानता। मैंने तो सत्गुरु दादूजी का

एक दोहा एवं नाम उच्चारण किया, यह सब महिमा नाम की है। प्रेमियो! राम नाम द्वारा शारीरिक, मानसिक एवं अन्य दुखों से छुटकारा पा सकते हैं। सिन्ध देश में कई ऐसे संत हुए हैं जिन्होंने न वेद शास्त्रों का अध्ययन किया, न योग साधना की, वे केवल राम नाम का स्मरण करते थे और उन्हें सिद्धि प्राप्त हुई। प्रेमियो! आप भी राम नाम को मत भूलें, राम नाम का चिन्तन करते रहें।

संत हरिचूराम साहब की पुण्यतिथि उत्सव के अवसर पर पूज्य स्वामीजी २१ सितम्बर को शाहपुर थल्हे पर पधारे और संत लखीराम को प्रणाम कर प्रेमियों से मिले। स्वामीजी ने वहां प्रवचन करते हुए कहा-

सब स्वार्थ के मीत हैं, बिन स्वार्थ हैं संत।
कह टेऊं तिहं सेव से, राजी हो भगवन्त॥

संसार के सम्बन्धी स्वार्थी हैं, किन्तु संत सत्पुरुष बिना किसी स्वार्थ के जीव का कल्याण करते हैं। ऐसे संतों की सेवा करने से परमात्मा भी प्रसन्न होते हैं। संत प्रभु के प्रतिनिधि हैं। यदि हम प्रभु को प्रसन्न करना चाहते हैं तो संतों की सेवा करनी चाहिए। सांई हरिचूराम एक सच्चे एवं निष्काम सन्त थे। किसी भी प्रेमी की माया या कोई वस्तु स्वीकार नहीं करते थे। खेती बाड़ी की कमाई से ही उदरपूर्ति करते थे। किसी के पास भोजन भी नहीं खाते थे। किसी प्रेमी के अत्यन्त आग्रह पर यदि कहीं भोजन खाते भी थे तो उसके दुगने पैसे उस घर के बच्चों को खर्ची के रूप में दे देते थे। वे सदैव "हरिनाम" शब्द रटते रहते थे। इस हरिनाम की साधना से वे भी सिद्ध पुरुष हो गये। भक्ति की शक्ति होते हुए भी सन्त हरिचूराम दिखावे से दूर रहते थे। एक बार एक बीमार जो बीमारी के कारण इतना शक्तिहीन हो गया था कि चल भी नहीं सकता था, वह लंगड़ाता सन्त हरिचूराम के स्थान पर आया और उसने विनती की कि वे अपने आशीर्वाद से उसे ठीक कर दें। उस समय सन्त हरिचूराम किसी विवाह उत्सव में जा रहे थे, तो वह बीमार भी लंगड़ाते लंगड़ाते उनके पीछे जाने लगा। सन्त हरिचूराम ने आवेश में आकर अपना जूता उतारकर उस व्यक्ति को मारते हुए कहा "चले जाओ यहां से" सन्त हरिचूराम के जूते मारने से वह पीड़ित पुरुष उसी क्षण ठीक हो गया और अच्छी

तरह चलने लगा । सन्त हरिचूराम ने कई दुखियों के दुख दूर किये। प्रेमियो! आप भी पूर्ण विश्वास से शाहपुर थल्हे की सेवा करते रहो, सांई हरिचूराम आपका कल्याण करेंगे ।

दूसरे दिन स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

सुत, दारा और लक्ष्मी, पापी को भी होय ।
संत समागम हरि कथा तुलसी दुर्लभ दोय ॥

प्रेमियो ! सत्संग एवं प्रभु की कथा श्रवण करने का सुअवसर सौभाग्य से मिलता है । माया एवं पत्नी तो दुराचारी को भी मिलती है इसलिए माया एवं माया के विभिन्न रूपों के पीछे मत दौड़ो । सन्तों के संग में रहकर नाम स्मरण करो । सन्त हरिचूराम साहब को ऋद्धि सिद्धि प्राप्त थी फिर भी वे नाम स्मरण करते थे, आप घर गृहस्थ में रहकर सन्तों का संग करें, भगवत् कथा प्रेम व श्रद्धा से श्रवण करें तो आप नाम के रंग में रंग जायेंगे । संत हरिचूराम महान संत थे फिर भी वे छोटा सा व्यवसाय करके, अपने परिश्रम की कमाई का खाना खाते थे और धन्धा, व्यवसाय करते हुए भी नाम स्मरण करते थे । आप भी सांसारिक कर्तव्यों का पालन करते हुए प्रभु को न भूलें ।

पूज्य स्वामीजी २५ सितम्बर को लाड्कन में पधारे । स्वामीजी ने वहां एक सप्ताह सत्संग प्रवचन किया । श्री वलरमल वाधवा एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया । वहां स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि परमात्मा ने हमें, अमूल्य मानव शरीर दिया है उसका सदुपयोग करना चाहिये । कई लोग अपना अमूल्य जीवन विषय एवं विकारों में व्यर्थ व्यतीत करते हैं । स्वामी टेऊंराम महाराज जीव को जाग्रत करते हुए कहते हैं-

गफलत में न गंवाइये मानुष देह महान ।
कह टेऊं तुम जागके भजले श्री भगवान ॥

प्रेमियो! गफलत की नींद से सचेत होकर भगवत् भजन करें । फिर ऐसा सुअवसर नहीं मिलेगा ।

प्रभु मिलन की है यह वेला

एक राजा के महल में एक हरिजन झाड़ू लगा रहा था । उसके कपड़े फटे हुऐ थे। राजा को उस पर दया आ गई। उसने उसे बुलाकर उसे स्वर्ण का थाल हीरे जवाहरात से भरकर देते हुए कहा अब तुम्हारा जीवन नया हो जायेगा । राजा ने उस हरिजन पर कृपा दृष्टि करके उसे मालामाल कर दिया । वह फूला न समाया और हीरे जवाहरात से भरा हुआ थाल घर में ले आया । उसकी पत्नी हीरे जवाहरात से भरा स्वर्ण थाल देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुई । पति ने उसे सारा विवरण बताया कि किस प्रकार राजा ने प्रसन्न होकर उसे यह थाल दिया । पत्नी ने कहा ये हीरे जवाहरात बेचकर पैसे इकट्ठे कर रखेंगे और कचरा ढोने के लिए इस थाल का प्रयोग करेंगे । कचरे की टोकरी दस बारह दिन में नष्ट हो जाती है, यह थाल तो जीवन भर काम में आयेगा और देखने में भी सुन्दर है । पति-पत्नी उस थाल का मूल्य जानते हुए भी उसका दुरुपयोग करने लगे । वे स्वर्ण के थाल से कचरा ढ़ोने लगे । एक दिन राजा ने यह देख लिया, और उसे दुख हुआ कि उसने हरिजन पर दया दृष्टि कर उसे स्वर्ण का थाल दिया, वह उसका सदुपयोग न कर दुरुपयोग कर रहा है । राजा ने उसे डांटते हुए आज्ञा की कि वह स्वर्ण थाल हीरों सहित लौटा दे। हरिजन ने राजा की आज्ञानुसार वह थाल लौटाया किन्तु वह पत्नी सहित अत्यन्त दुखी हुआ । उन्होंने अपने पांवो पर स्वयं कुल्हाड़ी लगाई । वे अपनी गलती पर रोने लगे कि उन्होंने उस थाल का सदुपयोग नही किया ।

प्रेमियो ! परमात्मा ने तुम्हें स्वर्ग से भी अमूल्य मानुष तन और श्वासों रूपी हीरे जवाहरात दिये हैं, तुम उनकी कदर करो । विषय वासनाओं के भोग में व्यर्थ श्वास मत गंवाओ, मानुष जीवन का सदुपयोग करो, नहीं तो फिर तुम्हें पश्चात्ताप करना पड़ेगा । श्री गुरु तेगबहादुरजी अपनी वाणी में कहते हैं-

करणो हुतो सुना कियो, पड़ियो लोभ के फंद ।
नानक सम्यो रम गयो, अब क्यों रोवत अंध ।।

लुकमान नगर के बाहर एक एकान्त स्थल पर विरक्त महात्मा सन्त रामानन्दजी रहते थे । २ अक्टूबर स्वामीजी उनके दर्शनार्थ उनके पास

गये । स्वामीजी ने स्वामी रामानन्दजी का दर्शन कर उनके साथ ज्ञान गोष्ठी की । ३ अक्टूबर लुकमान में स्वामीजी ने स्वामी ईसरदास हंस से ज्ञान गोष्ठी की और सत्संग वर्ख़ा करते हुए कहा कि यदि आप आध्यात्मिक उन्नति करना चाहते हैं तो विनम्र बने, अपने सन्मान का त्याग कर दूसरों को सन्मान दें । सन्त कबीर कहते हैं-

नमन खमन अर दीनता, सबको आदर भाव ।
कहं कबीर सोई बड़े, जामे बड़ो सुभाव ॥

सन्त कबीर कहते हैं जिस मनुष्य में नम्रता है, जो सबको सन्मान देता है, वही मानव है । घमण्ड छोड़कर नम्रता की राह पर चलें । पानी को कहीं से भी फेंको वह ऊपर नहीं जायेगा नीचे गिरेगा । सारे संसार का कार्य मस्तिष्क (दिमाग) से चलता है, सन्तों के चरणों पर नत मस्तक होकर प्रार्थना करते हैं कि प्रभु अपने कमल चरणों का ध्यान दें कभी ऐसा नहीं कहते कि आपके मस्तिष्क का ध्यान करें, किन्तु किसी सन्त महात्मा को प्रणाम करने के लिये उसके पांव पड़ते हैं । क्योंकि मस्तिष्क में ही अभिमान रहता हैं । प्रेमियो! यदि प्रभु या सन्तों की शरण में आना चाहते हो तो अभिमान का त्याग करें। अभिमान आध्यात्मिक मार्ग में रोड़ा है ।

प्रेमियो ! अभिमान एवं क्रोध का परित्याग कर सब को सन्मान व स्नेह दो । एक बार अमरापुर स्थान पर दो संत आये । वे सत्गुरु स्वामी टेऊंराम महाराज के आसन पर बैठ गये । आश्रम के अन्य सन्तों ने उन्हें कहा कि यह सत्गुरु महाराज का आसन है आपको दूसरा आसन बिछा देते हैं, वहीं विराजमान हो जायें । इतने में सत्गुरु स्वामी टेऊंराम महाराज वहीं आ गये । उन्होंने मंडल के संतों से कहा इसी आसन पर चीटियां, मक्खियां आकर बैठती हैं, यदि ये महात्मा यहां बैठे हैं तो उन्होंने क्या दोष किया? सत्गुरु महाराज ने विनम्रता से उन महात्माओं से कहा कि हमारा सौभाग्य है कि आप यहां पधारे हैं। आप इसी आसन पर विराजमान रहें । सत्गुरु स्वामी टेऊंराम महाराज के मन में कितनी नम्रता की भावना थी । आप भी इन सद्गुणों को ग्रहण कर मानव जीवन सफल करें ।

४ अक्तूबर, १९४४ पूज्य स्वामीजी खैरपुर मीरस में पधारे । वहां

''मिठी संगति'' में भक्त टहलियाराम ने उनका स्वागत किया। स्वामी जी ने एक सप्ताह सत्संग प्रवचन किया। एक दिन स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि परमात्मा अपने प्रेमियों की वैसे देख भाल करता है, जैसे मां-बाप अपने बच्चों की देख रेख करते हैं, किन्तु भगवान को निष्काम भावना से याद करना चाहिए।

श्री शिवराम किंकरजी स्वामी विवेकानन्दजी के विद्या गुरु थे, उन्होंने उन्हें संस्कृत सिखाई। वे भगवान शंकर के अनन्य उपासक थे। वे प्रतिदिन श्री शंकर महादेव का ध्यान करते थे। उनके कई शिष्य एवं प्रेमी थे। वे सद्गृहस्थ थे। एक बार पैसों के अभाव के कारण घर में तीन दिन परिवार सहित भूखे रहे। चौथे दिन एक लिफाफा उनके पास आया उस समय स्वामी विवेकानन्दजी भी वहां बैठे थे। गुरु शिवराम ने लिफाफा खोला तो उस में एक पत्र एवं दस रुपये का नोट पड़ा था। पत्र पढ़ते ही श्री शिवराम की आंखों में आंसू आ गये। स्वामी विवेकानन्द ने गुरु से पत्र लेकर पढ़ा। उसमें लिखा हुआ था। मेरे घर में भगवान शंकर की मूर्ति स्थापित है। रात को भगवान शंकर ने मुझे स्वप्न में कहा। मैं तीन दिन से भूखा हूं क्योंकि मेरा भक्त शिवराम तीन दिन से परिवार सहित भूखा है। मेरा भक्त शिवराम किंकर तेरे गांव के नजदीक बराहनगर में रहता है, उसको सबेरे ही सहायता भेजो। भगवान शंकर की आज्ञानुसार मैं दस रुपये भेज रहा हूं। कृपया स्वीकार करें। यह पत्र पढ़कर श्री नरेन्द्र (स्वामी विवेकानन्द) आश्चर्य में पड़ गये कि भगवान अपने भक्तों की कैसे न देख रेख करते हैं।

श्री नरेन्द्र ने भरे हुए कंठ से कहा गुरुजी आपने इसके लिये मुझे क्यों नहीं संकेत दिया। मैं भी आपका बालक हूं। तीन दिन से आपने परिवार सहित भोजन ग्रहण नहीं किया। यह मेरे लिये लज्जा की बात है। मैं ही भोजन की व्यवस्था कर लेता। पंडित शिवराम ने कहा, ''बेटा! परमपिता परमात्मा किसी न किसी प्रकार पालन-पोषण करता है, तुम्हें क्यों कहूं।'' भक्तों का भगवान में कितना न विश्वास होता है। संत कबीर अपनी वाणी में कहते हैं-

चिन्ता छोड़ अचिन्त रह, देनहार समर्थ।
पसू पखी जीव जन्त, तन के गांठ न हथ ॥

पशु-पक्षी, जीव जन्तु जिनके पास कुछ भी नहीं प्रभु उनकी भी देख रेख करता है। प्रेमियो! आप भी चिन्ता का त्याग कर प्रभु में विश्वास रखकर उसका भजन करें जो विश्वम्भर सारी सृष्टि की पालना करता है, वह आपकी भी देख रेख करेगा।

१५ अक्तूबर, १९४४ स्वामीजी सांई वसणशाह एवं भक्त श्री कंवरराम की पुण्यतिथि उत्सव सम्बन्ध में रोहिड़ी में पधारे सांई वसणशाह के स्थान पर उन्होंने भक्त कंवरराम को श्रध्दांजलि अर्पित करते हुए कहा कि भक्त कंवरराम सिन्ध के भक्तों के शिरोमणि थे, वे विनम्रता की मूर्ति थे, सादगी की सूरत थे। गाते समय उन्हें जो कुछ भेंट मिलती थी, वे वह भेंट दीन दुखियों की सेवा एवं परोपकार के कार्य में खर्च करते। अपनी उदरपूर्ति के लिए वे छोटी सी दुकान चलाते थे। आज उनका सारे संसार में यश है। सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज अपनी वाणी में कहते हैं:-

अपना स्वार्थ छोड़ जो, करता पर उपकार।
कहे टेऊँ यश होत है, तांका जगत् मंझार॥

एक बार भक्त कंवरराम शहदाद कोट में गा रहे थे। उसी समय एक मुसलमान फकीर ने कहा "कंवर मेरी खाली झोली भर दो मेरे बच्चे भूखे हैं।" भक्त कंवरराम ने अपनी झोली में से दोनों हाथ पैसों से भरकर उस फकीर को दिये। फकीर चांदी के रुपये पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ और दुआएं देता चला गया। यह देखकर वहां दूसरे फकीर ने भी भक्त कंवरराम से कहा "मेरी भी झोली भरदो।" भक्त कंवरराम ने फिर अपनी झोली में से दोनों हाथ पैसों से भरकर उस फकीर को दिये। फकीर ने देखा उसकी झोली में ताम्र के पैसे हैं, चांदी के रुपये नहीं, उस फकीर ने क्रोधित होकर वे पैसे भक्त कंवरराम के मुंह पर फेंक दिये। भक्त कंवरराम के मुंह पर थोड़ी चोट लगी। वहां सत्संग में बैठे श्रद्धालुओं को बहुत गुस्सा आया किन्तु भक्त कंवरराम ने उन्हें सांत्वना देते हुए उस फकीर से कहा "देने वाला भी खुदा, लेने वाला भी खुदा, फिर क्यों आपने मुझे मारा।" भक्त जी ने फिर अपनी झोली से दोनों हाथ भरकर उस फकीर को पैसे

दिये । वह फकीर लज्जित होकर चला गया । भक्त कंवरराम बुरा करने वालों का भी भला करते थे । वे कितने न क्षमाशील थे । प्रेमियो! आप भी जीवन में क्षमाशील एवं विनम्र बनकर परोपकार के कार्य करें ।

दूसरे दिन स्वामीजी ने सांई वसणशाह के गुणों का वर्णन करते हुए कहा कि संत वसणशाहजी परोपकार की प्रतिमूर्ति थे ।

संत बड़े परमार्थी निर्मल जांके अंग ।
तपत बुझाकर जीव की, वो मेले अपने संग ।।

सांई वसणशाह अपने सत्गुरु सांई पारूशाह की सेवा में तो तत्पर रहते थे, साथ में ''आसाऊ तड़'' पर जो सूरदास, लंगड़े, अपंग, अपाहिज रहते थे उनकी भी स्वयं सेवा करते थे । वे संडासों की सफाई भी अपने हाथों से करते थे, झाडु, लगाते थे । वे सबेरे उठकर श्री साधुबेला आश्रम में जाकर वहां भी संडास साफ करते थे । उनकी सेवा भावना एवं निष्ठा देखकर उनके सत्गुरु संत पारूशाह अत्यंत प्रसन्न हुए । उन्होंने उनका नाम ''वसणशाह'' रख दिया । तत्पश्चात् ही वे संत वसणशाह के नाम से विख्यात हुए । वे सेवा के साथ-साथ भगवद् भजन में भी तल्लीन रहते थे । प्रेमियो! आप भी नाम स्मरण एवं सेवा कार्य में संलग्न रहकर मानव जीवन सफल करें ।

पूज्य स्वामीजी २१ अक्तूबर को अमरापुर स्थान पर लौट आये, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज को प्रणाम कर अन्य संतों से मिले। कुछ दिन वहां सत्संग सेवा करते रहे । ८ जनवरी १९४५ स्वामीजी संत ऊद्धवदासजी के साथ जेकमाबाद में पधारे । वहां उन्होंने स्वामी कृष्णगिरि के स्थान पर एक सप्ताह प्रवचन किया । स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा सभी दुखों से छूटकारा पाने के लिए नाम स्मरण ही सरल साधन है । एक बार किसी प्रेमी ने संत दादूजी से पूछा कि सांसारिक दुखों से मुक्त होने का उपाय बतायें, संत दादू ने कहा-

दादू दुखिया तब लगे, जब लग नाम न लेह ।
तब ही पावन परम सुख, मेरे जीवन येह ।।

जब तक मनुष्य ने प्रभु की शरण नहीं ली, नाम स्मरण नहीं किया, तब तक दुख दर्द उसका पीछा नहीं छोड़ेंगे। जब वह परमपिता परमात्मा की शरण लेकर उसकी भक्ति करेगा तब वह दुखों से मुक्त हो जायेगा। उसे आत्मिक आनंद की उपलब्धि होगी। संत दादूजी कहते हैं कि उनके जीवन का आधार भी केवल राम नाम ही है।

संत दादूजी से किसी अन्य प्रेमी ने पूछा कि मन में जो संशय-भ्रम उत्पन्न होते हैं, उनसे कैसे निवृत्त हों? संत दादूजी ने इसके लिए भी वही नाम स्मरण का उपाय बताते हुए कहा-

जे चित्त चुहटे नाम से,स्मरण मन लागे।

दादू आतम जीव के, संशय सब भागे॥

प्रेमियों! सदैव नाम स्मरण करें और प्रभु का ध्यान करें तो आपको आनन्द की प्राप्ति होगी। प्रभु का नाम एक नैया है जिसके द्वारा जीव संसार सागर से पार हो सकता है। एक बार वर्षा ऋतु में आषाढ़ एकादशी उत्सव सम्बन्ध में श्री शान्तोबा अपनी पत्नी और कुछ ब्राह्मणों के साथ पढंरपुर जा रहे थे। पढंरपुर एवं नरसिंघपुर के बीच में नदी तेज़ प्रवाह के साथ बह रही थी। वर्षा ऋतु और रात का समय तीसरा नदी का तेज़ प्रवाह, पर उन्हें किसी भी दशा में पढंरपुर पहुंचना था। उन्होंने विचार किया जब राम का नाम भव सागर से पार कर सकता है तो इस नदी से क्यों नहीं हमें पार करेगा। नाम में विश्वास रखकर उन्होंने राम नाम उच्चारते नदी में प्रवेश किया। उन्होंने अनुभव किया कि वे नदी के पानी पर ऐसे चल रहे हैं जैसे सूखी भूमि पर। वे आसानी से पढंरपुर पहुंच गये और श्री विठ्ठल भगवान के दर्शन कर प्रसन्न हुए। श्रद्धा एवं विश्वास से ही नाम के द्वारा कार्य सिद्ध होते हैं।

स्वामीजी ने स्वामी श्रीकृष्ण गिरि से ज्ञान गोष्ठी की। १७ जनवरी १९४५ वे कोइटिया बलोचस्तान में पधारे। प्रेमियों ने स्वामीजी का हार्दिक स्वागत किया। वहां स्वामीजी ने दस बारह दिन सत्संग वर्खा की। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा व्यवहार एवं परमार्थ के मार्ग दर्शन के लिये गुरु की अत्यन्त आवश्यकता है, किन्तु गुरु ज्ञानवान, परिपूर्ण, भक्त एवं त्यागी होना चाहिए, जो इस संसार से पार लगा दे। तत्वा एवं जीवा दो भाई थे। उन्होंने अपने घर के बाहर एक

सूखी लकड़ी जमीन में गाड़ कर प्रतिज्ञा की कि जिस संत के चरण जल से यह लकड़ी हरी होगी, हम उसे अपना गुरु बनायेंगे । उन दोनों भाईयों ने आठ दस संतों का संग कर अलग अलग समय पर उनके चरणों को धोकर उसी जल को लकड़ी पर डाला किन्तु लकड़ी हरी नहीं हुई । उन्होंने संत कबीर का यश सुना और वे उनके पास आये उस समय संत कबीर कपड़ा बुन रहे थे । कबीर ने उनके आने का कारण पूछा । दोनों भाइयो ने संत कबीर को प्रणाम करते हुए अपनी इच्छा प्रकट की । संत कबीर ने कहा "मेरे चरणों में कुछ नहीं" प्रभु सर्वत्र व्यापक है, उसका स्मरण करें तो तुम्हें शांति मिलेगी। प्रभु के चरण कमल का ध्यान करें । मेरे चरण धोने से तुम्हें क्या मिलेगा ?" दोनों भाइयों ने बड़ी निष्ठा के साथ संत कबीर के चरण जल से धोकर वही जल अपने साथ ले आये । उसी जल को उन्होंने सूखी लकड़ी पर डाला तो वह लकड़ी तत्काल ही हरी हो गई । यह देखकर दोनों भाई अत्यन्त प्रसन्न हुए और वे संत कबीर के चरणों में नत-मस्तक होकर उनके शिष्य हुए । संत कबीर जैसे सन्तों का चरणामृत सूखी लकड़ियों को भी हरा बना देता है, दुख दर्द मिटाता है । श्री गुरु अर्जुन देव साहब श्री सुखमनी में कहते हैं-

चरन साध के धोइ धोइ पीउ ।
अर्प साध को अपना जीउ ।।

स्वामीजी ने नाम की महिमा का वर्णन करते हुए कहा-

कामधेनु अर कल्पतरू चिन्तामणि हरिनाम ।
कह टेऊं जहं सेवते पूर्ण हो वे काम ।।

राम नाम में बड़ी शक्ति है । राम का नाम कल्पवृक्ष एवं चिन्तामणि की भांति सभी इच्छाओं को पूर्ण करने वाला है, कवि कालिदास प्रारम्भ में अत्यन्त अज्ञानी था । एक बार वो जंगल में लकड़ियां काटने के लिए गया । वह वृक्ष की उसी डाली को काट रहा था जिस डाली पर वह स्वयं खड़ा था ऐसा अज्ञानी मनुष्य काली माता की उपासना करने से न केवल भारत का किन्तु विश्व का महान कवि बन गया। ऋषि वाल्मिकी जो पहले रत्नाकर नाम से विख्यात डाकू था, राम नाम के स्मरण से वह डाकू भारत का आदि कवि एवं महान ऋषि

हुआ । यह सब नाम स्मरण का प्रताप है । इसलिए प्रेमियो! श्रद्धा एवं विश्वास के साथ नाम स्मरण करें ।

दादू-पंथी संत कवि स्वामी नारायणदास जिन्होंने कई ग्रन्थों की रचना की है, उसे बाल्यावस्था में उनके गुरु उनसे दादूराम दादूराम धुनि लगवाते थे । धुनि लगाने के बाद उसे दूध देते थे । बालक नारायणदास नौ वर्ष के थे तो उनके गुरु ब्रह्मलीन हुए । 'दादूराम दादूराम' ही बालक नारायणदास के जीवन का एक सहारा था । उठते बैठते वे वही धुनि लगाते थे । ऐसे नाम उच्चारण से उनके मुख से काव्य सरिता प्रवाहित हुई । उन्होंने कहीं छंद शास्त्र की शिक्षा ग्रहण नहीं की ।

प्रेमियो । व्यवसाय या नौकरी करते हुए प्रभु को नहीं भुलाओ । बार बार नाम का स्मरण करने से आत्मिक शक्ति बढ़ेगी ।

एक दिन पूज्य स्वामीजी ने निष्काम दान के विषय में प्रवचन करते हुए कहा कि निष्काम दान का बड़ा महत्व है और फलदायक है । कई लोग अपने यश के लिए दान करते हैं, वह भी अच्छा किन्तु निष्काम दान अधिक महत्त्वपूर्ण है । यशस्वी दानवीर को तो यश रूपी फल जाता है। श्री बिहारीलाल धनवान थे, उनकी दान में भी रुचि थी, कोई भी याचक निराश होकर नहीं लौटता था । अचानक भाग्य में परिवर्तन आया, वह बिहारीलाल धनवान से निर्धन बन गया । वह बीमारी के कारण कमजोर भी हो गया इसलिए उसकी पत्नी जमनाबाई मजदूरी करके गृहस्थी चलाती थी, एक ब्राह्मण अपनी पुत्री के विवाह के सम्बन्ध में सहायतार्थ इसी गांव में आया । गांव के दुष्ट लोगों ने उस ब्राह्मण को श्री बिहारीलाल के पास सहायता के लिए भेजा। ब्राह्मण ने जब याचना की तो बिहारीलाल की आंखों में आंसू आ गये । बिहारीलाल समझ गये कि किसी दुष्ट ने उसकी हंसी उड़ाने के लिए ब्राह्मण को उसके पास भेजा है । बिहारीलाल गरीब होते हुए भी ब्राह्मण को निराश लौटाना नहीं चाहता था । उसने ब्राह्मण से कहा "आप ठहरिये, मेरी पत्नी बाहर गई है, आप के लिए कुछ न कुछ अवश्य करेंगे ।" थोड़े समय के पश्चात् बिहारीलाल की पत्नी आ गई । बिहारीलाल की पत्नी का गरीब वेष देखकर ब्राह्मण आश्चर्य में पड़ गया और मन ही मन विचार करने लगा कि ये स्वयं गरीब

लोग उसे क्या सहायता करेंगे ! इनसे कुछ लेना भी निर्दयता है। बिहारीलाल की पत्नी जमनाबाई ने पति का संकेत पाकर अपने बाहों की दोनों सोने की चूड़ियां उतारकर ब्राह्मण को अर्पण कर दी। ब्राह्मण, पति पत्नी को आशीर्वाद देकर चला गया। बिहारीलाल भी स्वस्थ हो गया। उस नगरी के राजा की बहन को किसी योगी ने दो यन्त्र दिये थे। एक यन्त्र किसी के पुण्यों को दिखाता था दूसरे यन्त्र द्वारा कोई भी अपने पुण्य देख सकता था। राजकुमारी ने ढिंढोरा पिटवाया कि जो कोई अपने पुण्य बेचना चाहे, तो मैं खरीद करूंगी। यह घोषणा सुनकर बिहारीलाल अपने पुण्य कर्म उस राजकुमारी को बेचने के लिए घर से निकला और रास्ते में खाने के लिए अपने साथ सत्तू लिया। रास्ते में जब उसे भूख लगी तो एक तालाब के नज़दीक सत्तू खाने के लिए बैठ गया। अचानक वहां एक ब्याई हुई कुतिया आ गई। बिहारीलाल के मन में दया भावना थी, उसने सत्तू स्वयं न खाकर उस कुतिया को खिलाकर स्वयं थोड़ा जल पीकर राजकुमारी के पास आया। उसने राजकुमारी से कहा कि उसने जीवन भर शुभ कर्म एवं दान किया है, वह पुण्य बेचने आया है। जब राजकुमारी ने यन्त्र में उसके पुण्य देखे तो उसे उसके दो ही पुण्य कर्म दिखाई दिये, क्योंकि बिहारीलाल ने अन्य शुभ कर्म कीर्ति के लिए किये थे। यह सुनकर बिहारीलाल निराश हो गया। राजकुमारी ने कहा अब तुम इस दूसरे यन्त्र में अपने पुण्य कर्म देखो। बिहारीलाल को उस में एक चूड़ियों का दान और दूसरा ब्याई कुतिया को सत्तू खिलाने का पुण्य कार्य दिखाई दिये। राजकुमारी उसे इन दो पुण्य कार्यो के लिए दस लाख मुद्राएं देने लगी किन्तु उसने मुद्राएं नहीं ली। इतने में राजा भी वहां आ गया। राजा ने बिहारीलाल को पहचाना, उसने बिहारीलाल से पहले लिया हुआ कर्ज ब्याज सहित मुद्राओं के रूप में लौटाया। बिहारीलाल फिर धनवान हो गया। बिहारीलाल ने सत्तू एवं चूड़ियां किसी भी फल की इच्छा से नहीं दीं थी, इसलिए उसके ये दो पुण्य कर्म फलीभूत हुए। प्रेमियो! आप भी निष्काम भावना से दान पुण्य एवं सेवा कार्य करें। नाम स्मरण भी निष्काम भावना से करना चाहिए।

३० जनवरी पूज्य स्वामीजी रुस्तम में पधारे। वहां स्वामीजी ने एक सप्ताह प्रवचन किया। वहां स्वामीजी ने निष्काम सेवा का वर्णन

करते हुए कहा-

श्रद्धा से सत्संग कर, सेव करो निष्काम।
कह टेउँ तेरे सभी, होवे पूंर्ण काम ।।

सत्गुरु, संतों-महात्माओं की सेवा महान फलदायक है, जिज्ञासु को श्रद्धा व विश्वास से सेवा करनी चाहिए। एक माता बड़ी श्रद्धा व निष्ठा के साथ अपने सत्गुरु की सेवा करती थी। एक बार हरिद्वार में कुम्भ का मेला था। उसकी इच्छा थी कि वह परिवार के साथ हरिद्वार कुम्भ मेला में गंगा मैया में डुबकी मारे। उसने हरिद्वार जाने के लिए गुरु से आज्ञा मांगी। गुरु ने उसे कहा "माताजी। तुम यहां ही सेवा करती रहो, यहां ही तुम्हारा गंगा स्नान हो जाएगा। वह माता गुरु की आज्ञानुसार वहां ही सेवा में रही, परिवार के शेष सदस्य हरिद्वार कुम्भ मेला में गये। अमावस के दिन वह माता गांव वाली नदी में नहाने गई। तो उसने जब नदी में प्रवेश किया, तो उस नदी का जल गंगा जैसा ठण्डा एवं निर्मल! उसने ऐसा अनुभव किया जैसे वह गंगा में डुबकी मार रही है। जैसे ही उसने मुख से "जय गंगे जय गंगे" कहा तो उसके हाथ में स्वर्ण की अगूंठी आ गई। नदी से नहाकर जैसे वह बाहर आई तो देखा कि वह अंगूठी तो उसकी बहू की है, वह आश्चर्य में पड़ गई। वह माता गुरु के पास आई और सारी बात बताई, गुरु ने कहा, माताजी तू गंगा मैया के पास नहीं गई, गंगा मैया तेरे पास आ गई। संतो, सत्गुरुओं की आज्ञा मानने एवं सेवा का बड़ा फल मिलता है। कुछ दिन बाद उस माता का बेटा एवं बहू हरिद्वार से लौट आये। तब बहू ने बताया कि अमावस के दिन गंगा नदी में डुबकी लगाते हुए उसकी अंगूठी, गंगा में गिर पड़ी सास ने कहा, "बहू! घबराओ नहीं, लो अपनी अंगूठी, गंगा मैया ने तुम्हारी अंगूठी यहां दे दी। माता ने सारा वृत्तान्त बताया कि अमावस की प्रात: काल को डुबकी मारते कैसे उस नदी का पानी शीतल व निर्मल हो गया और उसे हाथ में अंगूठी मिल गई।

६ फरवरी स्वामीजी 'चक्क' में पधारे वहां स्वामीजी ने एक सप्ताह सत्संग बर्खा की। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि भक्त लोग एक प्रभु का ही भरोसा रखते हैं और संसारी लोगों को कितनी भी

माया एवं माया के पदार्थ हों फिर भी प्रसन्न नहीं होते । भक्त लोग सदैव प्रसन्नचित्त रहते हैं । संसारी लोग रात-दिन माया के पीछे भटकते हैं । एक मारवाड़ी सेठ ने मुनीम से कहा कि हिसाब करके बताओ कि हमें कितना धन पदार्थ है? दस बारह दिन के बाद मुनीम ने कहा सेठजी, आपके पास इतना धन एवं पदार्थ है कि आपकी ग्यारह पीढ़ियां आराम से जिंदगी बसर कर सकती हैं । यह सुनकर सेठजी चिंतित हुए । मुनीब ने पूछा, सेठजी इतनी माया एवं पदार्थ होते हुए भी आप क्यों चिंतित हुए हैं । सेठ ने चिंतित स्वर से कहा "मेरी बारहवीं पीढ़ी का क्या होगा?" कितनी विडम्बना! कितनी मुर्खता! इतने धन एवं पदार्थों के होते हुए भी सेठ अपनी बारहवीं पीढ़ी की चिन्ता करने लगा, जब कि वह स्वयं ही नहीं होगा । शायर ने ठीक कहा है-

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं ।
सामान सौ बरस का, पल की खबर नहीं ।।

सासांरिक लोग न केवल अपनी बल्कि अपनी संतान की कितनी व्यर्थ चिन्ता करते हैं । अपना सुखी जीवन दुखी बनाते हैं । प्रभु के भक्त अपने खाने पीने की भी चिन्ता नहीं करते । सिन्ध में एक फकीर था, वह अपने मुरीदों से कहता था कि जो पकी पकाई खाने की वस्तुएं हैं कल के लिए मत रखो, बांट दो । पानी के घट भी खाली कर दो । कल के लिए कल देखा जायेगा ।

१३ फरवरी स्वामीजी भरकण में पधारे । वहां स्वामीजी ने तीन दिन सत्संग प्रवचन किया । स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि संतों की जिव्हा, हाथों में, ऋद्धि सद्धि होती है किन्तु वे दिखावा नहीं करते । एक गांव में संत जीवणदास रहते थे । प्रतिदिन एक माता उनके लिए भोजन तैयार कर ले आती थी । एक दिन उस माता के घर में अनाज नहीं था, संत को यह ज्ञात हुआ । उन्होंने उसी माता को बुलाकर पांच मुठ्ठियां अनाज भरकर उसे देते हुए कहा कि यह अन्न तू अपनी घर की अन्न-पोटली में डाल दो, उसके ऊपर का मुंह बंद कर दो ओर उसके नीचे से प्रति दिन अन्न निकालती रहना । वह माता संत की आज्ञानुसार प्रतिदिन उस पोटली से अन्न निकालकर भोजन बनाती थी । उस माता की तीन पीढ़ियां उस पोटली का अन्न

खाती रहीं और संतों-महात्माओं को भी भोजन खिलाते रहे संत कृपा से पांच मुठ्ठी अन्न वर्षों तक चलता रहा।

प्रेमियो! संतों महात्माओं में पूर्ण विश्वास धारण कर नाम स्मरण करें। किसी न किसी संतकी शरण जरूर लेनी चाहिए।

संत शरण जो जन पड़े सो जन उधरन हार

१६ फरवरी पूज्य स्वामीजी खाही गांव में पधारे। स्वामीजी ने वहां प्रवचन करते हुए कहा-

कह टेऊँ पावन सदा, तन मन बानी जास।
समदृष्टि निर्मोह नित, साधू कहिये तास॥

सच्चे संत सम-दृष्टि एवं करुणा के रूप होते हैं। उनका तन मन पवित्र होता है वे मोह ममता से दूर होते हैं। एक अंधेरी रात को संत गदाधर के घर में एक चोर चोरी करने आया, घर का माल इकठ्ठा कर बांध लिया, किन्तु वह चोर बोरी नहीं उठा पा रहा था, इतने में संत गदाधर भी नींद से जाग उठे, संत को जागृत देखकर चोर उस बोरी को छोड़कर भागने लगा। तब संत गदाधर ने उसे रोकते हुए कहा ''प्यारे! यदि यह बोरी तू नहीं उठा पा रहा है तो मैं तुम्हें उठाने में सहायता करता हूं। तू सारी रात नींद न कर अंधेरे में यहां आये हो कुछ तो ले जाओ। तुम्हें इन वस्तुओं की आवश्यकता होगी, तब तुम चोरी करने आये हो। भागो नहीं आसानी से माल ले जाओ। संत के आग्रह पर वह चोर वह माल की बोरी घर में तो ले आया किन्तु थोड़े ही समय के बाद वह चोर चोरी की हुई सारी वस्तुएं संत गदाधर के पास लौटाकर ले आया और संत गदाधर के चरणों पर गिर पड़ा, क्षमा-याचना के आंसू उसकी आंखों में थे। उसका हृदय परिवर्तन हो गया। संत ने उस चोर को गले लगाया। संत के मधुर वचनों ने चोर को साधू बना दिया।

प्रेमियो! जो बीत गया उसकी चिन्ता छोड़कर पश्चात्ताप कर सत् मार्ग पर चलने का प्रयास करें। सत् कर्मों से ही तुम्हारा कल्याण होगा बहुत जन्म तुम भटके हो, अब प्रभु कृपा से तुम्हें मानव जीवन मिला है, उसे व्यर्थ नहीं गंवाओ।

बड़े भाग मानुष तन पाया, कौड़ी मोल तूने उसे गंवाया ।।

१९ फरवरी, स्वामीजी बागड़जी में आये । वहां स्वामीजी ने दान के विषय पर प्रवचन करते हुए कहा-

काम करो विचार के, नाम जपो चित्त लाय ।
दान करो दिल खोल के, कह टेऊँ सुख पाय ।।

प्रेमियो! कोई भी कार्य करो तो सोच विचार के करो । नाम का स्मरण तन्मयता से करो और यदि दान करना हो तो दिल खोलकर दान करो । संत कबीर भी कहते हैं-

पानी बाढ़े नाव में घर में बाढ़े दाम ।
दोनों हाथ उलीचिये यही सज्जन का काम ।।

कर्ण महादानी थे । यदि किसी को दान करना सीखना हो तो कर्ण से सीखे । महाभारत के युद्ध के समय श्री सूर्य देवता ने कर्ण से कहा था, श्री इन्द्र देवता तुम्हारे पास आयेंगे और तुमसे कवच व कुंडल देने की याचना करेंगे, यदि ये वस्तुएं तुम उन्हें दे दोगे तो तुम्हारा अन्त हो जायेगा । यह सुनकर कर्ण ने कहा, 'महाराज'! मेरी कितनी भी हानि हो, तब भी मैं किसी याचक को निराश नहीं लौटाता । कुछ समय के पश्चात् श्री इन्द्र देवता उनके पास आये और उनसे कवच एवं कुंडल की मांग की । कर्ण ने प्रसन्न होकर अपना कवच एवं कुंडल उतारकर श्री इन्द्र को दिये । उन्होंने अपने जीवन की कोई चिन्ता नहीं की । कितने महान दानी थे कर्ण ।

युद्ध क्षेत्र में जब कर्ण भूमि पर गिर पड़ा था उसी समय भगवान श्री कृष्ण उनकी परीक्षा लेने एक बूढ़े ब्राह्मण के रूप में वहां उनके पास याचना के लिए आये । कर्ण ने नम्रता के साथ कहा, "महाराज! अब तो मेरे पास कुछ भी नहीं है, आप को क्या दूं?" बूढ़ा ब्राह्मण बोला "कर्ण । तुम्हारे दातों पर स्वर्ण लगा हुआ है, वह स्वर्ण उतारकर दे दो ।" कर्ण ने मृत्यु अवस्था में भी अपने दातों से स्वर्ण उतारकर उस याचक ब्राह्मण को दिया । तब भगवान श्रीकृष्ण ने कर्ण को साक्षात् दर्शन देते हुए उसकी दानवीरता के लिए उसे धन्यवाद दी । प्रेमियो! तुम भी दान करने में संकोच नहीं करो । दिल खोलकर दान करो।

जो कुछ माया एवं पदार्थ हैं वे प्रभु की धरोहर हैं, उसे अपनी समझना मूर्खता है।

२९ फरवरी पूज्य स्वामीजी ने नापुरनि में प्रवचन करते हुए कहा कि साधक को नियमों का पालन करना चाहिए। साधना करते कुछ रुकावटें आयेंगी, उनकी चिन्ता नहीं करो। जो भी कष्ट एवं विपदाएं आयेंगी प्रभु उनको दूर कर देंगे, घबराओ नहीं। बैबलबाई प्रभु की भक्ति करती थी। वह पहले किसी न किसी संत को भोजन खिलाकर फिर स्वयं भोजन खाती थी, यह उसका नियम था। बैबलबाई जिस नगर में रहती थी वहां के राजा के पास एक डाकू साधु के भेष में आकर ठहरा। राजा ने बड़ी श्रद्धा के साथ उस संत की सेवा की। राजा का शिशु स्वर्ण-आभूषण पहने हुए था। वह संत स्वर्ण के लालच से उस शिशु को उठाकर ले गया। फिर तो सारे नगर में ग़म की घटाएं छा गई राजा के सिपाहियों ने शिशु को ढूंढने का बहुत प्रयास किया। किन्तु शिशु नहीं मिला। राजा ने क्रोधित होकर आदेश दिया कि कोई भी साधु-संत उनके राज्य सीमा में प्रवेश नहीं करे। यदि कोई भी नगरवासी किसी संत को अपने पास ठहरने देगा या खाना खिलाएगा उसे दंडित किया जायेगा। उस राज्य में साधु-संतों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगाया गया इसलिए कोई भी साधु-संत उस नगर में नहीं आता था। बैबलबाई अपने नियम से विचलित होना नही चाहती थी, इसलिए उसने कई दिन भोजन नहीं खाया। भगवान अपने भक्तों का दुख सहन नहीं कर सकता। भगवान एक साधु की वेश-भूषा में उसके घर में पधारे। बैबलबाई अपने घर में संत को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुई। राजा के सिपाहियों ने उस संत को घर में प्रवेश करते हुए देखा था इसलिये वे उस घर के बाहर खड़े रहे कि जैसे ही संत घर से बाहर निकलेगा वैसे ही उसे पकड़कर राजा को सौंप देंगे। बैबलबाई ने बड़ी श्रद्धा एवं प्रेम के साथ उस संत को भोजन खिलाया। भोजन के पश्चात् वह संत जैसे ही घर से बाहर निकला तो सिपाहियों ने उसे पकड़ने का प्रयास किया किन्तु वे विफल रहे, वह संत तो स्वयं भगवान था, अंतर्ध्यान हो गया। सिपाही यह चमत्कार देखकर आश्चर्य में पड़ गये और बैबलबाई के घर में अंदर जांच करने लगे कि अन्य कोई संत साधु तो उनके घर में नहीं छिपा है। सिपाही निराश होकर

राजा के पास आये। उन्होंने यह घटना राजा को सुनाई। राजा ने क्रोधित होकर बैबलबाई के दोनों हाथ कटवाकर उसे बालक सहित राज्य से निकाल कर जंगल में भेज दिया।

जंगल में बालक को प्यास लगी, सामने नदी थी, बैबलबाई बालक की प्यास पूरी करने के लिए उसे अपनी बांहों से नदी के किनारे ले गई, बालक जैसे ही पानी पीने लगा तो वह नदी में गिर पड़ा। वह बाहों से बालक को निकाल न सकी, किन्तु करुण स्वर में कहने लगी "प्रभु! तुमने मेरा घर छीना, हाथ भी ले लिए, केवल मेरी आंखों का तारा, मेरे साथ था, वो भी तूने अब छीन लिया! अब बस ! मुझे तुम्हारे दर्शन की ही प्यास है।

कर काटा घर भी लूटा, छूटा नगर का वास।
बैबलबाई यूं कहे, राम तुम्हारी आस॥

बैबलबाई ने जैसे ही करुणा स्वर एवं अश्रुयुक्त आंखों से प्रभु को प्रार्थना की तो दोनों हाथ उसे मिल गये, वह आश्चर्य में पड़ गई, तुरन्त उसने अपने हाथों से अपने बालक को नदी से बाहर निकाला। प्रभु अपने भक्तों की पुकार अवश्य सुनता है और उनके दुख दर्द भी दूर करता है किन्तु पूर्व जन्मों के किसी न किसी अशुभ कर्म के कारण भक्त को भी पीड़ा सहन करनी पड़ती है।

बैबलबाई उसी जंगल में अपने बालक के साथ रहने लगी, फल आहार कर शेष समय में भगवत् भजन करती थी। एक दिन वही राजा जंगल में घूमते घूमते वहां पहुंचा, राजा बैबलबाई को हाथों सहित देखकर आश्चर्य में पड़ गया और उससे पूछा कि तुम्हारे हाथ तो कटवा दिये थे, ये हाथ फिर कैसे आये? बैबलबाई ने घटित घटना राजा को सुनाई। राजा, बैबलबाई की घटना सुनकर बहुत प्रभावित हुआ और उसने महसूस किया कि बैबलबाई प्रभु की भगतिन है। राजा पश्चात्ताप कर उसे बालक सहित अपने नगर में ले आये और उसे अपनी बहन के रूप में राज महल में निवास दिया। साथ साथ उसे कहा कि राज्य की ओर से तुम संतों महात्माओं को प्रतिदिन खिलाती रहो, उनकी सेवा करती रहो तुम्हारा बालक मेरा बालक है, चिन्ता नहीं करो।

प्रेमियो! प्रभु के प्रेमियों को कितने न कष्ट झेलने पड़ते हैं। परन्तु अन्ततः आनंद की उपलब्धि होती है। इसलिए साधना पथ में घबराओ नहीं, संतो की सेवा करते रहो।

२४ फरवरी पूज्य स्वामीजी ठोड़हन गांव में आये। वहां स्वामीजी ने चार दिन प्रवचन किया। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

गफलत में न गंवाइये, मानुष देह महान।

कहं टेऊँ तुम जागके, भज ले श्री भगवान ॥

प्रेमियो। मानव जीवन व्यर्थ मत गंवाओ। अज्ञान की नींद से जाग्रत होकर भगवद्-भजन करो। अपने अमूल्य श्वास स्मरण में सफल करो। नदी के किनारे एक सज्जन का खेत था, एक बार नदी में बाढ़ आने के कारण खेत में भी नदी का पानी उमड़ पड़ा। उस पानी में एक हीरों से भरा बर्तन भी खेत में आ गया, बाढ़ कम हो गई तो वह हीरों वाला बर्तन खेत में रह गया। गंवार उन हीरों को रंगीन पत्थर समझकर नदी में फेंकता गया।उसका बेटा खेलने के लिए एक पत्थर घर में लाया घर में नमक नहीं था और पैसे भी नहीं थे। गृहणी वह पत्थर मूल्यवान समझकर बाजार में नमक लेने गई। नमक वाले की दुकान पर जौहरी भी बैठा था, उसने उस स्त्री के हाथ में वह अमूल्य हीरा देखकर कहा कि तुम्हें जो वस्तुएं चाहिये मैं लेकर देता हूं यह पत्थर मुझे दे दो। उस किसान की पत्नी यह सुनकर बहुत खुश हुई उसने जो वस्तुए मांगी जौहरी ने वे वस्तुएं खरीद कर उसे दे दी और वह हीरा ले लिया। जब वह किसान की पत्नी इतनी सारी वस्तुएं घर ले आई तो पति ने पूछा कि ये कैसे खरीदीं? पत्नी ने बताया कि बालक जो पत्थर खेत से लाया वह अमूल्य रत्न था, ये सब वस्तुएं जौहरी ने उसके बदले में मुझे खरीदकर दी हैं यह सुनकर वह किसान रोने लगा कि उसने उन हीरों को पत्थर समझकर नदी में फेंक दिया। "अब पछताये होत क्या! जब चिड़ियां चुग गई खेत!" हम भी उस गंवार किसान की भांति अपने श्वासों रूपी हीरे जवाहरात व्यर्थ गंवा रहे हैं! हमें भी उस मूर्ख की भांति रोना पड़ेगा। प्रेमियो! सत्कर्मो में श्वास सफल करें। नाम स्मरण एवं सेवा ही सत्कर्म हैं।

१ मार्च पूज्य स्वामीजी अमरापुर स्थान पर लौट आये। स्वामीजी

पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज को सादर प्रणाम कर मंडल के अन्य संतों से मिले । स्वामीजी तीन महीने वहीं सत्संग सेवा करते रहे ।

प्रेम प्रकाश मंडल के वार्षिक उत्सव पर स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊंराम महाराज ने मंडल के सभी संतों, अन्य महात्माओं एवं प्रेमी जिज्ञासुओं के मिलाप के लिए ही इस उत्सव का श्री गणेश किया । सत्गुरु महाराज की आप प्रेमियो एवं मुझ दास पर कितनी न अनुकम्पा रही । सत्गुरु महाराज ने इस भव सागर से तैरने के लिए हमें 'श्री सत्नाम साक्षी' का मंत्र दिया। इस मंत्र की साधना करें । पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊंराम महाराज प्रतिदिन अधिक से अधिक समय भगवद्-भजन में सफल करते थे, हम भी उनके द्वारा बताए मार्ग पर चलने का प्रयास करें ।

कह टेऊँ गुरु-मंत्र को, जपले बारम्बार ।
जगत् भाव को भूलकर, पाओ मोक्ष द्वार ।।

सांसारिक व्यवहार का परित्याग कर, एकाग्रचित्त होकर नाम स्मरण करने से मुक्ति मिलेगी, आत्म साक्षात्कार होगा ।

बाहर हरि ना खोजिये, अंतर ही लिंव लाय ।
गुरु-मंत्र अभ्यास ते, कह टेऊँ तहं पाय ।।

२५ मई से २ जून तक स्वामी माधवदास के स्थान हैदराबाद में सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज की पुण्य तिथि मनाई गई । सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज, स्वामी गुरुमुखदास, स्वामी बसंतराम, स्वामी माधवदासजी ने सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित की। स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज के गुणों का वर्णन करते हुए कहा कि सत्गुरु महाराज ने आत्मज्ञान की औषधि द्वारा कई लोगों का कल्याण किया । उन्होंने नाम स्मरण के साथ-साथ परोपकार के कार्य भी किये । ब्रह्मलीन होने के पहले ही उन्होंने इस स्थल पर सत्संग करते हुए, स्थूल शरीर त्यागने का संकेत, यह भजन गाते हुए दिया था-

जोगी हैं अब जावण वाले, प्रेम पिलावण वाले ।
मोहन वाली मुरली बजाकर, मस्त बनावण वाले ॥
जोगियों आगे बैठ अभी तुम, जो कुछ पाना पाले ।
ऐसे जोगी फिर नगरी में मुश्किल आवण वाले ॥
जन्म जन्म के कर्म फले जब, तब ही जोगी मिलते ।
भव सागर से जीवों को ये, पार तरावण वाले ॥
पूर्व देश के जोगी हैं ये, जोग की जुगति सिखाते ।
सुरति शब्द का घट ही भीतर, मेल मिलावरण वाले ॥
ब्रह्मज्ञान का नाद बजाकर, सोये जीव जगावन ।
कहे टेऊं दे सत् उपदेशा, भ्रम मिटावण वाले ॥

प्रेमियो ! दास पर भी गुरु महाराज की असीम कृपा रही, सत्गुरु महाराज प्रेमियो की मनोकामना पूर्ण करते थे किन्तु दिखावा नहीं करते थे । एक बार मोदी मूलचन्द गुरु महाराज के पास आया और प्रार्थना की "सत्गुरु महाराज! मैंने बाजरा का् सट्टा किया था, पांच हजार मन बाजरा देनी है । मारवाड़, कच्छ, भुज एवं थर में इस वर्ष वर्षा न होने के कारण भव बढ़ गये हैं । आप दया दृष्टि करें अच्छी वर्षा हो, नहीं तो मेरी बड़ी हानि होगी । कृपया मेरी समस्या का आप ही समाधान करें, मैं विवश हूं ।" सत्गुरु महाराज ने कहा, भविष्य में सट्टे का काम मत करना, भगवान भला करेगा ।" सत्गुरु महाराज ने उसी समय सुर सारंग में एक भजन गाया, इतने में अचानक घनघोर घटाएं छा गई और वर्षा हुई । मारवाड़, कच्छ, भुज एवं थर में इतनी तो अच्छी वर्षा हुई कि बाजरा की फसल बहुत ही अच्छी हुई ।

सत्गुरु महाराज की कृपा से मूलचन्द मोदी को बाजरा के व्यापार में हानि के स्थान पर लाभ हुआ, श्री मूलचन्द को इस व्यापार में जितना भी मुनाफा हुआ, वह मुनाफा उसने गुरु महाराज के चरणों में भेंट करते हुए कहा कि इन पैसों से संतों की कुटियाँ बनाइये । सत्गुरु महाराज ने उसकी प्रार्थना स्वीकार की । प्रेमियो! आप भी विश्वास रखकर गुरुजनों के पास आओ तो तुम्हारी शुभ मनोकामनाएं पूरी होंगी।

८ जून स्वामीजी सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से आशीर्वाद

लेकर पीरगोठ में आये। वहां संत आत्म प्रकाश के स्थान पर स्वामीजी ने दस बारह दिन सत्संग वर्खा की। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि संसार से मुक्त होने के लिए एवं प्रभु प्राप्ति के लिए संतो, महात्माओं ने कई उपाय सुभाये हैं। उन उपायों में से वैराग्य विशेष उपाय है। वैराग्य का अर्थ है सांसारिक पदार्थों में आसक्ति न होना। जब जगत् से प्रीति हट जाती है तब स्वयं प्रभु में प्रीति बढ़ती है। जैसे किसी नगर की ओर जाने से दूसरा नगर भूल जाते हैं, वैसे यदि हम प्रभु प्राप्ति के पथ पर बढ़ेंगे तो म माया से दूर होते जायेंगे। जैसे-जैसे हम प्रभु के नजदीक होते जायेंगे वैसे वह हमें अधिक प्यार करेंगे। जब बेटा मां की गोद में बैठ जाता है, तो वह खेल कूद भूल जाता है, तब मां उसे कितना न प्यार करती है। हम भी माया के खेल का परित्याग कर प्रभु की शरण लें तो परमात्मा हमें अवश्य ही प्यार करेंगे। वैरागी मनुष्य संसार में रहते हुए भी माया के प्रपंच में नही फंसता। गोस्वामी तुलसीदास कहते हैं-

जो जन रुखे विषय रस, छकने राम स्नेह।
तुलसी ते प्रिय राम को, कानन रहैं कि गेह।

जिस के मन में वैराग्य है वह जंगल में रहे अथवा घर में, उसके मन में शान्ति रहेगी। श्री गुरु तेगबहादुरजी अपनी वाणी में कहते हैं कि जिन के मन में वैराग्य की भावना है वे भाग्यशाली हैं।

जिह बिख्या सगली तजी, लीओ बेख बेराग।
कहु नानक सुन रे मना, तह नर माथे भाग॥
जिह माया ममता तजी, सब ते भयो उदास।
कहु नानक सुन रे मना, तिह घट ब्रह्म निवास॥

वैराग्य के कारण भगवान में अधिक प्रीति लगती है। सभी सुख वैभव में समाहित हैं। वैरागी अधिक तपस्या कर सकता है। वह तेजस्वी भी होता है। कवि कहते हैं-

सर्व सुख वैराग्य में, तेज तपस्या मांहि।
भक्ति में प्रीति बढ़े, मुक्ति ज्ञान बिन नाहिं॥

जीव को मोह के बंधन तोड़कर प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ना चाहिए। संसार में रहकर भी माया के वशीभूत न रहें । स्वामीजी ने दूसरे दिन प्रवचन करते हुए कहा कि मनुष्य को पुरुषार्थ करना चाहिए, व्यवहार अथवा परमार्थ में सफलता के लिए पुरुषार्थ करना अत्यन्त आवश्यक है । संत मलूकदास कहते हैं-

अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम ।

दास मलूका कह गये, सभ के दाता राम ॥

एक गांव में एक ज्योतिषी आया, उसने गांव वालों से कहा कि इस वर्ष वर्षा नहीं पड़ेगी। उस गांव के किसानों ने ज्योतिषी के कथनानुसार खेतों में बीज नहीं बोये । उन्होंने विचार किया यदि इस वर्ष वर्षा नहीं होगी तो बीज क्यों व्यर्थ गंवाएं, क्यों बैलों को कष्ट दें । उस गांव का एक किसान पुरुषार्थी था, उसने अपने खेत में बीज बोये, हल चलाया । खेत में काम करते हुए, किसान से बादल ने पूछा तुम्हें ज्ञान है कि वर्षा नहीं पड़ेगी फिर भी क्यों इतना परिश्रम करते हो? किसान ने उत्तर देते हुए कहा "ज़मीन में बीज बोना और हल जोतना मेरा कर्त्तव्य है मैं अपने कर्तव्य का पालन कर रहा हूं, तुम जल बरसाने का कर्त्तव्य पूरा नहीं करो तो तुम्हा इच्छा!" बादल ने किसान का यह उत्तर सुनकर शीघ्र ही वर्षा की, वर्षा होने के कारण उस किसान का खेत हरा भरा हो गया । उसे परिश्रम का फल मिल गया । गांव के दूसरे किसान ज्योतिषी के कहने से कर्त्तव्य विमुख हुए तो उन्हें फलभी नहीं मिला । प्रेमियो ! तुम भी संसार रूपी खेत में सत्कर्मों के बीज बोओ तो तुम्हें आत्मिक आनंद की उपलब्धि होगी। यदि तुम प्रभु प्राप्ति के पथ पर चलोगे तो कभी न कभी प्रभु के पास पहुंच जाओगे ।

२० जून पूज्य स्वामीजी लाड़कनि में पधारे । वहां उन्होंने एक सप्ताह सत्संग वर्खा की, स्वामीजी ने प्रेम भक्ति विषय पर प्रवचन करते हुए कहा-

प्रेम जगत् में बहुत है, प्रेम बिना नहिं कोय ।

टेऊँ साचा प्रेम सो, जो हरि ही से होय ॥

संसार में प्रेम कई प्रकार का है किसी को किस के लिए प्रेम होता है तो किसी को किसके लिए। परन्तु सच्चा प्रेम तो केवल परमात्मा का प्रेम होता है। प्रेमा भक्ति में विस्मृति होती है। भक्त प्रभु के अतिरिक्त और सब कुछ भूल जाता है। भक्ति मार्ग में कुल मर्यादा का विचार नहीं किया जाता। मीरा भगवान श्री कृष्ण के प्रेम में कैसे न विभोर होकर गाती थी! राणा ने उसका कितना न विरोध किया किन्तु मीरा फिर भी बांके बिहारी के विरह में गीत गाती रही-

हे री मैं तो प्रेम देवानी, मेरा दर्द न जाने कोय।
घायल की गति घायल जाने और न जाने कोय ।।

आमीर के राजा मानसिंह के अनुज माधवसिंह की पत्नी रत्नावली राजकुल की होते हुए भी संतों के साथ सत्संग कीर्तन करने लगी। उसके पतिदेव दिल्ली में थे। उन्हें पत्नी की यह करनी ठीक नहीं लगी। उनका बेटा प्रेमसिंह जब दिल्ली में उनके पास गया तो उन्होंने पुत्र को सम्बोधित करते हुए कहा "आ गंजी के पुत्र"! पिता के ये शब्द सुनकर पुत्र विस्मय में पड़ गया। उसने मंत्री से उसका कारण पूछा कि राजा ने क्रोधित होकर उसे ऐसे अपशब्द क्यों कहे? मंत्री ने कहा कि तुम्हारी मां संतो महात्मओं के साथ सत्संग कीर्तन करती है, तुम्हारे पिताजी को यह बात अच्छी नहीं लगती इसलिए उन्होने तुम्हें ऐसे अपशब्द कहे हैं। यह उत्तर सुनकर प्रेमसिंह ने अपनी मां को पत्र लिखा कि पिताजी ने आपके लिए 'गंजी' शब्द का प्रयोग किया है, यदि आपकी भक्ति सच्ची है तो उन्हें 'गंजी' होकर दिखाओ जब रत्नावली को पुत्र का यह पत्र मिला, तब सुहागिन होते हुए भी उसने मांग के बाल कटवा दिए। यह सुनकर माधवसिंह बहुत क्रोधित हुए उन्होंने सिपाहियों को आज्ञा दी कि जब रत्नावली भगवद् भजन में बैठे तब उसके सामने एक शेर को खड़ा किया जाए, जिससे शेर उसे मारकर खा जाए। सिपाहियों ने आज्ञा का पालन किया। जब रत्नावली भजन में लीन थी तब उसके सामने शेर को खड़ा किया गया। शेर ने जैसे ही गर्जना की तो रत्नावली की आंखें खुल गई।

वह शेर को देखकर डरी नहीं, किन्तु उसे भगवान नरसिंह का अवतार समझकर प्रणाम किया, धूप बत्ती जलाकर उसकी उपासना की। रत्नावली की भक्ति के कारण वह शेर नतमस्तक होकर लौटकर उन सिपाहियों पर टूट पड़ा जिन्होंने यह षडयंत्र रचा था। माधवसिंह ने शेर द्वारा अपनी पत्नी को मारना चाहा किन्तु भक्ति की शक्ति के कारण उसका कोई बाल भी बांका नहीं कर सका।

दूसरे दिन पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा प्रेमियो! मन को सदैव भगवद् चिन्तन एवं दीन दुखियों की सेवा में लगाओ तो तुम्हें आनंद की उपलब्धि होगी। सीता माता भगवान राम के चरणों की सेवा के लिए उनके साथ वन में गई, पति के साथ वह जंगल में भी कितनी न प्रसन्न थी। किन्तु जब स्वर्ण मृग की इच्छा पूरी करने के लिए उन्होंने श्री राम को उस मृग को पकड़ ले आने के लिये भेजा अर्थात् श्री राम के साथ न होने पर उसकी क्या दुर्दशा हुई। स्वर्ण मृग भी नहीं मिला और श्री राम का भी वियोग मिला। स्वर्ण मृग की इच्छा के कारण माता सीता को कितने न कष्ट झेलने पड़े। हम भी यदि सीता की भांति सासांरिक पदार्थों की इच्छा पूर्ति के लिए रात दिन दौड़ेंगे तो न इच्छाएं पूरी होंगी न भगवद् प्राप्ति होगी। हमें भी सीता माता की भांति कष्ट सहने पड़ेंगे।सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी अपनी वाणी में कहते हैं-

हरि स्मरण की सेज पर, सोय करो विश्राम।
कह टेऊँ हरि जाप बिन मिले न कब आराम॥

२७ जून पूज्य स्वामीजी भटियनि में पधारे। वहां स्वामीजी ने तीन दिन प्रवचन किया। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि संतो के संग में पशु-पक्षियों का भी कल्याण हो जाता है, आप तो मनुष्य हैं, संतों के संग से आपका अवश्य ही उद्धार होगा। इसलिए किसी न किसी संत महात्मा से स्नेह सम्बन्ध जोड़ो, तो वह संत तुम्हें नाम की नौका में चढाकर भवसागर से पार कर देगा। करोली के राजा चत्रभुज साधुओं का बहुत ही सम्मान करते थे। उन्होंने इसलिए विशेष सेवकों की नियुक्ति की, जिनका काम था उनके राज्य में आए हुए, संतो महात्माओं का समाचार राजा को बताना। राजा चत्रभुज स्वयं

जाकर संतों की सेवा करते थे, उनके चरणों को धोकर वह जल पीते थे, उन्हें भेंट देते थे । एक दूसरे राजा ने राजा चत्रभुज की परीक्षा लेने के लिए एक भाट को संत के वेश में उनके यहां भेजा । राजा चत्रभुज ने उसका भी वही सम्मान एवं सेवा की । जब सत्संग का समय हुआ तो अन्य संतों ने तो प्रवचन किया किन्तु वेशधारी 'भाट हूं हूं' करने लगा । राजा चत्रभुज समझ गये कि यह साधु का वेश धारण कर यहां आया है, वास्तव में यह संत नहीं । फिर भी राजा ने जैसे अन्य संतो को दक्षिणा दी उस वेशधारी को भी वही दक्षिणा दी और साथ साथ उसे एक छोटी डिब्बी में एक कानी कौड़ी डालकर उस डिब्बी को सुन्दर वस्त्र से बंद कर दी । वह भाट राजा के पास लौट आया और बताया कि राजा चत्रभुज ने अन्य संतो की भांति उसका भी सम्मान एवं सेवा की, दक्षिणा भेंट की और विशेष रूप में एक डिब्बी भी दी । राजा ने राज्य सभा में जब वह डिब्बी खोली तो उसमें कानी कौड़ी देखकर वे आश्चर्य में पड़ गये । राजा ने सभा में बैठे विद्वान से उसका रहस्य पूछा? विद्वान ने उत्तर दिया कि राजा चत्रभुज ने इस वेशधारी भाट को पहचान लिया, कि यह साधु संत नहीं, किन्तु साधु के वेश में साधारण व्यक्ति है, जैसे यह डब्बी सुन्दर वस्त्र में बंद थी किन्तु इसके अन्दर कानी कौड़ी थी उसका कुछ भी मूल्य नहीं है उसी प्रकार तुम्हारा भेजा हुआ व्यक्ति बाहर से साधु का वेश धारण कर आया किन्तु वह खोखला है, अज्ञानी है, उसका कुछ मूल्य नहीं । राजा विद्वान का उत्तर सुनकर समझ गया कि राजा चत्रभुज योग्य, अयोग्य को पहचानते हुए भी साधु वेश का एक समान सम्मान करता है । कुछ दिनों के बाद वह विद्वान राजा चत्रभुज की सभा में गया।राजा ने उसका स्वागत एवं सेवा की । जब राजा ने उसी विद्वान को दक्षिणा भेंट की तब उसने राजा से उनका तोता भी मांगा। राजा ने सहर्ष अपना तोता भी उसे दे दिया । वह विद्वान उस तोते को राज दरबार में लाया और तोते को पिंजरे सहित वहां रख दिया। जब राज्य सभा आरंभ हुई तब तोता राजा, मंत्रियों एवं बैठे हुए सज्जनों को प्रभु से विमुख देखकर "श्रीकृष्ण, श्रीकृष्ण" पुकारने लगा और कहने लगा भगवान श्रीकृष्ण का स्मरण करो तो तुम्हारा कल्याण होगा।तोते की ऐसी वाणी सुनकर राजा एवं सभासद् सभीआश्चर्य

में पड़ गये प्रतिदिन उस तोते की वही वाणी सुन सुन कर वह राजा और अन्य सभासद् भगवान श्रीकृष्ण के उपासक बन गये।

सुण सुण पावह अंधे राह ।

राजा चत्रभुज स्वयं तो भक्त थे किन्तु उनका तोता भी भक्त बन गया था और उस तोते ने अन्य लोगों को भी भक्त बना दिया । जो भी जीव संतो के संग में रहता है स्वयं तो भवसागर से तर जाता है तथा औरों का भी उद्धार करता है ।

१ जुलाई स्वामीजी माछियुनि गांव में पधारे । वहां भी स्वामीजी ने तीन चार दिन सत्संग वर्खा की । स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि भगवान अपने भक्त को किसी न किसी रूप में दर्शन देते हैं । काशी में भगवान श्रीराम का एक भक्त श्री पाठक रहता था । वह सदैव श्रीराम के ध्यान में तल्लीन रहता था । उसकी तीव्र इच्छा थी कि भगवान श्री राम उसे साक्षात् दर्शन दें । श्री राम ने उसे स्वप्न में कहा "भक्त! मैं विजय दशमी के दिन राम लीला में भरत मिलाप दृश्य के समय तुम्हें दर्शन दूंगा और उसी समय तुम से कुछ मागूंगा" पाठकजी स्वप्न में भगवान के दर्शन पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुए स्वप्न में श्री राम के आदेशानुसार वह विजय दशमी के दिन राम लीला देखने गया । भरत मिलाप के दृश्य के समय जब भरत भगवान श्री राम के चरणों में गिर पड़े, तब श्री राम ने पाठक को पुकारा । पाठक भगवान श्री राम के चरणों में नत मस्तक हुए । भगवान श्री राम ने उससे कहा कि मिठाई और जल ले आओ । पाठक मिठाई और जल ले आया। भगवान ने उसे भोग लगाकर वह प्रसाद रूप में लौटा दिया। दर्शक यह दृश्य देखकर आश्चर्य में पड़ गये किन्तु श्री पाठक की आंखों में प्रेमा भक्ति के आंसू थे कि भगवान ने उसे साकार रूप में दर्शन देकर कृतार्थ किया । भगवान अपने भक्त को स्वप्न में या जागृत में दर्शन देकर उनकी इच्छा पूरी करता है । प्रेमियो! आप भी सासांरिक कामनाओं का परित्याग कर प्रभु के दर्शन की तीव्र इच्छा रखो तो आपको भी साक्षात्कार होगा ।

५ जुलाई पूज्य स्वामीजी टंडेमस्ती में पधारे । वहां स्वामीजी ने चार दिन सत्संग वर्खा की । स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि

भक्त रोम रोम से भगवान का स्मरण करते हैं। एक बार भगवान शंकर पार्वती को भक्तों की महिमा सुना रहे थे। पार्वती ने कहा "महाराज! आप भक्तों का इतना यश गा रहे हैं, कभी उनका दर्शन तो कराएं। यह सुनकर श्री शंकरमहादेव पार्वती को इन्द्रप्रस्थ में श्री अर्जुन के यहां ले आये। उसी समय अर्जुन सोया हुआ था। भगवान शंकर ने तब भगवान श्रीकृष्ण का स्मरण किया तब वहां भगवान श्रीकृष्ण उद्धव, रुक्मणी एवं सत्यभामा के साथ प्रकट हुए। भगवान शंकर ने भगवान श्रीकृष्ण से कहा पार्वती अर्जुन का दर्शन करना चाहती हैं कृपया आप उसे जगायें। भगवान श्रीकृष्ण ने, श्री शंकर महादेव, पार्वती, रुक्मणी, सत्यभामा एवं उद्धव सहित अर्जुन के गृह में प्रवेश किया जिस शैय्या पर अर्जुन सोया हुआ था वे सब उस शैय्या के बाऐं ओर खड़े हो गये। अर्जुन के रोम रोम से 'श्रीकृष्ण' 'श्रीकृष्ण' की ध्वनि आ रही थी। तब भगवान श्री शंकर ने पार्वती से कहा कि भक्त तो ऐसा जो नींद में भी भगवान का स्मरण करता है। फिर भगवान क्यों नहीं उसकी रक्षा करेंगे!

सखा भक्त के निकलता, रोम रोम से नाम।
सोते अर्जुन ने सुना, कृष्ण कृष्ण अभीराम॥

प्रेमियो! तुम भी रोम रोम से प्रभु को याद करो, तो परमात्मा दया करेंगे। याद को उल्टा करें तो दया होती है। यदि प्रभु परमात्मा की अनुकम्पा चाहते हो तो सदैव उसका स्मरण करें।

दूसरे दिन स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि सच्चा गुरु भक्त गुरु की भावना को समझकर उसी प्रकार चलने का प्रयास करता है। वह अपने जीवन में सत्गुरु के सिद्धांतों एवं शिक्षाओं के अनुरूप चलता है। श्री चैतन्य महाप्रभु का एक शिष्य विष्णुपुरी वाराणसी में गया। कुछ शिष्यों ने श्री चैतन्य महाप्रभु से कहा कि विष्णुपुरी मुक्ति की अभिलाषा से काशी गया है। श्री चैतन्य ने कहा कि विष्णुपुरी काशी में मुक्ति प्राप्ति के लिए नहीं किन्तु सत्संग कीर्तन करने के लिए वहां गया है। कुछ सज्जनों ने यह बात नहीं मानी तब श्री चैतन्य ने उनमें से एक सज्जन को काशी में भेजा और साथ साथ उसे एक पत्र भी भेजा। पत्र में लिखा कि "रत्न माला" भेजें। गुरु का पत्र पढ़कर

विष्णुपुरी अत्यन्त प्रसन्न हुए और उसकी आंखों से प्रेमाश्रु टपक पड़े। उनके मन में भगवान श्रीकृष्ण की प्रेमा-भक्ति उमड़ आई । उसके मुख से कृष्ण भक्ति की काव्य धारा प्रवाहित हुई । उसने पांच सौ श्लोक लिखे । उन श्लोकों में श्रीकृष्णचन्द्र आनंदकंद की लीलाऐं एवं महिमा वर्णित थी । उसने उस काव्य रचना का नाम "रत्नावली" रख कर अपने गुरुदेव श्री चैतन्य महाप्रभु को भेजी । जब 'रत्नावली' कृष्ण काव्य श्री चैतन्य महाप्रभु को मिला, वहां अन्य प्रेमियों ने वह रचना पढ़ी तब उन्होंने अनुभव किया कि काशी में रहते हुए भी विष्णुपुरी की कामना मुक्ति की नहीं । उनकी वृत्ति तो श्रीकृष्ण से जुड़ी हुई है।

१० जुलाई पूज्य स्वामीजी भरकण गांव में पधारे । वहां स्वामी जी ने प्रवचन करते हुए कहा कि भक्तों के मन में भगवान के प्रति अगाध प्रेम है तो प्रभु भी उन्हें प्यार करते हैं । कभी कभी तो भगवान स्वयं को महत्त्व न देकर भक्तों को महत्व देते हैं । एक बार कुछ पंडितों ने राजा को शिकायत की कि रविदास चमार है, उसे भगवान की मूर्ति रखने का अधिकार नहीं । इसलिए उसे दंडित किया जाय और उससे भगवान की मूर्ति भी छीन ली जाय । राजा के मन में श्री रविदास के प्रति प्रेम व श्रद्धा थी, किन्तु ब्राह्मणों की वैमनस्य की भावना के कारण वे थोड़ा चिन्तित हुए । उन्होंने आज्ञा की कि एक ओर ये पंडित लोग बैठें दूसरीओर संत रविदास और बीच में भगवान की मूर्ति रखी जाय । भगवान की मूर्ति स्वयं जिस ओर जाये, वह मूर्ति उसकी हो जायेगी । पंडितों ने विचार किया कि मूर्ति तो जड़ है वह स्वयं कैसे जायेगी । राजा के आदेश का पालन किया गया। राजा भी स्वयं वहीं खड़े थे । एक ओर पंडित दूसरी ओर संत रविदास बैठे थे•और भगवान की मूर्ति सिंहासन पर विराजमान थी । मूर्ति सिंहासन से कूद कर संत रविदास के गोद में जा पड़ी । यह चमत्कार देखकर पंडित लोग विस्मय में पड़ गये । संत रविदास एवं राजा अत्यंत प्रसन्न हुए । पंडितों में पांडित्य था, बाह्य प्रेम था किन्तु संत रविदास चमार जाति का होते हुए भी प्रेम भक्ति में तल्लीन एवं तन्मय था । भगवान तो प्रेम के भूखे हैं । राजा ने आज्ञा की कि यह मूर्ति अब सदैव के लिए संत रविदास के पास रहेगी । भगवान अपने प्रेमियो को कितना न स्नेह देते हैं । प्रेमियो ! तुम भी प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ो ।

१४ जुलाई स्वामीजी खाही में पधारे। वहां स्वामीजी ने तीन दिन सत्संग वर्खा की। १७ जुलाई स्वामीजी चक्क में आये। चक्क में ऋषि रुघूराम रहते थे। वे गृहस्थी होते हुए भी सन्यासी थे। वे विद्वान थे, ज्ञानवान थे, आध्यात्मिक मार्ग दर्शक थे। वे सत्य-सादगी की मूर्ति थे। वे ईश्वर भक्त भी थे तो राष्ट्र भक्त भी थे और गांधीवादी थे। पूज्य स्वामीजी का उनके साथ स्नेह सम्बन्ध था। स्वामीजी उन्हें सम्मान देते थे। स्वामीजी चक्क में पधारे तो पहले श्री ऋषि रुघूराम के पास आये और उन्हें प्रणाम किया। स्वामीजी ने दो तीन दिन उनसे ज्ञान गोष्ठी की। स्वामीजी ने एक सप्ताह चक्क में सत्संग प्रवचन किया।

स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि भक्त को भगवद् दर्शन की ही उत्कंठा रहती है प्रेमियो! सासांरिक पदार्थों की प्यास कभी पूरी नहीं होगी। तुम मन में प्रभु की प्यास बढ़ाओ, गोबिन्द के गुण गाओ। किसी न किसी दिन अवश्य प्रभु तुम्हें दर्शन देंगे। एक विश्वासी भक्त था, वह प्रभु के दर्शन के लिए अत्यन्त उत्सुक रहता था। वह सब से पूछता था कि भगवान का दर्शन शीघ्र कैसे होगा? एक ठग साधु-वेश में था, उसने उसे कहा कि मैं आज ही तुम्हें भगवान का दर्शन कराता हूं। तू अपना सब सामान बेचकर वे पैसे लेकर मेरे साथ चलो। वह विश्वासी भक्त जिसके मन में प्रभु दर्शन की अत्यन्त उत्कंठा थी, साधु ठग के कहने अनुसार सारा सामान बेचकर वे पैसे साथ में लेकर उस ठग साधु के साथ जंगल में गया। जंगल में एक कुंआ था। उस ठग ने उस भक्त को कहा पैसा बाहर निकालकर रख दो और बाद में कुएं के अन्दर देखो तो तुम्हें भगवान का दर्शन होगा। भक्त ने साधु के कहने अनुसार पैसों वाला चोला उतार बाहर रखकर कुएं में देखा तो उस ठग साधु ने उस भक्त को धक्का देकर कुएं में गिरा दिया और उसके पैसे लेकर चला गया। विश्वासी भक्त जैसे ही कुंएं में गिरा तो उसे ज़रा भी चोट नहीं आई। उसका सारा ध्यान प्रभु की ओर था। प्रभु ने कुएं में उसे साक्षात् दर्शन दिया। भक्त भगवद् दर्शन कर फूला न समाया। रास्ते में भगवान एक सिपाही के रूप में उसी ठग संत को पकड़कर उसी भक्त के पास ले आये और उससे कहा तुमने मेरे प्रेमी भक्त से धन छीन लेने के लिए, उसे कुएं में गिरा

दिया । इसलिए तुम्हें दंड दिया जायेगा । उसी समय भक्त ने भगवान से प्रार्थना करते हुए कहा "प्रभु! इसने मुझे बराबर ठगा है, इसके ठगने के कारण ही मुझे आपका दर्शन हुआ है । कृपया इसे दंडित नहीं करें, क्षमा करें इसके कारण ही मेरे भाग्य उदय हुए हैं ।" भगवान ने भक्त के कहने अनुसार उस ठग साधु को छोड़ दिया । उसी ठग के जीवन में परिवर्तन आ गया वह ठग संतों के संग में संत बन गया ।

२४ जुलाई पूज्य स्वामीजी रुपाहन गांव में आये, वहां उन्होंने पांच दिन सत्संग वर्खा की । स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

ज़फर हम देखते रहे औरों के एब हुनर ।
जब अपनी बुराई पर पड़ी नज़र
तो निगाह में कोई बुरा न रहा ॥

प्रेमियो! दूसरों के दोषों को देखने से पहले स्वयं के दोष देखें । दूसरों के दोषों का चिन्तन करने से स्वयं की हानि होती है । एक नीम के पेड़ के नीचे एक नागा संत धुनि रमाते थे । उसके नज़दीक एक वैश्या का घर था । उसके पास कई पुरुष आते जाते थे । वह साधु, जब किसी पुरुष को वैश्या के पास जाता देखता था तब एक छोटा सा पत्थर धूनी के नज़दीक रखता जाता था । ऐसे वहां पत्थरों का ढेर हो गया । एक दिन उस नागा साधु ने उस वैश्या को बुलाकर कहा कि इन पत्थरों जितने मनुष्यों को तुमने भ्रष्ट कर महा पाप किया है । इस पाप के कारण तुम्हें नर्क में जाना पड़ेगा । उस साधु ने उस वैश्या को इतना डराया कि वह अपने कुकर्मो के कारण रोने लगी। उसने साधु से विनय की कि कोई उपाय बतायें ताकि वह नर्क के दुख से बच जाय । साधु ने उसे कहा "तुम्हारे कुकर्म तो अकथनीय हैं तुम्हें नर्क भोगना पड़ेगा । तू यह घर छोड़कर शीघ्र यहां से चली जाओ और अब ऐसे कुकर्म नहीं करो । वह वैश्या घर छोड़कर दूसरे गांव में चली गई । रास्ते में वह पश्चाताप के आंसू बहाती प्रभु को प्रार्थना करने लगी "हे दीनानाथ दयाल प्रभु! मैं पतित् हूं, मेरे किये हुए पापकर्मों के लिए मुझे क्षमा करें । अब मुझे अपने कमल चरणों में बिठाएं । मैं पापिन हूं, दूषित हूँ, आप क्षमा करें ।" प्रभु को ऐसी

प्रार्थना करते हुए रास्ते में ही उसकी मृत्यु हो गई। अंतकाल में पश्चाताप एवं प्रार्थना करने से वह वैश्या वैकुन्ठ धाम में गई। साधु नागा जो उस वैश्या के कुकर्मों की गिनती करने में अपने अमूल्य श्वास गंवा रहा था उसकी भी मृत्यु हुई। कुकर्मों का चिन्तन करने के कारण उसे नर्क की प्राप्ति हुई।

प्रेमियो! दूसरों के दुष्कर्मों का चिन्तन नहीं करो। सदैव शुभ कर्मों का विचार करो, सत् संकल्प करो, प्रभु के कमल चरणों का ध्यान करो तो तुम्हारा जीवन सफल होगा।

३० जुलाई स्वामीजी आरायनि गांव में आये। वहां स्वामीजी ने तीन दिन प्रवचन किया। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

धन संग्रह ते दान धन, सौ गुण अधिक पछान।
बिना दान जो द्रव्य है, सो बिन सुमन समान॥

माया संग्रह से माया दान करना सौ बार अधिक अच्छा है। माया बिना दान करने से ऐसी है जैसे बिना फूलों के फुलवाड़ी। प्रेमियो! परमात्मा ने जो कुछ माया दी है वह परोपकार के कार्यों में सफल करो। दान, पुण्य एवं सत्कर्म मनुष्य के लिए एक बड़ा आधार है। एक नौजवान विवाह करके आया। उसकी पत्नी को किसी ज्योतिषी ने बताया था कि विवाह के दूसरे दिन तुम्हारा सुहाग लुट जायेगा। इसलिए विवाह की सारी रात उसे नींद नहीं आई। वह पतिव्रता स्त्री थी। वह सारी रात प्रभु से पति के प्राण रक्षा के लिए प्रार्थना करती रही। प्रभात के समय एक संत उसके घर के बाहर खड़े होकर पुकारने लगे "मैं भूखा हूं, प्यासा हूं।" संत की आवाज सुनकर उस नववधु ने दरवाजा खोलके उसे मिठाई खिलाई और पानी पिलाया। संत प्रसन्न हुआ। उन्होंने उसे आशीर्वाद देते हुए कहा बेटी "सदैव सुहागिन बनी रहो, वर घर के साथ आनन्द में रहो। संत के ये वचन सुनकर उसने अश्रुयुक्त आंखों से कहा "स्वामीजी! कल तो मेरे पतिदेव की मृत्यु होने वाली है, फिर मैं सुहागिन कैसे रहूंगी।" उस संत ने ध्यान लगाकर कहा "बेटी। ऐसा ही होने वाला था, किन्तु अब तू चिन्ता मत कर, तेरा सुहाग कायम रहेगा।" ऐसा कहकर वह संत चला गया। संत का वचन सत्य हुआ। उसके पति का बाल भी बांका नहीं हुआ।

पत्नी ने आवश्यकतानुसार संत को खिलाया, पिलाया, संत कृपा से एवं दान के कारण उसका पति मृत्यु से बच गया। किसी का किया हुआ दान व्यर्थ नहीं जाता। तुम सत्कर्म करो तो प्रभु तुम्हारे कष्ट क्लेश दूर करेगा।

३ आगस्त पूज्य स्वामीजी द्रुहिरन गांव में पधारे। वहां उन्होंने पांच दिन प्रवचन किये। 'परोपकार' विषय पर प्रवचन करते हुए स्वामीजी ने कहा कि परोपकार करने में ही जीवन की सार्थकता है। अपने लिए जीना, कोई जीना नहीं। 'परोपकाराय इदं शरीरं' संत कबीरदास कहते हैं-

वृक्ष कबहुं नहिं फल बखैं नदी न संचइ नीर।
पर उपकार के कारने साधुन धरउ शरीर॥

संत तो परोपकार की प्रतिमूर्ति होते हैं। वे कभी भी अपने सुख का विचार नहीं करते। परोपकारी मनुष्य को दूसरों को सुखी करने में ही आनंद की उपलब्धि होती है। महाराज महीर्थ महान उपकारी थे। जब वे ब्रह्मलीन हुए तो भगवान श्री विष्णु के पार्षद् उन्हें वैकुन्ठ ले जा रहे थे। रास्ते में नर्क थे। नर्क में रहने वालों को, महाराजा महीर्थ के वहां से गुजरने के कारण आनन्द का अनुभव हो रहा था। उन्होंने कातर स्वर में महाराजा से अनुरोध किया कि कृपया आप कुछ समय यहां ठहरें। आपके सत्कर्मों के कारण, आपके यहां से गुजरने से भी हमें सुख का अनुभव हो रहा है, यदि आप और अधिक समय यहां ठहरेंगे तो हमारा कल्याण हो जायेगा। महाराज महीर्थ ने यह सुनकर भगवान के पार्षदों से कहा कि मुझे कुछ समय यहां ठहरने दीजिये। पार्षदों ने कहा "यदि हम आपको यहां छोड़कर चले जायेंगे तो भगवान हम पर अप्रसन्न होंगे क्योंकि आप स्वर्ग के अधिकारी हैं।" महाराजा महीर्थ ने कहा कि यदि मेरे यहां ठहरने से नर्क निवासियों का कल्याण हो जाये तो मैं नर्क में रहना उचित समझता हूं। महीर्थजी कितने न महान थे! दूसरों की भलाई के लिए उन्होंने स्वयं नर्क में रहना स्वीकार किया। धन्य धन्य है ऐसे परोपकारी, जो दूसरों को सुखी करने के लिए स्वयं कष्ट झेलते हैं।

९ आगस्ट पूज्य स्वामीजी टंडे आदम में अमरापुर स्थान पर लौट

आये। स्वामीजी ने सतगुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज को नत-मस्तक प्रणाम कर, मिली हुई माया एवं अन्य वस्तुएं उनके चरणों में अर्पण की।

१७ सितम्बर स्वामीजी संत हरिचूराम साहब की पुण्य तिथि के उत्सव सम्बन्ध में शाहपुर थल्हे पर पधारे । स्वामीजी ने वहां तीन दिन सत्संग वर्खा करते हुए कहा कि संत हरिचूराम एवं संत धर्मूराम की दास पर असीम कृपा रही । जो भी दुखी यहां आता था संत उसका दुख दूर करते थे ।

श्री पेसूमल एवं उसकी पत्नी पपुरबाई शाहपुर थल्हे की रात दिन सेवा करते थे । उन्हें पुत्र संतान नहीं थी । एक दिन उन्होंने संत हरिचूराम साहब को पुत्र संतान के लिए प्रार्थना की । संत हरिचूराम ने उन्हें सांत्वना देते हुए कहा "भगवान भला करेगा, संत सेऊराम भला करेगा।" संत हरिचूराम की कृपा से उन्हें पुत्र संतान हुई । बालक का नाम 'रांझो' रखा गया । बालक जब ८-९ वर्ष का हुआ तो एक दिन अन्य बालकों के साथ खेलते-खेलते जंगल में चला गया और उसकी आंखों की रोशनी अचानक गायब हो गई । माता पपुरबाई यह देखकर बहुत दुखी हुई । वह बालक को संत हरिचूराम साहब के पास ले आई और करुणा स्वर में प्रार्थना करने लगी "संत जी आपने हमें पुत्र तो दिया, किन्तु अब उसकी आंखों की रोशनी अचानक गायब हो गई है । रांझो आपका ही बालक है कृपया इस पर दया करें, संत हरिचूरामजी ने कहा "भटियुन में जगूमल के पास काला गधा है उसकी विष्ठा का पानी निकालकर रांझे की आंखों में डालो, तो संत सेऊराम भला करेगा ।" पपुरबाई ने संत हरिचूराम की आज्ञानुसार जैसे ही वह पानी बालक के आंखों में डाला तो बालक कीआंखों में नई रोशनी आ गई । कहां गधे की विष्ठा कहां आंखों का इलाज। संत अपने प्रेमियो का किसी न किसी प्रकार दुख दूर करते ही हैं ।

पेसूमल एवं उसकी पत्नी पपुरबाई संत हरिचूरामजी की स्तुति गाने लगे कि उनकी दया दृष्टि से ही बालक रांझो को नई आंखें मिल गई। प्रेमियो! आप भी इन संतो के स्थान पर विश्वास व श्रद्धा के साथ आओ तो संत सेऊराम, संत हरिचूराम, संत धर्मूरामजी आपके दुख दूर करेंगे, कांटो को फूल बना देंगे । संतो को यह शक्ति भक्ति

के कारण मिलती है, आप भी भगवान को न भूलें । नाम स्मरण में चित्त लगाओ, प्रेम से प्रभु को प्रार्थना करो ।

२१ सितम्बर स्वामीजी कंधकोट में पधारे । वहां स्वामीजी ने एक सप्ताह सत्संग वर्खा की, एक दिन स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

टेऊँ जल थल व्योम में, सबको दे हरि एक ।

और न कोई देत है, करके देख विवेक ।।

जैसे माता पिता अपनी संतान की परवरिश करते हैं, उससे अधिक परमात्मा सारी सृष्टि का पालन पोषण करते हैं । एक जंगल में वृक्ष के नीचे एक महात्मा भजन में तल्लीन बैठे थे । एक गाय चराने वाला वहां से गुजर रहा था, उसने उस महात्मा को देखकर, एक गाय का दूध निकालकर उस संत के चरणों में रखा । संत ने दूध स्वीकार कर पी लिया । दूध वाले ने संत से पूछा और दूध पीएंगे? संत ने कहा प्रभु पिलाएंगे तो पीऊंगा, खिलाएंगे तो खाऊंगा, नहीं खिलाएंगे तो नहीं खाऊंगा । उस दूध वाले ने अपने गांव वालों से उस संत का उल्लेख किया । गांव वाले भोजन बनाकर उस संत के पास ले आये और उसे ग्रहण करने के लिए प्रार्थना करते हुए कहा कि आपने बहुत दिनों से भोजन नहीं खाया, अब भोजन स्वीकार करें । यदि हमारे गांव वाले की नजर आप पर नहीं पड़ती तो आप भूखे रह जाते ।

महात्मा ने मुस्कराते हुए कहा-

माह्यो ड़ी माह्यो ! मैं इक मोदी लधिया । जो सब दी सार लहेंदा ।।

सील पत्थर विच जीव उपाये तिना भी रोज़ी रसींदा ।

जुग जुग जीवे मेरा मोदी ग्वाला जो महिणा कबहु न द्रींदा ।।

परमात्मा जलचर तलचर नभचर सब जीवों की परवरिश करता है।

सिर सिर रिज़क ठाकुर काहे मन भव करीआ ।

पुरुषार्थ करना हमारा कर्त्तव्य है । आलस्य का त्याग कर नाम स्मरण करो, दीन दुखियों की सेवा करो तो प्रभु आपकी देख रेख करेंगे ।

स्वामीजी ने कंधकोट में प्रवचन करते हुए कहा कि घर-गृहस्थ के कर्त्तव्यों का पालन करते हुए नित्य नियम से नाम स्मरण करते रहो।

सत्गुरु महाराज कहते हैं-

कह टेऊं नित कीजिये, राम नाम से प्रेम ।
राम नाम के सम नहीं, जप तप संयम नेम ।।

राम नाम स्मरण के समान और कोई साधन नहीं । इसलिए नाम स्मरण में ही जीवन सफल बनाओ ।

२६ सितम्बर स्वामीजी कश्मोर में पधारे । वहां स्वामीजी ने पांच दिन प्रवचन किया । स्वामीजी ने सत्संग वर्खा करते हुए कहा-

अंतर बाहर रैन दिन भूलो ना हरिनाम ।
जिह्वा, मनवा प्रान से कह टेऊं रट राम ।।

प्रेमियो । रात दिन, मन में एवं सांसारिक व्यवहार करते हुए नाम का उच्चारण करो । प्रभु प्राप्ति के लिए नम्रता की आवश्यकता है। घमंडी कभी भी प्रभु के पास नहीं जा सकता । व्यवहार में या परमार्थ में विनम्र व्यक्ति को ही सफलता मिलती है ।

लघुता में प्रभुता बसे, प्रभुता से प्रभु दूर ।
चींटी चीनी खात है, हाथी डालत धूर ।।

छाटे होने में ही महानता है, परमात्मा बड़प्पन से दूर होते हैं, अर्थात् जिसे गर्व है, अभिमान है, वह प्रभु से दूर रह जाता है । चींटी कितनी न छोटी है, फिर भी वह आसानी से चीनी खा सकती है किन्तु हाथी इतना बड़ा होते हुए भी धरती पर पड़ी चीनी नहीं खा सकता वह धूलि अपने सिर पर डालता है ।

प्रेमियो! यदि आप आध्यात्मिक मार्ग में उन्नति करना चाहते हो तो विनम्र बनो । कवि श्री नारायणदास जी कहते हैं-

नारायण मैं कहत हूँ, भुजा उठाके आज ।
जेतू जीव गरीब बने, तो मिले गरीबनिवाज़ ।।

गरीब अर्थात् विनम्र, कवि संत नारायणदासजी कहते हैं कि यदि मनुष्य नम्रता के मार्ग पर चलेगा तो उसे अवश्य ही गरीबनिवाज़ अर्थात् प्रभु प्राप्त होंगे । नम्रता मनुष्य का आभूषण है । एक बार संत कंवरराम साहब कहीं जा रहे थे, तो रास्ते में एक माता अपने बालक को लेकर

जा रही थी उसने भक्त कंवरराम को जाते देखकर अपने बेटे से कहा कि भक्त कंवरराम को जाकर पांव पड़ो । भक्त कंवरराम थोड़ा आगे निकल गये, बालक ने कहा "मैं किसे प्रणाम करूं भक्त कंवरराम तो आगे आगे चले जा रहे हैं । मैं उनका नौकर नहीं हूं" बालक के ये शब्द सुनकर संत कंवरराम वहीं रुक गए और ऊंची आवाज़ में पीछे मुड़कर बोले "बालक! तू मेरा नौकर नहीं, मैं तुम्हारा नौकर हूं। आओ! मेरे पास आकर मां की इच्छा पूरी करो ।" भक्त कंवरराम साहब में कितनी न नम्रता थी ।

जिना गरीबी सिर धरी से शाहन के शाह ।
अटल छत्र तिन पर झुले वाह गरीबी वाह ॥

५ अक्तूबर स्वामीजी बडारणी में पधारे । वहां स्वामीजी ने चार पांच दिन सत्संग वर्खा की । स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

काम बराबर व्याधि नहीं, शत्रु न मोह समान ।
आन अग्नि नहीं क्रोध सम, सुख न समान सुज्ञान ॥

काम जैसी कोई बीमारी नहीं, मोह जैसा कोई दुश्मन नहीं, क्रोध जैसी और कोई अग्नि नहीं और सुज्ञान जैसा आनंद नहीं । उपर्युक्त विकारों को वश में करने से ही आत्मिक आनन्द की प्राप्ति होगी । इन विकारों को वशीभूत करने के बाद अभिमान नहीं करना चाहिये। अभिमान भी एक बड़ा विकार है ।

एक बर ऋषि वेद व्यास ने 'काम' विषय पर प्रवचन करते हुए कहा कि काम पर नियंत्रण रखना बड़ा कठिन है । काम जीव को अंधा बना देता है । बड़े बड़े विद्वान, ऋषि मुनि भी काम वासना के शिकार हो जाते हैं । वहां बैठे हुए महान तपस्वी जैमिनी ऋषि ने कहा "काम पर जीत पाना कठिन नहीं । काम क्रोध लोभ मोह अहंकार ये पांचों विकार मेरे वश में हैं ।" ऋषि वेद व्यास ने कहा कि समय आने पर पता पड़ेगा ।

कुछ दिनों के पश्चात् संध्या के समय मुनि जैमिनी तपस्या कर पर्वत से अपने आश्रम की ओर लौट रहे थे तो रास्ते में जंगल में, एक सुंदर स्त्री करुण स्वर में रो रही थी । मुनि जैमिनी ने उससे रोने

का कारण पूछा? स्त्री ने कहा "मैं यहां अपने पति के साथ घूमने आई थी, मुझे प्यास लगी, मेरे पतिदेव मेरे लिए पानी लेने के लिए गये हैं, अब तक पानी भरके नहीं लौटे । अंधेरी रात होने वाली है, मैं अकेली अब कहां जाऊं? मुनि को उस स्त्री पर दया आ गई । उसने उसे कहा । "तुम अब मेरे आश्रम में चलकर रहो । सबेरा होते ही तुम्हारे पति की खोज की जायेगी ।" मुनि उसे अपने आश्रम में ले आए । मुनि ने उसे खाना पीना खिलाकर एक कुटिया में विश्राम करने के लिए कहा । मुनि ने उसे आदेश दिया कि रात्रि का समय है कुटिया का दरवाज़ा बंद कर देना । यदि कोई भी दरवाजा खोलने के लिए कहे तो दरवाज़ा नहीं खोलना क्योंकि यहां निश्चर रहते हैं।

वह स्त्री मुनि की आज्ञानुसार दरवाज़ा बंद कर सो गई मुनि जैमिनी के मन में कामाग्नि प्रज्वलित हुई, उनकी आंखों से नींद उड़ गई । वे आधी रात को उठकर उसी कुटिया के बाहर आए और कुटिया का दरवाज़ा खटखटाया । वह स्त्री जाग उठी किन्तु मुनि के आदेशानुसार उसने कुटि का दरवाज़ा नहीं खोला । मुनि जैमिनी ने बाहर से कहा मैं राक्षस नहीं, मैं मुनि जैमिनी इस आश्रम का ऋषि हूं । मैंने ही इस कुटि में तुम्हें आश्रय दिया है ।

उस स्त्री ने भय के कारण दरवाज़ा नहीं खोला । उसने विचार किया शायद कोई निशाचर मुनि का नाम लेकर दरवाजा खोलने के लिए कह रहा हो । मुनि जैमिनी काम के मद में दीवार पर चढ़कर उस कुटि में कूद पड़े । जैसे ही उन्होंने उस कामिनी का हाथ पकड़ा तो वह अर्न्तध्यान हो गई और उसके स्थान पर ऋषि वेद व्यास खड़े थे । उन्हें देखकर मुनि जैमिनी अत्यतं लज्जित हुए और उन्होंने ऋषि वेद व्यास से क्षमा याचना की ।

ऋषि वेदव्यास मुस्कराते हुए बोले "मुनिवर । आप जैसे महातपस्वी को काम ने गिरा दिया । आपको अभिमान था कि पांचों विकार आपके वश में हैं । पांच विकार तो दूर रहे आप एक विकार को भी वश में नहीं कर सके, आप काम के वश में हैं, काम आपके वश में नहीं।

प्रेमियो ! विकारों को वश में करने के लिए भी प्रभु से प्रार्थना करें, प्रभु आपकी रक्षा करेगा ।

११ अक्टूबर पूज्य स्वामीजी गंऊँसपुर में पधारे । वहां स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

गुण अवगुण दोनो सदा रहते हैं सब मांहि ।
हंस क्षीर का पान कर, तजे नीर वहांहि ।।

हंस के सामने आप दूध व पानी मिलाकर रखेंगे तो हंस उसमें दे दूध पी लेगा और पानी को वहीं चोड़ देगा । प्रेमियो ! आप भी हंस की भांति गुण ग्रहण करो और अवगुणों का परित्याग करो । दूसरों की निन्दा मत करो । निन्दा तीन मुख वाली तलवार है । जो निन्दा करता है जो निन्दा सुनता है और जिसकी निन्दा की जाती है तीनों को हानि पहुंचाती है । इसलिए किसी की निन्दा मत करो । दूसरों की निन्दा करने से आपका मन अशान्त रहेगा । दो पंडित यात्रा के लिए निकले, वे भ्रमण करते करते एक नगर में आये । वहां उन्होंने सुना श्री जयदेव, संतों व विद्वानों का बड़ा सत्कार करता है । दोनों पंडित श्री जयदेव के यहां आये, श्री जयदेव ने दोनों पंडितों का स्वागत करते हुए कहा कि आप नहाकर भोजन ग्रहण करें । दोनों पंडितों में से एक पंडित नहाने गया, जयदेव ने दूसरे पंडित से पूछा तुम्हारे साथ जो पंडित आया है वह कैसा है ? उस पंडित ने अपनी प्रशंसा करते हुए दूसरे पंडित की निन्दा करते हुए कहा कि वह तो मूर्ख है, पूरा गधा है । जब पहला पंडित नहाकर बाहर आया तो दूसरा पंडित नहाने गया । श्री जयदेव ने फिर दूसरे पंडित से वही प्रश्न पूछा कि जो पंडित अब नहाने गया है वह कैसा है ? उस पंडित ने भी अपना बड़प्पन दिखाते हुए दूसरे पंडित की निन्दा करते हुए, कहा कि वह पंडित विद्या क्या जाने, पूरा ऊंट है, दोनों पंडितों ने एक दूसरे की अनुपस्थिति में एक दूसरे की निन्दा की । श्री जयदेवजी को उनकी ये बातें ठीक नहीं लगीं । भोजन के समय श्री जयदेव ने एक पंडित के सामने घास का थाल और दूसरे पंडित के सामने कटीली घास का थाल रखा। दोनों पंडित क्रोधित होते हुए बोले, ''जयदेव! हमने तो आपकी प्रशंसा सुनी थी, आपने भोजन के लिए घास रखकर हमारा बड़ा अपमान किया है । हम मनुष्य हैं, ये हमारा आहार नहीं । जयदेव ने कहा ''पंडितो! आप में से एक पंडित ने दूसरे पंडित के लिए कहा कि

वह गधा है, दूसरे ने पहले पंडित के लिए कहा कि वह ऊंट है। आप दोनों ने एक दूसरे के लिए 'गधा और ऊंट' कहा है इसलिए मैंने आप दोनों के लिए उपयुक्त भोजन सामग्री रखी है।" दोनों पंडित यह सुनकर अत्यन्त लज्जित हुए और दोनों पंडितों ने प्रतिज्ञा की कि भविष्य में वे किसी की भी निन्दा नहीं करेंगे।

प्रेमियो! आप लोग एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए निन्दा करते हो या स्वभाव वश किसी की निन्दा करते हो, यह प्रवृत्ति ठीक नहीं गुण-ग्राही बनो। निन्दा करने से आध्यात्मिक शक्ति भी कम हो जाती है। नाम का स्मरण करो।

१७ अक्तूबर स्वामीजी जेकबाबाद में पधारे। वहां महाराज श्रीकृष्ण गिरि के स्थान कर पूज्य स्वामीजी ने सात दिन सत्संग वर्खा की। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि महाराज श्रीकृष्णगिरि महान विद्वान एवं भक्तजन थे, यहां उन्होंने राम नाम की धूम मचाई, भक्ति की गंगा प्रवाहित की। ऐसे संत, राजाओं महाराजाओं से भी महान हैं। उन्होंने सांसारिक पदार्थों का परित्याग कर आत्मिक आनंद प्राप्त किया और कई प्रेमियो का मार्ग दर्शन भी किया।

एक राजा अपने मंत्रियों एवं सिपाहियों सहित भ्रमण करता एक जंगल में आया, वहां वृक्ष के नीचे एक महात्मा बैठे थे। राजा ने उनसे पूछा 'आप कौन है?' संत ने उत्तर दिया "मैं राजा हूं।" यह सुनकर राजा विस्मय में पड़ गया। राजा ने संत से कहा 'राजा तो मैं हूं'। मुझे अपना राज्य है, सिपाही हैं, मन्त्री हैं, आप तो जंगल में रहते हैं। आप के पास कुछ भी नहीं, आप राजा कैसे?

राजा ऐसा कहकर थोड़ा आगे बढ़ा। संत ने राजा को बुलाते हुए कहा कि मेरे पास आये हो तो कुछ न कुछ ले जाओ। जो कुछ तुम्हें चाहिये मुझ में मांगो। राजा यह सुनकर संत के पास लौट आया और उन्हें प्रार्थना की कि उन्हें पुत्र संतान की इच्छा है। महात्मा ने कहा "प्रभु दयालु हैं, आपकी मनोकामना पूरी करेंगे"। यह उत्तर सुनकर राजा प्रसन्न हुए। राजा ने फिर संत से विनय की कि उन्हें कोई शारीरिक रोग है, उससे मुक्त हो जायें। संत ने कहा "राजन्ः तुम्हें इतना राज्य वैभव पदार्थ हैं फिर भी पुत्र संतान नहीं!

तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नही! और भी तुम्हारे मन में इच्छाएं होंगी, मैं तो यहां इच्छा रहित निश्चिन्त बैठा हूं। अब आप ही बताइये राजा में हूं या आप? तुम्हें दुश्मनों की चिन्ता रहती है कि किसी भी समय दूसरा राजा आक्रमण न कर दे, मुझे तो कोई चिन्ता नहीं, कोई चाहत नहीं आप तो चिन्ता और इच्छाओं के अधीन हो, मैं स्वतंत्र हूं।

चाह नहीं चिन्ता नहीं, मनवा बे परवाह।
जिसको कछु न चाहिए, वो शाहन के शाह ।।

राजा, संत का उत्तर सुनकर नतमस्तक हुआ। संत जिन्होंने तृषणाओं का त्याग किया है और भगवद् भन में तल्लीन हैं वे ही सच्चे राजा हैं। प्रेमियो! आप भी सांसारिक तृष्णाओं का परित्याग कर नाम का स्मरण करें तो आपको आध्यात्मिक आनंद की उपलब्धि होगी।

२५ अक्तूबर स्वामीजी हैदराबाद में स्वामी ग्वालानन्द आश्रम में पधारे। वहां स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज की पुण्य तिथि उत्सव के सम्बन्ध में स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि स्वामी ग्वालानन्दजी महान विद्वान थे। उन्होने सिन्धी एवं हिन्दी भाषा में भक्ति काव्य की रचना की है। उनके प्रवचन ज्ञान गर्भित थे। न केवल सिन्धी किन्तु कई गुजराती एवं पंजाबी भी उनके श्रद्धालु थे। प्रेमियो। आप भी ऐसे संतो का संग करें, नाम स्मरण करें। संसार के काम कभी पूरे नहीं होंगे। समय का सदुपयोग करें। सत्संग द्वारा ही तुम पर राम नाम का रंग चढ़ेगा।

साध संग से तरत है, कलयुग में नर नार।
कह टेऊं सत्संग कर, मन में श्रद्धा धार ।।

स्वामी ग्वालानन्द महाराज भी जीव को जागृत करते हुए कहते हैं:-

मोह ममत्व नर त्याग के धर ले हरिका ध्यान।
ग्वला सुख स्वरूप तज क्यों बांधे अज्ञान ।।

स्वामी ग्वालानन्द महाराज 'तत् त्वम असि' वेदान्द सूत्र का निरुपण करते हुए कहते हैं-

सच्चिदानन्द रूप तू कांहिं गिरो भ्रमकूप।
ग्वाला साक्षी चेतन धन, तू ही सुख स्वरुप ।।

जीव स्वयं सत् चित् आनंद रूप है, किन्तु सशंय भ्रमों के कूप में गिर जाने के कारण वह अपने साक्षीरूप को भूल गया है। प्रेमियो। आप भी अज्ञान की नींद से जाग्रत होकर स्वयं को पहचानो।

२८ अक्तूबर स्वामीजी 'पहिलाज पुरी' में पधारे वहां स्वामीजी ने संत कवि पहिलाजराम से ज्ञान गोष्ठी की। ३० अक्तूबर स्वामीजी कोटड़ी में पधारे। वहां स्वामीजी ने चार दिन सत्संग वर्खा की। वहां स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

कह टेऊँ इस जगत् में, यदि तुम चाहो सुख।
संतो का सत्संग सुन, देह न किसको दुख॥

प्रेमियो! यदि तुम्हें सच्चे सुख की चाहना है तो सत्संग करो संतो महात्माओ के अमृत वचन सुनो और उन वचनों पर चलने का प्रयास करो। सत्संग का बड़ी महिमा है। तपस्या से भी अधिक महत्व सत्संग का है। सत्संग की प्राप्ति भी भगवद् कृपा से होती है। गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं:-

बिन सत्संग विवेक न होई, राम कृपा बिन सुलभ न सोई॥

एक बार ऋषि विश्वामित्र एवं मुनि वशिष्ठजी ज्ञान गोष्ठी कर रहे थे। महर्षि वशिष्ठजी ने सत्संग की महिमा प्रतिपादित की और ऋषि विश्वामित्रजी ने तपस्या को महत्वपूर्ण बताया। दोनों महान विद्वानों ने 'सत्संग' व 'तपस्या' विषयों पर अपने अपने तर्क प्रस्तुत किये किन्तु निर्णय नहीं हो सका। इसके निर्णय के लिए वे दोनों देवताओं के पास गये किन्तु कोई भी देवता इसका निर्णय नहीं कर सका। वे भगवान श्री विष्णु की आज्ञा से शेषनाग के पास आये और उससे पूछा कि 'सत्संग' बड़ा है या 'तपस्या' बड़ी! शेषनाग ने कहा कि मेरे सिर पर सारी पृथ्वी का बोझ है, कुछ समय के लिए कोई यह बोझा उठाये तो मैं आपके प्रश्न का उत्तर दूँ। ऋषि विश्वामित्र ने अपनी दस हजार वर्ष की तपस्या का फल समर्पित कर पृथ्वी के थामने का संकल्प किया किन्तु वह पृथ्वी को थाम न सके। फिर मुनि वशिष्ठजी ने सत्संग की एक घड़ी का फल अर्पित करते हुए पृथ्वी के थामने का संकल्प किया तो पृथ्वी थम गई। तब शेषनाग ने कहा कि तुम्हें, तुम्हारे प्रश्न का उत्तर मिल गया। तपस्या से अधिक महत्त्व सत्संग

का है । सत्संग की एक घड़ी का फल अर्पण करने से पृथ्वी थम गई और तपस्या के हजारों वर्षो के फल अर्पण करने से भी पृथ्वी नहीं थमी । प्रेमियो! यदि आप जीवन सफल बनाना चाहते हों तो नित्य नियम से सत्संग में जाएं और अमृत पान करें ।

कराची में स्वामी हरिनामदासजी रहते थे, वे अचानक ब्रह्मलीन हुए। स्वामीजी का उनके साथ प्रेम का सम्बंध था । २ नवम्बर को स्वामीजी उनके स्थान 'हरिनामपुरी' में पधारे, संत देवीदासजी ने उनका स्वागत किया, स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि संत हरिनामदास जी विरक्त महात्मा थे । वे महान विद्वान और योगी थे । वे ज्योतिष विद्यभी जानते थे । उन्होंने धार्मिक एवं आध्यात्मिक विषयों पर पुस्तकें भी लिखीं जैसे 'सिद्धांत सार' 'हरिनाम विलास' आदि । ऐसे संत सदैव अमर अजर हैं ।

अमर देश में संत जन नित ही करत निवास ।
कह टेऊँ करते नहीं, काल कर्म जहं वास ।।

प्रेमियो ! आप भी स्वामी हरिनामदासजी की शिक्षाओं एवं सिद्धांतों पर चलने का प्रयास करें । वैराग्यवृत्ति धारण कर भगवद् भजन करें। भगवद् भजन करने का सुअवसर भी भाग्यवान को ही प्राप्त होता है।

बड़ भागी भक्ति करे, कर न सके दुरभाग ।
टेऊँ तांते सर्व तज, हरि भक्ति में लाग ।।

६ नवम्बर स्वामीजी ने कराची के स्वामीनारायण मंदिर में सत्संग वर्खा की । ७ नवम्बर, स्वामीजी अमरापुर स्थान टंडे आदम पर लौट आये । २५ नवम्बर स्वामीजी सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के साथ नाम प्रचार के लिए विभिन्न नगरों में गये । स्वामीजी ने नवाब शाह, कंडियारे, शहदादपुर, शाहपुर चाकर, मातिली, मीरपुर ख़ास आदि नगरों में राम-नाम की धूम मचाई । २२ दिसम्बर स्वामीजी सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज के साथ अमरापुर स्थान पर लौट आये ।

२ जनवरी १९४६ पूज्य स्वामीजी ने पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज से आशीर्वाद लेकर कोइटिया बलोचिस्तान की ओर प्रस्थान किया । रास्ते में विभिन्न नगरों में नाम का संदेश देते हुए स्वामीजी

१५ जनवरी कोइटिया में पधारे । वहां श्री द्वारकादास वाधवा, मोटूमल रोहड़ा एवं अन्य प्रेमियो ने स्वामीजी का भव्य स्वागत किया । वहीं स्वामीजी ने बीस दिन सत्संग वर्खा की । स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि प्रेमियो । प्रभु की प्राप्ति के लिए मन में प्यार पैदा करें, जैसे जैसे आपके मन में प्रभु के प्रति प्रेम बढ़ेगा, वैसे-वैसे आप परमात्मा के नजदीक होते जायेंगे । बार बार "श्री सत्नाग साक्षी" "जय श्री कृष्ण" मंत्र उच्चारण करें तो आपके दुख दूर हो जायेंगे और श्वास सफल होंगे ।

सत्गुर के सत् शब्द का इह निश कर अभ्यास ।
कह टेऊँ संसार के विघन होय सब नाश ।।

मनुष्य ऐसा समझता है कि वह अपने बल पर जी रहा है, अपने पांवों पर खड़ा है, एवं सब कुछ कर सकता है, यह उसका अहंकार ही है, थोड़ी सी शारीरिक या मानसिक पीड़ा होती है तो दम घुट जाता है । जीव का कुछ भी अस्तित्व नहीं । परमात्मा ही हमारा सहारा है । उसकी शक्ति के बिना हम कुछ भी नहीं कर सकते । इसलिए सदैव ईश्वर की अनुकम्पा के लिए ईश्वर की आराधना करनी चाहिए, सत्गुरु से प्रार्थना करनी चाहिए ।

चरनों का चाकर करो सत्गुर कृपा धार ।
कह टेऊँ सेवा करूं निश दिन तेरे द्वार ।।

मैं जब हरिद्वार में स्वामी शंकरानंद भारती के कमल चरणों में बैठकर वेदान्त का अभ्यास करता था, तब कुछ संतो व सहपाठियों के साथ, मैं बद्रीनाथ यात्रा के लिए जाना चाहता था, मुझे स्वामी शंकरानंद से आज्ञा लेने में संकोच हुआ । मैंने अपने सहपाठी अमरदेव से कहा कि तुम मेरी ओर से स्वामीजी से तीर्थ यात्रा के लिए आज्ञा लो। स्वामीजी ने मुझे बुलाकर कहा 'बेटा' । मेरे पास वेदान्त पढ़कर भी तुम बद्रीनाथ जाते हो ! स्वयं में ऐसी शक्ति हो कि बद्रीनाथ यहां आ जाय। ठीक है 'अब तुम यात्रा के लिए जाओ।' मैंने फिर स्वामीजी से पूछा कि तीर्थों से क्या मांगू? कहते है तीर्थ-स्थल या देव-स्थल पर जाकर कुछ मांगना चाहिए नहीं तो वे अपना अपमान समझते हैं। स्वामी शंकरनांदजी ने कहा "बेटा । उनसे यह प्रार्थना करो कि प्रभु

एवं सत्गुरु के प्रति प्रेम बढ़ता रहे ।'' प्रेमियो ! आप भी परमात्मा से प्रार्थना करते रहें कि आपके कमल चरणों व गुरु के प्रति श्रद्धा व प्रेम दिन दूना बढ़ता रहे । गुरु की कृपा द्वारा प्रभु भी प्रसन्न होते हैं और प्रभु का दर्शन भी होता है । सत्गुरु में पूर्ण विश्वास धारण कर यह प्रार्थना करें-

सत्गुर मुझको दान दे, प्रेम भक्ति विश्वास ।
कहे टेऊँ नित सुमति दे सन्तनि मांहि निवास ।।

स्वामीजी ने कोइटिया के प्रेमियो को धन्यवाद देते हुए कहा कि आप लोगों ने जो स्नेह व सम्मान दिया है, उसके लिए मैं आभारी हूं । प्रभु के पथ पर बढ़ते चलो, नित्य नियम, नाम स्मरण एवं दरिद्र सेवा करके जीवन सफल बनाओ ।

३ फरवरी स्वामीजी जेकबाबाद में पधारे । वहां स्वामी कृष्णगिर के स्थान पर उन्होंने चार दिन अमृत वर्खा की । उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि मोह दुखों का कारण है । मोह के बंधन तोड़ो और प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ो । जिसका जन्म हुआ है उसका मरण भी अवश्य होगा । जब कोई सम्बंधी संसार से चल बसता है या सांसारिक पदार्थों की हानि होती है, हम कितने न व्यथित होते हैं ।

जो दीसी ज़मी पर सो हो सी फना ।

कृशा गौतमी नाम की ब्राह्मणी का पुत्र मर गया । वह पुत्र का स्थूल शरीर लेकर गौतम बुद्ध के पास आई और रो रोकर उनसे प्रार्थना करने लगी कि महाराज ! मेरे प्यारे बेटे को जीवित कर दो । भगवान बुद्ध ने उसे कहा जिस घर में अब तक कोई मरा नहीं हो, उसी घर से एक मुठ्ठी भर सरसों ले आओ तो मैं तुम्हारे पुत्र को जीवित कर दूंगा । कृशा गोतमी कई घरों में भटकती रही, किन्तु उसे एक भी ऐसा घर नहीं मिला जिस घर में किसी की मृत्यु नहीं हुई हो । वह निराश होकर भगवान बुद्ध के पास लौट आई । श्री गौतम बुद्ध ने उसे समझाया कि सभी घरों में जन्म व मृत्यु होती रहती है । यह कोई नई बात नहीं, सब को मरना है ।

प्रेमियो । जब हम इस संसार में आये तब अपने साथ वापसी का

टिकट भी साथ में लाये हैं । लौटने के पूर्व सत्कर्म करें तो जीवन यात्रा सफल होगी ।

७ फरवरी पूज्य स्वामीजी कश्मीर में पधारे, वहां उन्होंने पांच दिन विभिन्न विषयों पर प्रवचन दिये । १३ फरवरी स्वामीजी कंधकोट में पधारे । उन्होंने वहां ६ दिन अमृत वचनों की वर्खा कर कई लोंगों का मार्ग दर्शन किया ।

१९ फरवरी स्वामीजी शिकारपुर में पधारे । वहां उन्होंने एक सप्ताह विभिन्न विषयों पर प्रवचन किया उन्होंने नाम की महिमा बताते हुए कहा-

नाम लीआ तिन सब किया, सुन्दर जप तप नेम ।
तीर्थ रटन स्नान व्रत तुला बैठ दत हेम ।।

प्रेमियो । राम नाम स्मरण प्रभु प्राप्ति के लिए उत्तम साधन हैं । संत सुन्दरदास नाम की महत्ता प्रतिपादित करते हुए कहते हैं कि जिस ने राम नाम का स्मरण किया उसने सब जप तप एवं तीर्थ किये । तराजू के एक पलड़े में तीर्थ यात्रा आदि कर्म कांड का फल रखें और दूसरे पलड़ें में नाम स्मरण तो फिर भी नाम स्मरण का पलड़ा भारी होगा । सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी हमाराज भी नाम का महत्त्व बताते हुए कहते हैं :-

चार अठारह छट कह कलि हरिनाम आधार ।
कह टेऊँ जो जपत तिहं, तिस का होत उद्धार ।।

चार वेद, अठारह पुराण छः शास्त्र कलियुग में हरिनामकी ही प्रधानता प्रतिपादित करते हैं । जो आस्था, श्रद्धा व विश्वास से नाम स्मरण करेगा उसकी आवागमन से मुक्ति हो जायेगी । राम नाम में बड़ी शक्ति है, जो भी पूर्ण विश्वास से नाम स्मरण करता है, उसके कष्ट क्लेश नष्ट हो जाते है । काशी में एक धनवान कुष्ट रोग से ग्रसित था उसने कई उपचार किए किन्तु कुछ भी फायदा नहीं हुआ । वह जिंदगी से संत्रस्त हो गया । उसने गंगा नदी में डूब कर आतम हत्या का विचार किया । इसी विचार से वह दूसरे दिन प्रातः काल गंगा तट पर आया। वहां उसे संत कबीरदास के शिष्य श्री पद्मनाभ ने देखकर पूछा "भैया !

इस समय तू यहां क्यों आया है ? उसी धनवान ने अपनी व्यथा सुनाते हुए कहा "मैं अब गंगा मैया की गोद में सदैव के लिए विश्राम पाने के लिए आया हूं ।" संत पद्मनाभ ने उसे साहस बंधाते हुए सांत्वना देते कहा "भैया । राम नाम के उच्चारण से तेरी पीड़ा दूर हो जायेगी। जब तुम गंगा में डुबकी लगाओ तो प्रभु से प्रार्थना करते हुए राम नाम का उच्चारण करो ।" उस धनवान ने संत की आज्ञानुसार जैसे ही गंगा में पांच बार डुबकी लगाते हुए पांच बार राम-नाम कहा तो वह कुष्ठ रोग से मुक्त हो गया । उसे नया जीवन मिल गया । वह संत पद्मनाभ के श्रीचरणों पर गिर पड़ा । प्रेमियो । यदि आप भी विश्वास के साथ नाम स्मरण करेंगे तो आप भी आदि-व्याधि से मुक्त हो जाएंगे और आप को असीम आनंद की उपलब्धि होगी ।

१ मार्च पूज्य स्वामीजी पने आकिल में पधारे । वहां उन्होंने एक सप्ताह तक सत्संग वर्खा की । उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा-

बुरा किसी का ना करो, सभ का भला विचार ।
टेऊँ बुराई जो करे तांका कर उपकार ।।

प्रेमियो । किसी का भी बुरा मत सोचो, बुरा मत करो, जो तुम्हारा बुरा करे तो भी तुम उसका भला करो । किसी को भी सताना पाप है । उसका दुष्परिणाम भुगतना पड़ेगा । पिपल-चट्टी गांव में रघु मछुआ रहता था । वह अपने परिवार के पालन पोषण के लिए मछुआ का काम करता था । एक दिन जैसे ही वह मछलियों को पकड़ रहा था तो एक मछली के मुख से आवाज निकली "त्राहि ! त्राहि ! भगवान नारायण त्राहि-माम्" रघु मछली की यह आवाज सुनकर आश्चर्य में पड़ गया, उसने उस मछली को पुनः पानी में डाल दिया, उस मछली के इन शब्दों ने मछुआ रघु के जीवन में परिवर्तन ला दिया, उसने मछुए के पेशे का परित्याग कर दिया । वह प्रतिक्षण "नारायण, नारायण' नाम का उच्चारण करने लगा । वह मछुए से भक्त बन गया । एक दिन वह नारायण कहते रास्ते से गुज़र रहा था, तो बच्चों की एक टोली में से एक बालक ने उसे पत्थर मारा । थोड़े समय के बाद उस पत्थर मारने वाले बालक की अकाल मृत्यु हो गई । बालक के

माता-पिता एवं अन्य सम्बन्धी रोने पीटने लगे। वे सोचने लगे कि स्वस्थ बालक की ऐसी अचानक मृत्यु कैसे हुई ! मृतक बालक के साथियो ने बताया कि उनके पुत्र ने निर्दोष रघु को पत्थर मारा तब दुर्भाग्यवश उक्त घटना घटित हुई। मृतक बालक के माता-पिता एवं अन्य बालक भक्त रघु के पास क्षमा याचना के लिए आये। भक्त रघु ने कहा कि उन्हें कोई पता नहीं, कब किसने पत्थर मारा। भगवान भला करेगा। बालक के माता-पिता के अनुरोध पर भक्त रघु उनके घर में गये, जहां मृतक बालक का शव पड़ा था। भक्त रघु ने कहा कि आओ मिलकर बालक के जीवनदान के लिए प्रभु से प्रार्थना करें। भक्त रघु ने प्रेम से प्रभु को प्रार्थना की, तत्क्षण ही मृतक बालक उठ खड़ा हुआ। माता-पिता अन्य सम्बन्धी एवं बालक अत्यन्त प्रसन्न हुए और भक्त रघु का आभार मानने लगे। प्रेमियो! किसी को मत सताओ। पर-अपकार पाप है और पर-उपकार पुण्य है।

७ मार्च पूज्य स्वामीजी घोटकी में पधारे। वहां उन्होंने चार दिन अमृत वचनों की वर्खा की। उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि प्रभु एवं सत्गुरु में पूर्ण विश्वास होना चाहिए।

श्रद्धावान लभते ज्ञानम्।

श्रद्धायुक्त व्यक्ति ही ज्ञान प्राप्त कर सकता है। भगवान श्री कृष्ण ने भी श्रीमद् भगवद् गीता में कहा है कि जिस मनुष्य के मन में ईश्वर के प्रति श्रद्धा और सत्गुरु एवं सद्शास्त्रों में विश्वास है, उसे ज्ञान की उपलब्धि एवं प्रभु की प्राप्ति हो सकती है। श्रद्धा के बिना किये हुए यज्ञ, दान आदि कर्म पूरा फल नहीं देते। सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज भी कहते हैं-

जप तप सेवा कर्म शुभ तीर्थ दान स्नान।
श्रद्धा बिन फल देत नहीं, कहे टेऊँ सत्नाम॥

दूसरे दिन स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

प्रेम सदा बढ़ता रहे, जो कब घटता नाहिं।
कह टेऊँ दुख सुख में, इक रस रह मन मांहि॥

सासांरिक सम्बन्धियों एवं लोगों से जो प्रेम है, वह कभी घटता, कभी बढ़ता है । मोह के कारण वह प्रेम निष्काम नहीं । कभी मन में खुशी ते कभी गम । किन्तु प्रभु एवं संतों के प्रति जो प्रेम होता है, वह कभी कम नहीं होता, वह प्रेम दिनों दिन बढ़ता जाता है । उसी प्रेम के कारण मन शांत रहता है । प्रभु प्रेम ही सच्चा प्रेम है। सच्चा प्रेमी सदैव समान भाव में रहता है, दुख हो या सुख हो, सफलता में अथवा असफलता में एक रस रहता है । प्रेम के प्रभाव के कारण उसे दुख महसूस ही नहीं होता । एक संत शारीरिक कष्ट में भी मुस्कुराता रहता था । एक प्रेमी ने उनसे पूछा "क्या आपको इस बीमारी के कारण कष्ट नहीं होता?" तब संत ने कहा "प्रभु की ओर से जो कुछ होता है उसका स्वागत करना चाहिए । प्रभु हमारी मां है, पिता है. वह बालक का कभी बुरा नहीं करता । जो कुछ वह करता है उसमें हमारी भलाई है । दुख-दर्द परमातमा की ओर से भेजे गये उपहार हैं, ये उपहार वह अपने प्रेमियो को ही भेजता है ।

जिसके साथ निष्काम प्रेम का सम्बन्ध होता है, उसका ध्यान करने से दुख दर्द का अहसास नहीं होता । मिस्र की स्त्रियां यूसुफ को देखते समय नीबू काट रही थी, यूसुफ का सौंदर्य देखते-देखते वे इतना तो तल्लीन हो गई कि नीबू काटते काटते उनकी उंगलियां कट गई, फिर भी उन्हें उंगलियां कट जाने से दर्द नहीं हुआ । जब सासांरिक मनुष्य का सौंदर्य इतना आकार्षित करता है तो प्रभु की अद्वितीय सुन्दरता एवं असीम सृष्टि का ध्यान करते हुए भक्त तल्लीन नहीं होंगे !

प्रेमियों । प्रति दिन कुछ न कुछ समय सासांरिक कार्यों से दूर होकर प्रभु का ध्यान करें, प्रभु के नाम का उच्चारण करें, तो आपका जन्म सफल होगा ।

शुभ अवसर यह मनुष्य तन, मिला भाग से तोह ।
फंस कर माया मोह में, टेऊँ तां मत खोय ।।

१५ मार्च पूज्य स्वामीजी अमरापुर स्थान टंडे आदम में लौट आये, स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज को दंडवत् प्रणाम कर मिली हुई भेंट उनके श्री चरणों में अर्पित की ।

अप्रैल में प्रेम प्रकाश मण्डल का वार्षिक उत्सव अमरापुर स्थान पर मनाया गया, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज, स्वामी गुरमुखदास स्वामी बसंतराम, स्वामी माधवदास एवं अन्य संतो ने सत्संग वर्खा की, स्वामी शान्ति प्रकाश महाराज ने सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज की स्तुति का भजन गाते हुए कहा कि स्वामी टेऊंरामजी महाराज ने अपनी भक्ति साधना से इस अमरापुर स्थान को अमर बना दिया । हमें उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारना चाहिए । सदैव प्रभु का स्मरण करें । मन लगाकर प्रभु से प्रार्थना करें तो वे अवश्य सुनेंगे। सत्गुरु महाराज कहते हैं :-

हृदय से जब प्रार्थना कह टेऊँ कर कोय ।
भगवद् के तब कान में पहुँचत शीघ्र सोय ॥

प्रेमियो । प्रभु प्रार्थना के साथ साथ कुछ दान भी करें । जो कुछ माया व पदार्थ आपके पास है वह प्रभु की धरोहर है । उसे गरीबों में बांटे । सत्गुरु महाराजजी भी अपनी वाणी में कहते हैं-

तीन कर्म नित ही करो, भजन, दान, स्नान ।
कह टेऊँ इन तीन से कलि में हो कल्यान ॥

स्वामीजी ने वार्षिक उत्सव के पश्चात् एक महीना सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के साथ भ्रमण किया, २ जून स्वामीजी हैदराबाद में स्वामी माधवदासजी के स्थान पर आये, वहां सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की पुण्य तिथि मनाई गई । वहां स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज ने हजारों प्रेमियों को 'सत्नाम साक्षी' मन्त्र देकर, उनका कल्याण किया, हम भी नित्य नियम से गुरुमंत्र का अभ्यास करें तो हमारा कल्याण होगा ।

सत्गुर के सत् शब्द का, स्मरन कर हरिवार ।
कह टेऊँ जिह सुमरते, अनुभव खुले द्वार ॥

स्वामी टेऊँरामजी महाराज सभी प्रेमियों को प्यार करते थे । वे करुणा के सागर थे । वे मांसाहार के विरुद्ध प्रचार करते थे, एक बार किसी प्रेमी ने उन्हें बताया कि मीरांपुर झोक शरीफ में सूफियों का बड़ा उत्सव है, जहां हिन्दू एवं मुसलमान श्रद्धालु आते हैं । वहां वे मांसाहार करते

हैं । कई बकरियों को काटा जाता है । यह सुनकर सत्गुरु महाराज का मन पिघल गया, वे अपनी मंडली सहित मीरांपुर झोक में उत्सव के अवसर पर पधारे, वहां सत्गुरु महाराज ने प्रवचन करते हुए श्रोताओं से अनुरोध किया कि मांसाहर का परित्याग करें, सभी धर्मों के संत, महात्मा, पैगम्बर यही शिक्षा देते हैं कि किसी प्राणी की हत्या मत करो, सभी प्राणियों से प्रेम करो, ये पशु-पक्षी भी प्रभु की मूक संतान हैं, इस पवित्र भूमि पर जहां सूफियों ने खुदा की इबादत की वहां मांसाहार करना महापाप है, जीवन में जीवदया की ज्योति जगाओ।

सत्गुरु महाराज के प्रवचन का बड़ा प्रभाव हुआ । सत्गुरु महाराज की विनती सुनकर सूफियों के प्रमुख ने भी आदेश दिया कि भविष्य में मांस का उपयोग नहीं करेंगे ।

१० जून पूज्य स्वामीजी मीरपुरख़ास में पधारे, वहां उन्होंने चार दिन अमृत वर्खा की उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा-

उदर भरन के कारने, भटकत काहिं अजान ।
त्यागे चिन्ता पेट की, सुमरो श्री भगवान ।।

लोग रात दिन अपनी तृष्णाओं को तृप्त करने के लिए भटक रहे हैं, तृष्णाएं कभी भी पूरी नहीं होंगी । माया का ऐसा चक्र है कि जीव माया के आकर्षण में प्रभु को भूल गया है । सत्गुरु महाराज अपनी वाणीमें फरमाते हैं कि मनुष्य को अपनी रोज़ी रोटी की चिन्ता नहीं करनी चाहिए, भगवद् भजन में ही जीवन सफल करना चाहिए।

एक बार वतायो फकीर भूख मिटाने के लिए भटक रहा ता, रास्ते में उसे मुर्शिद मिले उन्होंने उसे स्मरण कराया कि तू फकीर होकर पेट के लिए भटकता है, फकीर का काम है खुदा की बन्दगी करना, खुदा उसकी परवरिश करता है, उसे मांगना नहीं चाहिए ।

तेरी रोज़ी तुझको ढूंढे, तू दिल विच कर आराम ।
दाने दाने पर लिखा है उस खाने वाले का नाम ।।

वतायो फकीर, मुर्शिद के यह शब्द सुनकर गांव के बाहर जंगल में आया ओर पेड़ की डाली पर बैठकर खुदा को याद करने लगा, रात हुई उसे भूख लगी किन्तु बिना खाए सो गया, फिर सबेरे उठकर

पेड़ की डाली पर इबादत करने लगा । दोपहर के समय एक बारात वहां से गुज़र रही थी, बरातियों को भोजन साथ में था, धूप थी, इसलिए वे सब लोग उसी पेड़ के नीचे खाना खाने के लिए बैठ गये। स्वादिष्ट भोजन था, यह सब कुछ वतायो फकीर ऊपर से देख रहा था, उसे भूख भी लगी थी किन्तु उसे मुर्शिद के शब्द याद थे कि किसी से मांगना नहीं मालिक स्वयं तुम्हें खिलाएगा/ स्वादिष्ट भोजन की सुगंधि के कारण वतायो फकीर को थोड़ी खांसी हुई । बारात वालों का ध्यान पेड़ पर बैठे वतायो फकीर की ओर गया, वे फकीर को देखकर प्रसन्न हुए और उन्होंने उसे नीचे उतरकर खाने के लिए कहा, वतायो नहीं माने फिर उन्होंने उससे विनती की "फक़ीर साहब । आप पहले खाना खा़यें हम बाद में खायेंगे उनके आग्रह पर वतायो फकीर नीचे उतरा और उसने भर पेट स्वादिष्ट भोजन खाया । वह मन में विचारने लगा कि उसे रोटी के लिए दर-दर भटकना पड़ता है, आज उसने मुर्शिद की आज्ञानुसार भटकना बंद किया है तो लोग स्वयं बुलाकर उसे खाना खिला रहे हैं । वतायो फकीर खाना खाकर अपनी मस्ती में चलते रहे । तीसरे दिन फिर मुर्शिद मिला और पूछा "बताओ । खुदा परवरिश करता है या नहीं, वतायो फकीर ने मुस्कराते हुए कहा दाता देता है किन्तु मुझे जब खांसी आई तब उसने भोजन खिलाया।" प्रेमियो ! घर गृहस्थ के लिए आप पुरुषार्थ करें किन्तु रात दिन माया के पीछे न दौड़ें, अपने प्रतिदिन के कार्यों में से कुछ समय निकाल कर भगवत् भजन करें ।

१५ जून स्वामीजी शाहपुर चाकर में पधारे, वहां उन्होंने चार दिन अमृत वर्खा की, स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

धर्म कर्म ना छोड़िए जब तक तन में श्वास ।
कह टेऊँ करते रहो, धारे मन विश्वास ।।

मनुष्य देह की सार्थकता है विचार कर कर्म करना । यह प्रकृति का अटल सत्य है कि जो कर्म करता है उसका ही नाम होता है। काम आने वाली वस्तु को ही उपयोगी कहा जाता है । बिना कर्म के मनुष्य का कोई मूल्य नहीं । कर्म का ही मूल्य है, जैसा आप कर्म करेंगे वैसे ही फल की प्राप्ति होगी । कोई कितना क्यों न धनवान

हो, बड़ा शिक्षा शास्त्री हो, चतुर हो, कलाकार हो, नेता हो यदि वह कर्म-शील नहीं तो सम्मान का पात्र नहीं बन सकता, भगवान श्री कृष्ण श्रीमद् भगवद् गीता में अर्जुन से कहते हैं-

"कर्मण्येवाधिकारस्ते" कर्म करना तुम्हारा अधिकार है, किन्तु फल की इच्छा मत रखो। निष्काम कर्म की अधिक महत्ता है। कर्म का क्षेत्र भी विस्तृत है। यदि स्वार्थ साधन के लिए कर्म करते हैं तो उसका इतना महत्व नहीं। जितना कार्य उद्देश्य विशाल एवं निष्काम, उतना कार्यकर्ता का अधिक महत्व एवं सम्मान होता है। कई लोग ज्ञान की प्रशंसा करते हैं, यदि ज्ञान के अनुकूल कर्म नहीं किया जायेगा, तो ज्ञान का कुछ महत्व नहीं। यदि ज्ञान के अनुकूल कर्म करेंगे तो ज्ञान की सार्थकता होगी। जैसे किसी को रोटी पकाने का ज्ञान है किन्तु वह रोटी नहीं पकाता, आटा खाने से रोटी का स्वाद नहीं आयेगा। ज्ञान से भी तभी आनन्द मिलेगा जब अनुकूल कर्म करेंगे। श्री लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानन्द, साधु वास्वाणी, सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज, स्वामी लीलाशाह महान ज्ञानी थे परन्तु साथ साथ महान कर्मयोगी भी थे। इतिहास में ऐसी विभूतियों का ही महत्व होता है। प्रेमियो! आप भी जीवन में कर्मशील बनें और दूसरों को भी निष्काम कर्म करने के लिए प्रेरित करें। देश, जाति, समाज व धर्म के लिए बड़े उत्साह के साथ कर्म करें।

२१ जून स्वामीजी शहदादपुर में पधारे। वहां स्वामीजी ने 'दान' के विषय पर प्रवचन करते हुए कहा कि दान करने से धन कम नहीं होता। कुएं से जितना पानी निकालो, कुएं का पानी कम नहीं होता। वैसे ही जब धन का शुभ कार्यों में प्रयोग किया जाता है तो धन कम नहीं होता है। आप विशाल हृदय होकर दान पुण्य करें। कच्छ की ओर जुगुडू शाह रहते थे। वे बहुत दान करते थे। एक बार वर्षा न होने के कारण अकाल की स्थिति उत्पन्न हुई। जुगुडू शाह दूसरे नगरों से अनाज मंगाकर जरूरतमन्दों को मुफ्त में अनाज देते थे। उन्होंने अपना बहुत धन दीन दुखियों पर खर्च किया। इस कारण उनसे घर के सम्बन्धी अप्रसन्न हुए, फिर भी वह सेवा कार्यों में धन खर्च करता रहा। एक बार कुछ लटेरों को मोम के बड़े टुक्ड़े हाथ

लगे, उन लुटेरों ने मोम जुगडू शाह को बेच दी, एक दिन जुगुडू शाह के घर के आंगन में आग जल रही थी, मोम का एक टुकड़ा आग के समीप गिर पड़ा, आग के कारण मोम का वह टुकड़ा पिघलने लगा । पिघली मोम के अंदर स्वर्ण के टुकड़े टुकड़े दिखाई पड़े । यह चमत्कार देखकर जुगुडू शाह ने एक और मोम का टुकड़ा आग के नजदीक रखा, मोम जलने पर उसमें से भी स्वर्ण निकला, ऐसे सभी मोम के टुकड़ों में से स्वर्ण निकला, जुगुडू शाह ने जो कुछ दान किया था उससे सैकड़ों गुना अधिक धन स्वर्ण के रूप में उसे प्राप्त हुआ । प्रभु की ऐसी कृपा देखकर उससे नाराज सम्बन्धी भी अत्यन्त प्रसन्न हुए और वे भी उदारता से दान करने लगे । प्रेमियो। किसी का भी किया हुआ कर्म व्यर्थ नहीं जाता । कर्म का फल अवश्य मिलता है, किन्त दान पुण्य निष्काम भावना से करना चाहिए । उदारचित्त होकर माया सत्कर्मों में सफल करें तो प्रभु भी आपकी सहायता करेंगे।

२५ जून स्वामीजी "टंडे अल्लहयार" में पधारे । वहां स्वामीजी ने तीन दिन सत्संग वर्खा की, स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

तन मन धन पुन वचन से कीजे गुर की सेव ।
गुर को प्रसन्न जानके, लीजे आतम मेव ।।

शिष्य को तन मन धन से सत्गुरु की सेवा करनी चाहिए, जब सत्गुरु, सेवा भावना से प्रसन्न हो तभी उन्हें आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करनी चाहिए । रोहल फकीर २५ वर्ष अपने मुर्शिद के दर सेवा करता रहा, तत्पश्चात् मुर्शिद शाह इनायत ने उस पर इनायत की । कभी कभी गुरु शिष्यों से परीक्षा लेते हैं । शिष्य को चाहिए कि वह प्रसन्नतापूर्वक गुरु की आज्ञा का पालन करे । किसी न किसी दिन शिष्य गुरुकृपा का पात्र बन जायेगा ।

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती अपने गुरु स्वामी वर्जानन्द की बड़ी श्रद्धा से सेवा करते थे । स्वामी वर्जानन्द प्रति दिन सबेरे यमुना के जल से नहाते थे । स्वामी दयानन्द सबेरे यमुना नदी के किनारे जाकर गुरु के लिए यमुना का जल ले आते, तत्पश्चात् स्वामी दयानन्द आश्रम की सफाई करते थे । एक दिन सफाई करते करते कहीं थोड़ा सा कचरा रह गया और स्वामी वर्जानन्द के पांव

को कचरा लग गया । वे क्रोधित होकर स्वामी दयानन्द को डंडे से मारने लगे । श्री दयानन्द शान्त होकर डंडे सहन करते रहे । जब गुरु ने डंडे मारने बन्द किये तब दयानन्द ने कहा "गुरुजी! मेरा शरीर पत्थर समान है, आप के हाथ कोमल हैं, जब आपने मुझे डंडे लगाये तब आपके हाथों को कष्ट हुआ होगा । इसलिए कृपया मुझे क्षमा करें, शिष्य के ऐसे वचन सुनकर स्वामी वर्जानन्द ने उन्हें गले लगाया । प्रेमियो! आप भी प्रेम व श्रद्धा के साथ गुरु की सेवा करेंगे तो गुरु महाराज प्रसन्न होकर दया दृष्टि करेंगे ।

२८ जून स्वामीजी खंडू में पधारे । वहां स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि यह खंडू की भूमि महापवित्र है. धन्यधन्य है यह भूमि जहां सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी ने जन्म लिया । सत्गुरु महाराज जब बालक थे तब उनके घर में संत महात्मा आते थे और सत्संग वर्खा करते थे । कथा एवं प्रवचन श्रवण करने के कारण वे अत्यन्त प्रभावित हुए । भगवद् कथा श्रवण से मनुष्य के विचारों एवं व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है और उसका भविष्य भी उज्जवल होता है। ऋषि नारद पूर्व जन्म में एक दासीके पुत्र थे । वह ऋषि-मुनियों की बहुत सेवा करती थी । जब वे ऋषि-मुनि कथा करते थे, भगवद् चर्चा करते थे तो वह बालक उनके नजदीक बैठकर कथा श्रवण करता था। उनकी कथाएं श्रवण करते करते उसके मन में भक्ति, ज्ञान एवं वैराग्य उत्पन्न हुआ । इसी कारण ही वह दूसरे जन्म में ब्रह्माजी के पुत्र हुए और महर्षि नारद के नाम से प्रसिद्ध हुए । श्री नारद के मन में भगवान के प्रति अगाध भक्ति भावना थी, इसीलिए उन्हें भगवान का मन कहा जाता है ।

प्रेमियो! श्रद्धा व प्रेम से भगवद् कथा श्रवण करें तो आपका अवश्य कल्याण होगा । महाराजा पृथु ने भगवद् कथा श्रवण करने के लिए भगवान से प्रार्थना की कि उन्हें दस हजार कान दें जिससे वह सभी कानों से अधिक से अधिक भगवद् कथा श्रवण कर सकें । आप भी प्रतिदिन भगवद् कथा श्रवण का नियम रखें । कथा श्रवण करते करते आप प्रेमा भक्ति की सरिता में डूब जायेंगे, आपको अद्वितीय आनन्द की उपलब्धि होगी और बच्चों पर भी उत्तम संस्कार पड़ेंगे ।

२ जुलाई स्वामीजी अमरापुर स्थान पर लौट आये और सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज को नत मस्तक प्रणाम किया । कुछ दिन स्वामीजी ने वहां प्रवचन किए ।

८ अगस्त पूज्य स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की आज्ञा से, उनका आशीर्वाद लेकर संत भजनदासजी के साथ नाम प्रचार के लिए प्रस्थान किया । १० अगस्त स्वामीजी पीर गोठ में संत आतम प्रकाश के स्थान पर पधारे । स्वामीजी ने वहां आठ दिन अमृत वर्खा की । एक दिन स्वामीजी ने नाम की महिमा गाते हुए कहा-

कह टेऊँ संसार में लेह नाम की ओट ।
अंत काल दुख ना लगे, मिटे कर्म अघकोट ॥

प्रेमियो! नाम के बिना सभी आधार झूठे हैं, जिन मित्रों, सम्बधियों को आप अपना सहारा मान बैठे हैं वे भी नश्वर हैं । एक नाम का सहारा लें । नाम स्मरण द्वारा ही जन्म जन्म के पाप नष्ट होंगे और अंतकाल अच्छा होगा, इसलिए नाम को न भूलें, नाम द्वारा बुरी आदतों का भी परित्याग किया जा सकता है । एक धनवान प्रतिदिन गांजा पीता था । गांजा, शराब आदि नशीले पदार्थ स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं । ऐसी चीजें प्रयोग करने से धन का भी अपव्यय होता है और बच्चों पर भी बुरे संस्कार पड़ते है । एक दिन वह धनवान एक महात्मा के पास गया और उनसे प्रार्थना की कि मेरी गांजा पीने की आदत छूटती नहीं, आप ऐसी दया दृष्टि करें कि गांजा पीना छोड़ दूं । महात्मा बोले "बेटा! प्रतिदिन ५ हजार बार राम नाम का उच्चारण करो तो तुम्हारा गांगा पीना छुट जावेगा व तुम्हारी संतान का भी भला होगा, सम्बन्धी भी प्रसन्न होंगे । उसी दिन से ही धनवान ने महात्मा की आज्ञा का पालन किया, प्रति दिन राम नाम का स्मरण करने से उसकी बुरी आदतं छूट गयी । राम नाम ने उसके जीवन में परिवर्तन ला दिया।

एक दूसरा सज्जन सरकारी नौकरी करता थां वह अपना आधा वेतन शराब पीने में खर्च करता था । उसकी पत्नी उसे बहुत समझाती थी कि शराब का त्याग करो । यह बहुत बुरी आदत है, किन्तु पति नहीं मानता था । पत्नी दूसरा कोई उपाय न देखकर एक संत के पास गयी और उनसे प्रार्थना की, कि ऐसा आशीर्वाद दें कि मेरे पति शराब का

परित्याग करें। दूसरे दिन वह अपने पति को उसी संत के पास ले गई, संत ने उसे समझाते हुए कहा "बेटा! "शराब" शब्द, दो शब्दों शर और आब से बनाहै। शर अर्थात् शैतान और आब अर्थात् पानी, शैतान का पानी। सज्जन आदमी को शराब को हाथ भी नहीं लगाना चाहिए। तुम प्रति दिन राम नाम का उच्चारण करोगे तो इस बुरी आदत से छूट जाओगे। उस आदमी ने भी संत की आज्ञानुसार राम नाम का स्मरण आरम्भ किया। राम नाम के प्रभाव से उसकी शराब पीने की आदत छूट गयी, उसका जीवन बदल गया, वह शराबी से भक्त बन गया।

दूसरे दिन स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि जीव पूर्व जन्मों के कर्मों एवं संस्कार के अनुकूल फल भोगता है। किन्तु प्रभु की शरण लेने से फल में परिवर्तन हो सकता है। किसी को अपने कुकर्मों के कारण सूली का दंड लिखा हुआ है, भगवद् कृपा से सूली से कंटक बन सकता है। चन्द्र व राजू दो भाई थे। अग्रज चन्द्र, भगवान का ध्यान करता था भक्ति परक पद लिखता था और अनुज राजू मांस खाता था, शराब पीता था। उसके मन की वृति प्रभु की ओर नहीं थी, उसका बड़ा भाई उसे बहुत समझाता था कि मानव जीवन, विषयों, विकारों में व्यर्थ मत गंवाओ। प्रभु का स्मरण करो, उसकी स्तुति गाओ। बड़े भाई के इन शब्दों का राजू पर बड़ा प्रभाव पड़ा। उसने शराब, कबाब आदि व्यसनों का परित्याग किया। वह बड़ी श्रद्धा से मंदिर में जाकर भगवद् भजन गाने लगा। एक दिन चन्द्र और राजू दोनों मंदिर में गये। राजू प्रेमा भक्ति में तल्लीन होकर प्रभु की स्तुति गाने लगा। उसी समय अचानक भगवान की मूर्ति से आवाज आई "पुजारी। मेरी एक माला राजू के गले में डालो" पुजारी आज्ञानुसार फूल माला राजू के गले में डाल रहा था तो उसने पुजारी से कहा मेरे अग्रज खड़े हैं उन्हें भेंट करो। पुजारी ने कहा "यहां अग्रज व अनुज का प्रश्न नहीं! भगवान ने जिसके लिए आज्ञा की है उसे ही पुष्प माला भेंट करनी है।" पुजारी ने वह माला राजू के गले में डाल दी, यह देखकर चन्द्र ने विचार किया कि मैंने इतने वर्षों से भगवान की उपासना की है, स्तुति के गीत गाये फिर भी मैं प्रभु की कृपा का पात्र नहीं बन सका। चन्द्र मन में बहुत दुखी हुआ। वह

आवेश में आकर समुद्र में कूद पड़ा । तत्पश्चात् वह द्वारकाधीश मंदिर में आ पहुंचा। वहां भगवान श्री कृष्ण का दर्शन कर अत्यन्त प्रसन्न हुआ । भोजन के समय भगवान ने उससे कहा कि अपनी पत्तल के साथ एक और पत्तल भी रखो । चन्द्र ने पूछा 'वह पत्तल किस के लिए''? भगवान ने कहा "राजू के लिए ।" यह सुनकर भी चन्द्र को दुख हुआ । भगवान ने उसे समझाते हुए कहा "राजू का इस जन्म में व्यवहार ठीक नहीं रहा किन्तु पूर्व जन्म में उसने मेरी-बहुत उपासना की है। वह पूर्व जन्म में एक राजा था'' उसने शासन का त्याग कर वन में जाकर मेरी भक्ति की थी । वहां एक दूसरे राजा के संग में फिर वह विषय वासनाओं के चक्र में फंस गया । इस कारण वह इस जन्म में विषयों में फंस गया । अब उसके सब दोष नष्ट हो गये । अब वह माया से विमुक्त होकर मुझे प्राप्त करेगा ।" भगवान के ये वचन सुनकर चन्द्र का संशय दूर हुआ ।

प्रेमियो ! आप भी सदैव शुभ कर्म करें । क्योंकि बुरे संकल्पों, बुरे विचारों व बुरे कर्मों का बुरा फल भुगतना ही पड़ेगा ।

१८ अगस्त स्वामीजी माछियुनि गांव में पधारे । वहां उन्होंने चार दिन सत्संग वर्खा की । स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि दूसरों के अवगुण मत देखो । प्रेमियो ! आप गुणग्राही बनें । एक बार वतायो फकीर रास्ते से गुजर रहा था । उसके गले में दो थैलियां पड़ी थी, गले के आगे एक थैली, गले के पीछे दूसरी थैली थी । वतायो फकीर अपने आगे वाली थैली में बार बार झांक रहा था । उनसे किसी सज्जन ने पूछा कि तुमने ये थैलियां गले में क्यों डाली हैं और आगे वाली थैली में क्यों झांक रहे हो? वतायो फकीर ने उत्तर देते हुए कहा 'आगे की थैली में मेरे अवगुण हैं और पीछे के थैली में दूसरों के अवगुण। मैं आगे की थैली में इसलिए झांक रहा हूं जिससे कि मुझे अपने अवगुण मालूम रहें, और भविष्य के लिए भी सचेत रहूं । पीछे की थैली में दूसरों के अवगुण हैं, उनको मैं क्यों देखूँ । दूसरों के अवगुण देखने से वे अवगुण मुझ में प्रवेश कर सकते हैं ? दूसरों के अवगुण शीघ्र देखने में आते हैं, किन्तु मनुष्य अपने दोष नहीं देखता ।

प्रेमियो! यदि तुम सुखमय जीवन व्यतीत करना चाहते हो, तो दूसरों

के दोष मत देखो । अपने दोषों को दूर करने का प्रयास करो । किसी न किसी परिपूर्ण गुरु की शरण लेकर उससे गुरु मन्त्र की दीक्षा लो। सत्गुरु की कृपा से तुम्हारा कार्य सिद्ध होगा ।

सत्गुर की कृपा बिना, सरे न कोई काज ।
तांते गुर की शरण ले, कहे टेऊँ तज लाज ।।

गुरु मंत्र के अभ्यास करने से तुम्हें आनंद की उपलब्धि होगी ।

२२ आगस्त स्वामीजी उलरनि में आये, वहां स्वामीजी ने चार दिन सत्संग वर्खा की । २६ अगस्त स्वामीजी लाड़कनि में पधारे । वहां स्वामीजी ने दस दिन राम नाम की धूम मचाई । भाई वलरमल वाधवा एवं अन्य प्रेमियो ने स्वामीजी का स्वागत किया । स्वामीजी ने उपदेश देते हुए कहा कि रामलीला अथवा रासलीला में जो भी पात्र भगवान या किसी देवता के रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं उसे साक्षी-रूप समझ कर उनकी उपासना एवं वन्दना करनी चाहिए । उन्हें साधारण मनुष्य नहीं समझना चाहिए । एक धनवान ने रासलीला का आयोजन किया चन्दा डाकू को पता चला कि उस रासलीला में भगवान श्री कृष्ण के चरणों में अमूल्य भेंट अर्पित की जायेंगी और भगवान को अमूल्य आभूषण पहनाये जायेंगे । वह डाकू अपने साथियों सहित रासलीला स्थल पर पहुंच गया । दर्शक इस डाकू को रासलीला में देखकर भयभीत होकर भागने लगे । भगवान श्री कृष्ण के पात्र ने आयोजक धनवान से पूछा लोग क्यों भाग रहे हैं? धनवान ने बताया कि डाकू आये हैं उनके भय से लोग भाग रहे हैं । भगवान रूप पात्र ने लागों को सांत्वना देते हुए कहा 'डरो मत' ! इतने में चन्दा डाकू ने भगवान श्रीकृष्ण रूप पात्र के आभूष्ण छीन लेने का प्रयास किया तो भगवान ने उसकी बांह मरोड़ कर ऐसी लात मारी कि वह हताश होकर गिर पड़ा । उसके साथी यह देखकर आश्यर्च में पड़ गये । भगवान ने उससे कहा 'बेशर्म । तुम मेरे आभूषण छीनने आये हो, तुम्हें इतना साहस कैसे हुआ?' जब वह डाकू सचेत हुआ तब वह भगवान के श्री चरणों में गिर पड़ा और क्षमा याचना करने लगा । उस डाकू के जीवन में परिवर्तन आ गया और वह डाकू से कृष्ण- भक्त बन गया।

एक बार कहीं रासलीला हो रही थी तो वहां एक व्यथित कुबडी

माता ने भगवान श्रीकृष्ण के पात्र को प्रार्थना करते हुए कहा 'भगवान्। आपने कुबड़ी का कूब दूर किया, मेरा भी कूब दूर करें।' ऐसा कहते हुए वह माता भगवान श्रीकृष्ण के श्री चरणों में गिर पड़ी। भगवान श्रीकृष्ण के पात्र ने उसे अपनी लात धीरे से लगाई तो वह माता ठीक हो गई, उसका कूब गायब हो गया। चमत्कार देखकर दर्शकों की भगवान श्रीकृष्ण के प्रति अगाध श्रद्धा हुई। प्रेमियो! रासलीला हो या रामलीला हो उसमें जो भगवान या देवता रूप में पात्र हो उन्हें साक्षी स्वरूप समझकर नत मस्तक होकर वंदना करनी चाहिए।

५ सितम्बर स्वामीजी मटियुनि में आये। वहां स्वामीजी ने एक सप्ताह सत्संग वर्षा की। स्वामीजी ने संतो की महिमा गाते हुए कहा-

कह टेऊँ पावन सदा, तन मन बानी जास।
समदर्शी निरमोह नित, साधू कहिए तास॥

सच्चे संतो का तन मन एवं वाणी पवित्र होती है। उनकी किसी भी पदार्थ में आसक्ति नहीं होती। वे सदैव समदृष्टि होते है, सभी में ब्रह्म का साक्षात्कार करते हैं।

एक बार संत नामदेव जंगल में रोटियां पका रहे थे। एक कुत्ता एक रोटी मुंह में डालकर भागा, संत नामदेव भी उसके पीछे भागते हुए कहने लगे 'भगवान। यह रोटी लौटा दो तो उस पर घी लगाकर दूँ, आप बिना घी लगी रोटी कैसे खायेंगे। संत नामदेव ने एक कुत्ते में प्रभु के दर्शन किए। प्रेमियो। संत सभी प्रेमियों में प्रभु का दर्शन करते हैं। संगमरमर की मूर्ति को भी भगवान की साक्षात् मूर्ति समझकर भोग लगाते हैं। संत नामदेव ने भगवान की मूर्ति के समीप दूध रखकर प्रेम से उसे पिलाया। प्रेमियो ! आप भी मन में श्रद्धा व विश्वास रखकर प्रभु की उपासना करें और सभी प्रेमियों में प्रभु का दर्शन कर उन्हें प्यार दें। सत्पुरुषों का संग करें और किसी परिपूर्ण गुरु की शरण लें तो भवसागर से तर जायेंगे।

सत्गुर की कृपा बिना, भव सिन्धु तरे न कोय।
कह टेऊँ गुर शरण ले, जे भव तरना होय॥

१३ सितम्बर स्वामीजी संत हरिचूराम साहब के पुण्य तिथि उत्सव

के सम्बन्ध में शाहपुर में आये । वहां स्वामीजी ने तीन दिन सत्संग वर्खा की । स्वामीजी ने संत हरिचूरामजी की स्तुति गाते हुए कहा कि संत हरिचूरामजी ने कई दुखियों के दुख दूर किये । वे सदैव 'हरिनाम' 'सत्नाम' का उच्चारण करते थे । प्रेमियो । आप भी प्रभु के किसी न किसी नाम का उच्चारण करते रहें । नाम स्मरण से आध्यात्मिक शक्ति का उद्भव होगा । संतो को नाम की ही शक्ति होती है । वे इस शक्ति द्वारा दुखियों के दुख दूर करते हैं । एक बार पेसूमल को कुतिया ने काटा, वह संत हरिचूरामजी के पास आये उन्होंने उनसे कहा कि जिस जगह पर कुतिया ने काटा है, उस जगह पर थल्हे के चूल्हे की राख लगाओ, सांई सेऊरामजी ठीक करेंगे । पेसूमल ने सतं हरिचूराम की आज्ञानुसार थल्हे के चूल्हे की राख लगाई तो न केवल कुतिया के काटने का असर कम हो गया बल्कि वह निशान भी गायब हो गया । प्रेमियो! आप भी संतों में विश्वास रखें तो आपके कष्ट क्लेश कट जायेंगे ।

१७ सितम्बर पूज्य स्वामीजी खानपुर में आये । स्वामीजी ने वहां तीन दिन प्रवचन किया । तत्पश्चात् वे मंघनवारी में पधारे । वहां स्वामीजी ने दो दिन अमृत वर्खा करते हुए कहा कि प्रातःकाल ब्रह्म मुहुर्त में उठकर प्रभु का स्मरण करें और रात को सोने से पूर्व भी नाम चिंतन करें । बड़े बड़े संत महात्मा आध्यात्मिक शिखर पर पहुंचने के पश्चात् भी नित्य प्रति नाम स्मरण में तल्लीन रहते हैं । एक बार स्वामी रामकृष्णजी ने संत तोतापुरी से पूछा कि आप इतने महान संत हैं फिर भी आपको भगवद् ध्यान एवं नाम चिन्तन की क्या आवश्यकता है? ''संत तोतापुरीजी ने उत्तर दिया'' पीतल के बर्तन को प्रतिदिन साफ नहीं किया जायेगा तो उसकी इतनी चमक दमक नहीं रहेगी । मनुष्य का मन भी ऐसा ही है । यदि नित्य नियम से भगवान का ध्यान एवं स्मरण नहीं करेंगे तो मन अशुद्ध रहेगा । एकाग्रचित्त होकर ध्यान करने से आनन्द की प्राप्ति होगी । स्वामी रामकृष्णजी यह उत्तर सुनकर प्रसन्न हुए फिर तो स्वयं भी स्वामी रामकृष्णजी घंटों भगवद् भजन में मग्न रहते थे । जिसका ध्यान किया जाता है उसके गुण स्वयं ध्यान करने वाले में आ जाते हैं । प्रेमियो! जैसे जीने के लिए खाना पीना एवं वायु आवश्यक है, उनसे अधिक आवश्यक है नाम स्मरण । नाम को मत भूलो ।

२२ सितम्बर स्वामीजी लुकमान में आये । वहां राजावीर स्थान पर उन्होंने तीन दिन सत्संग वर्षा की । स्वामीजी ने उपदेश देते हुए कहा कि नाम स्मरण से स्वास्थ्य भी ठीक रहता है और मनुष्य आयुष्मान भी होता है । एक बार राजा इन्द्रद्युमन ने महर्षि लोमशजी से पूछा कि आपकी बड़ी दीर्घायू का क्या रहस्य है? महर्षि लोमश ने कहा ''मैं पूर्व जन्म में गरीब शूद्र था । एक दिन दोपहर के समय मैंने नदी में नहाते हुए एक विशाल शिवलिंग देखा । मैंने नहाकर कमल के फूलों से शिवलिंग की पूजा अर्चना की । उस समय मैं बहुत भूखा था । भूख के कारण मेरी मृत्यु हो गई और मैंने एक ब्राह्मण के घर में जन्म लिया । पूर्व जन्म में शिव लिंग की उपासना करने के कारण मुझे पूर्व जन्म की स्मृतियों का स्मरण आने लगा । मैं मुंह से कुछ नहीं बोलता था, अपने मन में 'ॐ नमः शिवाय' 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र का जाप करता रहता था । मेरे पूज्य पिताजी का स्वर्गवास हो जाने के पश्चात् मेरे परिवार के सम्बन्धियों ने मुझे गूंगा समझकर ठुकरा दिया । मैं सारा समय भगवान श्री शंकर की आराधना में लीन रहता था । इस प्रकार एक सौ वर्ष बीत गये भगवान शंकर ने मुझ पर प्रसन्न होकर मुझे दर्शन दिया और कहा 'आयुष्मान भव' मेरी दीर्घायु का रहस्य भगवान शंकर की उपासना है । प्रेमियो । आप भी नित्य नियम भगवद् भजन करें तो आप में भी नई शक्ति का संचार होगा । किसी न किसी देवता अथवा परमात्मा की शरण अवश्य लें, वही आपकी रक्षा करेंगे ।

२५ सितम्बर स्वामीजी ने निन्दामाणियुनि में सत्संग वर्षा की । २६ सितम्बर स्वामीजी स्वामी रामनन्दजी महाराज का दर्शन करने के लिये उनके स्थान पर गये स्वामीजी ने संत स्वामी रामानन्दजी से ज्ञान गोष्ठी की ।

२७ सितम्बर से ४ अक्तूबर पूज्य स्वामीजी ने ठोड़ही, गाड़हीमोरी रामेजा, राहूजा एवं अन्य गांवों में सत्संग वर्षा की । ६ अक्तूबर आप अमरापुर स्थान पर लौट आये । आपने सतगुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज को दंडवत प्रणाम कर प्राप्त हुई भेंट उनके श्री चरणों में अर्पित की। कुछ दिन स्वामीजी ने वहां प्रवचन किया । २० अक्तूबर स्वामीजी

स्वामी ग्वालानन्द आश्रम हैदराबाद में पधारे। वहां पूज्य स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज के पुण्य तिथि उत्सव के उपलक्ष्य में प्रवचन करते हुए उन्होंने कहा कि स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज महान ज्ञानवान व विद्वान थे। उनकी वाणी में वेदान्त दर्शन है। पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज उनके आध्यात्मिक मार्ग दर्शक थे। ऐसे संत प्रभु के नित अवतार हैं। उनकी सेवा से प्रभु भी प्रसन्न होता है।

सब स्वार्थ के मीत हैं, बिन स्वार्थ हैं संत।
कह टेऊँ तहं सेव से, राजी हो भगवन्त॥

दूसरे दिन स्वामीजी ने 'दया' विषय पर प्रवचन करते हुए कहा-

धार दया दिल में सदा, दीनों को कर प्यार।
टेऊँ इस उपकार से, अपना करो उद्धार॥

प्रेमियो। जिस मनुष्य के हृदय में दया भावना नहीं, वह पशु से भी गिरा हुआ है। दया भाव से दीन दुखियों की सेवा करें उन्हें स्नेह दें, पशु पक्षियों पर भी दया दृष्टि करें। एक बार अकाल पड़ा। ऐसे कठिन समय में एक संत हृदयी चने उबालकर भूखों को चने खिलाता था। एक गरीब आदमी चने लेकर एक वृक्ष के नीचे बैठकर खाने के लिए आगे बढ़ा। रास्ते में एक स्त्री जिसने कुछ समय पूर्व बालक को जन्म दिया था। उसने उससे पूछा कि अन्न क्षेत्र बंद तो नहीं हो गया? उस आदमी ने उत्तर दिया "अन्न क्षेत्र तो बंद हो गया" वह स्त्री भी प्रति दिन अन्न क्षेत्र में चने खाने के लिए जाती थी, किन्तु आज प्रसूता होने के काण वह निश्चित समय पर अन्न क्षेत्र में नही जा सकी, भूखी रह गई। वह गरीब आदमी जिसके हाथों में चने थे, उसके हृदय में उस भूखी स्त्री के प्रति दया भावना जागृत हुई। वह स्वयं भी भूखा था किन्तु उसने चने स्वयं न खाकर उस प्रसूता गरीब स्त्री को खाने के लिए दे दिये। इसी दया भावना के कारण वह गरीब व्यक्ति दूसरे जन्म में मान्धाता नाम से चक्रवर्ती राजा बना। प्रेमियो। किसी का किया हुआ कर्म व्यर्थ नहीं जाता। हम आम की गुठली चूस चूस कर फेंक देते है फिर भी उससे पेड़ पैदा होता है और वह हजारों आम देता है। समय पर किसी की सहायता करने का अधिक महत्व है। किसी भूखे को खिलाना, किसी प्यासे को

पानी पिलाना, किसी निर्वस्त्र को वस्त्र देना पुण्य कार्य है । यदि हम दूसरों पर दया करेंगे तो प्रभु हम पर दया करेंगे ।

२४ अक्तूबर पूज्य स्वामीजी, स्वामी माधवदासजी के स्थान पर आये । वहां स्वामीजी ने एक सप्ताह सत्संग वर्खा की । स्वामीजी वहां कवि पहिलाजरामजी से मिलने के लिए पहिलाजपुरी में भी गये और उनसे ज्ञान गोष्ठी भी की । १ नवम्बर स्वामीजी खंडू में आये। वहां स्वामीजी ने स्वामी बसंतरामजी महाराज से ज्ञान गोष्ठी की । ४ नवम्बर को पूज्य स्वामीजी अमरापुर स्थान पर लौट आये और स्वामी सर्वानन्दजी महाराज को सादर प्रणाम किया । स्वामीजी कुछ दिन वहां ही सत्संग प्रवचन करते रहे । उन दिनों देश में स्वतंत्रता का संग्राम तेजी से चल रहा था, कभी कभी कुछ देश भक्त अमरापुर स्थान पर आते थे । स्वामीजी राष्ट्रीय विषयों पर उनसे चर्चा करते थे । स्वामीजी प्रवचन करते समय राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत प्रसंग भी बताते थे । उनके प्रवचन करने का ढंग निराला था । वे हंसते हंसाते कई शिक्षाप्रद दृष्टांत सुनाते थे । इसलिए उनका प्रवचन श्रोताओं को अधिक प्रभावित करता था । उन्होंने अपने विनम्र एवं मधुर स्वभाव के कारण हजारों प्रेमियो को आकर्षित किया ।

१ दिसम्बर स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से आज्ञा लेकर भ्रमण के लिए प्रस्थान किया । १२ दिसम्बर स्वामीजी कंधकोट में पधारे, वहां स्वामीजी ने पांच दिन सत्संग वर्खा की । स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

बुरा किसी का ना करो, सभ का भला विचार ।
टेऊँ बुराई जो करे, तांका कर उपकार ।।

प्रेमियो! उपकार करने में ही मानव जीवन की सार्थकता है । सब का भला करो, मन में भी किसी के लिए बुरा मत विचारो । यदि आपके साथ कोई बुरा व्यवहार करता है तो भी आप उसकी भलाई करें । यदि आप से कोई बुरा व्यवहार करता है तो उसका दुष्परिणाम उसको भुगतना पड़ेगा । जिसके मन में द्वेष होता है, तैमनस्य की भावना होती है, वह अशांत रहता है, आप अपनी शांति क्यों गंवाते हैं । सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज जैसे महान विभूति से कुछ लोगों ने कितनी ईर्ष्या की, उन्हें सताया, संतो की कुटियाओं को आग लगवाई,

फिर भी स्वामीजी ने उनको स्नेह दिया । संत कबीरदासजी भी कहते हैं-

जो तोको कांटा बुवे तांहि बोव तू फूल ।
तोह फूल के फूल हैं, वांको हैं त्रिसूल ।।

बीकानेर के राजा भरटेराव ने संत दादू को निमंत्रित किया । संत दादू दयाल उनके यहां पधारे । कुछ दुष्ट मंत्रियों ने संत दादू के विरुद्ध राजा के कान भरे । राजा कानों के कच्चे थे । उसके मन में श्रद्धा के स्थान पर मन में अश्रद्धा पैदा हुई । राजा ने संत दादू को अपमानित करने के विचार से कुछ प्रश्न पूछे कि तुम्हारा धर्म क्या है? तुम्हारी रहनी कैसी है ? तुम्हारे काम क्या हैं ? तुम्हारी कथनी क्या है? संत दादू दयाल ने उत्तर देते हुए कहा, हमारा धर्म है रामनाम स्मरण, पांचों इन्द्रियों पर नियंत्रण करना हमारी रहनी है, हम से पूर्व जो उत्तम कार्य किये गये हैं, हमारे वैसे ही कार्य हैं, हमारी कहनी है राम नाम स्मरण करो ।" अभिमानी राजा ने संत दादू के ये उत्तर सुनकर कहा कि इन उत्तरों से आपका ज्ञान प्रतिभासित नहीं होता । संत दादू अब शान्त हो गये । दुष्ट राजा ने संत दादू की हत्या की भावना से एक मस्त हाथी को छोड़ा । जब संत दादू अपने शिष्यों के साथ जा रहे थे, तो उनके सामने वह मस्त हाथी आया, संत दादू के शिष्य तो डर गये किन्तु संत दादूजी निडर खड़े रहे । तब उस मस्त हाथी ने अपनी सूंड से संत दादू के चरणों की रज उठाकर अपने मस्तक पर लगाई और तत्पश्चात् विनम्रता के साथ उनको प्रणाम किया । संत दादू ने हाथी के ऊपर प्यार से हाथ फेरा, फिर वह हाथी संत दादू के चरण स्पर्श करने लगा। यह देखकर मंत्री एवं राजा अचम्भित हुए । राजा भी मन में बहुत दुखी हुआ कि संत दादू उसे श्राप न दे दें । राजा ने संत दादू के श्री चरणों में गिर कर क्षमा याचना की और संतो की सेवा के लिए उनके चरणों में धन भेंट किया । संत दयालू होते हैं । संत दादू ने राजा को धन लौटाते हुए उसे स्नेह दिया । दुष्ट राजा ने संत दादू के साथ कितना दुर्व्यवहार किया किन्तु संत दादू ने उसे स्नेह दिया ।

६ दिसम्बर पूज्य स्वामीजी संत प्रभाराम की पुण्य तिथि उत्सव सम्बंध

में पीरगोठ में पधारे । वहां स्वामीजी ने तीन दिन सत्संग वर्खा की। स्वामीजी ने संत प्रभाराम की स्तुति करते हुए कहा कि बचपन में ही उनके मन में वैराग्य वृत्ति पैदा हुई । वे प्यासे पथिकों के लिए पानी के "प्याऊ" भर रखते थे एवं एकांत में भगवत् भजन भी करते थे। भक्ति करते करते उन्हें सिद्धि प्राप्त हो गई थी । पीरगोठ के ब्राह्मण महाराज मूलचन्द को संतान नहीं थी, जो भी सन्तान होती थी वह मर जाती थी इसलिए वे उदास रहते थे । इसी व्यथा के कारण वे एक दिन संत प्रभाराम के पास आये । संत प्रभाराम ने महाराज मूलचन्द को उदास व निराश देखकर कहा "चिन्ता मत करो, तुम्हें तीन पुत्र होंगे । ज्येष्ठ पुत्र का नाम 'जेठानन्द' रखना ।" संत प्रभाराम के वचन सत्य हुए । महाराज मूलचन्द को तीन पुत्र हुए उनका ज्येष्ठ पुत्र महाराज श्री जेठानन्द मृदुभाषी एव विद्वान और दो पुत्र संतोषी हैं । प्रेमियो! संतो के पास किसी वस्तु की कमी नहीं, कमी है तो हमारे विश्वास की । प्रभु एवं संतो में पूर्ण विश्वास रखकर, प्रार्थना करें तो तुम्हारा बेड़ा पार हो जाएगा । जैसे संत प्रभाराम ने नाम स्मरण किया, पशु-पक्षियों की सेवा की वैसे ही तुम भी भगवद् भजन करो और प्राणीमात्र की सेवा करो ।

१० दिसम्बर पूज्य स्वामीजी सुजावल में आये । वहां स्वामीजी ने चार दिन सत्संग वर्खा की । स्वामीजी ने 'दान' के सम्बन्ध में प्रवचन करते हुए कहा कि विशाल हृदय होकर दान पुण्य करें । दान करने से धन कम नहीं होता । निष्काम दान का बड़ा महत्त्व है । एक बार सूर्य ग्रहण के अवसर पर कई यात्री कुरूक्षेत्र तीर्थ स्थान की ओर जा रहे थे उनके साथ एक घास काटने वाला गरीब व्यक्ति भी था । कुरुक्षेत्र में कई यात्रियों ने यथा शक्ति दान किया । घास काटने वाले व्यक्ति के पास खुरपा और फावड़ा के अतिरिक्त और कुछ नहीं था । उसने अपने कमाई वाले दोनों साधन किसी जरूरतमंद को वहां दान कर दिये । ग्रहण छूटने के पश्चात् वहां कड़ी धूप थी । किन्तु जहां वह घास काटने वाला व्यक्ति सब यात्रियों के साथ बैठा था वहां बादल के कारण छाया थी । वे यात्री आपस में कहने लगे कि उनके दान पुण्य के फलस्वरूप ही उनके ऊपर बादल की छाया है । उसी समय वहां राजा भी आ गये उसने उनसे पूछा कि क्या चर्चा हो रही

है? उस घास काटने वाले व्यक्ति के अतिरिक्त सभी यात्री अपने अपने दान पुण्य का उल्लेख करते हुए कह रहे थे कि उनके दान पुण्य के कारण ही उनके ऊपर बादल की छाया है। राजा ने उन्हें कहा कि आप सब अलग अलग स्थानों पर बैठें। राजा के आदेशानुसार यात्री अलग अलग स्थानों पर बैठ गये। जहां वह गरीब घास काटने वाला बैठा था उसके ऊपर बादल की छाया होने लगी और जगह कड़ी धूप ही धूप। फिर उसी व्यक्ति को कहा गया कि तुम उठकर अन्य स्थान पर जाओ तो जैसे ही वहां से चलने लगा तो बादल भी साथ साथ उसके ऊपर चलने लगा। यह चमत्कार देखकर राजा एवं अन्य यात्री आश्चर्य में पड़ गये। राजा उस गरीब व्यक्ति को अपने साथ महल में ले गये तो बादल की छाया भी उसके ऊपर चलती रही। राजा ने मन्त्रियों को बुलाया और उनसे पूछा कि, क्यों इस घास काटने वाले गरीब के ऊपर बादल हैं और अन्यत्र कड़ी धूप? राज सभा में उससे पूछा गया कि उसने ऐसा कौन सा दान किया है जिसके कारण उसके ऊपर बादल की छाया है? उस गरीब व्यक्ति ने कहा कि मेरे साथियों ने तो बहुत दान पुण्य किये किन्तु मेरे पास खुरपा व फावड़ा के सिवाय और कुछ नहीं था जो दान कर सकूं। मैने कुरुक्षेत्र कुण्ड में नहाने के बाद अपना खुरपा व फावड़ा किसी जरूरत-मंद व्यक्ति को दे दिये। और कुछ तो मैंने दान नहीं किया।

सभा में बैठे पंडित ने राजा से कहा "राजन्! अन्य यात्रियों ने अपनी शक्ति के अनुसार दान पुण्य किया है, किन्तु इस व्यक्ति ने अपनी कमाई के दोनों साधन दान में दे दिये हैं इसलिए इस के ऊपर भगवान की विशेष कृपा हुई है। यह बादल भगवद् कृपा का द्योतक है। राजा यह सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुए और गरीब व्यक्ति को उसने सम्मानित किया। प्रेमियो! आप भी निष्काम भावना से दान पुण्य करें तो आप भी भगवद् कृपा के पात्र बन सकते हैं।

१६ दिसम्बर स्वामीजी महेसिरन में पधारे। वहां स्वामीजी ने सात दिन अमृत वर्खा की। पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि प्रेमियो! प्रभु का नाम कल्याणकारी है, सदैव उसका स्मरण करते रहें। राजा रणजीतसिंह जब भी किसी कार्य के लिए घर से बाहर जाते

थे या युद्ध के लिए प्रस्थान करते थे तो पहले भगवान का स्मरण कर बाद में घोड़े पर सवार होते थे। वे कहते थे-

"शकुन अशकुन तिस्नूं लगे, जिसदे हृदे न नाम"

जिसके मन में नाम है उसे शकुन अपशकुन नहीं लगेगा। उनका नाम में इतना विश्वास था कि घोड़े पर सवार होते हुए भी नाम स्मरण करते थे इसलिए उन्हें सदैव सफलता प्राप्त होती थी। कुछ लोग कहते हैं कि ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् नाम स्मरण की आवश्यकता नहीं है, परन्तु ऐसा नहीं। ज्ञानी पर नाम स्मरण का अधिक उत्तरदायित्व है, वह स्वयं भी नाम स्मरण करे दूसरों को भी नाम स्मरण के लिए प्रेरित करें, नाम जपे और नाम जपावें। एक बार किसी प्रेमी ने संत कबीरदास से पूछा कि शास्त्रों में ज्ञान का बड़ा महत्व प्रतिपादित किया गया है, इस विषय में आप के क्या विचार है? तब संत कबीर ने कहा-

पढ़ने की हद समझ है, समझण की हद ज्ञान।
ज्ञान की हद हरिनाम है, यही निश्चय जान॥

ज्ञान की सीमा भी नाम में निष्ठा एवं नाम स्मरण है। प्रेमियो! इसलिए सवेरे उठते ही अपने कार्य का आरम्भ नाम स्मरण से करें। ऊठत बैठत नाम जपीजे। संसार का व्यवहार करते भी नाम को मत भूलो।

२५ दिसम्बर पूंज्य स्वामीजी भिरकण में पधारे। वहां स्वामीजी ने एक सप्ताह अमृत वर्खा की। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि सत् शास्त्रों में जो कुछ पढ़ते हैं या संतो महात्माओं के प्रवचन श्रवण करते हैं, उन सद् विचारों के अनुरूप चलने का प्रयास करें। संतों की शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारें। केवल पठन एवं श्रवण से काम नहीं चलेगा, मनन एवं निदिध्यासन करें तो लाभान्वित होंगे। एक ब्राह्मण ने प्रवचन करते हुए बैंगन खाने को मना करते हुए कहा कि बैंगन खाने से नर्क प्राप्ति होती है और पुण्य का भी नाश होता है। वहां उस ब्राह्मण की पत्नी भी अपने पतिदेव के ये वचन सुन रही थी। दूसरे दिन वह ब्राह्मण अपने घर में बैंगन खरीद कर ले आया। उसकी पत्नी ने बैंगन बाहर फैंक दिये और दाल बनाई। जब घर में भोजन परोसा गया तब ब्राह्मण ने पत्नी से पूछा कि बैंगन

की सब्जी कहां है ? उसकी पत्नी ने कहा "कल आपने प्रवचन करते हुए बैंगन खाने को मना किया इसलिए मैंने बैंगन बाहर फेंक दिये। ब्राह्मण क्रोधित होकर बोले "मूर्ख! मैं कथा करता हूं दूसरों के लिए न कि अपने लिये। तुमने इतने अच्छे बैंगन फेंक दिये। उपदेश दूसरों के लिए होता है न कि स्वयं के लिए। फिर कभी बैंगन नहीं फेंकना।" पत्नी मन ही मन अपने पति की इस बात पर हंसने लगी। यदि स्वयं शुभ विचारों का अनुसरण नहीं करेंगे तो दूसरों पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

प्रेमियो! आप स्वयं संतो म्हात्माओं की शिक्षाओं का अनुसरण करें तो आप को लाभ होगा। सत्य, सेवा, सहानुभूति, स्नेह के मार्ग पर चल कर जीवन सफल करें।

१ जनवरी १९४७ स्वामीजी चक्क में पधारे। वहां उन्होंने बारह दिन राम नाम की धूम मचाई, विभिन्न विषयों पर प्रवचन दिये। एक दिन प्रवचन करते हुए स्वामीजी ने कहा-

प्रीतम का जहं प्रेम है, प्रीतम है जहं ठोर।
कह टेऊं बिन प्रेम के रहत न सो थल ओर॥

जिस के मन में प्रभु के लिए प्रेम है, प्रभु उससे दूर नहीं। जहां प्रेम है वहीं प्रभु है। परमात्मा जात, पात नहीं देखते। भगवान भावना एवं प्रेम देखते है। प्रेमियो! इसलिए सदैव प्रभु के लिए प्रेम होना चाहिए, प्रभु प्रेम ही सच्चा प्रेम एवं सुखदाई है। कान्हा हरिजन हेय जाति का था, किन्तु उसके मन में प्रभु के लिए बहुत चाह थी। वह नित नियम सबेरे श्रीनाथ मंदिर के बाहर झाडू लगाकर दूर से ही भगवान का दर्शन कर प्रसन्न होता। श्रीनाथ मंदिर के पुजारी को यह बात ठीक नहीं लगी कि हेय जाति वाला व्यक्ति भी भगवान का दर्शन करे। उसने मंदिर के बाहर एक ऐसी दीवार बनवाई जिससे कान्हा झाडू लगाने के बाद भगवान का दर्शन न कर सके। परन्तु भगवान श्रीनाथ की मूर्ति तो उसके मन मंदिर में विराजमान थी, पुजारी उसे कैसे हटा सकता! झाडू लगाते समय कान्हा भगवान श्रीनाथजी का ध्यान करता था।

भगवान श्रीनाथजी ने कान्हा को स्वप्न में दर्शन देते हुए कहा कि पुजारी को जाकर मेरा संदेश दो कि नई बनाई हुई दीवार को तुडवा

दे मुझे दूर देखने में कष्ट होता है । कान्हा स्वप्न में भगवान का दर्शन कर अत्यन्त प्रसन्न हुआ किन्तु पुजारी को संदेश देने में वह घबराया। उसने विचार किया कि यदि वह पुजारी को संदेश देगा तो पुजारी क्रोधित हो जायेगा । इसीलिए वह शांत रहा । दूसरी रात को भी भगवान ने उसे स्वप्न में वही संदेश देने को कहा । दूसरे दिन भी कान्हा ने पुजारी को संदेश नहीं दिया । तीसरी रात को भी फिर भगवान ने कान्हा को वही आज्ञा दी । तीसरे दिन कान्हा ने पुजारी को भगवान का संदेश दिया । पुजारी को भी स्वप्न में भगवान ने संकेत दिया कि नई दीवार शीघ्र तुड़वा दो । पुजारी ने भगवान की आज्ञानुसार दीवार तुड़वा दी । कुछ लोग भगवान और भक्त, गुरु एवं शिष्य के बीच में दीवार खड़ी करना चाहते हैं किन्तु भगवान उस दूरी को स्वयं दूर कर देते है । प्रेमियो! प्रभु के लिए प्रेम बढ़ाओ । प्रेम द्वारा ही प्रभु की प्राप्ति होती है । सत्गुरु महाराज भी अपनी वाणी में कहते हैं-

कर्मा कुब्जा भीलनी, हाथी और हनुमान ।
टेऊँ केवल प्रेम कर पाया हरि भगवान ॥

पूज्य स्वामीजी का ऋषि रुघूराम के साथ स्नेह सम्बन्ध था । ऋषि रुघूराम गृहस्थ होते हुए महान विद्वान व ज्ञानवान थे, वैरागी एवं संतोषी संत थे । चक्क में स्वामीजी ने तीन-चार दिन उनसे ज्ञान गोष्ठी की। जब भी पूज्य स्वामीजी चक्क या शाहपुर चाकर में जाते थे तो संत रुघूराम से अवश्य मिलते थे । स्वामीजी के मन में उनके प्रति अगाध श्रद्धा थी और वे भी स्वामीजी को बहुत स्नेह देते थे ।

१३ जनवरी पूज्य स्वामीजी अब्दू में पधारे । वहां स्वामीजी ने एक सप्ताह अमृत वर्खा की । एक दिन स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा सत्संग में हजारों लोग कथा श्रवण करने आते हैं किन्तु सच्चे श्रोता बहुत कम है । कथा श्रवण करते समय यदि मन में कोई शंका हो तो कथा वाचक से उसके समाधान के लिए प्रार्थना करनी चाहिए । संत दादू के शिष्य सुन्दरदास काशी में एक विद्वान की कथा श्रवण करने जाते थे । कथा श्रवण के पश्चात् उनके मन में यदि कोई शंका उत्पन्न होती थी तो उसके समाधान के लिए उस विद्वान से पूछते थे। विद्वान भी उनकी शंकाओं का समाधान करते प्रसन्न होता था और वह ऐसा अनुभव करता था कि केवल सुन्दरदास ही सच्चा श्रोता है

जो ध्यान से मेरी कथा श्रवण करता है और लोग केवल कर्ण रस के लिए आते हैं। एक दिन श्री सुन्दरदास कथा श्रवण के लिए समय पर नहीं पहुंचे किन्तु अन्य श्रोता आ गये परन्तु उस विद्वान कथा वाचक ने कथा आरंभ नहीं की। प्रेमियो ने पूछा 'संतजी आप कथा क्यों नहीं आरंभ करते?' संत ने कहा कि अभी श्रोतागण नहीं आये। जब श्री सुन्दरदास वहां आए तब संत ने कथा आरंभ की। कथा समाप्ति के पश्चात् प्रेमियो ने संत से पूछा कि क्या सिर्फ सुन्दरदास ही कथा श्रोता हैं और हम नहीं ! आपने उनके आने के पश्चात् ही कथा प्रारंभ की। संत ने कहा "आप लोग इतने दिन से कथा श्रवण कर रहे हैं। आप में से जो श्रवण की हुई कथाओं का सारांश लिखकर दिखाए उसे मैं सच्चा श्रोता मानूंगा। सभी प्रेमियो ने हां तो की परन्तु श्री सुन्दरदास के अतिरिक्त और कोई श्रोता कथाओं का सारांश नहीं लिख सका। श्री सुन्दरदास ने उस संत से श्रवण की हुई कथाओं एवं शिक्षाओं के आधार पर 'ज्ञान समुद्र' पुस्तक संत के चरणों में अर्पित की। यह देखकर अन्य श्रोतागण अत्यन्त लज्जित हुए और उनका अभिमान दूर हुआ। सच्चा श्रोता वह है जो कथा श्रवण कर उस पर चिन्तन एवं मनन करे। सुन्दरदास ने न केवल कथा श्रवण की किन्तु उस पर चिन्तन व मनन कर उन कथाओं का सारांश पुस्तक रूप में प्रस्तुत किया। प्रेमियो! इसलिए प्रेम व श्रद्धा एवं ध्यान से कथा श्रवण कर उसका चिन्तन व मनन कर लाभान्वित हों। दीन दुखियों की निष्काम भावना से सेवा करें तो आपका कल्याण होगा। सत्गुरु महाराज कहते हैं-

श्रद्धा से सत्संग कर, सेव करो निष्काम।
कह टेऊँ तेरे सभी होवे पूर्ण काम॥

२१ जनवरी पूज्य स्वामीजी रुस्तम में पधारे। वहां स्वामीजी ने एक सप्ताह सत्संग प्रवचन किया। एक दिन स्वामीजी ने राम नाम की महिमा गाते हुए कहा-

कह टेऊँ संसार के, छोड़े सभी कुछ काम।
जागत, सोवत राम जप, जो सत्‌चित्‌ सुखधाम॥

प्रेमियो! अन्य कामों को छोड़कर जाग्रत में अथवा निद्रावस्था में नाम का चिन्तन करें। राम का नाम है सुखदाई। नाम स्मरण से आपको आनंद की प्राप्ति होगी।

नाम स्मरण का प्रभाव न केवल चेतन किन्तु जड़ वस्तुओं पर भी पड़ता है। संत दादू दयाल के शिष्य श्री प्रयागदास के स्थूल शरीर को जब चिता पर रखा गया तब उनकी माला जिससे वे जाप करते थे उनके स्थूल शरीर के साथ रखी गई। श्री प्रयागदास का पार्थिव शरीर तो भस्त हो गया किन्तु उनकी वह माला अग्नि में भी नहीं जली। यह देखकर लोग आश्चर्य में पड़ गये। यह माला अब भी संत प्रयागदासजी के स्थान डेडवानी में सुरक्षित एवं दर्शनीय है। संत प्रयागदास ने उस माला से नाम का जाप किया तो माला अग्नि में भस्म होने से बच गई। प्रेमियो! आप भी नाम का जाप करते रहें तो विकारों की आग से बच जाएगे और आपको आत्मिक आनन्द की उपलब्धि होगी।

२८-३० जनवरी पूज्य स्वामीजी ने इज़मत में अमृत वर्खा की। फिर चार फरवरी तक स्वामीजी ने इदरतकी गांव में, और ५-६ फरवरी डहरन गांव में, ७-११ फरवरी आरायनि गांव में, ११-१३ फरवरी पने आकल, १४-१७ फरवरी घोटकी में नाम की धूम मचाई। १८ फरवरी स्वामीजी कंधकोट में पधारे। वहां उन्होंने एक सप्ताह प्रवचन किए। एक दिन स्वामीजी ने नाम की महिमा गाते हुए कहा-

इक भगवद् के नाम बिन, बोल न दूजी बात।
कह टेऊँ हरिनाम का सुमिरन कर दिन रात॥

प्रेमियो! अपने मन की वृत्ति नाम से जोड़ें। सच्चा भक्त प्रभु को छोड़ और किसी का चिन्तन नहीं करता, वह श्वास श्वास से नाम स्मरण करता है। काम काज करते हुए चित्त की वृत्ति सांसारिक सम्बन्धियों एवं पदार्थों से नहीं परन्तु प्रभु से जुड़ी रहनी चाहिए। नाम ने केवल रसना से किन्तु हृदय से याद करना चाहिए। एक बार किसी वैरागी भक्त ने संत दादू से पूछा कि वह प्रतिदिन एक लाख बार नाम का जाप करता है फिर भी उसे कोई संत कहकर नहीं पुकारता, उसका क्या कारण है? संत दादू ने उत्तर देते हुए कहा "प्यारे! नाम केवल जिव्हा से रटना नहीं, श्वास से उसका स्मरण करना है और प्रत्येक प्राणी में परमात्मा का साक्षात्कार करना है।

लख नाम अतंर कहे, सब घट हरि हरि होय ।
दादू पानी लवण ज्यूं नाम कमावे सोय ।।

जैसे जल में नमक लगकर जल रूप हो जाता है, वैसे जीव को ब्रह्म का स्मरण करते करते तद्रूप हो जाना चाहिए । यही सच्चा स्मरण है ।

१८ फरवरी स्वामीजी टंडे मस्ती में संत आयाराम के मन्दिर में पधारे । वहां स्वामीजी ने एक सप्ताह अमृत वर्खा की । तत्पश्चात् वे अमरापुर स्थान पर लौट आये । उन्होने सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज को नतमस्तक प्रणाम करते हुए मिली हुई भेंट उनके चरणों में रखी । प्रेम प्रकाश मंडल का उत्सव आरंभ होने वाला था, इसी अवसर पर कई संत वहां पधारे थे । स्वामीजी सभी संतो से मिले और उनके साथ ज्ञान गोष्ठी भी की ।

प्रेम प्रकाश मंडल के वार्षिक उत्सव के अवसर पर पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने इस उत्सव का आयोजन इसलिए किया जिससे विभिन्न गांवों और नगरों के प्रेमी यहां आकर संतो का दर्शन कर सत्संग का लाभ प्राप्त करें। ज्ञान व प्रेम का प्रचार और प्रसार हो, यदि प्रेमियो को भी कुछ शंकाएं हों तो उनका समाधान हो जाय । सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज ने "श्री सत्नाम साक्षी" मंत्र देकर हजारों प्रेमियो की वृत्ति प्रभु से जोड़ी, प्रेमियो! आप भी गुरु-मंत्र का उच्चारण कर कार्य आरंभ करें। गुरु मंत्र की महिमा प्रतिपादित करते हुए गुरु महाराज कहते हैं-

कह टेऊँ गुरु मंत्र को, जप ले बारम्बार ।।
जगत् भाव को भूल कर पाओ मोक्ष द्वार ।।

सांसारिक बातों को भूलकर प्रेम व श्रद्धा के साथ गुरु मंत्र का अभ्यास करें । जैसे शरीर के लिए वायु जल एवं खाना आवश्यक हैं वैसे आत्मिक शक्ति के लिए नाम स्मरण की अत्यन्त आवश्यकता है । सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज महान संत थे फिर भी अधिक समय नाम स्मरण में सफल करते थे । श्री गुरु अर्जनदेवजी महाराज,

सुखमनी साहब में नाम की महिमा गाते हुए कहते हैं-

प्रभ का स्मरन सब ते ऊंचा, प्रभ के स्मरन उधरे मूचा ।
प्रभ के स्मरन तृष्ना बूझे, प्रभ के स्मरन सब कुछ सूझे ।।

सभी कर्मों में भगवद् भजन का कर्म उत्तम कर्म है । भगवद् भजन करने के कारण हेय जाति वाले भी संसार सागर से पार हो गये, महान हो गये । तृष्णाओं का अंत नहीं किन्तु नाम स्मरण द्वारा तृष्णा रूपी अग्नि भी बुझा सकते हैं । नाम द्वारा ही आपको सत्य-असत्य का भास होगा । संतों महात्माओं ने नाम का ही सहारा लिया है । इसलिए प्रेमियो ! नाम को मत भूलें । आप लोग ऐसा समझते हैं कि जिसके पास धन है, पदार्थ है वह भाग्यवान है किन्तु भाग्यवान वह है जिसके पास 'नाम पदार्थ' है । नाम की पूंजी ही सच्ची पूंजी है । प्रभु के भक्त तो माया से दूर रहते हैं उनका सारा ध्यान प्रभु की ओर केंद्रित होता है, माया तो उनके पीछे दौड़ती है । एक बार शिवाजी महाराज ने संत तुकारामजी का शासकीय सम्मान करने के लिए उन्हें निमन्त्रण भेजा, किन्तु संत तुकाराम ने वह निमन्त्रण स्वीकार नहीं किया । जिसे प्रभु की प्यास होगी वह सांसारिक वैभव एवं सम्मान को क्या करेगा! शिवाजी महाराज संत तुकाराम का दर्शन करने के लिए स्वयं उनके गांव 'देहु गांव' में गये । शिवाजी महाराज ने उनके चरणों में माया भेंट की । संत तुकाराम ने शिवाजी महाराज को वह माया लौटाते हुए कहा कि यह माया तो प्रभु के पथ में रोड़ा है, मैं क्या करुंगा! इसे दीन दुखियों की सेवा में खर्च करें ।

संत सत्पुरुष एक प्रभु से ही प्रेम का नाता जोड़ते हैं । उन्हें सांसारिक पदार्थों व माया की चाह नहीं होती । यदि उनके पास माया आती है तो वे माया परोपकार के कार्यों में खर्च करते हैं । प्रेमियो! यदि परमात्मा ने आपको धन पदार्थ दिया है तो वह दीन दुखियों की सेवा में खर्च करें । किसी भूखे को खाना खिलाएं,किसी निर्वस्त्र को वस्त्र दान करें, प्याऊ की व्यवस्था करें, धर्मशालाएं विद्यामन्दिर खोलें अर्थात् परोपकार के कार्यों में ही माया सफल करें । स्मरण एवं सेवा करें तो आप प्रभु की कृपा के पात्र बन सकते हैं । सत्गुरु महाराजजी भी

अपनी वाणी में कहते हैं-

निष्कामी निमनि हो, सेव करत जन जोय।
कह टेऊँ तिस पर सदा, भगवन प्रसन्न होय ।।

सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की पुण्यतिथि उत्सव सम्बंध में स्वामीजी सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज एवं प्रेम प्रकाश मंडल के अन्य संतो के साथ हैदराबाद में संत माधवदासजी के स्थान पर पधारे। संत माधवदास ने सभी संतो का हार्दिक अभिनन्दन किया । स्वामी सर्वानन्दजी महाराज, स्वामी गुरुमुखदासजी, स्वामी बसंतरामजी और अन्य संतो ने उत्सव के तीनों दिन अमृत वर्खा की । इस अवसर पर पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

दुनिया में महापुरुष बड़े काम को आते हैं।
मिटाते मोह मन का, अमर बनना सिखाते हैं ।।

सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज भी महान विभूती थे, जिन्होंने खंडू गांव में अवतार धारण कर हजारों प्रेमियों को आत्मज्ञान की दीक्षा दी, उन्हें मोह ममत्व से मुक्त किया । सत्गुरु महाराज सोहं मंत्र के जाप की आज्ञा देते हुए कहते हैं-

टेऊँ सोहं जाप जप, गाफिल कबहिं न होय।
इक इक श्वास अनमोल है, तांहि न वृथा खोय ।।

प्रेमियो! आलस्य का त्याग कर मोह निंद्रा से जाग कर 'सोहं' का जाप करें । अपने अमूल्य श्वास व्यर्थ न गंवाए । आजकल तो गुरु एवं संत बिना कोई परीक्षा लिए ही गुरु-मंत्र दे देते हैं । प्राचीन काल में तो गुरुजन कठिन परीक्षाएं लेने के पश्चात् ही गुरु मंत्र की दीक्षा देते थे, एक महात्माजी के आश्रम में एक नवयुवक आया और उसने प्रार्थना करते हुए कहा कि "गुरु महाराज! मुझे नाम का उपदेश दें।" महात्मा बोले, पहले स्नान कर आओ तो फिर तुम्हें उपदेश दूंगा । महात्मा ने सफाई करने वाली महिला से कहा कि यह नवयुवक स्नान कर आयो तो झाड़ू से मिट्टी उठाकर उस युवक पर फेंकना, वह युवक जब नहाकर आया तब संत की आज्ञानुसार उस महिला ने युवक पर

मिट्टी फेंकी । महिला को ज्ञान था कि महात्मा नये शिष्यों की परीक्षा लेते हैं । वह युवक क्रोधित होकर महिला को पत्थर मारने लगा, किन्तु उसने स्वयं को बचा लिया । वह युवक फिर नहाकर आया तब महात्मा ने उससे कहा कि तुम अभी उपदेश लेने योग्य नहीं हो। तुम एक वर्ष तक नाम का जाप कर बाद में यहां आना । वह युवक महात्मा की आज्ञानुसार लौट गया । एक वर्ष नाम का स्मरण करने के पश्चात युवक फिर उसी महात्मा के पास गुरु उपदेश के लिए आया। महात्मा ने फिर उसे नहाकर आने के लिए कहा । महात्मा ने झाड़ू लगाने वाली महिला से कहा कि जैसे ही वह युवक नहाकर आए वैसे ही उसे झाड़ू स्पृश करना युवक नहाकर आया तब महात्मा की आज्ञानुसार महिला ने उस युवक को झाड़ू स्पृश किया । वह युवक फिर क्रोधित होकर अपशब्द कहने लगा किन्तु उसने पूर्व की तरह उस महिला को मारने का प्रयास नहीं किया । फिर वह युवक नहाकर महात्मा के पास उपदेश के लिए आया महात्मा ने कहा 'बेटा'! अब भी तुम गुरु उपदेश के योग्य नहीं । अतः एक वर्ष और नाम का जाप करने के उपरान्त आना । महात्मा के वचन सुनकर वह युवक निराश हो गया । फिर एक वर्ष पश्चात् वह युवक नाम का जाप कर पुनः महात्मा के पास आया । महात्मा ने उसी महिला से कहा कि जब यह युवक नहाकर आए तो इसके ऊपर कचरे की टोकरी फेंक देना । वह युवक जैसे ही नहाकर उपदेश लेने के लिए आ रहा था तो महिला ने उसके ऊपर कचरे की टोकरी फेंक दी । परन्तु वह युवक अब क्रोधित नहीं हुआ और उसने कहा "माताजी! मैं आपका अत्यन्त आभारी हूं कि आपके व्यवहार के कारण मैं क्रोध एवं अहंकार पर विजय पा सका हूं ।" महात्मा ने देखा अब वह युवक शिष्य बनने योग्य है और महात्मा ने उस नवयुवक को अपने गले लगाते हुए कहा "बेटा! अब तुम गुरु उपदेश लेने के योग्य हो । मैं अब तुम्हें उपदेश देता हूं ।" आध्यात्मिक मार्ग पर चलने के लिए अहं को मिटाना अत्यन्त आवश्यक है । अहं जायेगा तो क्रोध स्वयं ही भाग जायेगा।

प्रेमियो! आपका सौभाग्य है कि सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज

के धर्मपीठ के अधिकारी सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज बिना परीक्षा लिये ही गुरु उपदेश देकर आपको कृतार्थ कर रहे हैं। आपको आत्म ज्ञान का अमृत पिलाकर आपका जीवन सफल बना रहे हैं। आप सत्गुरु महाराज के सिद्धांतों एवं शिक्षाओं पर चलने का प्रयास करें।

१ जून पूज्य स्वामीजी जेकबाबाद में पधारे। वहां स्वामी कृष्ण गिर जी के स्थान पर उन्होंने चार दिन प्रवचन किये। ५ जून कोइटिया बलोचिस्तान के लिए प्रस्थान किया। प्रेमियों ने कोइटिया में उनका भव्य स्वागत किया। स्वामीजी ने वहां दो सप्ताह अमृत वर्खा की। एक दिन उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा-

बुरा किसी का ना करो, सब का भला विचार।
टेऊँ बुराई जो करे, तांका कर उपकार॥

प्रेमियो! सब का भला करें। यदि कोई आपके साथ बुरा व्यवहार करता है फिर भी आप उनके साथ अच्छा व्यवहार करें। किसी के साथ भी की हुई भलाई व्यर्थ नहीं जाती। एक बार एक चोर जंगल से गुजर रहा था, उसने अचानक शेर की करुण आवाज सुनी। चोर शेर की ओर आया, देखा कि किसी पीड़ा से पीड़ित शेर कराह रहा है। चोर के मन में शेर के प्रति दया भावना उत्पन्न हुई। जैसे ही वह उसके नजदीक आया तो शेर ने अपना एक पांव ऊपर उठाकर दिखाया, जिसमें बड़ा कांटा लगा हुआ था। उस चोर ने धीरे धीरे शेर के पांव से वह कांटा निकाला, शेर का दर्द दूर हुआ। उस समय शेर की आंखों से आभार की भावना झलक रही थी। चोर फिर अपनी राह चला गया। कुछ दिनों के बाद किसी राजा ने उस चोर को किसी दोष के कारण दंडित करने के लिए आदेश दिया कि चोर को मेरी उपस्थिति में किसी भूखे शेर के सामने फैंक दिया जाय, जिससे वह शेर उसे मार कर खा जाये। सिपाहियों ने राजा के आदेश का पालन किया। सिपाहियों ने जंगल से एक शेर को ले आने की व्यवस्था की। शेर आया और उसे तीन दिन तक भूखा रखा गया चौथे दिन बड़े मैदान में शेर को लाकर उस चोर के सामने खड़ा किया गया। दूर से राजा, सभासद एवं अन्य व्यक्ति यह दृश्य देखने लगे। शेर जैसे

उस चोर के पास आया तो शेर ने उसे पहचान लिया कि यह वही व्यक्ति है जिसने मेरा कांटा निकाल कर पांव की पीड़ा दूर की थी। इस कारण शेर उस चोर के सामने नत्-मस्तक होकर खड़ा रहा और कुछ समय बाद वह शेर दूर हट गया। यह दृश्य देखकर राजा, मंत्री एवं दर्शक आश्चर्य में पड़ गये कि भूखे शेर ने उस चोर को पंजा तक नहीं मारा। ऐसा क्यों? चोर तो समझ गया था कि यह वही शेर है जिसकी उसने पीड़ा दूर की थी। राजा ने चोर से प्रश्न पूछा कि क्यों यह शेर तुम्हें देखकर, सिर नीचा कर दूर हट गया? चोर ने राजा को सारी कहानी सुनाई कि किस प्रकार उसने पहले उसी शेर के पांव का कांटा निकाल कर पीड़ा से मुक्त किया था, अपनी जान की भी परवाह नहीं की। किसी के साथ की हुई भलाई व्यर्थ नहीं जाती। यह सुनकर राजा ने उस चोर को मुक्त कर उसे पुरस्कृत किया। चोर के मन में भी परिवर्तन आ गया।

प्रेमियो! आप भी दूसरों का भला करेंगे तो वे भी आपका भला करेंगे। प्रतिदिन कोई न कोई उपकार का कार्य करें और साथ साथ नाम स्मरण भी करें तो आपका जीवन सफल हो जायेगा। २५ जून स्वामीजी कशमोर में पधारे। वहां उन्होंने पांच दिन सत्संग वर्खा की। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

साक्षी चेतन रम रहा जल थल पुन आकाश।
कह टेऊँ तहं जान के, पाओ सुख विश्राम॥

प्रेमियो! परमात्मा सर्वत्र व्यापक है। आप भी सभी प्रेमियों में प्रभु का दर्शन करें। संत सब जीवों में साक्षी चेतन को विद्यमान देखते हैं। एक बार संत नामदेव जी कुएं पर पानी भरने गए। उस समय बहुत अंधेरा था, किसी सज्जन ने उन्हें कहा कि इस समय कुएं पर न जाएं वहां भूत है। किन्तु संत नामदेव फिर भी कुएं की ओर गए, रास्ते में उनके सामने एक भूत आया। संत नामदेव ने उस भूत को भी परमात्मा स्वरूप समझकर उसे नमस्कार किया और उसकी स्तुति की। भूत से भगवान प्रकट हुए और उन्होंने नामदेव से कहा "प्यारे! तुमने भूत में भी मेरा दर्शन किया, तुम धन्य हो।" संत नामदेव ने

कहा "प्रभु आप तो सर्वव्यापी सर्वेश्वर हैं फिर मैं क्यों नहीं सब में आप का दर्शन करूं।" प्रेमियो! आप भी सब जीवों में प्रभु का दर्शन कर किसी भी प्राणी को न सताएं और न ही किसी की हिंसा करें। कुछ लोग अपनी जिव्हा के रस के लिए मांस भक्षण करते हैं। बकरियों और मुर्गियों में भी वही आत्मा है, जो हम सब में है। ये पशु-पक्षी प्रभु की मूक संतान है। उन पर दया दृष्टि करें। उनको प्रभु रूप समझकर उन्हें प्यार दें।

१ जुलाई स्वामीजी कंधकोट में पधारे। वहां उन्होंने तीन चार दिन अमृत वर्खा की। ६ जुलाई वे अमरापुर स्थान पर लौट आये। उन्होंने सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज को प्रणाम कर मिली हुई भेंट उनके श्री चरणों में अर्पित की।

२२ जुलाई पूज्य स्वामीजी ने संत ऊद्धवदास, संत गंगाराम, संत किशनदास, संत भजनदास एवं कुछ प्रेमियों के साथ तीर्थ यात्रा के लिए प्रस्थान किया। २४ जुलाई स्वामीजी अमृतसर पहुंचे वहां स्वामीजी ने स्वर्ण मंदिर के पवित्र तालाब में स्नान कर मंदिर के दर्शन किए। स्वामीजी वहां कर्मसिंह का कटरा भी गये जहां उन्होंने श्री गुरु ग्रन्थ साहब की अमृत वाणी का गहन अध्ययन किया था। वहां से पूज्य स्वामीजी संतो सहित २८ जुलाई को हरिद्वार गये। वहां पर एक सप्ताह रुककर स्वामीजी ने अनेक संतो महात्माओं का दर्शन किया और उनके साथ ज्ञान गोष्ठी की। ६ अगस्त स्वामीजी बद्रीनाथ की यात्रा के लिए गये। उन दिनों वाहन नहीं थे, पद-यात्रा करनी पड़ती थी एक ओर ऊंचे ऊंचे पर्वत और पगडंडियों, राह बहुत कठिन थी, दूसरी ओर गंगा मां का प्रवाह! रास्ते में कई मंदिर एवं, चट्ठियां थी, स्वामीजी आठ दिन की पदयात्रा के बाद बद्रीनाथ धाम पहुंच गये। वहां स्वामीजी पांच दिन ठहरे। स्वामीजी ने वहां कई महात्माओं के दर्शन किए एवं उनसे ज्ञान भी प्राप्त किया। वहां बद्रीनाथजी के मंदिर में जाकर पूजा अर्चना की। स्वामीजी ने संतो को भोजन खिलाया। वे वसुधारा की ओर भी गये। यह किवदन्ती है कि वायु लगने से वसुधारा की बूंदे यदि किसी व्यक्ति पर पड़ें तो वह पुण्यआत्मा होता है। स्वामीजी जैसे ही अन्य संतो के साथ वसुधारा की ओर आये तो उन पर और

कुछ अन्य संतो पर वसुधारा की बूंदे पड़ी । स्वामीजी यात्रा करते करते फिर केदारनाथ पहुंचे । रास्ते में कई मंदिर एवं चट्ठियां थीं । पूज्य स्वामीजी सभी मंदिरों में गये और कई संतो, महात्माओं तपस्वियों से ज्ञान गोष्ठी की । १ सितम्बर स्वामीजी हरिद्वार लौट आये । स्वामीजी ने कनखल में श्री चेतनदेवजी के आश्रम में संतो के भण्डारे का आयोजन किया । २० सितम्बर स्वामीजी ब्रजभूमि में पधारे । वहां वे एक सप्ताह तक ठहरे । वहां स्वामीजी ने भगवान श्रीकृष्ण के लीलास्थलों आनन्द प्राप्त कर, कृष्ण भक्तों से भी भेंट की । स्वामीजी स्वयं भी भगवान श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त थे । ३ अक्तूबर स्वामीजी तीर्थ यात्रा पूर्ण कर संतो सहित अमरापुर स्थान पर लौट आये । स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की मूर्ति को दंडवत प्रणाम कर पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज को प्रणाम किया ।

१५ अगस्त १९४७ को देश का विभाजन हो ग्या था । सिन्ध में विपरीत परिस्थितियों के कारण कई हिन्दू भारत जा रहे थे । विशेषकर कराची एवं पंजाब में भयानक घटनाएं घटी । स्वामीजी कुछ माह वहां सत्गुरु महाराज के श्री चरणों में रहे । सिन्ध के कई गांवों एवं नगरों में मुसलमानों ने हिन्दुओं पर असहनीय अत्याचार किये । प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने मंडल के संतो सहित भारत में जाने का निश्चय किया । जनवरी सन् १९४८ में सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज मंडल के संतो सहित भारत भूमि में पधारे । स्वामी शान्ति प्रकाशजी महाराज भी उनके साथ थे । पहले स्वामी सर्वानन्दजी महाराज अहमदाबाद पहुंचे । वहां स्वामीजी के कुछ गुजराती प्रेमी भी थे । वहां पर ही प्रेम प्रकाश मंडलका वार्षिक उत्सव भी आयोजित किया गया । उत्सव के चारों दिन स्वामी सर्वानन्द जी महाराज एवं अन्य संतो ने अमृत वर्खा की । इसी उत्सव में पूज्य स्वामी शान्ति प्रकाशजी महाराज ने प्रवचन करते हुए कहा कि अब हम अपनी जननी जन्मभूमि को छोड़ कर भारत की पुण्य भूमि में आये हैं । हमारे कई सिन्धी भाई बहिनें अपना सर्वस्व सिन्ध में छोड़कर यहां आये हैं । देश के विभाजन के कारण हमारे कई भाईयों के यहां अपना मकान नहीं, धंधा व्यवसाय नहीं । आज सब मिलकर प्रभु और गुरु महाराज को प्रार्थना करें कि सिन्धी हिन्दू फिर सुखी व सम्पन्न हों ।

प्रार्थना कर प्रेम से कह टेऊँ बन दास।
शुद्ध हृदय की सुनत हरि, राखो मन विश्वास।।
हृदय से जब प्रार्थना कह टेऊँ कर कोय।
भगवत् के तब कान में पहुँचत शीघ्र सोय।।

दुख सुख में भगवान का स्मरण करें। उसे प्रेम से प्रार्थना करें तो वह आपकी सहायता करेगा। परमात्मा तो दया के सागर हैं उनकी अनुकम्पा से सब दुख दूर हो जायेंगे, आपदाएं टल जायेंगी। आइये मिलकर भक्त वत्सल भगवान से प्रार्थना करें।

भक्त वत्सल भय हरन हरि करुणा शील निधान।
कह टेऊँ कलि काल में लाज राख भगवान।।
हे समर्थ सर्वज्ञ हरि, दीन बन्धु दातार।
कह टेऊँ कृपा करे, दे शुभ गुणन भंडार।।

सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज भी सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की प्रतिमूर्ति हैं, उनका दर्शन भी सत्गुरु महाराज का ही दर्शन है। आज सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने हमें जो अमूल्य शिक्षाएं दी हैं उनका अनुसरण कर मानव जीवन सफल करें।

सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज अहमदाबाद से हरिद्वार गये। पूज्य स्वामीजी भी उनके साथ थे। मंडल के अन्य संतो ने भारत के विभिन्न नगरों में जाकर वहां सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज के नाम पर मंदिरों की स्थापना की। पूज्य स्वामी शांति प्रकाशजी महाराज कुर्ला, बम्बई में आये। वहां श्री द्वारकादास वाध्वा एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी की सेवा सुश्रुषा की। उन्होंने कुर्ला में अलग अलग दिनों पर प्रेमियों के घरों में नाम की धूम मचाई। वहां से फिर वे कल्याण कैम्प अर्थात् उल्हासनगर पधारे। १० अक्तूबर १९४८ ई. में उन्होंने कल्याण कैम्प ५ में छोटी बैरक में गुरु महाराज के मंदिर की स्थापना की। आजक्र यह भव्य आश्रम तीर्थ स्थल बन गया है। स्वामीजी प्रतिदिन वहां अमृत वर्षा करते थे। कई प्रेमी स्वामीजी के प्रवचनो से लाभान्वित होते थे। काका वलरमल वाधवा, श्री द्वारकादास, माता रुकीबाई एवं टोपणदास, स्वामीजी एवं मंदिर की सेवा करते थे। इसी आश्रम में

अन्य संत भी समय समय पर आकर ज्ञान गंगा बहाने लगे। स्वामीजी के साथ हारमोनियम पर श्री परमानन्द एवं तबलावादक सुन्दरदास भी थे । यह छोटा सा आश्रम पूज्य स्वामीजी की भक्ति साधना के कारण सिन्धी समुदाय का अब महान तीर्थ स्थल बन गया है । यहां अब ज्ञानी गुणी संत महात्मा अमृत वर्खा करते हैं ।

असवली, लेकबेल कैम्प में स्वामी उद्धवदासजी ने स्वामी टेऊँराम मंदिर की स्थापना की। २५ दिसम्बर स्वामीजी वहां गये। वहां स्वामीजी ने दस दिन नाम की धूम मचाई । स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि श्रद्धा व विश्वास के साथ संतो की सेवा करें और उनकी बताई हुई राह पर चलें । जो संतो महात्माओं की सेवा करते हैं, प्रभु की कृपा से उन्हें कभी अन्न-धन की कमी नहीं होती । जोधपुर के छुटेरा गांव में एक संत सेवी विदुरजी रहते थे, वे बड़े प्रेम और श्रद्धा से संतो, महात्माओं की सेवा करते थे। उन्हें नित नियम से भोजन खिलाते थे। एक वर्ष वर्षा कम पड़ने के कारण उनकी खेती सूख गई । इसलिए वे चिन्तित हुए कि कैसे वर्ष भर संतो को भोजन खिलायेंगे । भगवान ने उन्हें स्वप्न में दर्शन देते हुए कहा "प्यारे! तुम अनाज की चिन्ता मत करो । तुम खेत की सूखी बाल (अनाज रहित थोथी फली) को काटकर उस पर दांय (बाल से गेहूं अलग करने की प्रक्रिया) का कार्य प्रारंभ करो तो तुम्हें बहुत ही अन्न मिलेगा । विदुरजी भगवान का दर्शन कर अत्यन्त प्रसन्न हुए वे भगवान की आज्ञानुसार अपने खेत पर गए उन्होंने खेत पर गेंहू की थोथी फलियों को इकट्ठा कर उनमें से गेंहूं निकालने की प्रक्रिया (दाँय औसाई आदि) पूर्ण की तो उन्हें दो हजार टन गेंहू मिला भगवान की यह लीला व कृपा समझकर विदुरजी अत्यन्त प्रसन्न हुए । जिन्हें अपना स्वार्थ नहीं, भगवान स्वयं उनका कार्य पूरा करते हैं । सत् कर्म करने से कभी भी अन्न-धन की कमी नहीं होगी । प्रेमियो ! आप भी निष्काम भावना से संतों, महात्माओं, दीन दुखियों, पशु पक्षियों की सेवा करें तो प्रभु किसी न किसी रूप में आकर आपकी सहायता करेंगे, प्रभु में पूर्ण विश्वास रखें ।

रे मन राखो राम में, पूरन तुम विश्वास ।
कह टेऊँ विश्वास से होवे सब दुख नास ।।

६ जनवरी १९४९ पूज्य स्वामीजी देवलाली कैम्प में पधारे। वहां स्वामीजी ने एक सप्ताह सत्संग वर्षा की। स्वामीजी ने उपदेश देते हुए कहा "प्रेमियो ! सत्य की कमाई से जीवन व्यतीत करें झूठ व हिंसा के खान पान से दूर रहें। बुरे कर्मों द्वारा कमाया धन हानिकारक होता है, ऐसे धन से खरीदा हुआ अन्न खाने से मन अपवित्र होता है। इसलिए कहते हैं कि जैसा अन्न वैसा मन। एक त्यागी महात्मा किसी गांव में आया। वहां उसने ज्ञान वैराग्य, भक्ति आदि विषयों पर प्रवचन किया, गांव वाले बहुत प्रभावित हुए। महात्माजी जिस घर में ठहरे थे उस परिवार के सदस्य स्वयं को सौभाग्यशाली समझने लगे। उन्होंने उस महात्मा को अलग कमरा दे दिया और श्रद्धा के साथ उसकी सेवा करने लगे। वह महात्मा इतना तो त्यागी था कि उसे जो कुछ भी मिलता वह बांट देता था। अपने पास कुछ भी नहीं रखता था। वह महात्मा पांच दिन के पश्चात् अचानक ही वहां से चला गया। उसी घर के लोग एवं अन्य प्रेमी महात्मा को न देखकर उदास हुए क्योंकि महात्मा ने ५ दिन गांव वालों को ज्ञानामृत पिलाकर मंत्र मुग्ध कर दिया था। महात्मा के चले जाने के पश्चात् घर वालों ने देखा कि एक सोने का हार गायब है, वे चिन्ता में पड़ गये कि सोने का हार किसने चुराया? महात्मा तो त्यागी थे, उनके घर का अन्न भी नहीं खाते थे, तीसरे दिन सबेरे महात्मा उनके घर आया, उस महात्मा का सिर नीचा था। उसकी आंखों में पश्चाताप के आंसू थे। उन्होंने वह सोने का हार झोली से निकार कर घर वालों को लौटाते हुए कहा कि मुझे चोरी के लिए क्षमा करें। यह देखकर व सुनकर घर वाले आश्चर्य में पड़ गये। उन्होंने महात्मा से पूछा कि आपने ऐसा क्यों किया? महात्मा ने कहा चार दिन पहले जो अन्न मैंने खाया था वह अन्न पाप व चोरी की कमाई का था इसलिए यह कुकर्म मुझसे हो गया। जैसा अन्न वैसा मन। ज्ञानी व ध्यानी होते हुए भी मैंने स्वर्ण हार चुराया। दो दिन मेरा पेट खराब रहा, वह पाप का अन्न जब मल के रूप में बाहर निकला तो मेरा आंखें खुली, मुझे बहुत ही पछतावा हुआ। महात्मा का उत्तर सुनकर सभी विस्मय में पड़ गये। प्रेमियो ! जैसा आहार वैसा विचार व व्यवहार। इसलिए पाप कर्म की कमाई का अन्न न खाएं उसका मन पर बुरा प्रभाव पड़ता

है । सत्य एवं परिश्रम की कमाई का अन्न खायें । पाप व ठगी की कमाई का अन्न खाने से शारीरिक व मानसिक बीमारियां होती हैं ।

१४ जनवरी स्वामीजी नासिक में पदारे । वहां स्वामीजी ने चार दिन अमृत वर्खा की । १८ जनवरी वे कल्याण कैम्प आश्रम में लौट आये, वहां वे संध्या के समय प्रतिदिन प्रवचन करते थे । ३० जनवरी महात्मा गांधी के शहीदी दिवस पर स्वामीजी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि बापूजी युगपुरुष थे, सत्य एवं अहिंसा के अवतार थे। वे ईश्वर भक्त भी थे तो राष्ट्र भक्त भी थे । आध्यात्मिक शक्ति के कारण वे भारतीय जनता को एकता के सूत्र में बांध सके और अंग्रेज शासकों का शासन खत्म कर सके । वे न केवल भारत के किन्तु विश्व के महान नेता थे, जिन्होंने संसार को नई दिशा दी ।

३ फरवरी स्वामीजी ने अकबर कैम्प, थाना में प्रवचन करते हुए कहा कि परमात्मा सभी प्रेमियों की पालना करता है । प्रार्थना एवं पुरुषार्थ करें तो प्रभु अवश्य ही कार्य में सफलता देंगे । विदेश में मिस्टर मूलर अनाथ आश्रम चलाते थे । वहां कई अनाथ बालक रहते थे। एक बार भंडारी ने उन्हें कहा कि आज खाने पीने के लिए कुछ भी नहीं, भोजन कैसे तैयार करूं । मूलर यह सुनकर घबराये नहीं उन्होंने भंडारी को आश्वासन देते हुए कहा कि भगवान भला करेगा । मूलर ने उसी समय प्रभु से प्रार्थना करते हुए कहा "प्रभु! ये आश्रम के बालक आपके बालक हैं । आप ही तो उनकी पालना करते हैं । आज भी आप ही उन्हें खाना खिलायेंगे । आप कृपालु हैं ।" थोड़े समय के बाद फिर भंडारी आया और उसने मूलर से कहा कि अब भोजन खाने का समय होने वाला है आप कोई व्यवस्था करें । मूलर ने कहा मैंने अपना कर्तव्य पूरा किया है अब तुम बालकों को भोजन खिलाने के लिए पंक्ति में बिठाओ, परमात्मा आकर उन्हें भोजन खिलायेंगे। मूलर का परमात्मा में पूर्ण विश्वास था । जैसे ही आश्रम के बालक भोजन के लिए पंक्ति में बैठे तो किसी ने आश्रम के दरवाजे को खटखटाया। दरवाजा खोला गया, दो व्यक्ति खड़े थे । उन्होंने कहा हम बच्चों के लिए तैयार भोजन लाये हैं, स्वीकार करें । मूलर ने उनसे पूछा कि आपको यहां किसने भेजा है उन्होंने कहा किसी के यहां आज विशेष भोज था, उसी ने हमें कहा कि पहले अनाथ बच्चों को भोजन

खिलाकर आओ। लाया हुआ भोजन बच्चों को खिलाया गया। मूलर और आश्रम के सेवक आश्चर्य में पड़ गये कि भगवान ने आश्रम के बच्चों की कैसे देख-रेख की, समय पर उन्हें पका पकाया भोजन भेजा। प्रेमियो ! परमात्मा में पूर्ण विश्वास रखेंगे तो वह आपकी भी देख-रेख करेंगे, आपके दुख दर्द दूर करेंगे। सत्गुरु महाराजजी अपनी वाणी में कहते हैं-

राम भरोसा राख तुम, और भरोसा त्याग।
कह टेऊँ हरि शरण ले, खोलो अपना भाग॥

स्वामीजी ने तीन दिन अकबर कैम्प में सत्संग वर्षा की। ६ फरवरी वे कल्याण कैम्प आश्रम में लौट आये। १५ फरवरी शिव-रात्रि के दिन स्वामीजी ने शिवरात्रि के सम्बन्ध में प्रवचन करते हुए कहा कि आज रात्रि को जागरण कर "ॐ नमः शिवायः" मंत्र का जाप करें तो आप का कल्याण होगा।

स्वामी बसंतरामजी व स्वामी शान्ति प्रकाशजी महाराज के अनुरोध पर सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव (चैत्रमास का मेला) कल्याण कैम्प ५ के आश्रम पर आयोजित किया। उत्सव के चारों दिन सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज, स्वामी गुरुमुखदास, स्वामी प्रेमदास, स्वामी आत्मानन्द, स्वामी बसंतराम, स्वामी गणेशानन्द, स्वामी माधवदास, स्वामी किशनदास, स्वामी हरिप्रकाश, स्वामी जयप्रकाश, स्वामी नित्यप्रकाश, स्वामी स्वयंप्रकाश, स्वामी उद्धवदास, स्वामी चन्दनप्रकाश, संत भजनदास ने प्रातः एवं सांय को अमृत वर्षा की। पूज्य स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज ने मंडल के सभी संतो का हार्दिक स्वागत करते हुए निम्न भजन गाया :-

आज मेरे घर संत पधारे, बलि बलि मैं बलिहारा, प्रीतम प्यारा।
दो कर जोड़ करूं प्रणाम, तन मन भेट धरे धन धामा, वारौं सब परिवारा
फूलों की मैं सेज बिछाये, तां पर सन्तो को बैठाये, पाऊँ मोतिन हारा।
श्रद्धा से मैं सेवा करके, तिनसों लेवा देवा करके, पाऊँ भक्ति भंडारा।
कहे टेऊँ धन भाग हमारे, आये हम घर सन्त सचारे, साक्षी सृजनहारा।

उत्सव के अंतिम दिवस पूज्य स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज एवं अन्य संतो का आभार मानते हुए कहा कि यहां संतो

के आगमन के कारण जैसे कुम्भ का मेला लग गया था । उन्होंने यहां ज्ञान व प्रेम की गंगा-यमुना प्रवाहित कर हजारों प्रेमियो को तृप्त किया, इसलिए मैं सत्गुरु महाराज एवं सभी संतो का अत्यन्त आभारी हूँ । सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने संतो एवं प्रेमियो के मेल मिलाप, प्रेम प्रचार के लिए ही यह उत्सव प्रारंभ किया । उन्होंने श्री 'सत् नाम साक्षी' मंत्र देकर कई भूले भटके मनुष्यों का मार्गदर्शन किया। हम सब उनके दिये हुए मंत्र एवं वाणी का अभ्यास करें तो आत्मज्ञान एवं आनन्द की उपलब्धि होगी ।

गुर की वाणी वेद सम, पढ़े सुने जन जोय ।
कह टेऊँ संशय हरे, सुख को पावत सोय ॥

२५ अप्रैल पूज्य स्वामीजी ने यात्रा के लिए प्रस्थान किया । २६ अप्रैल वे ब्रज-भूमि में आये । वहां उन्होंने बांके बिहारी का दर्शन कर रास लीलाओं का आनन्द लिया । वे मथुरा एवं गोकुल भी गये। १२ मई स्वामीजी हरिद्वार में आये । वहां वे एक महीना ठहरे । उन्होंने ऋषिकेश व कनखल में कई संतो महात्माओं से ज्ञान गोष्ठी की, साथ ही गंगा स्नान का आनंद लिया । कनखल में श्री चेतनदेव कुटिया में उन्होंने संतो का भंडारा भी किया । १४ जून वे कल्याण कैम्प ५ आश्रम लौट आये । वहां संध्या समय सत्संग प्रवचन करते रहे।

स्वामीजी ४ अक्टूबर उरली गये । वहां स्वामीजी ने पांच दिन विभिन्न विषयों पर प्रवचन किया । एक दिन प्रेमाभक्ति विषय पर प्रवचन करते हुए उन्होंने कहा-

टेऊँ हरि को भावते, केवल मन का प्रेम ।
जानो मन के प्रेम बिन, सूने जप तप नेम ॥

प्रभु प्रेम से ही प्रसन्न होते हैं । प्रेमा-भक्ति के सिवाय सब जप-तप अधूरे हैं । परमात्मा की कृपा के लिए बाह्य आडम्बर की आवश्यकता नहीं । वह तो प्यासी आंखों के आंसू पोंछता है ।

पंढरपुर में एक चोखा नामक चमार रहता था । वह भीख लेकर, मंदिर में सामने बैठकर भगवान को भोग लगाने के पश्चात् वह प्रसाद पाता था । यह बात मंदिर के पुजारियों को अच्छी नहीं लगती थी।

पुजारी ने कई बार उसे समझाया कि तुम ऐसा भोग मत लगाओ। किन्तु चोखा भगवद् प्रेम में दूर से ही भगवान को भोग लगाकर बाद में प्रसाद लेने लगा। एक दिन पुजारियों ने क्रोधित होकर उसका भोजन सहित, माटी का बर्तन तोड़कर फेंक दिया। चोखा ने उन्हें कुछ भी नहीं कहा, उसकी आंखों में केवल प्रेमाश्रु थे। पुजारी जब मंदिर के अन्दर गये तो उन्होंने देखा कि भगवान की प्रतिमा के नजदीक चोखा वाला भोजन बिखरा पड़ा है, यह देखकर वे आश्चर्य में पड़ गये। उसी समय उसी प्रतिमा से आवाज आई "पुजारियो! तम लोग तो मुझे भोजन नहीं खिलाते, मेरा प्यारा चोखा भीख मांग कर मुझे खाना खिलाता है, तुम उसे भी खिलाने से रोकते हो। तुम्हें मेरा श्रद्धालु व प्रेमी कहलाने का कोई अधिकार नहीं, तुम लोगों ने मेरे प्रेमी चोखा की पिटाई कर बड़ा अपराध किया है, मैं भी भूखा रह गया और मेरा भक्त चोखा भी भूखा रह गया। जाओ उससे क्षमा याचना कर कहो कि आज से वह मन्दिर में अन्दर आकर भोग लगाए।" पुजारियों ने भगवान की प्रतिमा से पहली बार आवाज सुनी वे कांप गये और शीघ्र ही चोखा चमार के पास आये और क्षमा मांगी, उसे भगवान का आदेश सुनाया कि तुम अब मन्दिर में अन्दर जाकर भगवान को भोग लगाते रहना। चोखा घटित घटना सुनकर विस्मय में पड़ गया कि भगवान उसे इतना प्यार करते हैं, उसकी आंखों से अश्रुधारा बह आई। भगवान जात पात नहीं देखते, वे तो प्रेम देखते हैं। चोखा हेय जाति का था किन्तु उसके मन में प्रेमाभक्ति हिलोरें मारती थी। प्रेमियो! आप भी प्रभु के प्रति प्रेम बढ़ाएं।

९ अक्तूबर स्वामीजी दौंड कैम्प में पधारे। वहां स्वामीजी ने सात दिन अमृत वर्षा की। एक दिन स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि जैसे बालक मां बाप को प्रेम से पुकारता है वैसे ही आप भी प्रभु को प्रेम से पुकारें। प्रतिदिन कुछ समय नाम स्मरण एवं परोपकार के कार्य करें। किसी दुखी को सुखी करें प्यासे की प्यास बुझायें। जीवन के आनन्द की कुन्जी है, परोपकार। पंजाब के फरीदकोट गांव में संत धनीराम रहते थे। वे जब रात को मैदान में बैठकर नाम स्मरण करते थे तब उन्हें मच्छर काटते थे, परन्तु वे मच्छरों को मारते नहीं

थे। वे कहते थे कि मच्छरों को उनका रक्त मीठा लगता है इसीलिए वे काटते हैं, मच्छरों को रक्त पीने दें, पांच सात दिन के पश्चात् मच्छरों के काटने के कारण उनके शरीर में कहीं कहीं सूजन आ गई, फिर भी वे भगवद् भजन में मग्न रहे। मच्छर तो वहां आते थे किन्तु उन्होंने काटना बंद कर दिया। संत धनीराम के हृदय में कितनी परोपकार की महान भावना थी।

१६ अक्तूबर पूज्य स्वामीजी कल्याण कैम्प लौट आये, वे प्रतिदिन सायंकाल आश्रम पर सत्संग प्रवचन करते रहे। ३ जनवरी १९५० पूज्य स्वामीजी कुर्ला, बम्बई में आये, वहां उन्होंने चार दिन विभिन्न विषयों पर प्रवचन किया, एक दिन स्वामीजी ने भगवद् प्रेम का वर्णन करते हुए कहा कि भगवान तो प्रेम के वश में होते हैं। प्रभु जात पात रंग रूप नहीं देखते उन्हें जो भी प्रेम व श्रद्धा से पुकारता है प्रभु उस पर दया दृष्टि करते हैं। वेश्या चिन्तामणि बिलवामंगल का दर्शन करने के लिए ब्रज भूमि में गई, बिलवामंगल ने उसे भगवान श्रीकृष्ण का प्रसाद खीर दिया। चिन्तामणि ने पूछा "तुम्हें यह प्रसाद किसने दिया?" बिलवामंगल बोले "भगवान श्री कृष्ण ने यह प्रसाद दिया है" चिन्तामणि ने कहा "मैं भी भगवान श्रीकृष्ण के हाथ से प्रसाद लूंगी।" यह कहकर चिन्तामणि भगवान श्रीकृष्ण की मूर्ति के समक्ष बड़ी श्रद्धा व प्रेम से प्रार्थना करने लगी। भगवान उसकी प्रेमाभक्ति देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए और उसे अपने हाथों से खीर प्रसाद रूप में दिया। चिन्तामणि प्रभु द्वारा प्रसाद पाकर फूली नहीं समाई। उसके जीवन में परिवर्तन आ गया। वह वेश्या से भक्तनि बन गई।

नीच ते ऊच करे मेरा गोबिंद काहू ते न डरे।

प्रेमियो! आप भी प्रेम से प्रभु का स्मरण करें तो प्रभु कृपा के पात्र बन सकते हैं।

८-९ जनवरी १९५० स्वामीजी ने चेम्बूर कैम्प में प्रवचन करते हुए कहा कि दया करने से मन निर्मल होता है। जिनका मन निर्मल होता है वे दया व उपकार के कार्य करते हुए आत्मानंद का अनुभव करते

हैं।

एक व्यक्ति शर्बत बेचता था, उसकी सत्संग में भी रुचि थी। प्रतिदिन वह सत्संग में जाकर महात्मा के प्रवचन श्रवण करता था। एक दिन उस शर्बत वाले ने संत से कहा "आपके प्रवचन श्रवण करने से मुझे आत्मा व अनात्मा का ज्ञान तो हुआ है, किन्तु आत्मानन्द की प्राप्ति नहीं हुई है। इसका क्या कारण है?" महात्मा ने कहा "तुम्हारा किया हुआ कोई पाप ही उसमें बाधा है। उस पाप के नष्ट होने के पश्चात् ही तुम्हें आत्मानंद की अनुभूति होगी। एक दिन वह शर्बत वाला दूसरे किसी गांव में शर्बत बेचने जा रहा था, रास्ते में,जंगल में एक व्यक्ति घास ले जा रहा था। कड़ी धूप व प्यास के कारण वह अचानक बेहोश हो गया। शर्बत वाले ने उस व्यथित व्यक्ति को उठाकर एक पेड़ के नीचे लिटाकर उसे धीरे धीरे शर्बत पिलाया और वह होश में आ गया। उसे भूख भी लगी थी, शर्बत वाले ने उसे अपना खाना भी खिलाया फिर वह घास उठाकर अपनी राह चला गया। शर्बत वाले के मन ? जो दया भावना उत्पन्न हुई उसी कारण उसने आनन्द का अनुभव किया। प्रेमियो ! आप भी जब निष्काम भावना से दीन दुखियों पीड़ितों की सेवा करेंगे, किसी व्यथित को सांत्वना देंगे तो आनंद का अनुभव करेंगे।

१० जनवरी पूज्य स्वामीजी सिन्धुनगर-५, आश्रम पर लौट आये। वे प्रतिदिन आश्रम में सत्संग प्रवचन करते रहे। १० अप्रैल १९५० से हरिद्वार में कुम्भ मेला आरंभ होने वाला था। इसलिए सत्गरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने प्रेम प्रकाश मण्डल का वार्षिक चैत्र मास का उत्सव (चैत्र मेला) भी हरिद्वार में अप्रैल में आयोजित किया। स्वामी शान्ति प्रकाशजी महाराज भी हरिद्वार में पधारे, प्रात:काल एवं सायंकाल वे वहां प्रवचन करते थे। सतगुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने अन्न क्षेत्र का शुभारम्भ किया। वहां मंडल के संतो के अतिरिक्त अन्य सन्त महातमा भी अमृत पिलाते थे। स्वामीजी २० जून हरिद्वार से दिल्ली पधारे। वहां तीन दिन स्वामीजी ने नाम की वर्खा की। वे २४ जून सिन्धुनगर लौट आये।

१५ सितम्बर स्वामीजी कामटी में पधारे। वहां स्वामीजी ने एक

सप्ताह अमृत वर्षा की। एक दिन स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

जितना सुख संसार में, उनसे बहु दुख जान।
कह टेऊँ जग आस तज, भजन करो भगवान ॥

प्रेमियो! आप लोग सांसारिक पदार्थों में जितना सुख समझते हैं उससे अधिक उनमें दुख है। इसलिए सांसारिक विषय भोगों का परित्याग कर नाम स्मरण करें। एक जंगल में एकांत स्थल पर एक महात्मा रहते थे। समय समय पर राजा उनके दर्शन के लिए आता था। राजा की इच्छी थी कि वे महात्मा उनके महल में पधारकर राजमहल को पवित्र करें। राजा ने कई बार महात्माजी को राजमहल में पधारने के लिए विनय की किन्तु वे इन्कार करते रहे। एक दिन राजा के विशेष अनुरोध पर वे राजमहल में पधारे। राजमहल में भोग विलास के सभी साधन थे। महात्मा जी थोड़ा समय राजमहल में ठहरे, उन्होंने राजा से कहा हमें शीघ्र ही आश्रम में पहुंचाने की व्यवस्था करो। राजा ने कहा "स्वामीजी! आप अभी तो आये हैं, शीघ्र कैसे लौटेंगे!" महात्मा ने कहा, "हमें यहां बहुत दुर्गन्ध आती है, हम अधिक समय तक यहां नहीं रह सकते।" राजा ने कहा "स्वामी! यहां दुर्गन्ध कैसी? यहां तो भांति भांति की सुगन्धि है, कृपया आप कुछ दिन तो यहां ठहरें। महात्माजी उसी समय ही राजा को साथ लेकर चमारों की गली में ले आए। राजा ने महात्मा से कहा "स्वामीजी! यहां तो बहुत दुर्गन्ध है। कृपया यहां से शीघ्र चलें।" महात्मा ने कहा "यहां दुर्गन्ध कहां है? यहां सैकड़ों चमार बैठे हैं, उन्हें तो दुर्गन्ध नहीं आती।" राजा ने कहा "स्वामी! ये चमार रात दिन यहां रहते हैं, चमड़े का व्यवसाय करते हैं, उन्हें चमड़े की दुर्गन्ध अच्छी लगती है, जैसे मछुआ को मछलियों की दुर्गन्ध भाति है।" महात्मा ने कहा "राजन्! तुम्हें भी इन मछुआ और चमारों जैसे, भोग विलास की दुर्गन्ध सुरभि जैसी लगती है।" राजा अब महात्मा के रहस्य को समझ गया। सांसारिक भोगविलास के पदार्थ देखने में सुखदाई लगते हैं किन्तु अन्त इनका दुखदाई है। राजा महात्मा की आज्ञानुसार उन्हें आश्रम पर छोड़ आया। अब राजा के मन में भी सांसारिक पदार्थों के प्रति वैराग्य वृत्ति पैदा हुई। जब मनुष्य जगत् में अनासक्त भाव से रहता है तब उसकी

वृत्ति प्रभु के चरण कमलों में लगती है । सत्गुरु महाराजजी भी अपनी वाणी में कहते हैं-

भोग रोग को देत है, और देत संताप ।
ताते त्यागे भोग को, टेऊँ कर हरिजाप ॥

प्रेमियो ! यदि आप आध्यात्मिक आनन्द की उपलब्धि चाहते हैं तो विषय विकारों, भोग विलास का त्याग करें । प्रभु का चिन्तन करें।

२३ सितम्बर पूज्य स्वामीजी नागपुर में पधारे । वहां स्वामीजी ने एक सप्ताह सत्संग वर्खा की । स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि हब सब जीव प्रभु की पत्नियां हैं । जैसे पत्नि पति को प्रसन्न करने का प्रयास करती है । वैसे हमें भी प्रभु रूपी पति को प्रसन्न कर उसका प्यार प्राप्त करना चाहिए । ऐसा कोई काम नहीं करें जिससे परमात्मा अप्रसन्न हों, जीव की सफलता इसमें है कि जब वह अपने शुभ कर्मों द्वारा परमात्मा को प्रसन्न कर उसके साथ तद्रूप हो जाय। हम सांसारिक पदार्थों के आकर्षण वश प्रभु को भुला बैठे हैं । मीरा की भांति मोह के बंधन तोड़कर हमें प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ना चाहिए ।

एक बार मीराबाई श्री जीव गोस्वामीजी के दर्शनार्थ उनके स्थान पर गई । संत जीव गोस्वामी ने एक शिष्य द्वारा मीराबाई को संदेश भोजा कि वे स्त्रियों को दर्शन नहीं देते । मीराबाई ने यह सुनकर श्री गोस्वामी को उनके शिष्य द्वारा संदेश भेजा कि यदि आप स्वयं को पुरुष मानते हैं तो आप ब्रजभूमि से प्रस्थान करें । ब्रज में तो भगवान श्रीकृष्ण ही केवल पुरुष हैं, और पुरुषों को यहां रहने का अधिकार नहीं । मीराबाई का यह संदेश सुनकर संत गोस्वामीजी शीघ्र ही अपनी कुटिया से बाहर आये और मीराबाई से कहा "मुझे क्षमा करना ।" मेरा यह नियम जन साधरण के लिए है, आप जैसी प्रेमा भक्ति में विभोर के लिए मेरा द्वार सदैव खुला रहेगा । प्रेमियो ! प्रेमाभक्ति द्वारा प्रभु को प्राप्त करना आसान हैं, प्रेमियो के लिए प्रभु का द्वार सदैव खुला रहता है ।

१ अक्टूबर पूज्य स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये । २-३ नवम्बर स्वामीजी ने मुलंद कालोनी में सत्संग वर्खा की । ४-५ नवम्बर

स्वामीजी ने अकबर कैम्प थाना में प्रवचन किये । ६ नवम्बर से १२ नवम्बर कुर्ला बम्बई में स्वामीजी ने अमृत वर्खा की ।

४ जनवरी १९५१ पूज्य स्वामीजी लेकबेल कैम्प में स्वामी ऊद्धवदासजी के स्थान पर पधारे । वहां उन्होंने एक सपताह सत्संग प्रवचन किया। तत्पश्चात् वे नासिक पहुंचे वहां पवित्र गोदावरी नदी में प्रेमियों सहित स्वामीजी ने स्नान कर संतो का भंडारा किया । वहां उन्होंने चार दिन अमृत वर्खा की और १५ जनवरी वे सिन्धुनगर ५ आश्रम पर लौट आये ।

स्वामी माधवदासजी महाराज ने अजमेर आदर्श नगर में स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम की स्थापना की । स्वामी माधवदासजी ने सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से विनय की कि इस वर्ष चैत्र मास का वार्षिक उत्सव अजमेर में आयोजित करें । सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाज ने यह विनय स्वीकार की । १९ अप्रेल से २२ अप्रैल तक प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव आदर्श नगर, अजमेर में आयोजित किया गया । सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज एवं मण्डल के सभी संत वहां पधारे । प्रातः एवं सायंकाल को संतों ने अमृत वर्खा की। इस अवसर पर पूज्य स्वामी शान्ति प्रकाशजी महाराज ने प्रवचन करते हुए कहा कि संत तुलसीदासजी श्रीराम चरित मानस में संतो की महिमा गाते हुए कहते हैं-

मुद मंगल मय संत समाजू, जो जग जंगम तीर्थ राजू ।
राम भक्ति जंह सुर सरि धारा, सरसइ ब्रह्म विचार प्रचारा ।।

संत समाज आनन्ददायक व कल्याणकारी है । संत इस जगत् में चलते फिरते तीर्थराज अर्थात् प्रयाग हैं, त्रवेणी का संगम हैं । इस त्रिवेणी में राम भक्ति रूपी गंगा और ब्रह्म विचार रूपी सरस्वती प्रवाहित होती है । प्रेमियो! आप भाग्यशाली हैं जो इस पवित्र स्थान पर सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज, प्रेम प्रकाश मंडल के संत एवं अन्य महात्मा पधारे हैं । उन्होंने अपने प्रवचनों द्वारा आपका मार्ग दर्शन किया है, नाम का अमृत पिलाया है ।

जहां संत हैं, वहां तीर्थ हैं । संत दादूजी के शिष्य संत गरीबदास जयपुर के नजदीक उगरावास गांव में ठहरे, वहां उन्होंने कुछ दिन प्रवचन

जयपुर के नजदीक उगरावास गांव में ठहरे, वहां उन्होंने कुछ दिन प्रवचन किया। वहां किसी प्रेमी ने कहा कि संत लोग भी तीर्थस्थलों पर जाते हैं। संत गरीबदास ने कहा कि नहीं तीर्थ संतो के पास आते हैं। उसी प्रेमी ने फिर कहा कि यदि ऐसा है तो आप गंगा मैया को यहां लायें, फिर हम आपके वचनों को सत्य समझेंगे। इतने में वहां गंगा की धारा प्रवाहित हुई। यह देखकर सभी लोग आश्चर्य में पड़ गये। संत गरीबदासजी के वचन सत्य हुए। वह गंगा की धारा 'गरीब गंगा' के नाम से प्रसिद्ध हुई। आज भी वहां यात्री आकर स्नान करते हैं और उत्सव मनाया जाता है। यह भक्तों के भक्ति साधना का फल है।

प्रेमियो! सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज ने भी प्रेमाभक्ति की गंगा प्रवाहित की। उस प्रेमाभक्ति की सरिता में आज हजारों प्रेमी डुबकियां लगाकर धन्य धन्य हो रहे हैं। आप भी सत्गुरु महाराज के सिद्धांतो व शिक्षाओं पर चलकर जीवन सफल करें। सत्गुरु महाराजजी अपनी वाणी में कहते हैं-

कलिकाल में कठिन है, योग यज्ञ तप ध्यान।
साधु संग हरिनाम से टेऊँ हो कल्यान॥

२५ अप्रैल स्वामीजी संतो के साथ तीर्थराज पुष्कर गये, ३० अप्रैल पूज्य स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये। वहां नित्य नियम से सायंकाल को वे प्रवचन करते थे। २८-२९-३० मई उल्हासनगर आश्रम में सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की पुण्य तिथि उत्सव मनाया गया। कवि पहिलाजरामजी, स्वामी बसंतरामजी, संत भजनदासजी एवं अन्य संतो ने तीनों दिन अमृत वर्खा की। पूज्य स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज ने सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज महान विभूति थे। जैसे उन्होंने प्रभु के साथ प्रेम का नाता जोड़ा, वैसे ही हम भी परमात्मा से प्रेम का नाता जोड़ें। मानव जीवन में ही नाम स्मरण करना सम्भव है। अमूल्य श्वासों को व्यर्थ न गंवाए। संत तुलसीदासजी कहते हैं-

राम नाम मणि दीप धर जेहि देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहिरहू जोचाहस उजियार॥

यदि आप अपने अंदर, मन मन्दिर एंवं बाहर प्रकाश चाहते हैं तो जीभ रूपी देहरी पर राम नाम रूपी दीपक रखें। देहरी पर दीपक रखने से अंदर बाहर प्रकाश होता है। नाम की ज्योति जगाएं, अज्ञान अंधकार भगाएं।

२० जून पूज्य स्वामीजी पिंपरी कालोनी में पधारे। वहां स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि संतो द्वारा दी हुई वस्तुओं को प्रसाद रूप में स्वीकार करें, उनका कभी भी निरादर नहीं करें।

एक बार योगी मत्सयेन्द्रनाथ अयोध्या के जय श्रीनगर में आये। वहां भिक्षा लेने के लिए उन्होंने एक ब्राह्मण के द्वार पर 'अलख निरंजन' पुकारा। ब्राह्मणी ने श्रद्धा पूर्वक उन्हें चावल दिये। उस ब्राह्मणी को उदास देखकर उन्होंने उसके उदासी का कारण पूछा। ब्राह्मणी ने उत्तर देते हुए कहा "महाराज! मुझे पुत्र संतान नहीं, इसलिए मैं दुखी हूं।" योगी मत्सयेन्द्रनाथ ने अपनी झोली से भभूति निकालकर उसे देते हुए कहा कि तुम इसे खाओ तो तुम्हें पुत्र संतान होगी। यह कहकर योगी महाराज अपनी राह चले गये। ब्राह्मणी को भ्रम हुआ उसने वह भभूति नहीं खायी। पड़ोसिन ने भी उसे वह भभूती खाने से रोका। उसने वह भभूति न खाकर पास में गोबर के गड्ढे में फेंक दी। बारह तेरह वर्ष के पश्चात् योगी मत्सयेन्द्रनाथ फिर उसी ब्राह्मणी के घर आये और उससे पूछा कि अब तो तुम्हारा पुत्र बारह तेरह वर्ष का होगा। कहां है तुम्हारा बेटा? वह ब्राह्मणी योगीराज के वचन सुनकर बहुत लज्जित हुई और उन्हें बताया कि उनके द्वारा दी गई भभूति उसने गोबर के गड्ढे में फेंक दी थी। योगीराज ने कहा कि वह गोबर का गड्ढा मुझे दिखाओ। ब्राह्मणी ने योगीराज को वह गोबर का गड्ढा दिखाया। योगी मत्सयेन्द्रनाथ ने वहां "अलख निरंजन! अलख निरंजन" पुकारा तो उसमें से बारह वर्ष का सुन्दर बालक निकला। यह चमत्कार देखकर वह ब्राह्मणी आश्चर्य में पड़ गई और अपनी भूल पर पश्चात्ताप करने लगी। योगी मत्सयेन्द्रनाथ उस बालक को अपने साथ ले गये और उसका नाम गोरख रखा। आगे चलकर वह गोरखनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुआ, वह मत्सयेन्द्रनाथ का मुख्य शिष्य हुआ।

२० अगस्त सिन्धुनगर प्रेम प्रकाश आश्रम में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी उत्सव मनाया गया । पूज्य स्वामीजी ने भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन करते हुए कहा कि जब जब पृथ्वी पर अत्याचार बढ़े हैं तब तब प्रभु ने अवतार धारण कर दुष्टों का विनाश किया है । द्वापुर युग में भगवान श्रीकृष्ण अत्याचारियों का विनाश करने के लिए और धर्म की रक्षा हेतु अवतरित हुए । आज हम धर्म के मूल सिद्धांतों को भूल गये हैं । प्रेमियो! अपने अपने कर्तव्य का पालन करें, कर्तव्य से कभी भी विमुख न हों । नन्द नन्दन भगवान श्रीकृष्ण बांके बिहारी का स्मरण करें ।

१२ सितम्बर से १४ सितम्बर संत लखीरामजी ने संत सांई हरिचूराम साहब की पुण्य तिथि मनाई । इस अवसर पर पूज्य स्वामीजी ने संत हरिचूरामजी की महिमा गाते हुए कहा कि सत हरिचूरामजी सिद्ध पुरुष थे । उन्होंने कई दुखियों के दुख दूर किये । एक बार संत हरिचूरामजी ने द्वादशी के उपलक्ष में भक्ति संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए भक्त गुरुमुखदास को संदेश भेजा । गुरुमुखदास ने संत हरिचूरामजी को विनती पत्र भेजा, जिसमें लिखा था कि उसके पिता श्री बहुत बीमार हैं, इसलिए उत्सव में कार्यक्रम देना उसके लिए सम्भव नहीं। संत हरिचूरामजी ने फिर भक्त गुरुमुखदास को संदेश भेजा ''तुम पिताजी की चिन्ता मत करो, वे स्वस्थ्य हो जायेंगे, तुम अपनी मंडली सहित शाहपुर थल्हे पर आकर भक्ति संगीत प्रस्तुत करो । भक्त गुरुमुख दास, संत हरिचूरामजी की आज्ञा शिरोधार्य कर शाहपुर थल्हे पर आये और संत हरिचूराम साहब को नत-मस्तक होकर प्रणाम किया । संत हरिचूरामजी ने कहा 'सांई टेऊँरामजी की कृपा से सब ठीक हो जायेगा । दूसरे दिन जब भक्त गुरुमुखदास उत्सव में गा रहे थे तब उन्हें अपने घर से संदेश आया कि तुम्हारे पिता श्री स्वस्थ हैं । यह समाचार सुनकर भक्त गुरुमुखदास प्रसन्न हुए और संतों की महिमा के गुण गान गाने लगे । प्रेमियो! संतो की आज्ञा का पालन करना चाहिए । उनके द्वार पर प्रेम व विश्वास के साथ आएं तो आपकी मनोकामनाएं पूर्ण होंगी।

२० सितम्बर श्री सनमुखलाल (संत देव प्रकाश) जो सदैव पूज्य स्वामीजी की सेवा में रहे हैं और श्री राजूराम (संत वेद प्रकाश) ने स्वामीजी से गुरु मंत्र की दीक्षा ली ।

६ नवम्बर पूज्य स्वामीजी ग्वालियर पधारे। स्वामीजी ने पांच दिन वहां अमृत वर्खा की। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि संतों की लीला निराली होती है। यदि कोई सांसारिक व्यक्ति मूक (गूंगा) होगा तो प्रभु से प्रार्थना करेगा कि जिव्हा दें जिससे बात कर सकूं। कोई बहरा होगा तो परमात्मा से विनय करेगा कि श्रवण शक्ति दें। कोई प्रज्ञाचक्षु (नेत्रहीन) होगा तो वह प्रकाश (ज्योति) के लिए प्रार्थना करेगा, परन्तु भक्त लोग प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि नेत्र, कर्ण, जिव्हा ये बाह्य इन्द्रियां शक्तिहीन हो जायें। कई बार जिव्हा से हम कड़वा बोलकर दूसरों को दुखी करते हैं। रसना द्वारा सांसारिक रसों का रसास्वादन करते हैं, रसना तो राम नाम के जाप करने और मधुर वचन बोलने के लिए है। कर्म तो सत् विचार श्रवण करने के लिए हैं, कई बार हम उनका भी दुरुपयोग करते हैं। दूसरों की निंदा सुनने के लिए तत्पर होते हैं। नेत्रों से बुरे दृश्य देखकर अपने नेत्रों की शक्ति गंवाते हैं। बुरे दृश्यदेखने से उनका मन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। इसलिए कुछ भक्तजन प्रभु से इन इन्द्रियों को शक्तिहीन करने के लिए विनय करते हैं। भक्त को भगवान के अतिरिक्त और कोई चाह नहीं रहती। अखियां हरि दर्शन की प्यासी।

एक बार भक्त सूरदास कुएं में गिर पड़े। वे ६ दिन कुएं में ही रहे वहां भी वह श्रीकृष्ण का स्मरण करते रहे, सातवें दिन भगवान श्रीकृष्ण ने उनके नेत्रों को ज्योति प्रदान की। भक्त सूरदास भगवान का दर्शन कर फूले नहीं समाये उन्होंने भगवान से प्रार्थना की कि पुनः उसे प्रज्ञाचक्षु (नेत्रहीन) बना दें जिससे वे इन नेत्रों से किसी और को न देखें। श्याम की छवि उनके नेत्रों में समा गई। कभी भी ये आंखें फिर माया जाल में फंस सकती हैं। भगवान ने भक्त सूरदास को कुएं से बाहर निकालकर उनकी इच्छानुसार प्रज्ञाचक्षु (नेत्रहीन) बना दिया। भक्तों को सदैव भगवान के दर्शनों की ही अभिलाषा होती है।

प्रेमियो! आप भी प्रभु से भक्ति का दान मांगें तो आपकी इस लोक की यात्रा भी सफल होगी और भविष्य भी उज्जवल होगा। आप संसार में रहें किन्तु निरलिप्त होकर रहें। सर्वस्व प्रभु के चरण कमलों में समर्पित करें।

११ नवम्बर पूज्य स्वामीजी आगरा गये, वहां उन्होंने १५ नवम्बर

तक अमृत वर्खा की । एक दिन स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि सिद्धि, संतो की दासी होती है, किन्तु संतजन अपने सुख के लिए, उसका उपयोग नहीं करते । कभी कभी दूसरों की भलाई के लिए वे रिद्धि सिद्धि का प्रयोग करते हैं । सीहा गांव में जल की बहुत कमी थी, साधारण लोग परेशान थे । जल पूर्ति के लिए संत रामरूप ने वहां एक तालाब बनाने की योजना आरम्भ की । कार्य करने वाले मजदूरों को पैसे देने थे, संत रामरूप ने एक सेवक से कहा कि अमुक पत्थर के नीचे पैसे पड़े हैं, जितने पैसे मजदूरों को देने हैं, उतने ही पैसे वहां से उठाना, अधिक नहीं । सेवक ने संत की आज्ञानुसार पैसे निकाल कर मजदूरों को दिये । यह दृश्य एक मजदूर ने देखा । रात को उसी मजदूर ने उस पत्थर को उठाकर देखा तो वहां एक भी पैसा नहीं था । लोभवश उसने पास वाले पत्थरों की भी खुदाई की किन्तु उसे एक भी पैसा नहीं मिला ।

दूसरे दिन जब मजदूरों को मजदूरी के पैसे दिये जा रहे थे तब संत रामरूप ने कहा कि अमुक मजदूर को दुगने पैसे दीजिये, क्योंकि उसने रात को भी काम किया है । वह मजदूर यह सुनकर लज्जित हुआ और संत के श्री चरणों में गिर पड़ा । संतजन तो मिट्टी को भी स्वर्ण में परिवर्तित कर सकते हैं । प्रेमियो! आप भी किसी न किसी संत महात्मा का संग करें, वे आपका मार्ग दर्शन करेंगे ।

१६ नवम्बर पूज्य स्वामीजी ब्रज-भूमि में पधारे । उन्होंने दस दिन मथुरा, गोकुल एवं ब्रज में सर्वेश्वर भगवान श्रीकृष्ण के लीला स्थलों का दर्शन कर रासलीलाओं का भी आनन्द लिया । २६ नवम्बर वे सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये ।

५ जनवरी १९५२ पूज्य स्वामीजी ने कुर्ला बम्बई में अमृत वर्खा की । २६ जनवरी प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धूनगर ५ पर गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में पूज्य स्वामीजी ने झंडा वंदन करवाया और सायंकाल को व्याख्यान करते हुए उन्होंने कहा कि देश की स्वतंत्रता की सुरक्षा के लिए आज हमें राष्ट्रीय एकता का संकल्प लेना चाहिए ।

प्रेम प्रकाश मंडल के वार्षिक उत्सव के उपलक्ष्य में पूज्य स्वामीजी २ अप्रैल को अमरापुर स्थान जयपुर पधारे । स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी

टेऊँरामजी महाराज की प्रतिमा को प्रणाम किया । तत्पश्चात् सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज को प्रणाम कर उनके चरणों में प्रसाद भेंट किया। स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने प्रसन्न चित होकर उनसे कुशल क्षेम पूछा। ८ अप्रैल से ११ अप्रैल अमरापुर स्थान पर कई संतो महात्माओं ने अमृत वचनों की वर्खा की । पूज्य स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज ने भी प्रवचन करते हुए कहा कि संत कबीरदासजी कहते हैं-

वृक्ष कबहिं नंहि फल बखैं, नदी न संचै नीर ।
पर उपकार के कारने, साधुन धरियो शरीर ।।

वृक्ष अपना फल स्वयं नहीं खाते, नदी अपना जल स्वयं नहीं पीती फल का सेवन दूसरे लोग करते हैं, पानी का उपयोग भी न केवल मनुष्य किन्तु कई प्राणी करते हैं, उसी प्रकार सत्पुरुषों महानुभावों का जीवन दूसरों के कल्याण करने के लिए होता है। सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज भी परोपकार एवं परमार्थ की प्रतिमूर्ति थे उन्होंने स्वयं कष्ट झेलकर दूसरों का उपकार किया । प्रेमियो! आप भी प्रतिदिन कोई न कोई उपकार का कार्य करें। आप दूसरों का उपकार करेंगे तो परमात्मा आपका कल्याण करेगा । संत तुलसीदासजी भी परोपकारी लोगों की महिमा गाते हुए कहते हैं-

परहित लाग तजै जो देही, सन्तत संत प्रशंसहि तेही ।

संत भी उनका यशोगान गाते हैं, जो दूसरों की भलाई के लिए अपना जीवन अर्पण करते हैं ।

रावण की पत्नी मंदोदरी पूर्व जन्म में छिपकली थी । वह जंगल में ऋषि के आश्रम में एक पेड़ पर रहती थी । एक दिन उसी आश्रम में ऋषियों का सामूहिक भोज था । उस पेड़ के नीचे ऋषियों के लिए खीर बनाई जा रही थी । भोजन बनाने वाला व्यक्ति किसी कार्य-वश आश्रम के अंदर गया तब पेड़ से एक छोटा सर्प उस गर्म खीर के बर्तन में गिर पड़ा यह दृश्य केवल उस छिपकली ने ही देखा । उसने विचार किया यदि यह खीर ऋषि मुनि पीएंगे तो वे मर जायेंगे । इसलिए खीर गर्म करने वाले के सामने मैं खीर के बर्तन में कूद पड़ूं, जैसे ऋषि मुनि इस खीर का पान नहीं करें । मैं गर्म खीर में गिरकर मर गई तो मुझे संतोष होगा कि मैंने ऋषियों की जान बचाई । जब भोजन

बनाने वाला सेवक खीर के बर्तन के समीप आया तो वह छिपकली खीर के बर्तन में जा गिरी । जब ऋषियों को बताया गया कि एक छिपकली खीर में गिर गयी है तब उन्होंने आज्ञा दी कि यह खीर ज़हरीली हो गई है, अतः इसे धरती पर फेंक दो । जब खीर धरती पर फेंकी गयी तो उसमें से एक मृत सर्प भी निकला । यह दृश्य देखकर ऋषियों ने ध्यान लगाया और अनुभव किया कि गर्म खीर के बर्तन में पहले सर्प गिरा है । इस विषाक्त खीर को पीने से रोकने के लिए इस छिपकली ने अपनी कुर्बानी दी है । इस छिपकली ने अपना बलिदान कर हमारे जीवन की रक्षा की है । उन ऋषियों ने उस मृत छिपकली को आशीर्वाद देते हुए उस पर दया दृष्टि की । इसी महान उपकार के कारण वह छिपकली दूसरे जन्म में महाबलि रावण की पत्नी मंदोदरी बनी । किसी का किया हुआ उपकार व्यर्थ नहीं जाता । उपकार करते हुए तन, मन एवं धन की कुर्बानी करनी पड़ेगी ।'

प्रेमियो ! आप भी परोपकार के कार्य करें । किसी का उपकार करते हुए यदि कोई कुर्बानी देनी पड़े तो कभी भी संकोच न करें । परमात्मा आपकी रक्षा करेंगे, आपको फल की प्राप्ति होगी । परोपकार को अपना कर्त्तव्य समझें, उपकार करने से आपका जीवन तो सार्थक होगा ही एवं मन को शान्ति भी मिलेगी ।

२० अप्रैल पूज्य स्वामीजी सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से आशीर्वाद लेकर हरिद्वार गये । वे ५ मई तक वहां ठहरे । वहां उन्होंने गंगा मैया का आनंद लिया साथ ही साथ कई संतो महात्माओं से ज्ञान गोष्ठी भी की । हरिद्वार से स्वामीजी अमृतसर में पधारे । वहां वे एक सप्ताह ठहरे, प्रेमियों के घरों पर अमृत वर्खा की । स्वामीजी ने कर्मसिंह का कटरा में भंडारे का आयोजन किया । युवावस्था में वहीं उन्होंने ज्ञानीजी से गुरुग्रन्थ साहब की शिक्षा ग्रहण की थी । २० मई स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये । ३०-३१ मई आश्रम पर सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज की पुण्यतिथि मनाई गई । पूज्य स्वामीजी, कवि पहिलाजराम, और अन्य संतो ने सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के गुणों का वखान किया ।

१७-१८ जून स्वामीजी ने अकबर कैम्प थाना में, १९-२० जून

मुलंद कालोनी में, २१ से २४ जून कुर्ला बम्बई में अमृत वर्षा कर कई प्यासों की प्यास तृप्त की ।

१५ अगस्त सबेरे पूज्य स्वामीजी ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और कहा कि आज स्वतंत्रता दिवस है । देश की आजादी के लिए कई देश भक्तों ने अपना सर्वस्व न्योछावर किया, "भारत माता की जय" के नारे लगाते हंसते हंसते फांसी के फंदों को गले लगाया । आज हमारा परम कर्तव्य है कि देश की आजादी की सुरक्षा के लिए तत्पर रहें।

२० सितम्बर आश्रम पर श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाया गया । पूज्य स्वामीजी ने भगवान श्रीकृष्ण के अनुपम, अद्वितीय लीलाओं का वर्णन किया । २० अक्टूबर पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज, संत मंडली सहित आश्रम पर पधारे । स्वामीजी ने उनका हार्दिक अभिनन्दन किया । स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने सत्संग-यज्ञ का शुभारम्भ किया। एक दिन स्वामीजी ने स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से प्रार्थना की कि यदि आप आज्ञा दें तो यहां संतों के भोज का आयोजन करें । स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने स्वामीजी से पूछा कि भोज का खर्चा कहां से लायेंगे? उन दिनों पूज्य स्वामीजी अपने पास पांच रुपये से अधिक नहीं रखते थे आश्रम पर भी इतनी आय नहीं थी । स्वामीजी को जो भी भेंट मिलती थी वो सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के श्री चरणों में अर्पित करते थे । जब स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने स्वामीजी से खर्चे के सम्बन्ध में पूछा तो पूज्य स्वामीजी ने कहा कि भगवान एवं सत्गुरु महाराज कृपा करेंगे । तब स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने कहा कि भोज की व्यवस्था तुम करो और संतो को दक्षिणा हम देंगे। स्वामीजी ने स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से कहा कि आप केवल दया दृष्टि करें और सब ठीक हो जायेगा, भोज व दक्षिणा आश्रम की ओर से होगी, आश्रम भी तो आपका ही है । स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने मुस्कुराते हुए कहा कि जैसी तुम्हारी इच्छा ।

स्वामीजी ने सभी संतो को (भोज का) निमन्त्रण देने के लिए संत पूर्णप्रकाश को भेजा । स्वामीजी भी दो तीन घंटों के लिए किसी कार्य वश आश्रम से बाहर गये थे उसी समय एक अजनबी वृद्ध व्यक्ति सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के पास आया और पूछा कि संत

शान्तिप्रकाशजी कहां हैं! स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने कहा कि संत शान्तिप्रकाशजी बाहर गये हैं, कुछ समय पश्चात् लौट आयेंगे, परन्तु उनसे तुम्हारा क्या काम है? वह वृद्ध बोला "मेरे पास संत शान्ति प्रकाशजी के १५०० रुपये हैं, वे रुपये मैं उन्हें लौटाने आया हूं। मैं १५० रुपये आप को देता हूं, कृपया ये रुपये संत शान्ति प्रकाशजी को दे देना। वह व्यक्ति स्वामी सर्वानन्दजी महाराज को पैसे देकर चला गया। दो घंटे के बाद जब स्वामीजी लौट आये, तब स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने मुस्कुराते हुए स्वामीजी से कहा कि बहुत पैसे संग्रह करते हो। स्वामीजी यह सुनकर आश्चर्य में पड़ गये और उन्होने कहा कि सत्गुरु महाराज! मैं तो सर्वस्व आपके पवित्र चरणों में अप्रिति करता हूं। तब स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने कहा कि एक वृद्ध व्यक्ति यहां आया था उसने तुम्हारे १५०० रुपये मुझे, तुम्हें देने के लिए दिए हैं और कहा कि यह धरोहर संत शान्ति प्रकाशजी की है। वह व्यक्ति कौन था? स्वामीजी प्रभु के रहस्य को समझ गये, उन्होंने कहा वह वयोवृद्ध व्यक्ति स्वयं सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ही होंगे। संतो के भोज के लिए ही गुरु महाराज सहायता दे गये।

"भक्ता के कार्ज आप खलोया हरि कम करावन आया राम"

दूसरे दिन उन्हीं पैसों से संतो का भोज किया गया और संतो को दक्षिणा भी दी गई। यदि भक्त का भगवान में पूरा भरोसा (विश्वास) है, शिष्य का गुरु में पूर्ण विश्वास है तो उनके कार्य अवश्य ही पूर्ण होंगे, सफलता मिलेगी, केवल अपना स्वार्थ नहीं होना चाहिए।

४ नवम्बर सायंकाल को पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के प्रवचन के पश्चात् स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का आभार मानते हुए कहा कि हमारा सौभाग्य है कि दस दिन तक पूज्य स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने अपने वचनों की अमृत वर्खा कर प्यासियों की प्यास तृप्त की, मुझसे या आश्रम के किसी सेवक से सेवा करने में भूल हो गई हो तो मैं क्षमा मांगता हूं।

५ नवम्बर पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने मण्डली सहित पुणे प्रस्थान किया, स्वामीजी भी उनके साथ गये। वहां स्वामी चन्दन प्रकाशजी के स्थान पर सत्संग प्रवचन किया। कुम्भ मेले के उपलक्ष्य

में स्वामजी ने २८ नवम्बर को प्रयाग के लिए प्रस्थान किया । वहां सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने परम्परानुसार प्रेम प्रकाश अन्नक्षेत्र का शुभारम्भ किया, प्रतिदिन प्रातः व सायंकाल, पूज्य स्वामीजी एवं अन्य संत महात्मा प्रवचन करते थे । स्वामीजी कहीं भी जाते थे तो पूछते थे कि यहां कोई संत महात्मा रहता है क्या? बिना किसी संकोच के स्वामीजी स्वयं उन संतो महात्माओं के पास जाते थे । प्रयाग राज में तो हजारों संत, नागा, योगी पधारे थे । स्वामीजी कई संतों महात्माओं से वहां मिले और ज्ञान गोष्ठि भी की ।

एक दिन स्वामीजी ने वहां प्रवचन करते हुए कहा "प्रेमियो! प्रभु ने आपको तीर्थराज पर आने का शुभ अवसर दिया है, साथ ही साथ यहां आपको हजारों संत, महात्माओं के दर्शन भी हो रहे हैं, आप लोग कितने भाग्यशाली हैं । लोगों के कल्याण के लिए सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज कुम्भ के मेले पर ऐसे उत्सवों का आयोजन करते थे और अब हमारे स्वामी सर्वानंदजी महाराज भी हमारे हित के लिए उत्सव आयोजित करके हमारा कल्याण कर रहें हैं । ऐसे महान संतों की शिक्षाओं को हम अपने जीवन में उतारें । प्रयाग, तीर्थ राज है, ऐसे पुण्य स्थल पर आकर दान-पुण्य करना चाहिए । दान करने में देरी नहीं करनी चाहिए । कुछ लोग ऐसी वस्तुएं दान करते हैं, जो उनके काम की नहीं होती हैं । कुछ लोग दो तीन दिन का बचा हुआ जूठा भोजन भिक्षुकों को देते हैं । अन्न, वस्त्र या जो कुछ भी हम दान करते हैं, वह स्वयं ग्रहण योग्य है या नहीं, इसका विचार करना चाहिये । दूसरों को सदैव भगवत् समझकर ही दान देना चाहिए। हमारे पास जो कुछ भी है वह प्रभु की धरोहर है, हमारा स्वयं का कुछ भी नहीं है । दान भी अभिमान रहित करना चाहिए । प्रभु से प्रार्थना करनी चाहिए-

मैं कुछ नाहीं कुछ अजहूं न मोरा ।
अवसर लजा राखले सधना जन तोरा ।।

एक धनवान था, परन्तु वह बड़ा कंजूस था । धन होते हुए भी वह दान नहीं करता था । उसकी छोटी बहू दयावान थी । एक बार एक युवा भिक्षुक धनवान के द्वार पर भिक्षा मांगने आया । उसी समय

वह छोटी बहू पूजा उपासना कर रही थी । उसने युवा भिक्षुक से पूछा कि तुम क्यों यौवन में ही साधु बने हो? साधु ने उत्तर दिया जीवन पर कोई भरोसा नहीं! कब काल का संदेश आए ! आप भिक्षा देती हैं या नहीं? बहू ने कहा "साधु महाराज! इस घर के मालिक दान करना नहीं सीखे । हम जो खाते पीते हैं वह बासी (रखा हुआ) भोजन है सास ने बहू के अन्तिम शब्द हम बासी खाना खाते हैं, सुन लिए और उसने पति से शिकायत की कि बहू ने साधु से कहा कि हम बासी खाना खाते हैं । बहू को घर की निंदा नहीं करनी चाहिए। हम बासी खाना कब खाते हैं"? ससुर ने बहू को बुलाकर पूछा कि क्या उसने ऐसे कहा है । बहू ने कहा "मैंने बराबर साधु से कहा है कि हम बासी खाना खाते हैं । आपने पूर्व जन्म में जो पुण्य कार्य व दान किया उसका फल इस जन्म में हम अब खा रहे हैं । इस जन्म में तो आप कुछ भी दान पुण्य नहीं कर रहे हैं, फिर दूसरे जन्म में आप को क्या मिलेगा! जो बोयेंगे वह पायेंगे । फिर ससुर ने बहू से पूछा कि क्या हम पूर्व जन्म में किये दान का फल प्राप्त कर रहे हैं? बहू ने कहा ", वही फल हम खा रहे हैं । जैसा कर्म करेंगे वैसा फल भविष्य में मिलेगा ।" उस धनवान ने बहू से कहा कि आज से प्रतिदिन पांच सेर चने उबालकर संतो और गरीबों को खिलाओ। ससुर की आज्ञा से बह चने उबालकर साधुओं व गरीबों को खिलाने लगी । पंद्रह दिन के पश्चात् बह ने सास से कहा कि वह आज ससुर के लिए विशेष भोजन तैयार करेगी । उसने ससुर के लिए विशेष भोजन भी बनाया और चने भी उबाले । जब वह धनवान ससुर भोजन खाने के लिए बैठा, तब बहू ने उसे चनों की थाली परोसकर दी । जब वह चने खाने लगा तो कुछ चने उसके गले में अटक गये । उसनेबहू से कहा "केवल चनों का भोजन, क्या भोजन होता है? बहू ने कहा "ससुरजी! आप प्रतिदिन चने दान करते हैं तो आज आपको चने मिले हैं । चनों से चावल नहीं मिलेंगे । जैसी वस्तु आप दूसरों को खिलायेंगे, वैसी प्रभु आपको भी खिलायेंगे । बहू सयानी थी, उसने जो विशेष भोजन बनाया था, उसकी थाली लाकर ससुर के सामने रखी । यह देखरक ससुरजी प्रसन्न हुए । बह ने कहा "जो वस्तु जो खाना, आपको प्रिय लगे वैसा खाना दूसरों को खिलाएं तो दूसरे जन्म में प्रभु आपको

वैसा ही खाना खिलायेंगे।" यह सुनकर ससुर के विचारों में परिवर्तन आ गया। उसने एक चार द्वार वाला कमरा बनवाया। वहां एक द्वार पर अन्न, दूसरे द्वार पर वस्त्र तीसरे द्वार पर भोजन, एवं चौथे द्वार पर बर्तन दान करने के लिए रखे। अब जो भी उसके द्वार पर आता था, अपनी इच्छा से जो चाहे ले जाता था। उस धनवान की दान वृत्ति का यश चारों ओर फैल गया। जिसको जितना चाहिए उतना अन्न, वस्त्र, बर्तन दान रूप में ले जाता, कोई बंधन नहीं था। भगवान ने उस धनवान की परीक्षा लेने के लिए एक भिखारी के रूप में उसके यहां से अन्न, भोजन, वस्त्र और बर्तन लिए किन्तु धनवान ने कुछ भी नहीं कहा, उसकी आंखें नीचे थीं। तब उस भिखारी रूप भगवान ने उस धनवान से पूछा-

चार द्वार पर देत हो. करके नीचे नैन।
कहा कहां से सिखया, ऐसे विध का देन॥

धनवान ने कहा-

ईश्वर सब में बसत है. देता है दिन रैन।
नाम हमारा लेत है. याते नीचे नैन॥

यह सुनकर भगवान ने उस धनवान को साक्षात् दर्शन दिया। धनवान अत्यन्त प्रसन्न हुआ। वह बहू का आभार मानने लगा। सयानी बहू के सत् विचारों ने परिवार में परिवर्तन ला दिया। प्रेमियो! आप भी विशाल हृदय होकर परोपकार के कार्य करें। भूखों को भोजन दें, प्यासों की प्यास बुझावें एवं निर्वस्त्रों को वस्त्र दान करें। धर्मार्थ के कार्य निष्काम भावना से करेंगे तो प्रभु आप पर प्रसन्न होंगे एवं आपका जीवन व धन दोनों ही सफल होंगे।

१८ जनवरी १९५३ स्वामीजी काशी में पधारे। वे वहां चार दिन ठहरे। पूज्य स्वामीजी वहां पर भगवान विश्वनाथ मंदिर भी गये, स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन किया। २३ जनवरी वे सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये। वे वहां नित्य नियम से अमृत वर्खा करते रहे।

प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिकोत्सव अमरापुर स्थान जयपुर पर २८ मार्च से आयोजित किया गया। इसी उत्सव के उपलक्ष्य में पूज्य स्वामीजी

२० मार्च जयपुर में पधारे । स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज को प्रणाम किया । उन्होंने स्वामीजी से कुशल समाचार भी पूछा । २८ मार्च को उत्सव आरम्भ हुआ । सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी जी महाराज, स्वामी गुरुमुखदासजी, स्वामी आत्मानन्दजी, स्वामी बसंतरामजी, स्वामी माधवदासजी, स्वामी चन्दनप्रकाशजी, स्वामी ऊद्धवदासजी, पंडित शीतलदासजी, पूज्य स्वामी शान्ति प्रकाशजी महाराज, संत भजनदासजी एवं अन्य संतो महात्माओं ने उत्सव के चारों दिन अमृत वर्खा की । पूज्य स्वामी शान्ति प्रकाशजी महाराज ने प्रवचन करते हुए कहा-

कह टेऊँ संसार में बात यही है सार ।
भजन करो भगवान का छोड़ो विषय विकार ।।

प्रेमियो ! सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज अपनी वाणी में कहते हैं कि सभी कर्मों में उत्तम कर्म है भगवत् भजन, सांसारिक विषय विकारों का परित्याग कर नाम स्मरण करना चाहिए । कई जन्मों के पश्चात् मानुष तन मिलता है ऐसा अमूल्य जीवन व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए । सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज प्रतिदिन कई घंटे भगवत् भजन में तल्लीन रहते थे । भगवत् भजन करने से आध्यात्मिक शक्ति मिलती है और हम प्रभु कृपा के पात्र मन सकते हैं । नाम स्मरण का चिन्तन करना भी भगवत भजन है । एक बार एक गंवार जंगल में गायें चरा रहा था, वहीं से एक संत जा रहे थे । गंवार ने संत को प्रणाम किया । संत ने उससे पूछा कि तुम कुछ समय भगवत् भजन भी करते हो या केवल सारा समय गायें चराते रहते हो? गंवार ने कहा "महाराज! भजन क्या होता है, यह मुझे ज्ञान नहीं ।" संत ने कहा कि श्रद्धा व प्रेम से प्रभु का नाम लेना ही नाम स्मरण है। तुम आज से प्रात: एवं सायंकाल को कम से कम ११ बार तो स्मरणी से 'राम नाम' का उच्चारण आरंभ करो । गंवार ने कहा "महाराज! मुझे इतना समय नहीं कि ११-११ बार स्मरणी फेर सकू संत ने कहा कि यदि ११ बार स्मरणी नहीं फेर सकता है तो केवल ११ बार ही प्रेम से राम नाम बोलना । उस गंवार ने संत की आज्ञानुसार ११ बार प्रात: और ११ बार सायंकाल को नाम उच्चारण आरंभ किया किन्तु

वह गंवार नाम स्मरण का चिन्तन दो तीन घंटे पहले से ही करता था, यह उसका नियम हो गया। कुछ वर्षों के पश्चात् जब उसकी मृत्यु हुई तो चित्रगुप्त ने कहा कि गंवार प्रतिदिन तीन तीन घंटे नाम स्मरण करता था। गंवार ने कहा "मैं तो सुबह व सायंकाल केवल ११-११ बार नाम उच्चारण करता था।" चित्र गुप्त ने कहा कि तुम बराबर ११-११ बार राम नाम उच्चारण करते थे किन्तु राम नाम उच्चारण करना है इसका चिन्तन तीन तीन घंटे पहले करते थे भगवद् भजन करने का चिन्तन भी भगवद् भजन ही है, इसलिए तुम स्वर्ग लोक के अधिकारी हो।

प्रेमियो! आप भी उसी गंवार की भांति नियमित रूप से नाम का उच्चारण करते रहें। प्रभु का स्मरण करेंगे तो स्वर्ग की प्राप्ति के अधिकारी बनेंगे। १० अप्रैल स्वामीजी सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से आशीर्वाद लेकर अहमदाबाद में आये। वहां स्वामीजी ने एक सप्ताह तक सत्संग वर्खा की। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि प्रभु अपने प्रेमियों की स्वयं लाज रखते हैं। उदयपुर के नजदीक भगवान श्री चत्रभुज का मंदिर है। किसी समय में उस मंदिर का पुजारी देवजी पांडे था। एक दिन वह श्री ठाकुरजी को सुलाकर उनकी माला अपने गले में डालकर, मंदिर का द्वार बंद कर बाहर आया, तो उसने महाराणा को आते देखकर वह हार अपने गले से उतार कर रखा। हार उतारते समय उसका एक सफेद बाल माला में अटक गया किन्तु उसका इस ओर ध्यान नहीं गया। मंदिर के बाहर और कोई हार ने देखकर पुजारी ने वही पुष्प माला महाराणा को दी। माला लेते समय महाराणा का ध्यान उस पुष्प माला में गुथे हुए सफेद बाल पर पड़ा। महाराणा ने पुजारी से पूछा "क्या भगवान के बाल भी सफेद हो गये हैं?" पुजारी ने कहा "हां महाराज!" फिर महाराणा ने कहा कि मैं कल मंदिर में आकर भगवान के बाल देखूंगा। महाराणा तो चले गये किन्तु पुजारी बहुत चिन्तित हुआ कि यदि कल महाराणा मन्दिर में आकर भगवान के बाल देखेंगे तो उसकी क्या दशा होगी! पुजारी सारी रात मन्दिर में पश्चात्ताप के आंसू बहाता रहा और प्रभु से प्रार्थना करने लगा-

मेरी लाज राखो गिरिधारी। मैं आया शरण तुम्हारी॥

मैंने महाराणा से कहा है कि भगवान के बाल सफेद हो गये हैं। आप भक्त वत्सल हैं, मेरी लाज राखो।

दूसरे दिन महाराणा मंदिर में आए। उसने देखा कि भगवान के बाल सचमुच सफेद हैं, फिर भी उसके मन में सशंय हुआ कि ये बाल नकली तो नहीं, महाराणा ने जैसे ही भगवान की मूर्ति का एक बाल तोड़ा तो रक्त की बूंद टपक पड़ी और महाराणा के वस्त्रों पर जा पड़ी। फिर तो महाराणा बहुत ही लज्जित हुआ और पश्चात्ताप करने लगा। उसने भगवान की मूर्ति के सामनें दण्डवत् प्रणाम कर क्षमा याचना की। महाराणा ने पुजारी से भी क्षमा याचना की। प्रेमियो! भगवान ने अपने पुजारी की लाज रखने के लिए अपने बाल भी सफेद कर दिये। भगवान कितने न दयालु और भक्त वत्सल हैं। भगवान की संगमरमर की मूर्तियों को साक्षात् भगवान समझें। सच्ची भावना से उनकी पूजा उपासना करें।

२० अप्रैल स्वामीजी वार्षा कालोनी बड़ौदा में पधारे। वहां स्वामीजी ने २८ अप्रैल तक सत्संग वर्खा की। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि यदि आप सुखी रहना चाहते हैं तो आप दूसरों को भी सुखी करने का प्रयत्न करें। यदि आप दूसरों का कल्याण करेंगे तो भगवान आपका कल्याण अवश्य करेगा।

राजा भीमदेव के राज्य में एक बार वर्षा न होने के कारण अकाल पड़ा। किसानों और गांव वालों के पास खाने के लिए अन्न नहीं था फिर भी राजा के सिपाही इन गरीबों से ज़बरदस्ती कर प्राप्त करने के लिए, उनके घरों का सामान जप्त कर उन्हें राज दरबार में ले आये। राजकुमार मूलराज ने उन किसानों व गांव वालों को उदास व चिन्तित देखकर उनके उदास होने का कारण पूछा। उन गरीबों ने राजकुमार को अपनी व्यथा सुनाई कि अकाल पड़ने के कारण उनके पास खाने के लिए कुछ नहीं और राजा के सिपाही कर वसूली के लिए उनके घरों की वस्तुएं जप्त कर उन्हें यहां लाये हैं। राजकुमार मूलराज गरीबों की करुण कहानी सुनकर द्रवित हुआ उसने उन्हें आश्वासन दिया कि आप चिन्तित न हों आपकी सभी वस्तुएं आपको अभी लौटा दी जायेंगी। राजकुमार ने उन सबको भोजन खिलाया।

राजकुमार ने जब घुड़सवारी में सफलता प्राप्त की थी तब राजा ने उससे कहा था कि मैं तुम्हें मुंह मांगा पुरस्कार दूंगा, अब राजकुमार ने पिताजी से कहा "कृपया मुझे पुरस्कार दें।" राजा ने पूछा "तुम्हें क्या पुरस्कार चाहिए?" राजकुमार ने कहा "अकाल पड़ने के कारण किसानों से इस वर्ष कर नहीं लिया जाये, उनकी ज़प्त की गई वस्तुएं उन्हें लौटा दी जायें और शासन की ओर से उन्हें अन्न, धन की सहायता भी दी जाये। मुझे यही पुरस्कार आपकी ओर से चाहिए।" राजा, राजकुमार का यह उत्तर सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुआ। उसने उसी समय ही सभासदों को आज्ञा दी कि किसानों को इस वर्ष कर से मुक्त किया जाय, उनकी ज़प्त की हुई वस्तुएं लौटा दी जायें, साथ साथ उन्हें राज्य की ओर से अन्न, धन की सहायता दी जाये। राजकुमार मूलराज के परोपकारी स्वभाव के कारण उसके पिताश्री भी प्रसन्न हुए तो प्रजा भी बहुत ही आनंदित हुई। राजकुमार ने वैभव व पुरस्कार का परित्याग कर दुखी प्रजा को सुखी किया। प्रेमियो! आप भी राजकुमार की भांति दुखियों को सुखी करने का यत्न करें।

२९ अप्रैल पूज्य स्वामीजी रामनगर सूरत में पधारे। वहां स्वामीजी ने ५ मई तक अमृत प्रवचनों की वर्खा की। एक दिन प्रवचन करते हुए स्वामीजी ने कहा कि परमात्मा ने ही सारी सृष्टि का सृजन किया है इसलिए उन्हें मत भुलाओ। प्रभु ने हमें क्या क्या नहीं दिया! अमूल्य मानुष तन दिया किन्तु हम फिर भी प्रभु का आभार नहीं मानते। हम में से कुछ अज्ञानी लोग ऐसे हैं जो नास्तिक हैं, प्रभु में विश्वास नहीं रखते। इस सारी सृष्टि के चालक भी सर्व शक्तिवान परमात्मा ही हैं। उनकी कृपा के बिना मनुष्य कुछ भी नहीं कर सकता।

एक नास्तिक था, किन्तु उसका बेटा आस्तिक था। पुत्र प्रतिदिन नियम से परमात्मा की पूजा अर्चना करता था। यह देखकर उसके पिताजी बारबार उसे कहते थे कि परमात्मा है ही नहीं, तुम क्यों व्यर्थ समय गंवाते हो! परन्तु पुत्र का प्रभु में पूर्ण विश्वास था। एक दिन पुत्र ने पिताजी से पूछा कि यदि परमात्मा नहीं है तो इस संसार का सृजन किसने किया? इस जगत् को कौन चलाता है? पिता ने कहा कि पृथ्वी के घूमने के कारण परिवर्तन होता रहता है। हर चीज़ में

गर्मी है, सृष्टि का कोई सृजन करने वाला नहीं, पृथ्वी के घूमने के कारण और गर्मी के कारण संसार का चर्खा चल रहा है।'' पिताजी का यह उत्तर सुनकर पुत्र संतुष्ट नहीं हुआ। उसने एक दिन एक सुन्दर चित्र बनाकर पिताश्री के कमरे में लगा दिया। जब पिताजी घर में आये और अपने कमरे में सुन्दर चित्र देखकर प्रसन्न हुए। उसने पुत्र से पूछा कि यह चित्र किसने बनाया है? बेटे ने कहा ''पिताजी! गर्मी एवं पृथ्वी के घूमने से यह पत्र उड़कर यहां आया और रंग एवं ब्रश भी उड़कर आये और यह चित्र बन गया। ''पुत्र का यह उत्तर सुनकर पिता थोड़ा सा क्रोधित हुआ और उसने कहा ''बेटा! तू तो मूर्ख है, कागज़, रंग एवं ब्रश कैसे उड़कर आये होंगे। किसी ने तो चित्र बनाया होगा। तब पुत्र ने कहा ''पिताजी! इस चित्र को बनाने वाला कोई चित्रकार होगा, तो इस असीम सृष्टि का भी तो कोई न कोई सृष्टा तो होगा ही। पुत्र का ज्ञान गर्भित उत्तर सुनकर पिता प्रभावित हुआ और वह नास्तिक से आस्तिक हो गया। प्रेमियो! आप भी प्रभु में पूर्ण विश्वास रख कर उनसे प्रार्थना करें। उसके गुण गान करें। सांसारिक काम-काज करते उसे मत भूलें।

६ मई पूज्य स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये। संत रुघूराम आश्रम में रहते थे, स्वामीजी उनके साथ ज्ञान गोष्ठी करते थे। सिन्ध से ही स्वामीजी का उनसे स्नेह सम्बन्ध था। वे सद्गृहस्थ थे, साधक थे एवं भगवान श्रीकृष्ण के अन्नय उपासक थे। वे विद्वान एवं सादगी की मूर्ति थे। देश के स्वतन्त्रता संग्राम में भी उन्होंने भाग लिया। बचपन में ही स्वामीजी को संत रुघूराम का संग मिला और उनसे कुछ ज्ञान ग्रहण भी किया। स्वामीजी के आग्रह पर ही ऋषि रुघूराम आश्रम में आ बसे। स्वामीजी श्रद्धा के साथ उनकी सेवा करते थे।

श्री टीजाराम ब्रजवाणी का पूज्य स्वामीजी के साथ सिन्ध शाहपुर से ही स्नेह सम्बन्ध रहा, वे सत्गृहस्थ थे फिर भी वे बहुत समय तक संतो एवं सूफियों के संग में रहे। उनकी वाणी भी उन्हें कंठस्थ थी। वे विशेषकर रात्रि के समय स्वामीजी के साथ ज्ञान गोष्ठी करते थे। स्वामीजी के मन में भी उनके लिए प्रेम भावना थी, वे संतो सूफियों की वाणी पूज्य स्वामीजी को सुनाते थे।

संत स्वामी शेवादास का स्थान सिन्धुनगर-५ में मट मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है और उनका मंदिर सिन्धुनगर-३ में भी था। वे संत भी प्रात: काल में आकर स्वामीजी के साथ ज्ञान गोष्ठी करते थे। यद्यपि संत शेवाराम वयोवृद्ध थे फिर भी उनके मन में स्वामीजी के प्रति अनन्य श्रद्धा व प्रेम भावना थी।

लुकमान सिन्ध निवासी भाई झमटमल सिन्धुनगर ५ में आकर बसे। वे गायक थे। वे भी स्वामीजी के स्नेह के कारण आश्रम में आ बसे। पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने उन्हें दीक्षा देकर उनका नाम ज्योतिप्रकाश रखा। पूज्य स्वामीजी जब दूसरे नगरों में नाम प्रचार के लिए जाते थे, तो संत ज्योतिप्रकाशजी आश्रम में सत्संग कथा कीर्तन करते रहते थे। आश्रम में छोटा सा बगीचा भी था, उसकी सफाई एवं देख रेख संत पूर्णप्रकाशजी करते रहते थे। प्रति शुक्रवार रात्रि को पूज्य स्वामीजी की कुटि के बाहर सूफी समागम होता था। संत ज्योतिप्रकाश, श्री टीजाराम ब्रजवाणी, डॉ. राधाकृष्ण, वाधूराम बदलाणी एवं कई गुणी जन सूफी संतो की वाणी गाते थे और पूज्य स्वामीजी भी कभी-कभी शाह, सचल, सामी, बेकस, बेदिल, रोहल, हमल एवं अन्य सूफी संतो की वाणी की व्याख्या करते थे। वे सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के भजन शुद्ध राग रागनियों में सुनाते थे। रात्रि के एकांत व शान्त वातावरण में सूफियों, संतो की वाणी श्रवण कर आनन्द की उपलब्धि होती थी। मैं तब स्कूल में पढ़ता था और कभी कभी इस अवसर का लाभ उठाता था।

डॉं. राधाकृष्ण आहूजा प्रात:काल पूज्य स्वामीजी के पास आकर धार्मिक ग्रन्थों का अभ्यास करते हुए साथ ही ज्ञान गृहण करते थे। प्रतिदिन रात्रि को श्री तुलसीदास मोटवाणी एवं श्री गोविन्दराम लीलाणी पूज्य स्वामीजी को समाचारपत्र एवं पुस्तक पढ़कर सुनाते थे। स्वामीजी सदैव समय का सदुपयोग करते थे। जब भी उन्हें समय मिलता था तब किसी न किसी प्रेमी से कहते थे कि कोई धार्मिक पुस्तक पढ़कर सुनाओ। स्वामीजी रात्रि को कितनी भी देरी से सोते थे फिर भी ब्रह्म महूर्त को उठकर आत्मचिन्तन करते थे। प्रात: ५ बजे कुछ साधक पूज्य स्वामीजी के पास धार्मिक ग्रन्थों का अभ्यास करने के लिए आते

थे। स्वामीजी स्नेह के साथ उनका मार्गदर्शन करते थे। उन्हें सारकितावली, विचार माला, विचार सागर, वैराग्य शतक एवं अन्य धार्मिक व वेदान्त सम्बंधी पुस्तकें पढ़ाते थे। स्वामीजी गूढ़ एवं गंभीर विषयों को सरल भाषा में समझाते थे उनके पास दृष्टांतों की तो निधि थी। वे दृष्टांत देकर विषय को रोचक बनाते थे। पढ़ाते पढ़ाते यदि किसी प्रेमी को शंका होती थी तो स्वामीजी प्रसन्न-चित्त होकर उनकी शंकाओं का समाधान करते थे। इस प्रकार पूज्य स्वामीजी ने कई साधकों को सत् शास्त्रों का ज्ञान देकर मार्ग दर्शन किया और उनके जीवन में परिवर्तन लाया। मुझे भी पूज्य स्वामीजी ने प्रात: काल को सत् शास्त्रों का ज्ञान ग्रहण करने के लिए कहा किन्तु मैंने इस शुभ अवसर का लाभ नहीं उठाया! मैं विद्यार्थी जीवन से ही पूज्य स्वामीजी के चरणों में जाकर बैठता था और उनकी असीम कृपा मुझ पर रही है। उन दिनों माता रुकी, काका वलरमल एवं श्री चोइथराम भंडारे की सेवा करते थे।

संत हरिचूराम साहब की पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में १२ सितम्बर रात को पूज्य स्वामीजी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि सांई हरिचूराम साहब महान संत थे, मेरा सौभाग्य था कि बचपन में मुझे उनकी सेवा करने का अवसर मिला। मुझे उनका स्नेह व आशीर्वाद मिला। संत हरिचूराम साहब शाहपुर थल्हे पर रहने वाले सेवकों पर कभी कभी अप्रसन्न भी रहते थे कभी उनकी त्रुटियों के कारण क्रोधित भी होते थे किन्तु मुझ पर उन्होंने कभी क्रोध नहीं किया। वे कहते थे कि तुम्हारा नाम भी खेराज है और मेरे पिताजी का नाम भी श्री खेराजमल है, इसलिए मैं तुम पर क्रोध नहीं करुंगा।" संत हरिचूराम साहब मुझे बहुत प्यार करते थे। वे व्यवसाय करते हुए भी 'हरिनाम' का उच्चारण करते थे। प्रेमी लोग उनके पास जो भी भेंट या प्रसाद ले आते थे, वे उनसे कहते थे कि थल्हे पर दे आओ। वे स्वयं नहीं खाते थे। वे भोजन भी अपनी कमाई का खाते थे। यदि कोई प्रेमी भोजन खाने के लिए आग्रह करता था तो उसके पास भोजन खाने के पश्चात् उस प्रेमी के बच्चों को कुछ पैसे खर्ची के रूप में दे आते थे। वे दूसरों के पैसे एवं पदार्थों को लोहे के चने समझते थे। वे किसी का भी कुछ स्वीकार नहीं करते थे उनकी वाणी में

शक्ति थी, जो कुछ बोलते थे, वह होता था। प्रेमियो! आप लोग ऐसे महापुरुष की पुण्य तिथि उत्सव में आये हैं तो उनके गुण ग्रहण करें। सत्य की राह पर चलें और प्रभु का स्मरण करें। सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज अपनी वाणी में कहते हैं-

अंतर बाहर रैन दिन, भूलो ना हरिनाम।
जिव्हा मन वा प्रान से, कह टेऊँ रट नाम॥

प्रेमियो! आप कहीं भी हों, रात को, दिन को, हर समय जिव्हा, मन व श्वासों से नाम स्मरण करें। संत हरिचूराम साहब खेती बाड़ी करते समय भी नाम स्मरण करते थे। आप भी धंधा, व्यवसाय या नौकरी करते हुए भी नाम को न भूलें। भगवद् भजन टालने के लिए बहाने न बनाए।

२० सितम्बर पूज्य स्वामीजी पिम्परी कालोनी में पधारे। वहां स्वामीजी ने चार दिन अमृत वर्खा की। २४ सितम्बर स्वामीजी उरली कैम्प में पधारे। वहां भी उन्होंने तीन दिन सत्संग प्रवचन किया। २७ सितम्बर वे दौंड कैम्प में आये, वहां स्वामीजी ने चार पांच दिन सत्संग प्रवचन किया। २ अक्टूबर वे उल्हासनगर ५ आश्रम पर लौट आये। सायंकाल स्वामीजी ने महात्मा गांधी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि बापूजी अहिंसा के अवतार थे। वे न केवल राष्ट्र भक्त थे बल्कि ईश्वर भक्त भी थे। वे भगवान श्रीराम एवं भगवान श्रीकृष्ण के अनन्य उपासक थे। वे ब्रह्म महूर्त में उठकर ईश्वर चिन्तन एवं प्रार्थना करते थे, श्रीमद् भगवद् गीता का पाठ करते थे। भारत भूमि को अंग्रेज़ों की परतंत्रता से मुक्त कराने की शक्ति भी उन्हें प्रार्थना से प्राप्त हुई। सायंकाल को भी वे नियमित रूप से प्रार्थना करते थे। प्रार्थना द्वारा ही उन्हें आध्यात्मिक शक्ति मिली।

प्रेमियो! आप लोग भी प्रातः काल उठकर प्रभु की प्रार्थना करें। प्रतिदिन अपने व्यवसाय या नौकरी पर काम प्रारम्भ करने के पूर्व प्रभु से प्रार्थना करें तो आप को सफलता मिलेगी, आतिमक-शक्ति की उपलब्धि होगी। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज कहते हैं-

कह टेऊँ नित कीजिये, राम नाम से प्रेम ।
राम नाम के सम नहीं जप तप संयम नेम ।।

श्री परसराम मसंद ने सक्खर सिन्ध में कई सेवा के कार्य किये। देश के विभाजन के बाद उन्होंने सिन्धुनगर में फिर सेवा की ज्योति जगाई । पूज्य स्वामीजी उन्हें सेवा कार्यों के लिए उत्साहित करते रहते थे । उन्होंने स्वर्गधाम, शमशान भूमि का कार्य आरंभ किया । स्वामीजी ने इस कार्य के लिए उनको आर्थिक सहायता भी दी । समाज सेवक श्री परसराम मसंद ने पूज्य स्वामीजी के सहयोग में १० जनवरी से १७ जनवरी १९५४ तक गांधी रोड उल्हासनगर ५ में नेत्र शिबिर का आयोजन किया । इस शिबिर में नेत्र विशेषज्ञ डॉ. मोदी ने कई लोगों के आंखों के आपरेशन किए । रोगियों के खान पान की व्यवस्था स्वामीजी ने आश्रम की ओर से की । स्वामी टेउंराम आश्रम में पूज्य स्वामीजी ने डॉ. मोदी का अभिनन्दन करते हुए कहा कि डा. मोदी 'बिजली' डॉक्टर हैं, वे एक घंटे में २५-३० आपरेशन करते हैं । इन्होंने हजारों लोगों की आंखों का आपरेशन कर उन्हें ज्योति प्रदान की है । भगवान से प्रार्थना है कि डॉ. मोदी आयुष्मान हों जिससे वे अधिक से अधिक सेवा कर सकें । स्वामीजी ने श्री परसराम मसंद के अन्य साथियों श्री हरीराम रुपाणी, श्री लक्ष्मीचन्द रुपचन्दाणी एवं अन्य सेवकों को सेवा कार्य के लिए साधुवाद दिया ।

२३ जनवरी नेताजी हाई स्कूल में सुभाषचन्द्र बोस के जयन्ती उत्सव के उपलक्ष्य में श्री परसराम मसंद स्वामीजी को नेताजी हाई स्कूल में ले गये । प्राचार्य श्री परसराम लालवाणी ने स्वामीजी का स्वागत किया। विद्यार्थियों ने श्री नेताजी बोस के जीवन पर व्याख्यान दिये। स्वामीजी ने विद्यार्थियों को पुरस्कार देते हुए कहा कि श्री नेताजी निडर, निर्भीक एवं साहसी नेता थे । उन्होंने विदेश जाकर आज़ाद हिन्द फौज बनाकर देश की आज़ादी के लिए संग्राम किया । ऐसे महान देश भक्त के जीवन से आप भी देश भक्ति की प्रेरणा प्राप्त करें । उन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए सर्वस्व बलिदान किया । श्री परसराम मसंद ने स्वामीजी का आभार व्यक्त किया । स्वामीजी की ओर से सभी विद्यार्थियों को प्रसाद दिया गया ।

१६ अप्रैल से १९ अप्रैल अमरापुर स्थान जयपुर में प्रेम प्रकाश मण्डल का वार्षिक उत्सव आयोजित किया गया। इस उत्सव के अवसर पर पूज्य स्वामीजी १४ अप्रैल जयपुर स्थान पर पधारे। वे सर्व प्रथम सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की मूर्ति को नतमस्तक प्रणाम कर, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के पास आकर प्रणाम कर, प्रसाद भेंट किया। उत्सव में प्रातः एवं सायंकाल सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज एवं मंडल के अन्य संतो ने अमृत वर्खा की। १७ अप्रैल प्रातः काल पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

मुक्त द्वा मानुष तन, पाया पूरब भाग।
कह टेऊँ पा मुक्त को, गुर चरणों में लाग॥
योनि चौरासी कोट में, मानुष तन हैं द्वार।
कह टेऊँ तज, जगत् को, पाओ हरि दीदार॥

जीव सांसारिक तृष्णाओं के कारण कई योनियों में भटका है। मनुष्य की उत्तम योनि प्राप्त कर भी यदि जीव धन, पदार्थ एवं संतान के मोह जाल में फंसेगा तो उसे चौरासी लाख योनियों के चक्कर में भटकना पड़ेगा। प्रभु की प्राप्ति एवं आत्मज्ञान की उपलब्धि के लिए मनुष्य योनि ही उत्तम है। मनुष्य तन एक ऐसा द्वार है, जिस द्वार द्वारा परमात्मा के लोक में प्रवेश पा सकते हैं। इसलिए भक्तजन प्रभु से सांसारिक पदार्थ नहीं मांगते, केवल भक्ति का दान मांगते हैं। संत दादू दयालकी भक्ति भावना देखकर भगवान ने उनसे पूछा तुम्हें क्या चाहिए? संत दादू ने कहा "प्रभु! जैसे आप अखण्ड हैं, वैसे मुझे भी आप अपनी अखण्ड प्रेमा-भक्ति का दान प्रदान करें, मुझे और कुछ नहीं चाहिए।" हम भी प्रभु से प्रेमा-भक्ति का दान मांगे।

नाम पदार्थ नानक मांगे, साध जना की सेवा लागे।

सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने इस वार्षिक उत्सव का श्री गणेश किया। आज हम जिनकी छत्र छाया में बैठे हैं, उन्होंने भी परमात्मा से भक्ति दान की प्रार्थना की।

कह टेऊँ कर जोड़ के, मांगू यह वरदान।
दीजे भक्ति भेद बिन, हे हरि! कृपा निधान॥

माधव तेरे चरन में, मन लागे दिन रात।
कह टेऊँ स्मरन करूँ ज्यौं चातक जल स्वांत ॥

हे प्रभु! रात दिन आपके चरण-कमलों का ध्यान करूं। जैसे चातक पक्षी स्वाति नक्षत्र में वर्षा-जल का प्यासा होता है, वैसे मैं भी आपके प्रेमा-भक्ति का प्यासा बन कर आपको प्राप्त करुं।

२५ अप्रैल स्वामीजी अजमेर में पधारे। वहां स्वामीजी ने स्वामी माधवदासजी के स्थान पर २८ अप्रैल तक अमृत वर्खा की। ३० अप्रैल स्वामीजी अहमदाबाद में आये। वहां वे एक सप्ताह संत उद्धवदासजी के स्थान पर अम्बावाड़ी में ठहरे और प्रतिदिन सायंकाल को सत्संग प्रवचन करते थे। ८ मई स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये और वहां नित्य नियम सत्संग प्रवचन करते रहे। ३० मई स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में ब्रह्म भोज का आयोजन किया। सायंकाल को स्वामीजी ने सत्गुरु महाराजजी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज महान विभूति, समाज सुधारक एवं आध्यात्मिक मार्गदर्शक थे। उन्होंने हजारों प्रेमियों को 'श्री सत्नाम साक्षी' मंत्र देकर संसार सागर से पार लगाया, जीवन में सत्गुरु की कृपा की अत्यन्त आवश्यकता होती है। गुरु महाराजजी भी अपनी वाणी में कहते हैं-

सत्गुरु की कृपा बिना, भव सिन्धु तरे न कोय।
कह टेऊँ गुर शरन ले, जे भव तरना होय ॥

संत कबीरदास को सत्गुरु की प्राप्ति के लिए कितनी प्यास थी। उनकी इच्छा थी कि स्वामी रामानंदजी उन्हें गुरु मंत्र की दीक्षा दें। जुलाहा होने के कारण स्वामी रामनंदजी उन्हें गुरु मंत्र नहीं देते थे, फिर भी कबीर निराश नहीं हुए।

कबीरदास एक दिन ब्रह्म मुहर्त को काशी में पंच गंगा घाट की सीढ़ी पर लेट गए। स्वामी रामानंदजी महाराज जब गंगा में नहा कर लौट रहे थे तो अंधेरे के कारण उनका पांव कबीरदास को लग गया, स्वामी रामानन्दजी उस समय 'राम' 'राम' कहते दूर खड़े हो गये। कबीरदास ने उठकर स्वामी रामानन्दजी को दंडवत प्रणाम किया और

उनका आभार मानते हुए कहा "स्वामी ! मैं भाग्यवान हूं, आज ब्रह्म मुहूर्त में अपने मुझे 'राम नाम' का मंत्र देकर कृतार्थ किया है ।

संत कबीर ने पूर्ण गुरु को प्राप्त किया । वे गुरु की महिमा गाते हुए कहते हैं-

सत्गुरु की कृपा भई सिर से उतरया बोझ

प्रेमियो! आप भी यदि अपने मन का बोझ कम करना चाहते हैं, अज्ञान रूपी अंधकार से छुटकारा पाना चाहते हैं तो किसी न किसी परिपूर्ण गुरु की शरण में जाएं । सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज भी गुरू की महिमा गाते हुए कहते हैं-

सत्गुरु की कृपा बिना, सरे न कोई काज ।
तांते गुर की शरण ले, कहे टेऊँ तज लाज ॥

१ अगस्त बी.जी. तिलक स्कूल सिन्धुनगर-५ में भी लोकमान्य तिलकजी की पुण्य तिथि मनाई गई । पूज्य स्वामीजी ने उत्सव की अध्यक्षता की । श्री परसराम मसंद ने सिन्धु एज्यूकेशन सोसायटी की ओर से स्वामीजी का स्वागत सत्कार किया । विद्यार्थियों ने श्री लोकमान्य तिलक के जीवन एवं कार्यों पर व्याख्यान दिये । स्वामीजी ने विद्यार्थियों को पुरस्कार देते हुए कहा कि श्री बाल गंगाधर तिलक महान कर्मयोगी, साहसी एवं निष्काम नेता थे । उन्होंने हताश भारतीय जनता को सचेत कर नई चेतना पैदा की । उन्होंने राष्ट्र को परतंत्रता से मुक्त कराने के लिए जनता को नारा दिया "स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।" आज भी भारत को ऐसे निर्भीक नेताओं की अत्यन्त आवश्यकता है। स्कूल के प्रधान अध्यापक श्री मेंघराज मन्शारामाणी ने स्वामीजी का आभार व्यक्त किया ।

१५ आगस्त प्रातः स्वामीजी ने आश्रम में झंडावन्दन करवाया । सायकाल स्वामीजी ने स्वतंत्रता दिवस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, कहा कि देश की जिस आजादी के लिए कई भारतवासियों ने जीवन का बलिदान दिया, उस स्वतंत्रता की सुरक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है ।

२० सितम्बर कुर्ला, बम्बई में प्रवचन करते हुए पूज्य स्वामीजी ने

कहा कि परमात्मा अपने प्रेमियों की देख भाल करते हैं। एक बार संत दादू अपनी शिष्य मंडली सहित दोसा गांव के नजदीक खेटवरा तालाब पर आये। उन्होंने अपने शिष्यों से उस तालाब में नहाने के लिए कहा। उन शिष्यों मे से एक शिष्य ने संत दादू से पूछा कि क्या नहाने के बाद आप गर्म जलेबियां भी खिलायेंगे? संत दादू ने कहा "पहले नहाओ, प्रभु का ध्यान करो। प्रभु की इच्छा होगी तो तुम्हें गर्म जलेबियां भी मिलेंगी। संत दादू की आज्ञानुसार शिष्य नहाने गये, तत्पश्चात् कुछ समय नाम स्मरण में मग्न हो गये। संत दादू तालाब के किनारे बैठे थे कि अचानक गर्म जलेबियों की एक टोकरी उस तालाब में तैरती किनारे पर संत दादू के सामने आ गई। यह अलौकिक दृश्य देखकर शिष्य मंडली आश्चर्य में पड़ गई। संत दादू दयाल ने शिष्यों को जलेबियां बांटते हुए कहा कि तुम में से किसी ने गर्म जलेबियां खाने की इच्छा प्रकट की थी इसीलिये प्रभु ने तुम्हारे लिए गर्म जलेबियां भेजी। यदि तुम और कुछ मांगते, तो प्रभु वह भी भेजते। प्रभु से सांसारिक पदार्थ न मांगकर नामदान एवं भक्तिदान मांगे। खाने पीने (आहार) एवं सांसारिक पदार्थ तो प्रभु तुम्हें अवश्य देंगे।

प्रेमियो! आप भी प्रभु में पूर्ण विश्वास रखकर नाम स्मरण करेंगे, सत्कर्म करेंगे तो प्रभु अवश्य ही आपका पालन करेंगे। प्रभु का नाम ही 'द्रातार' है, जो सदैव देता रहे।

देंदा दे लेंदे थक पाइ, जुगां जुगंत्र खाई खाइ।

८ दिसम्बर संत प्रभारामजी की पुण्य तिथि उत्सव के अवसर पर पूज्य स्वामीजी ने संत प्रभाराम मंदिर में प्रवचन करते हुए कहा कि संत प्रभारामजी सद्-गृहस्थ थे। पत्नी व पुत्र के स्वर्गवास होने के पश्चात् उनके मन में वैराग्य वृत्ति जागृत हुई। वे आध्यात्मिक रंग में सराबोर हो गये।

एक बार पीरगोठ में प्लेग की बीमारी फैली। कई लोग कालग्रस्त हुए। कुछ प्रेमियों ने संत प्रभारामजी के पास जाकर प्रार्थना की कि कृपया दया दृष्टि करें जिससे लोग प्लेग से मुक्त हो जायें। संत प्रभारामजी ने कहा "यह उत्तर दिशा से आई है और दक्षिण दिशा जायेगी" आप

अपने घरों एवं दुकान के दरवाजों पर जाकर प्याज (कांदा) बांधो और स्वयं चने की दाल एवं प्याज (कांदा) खाएं। प्रभु की कृपा से सब ठीक हो जायेगा। प्रेमियों ने संत की आज्ञानुसार दरवाजों पर प्याज बांधी और उन्होंने स्वयं भी प्याज एवं चने की दाल खाई। दो दिन पश्चात् प्लेग गांव से जाती रही। जो संतो के वचनों में विश्वास रखेगा उसके दुख अवश्य दूर होंगे। प्रेमियो! आप भी संतो में पूर्ण विश्वास व श्रद्धा धारण कर संतों के दर की सेवा करें, नाम स्मरण करें तो परमात्मा आपका दुख दूर करेंगे और आपको आनंद की प्राप्ति होगी।

२१ जनवरी १९५५ सिन्धुनगर आश्रम पर वीर हेमू कालाणीजी का शहीदी दिवस मनाया गया। श्री परसराम मसंद, परसराम कांग्रेसी, पंजूराम वर्मा, लक्ष्मीचन्द रूपचन्दाणी ने वीर हेमू कालाणी की वीरता का वर्णन किया। पूज्य स्वामीजी ने शहीद को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वीर हेमू कालाणी पर सिन्धी जाति को गर्व है। इस शहीद ने देश के स्वतंत्रता संग्राम में अपने जीवन की आहुति दी। उनका जीवन आज की युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। आज भी ऐसे राष्ट्र-भक्तों की देश को आवश्यकता है जो राष्ट्र-हित एवं देश के नवनिर्माण के लिए अपना योगदान दें।

२६ जनवरी १९५५ सायंकाल आश्रम में प्रवचन करते हुए पूज्य स्वामीजी ने गणतंत्र दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला। ३० जनवरी सायंकाल को स्वामीजी ने महात्मा गांधी के गुणों का वर्णन करते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

पूना में स्वामी चन्दन प्रकाशजी महाराज ने स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर की स्थापना की। १८ फरवरी १९५५ को पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने उस मंदिर का उद्घाटन करते हुए स्वामी चन्दन प्रकाशजी महाराज को साधुवाद दिया। उद्घाटन उत्सव में प्रेम प्रकाश मंडल के अन्य सन्तों ने भी प्रवचन किये। इस अवसर पर पूज्य स्वामी शान्ति प्रकाशजी महाराज ने प्रवचन करते हुए कहा कि स्वामी चन्दन प्रकाशजी महाराज ने अपने नाम को सार्थक किया है। चन्दन शीतलता एवं सुरभि का प्रतीक है। संत चन्दनप्रकाशजी स्वयं शीतल स्वभाव

के हैं और उन्होंने सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की यश रूपी सुरभि फैलाने का प्रयास किया है। आज उन्होंने पूना के प्रेमियों की इच्छा पूरी की है। अब यहां प्रतिदिन सत्संग वर्खा होगी, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाज, स्वामी माधवदासजी, स्वामी बसंतरामजी एवं मंडल के अन्य संतों ने इस स्थान पर आकर इस स्थल को पावन बनाया है। प्रेमी इस मन्दिर से लाभान्वित होंगे।

१ अप्रैल पूज्य स्वामीजी जयपुर अमरापुर स्थान पर पधारे। वहां प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव ६ अप्रैल से ९ अप्रैल तक आयोजित किया गया था। स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की मूर्ति को दंडवत् प्रणाम किया और तत्पश्चात् सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के चरणों में प्रसाद भेंट कर प्रणाम किया। ८ अप्रैल स्वामीजी ने वहां प्रवचन करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज क्षमा, दया और परोपकार की प्रति-मूर्ति थे। जब सत्गुरु महाराज ने टण्डे आदम में अमरापुर स्थान की स्थापना की, तब कुछ लोगों से उनका यश सहन नहीं हो सका। उन्होंने सरकार से गलत शिकायतें कीं। विरोधियों ने अमरापुर स्थान की झोपड़ियों को आग लगा दी, फिर भी पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज शांत रहे और अपने विरोधियों को भी प्यार देते रहे। वे कठिनाइयों से गुज़रते हुए भी मुस्कुराते रहे। आज न केवल सिन्ध-हिन्द में किन्तु विश्व के कई देशों में उनका यश फैला हुआ है। दयालु पुरुष स्वयं दुख झेलकर भी दूसरों को सुखी करते हैं।

एक संत तालाब में नहा रहे थे। उसी समय एक बिच्छू तालाब में गिर पड़ा। संत को दया आ गई, उसने उस बिच्छू को पानी से बाहर निकाला। बिच्छू ने अपने स्वभाव अनुकूल उस संत को डंक मारा और पानी में गिर पड़ा। दयालु संत ने फिर उस बिच्छू को पानी से बाहर निकाला। फिर बिच्छू ने संत को डंकमारा और वह पानी में गिर पड़ा। ऐसे चार पांच बार संत ने बिच्छू को मरने से बचाने के लिए पानी से बाहर निकाला और दुष्ट बिच्छू ने संत को बार बार डंक मारा। किनारे पर एक सज्जन यह दृश्य देख रहे थे, उसने संत से कहा कि आपने बिच्छू पर दया करके उसे चार पांच बार पानी से निकाल कर जीवन दान दिया है परन्तु उस बिच्छू ने

आपको बार बार डंक मारा है । आप अपने शरीर को क्यों व्यर्थ पीड़ा दे रहे हैं? संत ने कहा "बिच्छू ने अपना डंक मारने का स्वभाव नहीं छोड़ा तो मैं कैसे अपना दयालु-स्वभाव छोड़ दूं।"

प्रेमियो! आप भी दूसरों पर दया करें, कोई आप से बुरा व्यवहार करता है फिर भी आप उसका भला ही करें। संत कबीरदासजी कहते हैं-

जो तोको कांटा बुए, तांहि बोइ तू फूल ।
तोह फूल के फूल हैं, वाको हैं त्रिसूल ।।

१८ अप्रैल पूज्य स्वामीजी सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से आशीर्वाद लेकर आगरा आये । वहां स्वामीजी ने चार दिन सत्संग वर्खा की । २३ अप्रैल स्वामीजी वृन्दावन पधारे । वहां उन्होंने एक सप्ताह तक भगवान श्री कृष्णचन्द्र आनंदकंद की रास लीलाओं का आनन्द लिया । २ मई वे सिन्धुनगर आश्रम लौट आये और वहां नियमित रूप से सत्संग प्रवचन करते रहे ।

२८ मई से ३० मई प्रेम प्रकाश आश्रम, सिन्धुनगर-५ में पूज्य स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की पुण्य तिथि मनाई । इस अवसर पर कवि पहिलाजराम, संत भजनदास, संत भाई खानूराम साहब एवं अन्य संतों ने अमृत वर्खा की ।

स्वामीजी ने ३० मई संत समागम का आयोजन किया । संतों को भोजन खिलाकर उन्हें भेंट दी । स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज प्रतिदिन कई घंटे भगवद् भजन में लीन रहते थे । प्रेमियों! आप भी नित्य नियम से भगवद् भजन कर भवसागर को पार करें सत्गुरु महाराजजी भी अपनी वाणी में कहते हैं-

जग को झूठा जान के, भज ले जो भगवान ।
कह टेऊँ संसार में, सो जन है बुद्धिमान ।।

वही सच्चा बुद्धिजीवी है जो संसार एवं संसार के पदार्थों को नश्वर समझकर भगवद् भजन करता है, जगत् से सम्बन्ध तोड़कर प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ता है ।

२५ जुलाई पूज्य स्वामीजी नासिक में पधारे । वहां ४ अगस्त से कुम्भ का मेला आरंभ होने वाला था । इस सम्बंध में सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने प्रेम प्रकाश मंडल की ओर से वहां अन्क्षेत्र आरम्भ किया । प्रात: एवं सायंकाल सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज एवं अन्य संत महात्मा प्रवचन करते थे । कई यात्री वहां आये, मंडल की ओर से उनके आवास व खाने पीने की व्यवस्था की गई । पूज्य स्वामीजी भी समय समय पर अमृत वर्खा करते थे । स्वामीजी ने अन्य संतो के साथ गोदावरी नदीमें स्नान किया । स्वामीजी ने वहां कई संतो महात्माओं से ज्ञान गोष्ठी की और प्रेमियों के साथ तपोवन में भी गये । कुम्भ मेले में एक दिन स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि ऐसे पवित्र स्थल पर आकर दान इत्यादि सत् कर्म करना चाहिए। सत्गुरु महाराज जी भी अपनी वाणी में कहते हैं-

जीवन तांका सफल है, जो हो मेघ समान ।
कह टेऊँ दे सर्व को, दान प्यार सन्मान ।।

उन लोगों का जीवन सफल है जो बादल की भांति प्रेम व दान की वर्षा करते हैं । प्रेमियो आप भी प्रेम की वर्षा बरसाएं । भगवान ने आपको जो कुछ धन पदार्थ दिये हैं वह उनका समझकर उन्हें अर्पण करें अर्थात् धन दीन दुखियों की सेवा एवं परोपकार के कार्यों में खर्च करें । दान करने में देरी न करें । कभी भी दान करने की भावना जाग्रत हो तो यथा शीघ्र ही दान करना चाहिए । मन पर कोई भरोसा नहीं । एक बार एक धनवान हरिद्वार गया और वहां दान करने के लिए अपने साथ धन भी ले गया । जब वह गंगा किनारे नहाने गया। तब ब्राह्मणों ने उसे कहा कि पहले दान का संकल्प कर फिर गंगा मैया में स्नान करो । धनवान ने कहा कि पहले मैं गंगा में स्नान कर बाद में दान करूंगा । वह धनवान जैसे ही गंगा में स्नान करने गया तो गंगा के तीव्र प्रावाह के कारण वह गंगा नदी में डूब गया । उस धनवान ने दान करने का संकल्प नहीं किया था । अत: उसके सम्बंधियों ने धनवान का धन दान नहीं किया। यदि धनवान ने दान का संकल्प किया होता तो शायद उसके सम्बंधी वह धन दान कर देते । धनवान

के सम्बंधी उसका धन वापस ले गये। इसलिए कहावत है। "तुरन्त दान महा पुण्य" जो कुछ दान करने की भावना हो, वह यथा शीघ्र ही कार्यान्वित करनी चाहिए। जीवन पर कोई भरोसा नहीं। कब काल आए और ले जाए।

२० अगस्त श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन स्वामीजी ने भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन किया। ८ सितम्बर स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये वे वहां नित्य नियम से सत्संग वर्खा करते रहे।

श्री द्वारकादास वाधवा, श्री जीवणदास आहूजा एवं अन्य प्रेमियो ने मिलकर सिन्धुनगर २ में स्वामी टेऊँराम मंडली की स्थापना की। पूज्य स्वामीजी ने २० अक्टूबर के दिन इस मंडली का उद्घाटन किया। स्वामीजी ने प्रेमियो को साधुवाद देते हुए कहा कि प्रतिदिन यहां प्रातः व सायंकाल को मिलकर सत्संग की ज्योति जगाएं। सत्संग से ही आपका जीवन धन्य होगा। सत्संग द्वारा आपको आत्मज्ञान की प्राप्ति होगी। सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज भी अपनी वाणी में कहते हैं-

चिन्तामणि अर कामधेनु, तीजा सुरतर जान।
जगत् पदार्थ देत ये, सत्संग दे निज ज्ञान॥

चिन्तामणि, कामधेनु गाय और कल्प वृक्ष से जो भी पदार्थ आप मांगेंगे वह पदार्थ आपको मिल जायेगा। किन्तु आत्मज्ञान नहीं मिलेगा आत्मज्ञान की प्राप्ति किसी महान संत एवं सत्संग द्वारा ही हो सकती है। प्रेमियों! आपको धन्यवाद है कि आप लोगों ने सत्संग के लिए इस मंडली की स्थापना की है। यहां प्रतिदिन आकर नाम चिन्तन करें, हरि के गुण गाएं।

३ नवम्बर स्वामीजी संत स्वामी ग्वालानंदजी महाराज की पुण्य तिथि के उत्सव पर पूना गये। वहां उन्होंने स्वामी ग्वालानंदजी महाराज के जीवन-कार्यों पर प्रकाश डाला। ५ नवम्बर स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये। ७ नवम्बर दीपावली के दिन स्वामीजी ने भगवान श्रीराम एवं दीपावली के महत्व पर ज्ञान गर्भित प्रवचन दिया। ९ नवम्बर स्वामीजी ने कार्तिक कथा का आरंभ किया। १५ नवम्बर गोपष्टमी के उपलक्ष्य में स्वाजी ने 'गाय माता की सेवा' के सम्बन्ध में विचार व्यक्त किये। १८ नबम्बर कार्तिक एकादशी के दिन प्रातः हजारों प्रेमी

राम नाम की धुनि लगाते पूज्य स्वामीजी एवं अन्य संतो के साथ श्मशान भूमि गये । वहां श्री परसराम मसंद ने स्वामीजी एवं अन्य संतों का स्वागत सत्कार किया । स्वामीजी ने वहां प्रवचन करते हुए कहा कि इस स्थान पर एक न एक दिन सभी को आना ही है । इसलिए जीवन में सत् कर्म करें, दान एवं हरि नाम स्मरण करें ।

२२ नवम्बर श्री गुरु नानकदेवजी के जन्म दिन के अवसर पर स्वामीजी ने कहा कि गुरु नानकदेवजी अवतारी पुरुष होते हुए भी नाम का स्मरण करते रहे किन्तु हम नाम को भूल गये हैं । श्री गुरु नानकदेवजी ने अपनी वाणी में नाम की कितनी न महिमा गाई है । आप भी नाम की महिमा गाओ, नाम ध्याओ, परम सुख पाओ । १० दिसम्बर संत प्रभाराम मंदिर में, संत प्रभारामजी की पुण्य तिथि के अवसर पर स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन किया ।

२९ जनवरी, १९५६ सिन्धुनगर-५ आश्रम पर शहीद हेमू कालाणी का शहीदी दिवस मनाया गया । स्वामीजी ने शहीद हेमू कालाणी को भाव भीनी श्रद्धांजलि अर्पित की । २३ जनवरी नेताजी हाईस्कूल में श्री सुभाषचन्द्र बोस की जयन्ती मनाई गई । उत्सव के मुख्य अतिथि थे पूज्य स्वामीजी और अध्यक्ष थे श्री सीतलदास खेमाणी । स्वामीजी ने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की अटूट देश भक्ति एवं निडरता का उल्लेख किया । १४ फरवरी पूज्य स्वामीजी, स्वामी टेऊँराम मंदिर धुलिया में पधारे । वहां संत हरिप्रकाशजी ने स्वामीजी का स्वागत सत्कार किया स्वामीजी ने एक सप्ताह वहां अमृत वर्खा की । २२ नवम्बर स्वामीजी नंदुरबार में आये । वहां दो दिन सत्संग प्रवचन किया । तत्पश्चात् वे चालीसगांव में पधारे । वहां भी स्वामीजी ने दो दिन सत्संग प्रवचन किया । २८ फरवरी स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम में लौट आये ।

१८ मार्च होली के सुअवसर पर स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि भक्त प्रहलाद के मन में अटूट भक्ति भावना थी । उसका प्रभु में दृढ़ विश्वास था । उसके पिताजी ने उसे कितने कष्ट दिये, फिर भी उसका बाल भी बांका नहीं हुआ । जो परमात्मा की शरण लेता है, प्रभु उसकी स्वयं रक्षा करते हैं । प्रेमियो! आप भी भक्त प्रहलाद

की भांति श्रद्धा व विश्वास के साथ नाम स्मरण करें ।

प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव २४ अप्रैल से २७ अप्रैल १९५६ अमरापुर स्थान जयपुर में आयोजित किया गया । इस उत्सव के सम्बंध में स्वामीजी १५ अप्रैल जयपुर में पधारे । उन्होंने पहले सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की मूर्ति को दण्डवत् प्रणाम किया। तत्पश्चात् सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज के समीप आकर उनके श्री चरणों में भेंट व प्रसाद रखकर प्रणाम किया । स्वामीजी वहां मंडल के अन्य संत, स्वामी गुरुमुखदासजी, स्वामी आत्मानंदजी, संत प्रेमदासजी से मिले और उनके साथ ज्ञान गोष्ठी भी की । २५ अप्रैल स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने हज़ारों मनुष्यों को ''श्री सत्नाम साक्षी'' मंत्र देकर संसार सागर से पार लगाया। राम नाम की बड़ी महिमा है । सत्गुरु महाराज भी राम नाम की महिमा गाते हुए कहते हैं-

कह टेऊँ नित कीजिये, राम नाम से प्रेम ।
राम नाम के सम नंही, जप तप संयम नेम ।।

राम नाम के जाप द्वारा असाध्य रोगी भी स्वस्थ हो सकते हैं । काशीमें एक धनवान रहता था । उसके शरीर से मवाद निकलता था। उसने बहुत सी दवाइवां की किन्तु फिर भी वह स्वस्थ नहीं हुआ वह सांसारिक पदार्थां के होते हुए भी रोग के कारण अत्यन्त दुखी रहता था । वह जीवन से ऊब गया, न खा सकता था न पी सकता था। उसने और कोई रास्ता न देखकर, गंगा मैया में डूबकर अपना अंत करने का निश्चय किया । उसने मन की यह बात किसी को भी नहीं सुनाई । दूसरे दिन प्रभात को स्वयं गंगा के किनारे चला आया । वहां अचानक उसे संत कबीर का शिष्य संत पद्मनाभ मिला । उसने इस धनवान को अत्यन्त व्यथित देखकर कहा कि तुम गंगा मैया में तीन बार डुबकी मारते हुए राम नाम उच्चारण करो, भगवान तुम्हारा भला करेगा । उस धनवान ने संत के वचन में विश्वास रखकर गंगा मैया में तीन बार डुबकियां मारते राम नाम का उच्चारण किया । जैसे ही वह नहाकर किनारे पर बाहर आया तो उसका रोग खत्म हो गया।

अपने को स्वस्थ देखकर फूला न समाया । वह गंगा मैया और संत पद्मनाभ का आभार मानने लगा । दवाइयों से दुख दूर नहीं हुआ, संत द्वारा दिये गये राम नाम के मंत्र द्वारा उसका दुख दूर हो गया। वह धनवान अपने घर लौट आया, उसने बहुत कुछ दान किया। उसके जीवन में परिवर्तन आ गया । वह प्रति दिन श्रद्धा के साथ नाम स्मरण के साथ साथ दीन दुखियों की सेवा करने लगा । प्रेमियो! आप भी श्रद्धा के साथ राम नाम स्मरण करें तो शारीरिक, मानसिक बीमारियों से मुक्त हो जाएंगे ।

२ मई स्वामीजी सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से आशीर्वाद लेकर हरिद्वार गये । वहां वे १५ दिन गंगा मैया की गोद में आनन्द लेते रहे और कई संतों महात्माओं से ज्ञान गोष्ठियों भी करते रहे । २० मई वे सिन्धुनकर-५ आश्रम पर लौट आये । ४ जून से ६ जून तक आश्रम में सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की पुण्य तिथि मनाई गई इस उत्सव में कई संतो व गुणीजनों ने सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के जीवन कार्यों पर प्रकाश डालते हुए उनकी महिमा गाई। पूज्य स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की वाणी का वर्णन करते हुए कहा कि "प्रेम प्रकाश ग्रन्थ" अमूल्य ग्रन्थ है, उसका प्रेम व श्रद्धा के साथ अभ्यास करें ।

स्वामीजी चार महीने नियमित रूप से सिन्धुनगर आश्रम में ही सत्संग प्रवचन करते रहे, २० सितम्बर संत हरिचूरामजी की पुण्य तिथि के उत्सव पर उनके स्थान पर स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि संत हरिचूरामजी सिद्ध पुरुष थे । शाहपुर थल्हे के सामने, रास्ते के नज़दीक संत हरिचूरामजी ने बाहर बैठने के लिए छोटी सी जगह बनाई। वे प्रतिदिन वहां जाकर बैठते थे । तहसीलदार को पता पड़ा कि वह स्थान अनाधिकृत बनाया है, वह वहां उस स्थल को तुड़वाने के लिए आया । संत हरिचूराम ने उसे कहा कि इसे मत तुड़वाओ । तहसीलदार ने अपने घमंड में, उसे तुड़वा दिया । दूसरे दिन उस तहसीलदार की आंखों की रोशनी गायब हो गई । अचानक यह कैसे हुआ यह विचारने लगा । विवेक ने कहा "तुम ने संत की आज्ञा का उल्लंघन किया है, इसलिए आंखों की रोशनी चली गई ।" वह तहसीलदार संत

हरिचूरामजीके पास आया और रो रो कर पश्चात्ताप करने लगा। उसने संत से प्रार्थना की "मैं गुनहगार हूं मुझे क्षमा करें, कृपया मुझे रोशनी लौटा दीजिये।" संत दयालु होते हैं, संत हरिचूरामजी ने कहा कि रात को सोते समय एक सलाई पानी की एक घट से एवं दूसरी दूसरे घट से अपनी आंखों में लगाओ। संत सांई सेऊराम भला करेगा। तहसीलदार ने संत हरिचूरामजी के आज्ञा का पालन किया। दूसरे ही दिन उसे रोशनी मिल गई। तहसीलदार फिर संत हरिचूराम के पास आया और उसने प्रतिज्ञा की कि वह किसी को नहीं सतायेगा। तहसीलदार ने फिर वह बनाकर दी। प्रेमियो! संतो के द्वार पर घमंड नहीं करना चाहिए। जो विश्वास रखकर आता है, उसकी मनोकामना पूर्ण होती हैं।

२ अक्टूबर गांधी जयन्ती के उपलक्ष्य में आश्रम में स्वामीजी ने महात्मा गांधी के जीवन की कुछ प्रेरणादायक घटनाएं सुनायीं। १५ अक्टूबर विजय दशमी के दिन श्री परसराम मसंद ने सायंकाल को मैदान पर रावण दहन का कार्यक्रम रखा। उस अवसर पर व्याख्यान करते हुए स्वामीजी ने कहा कि भगवान श्रीराम ने रावण को पराजित कर सत्य का झंडा झुलाया। उन्होंने अन्यायी एवं अत्याचारी शक्तियों का दमन किया इसलिए आज का दिन विजय का दिन मनाया जाता है। आज भी हमारे देश में आसुरी शक्तियां हैं, उनके नष्ट करने का संकल्प करें। स्वामीजी ने उत्सव के आयोजकों श्री परसराम मसंद, परसंराम बालाणी और हरीराम रुपाणी को धन्यवाद दिया। ५ नवम्बर आश्रम में स्वामीजी ने कार्तिक कथा का आरंभ किया। कार्तिक के सभी दिन प्रातः को पूज्य स्वामीजी एवं अन्य संत, सत्संग, कथा कीर्तन करते रहे। स्वामीजी श्री गुरु ग्रन्थ साहब की वाणी की व्याख्या भी करते थे।

१२ नवम्बर गोपष्टमी के उपलक्ष्य में श्री राधेश्याम गौशाला में उत्सव का आयोजन किया गया। स्वामीजी ने गौ सेवा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज के दिन भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं गायें चराना आरंभ कीया। भगवान श्रीकृष्ण ने अपने लोक का नाम 'गौलोक' रखा। मुरली मनोहर गौ माता की स्वयं सेवा करते थे। गौ हमारी माता है, देश धर्म का नाता है। प्रेमियो! गौ सेवा द्वारा आप प्रगति-पथ पर बढ़ सकते हैं। गौ की सेवा प्रभु की सेवा है। श्रद्धा व प्रेम

के साथ गौ की सेवा करें।

१४ नवम्बर बाल दिवस के उपलक्ष्य में पूज्य स्वामीजी ने व्याख्यान करते हुए कहा कि आज पंडित जवाहरलाल नेहरु का जन्म दिवस है। श्री जवाहरलाल बच्चों को बहुत प्यार करते थे, इसलिए उनका जन्म दिन बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। बच्चे देश की धरोहर हैं। वे भविष्य के होने वाले नेता हैं। उनके शारीरिक-मानसिक विकास की ओर ध्यान देना चाहिए। आज हमारे देश में हजारों ऐसे बच्चे हैं जो विद्या से तो वंचित रहते ही हैं, साथ ही उन्हें पेट भर खाना भी नहीं मिलता। आज हम बच्चों के विकास के लिए संकल्प करें।

१५ नवम्बर कार्तिक एकादशी के उपलक्ष्य में पूज्य स्वामीजी के साथ, सांई जीवणाघोट, संत स्वामी तिलोकदास (जयबाबा) एवं हजारों प्रेमी श्रद्धालु लोग राम नाम की धुनि लगाते स्वर्गधाम शमशान भूमि में आये। श्री परसराम मसंद ने संतों का स्वागत किया। स्वामीजी ने शमशान भूमि के सेवा कार्य के लिए दो हज़ार रुपये दिये। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए, कहा कि दान तो प्रति दिन करना चाहिए किन्तु आज के दिन दान करने का विशेष महत्व है। आप लखपति हों या करोड़पति यहां तो सब को खाली हाथ आना है। इसलिए प्रभु ने जो कुछ धन एंव अन्य पदार्थ दिये हैं,वे परोपकार के कार्यों में सफल करें। धन की सार्थकता दान करने में हैं।

१८ नवम्बर श्री गुरुनानकदेजी महाराज का जन्म दिवस आश्रम में मनाया गया। प्रातः स्वामीजी ने कार्तिक कथा की समाप्ति की। उन्होंने गुरु नानकदेवजी की वाणी की व्याख्या करते हुए कहा कि उनकी वाणी अमृत तुल्य है। उनकी वाणी पढ़ने व श्रवण करने से भी मन को शांति प्राप्त होती है। वह वाणी समझने के बाद तो आत्मज्ञान की उपलब्धि होती है। आप भी गुरु की वाणी का अभ्यास करें और प्रति दिन कुछ समय नाम स्मरण में सफल करें।

२ दिसम्बर सतगुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज सिन्धुनगर आश्रम पधारे। स्वामीजी ने उनका भव्य स्वागत किया। सायंकाल स्वामीजी ने सतगुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का अभिनंदन करते हुए कहा कि

हम भाग्यशाली हैं, जो गुरु महाराजजी यहां पधारे हैं, उनके वचन श्रवण कर हम कृतार्थ होंगे।

सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने ११ दिन अमृत वर्खा कर कई प्यासों की प्यास पूरी की। स्वामीजी ने गुरु महाराज का आभार मानते हुए कहा कि सत्गुरु सर्वानन्दजी महाराज ने यहां हजारों प्रेमियों का मार्ग दर्शन किया है। मन तो चाहता है कि वे यहां ही ठहरें।यह स्थान भी तो उनका ही है। मैं तो उनका सेवक हूं। मुझ से सेवा करने में कोई भूल हुई हो तो दास को क्षमा करें।

४-५ जनवरी, १९५७ पूज्य स्वामीजी ने मुलुंद कालोनी में, ६ से १० जनवरी कुर्ला, बम्बई में सत्संग प्रवचन किया। २८ मार्च स्वामीजी अहमदाबाद अम्बावाड़ी स्वामी ऊद्धवदास के स्थान पर पधारे। वहां उन्होंने पांच दिन अमृत वर्खा की। २ अप्रैल स्वामीजी जयपुर की ओर रवाना हुए तथा ३ अप्रैल अमरापुर जयपुर में पधारे। वे पहले सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की मूर्ति को प्रणाम कर, ततूपश्चात् सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज के पास आये। उनके चरणों में प्रसाद भेंट कर प्रणाम किया। प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव चैत्र मेला १३ अप्रेल से १७ अप्रैल तक मनाया गया। चारों दिन सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज, स्वामी गुरुमुखदासजी, स्वामी प्रेमदासजी, स्वामी माधवदासजी, स्वामी आत्मानन्दजी, स्वामी बसंतरामजी, स्वामी चन्दनप्रकाशजी, स्वामी मुरलीधरजी, संत भजनदासजी एवं अन्य संतो महात्माओं ने अमृत वर्खा की।

१५ अप्रैल को पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए, कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने हजारों प्रेमियो को नाम की नौका में चढ़ाकर संसार सागर से पार लगाया। प्रेमियो! आप भी उस परम पिता की शरण लें, तो सांसारिक दुखों से मुक्त हो जाएंगे। जिन्होंने प्रभु की शरण ली है या किसी परिपूर्ण गुरु की शरण ली है उनके जीवन की नैया पार लग जायेगी। सत्गुरु महाराजजी भी अपनी वाणी में कहते हैं-

राम रक्षा जांकी करे, तांहि न को दुख होय।
कह टेऊँ भय त्याग के, निर्भय रहता सोय॥

गंगा घाट पर भक्त नारायणदास रहते थे। वे भगवान राम के अनन्य उपासक थे। उन्हें संतान नहीं थी। उनकी इच्छा हुई कि जीवन के शेष दिन अयोध्या में भगवान श्रीराम के श्रीचरणों में व्यतीत करूं। इस विचार से उन्होंने पत्नि मालती सहित अयोध्या की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में कुछ लुटेरों ने उन्हें लूट कर, मार पीट कर एक चादर में बांध दिया। उनकी पत्नि मालती ने सहायता के लिए भगवान राम को पुकारा। मालती की करुण पुकार सुनकर, भक्त की रक्षा के लिए प्रभु श्रीराम घोड़े पर सवार होकर वहीं प्रकट हुए। लुटेरे उन्हें देखकर भयभीत हो, लुटा हुआ सामान एवं भक्त नारायणदास को वहीं छोड़ भागे। भगवान श्रीराम ने अपने भक्त को दर्शन दे, उन्हें आशीर्वाद देकर स्वस्थ कर दिया। पति पत्नि को अपने घोड़े पर चढ़ाकर अयोध्या की ओर चले। अयोध्या नगरी के बाहर भक्त नारायणदास एवं उसकी पत्नि को छोड़कर भगवान अन्तर्ध्यान हो गये। प्रभु अपने भक्तों की किसी न किसी रूप में आकर रक्षा एवं सहायता करते हैं। प्रेमियो! आप भी सत्गुरु व परमात्मा की शरण लें तो वे आपकी सहायता करेंगे, भक्त प्रहलाद आग में फेंका गया किन्तु उसके विश्वास की विजय हुई। होलिका जल गई परन्तु प्रहलाद का बाल भी बांका नहीं हुआ। आप भी श्रद्धा व प्रेम से 'श्री सत्‌नाम साक्षी' मंत्र का उच्चारण करें तो आपकी रक्षा राम करेंगे।

२२ अप्रैल स्वामीजी सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से आशीर्वाद लेकर हरिद्वार गये। स्वामीजी एक महीना हरिद्वार में ठहरे। २२ मई स्वामीजी दिल्ली में स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर में पधारे। वहां उन्होंने एक सप्ताह सत्संग प्रवचन किया। १ जून पूज्य स्वामीजी आदर्श नगर, अजमेर स्वामी माधवदासजी के स्थान पर आये। वहां सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का पुण्य तिथि उत्सव मनाया जा रहा था। सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज भी मंडली सहित वहां पधारे। पूज्य स्वामीजी ने तीन दिन वहां सत्संग वर्खा की। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि स्वामी टेऊँरामजी महाराज महान विभूति थे। उन्होंने सिन्ध में प्रेम प्रकाश मंडल की स्थापना कर गांव गांव और नगर नगर में नाम का प्रचार किया, अज्ञान की नींद में सोए हुए लोगों को "श्री सत्नाम साक्षी" का मंत्र देकर आध्यात्मिक ज्ञान व प्रभु प्रेम की ज्योति जगाई। सत्गुरु

स्वामी सर्वानन्दजी महाराज भी साक्षात् उनकी मूर्ति हैं। जैसा उनका नाम है, वैसा ही वे सभी को आनन्द देने वाले हैं।

स्वामीजी १२ जून सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये। प्रातःकाल कुछ साधक स्वामीजी के पास धार्मिक ग्रन्थों का अभ्यास करने के लिए आते थे। स्वामीजी ने श्री सन्मुखलाल (संत देव प्रकाश), श्री राजूराम (संत वेद प्रकाश) को संस्कृत भाषा का गहन अध्ययन करने एवं सत् शास्त्रों का अभ्यास करने के लिए काशी भेजा। ७ जुलाई को आश्रम पर स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का जन्म दिन उत्सव मनाया। ८ जुलाई प्रातः सिन्धुनगर-२ मंडली में स्वामीजी ने अमृत वर्खा की। १ अगस्त आश्रम में जन्माष्टमी उत्सव मनाया गया। पूज्य स्वामीजी ने भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन करते हुए श्री बांके बिहारी की महिमा के पद गाये। १५ अगस्त प्रातः आश्रम पर स्वामीजी ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और सायंकाल व्याख्यान किया। ३० अक्टूबर स्वामीजी नवसारी में पधारे। वहां तीन दिन सत्संग प्रवचन करने के पश्चात् वे रामनगर, सूरत में पधारे। वहां उन्होंने पांच दिन अमृत वर्खा की। ८ नवम्बर स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये।

स्वामी ग्वालानंदजी महाराज के पुण्य तिथि उत्सव के उपलक्ष्य में ९ नवम्बर को पूज्य स्वामीजी पूना गये। वहां स्वामी रामकृष्णजी के स्थान पर स्वामीजी ने दो दिन प्रवचन करते हुए स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज के जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश डाला। ११ नवम्बर स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये। १३ नवम्बर दीपावली के दिन सायंकाल सत्संग में पूज्य स्वामीजी ने भगवान श्री राम की अलौकिक लीलाओं का वर्णन किया। १५ नवम्बर प्रातः पूज्य स्वामीजी ने कार्तिक कथा प्रारंभ की। कार्तिक के १५ दिन प्रातः स्वामीजी अमृत वर्खा करते रहे। गोपाष्टमी के दिन स्वामीजी ने श्री राधेश्याम गौशाला में प्रवचन करते हुए गौ सेवा के लिए प्रेरित किया। कार्तिक एकादशी को हजारों प्रेमी एवं कई संत राम नाम की धुनि लगाते श्मशान भूमि में आये। स्वामीजी ने वहां प्रवचन करते हुए कहा कि यहां , एक न एक दिन सभी को आना है। राजा हो या रंक, अमीर हो या फकीर, एक दिन स्थूल शरीर यहां भस्म हो जायेगा। इसलिए सत्कर्म करें, प्रभु

को न भूलें, दीन दुखियों की सेवा में धन सफल करें। कार्तिक पूर्णमासी के दिन स्वामीजी ने कार्तिक कथा, श्री गुरु ग्रन्थ साहब, श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ एवं श्रीमद्भगवद् गीता के पाठों के समापन के पश्चात् कहा कि आज श्री गुरुनानकदेवजी का जन्म दिन है। उनकी, अमूल्य शिक्षाओं को न भूलें। 'नाम खुमारी नानका, चढ़ी रहे दिन रात। सत्गुरु महाराजजी भी अपनी वाणी में कहते हैं-

पूर्व पुण्य ते पाइया, मानुष का अवतार।
कह टेऊँ तिहं सफल कर, सुमरे सृजणहार॥

यह मनुष्य तन कई पुण्य कार्य करने के बाद प्राप्त हुआ है। इस अमूल्य जीवन को व्यर्थ नहीं गंवाएं। जीवन की सार्थकता है भगवद् भजन एवं सेवा में। एक एक श्वास हीरों, जवाहरातों से अमूल्य हैं। इन श्वासों की कदर करें। जिसके साथ प्रेम होता है उसे क्षण क्षण याद करते हैं। प्रभु से भी वैसा ही प्रेम का नाता जोड़ें। संसार के मोह के बंधन तोड़ें। विकारों के वशीभूत होकर प्रभु को नहीं भुलाएं, सदैव उसका चिन्तन करें। सत्गुरु महाराजजी भी अपनी वाणी में कहते हैं-

कह टेऊँ हरिनाम जप, भूलो ना क्षण एक।
भोगत भोगत विषय रस, बीते जन्म अनेक॥

८ दिसम्बर स्वामीजी अहमदाबाद गये। वहां ९ दिसम्बर से ११ दिसम्बर तक संत प्रभारामजी की पुण्य तिथि उत्सव का आयोजन किया गया था। श्री नेणूमल एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत सत्कार किया। स्वामीजी ने तीन दिन तक वहां सत्संग वर्खा करते हुए संत प्रभारामजी के गुणों का वर्णन किया। स्वामीजी ने कहा कि प्रति वर्ष आप लोग संत प्रभारामजी की पुण्य तिथि मनाते हैं। वे आपके मित्र नहीं थे फिर भी श्रद्धा व प्रेम से यह उत्सव आयोजित करते हैं। उनकी भक्ति साधना के कारण ही आप उन्हें याद करते हैं। आप भी नाम का स्मरण करें। गुरु द्वारा दिये गये मंत्र की साधना करें तो कल्याण होगा।

सत्गुर के सत् शब्द का सुमरन करो दिन रैन।
कह टेऊँ जिहं सुमरते चित्त में उपजे चैन॥

१२-१३ दिसम्बर स्वामीजी ने अम्बावाड़ी, स्वामी टेऊँराम मंदिर में सत्संग प्रवचन किया । १६ दिसम्बर स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये ।

२ जनवरी से ५ जनवरी १९५८ तक पूज्य स्वामीजी ने कुर्ला, बम्बई में अमृत वर्खा की । २१ जनवरी सांयकाल सत्संग में स्वामीजी ने शहीद हेमू कालाणी को श्रद्धांजलि अर्पित की । २३ जनवरी वीर पुरुष नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के जन्म दिन के उपलक्ष्य में स्वामीजी ने नेताजी की वीरता एवं राष्ट्र भक्ति का वर्णन किया । ३० जनवरी स्वामीजी ने महात्मा गांधी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की । ३१ मार्च स्वामीजी, महाराज मुरलीधरजी के स्थान इन्दौर में पधारे । ८ अप्रैल तक उन्होंने वहां सत्संग प्रवचन किया । पूज्य स्वामीजी ९ अप्रैल स्वामी सर्वानन्दजी महाराज एवं प्रेम प्रकाश मंडल के अन्य संतो के साथ उज्जैन में कुम्भ मेला उत्सव के लिए पधारे । १३ अप्रैल से उज्जैन में कुम्भ मेला प्रारम्भ होने वाला था । प्रेम प्रकाश मण्डल की ओर से वहां छावनी लगाई, अन्नक्षेत्र भी आरम्भ किया गया । प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक चैत्र मेला भी वहीं आयोजित किया गया । विभिन्न नगरों से कई प्रेमी वहां आये । प्रति-दिन संतगुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज एवं अन्य संत वहां प्रवचन करते थे । पूज्य स्वामीजी भी वहां कई संतो महात्माओं से मिले, उनके साथ ज्ञान गोष्ठी भी की । कुम्भ के महत्वपूर्ण दिनों पर स्वामीजी ने संतो व प्रेमियों के साथ पवित्र क्षिप्रा नदी में स्नान किया । स्वामीजी भी वहां कभी प्रातः तो कभी सायं प्रवचन करते थे । एक दिन स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि सांसारिक रिश्ते-नाते दुखदाई हैं इसलिए मन में वैराग्य वृत्ति धारण कर प्रभु के साथ प्रेम का नाता जोड़ना चाहिए । सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने भी संसार का त्याग कर प्रभु की भक्ति में जीवन सफल किया । प्रेमियो! आप भी सांसारिक रसों का परित्याग कर राम रस पीने का प्रयास करें तो आपको अद्वितीय आनन्द की उपलब्धि होगी । सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज अपना अनुभव बताते हुए कहते हैं-

लगन लगी जब राम से, क्या लोकन से काम ।
टेऊँ मोह न भावहीं, खान पान , आराम ।।

सच्चे भक्त रात-दिन ब्रह्म का ही चिन्तन करते हैं। वे संसार में रहते हुए भी सांसारिक पदार्थों से निर्लिप्त रहते हैं। एक संत के पास एक माता तीस वर्ष से सेवा करती थी किन्तु उस संत ने उस माता का कभी मुंह भी नहीं देखा था। एक बार उस संत ने एक माता से कहा कि जो माता सेवा करती है उसे बुलाओ। उस माता ने संत से कहा, "मैं ही तो सेवा करती हूं। तीस वर्ष से आपके यहां सेवा कर रही हूं, आप मुझे पहचानते तक नहीं।" संत ने कहा "मैं तो केवल प्रभु के मुखारविन्द को ही देखता रहता हूं। मैं और किसी को नहीं पहचानता।" भक्त केवल भगवान का ही चिन्तन करते हैं। प्रेमियो! आप भी संसार में अनासक्त भाव से रह कर प्रभु का स्मरण करें।

पूज्य स्वामीजी कुम्भ मेले की समाप्ति के बाद २८ मई सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये। ४ जून से आश्रम में सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की पुण्य तिथि मनाई गई। ७ जून प्रात: को उत्सव की समाप्ति का पलव पाते हुए स्वामीजी ने कहा कि जैसे आप समय पर खाना खाते हैं, समय पर धंधा व्यापार, नौकरी इत्यादि करते हैं वैसे ही नित्य नियम से ब्रह्म मुहूर्त में नाम का स्मरण करें। सत्गुरु महाराजजी भी अपनी वाणी में कहते हैं-

जो नर प्रात: न जागहीं, सो पीछे पछताय।
टेऊँ तांते जागिये, गफ़लत नींद गंवाय॥

यह ज्ञात नहीं कि कितने जन्म नींद करते व्यर्थ गंवाये हैं। अमृत वेला में उठकर प्रेम से नाम का जाप जपें। श्री गुरु नानकदेवजी भी फरमाते हैं-

अमृत बेला सचना वडयाई वीचार।

ब्रह्म मुहूर्त में उठकर एक ब्रह्म का ही चिन्तन करें। पक्षी भी प्रात: उठकर मीठी बोली बोलते हैं, केवल सोए रहते हैं। आप अमूल्य मानव जीवन नींद करते न गंवाएं। यदि आवागमन से मुक्त होना चाहते हैं तो श्वास श्वास से गुरु मंत्र का जाप करें। सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज भी कहते हैं-

सत्गुरु के निज नाम को, सुमरो श्वासों श्वास।
कह टेऊँ जिस सुमरते, टूटे यम की फास॥

पूज्य स्वामीजी वर्षा ऋतु के चार मास सिन्धुनगर आश्रम पर ही नियमित रूप से सत्संग प्रवचन करते रहे। प्रात:काल कई जिज्ञासु स्वामीजी के पास सत् शास्त्रों का अभ्यास करने के लिए आते थे। स्वामीजी उनकी शंकाओं का समाधान भी करते थे। संत हरिचूराम साहब की धर्मपीठ पर विराजमान संत भाई रूपारामजी भी उन दिनों प्रात:काल स्वामीजी के पास आकर लाभान्वित होते थे।

संत हरिचूराम साहब की पुण्य तिथि उत्सव के सम्बंध में १७ सितम्बर् रात को स्वामीजीने उनके स्थान पर प्रवचन करते हुए संत हरिचूराम साहब के जीवन की कुछ घटनाएं सुनाई। संत जीवणरामजी ने स्वामीजी का हार्दिक स्वागत सत्कार किया।

स्वामीजी की प्रेरणा से सुन्दर शेवक सभा की ओर से श्री परसराम मसंद ने सिन्धुनगर-५ में नेत्र चिकित्सा शिबिर का आयोजन किया। डॉ. एम. सी. मोदी ने अपने सहयोगी डॉक्टरों के साथ हजारों लोगों के नेत्रों का परीक्षण कर कुछ रोगियों को दवाई तो कुछ रोगियों को मुफ्त चश्में दिये और २५० रोगियों के मोतियाबिन्दु के आपरेशन भी किये। स्वामीजी ने आश्रम की ओर से रोगियों के खान-पान की व्यवस्था की। शिबिर के समापन पर पूज्य स्वामीजी ने डॉ. मोदी एवं उनके साथी डॉक्टरों को साधुवाद देते हुए आशीर्वाद रूप में दुशाले भेट किये।

२४ अक्टूबर स्वामीजी पूना गये। वहां स्वामीजी ने स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज की पुण्य तिथि के अवसर पर पूज्य स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज की महिमा गाते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। २८ अक्टूबर दीपावली के दिन प्रेमी स्वामीजी को बम्बई में अपनी दुकानों पर ले गये।

चन्द्र दर्शन के दिन स्वामीजी ने कार्तिक कथा का प्रारंभ किया। कार्तिक माह के पंद्रह दिन प्रात: काल स्वामीजी ने कार्तिक की कथा एवं श्री गुरु ग्रंथसाहब की वाणी की व्याख्या की। गोपाष्टमी के दिन प्रात: सत्संग के पश्चात् जुलूस में गौ माताओं के साथ हज़ारों प्रेमी, कई संत, पूज्य स्वामीजी और उनके साथ पूज्य पाद स्वामी प्रभुपादजी महाराज शोभायामान हो रहे थे, राम नाम की धुनि से सारा नगर गूंज

उठा । सायंकाल को राधेश्याम गऊशाला में स्वामीजी ने 'गाय से लाभ' विषय पर ज्ञान गर्भित व्याख्यान किया ।

८ दिसम्बर संत प्रभारामजी की पुण्यतिथि उत्सव के अवसर पर स्वामीजी अहमदाबाद गये । श्री नेणूमल एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत सत्कार किया । वहां तीन दिन स्वामीजी ने अमृत वर्खा करते हुए संत प्रभाराम के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाये ।

१० जनवरी १९५९ सिन्धुनगर आश्रम में विद्यार्थी सम्मेलन का आयोजन किया गया । पूज्य स्वामीजी ने सम्मेलन का उद्‌घाटन करते हुए कहा कि विद्या मनुष्य का तीसरा नेत्र है । विद्या द्वारा ही विकास सम्भव है । विद्या मनुष्य को देवता बनाती है । ज्ञान के बिना मनुष्य अंधेरे में भटकता है । आज कल विद्यार्थी नाट्य आडम्बर में उलझे हैं । उन्हें अपना सारा ध्यान विद्या अध्ययन में ही केन्द्रित करना चाहिये। विद्या के साथ विनम्रता आवश्यक है परन्तु आज की नई पीढ़ी में नम्रता की कमी है ।

विद्या ददाति विनयं

सच्ची विद्या विनम्रता सिखाती है । वृक्ष की जिस टहनी में फल होते हैं वह अन्य फल रहित टहनियों से नीचे की ओर झुकी होती है । आप लोग जितना अधिक अभ्यास करें, बड़े विद्वान बनें उसके साथ-साथ विनम्र एवं क्षमाशील भी बनें। पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण न करें । भारतीय संस्कृति एवं धार्मिक शास्त्रों का अभ्यास करें । सादगी, सेवा, सत्य, सहानुभूति, सहयोग, स्नेह एवं दया आदि शुभ गुण ग्रहण करें । माता पिता एवं गुरुजनों की आज्ञानुसार चलकर उनका आशीर्वाद प्राप्त करें तो सफलता आपके चरण चूमेगी ।

१६ फरवरी शिवरात्रि के दिन सायंकाल सत्संग में स्वामीजी ने भूत भावन भगवान शंकर की महिमा का वर्णन किया । १८ मार्च स्वामीजी आगरा गये । वहां उन्होंने चार दिन सत्संग वर्खा की । २४ मार्च स्वामीजी जयपुर अमरापुर स्थान पर पधारे ।

प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव १ अप्रैल से ५ अप्रैल अमरापुर स्थान पर आयोजित किया गया। स्वामीजी इस उत्सव के उपलक्ष्य में जयपुर में आये। स्वामीजी सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की मूर्ति को प्रणाम कर सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के पास आकर उन्हें प्रणाम कर, मंडल के अन्य संतो से भेंट की। ३ अप्रैल प्रातः स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए, कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने कई प्रेमियों को आज्ञान की नींद से जाग्रत कर निज स्वरूप का ज्ञान दिया। सत्गुरु महाराजजी अपनी वाणी में जीव को जाग्रत करते हुए कहते हैं-

सोए अविद्या नींद में, कह टेऊँ बहु काल।
अब तो गफलत छोड़के, सुमरो दीन दयाल ॥

जीव अविद्या, अज्ञान नींद के कारण स्वयं को भूल गया है। वह स्वयं साक्षी चेतन है। एक धनवान को किसी मित्र ने भांग पिलाई। भांग पीने से उसे इतना नशा चढ़ गया कि वह स्वयं को भूल गया। वह अपने वस्त्रों को भी फाड़ने लगा। धनवान होते हुए भी वह स्वयं को भिक्षुक समझने लगा। जब धीरे धीरे भांग का नशा उतरा तो वह धनवान पूछने लगा कि उसके वस्त्र किसने फाड़े हैं? तब परिवार के सदस्यों ने कहा कि तुम ने भांग के नशे में अपने वस्त्र भी फाड़ दिये। धनवान होते हुए भी स्वयं की भिक्षुक कह रहे थे।

प्रेमियो ! उस धनवान की भांति कई लोगों को अविद्या का नशा है। जब कोई परिपूर्ण गुरु ज्ञान रूपी घी पिलायेगा तब अविद्या का नशा टूट जायेगा और जीव साक्षी स्वरूप का दर्शन कर आत्मिक आनंद में स्थित होगा। इसलिए आप भी किसी न किसी संत महात्मा की शरण लें जो आपके अज्ञान रूपी ताले को ज्ञान रूपी चाबी से खोलें, तब आपको आत्मिक आनंद का अनुभव होगा।

१२ अप्रैल स्वामीजी सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से आशीर्वाद लेकर दिल्ली में आये। वहां प्रेम प्रकाश मंदिर में स्वामीजी ने पांच दिन प्रवचन किया। १८ अप्रैल स्वामीजी हरिद्वार गये। स्वामीजी कुछ

संतों एवं प्रेमियों के साथ बद्रीनाथ यात्रा पर भी गये । स्वामीजी ने हरिद्वार में संतों का भंडारा भी किया । वहां गंगा मैया के पवित्र तट पर संतों एवं महात्माओं से ज्ञान गोष्ठियां करते एक माह व्यतीत किया। तत्पश्चात २२ मई स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये ।

२-३ जून आश्रम में सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की पुण्य तिथि मनाई गई । इस अवसर पर कवि पहिलाजराम, संत ऊद्धवदास, संत गोपाराम एवं अन्य संतों ने भक्ति संगीत की वर्खा की । ४ जून प्रातः पूज्य स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज प्रति दिन एकांत में बैठकर नाम स्मरण करते थे । आप भी नित्य नियम से नाम स्मरण करें, प्रेम से प्रभु की प्रार्थना करें, तो प्रभु आपकी प्रार्थना अवश्य सुनेंगे ।

प्रार्थना कर प्रेम से, कह टेऊँ बन दास ।
शुद्ध हृदय की सुनत हरि, राखो मन विश्वास ।।

वर्षा ऋतु के चार माह पूज्य स्वामीजी आश्रम में ही नित्य नियम सत्संग प्रवचन करते रहे । १२ अगस्त जन्माष्टमी के दिन स्वामीजी ने नन्द नंदन भगवान श्याम सुन्दर की लीलाओं का वर्णन करते हुए उनकी महिमा का भजन गाया । १८ सितम्बर सांई संत हरिचूराम साहब की पुण्य तिथि उत्सव के अवसर पर स्वामीजी ने उनके स्थान पर प्रवचन करते हुए संत हरिचूराम साहब के जीवन प्रसंग सुनाये । ३० अक्टूबर रात्रि को संत वसणशाहजी की पुण्य तिथि के उत्सव उपलक्ष्य में स्वामीजी ने संत वसणशाहजी की महिमा सुनाते हुए कहा कि वे विकलांगों एवं नेत्रहीनों की बहुत सेवा करते थे । वे स्वयं संडास साफ करते थे । वे सादगी एवं विनम्रता की मूर्ति थे । नाम स्मरण के साथ साथ दीन दुखियों की सेवा भी करते थे । प्रेमियो! आप भी घर गृहस्थ में रहकर भगवद् भजन करें तथा साथ ही साथ प्रतिदिन कोई न कोई परोपकार का कार्य भी करें ।

दीपावली के दिन कुछ प्रेमी स्वामीजी को बम्बई ले गये । चन्द्र दर्शन के दिन प्रातः स्वामीजी ने कार्तिक कथा प्रारम्भ की । कार्तिक के पंद्रह दिन प्रातः काल स्वामीजी कार्तिक कथा के साथ साथ ज्ञान गर्भित प्रवचन भी करते रहे । श्री माधवदास बोदाराम खेमाणी श्री गुरुग्रन्थ

साहब की वाणी पढ़ते थे एवं स्वामीजी उसकी व्याख्या करते थे। गोपाष्टमी के दिन सबेरे स्वामीजी संतो एवं प्रेमियों के साथ गऊ माताओं के जुलूस में राधेश्याम की धुनी लगाते चले। सायंकाल श्री राधेश्याम गऊशाला में स्वामीजी, संत तिलोकदासजी एवं सांई जीवण घोट ने गाय माता की महिमा का वर्णन किया। कार्तिक पूर्णमासी के दिन प्रातः स्वामीजी ने कार्तिक कथा का समापन किया। सायंकाल सत्संग में स्वामीजी ने श्री गुरु नानकदेवजी के जीवन की प्रेरणादायक घटनाएँ सुनाईं।

१० जनवरी १९६० को पूज्य स्वामीजी की प्रेरणा से स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर-५ में सिन्धी अध्यापक सम्मेलन का आयोजन किया गया । स्वामीजी ने इस सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा कि माता पिता, बालक को जन्म देकर आकाश से पृथ्वी पर लाते हैं तो गुरु-जन उसे अवनि से अम्बर पहुंचाते हैं । गुरु विद्यार्थियों में उत्तम संस्कार के बीज बोता है । अध्यापकों पर जाति व देश की बड़ी ज़िम्मेदारी है। आचार्य देवो भव, गुरुजनों! आज आश्रम की ओर से आप सब का हार्दिक स्वागत करते हैं आप विद्यार्थियों को अपनी संतान समझकर उनके शारीरिक, मानसिक, नैतिक एवं शैक्षणिक विकास की ओर पूरा पूरा ध्यान दें ।

इस सम्मेलन में प्रो. बी. एच. नागराणी, प्रो. चूहड़मल नारवाणी श्री कीरतराय आहूजा, प्रो. मोहनलाल नारवाणी, प्राचार्य परसराम लालवाणी एवं अन्य अध्यापकों ने विचार व्यक्त किये । दयाल 'आशा' ने सभी का आभार व्यक्त किया। इस सम्मेलन में लगभग ४०० अध्यापकों ने भाग लिया ।

१६ फरवरी शिवरात्रि के दिन स्वामीजी ने भगवान शिव शंकर की महिमा गाते हुए उनके प्रसंग सुनाये । प्रेमियों के अनुरोध पर होली का उत्सव स्वामीजी ने कुर्ला, बम्बई में मनाया ।

प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव ९ अप्रैल से १३ अप्रैल अमरापुर स्थान जयपुर में आयोजित किया गया । इस उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामीजी ४ अप्रैल को जयपुर पहुंचे। पहले उन्होंने सतगुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की प्रतिमा को प्रणाम किया, तत्पश्चात् वे सतगुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज से मिले उनके चरणों में प्रसाद व भेंट अर्पित की । १२ अप्रैल

स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने कई प्रेमियों को आत्मज्ञान की दीक्षा देकर उनका मार्गदर्शन किया। सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज भी उनकी प्रतिमूर्ति हैं। आप उन से ज्ञान प्राप्त कर अपने स्वरूप को पहचानें । सत्गुरु महाराजजी अपनी वाणी में कहते हैं-

साक्षी चेतन ब्रह्म का, सब घट में है वास ।
कह टेऊँ शशि सूर्य में, तांका है प्रकाश ।।
साक्षी चेतन रम रहा, जल थल पुन आकाश ।
कह टेऊँ तिहं जान के पाओ सुख अविनाश ।।

अतंर, बाहर, सर्वत्र प्रत्येक प्राणी में ब्रह्म व्यापक है । उसका दिव्य दर्शन कर आनंद प्राप्त करें । प्रेमियो! अपने मन का दर्पण स्वच्छ रखें तो आपको आत्म-स्वरूप का भास होगा । आत्म साक्षात्कार के लिए पहले मल को मिटाना है । यदि दर्पण पर मिट्टी लगी होगी तो अपना रूप अच्छी तरह नहीं देख सकोगे । हमारे मन पर भी बुरे कर्मों, बुरे संस्कारों की मिट्टी चढ़ी हुई है, जब इसको साफ करेंगे तो दिव्य दर्शन होगा । निष्काम सत्कर्म करने से मन रूपी दर्पण पर लगी हुई मिट्टी उड़ जायेगी, दर्पण साफ हो जायेगा. मन निर्मल हो जायेगा, फिर सत् चित् आनंद स्वरूप का साक्षात्कार होगा ।

आत्म साक्षात्कार के लिये चित्त की चंचलता भी दूर करनी चाहिए। काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार के कारण मन में विक्षेप होता है। जब तक विक्षेप दूर नहीं हुआ है, अर्थात मन स्थिर नहीं हुआ है, तब तक आनंद की उपलब्धि नहीं होगी । हम आनंद स्वरूप हैं किन्तु मन के मल, विक्षेप के कारण हम आनंद का अनुभव नहीं कर पा रहे हैं । यदि तालाब या किसी पात्र में पानी स्थिर है तो उस में हम अपना रूप देख सकते हैं । किन्तु अस्थिर पानी में अपना रूप नहीं देख सकते अर्थात् अस्थिर मन से साक्षात्कार सम्भव नहीं। चंचलता मन का स्वभाव है, उसे दूर करने से ही निज-रूप का ज्ञान होगा।

प्रेमियो! दिल का दर्पण जितना स्वच्छ होगा उतना ही हम स्वयं को प्रभु के समीप पाएंगे । मन की मलिनता व चंचलता को दूर करने

के लिए भी परिपूर्ण गुरु की आवश्यकता है ।

२० अप्रैल स्वामीजी सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से आशीर्वाद लेकर अजमेर में स्वामी बसंतरामजी महाराज के स्थान पर आये । वहां से वे तीर्थराज पुष्कर गये । स्वामीजी ने आश्रम में चार दिन अमृत वर्खा की । ३० अप्रैल स्वामीजी ने अहमदाबाद के लिए प्रस्थान किया । वहां स्वामीजी ने स्वामी ऊद्धवदासजी के स्थान अम्बावाड़ी में एक सप्ताह प्रेमियों को नाम का अमृत पिलाया । ९ मई स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये ।

३०-३१ मई स्वामीजी ने आश्रम में सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की पुण्य तिथि मनाई । संत गोपारामजी, संत भाई खानूरामजी संत भजनदासजी एवं अन्य संतों ने स्वामी टेऊँरामजी महाराज के गुणों का वर्णन किया । १ जून प्रातः उत्सव का समापन करते हुए स्वामीजी ने कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज कहते हैं-

तन मन धन व प्रान से, करना पर उपकार ।
ऐसा पुण्य न और को, टेऊँ इस संसार ।।

प्रेमियो ! तन, मन, धन, वचन और प्राणों से परोपकार के कार्य करें उस जैसा कोई पुण्य नहीं । पशु पक्षी भी दूसरों की भलाई करते हैं। मानव जीवन पाकर भी यदि हम परोपकार के कार्य नहीं करेंगे तो जीवन व्यर्थ है ।

परोपकाराय इदं शरीरं

मानव जीवन की सार्थकता है, स्मरण और सेवा में । आप भी इस पथ पर चल कर मानुष तन सफल करें ।

८ अगस्त स्वामीजी प्रेमियो सहित ब्रज भूमि में पधारे । सावन माह के कारण ब्रज में यत्र तत्र भगवान श्रीकृष्ण की रास लीलाओं का उन्होंने आनन्द लिया । उन्होंने बांके बिहारी, श्री गोपाल कृष्ण मंदिर एवं अन्य मंदिरों में जाकर श्याम सुन्दर की पूजा अर्चना की । स्वामीजी प्रेमियो के साथ बरसाना, गोकुल व मथुरा भी गये । २२ अगस्त स्वामीजी आगरा में पधारे । वहां स्वामीजी ने स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर में एक सप्ताह सत्संग प्रवचन किया । ३० अगस्त स्वामीजी ग्वालियर

गये । वहां उन्होंने पांच दिन अमृत वर्षा की । ७ सितम्बर स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये । १६ सितम्बर रात्रि को स्वामीजी ने संत हरिचूराम साहब के पुण्य तिथि उत्सव के अवसर पर उनके स्थान पर प्रवचन करते हुए संत हरिचूराम साहब के गुणों का वर्णन किया ।

२ अक्टूबर महात्मा गांधी की जयन्ती प्रेम प्रकाश आश्रम पर पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में मनाई गई । स्वामीजी ने बापूजी को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि महात्मा गांधी ने देश की आजादी के लिए अपना सर्वस्व अर्पण किया । उनका त्यागमय जीवन हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है । वे पूरे वस्त्र भी नहीं पहनते थे । उन्होंने अहिंसा के शस्त्र से देश को स्वतंत्रता दिलाई ।

१० अक्टूबर सिन्धुनगर-५ में श्री परसराम मसंद ने विजयदशमी उत्सव का आयोजन किया । इसी अवसर पर स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि रावण महापंडित, तपस्वी व अत्यंत शक्तिशाली था परन्तु सीता का हरण करने के कारण प्रति वर्ष उसका पुतला जलाया जाता है । रावण, प्रभु राम से विमुख हुआ तो उसकी क्या दुर्गति हुई! हम भी भगवान श्रीराम से विमुख न होकर, अहंकार का त्याग कर भगवान के श्री चरण कमलों से प्रीति करें । श्री परसराम एवं उनके साथियों को इस आयोजन के लिए धन्यवाद ।

स्वामी ग्वालानंदजी महाराज के पुण्य तिथि उत्सव के सम्बंध में पूज्य स्वामीजी २५ अक्टूबर को पूना गये । वहां सायंकाल सत्संग में स्वामीजी ने स्वामी ग्वालानंदजी महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी महिमा गाई । स्वामी रामकृष्णजी ने स्वामीजी का आभार व्यक्त किया। २७ अक्टूबर स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये। प्रेमियों के अनुरोध पर स्वामीजी २९ अक्टूबर दीपावली के दिन बम्बई गये। चन्द्र दर्शन के दिन प्रात: स्वामीजी ने कार्तिक कथा प्रारंभ की। कार्तिक माह के पंद्रह दिन स्वामीजी प्रात:काल अमृत वर्षा करते रहे। ७ नवम्बर गोपाष्टमी के दिन श्री राधेश्याम गऊशाला में स्वामीजी की अध्यक्षता में गोपाष्टमी उत्सव मनाया गया । स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि गौ धन देश का अमूल्य धन है, उसकी सुरक्षा करना

हमारा परम कर्त्तव्य है । १३ नवम्बर कार्तिक पूर्णमासी के दिन सबेरे स्वामीजी ने कार्तिक कथा का समापन किया और सांयकाल सत्संग में श्री गुरुनानक देवजी महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला ।

२२ नवम्बर पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज एवं मंडल के अन्य संत आश्रम में पधारे । पूज्य स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी सर्वानंद महाराज एवं संतो का हार्दिक स्वागत किया । सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने १२ दिन तक अमृत वर्खा कर प्रेमियों को आनन्दित किया। स्वामीजी ने ३ दिसम्बर पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज एवं मंडल के अन्य संतों का आभार मानते हुए कहा कि गत १२ दिनों से यह आश्रम स्वर्ग तुल्य बना हुआ है । सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज एवं अन्य संतो ने अपने प्रवचनों द्वारा तप्त हृदयों को शीतलता प्रदान की है । उनका दर्शन ही आनंदमय है । सत्गुरु महाराज तो स्वयं इस आश्रम के मालिक हैं। दास पर उनकी असीम कृपा है । मुझ से सेवा करने में कोई त्रुटि हो गई हो तो क्षमा करें ।

प्रेमियो के नेह निमंत्रण पर स्वामीजी ५ जनवरी १९६१ जबलपुर में पधारे । वहां स्वामीजी ने चार दिन प्रवचन किया । एक दिन उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि आप लोगों में से कुछ लोग प्रभु से सांसारिक पदार्थ मांगते हैं, तो कुछ लोग संतान के लिए प्रार्थना करते हैं, परन्तु परमात्मा से आतम ज्ञान प्राप्ति के लिए विनय करनी चाहिए । प्रभु के दर्शन की अभिलाषा मन में होनी चाहिए । जिसे प्रभु का दर्शन होता है वह बड़ा भाग्यवान है । सच्चा प्रेमी माया के प्रपंच में नहीं फंसता । नचकेता अपने पिताजी की आज्ञानुसार यम लोक में गया। यमराज ने उस पर प्रसन्न होकर पूछा "तुम्हें क्या चाहिए?" नचकेता ने यमराज से आध्यात्मिक विषय सम्बन्धी कुछ प्रश्न पूछे । यमराज ने कहा इस प्रकार के प्रश्न पूछने से तुम्हें क्या लाभ हुआ? तुम मुझसे कोई वरदान मांगो । नचकेता सच्चा जिज्ञासू था उसने आत्मज्ञान के अतिरिक्त और कुछ नहीं मांगा । यमराज ने नचकेता को कई प्रलोभन दिये किन्तु वह अडिग रहा ।

प्रेमियो! आप भी किसी परिपूर्ण गुरु की शरण लें जो आपको आत्मज्ञान

की दीक्षा देकर आपका जीवन सफल बनायें । आत्म ज्ञान द्वारा ही आत्म साक्षात्कार सम्भव है । सतगुरु महाराज अपनी वाणी में कहते हैं-

अंदर बाहर आत्मा, सतगुर दिआ दिखाय ।
कह टेऊँ मैं देख के, दीना दुख मिटाय ॥

९ जनवरी १९६१ स्वामीजी कटनी पधारे । वहां कटनी कैम्प में उन्होंने तीन दिन अमृत वर्खा की १२ जनवरी स्वामीजी प्रयाग आये। उन्होंने प्रेमियों के साथ त्रिवेणी संगम स्नान किया, उन्होंने १९ जनवरी तक वहां विभिन्न स्थानों पर प्रवचन किये । २० जनवरी स्वामीजी काशी में पधारे । वहां भी स्वामीजी ने आठ दिन सत्संग प्रवचन किया । उन्होंने श्री विश्वनाथ मंदिर एवं तुलसी मानस मंदिर का भी दर्शन किया। ३० जनवरी स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये ।

प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव चैत्र मास का मेला ३० मार्च से अमरापुर स्थान जयपुर में आयोजित किया गया । उसी उत्सव के उपलक्ष में स्वामीजी २५ मार्च जयपुर पधारे । स्वामीजी, सतगुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की मूर्ति को प्रणाम कर सतगुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से मिले, उन्हें प्रणाम कर प्रसाद आदि भेंट किया ।

१ अप्रैल सायंकाल पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज हम जयपुर में नहीं अपितु हरिद्वार में बैठे हैं । यह अमरापुर स्थान हमारे लिए तीर्थराज है । सतगुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज पूज्य सतगुरु स्वामी टेऊँराम महाराज की साक्षात मूर्ति हैं । उनके श्री चरणों में बैठकर आध्यात्मिक आनंद प्राप्त करें । सतगुरु महाराज, गुरुदेव की महिमा गाते हुए कहते हैं-

कह टेऊँ गुरुदेव है, तीर्थराज प्रयाग ।
गंगा यमुना चरन युग, सरस्वती जान प्राग ॥

हम सब का सौभाग्य है कि हमें सतगुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज, सतगुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज, स्वामी गुरुमुखदासजी महाराज एवं अन्य संतो का संग प्राप्त हुआ है । प्रेमियो! आप भी सतगुरु महाराज के सिद्धांतों एवं शिक्षाओं पर चलकर जीवन सफल करें ।

सोवत सोवत खोय दी, टेऊँ मानुष देह ।
हाथ मले बिन हाथ में, आवत हाथ न एह ।।

अज्ञान अविद्या की नींद में सोते सोते जीवन बीत गया, फिर मानुष तन मिलना सम्भव नहीं । अब पछताये होत क्या जब चिड़ियां चुग गईं खेत । इसलिए गुरु महाराज कहते हैं-

राम भजन कर ध्यान धर, पाओ सुख सुहाग ।।
टेऊँ तांते रैन दिन, नींद तजे तुम जाग ।

भगवद् भजन कर आत्मिक आनंद में स्थित रहें । सांसारिक व्यवहार करते हुए चित्त की वृत्ति-प्रभु से जोड़ें तो आपका कल्याण होगा ।

१० अप्रैल स्वामीजी सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त कर अमृतसर गये । स्वामीजी वहां एक सप्ताह तक प्रेमियो के पास सत्संग प्रवचन करते रहे । २० अप्रैल स्वामीजी हरिद्वार आये। वहां स्वामीजी गंगा मैया के पवित्र तट पर दस दिन तक आनंद पूर्वक रहे । उन्होंने संतो, महात्माओं से ज्ञान गोष्ठी की और संतो का भंडारा भी किया । २ मई स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम में लौट आये।

२७-२८ मई सिन्धुनगर प्रेम प्रकाश आश्रम में सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की पुण्य तिथि मनाई गई । संत गोपाराम साहब, संगीताचार्य मास्टर चन्द्र एवं अन्य गुणीजनों ने भक्ति संगीत की वर्खा की । २९ मई प्रातः पूज्य स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने हज़ारों प्रेमियोंको ''श्री सत्नाम साक्षी'' मंत्र देकर संसार सागर से पार लगाया । प्रेमियो! आप भी नाम की नौका में चढ़कर पार हो जाएं । गुरु महाराज अपनी वाणी में कहते हैं-

जैसे नौका काठ की, करत सिन्धु से पार ।
कह टेऊँ ज्ञानी गुरु, त्यों तारत संसार ।।

जैसे लकड़ी की नाव नदी से पार लगाती है, उसी तरह परिपूर्ण गुरु जीव को नाम रूपी नाव में चढ़ाकर भव सागर से पार लगाते हैं । प्रेमियो! श्रद्धा व प्रेम से गुरुदेव की स्तुति करें, तो आपको चारोंपदार्थ मिल जायेंगे।

गुरू को कर तुम वंदना, श्रद्धा मन में धार।
कह टेऊँ इस जगत में, पाय पदार्थ चार॥

पूज्य स्वामीजी वर्षा ऋतु के चारों मास आश्रम में ही नियमित रूप से सत्संग प्रवचन करते रहे। १७ अगस्त श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन स्वामीजी ने भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन किया। २२ अगस्त कुर्ला, बम्बई में प्रेमियों ने भगवान श्रीकृष्ण की छठी मनाई स्वामीजी ने उस उत्सव में बाल गोपाल की अद्वितीय लीलाओं का वर्णन किया। २४ अगस्त स्वामीजी ने चैम्बूर में सत्संग प्रवचन किया। २५ अगस्त वे आश्रम लौट आये। १६ सितम्बर संत हरिचूरामजी साहब की पुण्य तिथि उनके स्थान उल्हासनगर-५ में मनाई गई। रात्रि को स्वामीजी ने वहां संत हरिचूराम साहब की आलौकिक शक्ति का वर्णन करते हुए उनकी महिमा गाई। १ अक्टूबर स्वामीजी नागपुर गये, वहां स्वामीजी ने ६ अक्टूबर तक सत्संग प्रवचन किया। तत्पश्चात् वे कामटी गये। श्री ढोलणदास एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत सत्कार किया। वहां स्वामीजी ने एक सप्ताह अमृत वर्खा कर प्रेमियों को आनन्दित किया। १५ अक्टूबर स्वामीजी उल्हासनगर आश्रम पर लौट आये। २२ अक्टूबर स्वामीजी, स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज की पुण्य तिथि उत्सव पर पूना गये। वहां स्वामीजी ने स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज के गुणों का वर्णन किया। १५ अक्टूबर को दीपावली के दिन प्रेमी स्वामीजी को बम्बई ले गये।

२७ अक्टूबर स्वामीजी ने आश्रम में कार्तिक कथा प्रारम्भ की। कार्तिक मास के १५ दिन प्रात:काल स्वामीजी कार्तिक कथा के साथ साथ श्री गुरुग्रन्थ साहब के किसी न किसी शब्द की व्याख्या करते थे। ४ नवम्बर गोपाष्टमी के दिन श्री राधेश्याम गौशाला में स्वामीजी ने गौ माता की महत्ता प्रतिपादित करते हुए गौ माता की सेवा के लिए प्रेरित किया।

८ नवम्बर कार्तिक एकादशी के दिन प्रात:काल स्वामीजी ने कार्तिक एकादशी के महत्व पर ज्ञान ग्रभित प्रवचन दिया। तत्पश्चात् स्वामीजी के साथ हजारों प्रेमी राम नाम की धूम मचाते शमशान भूमि में आये। स्वामीजी के साथ सांई जीवण घोट, स्वामी तिलोकदास महाराज एवं

अन्य संत भी थे, श्री परसराम मसंद ने स्वामीजी व संतो का स्वागत सत्कार किया। स्वामीजी ने व्याख्या करते हुए कहा कि आज के पावन दिन शमशान भूमि या अस्पताल में जाना चाहिए। वहां जाने से वैराग्य वृत्ति पैदा होगी। वैराग्य होने से चित्त की वृति प्रभु की ओर लगेगी। आज की रात का भी बड़ा महत्व है। सारी रात प्रभु का नाम जपते रहें तथा योग्य दान भी करें।

११ नवम्बर श्री गुरुनानक देव महाराज के जन्मदिन के उपलक्ष्य में आश्रम में प्रातः स्वामीजी ने कार्तिक कथा, श्रीमद् भगवद गीता, श्री गुरुग्रन्थ साहब एवं श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठों का समापन करते हुए श्री गुरुनानक देव के जीवन पर प्रकाश डाला। स्वामीजी ने प्रेमियो के साथ गौशाला एवं आश्रम की परिक्रमा की। तत्पश्चात् स्वामीजी स्वामी सेवादास के मंदिर में गये। वहां भी स्वामीजी ने प्रवचन किया। उसी दिन रात को श्री गुरुनानक भंडार, सिन्धुनगर-२ में स्वामीजी के कर कमलों द्वारा गरीब बहनों को कम्बल बांटे गये। स्वामीजी ने संस्था के आयोजक श्री पहलोमल कुकरेजा को सेवा कार्य के लिए साधुवाद दिया।

२५ नवम्बर पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज मण्डली सहित सिन्धुनगर आश्रम पर पधारे। स्वामीजी ने उनके आगमन के उपलक्ष्य मे भजन गाते हुए कहा कि हम भाग्यशाली हैं कि आज यहां सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज पधारे हैं। उनके पधारने से आनन्द की घटाएं छा गई हैं, मुरझाये चेहरे खिल उठे हैं। दास पर भी उनकी असीम कृपा है।

सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने १५ दिन प्रवचन कर प्रेमियों को अमृत पान कराया। १० दिसम्बर सायंकाल सत्संग में पूज्य स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का आभार मानते हुए एक हृदय स्पर्शी विरही भजन गाया। वह भजन सुनते सुनते प्रेमियों की आंखों से प्रेमाश्रु टपक पड़े।

२१ जनवरी १९६२ वीर हेमू कालाणी का शहीद दिवस बम्बई में मनाया गया। उसी उत्सव में स्वामीजी ने शहीद हेमू कालाणी को भाव भीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। २६ जनवरी स्वामीजी ने आश्रम

में गणतंत्र दिवस के महत्व पर भाषण करते हुए कहा कि हमें राष्ट्रीय एकता के सूत्र में बंधकर देश की स्वतंत्रता की सुरक्षा करनी चाहिए। ३० जनवरी स्वामीजी ने महात्मा गांधी की पुण्य तिथि सम्बन्ध में महात्मा गांधी के त्यागमय जीवन का वर्णन किया । १८ फरवरी शिवरात्रि के दिन स्वामीजी ने भगवान शंकर भोलानाथ की लीलाओं का वर्णन करते हुए कहा कि आज सारी रात जागकर 'ॐनमः शिवाय' का जाप करने से आपका कल्याण होगा ।

१३ अप्रैल १९६२ से हरिद्वार में कुम्भ मेला था, इसलिए प्रेम प्रकाश मण्डल का वार्षिक उत्सव भी वहीं पर ही आयोजित किया गया । पूज्य स्वामीजी २ अप्रैल को हरिद्वार पधारे । स्वामीजी सर्वप्रथम सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के पास आये, उनके चरणों में प्रसाद भेंट कर प्रणाम किया । १८ अप्रैल स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव आरंभ किया । एक तो हरिद्वार का पावन तीर्थ स्थान, दूसरा कुम्भ का मेला, तीसरा प्रेम प्रकाश मण्डल का वार्षिक उत्सव, इस त्रिवेणी के कारण कई प्रेमी उत्सव में सम्मिलित हुए । पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज, स्वामी गुरुमुखदासजी महाराज, स्वामी बसंतराम, स्वामी माधवदास, स्वामी चन्दन प्रकाश, स्वामी मुरलीधर, संत हरिदासराम, सत भजनदास एवं पूज्य स्वामीजी सहित अन्य संतो ने प्रातः एवं सायंकाल को अमृत वर्खा की ।

२० अप्रैल पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने जिज्ञासुओं के कल्याणार्थ ही इस वार्षिक उत्सव का आयोजन किया । ऐसे उत्सवों में संत महात्मा आकर ज्ञान गंगा प्रवाहित करते हैं, जिसमें आप सरोबार होकर मानुष तन सफल कर सकते हैं ।

संत समागम सम नहीं, साधन को जग मांहि ।
कह टेऊँ बिन हरि कृपा, सत्संग मिलता नांहिं ।।

प्रेमियो! इस तीर्थ स्थल पर सतगुरु महाराजजी की छत्र छाया में आप यहां कई संतो के दर्शन एवं वचनामृत का लाभ प्राप्त कर रहे हैं, यह भी प्रभु की असीम कृपा ही है । वास्तव में आप भाग्यशाली हैं । संत तुलसीदास जी भी कहते हैं-

बिन सत्संग विवेक न होई।

राम कृपा बिन सुलभ न सोई ॥

पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने कई परोपकार के कार्य किये। उनके धर्मपीठ के अधिकारी सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज भी कई लोक कल्याण के कार्य कर रहे हैं। आप भी मानुष जीवन, नाम स्मरण एवं परोपकार के कार्यों में सफल करें। सत्गुरु महाराज अपनी वाणी में कहते हैं-

मानुष तन को पाय जिहं, किया न पर उपकार।

टेऊँ वृथा जन्म तिंह, कहते संत पुकार ॥

स्वामीजी ने संतो एवं प्रेमियों के साथ गंगा मैया में स्नान किया। कुम्भ मेला में पधारे संतो महात्माओं के साथ स्वामीजी ने ज्ञान गोष्ठी की। १० जून तक स्वामीजी हरिद्वार में रहे। स्वामीजी वहां से दिल्ली आये। वहां उन्होंने चार-पांच दिन अमृत वर्खा की। वे १७ जून सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये। वर्षा ऋतु के चार महीने स्वामीजी वहां ही नित नियम अमृत वर्खा करते रहे।

चीन ने अचानक हमारे देश पर आक्रमण किया। भारतीय गगन पर युद्ध की घनघोर घटाएं छा गईं। भारतीय जवानों ने सीमा पर दुश्मन का सामना किया, किन्तु अचानक आक्रमण होने के कारण हमारे कई फौजी जवान राष्ट्र की रक्षा के लिए शहीद हो गये। भारत सरकार ने युद्ध के स्वंय खर्च पूर्ती के लिए तथा शहीदों के परिवारजनों की सहायतार्थ "राष्ट्रीय रक्षा कोष" की स्थापना की। इस कोष में कई माताओं ने अपने आभूषण तक दान में दिये। पूज्य स्वामीजी के मन में पूर्व से ही देश भक्ति की भावना विद्यमान थी उन्होंने भी राष्ट्रीय रक्षा कोष में दान देने के लिए समाज का आव्हान किया। उन्होंने स्वयं दस हजार रुपये दान दिये। स्वामीजी ने दीदी जेठी सिपाहीमलाणी के द्वारा शहीदों के परिवारों को सिलाई मशीनें भेजीं। युद्ध में अपंग हुए सिपाहियों को बम्बई मिलिट्री अस्पताल, कोलाबा में भेजा गया था। स्वामीजी स्वयं उस अस्पताल में गये। वहां अपंग एवं ज़ख्मी सिपाहियों को स्नेह देते हुए उनका उत्साह बढ़ाया। उन्हें प्रसाद रूप में फल इत्यादि दिये। उस समय मैं भी स्वामीजी के साथ

था। चीन के आक्रमण के समय एक सिन्धी युवा इन्जीनियर श्री साहब सिंह छुगाणी भी दुश्मनों की गोलियों का शिकार हुआ था, स्वामीजी ने आश्रम में उस शहीद को भी श्रद्धांजलि अर्पित की।

कार्तिक महीने में स्वामीजी ने कार्तिक कथा प्रारंभ की। गोपाष्टमी के दिन स्वामीजी ने श्री राधेश्याम गौशाला में गौ माता की महिमा गाते हुए कहा कि जो भी अपना कल्याण चाहता है, उसे गौ माता की सेवा करनी चाहिए। गौ सेवा द्वारा धन सम्पति में वृद्धि होती है। स्वास्थ्य ठीक रहता है और आध्यात्मिक उन्नति भी होती है। प्रेमियो! श्रद्दा से गौ माता की सेवा करें। कार्तिक एकादशी के दिन स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि दान का बड़ा महत्व है। जरूरतमंदों की समय पर सेवा करें, किसी प्यासे की प्यास बुझायें, किसी भूखे को खिलाएं एवं किसी वस्त्रहीन को वस्त्र दान करें, आप दूसरों का भला करेंगे, भगवान आपका भला करेगा। द्रौपदी यमुना नदी में नहाने गई उसी समय ऋषि दुर्वासा यमुना नदी में नहा रहे थे। वह अधिक समय तक नदी के बीच खड़े रहे। तब द्रौपदी ने उनसे निवेदन किया कि आप नदी से बाहर आ जायें तो वह नदी में प्रवेश करे। ऋषि दुर्वासा ने कहा ''बेटी! यमुना में डुबकी लगाते समय मेरी लंगोटी पानी के प्रवाह में बह गई है इसलिए मैं अब नदी के बाहर कैसे निकलूं? यह सुनकर द्रोपीद ने अपनी साड़ी से टुकड़ा फाड़कर ऋषि की ओर फेंका किन्तु साड़ी का वह टुकड़ा तेज वायु के कारण ऋषि तक नहीं पहुंचा, द्रौपदी ने साड़ी से दूसरा टुकड़ा फाड़कर ऋषि की ओर फेंका, वह भी हवा में उड़ गया। इस तरह छः बार साड़ी के टुकड़े हवा में उड़ गये। सातवीं बार भगवान का नाम लेकर द्रौपदी ने साड़ी से टुकड़ा फाड़कर ऋषि की ओर फेंका तो वह टुकड़ा उन तक पहुंच गया। ऋषि दुर्वासा उसी टुकड़े को लंगोटी की तरह प्रयोग कर यमुना नदी से बाहर आये। उन्होंने द्रौपदी को आशीर्वाद देते हुए कहा आज तुमने मुझ पर बड़ा उपकार किया है, भगवान तुम्हारी लाज रखेगा। द्रौपदी के इसी पुण्य के फल स्वरूप राज सभा में जब दुशासन उसे निर्वस्त्र कर रहा था, तब भगवान श्रीकृष्ण ने से वस्त्र प्रदान कर राज सभा में उसकी लाज रखी। किसी का किया हुआ उपकार व्यर्थ नहीं जाता। आवश्यकता एवं समयानुकूल किये हुए दान का बड़ा महत्व

है । प्रेमियो आप भी परोपकार के कार्य करते रहें । जो कुछ धन पदार्थ है वह प्रभु की धरोहर है । उसकी धरोहर उसे अर्पण करें तो उसमें आपका कल्याण होगा ।

कार्तिक पूर्णमासी के दिन सबेरे स्वामीजी ने कार्तिक कथा समापन करते हुए कहा कि यह कथा श्रवण व मनन करने से आध्यात्मिक उन्नति होती है । आप सदैव प्रभु के श्री चरणों से प्रीति करें । सांसारिक पदार्थों की प्रीति दुखदाई है । श्वासों का सदुपयोग करें । स्मरण एवं सेवा में जीवन की सार्थकता है । सायंकाल सत्संग में स्वामीजी ने श्री गुरुनानक देवजी के जन्म दिन के उपलक्ष्य में उनके जीवन की प्रेरणादायक घटनाएं सुनाई ।

१२ जनवरी १९६३ पूज्य स्वामीजी राम नगर, सूरत में पधारे । वहां स्वामीजी ने पांच दिन अमृत वर्षा कर प्रेमियों को आनंदित किया वहां एक दिन प्रवचन करते हुए स्वामीजी ने कहा कि साधक को सांसारिक पदार्थों में आसक्ति नहीं रखनी चाहिए । उसे रात दिन प्रभु के श्रीचरणों का चिन्तन करते रहना चाहिए, कामनी-कंचन आध्यात्मिक मार्ग में कंटक हैं । उनका परित्याग करना चाहिए । गोविंदापुरा में भगवान श्रीकृष्ण के भक्त श्री गंगाधरदास रहते थे । उनके मन में भगवान के प्रति वात्सल्य प्रेम था । उनका भगवान श्रीकृष्ण से इतना स्नेह था कि वह भगवान के बाल रूप से बातें करते थे । एक बार अश्रुयुक्त आंखों से उन्होंने बाल गोपाल से प्रार्थना करते हुए कहा कि मैं रात दिन आपका स्मरण करता हूं, किन्तु उदर पूर्ति के लिए व्यवसाय करना पड़ता है, मेरे पास इतना भी धन नहीं कि बिना व्यवसाय परिवार का भरण पोषण कर सकूँ । बाल रूप भगवान ने भक्त से कहा "तुम चिन्ता मत करो । शीघ्र ही तुम धनवान हो जाओगे ।" भगवद् कृपा से भक्त गंगाधरदास धनवान बन गये । किन्तु माया के मोह वश उनका मन भगवद् उपासना में नहीं लगता था । पहले वह प्रति दिन अश्रुपूरित नेत्रों से, हृदय की गहराई से उपासना करते थे । किन्तु अब माया से मोह के कारण भक्ति साधना में मन ही नहीं लगता था । प्रेमियो! माया एवं सांसारिक पदार्थ ऐसे मन मोहक हैं कि जिनके मोहवश हम प्रभु को भी भुला देते हैं । सत्गुरु महाराजजी भी अपनी वाणी में कहते हैं-

माया छल का रुप है, माया दुख का धाम ।
टेऊँ माया ममत तज, सुमरो हरि का नाम ।।

माया दुख रूप है । माया कभी कभी ज्ञानियों, विद्वानों, संतों एवं महात्माओं को भी छलती है । इसलिए प्रेमियो ! सांसारिक पदार्थों एवं संतान में आसक्ति न रखकर, प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ें, प्रभु का नाम स्मरण करें उनका ध्यान करें, तो आपको परमानंद की प्राप्ति होगी। १८ जनवरी स्वामीजी ने दो दिन अमृत वचनों की वर्खा की। २० जनवरी स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम लौट आये ।

२६ जनवरी प्रात: स्वामीजी ने आश्रम में राष्ट्रीय ध्वज फहराया उसी दिन संध्याकालीन सत्संग में स्वामीजी ने गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में व्याख्यान देते हुए राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया । ३० जनवरी महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि देते हुए स्वामीजी ने कहा कि महात्मा गांधी युग पुरुष थे । प्रभु प्रार्थना की शक्ति के आधार पर उन्होंने कई समस्याओं का निराकरण किया । २४ फरवरी शिवरात्रि के उपलक्ष्य में स्वामीजी ने भगवान श्री शंकरजी की अनुपम लीलाओं का उल्लेख किया । २२ मार्च आश्रम में होली मनाई गई । स्वामीजी ने अपने प्रवचन में भक्त प्रहलाद की भक्ति भावना का वर्णन करते हुए कहा कि हमें भी श्रद्धा व विश्वास के साथ प्रभु की भक्ति करनी चाहिए तो प्रभु अवश्य हमारी रक्षा करेंगे ।

प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव १८ अप्रैल से अमरापुर स्थान जयपुर में आयोजित किया गया । उस सम्बन्ध में स्वामीजी १० अप्रैल अमरापुर स्थान जयपुर पधारे । स्वामीजी सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की मूर्ति को प्रणाम कर सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से मिले और उनके श्री चरणों में प्रसाद इत्यादि भेंट किया । स्वामीजी मंडल के अन्य संतों से भी मिले ।

२० अप्रैल स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज, जिनकी छत्र-छाया में हम बैठे हैं, विनम्रता की प्रतिमूर्ति एवं दया स्वरूप थे । वह अपना अधिक से अधिक समय भगवद् भजन में व्यतीत करते थे । आज हजारों प्रेमी उनके इस उत्सव में सम्मिलित होकर स्वामी सर्वानन्दजी महाराज एवं अन्य संतों के प्रवचन

श्रवण एवं दर्शन कर कृतार्थ हुए हैं। प्रेमियो ! आप भी सत्गुरु महाराज द्वारा दिये नाम का नित नियम से जाप करें तो आपके दुख दूर हो जायेंगे। सत्गुरु महाराजजी कहते हैं-

सत्गुरु के सत् शब्द का, इहं निश कर अभ्यास।
कह टेऊँ संसार के, विघन होय सब नास॥

२७ अप्रैल पूज्य स्वामीजी सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से आशीर्वाद लेकर आगरा आये। वहां स्वामीजी ने तीन दिन अमृत वर्खा की। ३० अप्रैल स्वामीजी ग्वालियर पधारे। वहां प्रेम प्रकाश आश्रम में स्वामीजी ने चार दिन तक सत्संग प्रवचन किया। ५ मई स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम लौट आये और वहां नित नियम सत्संग प्रवचन करते रहे।

१-२ जून सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की पुण्य तिथि आश्रम में मनाई गई। संतो महात्माओं ने पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के गुणों का वर्णन किया। ३ जून प्रातः उत्सव का समापन करते हुए पूज्य स्वामीजी ने कहा कि व्यवहार एवं परमार्थ के मार्ग में विनम्र बनें। अहंकार व आडम्बर का परित्याग करें। सत्गुरु महाराजजी अपनी वाणी में कहते हैं-

नम्र भाव मन धार ले, त्यागे तन अभिमान।
टेऊँ शील स्वभाव से, अपना कर कल्याण॥

प्रेमियो ! अहंकार से मनुष्य अविवेकी हो जाता है। अहंकार आध्यात्मिक उन्नति में भी बाधक है। यदि आप प्रभु को प्राप्त करना चाहते है तो अहंकार का परित्याग कर विनम्र बनें।

किसी को विद्या, किसी को बुद्धि, किसी को धन या पद का अहंकार रहता है। आप यदि आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर होना चाहते हैं तो अहंकार का परित्याग करें।

वर्षा ऋतु में स्वामीजी नित नियम से सिन्धुनगर आश्रम में ही सत्संग प्रवचन करते रहे। १४ जुलाई गुरु पूर्णिमा के दिन स्वामीजी ने उपदेश देते हुए कहा कि प्रेम व श्रद्धा से गुरु की पूजा करें तो आपको चारों

पदार्थों की प्राप्ति होगी । सतगुरु महाराज भी अपनी वाणी में कहते हैं-

गुर को कर तुम वंदना, श्रद्धा मन में धार ।
कह टेऊँ इस जगत्, में पाइ पदार्थ चार ।।

१८ अगस्त जन्माष्टमी के दिन स्वामीजी ने भगवान श्यामसुन्दर की महिमा गाते हुए उनकी लीलाओंका वर्णन किया । १६ सितम्बर रात को संत सांई हरिचूराम साहब के पुण्य तिथि उत्सव के सम्बंध में उनके स्थान पर प्रवचन करते हुए पूज्य स्वामीजी ने संत हरिचूराम साहब के जीवन के कुछ संस्मरण सुनाये । २४ अक्टूबर स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज की पुण्य तिथि के अवसर पर स्वामीजी पूना गये । वहां स्वामी रामकृष्ण के स्थान पर स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित की । २६ अक्टूबर स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम में लौट आये । कार्तिक महीने के उपलक्ष्य में स्वामीजी ने कार्तिक कथा प्रारम्भ की । गोपाष्टमी के अवसर पर श्री राधेश्याम गौशाला में स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि अपने कल्याण एवं हिन्दू सनातन धर्म की रक्षा के लिए गौ माता की सेवा करें । गाय की सेवा सर्वोत्तम है ।

१२ नवम्बर श्री गुरुनानक देव के जन्म दिन के उपलक्ष्य में स्वामीजी ने उनके जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आप भी नाम स्मरण में जीवन सफल करें । स्वामीजी ने संत शेवादास के मंदिर में भी प्रवचन किये । ८ दिसम्बर स्वामीजी ने मुलुन्द कालोनी की गुरुदरबार में प्रवचन किये । श्री शेवाराम भंभाणी ने स्वामीजी का आभार मानते हुए विनती की कि इस कालोनी पर दया दृष्टि कर बारम्बार पधारने की कृपा करें । २० दिसम्बर संत प्रभारामजी की पुण्य तिथि उत्सव में सम्बंध में स्वामीजी ने संत प्रभाराम मंदिर में सत्संग प्रवचन किया।

४ जनवरी १९६४ पूज्य स्वामीजी कुर्ला, बम्बई पधारे वहां उन्होंने चार दिन अमृत वर्खा की । ८ जनवरी से १० जनवरी उन्होंने वडाला में सत्संग प्रवचन किया ।

श्री नंदलाल बखतियाणी ने कुर्ला बम्बई में प्रति वर्ष की भांति कपलेश्वर महादेव मंडल की ओर से शिवरात्रि के उत्सव का आयोजन किया । १४-१५ फरवरी को उक्त उत्सव में पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए भूत भावन भगवान श्री शिवशंकरकी महिमा का वर्णन किया।

४ अप्रैल से अमरापुर स्थान जयपुर में प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव आयोजित किया गया। उसी उत्सव के अवसर पर स्वामीजी २ अप्रैल जयपुर में पधारे। उन्होंने सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की प्रतिमा को प्रणाम कर सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज के श्री चरणों में प्रसाद आदि भेंट किया। ४ अप्रैल स्वामी सर्वानंदजी महाराज ने उत्सव का शुभारम्भ किया। चार दिन वहां कई संतो महात्माओं ने अमृत वर्खा की। ६ अप्रैल स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

माया ममता मोह मद, मन मथ मन और मान।
जो जीते इन सात को, सो है संत सुजान॥

सच्चा संत धन पदार्थ, मान सम्मान, मोह ममत्व अहंकार का परित्याग करता है और सम्पूर्ण समय नाम स्मरण में मग्न रहता है। सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज जाग्रत एवं निद्रा अवस्था में नाम का जाप करते थे। माया तो संतों की दासी होती है। संत लोग माया का त्याग कर प्रभु से नाता जोड़ते हैं।

संत भक्तराम जंगल में एकांत स्थल पर भगवद् भजन करते थे। एक बार बीकानेर का राजा उनके दर्शनार्थ आया। राजा, संत भक्तराम के दर्शन कर अत्यन्त प्रसन्न हुआ और उसने संत से विनय की कि किसी भी सेवा के लिए आज्ञा करें। परन्तु संत अपनी भक्ति में लीन रहे। राजा ने फिर संत से कहा "आज्ञा करें, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं।" तब संत भक्तराम ने कहा "राजा! मेरी यह आज्ञा है कि तुम फिर कभी मिलने नहीं आना।" संत की ऐसी आज्ञा सुनकर राजा बहुत ही लज्जित हुआ। राजा ने समझा था कि संत उसे सुन्दर आश्रम बनाने के लिए कहेगे। संत तो विरक्त होते हैं। महात्मा सांसारिक पदार्थो से तो दूर रहते ही हैं साथ ही लोगों का सम्पर्क भी नहीं चाहते। वे तो रात दिन परमात्मा का ही चिन्तन करते हैं।

प्रेमियो! मानव जीवन प्राप्त कर भी यदि भगवद् भजन नहीं किया तो यह जन्म किस काम का! सत्गुरु महाराज भी अपनी वाणी में कहते हैं-

पूर्व पुण्य ते पाइया, मानुष का अवतार।
कह टेऊँ तिहं सफल कर, सुमरे सृजनहार॥

प्रेमियो ! नाम स्मरण करें। संत महात्माओं की संगति या उनके

प्रवचन श्रवण करने का लाभ है, नाम स्मरण । नाम से कभी विमुख नहीं हों । प्रभु से प्रार्थना करें ।

"बहुत जन्म बिछड़े थे माधव, यह जन्म तुम्हारे लेखे ।"

स्वामीजी १२ अप्रैल सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से आशीर्वाद लेकर कुछ प्रेमियो के साथ ब्रज भूमि में आये । वहां स्वामीजी ने भगवान श्याम सुन्दर की मनोरम रासलीलाओं का रसास्वादन किया। २० अप्रैल स्वामीजी दिल्ली पधारे, वहां उन्होंने चार दिन अमृत वर्खा की । २५ अप्रैल स्वामीजी हरिद्वार पहुंचे । वहा स्वामीजी ने कई संत महात्माओं के साथ ज्ञान गोष्ठी की और संतों का भण्डारा भी किया। १५ मई स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम लौट आये ।

२७ मई १९६४ भारत के प्रधान मंत्री पंडित श्री जवाहरलाल नेहरू का देहावसान हुआ । सम्पूर्ण देश में गम की घटाएं छा गईं। २८ मई संध्याकालीन सत्संग में स्वामीजी ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि पंडित जवाहरलाल नेहरु न केवल भारत के महान नेता थे बल्कि विश्व शान्ति के मसीहा थे। उन्होंने सम्पूर्ण विश्व को अपना परिवार समझकर पंचशील का संदेश दिया। उन्होंने राष्ट्र के नव-निर्माण के लिए पंचवर्षीय योजनाएं किर्यान्वित की। देश की. स्वतंत्रता प्राप्ति में, स्वतंत्रता पूर्व एवं पश्चात् उनका अमूल्य योगदान रहा । प्रभु से प्रार्थना करें कि वे पुनः भारत भूमि पर जन्म लेकर अपना अपूर्ण कार्य पूर्ण करें।

१-२ जून आश्रम में सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की पुण्य तिथि मनाई गई । संत गोपाराम, संत भजनदास, संगीताचार्य मास्टर चन्द्र ने सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की महिमा गाई । ३ जून प्रातः काल को उत्सव का समापन करते हुए स्वामीजी ने कहा कि आजकर हर क्षेत्र में आडम्बर बढ़ गया है । खान पान पर भी उसका बड़ा प्रभाव पड़ा है । जैसा अन्न वैसा मन । प्रेमियो ! सादगी से जीवन बिताएं । स्वास्थ्य की दृष्टि से अथवा आत्मिक उन्नति के लिए खान पान एवं पहनावे में सादगी होनी चाहिए । बाह्य आडम्बर का त्याग करना चाहिए । सत्गुरु महाराज भी अपनी वाणी में कहते हैं-

कह टेऊँ कर सादगी, खान पान पहरान ।

सादी रहनी रहन से, रीझत है भगवान ।।

सादगी से रहने में आप का लाभ है। प्रति दिन कुछ समय एकांत में बैठकर भगवद् चिन्तन करें तो आपका कल्याण होगा।

११-१२ जून स्वामीजी ने कोपरी कालोनी, थाणा में अमृत वर्खा की। १३ जून सिन्धी कालोनी मुलुंड में स्वामीजी ने प्रवचन किया। १२ जुलाई गुरु पूर्णिमा उत्सव आश्रम में मनाया गया। कई प्रेमियों ने स्वामीजी से आशीर्वाद लिया। इस अवसर पर स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि व्यवहारिक एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए सत्गुरु की अत्यन्त आवश्यकता है। शिष्य को समर्पण भाव से गुरु की सेवा करनी चाहिए, उसे गुरु की आज्ञा शिरोधार्य करनी चाहिए तभी वह लाभन्वित हो सकेगा। गुरु को साधारण मनुष्य नहीं समझना चाहिए।

१५ आगस्त प्रात: पूज्य स्वामीजी ने आश्रम में राष्ट्रीय ध्वज फहराया। सायंकाल को प्रववन करते हुए उन्होंने देश की स्वतन्त्रता के इतिहास पर प्रकाश डाला।

१६ अगस्त संत लखीरामजी की पुण्य तिथि उनके स्थान सिन्धुनगर-५ में मनाई गई। स्वामीजी ने संत लखीरामजी के गुणों का वर्णन करते हुए कहा कि वे संतोषी संत थे। वे स्वयं खेती बाड़ी करते थे। जो कुछ उपज एवं साग सब्जी पैदा होती थी उसको भंडारे के उपयोग में लाते थे। उनके चित्त की वृति प्रभु चरणों में रहती थी। प्रेमियो! आप भी परिवार पालन के लिए व्यवसाय करें किन्तु सदैव मन से प्रभु का नाम स्मरण करते रहें।

२४ अगस्त जन्माष्टमी के दिन स्वामीजी ने भगवान श्री श्यामसुन्दर बांके बिहारी की आलौकिक लीलाओं का वर्णन करते हुए उनकी महिमा का भजन गाया।

२० सितम्बर संत हरिचूराम साहब के स्थान पर उनकी पुण्यतिथि उत्सव के अवसर पर स्वामीजी ने संत हरिचूराम साहब की महिमा गाते हुए कहा कि वे अपने परिश्रम से अर्जित धन द्वारा ही उदर पूर्ति करते थे। उनके चरणों में कई प्रेमी भेंट इत्यादि रखते थे, किन्तु वे उन भेंट को शाहपुर थल्हे पर भेज देते थे, परन्तु स्वयं के लिए कुछ नहीं रखते थे। एक बार पीर गोठ चालीहा साहब के प्रेमी उनके पास भोजन की थाली ले आये और विनय की कि कृपया इसे स्वीकार

करें। उन्होंने भोजन स्वीकार किया किन्तु खाली थाली में एक रुपया डालकर दिया। उस (तत्कालीन) समय में एक रुपये में दस सेर दूध मिलता था, संत हरिचूराम साहब ने भोजन के बदले एक रुपया दे दिया। उनमें कितनी न महान त्याग भावना थी। तब प्रेमियो ने प्रार्थना की कि सब कुछ आपका है कृपया रुपया नहीं दें। संत हरिचूराम साहब ने कहा कि ये लोहे के चने हैं, इनको हजम कर पाना आसान नहीं। इसलिए इस भोजन के बदले तुम्हें एक रुपया लेना ही पड़ेगा। प्रेमियो ने फिर प्रार्थना की कि भोजन की एक थाली के लिए एक रुपया अधिक है। संत हरिचूराम साहब ने कहा कि पिछला भी कुछ कर्ज होगा, ले लें। संत हरिचूराम साहब इतने त्यागी थे। उनका जीवन हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है। कई लोग मुफ्त का माल मिलने पर बहुत प्रसन्न होते हैं। आजकल तो रिश्वत लेने की प्रथा चल पड़ी है। किसी त्यौहार या विवाह के उत्सव पर बहू के मां बाप से जबरन दहेज लेते हैं। परिश्रम एवं सत्य की कमाई ही सच्ची कमाई है। दूसरों के धन पदार्थ से मोह नहीं करना चाहिए। उसका प्रयोग करने से चक्रवृद्धि ब्याज सहित उसका फल भुगतना पड़ेगा। दूसरों के धन पदार्थ को सांप समझकर उससे दूर रहना चाहिए। ईमानदारी एवं परिश्रम की कमाई का भोजन खाने से मन निर्मल होगा। पाप की कमाई हानिकारक है।

२८ अक्टूबर आश्रम में कवि परसराम ज़िया की पुण्य तिथि स्वामीजी की अध्यक्षता में मनाई गई। श्री गोविन्दराम भाटिया, श्री गिदूमल हरिजाणी, दयाल 'आशा' ने कवि परसराम ज़िया को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उन्होंने श्री जपजी साहब, श्री सुखमनी साहब एवं श्रीमद् भगवद् गीता का सिन्धीमें अनुवाद कर अनूठा कार्य किया है।

स्वामी ग्वालानंदजी महाराज की पुण्य तिथि उत्सव के उपलक्ष्य में पूज्य स्वामीजी ३० अक्टूबर पूना पधारे। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि संत स्वामी ग्वालानंदजी महाराज महान विद्वान एवं ज्ञानवान थे। उन्होंने कई प्रेमियों का मार्ग दर्शन कर उन्हें प्रभु पथ की ओर अग्रसर किया। १ नवम्बर स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम लौट आये। उन्होंने स्वामी नारायण प्रकाशजी के स्थान पर भी प्रवचन करते हुए

स्वामी ग्वालानंदजी महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित की । २ नवम्बर दीपावली के दिन कुछ प्रेमी स्वामीजी को बम्बई ले गये ।

३ नवम्बर प्रात: स्वामीजी ने आश्रम पर कार्तिक कथा प्रारंभ की १० नवम्बर गोपाष्टमी के दिन राधेश्याम गौशाला में प्रवचन करते हुए स्वामीजी ने कहा कि गौ माता स्वर्ग प्राप्ति का माध्यम है । यदि आप स्वर्गलोक जाना चाहते हैं तो निष्काम भाव से गौ माता की सेवा करें। गौ की सेवा करने से मन वांछित फल मिलते हैं । प्रेमियों ! श्रद्धा व प्रेम से गौ माता की सेवा करें ।

१२ नवम्बर कार्तिक एकादशी को प्रात: स्वामीजी के साथ कई संत एवं हजारों प्रेमी राम नाम की धुनि लगाते शमशान भूमि आये, स्वामी तिलोकदासजी महाराज, साईं जीवण घोट एवं अन्य संतों ने दान करने के लिए प्रेरित किया । स्वामीजी ने वैराग्य वाणी गाते हुए कहा कि आज के दिन दान एवं भगवद् भजन करने का विशेष महत्व है । आज सारी रात जागरण कर नाम स्मरण करें । 'हरे कृष्ण, हरे राम' की धुनि लगाएं । "काल नगारा बाज रहा है, कब किसको काल का बुलावा आये, ज्ञात नहीं ।" इसलिए प्रभु को न भूलें । सत्गुरु महाराजजी भी अपनी पवित्र वाणी में कहते हैं-

कह टेऊँ हरिनाम जप, भूलो ना क्षण एक ।
भोगत भोगत विषय रस, बीते जन्म अनेक ।।

१५ नवम्बर श्री गुरुनानक देवजी महाराज के जन्म दिन पर प्रात: पूज्य स्वामीजी ने कार्तिक कथा का समापन करते हुए श्री गुरुनानक देवजी के जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाये । ततपश्चात् स्वामीजी ने प्रेमियो के साथ आश्रम व गौशाला की परिक्रमा की । ११ बजे स्वामीजी ने संत शेवादास के स्थान मट मंदिर में प्रवचन किये ।

पूज्य स्वामीजी की प्रेरणा से आश्रम पर १५ दिसम्बर को सिन्धी महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया । उस सम्मेलन में वयोवृद्ध सिन्धी समाज सेविकाएं कमला हीरानंद, ठाकुरी लखाणी, प्राचार्या सीता सामताणी, जेठी बहन सिपाहीमलाणी, ठाकुरी सलामतराय, सावित्री होतचन्द आडवाणी, प्रसिद्ध सिन्धी लेखिका पोपटी हीरानंदाणी व प्रो.

पार्वती रामकृष्ण आडवाणी विशेष अतिथि रूप में सम्मिलित हुईं। तीन चार सौ सिन्धी महिलाओं ने इस सम्मेलन में भाग लिया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता बहिन कमला हीरानंद ने की। उक्त सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए स्वामीजी ने कहा-

"यत्र नरीस्तो पूज्यन्ते, तत्र रमन्ते देवता"

जहां नारियों की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं। भारतीय संस्कृति के अनुसार नारी का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। जब हम भगवान का नाम लेते हैं तो पहले राधा फिर कृष्ण अर्थात राधा कृष्ण कहते हैं। 'सीता राम' पहले सीता फिर राम। कुछ अज्ञानी लोग नारियों की निंदा करते हैं। संत कहते हैं-

नारी निंदा मत करो, नारी गुण की खान।
नारी से पैदा हुए, ध्रुव प्रहलाद समान॥

माताओ! मुझे प्रसन्नता है कि आज इस पवित्र स्थान पर प्यारे दयाल "आशा" के प्रयासों से सिन्धी महिला सम्मेलन आयोजित किया गया है। सिन्धी महिलाओं की क्या समस्याएं हैं? उन्हें किस प्रकार दूर किया जाये, इस विषय पर विचार विमर्श कर ठोस उपाय कार्यान्वित करें जिससे स्वस्थ समाज का निर्माण एवं स्त्री जाति की उन्नति हो।

बहिन इन्द्रा (गुलू) आडवाणी ने सभी का स्वागत एवं बहिन रत्ना वाधवाणी ने आभार प्रदर्शन किया।

प्रो. राम पंजवाणी को 'अनोखा आज़मूदा' पुस्तक के लिए साहित्य अकादमी द्वारा पांच हजार रुपये का पुरस्कार मिला। इस उपलक्ष्य में उनके सम्मानार्थ आश्रम में उत्सव का आयोजन किया गया। पूज्य स्वामीजी ने प्रो. राम पंजवाणी को आशीर्वाद देते हुए कहा कि वे सिन्धी जाति के सांस्कृतिक प्रतिनिधि हैं। उन्होंने सिन्धी साहित्य एवं सिन्धी भाषा की अविस्मरणीय सेवा की है। उत्सव के मुख्य अतिथि डा. सी. एल. प्रभात, श्री गोविन्दराम भाटिया, श्री परसराम मसंद एवं प्रो. दयाल "आशा" ने प्रो. राम पंजवाणी के साहित्यिक योगदान का वर्णन किया।

२५ दिसम्बर से प्रयाग में कुंभ का मेला आरंभ होने वाला था। इस मेले के उपलक्ष्य में पूज्य स्वामीजी २२ दिसम्बर को प्रयाग पधारे। वहां सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने प्रेम प्रकाश मंडल की ओर से अन्न क्षेत्र आरंभ किया और संतो एवं यात्रियों के खान-पान एवं ठहरने की व्यवस्था की। स्वामीजी कभी प्रातः तो कभी सायंकाल प्रवचन करते थे।

२८ जनवरी १९६५ कुंभ मेले का समापन हुआ। २ फरवरी स्वामीजी काशी में पधारे। वहां स्वामीजी ने विभिन्न स्थानों पर एक सप्ताह प्रवचन किये। ११ फरवरी स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये। होली के दिन स्वामीजी ने भक्त प्रहलाद की अटूट श्रद्धा व भक्ति का उल्लेख करते हुए कहा कि हमें भी श्रद्धा व प्रेम से नाम स्मरण करना चाहिए।

प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव अमरापुर स्थान जयपुर में १४ अप्रैल से १८ अप्रैल तक आयोजित किया गया। उक्त वार्षिकोत्सव में सम्मिलित होने के लिए पूज्य स्वामीजी ८ अप्रैल को जयपुर पहुंचे। उन्होंने सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज को प्रणाम किया। तत्पश्चात् मंडल के अन्य संतो से मिले। अचानक १० अप्रैल १९६५ को स्वामी गुरुमुखदासजी महाराज अस्वस्थ हो गये। उनका इलाज किया गया किन्तु उन्हें स्वास्थ्य लाभ नहीं हुआ। अन्ततः १३ अप्रैल को स्वामी गुरुमुखदासजी महाराज ने नश्वर देह को त्याग दिया।

दूसरे दिन सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज, स्वामी बसंतरामजी, स्वामी जीवनमुक्त, स्वामी माधवदासजी, पूज्य स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज, स्वामी ऊद्धवदासजी, स्वामी मुरलीधरजी, संत हरिदासरामजी एवं अन्य संतो ने ब्रह्मलीन स्वामी गुरुमुखदासजी महाराज को भाव भीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

पूज्य स्वामीजी ने १५-१६ अप्रैल अमरापुर स्थान पर प्रवचन करते हुए सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के अमूल्य संस्मरण सुनाये।

ब्रह्मलीन स्वामी गुरुमुखदासजी महाराज के त्रयोदशी के उपरान्त स्वामीजी २६ अप्रैल सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से आशीर्वाद लेकर अहमदाबाद पहुंचे। वहां स्वामीजी के प्रवचनों का कार्यक्रम था

किन्तु अहमदाबाद रेलवे स्टेशन पर ही अचानक उन्होंने प्रेमियों से कहा कि हम इसी समय बम्बई के लिए प्रस्थान करेंगे।

अतः बम्बई जाने की व्यवस्था करें। तत्पश्चात् स्वामीजी ने बम्बई के लिए प्रस्थान किया। उसी दिन बम्बई में परोपकारी पुण्यात्मा गौ भक्त श्री शिवलदास हरिगुनदास ब्रह्मलीन हुए थे। उनका स्वामीजी के साथ स्नेह संबंध था। उनके निधन का समाचार स्वामीजी को नहीं मिला था। परन्तु आतंरिक स्नेह उन्हें अहमदाबाद से बम्बई ले आया। बम्बई से श्री शिवलदासजी के परिवार के सदस्यों ने अहमदाबाद दूरभाष पर श्री शिवलदासजी के ब्रह्मलीन होने का समाचार भेजा किन्तु स्वामीजी तो वहां से पहले ही बम्बई के लिए प्रस्थान कर चुके थे। स्वामीजी श्री शिवलदासजी को सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में सदैव सहयोग देते थे। स्वामीजी के आशीर्वाद से ही उन्होंने सिन्धुनगर ५ एवं कोटा (राजस्थान) में गौ शालाए स्थापित की। पूज्य श्री शिवलदासजी के परिवार को अहमदाबाद से समाचार मिला कि पूज्य स्वामीजी अमुकरेल गाड़ी से बम्बई के लिए प्रस्थान कर चुके हैं। परिवार के दो तीन सदस्य दादर स्टेशन पर स्वामीजी को लेने आये। जैसे ही स्वामी जी गाड़ी से उतरे तो उन्हें श्री शिवलदासजी का देहावसान का समाचार सुनाया गया। वहां से ही स्वामीजी श्री शिवलदासजी के निवास स्थान ''हरिगुन हाउस'' वर्ली में गये। तत्पश्चात् श्री शिवलदासजी का पार्थिव शरीर डोली में रखकर अंतिम संस्कार हेतु शव यात्रा श्मशान भूमि की ओर चली। श्री शिवलदास गौ भक्त थे। अचानक कुछ गायें भी शव यात्रा में आ गईं। जैसे ही श्री शिवलदासजी का पार्थिव शरीर श्मशान भूमि में ले गये तो उसी समय वे गायें अदृश्य हो गईं। यह चमत्कार देखकर लोग श्री शिवलदासजी की गौ भक्ति की महिमा गाने लगे। ब्रह्मलीन श्री शिवलदासजी की अंतिम यात्रा में उपस्थित रहकर स्वामीजी ने तो प्रेम का नाता निभाया ही साथ ही गौ माताओंने भी सम्मिलित होकर स्नेहाशीष प्रदान किया।

पूज्य स्वामीजी ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि सेठ शिवलदासजी परोपकारी एवं गौ भक्त थे। सदगृहस्थ होते हुए भी प्रति दिन कुछ समय पूजा उपासना, भगवद् भजन में सफल करते थे। वे निष्काम समाज सेवक थे तथा जीवन पर्यन्त दीन दुखियों की

सहायता करते रहे ।

२८-२९ मई आश्रम में सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की पुण्य तिथि मनायी गयी । २९ मई को पुण्य तिथि पर स्वामीजी ने संतों का भंडारा आयोजित किया । ३० मई प्रात: उत्सव का समापन करते हुए स्वामीजी ने कहा-

श्रद्धा से सत्संग करो, सेवा करो निष्काम ।
कह टेऊँ तेरे सभी, होवें पूर्ण काम ।।

प्रेमियो ! सत्संग द्वारा जीव का विवेक जाग्रत होता है । सत्य-असत्य का ज्ञान होता है । इसलिए नित नियम पूर्वक सत्संग में जायें, कुसंग का त्याग करें । किस न किसी संत सत्पुरुष का संग करें तो आपको भक्ति का रंग लगेगा । सत्संग के साथ साथ दीन दुखियों, पशु पक्षियों की भी सेवा करें ।

९-१० जून स्वामीजी ने कुर्ला बम्बई में प्रवचन किया और ११ जून चेम्बूर में अमृत वर्खा की । १२ जुलाई गुरु पूर्णिमा के दिन प्रात: स्वामीजी ने गुरु की महिमा गाते हुए कहा-

गुरु ब्रह्म, गुरु विष्णु, है गुरु शेष महेश ।
कह टेऊँ गुरु सूर्य शशि, है गुरु गौर गणेश ।।

सत्गुरु ही ब्रह्मा, विष्णु और शिवशंकर का रूप है । गुरु ही सूर्य, चन्द्रमा, पार्वती व गणेश है । इसलिए उनकी प्रेम व श्रद्धा से उपासना करनी चाहिए । गुरु द्वारा ही जीव को मुक्ति मिलेगी । इसलिए अनन्य भाव से गुरु की शरण लें ।

सत्गुर की कृपा बिना, मिले न मोक्ष द्वार ।
कह टेऊँ गुर शरण ले, अपना करो उद्धार ।।

१४ अगस्त रक्षाबंधन के पवित्र दिन कई श्रद्धालुओं ने स्वामीजी को राखियां बांधी । स्वामीजी ने रक्षाबन्धन के महत्व पर प्रवचन किया। १५ अगस्त प्रात: आश्रम पर स्वामीजी ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया । सायंकाल सत्संग में स्वामीजी ने स्वतंत्रता दिवस के सम्बंध में अपने विचार व्यक्त किये । २७ अगस्त जन्माष्टमी के पावन पर्व पर स्वामीजी ने भगवान

श्री कृष्णचन्द आनंदकंद की महिमा गाते हुए उनकी अद्वितीय लीलाओं का वर्णन किया।

४ जनवरी १९६५ पाकिस्तान ने भारत की सीमा पर गोला बारी आरंभ की थी। पाकिस्तान की फौज ने पहले कच्छ व कश्मीर पर छोटे छोटे आक्रमण किये। १ सितम्बर पाकिस्तान ने भारत पर बड़ा आक्रमण किया। भारत के तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्रीजी ने 'जय जवान', 'जय किसान' का नारा लगाकर फौज में नई चेतना जगाई। उन्होंने स्वतंत्रता की सुरक्षा के लिए सारे देश-वासियों में राष्ट्रीय भावना का संचार किया। भारतीय सेना ने पाकिस्तानी फौज के हौसले पस्त कर दिये। स्वामीजी ने भी अपने संदेश द्वारा, देश भक्ति की भावना उत्पन्न की। २४ वर्षीय सिन्धी साहसी नौजवान प्रेम रामचन्दाणी नेउसी युद्ध में पाकिस्तान के सरगोधा अड्डे पर बम्बारी कर दुश्मन को काफी क्षति पहुंचाई। दुश्मन पर ११ बार आक्रमण करते हुए २६ सितम्बर को साहसी प्रेम ने वीर गति प्राप्त की। ३० सितम्बर आश्रम में स्वामीजी ने शहीद प्रेम रामचन्दाणी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

२ अक्टूबर महात्मा गांधीजी के जन्म दिवस पर स्वामीजी ने बापूजी के जीवन के कुछ प्रेरणादायक संस्मरण सुनाये। ३० अक्टूबर स्वामी ग्वालानंदजी महाराज की पुण्य तिथि उत्सव में स्वामीजी पूना पहुंचे। स्वामीजी ने स्वामी रामकृष्णजी के आश्रम में प्रवचन करते हुए स्वामी ग्वालानंदजी महाराज के गुणों का वर्णन किया। १ नवम्बर स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम लौट आये।

३ नवम्बर चन्द्र दर्शन के दिन प्रातः स्वामीजी ने कार्तिक कथा प्रारंभ की। १० नवम्बर श्री राधेश्याम गौ शाला में स्वामीजी ने ब्रह्मलीन श्री शिवलदासजी की मूर्ति का अनावरण करते हुए उनके द्वारा की गई गौ सेवा की प्रशंसा की।

१३ नवम्बर "कार्तिक एकादशी" के दिन स्वामीजी के साथ हजारों प्रेमी राम नाम की धुनि लगाते हुए श्मशान भूमि आये। वहां स्वामीजी ने वैराग्य वाणी गाते हुए कहा कि पता नहीं कब काल का बुलावा आए इसलिए परलोक के लिए सत्कर्म करें, नाम स्मरण एवं परोपकार

के कार्य करें, श्वासों का सदुपयोग करें । यदि आप सुखी होना चाहते हैं तो दूसरों को सुखी करें । दूसरों का भला करने से ही आनंद की प्राप्ति होगी ।

१६ नवम्बर कार्तिक पूर्णमासी के दिन स्वामीजी ने कार्तिक कथा का समापन किया और श्री गुरुनानकदेवजी के जन्म दिन पर उनके जीवन-कार्यों पर प्रकाशडाला । ११ बजे संत शेवादास के मट मंदिर में उन्होंने श्री गुरुनानकदेवजी साहब के वाणी की व्याख्या की । १२ दिसम्बर स्वामीजी अहमदाबाद गये । वहां उन्होंने संत प्रभाराम साहब की पुण्य तिथि उत्सव के उपलक्ष्य में तीन दिन प्रवचन करते हुए संत प्रभारामजी के गुणों का वर्णन किया । स्वामीजी ने प्रेमियों से कहा कि मांस व शराब का परित्याग कर, अपना धन पदार्थ परोपकार के कार्यों में सफल करें ।

११ जनवरी १९६६ को अचानक भारत के प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्रीजी का ताशकंद में देहांत हो गया । समूचे देश में गम की घटाएं छा गईं । सिन्धुनगर आश्रम में सायंकाल सत्संग में स्वामीजी ने शोक प्रकट करते हुए कहा कि आज राष्ट्र ने महान देश भक्त खो दिया । श्री लालबहादुर शास्त्रीजी न केवल देश भक्त थे बल्कि ईश्वर भक्त भी थे । वे निर्भीक, निपुण तथा निष्काम नेता थे । उनका जीवन हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है । दयाल ''आशा'' ने अपनी कविता द्वारा श्री शास्त्रीजी को श्रद्धांजलि अर्पित की । संत सन्मुखलाल, श्री जीवणदास आहूजा, श्री कीरतराय आहूजा ने भी श्री शास्त्रीजी के गुणों का वर्णन किया ।

१६ जनवरी १९६६ सिन्ध के महान संत साधु टी.एल. वास्वाणीजी पूना में ब्रह्मलीन हुए । २५ जनवरी सिन्धुनगर आश्रम में साधु वास्वाणीजी को श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु शोक सभा आयोजित की गई, स्वामीजी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि साधु वास्वाणीजी आध्यात्मिक मार्ग दर्शक एवं भगवान श्रीकृष्ण के अनन्य उपासक थे । मैं जब हैदराबाद सिन्ध में ऋषि दयाराम गिदूमल संस्कृत पाठशाला में अध्ययन करता था, तब मुझे साधु वास्वाणीजी के प्रवचन श्रवण करने का सुअवसर मिला । उनकी कहनी व कथनी में कोई अंतर नहीं था । उन्होंने प्राचार्य

पद का परित्याग कर प्रभु पथ पर प्रगति करने का संकल्प किया वे महान दार्शनिक, विद्वान, शिक्षा शास्त्री व समाज सुधारक थे।

इस शोक सभा में प्राचार्य एल. एच. अजवाणी, श्री गोविन्दराम भाटिया, श्री परसराम मसंद एवं दयाल 'आशा' ने साधु वास्वाणीजी के जीवन-कार्यों पर प्रकाश डाला।

संत ऋषि रुघूराम अधिकांश समय आश्रम में रहते थे। पूज्य स्वामीजी का उनके साथ सिन्ध से ही स्नेह संबन्ध रहा, वे बड़े ज्ञानवान व विद्वान थे साथ ही सादगी की मूर्ति थे। अचानक वे अस्वस्थ हो गये। उनके अस्वस्थ होने का समाचार सुनकर स्वामी लीलाशाहजी महाराज भी उनके पास आये। उनकी अपने हाथों से मालिश की। १६ फरवरी १९६६ को ऋषि रुघूराम जी ब्रह्मलीन हुए। संत रुघूराम का पार्थिव शरीर डोली में रखकर श्मशान भूमि में ले जाया गया। अन्तिम यात्रा में कई संत एवं हजारों प्रेमी सम्मिलित हुए। भगवद् प्रार्थना के पश्चात् पार्थिव शरीर अग्नि को समर्पित किया गया। संत रुघूराम के नश्वर देह त्यागने के चौथे दिन संतों ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। पूज्य स्वामीजी ने वैराग्य वाणी गाते हुए संत रुघूराम के गुणों का वर्णन किया।

संत रुघूराम के ब्रह्मलीन होने के तेरहवें दिन (त्रयोदशी) स्वामीजी ने आश्रम में संतों का भण्डारा आयोजित किया। संतों ने संत रुघूरामजी के जीवन पर प्रकाश डाला, स्वामीजी ने श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि संत रुघूराम तपस्वी, त्याग एवं सादगी के स्वरूप थे। वे भगवान श्रीकृष्ण के अनन्य उपासक थे। उन्होंने धार्मिक ग्रन्धों का भी गहन अध्ययन किया था। देश के स्वतंत्रता संग्राम में उनका सक्रिय सहयोग रहा। उन्होंने सिन्ध में हरिजनों के उद्धार हेतु भी कार्य किया। महात्मा गांधी के जीवन से प्रभावित थे।

प्रेम प्रकाश मंडलका वार्षिक उत्सव ४ अप्रैल से ७ अप्रैल १९६६ अमरापुर स्थान जयपुर में आयोजित किया गया। इसी उत्सव में सम्मिलित होने हेतु स्वामीजी २८ मार्च जयपुर पधारे। ३ अप्रैल अमरापुर स्थान पर स्वामी गुरुखदासजी महाराज की पुण्यतिथि मनाई गई। सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज एवं अन्य संतो ने स्वामी गुरुमुखदासजी के जीवन

कार्यों का वर्णन किया। इसी अवसर पर स्वामीजी ने संत गुरुमुखदासजी की स्मृतियां सुनाईं।

४ अप्रैल प्रातः सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज ने सनातन धर्म ध्वज पहराकर उत्सव का श्री गणेश किया। ६ अप्रैल पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

राम नाम सत्य वचन, पुन मधुर नबोलत जोय।
टेऊँ दूजे जन्म में सो नर गूंगा होय॥

जो जीव मानुष तन पाकर भी रामनाम का जाप नहीं करता, सत्य वचन नहीं कहता, जो मधुर वाणी नहीं बोलता वह दूसरे जन्म में गूंगा एवं बहरा होगा। प्रेमियो ! आप यदि दूसरे जन्म में गूंगे एवं बहरे होना नहीं चाहते तो मधुरभाषी बनें, सत्य बोले, सत्य का व्यवहार करें और प्रभु का स्मरण करें। प्रभु के अनेक नाम हैं जो भी आप श्रद्धा व प्रेम से स्मरण करेंगे तो आपका कल्याण होगा। संत दादू कहते है-

दादू सृजनहार के, केते नाम अनन्त।
चित आवे सो लीजिये, यूं साधु सुमरे सन्त॥

१५ अप्रैल स्वामीजी सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज से आशीर्वाद लेकर आगरा आये। वहां उन्होंने प्रेम प्रकाश मंदिर में चार दिन प्रवचन किए। तत्पश्चात् वे ग्वालियर पधारे, वहां भी उन्होंने चार दिन अमृत वर्खा कर प्रेमियों को आनन्दित किया। २५ अप्रैल स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये।

१-२ जून आश्रम में पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की पुण्यतिथि मनाई गई। कई संतो व विद्वानों ने सत्गुरु महाराज की महिमा का वर्णन किया। ३ जून प्रातः उत्सव का समापन करते हुए स्वामीजी ने कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के उपदेशों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें। यह मानव जीवन आपको बारम्बार नहीं मिलेगा। इस जीवन की सार्थकता, नाम स्मरण एवं सेवा में हैं।

१० जुलाई गुरु पूर्णिमा के दिन स्वामीजी ने अपने प्रवचन में गुरु की महत्ता प्रतिपादित की। बिहार में सूखे की स्थिति थी। अकाल

पीड़ितों की सहायता के लिए स्वामीजी ने हकीम द्वारकादास रेलवाणी को बिहार, सेवा कार्यों के लिए भेजा । वहां उन्होंने बौद्ध गया में संत विनोबा भावे के समन्वय आश्रम में भाई द्वारिका सुन्दराणी की देख रेख में पीड़ितों के सहायतार्थ कार्य आरम्भ किया । तत्पश्चात् स्वामीजी ने दयाल 'आशा', संत राजूराम (वेद प्रकाश) भाई गुरुनोमल को भी राहत कार्यों के लिए भेजा । तदुपरान्त स्वामीजी स्वयं, श्री गोविन्दराम भाटिया, श्री तुलसीदास, संत सन्मुखलाल एवं अन्य प्रेमियों सहित सहायता कार्यों की देख-रेख के लिए बिहार गये। वहां स्वामीजी ने पीड़ितों की सहायता के साथ साथ पशुओं के चारे इत्यादि के लिए भी यथा योग्य व्यवस्था की । उनके मन में प्राणी मात्र के लिए दया भावना थी। भाई द्वारिका सुन्दराणी ने उक्त कार्य में पूर्ण सहयोग दिया।

२४ जुलाई पूज्य स्वामीजी काशी पधारे । वहां स्वामीजी ने पांच दिन अमृत वर्खा कर प्रेमियों को अमृत पान कराया । स्वामीजी वहां गंगा मैया में स्नान कर श्री विश्वनाथ मंदिर भी गये । २६ जुलाई स्वामीजी सतना कैम्प पहुंचे। वहां स्वामीजी ने चार दिन सत्संग प्रवचन किए। ६ अगस्त आप सिन्धुनगर आश्रम लौट आये । १५ अगस्त प्रातः स्वामीजी ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। सायंकाल सत्संग में स्वामीजी ने स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में व्याख्यान देते हुए कहा कि आज हमारा देश स्वतंत्र है । स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए कई देश-भक्तों ने अपना बलिदान दिया इसलिए स्वतंत्रता की सुरक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है । आजकल भारत में देश भक्ति की भावना निरन्तर कम होती जा रही है । आज उन शहीदों को याद करें जिन्होंने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया । राष्ट्र भक्ति एवं राष्ट्रीय एकता द्वारा ही भारत की सुरक्षा एवं सम्पन्नता सम्भव है ।

१८ अगस्त जन्माष्टमी के पावन दिन स्वामीजी ने यशोदानन्दन भगवान श्रीकृष्ण की अनुपम लीलाओं का वर्णन करते हुए उनकी महिमा का यश गान किया ।

२३ सितम्बर आश्रम में कवि किशनचन्द 'बेवस' की पुण्य तिथि स्वामीजी की अध्यक्षता में मनाई गई । स्वामीजी ने कहा कि कवि बेवस़ भगवान श्रीकृष्ण के भक्त थे। उनके मन में बेसहारा, दीन दुखियों

एवं अनाथों के प्रति हमदर्दी और सद्भावना थी, वे इस शताब्दी के श्रेष्ठ सिन्धी कवि एवं मानवता की प्रतिमूर्ति थे। इस अवसर पर श्री गोविन्दराम भाटिया, जीवनदास आहूजा एवं दयाल 'आशा' ने कवि बेवस के काव्य का वर्णन किया।

स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज की पुण्य तिथि के उत्सव पर स्वामीजी २२ अक्टूबर पूना पहुंचे। वहां स्वामी रामकृष्णजी ने स्वामीजी का स्वागत सत्कार किया। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज के काव्य एवं जीवन पर प्रकाश डाला। २४ अक्टूबर स्वामीजी सिन्धुनगर लौट आये।

२६ अक्टूबर चन्द्रदर्शन के दिन प्रात: स्वामीजी ने आश्रम में कार्तिक कथा प्रारंभ की। ६ नवम्बर गोपाष्टमी का उत्सव श्री राधेश्याम गौशाला में भक्ति भाव से मनाया गया। वहां स्वामीजी ने अपने व्याख्यान में गाय का महत्व बताते हुए कहा कि यदि आप भगवान श्रीकृष्ण को प्रसन्न करना चाहते हैं तो गौ माता की सेवा करें, गौ भक्त बनें।

९ नवम्बर कार्तिक एकादशी के दिन प्रात: स्वामीजी के साथ हजारों प्रेमी 'हरे कृष्ण, हरे राम' की धूम मचाते श्मशान भूमि में आये। वहां स्वामीजी ने कहा कि एक न एक दिन सभी को इस स्थल पर अवश्य आना है। यहां आने से पूर्व सत्कर्म करें। एक बार शाह लतीफ और संत मदन आपस में ज्ञान गोष्ठी कर रहे थे। उसी समय शाह लतीफ के कुछ मुरीद भी वहां बैठे थे। शाह लतीफ ने संत मदन से पूछा कि आप कौन और मैं कौन? संत मदन ने उत्तर दिया, "आप मिट्टी और मैं राख हूँ।" यह उत्तर सुनकर वहां बैठे मुरीद आश्चर्य में पड़ गये और उन्होंने शाह लतीफ से कहा कि यह संत आपको मिट्टी कहते हैं, यह ठीक नहीं। शाह लतीफ ने कहा "प्रेमियो! मदन फकीर ने जो कुछ कहा वह ठीक कहा। मज़हब की दृष्टि से मैं मुसलमान हूं मृत्यु के उपरान्त मुझे ज़मीन में दफनाया जायेगा तो मैं मिट्टी में मिलकर मिट्टी हो जाऊंगा। धर्म की दृष्टि से मदन हिन्दू हैं मृत्यु के उपरान्त इनके स्थूल शरीर को अग्नि को अर्पित किया जायेगा और उनका शरीर राख हो जायेगा। इस कारण उनका उतर ठीक है कि मैं मिट्टी हूं और मदन राख। शाह लतीफ का यह उतर सुनकर मुरीद शांत हो गये। प्रेमियो ! हमारा शरीर कितना भी सुन्दर

क्यों न हो, हम कितने भी धनवान क्यों न हों किन्तु मृत्यु के पश्चात् इस शरीर को यहां लाकर अग्नि को समर्पित किया जायेगा और हम राख हो जायेंगे । इसलिए शुभ कर्म करें, नाम स्मरण एवं परोपकार के कार्य करने में विलम्ब न करें । १२ नवम्बर, कार्तिक पूर्णिमा के दिन प्रात:स्वामीजी ने कार्तिक कथा का समापन करने के पश्चात् श्री गुरुनानकदेवजी के जीवन के कुछ प्रेरणादायक प्रसंग सुनाये । ११ बजे वे संत शेवदास के मंदिर में गये । वहां उन्होंने वचनों की वर्खा की। रात्रि को स्वामीजी ने सिन्धुनगर-२ में गरीब माताओं में चादरें वितरित कीं और श्री गुरुनानकदेवजी की शिक्षाओं को अपनाने का आव्हान किया । १२-१३ दिसम्बर स्वामीजी ने कुर्ला बम्बई में सत्संग प्रवचन किए । १५ दिसम्बर आश्रम में स्वामीजी ने बहिन अंजना वछाणी के पति स्वर्गीय श्री सरोजकुमार कमल के काव्य संग्रह 'बूंदूं' का विमोचन करते हुए कवि को भावभीनि श्रद्धांजलि अर्पित की । दयाल 'आशा' ने श्री कमल के काव्य पर प्रकाश डाला ।

उद्योगपति सेठ पेसूमल प्रभदास ककवाणी का मन सासांरिक व्यवहार से ऊब गया । वह स्वामीजी के पास आया और उसने अपनी मानसिक व्यथा स्वामीजी को सुनाते हुए आश्रम में रहते हुए सेवा करने की विनती की । स्वामीजी ने मुस्कराते हुए उनसे पूछा कि तुम्हारा यह वैराग्य क्षणिक है या सदैव के लिए है? पेसूमल ने कहा "स्वामीजी! अब सदैव के लिए मैं आपकी शरण में हूं । कृपया मुझे गुरुमंत्र की दीक्षा देकर अपनी सेवा में रखें ।" स्वामीजी श्री पेसूमल का उत्तर सुनकर प्रसन्न हुए और उसे गुरु मंत्र की दीक्षा देकर आश्रम की सेवा में लगाया।

कोयना में भूकम्प आया । स्वामीजी ने भूकम्प पीडितों की सहायता के लिए सर्व प्रथम हकीम द्वारकादास रेलवाणी, गोविन्दराम भाटिया, प्रो कन्हैयालाल तलरेजा एवं अन्य सेवकों को भेजा। तत्पश्चात् स्वामीजी स्वयं भी घटना स्थल पर गये और भूकम्प पीड़ितों की यथा योग्य सहायता सेवा की ।

१२ जनवरी १९६७ स्वामीजी पिम्परी कैम्प में पधारे. वहां उन्होंने दो दिन प्रवचन किए । प्रवचन करते हुए उन्होंने कहा कि मनुष्य को

उदार-चित्त होना चाहिए। उनके पास जो कुछ है वह प्रभु की धरोहर है अपना कुछ भी नहीं। ममत्व के कारण ही वह सम्बधियों एवं सभी पदार्थों को अपना समझ बैठा है। एक बार महाराजा रणजीतसिंह घोड़े पर सवार होकर अपने सिपाहियों के साथ कहीं जा रहे थे। रास्ते में जंगल से गुजरते समय महाराज रणजीतसिंह के माथे पर छोटा सा पत्थर लग गया, थोड़ी सी चोट लगी, रक्त बहने लगा। सिपाहियों ने देखा कि एक माता बेरी के वृक्ष में (बेर गिराने के लिए) पत्थर मार रही है। सिपाही उस माता को राजा के पास ले गये और उनसे कहा कि इनके द्वारा पत्थर फेंकने से ही आपको चोट लगी है। आप आज्ञा दें तो इस माता को यथा-योग्य दंड दिया जाये। महाराज ने उस माता से पूछा कि तुमने पत्थर क्यों फेंका? माता ने कम्पित स्वर में कहा ''राजन्! मैं बहुत गरीब हूं, दो दिन से मेरे बेटे ने कुछ नहीं खाया। मैं यहां जंगल में बेरों के वृक्षों पर पत्थर फेंक रही थी कि जिससे कुछ बेर प्राप्त कर अपने बेटे की भूख दूर कर सकूं। मैं तो वृक्ष पर पत्थर फेंक रही थी किन्तु एक पत्थर अचानक आपको लग गया। मुझे क्षमा करें। उस गरीब माता का उत्तर सुनकर राजा क्रोधित नहीं हुए। वे विचारने लगे कि उनके राज्य में यह माता इतनी दुखी है कि उसे और उसके बेटे को पेट भर खाने के लिए अन्न नहीं मिला है, इसके लिए मैं दोषी हूं। प्रजा की पालना करना मेरा कर्तव्य है। जब बेरों का वृक्ष पत्थर लगने से बेर देता है फिर मैं तो राजा हूँ। मुझे पत्थर लगा है तो मुझे भी पदार्थ अवश्य देना चाहिए। राजा ने सिपाहियों को आदेश दिया कि इस माता को दंडित न कर इसे स्वर्ण मुद्राएं दी जायें और साथ साथ खान पान की वस्तुएं भी दी जायें, जिससे इस का जीवन सुखमय व्यतीत हो। राजा का आदेश सुनकर सिपाही आश्चर्य में पड़ गये। महाराज रणजीतसिंह कितने न उदार चित्त थे। हम भी उदार चित्त होकर दीन दुखियों की सेवा करें।

१५ फरवरी संत डामारामजी की पुण्यतिथि के अवसर पर स्वामीजी उनके स्थान सिन्धुनगर-४ गए। वहां संत डामारामजी की महिमा गाते हुए कहा कि वह एक सद्-गृहस्थ थे। उनका चित्त सांसारिक व्यवहार से ऊब गया और मनकी वृति प्रभु नाम से जुड़ गई। प्रेमियो ! आप भी जगत् में अनासक्त भाव से रह कर नाम स्मरण करें।

१२ मार्च स्वामी लीलाशाहजी महाराज के जन्म दिन उत्सव के अवसर पर स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर-५ में, पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में सिन्धी समाज सम्मेलन का आयोजन किया। स्वामीजी ने उत्सव की अध्यक्षता करते हुए कहा कि स्वामी लीलाशाहजी महाराज महान कर्म योगी संत हैं। वे सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए प्रयासरत हैं। स्वामीजी विशेषकर दहेज प्रथा के विरोध में यत्र तत्र प्रचार कर रहे हैं। वर्तमान में दहेज एक ज्वलन्त समस्या है। यदि हम चाहें तो इस समस्या का समाधान कर सकते हैं, केवल त्याग की भावना होनी चाहिए। इस समस्या के कारण कई कन्याएं विवाह से वंचित रह गई हैं, यह समाज के लिये अभिशाप है आप उन कन्याओं पर दया करें।

इस सम्मेलन में प्राचार्य एल. एच. अजवाणी, प्रो.बी.एच. नागराणी, फतूमल टेकचन्दाणी, खूबचन्द भाग्या, गोबिन्दराम भाटिया, हुकुमतराय डियालाणी, परसराम मसंद, परसराम कांग्रेसी, दयाल 'आशा' एवं अन्य समाज सेवकों ने विचार व्यक्त किये।

प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव २३ अप्रैल से २७ अप्रैल अमरापुर स्थान जयपुर में आयोजित किया गया।

स्वामीजी इस उत्सव के असवर पर १५ अप्रैल अमरापुर स्थान जयपुर पधारे। वे सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की प्रतिमा को प्रणाम कर सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज एवं अन्य संतो से मिले। २२ अप्रैल पूज्य स्वामी गुरुमुखदासजी महाराज की पुण्य तिथि श्रद्धा से मनाई गई। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए स्वामी गुरुमुखदासजी महाराज के गुणों का वर्णन किया। २३ अप्रैल सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज ने सनातन ध्वज फहराकर उत्सव आरंभ किया। उत्सव के चारों दिन विभिन्न संतों महात्मओं ने अमृत वर्खा कर प्रेमियों को अमृत पान का रसास्वादन कराया। २४ अप्रैल पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि ऐसे उत्सव आयोजित करने का उद्देश्य है प्रेमियों को नाम स्मरण करने के लिए प्रेरित करना, मानव जीवन की सार्थकता नाम स्मरण एवं सेवा में है।

कलियुग में प्रधान है, सेवा पुन सत्संग ।
कह टेऊँ जिनके किये, होवे भव दुख भंग ।।

प्रेमियो ! समर्पित भाव से नाम स्मरण एवं दीन दुखियों की सेवा करें । न केवल मानव मात्र की सेवा किन्तु पशु पक्षी भी प्रभु की मूक संतान हैं उन पर भी दया दृष्टि करें ।

१ मई, स्वामीजी सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज से आशीर्वाद लेकर अहमदाबाद पहुंचे । वहां स्वामी ऊद्धवदासजी के स्थान पर स्वामीजी ने चार दिन प्रवचन किये । ७ मई स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये । ७-८ जून आश्रम में सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की पुण्य तिथि मनाई गई । कवि पहिलाजराम, संत गोपाराम, पूज्य स्वामीजी, संत भजनदास एवं अन्य संतों ने स्वामी टेऊँरामजी महाराज के जीवन कार्यों पर प्रकाश डाला । ६ जून प्रातः स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा-

थोड़े जीवन हेत तुम, करो न पाप अजान ।
कह टेऊँ मन जीतकर, पुण्य करो प्रधान

प्रेमियो ! जीवन नश्वर है । अमूल्य मानव जीवन अशुभ कर्मों में मत गंवाएं! मन को वश में करके शुभ कर्म करें । नाम स्मरण, दया, धर्म एवं परोपकार के कार्य करें ।

पूज्य स्वामीजी पहले एक छोटे से कमरे में रहते थे । एक दिन दोपहर को दो संत बाहर से आश्रम में पधारे । उसी समय स्वामीजी अपने कमरे में विश्राम कर रहे थे । आश्रम के संत से, आये हुए संतों ने कहा कि हमने दो दिन से भोजन नहीं पाया शीघ्र ही भोजन की व्यवस्था करें । उसी संत ने उन्हें कहा कि दोपहर को भंडारे का समापन हो गया, आप देरी से आये हैं । स्वामीजी यह वार्तालाप अपने कमरे में सुन रहे थे । उन्होंने उसी संत को बुलाकर कहा कि आये हुए संत केवल भोजन मांग रहे हैं, यह आश्रम संतों का आश्रम है, शीघ्र ही पड़ोस की किसी बहिन को बुलाकर अभी भोजन तैयार कर संतों को खिलाओ । कोई भी अतिथि आश्रम से भोजन के लिए निराश नहीं होना चाहिए । स्वामीजी की आज्ञानुसार पड़ोस की एक माता

आई । उसने तत्काल भोजन तैयार किया और संतों को भोजन परोसा गया । उन संतों ने स्वामीजी को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आपने हमें भोजन खिलाकर तृप्त किया है, भगवान आपका भंडार भरेगा । आप यशस्वी होंगे ।

सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का भी यही सिद्धांत था कि आश्रम में भोजन-भंडारा सदैव चालू रहना चाहिए, कोई भी अतिथि बिना भोजन खाये लौट न जाये । हमारे स्वामीजी भी इस सिद्धांत का अक्षरश: अनुसरण करते रहे । स्वामीजी समय समय पर आश्रम के सेवकों से कहते थे कि आश्रम में पधारे हुए संतों और अतिथियों के खाने पीने एवं रहने की अच्छी तरह देख भाल करें । १४ जुलाई गुरु पूर्णिमा के दिन स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

जो जन गुरु की शरण ले, सुमरे हरि का नाम ।
तांको माया ना लगे, कहता टेऊँ राम ।।

सत्गुरु ज्ञान का दाता है । उनसे आत्मज्ञान का उपदेश लेकर नाम स्मरण करें । फिर आपको सांसारिक व्यथाएं व्यथित नहीं करेंगी । माया रूपी नागिन आपको नहीं डस सकेगी । प्रेमियो ! श्रद्धा व प्रेम से सत्गुरु की शरण लेकर उनसे नामदान की दीक्षा लें ।

नाम पदार्थ नानक मांगे, संत जना की सेवा लागे ।

१३ अगस्त रक्षा बंधन के पावन दिन कई प्रेमियों ने स्वामीजी को राखियां बांधी । सायंकाल सत्संग में स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि राखी प्रेम का प्रतीक है । विपत्ति के समय एक दूसरे की रक्षा करें । एक दूसरे के दुख दर्द दूर करने का प्रयास करें । चारों ओर प्रेम का वातावरण पैदा करें ।

२५ अगस्त श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन स्वामीजी ने श्यामसुन्दर बांके बिहारी भगवान श्रीकृष्ण की अनुपम लीलाओं का वर्णन करते हुए उनकी महिमा का भजन गाया-

१. धन धन मात यशोदा तेरी, जिससे प्रकट आप हुए,
दर्शन देकर आनंद दिया, खेले गोद मंझारी ।
२. धन नंदराइ पिता तुम्हारे, जिसके सुत कहलाये जी,

ब्रज बचाकर आनन्द दिया, नाम पड़ा गिरधारी ।

३. धन धन ग्वाल बाल सभ तेरे, जिन संग बहुत कलोल किये,
माखन चुराकर तिन्हें खिलाया, लीलांबहु विस्तारी ।

४. धन धन गोबिंद गैयां तेरी, जिनको वन में ले जाते,
घास खिलाते नीर पिलाते, करत सदा रखवारी ।

५. धन धन ब्रज मंडल है तेरा, रहकर जहाँ बहु खेल किये,
बीन बजाकर रास रचाकर, मोही सखियाँ (सृष्टी) सारी ।

६. कहे टेऊँ धन गीता तेरी, जामें निर्मल ज्ञान भरा,
पढ़कर, सुनकर भक्त तुम्हारे, जावन बलि बलिहारी ।

२ सितम्बर से नासिक में कुम्भ मेला आरम्भ होने वाला था । वहां पर प्रेम प्रकाश मंडल की ओर से सत्गुर स्वामी सर्वानंदजी महाराज ने संतों एवं यात्रियों के खाने पीने व रहने हेतु व्यवस्था की और अन्न क्षेत्र भी आरंभ किया । इस मेले के उपलक्ष्य में स्वामीजी २८ अगस्त नासिक पधारे । वहां मंडप में सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज एवं मंडल के संत प्रतिदिन अमृत वर्खा करते थे । स्वामीजी ने भी समय समय पर प्रवचन किये । स्वामीजी ने प्रेमियों के साथ कुम्भ मेले के विशेष पर्वों पर पवित्र गोदावरी में स्नान किया । स्वामीजी ने नासिक में कई संतों महात्माओं से ज्ञान गोष्ठी भी की । ४ अक्टूबर आप सिन्धुनगर आश्रम लौट आये ।

पूज्य स्वामीजी के बाल सखा स्वामी ऊद्धवदासजी महाराज अहमदाबाद में १२ अक्टूबर १९६७ को ब्रह्मलीन हुए । समाचार मिलते ही स्वामीजी अहमदाबाद गये । १३ अक्टूबर पूज्य स्वामी ऊद्धवदासजी महाराज का स्थूल शरीर डोली में रखकर कई संत व प्रेमी राम नाम की धुनि लगाते श्मशाम भूमि पहुंचे । स्वामीजी ने वहां दिवंगत आत्मा के लिए प्रभु से प्रार्थना की । तत्पश्चात् स्थूल शरीर अग्नि को समर्पित किया । ब्रह्मलीन संत ऊद्धवदासजी महाराज के देह त्यागने के चौथे दिन उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई ।

२५ अक्टूबर संत ऊद्धवदासजी की त्रयोदशी पर सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज एंव प्रेम प्रकाश मंडल के अन्य संतों ने संत ऊद्धवदासजी

को श्रद्धांजलि अर्पित की । इस अवसर पर पूज्य स्वामीजी ने कहा कि बाल्यवस्था से ही संत ऊद्धवदासजी से मेरा स्नेह सम्बंध था । हम दोनों ने एक साथ ही सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज से गुरुमंत्र की दीक्षा ली थी । दोनों ने मिलकर सत्गुरु महाराजजी की सेवा एवं भ्रमण किया । उनकी स्मृतियां अविस्मरणीय हैं । संत ऊद्धवदासजी संतोषी संत थे, वे सदैव मुस्कारते रहते थे । वे सादगी और नम्रता की मूर्ति थे । वे प्रेम प्रकाश मंडल रूपी माला के एक अमूल्य मोती थे ।

३० अक्टूबर स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये । शीत काल का समय था । प्रातः स्वामीजी अपनी कुटिया में अन्य प्रेमियों के साथ बैठे थे । तब एक प्रेमी सलामतराय ब्रजवाणी ने स्वामीजी से कहा कि अपना स्वेटर उतारकर मुझे दें, मैं पहनूंगा । स्वामीजी ने संत सन्मुखलाल से कहा कि एक स्वेटर निकाल कर सलामतराय को दो । सलामतराय ने कहा कि अन्य स्वेटर नहीं जो ऊनी स्वेटर आपने पहना है, वही चाहिए । स्वामीजी ने तत्काल ही अपना स्वेटर उतारकर उसे दे दिया । सलामतराय स्वामीजी का ऊनी स्वेटर प्राप्त कर प्रसन्न हुआ । स्वामीजी अपने सुख के लिए कोई विचार नहीं करते थे । दूसरों को सुखी करने में उन्हें आनंद आता था ।

२ नवम्बर दीपावली के दिन कुछ प्रेमी स्वामीजी को बम्बई ले गये । रात को आप आश्रम लौट आये । ४ नवम्बर चन्द्र दर्शन के दिन प्रातः स्वामीजी ने कार्तिक कथा प्रारंभ की । कार्तिक मास के पंद्रह दिन प्रातः स्वामीजी कार्तिक कथा के साथ श्री गुरुग्रन्थ साहबजी की पवित्र वाणी की व्याख्या कर मार्गदर्शन करते थे । १३ नवम्बर गोपाष्टमी के दिन राधेश्याम गौ शाला में स्वामीजी ने गौ सेवा के सम्बंध में व्याख्या दिया । १६ नवम्बर कार्तिक एकादशी के दिन प्रातः प्रवचन करने के पश्चात् पूज्य स्वामीजी हजारों प्रेमियों के साथ 'हरे कृष्ण हरे कृष्ण' की धूम मचाते श्मशान भूमि आये । वहां स्वामीजी एवं संत तिलोकदास ने व्याख्यान दिये । संत जीवण घोट ने 'आज तो मोरे श्याम आये' की धुनि लगाई । १८ नवम्बर प्रातः स्वामीजी ने कार्तिक कथा का समापन करते हुए श्री गुरुनानक देवजी के जीवन की प्रेरणादायक घटनाएं सुनाई । १६ नवम्बर स्वामीजी, सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज से सिन्धुनगर आश्रम पर पधारने हेतु प्रार्थना करने

पूना गये । २१ नवम्बर स्वामीजी आश्रम पर लौट आये । २१ नवम्बर से २ दिसम्बर तक सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज का सत्संग कार्यक्रम शिवाजी पार्क दादर, बम्बई में आयोजित किया गया । २७-२८ नवम्बर स्वामीजी सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज के साथ बम्बई में ठहरे और वहां प्रवचन किये ।

३ दिसम्बर चन्द्र दर्शन के दिन सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराजं सिन्धुनगर आश्रम पर पधारे । हर्षोल्लास से उनका स्वागत सत्कार किया गया । सायंकाल सत्संग में स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी सर्वानदंजी महाराज का अभिनंदन करते हुए, कहा कि हमारे भाग्योदय हुए हैं जो सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज पधारे हैं । उनके आगमन से यहां मेला सा लग गया है । सत्गुरु महाराज ने यहां हमें १२ दिन तक अमृत पान कराया । सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज, संत मुरलीधरजी व अन्य संतो ने १२ दिन अमृत वर्खा कर तप्त हृदयों को शान्ति प्रदान की। १४ दिसम्बर सायंकाल सत्संग में स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज का आभार मानते हुए कहा कि उनकी असीम अनुकंम्पा दास पर सदैव रही है । यह स्थान भी उनका ही है मैं तो उनके श्रीचरणों का दास हूं । सत्गुरु महाराज का दर्शन ही सुखदायी है, वह सब को आनंद देने वाले हैं । सेवा करने में कोई भूल हो गई हो तो मुझे क्षमा करें ।

५ जनवरी १९६८ पूज्य स्वामीजी कोपरी कालोनी, थाना पधारे । वहां उन्होंने तीन दिन तक प्रवचन किये । ८-९ जनवरी स्वामीजी ने कुर्ला बम्बई में अमृत वर्खा की । ११ जनवरी सायंकाल सत्संग में स्व. श्री लाल बहादुर शास्त्रीजी की पुण्य तिथि के अवसर पर स्वामीजी ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की । २१ जनवरी आश्रम में शहीद हेमू कालाणी का शहीदी दिवस मनाया गया । स्वामीजी ने वीर हेमू कालाणी की राष्ट्र भक्ति का वर्णन किया । २६ जनवरी प्रातः स्वामीजी ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया । सायंकाल सत्संग में उन्होंने गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में अपने विचार व्यक्त किये । ३० जनवरी स्वामीजी ने महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की । २८ फरवरी शिवरात्रि के दिन पूज्य स्वामीजी ने भगवान शंकर की कथाएं सुनाईं ।

प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव ११ अप्रैल से १४ अप्रैल अमरापुर स्थान जयपुर में आयोजित किया गया । उसी उत्सव के सम्बंध

में स्वामीजी ७ अप्रैल जयपुर अमरापुर स्थान पहुंचे । स्वामीजी ने सर्व प्रथम सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की मूर्ति को दण्डवत् प्रणाम कर तत्पश्चात् स्वामी सर्वानंदजी महाराज को प्रणाम किया । १० अप्रैल वहां स्वामी गुरुमुखदासजी महाराज की पुण्यतिथि मनाई गई । स्वामीजी ने संत गुरुमुखदासजी के गुणों का वर्णन किया । ११ अप्रैल स्वामी सर्वानंदजी महाराज ने सनातन धर्म-ध्वज फहराकर उत्सव आरंभ किया। १३ अप्रैल पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि इस उत्सव में इस वर्ष सत्गुरु महाराज की यह शिक्षा ग्रहण करें:-

टेऊँ क्रोध न कीजिये, मन में शान्ति धार ।
शान्ति से सुख होत है, पाप ताप प्रहार ॥

क्रोध मनुष्य को अंधा और बहरा बना देता है । क्रोध से शारीरिक एवं मानसिक हानि होती है । क्रोध आध्यात्मिक व व्यावहारिक उन्नति में बाधक है । जब क्रोध आवे तब पानी पीना चाहिए । जल पीने से क्रोध शांत होगा । जो क्रोध करे उसके मुंह पर पानी के छीटे मारेंगे तो उसका क्रोध कम हो जायेगा । जब क्रोध आये तो अपना मुंह दर्पण में देखें, आपका क्रोध कम हो जायेगा । एक बहन क्रोधी स्वभाव वाली थी । उसने अपने क्रोध को कम करने के लिए एक संत की शरण ली । महात्मा ने एक बोतल में जल भरकर उसमें तुलसी के पत्ते डालकर उस माता को वह तुलसी जल वाली बोतल देते हुए कहा कि जब क्रोध आये तब इस बोतल से थोड़ा जल निकाल कर पीना । महात्मा की आज्ञानुसार उस बहन ने तुलसी जलका प्रयोग किया और उसका क्रोध कम हो गया । एक बार एक व्यक्ति संत विनोबा भावे के पास आया और उनसे प्रार्थना की कि उसे क्रोध कम करने का कोई उपाय बताए । संत विनोबाजी ने कहा "बचपन में मुझे भी क्रोध आता था। मैं अपने साथ मिश्री रखता था । जब भी क्रोध की भावना पैदा होती थी, मैं अपने मुंह में मिश्री डालता था, ऐसा करने से मेरा क्रोध कम हो गया । दूसरा उपाय यह है कि जब भी क्रोध आये, स्वयं पर नियंत्रण धारण करके शीघ्र आवेश में न आए । जब भी कोई प्रतिकूल बात सुने या प्रतिकूल घटना घटित हो तब धीरज धारण करें, धीरे धीरे आपका क्रोध कम हो जायेगा।

तीसरा उपाय, जब भी क्रोध आवे तो एक दो तीन ऐसे दस अंक गिनती करें तो आपका क्रोध कम हो जायेगा। क्रोध करते समय मनुष्य की जिन्हा बहुत तीव्र हो जाती है इसलिए उसे रोकने के लिये उपर्युक्त साधन आवश्यक हैं। ये सरल साधन आपका क्रोध कम कर देंगे।

२० अप्रैल स्वामीजी सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज से आशीर्वाद लेकर ब्रज-भूमि में पधारे। वहां स्वामीजी ने एक सप्ताह भगवान श्रीकृष्ण की अनुपम रासलीलाओं का आनन्द लिया। २८ अप्रैल स्वामीजी हरिद्वार आये। वहां स्वामीजी ने प्रेमियों के साथ गंगा मैया में स्नान किया। उन्होंने संतों का भंडारा भी आयोजित किया साथ ही विरक्त महात्माओं से ज्ञान गोष्ठी भी की। १६ मई पूज्य स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये।

२२ मई कवि पहिलाजरामजी ब्रह्मलीन हुए। उनका स्थूल शरीर उनके स्थान देवलाली लाया गया। सिंघ से ही स्वामीजी का उनके साथ स्नेह सम्बन्ध रहा। कवि की अन्तयेष्टि में सम्मिलित होने के लिए स्वामीजी देवलाली पधारे। स्वामीजी ने कवि पहिलाजरामजी को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि वे महान कवि थे। सिंध में, घर घर में उनके भजन गाये जाते थे। सिन्धी गायक उनकी वाणी प्रेम व श्रद्धा से गाते हैं।

५ मई कवि पहिलाजराम के तेरहवें दिन (त्रयोदशी) पर सभी संतों ने श्री नारायणदास को कवि की गद्दी पर विराजमान कर उनका नाम श्री नारायणप्रकाश रखा। पूज्य स्वामीजी ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए, कवि पहिलाजराम के गुणों का वर्णन किया। २८ मई आश्रम में श्री पंजूराम वर्मा ने वीर सावरकर जयन्ती का आयोजन किया। पूज्य स्वामीजी ने पुष्पांजलि देते हुए कहा कि वीर सावरकर सच्चे राष्ट्र भक्त हैं। देश की स्वतंत्रता के लिए उनकी कुरबानियां एवं त्याग प्रशंसनीय हैं। वे निडर, निर्भीक एवं क्रांतिकारी देश भक्त हैं, किन्तु हमारी जाति ने उनका उतना सन्मान नहीं किया है। इसी अवसर पर श्री पंजूराम वर्मा, श्री गोबिन्दराम भाटिया, प्रो. प्रियतमदेव पमनाणी, श्री चांडूमल परदेसी ने भी वीर सावरकर के जीवन पर प्रकाश डाला।

८-९ जून सिन्धुनगर आश्रम में सतगुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज

की पुण्य तिथि मनार्ध गई । संत गोपारामजी, पूज्य स्वामीजी, कवि वासुदेव, संत भजनदास एवं अन्य संतों ने सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामी टेऊँरामजी महाराज के गुणों का वर्णन किया । १० जून प्रातः पूज्य स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की अमूल्य वाणी का अभ्यास कर उनकी शिक्षाओं पर चलने का प्रयास करें ।

वर्षा ऋतु के चार महीने स्वामीजी आश्रम में ही नियमित रूप से सत्संग प्रवचन करते रहे । प्रातः के समय कुछ प्रेमी स्वामीजी के पास शास्त्र अध्ययन के लिए आते थे । स्वामीजी उन्हें विचार सागर, विचार माला एवं अन्य वेदान्त सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ाते थे । महाराज नारायणदास नित नियम प्रातः पूज्य स्वामीजी को धार्मिक पुस्तकें पढ़कर सुनाते थे। स्वामीजी रहस्यात्मिक विषयों पर प्रकाश डालते थे ।

१२ जुलाई गुरु पूर्णिमा के पावन दिन स्वामीजी ने गुरु महिमा के सम्बंध में प्रवचन किया । १४ जुलाई साधु हीरानंदजी की पुण्य तिथि आश्रम में मनाई गई । स्वामीजी ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि साधु हीरानन्द ने सिंध में नारी जागृति उत्पन्न की । उन्होंने दीन दुखियों, बीमारों की स्वयं सेवा की । वे सिन्ध के स्वामी विवेकानंद थे । १३ अगस्त रक्षाबन्धन के पवित्र दिन कई प्रेमियों ने स्वामीजी को राखियां बांधी । उसी दिन स्वामीजी का जन्म दिन था । उनका जन्म दिन पहली बार आश्रम में मनाया गया । परसराम मसंद, परसराम कांग्रेसी, गोबिन्दराम भाटिया, दयाल 'आशा' एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी के त्यागमय जीवन का उल्लेख किया । २५ अगस्त जन्माष्टमी के दिन स्वामीजी ने भगवान श्याम सुन्दर की अनुपम लीलाओं का वर्णन करते हुए उनकी महिमा का भजन गाया ।

संत हरिचूराम साहब की पुण्य तिथि के सम्बंध में १८ सितम्बर रात्रि को स्वामीजी ने उनके स्थान पर प्रवचन करते हुए संत हरिचूरामजी के कुछ संस्मरण सुनाये और उनकी महिमा का भजन गाया । २ अक्टूबर सायंकाल सत्संग में स्वामीजी ने महात्मा गांधी को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए उनकी देश भक्ति और ईश्वर भक्ति का वर्णन किया । स्वामी ग्वालानदजी महाराज की पुण्य तिथि उत्सव के सम्बन्ध में स्वामीजी

१६ अक्टूबर पूना गये। १६-१७ अक्टूबर वहां स्वामीजी ने स्वामी ग्वालानंदजी महाराज के काव्य एवं जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनकी विद्वता एवं वेदान्त सम्बंधी विचार धारा का वर्णन किया। १८ अक्टूबर स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम लौट आये। ११ बजे स्वामीजी ने संत नारायणप्रकाश के स्थान पर स्वामी ग्वालानंद महाराज के सम्बंध में विचार व्यक्त करते हुए उनकी महिमा गाई। १६ अक्टूबर दिवाली के दिन कुछ श्रद्धालु स्वामीजी को बम्बई ले गये। रात को ही वे लौट आये। २१ अक्टूबर चन्द्र दर्शन के दिन प्रातः स्वामीजी ने कार्तिक कथा प्रारंभ की। २८ अक्टूबर गोपाष्टमी के दिन राधेश्याम गौ शाला में स्वामीजी ने गौ सेवा सम्बन्धी विचार व्यक्त किये। १ नवम्बर प्रातः सत्संग के पश्चात् स्वामीजी हजारों प्रेमियों व संतों के साथ श्मशान भूमि में पधारे। वहां स्वामीजी ने व्याख्यान करते हुए कहा कि यह जगत् नश्वर है और जगत् के सब पदार्थ भी क्षणभंगुर है। संत कबीरजी भी अपनी वाणी में कहते हैं-

रहना नहीं देस बिराना है।
यह संसार झाड़ और झांखर आग लगे बर जाना है।
यह संसार कागद की पुड़िया बूंद पड़े घुल जाना है।
यह संसार काटों की बाड़ी उलझ पुलझ मर जाना है।
कहत कबीर सुनो भाई साधो सत्गुरु नाम ठिकाना है।

प्रेमियो ! जगत् में अनासक्त भाव से रहकर प्रभु एवं सत्गुरु की शरण लें। श्वासों का सदुपयोग करें।

४ नवम्बर कार्तिक पूर्णिमा के दिन प्रातः स्वामीजी ने कार्तिक कथा का समापन किया। उसी दिन श्री गुरुनानकदेवजी के जन्म दिन उपलक्ष में स्वामीजी ने श्री गुरुनानकदेवजी महाराज के जीवन-कार्यों पर प्रकाश डाला।

श्री पेसूमल प्रभदास ककवाणी, श्री दुलहनोमल तलरेजा एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी से प्रार्थना की कि इस मंदिर को भव्य एवं सुन्दर रूप में बनाया जाय। स्वामीजी ने कहा कि इस कार्य के लिए हमने धन संग्रह तो नहीं किया, बहुत खर्च आयेगा। प्रेमियों ने कहा "कृपया

आप आज्ञा करें और आशीर्वाद दें कि हम मंदिर के नव निर्माण का कार्य आरम्भ करें, परमात्मा सहायता करेंगे।" स्वामीजी ने प्रेमियों का उत्साह देखकर कहा कि २१ नवम्बर पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज यहां पधारेंगे, उनके पवित्र कर कमलों से भूमि पूजन करवाकर मंदिर के निर्माण का कार्य आरम्भ करें।

६ नवम्बर स्वामीजी, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज को आमंत्रित करने के लिए पूना गये। स्वामीजी ने पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से विनय की कि कृपया आप सिन्धुनगर में प्रेम प्रकाश आश्रम के नए मंदिर का भूमि पूजन करने हेतु वहां पधारने की कृपा करें।

८ नवम्बर से बम्बई में सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का कार्यक्रम रखा गया। वे प्रतिदिन शिवाजी पार्क में सत्संग प्रवचन करते थे। १३ नवम्बर पूज्य स्वामीजी, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से मिलने के लिए बम्बई गये। १३-१४ नवम्बर स्वामीजी ने वहां प्रवचन किए। २२ नवम्बर शुक्रवार सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर-५ में पधारे। स्वामीजी ने उनका स्वागत करते हुए कहा कि कल चन्द्र दर्शन का दिन था किन्तु हमारे लिए आज चांद का दिन है क्योंकि सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने यहां पधारकर प्रेम व ज्ञान के प्रकाश से आलोकित किया है। २८ नवम्बर सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने नए मंदिर के निर्माण हेतु भूमि पूजन करवाया। उन्होंने स्वामीजी एवं प्रेमियों को साधुवाद देते हुए कहा कि आप उत्साह व उमंग के साथ सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का झंडा झुला रहे हैं, आपका झंडा परमात्मा झुलाएंगे। भव्य मंदिर बनाने का कार्य आरंभ हो रहा है। भगवान एवं सत्गुरु महाराज की कृपा से शीघ्र ही मंदिर बन जायेगा। इस अवसर पर स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज एवं अन्य संतों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह कार्य आपका ही है, दास तो अशक्त है। सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज यहां पधारे हैं, यह मंदिर तीर्थ स्थल बन जायेगा।

प्रतिदिन प्रातः एवं सायंकाल सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज स्वामी बसंतराम, स्वामी माधवदास, स्वामी चंदन प्रकाश एवं महाराज मुरलीधर अपनी ज्ञान गंगा से प्रेमियों को लाभन्वित करते रहे। ऐसा लगता

था कि आश्रम में कुंभ का मेला लगा हुआ हो। ५ दिसम्बर सायंकाल स्वामीजी ने सतगुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यहां गुरु महाराजजी की उपस्थिति के कारण यह तीर्थ स्थल बन गया है।

तीर्थ दो प्रकार का, चल पुन अचल पछान।
गंगा आदिक अचल हैं, चल हैं संत सुजान ।।

तीर्थ दो प्रकार के होते हैं। एक प्रकार के तीर्थ अपने ही स्थल पर सदैव स्थित रहते हैं। जैसे गंगा मैया का आनंद प्राप्त करना है तो हरिद्वार जाना ही पड़ेगा। गंगा मैया यहां नहीं आवेंगी। दूसरे प्रकार तीर्थ चल हैं, जो चलते फिरते हैं, वे तीर्थ हैं संत सुजान। वे यत्र तत्र जाकर ज्ञान की गंगा प्रवाहित करते हैं और लोगों को सत् मार्ग दिखाकर उनका कल्याण करते हैं। उत्सव के दिनों में यदि किसी सेवक से कोई भूल हो गई हो तो मुझे क्षमा करें।

११ जनवरी १९६९ पूज्य स्वामीजी ने राष्ट्र भक्त स्व. श्री लाल बहादुर शास्त्री को श्रद्धाजंलि अर्पित की। २१ जनवरी हेमू कालाणी के शहीदी दिवस पर पूज्य स्वामीजी ने श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि हेमू कालाणी सिन्ध का भगतसिंह था। जिसने देश की आजादी के लिए अपना बलिदान किया, हंसते हंसते फांसी चढ़ गया। २३ जनवरी नेताजी हाई स्कूल में श्री सुभाषचन्द्र बोस की जयन्ती पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में मनाई गई। श्री परसराम मसंद ने स्वामीजी का स्वागत सत्कार किया। पूज्य स्वामीजी ने श्री नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की वीरता एवं देश भक्ति का वर्णन किया। २६ जनवरी पूज्य स्वामीजी ने गणतंत्र दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला। ३० जनवरी महात्मा गांधी की पुण्य तिथि मनाई गई, पूज्य स्वामीजी ने उन्हें श्रद्दा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि वे महान राष्ट्र भक्त और ईश्वर भक्त थे। उनका जीवन हमारे लिए प्रेरणा स्त्रोत है।

१३-१४ फरवरी स्वामीजी ने कुर्ला में शिवरात्रि उत्सव के अवसर पर प्रवचन करते हुए भगवान शंकर की महिमा गाई। ४ मार्च होली के दिन सिन्धुनगर आश्रम में स्वामीजी ने भक्त प्रह्लाद के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाते हुए कहा कि भक्त प्रह्लाद के मन में भगवान के प्रति

आस्था और विश्वास था। आप भी श्रद्धा व विश्वास के साथ भगवद् भजन करें।

१ अप्रैल १९६९ से उज्जैन में कुम्भ मेला आरम्भ होने वाला था। इसलिए प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव उज्जैन में आयोजित किया गया। उसी उत्सव के सम्बंध में पूज्य स्वामीजी २८ मार्च उज्जैन पधारे। प्रेम प्रकाश मंडल की ओर से वहां छावनी लगाई गई। सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज भी वहां पधारे। ३१ मार्च वहां स्वामी गुरुमुखदासजी महाराज की पुण्य तिथि मनाई गई। सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज एवं स्वामीजी ने स्वामी गुरुमुखदासजी महाराज के जीवन कार्यों पर प्रकाश डाला। १ अप्रैल प्रातः सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज ने ध्वज फहराकर वार्षिक उत्सव का श्री गणेश किया। सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज ने अन्नक्षेत्र भी आरंभ किया। वहां प्रातः व सायंकाल सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज, स्वामी बसंतराम, पूज्य स्वामी शान्तिप्रकाश, माधवदास, स्वामी चंदनराम, स्वामी जीवन मुक्त, स्वामी स्वयंप्रकाश, स्वामी मुरलीधर, संत हरिदासराम, संत भजनदास एवं तथा अन्य संत सत्संग प्रवचन करते रहे १३ अप्रैल वैसाखी के पावन दिन पूज्य स्वामीजी ने अन्य संतों के साथ पवित्र क्षिप्रा नदी में स्नान किया। कुम्भ मेले में स्वामीजी ने कई संतों महात्माओं से ज्ञान गोष्ठी की। वहा एक दिन पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

तन मन धन वच प्रान से करना पर उपकार।
ऐसा पुज्य न और को, टेऊँ इस संसार॥

प्रेमियो! तन, मन, धन व वचन से दूसरों का भला करें। परोपकार जैसा और कोई पुण्य नहीं है। मानव जीवन में ही आप परोपकार के कार्य कर सकते हैं। मानुष देह उतम योनि है। इसी योनि में ही धर्म अर्धम का आप विचार कर सकते हैं। मनुष्य पाप कर्म से हट कर सत्कर्म कर सकता है। संसार में सभी लोग सुख चाहते हैं। किन्तु सुख तो पुण्य का परिणाम है। पाप कर्म का परिणाम, कष्ट क्लेश होता है। यदि आप सुखी रहना चाहते हैं तो दूसरों को सुखी करें। यह शरीर तो नश्वर है। प्राण निकलने के बाद इस सुन्दर काया को अग्नि को सौंप दिया जायेगा। इसलिए जितना हो सके

इस शरीर का सदुपयोग करें। "परोपकाराय इदं शरीरं" दूसरों का भला करने में मानव जीवन की सार्थकता है। पशुओं के मरने के बाद उनका चमड़ा भी उपयोगी होता है, किन्तु मनुष्य मृत्यु के पश्चात् किसी काम का नहीं इसलिए प्रेमियो! मानव तन पाकर दूसरों का भला करें। सत्गुरु महाराज भी जीव को जाग्रत करते हुए कहते हैं।

जग में कीना नहीं उपकार,
पेट भरन हित तुमने, कर्म कीए बदकार।
आशा तृष्णा के वश होइके, कीने पाप अपार।
नेक कर्म तुमने एक न कीना, पड़ा लोभ के लार।
मानुष तन दुर्लभ यह तुमने दीआ भोगन में डार।
दीन जनों को सुख ना दीआ, तांते तोह धिकार।
दया धर्म बिन तेरा जीवन सारा है बेकार।
कहे टेऊँ अब भी कछु करले जांते हाये उद्धार।

सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने अपने भजन में परोपकार की कितनी न महिमा गाई है। परोपकारी मनुष्य स्थूल शरीर त्यागने के पश्चात् भी अमर है। आज भी सारा संसार महर्षि दधीच, पक्षीराज जटायु, राजा शिबि, महाराजा दिलीप एवं अन्य परोपकारी, जिन्होंने परोपकार के लिए अपना जीवन अर्पित किया, उनकी शौर्य गाथा गा रहा है।

प्रेमियो! आप भी परोपकार के कार्यों में मानव जीवन सफल करें। सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने कितने ही परोपकार के कार्य किये। उनके धर्म पीठ के अधिकारी सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज भी अनेक परोपकार के कार्य कर रहे हैं। आप भी तन मन धन से दूसरों की सेवा करें।

कुम्भ मेले की समाप्ति के पश्चात् पूज्य स्वामीजी, सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज के साथ इन्दौर पहुंचे। वहां उन्होंने महाराज मुरलीधर के स्थान पर एक सप्ताह सत्संग प्रवचन किया। २० मई सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये। ६ ७ जून आश्रम में सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की पुण्य तिथि मनाई गई। पूज्य स्वामीजी, संत गोपाराम,

संत शीतलदास, संत भजनदास एवं अन्य संतो ने सतगुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की महिमा गाते हुए उनके जीवन के कुछ प्रेरणादायक प्रसंग सुनाये ।

१७ जुलाई आश्रम में गुरु पूर्णिमा का उत्सव श्रद्धा व उमंग के साथ मनाया गया । कई श्रद्धालुओं ने सतगुरु महाराज की पूजा अर्चना की । पूज्य स्वामीजी ने गुरु महिमा का बखान किया ।

१६ अगस्त रक्षा बंधन के पावन दिन पूज्य स्वामीजी का जन्म दिवस न्यू इरा हाई स्कूल के हाल में मनाया गया । डॉ. दयाल 'आशा', श्री गोविन्दराम भाटिया, जीवणदास आहूजा एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी के जीवन कार्यों पर प्रकाश डाला । पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि जो भी कार्य हुआ है और हो रहा है, वह ईश्वर की अनुकम्पा एवं सतगुरु महाराजजी की कृपा का ही फल है । आप भी प्रभु की शरण लेंगे तो आपकी जीवन नैया भव सागर से पार हो जायेगी।

२५ सितम्बर रात्रि को स्वामीजी ने संत साईं हरिचूराम साहब के स्थान पर, उनकी पुण्य तिथि के अवसर पर सत्संग करते हुए कहा कि संत हरिचूरामजी साहब ने कई दुखियों के दुख दूर किये । वे साधारण लोगों जैसे धंधा व्यवसाय करते थे, जबकि उन्हें सिद्धि प्राप्त थी । २० अक्टूबर सिन्धूनगर- ५ में विजयदशमी का उत्सव स्वामीजी की अध्यक्षता में मनाया गया । स्वामीजी ने विजयदशमी के सम्बध में व्याख्यान करते हुए उत्सव के आयोजकों को साधुवाद दिया ।

४ नवम्बर को पूज्य स्वामीजी, स्वामी ग्वालानंद आश्रम पूना में पधारे । वहां स्वामी ग्वालानंदजी महाराज का पुण्य तिथि उत्सव मनाया जा रहा था । वहां स्वामीजी ने स्वामी ग्वालानंदजी महाराज के काव्य एवं जीवन पर प्रकाश डालते हुए श्रद्धा- सुमन अर्पित किये । ३ नवम्बर स्वामीजी सिन्धूनगर आश्रम लौट आये ।

८ नवम्बर दीपावली के दिन कुछ प्रेमी स्वामीजी को बम्बई ले गये । रात की वे आश्रम पर लौट आये । १० नवम्बर चन्द्र दर्शन के दिन प्रातः स्वामीजी ने श्री कार्तिक कथा प्रारंभ की । कई प्रेमी प्रतिदिन प्रातः काल उपस्थित रहकर स्वामीजी की कथा श्रवण कर लाभान्वित होते थे । १८ नवम्बर गोपाष्टमी के दिन स्वामीजी ने गाय

की महिमा गाते हुए गौ सेवा पर बल दिया । उसी दिन सायंकाल श्री राधेश्याम गौशाला में गोपाष्टमी उत्सव स्वामीजी की अध्यक्षता में मनाया गया । स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि गाय की सेवा उत्तम सेवा है । स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने आज के दिन गौ चराने का कार्य आरंभ किया । भगवान श्याम सुन्दर को स्वयं से अधिक गाय प्रिय थी । आप भी श्रद्धा से गौ माता की सेवा करें ।

२१ नवम्बर कार्तिक एकादशी के दिन प्रातः स्वामीजी के साथ हजारों श्रद्धालु प्रेमी राधेश्याम की धूम मचाते श्मशान भूमि पधारे । वहां स्वामीजी ने श्मशान भूमि के कार्य के लिए अनुरोध किया । एकादशी की रात्रि को आश्रम में स्वामीजी और अन्य संतो ने अमृत वर्खा की ।

२४ नवम्बर श्री गुरुनानक देवजी का जन्म दिन आश्रम में मनाया गया । प्रातः स्वामीजी ने श्री कार्तिक कथा की समाप्ति के बाद श्री गुरुनानक देवजी की वाणी की व्याख्या की । तप्तश्चात् स्वाजी ने प्रमियों के साथ आश्रम और गौशाला की परिक्रमा की । ११ बजे स्वामीजी संत शेवादासजी के स्थान मट मंदिर में पधारे । वहां उन्होंने श्री गुरुनानक देवजी की महिमा गाई । रात को १२ बजे वे सिन्धुनगर- २ में आये जहां श्री पहिलोमल कुकरेजा ने स्वामीजी द्वारा गरीब बहनों को कम्बल वितरित करवाए । २६ नवम्बर स्वामीजी सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज को मनाने के लिए पूना गये । २८ नवम्बर से सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने बम्बई में सत्संग यज्ञ आरंभ किया । स्वामीजी ने भी वहां उनके साथ सत्संग प्रवचन किये ।

१० दिसम्बर गुरुवार के दिन पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज सिन्धूनगर आश्रम पधारे । सायंकाल सत्संग में स्वामीजी ने उनका स्वागत सत्कार करते हुए कहा-

संत मिले, सत्संग मिले, मंगता और महिमान ।
तुलसी भाग उदय के, ये चार निशानी जान ॥

प्रेमियो ! हमारा सौभाग्य है आज यहाँ सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज पधारे हैं । उनके साथ अन्य संत सज्जन भी आये हैं । मैं सब का हार्दिक अभिनन्दन करता हूं । सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने २४ दिसम्बर तक प्रातः व सायंकाल अमृत वर्खा करते हुए प्रेमियों

को अमृत पान कराया। २४ दिसम्बर स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज का आभार व्यक्त करते हुए कहा-

सत्गुरु पूरन पाइया, होया कार्ज रास।
कह टेऊँ मंगल भया, टूटी यम की फास॥

पूजनीय सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज परिपूर्ण गुरु थे। उन्होंने 'श्री सत्नाम साक्षी' मंत्र देकर हमारा आध्यात्मिक मार्ग प्रशस्त किया। सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज भी उनके ही रूप हैं। उनके दर्शन करने से आनन्द की उपलब्धि होती है। उनका नाम ही है सर्वानंद अर्थात् सबको आनन्द देने वाला। मेरा मन चाहता है कि सत्गुरु महाराजजी सदैव यहां ठहरें किन्तु यह सम्भव नहीं। उनके तो लाखों प्रेमी हैं। कल वे यहां से प्रस्थान करेंगे, मन भर आता है। उनकी एवं अन्य संतों व प्रेमियों की सेवा करने में कोई त्रुटि हुई हो तो मुझे क्षमा करें।

२८ दिसम्बर स्वामीजी ने आश्रम में महात्मा गांधीजी की जन्म-शताब्दी के अवसर पर कल्याण, अम्बरनाथ और सिन्धूनगर के हरिजन भाई- बहिनों का प्रीतिभोज आयोजित किया। इसी अवसर पर स्वामीजी ने महात्मा गांधी के जीवन व सिद्धांतों का वर्णन करते हुए कहा कि हम सब एक हैं, एक प्रभु की संतान हैं। इसलिए हमें सारे देश में प्रेम व भाई चारे का वातावरण उत्पन्न करना है तथा गांधीजी के आदर्शों पर चलने का प्रयास करना चाहिए।

१० जनवरी १९७० हालाणी दरबार के महंत संत गोबिन्ददासजी आश्रम में पधारे। स्वामीजी ने उनका स्वागत सम्मान करते हुए कहा कि आज हमारा भाग्योदय हुआ है कि सिन्धी समुदाय के वयोवृद्ध संत स्वामी गोबिन्ददासजी यहां पधारे है। उन्होंने हमें घर बैठे दर्शन देकर कृतार्थ किया है। अब उनका स्थान अजमेर में है। वृद्धावस्था में भी वे देश के विभिन्न नगरों में जाकर प्रेमियों को प्रभु नाम का रसास्वादन करा रहे हैं। संत बाबा गोबिन्ददासजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि चित्त की वृति नाम स्मरण में लगाएं।

१५ फरवरी संत डामारामजी की पुण्य तिथि उनके स्थान सिन्धुनगर-४ पर मनाई गई, रात्रि को वहां स्वामीजी ने सत्संग करते हुए कहा

कि संत डामारामजी ग्रहस्थ थे किन्तु उनकी वृत्ति सांसारिक व्यवहार में नहीं लगती थी। वे कुछ समय हरिद्वार में रहे। वहां उन्होंने एकांत स्थल पर भगवद् भजन किया। भगवद् भजन करते करते वे संत बन गये।

२५ मार्च चैती चांद के दिन रात्रि को स्वामीजी ने संत आत्मप्रकाशजी की पुण्य तिथि के अवसर पर उनके स्थान पर प्रवचन करते हुए कहा कि मेरा सौभाग्य था कि मैंने कई बार पीरगोठ में स्वामी आत्मप्रकाशजी के स्थान पर सत्संग किया। उनके सम्पर्क में मैंने बहुत कुछ सीखा। आतिथ्य सत्कार करना यदि सीखना हो तो संत आत्मप्रकाशजी से सीखें।

प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव १७ अप्रैल से अमरापुर स्थान जयपुर में आयोजित किया गया। इसी उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामीजी १२ अप्रैल जयपुर पधारे। स्वामीजी ने सर्व प्रथम सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज के श्री विग्रह को नतमस्तक प्रणाम किया। तत्पश्चात् सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से मिले। १८ अप्रैल स्वामी गुरुमुखदासजी महाराज की पुण्य तिथि मनाई गई। स्वामीजी ने स्वामी गुरुमुखदासजी को श्रद्धांजलि अर्पित की। २० अप्रैल स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

सेवा कर अधिकार सम, याद राख यहबात।
सेवा से मेवा मिले, यह लोक उक्ति विख्यात॥

प्रेमियो ! संतों, सत्पुरुषों, सत्गुरु, ज्ञानीजनों एवं दीन दुखियों की सेवा ऐसी लग्न से करें जैसे अपने अधिकार प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ करते हैं। निष्काम भावना से सेवा करें। नित नियम सत्संग में जाकर हरि कथा श्रवण करें। सत्संग द्वारा तीनों प्रकार के दुख दूर होते हैं।

साध संग संसार में, दुलर्भ मनुष शरीर।
सत्संग सूं मिटत है, त्रिबिध ताप की पीर॥

२७ अप्रैल पूज्य स्वामीजी सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से आशीर्वाद लेकर अजमेर पहुंचे। वहां आदर्श नगर में स्वामी माधवदास जी के स्थान पर स्वामीजी ने चार दिन अमृत वर्खा की। अजमेर

में स्वामीजी, संत बाबा गोबिन्ददास के पास भी गये और उनसे ज्ञान गोष्ठी की। २ मई को स्वामीजी अहमदाबाद पधारे। वहां स्वामी टेऊंराम मंदिर, अम्बावाड़ी में स्वामीजी ने चार दिन तक प्रवचन किया। ७ मई स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये।

६- ७ जून सिन्धुनगर आश्रम में सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज की पुण्य तिथि उत्सव मनाया गया। संत गोपाराम, संत खानूराम, संत भजनदास, संगीताचार्य मास्टर चन्दर ने भक्ति संगीत की वर्खा की। ८ जून प्रातः काल स्वामीजी ने उत्सव की समाप्ति करते हुए कहा-

जहां सुमति, तहां सम्पति नाना।
जहां कुमति तहां विपति निधाना॥

प्रेमियो ! इस शुभ अवसर पर परमात्मा एवं सत्गुरु महाराज से सुमति का दान मांगे ! गोस्वामी तुलसीदासजी भी कहते हैं कि जहां सुमति है वहां सुख सम्पति है। कुमति विपदाओं को लाती है। इसलिए सुमति व सद्बुद्धि के लिए प्रभु से प्रार्थना करें। सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज भी गुरु महाराज से विनय करते हुए कहते हैं-

सत्गुरु मुझको दान दे, प्रेम भक्ति विश्वास।
कह टेऊँ नित सुमति दे, सतंनि मांहिं निवास॥

२०- २१ जून स्वामीजी ने कुर्ला बम्बई में प्रवचन किया। १९ जुलाई गुरु पूर्णिमा उत्सव सिन्धुनगर आश्रम में मनाया गया। पूज्य स्वामीजी ने गुरु की स्तुति गाते हुए कहा-

सत्गुर बुद्धि के नयन में, डारे अंजन ज्ञान।
कह टेऊँ तम भ्रम हर, दिखलावे भगवान॥

प्रेमियो ! हमारी आंखों में अज्ञान व भय का धुंध है, इसी कारण हम साक्षी स्वरूप का दर्शन नहीं कर सकते। जब कोई परिपूर्ण गुरु मिलता है, तब वह हमारी बुद्धि रूपी नयनों में ज्ञान रूपी अंजन डालता हैं। इस ज्ञान अंजन के कारण नेत्र निर्मल हो जाते हैं और प्रभु का दर्शन होता है। एक बार शिवाजी महाराज को अहंकार हुआ कि उनके पुरुषार्थ के कारण उनके राज्य में कई भवन व इमारतें बन रही हैं इसी कारण कई लोगों को रोजगार मिल रहा है, नहीं तो वे मजदूर

लोग भूखों मरते । शिवाजी महाराज का अहंकार दूर करने के लिये उनके सत्गुरु समर्थ स्वामी रामदासजी महाराज उन्हें जंगल में ले गये। वहां बड़े बड़े पत्थर पड़े थे। गुरु रामदासजी ने शिवाजी से कहा 'शिवा! मजदूरों को बुलाकर इन पत्थरों को तुड़वा दो । मजदूर आ गये, जैसे ही मजदूरों ने पत्थरों को तोड़ना आरंभ किया तो उनमें से एक मेढ़क कूदता निकला। उसी समय समर्थ गुरु रामदासजी ने कहा 'बेटा शिवा! इस मेढ़क को कौन खिला पिला रहा था?' शिवाजी महाराज गुरु के व्यंग्य को समझ गये । वे गुरु के श्री चरणों में नतमस्तक गिर कर क्षमा याचना करने लगे । उनके अहंकार का पटल हट गया । सच्चा गुरु शिष्य का अज्ञान दूर कर सत्य का भास कराकर उसका मार्ग दर्शन करता है। प्रेमियो! आप भी किसी परिपूर्ण गुरु की शरण लें, जो आपका उचित मार्ग दर्शन करे ।

२० अगस्त पूज्य स्वामीजी का जन्मदिन आश्रम में मनाया गया। प्रातः हवन यज्ञ के पश्चात् दरिद्रनारायण की सेवा की गई । सायंकाल विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया । प्रो. दयाल 'आशा' ने पूज्य श्री स्वामीजी के गुणों का वर्णन करते हुए कहा कि स्वामीजी महान कर्मयोगी संत हैं । हमारे सौभाग्य हैं कि हमें उनका सान्निध्य प्राप्त हुआ है । पूज्य स्वामीजी की असीम अनुकम्पा से जनता जनार्दन की सेवा हो रही है । इस अवसर पर प्रो. राम पंजवाणी ने भक्ति संगीत की वर्खाकरते हुए कहा कि स्वामीजी प्रेम व दया की प्रतिमूर्ति हैं। श्री गोविन्दराम भाटिया, श्री परसराम मसंद, श्री परसराम कांग्रेसी, श्री हीरालाल सभनदासाणी, श्री चांडूमल 'परदेसी' एवं जीवणदास आहूजा ने पूज्य स्वामीजी के जीवन कार्यों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आपने जो दास की महिमा गाई है, यह महिमा प्रभु परमात्मा एवं सत्गुरु महाराजजी की है । मैं इस स्तुति के योग्य नहीं हूँ । आज सब मिलकर मुझे आशीर्वाद दें कि मैं अपने जीवन में स्मरण व सेवा की ज्योति जगाता रहूँ।

२ सितम्बर जन्माष्टमी का उत्सव आश्रम पर धूमधाम से मनाया गया । पूज्य स्वामीजी ने भगवान श्रीकृष्ण की महिमा का भजन गाते हुए कहा कि श्री राधा के रग रग में श्रीकृष्ण का निवास था, वह

कितनी श्रद्धा व प्रेम से श्रीकृष्ण को पुकारती थी ! आप भी वैसी ही श्रद्धा व प्रेम से श्री कृष्ण को पुकारें, उनका स्मरण करें तो उनकी कृपा के पात्र बनेंगे । श्री चैतन्य महाप्रभु की भांति श्रीकृष्ण- भक्ति में तल्लीन हो जायें ।

२६ सितम्बर आश्रम में शहीद प्रेम रामचन्दाणी का शहीदी दिवस पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में मनाया गया । इस आयोजन में शहीद प्रेम रामचन्दाणी के पिता श्री रामसिंघ रामचन्दाणी भी पधारे । स्वामीजी ने श्रद्धाजंलि अर्पित करते हुए कहा कि श्री रामसिंघ रामचन्दाणी धन्य हैं जिन्होंने प्रेम जैसे वीर पुत्र को जन्म दिया, जिसने राष्ट्र की रक्षा करते हुए अपने प्राणों की आहुति दी । दयाल 'आशा' ने भी शहीद प्रेम के बलिदान का अपनी कविता द्वारा उल्लेख किया ।

५ अक्टूबर स्वामीजी संत ऊद्धवदासजी महराज के पुण्य तिथि उत्सव के सम्बंध में अहमदाबाद पधारे । वहां संत ऊद्धवदासजी के स्थान पर उन्होंने तीन दिन सत्संग प्रवचन करते हुए संत ऊद्धवदासजी के गुणों का वर्णन किया ।

डॉ. बंसीधर होतचन्द बदलाणी, बड़ौदा निवासी कुछ समय के लिए सिन्धुनगर आश्रम पर आकर ठहरे । वहां पूज्य स्वामीजी के श्री चरणों में बैठकर सत् शास्त्रों का अभ्यास करते हुए रोगियों की सेवा भी करते रहे ।

पूज्य स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज की पुण्य तिथि उत्सव पर स्वामीजी २४ अक्टूबर को स्वामी रामकृष्णजी के आश्रम पूना गये । वहां उन्होंने दो दिन पूज्य स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए उनकी वाणी की व्याख्या की । २६ अक्टूबर पूज्य स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम में लौट आये । २८ अक्टूबर दीपावली के पावन दिन प्रेमी, स्वामीजी को बम्बई ले गये । रात्रि को आप आश्रम पर लौट आये। ३० अक्टूबर चन्द्र दर्शन के दिन प्रात:काल स्वामीजी ने कार्तिक कथा प्रारंभ की । कई प्रेमी प्रात: श्री कार्तिक कथा का श्रवण कर लाभान्वित होते थे । प्रतिदिन स्वामीजी श्री गुरु ग्रन्थ साहब के किसी न किसी शब्द की व्याख्या भी करते थे । ६ नवम्बर गोपाष्टमी के दिन स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए गौ सेवा पर बल दिया । सायंकाल श्री राधेश्याम गौशाला में गोपाष्टमी उत्सव मनाया गया । मंत्री श्री नंदीराम टहलराम

ने पूज्य स्वामीजी एवं अन्य संतों का स्वागत सत्कार किया। स्वामीजी ने गौ की महिमा गाते हुए कहा कि गाय हम सब की मां है, उसकी रक्षा के लिए हमें संकल्प करना चाहिए।

१० नवम्बर कार्तिक एकादशी के अवसर पर प्रातः हज़ारों प्रेमी व संत, पूज्य स्वामीजी के साथ राम नाम की धुनि लगाते श्मशान भूमि आये। वहां स्वामीजी ने जगत् की नश्वरता प्रतिपादित करते हुए दान व स्मरण करने के लिए प्रोत्साहित किया। १३ नवम्बर श्री गुरुनानक देवजी के जन्म दिन पर प्रातः स्वामीजी ने श्री कार्तिक कथा, श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ एवं श्री गुरुग्रन्थ साहब के पाठ का समापन करते हुए श्री गुरुनानक देवजी के जीवन पर प्रकाश डाला। रात्रि को स्वामीजी ने सिन्धुनगर-२ एवं सिन्धुनगर-५ में सरदार राजलसिंघ बठीजा द्वारा आयोजित श्री गुरुनानकदेवजी के जन्म उत्सव में श्री गुरुनानकदेवजी की महिमा गाते हुए उनकी शिक्षाओं पर चलने का आग्रह किया।

१५ नवम्बर स्वामीजी, सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज को मनाने के लिए पूना गये। १७ नवम्बर से २६ नवम्बर दादर, बम्बई में सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज का सत्संग कार्यक्रम आयोजित किया गया। पूज्य स्वामीजी ने वहां २२ नवम्बर से २४ नवम्बर तक अमृत वर्खा की। ३० नवम्बर सोमवार के दिन सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज मंडली सहित सिन्धुनगर आश्रम में पधारे। स्वामीजी ने उनका सादर सत्कार किया। बारह दिन प्रातः एवं संध्याकाल सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज, स्वामी बसंतराम, स्वामी माधवदास, स्वामी जीवन मुक्त, स्वामी चन्दनराम, पंडित शीतलदास, संत भजनदास, स्वामी चेतन प्रकाश, स्वामी मुरलीधर, संत हरिदासराम, स्वामी रविप्रकाश एवं पूज्य स्वामीजी सहित अन्य संतों ने अमृत वर्खा की।

१५ दिसम्बर स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज एवं अन्य संतों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि बारह दिन सत्गुरु महाराज जी एवं मंडली के अन्य संतों ने ज्ञान गंगा प्रवाहित कर हज़ारों प्रेमियों को लाभान्वित किया। उनके सद्उपदेशों को जीवन में उतारेंगे तो आनंद की उपलब्धि होगी सत्गुरु के उपदेशों का बड़ा महत्व है:-

लखपीर पैग़म्बर औलिये, लख काजी मुला शेख ।
किसे सान्त न आइया, बिन सत्गुर के उपदेश ।।

१८ दिसम्बर पूज्य स्वामीजी, संत प्रभारामजी साहब के पुण्य तिथि उत्सव के सम्बंध में अहमदाबाद पधारे । वहां संत प्रभाराम सोसाइटी के मैदान पर तीन दिन तक पूज्य स्वामीजीने सत्संग प्रवचन करते हुए संत प्रभारामजी साहब के गुणों का वर्णन किया । श्री नेणूमल ने स्वामाजी का आभार व्यक्त किया ।

८ जनवरी १९७१ पूज्य स्वामीजी ने मंडली सहित गांधीनगर कोल्हापुर के लिए प्रस्थान किया । पूज्य स्वामीजी ने पांच दिन वहां अमृत वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की । १४-१५ जनवरी स्वामीजी ने इचलकरंजी में सत्संग प्रवचन किये । श्री ब्रजलाल हीरानी ने आभार प्रदर्शन किया। पूज्य स्वामीजीने १६ जनवरी मिरज, १७-१८ जनवरी कराड में सत्संग प्रवचन किया । १६ जनवरी वे सिन्धुनगर आश्रम लौट आये । २६ जनवरी सायंकाल सत्संग सभा में स्वामीजी ने गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में अपने विचार व्यक्त किये । श्री नदलाल बख्तियाणी ने कपलेश्वर महादेव मंदिर कुर्ला, बम्बई में शिवरात्रि का उत्सव आयोजित किया। पूज्य स्वामीजी ने १५ फरवरी से १७ फरवरी तक उक्त सम्बंध में वहां भूतभावन भगवान श्री शंकर की महिमा गाते हुए भगवान शंकर के दृष्टांत सुनाये ।

प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव ९ अप्रैल से अमरापुर स्थान जयपुर में आयोजित किया गया । इस उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामी जी ४ अप्रैल अमरापुर स्थान पधारे । पूज्य स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज को नतमस्तक प्रणाम किया । १० अप्रैल प्रातः पूज्य स्वामीजी ने वहां प्रवचन करते हुए कहा-

रैन गवाई सोइके, दिवस गवाइया खाइ ।
हीरे जैसा जन्म है, कौड़ी बदले जाइ ।।

प्रेमियो ! प्रातःकाल उठकर नाम स्मरण करें । सारा दिन खान-पान, व्यवहार में व्यतीत हो जाता है और रात सोते हुए बीत जाती है, इसलिए अमृत वेला में उठकर नाम स्मरण करें । मानुष तन व्यर्थ न

गवाएं पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज हमें जाग्रत करते हुए कहते हैं-

मानुष तन को पाइके, किया न सुन्दर काज ।
टेऊँ गंवाया पाप में, तोह न आई लाज ।।

पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने कई लोगों को अज्ञान वैं मोह की नींद से जाग्रत कर नाम का दान दिया । प्रेमियों ! आप यहां आये हैं तो सत्गुरु महाराजजी से नाम दान लेकर उसकी साधना करें । सांसारिक काम काज करते हुए प्रभु का स्मरण करते रहें । मानव जीवन की सार्थकता भगवद् भजन करने में हैं-

चौरासी लख योनि में फिर पाई दुर्लभ देह ।
कह टेऊँ हरि भजन से सफली करले एह ।।

२० अप्रैल स्वामीजी, सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज से आशीर्वाद व आज्ञा लेकर अजमेर आये वहां स्वामी बसंतरामजी महाराज के स्थान दिल्ली गेट एवं स्वामी माधवदासजी महाराज के आदर्श नगर स्थान में स्वामीजी ने दस दिन तक प्रवचन किये । ३० अप्रैल स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम लौट आये ।

१-२ जून आश्रम में सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का पुण्यतिथि उत्सव मनाया गया । संत गोपाराम, संगीत आचार्य मास्टर चन्दर एवं अन्य गुणीजनों ने अमृत वचनों एवं भक्ति संगीत की वर्खा करते हुए पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की महिमा का वर्णन किया। ३ जून प्रातः काल पूज्य स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज महान विभूती थे । उन्होंने कई प्रेमियो को आत्म ज्ञान की दीक्षा देकर उनका कल्याण किया । वे न केवल महान संत थे बल्कि समाज सुधारक, दार्शनिक व महान संत कवि थे ।

वर्षा ऋतु के चार महीने पूज्य स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम में ही नित नियम से प्रवचन करते रहे । प्रातःकाल को कुछ साधक उनके पास आते थे । स्वामीजी उन्हें विचार माला, विचार सागर एवं वेदान्द सम्बन्धी शास्त्रों का अध्ययन कराते थे । तत्पश्चात् भाई प्रभदास वाधवा

भाई किशनचन्द, पंडित स्वामी बसंतराम कृत 'श्री कृष्णायन' कृष्ण काव्य पढ़ते थे तथा पूज्य स्वामीजी उस काव्य की व्याख्या करते थे ।

१७ जुलाई गुरु पूर्णिमा के पावन दिवस पर हजारों प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी की पूजा उपासना की एवं उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया । उस अवसर परम पूज्य स्वामीजी ने उपदेश करते हुए कहा-

सत्गुर की कृपा बिना कब चित शान्त न होय ।
कह टेऊं गुरु शरण ले, विघन न लागे कोय ।।

प्रेमियो! ईश्वर एवं सत्गुरु के आशीर्वाद के सिवा मन की शान्ति प्राप्त नहीं होगी । इसलिए किसी परिपूर्ण गुरु की शरण लेकर आत्म ज्ञान प्राप्त करें । जब आपको आत्म ज्ञान की उपलब्धि हो गई तो कोई भी सांसारिक कष्ट आपको दुखी नहीं कर सकता ।

१६ अगस्त जनता जनार्दन परिषद की ओर से पूज्य स्वामीजी का जन्म दिन उत्साह व उमंग के साथ मनाया गया । प्रात: हवन यज्ञ के बाद पूज्य स्वामीजी ने लगभग चार सौ दीन दुखियों को आर्थिक सहायता एवं खाद्य सामग्री वितरित की । सायंकाल को कई प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी के गुणों का वर्णन करते हुए दीर्घायु की कामना की । पूज्य स्वामीजी ने उपदेश देते हुए कहा कि सत्य-सेवा के मार्ग पर चलें तो आपको प्रभु की कृपा अवश्य मिल सकती है । आपके मार्ग में जो भी बाधाएं आयेंगी वे दूर हो जायेंगी । प्रभु को कभी न भूलें और दीन दुखियों एवं पशुओं की सेवा करते रहें । ३० अगस्त जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए भगवान श्याम सुन्दर के अद्बितीय लीलाओं का वर्णन किया ।

पूना में स्वामी रामकृष्णजी के स्थान पर पूज्य स्वामी ग्वालानंदजी महाराज का पुण्य तिथि उत्सव मनाया गया । इस उत्सव के उपलक्ष्य में १५-१६ अक्टूबर वहां सत्संग प्रवचन करते हुए पूज्य स्वामीजी ने स्वामी ग्वालानंदजी महाराज के गुणों का वर्णन किया । २० अक्टूबर प्रात: काल पूज्य स्वामीजी ने आश्रम में कार्तिक कथा प्रारंभ की । कार्तिक के दिनों में कई प्रेमी आश्रम में आकर पूज्य स्वामीजी के दर्शन एवं कथा श्रवण का लाभ प्राप्त करते रहे ।

२८ अक्टूबर गोपाष्टमी के पावन दिन श्री राधेश्याम गौशाला में स्वामीजी ने गौ सेवा के सम्बन्ध में व्याख्यान देते हुए कहा कि गौ सेवा से अनेक लाभ हैं। गाय हमारी माता है और सुखों की दाता है। ३० अक्टूबर कार्तिक एकादशी के दिन प्रात: हजारों प्रेमी व संत पूज्य स्वामीजी के साथ राम नाम की धूम मचाते, गाते, श्मशान भूमि में आये। वहां संत स्वामी तिलोकदासजी जय बाबा, सांई जीवणराम साहब एवं अन्य संतों ने व्याख्यान दिये। तत्पश्चात् स्वामीजी ने कार्तिक एकादशी का महत्व बताते हुए कहा कि आज के दिन नाम स्मरण एवं दान करने का विशेष महत्व है। अपने श्वासों और माया का सद्उपयोग करें। मृत्यु को मत भूलें तो आपका कल्याण होगा।

कार्तिक पूर्णिमा के दिन प्रात: स्वामीजी ने कार्तिक कथा का समापन करते हुए कहा कि नन्दनन्दन भगवान श्री श्याम सुन्दर के श्री चरणों में अपना सर्वस्व समर्पित करने से आपको आनन्द की प्राप्ति होगी। स्वामीजी ने श्री गुरुनानक देवजी की अमृतमयी बाणी की भी व्याख्या की। संध्याकालीन सत्संग में स्वामीजी ने श्री गुरु नानक देवजी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जीवन की सार्थकता नाम स्मरण में है। इसलिए "नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात।"

४ नवम्बर को पूज्य स्वामीजी, पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज को सिन्धुनगर आश्रम में पधारने का निमंत्रण देने के लिए पूना गये। २० नवम्बर सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर-५ में पधारे जहां उनका भव्य स्वागत किया गया। स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज एवं अन्य संतो को पुष्प मालाएं भेंट की। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि हमारा सौभाग्य है कि इस नव निर्मित मंदिर का उद्घाटन करने के लिए सत्गुरु महाराज मंडली सहित यहां पधारे हैं। प्रभु की असीम कृपा, सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज एवं अन्य संतों महात्माओं की आशीर्वाद एवं प्रेमियों के सहयोग से यह भव्य मंदिर बना है। जिसका उद्घाटन २४ नवम्बर सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज के पावन करकमलों द्वारा सम्पन्न होगा। मंदिर के इस प्रथम उत्सव के पावन अवसर पर पधारे प्रेम प्रकाश मण्डल के संत स्वामी बसंतरामजी,

स्वामी माधवदासजी, स्वामी गणेशानंदजी, स्वामी चंदनप्रकाशजी, स्वामी स्वयंप्रकाश जी, स्वामी जयप्रकाशजी स्वामी जीवनमुक्तजी, स्वामी धर्मदासजी, स्वामी मुरलीधरजी, स्वामी रामकृष्णजी, पंडित शीतलदासजी, संत भजनदासजी, संत हरिदासराम जी, संत अर्जन प्रकाश, संत नारायण प्रकाश, स्वामी किशनचन्द एवं अन्य संतो का अभिनंदन करता हूँ।

उक्त समारोह में यशोदानन्दन भगवान श्री कृष्ण, भगवान श्री विष्णु, भगवान श्रीराम, लक्ष्मण, सीतामाता, भगवान शंकर, श्री हनुमान महावीर एवं सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की मूर्तियों की पूजा एवं प्राण प्रतिष्ठा की गई। ब्रह्मभोज का आयोजन किया गया। श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठ का आरंभ किया गया। चारों दिन प्रातः एवं सायंकाल सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज एवं अन्य संत अमृत वर्खा करते रहे।

२४ नवम्बर प्रातः पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने नये मंदिर का उद्घाटन करते हुए कहा कि संत शान्तिप्रकाश एवं प्रेमियों को साधुवाद है, जिनके पुरुषार्थ से इस नये मंदिर का निर्माण हुआ है। यहां प्रतिदिन सत्संग यज्ञ होता रहेगा और हज़ारों प्रेमी लाभान्वित होंगे। पूज्य स्वामीजी ने श्री पेसूमल प्रभदास ककवाणी, श्री दुल्हानोमल तलरेजा एवं श्री हरी ठकुर को उनकी सेवा के लिए आशीर्वाद दिया।

२५ नवम्पर प्रातःकाल को पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने उत्सव का समापन किया। अन्त में पूज्य स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज एवं अन्य संतो का आभार व्यक्त करते हुए कहा-

संतन चरण पधारिया, दया करे मम धाम।
कह टेऊँ पूरन भये, आज हमारे काम॥

सत्गुरु महाराज एवं अन्य संतो ने अपने कमल चरणों से इस स्थल को पावन किया है। उनकी अनुकम्पा से ही यह उत्सव निर्विघ्न सम्पन्न हुआ है। मैं संतो महात्माओं का अत्यन्त आभारी हूं। सेवकों से सेवा में कोई त्रुटि हुई हो तो मुझे क्षमा करें।

१३ दिसम्बर पूज्य स्वामीजी अहमदाबाद पधारे। वहां संत प्रभाराम कालोनी में संत प्रभाराम की पुण्य तिथि उत्सव के सम्बन्ध में उन्होंने तीन दिन अमृत

वर्खा करते हुए संत प्रभाराम के गुणों का वर्णन किया ।

११ जनवरी १९७२ भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री की पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में पूज्य स्वामीजी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे निष्काम, निडर तथ निपुण नेता थे । श्री शास्त्री जैसे नेताओं की राष्ट्र को अत्यंत आवश्यकता है । हमें उनके सिद्धांतों पर चलने का प्रयास करना चाहिए । १५ जनवरी से १६ जनवरी पूज्य स्वामीजी ने पूना में स्वामी चंदन प्रकाश महाराज के मंदिर में सत्संग प्रवचन किया । १९ जनवरी आप उरली गये । वहां उन्हें दो दिन प्रवचन किया ।

२६ जनवरी गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष्य में स्वामीजी ने व्याख्यान देते हुए कहा कि देश की स्वाधीनता के लिए हमारे कई भारतीयों ने अपना सर्वस्व न्यौछावर किया उस आजादी की सुरक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है । ३० जनवरी सायंकालीन सत्संग में स्वामीजी ने महात्मा गांधी एवं शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की । १७-१८ फरवरी स्वामीजी ने कपलेश्वर महादेव मंदिर कुर्ला, बम्बई में शिवरात्रि उत्सव के सम्बन्ध में भगवान श्री शंकर की महिमा का गुण गान किया ।

प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव २८ मार्च से १ अप्रैल अमरापुर स्थान जयपुर में आयोजित किया गया । इस उत्सव के सम्बंध में स्वामीजी २४ मार्च जयपुर पधारे । वहां उन्होंने अमरापुर स्थान पर पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की मूर्ति को प्रणाम किया तत्पश्चात् आप सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के पास आये और उनको प्रणाम कर अन्य संतो से मिले । २७ मार्च अमरापुर स्थान पर स्वामी गुरुमुखदास महाराज की पुण्य तिथि मनाई गई । स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए स्वामी गुरुमुखदासजी के भक्ति काव्य का वर्णन किया । २८ मार्च सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने सनातन धर्म की ध्वजा फहराकर उत्सव का आरंभ किया । चारों दिन प्रातः एवं सायं सत्गुरु महाराज एवं अन्य संतो ने विभिन्न विषयों पर ज्ञान गर्भित प्रवचन किया । ३० मार्च सायं स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज परोपकार की प्रतिमूर्ति थे । प्रेमियो आप भी प्रतिदिन कोई न कोई परोपकार का कार्य करें । सत्गुरु महाराज कहते हैं-

परोपकारी पुरुष जे, जीवन सफला तांहि।
कह टेऊँ धन धन वही, भली आए जग मांहि ।।

एक बार भक्त पीपा पत्नी सहित भक्त चीधर के घर आये । भक्त चीधर उन्हें देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। जौहरी ही हीरों का मूल्य जानता है । दोनों भक्तो ने आपस में ज्ञान गोष्ठी की । कुछ समय बाद भक्त चीधर ने अंदर कमरे में जाकर पत्नी से कहा कि संत पीपाजी घर में पधारे हैं उनके लिए भोजन तैयार करो । पत्नी ने कहा कि घर में गेहूँ चावल कुछ भी नहीं, जो कुछ था कल संतों को भोजन करवाया था, अब भोजन कैसे तैयार करूं । मैं अपना वस्त्र उतार के देती हूं, आप वह बेचकर अन्न खरीद कर आयें तो मैं भोजन बनाऊं। भक्त चीधर न केवल स्वयं, भक्त एवं संत सेवी थे किन्तु उसकी पत्नी भी वैसे ही स्वभाव की थी । उसने अपना एक वस्त्र उतारकर पति को दिया । भक्त चीधर वह वस्त्र बेचकर खान पान की कुछ वस्तुएं खरीद कर घर आया । पत्नी ने भोजन तैयार किया । भक्त चीधर ने भोजन, भक्त पीपा एवं उनकी पत्नी के सामने रखा । भक्त पीपा ने भोजन खाने के पूर्व भक्त चीधर की पत्नी को बाहर बुलाया । शरीर पर एक ही वस्त्र होने के कारण वह बाहर नहीं आई । तब पीपाजी की पत्नी अन्दर जाकर उसे लेने गई । सीताजी चीधर भक्त की पत्नी को एक ही वस्त्र में देखकर आश्चर्य में पड़ गई । उन्होंने उससे इसका कारण पूछा । भक्त चीधर की पत्नी ने उसे कारण बताया तब सीताजी ने अपनी साड़ी का आधा टुकड़ा फाड़कर उसे दिया और बाद में उसे बाहर ले आई । भक्त पीपा को जब इस घटना का पता चला तब वह विस्मय में पड़ गये । भक्त पीपा ने लौटकर कुछ अन्न धन भक्त चीधर को भेजा । भक्त चीधर ने वह अन्न-धन्न शीघ्र ही उपकार के कार्यों में लगा दिया । सच्चे भक्त अपने पास अन्न-धन्न संग्रह नहीं करते । उन्हें प्रभु की प्राप्ति के अतिरिक्त भौतिक पदार्थों की आवश्यकता नहीं रहती । वे स्वयं के दुखी रखकर भी औरों को सुखी करने का प्रयास करते हैं ।

प्रेमियो ! आप भी संतो के जीवन से परोपकार का गुण ग्रहण करें। भक्त लोग स्वयं के सुख का विचार न कर दूसरों को सुखी करने का

यत्न करते हैं। आप भी अपनी माया व ज्ञान द्वारा दूसरों का भला करें और जिस परमात्मा ने आपको अमूल्य मानुष तन दिया है उसका स्मरण करें। जीवन की सार्थकता नाम स्मरण एवं सेवा में है।

८ अप्रैल स्वामीजी दिल्ली पधारे। वहां संत स्वामी केशवदास महाराज की पुण्य तिथि के सम्बध में रात्रि को स्वामी गुरुदासराम के स्थान पर स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि स्वामी केशवदास महाराज गौ भक्त एवं परोपकारी संत थे। उनकी वृत्ति सदैव प्रभु से जुड़ी हुई थी। वे पूर्ण ब्रह्म ज्ञानी एवं ब्रह्मध्यानी थे। एक बार एक मुसलमान की नाव सिन्धु नदी में अटक गई। उनका स्वामी केशवदास महाराज में पूर्ण विश्वास था, उसने मन में संत केशवदास महाराज को प्रार्थना की। थोड़े ही समय में किश्ती किनारे लग गई। संत गुरुदासराम ने स्वामीजी का आभार प्रदर्शन किया। पूज्य स्वामीजी ने चार दिन प्रेम प्रकाश मंदिर, दिल्ली में सत्संग प्रवचन किया।

१२ अप्रैल स्वामीजी हरिद्वार पधारे। १३ अप्रैल वैसाखी का पर्व था। पूज्य स्वामीजी, संत देव प्रकाश, अन्य संत एवं प्रेमियों ने गंगा नदी में स्नान किया। स्वामीजी १५ दिन हरिद्वार प्रेम प्रकाश आश्रम में ठहरे। उन्होंने वहां संतो का भंडारा भी किया और कई संतो महात्माओं, के साथ ज्ञान गोष्ठी भी की। ३० अप्रैल स्वामीजी अमृतसर पधारे। उन्होंने वहां पांच दिन सत्संग प्रवचन किया। ७ मई स्वामी जी सिन्धुनगर लौट आये। १ से ३ जून आश्रम में सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की पुण्य तिथि मनाई गई। तीनों दिन संतो महात्माओं ने सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के गुण गान गाये। ३ जून प्रातः स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने हजारों लोगों को 'सत्नाम साक्षी' नाम जपाकर भवसागर से पार लगाया आप भी नाम को न भूलें।

पूर्व पुण्य प्रताप ते, पाई मानुष देह।
कह टेऊँ हरि मिलन का, अवसर जानो एह॥

प्रेमियो ! पूर्व जन्म में किये हुए सत्कर्मों के कारण आप को अमूल्य मानुष तन मिला है, वह व्यर्थ न गंवायें। इसी योनि में ही प्रभु प्राप्ति सम्भव है। इसलिए प्रभु को एक क्षण भी मत भूलो। श्वास श्वास से नाम स्मरण कर जीवन सफल करें।

१२ जुलाई गुरु पूर्णिमा के पवित्र दिन प्रातः स्वामीजी ने व्यास पूजा का महत्व बताते हुए कहा कि व्यवहार एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए गुरु की अत्यंत आवश्यकता है। सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज गुरु की महिमा गाते हुए आदेश देते हैं-

सत्गुरु के निज नाम का, हृदय कर विचार।
कह टेऊँ अविद्या मिटे, पाओ मोक्ष द्वार ।।

प्रेमियो! सत्गुरु द्वारा दिये गये नाम का बार बार चिंतन करें। स्मरण करने से आपके अन्त:करण का अंधकार मिट जायेगा, मन मंदिर में ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित होगी और आपको मोक्ष पद की प्राप्ति होगी। नाम स्मरण श्रद्धा व प्रेम से करें।

१४ अगस्त रक्षाबंधन के पावन दिवस जनता जनार्दन परिषद की ओर से पूज्य स्वामीजी का जन्म दिन हर्षोल्लास के साथ आश्रम में मनाया गया। सबेरे यज्ञ के पश्चात् ३०० दीन दुखियों को पूज्य स्वामीजी ने आर्थिक सहायता, अनाज एवं वस्त्र दिये। सायं ५ बजे संगीताचार्य चन्दर, श्रीराम पंजवाणी ने भक्ति संगीत की वर्खा की। दयाल आशा ने कहा कि स्वामीजी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से जनता जनार्दन परिषद अनेक सेवा कार्य कर रहा है। स्वामीजी महान कर्मयोगी संत हैं। श्री गोबिन्द भाटिया, परसराम कांग्रेसी, हीरालाल सभनदासाणी, जीवनदास आहूजा एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी के गुणों का वर्णन किया।

पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आप लोगों ने जो मेरी प्रशंसा की है वह प्रशंसा प्रभु एवं सत्गुरु महाराज की है। उनकी कृपा एवं आशीर्वाद से ही सब कार्य हो रहे हैं, मुझ में कोई शक्ति नहीं। प्रेमियो! आप भी शुभ मंगल कार्य कर जीवन सफल करें।

२८ अगस्त जन्माष्टमी के पवित्र दिन प्रातः, सायंकाल एवं रात्रि को पूज्य स्वामीजी ने भगवान श्रीकृष्ण की महिमा गाते हुए उनकी अद्भुत लीलाओं का मनोरम वर्णन किया। १८ सितम्बर संत हरिचूराम साहब जी की पुण्य तिथि के अवसर पर स्वामीजी ने उनके स्थान पर सत्संग प्रवचन करते हुए संत हरिचूराम साहबजी के कुछ संस्मरण सुनाये।

१८ अक्टूबर विजयादशमी का उत्सव स्वामीजी की अध्यक्षता में मनाया गया। उन्होंने विजयादशमी की महत्ता प्रतिपादित करते हुए आयोजकों श्री परसराम मसंद, परसराम बालाणी एवं हरिराम रूपाणी को साधुवाद दिया।

२ नवम्बर स्वामीजी पूनामें स्वामी रामकृष्ण के आश्रम में पधारे। वहां स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज की पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में आपने दो दिन सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज के गुणों का वर्णन किया। ४ नवम्बर स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम लौट आये। ५ नवम्बर दीपावली के दिन प्रातः स्वामीजी ने गरीबों में मिठाई एवं चादरें वितरित की। ७ नवम्बर चन्द्र दर्शन के दिन प्रातः स्वामीजी ने कार्तिक कथा प्रारंभ की। प्रतिदिन स्वामीजी कार्तिक कथा के साथ-साथ गुरुवाणी की भी व्याख्या कर मार्गदर्शन करते थे। १५ नवम्बर गोपाष्टमी के दिन प्रातः स्वामीजी ने गौ माता की महिमा प्रतिपादित की। शाम को ५ बजे श्री राधेश्याम गौ शाला में गोपाष्टमी उत्सव स्वामीजी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। स्वामीजी ने व्याख्यान देते हुए कहा कि गौ राष्ट्र की सच्ची सम्पत्ति है, उसकी सुरक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है। आज के पावन दिन भगवान श्रीकृष्ण ने गौ चराना प्रारम्भ किया था। १८ नवम्बर कार्तिक एकादशी के दिन प्रातः स्वामीजी ने कार्तिक एकादशी का महातम सुनाते हुए कहा कि आज सारी रात जागकर श्रीकृष्ण नाम का स्मरण करें। सत्संग के बाद स्वामीजी के साथ हज़ारों प्रेमी राम नाम की धुनि लगाते श्मशान भूमि में आये। वहां स्वामीजी ने व्याख्यान देते हुए कहा कि काल नगारा बाज रहा है, किसी न किसी दिन सब को यहां आना है, इसलिए जब तक श्वास है तब तक शुभ कर्म करते रहें।

राम गयो रावण गयो जाको बहु परिवार।
कह नानक कछु थिर नहीं सपने ज्यों संसार॥

२१ नवम्बर श्री गुरु नानक देव जी महाराज के जन्म दिन प्रातः पूज्य स्वामीजी ने कार्तिक कथा का समापन किया और श्री गुरु नानकदेवजी की वाणी की व्याख्या करते हुए कहा कि श्री गुरु नानकदेवजी ने नाम की कितनी न महिमा गाई है। प्रेमियो ! संसार के और काम करें,

न करें, किन्तु नाम स्मरण अवश्य करें । नाम का स्मरण सभी दुखों को दूर करता है । श्री गुरु नानकदेव जी महाराज अवतारी पुरुष होते हुए भी नाम का जाप करते थे । सायंकाल को सत्संग में भी स्वामीजी ने श्री गुरु नानकदेवजी महाराज के जीवन के कुछ दृष्टांत सुनाये । २३ नवम्बर पूज्य स्वामीजी, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज को सिन्धुनगर में पधारने का निमंत्रण देने के लिए पूना गये।

७ दिसम्बर चन्द्र दर्शन के दिन सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर ५ में पधारे । ८ दिसम्बर प्रातः स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने सनातन धर्म की ध्वजा फहराकर वार्षिक उत्सव आरम्भ किया । दोपहर ३ बजे सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के सान्निध्य में आश्रम से जुलूस निकला । उत्सव के चारों दिन सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज एवं अन्य संतों महात्माओं ने प्रवचन किये। १२ दिसम्बर प्रातः स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने उत्सव का समापन किया । उसी समय पूज्य स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज एवं अन्य संतों का आभार व्यक्त करते हुए कहा-

धन दारा और लक्ष्मी, पापी को भी होय ।
संत समागम हरि कथा, तुलसी दुर्लभ दोय ।।

प्रेमियो! हम सब धन्य हैं कि हमें सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज एवं अन्य संतों के दर्शन करने एवं उनके अमृत वचन श्रवण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है । चारों दिन यहां ज्ञान की गंगा प्रवाहित हुई, कई प्रेमी लाभान्वित हुए । सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज और दस दिन हमें अमृत पिलाकर तृप्त करेंगे ।

५ जनवरी सन् १९७३ स्वामीजी पिम्परी पधारे । वहां उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन किया । ७-८ जनवरी स्वामीजी ने पूना के स्वामी चन्दन प्रकाश महाराज के मन्दिर में प्रवचन किये । ९ जनवरी प्रातः स्वामीजी ने अहमदनगर के लिए प्रस्थान किया । ११ जनवरी तक स्वामीजी ने अहमदनगर में अमृत वर्खा की । २१ जनवरी शहीद हेमू कालाणी का शहीदी दिवस प्रेम प्रकाश आश्रम, सिन्धुनगर में मनाया गया । स्वामीजी ने शहीद को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि सिन्धी जाति को निडर निर्भीक नौजवान हेमू पर गर्व है जिसने देश की आजादी

के लिए अपने जीवन का बलिदान दिया । २३ जनवरी नेताजी बोस की जयन्ती के अवसर पर स्वामीजी ने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की देश भक्ति एवं वीरता का वर्णन किया । २६ जनवरी प्रातः आश्रम में स्वामीजी ने राष्ट्र ध्वज फहराया और सायं को प्रवचन करते हुए गणतंत्र दिवस पर विचार व्यक्त किये ।

कुर्ला, बम्बई कपलेश्वर महादेव मंदिर में शिवरात्रि उत्सव आयोजित किया गया । उस उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामीजी ने १७-१८ फरवरी वहां प्रवचन करते हुए भगवान श्री शंकर की महिमा गाई । श्री नंदलाल बखतियाणी ने स्वामीजी का आभार व्यक्त किया । २८ मार्च स्वामीजी ने झांसी के लिए प्रस्थान किया । वहां झांसी में स्वामीजी ने २९-३० मार्च सत्संग प्रवचन किया । ३१ मार्च आप ग्वालियर पधारे । वहां स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम में उन्होंने एक सप्ताह अमृत वर्खा की । ८ अप्रैल स्वामीजी आगरा आये वहां प्रेम प्रकाश मंदिर में उन्होंने तीन दिन सत्संग प्रवचन किया । ११ अप्रैल वे अमरापुर स्थान जयपुर पधारे । वहां १६ अप्रैल से प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव आरंभ होने वाला था ।

१६ अप्रैल प्रातः सत्गरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने सनातन धर्म की ध्वजा फहराकर वार्षिक उत्सव आरंभ किया । १८ अप्रैल सायं अमरापुर स्थान पर पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज प्रति दिन अधिक समय भगवत् भजन में ही व्यतीत करते थे। प्रेमियों! आप भी प्रतिदिन कुछ समय सांसारिक कार्यों से हटकर नाम चिंतन करें । प्रभु से प्रार्थना करें । प्रार्थना में बड़ी शक्ति होती है । आपकी समस्याएं, दुख दर्द, प्रार्थना द्वारा दूर हो सकते हैं । सत्गुरु महाराजजी अपनी वाणी में कहते हैं-

प्रार्थना कर प्रेम से, पुन पुरषार्थ तात ।
कह टेऊँ इनके किये, होवे तव कुशलात ॥

यदि हम सच्ची भावना से प्रार्थना करेंगे तो प्रभु हमारी प्रार्थना अवश्य सुनेंगे । एक अग्रेज़ अफसर को सरकार ने नदी पर बांध बनाने का कार्य सौंपा था । बांध बांधने का अधिकतर कार्य पूरा हो गया था, अचानक बहुत वर्षा हुई । अफसर चिन्तित हुआ कि पानी का प्रवाह

तेज़ हो गया है, कहीं बांध टूट न जाय! उस अफसर ने एक हिन्दू कर्मचारी को बुलाया और कहा कि बांध का कार्य कुछ शेष रह गया है, मूसलाधार वर्षा होने के कारण बांध टूट जाने की सम्भावना है। अब क्या किया जाय? हिन्दू कर्मचारी ने कहा कि इस बांध की रक्षा का केवल एक ही उपाय है, वह यह है कि आप सामने वाले भगवान श्रीराम के मंदिर में चलकर भगवान राम से बांध की रक्षा के लिए प्रार्थना करें। वह अंग्रेज अफसर उसके साथ मंदिर में गया । उसने विश्वास व श्रद्दा के साथ भगवान श्रीराम से बांध की सुरक्षा के लिए प्रार्थना की । प्रात: काल वह अफसर जब बांध के समीप आया तो उसने देखा कि दो पुरुष श्याम व गौर वर्ण एवं एक नारी वहां बैठे हैं, और जल का प्रवाह बांध के नीचे बह रहा है । उस अंग्रेज अफसर ने यह अनुभव किया कि मंदिर में जो भगवान श्रीराम व श्री लक्ष्मण एवं सीता माता की प्रतिमाएं हैं वे तीनों यहां बांध की सुरक्षा कर रहे हैं । तत्पश्चात् अफसर ने तीनों को प्रणाम किया । भगवद् कृपा से वह बांध टूटने से बच गया भगवान ने उसकी रक्षा की । उसके पश्चात् उस अंग्रेज के मन में भगवान श्रीराम के प्रति इतनी तो श्रद्धा उत्पन्न हुई कि उसने उस मंदिर का नव निर्माण कराया । प्रेमियो ! आप भी श्रद्धा व विश्वास के साथ भगवान और सत्गुरु महाराज जी से प्रार्थना करेंगे तो आपकी समस्याएँ हल हो जायेंगी ।

२६ अप्रैल स्वामीजी कोटा पधारे । वहां उन्होंने स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम में चार दिन ज्ञान गर्भित प्रवचन किये । ५-६ मई स्वामीजी ने बूंदी में अमृत वर्खा की । ८ मई स्वामीजी गोधरा पधारे वहां स्वामीजी ने पांच दिन तक ज्ञान गंगा प्रवाहित की । ३-४ जून सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की पुण्य तिथि प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर में मनाई गई । स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उनके सिद्धांतों पर चलने का प्रयास करें। मानव जीवन अमूल्य जीवन है, व्यर्थ मत गंवाए नाम की पूंजी एकत्रित करें नाम स्मरण में श्वासों का सद्उपयोग करें, संत कबीरदासजी कहते हैं-

कबीर सब जग निर्धना, धनवंता नहीं कोय।
धनवन्ता तहिं जानिये, जाको राम नाम धन होय ॥

वही सच्चा धनवान है जिसके पास राम नाम रूपी धन है, यही अमूल्य पूंजी है।

१८ जुलाई गुरू पूर्णिमा के पावन दिन पूज्य स्वामीजी ने उपदेश देते हुए कहा-

गुर बिन प्रेम न उपजे, गुर बिन जगे न भाग।
कह टेऊँ तांते सदा, गुरु चरणों में लाग ॥

सत्गुरु के बिना प्रभु प्रेम सम्भव नहीं। सत्गुरु ही आध्यात्मिक मार्गदर्शक है। गुरु के द्वारा ही प्रभु प्राप्ति सम्भव है। सत्गुरु द्वारा ही भाग्य उदय होगा। इसलिए गुरु की शरण में जाना अत्यन्त आवश्यक है। गुरु भी ब्रह्म ज्ञानी, ब्रह्म ध्यानी, ब्रह्मनेष्ठी होना चाहिए जो शिष्य को सत् मार्ग बताए।

२० अगस्त जनता जनार्दन परिषद् की ओर से आश्रम में स्वामी जी का जन्मदिवस मनाया गया। प्रातः हवन यज्ञ के पश्चात् स्वामीजी द्वारा दीन दुखियों को आर्थिक सहायता, चादरें एवं अनाज वितरित किया गया। सायंकाल भक्ति संगीत की वर्खा के पश्चात् दयाल 'आशा' ने कहा कि पूज्य स्वामीजी की कृपा से ही जनता जनार्दन परिषद सेवा कार्य कर रहा है।

पूज्य स्वामीजी ने उपदेश देते हुए कहा कि आप लोगों ने जो मेरी प्रशंसा की वह प्रशंसा मेरे सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की ही है। आप भी जीवन में स्मरण और सेवा की ज्योति जगाएं। 'परोपकाराय इदं शरीरं' यह मानव तन दूसरों की भलाई करने में सफल करें। पशु पक्षियों पर भी दया दृष्टि करें।

२ सितम्बर आश्रम में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव मनाया गया। स्वामीजी ने सायंकाल एवं रात्रि में भगवान श्रीकृष्ण की महिमा के गीत गाते हुए श्याम सुन्दर की लीलाओं का वर्णन किया। २४ सितम्बर रात्रि को संत हरिचूराम साहब की पुण्य तिथि के उत्सव के अवसर पर स्वामीजी ने उनके स्थान पर सत्संग प्रवचन करते हुए संत हरिचूराम

साहब जी के कुछ संस्मरण सुनाये ।

२ अक्टूबर सायं आश्रम में गांधी जयन्ती मनाई गई । स्वामी जी ने महात्मा गांधी के गुणों का वर्णन करते हुए कहा कि वे राष्ट्र भक्त भी थे तो ईश्वर भक्त भी थे । उनका जीवन प्रेरणा का स्त्रोत है । २१ अक्टूबर रात्रि को स्वामीजी ने संत साई वसणशाहजी की पुण्य तिथि उत्सव पर उनके परोपकारी जीवन का वर्णन किया ।

पूना में स्वामी ग्वालानंद आश्रम पर संत रामकृष्ण ने स्वामी ग्वालानंदजी महाराज के पुण्य तिथि उत्सव का आयोजन किया । स्वामीजी ने २२-२३ अक्टूबर वहां सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज के भक्ति काव्य का विशेष वर्णन किया । २४ अक्टूबर प्रेम प्रकाश आश्रम पर स्वामीजी ने दीपावली के उपलक्ष्य में जनता जनार्दन परिषद् की ओर से मिष्ठान्न एवं वस्त्र बांटे । २५ अक्टूबर दीपावली के दिन कुछ प्रेमी स्वामीजी को बम्बई ले गये । वे रात्रि में आश्रम लौट आये। २७ अक्टूबर प्रातः स्वामीजी ने कार्तिक कथा प्रारंभ की।

३ नवम्बर सायंकाल श्री राधेश्याम गौ शाला में गोपाष्टमी उत्सव स्वामीजी की अध्यक्षता में मनाया गया । श्री नंदीराम टहलराम ने स्वामीजी व अन्य संतो एवं अतिथियों का स्वागत किया । श्री सदाजीवतलाल चन्दूलाल ने व्याख्यान करते हुए गौ सेवा पर बल दिया । स्वामीजी ने गौ माता के गुणों की महिमा एवं महत्ता प्रतिपादित करते हुए कहा कि गाय का गोबर एवं मूत्र कई बीमारियों को दूर करता है । गाय की रक्षा राष्ट्र की रक्षा है । श्रीकृष्ण के भव्य भारत भूमि में प्रति दिन हजारों गौ माताओं का बध किया जाता है, यह हमारे लिए शर्म की बात है । गौ बचाओ, देश बचाओ ।

४ नवम्बर १९७३ कार्तिक एकादशी के दिन ब्रह्मज्ञानी, ब्रह्मनेष्ठी संत स्वामी लीलाशाहजी महाराज पालनपुर में ब्रह्मलीन हुए । ५ नवम्बर पूज्य स्वामीजी ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी लीलाशाहजी महाराज महान कर्मयोगी संत थे । वे सिन्धी समाज के आध्यात्मिक मार्ग दर्शक थे । उन्होंने लोक कल्याण के अनेक कार्य किये । वे समाज सुधारक भी थे । वे सदैव अमर रहेंगे ।

संत मुए क्या रोइये, जो अपने गृह को जाइ ।
रोए साक्त बुापड़े, हाटों हाट बिकाइ ।।

दयाल 'आशा' एवं अन्य प्रेमियों ने भी स्वामी लीलाशाहजी महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित की ।

६ नवम्बर कार्तिक एकादशी का महत्व बताते हुए पूज्य स्वामीजी ने कहा कि आज की रात्रि सोने के लिए नहीं, सारी रात्रि श्रीकृष्ण श्याम सुन्दर का स्मरण करें । सत्संग के पश्चात् हजारों प्रेमी राम नाम की धुनि लगाते पूज्य स्वामीजी के साथ श्मशान भूमि में आये । वहां स्वामीजी ने कहा पता नहीं काल कब आए ! इसलिए यहां आने से पूर्व शुभ कर्म करें । ८ नवम्बर रात्रि को स्वामीजी ने सी-ब्लाक सिन्धुनगर- ३ में सत्संग प्रवचन किये । १० नवम्बर पूर्णमासी के पावन दिन प्रातः स्वामीजी ने श्री कार्तिक कथा, श्री गुरुग्रन्थ साहब, श्रीमद् भगवद् गीता एवं श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठों का समापन किया। संध्याकालीन सत्संग में एवं रात्रि को अलग अलग स्थानों पर श्री गुरुनानकदेवजी महाराज के जन्म दिन के अवसर पर स्वामीजी ने श्री गुरुनानकदेवजी महाराज के गुण गान गाते हुए उनके प्रेरणादायक प्रसंग सुनाये ।

१२ नवम्बर स्वामीजी के भक्त श्री द्वारकादासजी वाधवा ब्रह्मलीन हुए । सिन्ध लाड़कन, बलोचस्तान से ही उनका स्वामीजी के साथ स्नेह सम्बंध रहा । स्वामीजी ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि श्री द्वारकादास ने सिन्धुनगर-२ में प्रेम प्रकाश मंडली स्थापित की और सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की ज्योति जगाई । वे संत सेवी एवं परोपकारी थे । २४ नवम्बर स्वामीजी पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज से मिलने के लिए दादर, बम्बई मंडली गये और वहां सत्संग प्रवचन भी किया ।

प्रेम प्रकाश मंदिर के चतुर्थ वार्षिक उत्सव के उपलक्ष्य में पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज २६ नवम्बर को प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर-५ में पधारे । उनके स्वागतार्थ संत प्रभाराम मंदिर से भव्य जुलूस निकाला गया । सायंकाल सत्संग में पूज्य स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज एवं अन्य संतों का स्वागत करते हुए कहा-

कबीर दर्शन साध के साहब आवे याद ।
यही घड़ी लेखे लगे, बाकी के दिन बाद ।।

आज हम सब का यह सौभाग्य है कि सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज मंडली सहित यहां पधारे हैं। इन संतो का दर्शन करके परमात्मा का स्मरण हो रहा है । सन्त प्रभु के प्रतिनिधि हैं । ऐसे महान पुरुषों के संग में हम जो समय व्यतीत करते हैं वही समय सफल हैं, शेष समय व्य़र्थ गंवाते हैं । प्रेमियो ! सत्गुरु महाराजजी यहां बारह दिन राम नाम का अमृत पिलायेंगे । आप स्वयं भी नित नियम से आकर लाभ प्राप्त करें और आस पड़ोस वालों को भी साथ लेकर नाम का अमृत पान करें ।

२७ नवम्बर मंगलवार प्रातः पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने धर्म ध्वज फहराकर उत्सव का प्रारम्भ किया। सायंकाल ४ बजे उनके नेतृत्व में जुलूस निकला। पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज, पूज्य स्वामीजी एवं अन्य संतों ने प्रातः, सायंकाल सत्संग प्रवचन किया। १ दिसम्बर प्रातः सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने आशीर्वाद प्रवचन करते हुए उत्सव का समापन किया। पूज्य स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज एवं अन्य संतों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि सत्गुरु महाराज के पधारने से यहां का वातावरण आनंदमय हो गया है। सत्गुरु महाराजजी और भी दस बारह दिन हमें अमृत पिलायेंगे।

१५ दिसम्बर स्वामीजी संत प्रभारामजी की पुण्य तिथि उत्सव के अवसर पर अहमदाबाद गये । वहां प्रभाराम कालोनी में उन्होंने १६ से १८ दिसम्बर तक सत्संग प्रवचन करते हुए संत प्रभारामजी के गुणों का वर्णन किया । १६ दिसम्बर स्वामीजी बड़ौदा पधारे । सायंकाल स्वामी धर्मदासजी के आश्रम में उन्होंने अमृत वर्खा की ।

८-९ जनवरी १९७४ पूज्य स्वामीजी ने कोपरी कालोनी, थाणा में सत्संग प्रवचन किया । ११ जनवरी सायं प्रवचन करते हुए स्वामीजी ने श्री लालबहादुर शास्त्री को श्रद्धांजलि अर्पित की । १८ जनवरी सायं आश्रम में श्री साधु टी.एल. वासवाणीजी की पुण्य तिथि स्वामीजी की अध्यक्षता में मनाई गई । दयाल 'आशा', गोबिन्द भाटिया एवं श्रद्धालुओं ने साधु वासवाणीजी को श्रद्धांजलि अर्पित की । स्वामीजी ने कहा कि साधु वासवाणीजी महान दार्शनिक, शिक्षाशास्त्री, समाज सुधारक और आध्यात्मिक मार्ग दर्शक थे । वे परोपकार की प्रतिमूर्ति

थे । २६ जनवरी गणतंत्र दिवस के दिन स्वामीजी ने उपदेश देते हुए कहा कि देश की आजादी की सुरक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है । राष्ट्र की उन्नति के लिए हमें राष्ट्रीय एकता का संकल्प लेना चाहिए ।

कपलेश्वर महादेव मंदिर कुर्ला, बम्बई में शिवरात्रि का उत्सव मनाया गया, उस उत्सव में स्वामीजी ने वहां १०-११ फरवरी प्रवचन करते हुए भगवान श्री शंकर की महिमा गाई । २ मार्च को स्वामीजी ने कोटा के लिए प्रस्थान किया ।

पूज्य स्वामीजी ने वहां प्रेम प्रकाश आश्रम में एक सप्ताह सत्संग प्रवचन किया । १७ मार्च आप दिल्ली गये । वहां स्वामीजी ने प्रेम प्रकाश मंदिर में दो दिन अमृत वर्खा की । वहां से वे हरिद्वार गये।

२५ मार्च से हरिद्वार में कुम्भ मेला आरम्भ होने वाला था । प्रेम प्रकाश मंडल की ओर से कुम्भ मेला के उपलक्ष्य में शिविर (छावनी) लगाई गई । पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने अन्न क्षेत्र का आरंभ किया । प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव भी वहीं ६ अप्रैल से मनाया गया । हज़ारों श्रद्धालु प्रेमी उत्सव में सम्मिलित हुए। प्रात: व सायं प्रेम प्रकाश मंडल के संत एवं अन्य संत सत्संग प्रवचन करते थे । अचानक पूज्य स्वामीजी का स्वास्थ्य बिगड़ गया । संत सनमुखलाल एवं डॉ. बन्सीधर बदलाणी, पूज्य स्वामीजी की सेवा में उपस्थित थे। सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज भी स्वामीजी के पास आये और उन्होंने स्वामीजी पर हाथ रखकर कहा कि तुम ही हमारी आशा हो । भगवान से प्रार्थना है कि तुम शीघ्र ही स्वस्थ हो जाओ। ईश्वर की असीम कृपा व सत्गुरु महाराजजी की आशीर्वाद से स्वामीजी एकदम ठीक हो गये और उत्सव समापन के समय वे सत्संग में आकर बैठे । सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज स्वामीजी को बहुत स्नेह देते थे । १३ अप्रैल बैसाखी थी । स्वामीजी ने अन्य संतों व प्रेमियों के साथ गंगा नदी में पावन स्नान किया । स्वामीजी कुम्भ में कई संतो महात्माओं से मिले एवं उनके साथ ज्ञान गोष्ठी की ।

२ मई पूज्य स्वामीजी दिल्ली में आये, वहां स्वामीजी ने प्रेम प्रकाश मंदिर एवं अन्य स्थानों पर तीन दिन तक अमृत वर्खा की और ७

मई सिन्धुनगर आश्रम लौट आये । बाबाजी का बाग, देवलाली में संत नारायणप्रकाशजी ने १२-१३ मई कवि पहिलाजराम की पुण्य तिथि मनाई पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कवि पहिलाजराम के गुणों का वर्णन किया ।

२६ मई १९४७ स्वामी तिलोकदासजी (जय बाबा) सूरत में ब्रह्मलीन हुए । पूज्य स्वामीजी ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे सदा संतोषी, विद्वान एवं ज्ञानवान संत थे । कई वर्षो से हमारा उनके साथ स्नेह सम्बंध रहा । उनके कंठ में सरस्वती का वास था। वे परोपकारी संत थे । उन्होंने कई प्रेमियों को नाम का दान देकर उनका मार्ग दर्शन किया । तेरहवें के दिन निज धाम आश्रम सिन्धुनगर-५ में अन्य संतों के साथ स्वामीजी ने संत तिलोकदासजी महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित की ।

३-४ जून आश्रम में पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की पुण्य तिथि मनाई गई । साई गोपाराम, संत खानूराम एवं अन्य संतो ने सत्संग प्रवचन किये । भगतन्ती नावाणी ने भक्ति संगीत की वर्खा की । स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा-

कबीर दुर्लभ मानुष जन्म है, मिले न बारम् बार ।
तरुवर ज्यों पत्ते झड़े, बहुर न लागे डार ।।

प्रेमियो ! मनुष्य योनि उतम योनि है, कई पुण्यों के फलस्वरूप मनुष्य योनि प्राप्त होती है । उसको व्यर्थ न गंवाएं । सत्कर्म करें, नाम स्मरण व परोपकार के कार्यों में जीवन सफल करें । जिस प्रकार वृक्षों से झड़ते हुए पत्ते फिर वृक्ष की डाली में नहीं लग सकते उसी प्रकार जो समय बीत जाता है फिर लौट के नहीं आने वाला । इसलिए समय का सद्उपयोग करें ।

७ जुलाई सायं आश्रम में समाज सेवक श्री परसराम मसंद का सम्मान समारोह स्वामीजी की अध्यक्षता में आयोजित किया गया । स्वामीजी ने श्री परसराम मसंद को शॉल भेंट करते हुए कहा कि वे निष्काम समाज सेवक हैं । सक्खर सिन्ध में उन्होंने सुन्दर सेवक सभा स्थापित कर कई सेवा के कार्य किये । देश के विभाजन के पश्चात् उन्होंने फिर से यहां सुन्दर सेवक सभा के सेवा कार्य आरंभ किये । विद्या

के क्षेत्र में भी अमूल्य सेवाएं की हैं। अब वृद्धावस्था में भी वे लोक सेवा के कार्य कर रहे हैं। इस अवसर पर श्री लक्ष्मीचन्द रूपचन्दाणी, परसराम कांग्रेसी, दयाल 'आशा' ने भी श्री परसराम के कर्मयोगी जीवन का वर्णन किया।

१२ जुलाई गुरु पूर्णिमा के दिन प्रातः हज़ारों प्रेमियों ने स्वामीजी की पूजा उपासना कर आशीर्वाद प्राप्त किया। स्वामीजी ने गुरु की महिमा गाते हुए प्रेरणादायक प्रसंग सुनाये। सायंकाल को ग्वालानंद आश्रम में स्वामीजी ने स्वामी ग्वालानंदजी महाराज के जन्मदिन सम्बंध में सत्संग प्रवचन किया।

पूज्य सन्त स्वामी ज्योतिप्रकाशजी महाराज ७ जुलाई को जयपुर के अमरापुर स्थान पर ब्रह्मलीन हुए। उनका त्रयोदशी २० जुलाई शनिवार को स्वामी टेऊँराम आश्रम सिन्धुनगर में मनाया गया। सिन्धुनगर बेख मंडल और अन्य सन्त महात्मा त्रयोदशी में सम्मिलित हुए। स्वामीजी ने इस अवसर पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि सन्त ज्योतिप्रकाश को सन्तों, सूफियों की वाणी कन्ठस्थ थी तथा वे अपनी दर्द भरी आवाज में वह वाणी गाते थे। वह नित नियम आश्रम में सत्संग करते थे और भिन्न-भिन्न शहरों में जाकर पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का सन्देश सुनाते थे। प्रभु परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

१५ अगस्त स्वामीजी का जन्मोत्सव जनता जनार्दन परिषद की ओर से आश्रम में मनाया गया। प्रातः हवन किया गया तथा गरीबों की सेवा की गयी। सायंकाल श्रद्धालुओं ने पूज्य स्वामीजी के श्री चरणों में श्रद्धा व प्रेम की पुष्पांजलि अर्पित की। इस अवसर पर पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

राम नाम सत्य वचन पुन मधुर न बोलत जोय।
टेऊँ दूजे जन्म में सो नर गूंगा होय॥

प्रेमियो! परमात्मा ने हमें यह उत्तम मनुष्य देह दी है। हम मुख से राम नाम का स्मरण करें, सदैव सत्य और मधुर वचन बोलें। मुख रस-स्वाद लेने के लिए नहीं हैं, झूठ और पर निंदा करने के लिए नहीं है।

२७ अगस्त को जन्माष्टमी के दिन स्वामीजी ने सायं व रात्रि सत्संग में भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन किया । १ सितम्बर को भगवान श्रीकृष्ण की छठी उत्सव पर स्वामीजी ने कुर्ला (बम्बई) में सत्संग किया ।

२० सितम्बर को स्वामीजी ने जालना प्रस्थान किया । वहां स्वामीजी ने एक सप्ताह सत्संग प्रवचन किया । २८ सितम्बर को स्वामी जी परभनी गये । वहां दो दिन सत्संग प्रवचन किया । ३० सितम्बर को प्ररभनी से मालेगांव के लिये रवाना हुए ।

पूज्य स्वामीजी मालेगांव के समीप जंगल में श्री हनुमान महावीर के मंदिर में पधारे । मंदिर के पुजारी, स्वामीजी के दर्शन करके बहुत प्रसन्न हुए और स्वामीजी से कहा कि भगवद् दर्शन से संतों का दर्शन दुर्लभ है । मेरे सौभाग्य हैं कि जो इस जंगल में आपने आकर दास को दर्शन दिया है । महा त्यागी भक्तराज भरत जब भगवान श्रीराम को वापस लाने के लिये चित्रकूट जा रहे थे तो रास्ते में प्रयाग में भारद्वाज मुनि के पास दर्शन के लिये गये । श्री भरत को देखकर भारद्वाज मुनि बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने भरत से कहा ''भरतराज! मेरी तपस्या का फल मुझे यहां यह मिला है कि यहां वन में घर बैठे भगवान श्री रामचन्द्र, माता सीता एवं लक्ष्मण के दर्शन हुए । भगवान श्रीराम के दर्शनों का फल फिर मुझे यह मिला है जो आप जैसे महान त्यागी भक्त के दर्शन आज मुझे हुए ।

स्वामीजी ने मालेगांव में पांच दिन तक सत्संग प्रवचन किया । ५ अक्टूबर को स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये ।

सन्त अशोकलाल और डाक्टर बन्सीधर बदलाणी प्रति दिन प्रातः व सायं स्वामीजी के श्रीचरणों में बैठकर अध्ययन करते थे ।

बहन कान्ता मनवाणी आश्रम के रसोईघर में कटहल की सब्जी बना रही थी कि अचानक कटहल के बीज गर्म घी की कढ़ाई से उछलकर उसके चेहरे पर लगे साथ ही गर्म घी के छींटे भी उस के चेहरे पर लगे । उसके चेहरे पर बहुत जलन हो रही थी । वह बैचेन हो दौड़कर सत्संग हाल में आकर लेट गयी । इस बीच श्रद्धालू प्रेमियों ने स्वामीजी को यह घटना सुनाई । उधर एक सेवक डाक्टर को बुलाने

के लिए दौड़ा । पूज्य स्वामीजी तुरन्त सत्संग हाल में पहुंच गये और बालिका कान्ता के सर पर आशीर्वाद का हाथ फेरते हुए कहा "घबराना नहीं, सत्गुरु महाराज सब अच्छा करेंगे ।" इतने में डाक्टर भी आ गया । डाक्टर ने कान्ता को इन्जेक्शन लगाया और पानी पीने के लिये बिलकुल मना किया । जलन के कारण कान्ता को घबराहट होने लगी। यह देख स्वामीजी ने उसे "जल पढ़कर" पीने के लिये दिया । जल पीने से उसकी जलन शान्त हो गई और घबराहट भी दूर हो गई । जबकि डाक्टर ने जल पीने से एकदम मना किया था, लेकिन स्वामीजी के हाथों दिया गया जल पीने से उसकी पीड़ा दूर हो गई । सत्गुरु महाराज की असीम कृपा से उसका जला हुआ चेहरा जल्दी ठीक हो गया ।

६ नवम्बर को स्वामीजी, स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज की पुण्य तिथि उत्सव में सम्मिलित होने के लिए पूना रवाना हुए । वहां स्वामी जी ने स्वामी रामकृष्ण के मंदिर में ९-१० नवम्बर को सत्संग करते हुए स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज के गुणों का वर्णन किया ।

१२ नवम्बर को दीपावली के दिन श्रद्धालू प्रेमी पूज्य स्वामीजी को बही खातों का शुभारम्भ करने के लिये भिवन्डी और बम्बई ले गये। रात्रि को स्वामीजी आश्रम लौट आये । १४ नवम्बर को चन्द्र दर्शन के दिन स्वामीजी ने कार्तिक की कथा का शुभारम्भ किया । शाम को पंडित जवाहरलालनेहरु का जन्म दिन मनाया गया । इस अवसर पर स्वामीजी ने सत्संग करते हुए कहा कि जवाहरलाल विश्व शान्ति के उपासक थे । २१ नवम्बर को गोपाष्टमी के दिन प्रातः एवं सायं के सत्संग में राधे श्याम गौशाला में पूज्य स्वामीजी ने गौ माता की महिमा बताई । २४ नवम्बर को कार्तिक एकादशी के दिन प्रातः सत्संग के पश्चात् सैकड़ों श्रद्धालु प्रेमी राम नाम की धुन गाते, स्वामीजी के साथ श्मशान भूमि की ओर गये । वहां भी स्वामीजी व अन्य संतो ने जगत् की नश्वरता प्रतिपादित की । २८ नवम्बर को श्री गुरुनानकदेवजी के जन्मदिन के दिन प्रातः व सायं को स्वामीजी ने सत्संग करते हुए श्री गुरुनानकदेवजी के जीवन पर प्रकाश डाला ।

१ दिसम्बर रविवार प्रातः १० बजे जनता जनार्दन परिषद् की ओर

से स्वामी टेऊँराम आश्रम सिन्धुनगर ५ में पूज्य सत्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाशजी महाराज की अध्यक्षता में पूज्य साधु टी.एल. वासवाणीजी का जन्म दिन उत्सव मनाया गया । पूज्य दादा जशन वासवाणीजी इस उत्सव के मुख्य तिथि थे । सर्व प्रथम बहन रत्ना वासवाणीजी ने श्री नूरी ग्रन्थ से वचन लिया । डॉ. दयाल "आशा" ने पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि आज हम सब का सौभाग्य है कि इस पवित्र स्थान पर दो महान विभूतियों पूज्य स्वामीजी एवं पूज्य दादा जशन उपस्थित हैं उनके दर्शन से ही मन को शान्ति प्राप्त हो रही है । दोनों महान कर्मयोगी संत हैं । पूज्य दादा साधु वासवाणी महान संत, शिक्षा शास्त्री, विद्वान, दार्शनिक एवं आध्यात्मिक मार्ग दर्शक थे।

पूज्य दादा जशन वासवाणीजी ने अपने मार्मिक प्रवचन में कहा कि आज मैं यहां पूज्य स्वामीजी से आशीर्वाद लेने आया हूं । मुझे प्रसन्नता है कि आप लोग आज परम श्रद्धेय दादा वास्वाणीजी का जन्म उत्सव मना रहे हैं । दादाजी दीन दुखियों के दोस्त थे, वे अन्तिम दिनों तक दरिद्रों की सेवा करते रहे । उनका मन अनाथों और निराश्रयों की ओर दौड़ जाता था । उन्होंने दीन दुखियों, अपाहिजों को गले लगाया, पशु-पक्षियों को भी प्यार दिया । उन्होंने जगत् में जीव दया की ज्योति जगाई । उन्होंने पुष्पों, पौधों को भी प्यार किया । उनका जीवन ही प्यार था । उनके लिए गरीबों की सेवा थी प्रभु की भक्ति। आप भी अपने जीवन में दादाजी के सिद्धांतों एवं आदर्शो पर चलने का प्रयास करें ।

पूज्य स्वामीजी ने कहा कि मैंने हैदराबाद सिन्ध में कई बार साधु वासवाणीजी के प्रवचन सुने थे । वे महान तत्वज्ञानी व महान कर्मयोगी संत थे । वे समाज सेवक भी थे तो समाज के मार्गदर्शक भी थे । वे सादगी व विनम्रता की प्रति मूर्ति थे । उनका जीवन प्रेरणा का स्रोत था ।

प्रेम प्रकाश मंदिर के वार्षिक उत्सव के उपलक्ष्य में पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज १४ दिसम्बर सिन्धुनगर आश्रम में पधारे, स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज एवं अन्य संतों का स्वागत करते हुए कहा कि आज हमारे सौभाग्य हैं जो सत्गुरु महाराज मण्डली

सहित यहां पधारे हैं। १६ दिसंबर को प्रातः सत्गुरु महाराज ने धर्म-ध्वजा फहराकर उत्सव का शुभारंभ किया और सायंकाल ४ बजे उनके नेतृत्व में शाही जुलूस निकला। दूसरे दिन स्वामीजी को गांधीनगर कोल्हापुर से एक श्रद्धालू प्रेमी ने चिठ्ठी लिखी कि परसों एक विवाह के सिलसिले में भोज समारोह होने वाला है। जिसमें करीब चालीस बकरे व बकरीयोंको काट कर मांसाहार किया जायेगा। स्वामीजी यह समाचार सुनकर, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से आज्ञा लेकर उस रात को ही गांधी नगर, कोल्हापुर के लिए रवाना हुए। आश्रम का वार्षिक उत्सव छोड़कर बकरों व बकरियों को जीवन देने के लिये रात्रि में विशेष कष्ट उठाकर वे प्रातः गांधीनगर पहुंच गये। वहां श्रद्धालु प्रेमी यह देखकर आश्चर्य में पड़ गये कि स्वामीजी अचानक कैसे पधारे हैं। स्वामीजी करीब एक घन्टे के बाद विवाह वाले घर में गये। घर के लोग बहुत प्रसन्नता हुए कि स्वामीजी उनके यहां शादी के शुभ अवसर पर पधारे हैं। स्वामीजी ने परिवार के लोगों को अपने आने के उद्देश्य से परिचित कराते हुए कहा कि विवाह का अर्थ है खुशी मगर आप इस प्रसन्नता के अवसर पर मूक पशुओं को क्यों कटवा रहे हैं? यह महा-पाप है ! "मरवां मौत मलूकां शिकार!" इन गूंगे बे-जुबानों पर सदैव दया करें। मैं उत्सव छोड़कर विशेष रूप से इन बे-ज़ुबानों को जीवन दान देने के लिये आप के पास आया हूं। आप पशुओं पर दया करेंगे तो प्रभू आप पर दया करेंगे।

स्वामीजी के वचन सुनकर के घर वालों ने स्वामीजी को वचन दिया कि वे मांसाहार भोजन का सेवन नहीं करेंगे तथा भविष्य में भी ऐसा अशुभ कार्य नहीं करेंगे। स्वामीजी यह वचन लेकर परिवारजनों को आशार्वाद देकर उसी दिन ही सिन्धुनगर के लिये रवाना हुए।

उत्सव के चारों दिन पूज्य सत्गुरु महाराजजी और सन्तों ने प्रातः एवं सायंकाल सत्संग प्रवचन किया। हज़ारों श्रद्धालु प्रेमी उत्सव में सम्मिलित हुए। २० दिसम्बर को सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी ने समापन प्रवचन किये। उस अवसर पर स्वामीजी ने उनका आभार मानते हुए कहा कि पूज्य सत्गुरु महाराजजी ने अपने दर्शन एवं सत्संग द्वारा हज़ारों वीरान हृदयों को नाम के अमृत से आबाद किया है। प्रेमियों ! आप भी नाम से नाता जोड़ो। नाम मत भूलो। पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी

महाराज ने नाम से नाता जोड़ा तो आज चारों दिशाओं में उनका ही यश फैल रहा है। नाम स्मरण से ही मनुष्य जीवन सफल होता है।

प्रेमियो ! उत्सव में मुझ से या किसी सेवाधारी से कोई त्रुटि हुई हो तो कृपया मुझे क्षमा करें।

नाम न होते नाम बिन, होत नाम से नाम।
तांते सुमरो नाम को, होय दसों दस नाम ।।

२५ दिसम्बर पूज्य स्वामीजी संत प्रभाराम साहबजी के पुण्यतिथि उत्सव के अवसर पर अहमदाबाद गये। वहां प्रभाराम कालोनी में स्वामीजी ने तीन दिन अमृत वर्खा करते हुए संत प्रभारामजी के गुणों का वर्णन किया। २९ दिसम्बर वे सिन्धुनगर आश्रम लौट आये।

११ जनवरी १९७५ आश्रम पर श्री लाल बहादुर शास्त्री की पुण्य तिथि मनाई गई। संध्याकालीन सत्संग में स्वामीजी ने श्री शास्त्री जी के श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि आज राष्ट्र को श्री लाल बहादुर शास्त्री जैसे निडर, निष्काम व ईमानदार नेताओं की अत्यन्त आवश्यकता है। १८ जनवरी सायंकाल को स्वामीजी ने साधु टी.एल. वास्वाणीजी की पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में उनके जीवन व सेवा कार्य का उल्लेख किया। २१ जनवरी शहीद हेमू कालाणी का शहीदी दिवस पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में मनाया गया। श्री जीवणदास आहूजा श्री गोविन्दराम भाटिया, दयाल 'आशा' श्री बचाराम लेडवाणी एवं अन्य वक्ताओं ने शहीद हेमू कालाणी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

पूज्य स्वामीजी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि हेमू कालाणी सिंध का भगतसिंह था जिसने देश की स्वतंत्रता आंदोलन में अपने प्राणों की आहूती दी। आज की युवा पीढ़ी में कहाँ है देश भक्ति की भावना? देश भक्ति द्वारा ही देश का उत्थान व विकास होता है। आज भी भारत को निष्काम व ईमानदार देश भक्तों की आवश्यकता है। २६ जनवरी सायंकाल पूज्य स्वामीजी ने गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में व्याख्यान दिया। ३० जनवरी स्वामीजी ने महात्मा गांधी के गुणों का वर्णन करते हुए शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

रोहड़ा बिरादरी मंडल का वार्षिक उत्सव ४ फरवरी १९७५ प्रातः

११ बजे बम्बई में स्वामीजी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ । श्री कुन्दनदास, तोतलदास एवं श्री मोहनलाल रोहड़ा ने स्वामीजी का स्वागत सत्कार किया । स्वामीजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि आपस में एकता के सूत्र में रहते हुए सामाजिक समस्याओं को दूर करने का प्रयास करें । एक दूसरे का दुख दूर करें, स्वार्थ का परित्याग कर निष्काम भावना से सेवा करें ।

१०-११ फरवरी कपलेश्वर महादेव मंदिर कुर्ला में, शिवरात्रि के उपलक्ष्य में स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए भगवान शिव शंकर की महिमा का वर्णन किया ।

५ मार्च को संत हरिदासरामजी जलगांव वाले आश्रम पर पधारे। स्वामीजी ने उनका स्वागत करते हुए कहा कि संत हरिदासरामजी विनम्रता की प्रतिमूर्ति हैं वे अपने सत्गुरु भक्त कंवररामजी की भांति परोपकार के कार्य कर रहे हैं ।

७ मार्च से १६ मार्च तक स्वामीजी ने वडाला बम्बई में अमृत वर्खा की । यह कार्यक्रम वडाला सिंधी ब्रादर मंडल की ओर से आयोजित किया गया था । मुखी चोइथराम बेगराज ने स्वामीजी का आभार प्रदर्शन किया ।

प्रेम प्रकाश मण्डल का वार्षिक उत्सव व चैत्र मास का मेला २५ अप्रैल से अमरापुर स्थान, जयपुर में आयोजित किया गया । उस उत्सव के अवसर पर स्वामीजी २० अप्रैल को जयपुर पहुंचे । स्वामीजी सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराजकी समाधि पर प्रणाम करके, पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के पास आये । उन्हें दण्डवत् प्रणाम किया। २४ अप्रैल को पूज्य स्वामी गुरमुखदासजी की पुण्य तिथि मनाई गयी। सायंकाल सत्संग करते हुए स्वामीजी ने सन्त गुरमुखदासजी के गुणों का वर्णन किया । मेले के चारों दिन प्रातः व सायंकाल सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज व मंडल के अन्य सन्तों ने सत्संग प्रवचन किये। २६ अप्रैल सायं को पूज्य स्वामीजी ने सत्संग करते हुए कहा-

बाधक होता है नहीं भक्ति माह व्यवहार ।
जनक, भीष्म, पृथो आदि तरप भये सहज पार ।

घर गृहस्थी में रहते, सांसारिक व्यवहार करते भक्ति करें। नाम स्मरण में व्यवहार बाधक नहीं है। राजा जनक, राजा पृथो आदि ने संसार में रहकर प्रभु भक्ति की। उन्होंने आध्यात्मिक उन्नति की। आप भी व्यवसाय इत्यादि करते, आध्यात्मिक मार्ग पर चलें। पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज द्वारा प्रदत्त नाम की पूंजी को और बढ़ाएं।

५ मई को स्वामीजी आगरा आये। वहां उन्होंने ८ मई तक स्वामी टेऊँराम मन्दिर में सत्संग किया।

९ मई को स्वामीजी ग्वालियर आये। वहां स्वामीजी ने सप्ताह भर स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम व अन्य स्थानों पर सत्संग प्रवचन किये। १७ मई को स्वामीजी खंडवा आये। वहां भी २० मई तक सत्संग किया। २१ मई को स्वामीजी कवि पहलाजरामजी की पुण्य तिथि उत्सव में सम्मिलित होने के लिए देवलाली में उनके स्थान पर आये। वहां स्वामीजी ने दो दिन प्रवचन करते हुए कवि पहलाजराम के गुणों का वर्णन किया। इस अवसर पर सन्त नारायणप्रकाशजी ने स्वामीजी का आभार प्रकट किया। २३-२४ मई को स्वामीजी ने नासिक में प्रवचन किया। २५ मई को स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम लौट आये।

सांई हरिचूराम साहब के धर्म पीठ के अधिकारी संत जीवणराम २९ मई, १९७५ को दिल्ली में ब्रह्मलीन हुए। उनका पार्थिव शरीर दिल्ली से सिन्धुनगर उनके स्थान पर लाया गया। उनके उठावनी के दिन उनके सन्तों ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। उस अवसर पर स्वामीजी ने भी उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि सन्त जीवणराम के साथ हमारा सिन्ध से ही प्रेम का नाता था। वे थल्हे पर सन्तों व अन्य आये महापुरुषों की सेवा करते थे। आप लाहूती सन्त थे, उनके मुख पर तेज था। उन्होंने कितने ही प्रेमियों के मनोरथ पूरे किये और संत जीवण घोट के नाम से प्रसिद्ध हुए।

५-६ जून को आश्रम में पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की पुण्य तिथि मनाई गयी। स्वामीजी व अन्य सन्तों ने सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला।

१८ जुलाई को गुरु पूर्णिमा उत्सव आश्रम में मनाया गया। इस

अवसर पर स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

गुर वाणी वेद के सम, पढ़े सुने जन जोय ।
कह टेऊँ संशय हरे, सुख को पावत सोय ।।

सत्गुरुओं की वाणी, वेदों की वाणी के समान है । जो मनुष्य विश्वास रखकर उस वाणी का अध्ययन, श्रवण व मनन करता है उस के भ्रम व संशय दूर हो जाते हैं और उसे आनन्द की प्राप्ति होती है ।

२० अगस्त को पूज्य स्वामीजी का जन्म उत्सव जनता जनार्दन परिषद के तत्वाधान में आश्रम पर मनाया गया । सायंकाल को अनेक सन्तों व समाज सेवकों ने स्वामीजी के परोपकारी जीवन का वर्णन किया । इस अवसर पर स्वामीजी ने प्रवचन करते हुये कहा कि आज मैं बालक हूं, आप लोगों ने कितने न उत्साह व उल्लास से इस दास का जन्म दिन मनाया है । आप भी नित नियम से नाम को याद करें। नाम स्मरण द्वारा आप के दु;ख दर्द दूर होंगे ।

राम नाम के प्रेम की, पाती पढ़ो हमेश ।
कह टेऊँ मन शान्त हो छूटे ताप कलेश ।।

२ सितम्बर को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी उत्सव आश्रम में मनाया गया। स्वामीजी ने सायंकाल भगवान श्रीकृष्ण की महिमा का मधुर भजन गाते हुए कहा कि बाल्यावस्था में भगवान श्रीकृष्ण को मिट्टी खाते देख माता यशोदा दौड़कर आईं और आते ही बालक श्रीकृष्ण पर क्रोध करते पूछा कि तुमने मिट्टी क्यों खाई? बालक भगवान ने उत्तर दिया कि मैंनें मिट्टी नहीं खाई है । उस पर यशोदा ने अधिक क्रोधित होकर कहा कि मुझे मुंह खोलकर बताओ तो पता चले कि तुमने मिट्टी खाई है या नहीं । बालक कृष्ण ने ज्यों ही मुख खोला तो माता उसके मुख में तीनों लोकों का दर्शन करके आश्चर्य में पड़ गई और उसने नन्दलाल का आलिंग्न किया । वह सोचने लगी कि जिस को मैं अपना पुत्र समझती हूं वो तो त्रिलोकीनाथ हैं । भगवान की अनेकानेक लीलाएं हैं । आज सारी रात बैठकर भगवान श्रीकृष्ण का नाम जपें तो अवश्य भगवान श्रीकृष्ण आपको दर्शन देंगे ।

१० अक्टूबर को पूज्य सन्त पूर्णप्रकाशजी परलोक पधारे । स्वामीजी

ने उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि वह प्यारा शांत रहकर आश्रम व भंडारे की कितनी न सेवा करता था, साथ ही बगीचे की भी देख रेख करता था। परमात्मा से प्रार्थना है कि उसकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

२८-२९ अक्टूबर को स्वामीजी ने पूणे में स्वामी ग्वालानन्दजी की पुण्य तिथि उत्सव के अवसर पर स्वामी रामकृष्ण आश्रम में सत्संग किया। ३० अक्टूबर को स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम लौट आये। १ नवम्बर को दीपावली के दिन कुछ श्रद्धालु प्रेमी स्वामीजी को बही खातों (चोपड़ों) के मुहूर्त के लिए बम्बई ले गये। दीपावली की रात को स्वामीजी वापस आश्रम लौट आये। २ नवम्बर को चन्द्र दर्शन के दिन स्वामीजी ने श्री कार्तिक कथा का शुभारम्भ किया। ९ नवम्बर को गोपाष्टमी के दिन स्वामीजी ने राधेश्याम गौशाला में प्रवचन करते हुए कहा कि गौ हमारी माता है, सुखों की दाता है। भगवान श्रीकृष्ण ने आज के दिन गौ चराना शुरू किया था। इसीलिए श्रद्धा और प्रेम से गौ सेवा करनी चाहिये। १२ नवम्बर को कार्तिक एकादशी के दिन प्रात: सत्संग के बाद सैकड़ों श्रद्धालू प्रेमी स्वामीजी के साथ जुलूस में राम नाम की धुनि लगाते श्मशान भूमि की ओर चले। स्वामीजी ने वहां बैरागमय उपदेश दिया। १५ नवम्बर को कार्तिक पूर्णिमा के दिन स्वामीजी ने श्री कार्तिक कथा एवं गुरु ग्रंथसाहब के पाठों का समापन किया। स्वामीजी ने रात को सिन्धुनगर-२ और सिन्धुनगर-५ में श्री गुरुनानकदेवजी साहब के जन्म दिन के अवसर पर सत्संग करते हुए उनके जीवन पर प्रकाश डाला।

१८ नवम्बर को पूज्य सतगुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज विदेश यात्रा से बम्बई लौट आये। वहां दादर में मंडली की ओर से उनका भव्य स्वागत किया गया। उस अवसर पर पूज्य स्वामीजी ने कहा कि सतगुरु महाराजजी विदेश यात्रा पूरीकर आज यहां पधारे हैं, यह हमारा सौभाग्य है। सतगुरु महाराजजी ने विदेश के विभिन्न नगरों में जाकर हजारों प्रेमियों की प्यास पूरी करके उन्हें नाम का अमृत पिलाया है।

स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मन्दिर सिन्धुनगर-५ का पांचवा वार्षिक उत्सव ५ दिसम्बर से ९ दिसम्बर तक परम श्रद्धेय सतगुरु स्वामी सर्वानन्दजी

महाराज की अध्यक्षता में मनाया गया । उत्सव में स्वामी बसन्तराम, स्वामी माधवदास, स्वामी चन्दनप्रकाश स्वामी मुरलीधर, स्वामी जीवन मुक्त, स्वामी जयप्रकाश, स्वामी किशनदास, स्वामी स्वयंप्रकाश, स्वामी गणेशानन्द, सन्त भजनदास व अन्य कितने ही सन्त महात्मा पधारे।

५ दिसम्बर सायंकाल ४ बजे सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के नेतृत्व में शाही जुलूस निकला, जिसमें भगवान श्रीकृष्ण, भगवान श्रीराम और सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज की झांकियाँ दर्शायी गई थीं । जुलूस में हजारों श्रद्धालू प्रेमी "सत्नाम साक्षी" की धुनि लगाते हुए, नाचते गाते, सत्गुरु महाराज की जय जयकार करते हुए चल रहे थे ।

चारों ही दिन प्रात: और सायं पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज व अन्य सन्तों ने सत्संग वर्खा की । इस अवसर पर पूज्य स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज और मंडल के अन्य सन्तों का आभार मानते हुए कहा कि जहां सतगुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज हैं वहां उत्सव ही उत्सव होते हैं । इन महान विभूतियों के पधारने से यहां स्वर्ग उतर आया है । दास तो यही चाहता है कि सत्गुरु महाराजजी यहीं पर ही रहें ताकि बारह महीने ही ऐसा आनन्द का वातावरण बना रहे । सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने अमृत वर्खा करते हुए कहा कि सन्त शान्तिप्रकाश, प्रेम प्रकाश मंडल के प्यारे सन्त है । उन्होंने अपने मधुर स्वभाव से हजारों दिलों को वश में किया है और वे कितने ही सेवा के कार्य कर रहे हैं । भगवान व गुरु महाराजजी का इन पर आशीर्वाद रहेगा जिससे परोपाकर के और अधिक कार्य करके मंडल का यश बढ़ायेंगे ।

सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने ऋषि जड़भरत का उदाहरण देते हुए कहा कि जगत् के पदार्थों व मित्रों से मोह न रखें । मोह दु:खदायी है । संसार में अनासक्त भाव से रहें । ऋषि जड़भरत ने एक मृग के बच्चे पर दया करके उसकी रक्षा व पालन पोषण किया। धीरे धीरे उस मृग के बच्चे से उनका मोह बढ़ता गया । एकदिन वह मृग चला गया ऋषि ने मृग की बहुत तलाश की किंतु मृग का कहीं पता न चला । इस कारण उनका मन बहुत दु:खी हुआ । जिस समय

वे भजन में बैठते तो उनका मन-मस्तिष्क मृग में ही लगा रहा। मोह के कारण उनके चित्त की स्थति डांवांडोल हो गई। इसीलिए किसी में भी आसक्ति न रखें। दहेज, मांस, शराब और जुआ से किनारा करें सदैव प्रभु को याद करें।

उत्सव के समापन के समय पूज्य स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज और उत्सव में आए अन्य सन्तों का आभार मानते हुए कहा कि सेवा में यदि कोई भूल हुई हो तो दास को क्षमा करें।

प्रेम प्रकाश आश्रम दिल्ली के संचालक पूज्य सन्त जयप्रकाशजी जयपुर अमरापुर स्थान पर १५ दिसम्बर को ब्रह्मलीन हुए। स्वामीजी ने वहां सन्त जयप्रकाशजी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

महिला वर्ष के उपलक्ष्य में जनता जनार्दन परिषद के तत्वावधान में ४ जनवरी १९७६ रविवार के दिन स्वामी टेऊँराम आश्रम सिन्धुनगर-५ में अखिल भारतीय सिन्धी महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। महाराष्ट्र की समाज कल्याण विभाग की मंत्री श्रीमती प्रतिभा पाटिल ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर पूज्य स्वामीजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि हमारी हिन्दू संस्कृति के अनुसार नारी का दर्जा ऊंचा है। जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं। यह वर्ष सम्पूर्ण विश्व में महिला वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। नारी हर स्थिति में देना ही जानती है, तो भी आज के सभ्य युग में नारी अत्याचारों की शिकार हो रही है। दहेज के कारण हजारों अधिक उम्र की कन्याएं अविवाहित रहकर अविरल आंसू बहा रही हैं। यह समाज पर बहुत बड़ा कलंक है। आज नारी जाति को जाग्रत होकर सामाजिक अत्याचारों का सामना करना चाहिए। नारी, शक्ति का रूप है। निर्बल नहीं है।

इस अवसर पर श्रीमती प्रतिभा पाटिल, बहन कमला हीरानन्द, बहन लक्ष्मी सिधवा, सन्मुख ईसराणी एवं अन्य भाई बहिनों ने भी अपने विचार व्यक्त किए। डा. दयाल 'आशा' ने सम्मेलन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर शहीद हेमू कालाणी की माता श्रीमती जेठीबाई का भी सम्मान किया गया। बहन कान्ता कुकरेजा और बहन नीलम बालाणी ने उपस्थित बहिनों का आभार प्रकट किया।

२१ जनवरी को आश्रम में शहीद हेमूं कालाणी के शहीदी दिवस पर स्वामीजी ने निर्भीक देश भक्त हेमूं कालाणी को श्रद्धांजलि दी। २६ जनवरी को गणतन्त्र दिवस पर स्वामीजी ने प्रातः राष्ट्रीय ध्वज फहराया और शाम को सत्संग सभा में स्वतन्त्रता के विषय पर विचार व्यक्त किये।

३० जनवरी को स्वामीजी ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी व अन्य शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की। रोहड़ा ब्रादरी मंडल का वार्षिक उत्सव ६ फरवरी प्रातः १० बजे घाटकोपर, बम्बई में पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। स्वामीजी ने वहां प्रवचन करते हुए कार्य-कर्ताओं को साधुवाद दिया तथा अनुरोध किया कि आजकल दहेज के कारण कितने ही घरों में अशान्ति है इसलिए इस प्रथा को निर्मूल नष्ट करने का प्रयत्न करें। अपनी कमाई का कुछ हिस्सा दान करो और नाम स्मरण करें सन्तों, सत्पुरुषों का संग करें।

कह टेऊँ संसार में सन्तों का कर संग।
सन्तों के सत्संग में लागत आत्म रंग॥

१३-१४ फरवरी को पूज्य स्वामीजी ने कपलेश्वर महादेव मन्दिर कुर्ला, बम्बई में महा शिवरात्रि उत्सव के सम्बंध में प्रवचन किये।

४ मार्च से १६ मार्च तक स्वामीजी ने वडाला, बम्बई में सत्संग प्रवचन किया। पूज्य स्वामीजी ने विभिन्न विषयों पर प्रवचन करते हुए प्रेमियों से अनुरोध किया कि मांस व शराब से किनारा करें। धार्मिक दृष्टि से या स्वास्थय के विचार से मांसाहार पदार्थ अत्याधिक हानिकारक हैं। श्री गुरु नानकदेवजी महाराज फरमाते हैं-

जे रत लगई कपड़े, जामा होइ पलीत।
सो रत पीवे माणसा तिन कउं निर्मल चीत॥

जिस रक्त के लगने से वस्त्र दूषित हो जाते हैं, उस रक्त मांस के आहार से मनुष्य का मन निर्मल कैसे होगा? जैसा अन्न खायेंगे वैसा मन होगा। ऐसे खान पान से चित्त की वृत्ति भगवद् भजन में नहीं लगेगी। इसलिए मांस व शराब का परित्याग करें।

प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव १३ अप्रैल से १७ अप्रैल

तक अमरापुर स्थान जयपुर में आयोजित किया गया । इस उत्सव के अवसर पर पूज्य स्वामीजी ७ अप्रैल जयपुर पधारे । पूज्य स्वामीजी सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की समाधि पर नतमस्तक होकर सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के पास पहुंचे। उनके श्रीचरणों में प्रसाद इत्यादि रखकर उन्हें प्रणाम किया । सत्गुरु महाराज ने स्वामीजी से कुशलक्षेम पूछा । तदुपरान्त स्वामीजी मंडल के अन्य सन्तों से मिले। १६ अप्रैल सायं पूज्य स्वामीजी ने सत्संग-प्रवचन करते हुए कहा-

तन मन धन पुन वचन से कीजिये गुर की सेव ।
गुर को प्रसन्न जान के लीजे आत्म मेव ।।

सत्गुरु की सेवा करते हुए सर्वस्व समर्पित करना चाहिए । जब देखें कि गुरु महाराजजी हमारी सेवा से प्रसन्न हैं तब उन से आत्म ज्ञान की दीक्षा लेनी चाहिये । गुरु, शिष्य के प्रेम व श्रद्धा से प्रसन्न होते हैं । समर्थ गुरु रामदासजी शिवाजी महाराज को बहुत प्यार करते थे। उनके दूसरे शिष्यों के मन में यह भावना पैदा हुई कि शिवाजी महाराज राजा है इसीलिए समर्थ गुरु रामदासजी उनको अधिक प्यार करते हैं। शिष्यों की इस शंका को दूर करने के लिए एक बार समर्थ गुरु रामदास जी महाराज शिष्यों के साथ जंगल में गये । उनके कुछ शिष्य रास्ता भूलकर दूसरी तरफ चले गये और गुरु रामदासजी एक गुफा में पेट के दर्द का बहाना करके लेट गये । दर्द से कराहने लगे । उस समय गुफा के बाहर शिवाजी महाराज पहुंचे तथा अपने गुरु के कराहने की आवाज सुनकर तुरन्त गुफा के अन्दर गये । गुरुजी से पूछा कि "महाराज! आपको क्या तकलीफ है।" समर्थ गुरु रामदासजी ने शिवाजी महाराज की परीक्षा लेने के विचार से कहा कि पेट का दर्द बढ़ गया है । इसका उपचार बहुत कठिन है । शिवाजी महाराज ने प्रार्थना करते हुए कहा कि कृपा करके बतायें कि आपका यह दर्द कैसे दूर होगा? मैं इलाज की व्यवस्था करूंगा । गुरु रामदासजी ने उत्तर दिया कि "इस दर्द को दूर करने के लिये शेरनी का ताजा दूध चाहिये" । तत्पकाल ही शिवाजी महाराज गुरु को प्रणाम करके जंगल में शेरनी की तलाश में निकल पड़े । उन्होंने जंगल में शेरनी के दो बच्चे देखे । उन्होंने विचार किया कि शेरनी के बच्चे यहां हैं तो शेरनी भी यहीं कहीं

होगी ऐसा सोच ही रहे थे कि थोड़ी देर में शेरनी भी वहां आ पहुंची और आते ही शिवाजी को पंजा मारकर नीचे गिरा दिया । शिवाजी महाराज ने प्रभु से आराधना करते हुए, शेरनी से कहा कि "माता" मुझे तुम्हारे दूध की आवश्यकता है । मैं तुम्हारे बच्चे लेने नहीं आया हूं और न ही कोई शिकार करने आया हूं । तुम्हारा दूध मेरे गुरु को चाहिये। दूध गुरु को देकर आऊँ तब तुम मेरा अवश्य भक्षण करना शेरनी यह सुनकर शान्त हो गई ।

शिवाजी शेरनी का दूध लेकर अपने गुरु की ओर जा ही रहे थे कि उधर से उनके गुरु अपने कुछ शिष्यों सहित शिवाजी की तलाश में निकले । रास्ते में ही वे एक दूसरे से मिले । समर्थ गुरु रामदासजी ने शिवाजी से पूछा कि "शेरनी का दूध लेकर आये"? शिवाजी ने उत्तर दिया "महाराज! मैं आपके लिये शेरनी का दूध ले आया हूं।" यह उतर सुनकर दूसरे शिष्यों की शंका दूर हो गई । गुरु अगर किसी शिष्य को अधिक प्यार करते हैं तो उसकी निष्ठा, श्रद्धा एवं समर्पण की भावना के कारण। शिवाजी महाराज ने अपने प्राणों की परवाह न करके किसी तरह अपने गुरु की इच्छा पूरी की । गुरु को शेरनी के दूध की आवश्यकता नहीं थी, केवल उन्हें दूसरे शिष्यों को दिखाना था कि शिवाजी में कितनी समर्पण की भावना है । गुरु को जो भी अर्पित किया जाय वह कम है । परन्तु गुरु त्याग व वैराग की मूर्ति हो । प्रेमियो! आप भी श्रद्धा से सत्गुरुओं की सेवा करें तो आपको अवश्य फल की प्राप्ति होगी ।

२५ अप्रैल को स्वामीजी, सत्गुरु महाराज से विदा लेकर कोटा आये वहां स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम में स्वामीजी ने पांच दिन सत्संग प्रवचन किया । २ मई वे गोधरा पधारे । वहां स्वामीजी ने तीन दिन सत्संग वर्खा की । ६ मई को पूज्य स्वामीजी सिन्धुनगर लौट आये। १७ मई को स्वामीजी कवि पहिलाजराम की पुण्य तिथि उत्सव के सम्बंध में देवलाली गये । वहां पूज्य स्वामीजी ने १७-१८ मई को सत्संग करते हुए कवि पहिलाजराम के गुणों का वर्णन करते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की । ७ जुन को आश्रम में पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की पुण्य तिथि मनायी गयी । स्वामीजी

ने सत्गुरु महाराज के जीवन का उल्लेख करते हुए कहा कि बाल्यवस्था में ही सत्गुरु महाराज किस तरह जंगल में जाकर भगवत् भजन करते थे। उनका मन पढ़ने में नहीं लगता था। सन्तों दरवेशों के संग से ही उन्हें आनन्द मिलता था। प्रेमियों! आप भी क़िसी न किसी संत सत् पुरुष का संग तरें तो आपको भी आतिमक रंग लगेगा।

१४ जुलाई १९७६ को पेसूमल प्रभदास ककवाणी आश्रम पर परलोक पधारे। १६ जुलाई को उनके उठावनी के अवसर पर वडाला, बम्बई में स्वामीजी ने भावभीनी श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि श्री पेसूमल धनवान होते हुए भी बहुत सादगी एवं संयम वाला जीवन व्यतीत करते थे। वे दु:खी दरिद्रों की कितनी न सेवा करते थे। आश्रम के नवीन मन्दिर निर्माण में भी उन्होंने अत्याधिक पुरुषार्थ किया। परमात्मा से प्रार्थना है कि उन्हें अपने पावन श्री चरणों में रखे।

२० जुलाई को आश्रम में सुन्दर सेवक सभा व जनता जनार्दन परिषद के तत्वावधान में स्वामीजी की अध्यक्षता में श्री पेसूमल प्रभदास को श्रद्धांजलि दी गई। स्वामीजी व अन्य समाज सेवकों ने प्यारे पेसूमल को श्रद्धांजलि अर्पित की।

२२ जुलाई को गुरु पूर्णिमा का उत्सव आश्रम पर मनाया गया। स्वामीजी ने प्रात: के सत्संग में "सत्गुरु की आवश्यकता।" विषय पर प्रवचन दिये हजारों प्रेमियों ने स्वामीजी से आशीर्वाद लिया। सायंकाल स्वामीजी ने स्वामी ग्वालानन्द आश्रम में सत्संग किया।

१ अगस्त श्री लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की पुण्य तिथि के अवसर पर सायं स्वामीजी ने श्री लोकमान्य तिलक को पुष्पांजलि अर्पित की।

७ अगस्त को पूज्य दादा जशन वास्वाणी का जन्म दिन उत्सव आश्रम में मनाया गया। इस अवसर पर स्वामीजी ने कहा कि श्री जशन वासवाणी प्यार व दया की मूर्ति, विनम्रता और सादगी की तस्वीर हैं। प्रेमियों! आप भी अपने जीवन में इन सद्गुणों का समावेश करें। १५ अगस्त को प्रात: स्वामीजी ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया तथा सायं सत्संग में स्वामीजी ने आज़ादी के इतिहास पर प्रकाश डाला।

मनीला के प्रेमी श्री गेनाराम दादलाणी स्वामीजी से मिलने के लिये

सिन्धुनगर आश्रम आये । श्री गेनाराम प्रेमी, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज और सन्तों के श्रद्धालू तथा दुःखी दरिद्रों के सेवक थे । इस प्यारे ने स्वामीजी से आत्मिक ज्ञान ध्यान की बातें की । कुछ समय बाद दास को बाहर लेकर कहा कि सत्गुरु स्वामीजी सर्वानन्दजी महाराज हमें मनीला में कहकर गये हैं कि अब यहां मनीला में हमारा फिर आना नहीं होगा । तब प्रेमियों ने उनसे पूछा कि स्वामीजी! हमारे अज्ञान अन्धकार को आप के अलावा कौन दूर करेगा? तब पूज्य स्वामी सत्गुरु सर्वानन्दजी महाराज ने कहा कि "प्रेमियो ! भविष्य में आपके यहां सन्त शान्तिप्रकाशजी आएंगे और आकर आपको आनन्द व अमृत पान करायेंगे ।" सत्गुरु महाराज की भविष्य वाणी वास्तव में सत्य सिद्ध हुई ।

१८ अगस्त को स्वामीजी के श्रद्धालू सेवक काका वलरमल वाधवा परलोक पधारे । सायं सत्संग में स्वामीजी ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की ।

५ सितम्बर को स्वामीजी का जन्मदिन उत्सव आश्रम में मनाया गया । प्रातः यज्ञ और दीन दुखियों की सेवा की गई । शाम को विशेष उत्सव में प्रेमी श्रद्धालूओं ने अपने प्रेम की पुष्पांजलि अर्पित की । इस अवसर पर स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि प्रेमियो! मुख से नाम का स्मरण करें और हाथों से दान करें । सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भी फरमाते हैं-

मुख से सुमरन ना करे, कर से देह न दान ।
कह टेऊँ तिस मनुष का जीवन वृथा जान ।।

दुःखी दरिद्रों पर दया कर उनकी सेवा करें । स्मरण और सेवा के सिवाय मनुष्य जन्म बेकार है ।

१८ सितम्बर को जन्माष्टमी के दिन स्वामीजी ने नन्द नंदन भगवान श्रीकृष्ण की महिमा का भजन गाते हुए उनकी बाल लीलाओं का वर्णन किया । २३ सितम्बर को भगवान श्रीकृष्ण की छठी उत्सव के अवसर पर स्वामीजी ने कुर्ला, बम्बई में प्रवचन किया ।

१८ अक्टूबर को स्वामीजी, स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज की पुण्य

तिथि उत्सव के सम्बंध में पूना गये। स्वामीजी ने वहां स्वामी रामकृष्ण के आश्रम में १८-१९ अक्टूबर को सत्संग प्रवचन करते हुए पूज्य स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज के गुणों का वर्णन किया। २० अक्टूबर को स्वामीजी सिन्धुनगर लौट आये।

२३ अक्टूबर की प्रातः स्वामीजी ने श्री कार्तिक कथा का शुभारम्भ किया। कार्तिक कथा के दिनों में सैकड़ों श्रद्धालू प्रेमी प्रातः आकर स्वामीजी के दर्शन और सत्संग का लाभ उठाते थे। ३० अक्टूबर को गोपाष्टमी के दिन सायं श्री राधेश्याम गौशाला में स्वामीजी ने गौ माता की महिमा का वर्णन किया। ३ नवम्बर को कार्तिक एकादशी के दिन प्रातः के सत्संग के पश्चात् सैकड़ों श्रद्धालू प्रेमी नाम की धुनि लगाते हुए स्वामीजी के साथ श्मशान भूमि गये। वहां स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा "मसान" का अर्थ है जहां कुछ भी साथ लेकर नहीं आते। माल, सम्पति, धन दौलत, बंगले, महल व हवेलियां सब छोड़कर हर एक खाली हाथ आता है। इसलिये परमात्मा केदिये गये पदार्थों में से दान व पुण्य के काम करें। ६ नवम्बर, कार्तिक पूर्णिमा के दिन स्वामीजी ने आश्रम में कार्तिक कथा का समापन किया। सायंकाल आश्रम में और रात को सिन्धुनगर-२ में माता परमेश्वरी के स्थान और सिन्धुनगर-५ में सरदार राजलसिंह बठीजा की ओर से आयेजित गुरुनानकदेव के जन्म दिन उत्सव में स्वामीजी ने सत्संग करते हुए श्री गुरुनानकदेवजी साहब के जीवन पर प्रकाश डाला।

स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मन्दिर सिन्धुनगर-५ का वार्षिक उत्सव २४ नवम्बर से २९ नवम्बर १९७६ तक आयोजित किया गया। २३ नवम्बर सबेरे सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज मंडली सहित पधारे। पूज्य स्वामीजी ने सत्गुरु महाराज व आये हुए सभी सन्तों का स्वागत सत्कार किया। २४ नवम्बर, सबेरे सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने झण्डा फहरा कर उत्सव का शुभारम्भ किया। पांचों ही दिन सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज व अन्य सन्तों ने प्रवचन किये। उत्सव की समाप्ति के समय पूज्य स्वामीजी ने सत्गुरु महाराज व अन्य सन्तों का आभार मानते हुए कहा कि सत्गुरु महाराज एवं अन्य सन्तों ने अमूल्य वचनामृत का पान कराकर आत्मिक आनन्द का रसास्वादन

कराया है । सत्गुरु महाराज अभी कुछ दिन और भी रहकर हमें यहां नाम का अमृत पिलायेंगे ।

सन्त वचन और बटक बीज ज्यों द्वितीया को चंड ।
देखन को नेकौ भइया बढ़त बढ़त करत रंग ।।

सन्तों सत्पुरुषों के वचन, वट वृक्ष का बीज और द्वितीया का चन्द्रमा छोटे देखने में आते हैं परन्तु वे बढ़कर बड़ा रंग दिखाते हैं । सत्गुरुओं के वचन मानो सूत्र हैं उन सूत्रों की जितनी व्याख्या करें उतनी कम है । उनमें गम्भीर अर्थ समाहित होता है ।

१५ दिसम्बर को स्वामीजी सन्त प्रभाराम साहब की पुण्य तिथि उत्सव के उपलक्ष्य में अहमदाबाद के लिए रवाना हुए । वहां स्वामीजी ने १६-१७ दिसम्बर को प्रवचन करते हुए सन्त प्रभाराम साहब के सद्गुणों का वर्णन किया । १९ दिसम्बर को स्वामीजी सिन्धुनगर लौट आये ।

महाकुम्भ का मेला दिसम्बर १९७६ से इलाहाबाद में आरम्भ होने वाला था । प्रेम प्रकाश मंडल की ओर से वहां शिबिर लगाई गई। सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने अन्न क्षेत्र का शुभारम्भ किया। स्वामीजी भी २४ दिसम्बर को इलाहाबाद पहुंच गये । सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज, पूज्य स्वामी बसन्तराम, स्वामी माधवदास, स्वामीजी, स्वामी चन्दनराम, स्वामी गणेशानन्द, स्वामी स्वयंप्रकाश, स्वामी मुरलीधर, सन्त हरिदासराम, सन्त भजनदास और अन्य सन्त महातमा लगाये गये मंडप में प्रातः व सायं सत्संग प्रवचन करते थे ।

१४ जनवरी १९७७ को कुम्भ का मुख्य स्नान पर्व था। स्वामीजी ने अन्य सन्तों के साथ त्रिवेणी जाकर डुबकी लगाकर स्नान किया। स्वामीजी कुम्भ के मेले में अनेकों सन्त महात्माओं से भी मिले और उनके साथ ज्ञान गोष्ठी की । वहां स्वामीजी ने एक दिन प्रवचन करते हुए कहा-

दया दया सब कोई कहे, मर्म न जाने कोय ।
जात जीव जाने नहीं, दया कहां से होय ।।

दया दया तो सभी कहते हैं, परन्तु उसके मर्म को नहीं जानते। जब तक सभी प्राणियों में साक्षी चेतन ब्रह्म का दर्शन नहीं करेंगे तब तक उनके मन में दया भाव कैसे उत्पन्न होगा। जो दूसरों पर दया करता है, परमात्मा उस पर दया करता है।

एक उदारचित्त धनवान सैर करता करता एक आमों के बगीचे में जा पहुंचा। उस बाग के चौकीदार के पास खाने के लिये कुल दो रोटियां थी। इस बीच वहां एक कुता आया। उस चौकीदार ने एक रोटी कुत्ते को दी। कुत्ता बहुत भूखा लग रहा था, एकदम वह रोटी खा गया। उस चौकीदार ने फिर दूसरी रोटी भी कुत्ते को दे दी। यह देखकर उस धनवान ने चौकीदार से पूछा कि तुमने तो दोनों रोटियां इस कुत्ते को खिला दीं, अपने लिये तो एक भी नहीं रखी, ऐसा क्यों? चौकीदार ने उत्तर दिया कि सांई! यह कुत्ता यहां का नहीं है, शायद कहीं दूर से आया है और बहुत भूखा लग रहा था, इसलिए मैंने सोचा कि अगर मैंने रोटी नहीं खाई तो कोई बात नहीं, लेकिन दूर से आये भूखे का पेट भरना चाहिये। मैं तो इस बाग के मालिक का खरीदा हुआ दास हूं। नौकर की इतनी बड़ी उदारता देख वह धनवान बहुत खुश हुआ। उसने सोचा कि गरीब खुद गुलाम होते हुए भी उसका दिल कितना न विशाल है जो, स्वयं भूखा रहकर उसने एक पशु की भूख मिटाई। यह प्यारा गरीबी और मजबूरी के कारण चौकीदार बना है, अन्यथा यह एक बहुत योग्य पुरुषार्थी मनुष्य लगता है। इस उदार चित धनवान ने बगीचे के मालिक से बाग एवं वह नौकर खरीद कर लिया। बाग खरीद करके हमेशा के लिये उस नौकर को सौंप दिया और गुलामी से उसे मुक्त किया। नौकर अपनी उदारता और दया भाव के करण बाग़ का मालिक बन गया। उस धनवान और इस नौकर के बीच बाप बेटे जैसा नाता बन गया। समय पर कुत्ते को दो रोटियां खिलाने से नौकर भी मालिक बन गया। आप भी दया की भावना रखें।

२८ जनवरी को स्वामीजी, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से आशीर्वाद लेकर सिन्धुनगर आश्रम लौट आये।

रोहड़ा बिरादरी मंडल का वार्षिक उत्सव ५ फरवरी को प्रातः ११

बजे वर्ली, बम्बई में शुरु हुआ । पूज्य स्वामीजी ने मंडल के कार्य कर्त्ताओं को आर्शीवाद देते हुए कहा कि गम खाकर भी आपस में एकता बनाये रखें । विवाह का पवित्र रिश्ता आज बच्चों का खेल बन गया है, छोटी-बड़ी बात पर पुरुष औरतों को तलाक दे देते हैं। यह महापाप है इसलिए इस तलाक के रोग को दूर करें । घरों में प्रेम व शान्ति का वातावरण पैदा करें ।

१६-१७ फरवरी को स्वामीजी ने कपलेश्वर महादेव मन्दिर कुर्ला बम्बई में महाशिवरात्रि उत्सव के सम्बन्ध में प्रवचन किये ।

२ से १४ मार्च तक स्वामीजी ने वडाला ब्रादर मंडल की ओर से आयोजित होली उत्सव में प्रतिदिन रात को और रविवार सायं को सत्संग किया । स्वामीजी ने आध्यात्मिक व सामाजिक विषयों पर प्रवचन किये । मुखी चोईथराम बेगराज ने सत्संग के अन्तिम दिन सायं को स्वामीजी का आभार प्रकट किया ।

आन्ध्र प्रदेश में तूफान व बाढ़ के कारण भयंकर क्षति हुई । स्वामीजी ने तूफान व बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए आन्ध्र प्रदेश के कृष्णा जिले में सेवा केन्द्र खोला । इस सेवा कार्य के लिये स्वामीजी ने सुन्दरदास आडवाणी, मुरली खेमाणी, किशनचन्द पारवाणी, गुरनोमल, वासूमल शहाणी, परसराम पारवाणी और हासानन्द माखीजाणी को भेजा। गांधीनगर, कोल्हापुर से भी हरी बलीं को भेजा।

उन पीड़ितों की सहानुभूति एवं सेवा के लिए स्वामीजी १७ मार्च को हैद्राबाद रवाना हुए । वहां हैदराबाद में गुरु संगत में स्वामीजी ने १८ मार्च सायं सत्संग प्रवचन किया । भाई जेठानन्द राष्ट्रवादी, श्री कोटूमल सोभराज देवनाणी और दूसरों ने स्वामीजी का दुशालों व फूल मालाओं से स्वागत किया। १८ मार्च की रात्रि को स्वामीजी विजयवाड़ा को रवाना हुए । वहां से स्वामीजी कृष्णा जिले के बाढ़ ग्रस्त इलाके में आये । स्वामीजी के साथ तुलसीदास मोटवाणी, सन्त अशोकलाल. श्री गोबिन्दराम भाटिया सन्त देव प्रकाश और दयाल "आशा" भी साथ थे । वहां स्वामीजी पांच दिन रहे । स्वामीजी ने बाढ़ पीड़ितों से उनका हाल-चाल पूछा और उन्हें कम्बल, कपड़े, बर्तन और अनाज दिया । २७ मार्च को स्वामीजी वापस सिन्धुनगर लौट आये ।

३० मार्च को स्वामीजी जयपुर रवाना हुए । वहां अमरापुर स्थान पर २ अप्रैल से प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव व चैत्र मेला आरम्भ होने वाला था । स्वामीजी ३१ मार्च को ही अमरापुर स्थान पर पहुंच गए । स्वामीजी, पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराजजी की समाधि पर नतमस्तक हुए फिर सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के कमरे में आये । स्वामीजी ने सत्गुरु महाराज के श्री चरणों में प्रसादी भेंट कर उन्हें प्रणाम किया ।

३ अप्रैल की सायं, पूज्य स्वामीजी ने सत्संग करते हुए कहा-

कह टेऊँ संसार में, लेह नाम की ओट ।
अन्तकाल दुःख ना लगे, मिटे कर्म अघ कोट ॥

प्रेमियो ! परमात्मा की शरण लेने से, उनका नाम जपने से जीव का अन्त अच्छा होता है, उसके जन्म जन्म के पाप नष्ट हो जाते हैं । प्रभू के नाम में बड़ी शक्ति है ।

एक बार राजा पीपा अपनी पत्नी सीता के साथ द्वारकापुरी की यात्रा कर वापस लौट रहे थे कि रस्ते में सामने से एक शेर आया, जो कितने ही आदमियों व पशुओं को खाकर आदमखोर बन चुका था । उस शेरने राजा पीपा की ओर भी झपटा मारा । राजा पीपा ने अपने गले में पड़ी माला उतार कर तुरन्त उस शेर के गले में डालदी और "जय श्रीकृष्ण, जय श्रीकृष्ण" का जाप किया । आदमखोर शेर एकदम शान्त हो गया और उस शेर ने मांस खाना छोड़ दिया । भक्त पीपा ने उस शेर के जीवन में परिवर्तन ला दिया । सातवें दिन उस शेर ने प्राण त्याग दिये और जुनागढ़ में मनुष्य का जन्म लिया जो नरसी मेहता के नाम से प्रसिद्ध हुआ । नरसी मेहता ने ईश्वर की कितनी न भक्ति और दीन दुखियों की सेवा की ।

प्रेमियों ! पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने भी कितनी न भक्ति की और लोक कल्याण के कार्य किए । सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज भी देश विदेश के भिन्न-भिन्न नगरों में जाकर नाम का अमृत पिलाते हैं । जब एक शेर ईश्वर का भक्त हो सकता है तो हमें भी चाहिये कि हम भी ऐसे उत्तम कार्य करें, नाम जपें जो आवागमन से मुक्ति मिल जाय ।

प्रेम प्रकाश आश्रम, इन्दौर के संचालक स्वामी मुरलीधर महाराज १२ अप्रैल को ब्रह्मलीन हुए। पूजनीय स्वामीजी इसीलिए जयपुर से सीधे इन्दौर के लिये रवाना हुए। वहां स्वामीजी ने स्वामी मुरलीधर जी महाराज को भावभीनी श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि स्वामी मुरलीधर एक सन्तोषी, सत्तोगुणी सन्त थे। उन्होंने सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के साथ भ्रमण कर प्रेमियों को नाम जपाया। स्वामीजी ने सन्त की तेरहवीं पर भी उनके सद्गुणों का वर्णन किया। २७ अप्रैल स्वामी जी इन्दौर से ग्वालियर आये। वहां चार दिनों तक सत्संग प्रवचन करके २ मई को सिन्धुनगर आश्रम पर वापस आये।

१४ मई को स्वामीजी देवलाली रवाना हुए। वहां कवि पहिलाज राम साहब की पुण्य तिथि उत्सव के सम्बन्ध में उनके स्थान पर स्वामी जी ने १४-१५ मई को सत्संग प्रवचन करते हुए कवि साहब के गुणों का वर्णन किया। १७-१८ मई को स्वामीजी ने नासिक आश्रम पर, होलाराम सोसायटी में व श्री निहचलदास के घर में सत्संग प्रवचन किये।

४ जून को आश्रम में पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की पुण्य तिथि मनायी गयी। सायं के सत्संग सभा में स्वामीजी ने पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की गुरु भक्ति का वर्णन किया।

११ जुलाई की रात्रि को पूज्य स्वामीजी को जयपुर से टेलीफोन द्वारा समाचार मिला कि परम पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का स्वास्थ्य ठीक नहीं है। यह समाचार सुनते ही स्वामीजी अपने सभी कार्यक्रम रद्द करके वायुयान द्वारा जयपुर रवाना हुए। स्वामीजी १२ जुलाई प्रातः अमरापुर स्थान, जयुपर पहुंच गये। वहां सत्गुरु महाराजजी के दर्शन कर उनसे स्वास्थ्य के बारे में पूछा। डाक्टर नारायणदास वन्जाणी सत्गुरु महाराजजी का इलाज कर रहे थे। १४ जुलाई को सत्गुरु महाराजजी को अस्पताल में भर्ती किया गया। सत्गुरु महाराजजी ने कहा कि हम अपने अमरापुर स्थान पर वापस चलेगे, यहां रह कर क्या करेंगे? १५ जुलाई, सत्गुरु महाराज की स्थिति अत्यंत गंभीर हो गई। डाक्टर नारायणदास वन्जाणी तथा अन्य डाक्टरों ने बहुत प्रयत्न किये पर स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ। ढालूराम दौलतराम, पूज्य

स्वामीजी, सन्त हरिदासराम और अन्य कितने ही प्रेमी व सन्त सत्गुरु महाराज की सेवा में उपस्थित ते । १७ जुलाई को सत्गुरु महाराज को अस्पताल से अमरापुर स्थान पर वापस लाया गया । १८ जुलाई की सायं से पूज्य गुरुवर के शीघ स्वास्थ्य लाभ हेतु सन्तों व प्रेमी श्रद्धालुओं ने "हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे, हरे राम, हरे राम, राम राम, हरे-हरे" की अखंड धुनि आरम्भ की । २१ जुलाई गुरुवार को ब्रह्म मुहूर्त में प्रात: ५-५० बजे परम श्रद्धेय तेज पुंच, अनाथ वत्सल, ज्ञान मूर्ति, हृदय सम्राट, तपोधन परम पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज इस संसार की यात्रा पूर्ण कर परम धाम पधारे अर्थात् आत्मा को परमात्मा में लीन करने हेतु ब्रह्मरंध से अपने तेजोमय प्रारशें का त्याग कर दिया।

पूज्य स्वामी बसन्तराम, स्वामी माधवदास, स्वामी जीवन मुक्त, स्वामीजी व अन्य सन्तों ने वैराग्य वाणी गाई । हज़ारों श्रद्दालू प्रेमी आंसू बहा रहे थे ।

पूज्य सत्गुरु महराजजी की इच्छानुसार उनका पार्थिव शरीर स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम, हरिद्वार लाया गया । मंडल के सभी सन्त भी हरिद्वार पहुंच गये । देश के कोने कोने से हजारों श्रध्दालू प्रेमी पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के अन्तिम दर्शन करने के लिये हरिद्वार आये । २३ जुलाई जब सत्गुरु महाराज का पार्थिव शरीर एक डोली में सजाकर आश्रम में से उठाया जा रहा था तो उस समय न केवल हज़ारों श्रद्धालू प्रेमियों की आंखों में अविरल आंसू थे, बल्कि आश्रम में स्थापित पूज्य गुरुवर आचार्य स्वामी टेऊँराम महाराजजी की संगमरमर की प्रतिमा की आंखों में भी आंसू आ गये । मैंने यह दृश्य स्वयं अपनी आंखों से देखा ।

पूज्य सत्गुरु महाराजजी की डोली के साथ सैकड़ों सन्त महात्मा व हज़ारों प्रेमी श्रद्धालू राम नाम की धुनी लगाते हुए चले । सुबह ११ बजे सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महराज के पार्थिव शरीर को गंगा तट (१० नवम्बर घाट) पर जल समाधि दी गयी । तत्पश्चात् मंडल के समस्त सन्त अमरापुर स्थान, जयपुर आये । वहां स्वामी बसन्तराम, स्वामी माधवदास, स्वामी जीवन मुक्त, पूज्य स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज,

सन्त हरिदासराम व अन्य सन्तों ने सत्गुरु महराज को भाव भीनी श्रद्धांजलि दी ।

ब्रह्मलीन पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज के त्रियोदशी के दिन गुरुवार ४ अगस्त १९७७ ई. को सुबह त्रियोदा की रस्म पूरी करने के पश्चात् मंडल के सभी सन्तों ने मिलकर पूजनीय स्वामी शान्ति प्रकाशजी महाराज को पूज्य गद्दी पर बिराजमान किया गया । इस अवसर पर स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि दास, मंडल के सभी सन्तों का आभारी है । दास पर आज बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी सौंपी है । पूज्य सत्गुरु महाराज की कृपा एवं सभी सन्तों के आशीर्वाद व सहयोग से ही दास सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज के यश को फैला सकेगा। जो भी बुद्धि बल है वह पूजनीय सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज व सत्गुरु स्वामी सर्वान्दजी महाराज की देन है, अन्यथा दास को कौन पहचाने!

प्रेमी जनो! आप भी पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज और सत्गुरु स्वामी सर्वान्दजी महराज के शिष्य हैं तो मैं भी उनका ही शिष्य हूं, दास हूं । इस नाते हम सभी गुरुभाई हैं । मुझे धर्मपीठ का अधिकारी नहीं बल्कि गुरभाई ही समझेगें । आइये हम सब मिलकर प्रेम प्रकाश मंडल के वृक्ष को अपने प्रेम जल से सींचकर हरा भरा रखें । सच्चा शिष्य वही है जो सत्गुरुओं की आज्ञा के अनुकूल उनकी सेवा करे। उनके द्वारा दिये गये नाम का अभ्यास करे, सत्गुरु महाराज अपनी पवित्र वाणी में फरमाते हैं-

गुरु की सेवा जो करे, गुरु की आज्ञामान ।
कह टेऊँ गुर नाम रट, गुरमुख सो पहिचान ।।

पूज्य स्वामी बसन्तराम, स्वामी माधवदास, स्वामी जीवन मुक्त, स्वामी चन्दनराम, स्वामी गणेशानन्द, स्वामी स्वयंप्रकाश, सन्त हरिदासराम, पंडित शीतलदास, सन्त भजनदास, सन्त अमरदेव, सन्त गंगाराम और अन्य आये सन्तों ने स्वामीजी को दुशाले व मालाएं पहनायी । स्वामीजी ने सन्त हरिदासराम, सन्त अशोक लाल, श्री ढालूराम दौलतराम व अन्य प्रेमियों को अमरापुर स्थान की सेवा का कार्य सौंपकर १८ अगस्त, सिन्धुनगर आश्रम लौट आये ।

२४ अगस्त, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन सत्संग करते हुए पूज्य स्वामीजी ने भगवान श्रीकष्ण की लीलाओं का वर्णन किया।

२५ सितम्बर को स्वामीजी ने सांई हरिचूराम साहब की पुण्य तिथि उत्सव के सम्बन्ध में उनके स्थान पर सत्संग किया।

१३ अक्टूबर को पूज्य स्वामीजी अहमदाबाद के लिये रवाना हुए, वहां स्वामी टेऊँराम मन्दिर अंबावाड़ी में स्वामीजी ने स्वामी ऊधवदास जी महाराज की पुण्य तिथि उत्सव के सम्बन्ध में १४-१५ अक्टूबर को सत्संग करते हुए सन्त ऊधवदासजी को श्रद्धांजलि अर्पित की। १७-१८ अक्टूबर को स्वामीजी ने रामनगर सूरत में सत्संग किया। १९-२० अक्टूबर को नौसारी में सत्संग वर्खा कर २१ अक्टूकर को पूज्य स्वामी जी सिन्धुनगर आश्रम लौट आये। १८ अक्टूबर को सन्त हरिदासराम जी जलगांव वाले ब्रह्मलीन हुए। २१ अक्टूबर की सायं के सत्संग में पूज्य स्वामीजी ने सन्त हरिदासरामजी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

५ नवम्बर स्वामीजी पूना के लिये रवाना हुए, पूज्य सतगुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज के ब्रह्मलीन होने के पश्चात् पूज्य स्वामी जी प्रथम बार स्वामी चन्दनराम प्रेम प्रकाश मंदिर, पूना में पधारे। ५-६- नवम्बर को उन्होंने स्वामी ग्वालानन्द महाराज की पुण्य तिथि उत्सव के सम्बन्ध में स्वामी राम कृष्ण के मन्दिर में सत्संग किया।

भगवत् कृपा से पूजनीय स्वामीजी के पास दिव्य दृष्टि थी। आश्रम के पास में पुष्पा डोडाणी व लाज डोडाणी दो बहनें रहती थीं। बहन पुष्पा ने पूजनीय स्वामीजी को विनती की कि प्रात: के समय आप के लिये चाय तैयार कर लाऊं तो स्वीकार करेंगे। पूजनीय स्वामीजी सभी प्रेमियों का मन रखते थे। स्वामीजी ने कहा कि चाय तैयार कर ले आना। दूसरे दिन प्रात: उस बालिका ने पूजनीय स्वामीजी के लिये घर में चाय तैयार की। मन में विचार किया कि पहली बार स्वामीजी के लिये चाय तैयार की है इसलिए प्रथम मैं पीकर देखूं कि चाय अच्छी बनी है या नहीं? यह विचार कर उसने चाय का कप पी लिया। फिर चाय जग में भरकर स्वामीजी के लिए आश्रम ले आई। स्वामीजी को जब इस बालिका ने चाय दी तो स्वामीजी

ने कहा कि तुम तो चाय पीकर आयी हो । यह सुनकर बहन पुष्पा आश्चर्य में पड़ गयी कि जब घर में उसने चाय पी तो रसोइ घर में कोई भी नहीं था, फिर स्वामीजी को यह पता कैसे चला कि मैं चाय पीकर, फिर लेकर आयी हूं फिर बहन पुष्पः ने स्वामीजी से क्षमा याचना करते हुए कहा कि आपके लिये पहली बार चाय बनायी थी, कहीं चाय ऐसी-वैसी न बनी हो इसीलिये स्वामीजी, मैंने पहले चाय पी के देखी।

एक बार बहन ईश्वरी डोडाणी अपनी माता मोरबाई डोडाणी के साथ पूना के आश्रम में स्वामीजी का दर्शन करने आयी । स्वामी जी ने कहा कि तुम तो घर की मालकिन हो । जब माता मोरबाई ने स्वामीजी के ये शब्द सुने तो वह मन ही मन यह सोचने लगी कि मेरे होते हुए स्वामीजी ने उसको मालकिन कहा । वास्तव में घर का सारा करोबार ईश्वरी ही चलाती थी, लेकिन यह बात स्वामीजी को कैसे मालूम हुई । माता मोरबाई आश्चर्य में पड़ गयी कि इसने कभी भी स्वामीजी से तो किसी तरह का कोई वार्तालाप नहीं किया है । उसे मानना पड़ा कि स्वामीजी अर्न्तयामी हैं ।

८ नवम्बर को स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम लौट आये । ११ नवम्बर, प्रातः स्वामीजी ने कार्तिक कथा का शुभारम्भ किया । १८ नवम्बर गोपाष्टमी के दिन राधेश्याम गौ शाला में स्वामीजी ने गौमाता की महिमा गाते हुए कहा कि गौ धन हमारा राष्ट्रीय धन है, इसलिये इसकी सुरक्षा करना हमारा परम कर्त्तव्य है । धार्मिक दृष्टि से या व्यावहारिक विचार से गौमाता की सेवा करना कल्याणकारी है । २१ नवम्बर को कार्तिक एकादशी के दिन प्रातः के सत्संग के पश्चात् स्वामी के साथ सैकड़ों प्रेमी श्रद्धालू राम-नाम की धुनि गाते हुए श्मशान भूमि की ओर गये। वहां स्वामीजी ने वैराग वाणी गाते हुए कहा कि आज के दिन दान पुण्य करने का बड़ा महत्व है । परमात्मा के दिये हुए धन से खूब दान पुण्य करें और आज की सारी रात जागरण कर नाम स्मरण करें।

२२ नवम्बर को स्वामीजी पूना रवाना हुए । वहां स्वामीजी ने स्वामी चन्दनरामजी के पास प्रेम प्रकाश मन्दिर में २२ नवम्बर से २४ नवम्बर तक श्री गुरुनानकदेवजी के जन्म दिन उत्सव के सम्बन्ध में प्रवचन

करते हुए श्री गुरुनानकदेवजी के जीवन की अनेक घटनाएं व शिक्षाएं बतायीं। २४ नवम्बर की सायं स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम लौट आये और सायं को प्रवचन करते हुए श्री गुरुनानकदेव के जीवन पर प्रकाश डाला। रात्रि को स्वामीजी ने सिन्धुनगर-२ में भाई पहिलोमल कुकरेजा और माता परमेश्वरी के स्थान पर सत्संग किया।

२ दिसम्बर, स्वामीजी ने के. सी कालेज, बम्बई में बम्बई पोर्ट ट्रस्ट सिन्धी सभा के उत्सव की अध्यक्षता करते हुए, सभा की ओर से प्रकाशित "जहाज़रानी" वार्षिक पत्रिका का विमोचन करते हुए कहा कि सभा के कार्य-कर्ताओं को साधुवाद है कि वे नौकरी करते हुए समय निकालकर सिन्धी साहित्य और भाषा की सेवा करते हैं और गरीबों की सेवा भी करते हैं। प्रभदास वाधवा ने स्वामीजी का स्वागत किया और भाई दीन दयाल डंगरेजा ने आभार प्रदर्शन किया।

स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मन्दिर सिन्धुनगर-५ का सातवां वार्षिक उत्सव सत्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाशजी महाराज की अध्यक्षता में मनाया गया। १३ दिसम्बर, स्वामीजी ने अन्य सन्तों के साथ मिलकर ध्वजा फहराकर उत्सव का शुभारम्भ किया। पूज्य स्वामीजी, स्वामी बसन्तराम, स्वामी चन्दन्नराम, स्वामी जीवनमुक्त, स्वामी धर्मदास, स्वामी किशनदास, स्वामी स्वयंप्रकाश, सन्त हरिदासराम, सन्त भजनदास तथा अन्य सन्तों ने चारों दिन प्रात: व सायं सत्संग वर्खा की। १७ दिसम्बर, प्रात: स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज व सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज परिपूर्ण सन्त थे.। सत्गुरु महाराज ने सैकड़ों प्रेमियो को नाम का अमृत पिलाया। जब जीव को ऐसे परिपूर्ण गुरु मिल जाते हैं तब जीव और ब्रह्म का तादात्मय हो जाता है। ऐसे महान पुरुषों के आशीर्वाद से मानसिक व शारीरिक कष्ट भी मिट जाते हैं। एक उर्दू शायर ने कहा है-

जो बात दवा से न हो सके, वो बात दुआ से होती है।
जब कामिल मुर्शिद मिलजाये, तब बात खुदा से होती है।

प्रेमियो ! आप भी प्रेम और श्रद्धा से सत्गुरु महाराजजी की शरण लें तो भव सागर से पार होकर परमात्मा को प्राप्त करेंगे।

१८ दिसम्बर १९७७, रविवार के दिन सुबह ११ बजे सुन्दर शेवक सभा के तत्वावधान में स्वामी सर्वानन्द अस्पताल की इमारत का शिलान्यास श्री साधुबेला के महन्त आचार्य स्वामी गणेशदासजी महाराज ने किया तथा समारोह की अध्यक्षता पूज्य स्वामीजी ने की । इस अवसर पर आचार्य स्वामी गणेशदास महाराज ने कहा कि सिन्धुनगर से बहुत से रोगी इलाज के लिये बम्बई जाते हैं । आशा है कि इस अस्पताल के बन जाने के पश्चात् ऐसे रोगियों का इलाज यहीं होगा और उन्हें इलाज कराने में बड़ी सुविधा होगी । इसलिए आप लोग इस शुभ कार्य के लिये दिल खोलकर दान करें ।

इस अवसर पर सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज ने भाई परसराम मसन्द को साधुवाद दिया, जिसने देश विभाजन के पश्चात् सिन्धुनगर-५ में सुन्दर सेवक सभा के द्वारा कितने ही जन सेवा के कार्य किये । स्वामीजी ने भाई पेसूमल प्रभदास, दुल्हनोमल तलरेजा, हीरालाल सभनदासानी तथा सभा के अन्य कार्यकर्ताओं को भी साधुवाद देते हुए कहा कि रोगियों का उपचार करना उत्तम सेवा है । इस अस्पताल में अलग अलग रोगों के विशेषज्ञ डाक्टरों की व्यवस्था की जायेगी। स्वामीजी ने नये भवन की भूमि की भी पूजा करायी तथा अपनी ओर से इस कार्य के लिए ढाई लाख रुपये का दान दिया । डा. दयाल "आशा" ने दानी पुरुषों को दान के लिये अपील की और श्री चोईथराम वनवाड़ी ने आभार प्रदर्शन किया ।

२० दिसम्बर को स्वामीजी अहमदाबाद के लिये रवाना हुए । वहां संत प्रभाराम कालोनी में २१-२२ दिसम्बर को सन्त प्रभाराम साहब की पुण्य तिथि उत्सव के सम्बन्ध में स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन किया। २३ दिसम्बर, स्वामीजी सिन्धुनगर लौट आए ।

२२ दिसम्बर १९७७, श्री परसराम मसन्द परलोक पधारे। २४ दिसम्बर, आश्रम में उनकी उठावनी के अवसर पर स्वामीजी ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि श्री परसराम मसन्द निष्काम समाज सेवक थे । उन्होंने सक्खर सिन्ध चाहे यहां कितने ही सेवा के कार्य किये। सुन्दर सेवक सभा के तत्वावधान में उन्होंने आखों

अस्पताल खोला, आरंभ में बच्चों के लिये स्कूल खोले। हमारी परमात्मा से प्रार्थना है कि वह उनकी आत्मा को अपने श्री चरणों में निवास दे।

१ जनवरी १९७८ भाई दामोदरदास बूलचन्दाणी स्वामीजी को बही खातों (चोपड़ों) के मुहूर्त के लिये अंबरनाथ ले गये। ४-५ जनवरी को स्वामीजी ने कोपरी कालोनी थाणे में सत्संग किया। २१ जनवरी को शहीद हेमूं कालाणी का शहीदी दिवस आश्रम में मनाया गया। स्वामीजी ने शहीद हेमू कालाणी को श्रद्धांजलि दी। २६ जनवरी को सबेरे स्वामीजी ने आश्रम में राष्ट्रीय ध्वज फहराया एवं सायं को सत्संग में गणतन्त्र दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला। ३० जनवरी की सायं, सत्संग में स्वामीजी ने महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि देते हुए उनके जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाए।

रोहड़ा बिरादरी मंडल का वार्षिक उत्सव ३ फरवरी, प्रात: ११ बजे कोपरी कालोनी, थाणे में हुआ। स्वामीजी ने इस अवसर पर कार्य कर्ताओं को साधुवाद देते हुए कहा कि बच्चों को स्कूलों में धामिक शिक्षा नहीं दी जाती है, इसलिये आपलोग अपने घर में धार्मिक शिक्षा दें। उन्हें धार्मिक पुस्तकें पढ़ाएं ताकि आगे चलकर वे बच्चे मर्यादा का पालन करें। आज कितने ही परिवारों में अशान्ति का वातावरण है। सभी सुख और पदार्थों के होते हुए भी घर के लोग दु:खी रहते हैं। क्योंकि उन्हें धार्मिक शिक्षा नहीं मिली है। इसलिए घरों में शान्ति व प्रेम का वातावरण पैदा करें।

२८ फरवरी, पूज्य स्वामी चन्दनप्रकाशजी महाराज ब्रह्मलीन हुए। इसलिए स्वामीजी १ मार्च की प्रात: पूना पहुंच गये। १ मार्च को पूज्य स्वामी चन्दनप्रकाशजी महाराज के पार्थिव शरीर को डोली में सजाकर नगर में परिक्रमा दी गई। स्वामीजी भी श्मशान भूमि तक पैदल चले। सायं के सत्संग में स्वामीजी ने, स्वामी चन्दनप्रकाशजी महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी चन्दनप्रकाश जी प्रेम प्रकाश मण्डल के स्तंभ थे। वे हृदय से उदार थे। कोई दान करना सीखे तो इनसे सीखे। उनका स्वभाव चन्दन जैसा शीतल था। नासिक में प्रेम प्रकाश आश्रम बनवाकर उन्होंने अति उत्तम कार्य

किया । स्वामीजी ने स्वामी चन्दनप्रकाशजी के चौथा एवं त्रियोदशी के दिन भी उनके सत्‌गुणों का वर्णन किया । स्वामीजी पूना के प्रेम प्रकाश मन्दिर की सेवा का कार्य सन्त अशोकलाल व अन्य प्रेमी श्रद्धालुओं को सौंपकर सिन्धुनगर आये ।

जनता जनार्दन परिषद् की ओर से सिन्धुनगर-४ में वृद्धाश्रम का नया भवन बनाने की योजना बनाई गई । उसके शिलान्यास का उत्सव स्वामी टेऊँरामज आश्रम सिन्धुनगर-५ में ९ अप्रैल १९७८ को स्वामीजी कीं अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ । पूज्य दादा जशन वासवाणी इस उत्सव के मुख्य अतिथि थे । इस अवसर पर स्वामीजी ने कहा कि बहुत प्रसन्नता है कि आज हमारे प्यारे श्री जशन वासवाणी जी आये हुए हैं । अपने गुरुदेव साधु वासवाणीजी के चरणचिन्हों पर चलकर, दया व सेवा की ज्योति प्रज्वलित कर रहे हैं । आज इस प्यारे ने वृद्ध आश्रम के नये भवन की नींव का पत्थर रखा है । आशा करते हैं कि यह वृद्धाश्रम शीघ्र ही बनकर तैयार होगा जहां एक सौ आठ वृद्ध स्त्री-पुरुष निवास कर सुखी जीवन बितायेंगे । वृद्धों की सेवा उत्तम सेवा है । आज मर्यादा लुप्त हो रही है । कितने ही नादान पुत्र अपने माता-पिता को घर से निकाल देते हैं । उनके साथ असहनीय व्यवहार करते हैं । वे यह नहीं सोचते कि जो व्यवहार वे अपने माता-पिता के साथ करते हैं, आगे चलकर जब वे खुद वृद्ध होंगे तो उनकी सन्तान भी उनके साथ ऐसा ही व्यवहार करेगी । कल्युग नहीं करयुग है, "दे दिन को ले रात को"।

पूज्य दादा जशन वासवाणी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज मेरा सौभाग्य है कि पूज्य स्वामी शान्ति प्रकाशजी महाराज का दर्शन व संग मिला है ।

पूज्य स्वामीजी की प्रेरणा व पुरुषार्थ से जनता जनार्दन परिषद की ओर से वृद्ध आश्रम शीघ्र ही बनकर तैयार होगा, जिस की नींव का पत्थर आज गुड़ी पड़वा (चेटी चांद) के पवित्र दिवस पर रखा गया है । इस वृद्दाश्रम में कितने न निराश्रित वृद्ध स्त्री-पुरुष सात्विक जीवन व्यतीत करेंगे । आज हमारे समाज में अधिकांश वृद्ध स्त्री-पुरुषों का जीवन शांतिमय व्यतीत नहीं हो पा रहा है । उनमें से कुछ को सुखी

करने के लिए इस आश्रम का नया भवन बनवाया जा रहा है।

पूज्य स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज सादगी, नम्रता की साक्षात मूर्ति हैं। उनके हृदय में गरीब दीन दुखियों के लिए अपार हमदर्दी है। उनकी सेवा में उन्हें खाना खिलाते है, कपड़े देते हैं, मगर उससे भी अधिक उन्हें प्रभु के प्रेम का संदेश, नाम का पैगाम देते हैं। क्योंकि स्वामीजी जानते हैं कि प्रभु प्यार व नाम के बिना जीवन व्यर्थ है। प्यारे दयाल 'आशा' को भी साधुवाद है कि वह उमंग व उत्साह के साथ वृद्धों की सेवा कर हा है। इस अवसर पर दादा श्री होतचन्द आडवाणी, श्री किशनचन्द शहाणी, बहन कमला हीरानन्द, श्री सभागचन्द चावला, हीरालाल सभनदासानी व दौलतराम मंगताणी ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव चैत्र का मेला २१ अप्रैल से २५ अप्रैल तक अमरापुर स्थान जयपुर में आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामीजी १० अप्रैल को जयपुर अमरापुर स्थान पर पहुंच गये। सर्व प्रथम स्वामीजी सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की समाधि पर नतमस्तक हुए। २० अप्रैल को पूज्य स्वामी गुरुमुखदासजी की पुण्यतिथि मनायी गयी। स्वामीजी ने सत्संग करते हुए स्वामी गुरमुखदासजी के जीवन पर प्रकाश डाला।

२१ अप्रैल को प्रातः स्वामीजी ने मंडल के अन्य सन्तों के साथ मिलकर ध्वज फहराकर उत्सव का विधिवत् शुभारम्भ किया। अपरान्ह ३ बजे स्वामीजी के नेतृत्व में पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज व पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की झांकियों के साथ शाही जुलूस निकला। हज़ारों प्रेमी श्रद्धालु राम नाम की धुनि गाते चले। चारों ही दिन सन्तों व विद्वानों ने सत्संग प्रवचन किये। स्वामीजी ने भी २३-२४ की शाम को सत्संग प्रवचन किया। २५ अप्रैल प्रातः स्वामीजी ने सभी सन्तों के साथ मिलकर उत्सव समापन करते हुए कहा कि पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने यह चैत्र का मेला आरंभ किया था। मेले का अर्थ है मिलाप-प्रेम। सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने भी किस तरह देश विदेश में जाकर सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का संदेश सुनाकर, सत्नाम साक्षी का मन्त्र देकर कई प्रेमियों

का मार्ग दर्शन किया। प्रेमियो ! आप भी सत्गुरु महाराज की शिक्षाओं को अपने जीवन में उतार कर जीवन सुखी बनाऐं तथा परलोक भी सुधारें।

आज कल कितने ही परिवारों में क्लेश व अशान्ति है। लक्ष्मी का निवास वहीं होता है जहां प्रेम व एकता है, वह घर स्वर्ग के समान है। गम खाकर भी घर की एकता कायम रखें। एक बार एक धनवान को स्वप्न में लक्ष्मी देवी ने दर्शन देते हुए कहा कि मैं थोड़े ही दिनों में तुम्हारे घर से चली जाऊंगी। तुम्हें मुझ से जो मांगना हो वह मांग लो। सबेरे ही उस धनवान ने घर के सभी सदस्यों को इकट्ठा करके कहा कि रात्रि को लक्ष्मी देवी ने स्वपन में दर्शन देते हुए कहा कि वह शीघ्र ही इस घर से चली चायेगी, इसलिए उसने मुझे कहा है कि जो तुझे चाहिये सो मांग ले। घर के किसी व्यक्ति ने कहा कि लक्ष्मी देवी से एक शानदार बंगला मांगो, तो किसी ने कहा कि हीरे जवाहरात मांगो, तो किसी ने कहा कि सोना मांगो, तात्पर्य यह है कि घर के अलग अलग व्यक्तियों ने अपनी अपनी इच्छाएं व्यक्त करते हुए धन पदार्थ, सम्पति मांगने का सुझाव दिया। मगर उस धनवान की छोटी बहू जो बहुत बुद्धिमान व ज्ञानवान थी, उसने कहा कि जब लक्ष्मी चली जायेगी तो फिर ये धन-पदार्थ और सम्पति हमारे पास कहां रह पायेंगे। इसलिए लक्ष्मी देवी से आप यह वरदान मांगें कि हमारे घर में एकता व प्रेम कायम रहे। एकता व प्रेम होने के कारण घर में आप वापस लौट आयेंगी। धनवान को अपनी छोटी बहू का यह उत्तम सुझाव बहुत पसंद आया। जब लक्ष्मी देवी ने स्वप्न में फिर उसे दर्शन दिया तब उस धनवान ने उन्हें प्रणाम करते हुए कहा कि "हे माता! हमें ऐसा वरदान दे कि घर में सदैव एकता व प्रेम बना रहे। लक्ष्मी देवी ने प्रसन्न होकर कहा कि प्यारे! तुमने तो ऐसा वरदान मांगा है जो मुझे ही बांध दिया। जिस घर में मेल-मिलाप और प्रेम होता है वहां ही मेरा निवास होता है। अब मुझे तुम्हारे घर में ही रहना पड़ेगा।

प्रेमीजनों ! व्यवहार अथवा परमार्थ की दृष्टि से एकता मिलाप व प्रेम अत्यंत आवश्यक है। इन गुणों की वजह से ही घर में क्लेश

व द्वैतकी मानता नहीं रहेगी, और सुख शान्ति बनी रहेगी। फिर जीवन आनन्दमय बन जायेगा घर स्वर्ग के समान लगेगा। तथा धन दौलत की कमी नहीं रहेगी।

५ मई, पूज्य स्वामीजी जयपुर से सिन्धुनगर आश्रम लौट आये। ९-१० मई, स्वामीजी ने देवलाली में कवि पहिलाजराम की पुण्य तिथि उत्सव के अवसर पर सत्संग प्रवचन किया। ११-१२ मई नासिक में स्वामीजी ने सत्संग किया और १३ मई को स्वामीजी सिन्धुनगर लौट आए।

२९ मई स्वामीजी अजमेर रवाना हुए। वहां आदर्श नगर में स्वामीजी माधवदासजी के स्थान पर पूज्य सतगुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की पुण्य तिथि उत्सव के सम्बंध में स्वामीजी १ से ३ जून तक सत्संग करते हुए पूज्य गुरुवर स्वामी टेऊँरामजी महाराज के सद्‌गुणों का वर्णन किया। स्वामी माधवदासजी, स्वामीजी को पुष्कर तीर्थ स्थान पर नव निर्मित मन्दिर के दर्शनार्थ ले गये।

स्वामीजी ७ जून को बियावर रवाना हुए। वहां दो दिन सत्संग कर नसीराबाद आये। वहां भी उन्होंने दो दिन सत्संग किया। वहां से स्वामीजी पुनः अमरापुर स्थान जयपुर आये। वहां सप्ताह भर रहकर १९ जून, सिन्धुनगर वापस लौट आये।

१२ जुलाई गुरु पूर्णिमा के दिन प्रातः स्वामीजी ने "गुरु का महत्व" विषय पर प्रवचन किया। सैकड़ों श्रद्धालु प्रेमी गुरु पूजा उत्सव में सम्मिलित हुए और सतगुरु महाराज से आशीर्वाद लिया।

२० अगस्त, पूज्य स्वामीजी का जन्म दिन आश्रम में मनाया गया। अनेकों श्रद्धालु प्रेमियों ने स्वामीजी के दीर्घायु की कामना करते हुए अपनी पुष्पांजलि अर्पित की।

३० अगस्त, जन्माष्टमी उत्सव आश्रम में मनाया गया। सायं के सत्संग में स्वामीजी ने भगवान श्रीकृष्ण की महिमा का भजन गाते हुए श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन किया। ६ सितम्बर, स्वामीजी ने कुर्ला बम्बई में भगवान श्रीकृष्ण की छठी उत्सव के सम्बंध में सत्संग किया। ७-८ सितम्बर को स्वामीजी ने दादर प्रेम प्रकाश मण्डल में सत्संग किया। १५ सितम्बर की रात्रि, स्वामीजी ने सांई हरिचूराम

साहब की पुण्यतिथि उत्सव के सम्बन्ध में उनके स्थान सिन्धुनगर-५ पर सत्संग करते हुए कहा कि सांई हरिचूराम साहब रिद्धि सिद्धि वाले परिपूर्ण सन्त थे । उन्होंने हज़ारों दुखियों के दुःख दूर किये। इस दास पर भी उनकी दया दृष्टि रही ।

१० अक्टूबर, पूज्य स्वामीजी अहमदाबाद के लिये रवाना हुए । वहां स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मन्दिर अम्बावाड़ी में पूज्य सन्त ऊधवदासजी की पुण्यतिथि के सम्बन्ध में स्वामीजी ने ११-१२-१३ अक्टूबर को सत्संग किया । अहमदाबाद से स्वामीजी जयपुर रवाना हुए । वहां १७ क्टूबर को पूज्य सतगुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का जन्म उत्सव मनाया गया । वहां अमरापुर स्थान पर पूज्य स्वामीजी ने तीन दिन सत्संग करते हुए स्वामी सर्वानन्द महाराज के गुणों का वर्णन किया। २३ अक्टूबर को स्वामीजी सिन्धुनगर वापस लौट आये ।

२६ अक्टूबर को स्वामीजी पूना गये । वहां स्वामीजी ने स्वामी रामकृष्ण के स्थान पर पूज्य स्वामी ग्वालनन्दजी महाराज की पुण्य तिथि उत्सव के सम्बन्ध में २६-२७ अक्टूबर सत्संग किया । २८ अक्टूबर, स्वामीजी सिन्धुनगर वापस लौट आये । ३० अक्टूबर दीपावली के दिन प्रातः कुछ श्रद्धालु प्रेमी स्वामीजी को बही खातों (चौपड़ों) के मुहूर्त के लिये बम्बई ले गये । १ नवम्बर स्वामीजी ने कार्तिक कथा का शुभारम्भ किया । ७ नवम्बर गोपाष्टमी के पावन दिन सायं को स्वामीजी ने राधेश्याम गौशाला में "गौ सेवा" विषय पर प्रवचन करते हुए कहा कि गऊओं की सेवा करना हमारा परम कर्तव्य है । १० नवम्बर कार्तिक एकादशी के दिन प्रातः स्वामीजी सत्संग के पश्चात् हज़ारों प्रेमियों के साथ श्मशान भूमि की ओर गये। वहां स्वामीजी ने कहा कि आज के दिन दिल खोलकर दान करें और नाम स्मरण करें । तद्परान्त स्वामीजी को कुछ श्रद्धालु प्रेमी अम्बरनाथ जल आश्रम ले गये । वहां भाई परसराम व भाई अमरलाल फेरवाणी ने स्वामीजी का स्वागत सत्कार किया । वहां भी स्वामीजी ने भजन गाते हुए उपदेश दिया ।

११ नवम्बर, पूज्य स्वामीजी पूना के लिये रवाना हुए । वहां स्वामीजी ने स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मन्दिर में तीन दिन सत्संग प्रवचन किया।

सन्त अशोक लाल ने स्वामीजी का आभार व्यक्त किया । १३ नवम्बर की सायं, ४ बजे स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम वापस लौट आये। संध्याकालीन सत्संग में उन्होंने श्री गुरुनानकदेवजी के जीवन पर प्रकाश डाला । रात्रि को स्वामीजी ने श्री गुरुनानकदेवजी के जन्म दिन उत्सव के सम्बन्ध में सिन्धुनगर-२ में माता परमेश्वरी के स्थान और जय बाबाधाम सिन्धुनगर-५ में सन्त ब्रह्मदास के यहां सत्संग प्रवचन किया ।

१४ नवम्बर, सायं के सत्संग में पंडित जवाहर नेहरु का जन्म दिन मनाया गया । स्वामीजी ने उनके जीवन पर प्रकाश डाला ।

स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मन्दिर सिन्धुनगर-५ का वार्षिक उत्सव २ से ६ दिसम्बर १९७८, आश्रम में पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में मनाया गया । २ दिसम्बर, प्रातः स्वामीजी ने सभी सन्तों के साथ मिलकर ध्वज फहराकर उत्सव का शुभारम्भ किया । दोपहर ३ बजे पूज्य स्वामीजी के नेतृत्व में एक शाही जलूस निकला जिस में हजारों की संख्या में श्रद्धालु प्रेमी 'सत्नाम साक्षी' 'हरे कृष्ण हरे राम' की धुनी गाते बजाते चले । उत्सव के चारों ही दिन पूज्य स्वामीजी, मंडल के अन्य सन्त महात्माओं ने सत्संग प्रवचन किया । ५ दिसम्बर को सन्त समागम में कई सन्त महात्मा पधारे । स्वामीजी ने सभी सन्तों का हार्दिक स्वागत किया । इस अवसर पर श्री सन्मुखलाल ब्रह्मचारी व श्री राजूराम ब्रहमचारी को सन्यास की दीक्षा देकर श्री सन्मुखलाल का नाम "सन्त देवप्रकाश" और श्री राजूराम का नाम "वेदप्रकाश" रखा गया । ६ दिसम्बर, प्रातः स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा प्रेमी जनों! अभिमान इन्सान को गिराता है तथा विनम्रता, सहनशीलता ऊंचा उठाती है । भगवान भी भक्तों की विनम्रता पर प्रसन्न होते हैं । गुरु भी शिष्य के सहनशील स्वभाव पर प्रसन्न होते हैं । एक बार जगन्नाथपुरी का राजा रूद्रप्रताप अपने गुरुदेव श्री चैतन्य महाप्रभू के दर्शन करने गये । उस समय श्री चैतन्य महाप्रभू भगवत् नाम की धुनि लगाते हुए नृत्य कर रहे थे । उनका सारा ध्यान प्रभु की ओर था । इसलिये उसने राजा से कोई बात नहीं की । इस पर राजा अपने आपको अपमानित समझकर वापस चला गया । जब श्री चैतन्य महाप्रभू

ने नृत्य समाप्त किया तब कुछ प्रेमी श्रद्धालुओं ने उन्हें राजा के लौट जाने की बात बतायी । तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा कि प्रभु के द्वार पर राजा और रंक सभी एक समान हैं । राजा को राज्य का अभिमान है तो फिर उस से बात करने की आवश्यकता नहीं। राजा को जब इस बात का पता चला कि श्री चैतन्य महाप्रभु उसके अभिमान के कारण अप्रसन्न हैं, तब उसने तुरन्त राज्य का त्याग कर गद्दी अपने सुपुत्र को सौंपकर, सांसारिक जीवन से विरक्त होकर, श्री चैतन्य महाप्रभू के साथ नृत्य में भगवत् नाम की धुनि लगाते हुए सुध-बुध भूल गया तब श्री चैतन्य महाप्रभू ने तुरन्त उसे अपने गले से लगा लिया । राजा ने जब राज्य का त्याग किया तब उसके गुरु श्री चैतन्य महाप्रभु उस पर प्रसन्न हुए । प्रेमीजनो ! आप भी विनम्रता व शालीनता का रास्ता अपनाएं तो आपको भी संसार में सफलता मिलेगी और परमात्मा भी प्रसन्न होगे । सामी साहब अपने श्लोकों में फरमाते हैं कि जो मनुष्य परमात्मा में पूर्ण विश्वास रखकर, विनम्रता रूपी माला पहनता है, प्रभु उसी का अपना बनाते हैं । व्यवहारिक जीवन में भी पति उस पत्नी को प्यार करेगा, जिसमें मर्यादा व विनम्रता होगी ।

प्रेमिजनो ! मांस, शराब, व जुआ से किनारा करें, प्रतिदिन सत्संग में आकर हरी गुण गाएं ।

१५ दिसम्बर, स्वामीजी अहमदाबाद के लिये रवाना हुए । वहां संत प्रभाराम सोसायटी में स्वामीजी ने सन्त प्रभाराम साहब की पुण्यतिथि उत्सव के सम्बंध में १६-१७ दिसम्बर को प्रवचन करते हुए सन्त प्रभारामजी के सद्‌गुणों का वर्णन किया । १८ दिसम्बर, स्वामीजी ने प्रेम प्रकाश आश्रम अंबावाड़ी में सत्संग प्रवचन किया । २० दिसम्बर, स्वामीजी सिन्धुनगर वापस लौट आये ।

८ जनवरी १९७६, स्वामीजी नागपुर रवाना हुए । वहां स्वामीजी नें पांच दिन तक प्रवचन किया । १८ जनवरी, स्वामीजी भाटापारा रवाना हुए । वहां चार दिन प्रवचन किया । २२ जनवरी को स्वामीजी सिबनी, रवाना हुए । वहां स्वामीजी ने पांच दिनों तक प्रवचन किया। भाई केवलराम व अन्य प्रेमी श्रद्धालुओं नें प्रवचन किया । १३ जनवरी

स्वामीजी को विनती की कि हर वर्ष यहां आकर प्रेमियों की प्यास बुझाऐं। २६ जनवरी, स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम लौट आये।

१२-१३ फरवरी, पूज्य स्वामीजी ने कुर्ला, बम्बई में कपलेश्वर महादेव मंडल में महाशिवरात्रि उत्सव के सम्बन्ध में प्रवचन किया।

२० फरवरी, रोहड़ा बिरादरी मंडल का वार्षिक उत्सव ग्रान्ट रोड बम्बई में हुआ। वहां पर अपने विचार व्यक्त करते हुए स्वामीजी ने कहा कि सामाजिक बुराईयों को दूर करने का संकल्प करें। उसकी शुरुआत अपने घर से करें। मांस, शराब का सेवन करने से एक ओर स्वास्थ्य खराब होता है तो दूसरी ओर धन की बरबादी के साथ-साथ बच्चों पर बुरे संस्कार पड़ते हैं। धार्मिक दृष्टि से यह अशुभ है, पाप कर्म है। पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज भी अपनी पवित्र वाणी में फरमाते हैं-

मांस खान से मनुष की होवे बुद्धि मलीन।
कह टेऊँ बुद्धि भ्रष्ट से, कर्म धर्म हो खीन।।

पूज्य स्वामीजी ने २ मार्च से १५ मार्च तक वडाला ब्रादर मंडल की ओर से आयोजित्त होली उत्सव पर वडाला बम्बई में प्रवचन किया मुखी चोईथराम बेगराज ने स्वामीजी का आभार प्रदर्शित किया।

प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव व चैत्र मेला १० अप्रैल १९७६ से १४ अप्रैल तक अमरापुर स्थान जयपुर में आयोजित किया गया। स्वामीजी इस अवसर पर २ अप्रैल को जयपुर पहुंच गये। स्वामीजी ने सर्व प्रथम पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज की समाधि पर नतमस्तक होकर प्रणाम किया। तदुपरान्त अन्य सन्तों व प्रेमियों से मिले। ९ अप्रैल, पूज्य स्वामी गुरमुखदासजी महाराज की पुण्यतिथि मनायी गयी। सायं सत्संग करते हुए स्वामीजी ने पूज्य स्वामी गुरुमुखदासजी महाराज के सद्‌गुणों का वर्णन किया। १० अप्रैल प्रातः हवन यज्ञ करने के पश्चात् स्वामीजी ने सभी सन्तों के साथ मिलकर ध्वज फहराकर उत्सव का शुभारम्भ किया। इसके पश्चात् अमरापुर स्थान पर प्रातः स्मरणीय, वीतराग, तपोधन पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की संगमरमर की भव्य मूर्ति स्थापित की गयी। स्वामीजी व अन्य

सन्तों ने सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज को पुष्पांजलि अर्पित की। अपरान्ह ३ बजे स्वामीजी के नेतृत्व में पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज व सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की मन मोहक झांकियों के साथ विशाल जलूस "श्री सत्नाम साक्षी" की धुनि लगाता हुआ निकला। चारों दिन स्वामीजी व मंडल के अन्य सन्तों तथा अनेक गुणवानों ने सत्संग प्रवचन किया।

१४ अप्रैल, प्रात: स्वामीजी ने सभी सन्तो के साथ मिलकर उत्सव का समापन करते हुए कहा-

भूखे भोजन देत जो, प्यासे को जल दान ।
नंगे को पट देत जो, टेऊँ धन्य सो जान ॥

सत्गुरु महाराज अपनी वाणी में फरमाते हैं कि जो भूखों को अन्न (भोजन) देता है, प्यासों को पानी पिलाकर उनकी प्यास पूरी करता है, और निर्वस्त्रों को वस्त्र देकर उनका तन ढकता है वह मनुष्य धन्य है।

एक छोटे से नगर में एक धर्मिष्ठ, सतोगुणी ब्राह्मण व ब्राह्मणी रहते थे। उनकी इच्छा हुई कि तीर्थ यात्रा की जाय। किन्तु उनके पास पूरे पैसे नहीं थे। इसलिये तीर्थ यात्रा करने के विचार से उन्होंने थोड़े-थोड़े पैसे इकट्ठा करना शुरू किया। चार पांच वर्षों के पश्चात् कुछ पैसे इकट्ठे करके दोनों पति पत्नि तीर्थ यात्रा के लिये निकले। मार्ग में एक दिन, रात को गांव में एक गरीब ब्राह्मण के घर में विश्राम के लिये ठहरे। ब्राह्मण उनका परिचित नहीं था। किन्तु इसके पश्चात् भी उसने इनका अतिथि भोजन स्वयं बनाकर खाते हैं। आप केवल पानी दो तो हम अपना भोजन तैयार करें। उस ब्राह्मण के घर में पानी थोड़ा ही था। उसने वह सारा पानी ब्राह्मण दम्पति को भोजन पकाने हेतु दे दिया जिससे उन्होंने भोजन तैयार करके खाया तथा जल पीया। तद्परान्त वे विश्रामी हुए। इसके पश्चात् घर का मालिक ब्राह्मण व ब्राह्मणी बर्तन लेकर पानी भरने गये। रात्रि के समय एक खड्डे पर आये। उसकी थोड़ी खुदायी भी की किन्तु उन्हें पानी नहीं मिला। फिर घर लौट आये। प्रात: काल पुन: बर्तन लेकर उसी स्थान पर पानी भरने आये तो उन्हें थोड़ा मिट्टी वाला (मैला) पानी मिला।

वे पानी लेकर घर आये। आये हुए अतिथि ब्राहमण दम्पति ने उस से पूछा कि रात्रि के समय दो बार बर्तन लेकर कहां गये थे? एक बार वापस आये और फिर पुनः गये। ऐसा क्यों? घर के मालिक ब्राह्मण ने उत्तर देते हुए कहा कि तीन चार वर्षों से यहां बरसात बिलकुल नहीं हुई है। दूसरी कोई नदी या कुआं भी यहां नहीं है। रात्रि को जितना पानी घर में था वो आप को दे दिया। दूसरा पानी खड्डे में से भरने के लिये गये मगर पानी नहीं मिला। इसलिये फिर प्रातः के समय उस खड्डे पर पानी भरने गये तो यह मिट्टी भरा (मैला) पानी मिला है जो छानकर आपको भी देंगे और हम भी इसका उपयोग करेंगे। यहां पानी की बहुत तंगी है। अतिथि ब्राह्मण ने कहा कि अगर यहां पानी की इतकी कमी है तो फिर आप लोग इस गांव में कुआं क्यों नहीं खुदवाते। ब्राह्मण ने उत्तर देते हुए कहा कि ग्राम-वासियों में इतनी शक्ति नहीं है जो वे कुआं खुदवा सकें। इस गांव में सभी गरीब, दरिद्र रहते हैं। रोज कमाएं, रोज खायें वाली स्थिति है। यह सुनकर यात्री ब्राह्मण दम्पति को दया आ गयी कि इस गांव के निवासी पानी के बिना कितने न संकट में हैं। जल, जीवन के लिये अति-आवश्यक है। उन्होंने विचार किया कि क्यों न तीर्थों के लिये इकट्ठे किये गये पैसों से इस गांव में एक कुआं खुदवाया जाय ताकि प्यासों की प्यास पूरी हो। उस कुएं से न केवल इस गांव के निवासी जल पियेंगे परन्तु जल, पक्षियों व पशुओं की भी प्यास बुझायेगा। उनके मन में करुणा भाव उत्पन्न हुआ। उन्होंने तीर्थों का त्याग करके इकट्ठे किए हुए पैसों में से वहां कुआं खुदवाया।

ईश्वर कृपा से कुएं से मीठा जल निकला। गांव में रहने वाले लोगों न उस ब्राह्मण दम्पति का बहुत आभार माना। जब उस गांव के निवासियों व पशु पक्षियों ने उस जल का प्रयोग किया तब तीर्थ यात्रा पर जाने वाले ब्राह्मण दम्पति ऐसा अनुभव करने लगे जैसे वो चारों धामों की यात्रा कर आये हैं। वे उस गांव से अपने गांव लौट आये। तीर्थों पर न जा सकने का उन्हें कोई दुख नहीं हुआ। उनका मन प्रेम दया व आनन्द से ओत-प्रोत हो गया।

प्रेमियो ! दया बिना सिद्ध पुरुष भी कसाई होता है। दया ही धर्म

का मूल है। आप नाम स्मरण करें न करें किन्तु मन में दया भाव होना अत्यन्त आवश्यक है। नाम स्मरण से आप का अन्तःकरण शुद्ध होता जाएगा और दया करने से चित्त कोमल होता जाएगा। प्रभु की प्राप्ति के लिए नाम स्मरण एवं दया दोनों की आवश्यकत्ता है। झाड़ू लगानें से धरती साफ हो गई और पानी देने से धरती निर्मल होगी। प्रभु की कृपा के लिए अन्तःकरण की शुद्धता एवं चित्त की निर्मलता की आवश्यकता है। इसलिए आप नाम स्मरण करें और दया व परोपकार के कार्य कर जीवन सफल करें। पशु पक्षियों व गरीबों को भोजन खिलायें, प्यासों को पानी पिलाएं, विद्यामंदिर, धर्मशालाओं गौशालाओं एवं अस्पतालों की स्थापना कर धन का सद्उपयोग करें।

२२ मई से २४ मई १९७९ स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम, सिन्धुनगर में अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन का उद्घाटन भारत के स्वास्थय एवं समाज कल्याण मंत्री श्री रविराय ने किया और अध्यक्षता प्रोफेसर सिद्धेश्वर प्रसाद ने की। भारत के विभिन्न नगरों से ५०० प्रतिनिधि इस सम्मेलन में सम्मिलित हुए। इस सम्मेलन के स्वागत अध्यक्ष पूज्य स्वामीजी थे। अतिथियों के रहने, खाने-पीने की व्यवस्था पूज्य स्वामीजी ने आश्रम में की।

पूज्य स्वामीजी ने स्वागत अध्यक्षीय भाषण देते हुए कहा-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग भवेत॥

मैं इस सम्मेलन में पधारे हुए सभी अतिथियों का हार्दिक स्वागत करता हूं।

एक समय था जब हम प्रकृति एवं ईश्वर के निकट में रहकर भौतिक दुखों से मुक्त थे। संत स्वामी तुलसीदासजी ने कहा है-

दैविक, दैहिक, भौतिक तापा।
राम-राज नहीं काहू व्यापा॥

आज हम प्रकृति एवं ईश्वर से विमुख होकर उनके शाश्वत नियमों का उलंघन कर, हर प्रकार से दीन व दुखी हो रहे हैं। उस दुःख

से मुक्त होने के लिए हम झाड़-फूंक से लेकर राजसी आयुर्वेद एवं तामसी अॅलोपेथी औषधियों की ओर तेज़ी से मृगा तृष्णावत् भाग रहे हैं, परन्तु अंत में वही कहावत सिद्थ होती है-

'मर्ज बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की'

आप यदि गहराई से विचार करेंगे तो निश्चय ही इस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि प्रकृति के नियमों का उल्लंघन ही सभी दुखों, रोगों का मूल कारण है। मानव समाज की इस अवस्था को देखकर मनीषियों ने निर्णय किया कि हमें पुनः प्रकृति की ओर लौटकर मां का वात्सल्य एवं प्रेम तथा ईश्वर की सन्निकटता प्राप्त कर रोग मुक्त एवं रोग से बचना चाहिये। उन्हीं मनीषियों में से हमारे राष्ट्र नेता महात्मा गांधी भी हैं। उन्होंने अपने अंतिम जीवन को प्राकृतिक चिकित्सा में लगाने का संकल्प किया और फलस्वरूप मानव समाज के लिए उनकी अन्तिम देन 'आरोग्य की कुन्जी' एवं निसर्गोपचार आश्रम उरुलीकांचन है।

स्वस्थ रहना बहुत ही सरल है। हम और आप उपनिषद् के इस सूत्र को जानते हैं ''यथापिंडे तथा ब्रह्मांडे' जो ब्रह्मांड में है वह हमारे शरीर में व्याप्त है। अतः प्रकृति और हम में सामंजस्य और संतुलन रहने पर स्वस्थ रहना स्वाभाविक है। हमें आकाश, वायु, जल, सूर्य किरण एवं मिट्टी का सद्उपयोग करना चाहिए। और इन पांचों से ही निर्मित प्राकृतिक आहार का सेवन करना चाहिए। जब अप्राकृतिक एवं प्रदूषित जीवन तथा वातावरण में, इनमें से किसी भी तत्व का अभाव तथा प्रदूषित तत्वों की अधिकता होती है तो हम रोगों के चंगुल में फसते हैं और उसी अभाव को एवं अधिकता को दूर करते ही हम अस्वस्थ के स्थान पर स्वस्थ, आलस्य, की जगह चैतन्यता एवं निरुत्साह की जगह उत्साह भर जाता है। इन अभावों और अधिकता को दूर करने की कला ही प्राकृतिक चिकित्सा है।

इस चिकित्सा द्वारा शरीर स्वस्थ होने पर मन का स्वस्थ होना स्वांभाविक है और मन स्वस्थ होने पर आत्मोन्नित निश्चित है। अतः प्राकृतिक आहार की नींव पर हम सर्वतोमुखी शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक उन्नति कर सकते हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने भी श्रीमद्भगवत गीता में

कहा है-

युवताहार विहारययुवत चेष्टरय कर्मसु।
युक्त स्वन्पाव बोधरय योगो भवति दु:खहा ।।

प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस में एक बार रोगमुक्त हुआ व्यक्ति पुन: अस्वस्थ नहीं होता और साथ ही वह स्वयं चिकित्सक भी बन जाता है।

भारत सरकार ने प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार के लिए कुछ प्रयास किया है किन्तु वह ऊंट के मुहं में जीरा है। अत: स्वास्थ्य मंत्री महोदय से विनम्र प्रार्थना है कि प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार प्रसार के लिए अधिक से अधिक धन की व्यवस्था करने की कृपा कर मानव जाति को रोगमुक्त कर, श्रेय प्राप्त करें।

पूज्य स्वामी जीवनमुक्तजी महाराज १८ जून १९७९ खीरथल में ब्रह्मलीन हुए। उस समय पूज्य स्वामीजी अमरापुर स्थान जयपुर में थे। यह शोक समाचार सुनकर पूज्य स्वामीजी खीरथल रवाना हुए। वहां पूज्य स्वामीजी ने ब्रह्मलीन स्वामी जीवनमुक्तजी महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे प्रेम प्रकाश मंडल के वयोवृद्ध संत थे। उन्हें संतो व सूफियों की वाणी कंठस्थ थी और इकतारा लेकर वाणी गाकर श्रोताओं को मंत्र मुग्ध करते थे। वे सच्चे योगी थे। पूज्य स्वामीजी ने तेरहवें के दिन खीरथल के प्रेम प्रकाश आश्रम का काम काज संत योगीराज को सौंप दिया। २ जुलाई पूज्य स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम लौट आये।

१५ जुलाई गुरू पूर्णिमा के दिन प्रात: हजारों प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी की पूजा उपासना की। पूज्य स्वामीजी ने पूज्य साईं आसूराम, सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज एवं सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की महिमा गाते हुए गुरु पूर्णिमा के उपलक्ष्य में प्रवचन किया।

१५ अगस्त पूज्य स्वामीजी का ७३ वां जन्मदिन जनता जनार्दन परिषद् की ओर से स्वामी टेऊँराम आश्रम सिन्धुनगर-५ में मनाया गया प्रात: काल पूज्य स्वामीजी को दूध से स्नान कराकर उनकी पूजा उपासना की गई। यज्ञ किया गया तत्पश्चात् दीन दुखियों को वस्त्र, अन्न एवं

आर्थिक सहायता दी गई। सायं के सत्संग में प्रो. राम पंजवाणी, संत देवीदास, गोबिन्दराम भाटिया, हीरालाल सभनदासाणी एवं दयाल 'आशा' ने पूज्य स्वामीजी के गुणों का वर्णन किया। श्री रामकृष्ण आडवाणी ने पूज्य स्वामीजी को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज एक ऐसे महान संत हैं जिनकी कथनी व करनी में कोई अन्तर नहीं। वे कर्मयोगी संत हैं विनम्रता की मूर्ति हैं, प्रेम के सागर हैं। उन्होंने इस आश्रम को तीर्थस्थल बना दिया है। हिन्दी के प्रसिद्ध कवि सरस्वती कुमार 'दीपक' ने पूज्य स्वामीजी की महिमा गाते हुए कहा-

स्वामी शान्तिप्रकाश नित बांट रहे हैं ज्ञान।
बता रहे हमको सदा, हर नर है भगवान॥
हर नर है भगवान, कर्म दीपक दमकाना।
तुलसी सूर कबीरा बनकर हरि गुन गाना॥
कह दीपक कविदास, सत्य का हुआ सवेरा।
राम नाम के सत से, मन का गया अंधेरा॥

पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आपने मेरी जो प्रशंसा की है, यह प्रशंसा मेरी नहीं, कार्य की है। यह जीवन सत्कर्मों के लिए मिला है। सत्गुरु महाराज भी फरमाते हैं।

शुभ अवसर यह मनुष तन, मिला भाग से तोह।
फंसकर माया मोह में, टेऊँ तां मत खोय॥

प्रेमियो ! भाग्य से आपको यह मानव जीवन प्राप्त हुआ है। माया के प्रपंच में फंसकर ऐसा दुर्लभ मानव जन्म व्यर्थ न गंवाएं। नाम स्मरण करें व दीन दुखियों की सेवा करें।

२६ अगस्त श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन दिन पूज्य स्वामीजी ने भगवान श्री श्यामसुन्दर की महिमा गाई। २३ सितम्बर आश्रम में कवि किशनचन्द 'बेवस' की पुण्यतिथि मनाई गई। स्वामीजी ने कवि बेवस के भक्ति काव्य का वर्णन किया।

१२ अक्टूबर माहिम (बम्बई) में, बम्बई हिन्दी विद्यापीठ का ३१

वां वार्षिक उत्सव डॉ. पराड़कर की अध्यक्षता में मनाया गया। स्वामीजी इस उत्सव के प्रभुख अतिथि थे। स्वामीजी ने हिन्दी के महत्व के सम्बंध में विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है। राष्ट्र भाषा के बिना राष्ट्र गूगा होता है। इसलिए अंग्रेजी भाषा को इतना महत्व न देकर व्यवहारिक जीवन में हिन्दी का प्रयोग करें। हिन्दी साहित्य का अभ्यास करें। हिन्दी में संतों की वाणी की अमूल्य निधि है जिसके अध्ययन करने से तथा श्रवण करने से हमारी व्यवहारिक एवं आध्यात्मिक उन्नति हो सकती है।

६ नवम्बर, स्वामीजी राजकोट पधारे। श्री गोदूमल आहूजा, श्री बाशाराम गोगिया, जवाहर माटा एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया। रात्रि को स्वामीजी ने अमृत वचनों की वर्खा की। ७ नवम्बर प्रात: १० बजे स्वामीजी ने विद्या विज्ञान मंडल के सिन्धी हाई स्कूल के नये भवन की नींव रखी। डा. दयाल 'आशा' ने गीत गाते हुए प्रेमियों से अनुरोध किया कि इस विद्याभवन के लिए यथा शक्ति दान करें। स्वामीजी ने ५१ हजार रुपये इस भवन के लिए दिये। उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा कि विद्या दान उत्तम दान है। इस विद्यालय से हजारों विद्यार्थी विद्या गृहण कर लाभान्वित होगे। इस अवसर पर मेयर श्री अरविन्द भाई मणियार, श्री नेवंदराम लोकवाणी, श्री थांवरदास खूबचन्दाणी, श्री गोदूमल आहूजा, श्री मूलचन्द खट्टर, श्री बाशाराम गोगिया ने स्वामीजी का स्वागत करते हुए विचार व्यक्त किये। प्राध्यापक श्री विक्रम टोपणदासाणी ने स्वामीजी एवं अन्य अतिथियों का आभार माना।

प्रेम प्रकाश मंदिर, स्वामी टेऊंराम आश्रम सिन्धुनगर-५ का ९ वां वार्षिक उत्सव स्वामीजी की अध्यक्षता में २२ नवम्बर से २६ नवम्बर तक आयोजित किया गयां। पूज्य स्वामी माधवदास, स्वामी रामकृष्ण, स्वामी गणेशानन्द, स्वामी गंगाराम, स्वामी स्वयंप्रकाश, संत भजनदास, संत हरिदासराम, पंडित शीतलदास एवं अन्य संतों ने उत्सव के चारों दिन सत्संग प्रवचन किया।

२६ नवम्बर प्रात: के समय पूज्य स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि संसार की अन्य बातों को भूल जाओ किन्तु नाम को न भूलें। परमात्मा से प्रेम का नाता जोड़ें। मांस व शराब का परित्याग करें। दीन दुखियों पशु पक्षियों की सेवा करें।

संत प्रभाराम की पुण्यतिथि उत्सव के सम्बंध में स्वामीजी ५ दिसम्बर अहमदाबाद पधारे। वहां स्वामीजी ने संत प्रभाराम सोसाइटी में सत्संग प्रवचन करते हुए संत प्रभारामजी की महिमा गाई। श्री नेणूमल ने स्वामीजी का आभार व्यक्त किया। ८ दिसम्बर स्वामी जी गोधरा पधारे। वहां श्री अर्जुनदास माखीजा, श्री गोविन्दराम रावलाणी एवं कई प्रेमियों ने स्वामीजी का अभिनन्दन किया। वहां स्वामीजी ने तीन दिन अमृत वर्खा की।

७ जनवरी १९८० स्वामीजी गांधीनगर कोल्हापुर पधारे। वहां स्वामीजीने चार दिन सत्संग प्रवचन किया। ११ जनवरी स्वामीजी श्री ब्रजलाल हीरानी के घर इचलकरंजी पधारे। वहां स्वामीजी ने मंदिर में प्रवचन किया। १२ जनवरी स्वामीजी ने मिरज में अमृत वर्खा की। १३ जनवरी स्वामीजी बेलगाम में पधारे। वहां उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन कर प्रेमियों को भगवत् नाम का रसास्वादन कराया।

रोहड़ा ब्रादर मंडल का वार्षिक उत्सव १० फरवरी प्रातः १० बजे खार, बम्बई में आयोजित किया गया। वहां स्वामीजी ने विद्यार्थियों को पुरुस्कार प्रदान करते हुए कहा कि गम खाकर भी परिवार की एकता बनाए रखें। आज घरों में अशान्ति का वातावरण है। घरों को स्वर्ग बनाएं, घर में माता-पिता सास-ससुर की सेवा करें। उनके आशीर्वाद से उन्नति कर सकेंगे।

२४ फरवरी स्वामीजी पिंपरी में पधारे। माता सती एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत सत्कार किया। उन्होंने वहां दो दिन सत्संग प्रवचन किये। २६ फरवरी स्वामीजी, स्वामी चन्दन प्रकाश, स्वामी टेऊंराम मंदिर पूना पधारे। वहां २६ फरवरी से २८ फरवरी स्वामी चन्दनप्रकाशजी महाराज का पुण्य तिथि उत्सव आयोजित किया गया। स्वामीजीने वहां तीन दिन सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामी चन्दनप्रकाश जी महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके गुणों का वर्णन किया। २८ फरवरी को स्वामीजी ने संत अशोकलाल को सन्यास की दीक्षा देकर उनका नाम संत अनंतप्रकाश रखा। १ मार्च स्वामीजी उरली पधारे। वहां उन्होंने रात्रि को सत्संग प्रवचन किया। २ मार्च आप सिन्धुनगर आश्रम लौट आये।

७ मार्च से १९ मार्च स्वामीजी ने वडाला, बम्बई में सिंधीब्रादर मंडल की ओर से आयोजित होली उत्सव समारोह में अमृत वर्खा कर प्रेमियों को आनन्दित कर उनका मार्ग दर्शन किया ।

प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव चैत्र मास का मेला ३० मार्च से ३ अप्रैल १९८० तक अमरापुर स्थान जयपुर में स्वामीजी की अध्यक्षता में आयोजित किया गया । २९ मार्च वहां स्वामी गुरमुखदास जी महाराज की पुण्यतिथि मनाई गई । संध्याकालीन सत्संग में स्वामी जी ने स्वामी श्री गुरुमुखदासजी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की । ३० मार्च प्रातः स्वामीजी ने सभी संतों के साथ ध्वज फहराकर उत्सव का श्रीगणेश किया । अपरान्ह ३ बजे अमरापुर स्थान से स्वामीजी के नेतृत्व में राम नाम की धुनि लगाते एक भव्य जुलूस निकला । चारों दिन मंडल के संतों एवं अन्य महात्माओं ने सत्संग प्रवचन किया । ३ अप्रैल प्रातः स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा-

कलियुग में हरिनाम है, सब साधन का सार ।
कह टेऊँ तहं सुमरके, पाओ मोक्ष द्वार ।।

प्रेमियो! सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज द्वारा दी गई नाम की पूंजी को आप बढ़ाएं । कलियुग में प्रभु प्राप्ति के लिए राम-नाम स्मरण जैसा और कोई सरल एवं सहज साधन नहीं । घर-गृहस्थी होते हुए अपना व्यवसाय इत्यादि करते हुए आप प्रभु नाम का स्मरण करें, सत्कर्मों में अपना धन पदार्थ इत्यादि सफल करें । नाम स्मरण द्वारा आपको मोक्ष की प्राप्ति होगी । आप प्रेम व श्रद्धा के साथ परमात्मा का स्मरण करेंगे तो वे अवश्य आपको अपना दिव्य दर्शन देंगे ।

बंगाल में गंगा किनारे भक्त नारायणदास अपनी पत्नि मालती के साथ रहता था । उन्हें कोई संतान नहीं थी । एक दिन भक्त नारायणदास ने विचार किया कि क्यों न हम दोनों जीवन की शेष आयु अयोध्या जाकर मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के श्री चरणों में व्यतीत करें। इसी इच्छा से वे अपना सामान बैल गाड़ी में रखकर अयोध्या के लिए निकल पड़े । मार्ग में डाकुओं ने उन्हें लूटकर, भक्त नारायणदास को मारपीट कर, खड्डे में फेंक दिया । यह असहनीय दृश्य देखकर

मालती मूर्छित हो गई । मालती को सामान की चिन्ता नहीं थी, उसे अपने पति की पीड़ा की चिन्ता हुई । जब वह सजग हुई तब उसने भगवान प्रभू श्रीराम को आर्त स्वर से पुकारा । भगवान प्रभू श्रीराम ने अपने भक्तों की रक्षा की । भगवान श्रीराम ने उन भील डाकुओं को मारकर, लूटा हुआ सामान मालती को दिया और भक्त नारायणदास को सचेत कर साक्षात् दर्शन दिया । भगवान श्रीराम ने पति-पत्नि को अपने घोड़े पर बिठाकर अयोध्या की सीमा पर छोड़कर अंतर्ध्यान हो गये । प्रभु अपने भक्तों की किसी न किसी रूप में आकर अवश्य सहायता करते हैं । प्रेमियों ! आप भी श्रद्धा व प्रेम से प्रभु को याद करें तो प्रभु आपकी भी रक्षा करेंगे ।

१० अप्रैल स्वामीजी इन्दौर प्रेम प्रकाश मंदिर में आये । वहां स्वामी मुरलीधरजी महाराज की पुण्यतिथि उत्सव के सम्बन्ध में स्वामी जी ने चार दिन सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामी मुरलीधरजी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला । १५ अप्रैल स्वामीजी खंडवा पधारे । वहां उन्होंने रात्रि को अमृत वर्खा कर प्रेमियों को प्रभूनाम का रसास्वादन कराया । १६ अप्रैल आप सिन्धुनगर आश्रम लौट आये ।

२० अप्रैल प्रेम प्रकाश आश्रम, सिन्धुनगर-५ में संत सूरदासजी की जयन्ती मनाई गई । इस अवसर पर पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि संत सूरदास भगवान श्रीकृष्ण के अनन्य उपासक थे । एक बार संगीतकार तानसेन, अकबर बादशाह के दरबार में संत सूरदासजी का पद गा रहे थे । अकबर बादशाह वह पद सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ, उन्होंने तानसेन से कहा कि वह उसे कवि सूरदास का दर्शन करायें । तानसेन, अकबर बादशाह को संत सूरदास के स्थान पर ले आये । उस समय भक्त सूरदास एकाग्रचित्त होकर भगवान श्रीकृष्ण की स्तुति का मधुर भजन गा रहे थे । उसी समय अकबर बादशाह ने कवि सूरदास से कहा कि, "अब मैं बड़ा बादशाह हूं, तुम मेरी प्रशंसा के गीत गाओ ।" संत सूरदासजी नम्रतापूर्वक बोले कि "मैं भगवान श्रीकृष्ण के अतिरिक्त और किसी की महिमा के गीत नहीं गाता ।" मेरे लिए श्री श्यामसुन्दर ही सब कुछ हैं ।

प्रेमियो ! अधिकांश कवि सांसारिक लोगों की भूरि-भूरि प्रशंसा गाकर

सरस्वती माता का अपमान करते हैं। कविता द्वारा भगवद् स्तुति ही करनी चाहिए। भक्त सूरदासजी की भांति आप भी सदैव भगवान श्रीकृष्ण के गुण गान करें।

श्री वासुदेव उधराणी एवं उनकी पत्नि आनन्दीबाई के स्नेहयुक्त निमंत्रण पर पूज्य स्वामीजी २८ जून दुबई रवाना हुए। दोपहर तीन बजे दुबई विमान तल पर प्रेमियो ने स्वामीजी का हार्दिक स्वागत सत्कार किया।

स्वामीजी के साथ संत देव प्रकाश, डा. दयाल 'आशा', संत टोपणदास पंजवाणी एवं संत ज्ञानलाल थे। स्वामीजी वहां भाई वासुदेव उधराणी के घर ठहरे। प्रतिदिन सायं स्वामीजी गुरुमंदिर में अमृत वर्खा करते थे। श्री विकियोमल श्राफ, श्री लक्ष्मीचन्द लुला, श्री मूरिजमल मंघनाणी, श्रीराम बख्शाणी, श्री ढालूमल जतवाणी, श्री गोपालदास श्राफ, श्री वासूलाल श्राफ, श्री गंगाधर होतचन्द रोहड़ा ने अपने अपने निवास स्थान पर स्वामीजी के सत्संग एवं भोजन का आयोजन किया।

स्वामीजी ने दस दिन तक दुबई में ज्ञान व प्रेम की गंगा प्रवाहित की। उन्होंने आध्यात्मिक, भक्तिमय एवं सामाजिक विषयों पर प्रवचन किये। उन्होंने सिन्धी समुदाय से कहा कि आप विदेश में रह कर भी सिन्धी भाषा एवं सिन्धी सभ्यता को न भूलें। आप धन कमाएं, लेकिन उसका दान द्वारा सद्उपयोग करें, माया के मद में प्रभु को मत बिसारो, आपस में मेल मिलाप से रहें और उपकार के कार्य करते रहें।

श्री लक्ष्मीचन्द लुला ने एस्टरा होटल में सत्संग का आयोजन किया। वहां पहले डा. दयाल 'आशा' ने स्वामीजी के जीवन कार्य पर प्रकाश डाला और भक्ति संगीत की वर्खा की। तत्पश्चात् स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

जहां दया तहां धर्म है, जहां लोभ तहां पाप।
जहां क्रोध वहां काल है, जहां क्षमा तहां प्रभु आप॥

प्रेमियो ! जहां दया है वहां धर्म है, जहां लोभ है वहां पाप है। लोभी मनुष्य को पाप करना ही पड़ेगा। क्रोधी को काल जल्दी ले जाता है, इसलिए जहां क्रोध है वहां मौत है, जहां क्षमा है वहां परमात्मा

स्वयं व्याप्त हैं। इसलिए क्रोध एवं लोभ का त्याग कर जीवन में दया व क्षमा के गुण अपनायें।

रघुनाथ को अपनी दुकान थी। वह दोपहर का भोजन दुकान पर ही खाता था। एक दिन जैसे ही वह भोजन खाने बैठा तो एक कुतिया उसके सामने आकर उसे निहारती रही। उस कुतिया ने कुछ समय पूर्व ही बच्चों को जन्म दिया था। इसलिए उसे बहुत भूख लगी थी। रघुनाथ को उस भूखी कुतिया पर दया आ गई उसने एक रोटी उस कुतिया को खिलाई फिर भी कुतिया खाने के लिए निहारती ही रही, पुनः रघुनाथ ने दूसरी रोटी भी उसे खिलाई परन्तु फिर भी वह कुतिया रोटी के लिए निहारती ही रही अन्त में रघुनाथ ने अपनी तीसरी रोटी भी उसे खिलादी और स्वयं रोटी न खाकर केवल सब्जी खाकर पानी पी लिया। रघुनाथ ने स्वयं रोटियां न खाकर उस कुतिया को रोटियां खाने को दी। तदुपरान्त उसी रात्रि उसे स्वप्न आया कि तुमने एक प्रसूती, भूखी कुतिया पर दया की है तुम शीघ्र ही धनवान बनोगे। उसका स्वप्न साकार हुआ। रघुनाथ के भाग्य में परिवर्तन आया, वह धनवान बन गया। प्रेमियों ! निष्काम भाव से दया करने से लाभ की प्राप्ति होती है। श्री गुरु साहब फरमाते हैं-

''धोल धर्म दया का पूत''

धर्म भी दया की संतान है। यदि हमारे मन में दया भावना है तो भगवान की अनुकम्पा अवश्य होगी। जीवन में दया की ज्योति प्रज्वलित करें।

८ जुलाई अपरान्ह को पूज्य स्वामीजी ने दुबई से बम्बई के लिए प्रस्थान किया। बम्बई विमानतल पर कई प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया।

१६ जुलाई स्वामीजी सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के जन्मदिन उत्सव के सम्बन्ध में अजमेर पधारे। वहां स्वामीजी ने तीन दिन अमृत वचनों की वर्खा करते हुए सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज की महिमा गाई।

१६ जुलाई प्रातः १० बजे स्वामीजी ने सुधार सभा अजमेर द्वारा संचालित श्री कृष्ण गुरनाणी शार्ट हैंड सेन्टर का उद्घाटन किया। तत्पश्चात्

सुधार सभा के हरिसुन्दर बालिका विद्यालय के हाल में दादा दीपचन्द्र बेलाणी ने स्वामीजी का स्वागत करते हुए कहा कि स्वामीजी महान कर्म योगी संत हैं । वे अनेक परोपकार के कार्य कर रहे हैं। पूज्य स्वामीजी ने श्री दीपचन्द्र बेलाणी एवं उनके साथियों को साधुवाद देते हुए आशीर्वाद दिया । श्री ईश्वर ठाराणी ने आभार प्रदर्शन किया। स्वामीजी ने स्वामी सर्वानन्द विद्यालय के लिए एक हजार रुपये दान स्वरूप दिये ।

रविवार २७ जुलाई स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर-५ में गुरु पूर्णिमा का उत्सव मनाया गया । प्रातःकाल स्वामीजी सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज एवं सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के प्रतिमा की पूजा उपासना की गई । स्वामीजी ने गुरु पूर्णिमा के महत्व पर प्रवचन करते हुए कहा-

सत्गुरु हरि की देह है, या में संशय नाहि ।
कह टेऊँ गुर ध्यान धर, हरि देखो तिहं मांहि ।।

सत्गुरु व प्रभु में कोई अन्तर नहीं । गुरु परमात्मा का रूप है, इसी भावना से गुरुदेव की महिमा का गान करें । शिष्य को अपने गुरु में पूर्ण विश्वास होना चाहिए । श्रद्धा व विश्वास रखने वाले को ही ज्ञान की प्राप्ति होती है ।

श्रद्धावान लभते ज्ञानम् ।

३१ अगस्त १९८० रविवार के दिन पूज्य स्वामीजी का ७४ वां जन्मदिन, जनता जनार्दन परिषद की ओर से आश्रम में मनाया गया। प्रातःकाल प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी को गौ दुग्ध से स्नान करवाकर उनकी पूजा उपासना की । प्रातः ८ बजे श्री प्रेमप्रकाश ग्रन्थ के पाठ का समापन एवं यज्ञ किया गया । तत्पश्चात् जनता जनार्दन परिषद् की ओर से दीन दुखियों को अन्न, धन एवं वस्त्र दिये गये ।

सायंकाल जन्मोत्सव कार्यक्रम में हजारों प्रेमियों ने प्रभू परमात्मा से पूज्य स्वामीजी के दीर्घायु होने की प्रार्थना की । दयाल 'आशा' ने पूज्य स्वामीजी की महिमा का भजन गाते हुए कहा कि स्वामीजी प्रेम व करुणा के अवतार हैं । उनकी कृपा एवं प्रेरणा से कई सेवा के कार्य हो रहे हैं । प्रो. राम पंजवाणी ने भक्ति भाव के गीत गाते

हुए कहा कि पूज्य स्वामीजी सिन्धी समाज के मार्गदर्शक और महान कर्मयोगी संत हैं।

पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज आप लोगों ने दास का जन्म दिन मनाया है। जन्म-दिन पर यह विचार करना चाहिए कि बीते वर्ष में कौन कौन से शुभ कार्य किये और कौन कौन सी त्रुटियां की हैं। जिससे भविष्य में वैसी त्रुटियां न करें। श्वासों का सद्‌उपयोग करें। अधिक से अधिक समय नाम चिंतन एवं दीन दुखियों की सेवा में व्यतीत करें। सत्गुरु महाराजजी भी अपनी पवित्र वाणी में कहते हैं-

कह टेऊँ हरि नाम जप, भूलो न क्षण एक।
भोगत भोगत विषय रस, बीते जन्म अनेक॥

विषय वासनाओं के चक्कर में न जाने कितने जन्म व्यर्थ गंवाए हैं। अब मानव जीवन व्यर्थ न गंवाएं। क्षण क्षण में प्रभु को याद करें।

पूज्य साधु टी.एल. वास्वाणी, एवं पूज्य स्वामी लीलाशाहजी के जन्म शताब्दी उत्सव के सम्बंध में ९-१० नवम्बर सिन्धी समाज सेवक सम्मेलन पूज्य सत्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाशजी महाराज की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। स्वामीजी ने अध्यक्षीय भाषण करते हुए कहा कि दो महान पुरुषों, समाज सुधारकों की जन्मशताब्दी के अवसर पर आज यहां सिन्धी समाज को सुसंगठित करने के लिए सिन्धी समाज सेवक सम्मेलन का आयोजन किया गया है। सिन्धी समुदाय ने हर क्षेत्र में अपना योगदान दिया है। आज हम जाति व राष्ट्र की उन्नति के लिए संकल्प करें। अपनी सभ्यता, संस्कृति, साहित्य एवं भाषा की सुरक्षा के लिए तत्पर रहें। सामाजिक बुराइयों को दूर करने का प्रयास करें।

डा. दयाल 'आशा' ने दोनों महापुरुषों की सामाजिक सेवाओं का उल्लेख करते हुए अतिथियों का स्वागत किया। इस सम्मेलन में विभिन्न सामाजिक समस्याओं पर, श्री नारी गुरसहाणी, श्री मोतीलाल बुटाणी, श्री सन्मुख ईसराणी, श्री लीलाराम पुरस्वाणी, श्री गोबिन्दराम भाटिया,

श्री सीतल हरिचन्दाणी, श्री गोपीचन्द बहराणी, श्री सभागचंद चावला, श्री आसनदास भेरवाणी, बचाराम लेडवाणी, प्रो गोप रुपचन्दाणी, लक्ष्मी सिधवा एवं अन्य समाज सेवकों ने भी विचार व्यक्त किये।

कवि आनन्द कुछ दिनों से अस्वस्थ थे। एक दिन वह पूज्य स्वामीजी के पास आए। स्वामीजी ने उनसे पूछा कि इतने दिन तुम कहां थे। कवि आनन्द ने कहा कि मैं अस्वस्थ रहता हूं, इसलिए यहां नहीं आ सका। स्वामीजी ने कहा "तुम तो ठीक हो"। उसी समय ही कवि आनन्द ने स्वयं को स्वस्थ अनुभव किया। स्वामीजी के मात्र ठीक कहने से वह ठीक हो गये। स्वामीजी के दर्शन एवं मधुर वचनों से कवि आनन्द आनन्दित हो गये।

दरसन भेटत होय निहाल।
नानक साहिब सदा दयाल॥

१५ नवम्बर गोपाष्टमी के पावन दिन प्रातः स्वामीजी ने गोपाष्टमी के महत्व के सम्बन्ध में प्रवचन किये। सायं ५ बजे श्री राधेश्याम गौशाला में स्वामीजी की अध्यक्षता में गोपाष्टमी उत्सव सम्पन्न हुआ। उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि गौ माता की सेवा उत्तम सेवा है। यदि आप लोग भगवान श्रीकृष्ण को प्रसन्न करना चाहते हैं तो गौ माता की सेवा करें। धार्मिक दृष्टि से गौ माता में देवताओं का वास होता है।

१८ नवम्बर कार्तिक एकादशी के पावन दिन प्रातः आश्रम में पूज्य स्वामीजी ने कार्तिक कथा का महत्व बताया। तत्पश्चात् स्वामीजी, संत एवं हज़ारों प्रेमी राम नाम की धुनी लगाते हुए श्मशान भूमि आये। मंत्री सरदार राजलसिंघ बठीजा ने श्मशान भूमि के कार्य पर प्रकाश डाला। पूज्य स्वामीजी ने वहां प्रवचन करते हुए कहा कि यहां आने का अभिप्राय है कि हमारे मन में वैराग्य वृत्ति उत्पन्न होनी चाहिए। सभी को किसी न किसी दिन यहां आना है। इसलिये परमात्मा ने हमें जो अमूल्य मानव शरीर दिया है उसको व्यर्थ नहीं गंवाएं।

संसार के पदार्थो एवं सम्बन्धियों में आसक्ति न रखें। आसक्ति दुखों का कारण है।

मोह महा दुख रूप है, ताको मार निकार।
प्रीति जगत् की छोड़ दे, तब होवे निरतार ॥

१९ नवम्बर प्रात: पूज्य स्वामीजी पूना गये। वहां उन्होंने स्वामी चंदन प्रकाश, स्वामी टेऊँराम मंदिर में तीन दिन अमृत वर्षा करते हुए प्रेमियों का मार्ग दर्शन किया। सन्त अनन्तप्रकाशजी ने स्वामीजी का आभार प्रदर्शन किया। २२ नवम्बर प्रात: स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज श्री गुरुनानकदेवजी साहब का जन्मदिन है। अवतारी पुरुष होते हुए भी उन्होंने नाम स्मरण किया। बचपन से ही उन्होंने प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ा। जब वे गौ चराने के लिये जंगल में जाते थे तब गायों को वहां छोड़कर वे किसी वृक्ष के नीचे बैठकर नाम स्मरण करते थे। एक दिन वे जंगल में भगवत् स्मरण में तल्लीन थे तब उनकी गायें दूसरे के खेत में चली गईं और वहां पेट भर घास खाया। खेत का मालिक, राइबलार के पास शिकायत ले गया कि नानकदेव की गायों ने उसके खेत में जाकर उसका नुकसान किया है। राइबलार ने श्री नानकदेव को बुलाया और उनसे कहा कि तुम्हारी गायों ने दूसरे के खेत में जाकर वहां घास खाकर, उसके खेत को हानि पहुंचाई है। यह ठीक बात नहीं। श्री गुरुनानकदेवजी ने कहा कि मेरी गायों ने जमींदार की कुछ भी हानि नहीं की है। राइबलार ने फिर उस जमींदार से कहा कि तुम फिर जाकर खेत में देखो तुम्हारा क्या नुकसान हुआ है? जमींदार जब खेत पर आया तो वह अपने खेत को हरा भरा देखकर आश्चर्य में पड़ गया।

प्रेमियो! आप भी प्रभु को न बिसारें। अपना धंधा, व्यवसाय इत्यादि करते हुएं भी मन की वृत्ति नाम से जोड़ लें। पूज्य स्वामीजी २२ नवम्बर सायं ४ बजे सिन्धुनगर आश्रम लौट आये। संध्याकालीन सत्संग में उन्होंने श्री गुरुनानकदेवजी की महिमा गाई। रात्रि को उन्होंने सिन्धुनगर-२ एवं जय बाबा धाम में श्री गुरुनानकदेवजी महाराज के प्रेरणादायक संस्मरण सुनाये। संत ब्रह्मदास ने पूज्य स्वामीजी का आभार व्यक्त किया।

कपलेश्वर महादेव मंडल कुर्ला, बम्बई की ओर से २३ नवम्बर से नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। पूज्य स्वामीजी ने २३ नवम्बर उक्त शिविर का उद्घाटन करते हुए कहा कि आप

हर वर्ष इस शिविर का आयोजन कर उत्तम सेवा करते हैं । नन्दलाल बखतियानी एवं उनके साथियों को इस सेवा यज्ञ के लिए साधुवाद। ३० नवम्बर प्रातः स्वामीजी ने इस शिविर के डाक्टरों को आशीर्वाद रूप में दुशाले भेंट किये और प्रवचन करते हुए कहा कि जनता की सेवा, जनार्दन की सेवा है । सेवा का फल है आप अधिक सेवा करें।

स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर, सिन्धुनगर-५ का दसवां वार्षिक उत्सव १० दिसम्बर से आरंभ हुआ । प्रातः पूज्य स्वामीजी ने सनातन धर्म की ध्वजा फहराकर उत्सव का श्री गणेश किया । चारों दिन संतो महात्माओं ने सत्संग प्रवचन किये । १४ दिसम्बर संत समागम हुआ। स्वामीजी ने संतो महातमाओं का स्वागत सत्कार किया ।

१५ दिसम्बर प्रातःकाल पूज्य स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि प्रेमियो ! यहां चार दिन संतो महात्माओं ने अमृत वर्खा की, आशा है कि आप लाभान्वित हुए होंगे । संतो के दर्शन ही सुखदाई हैं । व्यवहारिक एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए नम्रता का गुण अत्यंत आवश्यक है । नदी का तेज़ प्रवाह किनारे के छोटे छोटे पेड़ों को भी जड़ से उखाड़ देता हैं किन्तु दूब के पेड़ झुक जाते हैं । जल का प्रवाह उन्हें उखाड़ नहीं सकता । जो लोग जीवन में विनम्र रहते हैं वे अमर होते हैं । जो घमंड अभिमान करते है वे नष्ट हो जाते हैं । श्री गुरुनानकदेवजी महाराज ने भी यही विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं-

नानक नन्हा हो रहो, जैसे नन्ही दूब ।
बड़े वृक्ष गिर जात हैं, दूब खूब की खूब ।।

तूफान लगने से बड़े बड़े वृक्ष गिर जाते हैं, किन्तु घास यथावत् रहती है । प्रेमियो ! आप भी जीवन में नम्रता अपनायें । राजा युधिष्ठिर ने जब राजसूय यज्ञ किया तब भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं ब्राह्मणों के श्रीचरण धोये और उनकी झूठी पत्तलें उठाई । यह उनकी महानता का द्योतक है । सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज भी विनम्र स्वभाव वाले थे । एक बार सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज किसी कार्यवश कुछ समय आश्रम से बाहर गये । एक साधु आया और वह सत्गुरु महाराज के आसन पर बैठ गया । उसी समय स्वामी ऊधवदास जी ने उस

साधु से कहा कि यह आसन हमारे सत्गुरु महाराज का है, आप यहां से उठकर दूसरे आसन पर बैठें। परन्तु वह साधु सत्गुरु महाराज के आसन पर ही बैठा रहा। इतने में सत्गुरु महाराज वहां आ गये। संत ऊधवदासजी ने सत्गुरु महाराज को यह बात सुनाई। तब सत्गुरु महाराज ने कहा कि मेरे सौभाग्य हैं जो आज एक संत मेरे आसन पर आकर बैठ गया। इस आसन पर तो कभी चींटियाँ भी आकर बैठती हैं, ये तो संत हैं। मैं इनका आभारी हूं कि इस आसन पर बैठकर इस आसन को पावन बना दिया।

सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज में कितनी न विनम्रता थी। यदि और कोई होता तो उस संत पर क्रोधित हो जाता। प्रेमियो ! आप भी जीवन में विनम्र बनें, विनम्रता मनुष्य का आभूषण है। आप लोग शराब व मांस का भी परित्याग करें और नाम स्मरण करें। इस उत्सव में यदि किसी सेवक से कोई गलती हो गई हो तो मुझे क्षमा करें।

प्रेम प्रकाश मंडल के प्रमुख वयोवृद्ध संत पूज्य स्वामी बसंतराम महाराज २१ दिसम्बर इन्दौर में ब्रह्मलीन हुए। पूज्य स्वामीजी भी वहीं थे। स्वामी बसंतरामजी का पार्थिव शरीर अजमेर, उनके स्थान पर लाया गया। २२ दिसम्बर उनका पार्थिव शरीर अग्नि को समर्पित किया गया। चौथे दिन संतो एवं समाज सेवकों ने ब्रह्मलीन पूज्य स्वामी बसंतरामजी महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित की। पूज्य स्वामीजी ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि पूज्य स्वामी बसंतरामजी महाराज प्रेम प्रकाश मंडल के वयोवृद्ध संत थे। वे विद्वान एवं ज्ञानवान थे। उन्होंने सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज की बहुत सेवा की। सिन्ध एवं भारत में उन्होंने विभिन्न नगरों में नाम का प्रचार किया। उनके त्रियोदशी पर स्वामीजी ने संत लक्ष्मणदास को सन्यास की दीक्षा देकर उनका नाम संत ब्रह्मानन्द रखा और उसे स्वामी बसंतरामजी महाराज का उत्तराधिकारी बनाया।

१० जनवरी १९८१ स्वामीजी कामटी पधारे। वहां उन्होंने पांच दिन सत्संग प्रवचन किये। १५ जनवरी वे भाटापारा पधारे। वहां उन्होंने २१ जनवरी तक अमृत वचनों की वर्खा की। २२ जनवरी वे बिलासपुर आये। वहां उन्होंने २५ जनवरी तक सत्संग प्रवचन किया। २७ जनवरी

आप सिन्धुनगर आश्रम लौट आये । ३० जनवरी सायंकाल सत्संग में उन्होंने महात्मा गांधी एवं अन्य शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

५ फरवरी प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर-५ में रोहड़ा ब्रादरी मंडल का वार्षिक उत्सव पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में आयोजित किया गया । श्री कुन्दनदास तोतलदास ने स्वामीजी का स्वागत करते हुए कहा कि उनकी असीम कृपा से ही मंडल की स्थापना हुई है । आज हम यहां उनकी आशीर्वाद लेने के लिए आये हैं। स्वामीजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि बच्चों में शुभ संस्कार डालें, जैसे भविष्य में वे नेक नागरिक बनें और सिन्धी जाति का नाम रोशन करें । प्रेमियो ! आप भी अपना काम काज करते हुए सदैव प्रभु को याद करें । श्रद्धा व प्रेम से यदि आप भगवान को याद करेंगे तो प्रभु अवश्य आपको दर्शन देंगे ।

प्रेमियों के लिए परमात्मा का द्वार सदैव खुला रहता है । किसी समय भी, कहीं भी यदि प्रेमी प्रभु को याद करेंगे तो उन्हें अवश्य प्रभु का दर्शन होगा । जो लोग केवल दिखावे के लिए पूजा-पाठ एवं उपासना करते हैं वे परमात्मा के दर्शनों से वंचित रह जाते हैं। भक्त हिमथदास पांच कोस पैदल चलकर भगवान युगल किशोर का दर्शन करने जाते थे । एक दिन उन्हें भगवान के मन्दिर जाने में देर हो गई । मंदिर के पुजारी ने उसे कहा कि अब मंदिर का द्वार बंद हो गया है अतः अब श्री युगल किशोर के दर्शन नहीं होंगे । यह सुनकर भक्त हिमथदास ने कहा-

कपटियन की लागी रहे हिमथदास कपाट ।
प्रेमियों के पग धरत ही, खुलत कपाट झपाट ।।

भक्त की पूर्ण निष्ठा के कारण अचानक ही भगवान युगल किशोर मंदिर के द्वार खुल गये । यह देखकर पुजारी आश्चर्य में पड़ गया। प्रेमियो ! आप भी विश्वास व निष्ठा के साथ प्रभु को याद करेंगे तो अवश्य ही आप को श्याम सुन्दर के दर्शन होंगे ।

१० फरवरी कुर्ला कपलेश्वर महादेव मंडल की ओर से शिवरात्रि के उपलक्ष्य में पूज्य स्वामीजी के नेतृत्व में जुलूस निकला । १०-११

फरवरी रात्रि स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए भगवान श्री शंकर की महिमा गाई। स्वामीजी ने कहा कि भगवान श्री शंकर को भोलानाथ भी कहा जाता है। वे शीघ्र ही प्रसन्न होते हैं। इसलिए उनका ध्यान करें तो उनकी कृपा के पात्र बन सकते हैं। भगवान की प्रतिमा को साक्षात् भगवान समझना चाहिए। इसी निष्ठा के साथ उनकी पूजा-अर्चना करनी चाहिए। एक व्यक्ति धन प्राप्ति के लिए भगवत् भजन करता था। ऐसे कई वर्ष बीत गये उसे धन की प्राप्ति नहीं हुई। किसी ने उससे केहा कि तुम धन की प्राप्ति के लिए श्री दुर्गामाता की उपासना करो। वह व्यक्ति फिर श्री दुर्गामाता की पूजा उपासना करने लगा। एक दिन उसने विचार किया कि जो धूप, मैं श्री दुर्गामाता की मूर्ति के समक्ष रखता हूं उसकी सुगंधि भगवान की मूर्ति की ओर तो नहीं जायेगी। इस विचार से उसने पूजा-अर्चना के समय भगवान की प्रतिमा के नाक में कपास डाली जिससे धूप की सुगन्ध भगवान के नाक में न जाकर केवल श्री दुर्गामाता के नाक में जाये। उस समय ही अचानक भगवान प्रसन्न होकर प्रकट हुए और उसने उस व्यक्ति से कहा "वरमभू वर मांगो"। वह व्यक्ति आश्चर्य में पड़ गया। उसने भगवान से कहा कि मैंने इतने वर्षों से आपकी पूजा-अर्चना की परन्तु आपने कृपा दृष्टि नहीं की। आज जब मैंने आपके नाक में कपास डाली है, तब मुझ पर प्रसन्न हुए हैं। भगवान ने कहा "तुम मुझे पत्थर की मूर्ति समझकर पूजा करते थे, आज तुमने मुझे साक्षात् समझकर मेरे नाक में कपास डाली इसलिए मैं आज प्रकट हुआ हूं।" यह सुनकर वह व्यक्ति अत्यन्त प्रसन्न हुआ, भगवान ने उसे मुंह मांगा वरदान दिया।

प्रेमियो ! भगवान एवं देताओं की प्रतिमाओं को साधारण मूर्तियां न समझें। मूर्तियों की प्राणप्रतिष्ठा होती है। उन्हें साक्षात् चेतन समझकर उनकी पूजा उपासना व अर्चना करें।

१० मार्च से २३ मार्च वडाला सिन्धी ब्रादर मंडल की ओर से वडाला (बम्बई) में पूज्य स्वामीजी के सत्संग प्रवचन का आयोजन किया गया। रविवार के दिन सायं और अन्य दिन रात्रि में पूज्य स्वामीजी प्रवचन करते थे। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आप लोगों को धन्यवाद है कि आप होली के दिनों प्रति वर्ष सत्संग यज्ञ का

आयोजन कर उत्तम कार्य करते हैं।

गंगा स्नान सत्संग पुनसंतों का दर्शन।
श्रद्धा से सेवके, करीए मन प्रसन्न ॥

संतो का सत्संग व दर्शन, गंगा के स्नान करने के समान पवित्र है इसलिए श्रद्धा व प्रेम के साथ संतों के दर्शन कर उनका प्रवचन श्रवण करें। नाम स्मरण करें। भक्त प्रहलाद ने बचपन में ही प्रभु के साथ प्रेम का नाता जोड़ा। उसके पिता ने उसे कितने ही असहनीय कष्ट दिये। बालक प्रहलाद को ऊंची पहाड़ी से नीचे गिराया गया, जिससे उसकी मृत्यु हो जाये परन्तु फिर भी उसने भगवान का सहारा नहीं छोड़ा। वह राम-नाम लेते पृथ्वी पर ऐसे गिरा जैसे गलीचे पर गिरा हो प्रभु ने बालक प्रहलाद की रक्षा की। प्रेमियो ! आप भी भक्त प्रहलाद की भांति प्रभु को न भूलें, सदैव उसका स्मरण करते रहें। प्रभु आपकी रक्षा करेगा। मांस शराब का परित्याग करें। माया परोपकार के कार्यो में सफल करें।

१ अप्रैल पूज्य पंडित शीतलदासजी अजमेर में ब्रह्मलीन हुए इसलिए स्वामीजी ३ अप्रैल अजमेर पहुंचे। पंडित शीतलदास के चौथे पर स्वामीजी ने उन्हें श्रद्वांजलि अर्पित करते हुए कहा कि हमारा उनके साथ वर्षों से स्नेह सम्बन्ध रहा। वे संस्कृत व हिन्दी के विद्वान व भगवान श्रीकृष्ण के अनन्य उपासक थे। वे यहां प्रति वर्ष श्री गीता जयन्ती उत्सव बड़े उत्साह के साथ मनाते थे। निश्चय जानें कि उन्होंने गौलोक में निवास किया होगा।

३ अप्रैल सबेरे सुधार सभा अजमेर की ओर से टी जी. मयाणी अस्पताल के भवन की नींव रखने का उत्सव आयोजित किया गया। स्वामी माधवदास महाराज ने अस्पताल के भवन की आधार शिला रखी। पूज्य स्वामीजी ने भगवानदास मयाणी को इस उत्तम कार्य के लिए दस लाख रुपये दान देने के कारण साधुवाद दिया। स्वामीजी ने सभा के प्रधान श्री दीपचन्द्र बेलाणी एवं उनके साथियों को सेवा कार्य के लिए भी साधुवाद दिया।

श्री प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव चैत्र मेला १८ अप्रैल से

२१ अप्रैल १९८१ अमरापुर स्थान जयपुर में आयोजित किया गया। इस उत्सव के उपलक्ष्य में पूज्य स्वामीजी १५ अप्रैल अमरापुर स्थान पर आये। १७ अप्रैल स्वामी गुरुमुखदासजी महाराज की पुण्यतिथि मनाई गई। पूज्य स्वामीजी ने संध्याकालीन सत्संग सभा में स्वामी गुरुमुखदासजी महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित की। १८ अप्रैल प्रातः स्वामीजी ने मंडल के अन्य संतों के साथ सनातन धर्म ध्वजा फहराकर उत्सव का श्रीगणेश किया।

स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, ग्वालियर के प्रेमी शंकरलाल सबनाणी, श्रीचन्द पंजवाणी एवं साथियों ने मासिक "प्रेम प्रकाश संदेश" धार्मिक, आध्यात्मिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया। उसके प्रथम अंक का विमोचन १८ अप्रैल सायं पूज्य सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज के पवित्र 'कर कमलों' द्वारा किया गया। पूज्य स्वामीजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि इस पत्रिका द्वारा पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज, पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज एवं अन्य संतों, महात्माओं, की शिक्षाओं का प्रचार, प्रसार होगा। साथ ही यह पत्रिका पूज्य गुरु महाराज की अमूल्य शिक्षाओं को घर-घर पहुंचाने में सक्षम सिद्ध होंगी। उत्सव के चारों दिन पूज्य स्वामीजी एवं अन्य संतो ने विभिन्न विषयों पर प्रवचन किये।

दिनांक १९ अप्रैल १९८१ जयपुर में ६० वें चैत्र मेले के शुभ अवसर पर उद्घाटन समारोह में उपस्थित जन समूह को सम्बोधित करते हुए परम पूजनीय सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज ने कहा कि आज जिस तीव्र गति से समाज पतनोन्मुख हो रहा है। ऐसे समय में फैली हुई सामाजिक कुरीतियों को दूर करें एवं अपने तथा दूसरे लोगों में सामाजिक एवं आध्यात्मिक चेतना को जगाएं।

सर्व प्रथम आप लोग मांस एवं मदिरा का सेवन बिलकुल न करें क्योंकि एक समय के भोजन के लिये किसी प्राणी को उसके प्राणों से अलग कर देना पवित्र कार्य नहीं। जीने का जितना हक्र आपको है उतना अन्य प्राणियों को भी। अतः यह प्रकृति द्वारा नियत आहार भी नहीं है। इसके उपरांत भी यदि कोई अज्ञानवश मांसाहर की ओर प्रवृत होता है तो वह मनुष्य अपने शरीर में नये-नये दुखों को निमंत्रण

देता है। हम देख रहे हैं कि आजकल के नवयुवकों एवं नवयुवतियों में फ़ैशन की प्रवृति बड़ी तीव्र गति से बढ़ती जा रही है। इसके दूरगामी परिणाम होंगे। भारतीय संस्कृति को भी नवयुवक एवं नवयुवतियां भूलते जा रहे हैं। इस प्रकर, दूरगामी परिणामों को देखते हुए नवयुवकों एवं नवयुवतियों से मेरा आग्रह है कि वे फैशन इत्यादि को छोड़ें एवं "सादा जीवन उच्च विचार" के सूत्र पर चलें। दहेज के लेन देन के सम्बंध में भी समाज में विभिन्न प्रकार की बातें सुनने को मिलती हैं। ३०-३० व ४०-४० साल तक की लड़कियां मात्र इसलिए कुँआरी हैं क्योंकि उनके अभिभावकों के पास दहेज देने के लिये पैसे नहीं हैं। यह एक बहुत बड़ी बुराई है जिसे जड़ मूल से नष्ट करना बहुत आवश्यक है।

स्वामीजी ने आगे कहा कि कल्याण-स्वरूप आनन्द का धाम जो हरि का नाम है उसका हर क्षण में स्मरण करें। आयु श्वासों पर आधारित है न कि वर्षों पर, श्वास जब अन्दर जाता है तब जीव की जीवित अवस्था होती है, जब बाहर जाता है तब मृतक। रात-दिन जीना मरना आपस में लड़ते रहते हैं अन्त में मरना जीने को खा जाता है इसीलिए सच्ची सम्पति श्वास ही है और सम्पति, सम्पति नहीं।

"जां की पूंजी श्वास है खिन आवे खिन जाय।
तांको ऐसा चाहिए रहे राम लिंव लाय" ॥

यह श्वास रूपी सम्पत्ति, परमात्मा ने आपको कम नहीं दी है रात-दिन में १९६०० श्वास चलते हैं। सारा हिसाब लगाने से यह भली भांति ज्ञान हो जायेगा कि सारी आयु में कितनी सम्पत्ति प्राप्त हुई है। परमात्मा के भजन बिना विषय भोगों में श्वासों को लगाना मिट्टी में मिलाना है। अमूल्य श्वासों की कीमत न करके केवल रात-दिन इस झूठी माया को एकत्रित करने में ही अपना समय गवां देते हैं। इसलिए भजन करो, ध्यान करो, सत्संग सेवा करो, परोपकार करो ए

वं उसी प्रकार जीवन को बुरे कार्यों में लगाना अच्छा नहीं है। अपने में व्यापत समस्त बुराईयों को त्याग कर अपने आत्म-स्वरूप को पहचाने जिससे मुक्ति मिलने में आसानी रहे, क्योंकि जो हम अपने को समझ बैठे हैं वह नहीं हैं। हमेशा निम्न बातों पर मनन करें श्वासों को सफल करो। जिस प्रकार धन को व्यर्थ गंवाना अच्छा नहीं।

उसी प्रकार जीवन को बुरे कार्यों में लगाना अच्छा नहीं है।

अपने में व्यापत समस्त बुराईयों को त्याग कर अपने आत्म-स्वरूप को पहचाने जिससे मुक्ति मिलने में आसानी रहे, क्योंकि जो हम अपने को समझ बैठे हैं वह नहीं हैं। हमेशा निम्न बातों पर मनन करें।

मैं हूं कौन, वहां से आया, किसने मुझे बनाया है।
कौन देश से आया हूं, फिर कौन देश को जाना है॥

अंत में स्वामीजी ने उपस्थित विशाल जन समुदाय को कहा कि आप लोग पता नहीं कितने कष्ट उठाकर इतनी बड़ी संख्या में यहां उपस्थित हुए, इस लिए मैं आप सभी को धन्यवाद देता हूं।

चैत्र मेले के मध्य दिनांक २१ अप्रैल ८९ को प्रेम प्रकाश सन्देश के प्रतिनिधि प्रहलाद सबनाणी को विशेष भेंट में उनके प्रश्नों का उत्तर देते हुए स्वामीजी ने कहा कि 'प्रेम प्रकाश संदेश' में ऐसे लेख प्रकाशित करे जो धार्मिक हों, समाज के हित में हों साथ ही साथ जिससे समाज का उत्थान हो। आम प्रेमियों के लिये प्रेषित संदेश में पूज्य स्वामीजी ने कहा कि शराब पीना छोड़ें, जुआ न खेलें। सिनेमा पर न जायें। किसी तरह का व्यसन न करें मांस मछली न खायें। कोई ऐसा कार्य न करें जिससे किसी के मन को चोट पहुंचे।

नवयुवकों के लिये अपने संदेश में कहा कि नवयुवक फैशन न करें, सादगी से रहें, ऐसे कार्य करें जिससे देश की उन्नति हो। आपस में अच्छा व्यवहार रखें, भाई चारे से रहें। अपने से बड़ों की आज्ञा का पालन करें। ग्वालियर के नवयुवकों ने जो जिम्मेदारी ली है उसका वह अच्छी तरह से निर्वाह करें और इस प्रकार के कई रचनात्मक कार्य करे।

२२ अप्रैल प्रातः पूज्य स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज न केवल महान संत थे किन्तु वे समाज सुधारक भी थे। उन्होंने मांस, शराब एवं अन्य सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध प्रचार किया। प्रेमियों ! आप भी इन चीज़ों का परित्याग करें। सत्गुरु महाराजजी अपनी वाणी में कहते हैं-

मांस खान में पाप बहु, मत को खावे तांहि ।
कह टेऊँ जो खात हैं, जावन नर्कों मांहि ।।

प्रेमियो ! किसी का बुरा न करें, सब के साथ भलाई करें, उपकार के कार्य करें, नाम को न भूलें, दया व क्षमा के गुणों को अपनायें। दया धर्म का मूल है ।

सत्पुरुष, संत महात्मा सदैव दयालु होते हैं । जो उनके साथ बुराई करते हैं, उसका भी भला करते हैं । किसी एक गांव में एक गरीब ब्राह्मण रहता था । एक दिन वह धन कमाने के लिये अपने घर से कहीं जा रहा था । उसकी पत्नि ने उसे रास्ते में खाने के लिए रोटियां पकाकर दी थीं । जब चलते चलते वह थक गया, तब रात्रि के समय वह एक नदी के किनारे रुक गया । वहां उनसे रोटियाँ निकाल कर खाईं । जब वह सोने लगा तब एक सांप निकला । ब्राह्मण सांप को देखकर डर गया । तब सांप ने उसे कहा डरो नहीं, मैं तुम्हें मारूंगा नहीं । मैं तुम्हारा भला करूँगा केवल तुम मेरे कहने के अनुसार चलना। सांप के ये शब्द सुनकर ब्राह्मण को संतोष हुआ । सांप ने उससे कहा कल प्रातः तुम राजा के पास जाना, वह राजा तुमसे कुछ पूछेगा। तब तुम राजा से कहना कि यह वर्ष कष्टदायक है, तूफान लगेंगे, आग लगने की घटनाएं होंगी, जन हानि होगी । तुम यह भविष्यवाणी राजा को बताना प्रातः होते ही वह ब्राह्मण राजा के पास आया और राजा ने उस ब्राह्मण का स्वागत करते हुए उस से इस वर्ष के सम्बन्ध में कुछ बातें पूछीं । ब्राह्मण ने राजा से कहा कि यह वर्ष भारी व कष्टदायक है । तूफान एवं आग लगने का योग है । राजा ने ब्राह्मण की भविष्यवाणी सुनकर उंसे पुरुस्कार दिया । उसके मन में बेईमानी पैदा हुई । उसने विचार किया कि सांप के कहने से मुझे आज धन पदार्थ मिला है, यदि यह सांप जीवित रहेगा तो उसकी मान्यता बढ़ेगी । क्यों न उसे मारकर प्रति वर्ष राजा को भविष्यवाणी सुनाकर पुरुस्कार प्राप्त करूं। इस दुर्भावना से उसने राजा से मिट्टी के तेल के डिब्बों की मांग गी । वह ब्राह्मण पचास डिब्बे मिट्टी के तेल के बैल गाड़ियों में रखकर उसी स्थल पर ले आया जहां सांप रहता था । उस ब्राह्मण ने वह तेल वहां डालकर आग लगादी जिससे वह सांप जलकर भस्म हो

जाये। वह ब्राह्मण इस कुकर्म करने के पश्चात् अपने घर लौट आया धन प्राप्ति करने पर उसकी पत्नि भी प्रसन्न हुई। दूसरे वर्ष जब वह राजा को भविष्य वाणी सुनाने के लिए राजा के पास जा रहा था तब वह उसी स्थान पर फिर सांप को देखकर अचम्भित हुआ।

सांप ने, उससे कहा "घबराओ नहीं! डरो नहीं, तुम मेरा कितना भी बुरा करो, मुझे दुखी करो परन्तु मैं फिर भी तुम्हारा भला करूंगा। इस वर्ष भी तुम उसी राजा कें पास जाओ और कहो कि इस वर्ष तुम्हारे राज्य में खूब वर्षा होगी, बाढ़ भी आयेगी।" ब्राह्मण सांप के कथना नुसार राजा के पास आया और उसे भविष्यवाणी सुनाई। राजा ने उसे धन पदार्थ भेंट किए। ब्राह्मण के मन में फिर भी सांप के प्रति दुर्भावना पैदा हुई। उसने अब पानी के पचास डिब्बे सांप के बिल में डाल दिये, जिससे वह सांप वहीं मर जाय। वह ब्राह्मण फिर अपने गांव लौट आया। सांप ने दोनों बार भविष्यवाणी सुनाई जिससे उसे लाभ हुआ। किन्तु स्वार्थी ब्राह्मण परोपकरी सांप को फिर भी मारना चाहता था। जब तीसरे वर्ष वह ब्राह्मण उस राजा को भविष्यवाणी सुनाने के लिए जा रहा था तो रास्ते में उस सांप को देखकर वह बहुत घबड़ा गया। उसने समझा कि अब तो सांप उसे अवश्य ही काटेगा परन्तु सांप ने फिर भी उसका भला करते हुए कहा "तुम घबराओ नहीं! राजा से कहना कि यह वर्ष उसके राज्य के लिए आनन्ददायक है, सभी धन धान्य से सम्पन्न होंगे, और सब जगह उसकी विजय होगी।" ब्राह्मण ने सांप से सुनी हुई भविष्यवाणी आकर राजा को सुनाई। राजा वह भविष्यावाणी सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ और उसने ब्राह्मण को हीरे जवाहरात व धन इत्यादि दक्षिणा रूप में भेंट किये। अब वह ब्राह्मण प्रसन्नचित होकर दूध के पचास डिब्बे भरवाकर सांप के रहने वाले स्थल पर ले आया और वह दूध सांप को पिलाया। तब वह सांप एक संत के रूप में प्रकट हुआ और उसने हंसते हंसते उस ब्राह्मण से कहा "तुमने मुझे आग में जलाने का प्रयास किया, पानी में डुबाकर मारने का प्रयास किया। मैंने तो तुम्हारा कुछ बिगाड़ा नहीं था। मैंने तो तुम्हारी गरीबी दूर करने के लिए भविष्यवाणी सुनाई थी फिर भी तुम्हारे मन में मेरे प्रति दुर्भावना पैदा हुई और तुमने मुझे मारने के प्रयास किये। यह उचित नहीं।

ब्राह्मण बहुत लज्जित हुआ और क्षमा याचना करने लगा ।

प्रेमियों ! संत परोपकारी होती हैं । बुरा करने वालों का भी भला करते हैं । आप भी संतो के जीवन से परोपकार व सेवा के गुण ग्रहण करें ।

उसके पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने २७ अप्रैल तक अमरापुर स्थान पर सत्संग प्रवचन किये । २८ अप्रैल स्वामीजी ने जयपुर से इन्दौर के लिए प्रस्थान किया । वहां उन्होंने स्वामी मुरलीधरजी महाराज के पुण्यतिथि उत्सव के सम्बन्ध में पांच दिन सत्संग प्रवचन किया । ५ मई पूज्य स्वामीजी खंडवा पधारे । वहां उन्होंने दो दिन अमृत वर्खा कर ज्ञान गंगा प्रवाहित की ।

१४ मई स्वामीजी कवि पहिलाजराम की पुण्यतिथि उत्सव के सम्बंध में देवलाली गये । वहां उन्होंने दो दिन अमृत वचनो की वर्खा करते हुए कवि पहिलाजराम के गुणों का वर्णन किया । १६ मई आप नासिक पधारे । वहां आपने होलाराम सोसायटी एवं अन्य स्थानों पर दो दिन सत्संग प्रवचन किया ।

३० मई १९८१ पूज्य स्वामीजी आदर्शनगर अजमेर में स्वामी माधवदासजी महाराज के आश्रम पधारे । १ जून से वहां पूज्य स्वामी टेऊँरामजी महाराज का पुण्यतिथि उत्सव आयोजित किया गया था । स्वामीजी एवं अन्य संतों ने ६ दिन प्रातः एवं सायं को वहां सत्संग प्रवचन किये । ७ जून को उत्सव का समापन करते हुए स्वामीजी ने कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने हजारों साधकों को "सत् नाम साक्षी" मंत्र देकर भव सागर से पार लगाया । सत्गुरु महाराज भक्ति व ज्ञान के भंडार थे । प्रेमियो ! आप भी अपने जीवन में स्मरण व सेवा की ज्योति जगाएं । सभी प्राणियों में प्रभु का दर्शन कर उन्हें प्यार करें । मांस भक्षण एवं शराब का परित्याग करें । जैसा अन्न वैसा मन, आप लोग सात्विक भोजन खाऐंगे तो आपकी बुद्धि भी सात्विक रहेगी, शरीर स्वस्थ रहेगा । सत्गुरु महाराज भी फरमाते हैं-

सात्विक स्वल्प नियम से, जो जन करत अहार ।
तांको रोग न लगई, टेऊँ देह मंझार ॥

प्रेमियों की प्यास पूरी करने के लिए स्वामीजी मंडली सहित २७

जून प्रातः विदेश यात्रा पर रवाना हुए। स्वामीजी के साथ संत देवप्रकाश, संत अनन्तप्रकाश, संत टोपणदास व ज्ञानलाल भी गये। २७ जून दोपहर ११ बजे स्वामीजी बैंकाक पहुंचे। प्रेमियों ने विमान तल कर पूज्य स्वामीजी का स्वागत सत्कार किया। स्वामीजी वहां बहन रुक्मणी दयाराम के घर ठहरे। ९ दिन उन्होंने नारी नानवाणी, वाणी पुरस्वाणी, झामनदास गंगलाणी, नारी गुलराजाणी, सुशीला किशनचन्द, कमला दयालदास एवं अन्य प्रेमियों के घरों में अमृत वचनों की वर्खा की और भोजन भी ग्रहण किया। पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा-

कलियुग में हरि नाम है, सब साधन का सार।
कह टेऊँ तहं सुमरके, पाओ मोक्ष द्वार॥

प्रेमियों पूज्य सतुगुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज ने देश विदेश के विभिन्न नगरों में जाकर अज्ञान की नींद में सोए हुए लोगों को जाग्रत कर नाम स्मरण का संदेश दिया। आप भी अपने अमूल्य श्वास नाम स्मरण में सफल करें। यदि आपको नाम याद होगा तो आप नामी अर्थात् प्रभु को प्राप्त कर सकेंगे। यदि आपको प्रभु की प्यास है तो किसी न किसी संत द्वारा आप अवश्य परमात्मा को प्राप्त करेंगे। भक्त नामदेव का शिष्य चोखामेला एवं अन्य कुछ लोग एक मकान के गिर जाने से दबकर मर गये। इस दुर्घटना का समाचार पाकर कुछ दिन पश्चात् चोखामेला के सगे सम्बन्धी उसके फूल लेने आये परन्तु पहचान नहीं सकते थे कि चोखामेला के फूल कौन से हैं। अतः वे संत नामदेव के पास आये। संत नामदेव ने उन्हें कहा कि मेरे प्यारे चोखामेला की हड्डियों की यह पहचान है कि उनमें से 'जय श्रीकृष्ण' 'जय श्रीकृष्ण' की ध्वनि सुनने में आयेगी। चौखामेला के सगे सम्बन्धी पुनः घटनास्थल पर गये जब उन्होंने हड्डियों की पहचान करना शुरू किया, चोखामेला की हड्डियों में से 'जय श्रीकृष्ण' की ध्वनि सुनाई दी। यह ध्वनि सुनकर वे आश्चर्य में पड़ गये। भक्त लोग अपने जीवनकाल में तो नाम स्मरण करते हैं किन्तु ब्रह्मलीन होने के पश्चात् भी उनकी हड्डियों से भी राम नाम की ध्वनि निकलती है।

भक्तों की रग रग में नाम की ध्वनि ध्वनित होती है। प्रेमियों ! आप भी अपने श्वास नाम स्मरण में सफल करें। सांसारिक बातों

को भले ही भूलें किन्तु प्रभु का नाम न भूलें ।

७ जुलाई स्वामीजी हांगकांग पहुंचे वहां प्रेमियों ने प्रेम प्रकाश मन्दिर की स्थापना की थी । पूज्य स्वामीजी मंडली सहित उस मन्दिर में गये । श्री होतचन्द वाधवाणी एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया । स्वामीजी प्रात: एवं सायं वहां सत्संग प्रवचन करते थे । मन्दिर में भगवान श्री श्याम सुन्दर, पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज एवं सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज के पवित्र प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा स्वामीजी के पवित्र कर कमलों द्वारा की गई । पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि अब से मूर्तियों को आप संगमरमर की मूर्तियां न समझें । आज इनकी प्राण प्रतिष्ठा हुई है । इसलिए साक्षात् स्वरूप समझकर विश्वास व श्रद्धा के साथ पूजा उपासना करें । सत्गुरु महाराज फरमाते हैं-

जप तप सेवा कर्म शुभ, तीर्थ दान स्नान ।
श्रद्धा बिन फल देत नंहि, कह टेऊँ सत् मान ॥

एक राजा की बेटी रत्ना व एक भूपति की बेटी कमला आपस में सहेलियां थीं । एक बार राजा के पास उनके गुरुदेव आये । दोनों सहेलियों ने उनको भगवान की मूर्तियों की पूजा उपासना करते देखा। उन्होंने उनसे भगवान की मूर्तियां मांगी । संत ने उन बालिकाओं को नासमझ समझकर दोनों को एक पत्थर का टुकड़ा देते हुए कहा ये भगवान की मूर्तियां हैं । तुम दोनों इनकी पूजा उपासना करोगी तो संसार सागर से पार हो जाओगी । दोनों सहेलियां अपने अपने घर में श्रद्धा व विश्वास के साथ संत द्वारा दिये पत्थरों को मूर्ति स्वरूप समझकर पूजा उपासना करने लगी ।

कमला के पिताजी की उसके भाई के साथ अनबन हो गई तो एक दिन वह घर का कुछ सामान ले गया । उस सामान में वह मूर्ति भी थी । मूर्ति न होने के कारण कमला बहुत उदास हो गई । वह चाचा के घर आई और उसने चाचाजी से अनुरोध किया कि वे उसे वह मूर्ति लौटा दें । चाचा ने उससे कहा मुझे पता नहीं तुम्हारी कौन सी मूति है? सामान अन्दर पड़ा है, तुम भगवान को बुलाओ, तुम अन्दर मत जाओ । यदि तुम्हारी भक्ति सच्ची है तो मूर्ति तुम्हारे पास

आ जायेगी। कमला ने प्रेम, श्रद्धा व निष्ठा के साथ भगवान को पुकारा। कुछ ही क्षणों में वह मूर्ति कमला की गोद में आ गिरी। कमला का चाचा यह देखकर आश्चर्य में पड़ गया। कमला भगवान की मूर्ति पाकर फूली नहीं समाई। उसने अपने घर में आकर यह घटना माता-पिता को सुनाई। अब वह बड़ी निष्ठा के साथ भगवत् मूर्ति की पूजा उपासना करने लगी।

राजा की सुपुत्री रत्ना का विवाह एक नास्तिक राजकुमार से हुआ। जब रत्ना को यह ज्ञात हुआ तब वह चिन्तित हुई। विवाह के पश्चात जब वह अपने पति के साथ ससुराल जाने लगी तो रत्ना ने भगवान की मूर्ति बटुए में डालकर साथ ली। रास्ते में पति-पत्नि आपस में बातचीत कर रहे थे। रत्ना प्रेम से पति को समझाने लगी कि आप प्रभु के लिए अपने मन में प्रेम की ज्योति जगाएं फिर मुझे स्पर्श करें। यह सुनकर राजकुमार ने क्रोधित होकर वह भगवत् मूर्ति वाला बटुआ नदी में फेंक दिया। रत्ना यह देखकर बहुत व्यथित हुई। ससुराल पहुंचकर उसने भोजन व पानी त्याग दिया। ससुराल वालों ने उसे बहुत समझाया किन्तु वह भगवत् विरह में व्याकुल रहने लगी। ससुराल वाले और कोई रास्ता न देखकर उसे उसी नदी के किनारे ले आये जहां उसके पति ने वह बटुआ फेंका था। रत्ना ने नदी के किनारे बैठकर प्रेम से प्रभु को आर्तस्वर से पुकारा। प्रभु ने उसकी पुकार सुनी, तत्क्षण वह मूर्ति वाला बटुआ नदी में से उड़कर रत्ना की गोदी में आकर गिरा, रत्ना एवं उसके ससुराल वाले यह अद्भुत दृश्य देखकर आश्चर्य में पड़ गये। रत्ना की भक्ति भावना के कारण उसके पति राजकुमार के मन में भी परिवर्तन आ गया। उसके मन में भी भगवद् प्रेम पैदा हुआ। हमारी भी कमला व रत्ना जैसी भगवान के श्रीचरणों में प्रीति होनी चाहिए। प्रेमियो ! भगवान की मूर्तियों को साक्षात् रूप समझकर उनकी पूजा उपासना करें।

गुर पूर्णिमा के दिन पूज्य स्वामीजी ने उपदेश देते हुए कहा-

गुर मूर्ति का ध्यान धर, गुर है देवन देव।
कह टेऊँ गुर नाम जप, पाओ आतम भेव ॥

सत्गुरु देवताओं के भी देवता हैं, इसलिए सत्गुरु का निष्ठा के साथ

ध्यानकर उनके द्वारा दिये मंत्र का जाप करें तो आपको आत्मज्ञान की उपलब्धि होगी । गुरु शब्द का अर्थ है जो अंधकार से प्रकाश के पथ पर ले आये । असत् से सत् मार्ग पर लाये । गुरु का बड़ा महत्व है । शिष्य को चाहिए कि वह अपने गुरुदेव की शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारे ।

हांगकांग में अन्तिम प्रवचन करते हुए स्वामीजी ने कहा-

दया दिल में राखिए, तू क्यों निर्दय होय ।
साईं के सब जीव हैं, कीड़े कंजर सोय ।।

दया न केवल मानव पर किन्तु पशु पक्षियों पर भी दया करनी चाहिए । कई अमीर लोग शिकार करने के शौक से पशुओं को मारते थे । ये अमीर लोग मनोरंजन के लिए पशुओं का शिकार करते थे। मनुष्य को अपने एक-एक कर्म का फल अवश्य भुगतना पड़ेगा, वह राजा हो या रंक हो । कोई भी कर्म चक्र से विमुक्त नहीं हो सकता। प्रेमियो ! इसलिए कोई भी हिंसात्मक कार्य नहीं करें । मन में प्रेम व दया की ज्योति जगाएं ।

सबक्तगीन एक साधारण सिपाही था । एक दिन वह जंगल में शिकार करने गया । उसने वहां एक हिरणी व उसके छोटे बच्चे को देखा। वह उसका शिकार करने के लिए उनके पीछे दौड़ा । हिरणी कूदती कूदती छलांग मारती दौड़ी किन्तु उसका बच्चा रास्ते में रह गया । सबक्तगीन हिरणी के बच्चे को जीवित लेकर लौटने लगा तब वह छिपी हुई हिरणी ममता के कारण उसके पीछे गई । बच्चे सब को प्यारे होते हैं । सबक्तगीन हिरणी को अपने पीछे आते देखकर रुक गया, उसने देखा कि हिरणी बच्चे के लिए तड़प रही है तो उसके मन में दया आ गई । वह संगदिल, मोमदिल हो गया । उसने हिरणी के बच्चे को मुक्त कर दिया, तब वह हिरणी अपने बच्चे को लेकर प्रसन्न होकर दौड़ी । उसी रात सबक्तगीन को स्वप्न में फरिश्ते ने कहा कि आज तुमने हिरणी के बच्चे पर दया कर उसे जीवनदान दिया है तुम इसलिए गज़नवी के बादशाह बनोगे । कुछ वर्षों के बाद सबक्तगीन गज़नवी का बादशाह बना । एक हिरणी पर दया करने से एक साधारण सिपाही बादशाह बना, किन्तु जो सदैव जीवों पर दया करेगा उस पर

भगवान कितनी न कृपा करेगा ! प्रेमियो ! इसलिए आप भी मन में दया भावना रखें । अपनी जिव्हा के स्वाद हेतु पशुओं की हिंसा नहीं करवायें । ये बकरियां बकरे, पुकार रहे हैं-

'आज गला तुम काट हो, कल कटेगा तुम्हार'

यदि आप इन पशु पक्षियों पर दया नहीं करेंगे, इसके मांस का आहार करेंगे तो तुम्हें भविष्य में पशु पक्षियों का जन्म लेना पड़ेगा।

सब प्राणी हैं रूप प्रभु के,
तुम कभी न किसको सताओ ।
जीव दया की ज्योति जगाओ,
मानव जीवन सफल बनाओ ।।

२३ जुलाई पूज्य स्वामीजी हांगकांग से मनीला आये । कई प्रेमियों ने उनका स्वागत सत्कार किया । आप वहां देव सहजवाणी के घर पर ठहरे । उन्होंने वहां १६ अगस्त तक हिन्दु मंदिर में सत्संग प्रवचन किया । पूज्य स्वामीजी ने एक दिन प्रवचन करते हुए कहा कि सत्गुरु की अत्यन्त आवश्यकता है ।

सत्गुर के सत् शब्द का, करले निशदिन जाप ।
कह टेऊं जिस जाप ते, मिटे सकल संताप ।।

प्रेमियो ! गुरु द्वारा दिये गये नाम का प्रेम व श्रद्धा के साथ जाप करें । दीन दुखियों की सेवा करें । दया व परोपकार की भावना धारण करें तो आपका बेड़ा पार हो जायेगा ।

धार दया दिल में सदा, दीनों से कर प्यार ।
टेऊँ इस उपकार से, अपना करो उद्धार ।।

जिनके मन में दया भावना होती है, वे दूसरों के दुख में द्रवित होकर उसे दूर करने का प्रयास करते हैं । वे स्वयं को कष्ट देकर भी दूसरों को सुखी करते हैं ।

१५ अगस्त प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी का जन्मदिन बड़े उत्साह के साथ मनाया । १७ अगस्त पूज्य स्वामीजी जकारता पधारे । वहां शंकर सामताणी, गोप सामताणी, लाल वास्वाणी, श्री अर्जनदास एवं अन्य

प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी का भव्य स्वागत किया। उन्होंने ९ सितम्बर तक वहां सत्संग प्रवचन किया। माता कृष्णा सामताणी और उसके परिवार ने पूज्य स्वामीजी की बहुत सेवा की। पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आप लोग यहां अपना काम काज, धंधा व्यवसाय इत्यादि करते हुए प्रभु को नहीं भूलें। धन पदार्थों को प्रभु की धरोहर समझकर उसे परोपकार के कार्यों में लगाएं। परमात्मा, गुरु एवं संतों के साथ प्रेम का नाता जोड़ें तो आप इस संसार सागर से पार हो जाएंगे।

संत गुरु परमात्मा, सच्चे संगी जान।
कह टेऊँ इन तीन से, करले प्रेम सुजान॥

२३ अगस्त जन्माष्टमी के दिन पूज्य स्वामीजी ने भगवान श्रीकृष्ण की अनुपम लीलाओं का वर्णन करते हुए उनकी महिमा का भजन गाया। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि मदनमोहन भगवान श्रीकृष्ण का अनन्य भक्त था। एक बार उसने बाजार में बढ़िया शक्कर देखी। उसके मन में विचार आया कि क्यों न इस शक्कर की एक बैल गाड़ी ब्रज भेजूँ। इस शक्कर से मालपुऐ बनाकर वहां श्री साक्षी गोपाल को उन मालपुओं का भोग लगाया जाय। भक्त मदनमोहन ने सेवकों से कहा कि एक बैल गाड़ी इस शक्कर की ब्रज भेजी जाय। सेवकों ने कहा कि ब्रज में ही शक्कर खरीदकर मंदिर भेजी जाय। यहां से यह शक्कर भेजेंगे तो भेजने का व्यय व्यर्थ जावेगा। शक्कर मंहगी पड़ जायेगी। तब भक्त मदनमोहन ने कहा कि जिन वस्तुओं का भगवान को भोग लगाया जाय उसके खर्चे का ख्याल नहीं करना चाहिए। मदन भक्त ने एक बैल गाड़ी शक्कर की भरकर ब्रजधाम भेजी। जिस दिन शक्कर ब्रज के मन्दिर में पहुंच गई उसी रात को मंदिर के पुजारी को भगवान श्यामसुन्दर ने स्वप्न में आज्ञा दी कि तुरन्त ही मेरे भक्त द्वारा भेजी हुई शक्कर से मालपुए बनवाकर मुझे भोग लगाया जाय। पुजारी निंद्रा में भगवान का दर्शन कर अत्यन्त प्रसन्न हुआ। उसने उसी समय ही मालपुए तैयार करवाये और प्रातः प्रभु श्यामसुन्दर को भोग लगाया। प्रभु अपने भक्तों की निष्काम इच्छा पूर्ण करने में देरी नहीं करते। प्रेमियो। आप भी श्रद्धा व विश्वास से प्रभु की भक्ति करें।

जकारता में एक दिन पूज्य स्वामीजी ने अमृत वर्खा करते हुए प्रार्थना का महत्व बताते हुए कहा कि-

प्रार्थना कर प्रेम से, कह टेऊं बन दास।
शुद्ध हृदय की सुनत हरि, राखो मन विश्वास ।।

प्रार्थना में बड़ी शक्ति होती है । महात्मा गांधी प्रात:काल उठकर श्रीमद्भगवद् गीता का पाठ करते थे, प्रार्थना करते थे । उनके सामने कितनी ही समस्याएं आती थीं, परंतु प्रार्थना के पश्चात् उन्हें उन सभी समस्याओं का समाधान मिल जाता था ।

एक बार जार्ज मूलर पानी के जहाज द्वारा कैनाडा जा रहे थे । अचानक चारों ओर घनघोर घटाएं छा गई । कप्तान ने जहाज को रोक दिया । चौबीस घण्टे बीत गये फिर भी मौसम साफ नहीं हुआ। मूलर ने कप्तान से कहा कि शनिवार को उसे हर हालत में क्यूबिक नगर में पहुंचना है । कप्तान ने कहा जब तक मौसम साफ नहीं होता तब तक जहाज चलने की कोई संभावना नहीं है इसलिए आप शनिवार तक क्यूबिक पहुंच नहीं सकते । यह सुनकर मूलर ने कहा ५७ वर्षो में मैंने कभी अपना कार्यक्रम स्थगित नहीं किया है, हर कार्यक्रम में मैं निश्चित समय पर पहुंचता हूं । यदि तुम्हारा जहाज नहीं चल सकता है तो प्रभू और कोई रास्ता निकालेगा । मूलर ने उसी समय पूर्ण आत्म-विश्वास के साथ प्रभु को प्रार्थना की । थोड़े ही समय में मौसम साफ हो गया । कप्तान ने जहाज़ चलाया और श्री मूलर निर्धारित समय पर क्यूबिक नगर पहुंच गया ।

प्रेमियो ! प्रार्थना में बड़ी शक्ति है । आप केवल निष्काम भावना से प्रार्थना करें तो आप के दुख दर्द दूर हो जायेंगे ।

९ सितम्बर पूज्य स्वामीजी ने जकारता में अंतिम प्रवचन करते हुए प्रेमियों से कहा कि सतुगुरु द्वारा दिये गये नाम का निरन्तर अभ्यास करें । आपस में प्रेम व सहयोग के साथ रहकर सिन्धी समाज का नाम ऊँचा करें । भारतीय संस्कृति व सिन्धी भाषा को नहीं भूलें । प्राचार्य वी. राम ने पूज्य स्वामीजी का आभार व्यक्ति किया । १० सितम्बर पूज्य स्वामीजी मंडली सहित सिंगापुर पधारे । विमान तल पर बहन इन्दिरा मंघाराम, राम छुगानी एवं अन्य प्रेमीयों ने उनका स्वागत

सत्कार किया। उन्होंने वहां बहन इन्दिरा मंघाराम द्वारा स्थापित प्रेम प्रकाश मंदिर और सिन्धु हाऊस में २४ सितम्बर तक अमृत वचनों की वर्खा की।

एक दिन वहां पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि संत बड़े परमार्थी और दयालु होते हैं। दूसरों को सुखी करने के लिए स्वयं दुख सहन करते हैं। संत कबीरदास भी कहते हैं-

साधु बड़े परमार्थी, घन ज्यों बरसे आय।
तपत बुझावन और की, अपनों पारस लाय॥

एक गर्भवती विधवा स्त्री संत माधवदासजी के पास ट्रंक गांव में आकर रोने लगी। संत ने उससे रोने का कारण पूछा। उसने उत्तर देते हुए कहा कि मैं गर्भवती विधवा स्त्री हूं। मैं गर्भपात कराना चाहती हूं। जिससे मेरी लाज बच जाय। संत माधवदासजी ने कहा "गर्भपात कराना महापाप है, यह काम कभी नहीं करना। तुम गर्भ की रक्षा करो। मैं तुम्हारी सहायता करूंगा। स्त्री ने कहा जिस पुरुष ने मेरे साथ यह काम किया है वह तो अब स्वीकार नहीं करेगा। तब मैं किस पुरुष का नाम लेकर गर्भ की रक्षा करूं। इसलिए ही मैं अत्यन्त दुखी व उदास हूँ। मैंने वास्तव में बहुत बड़ी भूल की है किन्तु अब मेरे लिए मृत्यु को वरण करने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं। संत माधवदासजी ने कहा "तुम घबराओ नहीं। तुम मेरा ही नाम लिख देना।" संत को उस स्त्री और गर्भस्थ बालक पर दया आ गई उन्होंने कहा यदि यह स्त्री आत्म हत्या करेगी तो स्वयं तो मर जायेगी साथ ही बालक भी मर जायेगा। संत माधवदासजी ने लोक लाज का कोई विचार न कर उपर्युक्त शब्द कहे। उस स्त्री एवं बालक की रक्षा के लिए स्वयं कष्ट झेलने को तैयार हुए। संत दयालु होते हैं। दूसरों को निर्दोष साबित करने के लिए स्वयं को दोषी बताते हैं। संत की आज्ञानुसार उस स्त्री ने बालक की रक्षा के लिए संत का नाम जोड़ा। बालक का जन्म होते ही, लोगों ने बिना विचार किये संत माधवदासजी का अपमान किया, उन्हें अपशब्द कहे, किन्तु संत शांत होकर सब कुछ सहन करता रहा। कुछ समय पश्चात् सत्य, सत्य हुआ जिन लोगों ने आवेश में संत को अपमानित किया था

उन्होंने क्षमा याचना की। प्रेमियो ! किसी भी संत या मनुष्य पर बिना विचार किए आरोप लगाना उचित नहीं।

संत की निंदा नानका बहुर बहुर अवतार।

संतों की या निर्दोषों की निन्दा करने से कई जन्मों में भटकना पड़ेगा। किस की सुनी हुई बात तो क्या आंखो देखी बात पर भी विश्वास नहीं करना चाहिए। बात को पूर्ण रूप से समझ लेने के पश्चात् ही अपने विचार व्यक्त करना चाहिये नहीं तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। प्रेमियो ! आप भी किसी न किसी का दुख दूर करने के प्रयास करते रहें। प्रभु आपकी रक्षा करेंगे।

सिंगापुर में एक दिन पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि प्रभु प्राप्ति के लिए मन निर्मल और कोमल होना चाहिए। पत्थर-दिल इन्सान परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकता। ऐसा मनुष्य दीन दुखियों की सेवा भी नहीं कर सकता। मन स्नेह व सहानभूति से सराबोर होना चाहिए। ऐसा मनुष्य ही मनुष्य कहलाने के योग्य हैं और उसकी ही संसार में प्रशंसा होती है। ऐसे मनुष्य की जिव्हा भी मीठी होती है। जिव्हा जन्म से मृत्यु तक साथ रहती है, क्योंकि वह कोमल होती है दांत बाद में आते हैं और अधिकतर मृत्यु के पूर्व ही टूट जाते हैं क्योंकि वे कठोर होते हैं, कठोर आदमी को कोई भी नहीं चाहता है। प्रेमियो ! आप भी जिव्हा की भांति कोमल होकर,जिव्हा से कड़वा नहीं, सदैव मीठा ही बोलें। दिल भी मीठा और जिव्हा भी मीठी होनी चाहिए तो फिर आप व्यवहार व परमार्थ के पथ पर प्रगति कर सकते हैं। संत किसी के सम्बन्धी नहीं। उन्होंने सांसारिक सम्बन्ध तोड़कर परमात्मा की राह ली है। उनका मन कितना न निर्मल व कोमल होता है। वे मक्खन से भी कोमल होत हैं। वे दूसरों के दुखों को देखकर द्रवित हो जाते हैं और उन्हें दूर करने का प्रयास करते हैं। संत कबीरदासजी कहते हैं-

कबीर सोई पीर है, जो जाने पर पीड़।
जो पर पीड़ न जानई, सो काफिर बेपीर ॥

प्रेमियो ! विदेश में रहकर भी आप भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं सिन्धी भाषा को नहीं भूलें। हिन्दू सनातन धर्म के सिद्धांतों पर चलकर,

प्रभू स्मरण व सेवा की ज्योति प्रज्वलित करें ।

२५ सितम्बर रात्रि १२ बजे पूज्य स्वामीजी विदेश यात्रा पूर्ण कर बम्बई लौट आये । स्वदेश पहुंचने पर प्रेमियों ने उनका स्वागत सत्कार किया । २६ सितम्बर प्रातः उन्होंने प्रेम प्रकाश मंडली माटूंगा, बम्बई में सत्संग प्रवचन किये। दोपहर १२ बजे वे सिन्धुनगर आश्रम में आये। सायं अलग अलग संस्थाओं द्वारा पूज्य स्वामीजी का अभिनन्दन किया गया । पूज्य स्वामीजी के जन्मदिन उत्सव के सुअवसर पर विद्यार्थियों की भक्ति संगीत प्रतियोगिता आयोजित की गई, स्वामीजी ने विद्याथियों को पुरुस्कार प्रदान किये । संत अनंतप्रकाश ने विदेश यात्रा का सम्पूर्ण विवरण सुनाया ।

पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि विदेश के प्रेमियों में पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज एवं पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज के प्रति अगाध, श्रद्दा व प्रेम था । प्रेमियों ने हमें बहुत सन्मान व स्नेह दिया । वहां प्रेमी अपने घरों में ही पूज्य सत्गुरु महाराज जी की ज्योति जगा रहे हैं । वे नियमित रूप से सत्संग कीर्तन करते हैं।

जनता जनार्दन परिषद् की ओर से पूज्य स्वामीजी का ७५ वां जन्मदिन २७ सितम्बर १९८१ रविवार के दिन आश्रम पर मनाया गया । प्रातः हवन यज्ञ के पश्चात् दीन दुखियों की सेवा की गई । सायं, प्रेमियों ने स्वामीजी के गुणों का वर्णन किया । श्री तीर्थ सभाणी ने कहा कि स्वामीजी भक्ति के साथ जन सेवा के महान कार्य कर रहे हैं । दयाल 'आशा' ने कहा कि ईश्वर की कृपा स्वामीजी की आशीर्वाद एवं प्रेरणा से जनता जनार्दन परिषद् दीन दुखियों की सेवा कर रहा है ।

पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि संसार में चार प्रकार के मनुष्य होते हैं । एक सुपारी समान, बाहर से चाहे भीतर से सख्त अर्थात् कठोर स्वभाव वाले । दूसरे प्रकार के मनुष्य बादाम समान बाहर से सख्त अर्थात् कठोर किन्तु अन्दर से शक्ति प्रदान करने वाले और मीठे होते हैं । तीसरे प्रकार के लोग छुहारे समान बाहर से भी सख़्त व शक्तिदायक और भीतर से उसकी गुठली जैसे सख्त होते हैं । चौथे प्रकार के लोग किशमिश जैसे अंदर व बाहर नर्म और मीठे होते हैं।

प्रेमियो ! आप भी किशमिश जैसे अंदर-बाहर मीठे एवं नर्म अर्थात् कोमल बनें। सभी प्राणियों के प्रति स्नेह, सद्भावना और दया का भाव रखें। सभी से मधुर बोलने का प्रयास करें। ठंडे घड़े को लोग छाया में रखते हैं। आपके विचार व्यवहार में मधुरता शीतलता होनी चाहिए तो फिर सब लोग आपको स्नेह व सन्मान देंगे। आप लोगों ने जो आज मेरी प्रशंसा की है, वह मेरी महिमा नहीं, भगवान व गुरु महाराज की महिमा है। उनकी अनुकम्पा एवं आप लोगों के सहयोग से ही सब सेवा के कार्य हो रहे हैं। आप भी सदैव नाम स्मरण करें और परोपकार के कार्य करते रहें।

३० सितम्बर पूज्य स्वामीजी अहमदाबाद अम्बावाड़ी पधारे। वहां स्वामी ऊधवदासजी की पुण्यतिथि उत्सव के अवसर पर उन्होंने तीन दिन सत्संग प्रवचन किया। ५ अक्टूबर वे हरिद्वार आये। हरिद्वार प्रेम प्रकाश आश्रम में सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का ८५ वां जन्म उत्सव ११ अक्टूबर से १३ अक्टूबर तक आयोजित किया गया। तीनों दिन पूज्य स्वामीजी, मण्डल के संत एवं अन्य महात्माओं ने सत्संग प्रवचन किया। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज एकांत प्रिय थे। उन्होंने बहुत समय ऋषिकेश, हरिद्वार में भगवत् भजन में सफल किया। वे मौन धारण करते थे। आप भी कुछ समय मौन धारण कर नाम स्मरण करें। संसार के काम काज पूरे हाने वाले नहीं, इसलिए अमूल्य श्वास व्यर्थ मत गंवाएं।

१३ अक्टूबर उत्सव का समापन करते हुए स्वामीजी ने कहा कि कई लोग छोटी मोटी प्रतिकूल बातों पर क्रोधित होकर मानसिक शक्ति गंवाते हैं। आप ऐसा न करे। जिसके मन में क्षमा है उसके मन में शांति है। प्रेमियो ! आप भी क्षमाशील मनें। सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज एवं सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज बड़े क्षमाशील थे। सत्गुरु महाराज अपनी वाणी में कहते हैं-

क्षमा जांके मन बसे, सो देवन के देव।
कह टेऊँ तिस पुरुष की, सब जन करते सेव॥

१८ अक्टूबर स्वामीजी दिल्ली आये। वहां प्रेम प्रकाश मन्दिर मलिकागंज

में उन्होंने तीन दिन सत्संग प्रवचन किया। २१ अक्टूबर स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम लौट आये। २३ अक्टूबर वे पूना गये। वहां स्वामी रामकृष्ण के मन्दिर में उन्होंने स्वामी ग्वालानंदजी महाराज की पुण्यतिथि उत्सव पर दो दिन अमृत वचनों की वर्खा करते हुए स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज के जीवन एवं काव्य पर प्रकाश डाला। २५ अक्टूबर वे सिन्धुनगर लौट आये। २९ अक्टूबर दिवाली के दिन स्वामीजी ने बम्बई कपड़ा मार्केट में कई प्रेमियों की दुकानों पर पधारकर उन्हें आशीर्वाद दिया। रात्रि को वे श्री प्रीतमदास देवनाणी के घर पर ठहरे। ३१ अक्टूबर को उन्होंने आश्रम में कार्तिक कथा प्रारम्भ की।

स्वामी त्रिवेणीपुरीजी ने घाटकोपर बम्बई में ५ नवम्बर से ७ नवम्बर तक वेदान्त ज्ञान यज्ञ का आयोजन किया। ६ नवम्बर सायं वहां स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि जीवात्मा, माया के प्रपंच के कारण अपने साक्षी रूप को भूल गया है। वह शरीर के सुख के लिए रात दिन भटक रहा है। भौतिक सुख सच्चा सुख नहीं। जब बाह्य सुख का त्याग करेंगे तभी आत्मिक आनन्द की उपलब्धि होगी। जीव राम भक्ति रूपी गंगा को छोड़कर ओस बिन्दुओं की आकांक्षा करता है। ओस बिन्दु तो सूर्योदय होते ही नष्ट हो जाते हैं। संसार के पदार्थ भी शबनम की भांति क्षणभंगुर हैं। नाम पदार्थ ही सच्चा पदार्थ है और सुखदाई है। भक्ति रूपी गंगा में डुबकी मारने से अद्वितीय एवं अमर आनन्द की उपलब्धि होगी।

प्रेमियो ! पता नहीं कितने जन्म विभिन्न योनियों में भटके हैं, यह जन्म व्यर्थ न गंवाये। सतगुरु महाराज कहते हैं-

सर्व तीर्थ सब देवमय, ज्ञान ध्यान गुण घेह।
पाकर ऐसा मनुष्य तन, हरि सुमरण कर लेह॥

७ नवम्बर गोपाष्टमी के दिन सायं श्री राधेश्याम गौशाला में पूज्य स्वामीजी ने गौ सेवा के सम्बन्ध में प्रवचन करते हुए कहा कि गौ सेवा से प्रभु भी प्रसन्न होते हैं और सासंरिक उन्नति भी होती है, शारीरिक व मानसिक दुख दूर होते हैं। १० नवम्बर कार्तिक एकादशी के पावन दिन प्रातः सत्संग के पश्चात् स्वामीजी हज़ारों प्रेमियों के साथ श्मशान

भूमि में आये । वहां उन्होंने उपदेश करते हुए कहा कि आज के दिन यहां आने का बड़ा महत्व है । आज सारा दिन व रात भगवान का स्मरण करें और यथाशक्ति दान करें । शाम को आश्रम में स्वामीजी ने दान के विषय में प्रवचन करते हुए कहा कि नाम स्मरण एवं दान करने से तुम्हारे रोग क्षय होंगे और तुम प्रभु के श्री चरणों के नज़दीक होते जाओगे ।

एक बार राजा रणजीतसिंह के पास एक फकीर आया और उसने राजा से विनती की कि उसे हीरे-जवाहरात दान दें । राजा ने उससे कहा कि तुम अपना मुंह तो दर्पण में देखो, हीरे जवाहरात लेने जैसी तुम्हारी सूरत है । तुम भिक्षुक होकर हीरे जवाहरात मांग रहे हो।

फकीर चतुर था । उसने कहा "महाराज ! मेरा तो मुंह हीरे जवाहरात लेने योग्य नहीं है, परन्तु आप अपना मुंह देखें । आप विचार करें कि आप का मुख गेहूं, चावल या एक दो पैसा देने योग्य है? आप कृपया अपने पद प्रतिष्ठा को देखकर मुझे दान दें । राजा रणजीत सिंह फकीर का उत्तर सुनकर प्रसन्न हुए और उसे हीरे जवाहरात दान रूप में भेंट किये । प्रेमियो ! आप भी यथा योग्य दान करें ।

११ नवम्बर स्वामीजी पूना गये । वहां स्वामी टेऊंराम, स्वामी चन्दनप्रकाश मंदिर में तीन दिन सत्संग प्रवचन किया । उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा-

मानुष तन हरि ने दिया, दीना धन सुत धाम ।
टेऊँ तांहि विसारके, होय न नमक हराम ।।

प्रेमियो ! परमात्मा ने तुम्हें अमूल्य मानुष तन दिया है, धन पदार्थ एवं संतान दी है । ऐसे प्रभु को तुम बिसार बैठे हो ! तुम कृतघ्न मत बनो । उस प्रभु के गुणगान करो, सदैव उसका स्मरण करो ।

एक बार सौराष्ट्र के एक गांव में एक धनवान, गरीबों को पैसे, वस्त्र एवं मिठाई बांट रहा था । लेने वालों की भीड़ लग गई । समीप ही एक गरीब लड़की यह दृश्य देख रही थी । कुछ समय के पश्चात् जब वह धनवान उस गरीब लड़की को पैसे वस्त्र व मिठाई देने लगा तो उसने वह वस्तुएं और पैसे लेने से इन्कार कर दिया । तब वह धनवान आश्चर्य में पड़कर विचार करने लगा कि इस गांव के अन्य

गरीब लोग हाथ पसारकर वस्तुएं मांग रहे हैं और यह लड़की लेने से इनकार क्यों कर रही है। उसने उस लड़की से उसका कारण पूछा। बालिका ने विनम्रता से उत्तर दिया कि मेरी मां कहती है कि प्रभु ने दो हाथ, दो पांव और एक पेट दिया है। पुरुषार्थ कर क्यों न पेट की पालना करें। वह धनवान बालिका का उत्तर सुनकर अत्यन्त प्रभावित व प्रसन्न हुआ। वह धनवान उस बालिका के माता के पास आया और उनके घर की स्थिति पूछी। माता ने कहा "मैं और मेरी बेटी जंगल में जाकर लकड़ियां इकट्ठी कर, उन्हें बेचकर पालन पोषण करती हैं। अपने पुरुषार्थ की कमाई से ही वे अपना घर चलाते हैं। विवाह के पांच वर्ष पश्चात् मेरे पतिदेव परलोक चल बसे। मैंने पति की स्मृति में गांव में कुआं खुदवाया और पशुपक्षियों के पानी पीने के लिये हौज़ बनवाकर पति द्वारा एकत्रित की गई सारी पूंजी इस कार्य में खर्च कर दी। तब से ही मैं अपने परिश्रम की कमाई से घर चला रही हूं।" प्रेमियो ! दान की वस्तुएं एवं धन बहुत भारी होती हैं। गरीबी में रहते हुए भी परिश्रम कर घर का पालन पोषण करना चाहिए। वह माता धनवान नहीं थी किन्तु फिर भी उसने अपने पति की पूरी पूंजी परोपकार के कार्यों में सफल कर स्वयं परिश्रम कर अपनी व बेटी की पालना की। आप भी परोपकार के कार्य करें।

१७ नवम्बर पूज्य स्वामीजी ग्वालियर पधारे। वहां प्रेम प्रकाश मंदिर में उन्होंने तीन दिन अमृत वचनों की वर्खा की। उन्होंने "प्रेम प्रकाश संदेश" के सम्पादक श्रीचन्द पंजवाणी एवं श्रीचन्द माधवाणी के विवाह के उपलक्ष्य में उन्हें आशीर्वाद दिया। पूज्य स्वामीजी ने स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति के सदस्यों को सम्बेधित करते हुए उन्हें जन कल्याण के कार्य करने की प्रेरणा दी। २० नवम्बर पूज्य स्वामीजी सिन्धुनगर लौट आये।

स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर सिन्धुनगर का ११ वां वार्षिक उत्सव २९ नवम्बर से ३ दिसम्बर तक आयोजित किया गया। २९ नवम्बर रविवार के दिन प्रातः पूज्य स्वामीजी ने मण्डल के संतों के साथ सनातन धर्म ध्वज फहराया। दोपहर ३ बजे पूज्य स्वामीजी के मार्ग- दर्शन में शोभा यात्रा निकाली गई जिसमें हजारों प्रेमी 'राम नाम' 'सत् नाम साक्षी' की धुनि लगाते चले। चारों दिन प्रातः व सायं

पूज्य स्वामीजी, मंडल के संतो एवं अन्य महात्माओं ने ज्ञान गंगा प्रवाहित की । २ दिसम्बर संत समागम हुआ । स्वामीजी ने संतों का स्वागत किया ।

३ दिसम्बर प्रातः स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि सांसारिक सम्बन्धियों को प्रसन्न करने के लिए मोहवश अनीति व पाप का व्यवसाय नहीं करें । सत्य की कमाई करें और उस में से कुछ धन पदार्थ परोपकार के कार्यों में सफल करें । जो कुछ सत्कर्म तुम्हें करना है उन सत्कर्मों को करने में विलंब नहीं करें ।

एक बार ऋषि नारद एवं अंगरा ऋषि भेस बदलकर संसार का भ्रमण करते हुए एक नगर में आ पहुंचे । वहां एक अनाज की दुकान पर चावल, गेहूं आदि की बोरियां खुली हुई रखी थी और दुकानदार आराम से गद्दी पर बैठा था । अचानक वहां एक बैल आया । उसने एक बोरी में मुंह डाला । जैसे ही दुकानदार की दृष्टि उस बैल पर पड़ी तो उसने लाठी उठाकर उस बैल को मारकर उस बोरी से दूर भगाया। यह दृश्य देखकर ऋषि नारद एवं श्री अंगरा ऋषि हंसने लगे । उस दुकानदार ने उनसे हंसने का कारण पूछा । तब ऋषि नारद ने कहा कि तुम्हारे पिताजी ने झूठ व पाप से धन पदार्थ इकट्ठा कर इस दुकान को अनाज से भरा । आज तुम्हारे पिताजी बैल के रूप में अपनी दुकान पर आकर अपना अन्न खाने आए और तुमने उन्हें लाठी मारकर अन्न खाने से वंचित कर दिया । हम इसी कारण हंस रहे हैं ।

प्रेमियो ! आप भी अपने जीवन काल में ही दान पुण्य करें, सत्कर्मों में धन, पदार्थ इत्यादि सफल करें । गुरु मंत्र का नियमित रूप से अभ्यास करें । मांस, शराब व अन्य व्यसनों का परित्याग कर जीवन सफल बनाएं।

९ दिसम्बर स्वामीजी अजमेर में पूज्य स्वामी बसंतरामजी महाराज की पुण्यतिथि उत्सव के उपलक्ष्य में पधारे । वहां उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामी बसंतरामजी महाराज के गुणों का वर्णन किया । १२ दिसम्बर प्रातः स्वामीजी प्राचार्य श्री झमटमल टिलवाणी के अनुरोध पर आदर्श हाई स्कूल में पधारे । प्राचार्य श्री टिलवाणी ने स्वामीजी का भव्य स्वागत किया । पूज्य स्वामीजी ने विद्यार्थियों को उपदेश

देते हुए कहा कि विद्या अध्ययन के साथ माता-पिता और दीन दुखियों की सेवा भी करें । माता, पिता एवं आचार्यों की आज्ञा का पालन करें तो उनका आशीर्वाद अवश्य मिलेगा ।

१४ दिसम्बर पूज्य स्वामीजी अहमदाबाद पधारे । वहां उन्होंने संत प्रभाराम सोसायटी के प्रांगण में संत प्रभाराम जी की पुण्यतिथि उत्सव के सम्बन्ध में तीन दिन सत्संग प्रवचन करते हुए संत प्रभारामजी के गुणों का उल्लेख किया । १७ दिसम्बर वे गोधरा पहुंचे । वहां अर्जनदास माखीजाणी, गोबिन्दराम रांवलाणी एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत सत्कार किया । पूज्य स्वामीजी ने वहां तीन दिन अमृत वर्खा करते हुए सिन्धी समुदाय से कहा कि आपस में एकता कर एक दूसरे की सहायता करें । अपना धंधा व्यवसाय करते हुए कुछ समय नाम स्मरण में सफल करें ।

अखिल सौराष्ट्र सिन्धी पंचायत का तीसरा वार्षिक सम्मेलन २६-२७ दिसम्बर जुनागढ़ में स्वामीजी की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। स्वामीजी ने अध्यक्षीय व्याख्यान करते हुए कहा कि सिन्धी समाज के नवनिर्माण के लिए पुरुषार्थ करें । पुरुषार्थ आपका, आशीर्वाद ईश्वर की, प्रयत्न आपका एवं कृपा करतार की । आज हमारे समाज में कई कुरीतियों ने जन्म ले लिया है । दहेज, तलाक आदि कुरीतियों ने कई परिवार बर्बाद किये हैं । वर को बेचना बन्द करें । दहेज के कारण कई बड़ी आयु की लड़कियां आंसू बहा रही हैं ! उन पर दया दृष्टि करें । तलाक देने में भी पुरुषों को लज्जा नहीं आती ! छोटी मोटी बात पर तलाक देना साधारण बात बन गई है । भगवान का किसी को डर नहीं, ये सामाजिक बुराईयां हमें अवनति के गड्ढे में डाल देंगी । सिंधी समाज में नई चेतना जगाने की आवश्यकता है।

२७ दिसम्बर रात्रि को स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आपस में मेल-जोल रखें । भ्रातृत्व की भावना से सब की उन्नति होगी । श्री भरत को, भगवान श्रीराम के लिए कितना स्नेह व सम्मान की भावना थी और श्रीराम के मन में भी श्री भरत के लिए कितना न स्नेह था । चित्रकूट पहुंचने के पूर्व वन में जाते समय भगवान श्रीराम को जब कांटे लगे तब उनकी आँखों में आंसू आ गये । अनुज श्री लक्ष्मण यह लीला देखकर आश्चर्य में पड़ गया । उसने प्रभु श्रीराम

से कहा कि आप महा-शूरवीर, सहनशील, सर्वशक्तिमान होते हुए भी काँटे लगने से रो रहे हैं ! तब भगवान श्रीराम ने कहा "प्रिय लक्ष्मण ! कांटो के लगने के कारण मैं नहीं रोता । हमें लौटाने के लिए जब प्रिय भाई भरत यहां से गुजरेंगे तो उसे भी यही कांटे चुभेंगे । इसलिए मेरी आंखों में आंसू आ रहे हैं ।"

तत्पश्चात् श्री लक्ष्मणजी आवेश में आकर बोले "प्रभु ! भरत के कारण ही तो हम वन में आये हैं और हम कष्ट झेल रहे हैं । फिर भी आप भरत को लगने वाले कांटो के दुःख में आंसू बहा रहे हैं !" तब भगवान श्रीराम ने कहा "लक्ष्मण ! तुम अब भी भरत के भ्रातृत्व प्रेम को नहीं जान पाए । मैं इसलिए आंसू नहीं बहा रहा कि जब भरत इस मार्ग से गुजरेगा और उसे कांटे लगने से दर्द होगा। परन्तु जब कांटे लगने के पश्चात् वह विचार करेगा कि मुझे (श्रीराम) इस मार्ग से गुज़रते समय कितने कांटे लगे होंगे व पीड़ा हुई होगी । मेरे कष्टों का अनुभव कर प्रिय भरत अपने प्राण न त्यागे, इसलिए मेरा मन भर आया है ।

प्रेमियो ! प्रभु को अपने भक्तों का, प्रेमियों का कितना ख्याल रहता है । जैसे मां अपने बच्चे की देखरेख करती है, स्नेह देती है, अपने सुख की परवाह न करते हुए बच्चे को सुखी करने में सुख अनुभव करती है । इसी प्रकार प्रभु भी मां से अधिक देखरेख करते हैं । केवल हम उनके होकर रहें । हम लोग धन पदार्थों के दास बनकर प्रभु को भुला बैठे हैं । प्रभु को मत भुलाओ । उसका ही चिन्तन करते रहें। सांसारिक चिन्ताओं का परित्याग करें ।

२९ दिसम्बर स्वामीजी राजकोट पधारे । वहां उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन किया । जवाहर लक्ष्मणदास माटा ने पूज्य स्वामीजी का अभार व्यक्त किया । वहां स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि प्रभु जात पात नहीं देखते हैं वे तो केवल प्रेम देखते हैं । भक्त मुनि वाहण का पहले नाम त्रोपन अलवार था । उसे लोग अछूत समझते थे क्योंकि बचपन से ही इसका लालन पालन एक अछूत संगीतकार ने किया था । इस बालक को एक खेत में सोया हुआ देखकर उसके मन में दया आ गई । तब वह उस बालक को अपने घर ले आया और उसका प्रेम से पालन पोषण किया । उसने उसे संगीत की भी शिक्षा

दी । जब वह बालक बड़ा हुआ, तब वीणा बजाकर भगवान के भजन गाया करता था । कुछ वर्षों के उपरांत वह निशलापुरी आया । वहां वह रंग मंदिर के बाहर मार्ग की सफाई करता था और प्रेम से प्रभु के भजन भी गाता था । एक बार मुनि वाहण को मंदिर के बाहर मार्ग की सफाई करते हुए देखकर एक ब्राह्मण ने क्रोधित होकर मारपीट की और कहा कि तुम अछूत हो, तुमने मंदिर को अपवित्र कर दिया है, साथ ही मार्ग को भी अपवित्र किया है । भविष्य में मन्दिर के मार्ग की सफाई कभी नहीं करना ।

मुनि वाहण शान्ति से उस ब्राह्मण के कठोर वचन और मारपीट सहन कर श्री प्रभु के गीत गाते लौटा परंतु उसकी आंखो में आंसू थे । भगवान अपने भक्तों का अपमान कभी भी सहन नहीं कर सकते। भगवान ने उस रात्रि सारंगा मुनि को स्वप्न में आज्ञा दी कि आज मेरे मंदिर में मेरे प्यारे भक्त त्रोपन अलवार को पाखंडी ब्राह्मण ने अपमानित किया है । इसलिए तुम कल मेरे भक्त को अपने कंधे पर बिठाकर समूचे नगर की परिक्रमा देकर उसे मेरे मन्दिर ले आओ । ताकि पाखण्डी ब्राह्मण एवं उसका तिरस्कार करने वाले लोग यह अनुभव कर सकें कि मेरे भक्त मुझे कितने प्रिय हैं ।

सारंगा मुनि स्वप्न में भगवान का दर्शन पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। प्रातः होते ही उन्होंने भगवान की आज्ञानुसार त्रोपन अलवार भक्त को अपने कंधे पर बिठाकर समूचे नगर की परिक्रमा की और उसे मंदिर ले आए । यह दृश्य देखकर पाखंडी ब्राह्मण और अन्य लोग आश्चर्य में पड़ गये । जिसको लोग अछूत समझकर तिरस्कृत करते थे । प्रभु ने उसकी सेवा एवं प्रेमा भक्ति के कारण उसे महान्न बना दिया । उस दिन से उसे मुनि वाहण के नाम से सम्बोधित किया । भगवान अपने भक्तों का दुःख सहन नहीं कर सकते । भगवान श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं कि भक्त मुझे अत्यन्त प्रिय हैं । प्रेमियो ! आप भी प्रभु प्रेम में मग्न होकर तल्लीनता से प्रभु की भक्ति करें, प्रभु का ही चिन्तन व स्मरण करते रहें तो किसी न किसी दिन आप प्रभु कृपा के पात्र बनेंगे।

प्रेम प्रकाश सत्संग मण्डली, गांधीनगर (कोल्हापुर) की ओर से स्वामीजी का ७५ वां जन्मदिन उत्सव १३ जनवरी से १५ जनवरी १९८२ तक मनाया गया । स्वामीजी १३ जनवरी प्रातः गांधीनकर पधारे । प्रातः

११ बजे स्वामी सर्वानन्द प्राथमिक विद्यालय में श्री रमेश तनवाणी ने स्वामीजी का स्वागत सत्कार किया। स्वामीजी ने विद्यार्थियों व अध्यापकों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि माता पिता, आचार्यों और बड़ों की आज्ञा का पालन व उनकी सेवा करनी चाहिए। उनका ऋण कभी भी हम चुका नहीं सकते। एक नौजवान अपनी माता के साथ एक नगर में रहता था। उसने अपनी माता की बहुत सेवा की। वह अपनी माता को चारों धामों की तीर्थ यात्रा करवाके आया। उसके मन में सूक्ष्म अहंकार उत्पन्न हुआ कि उसने मां की सेवा कर ऋण चुका दिया है। उसकी मां उसके मन की यह भावना समझ गयी, दो चार दिन के बाद जब वह युवक घर में आया तब उसकी मां ने कहा बेटा! मेरी पीठ में दर्द हो रहा है थोड़ा वस्त्र ऊंपर कर देखो कहीं किसी ने काटा तो नहीं है। बेटे ने जब मां की पीठ से वस्त्र ऊपर किया तो उसने देखकर मां से कहा यहां किसी ने काटा नहीं है, पीठ पर तो काला धब्बा है तदुपरान्त बेटे ने कहा ! मां तुम्हारी पीठ पर यह काला धब्बा कैसे और कब हुआ? मां ने कहा- बेटा हम बहुत गरीब थे, एक गांव में किराये के मकान में रहते थे। तुम जब मेरे गर्भ में थे तो तेरे पिताजी इस संसार से चल बसे। तुम्हारा जन्म हुआ तब तक मैं वहां ठहरी। ८-१० माह तक महान का किराया भी नहीं दे सकी। जब तू पांच छः महीने का था तब मकान मालिक ने हमें मकान से निकाल दिया। मैं तुम्हें साथ लेकर अपने मैके जा रही थी तो रास्ते में भारी वर्षा व ओला वृष्टि होने लगी। तब मैं तुम्हें अपनी गोद में लेकर एक पेड़ के नीचे गर्दन नीची कर बैठ गई ताकि पानी की बूंदे व ओले तुम्हारे ऊपर न गिरकर मेरी पीठ पर गिरें। तुम्हें ठण्ड से बचाने के लिए ही मैंने ऐसा किया। यह उस वर्षा के पानी व ओले गिरने का काला निशान है। बेटा ! जब तुम इस धब्बे को मिटा पाओगे तब तुम मेरा ऋण चुका सकोगे। बेटा, मां का संकेत समझ गया और उसके श्रीचरणों पर गिर पड़ा।

विद्यार्थियों, मां बाप और गुरु का ऋण कभी भी नहीं चुका सकते, उनकी जीवन भर सेवा करते रहें। प्रातःकाल उठकर और रात्रि को सोने से पूर्व प्रभु से प्रार्थना करें।

सायं ४ बजे कन्या विद्या मंदिर में स्वामीजी का स्वागत सत्कार

किया गया। स्वामीजी ने कहा कि विद्या अध्ययन के साथ साथ बालिकाओं को घर का काम काज भी करना चाहिए। प्रातः प्रार्थना के पश्चात् ही दिन का कार्य आरंभ करें। प्रतिदिन कोई न कोई सेवा का काम अवश्य करें। रात्रि को स्वामीजी ने प्रेम प्रकाशमंदिर में अमृत वचनों की वर्खा की। १४ जनवरी प्रातः स्वामीजी ने गरीब बहनों को अन्न, धन और वस्त्र वितरित किये। सायं ४ बजे स्वामीजी को रथ में बिठाकर शोभा यात्रा निकाली गई। चारों ओर राम नाम की गूंज थी। सायं ६ बजे प्रेम प्रकाश मंदिर में पूज्य स्वामीजी का ७५ वां जन्म दिवस मनाया गया। दयाल 'आशा', हरी-बली, कौड़ोमल सचदेव, रमेश तनवाणी, पहिलाजराम, राधाकृष्ण ने स्वामीजी के जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाये। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा, "प्रेमियो ! आप लोगों ने जो मेरी महिमा गाई वह महिमा मेरी नहीं, सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज व सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की महिमा है। मुझ में कार्य करने की कोई शक्ति नहीं, मैं तो प्रज्ञाचक्षु, दूसरों के सहारे चलता हूं। ईश्वर की अनुकम्पा एवं आप लोगों के सहयोग से जनता जनार्दन की सेवा हो रही है। आप भी नियमित रूप से नाम स्मरण करें और परोपकार के कार्य करते रहें।

१५ जनवरी स्वामीजी ने श्री गुरुनानकदेवजी के मन्दिर का भूमि पूजन करवाया। रात्रि को उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए प्रेम प्रकाश मण्डली के सेवकों को साधुवाद देते हुए कहा कि सांसारिक इच्छाएं कभी तृप्त नहीं होगी। चाहनाओं के चक्र में फंसकर प्रभु को न भूलें। संसार में रहकर प्रभु का स्मरण करते हुए सत्कर्म करें।

एक बार संत रजब के पास एक संत आया। उसने अपनी त्याग वृति का गर्व के साथ उल्लेख करते हुए कहा कि वह पैरों में जूता भी नहीं पहनता, पैसे भी नहीं लेता। इस कारण वह महान है। यह सुनकर संत रजब ने कहा-

पशु भी पैसा नहीं गहे, नहीं पहने पैजार।
जब ऐसे त्याग से, मिले न सृजनहार॥

पशु भी माया को स्पर्श नहीं करते, जूता भी नहीं पहनते। ऐसे त्याग से परमात्मा नहीं मिलता। प्रेमियों ! कामना रहित होकर भगवत् भजन करें।

१६ जनवरी प्रात पूज्य स्वामीजी इचलकरंजी पधारे। वहां गुरु मंदिर ों ब्रजलाल हीराणी एवं पहिलाजराम राधाकृष्ण ने उनका स्वागत किया। ूज्य स्वामीजी ने वहां उपदेश देते हुए कहा कि परमात्मा ने सभी ो कोई न कोई कला दी है। उसी कला द्वारा प्रभु को प्रसन्न करने ा प्रयास करें। कुछ लोग उस कला का दुरुपयोग करते हैं। लोक ल्याण और परमात्मा को प्रसन्न करने के लिए कलाओं का सदुपयोग रना चाहिए। भक्त हरिदास भगवान के सच्चे भक्त थे। वे भगवान ीकृष्ण के अनन्य उपासक थे साथ साथ महान संगीतज्ञय भी थे। वन में भगवत् प्रेम में तन्मय होकर भजन गाते थे। उनके गाने माधुर्य था, प्रेम था, श्रोतागण मंत्र मुग्ध हो जाते थे। तानसेन भी नका शिष्य था। तानसेन भक्त हरेदास से शास्त्रीय संगीत की शिक्षा हण करने के पश्चात् अकबर बादशाह के पास जाता था। उसके रबार का एक रत्न माना जाता था। एक बार अकबर बादशाह तानसेन साथ भक्त हरिदास का दर्शन करने गये। वह भक्त हरिदास का जन सुनकर बहुत ही प्रभावित हुआ। जब वह अपने दरबार में लौट ाया तब उसने तानसेन से कहा कि अब तुम वह भजन गाकर सुनाओ ो भक्त हरिदासजी ने गाया था। अकबर बादशाह की आज्ञानुसार ानसेन ने वही भजन गाया, किन्तु बादशाह को वह आनन्द व रस हीं आया जो भक्त हरिदासजी द्वारा गाये भजन में आया था।

अकबर बादशाह ने तानसेन से पूछा कि तुमने भी वही भजन गाया ो भक्त हरिदासजी ने गाया था किन्तु जो आनन्द भक्त हरिदासजी भजन श्रवण करने से मुझे आया, वह तुम्हारे द्वारा भजन गायन क्यों नहीं आया? तब तानसेन ने कहा "बादशाह! भक्त हरिदासजी गवान श्रीकृष्ण को प्रसन्न करने के लिए तन्मय होकर भजन गाते हैं ौर मैं आपको प्रसन्न करने के लिए गाता हूं। इसलिए भक्त हरिदासजी गायन में माधुर्य है, रस है। प्रेमियो! आप भी प्रभु को प्रसन्न रने के लिए अपनी कला एवं धन का सदुपयोग करें और समर्पण ाव से भगवद् भक्ति करें।

१७ जनवरी सायं पूज्य स्वामीजी ने मिरज में सतसंग प्रवचन किया।

रात्रि को वे बेलगांव गये । वहां उन्होंने दो दिन अमृत वचनों की वर्खा की । पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

कह टेऊँ नित कीजिए, राम नाम से प्रेम ।
राम नाम के सम नहीं, जप तप संयम नेम ।।

प्रेमियो ! सांसारिक सम्बन्धियों में आसक्ति न रखकर प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ें । राम-नाम के स्मरण समान और कोई जप तप नहीं है । मीरा दिन-रात श्रीकृष्ण के प्रेम में मग्न रहती थी । उसका जीवन ही कृष्णमय था । भगवान अपने भक्तों को स्वयं में समा लेते हैं या उसे अपने लोक में भेज देते हैं । मीरा की रग रग श्रीकृष्ण को पुकारती थी । वह सांसारिक सुखों व वैभव का त्याग कर राजमहल छोड़ श्री द्वारकाधाम में आकर भगवान श्रीकृष्ण की प्रेमा भक्ति के गीत गाती है। उसे उदयपुर लौटाने के लिए राजकीय लोग आते हैं किन्तु वहां जाने से लिए इन्कार करती है । फिर भी उसे लौटने के लिए आग्रह किया जाता है तब वह कहती है कि मैं द्वारकाधीश से पूछूँ कि मैं यहां ठहरूँ या आप के साथ चलूं ! तब मीरा भगवान द्वाराकाधीश से पूछती है । प्रभु ! तुम बिन मैं कहां जाऊँ ? उसी समय प्रभु श्रीकृष्ण उसे अपने स्वरूप में मिला देते हैं । यह दृश्य देखकर पुजारी व अन्य लोग आश्चर्य में पड़ जाते हैं। प्रेमियो ! ऐसी तन्मयता के साथ भगवद्स्मरण करें तो प्रभु आपको अपनी शरण में ले लेंगे ।

२५ जनवरी स्वामीजी गोन्दिया पधारे । वहां रात्रि को उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि परमात्मा अपने भक्तों की रक्षा करते हैं । प्रभु ने भक्त प्रहलाद को आग से बचाया, पहाड़ी से गिराये जाने पर भी उसकी रक्षा की ।

जाको राखे सांइया, मार सके न कोय ।

जिस पर प्रभु की कृपा है उसे कोई भी हानि पहुंचा नहीं सकता। राजस्थान में एक कर्मठी नामक विधवा ती। वह ब्रज गई और वहां वह श्री हरिहरवंश से गुरु मंत्र लेकर भगवान श्यामसुन्दर की भक्ति करने लगी । वह दिन रात ''जय श्रीकृष्ण'' का जाप करती रहती । मथुरा

का शासक उसकी सुन्दरता देखकर उस पर मोहित हो गया। उसने कर्मठी को अपनी पत्नी बनाने के लिए दो स्त्रियों को महिला संत के भेष में कर्मठी के पास भेजा। दोनों स्त्रियों ने कर्मठी से कहा कि एक बड़ा संत बाहर से आया है वह आपसे बातचीत करना चाहता है। उन्होंने कर्मठी को बाहर ले जा कर एक एकांत स्थल पर बिठाकर कहा कि अब महात्माजी यहां आयेंगे। कर्मठी वहां भी भगवान श्रीकृष्ण का ध्यान करने लगी। अचानक वहां शासक हुसैन बेग आया। उसने अपनी काम तृष्णा को तृप्त करने के लिए कर्मठी की बाँह को पकड़ा। कर्मठी ने आर्त स्वर में करुणामय पुकार करते श्री श्यामसुन्दर को पुकारा, तो अचानक वहां एक शेर प्रकट हुआ। उस शेर ने हुसैन बेग को पंजा मारकर गिरा दिया और अन्तर्ध्यान हो गया। कर्मठी यह दृश्य देखकर विस्मय में पड़ गई। भगवान अपने भक्तों की किसी न किसी प्रकार आकर रक्षा करते हैं। प्रेमियो ! आप भी प्रभु को सदैव याद करें तो वह आपकी अवश्य रक्षा करेगा।

सिन्धी पंचायत की ओर से २७ जनवरी आदर्श विद्या मंदिर गोन्दिया में सामूहिक विवाहों का आयोजन किया गया। स्वामीजी ने आयोजकों को साधुवाद देते हुए कहा कि सामूहिक विवाहों के आयोजन से धनवान एवं गरीब एक ही मण्डप में बिना किसी आडम्बर के विवाह कर सकते हैं। यह एक क्रांतिकारी कदम है। यह सामाजिक जागृती का द्योतक है। देश के अन्य नगरों में भी ऐसे ही आयोजन होने चाहिए। स्वामीजी ने वर-वधुओं को आशीर्वाद स्वरूप शाल दिये।

२६ जनवरी पूज्य स्वामीजी कामटी पधारे। वहां उन्होंने दो दिन अमृत वर्षा की।

वेदों के प्रकाण्ड पण्डित संस्कृत के महान विद्वान एवं हिन्दू सनातन धर्म की ध्वजा फहराने वाले धर्म सम्राट पूज्य स्वामी श्री करपात्रीजी महाराज का ७ फरवरी ८२ प्रातः सवा नौ बजे उनके केदार घाट आश्रम वाराणसी स्थित निवास पर ७६ वर्ष की अवस्था में दुःखद निधन हो गया।

पूज्य स्वामीजी धर्म सम्राट अनन्त श्री विभूषित पूज्यपाद स्वामी श्री

करपात्रीजी महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके निधन को एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना बताते हुए कहा कि पूज्य स्वामी श्री करपात्रीजी का निधन वास्तव में सनातन धर्म के लिए, एक अपूरणीय क्षति है। इस समय जबकि हिन्दू धर्म के विरुद्ध अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष चल रहा है। ऐसे समय में वेदों के प्रकाण्ड पण्डित महान विद्वान श्री स्वामीजी का ब्रह्मलीन होना सनातन धर्म के लिए निश्चित ही भारी आघात है । स्वामीजी ने अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए, प्रभु परमात्मा से प्रार्थना की कि सनातन हिन्दू धर्म के मतावलम्बियों को इतनी शक्ति प्रदान करें कि वे उस आघात को सहन कर हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये अपने प्रयत्न जारी रख सकें और इसमें किसी प्रकार की शिथिलता न आने पाये ।

९ फरवरी पूज्य स्वामीजी पिम्परी कालोनी (पूना) प्रेम प्रकाश मन्दिर पधारे । वहां उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन करते हुए कहा-

प्रेम भाव से होत वश, भक्त वत्सल भगवान ।
कह टेऊँ तांते करो, हरि से प्रेम प्रधान ।।

प्रेमियो ! परमात्मा को प्रेम द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है । इसलिए प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ें । आप उसे याद करेंगे तो वह आप पर दया दृष्टि करेगा । आपकी रक्षा करेगा । भौतिक पदार्थों के पीछे मत भागें, प्रभू के पथ पर चलने का प्रयास करें ।

राजा माधवसिंह की पत्नी रत्नावती ईश्वर उपासिका थीं । वह प्रतिदिन भगवद् भजन करती थी इसलिए उसका पति अप्रसन्न रहता था उसने बार बार पत्नि से कहा कि भगवत् स्मरण नहीं करे किन्तु रानी रत्नावती प्रभु प्रेम के पथ पर बढ़ती रही । राजा माधवसिंह ने पत्नि को मारने के लिए एक शेर भेजा । शेर को आते देखकर रानी की दासी, जो स्वयं भी ईश्वर परायणा थी, उसने रानी से कहा कि नरसिंह भगवान आ रहे हैं । उठो उनकी पूजा अर्चना करें । वह शेर जैसे ही रानी के समीप आया तो रानी भयभीत नहीं हुई, बल्कि उसने शेर को भगवान नरसिंह का अवतार मानकर उसे दण्डवत् किया और उसकी आरती

उतारी। शेर पत्थर की भांति स्थिर रहा। रानी ने जैसे ही आरती पूरी की तो वह शेर शान्ति से लौट गया । जो व्यक्ति उस शेर को वहां लाया था उसे पंजा मारकर चला गया । रानी एवं उसकी दासी यह देखकर आश्चर्य में पड़ गईं कि प्रभु ने किस प्रकार उन दोनों की रक्षा की । राजा माधवसिंह को जब इस घटना का पता चला तो उसके मन में भी परिवर्तन आ गया । अत: वह प्रायश्चित करते हुए स्वयं भी पत्नि के साथ प्रभू के प्रेम पथ पर चलने लगा । प्रेमियो ! आप भी प्रभू में पूर्ण विश्वास रखें तो वह आपकी रक्षा करेगा ।

११ फरवरी पूज्य स्वामीजी पूना पधारे । वहां उन्होंने स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर में स्वामी चन्दनप्रकाश महाराजजी की पुण्यतिथि के अवसर पर तीन दिन अमृत वचनों की वर्खा की । पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि कई परिवारों में अशान्ति का वातावरण है । प्रार्थना द्वारा शान्तिमय वातावरण हो सकता है । सत्गुरु महाराजजी भी कहते हैं-

प्रार्थना कर प्रेम से, पुन पुरुषार्थ तात ।
कह टेऊँ इनके किये, होवे तब कुशलात ।।

प्रेमियो ! आत्मिक उन्नति के लिए एवं व्यवहार में प्रगति के लिए नियमित रूप से प्रार्थना करें । स्वामी चंदनप्रकाशजी ने अपना समूचा जीवन नाम स्मरण एवं परोपकार के कार्यों में सफल किया । आप भी उसी राह पर चलने का प्रयास करें ।

१७ फरवरी पूज्य स्वामीजी अमरापुर स्थान जयपुर पधारे । वहां वे प्रतिदिन प्रात: एवं सायं सत्संग प्रवचन करते थे । २२ फरवरी शिवरात्रि के पावन दिन स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज सारी रात्रि जागरण कर ''ॐ नम: शिवाय'' का जाप करें । आशुतोष भगवान शंकर भोलेनाथ शीघ्र ही प्रसन्न होते हैं । केवल श्रद्दा व विश्वास के साथ उनका स्मरण करें । मन में दया की ज्योति जगाएं । आप दूसरों पर दया करेंगे तो प्रभु आप पर दया दृष्टि करेंगे । दया ही धर्म का मूल है । पाप दुखों की जड़ है, जहां क्षमा है वहां धर्म है, जहां

दया है वहां प्रभू स्वयं है।

दया धर्म का मूल है, पाप मूल संताप।
जहां क्षमा तहां धर्म है, जहां दया तहां आप ।।

एक बार माता पार्वतीजी शिला पर बैठकर तपस्या कर रही थीं तब अचानक उन्होंने एक बालक की करुण पुकार सुनी "मुझे बचाओ मगर से बचाओ।" करुणा पुकार सुनकर माता पार्वती तपस्या छोड़ उस ओर दौड़ी। उन्होंने देखा कि एक मगर, सुन्दर बालक को पकड़ कर सरोवर के बीच में ले जा रहा है। माता पर्वतीजी ने जोर से कहा "ग्राहराज (मगर) ! बालक को छोड़ दो, उसे मत खाओ।" ग्राह बोला "मैं भूखा हूं इसलिए उसे नहीं छोड़ सकता। माता पार्वती का मन बहुत ही द्रवित हो गया। उन्होंने पुनः ग्राह से कहा "मेरी की हुई तपस्या के फल के बदले इसे छोड़ दो।" ग्राह बोला "आप अपनी जीवन भर की हुई तपस्या का फल मुझे अर्पण करें तो मैं इस बालक को छोड़ दूं। मां पार्वती बोली "ग्राह ! मैंने जीवन भर जो तपस्या की है और जो पुण्य कर्म किये हैं, वह सब तुम्हें अर्पण करती हूं। तुम इस बालक को छोड़ दो।" ग्राह बोला "मैं आपकी इस दया भावना से अत्यंत प्रसन्न हूं। आपने एक बालक की रक्षा करने के लिये अपनी समस्त तपस्या का फल मुझे अर्पण किया है, अब मैं आपकी तपस्या का फल आपको लौटा देता हूं।" ऐसा कहकर ग्राह ने बालक को छोड़ दिया और स्वयं अंतर्ध्यान हो गया। माता पार्वतीजी पुनः तपस्या करने लगी, तब भगवान शंकर प्रकट होकर बोले "हे ! पार्वती ! तुम्हें अब कठिन तपस्या करने की आवश्यकता नहीं है। मैं तुम्हारी दया भावना पर अत्यन्त प्रसन्न हूं, तुमने बड़ा उत्तम कार्य किया है। मैं ही बालक और ग्राह भी मैं था। मैंने तुम्हारी परीक्षा ली, तुम परीक्षा में सफल हो गई हो। तुम्हारे तपस्या दान से तुम्हारी तपस्या हज़ार गुना होकर अमर हो गई। तुम धन्य-धन्य हो।

प्रेमियो ! आप भी दया भावना धारण करें। दया से बढ़कर और

कोई तपस्या या पुण्य कर्म नहीं है।

२८ फरवरी पूज्य स्वामीजी ने बम्बई देवनार स्थित वधशाला में गौरक्षा आंदोलन हेतु सत्याग्राह में भाग लिया। स्वामीजी ने इस अवसर पर आह्वान करते हुए कहा कि हमें शर्म आनी चाहिए, कि भगवान श्रीकृष्ण की भव्य भारत भूमि में प्रतिदिन हजारों गौ माताओं को मौत के घाट उतारा जाता है। ऋषियों की पावन भूमि पर इतना अत्याचार यह महा पाप है। सारे देश में गौवध बंद होना चाहिए। गौ माता की रक्षा, राष्ट्र की रक्षा है।

गंगा, गीता, गायत्री ज्ञानी गुर गोबिन्द।
टेऊँ सप्तम् गाय को, सेवे पा आनन्द॥

रोहड़ा ब्रादर मंडल का वार्षिक उत्सव ७ मार्च रविवार प्रातः १० बजे मुरली मनोहर सोसायटी कुर्ला बम्बई में पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पूज्य स्वामीजी ने प्रवीण विद्यार्थियों को पुरुस्कार प्रदान कर कार्यकर्तोओं को साधुवाद देते हुए कहा कि जहां एकता है, वहां शक्ति व शान्ति है। आप एकता के सूत्र में बंध जाएं। संतो की वाणी एवं सत्-शास्त्रों का अभ्यास करें। अपनी संतान में शुभ संस्कारों के बीज बोएं जिससे वे भविष्य में आपका और जाति का नाम ऊँचा करें।

वडाला ब्रादर मंडल की ओर से वडाला, बम्बई में ९ मार्च से २० मार्च तक पूज्य स्वामीजी के सत्संग प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। स्वामीजी ने अलग अलग दिनों पर भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, उपकार एवं सामाजिक विषयों पर प्रवचन किये। एक दिन उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा-

राम भरोसा राख तुम, और भरोसा त्याग।
कह टेऊँ हरि शरण ले, खोलो अपना भाग॥

ज्योति पंत, भगवान श्री गणेश का अनन्य उपसाक्र था। उसका मामा पूना में पेशवा का मुख्य कार्यकर्ता था। ज्योति पंत को उसकी

मां ने राजकीय काम काज सीखने के लिए अपने भाई के पास भेज दिया । एक बार राजकीय कार्य बहुत बढ़ जाने के कारण पेशवा ने कर्मचारियों से कहा कि तीन दिनमें यह सब काम कैसे भी पूरा हो जाना चाहिए । सारे काम का उत्तरदायित्व ज्योति पंत के मामा पर था । मामा इतना काम देखकर चिंतित हो गया । मामा को उदास देखकर ज्योति पंत ने उससे कहा कि राजकीय कार्य के सभी कागज़ात, स्याही, तीन दिन का फलाहार आदि किसी एक कमरे में रख दें । मैं भी तीन दिन उस कमरे में रहूंगा । सब कुछ ठीक हो जायेगा, आप कोई चिन्ता न करें। जब मैं संकेत करूं तब कमरे का दरवाजा खोलना। ज्योति पंत के कथनानुसार सब वस्तुएं कमरे में रखी गईं। ज्योति पंत स्वयं भी उस कमरे में विघ्ननाशक भगवान श्री गणेश का ध्यान, पूजा व अंचना करने लगा । ज्योति पंत का भगवान श्री गणेश में पूर्ण विश्वास व श्रद्धा थी । रात्रि में जब वह विश्राम करता था तब विघ्न विनाशक श्री गणेश राजकीय कार्य पूर्ण कर अंतर्ध्यान हो जाते थे । बराबर तीन दिन में श्री गणेश भगवान जी ने सब हिसाब किताब लिख दिया । तब ज्योति पंत ने दरवाजा खोलने का संकेत दिया । भगवान अपने भक्तों के कठिन से कठिन कार्य भी सरल कर सेते हैं। ज्योति पंत का मामा एवं पेशवा के अन्य कर्मचारी यह चमत्कार देखकर आश्चर्य में पड़ गये । जब पेशवा को इस बात का पता चला तो वह भी आश्चर्य में पड़ गया । पेशवा और मामा ने ज्योति पंत को गले लगाया । ईश्वर में श्रद्धा व विश्वास उम्र से तथा पद से नहीं आता। जो निष्कपट भावना से प्रभु में विश्वास करते हैं उन्हें ही सफलता मिलती है। प्रेमियो ! आप भी प्रभु में पूर्ण विश्वास रखें।

होली के पावन दिन पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते समय श्रोताओ को बहुत हंसाया और कहा कि मांस, शराब का परित्याग करें । भक्त प्रहलाद की भांति भगवद स्मरण करें ।

२२ मार्च सायं आश्रम में जनता जनार्दन परिषद् की ओर से आचार्य श्री जे. बी. कृपलाणी के स्वर्गवास होने के कारण स्वामीजी की अध्यक्षता में शोक सभा का आयोजन किया गया । उन्होंने श्रद्धांजलि अर्पित

करते हुए कहा कि आचार्य कृपलाणी एक निडर, निर्भीक, निष्काम नेता एवं सच्चे राष्ट्र भक्त थे साथ ही आदर्श आचार्य भी थे।

श्री विक्योमल श्राफ ने अपने पूज्य पिता श्री श्यामदास श्राफ एवं माता गोमीबाई की पावन स्मृति में देवलाली में अस्पताल का निर्माण करवाया साथ ही वह अस्पताल सरकार को समर्पित किया। इस उत्सव पर पूज्य स्वामीजी २५ मार्च देवलाली पधारे। उन्होंने श्री विक्योमल श्राफ एवं उनके भ्राता श्री गोपालदास श्राफ, श्री वाशूलाल श्राफ को साधुवाद देते हुए, कहा कि आप लोगों ने अपने पिता एवं माता की स्मृति में अस्पताल की नई इमारत बनवाकर उत्तम कार्य किया है। असहाय रोगियों की सेवा करना हमारा परम कर्त्तव्य है। यह सेवा भी ईश्वर भक्ति है। आशा है कि भविष्य में भी आप ऐसे उपकार के कार्य करते रहेंगे।

जनता जनार्दन परिषद् की ओर से पूज्य स्वामीजी की प्रेरणा से स्वामी टेऊँराम आश्रम सिन्धुनगर-५ में २६ मार्च चेटीचांद के दिन सामूहिक यज्ञोपवीत का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ५०० बालकों को जनेऊ पहनाए गये। पूज्य स्वामीजी ने सभी बालकों को आशीर्वाद देते हुए, कहा कि इस जनेऊ की रक्षा करना तुम्हारा कर्त्तव्य है। यह हिन्दू धर्म की निशानी है। मां-बाप व अध्यापकों की आज्ञा का पालन करते हुए उनकी समर्पित भाव से सेवा करें। इसी अवसर पर परिषद् की ओर से भोजन की व्यवस्था की गई। दयाल 'आशा' ने आभार प्रदर्शन किया।

प्रेम प्रकाश मंडल का ६१ वां. वार्षिक उत्सव ७ अप्रैल से ११ अप्रैल अमरापुर स्थान जयपुर में आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बंध में पूज्य स्वामीजी ३० मार्च जयपुर पधारे। ६ अप्रैल स्वामी गुरुमुखदास जी महाराज की पुण्य तिथि मनाई गई। पूज्य स्वामीजी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए स्वामी गुरुमुखदासजी के गुणों का वर्णन किया।

७ अप्रैल पूज्य स्वामीजी ने सभी संतो के साथ मिलकर हिन्दु सनातन धर्म का ध्वज फहराकर उत्सव आरंभ किया। मध्यान्ह ३ बजे अमरापुर

स्थान से भव्य शोभा यात्रा राम नाम की धुनि लगाते निकली। चारों दिन मंडल के संतों, अन्य महात्माओं एवं पूज्य स्वामी जी ने अमृत वचनों की वर्खा की। ११ अप्रैल प्रातः पूज्य स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा-

सत्गुर तीर्थ रूप है, वचन सुनिर्मल नीर।
टेऊँ तामें नाहके, पावन करो शरीर॥

गुरुदेव महान तीर्थ के समान हैं, उनकी वाणी गंगा जल के समान निर्मल व पावन है। उनकी वाणी रूपी गंगा में नहाकर तन मन शीतल करें। गुरु भक्ति, शिष्य को भवसागर से पार लगाती है। समर्पित भाव से सत्गुरु की सेवा करें। संत मोहनदास के मन में अपने सत्गुरु श्री दादू महाराजजी के प्रति अगाध स्नेह था। एक बार किसी गांव में संत मोहनदास का भव्य स्वागत किया गया। उसके सामने विभिन्न प्रकार के पकवान खाने पीने के लिए रखे गये। उसने मन में विचार किया कि यह पकवान तो सत्गुरु दादूमहाराजजी ग्रहण करें। ऐसा मन में संकल्प कर उसने आंखे मूंद ली। दोपहर का समय था संत दादूजी भी अपने स्थान पर भोजन खाने के लिए बैठे थे तो वह मोहनदास के पकवानों वाली थाली उनके सामने आ गई। संत दादू इस रहस्य को समझ गये। वहां बैठे प्रेमी यह दृश्य देखकर विस्मय में पड़ गये। संत दादू ने उस भोजन में से कुछ भोजन प्रसाद के रूप में प्रेमियों में बांटा और स्वयं भी भोजन खाकर शिष्य की इच्छा पूर्ण की। थोड़े समय पश्चात् वह खाली थाली संत मोहनदास के समाने आ गई गांव के प्रेमी यह चमत्कार देखकर विस्मय में पड़ गये। उन्होंने भोजन की थाली संत मोहनदास के समक्ष खाने के लिए रखी और वही थाली थोड़े समय के लिए अदृश्य हो गई और वही थाली, खाली होकर कैसे आ गई। संत मोहनदास अति प्रसन्न हुए। उनका संकल्प पूर्ण हुआ। गुरुदेव ने भोजन ग्रहण किया किन्तु गांव वाले प्रेमी चकित रह गये। सच्चे शिष्य एवं सच्चे गुरु का मन मिला रहता है, हृदय की तार एक दूसरे से जुड़ी रहती है। सच्चा शिष्य गुरु की प्रसन्नता में ही अपना आनन्द अनुभव करता है।

स्वामी मुरलीधरजी का पुण्यतिथि उत्सव १८ अप्रैल से उनके आश्रम इन्दौर में आयोजित किया गया। पूज्य स्वामीजी १८ अप्रैल इन्दौर पहुंचे। उन्होंने वहाँ सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामी मुरलीधरजी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा-

तरवर सरवर संतजन चौथा बरसे मेह।
परमार्थ के कारणे, चारों धारे देह॥

संत सदैव सबका भला करना चाहते हैं। उन्हें अपने सुख की चिन्ता नहीं रहती। परोपकारी मनुष्य भी दूसरों को सुखी करने का प्रयास करते हैं। दो वर्ष वर्षा न होने से राजा भीमदेव के राज्य में अकाल पड़ा। किसान एवं गरीब गांव वाले लगान नहीं दे सके। राजा ने सिपाहियों को आदेश दिया कि गांव वालों के घर में जो कुछ वस्तुएं हों वे ज़ब्त उन्हें मेरे पास ले आओ। सिपाहियों ने आदेशानुसार किसानों के घर का माल ज़ब्त कर उन्हें राज दरबार में लाया। राजकुमार मूलराज ने इन किसानों को उदास देखकर कारण पूछा। सिपाहियों ने उत्तर दिया कि राजा की आज्ञानुसार हम इनका माल ज़ब्त कर इन्हें ले आये हैं। क्योंकि इन्होंने लगान नहीं भरा। किसानों ने अपनी दयनीय दशा का उल्लेख किया। राजकुमार मूलराज ने उन्हें सान्तवना देते हुए कहा कि आप घबराओ नहीं, पहले भोजन खाओ। राजकुमार ने आज्ञा की कि इनको भोजन खिलाया जाय। राजकुमार मूलराज ने इन गरीब किसानों को मुक्त करने के लिए मन में उपाय सोचा। जब राजकुमार मूलराज घुड़सवारी सीख रहा था तब उसके पिताजी ने उसे उत्साहित करते हुए कहा था कि जब तुम घुड़सवारी की कला अच्छी तरह सीख लोगे तब तुम्हें मैं पुरस्कार दूंगा। राजकुमार मूलराज कुछ माह पश्चात् घुड़सवारी की कला में पारंगत हो गया। राजा ने उससे कहा "मुंह मांगा पुरुस्कार मांगो" राजकुमार ने कहा "पिताजी! समय आने पर पुरुस्कार मांगूगा।" अब अवसर देख मूलराज ने पिताजी से कहा "पूज्य पिताजी ! दो वर्ष वर्षा नहीं हुई है खेती सूखी हुई है। किसानों को खाने के लिए अन्न नहीं, वे लगान कहां से देगें ! आप ने मुझे पुरुस्कार देने के लिए कहा था। आज मुझे आप यह पुरुस्कार दें कि इन सभी किसानों को लगान से मुक्त किया जाय और

इन्हें राज्य निधि से खाने पीने के लिए अनाज एवं अन्य वस्तुएं दी जायें ।'' राजा, पुत्र के हृदय में प्रजा के प्रति इतनी दया भावना देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ । राजा ने उसी समय किसानों को करमुक्त करके धन धान्य से सम्पन्न कर दिया। गरीब किसान भी फूले नहीं समाये। वे राजकुमार मूलराज एवं राजा भीमदेव की भूरि भूरि प्रशंसा करते अपने गांव चले गये ।

प्रेमियो ! संसार में लाखों लोग दुखी हैं । आप भी यथा-शक्ति दुखी लोगों को सुखी करने का यत्न करें । उनकी सेवा करें । आप दूसरों का भला करेंगे तो प्रभु आप का भला करेगा ।

संत ऊधवदासजी ब्रह्मचारी ने सिन्धु गीता ज्ञान ट्रस्ट की ओर से बड़ौदा में गीता ज्ञान यज्ञ का आयोजन किया । उसी उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी २६ अप्रैल बड़ौदा पधारे । संत ऊधवदास्जी एवं प्रताप रामचन्दाणी ने उनका हार्दिक सम्मान किया । स्वामीजी ने पांच दिन वहां अमृत वचनों की वर्खा करते हुए कहा कि श्रीमद्‌भगवद् गीता एक अमूल्य ग्रन्थ है और भगवान श्रीकृष्ण के मुख से प्रवाहित अमृत वाणी है। वह हमारे व्यवहारिक एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए मार्गदर्शक है । प्रति दिन इसका पाठ करते हुए उसके सिद्धांतों पर चलें ।

धुलिया, कुमार नगर में स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर के उत्सव के सम्बंध में स्वामीजी १२ मई प्रातः वहां पधारे । संत पहिलाजप्रकाश एवं अन्य प्रेमियों ने उनका सत्कार किया । स्वामीजी ने चार दिन वहां अमृत वचनों की वर्खा की । स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

राम नाम के प्रेम की, पाती पढ़ो हमेश ।
कह टेऊं मन शान्त हो, छूटे पाप कलेश ।।

प्रेमियो ! सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज अपनी वाणी में कहते है कि सदैव प्रभु प्रेम की पाती पढ़ते रहें अर्थात् परमात्मा से प्रेम का नाता जोड़ें, उसका स्मरण करें तो आपके सभी दुख दर्द दूर हो जायेंगे। सत्संग, सत्शास्त्रों का अभ्यास, चिन्तन, नाम स्मरण, दान पुण्य सदैव करते रहना चाहिए । कब उसका फल मिलेगा उसकी चिन्ता न करें। सत्कर्म निष्काम करना चाहिए, कभी न कभी प्रभु की अनुकम्पा होगी।

संतों एवं सत्गुरु की सेवा करनी चाहिए जब वे प्रसन्न होंगे तो मालामाल कर देंगे । रोहल फकीर ने अपने मुर्शिद शाह इनायत के यहां बीस वर्ष सेवा की, तब मुर्शिद ने उस पर दया दृष्टि की । आप भी संतो, महात्माओं गरीबों एवं पशुओं की सेवा करते रहें ।

प्रेमियो ! प्रभु से भी प्रार्थना करते रहें तो कभी न कभी प्रभु आपकी प्रार्थना अवश्य सुनेगा। एक बालक ने पिताजी से एक रुपया मांगा। पिता ने सभी बेटों को चवन्नी चवन्नी देकर प्रसन्न किया किन्तु छोटा बेटा एक रुपये की मांग करते हुए रोने लगा । वह बहुत समय तक रोता रहा । रो रो कर जब उसका गला रुन्ध गया तो वह रोना बन्द कर पानी पीने लगा । तब पिता ने कहा "यह लो चवन्नी रो रो कर थक गया ।" बालक बोला 'में रो रो कर थका नहीं हूं, प्यास लगी है इसलिए पानी पीने के लिए उठा हूं । पानी पीकर फिर रोना चालू करता हूं । ऐसा कहकर वह फिर रुपये के लिए रोने लगा । पिताजी को बालक के रोने पर दया आ गई । उसने उसे एक रुपया दिया।

प्रेमियो ! आप भी प्रभु की याद में आंसू बहाते रहें तो कभी न कभी परमात्मा आपको मोक्ष प्रदान करेंगे । परमात्मा हम सबके पिता हैं, उस बालक की भांति प्रभु के आगे करुण पुकार करें, उनकी कृपा व स्नेह की मांग करें । सांसारिक पदार्थ नहीं मांगें, तो किसी न किसी दिन प्रभु आपको अपने गले लगाएंगे ।

१७ मई, पूज्य स्वामीजी नासिक पधारे । वहां उन्होंने स्वामी चन्दन प्रकाश, स्वामी टेऊंराम आश्रम में सत्संग प्रवचन किया । १८ व १९ मई उन्होंने देवलाली में कवि पहिलाजराम की पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में अमृत वचनों की वर्खा करते हुए कवि पहिलाजराम के गुणों का वर्णन किया ।

पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की पुण्य तिथि उत्सव के सम्बन्ध में स्वामीजी २४ मई अजमेर पधारे। वहां आदर्श नगर में स्वामी माधवदासजी के स्थान पर पूज्य स्वामीजी ने २८ मई तक सत्संग प्रवचन करते हुए, पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज एवं पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महारज के जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाये। उन्होंने प्रवचन

करते हुए कहा-

कह टेऊँ कब ना करो, इस मन पर विश्वास ।

देखत सुन्दर विषय को, वेग करत तहं आस ।।

प्रेमियो ! सत्गुरु महाराज कहते हैं कि मन बड़ा चंचल है, उस पर कोई भरोसा नहीं है । मन सुन्दर पदार्थों व जीवों को देखकर उनकी ओर अनायास ही आकर्षित हो जाता है । इसलिये सदैव प्रभु की शरण लें । अपने मनमंदिर में प्रभु की दिव्य छबि स्थापित कर उसका ध्यान करें । प्रेमियो ! जीवन की सार्थकता विषय पदार्थ भोगने में नहीं। विषय वासनाएं भोगते भोगते मनुष्य रोगी बन जाता है । इसलिए सांसारिक पदार्थों को भोगने में जीवन व्यर्थ न गवांए । राजा वृषपर्वा की बड़ी कन्या शर्मिष्ठा और शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी आपस में सहेलियां थी। एक छोटी सी बात पर उनकी आपस में अनबन हो गई । कुछ दिनों पश्चात् देवयानी का विवाह राजा ययाति से हुआ और परिस्थिति वश शर्मिष्ठा को उसकी दासी बनकर रहना पड़ा । देवयानी से भोग विलास करते करते राजा ययाति का दासी शर्मिष्ठा से भी प्रेम हो गया, ययाति को शर्मिठा से संतान भी हुई । शुक्राचार्य ययाति का यह व्यवहार देखकर क्रोधित हुए और उन्होंने उसे शाप देते हुए कहा "तुम शीघ्र ही बूढ़े हो जाओ ।" शुक्राचार्य के शाप के कारण ययाति तत्काल बूढ़ा हो गया । उसने पश्चात्ताप करते हुए श्री शुक्राचार्यजी से कहा "कृपया मुझे क्षमा करें ।" शुक्रचार्यजी को ययाति पर दया आ गई। उन्होंने उससे कहा कि तुम्हारा जो पुत्र तुम्हें अपनी जवानी दे दे, उससे अपना बुढ़ापा बदल लो ।

अन्ततोगत्वा ययाति के पुत्र पुरू ने बड़े आनन्द से अपने पिता का बुढ़ापा स्वीकार कर लिया । ययाति फिर यौवनावस्था प्राप्त कर पूर्ववत विषयों का सेवन करने लगा । किन्तु फिर भी उसे आनन्द की उपलब्धि नहीं हुई । अर्थात् ययाति को भोगों से तृप्ति नहीं हुई। अनन्त: यौवन पुत्र को लौटा दिया । स्वयं बूढ़ा होकर जीवन के शेष दिन उसने भगवद् भजन में व्यतीत किये ।

प्रेमियो । सांसारिक भोग भोगने से मनुष्य अशक्त एवं अशान्त रहता

है । इसलिए सांसारिक पदार्थों व जीवों में आसक्ति न रख कर प्रभु से स्नेह करें ।

३० मई प्रात: सर्वोदय अस्पताल में स्वामीजी की अध्यक्षता में गौ रक्षा समिति की बैठक हुई । इस अवसर पर स्वामीजी ने व्याख्यान करते हुए कहा कि गौ धन राष्ट्र का सच्चा धन है । उसकी सुरक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है । गौ की रक्षा राष्ट्र की रक्षा है, भारतीय संस्कृति की रक्षा है ।

कवि वासुदेव ब्रह्मलीन हुए । ४ जून सायं स्वामीजी ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की । ३१ मई स्वामीजी ने डा. दयाल "आशा" की पुस्तक 'सिन्ध के संत' का विमोचन करते हुए उसे आशीर्वाद दिया। स्वामीजी ने पुस्तक के प्रकाशक श्री विशनदास आसराणी को भी साधुवाद दिया।

८ जून रात्रि को स्वामीजी ने विदेश यात्रा के लिए प्रस्थान किया। उनके साथ संत देवप्रकाश, संत अनन्तप्रकाश और संत ज्ञानप्रकाश भी थे । ९ जून आप स्पेन पधारे । लास पाल विमान तल पर कई प्रेमियों ने आपका हार्दिक स्वागत किया । वहां वे मोहन रामचन्दाणी के घर ठहरे । स्वामीजी ने एक माह तक स्पेन के विभिन्न नगरों में और लास-पाल मास के सत्नाम साक्षी मंदिर में अमृत वचनों की वर्खा की । उन्होंने भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, प्रेम एवं अन्य विषयों पर ज्ञान गर्भित प्रवचन दिये। स्वामीजी ने वहां अंतिम व्याख्यान करते हुए कहा कि पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज, जो आपको श्री 'सत्नाम साक्षी' मंत्र दे गये हैं उसका निरन्तर जाप करते रहें ।

सफल करो निज श्वास को गुर का शब्द कमाय ।
कह टेऊं गुर शब्द बिन, विरथा नाहि मंवाय ।।

प्रेमियो ! पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज अपनी वाणी में फरमाते हैं कि गुरु मंत्र का जाप कर अपने श्वास सफल करें, श्वास व्यर्थ नहीं गवाएं । सत्गुरु आपको नाम रूपी नौका में चढ़ाकर भवसागर से पार लगाएंगे ।

टेऊँ नौका नाम की, करणधार गुर होय ।
बिना श्रम भव सिन्धु से, पार जात सभ कोय ।।

प्रेमियो ! किसी न किसी परिपूर्ण गुरु की शरण लें। जो गुरु की शरण में आता है समझो वह भगवान की शरण में आया। गुरु शिष्य का हाथ प्रभु को दे देते हैं।

पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने भी अपने सत्गुरु की शरण ली। उन्होंने सांसारिक बंधन तोड़कर संतों का संग किया। जब वे माता कृष्णा के पास आशीर्वाद लेने आये तब उसने कहा "बेटा ! तुम संत बने हो तो परिवार का नाम रोशन होगा। सत्गुरु महाराज ने कहा "मां ! मंज़िल तो अभी दूर है। आप ऐसा आशीर्वाद करें कि मैं प्रभु के पथ पर प्रगति करूं।" माता का आशीर्वाद पारस के समान है, जिस पर होता है वह अमर हो जाता है। राजा गोपीचन्द, भक्त बालक ध्रुव पर भी माता का ही आशीर्वाद था। आज संसार में उन्हीं का यश है। माता-पिता की सेवा करना भी परम कर्त्तव्य है। जगद्गुरु शंकराचार्य एवं राजा गोपीचन्द परिवार का त्याग करने के पश्चात् भी पूज्य माता के अन्तिम समय पर आकर उनकी सेवा की। माता-पिता सत्गुरु की सेवा करते नाम स्मरण भी करना चाहिए। आप के इस नगर में मैंने वृद्धाश्रम भी देखा। वहां मैंने एक सज्जन से पूछा कि तुम वृद्ध तो नहीं फिर भी यहां आकर क्यों ठहरे हो? उसने उत्तर दिया कि यहां पुत्र विवाह करने के पश्चात् माता-पिता की सेवा नहीं करते और उनका घर में रहना भी उन्हें अच्छा नहीं लगता। उस सज्जन का उत्तर सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ। माँ-बाप, बालक के जन्म से ही कितने कष्ट झेलते हैं, उनका ऐसे तिरस्कार किया जाता है ! यह उचित नहीं। प्रेमियो ! आप विदेश में रहते हुए भी भारतीय संस्कृति को न भूलें। व्यवसाय इत्याद्दि करते हुए, प्रभु को न भुलाएं।

९ जुलाई पूज्य स्वामीजी लैबेरिया पधारे। वहां उन्होंने ६ दिन सत्संग प्रवचन कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। स्वामीजी ने उपदेश देते हुए कहा कि आप लोग विदेश में रहते हुए धन कमाएं किन्तु अपने चरित्र पर दाग न आने दें। धन की प्राप्ति हेतु कुकर्म नहीं करें। प्रभु का स्मरण करें, साथ ही परोपकार के कार्यों में धन पदार्थ सफल करें।राजा अशोक का पुत्र कुणाल चरित्रवान राजकुमार था। राजा अशोक की

छोटी रानी तशरक्षिता कुणाल की सुन्दरता और यौवन पर आसक्त हो गई । एक दिन उसने कुणाल को अपनी काम भावना से अवगत कराया । कुणाल ने हाथ जोड़कर कहा "माताजी ! मैं आपको अपनी मां की भांति समझता हूं, सम्मान देता हूं, मैं आपका बेटा हूं । जो कुछ आप ने मुझे अब कहा वह बेटे से कहना उचित नहीं"। राजकुमार कुणाल का यह उत्तर सुनकर रानी क्रोधित हुई । परन्तु कुणाल अपने आदर्शों पर अडिग रहा । कुछ समय के पश्चात् तक्षशिला पर रिपु ने आक्रमण किया । कुणाल ने सेना लेकर दुश्मन का सामना करते हुए उसे परास्त किया । राजा अशोक अपने पुत्र कुणाल की विजय सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुए । किन्तु छोटी रानी विजय का समाचार सुनकर अत्यन्त दुखीं हुई । उस समय राजा अशोक अस्वस्थ थे तथा समूचा राज काज छोटी रानी ही सम्भाल रही थी । अपने अनुकूल समय पाकर उसने सेनापति को पत्र लिखकर भेजा कि कुणाल देशद्रोही है अत: कुणालकी दोनों आखें निकालकर राज्य सीमा से बाहर कर दिया जाय । रानी ने उस पत्र पर राजा की मुद्रा अंकित कर, वह पत्र तक्षशिला भेजा । सेनापति वह पत्र पढ़कर आश्चर्य में पड़ गया कि यह कैसा आदेश है ! कुणाल जैसे वीर शिरोमणि आज्ञाकारी पुत्र की आँखे निकाली जायें । कुणाल ने वह पत्र पढ़कर आज्ञा शिरोधार्य करते हुए, कहा कि आप मेरी आँखें निकालें । सेनापित ने आखें निकालने से इन्कार करते हुए कहा कि मैं ऐसे आदेश का पालन नहीं करूंगा तब कुणाल ने स्वयं अपनी आंखें निकालकर दीं तथा राज्य की सीमा से पत्नि सहित बाहर चला गया।। लम्बे अन्तरल के पश्चात् संयोग से कुणाल पत्नि संहित राजधानी आया तब पिता राजा अशोक, बेटे कुणाल की यह दशा देखकर बहुत दुखी हुए । राजा को कुणाल की इस दुर्दशा का कारण जानने पर ज्ञात हुआ कि छोटी रानी ने ही राज्य मुद्रा का दुरुपयोग कर कुणाल की यह दशा की है। तब राजा अशोक ने आदेश दिया कि छोटी रानी को इस अपराध के लिये दण्डित किया जाय। परन्तु कुणाल ने पिताजी से विनय की कि आप माताजी को उसके अपराध के लिए क्षमा करें । राजा अशोक ने अपने बेटे की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए पत्नि को क्षमा किया।

प्रेमियो ! चरित्रवान पुरुष को सिद्धांतों पर दृढ़ रहने के लिए कितने

न कष्ट सहन करने पड़ते हैं । धन पदार्थ चला जाय तो चिन्ता न करें, स्वास्थ्य बिगड़ जाय तो आपने कुछ खो दिया किन्तु यदि चरित्र नहीं रहा तो आपने सर्वस्व खो दिया । विदेश में रहते हुए आप हिन्दू सनातन धर्म के सिद्धांतों पर चलने का प्रयास करें ।

१६ जुलाई पूज्य स्वामीजी फ्रीटाऊन पधारे । वहां उन्होंने पांच दिन सत्संग प्रवचन किया । उनह्ले उपदेश करते हुए कहा कि प्रतिदिन यह प्रार्थना करें-

सत्गुर तुम पूरन करो, मेरी यह अरदास ।
कहे टेऊँ मन में कभी, रहे न जग की आस ।।

प्रेमियो ! प्रभु एवं गुरु को यही विनती करें कि सांसारिक इच्छाओं से आप मुक्त हो जायें और आपको नाम पदार्थ की प्राप्ति हो । यदि आप जीवन मुक्त होना चाहते हैं तो निष्काम कर्म करें । यदि तृष्णाएं वासनाएं मन में रह गईं तो फिर उनकी तृप्ति के लिए जन्म लेना पड़ेगा। संत कबीरदास के गुरु स्वामी रामानंदजी महान विद्वान, प्रकांड पंडित थे किन्तु अन्त समय उन्हें सेव खाने की इच्छा हुई और वे ब्रह्मलीन हुए । सेव खाने की इच्छा रह गई, जिससे उन्हें पुनः जन्म लेना पड़ा। जैसे कोई व्यक्ति अपना सामान छोड़कर दूसरे नगर में जाता है तो फिर उसे उसी नगर में सामान लेने के लिए आना पड़ेगा । वैसे ही यदि कोई व्यक्ति संसार से चल बसे ओर उसकी वासनाएं जगत् के पदार्थों में रह गईं तो फिर उसे जगत् में आना पड़ेगा । इसलिए आप सांसारिक तृष्णाओं का परित्याग कर एक प्रभु मिलन की आस रखें तो अवश्य ही आप प्रभु को प्राप्त करेंगे एवं जीवन मुक्त हो जायेंगे।

कह टेऊँ संसार में, बात यही है सार ।
भजन करो भगवान का, छोड़ो विषय विकार ।।

प्रेमियो ! आप अपना जीवन भगवद् भजन में और धन पदार्थ, दीन दुखियों की सेवा में सफल बनाएं ।

२१ जुलाई पूज्य स्वामीजी कासाब्लांक पधारे । वहां पूज्य स्वामीजी ने पांच दिन सत्संग प्रवचन किये । उन्होंने उपदेश देते हुए कहा कि श्रद्धा व विश्वास से प्रभु को यह प्रार्थना करें-

दीन बन्धु अब कर दया, करत पाप सब दूर।
कह टेऊँ गुण ज्ञान दे, सुख सम्पति भरपूर।।

किसी न किसी दिन प्रभु आपकी प्रार्थना अवश्य सुनेंगे। एक फकीर एक धनवान के द्वार पर गया। धनवान ने कहा "लौट जाओ।" फकीर लौट गया किन्तु थोड़े ही समय पश्चात् फिर वहां आया। धनवान ने उसे कहा कि मैंने तुम्हें लौटाया फिर अब तू क्यों आया है? फकीर ने उत्तर दिया "समय समय की बात है ! मैंने विचार किया कि जब मैं पहले आपके पास आया तब हो सकता है कि आप किसी गंभीर विचारों में मग्न हों, और उसी समय आप से कुछ लेना शायद मेरे भाग्य में नहीं था। इसलिए मैं फिर लौट आया, हो सकता है अब आप दया दृष्टि करें।" फकीर का उत्तर सुनकर धनवान प्रसन्न हुआ। उसने उसे मालामाल कर दिया। प्रेमियो ! आप भी ईश्वर के दर पर पुकारते रहें कभी न कभी आपकी पुकार प्रभु अवश्य सुनकर आपकी इच्छा पूर्ण करेगा।

२६ जुलाई स्वामीजी मनोरिया में पधारे। श्री जानी एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। उन्होंने वहां ६ दिन अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियो की प्यास पूरी की। २६ जुलाई पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज की पुण्य तिथि थी। उस दिन उपदेश करते हुए स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित की। स्वामीजी ने कहा कि स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने देश विदेश में पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की शिक्षाओं एवं सिद्धांतों का संदेश पहुंचाकर हज़ारों प्रेमियों का मार्ग दर्शन किया। वे भक्ति व शक्ति के ज्ञाता थे, किन्तु दिखावा नहीं करते थे। यदि कोई प्रेमी इच्छा पूर्ति हेतु आता था तो उसे कहते थे कि सत्गुरु महाराज दया करेंगे !

एक बार बियावर के एक प्रेमी के पुत्र की अचानक ज़ुबान बंद हो गई। वह बोल नहीं सकता था। मां-बाप ने डाक्टरों को दिखाया। बालक को दवाइयां दी गईं किन्तु वह ठीक नहीं हुआ। मां-बाप बहुत ही चिंतित हुए। वे उदास होकर अमरापुर स्थान जयपुर पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के पास बेटे को ले आये। उन्होंने पूज्य स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से प्रार्थना की कि बालक ने अचानक बोलना

बन्द कर दिया है । हमने कई उपचार करवाये हैं परन्तु वह बोलने में असमर्थ है । आप कृपया बालक पर दया दृष्टि करें जिससे वह बोल सके । पूज्य स्वामी सर्वानन्दजी महाराज को बालक पर दया आ गई । उन्होंने बालक की माता से कहा कि मंदिर में जाकर पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज की मूर्ति को प्रणाम करक जल ले आओ, भगवान भला करेगा । मां-बाप ने आज्ञानुसार सत्गुरु महाराज जी की मूर्ति को दण्डवत् प्रणाम कर जल लाया तब सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने जल पढ़कर बालक पर जल का छींटा लगाते हुए कहा "श्री सतूनाम साक्षी" । उन्होंने जब पांचवी बार छींटा लगाकर बालक से कहा "कहो श्री सतूनाम साक्षी" तब बालक बोला "श्री सतूनाम साक्षी" परमात्मा की कृपा एवं सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के आशीर्वाद से बालक ने बोलना आरम्भ किया । बालक और उसके माता पिता सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के श्री चरणों में गिर पड़े । संतों के पास नाम की शक्ति रहती है जिसके द्वारा वे दुखियों के दुख दूर करते हैं । प्रेमियो ! आप भी श्रद्धा व विश्वास के साथ नाम स्मरण करें, भगवद् भक्ति करें, सत्गुरु महाराज कहते हैं-

गंगा हरती पाप को,शशि हरिता है ताप।
पाप ताप दोनों हरे, टेऊँ हरि का जाप ।।

१ अगस्त पूज्य स्वामीजी साऊथा पधारे । वहां उन्होंने पांच दिन सत्संग प्रवचन किया । एक दिन उन्होंने उपदेश करते हुए कहा-

कह टेऊँ गुर वचन को, मानत है शिष्य जोय ।
आज्ञा भंग न करत कब, पावत मुक्ति.सोय ।।

जो शिष्य सत्गुरु की आज्ञा शिरोधार्य करता है, वह मोक्ष पद को प्राप्त करता है । शिष्य को समर्पित भाव से सेवा करनी चाहिए । एक बार गौतम बुद्ध ने अपने एक प्रिय शिष्य से कहा कि पुरम गांव में जाकर उपदेश करो । वहां के लोग किसी की निंदा करने या किसी को अपशब्द कहने में हिचकते नहीं थे । शिष्य ने कहा कि गांव वाले केवल निंदा करेंगे, मुझे मारेंगे तो नहीं? गौतम बुद्ध ने कहा "वे हाथों से मार भी सकते। फिर तुम क्या करोगे?" शिष्य ने कहा "हाथों

से मारेंगे, फिर भी अच्छा, लाठियों डंडो से तो नहीं मारेंगे? गौतम बुद्ध ने कहा "वे गांव वाले तुम्हें डंडा मारने में भी देरी नहीं करेंगे।" शिष्य ने कहा कि वे मुझे डंडा मारेंगे, तलवार से वार तो नहीं करेगे। गुरुदेव! आपका संदेश सुनाते यदि मैं तलवार से घायल हो भी गया या मारा भी गया तो मुझे मृत्यु का कोई डर नहीं। गुरुदेव की आज्ञा का पालन करते यदि मैं मर भी गया तो मैं स्वयं को धन्य धन्य समझूंगा। "श्री गौतम बुद्ध अपने शिष्य का ऐसा उत्तर सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। उन्होंने शिष्य को गले लगाते कहा "तुम धन्य हो! तुमने मन को वश में रखा है। तुम में अनन्य गुरु भक्ति भावना है। प्रेमियो! आप भी उसी शिष्य की भांति सत्गुरु के लिए श्रद्धा भावना रखेंगे तो गुरु आपको गले लगाएगें।

६ अगस्त पूज्य स्वामीजी मलागा पधारे। वहां उन्होंने चार दिन सत्संग प्रवचन किया। १० अगस्त वे तनरीक पधारे वहां उन्होंने तीन दिन अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। वहां से फिर वे लासपालमास लौट आये। वहां से पुनः स्वामीजी १७ अगस्त लन्दन गये। लन्दन विमान तल पर कई श्रद्धालुओं ने उनका हार्दिक स्वागत किया। वहां स्वामीजी केशव दरियानाणी एवं लीलाराम केवलरामाणी के घरों में ठहरे। १ सितम्बर तक उन्होंने विभिन्न स्थानों पर उपदेश दिया। एक दिन स्वामीजी ने उपदेश करते हुए कहा कि सांसारिक सहारों को छोड़कर प्रभु की शरण लें। प्रभु के चरणों में ही सच्चा सुख है। धंधा व्यवसाय नौकरी करते यदि सदैव आप प्रभु की शरण लेंगे तो आप तनाव से दूर होंगे और शान्ति का अनुभव करेंगे। जो भी कार्य करें वह प्रभु को अर्पण करें, पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज भी प्रार्थना करते हुए कहते हैं-

चरन शरन मैं आपकी, तुम स्वामी हम दास।
नहीं मांगत मैं और कुछ, दे हरि चरन निवास॥

एक बूढ़ी गरीब माता एक गांव के बाहर झोपड़ी में रहती थी। वह प्रभु की अनन्य उपासिका थी। वह जो भी काम करती वह प्रभु को अर्पण करती थी। एक बार ऋषि नारद वहां से जा रहे थे, उस

समय इस माता ने झाड़ू लगाकर कचरा बाहर फेंक कर कहा "प्रभु अर्पणाम्" श्री नारद यह सुनकर, क्रोधित होकर उसे लात मारते हुए कहा कि तुम तो पगला गई हो, भगवान को फल फूल मिष्टान्न अर्पित करना चाहिए यह कचरा कैसे अर्पण कर रही हो? माता ने कहा "यह लात भी प्रभु अर्पणाम्। ऋषि नारदजी ने समझा कि यह बुढ़िया शायद पागल है। श्री नारद सीधे वैकुण्ठ आए। वहां भगवान के पास आकर उन्होंने देखा कि भगवान श्री विष्णु दर्द से परेशान हैं। श्री नारद ने पूछा "भगवान ! आपको यह दर्द कैसा? भगवान ने मुस्कुराते हुए कहा कि "किसी ने मुझे लात मारी है।" तब श्री नारद ने पूछा "किसने आप को लात मारी? भगवान बोले "प्रिय नारद ! तुमने ही ते मुझे लात मारी है।" इतना सुनकर नारद विस्मय में पड़कर बोले "भगवान! मैं आपका अनन्य भक्त हूं, मैं ऐसा कार्य कैसे कर सकता हूं। भगवान बोले "नारद ! जो लात तुमने बूढ़ी माता को मारी थी उसने यह मुझे अर्पण की इसलिए मुझे दर्द हो रहा है। तुमने उसे पगली समझकर लात मारी परन्तु वह तो मेरी अनन्य उपासिका है, मैं अपने भक्तों का दुख कभी सहन नहीं कर सकता। भगवान का यह उत्तर सुनकर नारद की आंखों में आंसू आ गये। वह भगवान से क्षमा याचना करने लगे। भगवान ने कहा "तुम क्षमा याचना भी उस बुढ़िया से करो जिसको तुमने लात मारी है तब मेरा यह दर्द दूर होगा। श्री नारद, भगवान को प्रणाम कर सीधे उस बुढ़िया के पास आकर क्षमा याचना की। बुढ़िया बोली "क्षमा प्रभु अर्पणम्" श्री नारद विस्मय में पड़ गये और विचारने लगे कि यह बुढ़िया जो भी कार्य करती है वह प्रभु अर्पण! श्री नारद क्षमा याचना व पश्चात्ताप करके पुनः भगवान श्री के पास आये और पूछा "भगवान् ! अब आप कैसे हैं? भगवान ने मुस्कुराते हुए कहा कि नारद मेरे भक्त मुझे अति प्रिय होते हैं, उनको कभी सताना नहीं। जो उन्हें दुखी करता है, कष्ट देता है मैं उसे कभी क्षमा नहीं करता। निर्दोष को सताना बड़ा पाप है। प्रेमियो ! आप भी उस बुढ़िया की भांति सर्वस्व प्रभु के कमल चरणों में अर्पण करें। उसका स्मरण कर जीवन सफल बनाएं।

विदेश में रहकर भी भारत भूमि को नहीं भूलें। भारत भूमि ऋषियों

मुनियों की भूमि है । आप धार्मिक शास्त्रों का अध्ययन करें । अपनी संतान में शुभ संस्कार के बीज बोएं । धन कमायें किन्तु सत्कर्मों में उसका उपयोग करें। गुरु मंत्र का प्रतिदिन जाप करें तो अज्ञान रूपी अंधेरा उड़ जाये। सत्गुरु महाराजजी अपनी वाणी में कहते हैं-

जैसे रवि के किरण से, तत्क्षण तम मिट जात ।

कह टेऊँ गुर ज्ञान से, तम अज्ञान निशात ।।

पूज्य स्वामीजी ने सभी प्रेमियों को आशीर्वाद देकर वहां से स्वदेश के लिए प्रस्थान किया । ३ सितम्बर रात्रि पूज्य स्वामीजी विदेश यात्रा पूर्ण कर बम्बई लौट आये । कई प्रेमियों ने उनका फूल मालाओं से स्वागत सम्मान किया ।

पूज्य स्वामीजी का जन्म दिन उत्सव १ सितम्बर से ५ सितम्बर जनता जनार्दन परिषद् की ओर से आश्रम में आयोजित किया गया। १ सितम्बर सेन्ट्रल अस्पताल में बीमारों की सेवा की गई और श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ का पाठ आरम्भ किया गया । २ सितम्बर विद्यार्थियों की भक्ति संगीत प्रतियोगिता अयोजित की गई । ४ सितम्बर अपाहिजों की सेवा की गई । ५ सितम्बर प्रातः हवन यज्ञ के पश्चात् दीन दुखियों की सेवा की गई । शाम को डा. दयाल 'आशा' ने जनता जनार्दन परिषद् के सेवा कार्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पूज्य स्वामीजी की आशीर्वाद एवं प्रेरणा से जन सेवा के कार्य हो रहे हैं । कलाकारों ने भक्ति संगीत की वर्खा की । पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि प्रभु की कृपा एवं सत्गुरु महाराजजी की कृपा से विदेश यात्रा पूर्ण रूप से सफल रही । आज आप लोगों ने दास का जन्म दिवस मनाया है, जो कुछ आप लोगों ने दास की महिमा गाई वह महिमा पूज्य सत्गुरु महाराज जी की दया एवं कार्य की है आप भी नियमित रूप से नाम स्मरण करें और परोपकार के कार्य करें । जीवन का सच्चा आनन्द दूसरों को सुखी करने में हैं । संत तुलसीदास फरमाते हैं-

पर हित सरस धर्म नहीं भाई ।

पर पीड़ा सम नहीं अधमाई ।।

दूसरों का उपकार करने जैसा और कोई धर्म नहीं, दूसरों को दुखी करने जैसा और कोई पाप नहीं। इसीलिए सदैव दूसरों पर दया करें। एक बार संत रामचरण कुछ संतों के साथ जयपुर में पवित्र गलता नदी की ओर जा रहे थे। वे स्वयं संत थे, किन्तु उन्हें अन्य संतों की सेवा करने में बड़ा आनन्द आता था। मार्ग में जब उन्होंने संतों के लिए भोजन बनाना आरंभ किया तो अग्नि में जलती लकड़ियों में चींटियां देखकर उन्हें दुख हुआ, उसने उसी समय अग्नि बुझा दी जिससे चींटियां जलने से बच जायं, उसकी दया भावना के कारण ही कई चींटियां अग्नि में जलने से बच गईं। उन्होंने मन में संकल्प किया कि वह फिर कभी भोजन नहीं पकाएंगे। जो कुछ उन्हें भिक्षा में मिलेगा वही स्वयं खायेगे और दूसरों को भी खिलायगे। दयालु पुरुष न केवल मनुष्यों पर दया करते हैं किन्तु सभी प्राणियों पर दया दृष्टि करते हैं। वे अपने सुखों के लिए दूसरों को दुखी नहीं करते। प्रेमियो ! आप भी दूसरों को सुखी करने का यत्न करें। आप दूसरों को सुखी करेंगे तो प्रभु आपको सुखी करेगा।

१६ सितम्बर पूज्य स्वामीजी ने पूज्य संत हरिचूरामजी साहिब की पुण्यतिथि उत्सव के सम्बन्ध में संत हरिचूराम-धाम, सिन्धूनगर- ५ में प्रवचन करते हुए संत हरिचूरामजी साहिब के गुणों का वर्णन किया।

संत उद्धवदासजी महाराज के पुण्य तिथि उत्सव के अवसर पर पूज्य स्वामीजी १८ सितम्बर अहमदाबाद पधारे। वहां पूज्य स्वामीजी ने पांच दिन सत्संग प्रवचन करते हुए पूज्य स्वामी ऊद्धवदासजी के गुणों का वर्णन किया। प्रेमियों ने स्वामीजी का जन्म दिवस भी बड़े उत्साह के साथ मनाया। २४ सितम्बर से २६ सितम्बर पूज्य स्वामीजी ने गोधरा में अमृत वचनों की वर्खा करते हुए, प्रेमियों की प्यास पूरी की। २७ सितम्बर उन्होंने प्रेम प्रकाश आश्रम वड़ौदा में सत्संग प्रवचन किया। २८ सितम्बर स्वामीजी ने जयपुर के लिए प्रस्थान कया। वहां श्री ढालूमल दौलतराम ने २६-३० सितम्बर पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का जन्म दिन उत्सव मनाया। स्वामीजी ने वहां सत्संग प्रवचन करते हुए पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के गुणों का वर्णन किया। उन्होंने दस दिन अमरापुर स्थान पर सत्संग प्रवचन किया।

१३ अक्टूबर स्वामीजी, ग्वालियर पधारे। वहां प्रेम प्रकाश मंदिर में उन्होंने तीन दिन सत्संग प्रवचन किया। १५ अक्टूबर उन्होंने उपदेश करते हुए कहा कि यदि कोई प्रेम व श्रद्धा से प्रभु के पावन श्रीचरणों में या किसी महात्मा के श्रीचरणों में कुछ वस्तुएं भेंट करता है तो समझे कि प्रभु ने उसकी भेंट स्वीकार की है। संत महात्मा उन वस्तुओं का किस प्रकार उपयोग करते हैं उसका विचार भेंट करने वाले को कभी नहीं करना चाहिए।

एक बार भक्त हरिदासजी यमुना के किनारे बालू के मैदान में एकांत में बैठे थे। वे अपने ध्यान में भगवान श्री कृष्ण के साथ होली खेल रहे थे। वहां भक्त हरिदास के एक प्रेमी ने उन्हें एक इत्र की शीशी भेंट की। भक्त हरिदास ने उसी समय ही वह इत्र की शीशी खोलकर रेत पर फैला दी। यह देखकर वह प्रेमी बहुत उदास हुआ और उसने मन में सोचा कि वह कितने न प्रेम के साथ इत्र की शीशी लाया था और संत ने उसे रेत पर डाल दिया। भक्त हरिदासजी उस प्रेमी की भावना को समझ गये। उन्होंने उससे कहा कि तुम बांकेबिहारी के मंदिर में जाकर उनका पवित्र दर्शन करके आओ। आज्ञानुसार जब वह प्रेमी बांकेबिहार के मंदिर आया तो उसने देखा कि भगवान श्यासुन्दर के पावन वस्त्रों से उसी इत्र की सुगंधि आ रही है। यह देखकर उसे बहुत संतोष हुआ कि उसकी इत्र की शीशी का सदउपयोग हुआ है। भक्त हरिदासजी ने ध्यान ही ध्यान में होली खेलते भगवान बांकेबिहारी को इत्र भेंट किया तो वह इत्र सचमुच भगवान के वस्त्रों को जा लगा। आप भी भगवान बांकेबिहारी को कुछ भी भेंट करें वह समर्पित भाव से करें तो वह अवश्य प्रभु स्वीकार करेंगे। आपकी वस्तु वे किसी को भी दें आप उसका विचार कभी न करें।

१७ अक्टूबर स्वामीजी मुरैना पधारे वहां उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन किये श्री वसणामल ने उनका आभार माना। १९ अक्टूबर वे आगरा आये। वहां उन्होंने तीन दिन अमृत वचानें की वर्खा करते हुए कहा कि जीवन कर्म करने के लिए स्वतंत्र है, किन्तु उसका फल भोगने के लिए परतंत्र है। जैसे कोई चोर किसी धनवान के घर में चोरी करने के लिए प्रवेश कर कोई भी पदार्थ वहां से चोरी कर सकता

है किन्तु जब वहचोरी करते पकड़ा जायेगा तो उसका दंड उसकी इच्छानुसार उसे नहीं मिलेगा । उसको दंड देना न्ययाधीश के हाथ में है । जीव यदि इस संसार में कोइ भी कुकर्म करेगा तो उसका दंड उसकी इच्छानुसार उसे नहीं मिलेगा, परन्तु ईश्वर इच्छानुसार (विधान अनुसार) उसे दंड भुगतना पड़ेगा । इसलिए जीव को सावधान होकर सत्कर्म करने चाहिए।

२६ से ३० अक्टूबर तक प्रेम प्रकाश आश्रम हरिद्वार में पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का जन्म दिन उत्सव आयोजित किया गया उसके उपलक्ष्य में पूज्य स्वामीजी २२ अक्टूबर हरिद्वार पधारे । २८ अक्टूबर स्वामीजी के नेतृत्व में एक भव्य जुलूस निकला । स्वामीजी, स्वामी धर्मदासजी, संत हरिदासरामजी, संत अनंतप्रकाश, संत ब्रह्मानन्दजी, संत देव प्रकाश एवं अन्य संतों ने सत्संग प्रवचन करते हुए पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला । २६ अक्टूबर प्रातः ९ बजे पूज्य स्वामीजी ने पवित्र गंगा मां के पवित्र तट पर पूज्य स्वामी सर्वानन्द घाट के लिए आधार शिला रखी । पूज्य स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने देश विदेश में प्रेम के बीज बोए । इसीलिए दास को भी विदेश में कितना न स्नेह व सम्मान मिला । प्रेमियो ! आप भी जीवन में प्रेम के पौधे लगाएं । प्रभु प्रेम ही सच्चा प्रेम है । जिसके मन में प्रभु के लिए प्रेम है, वह सभी प्रेमियों को प्रेम करता है । सत्गुरु महाराज कहते हैं-

प्रेम जगत् में बहुत है, प्रेम बिना नहीं कोय ।
टेऊँ साचा प्रेम सो, जो हरि ही से होय ॥

सांसारिक प्रेम दुखदाई है और प्रभु प्रेम सुखदाई है ।

प्रेम उभय प्रकार का, कह टेऊँ तुम जान ।
जगत् प्रेम दुख रूप है, प्रभु प्रेम सुख खान ॥

२ नवम्बर स्वामीजी प्रेम प्रकाश मंदिर, दिल्ली पधारे । वहां उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन किये । ५ नवम्बर वे सिन्धुनगर आश्रम लौट आये । १२ नवम्बर स्वामीजी, पूज्य स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज की पुण्य तिथि उत्सव सम्बन्ध में पूना गये । वहां स्वामी रामकृष्ण के आश्रम

में उन्होंने दो दिन वेदान्त विषयों पर प्रवचन करते हुए स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज के जीवन एवं काव्य पर प्रकाश डाला । प्रेमियोंके अनुरोध पर १६ नवम्बर दिवाली के दिन स्वामीजी बम्बई गये । वहां कई प्रेमियों ने स्वामीजी से नव वर्ष के सम्बन्ध में अपने नव वर्ष के बही खातों का श्री गणेश करवाया । १८ नवम्बर प्रात: आश्रम में उन्होंने श्री कार्तिक कथा का प्रारंभ किया । स्वामीजी श्री कार्तिक कथा के साथ साथ श्री गुरुग्रन्थ साहब की वाणी का विवेचन भी करते थे । उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा-

टेऊँ गफ्लत नींद तजि, देखो अपना आप ।
जिस देखन से जगत् के, मिटहिं पाप संताप ॥

प्रेमियो ! अज्ञान की नींद से जाग्रत होकर अपने आत्म स्वरूप को पहचानें । आत्म-साक्षात्कार से आप सांसारिक दुखों व पापों से मुक्त हो जाएंगे । आपको आत्मिक आनन्द की प्राप्ति होगी । २४ नवम्बर गोपाष्टमी के दिन प्रात: स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए गौ माता की महिमा प्रतिपादित की । सायं को श्री राधेश्याम गौशाला में गोपाष्टमी उत्सव पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में मनाया गया । स्वामीजी ने भगवान श्याम सुन्दर एवं गौ माता के सम्बन्ध में विचार व्यक्त करते हुए कहा गौ माता भारतीय संस्कृति व धर्म का चिन्ह है । वह हमारे धार्मिक एवं आर्थिक उन्नति का आधार है, फिर भी प्रतिदिन हजारों गौ माताओं का वध किया जाता है । यह बड़े ही शर्म की बात है। समय आयेगा जब हमें दूध के लिए दूसरे देशों पर निर्भर होना पड़ेगा। हमें गौ रक्षा के लिए संकल्प करना चाहिए । आप भी गौ रक्षा आन्दोलन में पूर्ण सहयोग दें ।

२६ नवम्बर कार्तिक एकादशी के पावन दिन स्वामीजी व हजारों प्रेमी रान नाम की धूम मचाते श्मशान भूमि आये । वहां स्वामीजी ने उपदेश करते कहा कि काल नगारा सिर पर बाजे, करलो अब तो तैयारी। किसी न किसी दिन सब को यहां आना है । यहां आने के पूर्व सत्कर्मों की पूंजी संग्रह करें ।

२७ नवम्बर प्रात: स्वामीजी ने पूना के लिए प्रस्थान किया । वहां स्वामी टेऊंराम स्वामी चन्दनप्रकाश मंदिर में तीन दिन सत्संग प्रवचन

करते हुए श्री गुरुनानकदेवजी महाराज के जीवन व वाणी के सम्बन्ध में विचार व्यक्त किये । संत अनंतप्रकाश ने उनका आभार माना । २९ नवम्बर आप सिन्धुनगर आश्रम लौट आये । सायं आश्रम में और रात्रि भिन्न स्थानों पर उन्होंने श्री गुरुनानकदेव महाराजजी के जन्म दिन सम्बन्ध में सत्संग प्रवचन किया ।

स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर का वार्षिक उत्सव १८ से २३ दिसम्बर तक सिन्धुनगर-५ में आयोजित किया गया । १८ दिसम्बर प्रातः स्वामीजी ने धर्म ध्वज पहरा कर उत्सव आरंभ किया । अपरान्ह तीन बजे आश्रम से स्वामीजी की अध्यक्षता में एक भव्य जुलूस निकाला गया ।

पूज्य स्वामीजी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से सुन्दर शेवक सभा की ओर से सिन्धुनगर-५ में स्वामी सर्वानन्द अस्पताल बनवाया गया । १६ दिसम्बर रविवार प्रातः दस बजे स्वामीजी ने इस अस्पताल का उद्घाटन करते हुए कहा कि सिन्धुनगर के कई रोगियों को इलाज के लिए बम्बई जाना पड़ता है । अब इस अस्पताल के आरंभ होने से उनका इलाज यहां हो सकेगा । प्रेमियो ! ऐसे उपकार के कार्यों में अपना धन पदार्थ सफल करें । इसी अवसर पर स्वामीजी ने श्री परसराम मसंद की सेवाओं का उल्लेख करते उनकी प्रशंसा की । स्वामीजी ने अस्पताल के डाक्टरों एवं कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिया और अस्पताल के सेवा कार्य के लिए पांच लाख रुपये दान दिये ।

इसी अवसर पर पूज्य स्वामी धर्मदासजी महाराज, स्वामी रामकृष्ण, संत अनन्तप्रकाश, संत ब्रह्मानन्द, संत देवीदास, संत देवप्रकाश, स्वामी अर्जनदास हंस, संत रूपाराम साहिब, संत ब्रह्मदास, श्री तीर्थ सौभाणी, पद्मश्री डॉ. मोदी, श्री रामकृष्ण आडवाणी, श्री सीतलदास हरचन्दाणी, श्री गोप बहराणी, श्री गोबिन्दराम भाटिया, श्री गोवर्धन शर्मा 'घायल' ने इस अस्पताल के सम्बन्ध में शुभ मंगल कामनाएं देते हुए कार्य कर्ताओं को धन्यवाद दिया । श्री सभागचन्द चावला ने सभी संतों एवं अतिथियों का स्वागत किया । डा दयाल 'आशा' ने अस्पताल के सेवा-कार्यों के लिए धन पदार्थ दान करने का अनुरोध किया और श्री हीरालाल सभनदासाणी ने आभार प्रदर्शन किया ।

आश्रम में उत्सव के चारों दिन मंडल के संतों एवं अन्य महात्माओं ने ज्ञान की गंगा प्रवाहित की । २३ दिसम्बर प्रात:काल स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि पाप कर्म से दूर रहें । पाप कर्म आग से भी अधिक हानिकारक हैं । आग से तो व्यक्ति बच भी सकता है सांप के काटने से भी मनुष्य बच सकताहै किन्तु पाप कर्मों के फल भोगने से बच नहीं सकता । इसीलिए सदैव इन्द्रियों पर निरोध रखें । जिज्ञासू को परमात्मा और गुरु का भय होना चाहिए। उनके भय के कारण वह पाप कर्म करने से बच जायेगा । गुरुवाणी में कहते हैं-

जिना मन भय, तिना मन भाव ।

धंधा, व्यवसाय इत्यादि में लोग कितना न पाप कर्म करते हैं । अधिक धन संग्रह के लिए खाने पीने की वस्तुओं में भी मिलावट करते हैं । वे अपने स्वार्थ के लिए हजारों लोगों को बीमार करते हैं । घूस (रिश्वत) लेना भी पाप कर्म है । व्यवसाय में अधिक मुनाफा (लाभ) भी पाप कर्म है ।मांगकर दहेज लेना भी पाप कर्म है । प्रेमियो ! ऐसे पाप कर्मों का त्याग कर सत्कर्म करें । सत्य, सेवा, स्मरण के पथ पर चल कर जीवन सफल बनाएं ।

२९ दिसम्बर पूज्य स्वामीजी अहमदाबाद पधारे । वहां उन्होंने संत प्रभाराम साहब की पुण्य तिथि उत्सव सम्बन्ध में संत प्रभाराम सोसायटी के प्रांगण में तीन दिन सत्संग प्रवचन करते हुए संत प्रभाराम जी के गुणों का वर्णन किया ।

११ जनवरी १९८३ आश्रम में स्व. प्रधानमन्त्री लाल बहादुर शास्त्री की पुण्य तिथि मनाई गई । पूज्य स्वामीजी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि श्री लाल बहादुर शास्त्रीजी निर्भीक, निडर एवं निष्काम नेता थे । ऐसे राष्ट्र भक्तों की राष्ट्र को अत्यन्त आवश्यक्ता है ।

१४ जनवरी पूज्य स्वामीजी ने आकाशवाणी बम्बई से व्याख्यान देते हुए कहा कि जीवन देने के लिए है । लेने से देना अच्छा है। लेने में संकोच होता है और देने में आनन्द होता है, संतोष मिलता है । जिसमें सदैव लेने की भावना होगी वह कभी सुखी नहीं रह सकेगा। नीति शास्त्र में एक श्लोक है-

तब लग गुण गौरवता, जब लग कहे न दे ।
दे कहे कि सक्षय, सब गुण गौरवता पीठ दे ।।

किसी भी मनुष्य का यश व गुण तब तक कायम रहेगा जब तक उसने मुंह से 'दे' शब्द नहीं निकाला है । जब उसने मांगना आरंभ किया तो उसका यश और गुण धीरे धीरे चले जायेंगे । प्रेमियो ! जो कुछ मांगना है प्रभु से ही मांगे और प्रभु ने आपको जो कुछ दिया है वह लोगों में बांटें अर्थात् धन संग्रह अपने लिए नहीं किन्तु लोक-कल्याण के लिए करें । दूसरों की सेवा में जीवन सफल बनाएं । राजा शिबी, रत्नदेव हातिमताई, राजा विक्रमादित्य, राजा हरिश्चन्द्र, सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज, स्वामी हरिनामदासजी, संत जलाराम, संत कंवरराम अपने परोपकार के कार्यों के कारण ही प्रसिद्ध हुए हैं । लोग देने वाले दाता की ही प्रशंसा करते हैं । धन दान, समय दान, विद्या दान, वस्त्र दान, सभी का अपना अपना महत्व है । आप यदि कुछ नहीं दे सकते दूसरों को स्नेह व सम्मान दें । उपकारी मनुष्य का दर्शन भी सुखदाई और लाभकारी होता है । पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज भी कहते हैं-

या तो आत्म ज्ञान हो, या तो हो उपकार ।
टेऊँ जिस में ये नहीं मानुष सो बेकार ।।

संत कबीरदासजी तो कहते हैं कि किसी से पानी भी मत मांगों। मांगने से मरना अच्छा है-

मांग न पानी पीउ, मांगन ते मरना भला ।

देने में ही जीवन की सार्थकता है । २० जनवरी पूज्य स्वामीजी अहमदाबाद पधारे । वहां कुबरे नगर में पुष्पादेवी ने स्वामी बसंतराम जी महाराज की जयन्ती उत्सव आयोजित किया । इस उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामीजी ने तीन दिन सत्संग प्रवचन करते हुए पूज्य स्वामी बसंतरामजी महाराज के गुणों का वर्णन किया।

२२ जनवरी पूज्य स्वामीजी खम्भात पधारे । वहां उन्होंने दो दिन अमृत वचनों की वर्खा करते हुए कहा-

हरि स्मरन की सेज पर, सोय करो विश्राम ।
कह टेऊँ हरि जाप बिन, मिले न कब आराम ।।

प्रेमियो ! सच्चा सुख सांसारिक भोग भोगने में नहीं है । भोग तो रोग हैं । यदि आप आध्यात्मिक आनन्द प्राप्त करना चाहते हैं तो सदैव प्रभु का स्मरण करते रहें । प्रभु से सांसारिक पदार्थों की मांग न कर नाम पदार्थ की प्रार्थना करें ।

भोगत भोगत विषय रस, बीते जन्म अनेक ।

२४ जनवरी स्वामीजी वीरावल पधारे। वहां रात्रि को स्वामी लीलाशाह सोसायटी में उन्होंने सत्संग प्रवचन किये । २५ जनवरी पूज्य स्वामीजी ने प्रभासपाटण में प्राथमिक शाला के भवन की आधारशिला रखी और रात्रि को फिर वीरावल में अमृत वचनों की वर्खा की ।

२६ जनवरी प्रात: स्वामीजी ने वीरावल में सिन्धी हाई स्कूल का उद्घाटन किया। श्री नेवंदराम लोकवाणी ने स्वामीजी का स्वागत सत्कार किया । स्वामीजी ने उद्घाटन करते हुए कहा कि आप सिन्धी भाषा के प्रचार व प्रसार के लिए गांवों और नगरों में सिन्धी विद्या पाठशालाएं स्थापित करें। मातृभाषा की रक्षा भी जाति की रक्षा है मातृभाषा सिन्धी के माध्यम से ही अपने बच्चों को शिक्षा दें। स्वामीजी ने ५० हजार रुपये विद्यालय के लिए दान रूप में दिये ।

२६ जनवरी प्रात: स्वामीजी ने जुनागढ़ में धर्मशाला का उद्घाटन किया । रात्रि को राजकोट पधारे । उसी रात्रि एवं २७ जनवरी उन्होंने जवाहरभाई माटा के घर के प्रांगण में सत्संग प्रवचन किया। २८ जनवरी स्वामीजी जामनगर पधारे । वहां उन्होंने स्वामी टेऊँराम मंदिर में सत्संग प्रवचन किया । माता धनी ने उनका स्वागत सत्कार किया ।

अखिल सौराष्ट्र सिन्धी पंचायत का वार्षिक सम्मेलन ३० जनवरी रविवार के दिन जामनगर के दादू सिन्धी पंचायती धर्मशाला में आयोजित किया गया । स्वामीजी ने इस सम्मेलन की अध्यक्षता की । उन्होंने ज्योति प्रज्वलित कर सम्मेलन आरंभ किया । पंचायत के अध्यक्ष श्री नेवंदराम लोकवाणी ने स्वामीजी एवं अन्य आतिथियों का स्वागत किया। श्री मूलचन्द खट्टर, मंत्री ने पंचायत के कार्य पर प्रकाश डाला । उक्त सम्मेलन में पूज्य स्वामीजी ने कहा कि आप लोगों ने जो भी विचार

व्यक्त किये वे समाज की उन्नति के लिए महत्वपूर्ण हैं । इन विचारों पर चलने का प्रयास करेंगे तो सब सुखी होंगे । विवाह उत्सव या मंगनी के समय व्यर्थ खर्चा न करें, दिखावे से दूर रहें । दहेज और अन्य सामाजिक बुराईयों का परित्याग करें ।

१ फरवरी स्वामीजी पिम्परी पधारे । वहां स्वामी टेऊँराम मंदिर में रात्रि को उन्होंने सत्संग प्रवचन किया । २ फरवरी वे स्वामी चन्दनप्रकाशजी महाराज के पुण्य तिथि उत्सव के सम्बन्ध में पूना स्वामी टेऊंराम मन्दिर में आये । वहां उन्होंने तीन दिन अमृत वचनों की वर्खा करते हुए स्वामी चन्दनप्रकाशजी के गुणों का वर्णन किया । संत अनन्तप्रकाश ने आभार प्रदर्शन किया ।

कपलेश्वर महादेव मन्दिर कुर्ला, बम्बई की ओर से शिवरात्रि उत्सव के अवसर पर १८ फरवरी को स्वामीजी के नेतृत्व में शोभा यात्रा निकाली गई ।

पूज्य स्वामीजी ने दो दिन वहां सत्संग प्रवचन करते हुए भगवान श्री शंकर की महिमा गाई । रोहड़ा ब्रादर मंडल का वार्षिक उत्सव २७ फरवरी प्रात: ११ बजे आर्य समाज हाल घाटकोपर, बम्बई में पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में हुआ । स्वामीजी ने प्रवीण विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान करते हुए कहा कि एक दूसरे को आगे बढ़ाने का प्रयास करें । जो भी कुछ परमात्मा ने तुम्हें दिया है वह आपस में बांटकर खायें ।

दिखा के खाना शर्मिंदगी है ।
छिपा के खाना गंदगी है ।
बांट के खाना बंदगी है ।

जो छिपा के खाता है वह चोर है । यदि प्रभु ने तुम्हें कोई कला दी है तो उस कला द्वारा दूसरों का भी भला करें । माया दी है तो दुखियों को सुखी करने में माया सफल करें । अपने लिए जीना पशु जीवन है ।

प्रेम प्रकाश मण्डल की ओर से प्रथम बार होली उत्सव ब्रजभूमि में १७ मार्च से २९ मार्च पूज्य स्वामी शिवानन्दजी के आश्रम में आयोजित किया गया । इसी उत्सव के उपलक्ष्य में स्वामीजी १२ मार्च ब्रजभूमि

पधारे । पूज्य स्वामीजी एवं अन्य संत प्रतिदिन सत्संग प्रवचन करते थे। स्वामीजी भगवान श्री श्याम सुन्दर की लीलाओं के प्रसंग सुनाकर श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर देते थे । कई संत और हज़ारों प्रेमी इस उत्सव में सम्मिलित हुए । होली के दिन प्रेमियों ने भगवान के श्री विग्रहों, पूज्य स्वामीजी एवं संतो को रंगो से सराबोर किया । उत्सव का समापन करते हुए स्वामीजी ने कहा-

प्रेम भाव से होत वश, भक्त वत्सल भगवान ।
कह टेऊँ तांते करो, हरि से प्रेम प्रधान ॥

प्रेमियो ! प्रभु को प्रेम द्वारा ही प्राप्त कर सकते हैं । इसलिए सब बातों को छोड़कर प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ें । प्रेम का बड़ा महत्व है । परमात्मा प्रेम के वश में होता है । जब भक्त के मन में प्रभु के लिए असीम श्रद्धा व प्रेम होता है तब प्रभु उसे दर्शन देते हैं ।

कूरमदास जन्म से लंगड़ा था परन्तु उसके मन में भगवान हरि विठ्ठल के दर्शन की बहुत आकांक्षा थी । वह पैठण में रहता था। एक दिन उसने कथा श्रवण करते सुना कि कार्तिक एकादशी को पंढ़रपुर में जाकर भगवान हरि विठ्ठल के दर्शन करने का बड़ा महत्व हैं । उसके मन में तीव्र इच्छा पैदा हुई कि ऐसे अवसर वह पंढ़रपुर जाये । उसने लंगड़ाते-लंगड़ाते पंढ़रपुर की ओर प्रस्थान किया । रास्ते में कहीं खाना मिलता, कहीं नहीं मिलता परन्तु धीरे-धीरे वह पंढ़रपुर की ओर चलता रहा । कार्तिक एकादशी के एक दिन पूर्व सात कोस की शेष पद यात्रा करनी थी । उसने मन में सोचा कि कल तक पंढ़रपुर उसके लिए पहुंचना सम्भव नहीं है । दो महीने से लंगड़ाते-लंगड़ाते चलने से भी वह पंढ़रपुर कार्तिक एकादशी कें दिन पहुंच नहीं सकता ! रास्ते में हजारो श्रद्धालु प्रेमी 'हरिविठ्ठल' 'हरिविठ्ठल' की धुनि लगाते पंढ़रपुर जा रहे थे । कूरमदास के मन में कितनी न प्रभु दर्शन की प्यास थी। उसने रास्ते में किसी सज्जन से एक पत्र लिखवाया "प्रभु ! आप समर्थ हैं, शक्तिमान हैं, मैं अशक्त असमर्थ हूं । चाहते हुए भी मैं कार्तिक एकादशी के दिन पंढरपुर आपके स्थान पर पहुंच नहीं सकता। मैं लंगड़ा हूं आप कल रास्ते में ही अपने दिव्य दर्शन दीजिए, मेरी मनोकामना पूर्ण कीजिए ।" भक्त कूरमदास ने पंढ़रपुर जाते हुए एक

यात्री को यह पत्र देते हुए कहा कि कृपया यह पत्र भगवान श्री हरि विट्ठल के श्री चरणों में रखना । यात्री जब पंढ़रपुर में भगवान के मन्दिर में आया तब उसने भक्त कूरमदास का पत्र भगवान श्री हरि विठ्ठल के चरणों में रखा । कार्तिक एकादशी के दिन भगवान हरिविठ्ठल ने संत ज्ञानेश्वर, संत नामदेव के साथ भक्त कूरमदास को रास्ते में ही दर्शन देकर उसकी प्रेम पिपासा को शांत किया । भक्त कूरमदास भगवान एवं भक्तों का दर्शन कर अत्यन्त प्रसन्न हुआ । उसके नेत्रों से प्रेमाश्रु टपकने लगे। प्रेमियो ! आप भी प्रभु को प्रेम से याद करेंगे तो परमात्मा आपको अवश्य ही दर्शन देंगे ।

१४ अप्रेल १९८३ चेटी चांद के दिन जनता जनार्दन परिषद की ओर से स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम में सामूहिक यज्ञोपवीत का आयोजन किया गया । २५० बालकों को इस अवसर पर स्वामीजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि मां-बाप, गुरु एवं बड़ों की आज्ञा का पालन करते रहें और उनकी सेवा भी करते रहें । प्रतिदिन प्रार्थना से दिनचर्या आरंभ करें ।

प्रेम प्रकाश मंडल का ६२ वां वार्षिक उत्सव २६ से ३० अप्रैल अमरापुर स्थान जयपुर में आयोजित किया गया । इसके एक दिन पहले अर्थात् २५ अप्रैल को पूज्य स्वामी गुरुमुखदासजी महाराज का वर्सी उत्सव भी आयोजित हुआ । पूज्य स्वामीजी इस उत्सव के सम्बन्ध में २१ अप्रैल जयपुर में पधारे । २६ अप्रैल प्रातः पूज्य स्वामीजी ने ध्वज फहराकर उत्सव का शुभारंभ किया । २६ अप्रैल चैत्र मेले के उद्घाटन समारोह में उपस्थित विशाल जन समूह को सम्बोधित करते हुए पूज्य स्वामीजी ने कहा कि आज जिस तीव्र गति से समाज पतनोन्मुख हो रहा है । अधिकांश व्यक्ति पश्चिमी सभ्यता का अन्धानुकरण करने में लगे हुए हैं ऐसे समय मेंआप समाज में फैली हुई सामाजिक कुरीतियों को दूर करे एवं अपने में तथा दूसरे लोगों में सामाजिक एवं आध्यात्मिक चेतना को जगाएं ।

प्रभु परमात्मा की अपार कृपा एवं पुण्योदय से ही यह मानव योनि प्राप्त होती है । ८४ लाख योनियों में मात्र मानव योनि ही ऐसी योनि है जो कि भोग योनि के साथ-साथ कर्म योनि भी है । शेष सभी

योनियां भोग योनियां है। इस योनि के लिये देवतागण भी लालायित होते हैं। आप इस योनि में ही भगवान को प्राप्त कर सकते हैं। अर्थात् उस परमात्मा तत्व में लीन होकर के मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं।

''बड़े भाग मानुष तन पावा,
सुर मुनि सब ग्रन्थन गावा''

बड़े दुख की बात है कि आप ऐसी मानव देह जो कि भगवान द्वारा कृपा करके प्रदत्त की गई है उसको व्यर्थ में गंवा रहे हैं।

आज अधिकांश लोग मांस एवं मदिरा का सेवन कर रहे हैं एक समय के भोजन के लिए किसी निरीह प्राणी को उसके प्राणों से अलग कर देना सर्वथा अनुपयुक्त है और यह प्रकृति द्वारा नियत आहार भी नहीं है। अत: आप मांस एवं मदिरा का उपयोग करना छोड़ दें।

हम देख रहे हैं कि आज का युवावर्ग भारतीय संस्कृति को भूलता जा रहा है और कर्त्तव्यच्युत होकर पश्चिमी सभ्यता का अन्धानुकरण करने में व्यस्त है, दूरगामी परिणामों को देखते हुए युवा वर्ग से मेरा आग्रह है कि वे फैशन इत्यादि को छोहकर ''सादा जीवन उच्च विचार'' के सूत्र पर चलें।

स्वामीजी ने आगे कहा कि जिस प्रभु परमात्मा अखण्ड सच्चिदानन्द परिपूर्ण भगवान को प्राप्त करने के लिए यह अमोलक जीवन मिला है वह झूठ, पाप, कपट, ईर्ष्या जैसे पाप कर्मों में खो रहे हैं। हमारा जीवन कुछ तो पशुओं के समान और कुछ उनसे भी गिरा हुआ बीत रहा है। पशु भी समयानुसार, आवश्यकतानुसार व्यवहार इत्यादि करता है परन्तु आज के मानव की दिनचर्या ही कुछ और है। जिस मालिक ने मानव जीवन दिया, पालन पोषण की व्यवस्था की समस्त प्राणियों में श्रेष्ठतम स्थान दिया उसे आज का मानव भूलता जा रहा है।

सुख के क्षणों में आराम से रह कर ऐसा सोचता है कि मेरे जैसा कोई इस दुनियां में है ही नहीं परंतु यह सुख तेरा स्थायी नहीं है। कर्म का भोग क्षण में ही वह सुख, दुख में परिवर्तित हो जायेगा। दु:ख और सुख एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इसलिए अभी भी

समय है कल्याण स्वरूप आनन्द का धाम जो हरि का नाम है उसका क्षण-क्षण में स्मरण करें । अत: अपने जीवन दाता प्रभु परमात्मा का सदैव चिन्तन करें । जैसा कि सतगुरु महाराज ने प्रेम प्रकाश ग्रन्थ में भी कहा है-

कह टेऊँ संसार में बात यही है सार ।
भजन करो भगवान का छोड़ो विषय विकार ॥

अन्त में स्वामीजी ने कहा कि यह दुर्लभ मानव जीवन आपको खाने पीने या सोने के लिए नहीं मिला है अपितु भगवान से मिलने के लिए मिला है आप इतनी संख्या में यहां पर आए हुए हैं तो मेरा आप सभी से यह आग्रह है कि बाहर से पधारे हुए सन्त महात्माओं के प्रवचन सुने । मात्र सुनकर ही न रह जायें उस पर शांत चित्त होकर के थोडा-सा विचार करें और विचार कर उस पर मनन करेंगे और फिर आप अपने ज़ीवन में उतारेंगे तभी आप प्रवचन का लाभ उठा सकेंगे ।

सायंकाल को पूज्य स्वामीजी के नेतृत्व में शोभा यात्रा निकाली गई । चार दिन तक मंडल के संतों एवं अन्य महात्माओं ने अमृत वचनो की वर्खा की । २८ अप्रैल १९८३ को ६२ वे चैत्र मेले के अवसर पर ९-४५ से ११-३० बजे तक एक परिसंवाद का आयोजन किया गया । विषय था "राम नाम महिमा" (क्या नाम जप से पाप ताप नष्ट हो जाते हैं?) परिसंवाद में अनेकों वक्ताओं ने भाग लिया।

यह पंक्तियां लिखते समय मुझे एक दृष्टांत याद आ रहा है जो कि ग्वालियर के निकट कुरहे वाले बाबा रामदासजी महाराज अपने प्रवचनो में अक्सर सुनाया करते हैं कि अधिकांश व्यक्ति यह कहते हैं कि रामराम जपने से कुछ भी लाभ प्राप्त नहीं होगा । रोटी-रोटी कहने से किसी का पेट नहीं भरता । ऐसे व्यक्तियों को बड़ा अच्छा उत्तर देते हैं कि एक परिवार के सभी सदस्य घूमने के लिये बाहर चले गये । मात्र एक नौकर ही उनके घर रह रहा था कि रात्रि में उस घर में ५, ६ चोर आए नौकर ने सोचा अब क्या करूं? मैं तो अकेला हूं तब उस नौकर ने जोर से आवाज लगाई ओ रामू, मोहन, सोहन, माखन जल्दी से बन्दूक, कटार, भाला लाठी लेकर आओ

मकान में चोर आ गए हैं। जब चोरों ने इतना सुना और वे (चोर) भाग खड़े हुए। इस दृष्टांत से यह स्पष्ट हो जाता है कि नकली नामों से असली चोर भाग खड़े हुए तो उस प्रभु परमात्मा के असली नाम लेने से झूठे चोर (पाप, ताप, विकार इत्यादि) कैसे नहीं भागेगें। आज के युग में नाम का बहुत महत्व है।

परिचर्चा का शुभारम्भ करते हुए सन्त अनन्तप्रकाश (पूना) ने कहा कि कार्य करते समय नाम का स्मरण करने से जड़ वस्तु भी अपना भार प्रायः छोड़ देती है अर्थात् हल्की हो जाती है। जैसा कि आपने भी देखा होगा कुछ मजदूर एक साथ किसी वस्तु को उठाये जा रहे थे और मुख से "हुइया रे, हुइया रे" भी बोलते जा रहे थे। तब मैंने उनसे पूछा कि आप लोग जो मुख से 'हुइया रे' कह रहे हो इससे आपको क्या लाभ हो रहा है। तब उन्होंने एक ही स्वर में उत्तर दिया कि ऐसा कहने से हमें इस वस्तु का भार उतना महसूस नहीं हो रहा है जितना इसका वास्तविक भार है। अर्थात् हमें हल्की प्रतीत हो रही है और फिर अमंगल कलिकाल में तो जब कि यज्ञ, ज्ञान, तप, योग सबके लिए सम्भव भी नहीं है। आज इस युग में नाम का बहुत बड़ा महत्व है।

सत्यानन्दजी महाराज का विचार था कि परमात्मा के नाम का स्मरण करने से तो त्रिलोकी के साथ भगवान भी वश में हो जाते हैं। देखो द्रौपदी को जब राजसभा में नग्न करने का कुप्रयास किया जा रहा था तब द्रौपदी ने सच्चे हृदय से उस प्रभु को पुकारा, पुकार सुनकर प्रभु से रहा नहीं गया और राजसभा में द्रोपदी के चीर को इतना बढ़ाया कि दुष्ट दुशासन खींचता ही रहा। अन्ततः थक गया लेकिन द्रौपदी का चीर बढ़ता ही रहा। उस प्रभु परमात्मा के लिये कुछ भी असम्भव नहीं है। इसलिए आप सभी आज से ही प्रभु के नाम का स्मरण करने के लिये संकल्प लें और नित्य प्रति जितना समय आपके पास हो उतना एकान्त में बैठकर एकाग्रचित्त से उस प्रभु परमात्मा के पावन नाम का स्मरण करें प्रभु आपका कल्याण अवश्य करेगा।

संत भजनदास का मत था कि सभी प्रकार के यज्ञों में जप यज्ञ ही श्रेष्ठ है। प्रभु परमात्मा का नाम तो कल्पवृक्ष है जो सभी प्रकार की इच्छाओं की पूर्ति करने वाला एवं मोक्ष का दाता है। भगवान शंकरजी ने पार्वती से कहा है-

उमा कहूँ मैं अनुभव अपना।
सत हरि भजन, जगत सब सपना।
और कलियुग केवल नाम अधारा।
स्मर स्मर नर उतरंहि पारा॥

संत देव प्रकाशजी ने नाम की महिमा को बताते हुए कहा कि अन्तः शुद्धि का मुख्य साधन हरि कीर्तन ही है। इसके समान और कोई साधन नहीं है। जैसा कि गुरु महाराज जी ने भी कहा है-

कलियुग में हरिनाम है, सब साधन का सार।
कहे टेऊँ तिह सुमर के पाओ मोक्ष द्वार॥

स्वामी ब्रह्मानन्दजी का विचार था कि-

नामैव परमो धर्मो नामैव परमं तपः।
नामैव परमो बन्धुर्नामैव जगतां गतिः॥

उस प्रभु परमात्मा का नाम ही परम धर्म है, नाम ही परम तप है, नाम ही परम बन्धु है एवं नाम ही जगत् की गति है। नाम के समान कोई सम्पत्ति नहीं, नाम के समान कोई संग नहीं है अर्थात् नाम ही सर्वश्रेष्ठ है। जो मनुष्य कलियुग में हरि नाम की शरण ले चुके हैं वास्तव में वे ही धन्य हैं। नाम में तो यम के दूतों तक को भगाने की सामर्थ्य है। केवल एक बार कोई प्रेम से पुकारे, प्रभु कल्याण कर देते हैं।पापों के भंण्डार, अजामिल ने मरते समय अपने मुख से "नारायण" शब्द का उच्चारण किया (भले वह नाम उसके पुत्र का था) परन्तु प्रभु के पार्षदों ने यम के दूतों को भगाकर अजामिल का उद्धार किया।

संत मनोहरलाल जी ने बताया है कलियुग में इस असार संसार से पार होने के लिये नाम स्मरण के समान कोई अन्य सरल साधन नहीं है। परमार्थिक दृष्टि से तो नाम की महिमा जितनी कहें उतनी कम है परन्तु व्यवहारिक दृष्टि से भी नाम का प्रभाव कम नहीं है। जैसे एक स्थान पर कई व्यक्ति निद्रा में सो रहे हैं तो हम उनमें से जिसका नाम लेकर पुकारेंगे तो वही व्यक्ति उठकर खड़ा होगा। जब

निद्रावस्था में भी इसका इतना प्रभाव पड़ता है तो नित्य जाग्रत में नाम स्मरण का कितना प्रभाव होगा।

पूज्य सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज ने कहा कि भगवत नाम की महिमा अपार है उसका वर्णन जितना भी किया जाए थोड़ा हैं। शास्त्रों में नाम की महिमा का विस्तार से वर्णन किया गया है।

कृते यद् ध्यायतो विष्णु:त्रेपायां यजतो मखै:।
द्वापरे परिचर्यायां कलौ तद्धरिकीर्तनात्॥

सत्युग में ध्यान से त्रेतायुग में यज्ञ करने से तथा द्वापुर में भगवान की पूजा से जो कुछ फल प्राप्त होता है, वह सब कलियुग में भगवान के नाम कीर्तन मात्र से ही प्राप्त हो जाता है।

इस कलियुग में तो सिवा भगवान्नाम के दूसरा कोई साधन ही नहीं है, जो अमंगलों का नाश कर सके। भगवान का नाम ही सतत मंगलकारी है। "नाम राम को कलपतरु, कलि कल्याण निवास।"

इसलिए प्रेम सहित निष्काम भाव से निरन्तर भगवान् नाम का स्मरण करते रहो। क्योंकि सकाम नाम स्मरण से, जो इच्छा हो वह पूरी होगी और निष्काम नाम स्मरण से आपके पाप ताप आदि भस्म होंगे। जब तक जीवन है तब तक उस मंगलकर्ता पावन मधुर नाम का जप करते रहो, अवश्य ही आपका उद्धार होगा।

वास्तव में हमारे प्रत्येक शास्त्र में नाम की महिमा का वर्णन पढ़ने को मिलता है तथा बहुत से भक्तों एवं सन्तों ने भी नाम की महिमा को प्रतिपादित किया है। मीरा बाई ने एक बहुत अच्छा पद्य लिखा है :-

पायो री मैंने राम रतन धन पायो।

इस पद में आगे कहा-

खर्च न खूटे, चोर न लूटे, दिन दिन बढ़त सवायो।

नाम स्मरण एक ऐसी सम्पत्ति है जिसका कभी नाश नहीं होता, आपसे कोई उसको छीन नहीं सकता।

महाराष्ट्र के प्रसिद्ध सन्त नामदेवजी का भी नाम से बड़ा प्रेम था श्री नामदेवजी तो यहां तक कहते हैं-

जे न भजति नारायण ।

तिनका मैं न करो दरसन ।।

जो नारायण का भजन नहीं करते मैं उनको देखना भी नहीं चाहता। नाम की श्रेष्ठता को सिद्ध करते हुए कहा-

कंचन मेरु सुमेरु, हथ गज दीजै दाना ।

कोटि गऊ जो दान दे, नेहि नाम समाना ।।

सोने के पर्वत, हाथी और घोड़े का दान तथा करोड़ों गायों का दान, नाम के समान नहीं है । ऐसा नाम अपनी जीभ पर रखो, जिससे जरा और मृत्यु पुनः न हो ।''

३० अप्रैल प्रभात को पूज्य स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा-'

सत्गुर के निज नाम को, सुमरो श्वासों श्वास ।

कह टेऊँ जिस स्मरते, टूटे यम की फांस ।।

प्रेमियो पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज द्वारा दिये गये गुरु मंत्र का नियमित अभ्यास करें । उसी मंत्र का जाप करते करते आप जीवन मुक्त हो जायेंगे । मानव जीवन की सार्थकता भगवद् भजन करने में है । नाम स्मरण के लिए वैराग्य वृत्ति आवश्यक है । वैराग्य वृत्ति के कारण मन की वृत्ति भगवद् स्मरण में लगेगी । कभी कभी पूर्व जन्मों के संस्कारों के कारण वैराग्य वृत्ति उत्पन्न होती है तो कभी संसार की नश्वरता का अनुभव कर वैराग्य की भावना पैदा होती है । कभी परतंत्रता की स्थति में भी मन ऊब जाता है ।

एक राजा बहुत ही विलासी था, विषय भोगों में उसकी आसक्ति रहती थी, किन्तु उसका मंत्री चरित्रवान और ईमानदार था । एक दिन वह मंत्री राजा से कुछ सलाह करने गया तो द्वारपाल ने राजा को जाकर मंत्री के आने की सूचना दी । राजा उस समय रानियों के साथ मनोरंजन कर रहा था । राजा ने द्वारपाल से कहा ''मंत्री से कहो कि कुछ समय के बाद मैं आता हूं ।'' द्वारपाल ने मंत्री को राजा का उत्तर सुनाया । राजा, रानियों से प्रेमालाप करता ही रहा, मंत्री उसकी प्रतीक्षा करते-करते थक गया । उसका मन मंत्री पद से ऊब गया ।

उसने विचार किया कि अब राजा की परतंत्रता से क्यों न मुक्त होकर भगवद् भजन करूं । इतने वर्ष मैंने राजा की नौकरी की है । मंत्री के मन में गौतम बुद्ध के समान वैराग्य वृत्ति उत्पन्न हुई । वह तत्काल ही मंत्री पद को त्याग कर जंगल चला गया और वहां भगवद् भजन करने लगा । राजा बहुत समय रानियों से भोग विलास करने के पश्चात् बाहर आया और उसने द्वारपाल से पूछा मन्त्री कहां है? द्वारपाल बोला "महाराज ! मन्त्री आपकी प्रतीक्षा कर लौट गया ।" दूसरे दिन भी मन्त्री राज दरबार में नहीं आया, तीसरे दिन भी वह नहीं आया । राजा ने जांच की कि मंत्री कहाँ गया है? उसे पता चला कि वैराग्य वृत्ति के कारण वह जंगल में चला गया है । राजा ने चरित्रवान और ईमानदार मन्त्री की कमी अनुभव की । राजा पांचवे दिन अपनी रानियों के साथ जंगल में गया । उसी समय मन्त्री भगवद् मजन में बैठा था। राजा ने उसे सम्बोधित करते हुए कहा "आप मन्त्री पद त्याग कर यहां जंगल में बैठे हैं, आपको यहां क्या मिलेगा? मन्त्री ने नम्रता से कहा "राजन् ! मैं यहां बहुत ही आनन्द में बैठा हूं, किसी भी प्रकार की परतंत्रता नहीं । जीवन के कई अमूल्य वर्ष मैं आपकी खुशामद करता रहा अब जीवन की शेष घड़ियां मैं प्रभु के श्री चरणों में सफल करना चाहता हूं । यहां मुझे आये केवल पांच दिन हुए हैं, पांच दिन भगवद् भजन करने से मुझे कितना न लाभ हुआ है । इसके पूर्व मैं राजमहल के द्वार पर आकर आपकी प्रतीक्षा करता था तब भी आप ध्यान नहीं देते थे । अब आप न केवल स्वयं यहां आये हैं अपितु अपनी रानियों एवं सभासदों के साथ मेरे पास आये हैं । मंत्री का यह उत्तर सुनकर राजा की आंखें खुल गईं और उसके मन में भी वैराग्य वृत्ति उत्पन्न हुई । राजा भी शासन का त्याग कर राजकुमारों को पद सौंपकर मन्त्री के साथ भगवद् भजन करने लगा । प्रेमियो ! भगवद् स्मरण के लिए वैराग्य की भावना अत्यन्त आवश्यक है ।

चैत्र मेले के अवसर पर सम्प्रदाय की मासिक पत्रिका "प्रेम प्रकाश संदेश" द्वारा "सेवा धर्म" विशेषांक प्रकाशित किया गया, जिसका ३० अप्रैल को पूज्य स्वामीजी द्वारा प्रात:कालीन सत्संग सभा में विमोचन किया गया ।

६ मई पूज्य स्वामीजी इन्दौर पधारे । वहां प्रेम प्रकाश मंदिर में

पूज्य स्वामी मुरलीधर महाराज की पुण्य तिथि उत्सव के सम्बन्ध में उन्होंने चार दिन सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामी मुरलीधर महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित की । २० मई पूज्य स्वामीजी कवि पहिलाजराम की पुण्यतिथि उत्सव के सम्बन्ध में देवलाली पधारे । वहां बाबाजी के बाग में उन्होंने दो दिन अमृत वचनों की वर्खा करते हुए कवि पहिलाजराम के गुणों का वर्णन किया । संत नारायणप्रकाश ने आभार प्रदर्शन किया।

संत पहिलाजप्रकाश ने प्रेम प्रकाश मंदिर, कुमार नगर, धुलिया में भगवान और पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा उत्सव आयोजित किया । इसी उत्सव के उपलक्ष्य में पूज्य स्वामीजी ५ जून धुलिया पधारे । उनके सम्मान में जुलूस निकाला गया । श्री मेंघराज रेलन एवं संत पहिलाजप्रकाश व प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत सत्कार किया । पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि इन मूर्तियों को आप साक्षात भगवत् स्वरूप मान कर पूजा प्रार्थना करें तो आपका कल्याण होगा ।

पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज के पुण्य तिथि उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी मंडली सहित १४ जून आदर्शनगर अजमेर स्वामी माधवदास के स्थान पर पधारे । उन्होंने वहां पांच दिन प्रातः एवं सायं को सत्संग प्रवचन किये । सुधार सभा अजमेर की ओर से डी.जी. मयाणी अस्पताल के लिए प्लॉट खरीदा किया । १६ जून प्रातः ११ बजे पूज्य स्वामीजी वहां पधारे । सभा के प्रधान दादा दीपचन्द्र बेलाणी ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत करते हुए सभा के सेवा कार्यों पर प्रकाश डाला । स्वामीजी ने सभा के कार्य कर्ताओं को साधुवाद देते हुए कहा कि जनता की सेवा ही जनार्दन की सेवा है । सेवा व उपकार के कार्य कर जीवन सफल करें । भगवानदास मयाणी को भी साधुवाद है कि वे परोपकार के कार्यां में धन सफल कर रहा। पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज के पुण्य तिथि उत्सव का समापन करते हुए स्वामीजी ने कहा-

काम करो विचार के, नाम जपो चित लाय ।
दान करो दिल खोलके कह टेऊँ सुख पाय ।।

प्रेमियो ! आप यदि सुखी रहना चाहते हैं तो जो भी काम करें वह सोच विचार के पश्चात् करें । अशुभ कर्म दुख का मूल है । इसलिए अशुभ कर्मों से दूर रहकर शुभ कर्म करें । प्रेम से नाम स्मरण करें और विशाल हृदय होकर दान पुण्य करें । दान पुण्य निष्काम भावना से करें । ऐसा करने से आपको आनन्द का अनुभव होगा । आनन्द माया संग्रह में नहीं है । सच्चा आनन्द त्याग में है, देने में है, लेने में नहीं । जो कुछ प्रभु ने आपको दिया है वह दूसरों का भला करने में सफल करें । स्वामी जी २२ जून सिन्धुनगर आश्रम में लौट आये।

पूज्य स्वामीजी विरक्त स्वभाव वाले सत्पुरुष थे । उन्हें जो कुछ भी भेटाएं मिलती थी, वे संत देवप्रकाश को या कोठारी को दे ते थे । वे अपने जेब में थोड़े से छुट्टे पैसे बालकों को बांटने के लिये रखते थे या कोई खर्ची मांगता था तो उसको देते थे । एक बार स्वामी जी गांधीनगर कोल्हापुर में रात्रि को सत्संग समाप्त कर साढ़े १२ बजे विश्राम कर रहे थे तब उनके साथ में श्री प्रभदास वाधवा थे । संत देवप्रकाश किसी कारण नहीं जा सके थे । प्रभदास उसी समय रात्रि को पूज्य स्वामीजी को मिली हुई माया गिनती करने लगा । स्वामीजी ने पूछा "प्रभु ! तुम अब यह क्या कर रहे हो?" प्रभुदास ने कहा "आपने जो कुछ पैसे दिये हैं, गिनती कर रहा हूं ।" स्वामीजी ने कहा मैंने जैसे तुम्हें पैसे दिये, तुम भी उसी प्रकार दूसरे प्रेमी को यह काम सौंप देते । वह गिनती करके बताता, तुम क्यों यह जंजाल सिर पर ले रहे हो । हम क्या यहां माया संग्रह के लिए आये हैं? यदि गिनती करने वाले कुछ पैसे ले भी ले तो क्या ! यहां की माया यहां

पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज ने एक बार कहा था यदि संत होना चाहते हो तो माया की गिनती कभी न करना और न कभी माया का चिन्तन करना चाहिए। संतो को प्रभु चन्तन ही करना चाहिए।

पूज्य स्वामीजी के पास कई प्रेमी आते रहते थे, वे स्पर्श से ही उन्हें पहचान लेते थे । एक बार श्री ब्रजलाल हीराणी सिन्धु नगर आश्रम में स्वामीजी से मिले, तत्पश्चात् वे दो घण्टे वहां पलंग के नज़दीक खड़े रहे । अचानक स्वामीजी ने उससे कहा "थक जाओगे, बैठ जाओ। ब्रजलाल यह सुनकर विस्मय में पड गये कि उसके खड़े होने का अहसास स्वामीजी को कैसे हुआ ! उसी दिन से ब्रजलाल के मन में स्वामीजी

के प्रति श्रद्धा बढ़ती गई । उसने अनुभव किया कि पूज्य स्वामीजी अन्तर्यामी हैं ।

ब्रजलाल हीराणी ने कोल्हापुर जिले के गरींगलिज नगर में शक्कर का ठेका लिया । इस व्यवसाय में वह नया था, उसे अनुभव नहीं था । इसलिए शक्कर के व्यवसाय में उसे नुकसान होने की सम्भावना थी । वह पूज्य स्वामीजी में विश्वास रखकर उनके पास आया कि उनकी कृपा दृष्टि से नुकसान नहीं होगा । उसने स्वामीजी से जल पढ़ाकर वह जल व्यवसाय स्थल पर छिड़काया । प्रभु एवं सत्गुरु महाराज की कृपा से उसे शक्कर के व्यवसाय में नुकसान तो नहीं, मुनाफा हुआ। ततूपश्चात् वह जो भी धंधा व्यवसाय करता था, पहले स्वामीजी से आज्ञा व आशीर्वाद लेकर ही कार्य आरंभ करता था ।

पूज्य स्वामीजी के पास कई सवाली आते थे, स्वामीजी उन्हें कहते थे कि मंदिर में जाकर भगवान और सत्गुरु महाराज की मूर्तियों को प्रणाम कर प्रार्थना करें, भगवान भला करेगा । जो भी स्वामीजी के इन वचनों में विश्वास रखकर प्रार्थना करता था उसे सफलता मिलती थी ।

चन्द्र कन्हैयालाल पहूजा को पहले दो पुत्रियां थीं। उसकी मां लच्छीबाई ने स्वामीजी से प्रार्थना की कि चन्द्र आपका बालक है, कृपया उसे पुत्र संतान के लिए आशीर्वाद करें । स्वामीजी ने एक फल पढ़कर लच्छीबाई को देते हुए कहा कि यह फल चन्द्र और उसकी पत्नी को खिलाना सत्गुरु महाराज भला करेंगे । ईश्वर की कृपा एवं सत्गुरु महाराज के आशीर्वाद से चन्द्रलाल पहूजा को पुत्र संतान हुई ।

एक बार श्री कन्हैयालाल पहूजा की फैक्ट्री एस. आर. प्रोसेस, घाटकोपर बम्बई के चारों ओर अन्य फैक्ट्रियों को आग लग गई । एस. आर. प्रोसेस फैक्ट्री को भी आग लगने की सम्भावना थी । कन्हैयालाल और उसके सुपुत्रों शंकरलाल, चन्द्रलाल, राम, लक्ष्मण ने उसी समय पूज्य स्वामीजी का ध्यान कर प्रार्थना कि के आप ही अब हमारी फैक्ट्री की रक्षा करें । जैसे ही उन्होंने प्रार्थना की तो हवा का रूख बदल गया और उनकी फैक्ट्री आग की लपटों से बच गयी । सत्गुरु महाराज ने रक्षा की ।

एक बार तुलसीदास मोटवाणी का बेटा रमेश चलती लोकल गाड़ी से गिर पड़ा। रात को मां-बाप न बेटे की प्रतीक्षा की किन्तु बालक तो अस्पताल में था। तुलसीदास बम्बई गये वहाँ उसने पुत्र के लिए जांच की कि वह कहां चला गया है? परन्तु उसे पुत्र के सम्बन्ध में कुछ पता नहीं चला। ऐसे खोज करते करते पांच दिन बीत गये। परिवार के सदस्य व सम्बन्धी बहुत चिन्तित हुए। रमेश के भाई परमानन्द मोटवाणी ने स्वामीजी से विनती की "मैं भाई रमेश को ढूंढ़ने के लिए जा रहा हूं। आप कृपया आशीर्वाद करें जिससे उसका पता ज्ञात हो सके। स्वामीजी ने उसे कहा, "अभी भारी वर्षा हो रही है, तुम घबराओ नहीं, कल आप ही रमेश का पता लग जायेगा।" परमानन्द ने परिवार के सम्बन्धियों को स्वामीजी की आज्ञानुसार सांत्वना दी। दूसरे दिन सिविल अस्पताल थाना का एक आदमी घर में ही रमेश की दुर्घटना का समाचार सुनाकर गया कि रमेश सिविल हॉस्पीटल में दाखिल है। स्वामीजी का कहना सत्य हुआ। अस्पताल में रमेश की स्थति गंभीर थी। डाक्टर ने कहा कि इसको ठीक होनें में तीन चार महीने लग जायेगे। उसे यहां तीन चार महीना रहना पड़ेगा। तुलसीदास मोटवाणी, स्वामीजी से जल पढ़ाकर और गौ माता के चरणों की रज साथ में लेकर सिविल अस्पताल थाना में गये। उसने स्वामीजी का जल रमेश को श्रद्धा से पिलाया और जहां शरीर में घाव थे वहां गौ रज लगाई। प्रभु की कृपा एवं स्वामीजी के आशीर्वाद से रमेश एक सप्ताह में ही स्वस्थ होकर अपने घर सिन्धुनगर में लौट आया। श्री तुलसीदास के परिवार का पूज्य स्वामीजी में पूर्ण विश्वास था।

२ जुलाई १९८३ रात्रि को स्वामीजी ने मण्डली सहित हांगकांग के लिए प्रस्थान किया। स्वामीजी के साथ सँत देवप्रकाश, संत अनन्त प्रकाश, श्री हरिगुनलाल एवं ज्ञानलाल थे। हांगकांग हवाई अडडे पर संत नामदेव, हैरी वाधवाणी, गोपालदास, तोलराम एवं अन्य प्रेमियो ने उनका स्वागत सत्कार किया। वहां प्रेम प्रकाश मन्दिर में उन्होंने २५ जुलाई तक सत्संग प्रवचन किये।

एक दिन हांगकांग में श्री हैरी वाधवानी स्वामीजी को अपने कार्यालय

में ले गया । वहां स्वामीजी ने कबूतरों की आवाज सुनी । उन्होंने हैरी वाधवानी से पूछा कि इतने कबूतरों की आवाज क्यों आ रही है? हैरी वाधवानी बोले "स्वामीजी नज़दीक ही कोई कसाई कबूतरों को काट रहा है । स्वामीजी ने उसी समय हरी वाधवानी को कसाई के पास भेजा और कहा कि कबूतरों को मत मारो, तुम्हारे पास जितने भी कबूतर हैं, हमें बेच दो । कसाई के पास शेष २१ कबूतर थे, जिनको वह मौत के घाट उतारने वाला था । दयालु स्वामीजी ने २१ कबूतर उस कसाई से खरीद कर उन्हें आकाश में उड़ा दिया । पूज्य स्वामीजी के मन में न केवल मानव मात्र के लिए प्रेम व करुणा थी, अपितु पशु, पक्षियों को भी वे प्यार करते थे ।

उसी दिन स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि प्रतिदिन पशु पक्षियों की सेवा भी करें । आप उन पर दया करेंगे तो प्रभु आप पर दया करेगा । एक गरीब पति-पत्नी थे, वे परिश्रम कर उदर पूर्ति करते हुए झोपड़ी में रहते थे । झोपड़ी खुली हुई थी, पक्षी अन्दर आकर अन्न के दाने खाते थे । पक्षी पेट भर अन्न खाकर प्रसन्न रहते थे । पति- पत्नी पक्षियों के खाने से खुश रहते थे । एक बार पक्षियों के राजा हंस ने उन पक्षियों से समाचार पूछा । पक्षियों ने बताया कि वे प्रतिदिन एक गरीब की झोपड़ी में जाकर अन्न खाते हैं । आप बतायें वह गरीब धनवान कैसे हो? हंस ने पक्षियों से कहा कि तुम उसके अन्न के कुछ दाने चुगकर संतों के भंडारे में डाल के आओ तो संतो के मुख में उस गरीब का अन्न पड़ेगा । संतो की कृपा से वह गरीब धनवान हो जायेगा ! पक्षियों ने हंस की आज्ञा का पालन किया । कुछ ही दिनों में उस गरीब का सितारा चमका और वह गरीब से अमीर बन गया । झोपड़ी के स्थान पर नया भवन बन गया । पक्षी अन्न खाने के लिए उनके नये मकान में आते, थोड़ा सा कचरा करते तो उस धनवान की पत्नी लाठी उठाकर उन्हें भगाती या कभी मार भी देती । पति ने पत्नी को समझाया कि पक्षियोंको मारो मत, भगाओ मत, उन्हीं के आशीर्वाद से हम धनवान हुए हैं, किन्तु पत्नी नहीं मानी। पति फिर भी पक्षियों को खिलाता रहा । पत्नी के घमण्डी व हठी

स्वभाव के कारण पति ने भी एक दिन पक्षियों को लाठी मारी। पक्षी बहुत दुखी हुए। पक्षियों ने हंस को जाकर कहा कि आपकी सलाह के अनुसार हम उस गरीब के अन्न के कुछ दाने संतों के भण्डारे में जाकर डालते थे। संतों की कृपा से वह गरीब शीघ्र ही धनवान हो गया। अब पति-पत्नि इतने तो घमण्डी हो गये हैं कि हमें खाने से रोकने के लिए लाठी मारते हैं। हंस ने कहा "घबराओ नहीं, अब तुम संतो के भंडारे के अन्न के कुछ दाने चुनकर उस धनवान के अन्न में मिला दो तो वह धनवान फिर गरीब हो जायेगा। पक्षियों ने हंस की आज्ञा का पालन किया। जैसे जैसे पति-पत्नि ने संतो के अन्न के दाने खाये वैसे वे धनवान से फिर निर्धन होते गये। उन्हें नया मकान भी बेचना पड़ा फिर वे झोपड़ी में रहने लगे।

प्रेमियो! पशु पक्षियों को नियमित अन्न खिलाएं पिलाएं वे प्रभु की मूक संतान है। उनके खाने से अप्रसन्न नहीं होना चाहिए। यदि आप उनकी सेवा करेंगे, देखरेख करेंगे तो प्रभु आपकी देखरेख करेगा। जितना हो सके संतों के दर का खाना नहीं खायें। लालचवश अधिक अन्न ग्रहण न करें, प्रसाद रूप में थोड़ा सा स्वीकार करें।

हांग कांग में कुछ प्रेमियों ने स्वामीजी से पूछा, "सत्गुरु महाराज! हम आपको बहुत याद करते हैं, क्या आप भी हमें याद करते हैं?" स्वामीजी ने कहा "प्रेमियो! सत्य बताऊँ तो मैं आपको याद नहीं करता हूं। प्रेमियों ने पूछा ऐसा क्यों! स्वामीजी ने पूछा "आप लोग मुझे क्यों याद करते हैं! प्रेमियो ने कहा कि आप भगवान की भक्ति करते हैं, सदैव उसे याद करते हैं। इसलिए हम आपको याद करते हैं।" स्वामीजी ने कहा कि यदि मैं भगवान का स्मरण छोड़कर आप लोगों को याद करूं तो मैं भी आप जैसा हो गया। पता नहीं कितने जन्म ऐसे बीत गये हैं।

बहुत जन्म बिछुड़े थे माधव, यह जन्म तुम्हारे लेखे।

मानुष जन्म में भी अब यदि प्रभु से प्रेम का नाता नहीं जोड़ा तो कब उनका स्मरण करेंगे। २५ जुलाई हांग कांग में अन्तिम सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामीजी ने कहा कि पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी

महाराज एवं पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के सिद्धांतों और शिक्षाओं के अनुसार चलने का प्रयास करें। नाम स्मरण करें व परोपकार के कार्य करें। मनुष्य की महानता उसके किये हुए सत्कर्मों से होती है। पिछड़ी जाति में भी जन्म लेकर कुछ लोगों ने अपने पुरुषार्थ व शुभ कर्मों से महान पद प्राप्त किया है।

एक बार ऋषि गौतम के गुरुकुल में एक गरीब बालक आया उसने विनम्रता से कहा "गुरुदेव मैं आपके श्रीचरणों में बैठकर विद्या ग्रहण करना चाहता हूं।" ऋषि गौतम ने बालक से पूछा "बालक ! तुम कहां से आये हो और यहां किस प्रकार पहुंचे? तुम्हारी जाति क्या है? तुम्हारे पिता का नाम क्या है? क्योंकि तुम्हें जाति के अनुकूल गुरुकुल में प्रवेश मिलेगा।"

बालक ने कहा "गुरुदेव ! मेरा नाम सत्यकाम है। मुझे पिताजी एवं जाति की कुछ जानकारी नहीं, मैं अपनी माता के साथ यहां से तीन-चार कोस की दूरी पर नदी किनारे रहता हूं। वहां से मैं पैदल यहां आया हूं। मुझ पर दया दृष्टि कर गुरुकुल में प्रवेश दें। ऋषि गौतम बालक की विनम्रता, मर्यादा एवं विद्या अध्ययन में रुचि देखकर, प्रसन्न हुए और उससे कहा "बालक ! तुम अपनी माता से अपने पिता का नाम व जाति पूछकर आओ, भगवान तुम्हारी इच्छा पूर्ण करेगा।

संध्या हो रही थी। मां बालक की प्रतीक्षा कर रही थी। बालक ने जैसे ही घर में प्रवेश किया तब माता ने उसे गले लगाकर पूछा "बेटा ! क्या गौतम ऋषि ने तुम्हें गुरुकुल में प्रवेश दियाँ। बालक ने कहा "मां ! ऋषि गौतम ने पूछा है कि मेरे पिता का नाम और हमारी जाति क्या है? इसलिए मुझे पिताजी का नाम व जाति बताओ। यह सुनकर माता घबरा गई? माता ने कहा "बेटा गरीबी के कारण दर-दर की ठोकरें खाकर मैं किसी की शिकार हो गई? तुम्हारे जन्म लेने के पश्चात् मैं मेहनत मजदूरी कर तुम्हारा पालन पोषण करती रही। हम निम्न जाति के हैं। ऐसा कहते-कहते उसकी आंखों में आँसु आ गये और उसने बेटे सत्यकाम को अपने सीने से लगा लिया।

प्रातः बालक सत्यकाम माता को प्रणाम कर पाठशाला में प्रवेश लेने के लिए पैदल निकल पड़ा । दो घण्टे के पश्चात् वह ऋषि गौतम के गुरुकुल पहुंचा । उसने गुरुदेव को प्रणाम करके कहा, "कृपया ! मुझे अपने गुरुकुंल में प्रवेश दें । ऋषि गौतम ने कहा कि बेटा ! पहले मेरे कल के प्रश्नों के उत्तर दो तो तुम्हें पाठशाला में प्रवेश मिलेगा। सत्यकाम माता के कहने अनुसार बोला "मुझे पूज्य पिता के नाम की जानकारी नहीं और हम निम्न जाति के हैं । विद्या ग्रहण करने की तीव्र इच्छा है, गुरुदेव मेरी इच्छा पूर्ण करें ।" ऐसा कहते कहते बालक सत्यकाम का कंठ रुंध गया और उसकी आंखों में आंसू आ गये, उन्होंने सत्यकाम को गले लगाकर उसके आंसू पोंछे और कहा "बेटा ! तुम घबराओ नहीं, आज से ही तुम्हें गुरुकुल में प्रवेश दिया जाता है ।" गुरु के वचन सुनकर सत्यकाम फूला न समाया । वह गुरुदेव की श्रीचरणों पर गिर पड़ा और उसके नेत्रों से खुशी के आंसू गुरुदेव के चरणों पर टपके !"

प्रेमियो ! सच्चा गुरु शिष्य की जात, पात, अमीरी, गरीबी नहीं देखता । वह देखता है नम्रता, निष्ठा, सद्भावना, स्नेह व श्रद्धा । आप भी गुरु के दर पर विश्वास व श्रद्धा रख कर आओ तो वह आपको गुरुमंत्र की दीक्षा देकर मोक्ष का मार्ग बतायेंगे ।

सत्गुर शरनी जायके मांगो मुक्ति दान ।
कह टेऊँ जिस पायके होवे तव कल्याण ।।

२६ जुलाई स्वामीजी मण्डली सहित मनीला पधारे वहां उन्होंने हिन्दु मन्दिर में १४ अगस्त तक भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज, पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के जीवन सम्बन्धी प्रसंग सुनाकर व्यवहार व आध्यात्मिक उन्नति के लिए मार्ग दर्शन किया । एक दिन उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा-

सर्व पदार्थ जगत् में दीन्हा जहं करतार ।
टेऊँ तहं जो ना जपे, तांको है फटकार ।।

प्रेमियो ! परमात्मा ने आपको यह अमूल्य मानुष तन व अनेक पदार्थ दिये हैं फिर भी आप उस प्रभु का नाम स्मरण नही करेंगे तो

इस जीवन का क्या लाभ? सांसारिक काम काज करते प्रभु को नहीं भूलें। निष्काम भावना से प्रभु से प्रार्थना करते रहें, किसी न किसी दिन प्रभु आपकी प्रेम भरी पुकार अवश्य सुनेंगे।

प्रभु अपने भक्तों की इच्छा पूर्ण करता है, परन्तु उसमें स्वार्थ की भावना नहीं हो। भक्त अल्लाहजी तीर्थ यात्रा करते-करते एक राजा के बाग में आया। वहां पर एक आम के पेड़ के नीचे बैठकर भगवान की मूर्ति रखकर प्रार्थना करने लगा। पूजा उपासना के पश्चात् उसने उसी वृक्ष में आम देखकर सोचा कि इन आमों का प्रभु को भोग लगाऊँ। उस भक्त ने माली से कहा कि दो तीन आम तोड़कर दो तो भगवान को भोग लगाऊँ। माली ने कहा यदि तुम्हें आम चाहिए तो तुम पेड़ कर चढ़कर आम तोड़के आओ। वृक्ष की टहनियां ऊपर थी। भगवद् कृपा से उस वृक्ष की एक आमों वाली डाली भगवान की मूति के सामने झुक गई। भक्त अल्लाहजी ने उस डाली से चार आम तोड़कर भगवान को भोग लगाया। यह चमत्कार देखकर माली विस्मय में पड़ गया कि वृक्ष की डाली अचानक ऐसे क्यों झुक गई। माली ने राजा के पास जाकर यह घटना सुनाई। राजा शीघ्र ही बगीचे में आया और उसने भक्त अल्लाहजी को नतमस्तक प्रणाम किया। राजा भक्त का दर्शन कर प्रसन्न हुआ। भक्तों की प्रार्थना व सकंल्प में शक्ति होती है। प्रेमियो ! आप भी सदैव शुभ संकल्प करें और निष्काम भावना से प्रभु की प्रार्थना करें।

१४ अगस्त मनीला के हिन्दु मन्दिर में समापन प्रवचन करते हुए पूज्य स्वामीजी ने कहा कि प्यारे गेनाराम दादलाणी ने इस मन्दिर की स्थापना के लिए बहुत ही पुरुषार्थ किया। उसके मन में संतों महात्माओं के प्रति अगाध श्रद्धा थी। वह सद् गृहस्थ भक्त था। उसके मन में दीन दुखियों के प्रति भी दया भावना थी। प्रेमियो ! आप भी इस पवित्र स्थान पर नाम स्मरण करें, कथा श्रवण कर लाभान्वित हों। प्रभु का कोई भी नाम श्रद्दा व प्रेम के साथ जपते रहें।

हरि के मंत्र अनन्त हैं, जा में श्रद्धा होय।
कह टेऊँ नित प्रेम से जपले मंत्र सोय ॥

किसी न किसी संत महात्मा का संग करें, वह आपके जीवन को

नया मोड़ देगा । आपको माया के प्रपंच से हटाकर प्रभु का दिव्य दर्शन कराएगा ।

कह टेऊँ इस जगत में, जो चाहो. आराम ।
साधु संगति नित ही करो, सुमरो हरि का नाम ।।

१५ अगस्त पूज्य स्वामीजी सिंगापुर पधारे । वहां राम छुगाणी, इन्दिरा मंघाराम, इन्दिरा डीअलदास एवं अन्य प्रेयिमों ने उनका स्वागत सत्कार किया । वहां स्वामीजी ने सिन्धु हाऊस एवं बहन इन्दिरा मंधाराम के निवास स्थान पर ३० अगस्त तक सत्संग प्रवचन किया । सिंगापुर में एक दिन स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

दया दिल में राखीये, तू क्यों निर्दय होय ।
साईं के सब जीव हैं कीड़े कंजर सोय ।।

प्रेमियो ! आप में दया भावना होना आवश्यक है । दया के बिना मनुष्य कसाई है । पशु पक्षियों, अपाहिजों, दीन दुखियों पर दया दृष्टि करें । मनुष्य रसना के रस के लिए मांस खाते हैं । यह महापाप है, अखाद्य पदार्थ खाने से स्वास्थ्य भी बिगड़ता है और कई निर्दोष पशुओं का वध भी होता है । उनकी हत्या का पाप खाने वाले को लगता है । संत आपसे अनुरोध करते हैं कि इन पशु पक्षियों पर दया दृष्टि कर हिंसा का विरोध कर मांस खाना बंद करें । सभी प्राणियों को प्यार दें ।

एक बार संत हरिव्यासदेव अपने शिष्यों के साथ भक्ति का प्रचार करते पंजाब के गढ़यावल गांव में आये । उस गांव के बाहर देवी माता का बड़ा मन्दिर था, उसी मन्दिर के बाहर राजा की ओर से कई बकरे, बकरियां देवी माता पर बलि चढ़ाने के लिए बंधी हुई थीं। यह जानकर संत हरिव्यास की आंखों में आंसू आ गये । संत दयालु होते हैं । संत ने विचार किया कि राजा कितना न निर्दयी है कि उसने देवी माता को प्रसन्न करने के लिए इतने निर्दोष पशुओं को मौत के घाट उतारने का आदेश दिया है । यह कैसी गलत धारण है ! किसी पशु की बलि चढ़ाने पर कोई भी देवता प्रसन्न नहीं होगा । ऐसे स्थान से शीघ्र लौट जाना चाहिए । वह संत अपने शिष्यों सहित वहां से

चला गया । उसी रात देवी माता ने राजा को नींद में आदेश दिया कि बकरों व बकरियों को मुक्त किया जाय । बलि चढ़ाना बन्द करो। मेरे भक्त संत हरिव्यास से क्षमा याचना कर उन्हें मन्दिर में लेकर आओ। भविष्य में भी कभी मेरे मंदिर में बलि नहीं चढ़वाना । राजा नींद में देवी माता के दर्शन पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ, उनके आदेशानुसार उसने सभी बकरियों एवं बकरों को प्रातः मुक्त कर दिया । वह राजा संत हरिव्यास के पास क्षमा याचना के लिए गया और उन्हें मन्दिर में ले आया । राजा ने माता का आदेश संत को सुनाया । राजा ने भविष्य के लिए भी पशु-वध और बलि चढ़ाने पर निषेध लगा दिया। संत हरिव्यास के दयालु स्वभाव के कारण कई पशुओं को जीवन दान मिल गया ।

३० अगस्त सिंगापुर में पूज्य स्वामीजी ने उपदेश करते हुए कहा कि बहन इन्दिरा मंघाराम एवं अन्य प्रेमियों को साधुवाद है जो विदेश में भी सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज की ज्योति जगा रहे हैं । सत्गुरु द्वारा दी हुई नाम की पूंजी को बढ़ाते रहो । रसना की सार्थकता नाम स्मरण में ही है । नाम स्मरण अति उत्तम कार्य है । पूज्य सत्गुरु महाराजजी भी नाम की महिमा गाते हुए कहते हैं-

मोती बिन शोभत नहीं, ज्यों सीपी जग मांहि ।
टेऊँ त्यों हरि नाम बिन, जिव्हा शोभत नांहि ।।

आप सांसारिक काम काज करते हुए, प्रभु को नहीं भूलें और शुभ कर्म करते रहें । शुभ कर्मों का फल सुखदाई होता है और अशुभ कर्मों का फल दुखदाई । अशुभ कार्मों से ऐसे दूर भागें जैसे सांप से दूर भागते हैं ।

३१ अगस्त पूज्य स्वामीजी जकार्ता पधारे । वहां स्वामीजी माता कृष्णा सामताणी के घर ठहरे । वहां उन्होंने २३ सितम्बर तक अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की । एक दिन उन्होंने उपदेश देते हुए कहा-

पूर्व पुण्य से मिलत है, सन्तों का सत्संग ।
कह टेऊँ जह सेवते, मिटहिं मस्तक अंग ।।

प्रेमियो ! पूर्व जन्म के कई पुण्य सत्कर्मों के फलस्वरूप मनुष्य को संतों का संग मिलता है। संतों महात्माओं की सेवा करने से भाग्य की रेखाएं भी बदल जाती हैं। संतो का संग आनन्दप्रद और वैकुण्ठ के समान सुखदायी होता है। कई संतों ने तो ऐसा भी कहा है कि ऋद्धियों व सिद्धियों को छोड़कर भी संतों का संग करना चाहिए। संतों के संग से नर्क भी स्वर्ग बन जाता है। मूर्खों के संग में स्वर्ग भी नर्क बन जाता है। मूर्खों व अज्ञानियों का संग दुखदाई है। प्रेमियो ! सब कुछ छोड़कर भी संतो का संग करें। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों का परित्याग कर अपने को राम नाम के रंग में सराबोर कर दें।

सत्संग का लाभ प्राप्त करते हुए सेवा व उपकार के कार्य भी करते रहें। तन, मन, धन से सेवा करें। मानव जीवन की सार्थकता नाम स्मरण में है। पैठण में एक बार अर्द्ध-रात्रि में संत एकनाथ के पास चार ब्राह्मण आये। वर्षा का मौसम था संत एकनाथ ने पत्नी को भोजन तैयार करने के लिए कहा। पत्नि ने कहा कि भोजन तैयार करने के लिए सूखी लकड़ियां नहीं हैं। संत एकनाथ ने अपनी चारपाई तोड़कर उन लकड़ों को जलाकर भोजन बनाने के लिए कहा, जिससे आये हुए ब्राह्मण भोजन खाकर विश्राम करें। संत एकनाथ के मन में कैसी न विलक्षण सेवा भावना थी।

संत एकनाथ ईख की खेती से लेकर उसकी बिक्री तक करते थे, इससे जो कुछ कमाई होती थी उससे घर की पालना करते थे। रास्ते में यदि कोई बालक उनसे ईख मांगता था तो वह अपनी कमाई का विचार न कर बालकों में ईख बांटते थे। सत्पुरुषों को दूसरों को प्रसन्न करने में ही आनन्द की प्राप्ति होती है। प्रेमियो ! आप भी दूसरों को सुखी करने का प्रयास करें। ऐसे उपकार के कार्य करने से आपको आनन्द का अनुभव होगा।

जकार्ता में पी. टी. बैंक सुकापुरा के मालिक श्री अर्जनदास दीपचन्द नानवाणी ने पूज्य स्वामीजी से प्रार्थना की "सतगुरु महाराज ! मैने आपको वातानुकूलित कार भेंट करने का संकल्प किया है, कृपया यह कार आप स्वीकार करें।" पूज्य स्वामीजी ने मुस्कराते हुए कहा "प्यारे

अर्जनदास ! आपको साधुवाद है कि आपने हमें वातानुकूलित कार भेंट करने का संकल्प किया है। किन्तु हम कार क्या करेगे?'' अर्जनदास ने फिर वही विनती की । तब पूज्य स्वामीजी ने उसे कहा कि तुम हमें कार के स्थान पर स्वामी सर्वानन्द अस्पताल के लिए ॲम्बुलंस दे दो जिसका उपयोग लाचार-बीमार रोगियों की सेवा में होगा । बीमारों की सेवा से हम भी प्रसन्न होंगे। श्री अर्जनदास ने स्वामीजी की इच्छानुसार स्वामी सर्वानन्द अस्पताल के लिए ॲम्बुलंस भेंटस्वरूप स्वामीजी के श्री चरणो में भेंट की । स्वामीजी दूसरों को सुखी करने का प्रयास करते थे, उन्हें अपने सुख की कभी चिन्ता नहीं रही । संत कितने न दयालु होते है ।

२३ सितम्बर स्वामीजी ने अंतिम सत्संग उपदेश देते हुए कहा कि प्यारे शंकर-गोप सामताणी, माता कृष्णा, अर्जनदास नानवाणी, दिलीप मीरचन्दाणी, रमेश मुरलीधर करनाणी, दीपक मुरलीधर करनाणी, लाल वास्वाणी एवं अन्य प्रेमियों को साधुवाद है, जो यहां पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज, पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज पूज्य स्वामी माधवदासजी की ज्योति जगाते रहे हैं । आप भाग्यवान हैं कि आपको ऐसी महान मूर्तियां गुरु रूप में प्राप्त हुई ।

सत्गुरु पूरन पाइया, होया कार्ज रास ।
कह टेऊँ मंगल भया, टूटी जम की फास ॥

प्रेमियो ! नियमित रूप से श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ की वाणी का पाठ करें । इसी वाणी की शिक्षा का जीवन में अनुसरण करें । डाक्टर की दवा का जब आप प्रयोग करेंगे तभी आप बीमारी से मुक्त होंगे, केवल दवा ले आने से कोई लाभ नहीं होगा । गुरु मंत्र रूपी औषधि का जब आप अभ्यास करेंगे तो आपको आत्मिक आनन्द की उपलब्धि होगी । नाम स्मरण के साथ-साथ सेवा व उपकार के कार्य कर जीवन सफल बनाएं ।

एक गुरुकुल में तीन विद्यार्थी पढ़ते थे । दो वर्ष पढ़ने के बाद गुरु ने उनके पुस्तकीय ज्ञान की परीक्षा ली और तीनों विद्यार्थी पुस्तकीय ज्ञान में उत्तीर्ण हुए । गुरु ने उन्हें कहा अब एक और परीक्षा तुम से लेनी है । ऐसे दस बारह दिन बीत गये । शिष्यों ने गुरुदेव से

घर जाने के लिए अनुमति मांगी । गुरु ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए घर जाने की अनुमति दे दी । ये तीनों विद्यार्थी सोचने लगे कि गुरु हमारी एक और परीक्षा लेना चाहते थे, उन्होंने वह परीक्षा तो ली नहीं ।

तीनों विद्यार्थी गुरुदेव को प्रणाम कर घर के लिए गुरुकुल से निकले। रास्ते में कांटे पड़े थे । उन तीनों विद्यार्थियों में से दो विद्यार्थी कांटों युक्त मार्ग छोड़कर दूसरे मार्ग से चलने लगे । शेष एक विद्यार्थी कांटों को हटाकर रास्ते को साफ करने लगा । उसके साथियों ने उससे कहा कि तुम क्यों मार्ग में पड़े कांटे हटा रहे हो? तुम भी हमारे साथ चले चलो । उस विद्यार्थी ने कहा "इस रास्ते से अन्य लोग भी गुज़रेंगे, कांटो के कारण वे इस मार्ग पर चल नहीं सकेंगे, उन्हें कांटे चुभेंगे और कष्ट होगा इसलिए मैं कांटे उठाकर रास्ता साफ कर रहा हूं ।" उसी समय उनके गुरु भी वहां आ पहुंचे । वे यह दृष्य देख रहे थे। गुरुदेव ने तीनों शिष्यों को बुलाकर कहा कि यह विद्यार्थी जो दूसरों के लिए कांटो भरा मार्ग साफ कर रहा है, परीक्षा में उर्त्तीण हुआ और आप दो विद्यार्थी अनुर्त्तीण हुए । विद्या-ग्रहण करने का उद्देश्य केवल धन संग्रह नहीं है, अपितु निस्वार्थी बनना, परोपकार के कार्य करना, दूसरों का दुख अपना दुख समझकर उसे दूर करना है । यह विद्यार्थी पथिकों के लिए मार्ग साफ कर रहा है, जिससे उन्हें कांटे नहीं चुभें । इसकी पढ़ाई सफल हुई । प्रेमियो ! आप भी संतो महात्माओं के उपदेश सुनकर उनका अनुसरण करने का प्रयास करें ।

२४ सितम्बर पूज्य स्वामीजी बैंकाक पधारे । वहां उन्होंने चार दिन सत्संग प्रवचन किया । एक दिन स्वामीजी ने उपदेश देते हुए कहा-

सदा कृपाल दुख पर हरिन, वैर भाव नहीं दोय ।
क्षमा ज्ञान सत् भाखहीं, हिंसा रहति जो होय ।।

संत सदैव दूसरों का दुख दूर करने के लिए वैर भाव का त्याग कर क्षमा, सत्य वचन, अहिंसा व धर्म का पालन करते हैं । वे न केवल इन गुणों का प्रचार करते हैं अपितु इन गुणों को अपने जीवन में अपनाते हैं । दूसरों को सुखी करने के लिए स्वयं कष्ट झेलते हैं। वर्धमान महावीर का शिष्य मेतार्य भिक्षा लेने के लिए राजगृह में गया।

राजगृह के बाहर राजगृह का स्वर्णकार, स्वर्ण के आभूषण बना रहा था, उसके समीप ही स्वर्ण के छोटे-छोटे कण पड़े थे । आये हुए साधू को भोजन देने के लिए स्वर्णकार भोजनालय में गया । उसके पीछे एक पक्षी सोने के उन छोटे कणों को अन्न के दानें समझकर उठाकर समीप की दीवार पर बैठ गया । यह दृश्य उस साधू ने देखा। जब वह स्वर्णकार भोजनालय से भोजन सामग्री लेकर लौटा तो उसने देखा कि स्वर्ण के छोटे कण नहीं हैं । उसने बिना विचारे ही संत से कहा कि यह चोरी तुमने की है, अभी चोरी किया हुआ स्वर्ण लौटाओ। साधु ने सोचा कि यदि मैं बताता हूं कि पक्षी स्वर्ण के कण अन्न के दाने समझकर उन्हें लेकर दीवार पर बैठा है तो वह स्वर्णकार पक्षी को फंसाकर उसे मार देगा। पक्षी की जान बचाने के लिए वह साधु मेतार्य शान्त रहा । स्वर्णकार ने साधु को शान्त देखकर समझा कि उसने ही चोरी की है । उसने संत को बहुत मारा पीटा और उसे बन्द करवा दिया । कुछ समय पश्चात् पक्षी ने वहां मल किया तो उस स्वर्णकार ने उसे उठाया । स्वर्णकार पक्षी की विष्टा में स्वर्ण के दाने देखकर आश्चर्य में पड़ गया । तत्पश्चात उसने संत से क्षमा याचना करते हुए उन्हें मुक्त करवाया। संत क्षमाशील होते हैं । सत्य, सत्य हुआ । दुष्ट लोग बिना विचार किये ही संतों पर या सज्जनों पर गलत आरोप लगाते हैं । निर्दोषों पर आरोप लगाना महापाप है । संत लोग तो स्वयं दुख सहन कर दूसरों को सुखी करना चाहते हैं । दूसरों को सुखी करने में ही उन्हें आनन्द का अनुभव होता है । यदि पहले ही वह संत स्वर्णकार को पक्षी की बात सुनाता, तो वह स्वर्णकार उस निर्दोष पक्षी को मरवाकर उसके पेट से स्वर्ण के दाने निकलवाता । संत ने पक्षी की रक्षा हेतु स्वयं मारपीट सहन की, बन्दी होना भी स्वीकार किया । संत अहिंसा, प्रेम, दया, सहनशीलता की साक्षात् प्रतिमूर्ति होते हैं । प्रेमियो ! आप भी अपने जीवन में इन गुणों को अपनाकर जीवन सफल बनाएं ।

२७ सितम्बर बैंकाक में प्रवचन करते हुए पूज्य स्वामीजी ने कहा-

जो जन गुर की शरण ले,सुमरे हरि का नाम ।
तांकों माया ना लगे कहता टेऊँराम ।।

पूज्य सतगुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज अपनी वाणी में फरमाते हैं

कि जो मनुष्य सत्गुरु की शरण लेकर नाम स्मरण करता है, उसे माया डंस नहीं सकती। प्रेमियो ! आप भी सत्गुरु की शरण लें और भगवद् भजन करें तो आप भी तीनों तापों से मुक्त हो जायेंगे। सांसारिक इच्छाएं कभी भी पूर्ण नहीं होंगी। वासनाएं जीव को जन्म जन्म में भटकाती हैं। इसलिए वासनाओं के चक्कर में मत पड़ें। सांसारिक काम काज करते चित की वृत्ति प्रभु से जोड़ें। नित नियम सत्संग करें। संतो का संग करने से आपको चारों पदार्थों की प्राप्ति होगी।

कह टेऊँ सत्संग से मिलत पदार्थ चार।
तांते तुम सत्संग कर, निश्चय मन में धार॥

प्रेमियो ! आप प्रभु को प्रेम व श्रद्दा से याद करें तो प्रभु सदैव आपकी रक्षा करेगा।

२८ सितम्बर रात्रि, स्वामीजी विदेश यात्रा कर बम्बई लौट आये। कई प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। प्रातः ८ बजे उन्होने प्रेम प्रकाश मंडली माटूंगा में सत्संग प्रवचन किया। दोपहर १२ बजे वे सिन्धुनगर आश्रम पधारे, वहां हजारों प्रेमी पूज्य स्वामीजी की प्रतीक्षा कर रहे थे। प्रेमी, सत्गुरु महाराज का दर्शन कर प्रसन्न हुए। सायंकाल के सत्संग में पूज्य स्वामीजी ने विदेश यात्रा के संस्मरण सुनाते, नाम का अमृत पिलाया।

३० सितम्बर जनता जनार्दन परिषद् की ओर से पूज्य स्वामीजी का ७७ वां जन्म दिन उत्सव आश्रम में मनाया गया। प्रातः श्रीमद् भगवद्गीता एवं श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठों के समापन के उपरान्त हवन यज्ञ किया गया। पूज्य स्वामीजी ने गरीब माताओं को अन्न धन वस्त्र दिये। सायं कई प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी के गुणों का वर्णन किया। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आप लोगों ने जो मेरी महिमा गाई है उसका श्रेय पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज को है। परमात्मा की कृपा, सत्गुरु महाराज के आशीर्वाद व आप प्रेमियों के सहयोग से सेवा कार्य हो रहा है। सत्गुरु महाराज फरमाते हैं-

निज को छोटा मान के, सब को दे सन्मान।
सहनशीलता धार मन, टेऊँ पा कल्यान॥

प्रेमियो ! यदि आप जीवन में उन्नति करना चाहते हैं तो विनम्र बनें, दूसरों को सम्मान दें, मन में सहनशीलता धारण करें। इन गुणों से आपका कल्याण होगा। दीन दुखियों की सेवा करें और नियमित रूप से प्रभु को प्रार्थना करें, पशु पक्षियों को प्यार करें, मांस व शराब का परित्याग करें।

पूज्य स्वामीजी कई प्रेमियों, श्रद्धालुओं की मनोकामनाएं पूरी करते थे। जालना में रहने वाले प्रेमी मंघनमल सिन्धुनगर आश्रम आया और उसने पूज्य स्वामीजी को प्रणाम किया। उसकी लड़की की सगाई की बात कहीं चल रही थी। उसने पूज्य स्वामीजी से प्रार्थना की कि कृपया आशीर्वाद करें जिससे बेटी की सगाई हो जाय। स्वामीजी ने कहा कि सत्गुरु महाराज की मूर्ति को प्रणाम करके जाओ भगवान भला करेगा। मंघनमल स्वामीजी की आज्ञानुसार सत्गुरु महाराज की मूर्ति को प्रणाम कर और स्वामीजी से आशीर्वाद लेकर बम्बई गया तो बम्बई में ही उसे जालना से फोन पर समाचार मिला कि बेटी की सगाई हो गई। उसकी अनुपस्थिति में ही पूज्य स्वामीजी ने उसकी मनोकामना पूर्ण कर दी।

मेरी बड़ी बेटी दुर्गा की सगाई एवं विवाह भी स्वामीजी के आशीर्वाद से सम्पन्न हुआ। एक दिन सत्संग के पश्चात् मैंने स्वामीजी के भक्त श्री मोटूमल खेराजमल चांडवाणी से बेटी दुर्गा की सगाई की बात उसके बेटे किशेरलाल के लिए कही। तो उसी समय उसने मेरी बात स्वीकार की। उसने मेरी बेटी को देखा तक नहीं था, वर पक्ष के सदस्यों ने भी बेटी को नहीं देखा था। श्री मोटूमल ने होने वाली बहू को बिना देखे स्वीकार तो किया किन्तु एक शर्त रखी कि सगाई के अवसर पर केवल एक पाव मिश्री, एक श्रीफल और एक रुपये वाला रूमाल घर में भेजना और शादी भी बिना दहेज होगी। ऐसी शर्त मैंने कभी नहीं सुनी। आजकल सगाई के अवसर पर बड़ा आडम्बर किया जाता है, हजारों रुपया खर्च किया जाता है किन्तु श्री मोटूमल का कितना न महान त्याग मैं श्री मोटूमल को पूज्य स्वामीजी के पास ले गया और सगाई की बात बताई। तब पूज्य स्वामीजी ने भी मोटूमल से कहाकि आप कम से कम दयाल 'आशा' की बेटी को देखें तो सही। श्री मोटूमल ने कहा "स्वामीजी ! आप बैठे हैं, यदि लड़की

में कोई भी कमी होगी आप पूरी कर देंगें । आपका आशीर्वाद चाहिए। प्रभु की कृपा एवं पूज्य स्वामीजी के आशीर्वाद से बेटी दुर्गा का विवाह श्री मोटूमल चांडवाणी के सुपुत्र किशोरलाल से बिना दहेज सम्पन्न हुआ ।

पूज्य स्वामीजी ८ अक्टूबर प्रातः अहमदाबाद पधारे । वहां के प्रेयिमों ने निष्काम सेवा ट्रस्ट एवं प्रेम प्रकाश मंडल की ओर से अम्बावाड़ी और कुबेरनगर के बीच में प्रेम प्रकाश आश्रम बनाने के लिए ज़मीन खरीदी थी उस स्थल पर स्वामी उद्धवदासजी का पुण्यतिथि उत्सव मनाया गया । वहां सत्संग प्रवचन करते हुए पूज्य स्वामीजी ने कहा कि संत ऊद्धवदास मेरे बचपन के साथी थे । हम दोनों ने मिलकर ही पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज से गुरु मंत्र की दीक्षा ली । वर्षों तक सत्गुरु महाराज की सेवा में साथ रहे । हमने मिलकर नाम का प्रचार किया । प्रेमियो ! आप भी प्रभु मिलन की प्यास रखें । सांसारिक इच्छाओं का परित्याग कर प्रभु प्राप्ति के लिए प्रयत्न व पुरुषार्थ करें। सांसारिक पदार्थों की प्राप्ति के लिए रात दिन भटकना पड़ता है, कष्ट झेलने पड़ते हैं यदि इतना पुरुषार्थ हम प्रभु प्राप्ति के लिए करें तो हमारा जीवन सफल हो जाय ।

राखो हरि की आस इक जग की आस निकार ।
जग आसा दुख देत है, हरि आसा सुखकार ।।

१० अक्टूबर प्रातः १० बजे प्रेम प्रकाश आश्रम के नये भवन की नीव रखने का कार्यक्रम रखा गया । पूज्य स्वामीजी ने नींव रखी । उसके पश्चात् वहां पूज्य स्वामीजी का ७७ वां जन्म दिन उत्सव मनाया गया । शेवाराम सुगनोमल, शेवाराम मंघनदास, श्री संतूमल पहूमल साजनदास आनंदराम, दौलतराम वासूमल उधराणी आदि प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत सत्कार करते हुए उनके गुणों का वर्णन किया। इसी अवसर पर डा. दयाल 'आशा' ने पुष्पांजलि अर्पित करते हुए, कहा कि पूज्य स्वामीजी के जीवन में भक्ति, ज्ञान व कर्म का सुन्दर समन्वय है । उनकी प्रेरणा व पुरुषार्थ से भारत के कई नगरों में सेवा कार्य चल रहे हैं । आशा है कि प्रभु की कृपा एवं पूज्य स्वामीजी के अशीर्वाद से यह प्रभु का भव्य भवन शीघ्र बन जायगा । यह स्थान

भक्ति और सेवा का केन्द्र बन जायेगा। दयाल 'आशा' ने इस नये आश्रम के निर्माण के लिए दानवीरों से दान देने के लिए अनुरोध किया पूज्य स्वामीजी ने एक लाख रुपये, और भाई दौलतराम उधराणी ने ५० हजार रुपये और अन्य प्रेमियो ने दान देने की घोषणा की।

पूज्य स्वामीजी ने कार्यकर्ताओं को साधुवाद देते हुए कहा कि आपने स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर बनाने के लिए यह योजना बनाई है इस के लिए आप सभी यश के पात्र हैं। अपने लिए तो सभी लोग इमारते या भवन बनाते हैं। किन्तु प्रभु के लिए या गुरु के लिए आश्रम बनाना अत्यन्त प्रशंसनीय है। इसी पवित्र स्थान पर प्रतिदिन संत, महात्मा आकर सत्संग प्रवचन कर ज्ञान की गंगा प्रवाहित करेंगे। आप लोगों ने आज मेरा जन्म दिवस मनाया, अर्थात् आज मैं बालक हूं, तो आप मुझे आशीर्वाद करें कि पूज्य सतुगुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज, पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की शिक्षाओं एवं सिद्धांतों का अधिकाधिक प्रचार करता रहूं, लोक कल्याण के कार्य करता रहूं, नाम जपता रहूं, नाम जपाता रहूं।

१५ अक्टूबर स्वामीजी जलगांव पधारे। वहां अमर शहीद भक्त कँवरराम एवं संत हरिदासराम के पुण्य तिथि उत्सव के सम्बन्ध में उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए भक्त कंवरराम साहिब एवं संत हरिदास राम के परोपकारी जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाए।

स्वामीजी जलगांव से सिंन्धुनगर के लिए लौट रहे थे। जब गाड़ी मन्माड स्टेशन पर पहुंची तब स्वामीजी को नींद आ गई थी। स्टेशन पर कई प्रेमी उनका दर्शन करने आये थे। संत देवप्रकाश, भाई प्रभदास ने प्रेमियो द्वारा लाई गई प्रसादी लेकर रखी। जब गाड़ी चलने लगी तब प्रेमियो ने स्वामीजी की जय जय कार की उसी समय स्वामीजी जागे और उन्होंने पूछा कौन सा स्टेशन है? संत देव प्रकाश ने कहा "स्वामीजी ! मन्माड स्टेशन था, आपके कई भक्त दर्शन के लिए आये थे, उनसे प्रसादी लेकर रखी है। स्वामीजी ने कहा "मेरे प्रेमी आये फिर भी तुमने मुझे नहीं जगाया, प्रसाद को क्या करेगें।" गाड़ी धीरे धीरे चल रही थी। स्वामीजी ने कहा कि गाड़ी रुकेगी। स्वामीजी का इतना कहना था कि गाड़ी प्लॅटफार्म पर रुक गई। सभी प्रेमियो

ने स्वामीजी के दर्शन किये और स्वामीजी ने उन्हें आशीर्वाद दिया। स्वामीजी प्रेमियों को कितना न प्यार देते थे। उनकी संकल्प शक्ति से रेल रुक गई और प्रेमियों की प्यास पूरी हो गई।

जनता जनार्दन परिषद की ओर से सिन्धुनगर-४ में स्वामी शान्ति प्रकाश वृद्धाश्रम के लिए नई इमारत बनाई गई। ३० अक्टूबर प्रातः १० बजे उस वृद्धाश्रम के उद्‌घाटन के अवसर पर स्वामीजी वहां पधारे पूज्य दादा जे. पी. वासवाणी ने वृद्धाश्रम की नई इमारत का उद्‌घाटन किया। स्वामीजी एवं पूज्य दादा जशन वासवाणीजी, दोनों महान संत उसी समय आपस में कितने न स्नेह के साथ मिले वह दृश्य देखने योग्य था। वृद्धाश्रम के प्रार्थना हाल का नाम "दादा जशन वासवाणी" रखा गया, उसीका उद्‌घाटन पूज्य स्वामीजी ने किया। उत्सव के अन्य कार्यक्रम स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर-५ में रखे गये। इसी अवसर पर श्री किशनचन्द शहाणी, श्री होतचन्द आडवाणी, प्राचार्य के. एम. कुन्दनाणी, बहन सावित्री आडवाणी, बहन ज्योत कुन्दनाणी, श्री विक्योमल शराफ, श्री दौलतराम मंगताणी ने स्वामीजी के सेवा कार्यों की प्रशंसा की।

डा. दयाल 'आशा' ने जनता जनार्दन परिषद् के सेवा कार्यों पर प्रकाश डालते हुए वृद्धाश्रम के सम्बन्ध में बताया कि पूज्य सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की असीम कृपा से, पूज्य दादा जशन वास्वाणी के आशीर्वाद एवं अन्य प्रेमियों के सहयोग से वृद्धाश्रम की नई इमारत वृद्धों की सुख सुविधा के लिए बनाई गई है। पूज्य स्वामीजी एवं पूज्य दादा जशनजी दोनों मेरी आंखें हैं। दोनो महान विभूतियों का आज हमें एक मंच पर दर्शन हो रहा है, हम सभी सौभाग्यशाली हैं।

पूज्य दादा जशन वास्वाणी ने प्रवचन करते हुए कहा कि जो कुछ मेरी प्रशंसा की गई मैं उसके योग्य नहीं हूं। आप मिलकर मुझे आशीर्वाद दें कि मैं आप सबका दास बनकर रहूं। इस सुन्दर उत्सव में सम्मिलित होकर मुझे प्रसन्नता हुई है। पूज्य स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के साथ बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और उनका आशीर्वाद भी मिला है। आप सब सौभाग्यशाली हैं, आप इसी नगर में रहते हैं, जहां प्रभु के भक्त, हम सबके प्यारे स्वामीजी रहते हैं। स्वामीजी सेवा,

सादगी, सत्य स्नेह की सूरत हैं, प्रेम व दया की मूर्ति हैं। स्वामीजी कितनी न सेवा कर रहे हैं। आपने पहले जब मुझे शाल भेंट की तो मेरे मन में विचार आया कि यह शाल मैं स्वामीजी के चरणों में भेंट स्वरूप रखूं।

जनता जनार्दन परिषद् को साधुवाद देता हूं जो स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के आशीर्वाद से कितने न सेवा कार्य कर रहा है ! जनता जनार्दन परिषद् सिन्धी जाति की शान है। कहीं भी बाढ़ आए, भूकम्प आए, अकाल की स्थित हो तो इस परिषद् के सेवक वहां जाकर पीड़ितों की सेवा करते हैं। यह परिषद् स्वामीजी के आशीर्वाद से वृद्धाश्रम चला रहा है, जिसके आज नये भवन के उद्घाटन के समय मैंने प्रभु से प्रार्थना की कि ऐसी कृपा करो कि दूसरे वृद्धाश्रम खोलने की आवायकता नहीं पड़े। एक समय था जब भारत देश में वृद्धाश्रम खोलने की आवश्यकता नहीं थी। क्योंकि एक बेटा अपने माता पिता, एवं घर के वृद्धों की सेवा करना अपना प्रथम कर्त्तव्य समझता था। अब हमारे समाज की क्या दशा है। एक विद्वान ने विभिन्न जातियों का अध्ययन करने के पश्चात् लिखा है कि जाति या समाज के गिरावट का एक कारण यह भी है कि वह ज़ाति अपने वृद्धों का तिरस्कार करती है, उनकी सेवा नहीं करती। मैं सामने पूज्य प्यारे दादा वास्वाणी की तस्वीर देख रहा हूं और स्मरण आता है कि दादाजी एक बड़े कालेज के प्राचार्य थे तब मां ने उन्हें कहा था कि चारपाई की निवार ढीली हो गई है किसी चपरासी से कहो वह ठीक कर देगा। दादाजी ने उसी समय स्वयं ही मां की चारपाई की निवार ठीक कर दी। तब उसकी मां कहती हैं "बेटा ! तू मेरा साहब बेटा है, यह काम तुमने चपरासी से क्यों नहीं करवाया? दादा बोले "मां ! क्या मैं आपका चपरासी नहीं हूं। जब आज नई पीढ़ी की ऐसी भावना होगी, तब हमारा समाज फिर प्रगति के पथ पर अग्रसर होगा। आज हमारा समाज बराबर धनवान है, किन्तु धन में बर्कत नहीं। उसका कारण यह है कि आजकल बेटे मां-बाप का आशीर्वाद नहीं लेते। प्रतिदिन मां बाप के चरणों में नत मस्तक होकर उनका आशीर्वाद लें। पूना के मीरा स्कूल के विद्यार्थियों को शिक्षा दी जाती है कि प्रति दिन प्रातः माता पिता के चरण स्पर्श करने के उपरांत यहां आयें।

चीन में एक महापुरुष कान्फ्यूशस हुआ है । उसके समय में चीन में यह प्रथा थी कि जब मां-बाप बूढ़े होते थे तो उन्हें नदी में बहा देते थे । उन्हें जीवित अवस्था में ही जल समाधि दी जाती थी । कितना पाप ! कितना अनर्थ ! एक दिन कान्फ्यूशस रास्ते से जा रहा था, तो उसने देखा कि एक युवक अपने बूढ़े पिताजी को कहीं ले जा रहा था । कान्फ्यूशस ने उस युवक से पूछा, तुम अपने पिताजी को अब कहां ले जा रहे हो? युवक ने उत्तर दिया ‘‘अब मेरे पिता वृद्ध हो गये हैं, दिन रात खांसते रहते हैं, इस देश की प्रथानुसार इन्हें नदी में विसर्जित करने के लिए ले जा रहा हूं ।’ यह सुनकर कान्फ्यूशस उसे समझाने लगा ‘‘युवक ! जब तुम्हारी भी ऐसी दशा होगी तब तुम्हारा बेटा भी तुम्हें एक दिन इस गलत प्रथाके अनुसार नदी में बहा आयेगा । तुम विचार करो कि क्या यह प्रथा अच्छी है या गलत?

कान्फ्यूशस ने उस युवक की आंखें खोल दीं और उस युवक के मन में परिवर्तन आ गया । वह युवक अपने पिताजी को घर ले गया और उसकी सेवा करने लगा । कान्फ्यूशस का इतना प्रभाव पड़ा कि चीन में धीरे धीरे यह गलत प्रथा बन्द हो गई । चीन निवासियों ने संकल्प किया कि वे वृद्धों की सेवा करेंगे । प्रेमियो ! आप भी मां-बाप और घर के अन्य वृद्धों की प्रेम से सेवा करें, उनके आशीर्वाद से आप अवश्य उन्नति करेंगे ।

समाज में गिरावट का दूसरा कारण है लड़कियों का सन्मान न करना। आज हमारे समाज में लड़कियां आंसू बहा रही हैं । दहेज की प्रथा इतनी बढ़ गई है कि उनके माता पिता कर्ज उठाकर भी उनका विवाह कराते हैं । यह अत्याचार है ! उनकी आहें, दर्द भरी पुकारें समाज को गिरायेंगी । मुझे प्रसन्नता हो रही है कि यहां ऐसे दो तीन प्रेमी बैठे हैं जिन्होंने अपने बेटों की सगाई बिना दहेज की है । मुझे अब बताया गया है कि यहां बैठे हुए प्यारे मोटूमल खेराजमल चांडवाणी ने अपने सुपुत्रों घनश्याम एवं किशोर की मंगनी व शादी के समय दहेज का परित्याग किया । प्यारे मोटूमल के भाई दौलतराम चांडवाणी ने भी अपने दोनों बेटों वाशूलाल और प्रकाश का विवाह बिना दहेज किया । इन प्यारों को धन्यवाद देता हू । दहेज न लेकर शादी करना हमारे समाज में मील का पत्थर स्थापित करने जैसा है । आप भी

इस कुप्रथा का त्याग करें ।

पूज्य स्वामीजी ने इसी अवसर पर आशीर्वाद प्रवचन करते हुए कहा कि उन सेवकों को भी साधुवाद है जो तन, मन व धन से सेवा कार्य कर रहे हैं, जिन्होंने वृद्धाश्रम के नये भवन के निर्माण में योगदान दिया। ये बुज़ुर्ग हमारे दादा परदादा के समान हैं, उनका दर्शन भी लाभकारी है यदि हम उनकी सेवा करेंगे तो उनके आशीर्वाद के पात्र बन सकेंगे। जो भी प्रेमी विभिन्न क्षेत्रों में सेवा कर रहे हैं उन सबको साधुवाद।

पूज्य सत्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाशजी महाराज ने प्रवचन करते हुए कहा एक बार आंख से पूछा गया कि पांव में कांटा लगता है तो तुम रोती हो? पेट में दर्द होता है तो तुम रोती हो? कोई भी शारीरिक या मानसिक पीड़ा होती है तो भी तुम क्यों रोती हो? आंख ने उत्तर दिया ! क्योंकि मैं मार्ग दर्शन करती हूं । लोग मेरे द्वारा ही संसार का दर्शन कर सकते हैं, ज्ञान विज्ञान की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं । मैं दूसरों की पीड़ा देखकर रो पड़ती हूं क्योंकि मुझ में ज्योति, प्रकाश है, शरीर के दूसरे अंगों में यह गुण नहीं फिर वे कैसे रोएंगे, आंसू बहाएंगे जिसकी आंखों में दीद होती है वही दूसरों की पीड़ा के प्रति सहानुभूति रखता है । आज हमारे बीच में वे दीद वाले दरवेश प्यारे जशन वास्वाणीजी बैठे हैं जो अपने गुरुदेव साधु वास्वाणी के पद चिन्हों पर चलकर दीन दुखियों की सेवा कर रहे हैं । प्यारे दादा जशनजी प्रेम व विनम्रता की मूर्ति हैं । वे हजारों लोगों का मार्गदर्शन कर रहे हैं ।

शेषनाग ने पृथ्वी को सिर पर धारण किया है, इसलिए सभी देवता उसे प्रतिदिन प्रणाम करते हैं । एक बार कुछ देवताओं ने उससे पूछा क्या तू घोड़ा है या कोई बलवान पशु है जो धरती का इतना बोझा अपने सिर ले लिया है? तब शेषनागजी ने कहा-

शेष धरती सिर धरी, नहीं कछु अपने काज ।
परमार्थ के कारने मोह न आवे लाज ।।

देवताओ ! मैं दूसरों की भलाई के लिए पृथ्वी का बोझ ले बैठा हूं । मेरा कोई स्वार्थ नहीं । आप मुझे घोड़ा कहें या पशु कहें फिर भी मैं पृथ्वी का भार धारण करता रहूंगा । देवतागण शेषनाग की यह

बात सुनकर बोले "तुम धन्य हो । आज से हम तुम्हारी पूजा उपासना आरंभ करेंगे । उसी दिन से देवताओं ने शेषनाग की पूजा उपासना का श्रीगणेश किया । वह नागपंचमी का दिन हम प्रतिवर्ष मनाते हैं। जब कोई भवन निर्मित कराता है तो ताम्र या चांदी का शेषनांग बनाकर उसकी पूजा कर नींव में रखा जाता है । शेषनाग सारी पृथ्वी का भार धारण कर बैठा है इसीलिए उसका इतना महत्व है । प्रेमियो ! आप भी जन कल्याण के कार्य करते रहें । 'परोपकाराय इदं शरीरं' ।

अमर शहीद संत कंवरराम साहिब के पुण्य तिथि उत्सव के सम्बंध में पूज्य स्वामीजी ३१ अक्टूबर गांधीधाम पधारे । गांधीधाम हवाई अड्डे पर भक्त कंवरराम मंडल की ओर से पूज्य स्वामीजी का स्वागत किया गया । उनके साथ संत देवप्रकाश, दयाल 'आशा', टोपणदास पंजवाणी व ज्ञानलाल भी थे । स्वामीजी ने तीन दिन वहां सत्संग प्रवचन करते हुए भक्त कंवरराम के गुणों का वर्णन किया । स्वामीजी ने कहा भक्त कंवरराम सिन्ध के भक्तों के शिरोमणि थे । अब सिन्ध व भारत के विभिन्न नगरों में संत कंवरराम का शहीदी दिवस मनाया जाता है । यह उनकी महानता का द्योतक है । संत कंवरराम को भजन गाते सयम जो भी भेंट मिलती थी, वे सब भेंट परोपकार के कार्यों में खर्च करते थे । उन में त्याग वृत्ति थी वे अपाहिजों की निस्वार्थ सेवा करते थे। उनकी मधुर वाणी श्रवण करने के लिए लोग कहां कहां से आते थे। प्रेमियो ! आपको साधुवाद है जो आप बड़ी श्रद्धा व प्रेम से अमर शहीद संत कँवरराम साहब का पुण्य तिथि उत्सव मना रहे हैं । आप भी उनकी भांति परोपकार के कार्य करते रहें और परमात्मा से प्रेम का नाता जोड़ें । सत्गुरु महाराज संतों की महिमा गाते हुए कहते हैं-

परोपकारी जगत में, है इक संत सुजान ।
कह टेऊँ नित देत हैं सभको भक्ति ज्ञान ॥

संत परोपकार की प्रतिमूर्ति होते हैं । वे दूसरों को भक्ति व ज्ञान का दान देकर, मार्ग दर्शन करते हैं । प्रेमियो ! आप भी किसी न किसी सन्त महात्मा की शरण लें, उनसे नाम की दीक्षा लेकर नाम स्मरण करें ।

दूसरे दिन स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि भगवान स्वयं

आकर भक्तों का सहायक व रक्षक होता है। मेड़ता के राजा जैमल प्रतिदिन नियमित समय पर भगवद् भजन करता था। एक दिन वह नियमानुसार नाम स्मरण करने बैठा ही था कि मंत्रियों ने राजमाता को सूचना दी कि अचानक दुश्मन ने आक्रमण किया है। कृपया यह सूचना आप राजा को दें। भगवद् भजन करते समय राजा के पास कोई भी नहीं जा सकता था किन्तु राजमाता अंदर गई और उन्होंने पुत्र को उक्त सूचना दी। राजा ने उन्हें इशारे से जाने के लिए कहा और सूचना सुनने के पश्चात् भी वह एकाग्रचित होकर भगवद् भजन करता रहा। भगवान ने अपने भक्त की दृढ़ता देखकर स्वयं जैमल राजा का रूप धारण कर दुश्मनों को पराजित कर भगा दिया। इस प्रकार भगवान ने अपने भक्त की सहायता की। राजा जैमल ने भगवद् भजन करने के पश्चात् दुश्मन का सामना करने के लिए मंत्रियों को बुलाया, तब मत्रियों ने राजा से कहा कि आपने तो दुश्मन को पराजित कर भगा दिया, पुनः सामना कैसा? भक्तराज जैमल भगवान के रहस्य को समझ गया और उसने कहा कि मेरे दुश्मन धन्य हैं, जिन्होंने भगवान का दर्शन किया। प्रेमियो ! आप भी यदि निश्चिंत होकर, निष्काम भावना से प्रभु का स्मरण करेंगे तो परमात्मा आपके काम काज स्वयं करेंगे।

'भगता के कार्ज प्रभु आप खलोइया, हरि कम करावन आया राम'

५ नवम्बर, स्वामीजी ने कार्तिक कथा का आरंभ किया। १२ नवम्बर गोपाष्टमी के दिन प्रातः उन्होंने आश्रम में प्रवचन करते हुए गौ माता की महिमा गाई। सायं ५ बजे श्री राधेश्याम गौशाला में गोपाष्टमी का उत्सव स्वामीजी की अध्यक्षता में मनाया गया। श्री नंदीराम टहलराम ने गौशाला के कार्य का विवरण दिया। स्वामीजी ने गाय का महत्व प्रतिपादित करते हुए कहा कि गौ धन देश का अमूल्य धन है, इसी धन की रक्षा करना हमारा परम कर्त्तव्य है। अफसोस है कि भगवान श्रीकृष्ण और भगवान राम की इस पावन भूमि में प्रतिदिन हजारों गऊ माताओं का वध हो रहा है। सरकार को गौवध पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिए। इस अवसर पर संत रूपाराम साहब, संत ब्रह्मदास, दयाल 'आशा' ने भी गौ माता की महिमा गाई।

१५ नवम्बर कार्तिक एकादशी के दिन प्रातः सत्संग के बाद स्वामी जी के साथ कई संत एवं हजारों प्रेमी राम-नाम की धुनि लगाते शमशान भूमि आये। वहां राजलसिंघ बठीजा ने श्मशान भूमि के कार्य पर प्रकाश डाला, तत्पश्चात् संत रूपाराम, संत ब्रह्मदास एवं अन्य संतों ने विचार व्यक्त करते हुए प्रार्थना की। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज के दिन दान पुण्य करने का विशेष महत्व है। आज सारी रात जागरण कर नाम स्मरण करें। यहां आकर भी यदि आपके मन में वैराग्य वृति उत्पन्न न हो तो वैराग्य भावना कहां उत्पन्न होगी! आप सब को किसी न किसी दिन यहां आना ही है, इसलिए यहां आने से पूर्व आप सत्कर्म करें। सायं आश्रम में स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए भगवान श्री कृष्ण का एक मार्मिक प्रसंग बताते हुए कहा कि भक्त प्रभु के लिए सर्वस्व अर्पण करते हैं, उसे प्रसन्न करने के लिए कष्ट झेलते हैं। भगवान श्याम सुन्दर की रानियां, गोपियों का तिरस्कार करती थी, भगवान ने उनका अहंकार दूर करने के लिए एक खेल खेला।

एक बार भगवान श्रीकृष्ण बीमारी का बहाना करके धरती पर लेट गये। वहां श्री नारदजी आये, उन्होंने भगवान को बीमार देखकर पूछा कि आपकी इस शारीरिक बीमारी का क्या उपचार करें? भगवान ने कहा "नारद ! मेरी पीड़ा को दूर करने के लिए किसी भक्त के चरणों की धूलि चाहिए। ऋषि नारदजी ने भगवान श्रीकृष्ण की रानियों से यह बात कही कि उन में से कोई भी अपने चरणों की रज दे जिससे भगवान का दर्द दूर हो जाय। रानियों ने सोचा कि भगवान हमारे पति हैं, यदि हम उनको अपने चरणों की धूलि देंगे और वह धूलि खायेंगे या लगायेंगे तो हमें नर्क में जाना पड़ेगा। इसीलिए सभी रानियों ने धूलि देने से इन्कार किया। भगवान तो केवल रानियों के प्रेम की परीक्षा लेना चाहते थे। वे इस परीक्षा में सफल नहीं हुई। भगवान ने श्री नारद से कहा कि आप ब्रज जाकर गोपियों को पीड़ा का समाचार सुनाकर उनसे धूलि मांगें। ऋषि नारद ब्रज भूमि आये और उन्होंने ब्रज बालाओं को भगवान की बीमारी का समाचार सुनाया। वे भगवान की बीमारी का समाचार सुनकर बहुत ही दुखी हुई। उन्होंने उस बीमारी को दूर करने के लिए श्री नारदजी से इलाज पूछा। ऋषि नारदजी

ने कहा यदि कोई प्रेमी अपने चरणों की धूलि देगा तो उस धूलि के प्रयोग से भगवान की पीड़ा दूर होगी। यह सुनकर गोपियां अपने चरणों की धूलि देने के लिए तैयार हो गईं। तब श्री नारदजी ने उन्हें कहा कि यदि भगवान तुम्हारे चरणों की धूलि खाएंगे या लगायेंगे, तो तुम्हें नर्क में जाना पड़ेगा किन्तु भगवान स्वस्थ हो जायेंगे। सभी गोपियों के आंखों में प्रेम के आंसू थे। उन्होंने ऋषि नारद से कहा-

नर्क मिले ना हमें, यह चिन्ता नहीं लेश।

पर निज प्रियतम को न लव, होना चाहिए कलेश ॥

हमें नर्क में जाने की कोई चिन्ता या दुख नहीं केवल हमारे प्रियतम श्री श्यामसुन्दर स्वस्थ्य हो जायें। ऋषि नारद गोपियों के चरणों की धूलि लेकर भगवान श्री कृष्ण के पास आये। यह सुनकर भगवान की रानियों का अहंकार दूर हुआ और उन्होंने अनुभव किया कि श्रीकृष्ण ब्रज बालाओं को क्यों प्यार करते हैं। प्रेम में अर्पणम् की भावना होती है। गोपियां श्रीकृष्ण के लिए सर्वस्व अर्पण करना चाहती थीं। वे भगवान के लिए नर्क जाने के लिए भी तैयार हो गईं। भगवान प्रेमियों को ही प्यार करते हैं। प्रेमियो ! आप भी अपने मन में प्रभु प्रेम के बीज बोऐं। वे बीज जब वृक्ष के रूप में विकसित होंगे तो आपको सर्वत्र श्री श्यामसुन्दर के दर्शन होगें।

१६ नवम्बर पूज्य स्वामीजी, स्वामी चदंनराम, स्वामी टेऊँराम मंदिर पूना पधारे। वहां उन्होंने तीन दिन अमृत वचनों की वर्खा करते हुए श्री गुरुनानकदेवजी के जीवन पर प्रकाश डाला। १९ नवम्बर पूज्य स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम लौट आये। सायं प्रवचन करते हुए उन्होंने श्री गुरुनानकदेवजी के कुछ प्रसंग सुनाये। रात्रि को उन्होंने सिन्धुनगर-२ में गुरुनानक भंडार की ओर से गरीबों में कम्बल इत्यादि वितरित किये और सत्संग प्रवचन किया। उसी रात, १२ बजे जय बाबा धाम संत ब्रह्मदास के यहां और सरदार राजलसिंघ बठीजा के घर के बाहर स्वामीजी ने श्री गुरुनानकदेवजी महाराज के जन्म दिन उत्सव के सम्बन्ध में सत्संग प्रवचन किया।

३० नवम्बर सिन्धुनगर-२ में भाऊ परसराम ने झूलेलाल ट्रस्ट की ओर से डॉ. सी. एम. मोदी ने निःशुल्क नेत्र शिविर का आयोजन

किया। स्वामीजी ने इस नेत्र शिविर का उद्घाटन करते हुए कहा कि श्री परसराम एवं उनके साथियों को साधुवाद है जो प्रतिवर्ष इस शिविरका आयोजन करते हैं, हजारों नेत्र रागियों को नई रोशनी मिलती है। स्वामीजी ने डा. मोदी को भी साधुवाद देते हुए कहा कि वह बिजली डाक्टर है। थोड़े ही समय में कितने ही आपरेशन करता है। वह विभिन्न नगरों में नेत्र चिकित्सा शिविर लगाकर उत्तम कार्य कर रहा है। परमात्मा की कृपा से इसका अधिक यश हो।

स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर सिन्धुनगर-५ का वार्षिक उत्सव ७ दिसम्बर से ११ दिसम्बर आयोजित किया गया। ७ दिसम्बर प्रात: स्वामीजी ने ध्वजा फहराकर उत्सव का श्रीगणेश किया। दोपहर ३ बजे स्वामीजी के नेतृत्व में आश्रम से राम नाम की धूम मचाते जुलूस निकला। चारों दिन प्रात: एवं सायंकाल संतों महात्माओं ने अमृत वचनो की वर्खा करते हुए मार्ग दर्शन किया। ११ दिसम्बर प्रात: स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा-

कबीर संगति साध की हरै और की व्याधि।
बुरी संगति असाध की जो आठों पहर उपाधि॥

प्रेमियो ! संतो महात्माओं के संग करने से आप सभी दुखों से मुक्त हो जायेंगे और मूर्खों व अभिमानियों के संग से आपको दुख की प्राप्ति होगी इसीलिए संतो का संग करें। किसी न किसी दिन आपको राम का रंग लग जायेगा। वह मनुष्य भाग्यशाली है जिसे राम नाम का रंग लगता है। राम नाम का स्मरण करना, उत्तम कर्म है। और सभी बातों को भूल जायें केवल नाम स्मरण करें तो आपके जीवन की नैया पार लग जायेगी।

२० दिसम्बर संत प्रभाराम साहिब के पुण्यतिथि उत्सव के सम्बन्ध में स्वामीजी अहमदाबाद पधारे। वहां संत प्रभाराम सोसायटी के प्रांगण में स्वामीजी ने तीन दिन प्रवचन करते हुए संत प्रभारामजी के जीवन सम्बंध में कुछ घटनाएं सुनाते हुए कहा कि वे दिन को अपनी दुकान चलाते थे फिर प्रतिदिन अपने सतगुरु के पास टंडे मस्ती में जाकर उनकी सेवा भी करते थे। उनकी अपने गुरु संत वासूरामजी के प्रति अगाध श्रद्धा थी। उनके पिताजी प्रतिदिन गुरु के पास जाने के लिए

रोकते थे । किन्तु वे नहीं मानते थे । प्रेमियो ! आप भी सत्गुरु की शरण लेकर उनके द्वारा दिये गये नाम की साधना करें । संसार में रहकर सांसारिक पदार्थों में आसक्ति न रखें । श्री अर्जुन की भांति आप भी अपने जीवन की डोरी भगवान श्री कृष्ण को सौंप दें तो प्रभु आपको संसार के भवसागर से पार लगाएगा ।

२३ दिसम्बर स्वामीजी बड़ौदा पधारे और वहां दो दिन सत्संग प्रवचन किया । २५ दिसम्बर वे सिन्धुनगर आश्रम लौट आये । सायं आश्रम में डॉ. चोइथराम गिदवाणी का जन्म दिवस मनाया गया । स्वामीजी ने पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे निष्काम व निडर नेता थे। आजीवन ब्रह्मचारी रहकर उन्होंने देश और जाति की सेवा की । प्रेमियो ! आप भी कुछ समय जाति और दीन दुखियों की सेवा करें । सारा समय स्वार्थ के कार्मों में न गंवाएं ।

१० जनवरी १९८४ प्रातः पूज्य स्वामीजी ने स्वामी टेऊँराम सत्संग मंडली, सिन्धुनगर-२ में सत्संग प्रवचन किया । जीवनदास आहूजा ने स्वामीजी का स्वागत करते हुए विनय की कि ऐसी आशीर्वाद करें कि शीघ्र ही नया सत्संग हाल बन जाये । २१ जनवरी शहीद हेमू कालाणी का शहीदी दिवस आश्रम में मनाया गया । स्वामीजी ने शहीद को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि हेमू कालाणी ने देश की आजादी के लिए अपने जीवन की आहुति दी । आज हमें देश व समाज के उत्थान और विकास के लिए कर्त्तव्यनिष्ठ होकर कार्य करना चाहिए।

२६ जनवरी प्रातः स्वामीजी ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया । सायं उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि जिस आज़ादी के लिए भारतवासियों ने कष्ट झेले, जीवन का बलिदान दिया, उसकी रक्षा करना हमारा परम कर्त्तव्य है । स्वार्थ के कारण आज राष्ट्र की एकता की माला टूट रही है । आज राष्ट्रीय एकता के लिए संकल्प करें ।

कपलेश्वर महादेव मंडल, कुर्ला की ओर से शिवरात्रि उत्सव मनाया गया । इस उत्सव के सम्बंध में १० फरवरी सायं स्वामीजी के नेतृत्व में जुलूस निकाला गया । ११-१२ फरवरी पूज्य स्वामीजी ने वहां भगवान शंकर की महिमा गाते हुए श्री नंदलाल बखत्याणी और अन्य कार्यकर्ताओं

को साधुवाद दिया ।

रोहड़ा ब्रादरी मंडल का वार्षिक उत्सव १२ फरवरी रविवार ११ बजे मारकंडेश्वर मंदिर, वर्ली, बम्बई में आयोजित किया गया । पूज्य स्वामीजी ने प्रवीण विद्यार्थियों को पुरस्कार दिये और सामाजिक बुराईयों को दूर करने के लिए कुछ सुझाव दिये । स्वामीजी ने आहवान करते हुए कहा कि देश में कितनी न गरीबी है । मांस व शराब की पार्टियों में लाखों रुपये व्यर्थ खर्चे जाते हैं । कई लड़कियां दहेज की कुप्रथा के कारण आंसू बहा रही हैं ! उन पर दया दृष्टि करें व आडम्बर का त्याग करें ।

प्रतिवर्ष की भांति वडाला ब्रादर मंडल की ओर से ८ मार्च से २० मार्च वडाला बम्बई में होली के अवसर पर स्वामीजी के सत्संग यज्ञ का आयोजन किया गया । स्वामीजी वहां जीअंदराम हेमनदास वाधवा के घर ठहरे । रविवार के दिन सायं और अन्य दिन, रात को पूज्य स्वामीजी ने अमृत वचनों की वर्खा की । एक दिन स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि मानव जीवन की सार्थकता आत्मज्ञान की उपलब्धि एवं परोपकार के कार्य करने में हैं । पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महारज फरमाते हैं-

या तो आत्म ज्ञान हो, या तो परोपकार ।
ये दोनों जिस में नहीं, मानुष वह बेकार ।।

प्रभु ने हमें जो कुछ धन, पदार्थ, बल, बुद्धि, पद दिया है वह उसकी धराहर है । उसकी धरोहर में आसक्ति रखना पाप है । इसलिए प्रभु की धरोहर का सत्कर्मों में उपयोग करें ।

एक नगर में एक धनवान रहता था । उसकी पत्नि का देहान्त हो गया । उसे दो बेटे थे । दोनों बेटे विवाहित थे और दुकान चलाते थे । धन पदार्थ की कोई कमी नहीं थी किन्तु धनवान बहुत कंजूस था । जब वह वृद्धावस्था को प्राप्त हुआ तो अधिकांश समय घर पर ही रहने लगा इस कारण बहुओं को सारा`समय घूंघट में ही रहना पड़ता था । इससे उन्हें घर के काम काज करने में तकलीफ होती थी । तब दोनों बहुओं ने अपने पतियों से कहा कि भगवान ने आपको सब कुछ दिया है, पिताजी के लिए बाहर एक अलग कमरा बनवा

दें । हमें घूंघट डालकर काम काज करने में बहुत ही तकलीफ होती है । उनकी सेवा के लिए एक नौकर भी रखकर दें ।

धनवान के बेटों को यह बात अच्छी लगी । दोनों बेटों ने पूज्य पिता से प्रार्थना की कि आप अधिकांश समय घर पर रहते हैं । हमारी पत्नियों को घूंघट डालकर घर का काम काज करने में बहुत तकलीफ होती है इसलिए आपके लिए घर के बाहर एक कमरा बनवा देते हैं और आपकी सेवा के लिए एक नौकर भी नियुक्त करते हैं । पिताजी यह सुनकर प्रोधित होकर बोले कि मेरे लिए अलग कमरा बनवाना व्यर्थ पैसा गवांना है । मैंने कितने कष्ट सहनकर धन संग्रह किया है! तुम वह व्यर्थ गंवाना चाहते हो । यदि बहूओं को घूंघट के कारण कष्ट होता है तो मैं ही घूंघट डालकर घर में रहूंगा । फिर उन्हें कोई भी तकलीफ नहीं होगी । अलग कमरे बनाने और नौकर रखने की कोई आवश्यकता नहीं ।

कुछ दिनों के बाद बेटों ने पिताजी से हरिद्वार चलने के लिए विनती की । धनवान ने कहा "बेटा ! कहते हैं कि गंगा नदी में डुबकी मारने से पाप क्षय होते हैं और मन निर्मल होता है । मन में दया भावना उत्पन्न होती है । इसलिए यदि मैं हरिद्वार चलूंगा तो खर्च होगा । दूसरा गंगाजी में नहाने से पाप क्षय होंगे तो मन निर्मल होगा और मन में दया भावना उत्पन्न होगी । दया उत्पन्न होने के कारण मुझे दान करना पड़ेगा । जिससे मेरा संग्रह किया हुआ धन चला जायेगा। कितने परिश्रम से मैंने धन संग्रह किया है, वह धन आप ऐसे उड़ाना चाहते हैं? ऐसे व्यर्थ के तर्क देकर धनवान माया की आसक्ति-वश हरिद्वार नहीं गया। गंगा मैया का दर्शन भी भाग्यवान को ही प्राप्त होता है ।

कुछ वर्षों के पश्चात् वह धनवान मर गया । बेटों एवं मित्रों ने विचार किया कि पूज्य पिताजी अपने जीवनकाल में तो हरिद्वार नहीं गये, अब उनका स्थूल शरीर हरिद्वार लेकर उनका वहां अग्नि संस्कार करें । धनवान का स्थूल शरीर डोली में रखकर बेटों, मित्रों और नौकरों ने हरिद्वार के लिए प्रस्थान किया । रास्ते में वे एक धर्मशाला में ठहरे। गर्मी का मौसम था इसलिए धनवान के मृत शरीर की डोली कमरे के अंदर रखकर वे स्वयं बाहर सोये । उस धर्मशाला में एक बूढ़ा कोढ़ी रहता था । वह बहुत दुखी था उसने सुना कि प्रातः यह डोली

हरिद्वार ले जाई जायेगी। उसने रात्रि को धीरे धीरे उस धनवान का मृत शरीर डोली से उतारकर कहीं रख दिया और वह स्वयं उस में सो गया। उसकी इच्छा थी कि गंगा मैया की पवित्र गोद में समा जाऊँ।

कंजूस जीवित तो हरिद्वार नहीं जा सका किन्तु उसका मृत शरीर भी हरिद्वार नहीं जा सका। ऐसा उसका दुर्भाग्य था। प्रात: सभी डोली उठाकर हरिद्वार के लिए रवाना हुए। वे डोली सहित कनखल हरिद्वार पहुंच गये। उन्होंने क्रिया कर्म के लिए गुरु ब्राह्मण को बुलाया। जैसे ही क्रियाकर्म आरंभ हुआ तो स्थूल शरीर हिलने डुलने लगा। सगे सम्बंधियों ने समझा कि शायद धनवान में अब भी प्राण हैं। जैसे ही उसके ऊपर से चादर उतारी तो देखा धनवान के स्थान पर एक कोढ़ी सोया हुआ है। यह देखकर सब विस्मय में पड़ गये। धनवान के बेटों ने उस कोढ़ी को डांटते हुए कहा कि तुमने यह बहुत बुरा काम किया है। तुम्हें जीवित मार देना चाहिए, परन्तु अब क्या करें? कोढ़ी ने सुअवसर देखकर गंगा नदी में डुबकी लगाते हुए प्राण त्याग दिये। धनवान के बेटों और सम्बंधियो ने विचार विमर्श किया कि अब क्या किया जाय? तब धनवान का एक बेटा और दो तीन सम्बंधी घोड़े पर सवार होकर उस धर्मशाला में लौट आये और देखा कि सेठ का स्थूल शरीर वहीं पड़ा था। उन्होंने स्थूल शरीर को एक घोड़ेगाड़ी पर रखकर हरिद्वार के लिए प्रस्थान किया। घोड़ा हरिद्वार की ओर न चलकर धनवान के घर की ओर तेजी से भागने लगा। घोड़ा चलाने वाले ने बहुत प्रयास किये किन्तु सभी प्रयास विफल गये। यह देखकर लोगों को आश्चर्य हुआ कि धनवान का कोई ऐसा दुर्भाग्य है कि उसका स्थूल शरीर भी हरिद्वार नहीं पहुंच पा रहा है। तत्पश्चात् हरिद्वार से सभी नाते रिश्तेदारों को बुलाकर धनवान के गृहनगर में ही, अग्नि संस्कार किया गया। सम्बंधियो ने गुरु ब्राह्मण को बुलाकर पिताजी के फूल एक डिब्बे में डालकर उसे दिये और पांच सौ रुपये भी क्रिया कर्म के लिए दिये कि वह हरिद्वार जाकर ग्यारहवें और बारहवें दिन की क्रिया करें, जिससे धनवान की सद्गती हो। ब्राह्मण पैसे और अस्थियों को लेकर हरिद्वार के लिए निकला। वह रास्ते में सोचने लगा कि पांच सौ रुपये क्या करूंगा? चार सौ रुपये घर रखकर फिर

हरिद्वार जाता हूं। इधर वह फूल (अस्थियां) एक वृक्ष में बांधकर अपने घर रुपये रखने आया उधर एक हरिजन लकड़ियों के लिए उसी जंगल में आया जहां वृक्ष पर वह फूलों का डिब्बा बंधा हुआ था। उसने वह हिब्बा देखकर उतारा। हरिजन वह डिब्बा लेकर बहुत खुश हुआ। जब उसने डिब्बा खोला तो उस में फूल पड़े थे, वह वे फूल वहीं फेंक कर खाली डिब्बा और उसका कपड़ा घर ले आया। हरिजन ने उस कपड़े से कमीज़ सिलवाकर पहनी। धनवान इतना कंजूस था कि उसका स्थूल शरीर तो हरिद्वार नहीं पहुंच सका परन्तु उसकी अस्थियां (फूल) भी हरिद्वार नहीं पहुंच सकीं।

जब वह गुरु ब्राह्मण घर पैसे रखकर जंगल लौटा तब वृक्ष पर वह डिब्बा न देखकर आश्चर्य में पड़ गया। उसने जंगल में बहुत ढूंढा किन्तु उसे डिब्बा नहीं मिला। वह स्वयं हरिद्वार गया और हरिद्वार घूमकर लौटा आया और उसने धनवान के बेटों से आकर कहा कि क्रिया कर्म अच्छी तरह कर आया हूं, आप निश्चिंत रहें। एक महीने के बाद वह हरिजन वह कमीज पहनकर किसी कार्यवश उस धनवान के घर आया। धनवान की बहुओं ने उसकी कमीज देखकर पूछा कि यह कपड़ा तुम कहां से लाये? तब उसने सुनाया कि किस प्रकार उसने जंगल में एक अस्थियों के डिब्बे से यह कपड़ा उतारकर कमीज बनवाई। बहुओं ने अपने पतियों से यह बात कही कि जिस कपड़े में आपके पूज्य पिताजी के फूलों का डिब्बा बांधकर हमने ब्राह्मण को दिया था उसी कपड़े की कमीज बनवाकर यह हरिजन पहनकर आया है। आप जांच करें कि ससुरजी के फूल भी गंगा में विसर्जित किये या नहीं। धनवान के बेटों ने पंचायत बुलाई उसमें उस ब्राह्मण और उस हरिजन को भी बुलाया गया। पूछताछ करने के बाद पंचायत ने ब्राह्मण से कहा सत्य बताओ कि तुमने हरिद्वार में फूल गंगाजी में विसर्जित कर क्रिया कर्म किया या नहीं किया? तब ब्राह्मण बोला "आप ही विचार करें जब धनवान जीवित हरिद्वार नहीं गया, उसका स्थूल शरीर घोड़ा लौटाकर यहां ले आया, फिर उसके फूल कैसे हरिद्वार पहुंचेंगे। उसके कर्म ही ऐसे थे।

प्रेमियो ! इसलिए आपको जो कुछ दान पुण्य करना है, अपने हाथों

से करें। माया को प्रभु की धरोहर समझकर परोपकार के कार्यों में खर्च करें और साथ ही साथ नाम स्मरण कर रसना पवित्र करें।

उत्सव का समापन करते हुए पूज्य स्वामीजी ने कहा कि आप लोगों को धन्यवाद है कि आप प्रतिवर्ष इन दिनों सत्संग यज्ञ का आयोजन करते हैं, मांस, मदिरा से दूर रहकर सात्विक आहार करते हैं। जैसे आप व्यवहार की दृष्टि से परिवार के सम्बंधियों के नाम बैंक में अलग अलग खाते खुलवाते हैं, वैसे ही नाम रूपी पूंजी का संग्रह करें जो आपको इस जन्म में भी और भविष्य में भी काम आयेगी। सांसारिक पूंजी दुखदाई है और नाम की पूंजी सुखदाई है। परिवार के सभी सदस्यों को अलग अलग नाम की पूंजी संग्रह और सत्कर्म करने चाहिए, इन मानव योनि में ही आप नाम स्मरण व सत्कर्म कर सकते हैं। सत्गुरु महाराज भी फरमाते हैं-

कह टेऊँ संसार के छोड़ो सबही काम।
जागत सोवत राम जप, जो सत् चित सुखधाम ॥

प्रेम प्रकाश मंदिर गांधीनगर कोल्हापुर के वार्षिक उत्सव के संबंध में स्वामीजी २४ मार्च प्रातः गांधीनगर पधारे। वहां उनका भव्य स्वागत किया गया। प्रातः १० बजे स्वामीजी ने ध्वजा फहराकर उत्सव आरंभ किया। सायं ५ बजे उनके नेतृत्व में जुलूस निकला। चारों दिन पूज्य स्वामीजी, संत अनन्तप्रकाश एवं अन्य संतों ने सत्संग प्रवचन किया। २६ मार्च प्रातः पूज्य स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा-

भक्त वत्सल भव भय हरिन, करुणाशील निधान।
कह टेऊँ कलिकाल में लाज राख भगवान ॥

प्रेमियो ! परमात्मा भक्त वत्सल है। यह अपने भक्तों के दुख दर्द दूर करता है। वह दया का भंडार है। उसको नित नियम प्रार्थना करें। कृष्णभक्त रहीम खानखाना ने दिल्ली के बादशाह के हुक्म अनुसार दक्षिण भारत के एक हिन्दू राजा पर आक्रमण कर उसे जीत लिया। राजा ने रहीम को संदेश भेजा कि आपकी जीत तो हो गई फिर हम आपस में मित्रता क्यों न बनाए रखें। आप हमारे घर में आकर मेरे साथ भोजन खायें। रहीम ने राजा का निमन्त्रण स्वीकार किया। जब

रहीम राजा के पास खाना खाने जा रहा था तब राजा के द्वार पर एक बालक ने उससे कहा कि आप राजा के पास खाना खाने न जायें, क्योंकि उस में विष मिला हुआ हैं। वह आपको विषैला खाना खिलाकर आपकी सेना को भगा देगा। रहीम ने कहा कि मैंने राजा का निमंत्रण स्वीकार किया है। बालक ने कहा "रहीम ! वहां कभी नहीं जाना" रहीम ने कहा 'क्या तुम श्री कृष्ण हो जो मैं तुम्हारी आज्ञा मानूं?' तब बालक ने कहा कि यदि मैं कृष्ण हूँ तो क्या तुम मेरी बात मानोगे? रहीम ने बालक की ओर निहारते हुए उसमें बाल रूप श्री कृष्ण का दर्शन किया फिर वह बालक कृष्ण अतर्ध्यान हो गया। प्रभु अपने भक्तों की किसी न किसी प्रकार आकर रक्षा करता है। रहीम खानखाना भगवान श्यामसुन्दर के दर्शन पाकर अत्यंत प्रसन्न हुआ। उसने शीघ्र ही किले पर आक्रमण कर राजा को बंदी बनाया, तब रहीम ने राजा से कहा कि क्या तुम मुझे खाने के लिए निमंत्रण देकर, खाने में विष मिलाकर मुझे मारना चाहते थे? क्या मित्र को विष दिया जाता है? यह सुनकर राजा बहुत शर्मिंदा हुआ। राजा ने कहा मुझे तो अब आप मृत्यु दंड देंगे ही किन्तु आपको यह बात किसने बताई कि मैंने भोजन में विष मिलाया है ! कृपया ! मुझे यह रहस्य बतायें। रहीम बोला "तुमने एक बार मुझे मित्र कहा है, फिर विश्वासघात करने का प्रयास किया, किन्तु मैं मृत्यु दंड नहीं दूंगा। विष की जानकारी किसने दी यह मैं तुम्हें नहीं बताऊगा। राजा ने पाश्चात्ताप करते हुए कहा कि कृपया आप बतायें कि किसने आपको यह बात बताई। रहीम ने कहा कि आपके द्वार पर बाल स्वरूप भगवान कृष्ण ने ही मुझे खाने में विष मिलाने की बात बताकर मेरी रक्षा की। यह सुनकर राजा रोने लगा। संत दयालु होते हैं। रहीम ने उसे गले लगाया। वह राजा, रहीम खानखाना के संग में भगवान श्रीकृष्ण का अनन्य भक्त बन गया। जो भगवान से प्रेम का नाता जोड़ते हैं, भगवान उनकी किसी न किसी प्रकार आकर रक्षा करता है। प्रेमियो ! आप भी भगवान से स्नेह सम्बन्ध रखकर जीवन सफल करें।

भावनगर सिन्धी पंचायत, ईश्वरलाल सुन्दरदास मंघनाणी, उनके भाई घनश्याम, प्रेम एवं अन्य प्रेमियों के निमन्त्रण पर स्वामीजी २ अप्रैल भावनगर पधारे। स्वामीजी के साथ संत देवप्रकाश, डा. दयाल 'आशा'

व संत ज्ञानलाल भी थे। रात्रि को स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन किया। सिन्धी पंचायत ने ३ अप्रैल चेटी चांद के दिन सामूहिक यज्ञोपवीत का आयोजन श्री झूलेलाल मंदिर के प्रांगण में किया। स्वामीजी ने बालकों को आशीर्वाद देते हुए यज्ञोपवीत के सम्बंध में विचार व्यक्ति किये। दयाल 'आशा' ने इस सामाजिक आयोजन की प्रशंसा की।

रात्रि को पूज्य स्वामीजी ने अमृत वचनों की वर्खा करते हुए कहा कि सब का भला करें। यदि कोई आपकी बुराई करता है, फिर भी आप उसे प्यार करें। सुल्तान महमूद ने एक बड़ा गुलशन बनाया, जिसमें भांति-भांति प्रकार के फूल थे। एक दिन उसने उसी गुलशन में महफिल लगाई उसमें उसके पिता भी आये। महमूद ने पिता से पूछा "आपको यह गुलशन कैसा लगता है।" तब पिता ने कहा कि बेटे ! ऐसे गुलशन तो नौकर और अमीर लोग भी बना सकते हैं। तुम जीवन के गुलशन में प्रेम, दया, नम्रता और भलाई के वृक्ष लगाओ। इन पेड़ों के फल हजारों लोगों को लाभ देंगे। प्रेमियो ! आप भी जीवन की फुलवाड़ी में प्रेम व परोपकार के बीज बोऐं। ये महल, मकान, माया प्रभु के प्रेम के बिना किसी काम के नहीं हैं। अपनी माया सत्कर्मों में सफल करें। अपने मीठे वचनों से दुखियों को सहानुभूति व प्रेम दें। नाम स्मरण में श्वास सफल करें।

७ अप्रैल श्रंगेरीमठ के जगदूरु शंकराचार्य सिन्धुनगर आश्रम में पधारे। पूज्य स्वामीजी ने उनका भव्य स्वागत सत्कार करते हुए कहा कि हमारा सौभाग्य है कि आज इस पवित्र स्थान पर हमें जगद्गुरु शंकराचार्यजी के दर्शन हुए हैं। आप हिन्दू धर्म के संरक्षक हैं। इस अवसर पर जगद्गुरु शंकराचार्यजी ने कहा कि इस मंदिर में आकर हमें बहुत ही प्रसन्नता हुई है। आप लोग हिन्दू धर्म, गौमाता और भारतीय संस्कृति के सजग प्रहरी बनकर रहें। "धर्मों रक्षति रक्षति:" आप यदि धर्म की रक्षा करेंगे तो धर्म आपकी रक्षा करेगा। आप भगवान श्री राम कृष्ण की संतान हैं, उनके सिद्धांतों पर चलें।

प्रेम प्रकाश मंडल का ६३ वां वार्षिक उत्सव १५ अप्रैल से १९ अप्रैल अमरापुर स्थान जयपुर में आयोजित किया गया। पूज्य स्वामीजी इस उत्सव के सम्बध में १० अप्रैल को जयपुर पधारे। १४ अप्रैल

वहां पूज्य स्वामी गुरुमुखदासजी महाराज की पुण्यतिथि मनाई गई । पूज्य स्वामीजी ने स्वामी गुरुमुखदासजी महाराज के गुणों का वर्णन किया । १५ अप्रैल प्रातः स्वामीजी ने सभी संतों के साथ मिलकर ध्वज फहराकर उत्सव का श्रीगणेश किया । दोपहर तीन बजे स्वामीजी के नेतृत्व में अमरापुर स्थान से जलूस निकाला गया । उत्सव के चारों दिन मंडल के संतों एवं अन्य महात्माओं ने अमृत वचनों की वर्खा करते हुए प्रेमियों को भगवद् नाम का रसास्वादन कराया । १९ अप्रैल प्रातः काल उत्सव का समापन करते हुए पूज्य स्वामीजी ने कहा-

माया छल वल रूप है, माया दुख का धाम ।
टेऊँ माया, ममत तज सुमरो हरि का नाम ।।

प्रेमियो ! सत्गुरु महाराज फरमाते हैं कि माया विभिन्न रूपों द्वारा जीव को आकर्षित करती है, माया और माया के पदार्थ दुखरूप हैं, इसलिए इनका त्याग कर प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ें । माया के पीछे दौंड़ना, परछांई के पीछे दौड़ना है । जो परछांई के पीछे दौड़गा उसे कुछ भी हाथ न लगेगा, इसलिए सभी सांसारिक बातों को भूल कर एक प्रभु की शरण लें । सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने प्रभु की शरण ली । आप भी उसी परमात्मा की शरण लें । सत्गुरु महाराज की वाणी का अभ्यास करें । परिपूर्ण गुरु की शरण लें जो आपका मार्गदर्शन करे ।

सत्गुर की कृपा बिना, खुले न दशम द्वार ।
कह टेऊँ गुर शरण ले, सुन अनहद झंकार ।।

घर में यदि कचरा होता है तो हम वह कचरा शीघ्र ही फेंक देते हैं, स्वास्थय की दृष्टि से भी अगर घर में सफाई नहीं होगी, कचरा पड़ा रहेगा तो बीमार होने की सम्भावना होगी, वैसे ही मन यदि निर्मल नहीं तो मन में शान्ति नहीं होगी। मन से बुरे विचार निकाल दें, सत् विचारों द्वारा ही मन स्वस्थ रहेगा जैसे शरीर व घर की सफाई, स्वच्छता के लिये आवश्यक है वैसे मन के निर्मल होने की अत्यन्त आवश्यकता है। जब चित्त निर्मल होगा तो चित्त की वृति नाम स्मरण में लगेगी। सत्पुरुषों के संग द्वारा आप का मन निर्मल होता जायेगा ।

जयपुर में वार्षिक उत्सव के समय थाना बम्बई के प्रेमी सुन्दरदास आडवाणी को अचानक पाईल्स की पीड़ा हुई, रक्त बहुत आने लगा। डाक्टर को बुलाया गया। डाक्टर ने कहा कि सुन्दरदास को अस्पताल में भर्ती किया जाय। सुन्दरदास घबरा गया। वह एक प्रेमी का सहारा लेकर पूज्य स्वामीजी के पास आया और प्रार्थना की, कि पीड़ा इतनी बढ़ गई है कि अब डाक्टर ने अस्पताल में भर्ती होने के लिए कहा है। आप कृपा व दया दृष्टि करें। स्वामीजी उत्सव के कारण बहुत व्यस्त थे फिर भी उन्होंने सुन्दरदास को सांत्वना देते हुए कहा कि घबराओ नहीं, रसवल मंगाकर वह पानी से ले लो, भगवद् कृपा से ठीक हो जाओगे। सुन्दरदास ने स्वामीजी की आज्ञा अनुसार रसवल का सेवन किया तो दूसरे दिन ही वे पीड़ा से मुक्त हो गये। संत जब दया दृष्टि करें तो दुख दर्द दूर हो जाते हैं।

चैत्र मेले के सुअवसर पर प्रेम प्रकाश सन्देश द्वारा "भगवद् भक्ति" अंक प्रकाशित किया। जिसका विमोचन पूज्य स्वामीजी के कर कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर पूज्य स्वामीजी ने उपस्थित जन समुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा कि भगवान को प्राप्त करना ही मानव जीवन का चरम पुरुषार्थ है और इसका सर्वोत्तम साधन भक्ति है। मानव शरीर से ही उस परमतत्व को प्राप्त किया जा सकता है। मनुष्य शरीर, देवताओं को भी दुर्लभ है। ग्रन्थों में आत्म साक्षात्कार करने के अनेक मार्ग बतलाए गये हैं। जैसे ज्ञान योग, निष्काम कर्मयोग, राजयोग, समत्वयोग, एवं भक्तियोग। परन्तु आज के मानव की तो बुद्धि कुण्ठित हो गई है। श्रद्धा एवं विश्वास लुप्त हो चला है। वैज्ञानिक कारण होने के कारण शास्त्रों के प्रमाण उसे मान्य नहीं। ऐसी परिस्थतियों में शांति का संदेश देने वाला यदि कोई मार्ग है तो वह है 'भगवद् भक्ति'। भगवद् भक्ति ही जगत को दुःख, अशांति एवं संकटों से बचाकर सुख शांति का संचार कर सकती है। भगवान श्यामसुन्दर भी गीता में कहते हैं कि भक्ति द्वारा मैं जाना जाता हूं।

२६ अप्रैल पूज्य स्वामीजी, स्वामी मुरलीधरजी के पुण्यतिथि उत्सव सम्बंध में इन्दौर पधारे। उन्होंनें वहां प्रेम प्रकाश मन्दिर में पांच दिन अमृत वचनों की वर्खा करते हुए स्वामी मुरलीधरजी के गुणों का वर्णन

किया। पूज्य स्वामीजी ने उपदेश करते हुए कहा कि जैसे स्वामी मुरलीधर ने नाम स्मरण में जीवन सफल किया, वैसे आप भी नियमित रूप से नाम स्मरण करें। आप यदि प्रभु को प्रेम से याद करेंगे तो प्रभु भी आपको याद करेगा। जैसे मां बाप संतान की देखरेख करते हैं, वैसे प्रभु भी हमारी देखरेख कर पालना करता है।

कधागढ़ के भक्त माधवदास नाम-कीर्तन में इतने तो तल्लीन हो जाते थे कि उन्हें संसार की कुछ भी सूझ नहीं रहती थी। गाते गाते वे धरती पर लोट जाते थे। कुछ विरोधियों ने राजा से जाकर कहा कि माधवदास ढोंगी है, वह नाम कीर्तन का केवल दिखावा करता है। राजा ने भक्त माधवदास की परीक्षा लेने के लिए अपने महल की तीसरी मंजिल पर उनके कीर्तन का आयोजन किया। भक्त माधवदास पांवों में घुंघरू बांध कर नाम कीर्तन करते तन्मय होकर नाचने लगे। गाते नाचते वे तीसरी मंजिल से नीचे एक गर्म तेल के बर्तन में आ गिरे फिर भी उनको तनिक भी चोट नहीं लगी, गर्म तेल का भी उन पर कुछ प्रभाव नहीं हुआ भगवान अपने भक्तों की किसी न किसी प्रकार रक्षा करता है। राजा यह देखकर आश्चर्य में पड़ गया और उसने भक्त माधवदास से क्षमा याचना की। प्रेमियो आप भी प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ें। उसे प्रेम व श्रद्धा से याद करेंतो वह आपकी रक्षा करेगा।

१५ मई बुद्ध जयन्ती के अवसर पर पूज्य स्वामीजी ने उपदेश करते हुए कहा कि आज भी गौतम बुद्ध के सिद्धांतों और शिक्षाओं का अनुसरण करने की विश्व को आवश्यकता है। उन्होंने जो 'अष्ट मार्ग' का सिद्धांत दिया वह हम कार्यान्वित करें। उन्होंने जो प्रेम, दया व अहिंसा का मार्ग बताया, उस मार्ग पर चलने का प्रयास करें।

१८ मई स्वामीजी कुमारनगर धुलिया पधारे। वहां प्रेम प्रकाश मंदिर का वार्षिक उत्सव आयोजित किया गया। संत पहिलाजप्रकाश एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। स्वामीजी ने तीन दिन वहां सत्संग प्रवचन किया। २९ मई वे मालेगांव आये। केशवदास एवं अन्य प्रेमियों ने उनका अभिनन्दन किया। वहां उन्होंने उपदेश करते

हुए कहा कि यदि जीवित मनुष्य को किसी नदी या समुद्र में फेंका जाय तो वह डूब जायेगा, किन्तु किसी मृतक शरीर को नदी में डालेंगे तो वह डूबेगा नहीं, वह पानी में तैरता रहेगा । प्रेमियो ! आप भी यदि संसार सागर में तैरना चाहते हैं, पार होना चाहते हैं तो जीते जी मरकर रहें अर्थात् अपने अंहकार, अहम् भाव को नष्ट करें और किसी परिपूर्ण गुरु की शरण लें तो आप सरलतापूर्वक संसार सागर से पार हो जायेंगे । सत्गुरु महाराज भी फरमाते हैं-

सत्गुर के उपदेश बिन, होय न कब कल्यान ।
कह टेऊँ निश्चय करो, कहते संत सुजान ।।

झूलेलाल ट्रस्ट की ओर से भाऊ परसरामजी ने सिन्धुनगर- २ में झूलेलाल स्कूल बनवाया। २७ मई १९८४ रविवार प्रात: पूज्य स्वामी जी ने उसका उद्घाटन करते हुए कहा कि यह विद्या का केन्द्र हज़ारों विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करता रहेगा । विद्या दान उत्तम दान है । सिन्धुनगर में आदर्श विद्यालयों की अत्यन्त आवश्यकता है । भाऊ परसराम एवं साथियो को साधुवाद है जिन्होंने यह उत्तम कार्य किया है । मुझे आशा है कि इस विद्यालय के विद्यार्थियों में शुभ संस्कारों का समावेश किया जायेगा । पूज्य स्वामीजी ने स्कूल के लिए कुछ धनराशि भी दी । डा. दयाल 'आशा' ने दानवीरों से दान देने के लिए अनुरोध किया ।

सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के पुण्य तिथि उत्सव के सम्बंध में स्वामीजी, १ जून स्वामी माधवदास के स्थान आदर्श नगर, अजमेर पधारे । वहां उन्होंने पांच दिन सत्संग प्रवचन करते हुए सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के गुणों का वर्णन किया ।

स्वामी जीवनमुक्त के पुण्य तिथि उत्सव के सम्बंध में पूज्य स्वामी जी ८ जून प्रेम प्रकाश मंदिर खीरथल में पधारे । ९ जून पूज्य स्वामीजी की उपस्थिति में वेद मंत्रों के उच्चारण के साथ संत शिरोमणि स्वामी जीवनमुक्त जी महाराज के मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम संपन्न हुआ । इस अवसर पर पूज्य स्वामीजी ने स्वामी जीवनमुक्तजी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे प्रेम प्रकाश मंडल के वयोवृद्ध संत थे। उन्हें पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज एवं अन्य संतों, सूफ़ियों

की वाणी कंठस्थ थी । भारत के विभिन्न नगरों में उन्होंने नाम का संदेश दिया । सदैव अपनी वाणी से गुरु महाराज की महिमा के गीत गाया करते थे ।

प्रेम प्रकाश आश्रम, आदर्शनगर अजमेर के महन्त, प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय के स्तम्भ, महान विद्वान पूज्य स्वामी श्री माधवदासजी महाराज का ११ जून १९८४ को सायंकाल ५ बजे आदर्श नगर, अजमेर स्थित आश्रम पर ७० वर्ष की अवस्था में निधन हो गया । आपके निधन का समाचार पाकर पूज्य स्वामीजी अविलम्ब वहां पहुंचे । पूज्य स्वामीजी ने वहां सभी प्रेमियों को सांत्वना देते हुए पूज्य स्वामी माधवदासजी महाराज को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी माधवदासजी का निधन वास्तव में प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय एवं सनातन धर्म के लिए एक अपूरणीय क्षति है । स्वामी माधवदास जी ने पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज एवं पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के पावन यश को यत्र तत्र सर्वत्र फैलाया । तीर्थराज पुष्कर में उनके द्वारा निर्मित आश्रम आपकी अमर यादगार बना रहेगा ।

ब्रंह्मलीन स्वामी माधवदासजी महाराज के त्रियोदशी के अवसर पर पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

अमर देश में संत जन, नित ही करत निवास ।
कह टेऊँ करते नहीं, काल कर्म जहं वास ।।

पूज्य स्वामी माधवदासजी महाराज ने अब अमरापुर में जाकर निवास किया, वे अमर अजर हैं । जब तक जगत में मनुष्य का यश है, तब तक वह अमर रहता है परन्तु स्वामी माधवदाम्नजी महाराज ने ऐसे उत्तम कार्य किये हैं कि वे सदैव अमर रहेंगे । प्रेमियों ! आप भी उनके सिद्धांतों, आदर्शों पर चलने का प्रयास करें ।

पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का जन्मदिन उत्सव स्वामी बसंतरामजी महाराज के स्थान अजमेर में आयोजित किया गया । पूज्य स्वामीजी इस उत्सव के सम्बंध में ३० जून अजमेर पधारे । वहां उन्होंने चार दिन सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि संतों महात्माओं को भी पहले कठिनाईयां सहनी पड़ती हैं । पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने जब पहले अमरापुर स्थान बनाया तब विरोधियों ने खंडन किया

किन्तु सत्गुरु महाराज भगवद् भजन में तल्लीन रहे । प्रेमियो ! आप भी नाम स्मरण में जीवन सफल करें ।

१२ जुलाई गुरु पूर्णिमा का उत्सव सिन्धुनगर आश्रम पर मनाया गया । पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि समस्त तीर्थों, सरस्वती, यमुना, गोदावरी, गया, प्रयाग, रामेश्वर, काशी, कांची, मथुरा, अयोध्या, अवंतिका, केदार, हिमगिरि, नर्मदा, कैलाश, मदिराचल तीर्थों अर्थ, सत धर्म, दया आदि से श्री गुरु महाराज के पूज्य श्री चरणों का महत्व अधिक है । गुरु का चरणामृत अज्ञान का निवारण करने वाला, पाप रूपी कीचड़ को सुखाने वाला एवं ज्ञान दीपक को प्रज्जवलित करने वाला है । जो शिष्य अपने गुरुदेव के चरण कमलो का स्मरण करके उनका चरणामृत ग्रहण करता है उस शिष्य को सभी तीर्थों के स्नान का फल मिल जाता है ।

गुरु शब्द की व्याख्या करते हुए पूज्य स्वामीजी ने कहा कि गु-वर्ण अन्धकार का वाचक है और रु-प्रकाश का । अर्थात् जो अज्ञान का नाश करने वाला प्रकाश के मार्ग पर ले आये ।

संसार सागर के प्रवाह से बचने के जो चार सेतु (पुल) हैं, उनमें प्रथम सेतु है ईश्वर, गुरु और शास्त्रों में श्रद्धा । अतः गुरु के प्रति शिष्य की श्रद्धा का होना उतना ही आवश्यक है, जितना दूध उतारने के लिये बछड़े का अपनी मां के स्तनों में मुंह लगाना आवश्यक है।

उसी शिष्य का जीवन सफल है, जिसने तन, मन एवं धन अपने गुरुदेव के श्री चरणों में समर्पित कर दिया है, अर्थात् उनकी आज्ञा का अक्षरशः पालन किया तथा अपने हृदय में लेश मात्र भी शंका का भाव नहीं आने दिया ।

गुरू भक्त उपमन्यू की गुरु भक्ति हमारे सामने है । उपमन्यू अपने गुरुदेव ऋषि धौम्य के लिये भोजन बनाया करते थे और जो बचता था उसे स्वयं पा लेते थे परन्तु ऋषि धौम्य अल्पाहारी थे इस कारण उपमन्यू में भोजन अधिक खाने की आदत पड़ गई, जिससे उनका शरीर मोटा होने लगा ।

समय बीतते देर न लगी । एक दिन ऋषि धौम्य की दृष्टि उपमन्यु पर पड़ी और उसका स्थूल शरीर देखकर ऋषि धौम्य पूछने लगे ।

सब वृतांत सुनने के पश्चात् उपमन्यू का काम बदल दिया और गौ चराने का कार्य सौंपा । जिस कारण उसे दूध पीने को मिलने लगा। कुछ दिन बाद गुरु ने वो दूध पीना भी बन्द करवा दिया । उसके उपरान्त उपमन्यू गौ माताओं के मुख से निकलने वाले फेन को खाने लगा, गुरू ने वो भी बन्द कर दिया । अब तो उपमन्यू पूर्व जैसा बलवान नहीं रहा, गौ चारण में कठिनाई होने लगी और गौ माताओं से प्रार्थना करने लगा कि माताओ अब तुम दूर दूर मत भागा करो, अब में समर्थ नहीं हूं, मेरी शक्ति क्षीण हो चुकी है, मैं तुम्हें उत्तम उत्तम चारा चराने के लिये इधर उधर नहीं ले जा सकता । उपमन्यू का शरीर निर्बल हो गया फिर भी गुरुदेव ऋषि धौम्य के प्रति उनकी श्रद्धा, निष्ठा, विश्वास मैं कमी नहीं आई । उपमन्यू के लिये गुरूदेव अब भी दयालू बने हुए हैं । गौओं से कहते हैं- कि मैं आज उन्हें कहूंगा कि आप दयालू हैं मेरा काम बदलने की कृपा करें ।

उपमन्यू के भोजन के सब रास्ते बन्द होने से, भूख से व्याकुल उपमन्यू ने आक के विषैले पत्ते खा लिये जिस कारण उपमन्यू के नेत्रों से ज्योति चली गई । उस समय उसे अपने नेत्रों की ज्योति जाने की चिन्ता नहीं थी । चिन्ता थी तो केवल गुरुदेव के दर्शनों की, कि अब मुझे गुरुदेव के दर्शन नहीं हो पावेंगे, गुरुदेव के द्वारा दिया गया कार्य कैसे सम्पन्न होगा, अर्थात् गौऐं वापिस आश्रम पर कैसे पहुंचेंगी । धन्य है गुरु भक्त उपमन्यू ।

अन्त में कुएं में गिरे उपमन्यू को अश्विनी कुमार बहुत लालच देते हैं कि तुम यह पकवान खाओ तो तो तुम्हें तुम्हारे नेत्रों की ज्योति वापस मिल जायेगी । परन्तु गुरु भक्त उपमन्यू खाने से मना कर देते हैं गुरु की आज्ञा भंग करके मुझे कुछ नहीं चाहिए, न संसार चाहिये न शरीर चाहिए मुझे प्राणों से भी मोह नहीं है चाहे मेरे प्राण क्यों न चले जायें, मैं गुरु का दिया वचन टाल नहीं सकता अर्थात् उनकी आज्ञा के बिना अन्न ग्रहण नहीं कर सकता । इधर गुरू ऋषि धौम्य अपने प्रिय शिष्य को ढूंढने को निकल पड़ते हैं । उपमन्यू तुम कहां हो- उपमन्यू, कानों में आवाज पड़ते ही चिल्ला उठता है गुरुदेव मुझे क्षमा करें ।

अन्त में पूज्य स्वामीजी ने महर्षि रमण के इस पवित्र वाक्य को दोहराते हुए अपनी वाणी को विश्राम दिया कि गुरू का आर्शीर्वाद यमराज का मुंह फेरने में सक्षम है, पर हम ऐसा शिष्यत्व ग्रहण कर सकें, यही मुख्य बात है ।

दक्षिण भारत के प्रेमियों के स्नेह निमंत्रण पर पूज्य स्वामीजी १८ जुलाई मद्रास पधारे । वहां श्री भगवानदास के घर में, अन्य स्थानों पर पूज्य स्वामीजी ने अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की । एक दिन वहां स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

निष्कामी निर्मान हो, सेव करत जन जोय ।
कह टेऊँ तिस पर सदा, भगवन प्रसन्न होय ।।

प्रेमियो ! नित नियम नाम स्मरण करें, साथ साथ निष्काम भावना से दीन दुखियों की सेवा भी करें तो परमात्मा प्रसन्न होकर आपको अपना बनाएगा ।

जर्मनी का बादशाह जोसफ साधारण वेश में जनता की देखरेख करने जाता था । एक दिन रास्ते में किसी बालक ने उनसे पैसे मांगे। बादशाह ने पूंछा 'बेटा ! तुम पैसों का क्या करोगे?' बालक ने कहा 'मेरे पिताजी संसार से चल बसे हैं, अब घर में मेरी बीमार माँ और छोटा भाई है । मां की दवाई के लिए मुझे पैसे चाहिए । बात करते करते, बालक का कंठ रुंध गया । बादशाह के मन में दया भावना उत्पन्न हुई । उसने बालक को पैसे देकर उसके घर का पता लिखा और बालक से कहा तुम शीघ्र ही डाक्टर को घर ले जाकर मां के रोग का उपचार कराओ । बालक पैसे लेकर डाक्टर के पास गया। इधर जोसफ उस बालक के घर में आया । वहां बालक की बीमार मां सोई हुई थी और छोटा सा मुन्ना भूख के कारण तड़फ रहा था। जोसफ ने बीमार महिला से कहा कि मैं डाक्टर हूं तूम्हें क्या पीडा है? उस महिला ने जोसफ को डाक्टर समझकर अपनी व्यथा सुनाई कि उसकी बीमारी का कारण गरीबी है । तदुपरान्त बादशाह जोसफ ने एक पत्र दिया और कहा कि इस पत्र पर लिखी दवा द्वारा तुम्हारा दुख दूर हो जायेगा। तुम यह पत्र अपने बड़े बेटे को देना । ऐसा कहकर जोसफ वहां से चला गया । थोड़े समय के बाद वह बालक

डाक्टर को घर ले आया। तब मां ने कहा कि बेटा अभी अभी एक डाक्टर आया था जिसने इस पत्र पर दवाई लिखकर दी है। तब आये हुए डाक्टर ने वह पत्र पढ़कर कहा कि मेरे पूर्व आपके पास जो डाक्टर आया था, वह साधारण आदमी नहीं वह स्वयं जोसफ बादशाह था, उसने इस पत्र में लिखा है कि तुम्हें जितना भी धन चाहिए तुम बादशाह के खज़ाने से उतना धन ले सकते हो। अब तुम सरकारी खज़ाने में जाकर यह पत्र देकर धन ले सकते हो। आये हुए डाक्टर ने माता को दवाई दी और वह स्वस्थ हो गई। तीसरे दिन वह माता बेटे के साथ बादशाह के खजाने में धन लेने पहुंची तो उसे इतना धन मिला कि उसकी गरीबी दूर हो गई। बादशाह की दया दृष्टि के कारण वह गरीब परिवार अब सुखी जीवन व्यतीत करने लगा। बादशाह जोसफ विधवा के बालक पर दया दृष्टि कर स्वयं उसकी बीमार मां को देखने उसके घर गया और उसने उनका दुख दूर किया।

प्रेमियो ! आप भी गरीबों, अपाहिजों, अनाथों की सेवा करते रहें। प्रिय भगवानदास को साधुवाद है कि वह यहां मद्रास में पूज्य सतगुरु महाराज़जी की ज्योति जगा रहा है।

पूज्य स्वामीजी ने सिन्धु भवन सत्संग हाल मद्रास में अमृत वचनों की वर्खा की। संस्था के अध्यक्ष एवं देवीदास मीरपुरी, वीना देवीदास ने उनका स्वागत सत्कार और आभार प्रदर्शन किया। श्री कृष्ण भक्त जशन सोभराज एवं उसकी पत्नि विमला जशन ने मद्रास में श्री राधे-श्याम मन्दिर की स्थापना की। पूज्य स्वामीजी ने उस मंदिर में भगवान श्रीकृष्ण की महिमा गाते हुए कहा कि अपने लिए तो सब लोग सुन्दर महल, मकान बनवाते हैं किन्तु जो भगवान के मन्दिर बनाता है या परोपकार के कार्यों में धन सफल करता है, वह धन्य है। प्यारे जशन एवं उसकी पत्नि विमला साधुवाद के पात्र हैं जिन्होंने इस मंदिर की स्थापना की है और साथ ही साथ वे सेवा के कार्य भी कर रहे हैं। आप सब सौभाग्यशाली हैं जो यहां आकर नाम कीर्तन करते हैं।

राम भजन जहं होत है, तहां विराजत राम।

प्रेमियो ! जहां नियमित रूप से भगवद् भजन की गंगा प्रवाहित होती है, वहां प्रभु स्वयं विराजमान रहते हैं। जहां प्रभु विराजमान हैं, वहां काल्पनिक दुख भ्रम, अज्ञान नहीं रह सकेगा। नाम स्मरण

में ही आनंद है । मानव जीवन अमूल्य जीवन है, उसकी सार्थकता नाम स्मरण एवं सेवा में है ।

इक इक अंग बहु मूल्य का, तोहि दिया करतार ।
कह टेऊँ हरि भजन कर, मिलंहि न दूजी बार ॥

३ अगस्त पूज्य स्वामीजी बैंगलोर पधारे, वहां सिन्धी पंचायत एवं अन्य प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी का अभिनन्दन किया । उन्होंने सिन्धी धर्मशाला, दादा अमर के स्थान एवं बहन लीला के घर में सत्संग प्रवचन किये । वहां एक दिन पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि नियमित रूप से प्रभु की प्रार्थना करें । प्रार्थना केवल होठों से नहीं किन्तु शुद्ध मन से युक्त प्रार्थना करें-

चरण शरण मैं आपकी, तुम स्वामी हम दास ।
नहिं मांगत मैं और कछु, दे हरि चरण निवास ॥

प्रेमियो ! प्रार्थना केवल अपने कल्याण के लिए नहीं किन्तु लोक कल्याण के लिए करनी चाहिए । एक बार संत दादू जयपुर के आंधी गांव में थे, वहां वर्षा न होने के कारण लोग दुखी थे । संत दादू ने वहां परमात्मा से प्रार्थना करते हुए कहा 'प्रभु ! लोग प्यासे हैं, खेत सूखे हैं आप कृपया वर्षा की वर्खा करें तो लोगों का दुख दूर हो जाये, अन्यथा लोग अकाल के कारण मर जायेंगे ।' भक्त दादू की यह प्रार्थर्ना प्रभु ने सुनी । तत्काल ही चारों ओर घनघोर घटाएं छा गईं और वर्षा हुई । गांव वाले अत्यन्त प्रसन्न हुए । संत दादू ने अपने स्वार्थ के लिए प्रार्थना नहीं की परन्तु उन्होंने लोक हित कल्याणार्थ प्रार्थना की । आप भी सभी के कल्याण के लिए प्रार्थना करें ।

पूज्य स्वामीजी ने दादा अमर को साधुवाद देते हुए कहा कि वे धन्य हैं जो बैंगलोर में स्मरण व सेवा की ज्योति जगा रहे हैं । आप भी दीन दुखियों की सेवा करें और नाम स्मरण करें । किसी न किसी परिपूर्ण गुरु की शरण लें जो आपका मार्गदर्शन करे ।

सत्गुर ऐसा कीजिये, तम अज्ञान मिटाय ।
कह टेऊँ उर में सदा अनुभव ज्योति जमाय ॥

१४ अगस्त पूज्य स्वामीजी भगवान झूलेलाल के उत्सव के सम्बंध

में क्राफोर्ड मार्केट बम्बई में पधारे। वहां हूंदराज सैनाणी एवं अन्य आयोजकों ने उनका स्वागत सत्कार किया। पूज्य स्वामीजी ने आयोजकों को साधुवाद देते हुए कहा कि आप यहां प्रतिवर्ष भगवान वरुणदेवता का चालीस दिन का पवित्र वृत धारण कर वरुणदेवता की पूजा उपासना करते हैं इसलिए आप साधुवाद के पात्र हैं। भगवान वरुणदेवता ने सेन्ध में अवतार लेकर अत्याचारियों का अंत किया। वे हमारे इष्ट वता हैं। श्रद्धा व विश्वास से उनकी उपासना करने से आपकी मनोकामना र्ण होगी।

२० आगस्त भगवान श्रीकृष्ण का जन्म दिन उत्सव आश्रम में मनाया ाया। पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि दुष्टों का दमन करने के लिए आज के दिन भगवान श्रीकृष्ण ने अवतार लिया। जब जब अधर्म और पाप बढ़ जाता है तब लेते अवतार प्रभु और विश्व शान्ति पाता है। भगवान धर्म की रक्षा के लिए, अत्याचारियों का अंत करने के लिए युग युग में अवतार लेते हैं।

कंस ने श्रीकृष्ण का वध करने के लिए कितने प्रयास किये ! किन्तु सभी प्रयास विफल हुए। पूतना अपने स्तनों को विष लगाकर बाबा नंद- यशोदा के घर जाकर बालक कृष्ण को दूध पिलाकर मारना चाहती थी परन्तु नंदनंदन भगवान कृष्ण ने उसे यमपुरी पहुंचाया। कंस ने तृणाव्रत राक्षस को बाल गोपाल को मारने के लिए भेजा जब वह राक्षस गोकुल में नंद बाबा के घर आया तब बालक कृष्ण पालने में सोये हुए थे। जब वह राक्षस बालक कृष्ण के समीप आया और उसे उठाने का प्रयास किया तो नंदनंदन को उठा नहीं सका। बालक कृष्ण ने उसी समय ही उस राक्षस को मार डाला। बाल्यावस्था में ही कृष्ण ने दुष्टों का दमन करना आरम्भ किया। मामा कंस जिसने इतने अत्याचार किये थे उसको भी मौत के घाट उतारा। ऐसे महान कर्म योगी भगवान श्री कृष्ण का आज जन्मदिन है। उसके शिक्षाओं और आदर्शों पर चलने का प्रयास करें। और आदर्शों पर चलने का प्रयास करें। प्रेमियो ! मन मन्दिर में श्याम सुन्दर की छवि धारण कर उसका ध्यान करें तो आपका जीवन सफल होगा।

२२ अगस्त से २५ अगस्त स्वामीजी ने कुर्ला, बम्बई में भगवान झूलेलाल के उत्सव के सम्बंध में सत्संग प्रवचन करते हुए पूज्य स्वामीजी ने कहा कि श्री उडेरोलाल (झूलेलाल) वरुण देवता के अवतार थे। उनकी श्रद्धा से उपासना करें । प्रेमियो ! आप गृहस्थ में रहकर नाम स्मरण और दान पुण्य करें । किसी न किसी परिपूर्ण गुरु की शरण लें जो आपका मार्गदर्शन करे, जिससे आपको आनन्द की उपलब्धि हो ।

तेरे हृदय में सदा है सुख शान्त भंडार ।
गुरु कृपा से पाय सो, कह टेऊँ सुख सार ॥

जनता जनार्दन परिषद् की ओर से ५ सितम्बर से ९ सितम्बर सिन्धुनगर प्रेम प्रकाश आश्रम पर पूज्य स्वामीजी का ७८ वां जन्मदिन उत्सव मनाया गया । ५ सितम्बर श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ का पाठ आरंभ किया गया और अध्यापक दिवस भी मनाया गया । इस अवसर पर पूज्य स्वामीजी ने कुछ आदर्श अध्यापकों का सम्मान करते हुए कहा कि अध्यापक, आचार्य देश के निर्माता हैं । समाज में उनका योग्य सम्मान होना चाहिए। आज भारत के राष्ट्रपति माननीय डा. राधाकृषणन् का जन्मदिन भी है। वे एक आदर्श अध्यापक, विद्वान एवं दार्शनिक थे। वे अपनी विद्वता एवं योग्यता के कारण ही भारत के राष्ट्रपति बने ।

पूज्य स्वामीजी के जन्म दिन उत्सव के सम्बंध में ६ सितम्बर को अस्पताल में रोगियों की सेवा की गई । ७ सितम्बर अपाहिजों एवं अनाथ बालकों की सेवा की गई । सायं, विद्यार्थियों की भक्ति संगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । स्वामीजी ने विद्यार्थियों को पुरस्कार वितरित किये । ९ सितम्बर प्रातः प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी को पवित्र गगांजल व गो दुग्ध से स्नान कराकर उनकी पूजा उपासना की व गुरु महिमा के गीत गाये । प्रातः हवन यज्ञ के पश्चात दीन दुखियों को आर्थिक व अन्न वस्त्र इत्यादि भेंट किये गये ।

सायं, डॉ. दयाल 'आशा' ने पूज्य स्वामीजी के परोपकारी जीवन का उल्लेख करते हुए कहा कि उनकी प्रेरणा और आशीर्वाद से जनता जनार्दन परिषद् द्वारा बहुत से सेवा के कार्य हो रहे हैं । संत देवप्रकाश, संत वेदप्रकाश, श्री गोबिन्दराम भाटिया, स्वामी नारायणदास अमरधाम,

संत रूपाराम साहब, संत ब्रह्मदास, श्री सभागचन्द चावला, श्री सीतलदास हरचन्दाणी, एम. एल. ए. हीरालाल सभनदासाणी, परसराम कांग्रेसी एवं अन्य प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी के गुणों का वर्णन किया। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आप लोगों ने जो आज मेरी महिमा गाई, यह महिमा तो गुरु महाराज जी की है, मुझ में तो कोई भी कार्य करने की शक्ति ही नहीं है। मुझे तो चलने के लिए भी दूसरों की सहायता की आवश्यकता पड़ती है। आप मुझे आशीर्वाद करें कि मैं स्वयं नाम स्मरण करता रहूं और जब तक जीवन है तब तक दीन दुखियों, पशुओं की सेवा करता रहूं।

१४ सितम्बर पूज्य स्वामीजी रतलाम पधारे। वहां उन्होंनें रात्रि को अमृत वचनों की वर्खा की। १५ सितम्बर आप प्रेम प्रकाश आश्रम कोटा पधारे। वहां उन्होंने तीन दिन सत्संग प्रवचन किये। १८ सितम्बर पूज्य स्वामीजी अमरापुर स्थान, जयपुर पहुंचे वहां उन्होंने २२ सितम्बर तक सत्संग प्रवचन किये। एक दिन उन्होनें उपदेश करते हुए कहा कि मनुष्य अपने साक्षी स्वरूप को पहचानें। हमें आत्म स्वरूप का ज्ञान होना चाहिए। यह ज्ञान भगवद् कृपा, संतों की आशीर्वाद एवं सत् शास्त्रों के अध्ययन व चिन्तन से ही प्राप्त होगी। अध्ययन के साथ- साथ वैराग्य भी आवश्यक है, आत्मज्ञान की उपलब्धि के लिए अंत: करण भी शुद्ध निर्मल होना चाहिए। दर्पण साफ होगा तो उसमें अपना बाह्य रूप अच्छी तरह देख सकेंगे, वैसे आतम ज्योति तो सदैव प्रकाशमान है किन्तु अन्तःकरण शुद्ध निर्मल होने से हम साक्षात्कार कर सकेंगे। आतम साक्षात्कार हो गया फिर तो आनन्द ही आनन्द है। सर्वत्र वही ज्योति प्रज्वलित है।

जिधर देखता हूं उधर तू ही तू है।
कि हर शै में जलवा तेरा हूबहू है॥

प्रेमियो ! स्वयं को पहचानें तो आप जीवन मुक्त हो जायेंगे। आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिए किसी परिपूर्ण सतगुरु की आवश्यकता है। गुरु ही जीव को असत् से सत् मार्ग पर ले आता है, अंधकार से निकाल कर ज्योति पथ अर्थात् अमृतमय अमरधाम का पथ प्रशस्त करता है।

अजमेर में निष्काम समाज सेवक दादा दीपचन्द्र बेलाणी ने सुधार सभा की ओर से श्री भगवानदास मयाणी के सहयोग एवं पूज्य स्वामी माधवदासजी महाराज की कृपा से मयाणी अस्पताल बनवाया । उसके उद्घाटन समारोह के उपलक्ष्य में स्वामीजी २३ सितम्बर अजमेर पधारे, २४ सितम्बर प्रात: १० बजे स्वामीजी ने इस अस्पताल का उद्घाटन करते हुए मयाणी परिवार, श्री दीपचन्द्र बेलाणी एवं अन्य सेवकों को साधुवाद देते हुए कहा कि ऐसे ही परोपकार के कार्यों में धन, पदार्थ सफल करें। रोगियों, अपाहिजों की सेवा भी प्रभु की भक्ति है, मुझे आशा है कि इस अस्पताल में हज़ारों रोगी अपना उपचार कराकर स्वस्थ होंगे ।

२६ सितम्बर स्वामीजी अजमेर के आदर्श डिग्री कालेज पधारे । संस्था के प्रधान आचार्य श्री झमटमल टिलवाणी एवं श्री ठाकुरदास तुलसियाणी ने स्वामीजी का स्वागत सत्कार किया। स्वामीजी ने विद्यार्थियों एवं अध्यापकों को आशीर्वाद देते हुए श्री झमटमल टिलवाणी को साधुवाद दिया जिसने लगन के साथ अजमेर में विद्या की ज्योति प्रज्वलित की है । प्राचार्य सुन्दरी केवलरामाणी ने स्वामीजी का आभार व्यक्त किया।

पूज्य स्वामी ऊद्धवदासजी महाराज के पुण्य तिथि उत्सव के सम्बंध में स्वामीजी २७ सितम्बर अहमदाबाद पहुंचे । वहां उन्होंने चार दिन अमृत वचनों की वर्खा की । उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि प्रभु की प्रेम से प्रार्थना करें । प्रभु प्रेम युक्त प्रार्थना अवश्य सुनते हैं । बालक जब रोकर मां को बुलाता है, तो मां उसे उठाकर गले लगाती है, वैसे ही आप भी अश्रुयुक्त प्रार्थना प्रभु से करें तो वह आपको गले लगाएगा, आपकी सहायता अवश्य करेगा । ग्राह (मगर) ने गज (हाथी) को पानी में पकड़ा, गज ने स्वयं को छुड़ाने का बहुत प्रयास किया किन्तु वह स्वयं को छुड़ा नहीं सका । तब गज ने प्रभु से करुणा स्वर में पुकार की । भगवान ने उसकी पुकार सुनकर गरुड़ पर आरुढ़ होकर गज का उद्धार किया । भगवान अपने भक्तों के लिए क्या क्या नहीं करता? भगवान ने गज की तो रक्षा की किन्तु ग्राह को भी मुक्ति प्रदान की । भगवान ने कहा कि ग्राह ने मुझे नहीं पुकारा परन्तु उसने मेरे प्रेमी गज के पांवों को पकड़ा था इसलिए मैंने पहले उसका उद्धार

किया । जो मनुष्य भक्तों के चरण पकड़ता है, अर्थात् चरण स्पर्श करता है, भगवान उसकी भी मुक्ति कर देते हैं ।

प्रेमियो ! प्रभु को प्रेम व श्रद्धा से प्रार्थना करें तो किसी न किसी दिन वे आपको अवश्य दर्शन देंगे और आपके दुख दर्द दूर हो जायेंगे। यदि स्वामी ऊद्धवदासजी पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की शरण नहीं लेते तो आज आप उन्हें याद नहीं करते । स्वामी ऊद्धवदास जी ने वर्षों सत्गुरु महाराजजी की सेवा की और भगवद् भजन किया। तभी तो उनकी पुण्य तिथि मनाई जा रही है । आप भी सत्गुरु की शरण लेकर नाम स्मरण करें और परोपकार के कार्य करें ।

पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में स्वामीजी २ अक्टूबर हरिद्वार पधारे । ६ अक्टूबर से जन्मोत्सव प्रेम प्रकाश आश्रम हरिद्वार में आरम्भ हुआ । हज़ारों प्रेमी इस उत्सव में सम्मिलित हुए । चारों दिन स्वामीजी एवं अन्य संतो ने अमृत वचनों की वर्खा की । स्वामीजी ने पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि आप भक्ति ज्ञान की प्रतिमूर्ति थे । उन्होंने हज़ारों प्रेमियो को नाम का मंत्र देकर आध्यात्मिक मार्गदर्शन किया । प्रेमियो ! आप भी सांसारिक कर्तव्यों की पालना करते हुए नाम स्मरण करें । नाम स्मरण द्वारा कठिन काम भी सरल हो जायेंगे। धन, पदार्थों को प्रभु की धरोहर समझकर सत्कर्मों में सफल करें ।

पूज्य स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज के पुण्य तिथि उत्सव के सम्बंध में स्वामीजी २० अक्टूबर स्वामी रामकृष्ण के स्थान पूना पधारे । वहां उन्होंने २०-२१ अक्टूबर प्रवचन करते हुए स्वामीजी ग्वालानन्दजी महाराज के गुणों का वर्णन किया । स्वामीजी ने कहा कि एकाग्रचित्त होकर भगवद् भजन करें । एक राजा का नियम था कि वह प्रतिदिन एकांत में बैठकर चार घंटे भगवद् भजन करता था । उसका आदेश था कि यदि कोई उसके भगवद् भजन में विक्षेप डालेगा तो उसे फाँसी का दंड दिया जायेगा । एक बार राजा का बेटा अचानक गंभीर हालत में बीमार हो गया । रानी ने मंत्री से कहा कि यह सूचना राजा को दें । राजा उस समय नाम स्मरण में तल्लीन था । मंत्री राजा के आदेश के कारण उसके पास सूचना देने नहीं गया । इधर राजकुमार की मृत्यु

हो गई । राजा भगवद् भजन करने के पश्चात् अपने कमरे में लेट गया तब मंत्री ने राजकुमार के मृत्यु का समाचार राजा को सुनाया तब राजा हंस पड़ा । यह देखकर मंत्री विस्मय में पड़ गया कि शोक समाचार सुनने के पश्चात् राजा क्यों हसे? उसने फिर राजा को पुत्र वियोग की बात बताई ।

राजा ने मंत्री से कहा कि तुम्हारे आने के पूर्व मैं एक स्वप्न देख रहा था कि मुझे पांच पुत्र हैं, उनका विवाह हो रहा है, बहुत ही आनंदमय वातावरण है। मेरे बेटे अपने पत्नियों सहित मेरे चरण स्पर्श कर रहे हैं, इतने में ही तुमने मुझे पुत्र की मृत्यु का समाचार सुनाया। क्या अब में स्वप्न वाले पुत्र वियोग का दुख करूँ या राजकुमार का समाचार सुनकर दुखी होऊँ ! जैसे स्वपन की सृष्टि सत्य नहीं वैसे जगत् की सृष्टि भी असत्य है। मंत्री ने अनुभव किया कि राजा महाज्ञानी हैं । उन्हें पुत्र वियोग का कोई शोक नहीं हुआ । प्रेमियो! जैसे स्वप्न की सृष्टि मिथ्या है, असत् है वैसे जगत् और जगत् की सृष्टि भी असत् है, इसलिए जगत् औ उसके पदार्थों में आसक्ति रखना मूर्खता ही है। ब्रह्म सत् है, इसलिए आप ब्रह्म से ही स्नेह सम्बंध रखें ।

२४ अक्टूबर प्रात: को सिन्धुनगर आश्रम में स्वामीजी ने कार्तिक कथा का आरंभ किया । ३० अक्टूबर गोपाष्टमी के दिन प्रात: स्वामीजी ने उपदेश देते हुए गौ माता की महिमा बताई। सायं, राधेश्याम गौशाला में स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि गौ सेवा भगवान श्री कृष्ण की सेवा है। गौ सेवा से चारों पदार्थों की प्राप्ति होती है। गौ हमारी माता है, उसकी रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है।

३१ अक्टूबर, ८४ प्रात: ९-२५ बजे भारत की प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की उन्हीं के दो सुरक्षा कर्मियों ने हत्या कर दी । इस दुखद समाचार ने भारत ही नहीं वरन् समूचे विश्व को स्तब्ध कर दिया ।

प्रियदर्शिनी श्रीमती इन्दिरा गांधी की, हुई हत्या की अनेक सामाजिक संगठनों एवं धर्माचार्यों ने कड़े शब्दों में निन्दा की । क्योंकि हिन्दू धर्म में हिंसा का कहीं भी स्थान नहीं है ।

पूज्य स्वामीजी ने श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या को कड़े शब्दों में आलोचना करते हुए, उसे दुर्भाग्यपूर्ण बताया । उन्होंने कहा कि श्रीमती गांधी एक दृढ़ प्रतिज्ञ, कर्मयोगिनी और महान देश भक्त थीं। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे तथा इस क्षति के लिये हम सभी देशवासियों को सहन करने की शक्ति प्रदान करे ।

देश में हुई हिंसा को एक घृणित कार्य बताते हुए पूज्य स्वामीजी ने फिर से सौहार्दपूर्ण वातावरण कायम रखने की अपील करते हुए कहा कि हिंसा से पीड़ित लोगों की यथा सम्भव मदद करें ।

२ नवम्बर कार्तिक एकादशी के दिन स्वामीजी ने कार्तिक एकादशी का महत्व प्रतिपादित करते हुए भगवान श्याम सुन्दर की महिमा गाई। तत्पश्चात् ३ नवम्बर पूज्य स्वामीजी पूना पधारे । वहां स्वामी चन्दन प्रकाश, स्वामी टेऊंराम मंदिर में उन्होंने चार दिन सत्संग प्रवचन किये। संत अनन्त प्रकाश ने स्वामीजी का आभार व्यक्त किया । ६ नवम्बर सायं आप सिन्धुनगर आश्रम लौट आये । उसी दिन संध्याकालीन सत्संग में स्वामीजी ने श्री गुरुनाकदेवजी महाराज के जन्म दिन के उपलक्ष्य में विचार व्यक्त करते हुए कहा कि श्री गुरु नानकदेवजी महाराज के आदर्शों व सिद्धांतों पर चलने का प्रयास करें । आज हम उनकी शिक्षाओं को भूल गये हैं ।

प्रेम प्रकाश मंदिर सिन्धुनगर का वार्षिक उत्सव २५ नवम्बर से २६ नवम्बर तक आयोजित किया गया । २५ नवम्बर प्रातः स्वामीजी ने धर्म ध्वजा फहराकर उत्सव का श्री गणेश किया । चारों दिन स्वामीजी एवं अन्य महात्माओं ने ज्ञान की गंगा प्रवाहित की । २९ नवम्बर प्रातः स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा-

साक्षी चेतन रम रहा, जल तल पुन आकाश ।
कह टेऊँ तंहं जानके, पाओ सुख अविनाश ।।

प्रेमियो ! सभी जीवों में ब्रह्म विद्यमान है । जल, थल, अवनि अम्बर में वह एक ही व्यापक है, उसकी सत्ता से ही जगत् की सत्ता है । ब्रह्म सर्वव्यापी है । आप भी यह सत् ज्ञान प्राप्त कर अमर आनन्द की उपलब्धि प्राप्त करें । आत्मज्ञान की प्राप्ति ही मनुष्य जीवन का

एकमात्र ध्येय है । एक बार किसी महात्मा ने प्रवचन करते हुए कहा कि सभी जीवों में ब्रह्म व्यापक है । इसीलिए समदृष्टि धारण कर सभी को भगवत् रूप समझें । कथा श्रवण करने के पश्चात् एक श्रोता रास्ते से जा रहा था और सामने से एक मस्त हाथी आ रहा था । वह मस्त हाथी को सामने आते देखकर भी नहीं हटा । तब महावत ने पुकारा रास्ते से हट जाओ, हाथी मस्त है । फिर भी वह रास्ते से नहीं हटा उसने मन में विचार किया कि अभी तो संत ने कहा है कि सभी में एक ही ब्रह्म व्याप्त है । जो मुझ में है वही सभी में है, फिर क्यों रास्ते से हट जाऊँ । हाथी क्या करेगा? हम दोनों भगवद् रूप हैं । जैसे ही वह मस्त हाथी समीप पहुंचा तो उसने पथिक को सूंड से उठाकर दूर फेक दिया । उसकी हड्डियां टूट गई, दर्द से कराहने लगा । जब वह कुछ महीनों पश्चात् स्वस्थ हुआ तो उस संत के पास आया और उसने आप बीती सुनाई और कहा कि कौन आपके वचनों पर विश्वास करेगा । महात्मा ने कहा 'बेटा ! हाथी में भी ब्रह्म था तो महावत में भी तो वही ब्रह्म विद्यमान था । महावत् ने जब तुम्हें दूर हटने के लिए कहा तो तुम रास्ते से क्यों नहीं हटे? यदि तुम उसका कहना मानते तो तुम्हारी यह दुर्दशा नहीं होती । तुमने हाथी एवं महावत् देनों को ब्रह्म रूप नहीं समझा । यदि दोनों को तुम समरूप समझते तो तुम दुखी नहीं होते ।

२ दिसम्बर आश्रम में इन्दिरा गांधी चिकित्सालय शिविर का आयोजन किया गया। स्वामीजी ने इस शिविर का उद्घाटन करते हुए शौकतराय परियाणी, जीवतराम परियाणी एवं डाक्टरों को साधुवाद दिया जिन्होंने असहाय रोगियों के लिए इस शिविर का आयोजन किया इस अवसर पर स्वामीजी ने कहा कि दीन दुखियों की सेवा करना हमारा कर्तव्य है । असहाय, निराश्रित एवं गरीब भी प्रभु के ही रूप हैं । अपना धन, पदार्थ ऐसे सत्कर्मों में सफल करें ।

दिसम्बर १९८४ नवसारी में एक मार्केट में दुकानों को आग लग गई । इस अग्निकांड में सिन्धी व्यवसायिओं की लगभग १०० दुकानें जल कर राख हो गई । उस दिन पूज्य स्वामीजी सूरत में थे । पूज्य स्वामीजी को जैसे ही यह समाचार मिला तो वे सूरत से नवसारी दुर्घटना

स्थल पर पहुंचे । श्री टिलूमल खटवाणी ने पूज्य स्वामीजी को घटना के सम्बंध में बताया । पूज्य स्वामीजी ने सिन्धी समुदाय को सांत्वना देते हुए कहा कि दुकाने बनाने के लिए शीघ्र ही आपको सहायता की जायेगी । भगवान आप सब का भला करेगा ।

भगवद् प्रेमी ईश्वर बालाणी के नेह निमन्त्रण पर पूज्य स्वामीजी २६ दिसम्बर अमृतवेला आश्रम, खंडाला पधारे । सायं ५ बजे उन्होंने वहां सत्संग प्रवचन करते हुए श्री ईश्वर बालाणी को धन्यवाद दिया जिसने एकांत स्थल पर यह रमणीक आश्रम बनाया है यहां नाम स्मरण करना अनिवार्य है । सांसारिक इच्छाएं कभी पूरी नहीं होंगी । इन इच्छाओं की तृप्ति हेतु मनुष्य को कितने पाप कर्म करने पड़ते हैं । भगवान श्रीकृष्ण भी अर्जुन से श्रीमद्भगवद् गीता में कहते हैं कि तुम्हें त्याग, संसार का नहीं किन्तु सांसारिक इच्छाओं का करना चाहिए । सिकंदर बादशाह की इच्छा थी कि वह सारे संसार पर विजय प्राप्त कर अपना शासन स्थापित करे । इसी इच्छा को पूरा करने के लिए उसके कितना न रक्त बहाया । जब वह ईरान पर विजय प्राप्त कर अन्य देश पर आक्रमण करने जा रहा था तो मार्ग में लोग उसे सजदा कर रहे थे। एक फकीर दरवेश अपनी मस्ती में वहां खड़ा था । सिकंदर के सिपाहियों ने उससे कहा कि दूर हट जाओ, बादशाह सिकंदर आ रहे हैं, उसे सजदा करो । तब दरवेश ने कहा "सिकंदर तो मेरी दासी का भी दास है, फिर क्यों मैं दूर हटूं और उसे सजदा करूं?" यह सुनकर सिपाही क्रोधित होकर उसे मारने के लिए तैयार हो गये । इतने में ही वहां सिकंदर बादशाह भी आ पहुंचे । बादशाह ने सिपाहियों से पूछा कि क्या कारण है कि जो तुम इस पर इतना क्रोधित हो रहे हो? सिपाहियों ने कहा "बादशाह सलामत ! इस फकीर ने आप के लिए अपशब्द कहे हैं कि सिकंदर बादशाह तो मेरी दासी का भी दास है ।

सिपाहियों और बादशाह सिकंदर का आपस में वार्तालप सुनकर उस दरवेश ने कहा "सिकंदर ! तुमने अपनी इच्छा पूर्ति के लिए लाखों लोगों की जिन्दगी ली है, इससे प्रतीत होता है कि तुम इच्छाओं के गुलाम हो । मैंने सांसारिक इच्छाओं का त्याग कर खुदा की राह ली है । मैं इच्छाओं का गुलाम नहीं । इच्छाएं मेरी गुलाम हैं, तुम इन इच्छाओं के गुलाम हो फिर मैं क्यों तुम्हें सजदा करूं? मैं तो केवल

खुदा को सजदा करता हूं। तुमने इतने देशों पर विजय प्राप्त की, फिर भी तुम्हारी इच्छाएं तृप्त नहीं हुई। तुम्हारे माल अस्बाव, धन पदार्थ, महल, मकान, सब यहां ही रह जायेंगे और तुम खाली हाथ खुदा के पास जाओगे।

जायेगा जब जहां से, कोई न साथ होगा,
दो गज़ कफन का टुकड़ा, तेरा लिबास होगा।

सिकंदर ! तुम क्यों अंहकार करते हो, क्यों लाखों लोगों को मौत के घाट उतार रहे हो? इन लोगों ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? अपनी इच्छा की तृप्ति के लिए आक्रमण कर रहे हो, अशान्ति व तनाव पैदा क्यों करते हो? एक दिन तुम खाक हो जाओगे ! इच्छाओं और भोगों का त्याग करो तो तुम्हें सच्चा सुख मिलेगा। सिकंदर दरवेश का उत्तर सुनकर उसे सजदा कर चला गया। प्रेमियो ! त्याग में ही आनन्द है। "जितनी खुशियां माणिया उतना भया रोग।" भोग,रोग का कारण है। इसलिए जगत् में अनासक्त भाव से रहकर नाम स्मरण करें, परोपकार के कार्य करें।

२७ दिसम्बर प्रात: पूज्य स्वामीजी ने अमृत वचनों की वर्खा करते हुए कहा-

टेऊँ गफ़लत नींद में बीते जन्म अनेक।
मानुष जन्म को पाय तुम, तजी न सोवन टेक॥

२७ दिसम्बर दोपहर पूज्य स्वामीजी अहमदनगर पधारे। वहां उन्होंने स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंडली में दो दिन सत्संग प्रवचन किये। २९ दिसम्बर स्वामीजी पिम्परी, पूना में पधारे। वहां उन्होंने स्वामी टेऊँराम सत्संग मन्दिर में दो दिन सत्संग प्रवचन करते हुए माता सती एवं अन्य सेवकों को साधुवाद दिया, जो नियमित रूप से मंदिर में सत्संग की ज्योति जगाते रहते हैं। सत्गुरु महाराज भी फरमाते हैं-

सब संतों ने बैठकर किया यह विचार।
कह टेऊँ सत्संग सम, साधन नही को सार॥

प्रेमियो ! जब प्रभु के मंदिर में कथा या संतों के वचन श्रवण करने आएं तब सांसारिक चिन्ताओं व तनाव को छोड़कर एकाग्रचित्त से

कथा श्रवण करें तभी आपको सत्संग का लाभ प्राप्त होगा ।

सत्संग में जाइये, चिन्ता घर की छोड़ ।
कह टेऊँ सत् वचन में, दीजे मन को मोड़ ॥

पूज्य स्वामीजी उदार हृदय थे । वे सभी सम्प्रदाय के सन्तों को सम्मान देते थे । सायं सत्संग करते समय यदि बाहर का कोई संत महात्मा आश्रम में आ जाता था तो स्वामीजी स्वयं सत्संग प्रवचन न कर दूसरे संतो या गुणीजनों को प्रवचन करने के लिए विनय करते थे । यह उनकी उदारता थी के वे तन मन धन से उनकी सेवा व सम्मान करते थे । स्वामीजी बालक बालिकाओं को भी स्नेह देते थे। एक बार रात्रि ९ बजे मैं गांधी नगर कोल्हापुर में स्वामीजी के साथ बैठा था । बाहर भक्ति संगीत की वर्खा हो रही थी । स्वामीजी भी आधा घंटा पूर्व प्रवचन कर अपने कमरे में आये थे कि एक बालिका वहां आई और उसने स्वामीजी से कहा कि मुझे नाम दान दें । स्वामीजी ने मुस्कराते हुए कहा 'बेटी ! भगवान तो अब सो गया है । कल प्रातः आना । कभी कभी चलते या कार में बैठे बैठे ही स्वामीजी को यदि कोई प्रेमी जल पढ़ देने के लिए विनय करता था तो उन्हें जल पढ़कर देते थे । आश्रम के वार्षिक उत्सव में देश विदेश से हज़ारों प्रेमी आते हैं, स्वामीजी उनके भोजन व रहने की अच्छी तरह व्यवस्था करते थे । स्वामीजी इतने तो दयालु थे कि वे प्रेमियों को अपने कमरे में भी सोने के लिए कहते थे । न केवल इतना वे अपने बिस्तर की चादर एवं तकिये भी अतिथियों को विश्राम करने के लिए दे देते थे।

एक बार दोपहर को पूज्य स्वामीजी अपने कमरे में बैठे थे । मैं भी वहां बैठा था । कमरे में एक संत आया और उसने पूज्य स्वामीजी से कहा "मुझे सतरंगी चाहिये ।" मैंने उससे पूछा कि यह सतरंगी क्या है? तो उसने स्वामीजी के पलंग पर बिछी हुई चादर की ओर संकेत किया । स्वामीजी ने कहा एक चादर ले आओ और इस संत को देकर प्रसन्न करो परन्तु संत ने कहा मुझे दूसरी सतरंगी नहीं, आपके पलंग पर बिछी सतरंगी चाहिए । यह सुनकर स्वामीजी स्वयं पलंग से उठकर बोले कि पलंग पर बिछी हुई सतरंगी उठाकर संत को दीजिये। संत प्रसन्न हुआ तो मानो प्रभु प्रसन्न हुआ ।

पूज्य स्वामीजी के पास कई प्रेमी अपना दुख सुनाने और आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए आया करते थे। किसी को शारीरिक तो किसी को मानसिक दुख दर्द होता था। कोई अपनी पत्नि के व्यवहार से तो कोई पुत्र के व्यवहार से व्यथित स्वामीजी के पास आता था। स्वामीजी हरएक की व्यथा सुनकर उन्हें सांत्वना देते थे। उन्हें जल पढ़कर देते थे। साझेदार (भागीदार) आपस में झगड़ते थे तो भी पूज्य स्वामीजी के पास निर्णय के लिए आते थे। स्वामीजी गंभीरता, अनुभव व आध्यात्मिक शक्ति से उनकी समस्याओं का समाधान करते थे।

प्रेमियों का विश्वास था कि पूज्य स्वामीजी द्वारा पढ़े हुए जल का प्रयोग करने से दुख दूर हो जायेंगे। इसलिए लोग उनके पास जल पढ़ाने के लिए आते थे किन्तु पूज्य स्वामीजी उन्हें कहते थे कि मंदिर में जाकर भगवान एवं सत्गुरु महाराज की मूर्तियों को प्रणाम करें तो भगवान आपका भला करेगा। शारीरिक रोगियों को वे सलाह देते थे कि किसी डाक्टर का उपचार करें, हम डाक्टर तो नहीं है। गौ माता एवं पक्षियो की सेवा करें।

एक प्रेमी की बालिका के दिल का वाल्व खराब हो गया था। डाक्टरों ने कहा कि के. ई. एम. हास्पीटल, बम्बई में उसका आपरेशन होगा। एक दिन मैं स्वामीजी के कमरे में बैठा था तो एक महिला डाक्टर वहां आई और उसने स्वामीजी से कहा कि बालिका के वाल्व के आपरेशन के अतिरिक्त और कोई उपचार नहीं है। उस बालिका की माता और दादी मां ने स्वामीजी की शरण ली। वे बालिका को आश्रम में लेकर कुछ दिन वहां ठहरे। वे प्रतिदिन प्रभु और स्वामीजी से प्राथना करते रहे कि बालिका बिना आपरेशन ही ठीक हो जाय। भगवद कृपा से एवं पूज्य स्वामीजी की दया दृष्टि से वह बालिका बिना आपरेशन के ही स्वस्थ हो गई।

१० जनवरी १९८५ पूज्य स्वामीजी भाटापारा पधारे। वहां स्वामीजी ने चार दिन अमृत वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। उन्होंने उपदेश देते हुए कहा कि प्रभु को नहीं भूलें। सांसारिक काम करते उसे याद करें। उसकी भक्ति के बिना जीवन व्यर्थ है। ऋषि वेदव्यास जिन्होंने १७ पुराण, महाभारत एवं अन्य उपपुराण लिखे थे। वे एक दिन उदास

होकर बैठे थे तो अचानक नारद ऋषि वहां आये, और उन्होंने उनसे पूछा कि आप उदास क्यों है? ऋषि वेदव्यास ने कहा कि मैंने इतने महान ग्रन्थ लिखे हैं परन्तु फिर भी मेरे मन आनंद नहीं है, इसलिए मैं उदास हूं। ऋषि नारद ने कहा ''महर्षि ! आपने पुराणों में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का वर्णन किया है। अब आप एक ऐसे ग्रन्थ की रचना करें। जिसके पढ़ने व श्रवण करने से पाठक और श्रोताओं के मन में प्रेमा भक्ति की सरिता प्रवाहित हो जाये तो फिर आप अद्वितीय आनंद का अनुभव करेंगे। प्रेमा भक्ति प्रभु से मिलने का एक सरल साधन है। जिसके मन में प्रेमा भक्ति है वह सदैव आनद अवस्था में रहता है। ऋषि नारद के ये वचन सुनने के पश्चात्, श्री वेदव्यासजी ने श्रीमद् भागवत की रचना की। इस महान ग्रन्थ में प्रभु के प्रेमाभक्ति का अद्वितीय उल्लेख है। इस ग्रन्थ रचना के पश्चात् ऋषि वेदव्यास ने आनन्द का अनुभव किया। अब भी श्रोतागण इस ग्रन्थ की कथा श्रवण कर भक्ति की सरिता में डूब जाते हैं और आनंद का अनुभव करते हैं। प्रेमियो ! आप भी भगवद् भक्ति में तल्लीन हो जायें।

१४ जनवरी पूज्य स्वामीजी बिलासपुर पधारे। वहां उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन किया।

२ फरवरी रात्रि पूज्य स्वामीजी ने मुरली मनोहर सोसाइटी कुर्ला, बम्बई में सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि नाम को नहीं भूले। जितना आप अधिक नाम स्मरण करेंगे, उतनी आपको आत्मिक शक्ति मिलेगी और फिर आप सरलता से संसार रूपी सागर पार कर सकेंगे। एक बार एक पथिक को वर्षा की मौसम में एक नदी पार करनी थी। नदी का प्रवाह बहुत तेज था। उसने श्री रामायण की कथा श्रवण की थी और उसे वह घटना याद थी कि पत्थरों पर राम नाम लिखने से पत्थर तर गये थे। पत्थरों पर राम नाम लिखकर पुल बांधकर वानर सेना समुद्र पार कर गई। उस पथिक ने भी प्रभु पर विश्वास रखकर अपने हाथ पर राम नाम लिखकर नदी में प्रवेश किया तो वह जल में डगमगाते गिर पड़ा। स्वयं को डूबने से बचाकर वह नदी के किनारे आ गया। वहां कोई नाविक नहीं था। सामने एक संत की कुटिया थी, वह पथिक वहां आया। उसने संत से प्रार्थना की कि किसी

अत्यन्त आवश्यक कार्य के लिए मुझे नदी के उस पार जाना है। आप कृपया दया दृष्टि करें। आप तो भवसागर से पार लगाते हैं, मुझे इस नदी से पार लगाएं तो मैं अपने गंतव्य स्थल पर पहुंच जाऊं। संत दयालु होते हैं, उसने उस पथिक के हाथ पर राम का नाम लिखकर कहा कि यह हाथ आगे फैलाकर तुम नदी में प्रवेश करो, भगवान भला करेगा। पथिक ने कहा "स्वामीजी! मैंने भी ऐसा ही किया था स्वयं अपने हाथ पर राम नाम लिखकर नदी में प्रवेश किया तो डूबने लगा। जान बचाकर किनारे पर लौट आया और फिर मैनें आपकी शरण ली। संत ने कहा "बेटा! प्रभु में पूर्ण विश्वास धारण कर, उसे याद करते नदी में प्रवेश करो तो पार लग जाओगे, उस पथिक ने संत की आज्ञानुसार राम नाम उच्चारण करते हुए नदी में प्रवेश किया और भगवद् कृपा से नदी पार कर अपने गन्तव्य स्थल पर पहुंच गया।

पथिक ने राम नाम की कोई साधना नहीं की थी, सुनी सुनाई कथा अनुसार उसने अपने हाथ पर राम नाम लिखा था, किन्तु संत ने राम नाम की साधना की थी इसलिए उसके राम नाम लिखने का महत्व था। उस संत ने जब पथिक के हाथ पर राम नाम लिखा तभी पथिक नदी से पार हो पाया। प्रेमियो! आप भी यदि किसी परिपूर्ण संत या गुरु से राम नाम की दीक्षा लेंगे और उस गुरुमंत्र की साधना करेंगे तो अवश्य संसार सागर से पार हो जायेंगे।

३ फरवरी प्रातः ११ बजे रोहिड़ा पंचायत का वार्षिक उत्सव पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। पूज्य स्वामीजी ने कार्यकर्ताओं को धन्यवाद देते हुए कहा कि आपस में मेल मिलाप के साथ रहें। एकता में शक्ति होती है। एक दूसरे का दुख दूर करने का प्रयास करें। परिवार में प्रेम का वातावरण पैदा करें तो आप सब के घर स्वर्ग बन जायेंगे।

ट्रस्ट फार सिन्धी चिल्ड्रेन्स वूमेन्स की ओर से कस्तूरबा बालमन्दिर सिन्धुनगर-५ में समाज सेवक श्री पेसूमल चांडवाणी का जन्म दिन मनाया गया, स्वामीजी इस उत्सव के मुख्य अतिथि थे। दादी ठाकुरी लखाणी ने उनका स्वागत किया। पूज्य स्वामीजी ने पुष्पांजलि अर्पित

करते हुए कहा कि श्री पेसूमल चाँडवाणी निष्काम भावना से बड़े उत्साह के साथ बालकों एवं महिलाओं की सेवा करता था । उसने विभिन्न नगरों में बालमंदिर एवं नारीशालाएं स्थापित कर उत्तम कार्य किया । आप भी ऐसे परोपकार के कार्य कर जीवन सफल बनाएं ।

११ फरवरी पूज्य स्वामीजी, स्वामी चन्दनप्रकाश, प्रेम प्रकाश मन्दिर पूना पधारे । वहां स्वामी चन्दनप्रकाश महाराज के पुण्य तिथि उत्सव के सम्बंध में उन्होंने तीन दिन अमृत वचनों की वर्खा की । उत्सव का समापन करते हुए उन्होंने कहा कि स्वामी चन्दनप्रकाशजी हृदय से उदार थे । उन्होंने नाम स्मरण एवं परोपकार में जीवन सफल किया। प्रेमियो ! भगवान ने आप को जो कुछ दिया है, उसे उसकी धरोहर समझकर परोपकार के कार्यां में सफल करें । व्यर्थ घमंड न करें । सत्गुरु महाराज भी फरमाते हैं-

सर्व वस्तु भगवान की, और किसी की नाहिं ।
टेऊँ अपनी जान के, गर्व न कर मन मांहि ।।

१६ फरवरी पूज्य स्वामीजी गोंदिया में पधारे। रात्रि को सिन्धु एज्यूकेशन सोसाइटी की रजन जयन्ती उत्सव के अवसर पर कवि किशनचन्द "बेवस" का जन्म शताब्दी उत्सव मनाया गया । इस उत्सव की अध्यक्षता पूज्य स्वामीजी ने की । श्री कौड़ोमल तोलाणी ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत सत्कार किया और मंत्री श्री रमेश तोलाणी ने सोसाइटी के कार्यों पर प्रकाश डाला । श्री रोचीराम थावाणी ने ज्योति प्रज्वलित कर उत्सव का शुभारम्भ किया । पूज्य स्वामीजी ने कवि बेवस को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि कवि का अर्थ होता है ज्ञानी। कवि बेवस, एक ज्ञानवान, आशावादी एवं आस्तिक कवि थे । उन्होंने अपने काव्य में प्रकृति के सुन्दर दृश्य चित्रित करने के साथ-साथ समाज का यथार्थ रूप प्रस्तुत किया है । वे लोक प्रिय कवि थे । आध्यात्मिक विषयों पर भी उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से विचार व्यक्त किये हैं । डा. दयाल "आशा" ने भी कवि बेवस के गीत गाकर उनके काव्य दर्शन सम्बंधी विचार व्यक्त किये ।

सिन्धू एज्यूकेशन सोसाइटी द्वारा स्वामी टेऊँराम हाल बनाने की योजना बनाई गई । १५ फरवरी प्रातः स्वामीजी ने उसी हाल के निर्माण की

नींव रखते हुए कहा कि यह हाल विभिन्न सामाजिक कार्यों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा । स्वामीजी ने इस हाल के निर्माण हेतु १० हजार रुपये अपनी ओर से सोसाइटी को भेंट किये ।

१८ फरवरी शिवरात्रि के पावन दिन, गोंदिया के नवयुवक मंडल ने सामूहिक विवाहों का आयोजन किया । स्वामीजी ने वर-वधुओं को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आप सद्गृहस्थी होकर रहना । घर में मां बाप, सास ससुर व अपने से बड़ों की सेवा करें और उनकी आज्ञा अनुसार चलेंगे तो आप उनके आशीर्वाद के पात्र बन सकेंगे।

१९ फरवरी स्वामीजी जालना पधारे । वहां श्री जाड़ो वलरमल के सुपुत्र के शुभ विवाह के अवसर पर उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन किया और वर-वधु को आशीर्वाद दिया । औरंगाबाद सिन्धी पंचायत के अनुरोध पर पूज्य स्वामीजी २२ फरवरी औरंगाबाद पधारे । वहां पूज्य स्वामीजी ने उपदेश देते हुए सिन्धी समुदाय से कहा कि आपस में प्रेम व एकता के साथ रहकर एक दूसरे को आगे बढ़ाने का प्रयास करें । प्रति दिन नाम स्मरण व सेवा का कोई न कोई कार्य अवश्य करें ।

वडाला सिन्धी ब्रादर मंडल की ओर से वडाला, बम्बई में २४ फरवरी से ७ मार्च तक स्वामीजी के सत्संग यज्ञ का आयोजन किया गया। स्वामीजी ने वहां १२ दिन विभिन्न विषयों पर प्रवचन करते हुए प्रेमियों का मार्ग दर्शन किया । एक दिन उन्होंने उपदेश करते हुए कहा-

गुर आज्ञा पालन करे, गहे गुरु से ज्ञान ।
कह टेऊँ सुख दुख सहे, गुरुमुख सो पछान ।।

जो सत्गुरु की आज्ञा का पालन करता है गुरु से सत्ज्ञान की दीक्षा ग्रहण कर सेवा करता है । वही सच्चा शिष्य है, सेवा करते यदि उसे कांटों या फूलों की प्राप्ति हो वह दोनों को शिरोधार्य कर साधना पथ पर अग्रसर होता रहे, वह अवश्य ही उत्तीर्ण होगा । सत्गुरु एवं प्रभु उसे अपने गले लगाऐंगे । सच्चा शिष्य सर्वस्व सत्गुरु के श्री चरणों में अर्पण करता है ।

एक संत जंगल में रहता था । एक दिन उसने एक शिष्य को एक

रुपया देते हुए कहा कि गांव में जाकर चार लड्डू लेकर आओ। शिष्य गांव गया, गुरु की आज्ञानुसार वह चार लड्डू लेकर वापस लौटा। रास्ते में उसने सोचा कि मेरा गुरु सब लड्डू स्वयं थोड़े ही खा जाएगा। मुझे भूख लग रही है क्यों न एक लड्डू खा जाऊं। उसने एक लड्डू खा लिया। लड्डू बहुत स्वादिष्ट था, उसने विचार किया कि गुरु ने चार लड्डू मंगवाए हैं, दो अपने लिए और शायद दो मेरे लिए। क्यों न मैं अभी ही दूसरा लड्डू भी खालूं। उसने दूसरा लड्डू भी खा लिया। आगे बढ़ा तो उसने विचार किया अब जब मैं दो लड्डू गुरु को दूंगा तो वह स्वयं अकेले तो नहीं खाऐंगे अवश्य ही एक लड्डू स्वयं खाऐंगे और एक लड्डू मुझे खिलाएं। इसलिए अभी मैं अपना हिस्सा भी खा लेता हूं। उसे भूख लगी थी अत: उसने तीसरा लड्डू भी खा लिया। जब वह गुरु के पास आया तो उसने एक लड्डू गुरु को दिया। गुरु ने पूछा-पुत्र ! और लड्डू कहां गये? शिष्य ने चौथा लड्डू भी अपने मुंह में डालते हुए कहा कि यहां गये। शिष्य ने गुरु का कोई विचार नहीं किया। चारों लड्डू स्वयं खा लिए। गुरु शिष्य का यह उत्तर और व्यवहार देखकर विस्मय में पड़ गया। उसने उससे कहा "पुत्र ! तुम क्या सीखोगे? तुम घर लौट जाओ। प्रेमियो ! यदि ऐसे लोभी, स्वार्थी शिष्य होंगे तो गुरु उनका क्या मार्ग दर्शन व कल्याण कर सकेगा। शिष्य को संयमी और त्यागी होना चाहिए, तभी वह गुरु कृपा का पात्र बन सकता है।

३ मार्च वडाला, बम्बई में पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में गौ रक्षा सम्मेलन सम्पन्न हुआ। उन्होंने गौ रक्षा का महत्व प्रतिपादित करते हुए कहा कि गौ धन देश का अमूल्य धन है, उसकी सुरक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है। धार्मिक दृष्टि से भी गौ सेवा करनी चाहिए।

७ मार्च सायं पूज्य स्वामीजी ने सत्संग यज्ञ का समापन करते हुए कहा कि प्रभु से प्रार्थना करें कि आवागमन के चक्र से मुक्ति प्राप्त हो। प्रेमियो ! संतो के पास आकर संतान, सांसारिक पदार्थ व धन नहीं मांगे। उनसे नाम पदार्थ मांगे। केवट ने जब भगवान श्रीराम,

माता सीता व लक्ष्मण को नाव में चढ़ाकर गंगा नदी से पार किया, तब भगवान श्रीराम ने उससे पूछा, "तुम्हें क्या दूं?" उस समय केवट भगवान के श्रीचरणों में गिर पड़ा, उसकी आंखों में प्रेम के आंसू थे, वे आंसू भगवान के श्री चरणों में गिरे, उसने भगवान से कहा कि जब मैं आपके घाट पर आऊँ तब आप मुझे संसार सागर से पार लगाना, मुझे यही आपकी कृपा चाहिए। यह सुनकर भगवान श्रीराम ने केवट को अपने गले लगाया। प्रेमियो ! आप भी केवट की भांति भगवान से नाम दान, भक्ति दान व मुक्ति दान मांगे।

१३ मार्च प्रातः पूज्य स्वामीजी मंडली सहित गांधीनगर, कोल्हापुर पधारे। प्रेमियों ने उनका भव्य स्वागत किया। वहां प्रेम प्रकाश मन्दिर के वार्षिक उत्सव के सम्बंध में उन्होंने तीन दिन विभिन्न विषयों पर प्रवचन करते हुए प्रेमियों का मार्गदर्शन किया। १६ मार्च प्रातः पूज्य स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि जो सत्गुरु की शरण में आया वह भगवान की शरण में आया। जिसने अपना हाथ सत्गुरु को सौंपा, उसने जीवन की डोरी प्रभु को सौंपी। सत्गुरु, भगवान से मिलाता है। सत्गुरु महाराज भी फरमाते हैं-

गुरु से अधिक न और को, देवी देव पछान।
सत्गुर सब से श्रेष्ठ है, कह टेऊँ सत् जान॥

प्रेमियो ! सत्गुरु की मूर्ति का ध्यान कर, गुर मंत्र का अभ्यास करें तो आपको आध्यात्मिक आनंद की उपलब्धि होगी।

गुर मूर्त का ध्यान कर, गुरु है देवन देव।
कह टेऊँ गुरु नाम जप, पाओ आतम मेव॥

पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने भी पूज्य संत आसूराम जी की शरण ली। उन्होंने अपने गुरुदेव संत आसूरामजी की समर्पित भाव से सेवा की तब सत्गुरु आसूरामजी ने उहें आत्मज्ञान की दीक्षा दी। वे अपनी वाणी में कहते हैं-

सत्गुरु कृपा धार के, दीनी नाम की दात।
कह टेऊँ तहं नाम से लगन लगी दिन रात॥

पूज्य स्वामीजी १७ मार्च इचलकरंजी पधारे। वहा उन्होंने अमृत

वचनों की वर्खा की । श्री ब्रजलाल हीराणी ने उनका अभार व्यक्त किया । १८ मार्च स्वामीजी बेलगाम पधारे । वहां सिन्धी पंचायत की ओर से सत्संग यज्ञ का आयोजन किया गया । स्वामीजी ने वहां दो दिन सत्संग प्रवचन कर प्रेमियों को भगवन् नाम का रसास्वादन कराया।

सिन्धु समाज राजेन्द्रनगर, दिल्ली की ओर से सिन्धु भवन में ३१ मार्च चेटी चांद (गुड़ी पड़वा) का उत्सव आयोजित किया गया । वहां स्वामीजी ने श्री अमर उडेरोलाल की मूर्ति का अनावरण करते हुए कहा कि सिन्धी संस्कृति, सभ्यता व सिन्धी भाषा को न भुलाएं । आप लोगों ने राजधानी में सिन्धु भवन की स्थापना कर उसमें आज सिन्ध के अवतार श्री उडेरोलाल की मूर्ति स्थापित कर उत्तम कार्य किया है । आपस में एकता कर एक दूसरे को सहयोग, सहानुभूति व स्नेह दें ।

प्रेम प्रकाश मंडल का ६४ वां वार्षिक उत्सव ७ अप्रैल से अमरापुर स्थान जयपुर में आयोजित किया गया । इस उत्सव के सम्बंध में पूज्य स्वामीजी ४ अप्रैल जयंपुर पधारे । ५ अप्रैल उन्होंने मीरा स्कूल में स्वामी सर्वानन्द ब्लाक का उद्घाटन करते हुए कार्यकर्ताओं को धन्यवाद देते हुए कहा कि विद्या उत्तम दान है, इस विद्यामन्दिर में हज़ारों विद्यार्थी आकर विद्या प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों में पवित्रता, प्रार्थना, प्रेम, सेवा, सादगी व सच्चाई के बीज बोएं, जैसे वे भविष्य में आदर्श नागरिक बनें । उनके शारीरिक व मानसिक विकास की ओर भी ध्यान दें ।

पूज्य स्वामीजी ने स्वामी सर्वानन्द ब्लाक हेतु ५१ हज़ार रुपये दान स्वरूप दिये । अन्य प्रेमियों ने भी ४ हजार रुपये इस कार्य के लिए भेंट किये । ६ अप्रैल पूज्य स्वामी गुरुमुखदसजी के पुण्य तिथि उत्सव सम्बंध में पूज्य स्वामीजी ने स्वामी गुरुमुखदासजी महाराज के गुणों का वर्णन किया । ७ अप्रैल प्रातः उन्होंने संतों के साथ धर्म ध्वजा फहराकर उत्सव का आरंभ किया । चारों दिन संतो महात्माओं ने सत्संग प्रवचन किये ।

चैत्र मेले के पावन अवसर पर मासिक प्रेम प्रकाश सन्देश द्वारा प्रकाशित ''मानव धर्म'' विशेषांक का विमोचन पूज्य स्वामीजी के पवित्र कर कमलों द्वारा किया गया । इस विशेषांक हेतु शुभाशीष संदेश में

पूज्य स्वामीजी ने कहा कि-

धर्म ही मानव जीवन का सार पदार्थ है। यद्यपि धर्म की राह पर चलने वाले मनुष्यों के समक्ष विविध कठिनाईयां अवश्य आती हैं तथापि जो धर्म के सच्चे अनुरागी होते हैं उनके लिए कुछ भी असम्भव नहीं है। शास्त्रों में धर्म की परिभाषा "धारणात् धर्म" की गयी है- जो हमें, हमारे समाज को धारण करे वह धर्म है।

धर्म एव हतो हन्ति, धर्मों रक्षति रक्षित:।" धर्म का जो नाश करेगा, धर्म उसका विनाश कर देगा, जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है।

धर्म की उपेक्षा से ही वर्तमान मनुष्य-समाज का पतन हुआ है। अनाचार, स्वार्थलोलुपता, घूसखोरी, ठगी, विश्वासघात इत्यादि ये सब कुकृत्य धर्म की उपेक्षा से ही मनुष्य में आये हैं और आ रहे हैं। जो धर्म हमारे जीवन का साथी और पथ प्रदर्शक है आज मनुष्य समाज उसे ही छोड़ता जा रहा हैं।

धर्म ही हमें सब तरह के विनाश और अधोगति से बचाकर उन्नति की ओर ले जाने वाला है। धर्म से मिलती है जीवन में पवित्रता, मन की शुद्धता, धर्म जीवन में प्रतिदिन प्रतिपल व्यवहार की जीवन पद्धति है।

धर्म हमारे जीवन की पूंजी है। आज हम इस पूंजी को भुलाकर जीवन का व्यापार चला रहे हैं। यह लोक और परलोक का बिगड़ना ही यहां व्यापार का घाटा है। यदि हम इस पूंजी को पहचान कर इसके महत्व को समझकर अपने जीवन को धार्मिक बनायें, अपने व्यापार को शुद्ध बनायें, तब हमें इस पूंजी से होने वाला वास्तविक लाभ समझ में आ जायेगा। इससे हम अपने इस मानव जीवन को धन्य बनाकर अपने देश ही नहीं विश्व का कल्याण कर सकते हैं।

इसी विशेषांक हेतु "परोपकाराय सतांविभूत्य:" नाम से भेजे गये लेख में स्वामीजी ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मनुष्य के अतिरिक्त और कोई प्राणी ऐसा नहीं है जो धर्म और अधर्म, पाप और पुण्य के सम्बन्ध में विचार कर सके। पशु पक्षियों का जीवन प्राकृतिक है, उनमें मानव जैसी कोई विशेषता नहीं। देवों का जीवन विलासमय

है । नरक में रहने वाले प्राणी तो प्रतिपल दुःख से व्याप्त रहते हैं। इस स्थिति में केवल मनुष्य ही ऐसा रह जाता है जो धर्म और अधर्म के सम्बन्ध में विचार कर, पाप को छोड़कर पुण्य तथा धर्म को अपनाकर परमात्मा तक बन सकता है ।

आज संसार में सभी व्यक्ति चाहते हैं कि उन्हें हर तरह का सुख मिले । परन्तु सुख तो पुण्य से ही प्राप्त होता है ठीक इसके विपरीत पाप का परिणाम कष्टदायक है । परन्तु आज पाप करने वाला व्यक्ति भी पापों के परिणाम से बचने की सोचता है, पर यह तो मानी हुई बात है कि "जैसा करोगे वैसा भरोगे" । अच्छे का फल अच्छा और बुरे का फल बुरा मिलेगा ही ।

अब यदि आप स्वयं सुखी रहना चाहते हैं तो सर्व प्रथम दूसरों को सुख दें किसी का भी बुरा न करें । यह शरीर तो प्रतिक्षण नाश हो रहा है और जीवात्मा निकल जाने के बाद तो इस शरीर को जला दिया जायेगा । अतः इससे जो भी कुछ दूसरों की भलाई हो जाय वही अच्छा है । इस शरीर से परोपकार द्वारा महान गुण प्राप्त कर लेना ही शरीर धारण करने की सार्थकता है ।

शास्त्रों में कहा गया है कि परोपकार रहित मनुष्यों का जीवन धिक्कार के योग्य है, पशु कहलाने वाले प्राणियों का भी चमड़ा मनुष्य का उपकार करता है । अर्थात् परोपकार न करने वाले मनुष्यों का जीवन पशुओं से भी गया बीता है ।

जग में कीना नहिं उपकार ।
निश दिन पेट भरण हित तुमने, कर्म किये बदकार ॥
आशा तृष्णा के वश होके, कीने पाप अपार ।
नेक कर्म तुम एक न कीना, पड़ा लोभ के लार ॥
मानुष तन दुर्लभ यह तुमने दिया भोग में डार ।
दीन जनों को सुख, ना दीया, तांते तोहि धिक्कार ॥
दया धर्म बिन तेरा जीवन सारा है बेकार ।
कहे टेऊँ अब भी कछु कर ले जाते होय उद्धार ॥

परोपकार: कर्त्तव्य: प्राणैरपि धनैरपि ।।
परोपकारजं पुण्यं न स्यात् क्रतुशतैरपि ।।

जिनके हृदय में सदा परोपकार की भावना जागृत् रहती है, उनकी आपदाएं नाश हो जाती है और उन्हें पग-पग पर सम्पति मिलती रहती है ।

परोपकारी प्राणी केवल संत कहे जाने का ही अधिकारी नहीं, वरन् सन्तों द्वारा अभिनन्दनीय बन जाता है । परोपकारी प्राणी मरकर भी अमर हो जाता है । यदि ऐसा नहीं होता तो आज हम परोपकार के लिये मृत्यु का वरण करने वाले महर्षि दधीचि, माता सीता को रावण के द्वारा अपहृत होते देखकर परोपकारार्थ, युद्ध की बलिवेदी पर प्राण देने वाले जटायू, कबूतर की प्राण रक्षा के लिये अपने शरीर का मांस देने वाले महाराजा शिबी, गोरक्षा के लिये अपना शरीर समर्पित करने वाले महाराज दिलीप, भूखी आत्माओं को देखकर अपने अन्न जल का दान करने वाले महाराज रन्तिदेव की गौरव गाथाएं क्यों गा रहे होते?

मलुका सोई बीर है, जो जानै पर पीर ।
जो पर पीर न जानई, सो काफिर बे पीर ।।

परोपकारी अपनी हानि उठाते हुए भी परोपकार में रत रहता है ठीक इसके विपरीत आसुरी वृत्ति वाले पुरुष अपने स्वार्थ के लिये दूसरों की हानि करने में नहीं चूका करते । कभी कभी तो व्यक्ति बिना कारण दूसरों की हानि करने में आगापीछा नहीं सोचा करते हैं ।

दु:ख पराया, जिसका सुख हो, वह है बड़ा अभागी ।
अपना सुख दे, पर दु:ख हरता, मानव वही सुभागी ।।
निज सुख दान करो सबको, दु:ख सबका ले लो सारा ।
परमपिता परमेश्वर तुम को समझेंगे अति प्यारा ।।

परोपकार के इस कर्तव्य पालन में लोग प्राय: दो बाधाएं गिनाया करते हैं- प्रथम यह कि परोपकार तो करना चाहते हैं परन्तु धनाभाव के कारण सहायता करें तो कैसे करें । दूसरा हमारे पास समय ही

नहीं बचता तो लोक सेवा कार्य किस समय करें।

परन्तु उपरोक्त दोनों दलीलें थोथी हैं। हम बिना धन के ही अनेक प्राणियों की सहायता करके उन्हें कष्ट से मुक्त कर सकते हैं। संसार में ऐसे अनेक दुःखी हैं जो प्रेम एवं सद्भाव की दो बातों के लिये तरसते रहते हैं। क्या हम उनको सांत्वना देकर, प्रेम से दो वचन कटकर उन्हें धैर्य एवं सहिष्णुता का पाठ पढ़ाकर उनके कष्ट को दूर नहीं कर सकते! मूर्खतावश अनेक व्यक्ति असत् कर्मों में लगे रहकर स्वयं कष्ट भोगा करते हैं। क्या हम उनमें सद्ज्ञान का प्रसार करके उनका विवेक जागृत नहीं कर सकते? क्या इस कार्य में भी धन का व्यय होता है?

समय के अभाव की दलील तो मात्र बहाना है। हम नित्य प्रति न जाने कितना समय व्यर्थ की बातों एवं मनोरंजन के नाम पर व्यतीत करते हैं। क्या इस समय में से कुछ समय बचाकर मानव सेवा का कार्य नहीं कर सकते हैं? परिवार में किसी सदस्य के बीमार हो जाने पर हमें उसकी देखभाल के लिये कहां से समय मिल जाता है? जब हम अपने परिवारजनों के लिये अपने व्यस्त जीवन में से समय निकाल सकते है तो परहित के लिये भी घण्टे आध घण्टे का समय निकाल लेना कठिन कार्य नहीं है। यह बात अलग है कि हम स्वार्थ के संकीर्ण दायरे में इतने जकड़े रहते हैं कि परमार्थ के लिये अपना समय लगाना ही नहीं चाहते हैं।

आज परोपकार की भावना लुप्त सी होती जा रही है। लोगों ने अपने स्वार्थ को इतनी प्रधानता दे रखी है कि दूसरे के नुक्सान की बात वे सोचते तक नहीं हैं। यह स्थिति बहुत ही शोचनीय एवं लज्जाजनक है अतः आज परोपकार की भावना को पुनः जाग्रत करना अत्यन्त आवश्यक है।

परोपकार मानव का धर्म है। अपने हित के लिये दूसरे का हित करना जरूरी है। यदि हमें सच्चे अर्थों में मानव कहे जाने का अधिकारी बनना है तो आइये इसी क्षण परोपकार व्रत के व्रती बनने का संकल्प ग्रहण कर लें।

११ अप्रैल प्रातः पूज्य स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए

कहा कि प्रेमियो ! अपने चित्त की वृत्ति भगवद् भजन में लगाएं। धधां व्यवसाय भी जब मन लगाकर किया जाता है तब उसमें से लाभ होता है, वैसे ही यदि आप राम नाम स्मरण भी दिल लगाकर करेंगे तो अवश्य ही आपको आनंद की प्राप्ति होगी । भगवद् भजन के लिए वैराग्य भी आवश्यक है ।

एक बार सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज मंडली सहित वैराग्य वाणी गाते कहीं जा रहे थे, मार्ग में श्री रूपाराम भैंस से दूध दुह रहा था। रूपाराम संतो की वैराग्य वाणी सुनकर, दूध का बर्तन व भैंस वहीं छोड़कर, सत्गुरु महाराजजी के पीछे गया । जब उसके सगे सम्बंधियों को उस घटना का पता लगा तो वे सत्गुरु महाराज के स्थान पर रूपाराम के पास आये । उन्होंने उससे कहा कि तुम क्यों भैंसों को छोड़कर हमें बिना बताए संतों के पीछे दौड़ आए? रूपाराम ने कहा "आप लोग ही तो मुझे कहते थे कि तुम्हारी माताजी अचानक परलोक सिधार गईं, पिताजी मकान बना रहे थे, वे भी अचानक चल बसे, मकान का काम अधूरा ही रह गया । मैंने भी यदि संसार का धंधा व्यवहार बीच में अचानक आधा छोड़ दिया तो क्या गुनाह किया? अब मैं जीवन की शेष आयु पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के संग में रहकर भगवद् भजन करुंगा । संसार के काम काज कभी पूरे नही होंगे ।

प्रेमियो ! आप भी संसार में रहकर अपने कर्तव्य का पालन अवश्य करें किन्तु प्रभु को नहीं भूलें । हाथों से काम काज करते हुए मुख व मन से नाम स्मरण करें । संतो व दीन दुखियों की सेवा करें ।

संत जनों की सेव से, पूर्ण होवे आस ।
कह टेऊँ रिद्ध सिद्ध मिले, विपत विघ्न हो नास ॥

भक्त शिरोमणि संत कंवररामजी साहिब का जन्म शताब्दी उत्सव अमरावती में आयोजित किया गया । इसी उत्सव के सम्बंध में पूज्य स्वामीजी १४ अप्रैल अमरावती पधारे । वहां उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए, भक्त कंवररामजी को पुष्पांजलि अर्पित करते कहा कि वे सिन्धी भक्तों के सिरमोर (मणि) थे । वे विनम्रता, सेवा, स्नेह व दया की मूर्ति थे । भजन कीर्तन करते समय जो भी धन इत्यादि उन्हें मिलता

था, वह परोपकार के कार्य में लगाते थे। वे अपाहिजों के आधार व दीन दुखियों के मित्र थे। प्रेमियो आप भी भक्त कंवररामजी की भांति परोपकार के कार्य करें और परमात्मा से प्रेम का नाता जोड़ें। सत्गुरु महाराज फरमाते हैं-

निष्कामी निर्मान हो, सेव करत जन जोय।

कह टेऊँ तिस पर सदा, भगवन् प्रसन्न होय॥

स्वामी मुरलीधरजी महाराज के पुण्य तिथि उत्सव के सम्बंध में पूज्य स्वामीजी १५ अप्रैल इन्दौर पधारे। वहां प्रेम प्रकाश मंदिर में उन्होंने तीन दिन सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामी मुरलीधरजी के गुणों का वर्णन किया। पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि यदि आप आनंद चाहते हैं तो मन में निश्चय करें कि आप ईश्वर के अंश हैं, आप में उसकी ही शक्ति विद्यमान है। आप आनंद रूप हैं, अमर हैं। आप सोहं का मंत्र उच्चारण करें, अंतर्मुख होने की आवश्यकता है। सत्गुर महाराज भी अपनी वाणी में कहते हैं-

टेऊँ सोहं जाप तुम, श्वास श्वास जप लेह।

दोनों पद के लक्ष लख, पाओ मुक्ति विदेह॥

साधु वासवाणी नगर थाना की दुकानदार पंचायत ने श्री गुरुग्रन्थ साहब पाठ का आयोजन किया। इस उत्सव के सम्बंध में पूज्य स्वामीजी ने २० अप्रैल रात्रि को वहां सत्संग प्रवचन करते हुए कार्यकर्ताओं को धन्यवाद देते कहा कि आपस में मिल जुल कर कार्य करें। विवाह एव अन्य उत्सवों पर आडम्बर से दूर रहें। मांस व शराब का परित्याग करें। साथ ही साथ नाम स्मरण करें और परोपकार के कार्यों में धन पदार्थों को सफल करें।

स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर धुलिया के वार्षिक उत्सव के सम्बंध में पूज्य स्वामीजी ४ मई धुलिया पधारे। उन्होंने तीन दिन वहां अमृत वर्षा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। ७ मई पूज्य स्वामीजी मालेगांव पहुंचे। वहां उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन किया।

१४ मई प्रात:काल ७ बजे पूज्य स्वामीजी का पंजाब मेल से भोपाल में प्रथम बार आगमन हुआ। रेल्वे स्टेशन पर सैकड़ों की संख्या

में प्रेमीगण पूज्य स्वामीजी का स्वागत करने के लिये उपस्थिति थे। तत्पश्चात् स्वामीजी को कार द्वारा बैरागढ़ ले जाया गया, जहां पर स्वामीजी की भव्य शोभा यात्रा बैण्ड बाजों के साथ निकाली गयी। स्वामीजी को एक खुली जीप में बिठाया गया था। बैरागढ़ में प्रेमियों द्वारा स्थान-स्थान पर पूज्य स्वामीजी का हार्दिक स्वागत किया गया। बैरागढ़ में ही प्रात: व रात्रि विशेष सत्संग सभाओं का आयोजन किया गया, जिसमें पूज्य स्वामीजी ने उपदेशामृत की वर्खा कर प्रेमियों को आनन्द विभोर कर दिया। इस अवसर पर श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठ का पारायण भी सम्पन्न हुआ। उपरोक्त सभी कार्यक्रमों में हज़ारों की संख्या में प्रेमी गण उपस्थिति थे। समस्त कार्यक्रमों का आयोजन श्रीमती विद्यादेवी व् श्री वाशुदेव तथा समस्त प्रेमियों द्वारा सहयोगात्मक भावना से किया गया। पूज्य स्वामीजी १५ मई रात्रि ९ बजे सांची एक्सप्रेस से ग्वालियर के लिये रवाना हुए।

१६ मई प्रात: ४ बजे पूज्य स्वामीजी का ग्वालियर रेल्वे स्टेशन पर हार्दिक स्वागत किया गया। प्लेटफार्म पूज्य स्वामीजी की जय-जयकार से गूंज उठा। स्वामीजी कार द्वारा प्रेम प्रकाश आश्रम में पधारे।

प्रात: ६-३० बजे मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा समारोह के उपलक्ष्य में हवन प्रारम्भ हुआ, हवन कार्यक्रम आदरणीय श्री हेमनदास शास्त्री द्वारा सम्पन्न कराया गया इसी मध्य मूर्तियों के अभिषेक के लिये पवित्र जल नौ कन्याओं व सात सुहागिनों द्वारा बैण्ड बाजों की अगवानी से पूर्ण वैदिक मन्त्र के बीच जलूस के रूप में लाया गया। प्रात: ९ बजे हवन कार्यक्रम समाप्त हुआ और सत्संग वर्खा प्रारम्भ हुई। एक ओर तो प्रवचन चल रहे थे, दूसरी ओर भगवान गजाधिपति, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र, वैदेह नन्दिनी भगवती सीता रानी, भक्तराज श्री हनुमान, लीलाधारी भगवान श्री कृष्णचन्द्र एवं वृषभानुनन्दिनी भगवती राधारानी के श्री विग्रहों का अभिषेक एवं प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम पूर्ण वैदिक विधि से श्री हेमनदास शास्त्री सम्पन्न करा रहे थे। इसी बीच स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति द्वारा संचालित "एक धर्मार्थ दवाखाना" का उद्घाटन पूज्य स्वामीजी द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। प्रेमियो की प्रबल इच्छानुसार उस दवाखानें का नाम स्वामी शान्तिप्रकाश धर्मार्थ दवाखाना

रखा गया । स्वामीजी ने प्रिय शंकरलाल सबनानी, श्रीचन्द पंजवानी व अन्य नवयुवकों को आशीर्वाद देते हुए जीवन पर्यन्त गरीबों की सेवा करने के लिए प्रेरित किया ।

सबेरे १०-३० बजे भगवान के श्री विग्रहों की प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, और उसी समय पूज्य स्वामीजी द्वारा मूर्तियों का अनावरण किया गया, उपस्थित प्रेमियों ने भगवान व सद्गुरु महाराज के श्री विग्रहों के दर्शन कर अपने आपको भाग्यशाली बनाया । भगवान व गुरु महाराज की आरती के पश्चात् ध्वजा वन्दन हुआ । बैण्ड की मधुर धुन पर युवकों द्वारा सिन्धी लोक-नृत्य पेश किया गया । ११ बजे ब्रह्मभोज सम्पन्न हुआ । तत्पश्चात् आम भण्डारा खोल दिया गया। उपरोक्त सभी कार्यकम्रों में जयपुर से पधारे परम आदरणीय सन्त हरिदासराम जी महाराज, सन्त जयदेव व श्री हेमनदास शास्त्री भी उपस्थिति रहे। तीनों दिन सत्संग वर्खा का कार्यक्रम हुआ, जिसमें पूज्य सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज, स्वामी गणेशानंद महाराज, सन्त हरिदासराम ज़ी महाराज, श्री हेमनदास शास्त्री, सन्त देवप्रकाश, सन्त टोपणदास व सन्त ज्ञानप्रकाश एवं सन्त दयाप्रकाशजी ने उपदेशामृत की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की ।

१६ मई स्वामीजी ने सायंकाल को सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि जीव को अभिमान नहीं करना चाहिए । अभिमानी व्यक्ति को अपने दोष देखने में नहीं आते । अभिमान मनुष्य को अंधा बना देता है। इसलिए उसमें और दोष प्रवेश करते हैं । जो मनुष्य केवल मान प्रतिष्ठा के पीछे दौड़ता है उसमें मानसिक निर्बलता उत्पन्न होती है । वह अपनी प्रातिष्ठा के लोभ वश अपने दोषों, अपराधों को छुपाकर स्वयं सत्पुरुष होने का ढोंग करता है । ऐसे मनुष्यों का न जगत् में यश होता है, न वे प्रभु को प्रिय लगते हैं । अभिमान, मनुष्य को प्रभु की ओर ले जाने वाली सीढ़ी पर चढ़ने नहीं देता । प्रेमियो ! आप यदि प्रभु प्राप्ति के पथ की ओर अग्रसर होना चाहते हैं ते अभिमान का परित्याग करें ।

१८ मई प्रातः ७ बजे पूज्य स्वामीजी ने कार द्वारा आगरा के लिये प्रस्थान किया पूज्य स्वामीजी ग्वालियर से अगरा की ओर जाते समय

प्रात: ८ बजे मुरैना पहुंचे । बस स्टैण्ड पर स्वामीजी का मुरैना के प्रेमियों द्वारा हार्दिक स्वागत किया गया । प्रेमी पूज्य स्वामीजी को श्री वसणाराम के निवास पर ले आये । वहां पर स्वामीजी ने संक्षिप्त प्रवचन किये । मुरैना के अल्प प्रवास के पश्चात् प्रात: १० बजे आप आगरा के लिये प्रस्थान किया ।

१८ मई दोपहर १२ बजे आगरा पहुंचने पर पूज्य स्वामीजी का ज़ोरदार स्वागत किया गया, रावतपाड़ा से काला महल प्रेम प्रकाश आश्रम तक स्वामीजी के आगमन की खुशी में जुलूस निकाला गया। सायंकाल ४ बजे से ८ बजे तक पूज्य स्वामीजी व अन्य आदरणीय सन्त मण्डल के प्रवचन हुए ।

१६ मई प्रात: ६-३० से मूर्ति स्थापना के उपलक्ष्य में हवन, श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ साहब के पाठ का पारायण, ध्वजा वन्दन, मूर्तियों का अभिषेक, भगवान व सद्‌गुरु महाराज के श्री विग्रहों की प्राणप्रतिष्ठा सम्बन्धी कार्यक्रम पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में, जयपुर से पधारे श्री हेमनदास शास्त्री द्वारा सम्पन्न कराये गये । तत्पश्चात् भंडारा भी हुआ । पूज्य स्वामीजी ने मूर्तियों की स्थापना कराते हुए कहा कि जब इन मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा हो जाती है तत्पश्चात् इन मूर्तियों को साक्षात् रूप समझें । प्रतिदिन गुरू मन्त्र का जाप करें । सत्संग में आने से आपका जीवन नया बन जायेगा और विवेक भी जागृत हो जायेगा । सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं-

टेऊँ जेते कर्म शुभ, लिखे वेद के मांहि ।
साधु संग गुरु नाम स्मर, और कर्म को नांहि ॥

२० मई स्वामीजी अमरापुर स्थान जयपुर पधारे । वहां उन्होंने २७ मई तक सत्संग प्रवचन कर प्रेमियों की प्यास पूरी की । २८ मई वे प्रेम प्रकाश आश्रम कोटा पधारे । वहां उन्होंने ३१ मई तक अमृत वचनों की वर्खा की । वहां पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

भोग रोग को देत हैं और देत संताप ।
तांते त्यागे भोग को, टेऊँ कर हरिजाप ॥

प्रेमियो ! सांसारिक भोग पदार्थ दुखदाई हैं । इसलिए इनको त्याग

कर भगवद् भजन करें । राम नाम स्मरण ही सुखदाई है । राजा शुभ संतति के मन में वैराग्य वृत्ति उत्पन हुई । उसे तीन पुत्र थे तत्वदृष्टि, अदृष्टि, व तर्कदृष्टि । राजा अपना राज्य तीनों पुत्रों को सौंप कर भगवद् भजन करने जंगल में चला गया । उसके तीनों बेटे विवेकी, विद्वान, विचारक व वैरागी थे । उन्होंने विचार किया कि जब पिता जी को इस राज्य भोग से आनंद की प्राप्ति नहीं हुई, तो हम फिर इस राज्य को क्या करेंगे? तीनों भाई राज्य भोग का परित्याग कर भगवत् भजन करने के लिए वन में चले गये । वहां वन में वे भगवद् भजन में मग्न हो गये । प्रेमियों ! आप तो राजा शुभ संतति एवं उसके सुपुत्रों की भांति संसार का त्याग कर भगवद् भजन नहीं कर सकते, किन्तु संसार में रहकर प्रभु का स्मरण करें । आप को अमूल्य मनुष्य देह प्राप्त हुई है यह व्यर्थ नहीं गंवाएं, स्मरण व सेवा में सफल करें । सत्गुरु महाराज फरमाते हैं-

सर्वतीर्थ सब देवमय, ज्ञान ध्यान गुण मेह ।
पाकर ऐसा मनुष्य तन, हरि स्मरण कर लेह ।।

१ जून पूज्य स्वामीजी हरिद्वार पधारे । एक कार व छः बसों के काफिले के साथ ४ जून प्रातः ६-३० बजे भूपतवाला हरिद्वार से बद्रीनाथधाम के लिए रवाना हुए । ऋषिकेश, देवप्रयाग होते दोपहर को रूद्रप्रयाग पहुंचे। वहां पर स्नानादि के उपरान्त भोजन कर रात्रि जोशी मठ पहुंचे, रात्रि वहीं रुककर प्रातः (५-६-८५) बद्रीनाथ की ओर कूच कर ११ बजे बद्रीधाम पहुंचे । पूरे रास्ते में प्रेमीगणों ने भजन कीर्तन के साथ जय-जय बद्री विशाल के नारों से घाटी के सौम्य व शांतिमय वातावरण को भक्तिमय बना दिया ।

६ जून १९८५ उत्तर भारत के प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थ बद्रीधाम में स्वामी टेउँरांम धर्मशाला का उद्घाटन पूज्य स्वामीजी के पवित्र करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ । समारोह का प्रारम्भ यज्ञ भगवान को आहुति देकर हुआ। उसके उपरान्त आम भण्डारे का कार्यक्रम हुआ समारोह की समाप्ति स्वामीजी द्वारा साधुओं का कम्बल भेंट करने के पश्चात् हुई।

समारोह की समाप्ति के उपरान्त पूज्य स्वामीजी ने ६ जून दोपहर हरिद्वार के लिए प्रस्थान किया । रात्रि पीपलकोठी विश्राम कर ७ जून

दोपहर २ बजे हरिद्वार पहुंचे ।

सन्त अशोकलाल, संत अनन्तप्रकाश, स्वामी देवप्रकाशजी, संत दयाप्रकाश, डा. दयाल 'आशा' एवं श्री मोटूमल चांडवाणी, अमरलाल फेरवाणी के अतिरिक्त करीब २०० भाग्यशाली प्रेमीगणों ने स्वामीजी के साथ बद्रीधाम की यात्रा की ।

सत्गुरु स्वामी टेउँरामजी महाराज के जन्म दिन उत्सव के सम्बंध में पूज्य स्वामीजी १९ जून स्वामी बसंतरामजी के स्थान अजमेर में पधारे । उन्होंने वहां चार दिन सत्संग प्रवचन करते हुए सत्गुरु स्वामी टेउँरामजी महाराज के जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाये । संत ब्रह्मानन्द ने स्वामीजी का आभार प्रदर्शन किया ।

१० जुलाई गुरु पूर्णिमा के पावन दिन प्रात: हजारों प्रेमी सिन्धुनगर आश्रम पर स्वामीजी का अशीर्वाद लेने आये । स्वामीजी ने सत्गुरु की महिमा का प्रतिपादन करते हुए कहा-

गुर चरणों की धूलि का तिलक देत जे धीर ।
कह टेऊं कट कर्म वे, पावत ज्ञान गंभीर ।।

प्रेमियो ! प्रेम व श्रद्धा से सत्गुरु के चरणों की रज लगाने से कर्मों की रेखाएं बदल जाती है और आत्मज्ञान की उपलब्धि होती है । इसलिए किसी न किसी परिपूर्ण गुरु की शरण लें, जो आपका मार्गदर्शन करें।

इसी अवसर पर दयाल 'आशा' ने गुरु कृपा का वर्णन करते हुए कहा कि पूज्य स्वामीजी की मुझ पर भी असीम कृपा रही है । उन्होंने हज़ारों प्रेमियों को गुरु मंत्र की दीक्षा देकर भगवान के श्री चरणकमलों की ओर आकर्षित किया है । श्री पेसूमल प्रभदास, इंडो आइल मिल्स का मालिक था, धनवान था किन्तु उसका मन व्यवहार से ऊब गया। उसके मन में वैराग्य भावना जागृत हुई । उसने गुरु की खोज में विभिन्न तीर्थ स्थानों की यात्रा की, संतों महात्माओं का संग किया, परन्तु उसे मन की शान्ति प्राप्त नहीं हुई । एक बार वह पंढरपुर यात्रा करने गया । वहां भगवान श्री हरि विट्ठल का दर्शन किया । रात्रि को उन्हें स्वप्न में भगवान ने आज्ञा की "तुम्हारे घर में गंगा प्रवाहित हो रही

है और तुम यहां प्यासे भटक रहे हो । तुम जाकर स्वामी शान्तिप्रकाश जी से गुरु मंत्र की दीक्षा लो । इस स्वप्न के पश्चात् वह जागृत हुआ और सीधा सिन्धुनगर आश्रम पर पूज्य स्वामीजी के पास आया । उसने स्वामीजी को स्वप्न की घटना बताते हुए विनय की कि कृपया गुरुमंत्र की दीक्षा दें । वैसे तो श्री पेसूमल पहले ही आश्रम पर आता था किन्तु स्वप्न में भगवान श्री विट्ठल की आज्ञा के पश्चात् ही उसने पूज्य स्वामीजी से गुरुमन्त्र की दीक्षा ली । प्रेमियो ! हमारे पूज्य स्वामीजी भगवद् स्वरूप हैं, ऐसी महान विभूति से नाम पदार्थ मांगे ।

११ आगस्त स्वामीजी ने 'पांचजन्य' के सिन्धु संस्कृति विशेषांक का विमोचन करते हुए कहा कि पत्रिकाएं प्रचार का मुख्य साधन हैं, ऐसी पत्रिकाओं द्वारा असिंधी भाषियों को सिन्धी सभ्यता, संस्कृति साहित्य की अधिक से अधिक़ जानकारी देने का प्रयास करें । दयाल 'आशा' ने कहा कि श्री हीरानंद जवाहराणी के प्रयास व पुरुषार्थ से ही यह विशेषाँक प्रकाशित हुआ है ।

१५ अगस्त प्रातः स्वामीजी ने आश्रम में राष्ट्रीय ध्वज फहराया । सिन्धुनगर नगरपालिका द्वारा सिन्धुनगर-३ में प्राथमिक शाला २५ के नवीन भवन का निर्माण करवाया । पूज्य स्वामीजी ने सुबह ११ बजे उसका उद्घाटन करते हुए कहा कि विद्यार्थियों के पढ़ाई व चरित्र निर्माण के लिए प्रयास करें । उन में शुभ संस्कारों का समावेश करें । श्री केवलराम जवाहराणी ने स्वामीजी का स्वागत सत्कार किया और श्री आसूदोमल मोहनाणी ने अभार प्रदर्शन किया ।

२८ अगस्त क्राफोर्ड मार्केट में भगवान झूलेलाल का उत्सव आयोजित किया गया । दोपहर ३ बजे स्वामीजी वहां पधारे । हूंदलदास सैनाणी एवं उनके साथियों ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत सन्मान किया । इस अवसर पर स्वामीजी ने आयोजकों को धन्यवाद देते हुए कहा कि आप प्रति वर्ष चालीस दिन का व्रत रखकर उडेरोलाल की पूजा उपासना करते हैं यह उत्तम कर्म है । यह उत्सव श्रद्धा व प्रेम का प्रतीक है। हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए ही सिन्ध में श्री अमर उडेरोलाल ने अवतार धारण किया ।

जनता जनार्दन परिषद की ओर से ३० अगस्त पूज्य स्वामीजी का

७९वां जन्म दिन उत्सव प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर-५ में मनाया गया। प्रात:काल प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी को दूध से स्नान करवाया और उनकी पूजा उपासना की। प्रातः ८ बजे श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठ की समाप्ति के पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने दीन दुखियों, विधवाओं को आर्थिक सहायता की, उन्हें अन्न एवं वस्त्र भी भेंट किये। सायं कई गायकों ने भक्ति संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। श्री तीर्थ सभाणी, सभागचन्द चावला, गोबिन्दराम भटिया, हीरालाल सभनदासाणी, दयाल 'आशा' एवं अन्य वक्ताओं ने पूज्य स्वामीजी के जीवन एवं सेवा कार्य पर प्रकाश डाला। श्री विक्योमल श्राफ एवं श्री रेवाचन्द लखाणी ने इस अवसर पर स्वामीजी को गरीब कन्याओं के विवाह कार्य के लिए ५० हजार रुपये भेंट किये।

पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि जीवन की सार्थकता नाम स्मरण और सेवा में है। प्यारे विक्योमल, प्यारे रेवाचन्द लखाणी एवं अन्य परोपकारी सज्जनों को साधुवाद है, जो अपना धन शुभ कर्मों में सफल करे रहे हैं। लक्ष्मी तो भगवान की धरोहर है। लक्ष्मी भगवान श्री नारायण की पत्नि है। आप यदि भगवान की पत्नि पर अपना दावा रखेंगे तो भगवान अवश्य ही अप्रसन्न होंगे। इसलिए लक्ष्मी में आसक्ति न रखकर प्रभु के श्रीचरणों में प्रीति रखें तो आपका कल्याण होगा। जो भी सेवा कार्य हो रहे हैं, उन में आप सभी का सहयोग है।

२ सितम्बर पूज्य स्वामीजी, स्वामी टेऊँराम स्वामी चन्दनप्रकाश मंदिर पुणे में पधारे। सायं ६ बजे वहां उनका जन्म दिन उत्सव मनाया गया। इस अवसर पर पूज्य दादा जशन वासवाणीजी भी वहां पधारे। संत अनंतप्रकाश ने पूज्य स्वामीजी एवं पूज्य दादाजी का स्वागत सत्कार किया। डा. दयाल 'आशा' ने कहा कि आज हमारे सौभाग्य हैं कि मंच पर दो महान विभूतियां, आध्यात्मिक मार्ग दर्शक पूज्य स्वामीजी एवं पूज्य जशन वासवाणी विराजमान हैं। दोनों महापुरुष प्रेम व करुणा की मूर्तियां हैं। दोनों सत्पुरुषों का दर्शन कर दुख दूर हो जाते हैं।

पूज्य दादा जशन वासवाणी ने पूज्य स्वामीजी को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज प्रेम व दया की मूर्ति

हैं। स्वामीजी परोपकारी कर्मयोगी संत हैं। वे लोक कल्याण के कई कार्य कर रहे हैं, साथ साथ में नाम स्मरण के लिए भी प्रेरित करते हैं। दादा साधु वासवाणीजी ने भी वही संदेश दिया कि दीन दुखियों को गले लगाओ और प्रभु को याद करो। पशु पक्षियों को भी प्यार दो।

संत अनन्तप्रकाश व श्री रामचन्द मीरपुरी ने ७९०० रुपये स्वामीजी के श्रीचरणों में भेंट किये। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आप ने जो राशि भेंट की वह अहमदाबाद के दंगा पीड़ितों में खर्च की जायेगी। मैंने जो भी सेवा कार्य किये हैं वे प्रभु की कृपा और सत्गुरु महाराज की आशीर्वाद से किये हैं। प्यारे दादा जशन ने स्मरण, सेवा, प्रेम व दया का उल्लेख किया। आप भी इन गुणों को अपने जीवन में अपनाकर जीवन सफल करें।

संत अनन्तप्रकाश, किशनचन्द पारवाणी, हरि-बलि, संत रामप्रसाद ने भी स्वामीजी के गुणों का वर्णन किया।

जन्माष्टमी का उत्सव वृद्धाश्रम सिन्धुनगर-४ में मनाया गया। स्वामीजी ने वहां प्रवचन करते हुए वृद्धों से कहा कि प्रेमियों ! आपने संसार का सारा नाटक देखा है। अब शेष समय नाम स्मरण में सफल करें। श्री कृष्ण प्रेम के अवतार थे। आप भी एक दूसरे को प्रेम दें। आपको सगे सम्बधियों ने छोड़ दिया किन्तु प्रभु आपकी पालना कर रहा है, इसलिए उसके ही गुण गाएं। श्री शेवकराम वनवाड़ी ने स्वामीजी का आभार प्रदर्शन किया।

११ सितम्बर संत विनोबा भावे का जन्म दिन उनके जन्म स्थान गागोदा गांव में स्वामीजी की अध्यक्षता में मनाया गया। श्री अच्युत देशपांडे ने स्वामीजी का स्वागत सत्कार किया। स्वामीजी ने इस अवसर पर कहा कि संत विनोबाजी इस शती के महान कर्मयोगी संत थे। वे महात्मा गांधी के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी थे। उन्होंने भूदान आंदोलन द्वारा हज़ारों बीघा जमीन दान में लेकर किसानों को दी। उन्होंने गौ रक्षा के लिए भी आंदोलन आरंभ किया। एवं सारा जीवन देश को अर्पण किया।

१ अक्टूबर मंगलवार रात्रि स्वामीजी ने पूज्य संत हरिचूराम साहिबजी

के पुण्य तिथि उत्सव सम्बंध में स्वामी हरिचूराम धाम सिन्धुनगर में सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि संत हरिचूराम साहब के हाथ में रिद्धि सिद्धि थी। उन्होंने कई दुखियों के दुख दर्द दूर किये। एक बार श्री होतचन्द शामदास गाड़ी में सफर कर रहा था तो अचानक उसके एक आंख में चोट लगी और उस आंख की रोशनी चली गई। उसने हर प्रकार का इलाज करवाया किन्तु उस आंख में रोशनी नहीं आई। तब वह संत हरिचूराम साहब में विश्वास रखकर शाहपुर थल्हे पर आया। उसने संत हरिचूराम साहिब को प्रार्थना की कि कृपा करके मुझे रोशनी प्रदान करें। संत हरिचूराम ने कहा "थल्हे पर प्रणाम कर ज्याति का तेल लेकर, घर में जाकर आंख में लगाओ। संत सेऊराम भला करेंगे। होतचन्द, संत हरिचूरामजी की आज्ञानुसार ज्योति का तेल घर में ले आया और चोट लगी आंख में उसने तेल डाला तो उस आंख में प्रकाश आ गया डाक्टरों की दवाइयों से आंख का दर्द दूर नहीं हुआ संत के ज्योति के तेल से दुख दूर हो गया। प्रेमियों ऐसे स्थानों पर विश्वास रखकर 'आयें तो आपकी कामनाएं भी पूरी होंगी। संत रूपाराम साहब ने स्वामीजी का आभार माना।

स्वामी उद्धवदासजी का पुण्य तिथि उत्सव १५ अक्टूबर से निष्काम सेवा मंडल, शान्तिधाम, अम्बावाड़ी, अहमदाबाद में आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामीजी १५ अक्टूबर अहमदाबाद पधारे। स्वामीजी ने पांचों दिन सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामी उद्धवदासजी के गुणों का वर्णन किया। संत उद्धवदासजी ने सत्गुरु स्वामी टेउँराम महाराज के साथ सिन्ध के नगर नगर में नाम का प्रचार किया। वे विनम्र और ज्ञानवान थे। माता मथुरी, आप प्रेमियों के सहयोग से उनकी ज्योति यहां जगा रही है। आप भी प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ें। सत्गुरु महाराज फरमाते हैं-

जग को जूठा जान के, भजते जो भगवान।
कह टेऊँ संसार में सो जन है बुद्धिमान॥

प्रेमियो ! दिन रात माया के पीछे मत दौड़ो। यह जगत् एवं जगत् के पदार्थ क्षणभंगुर हैं। उनकी प्राप्ति के लिए मनुष्य जीवन व्यर्थ नहीं गवांएं। जो जीव जगत् को असत् समझकर, सत्य स्वरूप भगवान

का भजन करता है, वही सच्चा ज्ञानवान है, विद्वान है। राजा याज्ञवलक्य ने अपनी पत्नि मैत्री से कहा कि मैं अब सन्यास धारण करूंगा और सारा धन पदार्थ कात्यायनी और तुम्हें दे देता हूं। मैत्री ज्ञानवान थी। उसने राजा से पूछा "राजन्, यदि यह सारी भूमि धन धान्य मेरी सम्पति हो जाय तो क्या मैं अमर पद प्राप्त कर सकती हूं?" राजा ने कहा "मैत्री ! कदपि नहीं। जगत् के पदार्थों व धन धान्य से सम्पन्न होने पर कोई भी अमर पद प्राप्त नहीं कर सकता। आत्मज्ञान, परोपकार एवं भगवद् भजन द्वारा ही अमर पद प्राप्त हो सकता है।" तब मैत्री बोली "महाराज ! फिर मैं जगत् के इन अनित्य पदार्थों को क्या करूंगी? आप मुझे कृपया ऐसा उपदेश दे जैसे मैं अमर पद को प्राप्त करूं।" राजा पत्नि का यह ज्ञान गर्भित उत्तर सुनकर प्रसन्न हुआ और अपने साथ बन में ले गया। उसने उसे उपदेश देते हुए आत्मज्ञान की दीक्षा दी। प्रेमियो ! आप भी संतों व गुरु को आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करें।

चरण कमल की सेव कर हरहो तन अभिमान।
कह टेऊं दुरमति कटे, पाओ आत्म ज्ञान ।।

१८ अक्टूबर प्रातः ११ बजे स्वामीजी अहमदाबाद से प्रकाशित सिन्धी दैनिक हिन्दू पत्र के कार्यालय में पधारे। 'हिन्दु' के सम्पादक श्री किशनचन्द वरियाणी एवं उसके सुपुत्र ने स्वामीजी का स्वागत किया। वहां स्वामीजी ने 'हिन्दू' के विशेषांक का विमोचन किया और आशीर्वाद करते हुए कहा कि 'हिन्दू' में ऐसे लेख प्रकाशित करें जिनके द्वारा समाज व राष्ट्र का उत्थान हो। श्री लीलाराम रूचंदाणी ने स्वामीजी का आभार माना।

प्रेम प्रकाश सेवा मंडल और निष्काम सेवा मंडल अहमदाबाद की और से १९ अक्टूबर सायं शान्ति धाम में स्वामीजी का ७९ वां जन्म दिवस मनाया गया। कई प्रेमियों ने स्वामीजी को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए उनके कर्मयोगी जीवन का उल्लेख किया। स्वामीजी ने इसी अवसर पर कहा कि आप लोगों ने जो मेरी महिमा गाई है, यह महिमा कार्य की है, मेरी नहीं, आप भी नाम स्मरण एवं अन्य शुभकर्म कर जीवन सफल करें, अपनी माया परोपकार के कार्यों में सफल बनाएं।

पूज्य स्वामीजी ने २१ अक्टूबर सायं ६ बजे आकाशवाणी अहमदाबाद

से "परिवार की शान्ति" विषय पर व्याख्यान देते हुए कहा कि आज कल कई घरों में अशान्ति का वातावरण है। जहां अशान्ति होगी, आपसी प्रेम नहीं होगा वहां से लक्ष्मी भी लौट जायेगी। जिस घर में शान्ति है वह घर स्वर्ग समान है। घर में मां बाप, सास, ससुर व वृद्धों की सेवा करें, गम खाकर भी उनकी आज्ञा का पालन करेंगे तो घर में शान्ति का वातावरण रहेगा। मर्यादा का उलंघन नहीं करें। आजकल तृष्णाएं भी बढ़ गई हैं, वह भी अशान्ति का एक कारण है। यदि आप सुखी होना चाहते हैं तो अपनी इच्छाएं कम करें। सत्गुरु महाराज भी फरमाते हैं-

तृष्णा काली नागनी, विख विष से भरपूर।
कह टेऊं सुख चहत जो, हो तुम तांसे दूर॥

प्रेमियो ! घर में बड़ों की आज्ञा का पालन करें, उन्हें सम्मान दें और छोटों को प्यार करें। एक दूसरे को स्नेह व सहानुभूति दें, नियमित रूप से प्रातः और सायं प्रभु से प्रार्थना करें, संतान में शुभ संस्कार के बीज बोएं। उन्हें धार्मिक विद्या दें, उन्हें भगवान श्रीरामकृष्ण एवं अन्य भक्तों के चरित्र सुनाये तो घर में शान्ति का वातावरण होगा।

ब्रह्मलीन सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का ८९ वां जन्मदिन उत्सव स्वामी टेऊंराम प्रेम प्रकाश आश्रम हरिद्वार में २३ अक्टूबर से २७ अक्टूबर तक आयोजित किया गया। पूज्य स्वामीजी २२ अक्टूबर हरिद्वार पधारे। २५ अक्टूबर सायं स्वामीजी के नेतृत्व में जुलूस निकला। चारों दिन पूज्य स्वामीजी, स्वामी धर्मदासजी महाराज, स्वामी स्वयंप्रकाश, संत देवप्रकाश, संत ब्रह्मानन्द, संत अनन्तप्रकाश एवं अन्य संतों महात्माओं ने सत्संग प्रवचन किये। २७ अक्टूबर सायं पूज्य स्वामीजी ने सभी संतों के साथ मिलकर उत्सव का समापन करते हुए कहा कि नाम से विमुख न होकर सदैव नाम स्मरण करें, प्रभु को प्रेम से प्रार्थना करें। सत्गुरु महाराज अपनी वाणी में कहते हैं-

हरि नाम न भावते, हरि यश सुनता नाहिं।
कह टेऊँ सो मूढ़ नर, जात चोरासी माहिं॥

एक संत रास्ते से जा रहा था, वहां एक युवक खड़ा था। संत

ने उस युवक से पूंछा यह रास्ता कहां जा रहा है? युवक ने उत्तर नहीं दिया। संत ने समझा कि यह युवक शायद बहरा है, तब संत ने समीप जाकर फिर वही प्रश्न किया, फिर भी उस युवक ने उत्तर नहीं दिया। परन्तु युवक ने संकेत से बताया कि वह गूंगा और बहरा है। संत उस सुन्दर गूंगे व बहरे युवक को देखकर रोने लगा। किसी पथिक ने संत को रोते देखकर पूछा "आप संत होकर क्यों रोते हैं? संत ने कहां कि इस गूंगे बहरे सुन्दर युवक को देखकर मैं रोता हूं। इसने पूर्व जन्म में नाम का जाप नहीं किया, हरि कीर्तन श्रवण नहीं किया तो, अब सुन्दर काया होते हुए भी वह बहरा और गूंगा है।

प्रेमियो ! जो मनुष्य हरिनाम का जाप नहीं करते और भगवद् कथा नहीं सुनते, उन्हें भविष्य में गूंगा बहरा बनना पड़ेगा। आप सदैव प्रभु का नाम जपते रहें और भगवद् कथा श्रवण करें एवं संतों की शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारें।

८ नवम्बर प्रातः ११ बजे स्वामीजी ने सिन्धुनगर- ३ में नवजीवन सहकारी बैंक का उद्घाटन करते हुए श्री सीतलदास हरिचन्दाणी एवं उनके साथियों को धन्यवाद दिया जिन्होने इस बैंक की स्थापना की। स्वामीजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि यह बैंक फलेगी फूलेगी और कई लोग इस से लाभान्वित होंगे। श्री सीतलदास ने स्वामीजी का आभार माना।

युवा वर्ष के उपलक्ष्य में जनता जनार्दन परिषद् की ओर से १६-१७ नवम्बर स्वामी टेऊंराम प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर-५ में अखिल भारतीय सिन्धी नौजवान सम्मेलन का आयोजन किया गया। स्वामीजी ने इस सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा कि यह वर्ष युवा वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। युवकों का जोश और बड़ों का होश जाति की उन्नति के लिए दोनों आवश्यक हैं। आज की युवा पीढ़ी गलत मार्ग पर चल रही है, उसका मार्गदर्शन करना चाहिए। आज भारत की युवा पीढ़ी पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण कर रही है। आज भारत की युवा पीढ़ी को सत् मार्ग पर लाने की अत्यन्त आवश्यकता है। देश की स्वतंत्रता की सुरक्षा के लिए सजग प्रहरी बन कर राष्ट्र की रक्षा करनी है, समाज का नव निमार्ण करना है। दहेज आज

की ज्वलंत समस्या है युवा पीढ़ी ही उसका समाधान कर सकती है। यदि युवक दहेज का परित्याग करें और होटलों में व्यर्थ खर्चा न करें तो समाज की नवरचना हो सकती है । देश में कितनी न गरीबी है, दूसरी और मांस शराब में कितना न व्यर्थ पैसा खर्च किया जाता है। आज इस विषय पर गंभीरता से विचार करें । देश की अखण्डता और एकता को बनाए रखने के लिए आज संकल्प करें। आज देश को स्वामी विवेकानन्द, शहीद भगत सिंह, हेमूकालाणी, चन्द्रशेखर आजाद, प्रेम रामचन्दाणी, रमेश बदलाणी, भरतकुमार मसंद जैसे वीर युवकों की अत्यन्त आवश्यकता है, जिन में देश भक्ति और निष्काम सेवा की भावना हो । यदि युवा पीढ़ी अपनी शक्ति का सदुपयोग करें तो राष्ट्र का रूप ही बदल जाये ।

सम्मेलन की अध्यक्षता आचार्य भगवानदेव 'आर्य', लोकसभा सदस्य ने की । उन्होंने भी युवा पीढ़ी को नई दिशा दी । डॉ. दयाल 'आशा' ने आभार प्रदर्शन किया । कई वक्ताओं ने विचार व्यक्त किये ।

१९ नवम्बर मंगलवार गोपाष्टमी के पावन दिन प्रात: पूज्य स्वामी जी ने प्रवचन करते हुए कहा कि गौ की सेवा तो प्रतिदिन करनी चाहिए किन्तु आज उसकी सेवा करने का विशेष महत्व है । आज के दिन ही भगवान श्रीकृष्ण ने गौ चराना आरंभ किया । आज व्रत धारण कर गौ के दूध का सेवन करें । ये कार्तिक के दिन प्रातः जागृत होकर भगवद् भजन करें। कई मनुष्य आलस्य में समय व्यर्थ गंवाते हैं । पशु पक्षियों को भी समझ होती है, मनुष्य समझदार होते हुए भी समझता नहीं । पशु पक्षी भी अपने मालिक का ख्याल करते हैं, हम लोग उतना भी प्रभु का चिंतन नहीं करते । राजकोट में एक धनवान रहता था । वह नियमित रूप से प्रात: पक्षियों के लिये गेहूं, ज्वार इत्यादि व पीने के लिए पानी भरकर रखता था । जब वह कभी बाहर जाता था तो अपने सुपुत्रों से पक्षियों को अन्न खिलाने की आज्ञा कर जाता था । एक बार वह पत्नि सहित किसी कार्यवश बाहर गया । उनके बेटों ने जब प्रातः अनाज व पानी भरकर रखा तो पक्षियों ने न दाना खाया और न पानी पीया । सभी पक्षी वहां सिर नीचा कर जैसे शोक में बैठे हों । दूसरे ही दिन घर में तार आया कि धनवान व उसकी

पत्नि की कार दुर्घटना में मृत्यु हो गयी। पक्षियों को अपने मालिक की मृत्यु का आभास पहले ही हो गया। उन्होंने इसी शोक में अन्न नहीं खाया, पानी नहीं पीया। पक्षियों का, अन्न देने वाले के प्रति कितना लगाव था किन्तु हमें भगवान के प्रति लगाव नहीं। हम उसको भुला बैठे हैं। प्रेमियो ! क्षण क्षण में उसे याद करें, अपने अमूल्य श्वास स्मरण में सफल करें।

सायं ५ बजे श्री राधेश्याम गौशाला में गोपाष्टमी उत्सव स्वामीजी की अध्यक्षता में मनाया गया। श्री नंदीराम टहलराम ने स्वामीजी एवं अन्य संतों का सत्कार किया। स्वामीजी ने गौशाला के व्यवस्थापक तुलसीदास मोटवाणी को धन्यवाद देते हुए कहा कि हमारे शास्त्रों में लिखा है कि गौ माता में सभी देवताओं का वास है। उसके गोबर में लक्ष्मी का वास है। गौ गोबर व गौ मूत्र के सेवन से कई बीमारियों से मुक्ति मिल जाती है। यदि किसी को बुरे स्वपन आते हों तो गौ माता की पूंछ मुंह पर लगाने से बुरे स्वप्न नहीं आएंगे। भगवान श्रीकृष्ण अपने से अधिक महत्त्व गौ माता को देते थे। गौ की सेवा एवं सुरक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है।

२३ नवम्बर कार्तिक एकादशी के दिन सत्संग प्रवचन करने के पश्चात् स्वामीजी, कई संतों एवं हज़ारों प्रेमियों के साथ राम नाम की धूम मचाते श्मशान भूमि पधारे। वहां स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि किसी को माया पर घमंड है तो किसी को अपनी विद्वता पर गर्व है। अभिमान व्यक्ति को गिराता है। आप गफ्लत की नींद से जागकर नाम स्मरण और अन्य सत् कर्म करें। सत्गुरु महाराज फरमाते हैं-

हरि सुमरो तुम जाग के, सोय न निंद्रा मांहि।
कह टेऊँ जागे बिना, हरि दर्शन दे नांहि॥

सायं पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए भगवान श्री कृष्ण की अनुपम लीलाओं का वर्णन किया। २४ नवम्बर स्वामीजी पूना पधारे। वहां स्वामी चन्दनप्रकाश मंदिर में उन्होंने चार दिन सत्संग प्रवचन करते हुए श्री गुरु नानकदेवजी महाराज के जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाए।

२६ नवम्बर वे सिन्धुनगर लौट आये । सायं व रात्रि उन्होंने श्री गुरु नानकदेवजी के जन्मदिन उत्सवों में सत्संग प्रवचन किया ।

प्रेम प्रकाश आश्रम ग्वालियर में स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति की ओर से २४ नवम्बर से निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन किया। २ दिसम्बर स्वामीजी ग्वालियर पधारे । ३ दिसम्बर रात्रि ९ बजे पूज्य स्वामीजी ने निःशुल्क नेत्र यज्ञ का समापन मेडीकल कालेज के डाक्टरों को उपहार भेंट किये । आपने इस अवसर पर नेत्रदान पर बल देते हुए इसे एक उत्कृष्ट दान बताते हुए प्रेमियों को नेत्रदान के लिये आगे आने की अपील की ।

इसके पूर्व मेडिकल कालेज ने नेत्र विशेषज्ञ, मध्य प्रदेश राष्ट्रीय नेत्र संस्थान के सचिव माननीय डॉ. बी. शुक्ला ने पूज्य स्वामीजी का पुष्पहार से स्वागत करते हुए, नेत्रदान की प्रक्रिया बताते हुए नेत्रदान के लिये प्रेरित किया ।

१० दिसम्बर प्रातः ७ बजे स्वामीजी हरिकीर्तन दरबार सिन्धुनगर-३ में पधारे । प्रधान श्री रेवाचन्द केसवाणी ने स्वामीजी का स्वागत करते हुए सम्मान किया । स्वामीजी ने हरिकीर्तन दरबार के सेवकों को धन्यवाद देते हुए कहा कि आप प्रतिदिन यहां सत्संग यज्ञ कर महान कार्य कर रहे हैं । प्रभु की कृपा से शीघ्र ही मंदिर के नवीन भवन का निर्माण कार्य पूरा हो जायेगा ।

कुबेर नगर अहमदाबाद में कुछ नवयुवकों ने पूज्य स्वामीजी के नाम मंदिर की स्थापना की । ११ दिसम्बर स्वामीजी ने वहां गरीबों को कंबल भेंट किये । सायं वहां उन्होंने उपदेश करते हुए कहा कि यहां सत्संग व सेवा की ज्योति जगाते रहें । गरीबों की प्रेम और निष्काम भावना से सेवा करें ।

स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर सिन्धुनगर-५ का १५ वां वार्षिक उत्सव १४ दिसम्बर से १८ दिसम्बर तक आयोजित किया गया । पूज्य स्वामीजी ने १४ दिसम्बर सबेरे ८ बजे धर्म ध्वजा फहराकर उत्सव आरंभ कया । दोपहर स्वामीजी के नेतृत्व में जुलूस निकला, चारों दिन पूज्य स्वामीजी एवं अन्य संतों ने अमृत वचनों की वर्खा की।

१८ दिसम्बर प्रातः पूज्य स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा-

कर्ता हर्ता सर्व का, भरता है भगवान।
कह टेऊँ तुम आप को, कर्ता कबंहि न मान ।।

कोई भी जीव अपनी शक्ति के आधार पर चल नहीं सकता। व्यवहारिक भाषा में हम कहते हैं कि अमुक काम मैंने किया, वह काम उसने किया, किन्तु यह बल बुद्धि उस भगवान की है जिसने सृष्टि की रचना की है। जीव अशक्त है, निर्बल के बल राम हैं। इसलिए प्रभु व सत्गुरु से उनकी कृपा की याचना करें। जिस पर प्रभु व गुरुदेव की कृपा होती है वह भाग्यशाली है। प्रभु से प्रार्थना करें-

दीन हीन बल क्षीण मैं, मोहि भरोसा तोर।
टेऊँ तुम बिन को नहीं, तू ही हरि इक मोर ।।

२५ दिसम्बर जनता जनार्दन परिषद् की ओर से आश्रम में पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में डॉ. चोइथराम गिदवाणी का जन्म दिवस मनाया गया। स्वामीजी ने पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि डा. चोइथराम गिदवाणी निष्काम, निष्ठावान नेता थे। उन्होंने न केवल देश की आजादी की लड़ाई में सक्रिय भाग लिया किन्तु देश के विभाजन के पश्चात् भी जो सिन्धी व पंजाबी समाज की विशेष रूप से सेवा की, वह प्रशंसनीय है।

भारतीय सिन्धु सभा ने स्वामी विवेकानंद हाई स्कूल के हाल में अखिल भारतीय सिन्धी सम्मेलन का आयोजन किया। २७ दिसम्बर शुकवार प्रातः १० बजे पूज्य स्वामीजी ने इस सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा कि सिन्धी साहित्य, सिन्धु संस्कृति व सभ्यता की सुरक्षा के लिए ठोस कार्य करें। व्यवाहारिक जीवन में सिन्धी का प्रयोग करें। अपनी संतान को अपनी मातृभाषा सिन्धी से वंचित नहीं रखें। आपस में संगठन कर एक दूसरे को स्नेह व सहानुभूति दें।

अंर्तराष्ट्रीय युवा वर्ष के सम्बंध में महाराष्ट्र युवा शिविर का आयोजन आश्रम में २८ व २९ दिसम्बर को किया गया। इस अवसर पर शहीद हेमू कालाणी की माता जेठीबाई कालाणी का विशेष सम्मान किया

गया । पूज्य स्वामीजी ने इस शिविर का उद्घाटन करते हुए कहा कि हमारा सौभाग्य है कि आज हमारे बीच उस शहीद हेमू कालाणी की माता उपस्थित है, जिसने देश के आजादी आंदोलन में अपने प्राणों की आहूति दी । भारतीय जवानों को आज संकल्प करना चाहिए कि वे राष्ट्र की स्वतंत्रता की सुरक्षा व एकता के लिये अपने प्राणों की भी परवाह नहीं करेंगे । सामाजिक बुराइयों को युवा पीढ़ी ही दूर कर सकती है । देश के नव निर्माण में भी देश की युवा पीढ़ी अपनी भूमिका निभा सकती है । श्री आसनदास भेरवाणी एवं डा. दयाल 'आशा' ने इस सम्मेलन के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला ।

१ जनवरी १९८६ सायं ४ बजे पूज्य स्वामीजी ने जेतपुर सौराष्ट्र में सिन्धी समाज कम्यूनिटी हाल का उद्घाटन करते हुए कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिया । वहां स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि इस हाल में कई शुभ कार्य होंगे । श्री नेवंदराम ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत किया । रात्रि को भी उन्होंने वहां उपदेश करते हुए कहा कि प्रभु प्राप्ति के लिए आप पहले स्वार्थ का त्याग करें । यदि आपको हरिद्वार जाना है, तो पहले आपको जेतपुर छोड़नी पड़ेगी और हरिद्वार जानेवाले मार्ग पर चलना पड़ेगा । तब कुछ दिनों के पश्चात् आप हरिद्वार पहुंच जायेंगे । इसी प्रकार जीव जब माया व संसार के पदार्थों का परित्याग करेगा तब वह प्रभु के समीप आता जायेगा और किसी न किसी दिन अवश्य उसे प्रभु के दर्शन होंगे ।

वीरावल सौराष्ट्र में सिन्धी पंचायत ने हाई स्कूल का नाम स्वामी शान्तिप्रकाश हाई स्कूल रखा था । उस स्कूल के नवीन भवन का उद्घाटन पूज्य स्वामीजी ने २ जनवरी १९८६ प्रातः को किया । श्री रूपचन्द चन्दूलाल ने पूज्य स्वामीजी एवं अतिथियों का स्वागत सत्कार किया । सौराष्ट्र सिन्धी पंचायत फेडरेशन के अध्यक्ष श्री नेवंदराम लोकवाणी ने स्कूल की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पूज्य स्वामीजी की कृपा एवं आशीर्वाद और आप सभी के सहयोग से ही इस नवीन भवन का निर्माण सम्भव हो सका है। पूज्य स्वामीजी ने कहा कि विद्या दान उत्तम दान है। आपको साधुवाद है जो आप लोगों ने इस विद्या मंदिर में शिक्षा का माध्यम सिन्धी रखा है। डा. दयाल 'आशा' ने भी सिन्धी भाषा का महत्व प्रतिपादित करते गीत गाया ।

दोपहर को पूज्य स्वामीजी प्रभास पाटण पधारे । वहां भी सौराष्ट्र सिन्धी पंचायत के पुरुषार्थ से प्राथमिक शाला की नई इमारत बनाने की योजना थी । वहां पूज्य स्वामीजी ने नये भवन की नींव रखते हुए कार्यकर्ताओं को साधुवाद दिया । पूज्य स्वामीजी ने इस विद्या मंदिर के निर्माण हेतु २५ हजार रुपये भेंट किये । श्री नेवंदराम लोकवाणी ने पूज्य स्वामीजी का आभार मानते कहा कि इस भवन का नाम 'स्वामी टेऊँराम शाला' रखा जायेगा । २ जनवरी रात्रि, पूज्य स्वामीजी ने स्वामी लीलाशाह सोसाइटी, वीरावल में सत्संग प्रवचन किये ।

३ जनवरी प्रात: पूज्य स्वामीजी सोरठवंथली सिन्धी धर्मशाला में पधारे । स्वामीजी ने वहां प्रवचन करते हुए कहा कि प्रतिदिन प्रभु से प्रार्थना करें । प्रार्थना में बड़ी शक्ति होती है । प्रार्थना द्वारा आपके दुख दर्द दूर हो जायेंगे । श्रद्धा व विश्वास से प्रार्थना करें-

भक्त वत्सल भय हरन, हरि करुणा शील निधान ।
कह टेऊँ कलि काल में लाज राख भगवान ।।

अखिल सौराष्ट्र सिन्धी पंचायत फेडरेशन का पांचवां वार्षिक सम्मेलन ४-५ जनवरी पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में राजकोट में सम्पन्न हुआ। पंचायत के प्रधान श्री नेवंदराम लोकवाणी ने पंचायत की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए पूज्य स्वामीजी का स्वागत सत्कार किया । पूज्य स्वामीजी ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज समाज में जो कुरीतियां आ गई हैं, उन्हें दूर करने का संकल्प करें । दहेज की समस्या ज्वलंत समस्या है । इसके परिणाम स्वरूप कई बड़ी आयु की लड़कियां विवाह से वंचित हो गई हैं । विवाह के पश्चात् भी दहेज का कुरूप समाज पर कलंक है । आजकल तलाक देने की प्रथा भी बढ़ रही है, किसी को भगवान का भय नहीं । ऐसे सामाजिक सम्मेलनों का आयोजन कर समस्याओं का समाधान करें ।

४ जनवरी स्वामीजी ने हरिमंदिर रामनाथपुरा राजकोट में सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि एक धनवान किसी कार्य के लिए बाहर जा रहा था । उसके पास एक सुन्दर फुलवाड़ी थी । उसने अपनी बेटी से कहा कि प्रति दिन फूलों के पौधों को पानी देना । बेटी ने कहा कि पिताजी मैं आपकी आज्ञानुसार पौधों को पानी दूंगी, आप निश्चिन्त

रहें। कुछ दिनों पश्चात् जब वह धनवान लौट आया तो उसने फूलों को मुरझाया देखकर बेटी से पूछा क्या तुमने पौधों को जल नहीं दिया? बेटी ने कहा "पिताजी ! मैं तो प्रतिदिन इन पुष्पों पर खूब पानी डालती थी।" सेठ ने कहा कि तुमने मेरी मेहनत ही बर्बाद कर दी, फुलवाड़ी उजाड़ दी, पानी फूलों के ऊपर नहीं पौधों के मूल (जड़ों) में दिया जाता है। यदि तुम पौधों की जड़ों को पानी देती रहती तो यह फुलवाड़ी आज मुरझाई दिखाई नहीं पड़ती। प्रेमियो ! आप भी मूल परमात्मा को छोड़कर, जगत् के झूठे पदार्थों के लिए दिन रात पसीना बहाते हैं। सत्य को छोड़कर असत्य के पीछे भाग रहे हैं। सत्य ईश्वर है, उसकी शरण लें, उसको प्रसन्न करने के लिए शुभ कर्म करें। संसार के सम्बंधियों को प्रसन्न करने के लिए व्यर्थ जीवन न गवाएं। एक परमात्मा की ही भक्ति व उपासना करें तो आपको सुख की प्राप्ति होगी। अपना सर्वस्व प्रभु के श्रीचरणों में अर्पित करें। जैसे खाना मुख में डालते हैं तो उसकी शक्ति व रस सभी अंगों को मिलती है, वैसे ही भगवान को अर्पण करना अर्थात् सब को अर्पण करना है, क्योंकि वह सर्वव्यापी है। जिन पदार्थों को हम अपना समझते हैं वे सब पदार्थ, उस ब्रह्म के ही हैं। जिस शक्ति के कारण हमारा अस्तित्व है, वह शक्ति भी उसी ब्रह्म की ही है।

तेरा तुझको सौप दूं, क्या लागे मोरा।

५ जनवरी सम्मेलन का समापन करते हुए पूज्य स्वामीजी ने कहा कि आजकल तलाक की समस्या बहुत बढ़ गई है। भगवान का डर नहीं, तलाक देना महापाप है। इसलिए घरों में प्रेम व शान्ति का वातावण पैदा करें। कुछ लोग तो मंगनी (सगाई) के पश्चात् मंगनी तोड़ देते हैं। ऐसे अपराधियों को यथायोग्य दण्ड देना चाहिए, उनका समाज में तिरस्कार करना चाहिए। आज सब एकता के सूत्र में बंध जाने का संकल्प करें।

५ जनवरी रात्रि पूज्य स्वामीजी ने राजकोट में जवाहर लक्ष्मणदास माटा के घर के प्रांगण में सत्संग प्रवचन करते हुए कहा-

अंतर बाहर आत्मा, सत्गुर दीआ दिखाय।
कह टेऊं मैं देखके, दीना दूख मिटाय॥

प्रेमियो ! सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज अपनी अमृतमय वाणी में कहते हैं कि गुरु ने ही मुझे मन में और जगत् में परमात्मा का दर्शन करवाया । अर्थात् सत्गुर की कृपा से ही आत्म साक्षात्कार कर मैं सांसारिक दुखों से मुक्त हुआ । परमात्मा तो सर्वव्यापी है, अविनाशी है, दोष हमारी दृष्टि का है हम उसको दूर समझ बैठे हैं । एक संत से किसी राजा ने पूछा कि परमात्मा कहां है? महात्मा ने उत्तर दिया कि परमात्मा सर्वव्यापी है । राजा ने पुनः प्रश्न किया कि यदि ब्रह्म सर्वव्यापी है तो देखने में क्यों नहीं आता? तब महात्मा ने उस समय बर्तन में दूध मंगवाकर राजा से पूछा कि क्या इस दूध में मक्खन और घी है? राजा ने उत्तर देते हुए कहा "महाराज ! मक्खन और घी तो इस में समाहित है, किन्तु देखने में नहीं आते ।" महात्मा ने कहा कि जब दूध में थोड़ी सी दही डालकर उसे जमाएंगे, कुछ घण्टों के पश्चात् पुनः इसको मथेंगे तब इसमें से मक्खन निकलेगा । मक्खन को पुनः जब गर्म करेंगे तो शुद्ध घी निकलेगा । वैसे ही जिज्ञासू भी जब अपने मन को गुरु उपदेश रूपी मथनी से मंथेगा अर्थात् साधना करेगा, चिन्तन करेगा तब मन में ही उसे मक्खन अर्थात् परमात्मा का दर्शन होगा । प्रेमियो ! हम सब आत्म रूप हैं । आत्म साक्षात्कार तब होगा जब हम गुरु मंत्र की पूरी पूरी साधना करेंगे । सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं-

सत्गुर के सत् शब्द का सुमिरन कर हरिवार ।
कह टेऊँ जिहं सुमरते, अनुभव खुले द्वार ॥

६ जनवरी प्रातः १० बजे पूज्य स्वामीजी प्रेम प्रकाश मंदिर जामनगर पधारे । दादी धनी और कई प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया। सायं पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा-

आलस तज उदम करो, राम जपन के हेत ।
भोग रोगमय जानके सुमरण कर धर चेत ॥

प्रेमियो ! नाम स्मरण करने में आलस्य नहीं करें । जैसे व्यवहारिक उन्नति के लिए पुरुषार्थ आवश्यक है, वैसे आध्यात्मिक प्रगति के लिए भगवद् भजन आवश्यक है । सांसारिक भोग पदार्थ दुखदाई हैं । हरि का नाम सदा सुखदाई । रात दिन महल मकान बनाने व धन संग्रह

करने में व्यर्थ नहीं गंवाएं । सांसारिक पदार्थों से आपको आनंद की उपलब्धि नहीं होगी । जिन साधनों को आप सुखदाई समझते हैं, वे दुखदाई हैं । भगवद् भजन द्वारा ही आपको मन की शान्ति प्राप्त होगी। जो हृदय में भक्ति करता है, वह सब जीवों में एक ब्रह्म का दिव्य दर्शन करता है । आप भी सभी जीवों में परमात्मा का दर्शन कर सभी की समान रूप से सेवा करें ।

६ जनवरी सायं पूज्य स्वामीजी राजकोट लौट आए और रात्रि को वहां सत्संग प्रवचन कर ७ जनवरी बम्बई लौट आये । १२ जनवरी सिन्धुनगर प्रेम प्रकाश आश्रम में संत खानूरामजी का ८१ वां जन्मदिन मनाया गया । पूज्य स्वामीजी ने उनका सम्मान करते हुए कहा कि संत खानूरामजी के कंठ में मां सरस्वती का निवास है उनके गाने में माधुर्य है, वे परोपकारी पुण्यात्मा हैं । सिन्ध में चाहे यहां भारत में उन्होंने नगर-नगर में नाम का प्रचार किया । इसी अवसर पर स्वामी नारायणदास, संत परमानंद 'हंस', संत देव प्रकाश, संत ब्रजलाल, संत ब्रह्मदास एवं दयाल 'आशा' ने भी उनके गुणों का वर्णन किया ।

पूज्य स्वामीजी ने भूरोमल मेवाणी के घर में भगवान श्री कृष्ण के मंदिर का उद्घाटन करते हुए उसे धन्यवाद दिया । २६ जनवरी प्रात: ११ बजे पूज्य स्वामीजी ने सिन्धुनगर-२ में बजाज शापिंग कामप्लेक्स एवं बजाज हाल का उद्घाटन करते हुए शेवाराम बजाज एवं गुरुमुखदास बजाज को धन्यवाद देते हुए कहा कि जो बिना दहेज विवाह करेगा, उसे शादी हाल मुफ्त दिया जायेगा ।

रोहड़ा ब्रादर मंडल का वार्षिक उत्सव २ फरवरी रविवार के दिन प्रात: सेवा सदन हाल दादर बम्बई में पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में हुआ । स्वामीजी ने प्रवीण विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किये । उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि आपस में संगठित होकर एक दूसरे को आगे बढ़ाने का प्रयास करें । सांसारिक व्यवहार करते प्रभु को नहीं भूलें और अपना धन पदार्थ परोपकार के कार्यों में सफल करें।

१० फरवरी आश्रम में समाज सेविका जेठी बहन सिपाहीमलाणी का जन्म दिवस मनाया गया । पूज्य स्वामीजी ने पुष्पांजलि देते हुए कहा कि जेठी बहन ने निष्काम भावना से सिन्धी जाति और देश

की प्रशंसनीय सेवा की। वह प्रथम सिन्धी महिला थी जो बम्बई असेम्बली की डिप्टी स्पीकर बनीं। देश के स्वतंत्रता संग्राम में भी उसने सक्रिय भाग लिया। देश के विभाजन के बाद उसने कैम्पों में जाकर सिन्धी जाति की सेवा की, बम्बई में विभिन्न स्थलों पर नवजीवन सहकारी कालोनियां बनाकर लोगों को सुन्दर मकान उपलब्ध कराये।

१५ फरवरी सायं ५ बजे पूज्य स्वामीजी आदर्श हाई स्कूल कुबेर नगर अहमदाबाद पधारे। आदर्श विद्या मंडल के प्रधान डा. छाडोमल एवं प्रधान आध्यापक बी. जी. आसनाणी ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत करते हुए उनके परोपकारी जीवन का उल्लेख किया। पूज्य स्वामीजी ने पुस्तकालय का उद्घाटन करते ११ हजार रुपये स्कूल को भेंट दिये और कहा कि विद्यार्थियों में प्रार्थना, पवित्रता, प्रेम, सेवा, सच्चाई व सादगी के बीज बोएं।

२४ फरवरी सायं स्वामी टेऊँराम, प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर-५ में संत रविदासजी की जयन्ती मनाई गई। पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि श्री रविदास निम्न जाति में पैदा होकर भी प्रभु की भक्ति के कारण महान संत बन गये। भगवान, संत रविदास की गरीबी दूर करने के लिए एक संत के रूप में उसके पास जाते हैं। संत रविदास उस संत की प्रेम से सेवा करता है। वह संत प्रसन्न होकर श्री रविदास को पारस पत्थर देते हुए कहता है कि यह तुम लोहे से लगाओगे तो वह स्वर्ण बन जायेगा। तुम्हारी गरीबी दूर हो जाएगी। तुम आसानी से धन प्राप्त कर संतों की अधिक सेवा कर सकोगे। संत रविदासजी ने वह पारस पत्थर संत को लौटाते हुए कहा कि मैं पारस का क्या करूंगा? मुझे तो केवल एक राम चाहिए।

प्रेमियो ! भक्तों को सांसारिक पदार्थों की कोई कामना नहीं होती, उन्हें केवल प्रभु के दर्शन की ही प्यास रहती है। आप भी सांसारिक कामनाओं को त्यागकर प्रभु के दर्शन की इच्छा करें तो किसी न किसी दिन अवश्य प्रभु आपको दर्शन देंगे। संत रविदासजी की वाणी श्रवण करने में ही आनंद आता है। ऐसे संतों की वाणी का अभ्यास करें।

२५ फरवरी पूज्य स्वामीजी प्रेम प्रकाश मंदिर पिम्परी पधारे। उनके स्वागत में सायं जलूस निकाला गया। स्वामीजी ने दो दिन वहां सत्संग

प्रवचन कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। २७ फरवरी वे स्वामी चन्दनप्रकाश महाराज के पुण्य तिथि उत्सव के सम्बंध में प्रेम प्रकाश मंदिर पूना पधारे। वहां उन्होंने तीन दिन अमृत वचनों की वर्खा करते स्वामी चन्दन प्रकाशजी के गुणों का वर्णन किया। उन्होंने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि प्रेमियो ! यदि आप आनंद चाहते हैं तो वह आनंद आपको संतों के संग और दूसरों को सुखी करने में मिलेगा। सत्गुरु महाराज जी भी फरमाते हैं-

कह टेऊँ इस जगत् में, जे तुम चाहो सूख।
संतों का सत्संग सुन, देह न किसको दूख॥

कपलेश्वर महादेव मंडल, कुर्ला, बम्बई ने शिवरात्रि के उत्सव के सम्बंध में २ मार्च स्वामीजी के नेतृत्व में जुलूस निकाला। २-३ मार्च रात्रि को स्वामीजी ने कपलेश्वर महादेव मंदिर कुर्ला में सत्संग प्रवचन करते भगवान शंकर की महिमा गाते हुए नदलाल बख़त्याणी एवं उसके साथियों को इस आयोजन के लिए धन्यवाद दिया।

५ मार्च पूज्य स्वामीजी लखनऊ पधारे। वहां शिव शान्ति आश्रम में संत चांडूरामजी ने भक्त कंवरराम साहब जन्म शताब्दी उत्सव का आयोजन किया था। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामीजी ने दो दिन शिव शान्ति आश्रम में सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि एक बार ऋषि नारद ने भगवान से पूछा कि कैसे पता चले कि आप प्रसन्न हुए हैं? भगवान ने कहा कि जब किसी को एक संत का दर्शन हो जाये तो समझो मैं उस मनुष्य से प्रसन्न हूं। श्री नारद ने फिर पूछा "भगवान! कैसे पता चले कि आप किसी प्रेमी पर अत्यन्त प्रसन्न हुए हैं।" भगवान ने कहा "नारद ! जब किसी प्रेमी को एक साथ एक संत से अधिक संतों का दर्शन हो जाय तो मुझे अत्यंत प्रसन्न समझें। प्रेमियो ! आज आपके सौभाग्य हैं कि इस पवित्र स्थान पर अमर शहीद संत शिरोमणि भक्त कंवरराम साहब जी के जन्म शताब्दी उत्सव के सम्बंध में आपको एक साथ कई संतों के दर्शन हुए हैं।

संत कंवरराम साहब परोपकार की प्रतिमूर्ति थे। वे विनम्रता, दया व प्रेम के रूप थे। सिंध के भक्तों के शिरोमणि थे। उनका जीवन

हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है। मनुष्य की महानता धन वैभव से नहीं शुभ कर्मों द्वारा आंकी जाती है। भक्त कंवराम साहब जब तन्मय होकर गाते थे तब श्रोता गण मंत्र मुग्ध हो जाते थे। प्रेमियो ! उनक्रे गुणों को अपने जीवन में अपनायें। संत चांडूरामजी को साधुवाद है जिन्होंने अमर शहीद भक्त कंवरराम साहब का जन्म शताब्दी उत्सव आयोजित किया है।

८ मार्च शिवरात्रि के दिन पूज्य स्वामीजी कानपुर पधारे। वहां प्रेम प्रकाश मंडली एवं सर्व सिन्धी समाज की ओर से उनका भव्य स्वागत किया गया। उसी दिन सिन्धी समाज की ओर से सामूहिक यज्ञोपवीत का आयोजन किया गया। स्वामीजी ने यज्ञोपवीत के महत्व पर प्रवचन करते बालकों और आयोजकों को साधुवाद दिया। सायं प्रेम प्रकाश मंदिर में उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि आज सामाजिक ढांचा बदल गया है। जब तक अपना व्यवहार नहीं सुधारेंगे तब तक परमार्थ के पथ में प्रगति नहीं कर सकेंगे। कई परिवारों में अशान्ति है। पति पत्नि आपस में प्रेम से नहीं रह सकते, ऐसा दूषित वातावरण हो गया है। एक घर में पति स्वयं को और पत्नि स्वयं को बड़ा समझने लगी। दोनो न्याय कराने के लिए गुरु के पास आये। गुरु ने कहा यदि अब भी आप किसी को बड़ा या छोटा कहेंगे तो दोनों में से एक का मन दुखी होगा। गुरु ने उन्हें एक दृष्टांत सुनाते कहा कि एक पति पत्नि तीर्थ यात्रा पर जा रहे थे। दोनों धमिष्ठ थे। वे यात्रा करते थक गये। भोजन के समय दोनों ने किसी वृक्ष के नीचे बैठकर भोजन खाया। पति को नींद आने लगी। पत्नि ने पति को वृक्ष के नीचे सुला दिया। पति का माथा पत्नि की जंघा पर रखा था। उसे गहरी नींद आ गई। उसी समय वृक्ष की एक शाखा उसके सोए हुए पति पर गिर रही थी। पत्नि ने अपनी पतिव्रत्रा शक्ति द्वारा उस वृक्ष की डाली को वहीं थाम लिया जिससे उसके पति को नींद में विक्षेप न आए।

गुरु ने पति-पत्नि को उपर्युक्त दृष्टांत सुनाकर पत्नि से पूछा कि यात्रा में जाते हुए पति-पत्नि में से कौन बड़ा हुआ? पत्नि ने कहा वह पत्नि जिसने अपनी शक्ति द्वारा पति की रक्षा की। गुरु ने कहा

कि इतनी शक्ति होते हुए भी उस स्त्री ने अपने पति के सुख व विश्राम का विचार किया । स्वयं से अधिक महत्व पति को दिया । प्रेमियो पति का स्थान पत्नि से ऊंचा है । किन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि पति, पत्नि पर अत्याचार करे । स्त्री शक्ति व सहनशीलता का रूप है । पति का कर्त्तव्य है कि वह पत्नि को प्यार करे, और पत्नि का भी कर्त्तव्य है कि वह पति को भगवद् रूप समझकर उसकी सेवा करे और नम्रता से व्यवहार करे । तभी गृहस्थ जीवन सुखमय होगा । प्रेमियो ! आपस में मेल मेलाप व प्रेम से रहें, नाम स्मरण करें और परोपकार के कार्य करें ।

१२ मार्च प्रातः पूज्य स्वामीजी ने सुधार सभा, अजमेर द्वारा निर्मित 'अमूलीबाई वृद्धा घर' का उद्घाटन किया । स्वामीजी ने श्री दीपचन्द्र बेलाणी एवं उसके साथियों को साधुवाद दिया जो बड़ी लगन व उत्साह के साथ अजमेर में दीन दुखियों की सेवा कर रहे हैं ! स्वामीजी ने आगे कहा कि इस अमूलीबाई वृद्धा घर में वृद्ध माताएं एवं भाई सुखमय जीवन व्यतीत कर सकेंगे, वृद्धो की सेवा भी प्रभु की भक्ति है । हरिद्वार में कुम्भ पर्व का आयोजन होने वाला था इस सम्बंध में स्वामीजी २९ मार्च हरिद्वार पधारे पवित्र तीर्थ स्थल हरिद्वार में लगभग एक माह चला महाकुम्भ पर्व सानन्द सम्पन्न हुआ। करीबन लाख से भी अधिक श्रद्धालुओं ने पवित्र मां गंगा में डुबकी लगाई । कुम्भ पर्व का धार्मिक मुख्य स्नान दिनांक १४ अप्रैल को चरम सीमा पर रहा इस दिन लगभग ५० लाख श्रद्धालुओं ने पवित्र गंगा में डुबकी लगाई। हरिद्वार में देश के सभी हिस्सों से श्रद्धालु पहुंचे भारत ही नहीं बल्कि नेपाल और भूटान से भी श्रद्धालु आए ।

कुम्भ की बेला रात में दो बजे के बाद शुरू हुई । कुम्भ राशि के बृहस्पति में मेष का सूर्य आने पर कुम्भ बेला का संयोग होता है । आधी रात से पहले ही यात्री हर की पौड़ी की ओर निकल पड़े थे ।

हर की पौड़ी पर दोपहर तक गृहस्थ यात्रियों ने स्नान पूरा कर सन्यासियों के स्नानार्थ घाट खाली कर दिये थे ।

सप्त सरोवर भूपतवाला में प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय द्वारा लगाया गया

पंडाल आकर्षण का केन्द्र था । पंडाल बहुत ही अच्छी तरह से सजाया संवारा गया। यहां पर रासलीला, संत महात्माओं के प्रवचनों के अतिरिक्त प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय के अध्यक्ष पूज्य स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के प्रवचन प्रेरणादायक थे ।

महाकुम्भ के मुख्य शाही स्नान के दिन प्रातः ५ बजे पंत द्वीप के पास भगदड़ मची जिसमें ५० लोग कुचल कर मर गये । दुर्घटना पंत द्वीप और हर की पौड़ी को जोड़ने वाले पुल पर हुई। महाकुम्भ के ज्ञात इतिहास में यह दूसरा बड़ा हादसा था । हरिद्वार में इससे पूर्व १८१९ में हर की पौड़ी भगदड़ का केन्द्र बनी थी जिसमें ४३७ जाने गई थी।

महा कुम्भ पर्व के अवसर पर श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय द्वारा श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, भूपतवाला सप्त सरोवर पर विशाल छावनी (अन्नक्षेत्र) का आयोजन दिनांक २९ मार्च से १५ अप्रैल १९८६ तक किया गया। छावनी के अन्तर्गत विशाल भव्य सभा मण्डप जयपुर से आये उत्कृष्ट कलाकारों द्वारा कलात्मक रूप से सजाया गया था, जिसमें प्रतिदिन अनेकानेक आकर्षक कार्यक्रमों का सफल आयोजन किया गया ।

१ अप्रैल १९८६ को छावनी का विधिवत शुभारम्भ पूज्य स्वामी शांन्तिप्रकाशजी महाराज द्वारा किया गया। अन्न क्षेत्र २९ मार्च से ही प्रारम्भ हो गया था । १ से ४ अप्रैल तक प्रतिदिन प्रातः ८ से १० व शाम ४ से ८-३० बजे तक सत्संग वर्खा का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

५ अप्रैल से प्रतिदिन रासलीला का आयोजन भी होता रहा, जिसमें ब्रज मण्डल से आये कलाकारों द्वारा आनन्दकन्द भगवान श्रीकृष्णचन्द्र की मनोरम लीलाओं का मंचन आकर्षक व प्रेरणास्पद रहा ।

७ अप्रैल को सन्त सम्मेलन का आयोजन सम्पन्न हुआ, सन्त समागम में विभिन्न सम्प्रदायों, मठों के पूज्य महामण्डलेश्वरों ने भाग लिया। बद्रिका आश्रम के जगदगुरु शंकराचार्य परम पूज्य श्री विष्णुदेवानन्द तीर्थ जी की अध्यक्षता में सम्मेलन का शुभारम्भ हुआ, जिसमें आये हुए सभी पूज्य सन्त मण्डल द्वारा अपनी अमृतमयी वाणी द्वारा प्रेमियों को भगवन्नाम का रसास्वादन कराया गया जगदगुरु शंकराचार्य जी महाराज ने प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की भूरि-भूरि प्रशंसा की व श्री प्रेम प्रकाश

मण्डल द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में चलाए जा रहे जनहितकारी कार्यों की भी सराहना की। अंत में श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज ने आए हुए पूज्य जगद्‌गुरु शंकराचार्य, महामण्डलेश्वरों व संत मण्डल का कृतज्ञतापूर्वक आभार प्रकट किया।

८ अप्रैल पूज्य स्वामीजी के नेतृत्व में प्रेम प्रकाश मण्डल का एक जत्था गंगा पार परम पूज्य सन्त गंगदेवजी महाराज द्वारा संचालित विरक्त मण्डल के दर्शन करने गया। यहां पर विरक्त सन्यासियों के लिए भण्डारे का आयोजन भी हुआ, स्वामीजी द्वारा विरक्तियों को उपहार आदि भी भेंट किये गये।

९ अप्रैल पूज्य स्वामी गुरुमुखदासजी महाराज का वर्सी उत्सव मनाया गया इसके अन्तर्गत श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ का पाठ रखा गया विशेष सत्संग सभा में पूज्य स्वामी गुरमुखदासजी महाराज के उपदेशों को स्मरण करके उन पर चलने का आव्हान किया गया। इस अवसर पर विशेष भंडारा भी किया गया।

९ अप्रैल सायं ६-३० बजे पूज्य स्वामीजी द्वारा प्रेम प्रकाश मण्डल की एक मात्र मासिक पत्रिका "प्रेम प्रकाश संदेश" का कुम्भ मेला विशेषांक का विमोचन हजारों प्रेमियों की करतल ध्वनि व गुरुजनों की जय जयकार के बीच किया गया।

कुम्भ मेला विशेषांक का आवरण पृष्ठ अत्यन्त सुन्दर कलात्मक रूप से छापा गया था। जिसमें प्रेम प्रकाश सम्प्रदायाचार्य अनन्त श्री विभूषित पूज्य सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज, परम पूज्य सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज व प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज के (रंगीन) चित्र प्रकाशित किए गये थे। पत्रिका में कुम्भ मेले के बारे में विस्तृत सामग्री प्रकाशित की गई थी।

१० अप्रैल से १४ अप्रेल तक ६५ वां चैत्र मेला जो कि महाकुम्भ पर्व के कारण जयपुर के स्थान पर हरिद्वार में ही मनाया गया।

१० अप्रैल को परम्परानुसार प्रातः हवन, पूर्ण वैदिक विधि से पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज द्वारा सम्पन्न कराया गया।

प्रातः ८-४५ से ९ बजे तक परम पूज्य सद्‌गुरु टेऊँरामजी महाराज

व सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के मूर्तियों का अभिषेक किया गया ।

प्रातः ठीक ९ बजे श्री प्रेम प्रकाशी धर्म ध्वजा फहराई गई उस समय उपस्थित हजारों प्रेमियों द्वारा एक स्वर से सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की जय जयकार से आकाश गूंज उठा ।

चैत्र मेले के दूसरे दिन ११ अप्रैल १९८६ शुक्रवार प्रातः १०-४५ बजे प्रेम प्रकाश आश्रम भूपतवाला से भव्य चल समारोह श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य स्वामीजी के नेतृत्व में शुरू हुआ, जो कि भूपतवाला, भीमगोड़ा से होता हुआ हरि की पौड़ी पर पहुंचा ।

१४ अप्रैल महोत्सव के अन्तिम दिवस हरिद्वार में हुई कुम्भ त्रासदी के कारण प्रेम प्रकाश आश्रम परिसर के वातावरण में भी उदासी का माहौल देखा गया उक्त दुर्घटना में मरने वालों में प्रेम प्रकाश आश्रम के पांच प्रेमी भी थे ।

श्री नारायण दास पुत्र सन्त विशन दास, अजमेर आयु (६५), श्री बालचन्द पुत्र ठारुमल, ग्वालियर (आयु ६०), श्रीमती चन्द्राबाई पत्नि श्री मेघराजमल (आयु ५२), श्रीमती कृष्णा बाई (आयु ५२), श्रीमती गंगा बाई (आयु ५२) दोनों सिन्धुनगर भी कुम्भ दुर्घटना के मृतकों में सम्मिलित थे ।

मृतकों का अन्तिम संस्कार हरिद्वार में ही भूपतवाला श्मशान घाट पर हजारों प्रेमियों की उपस्थिति में किया गया । स्वामीजी द्वारा दिवंगतों के मोक्ष के लिये प्रार्थना की गई ।

कुम्भ दुर्घटना के कारण १४ अप्रैल का कार्यक्रम स्थगित कर दिया गया व १३ अप्रैल के समापन को ही औपचारिक समापन माना गया।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल की छावनी का समापन १८ अप्रैल रामनवमी को किया गया ।

१४ अप्रैल कुम्भयोग के अवसर पर हरिद्वार के पंतद्वीप में हुई भगदड़ में दिवंगतों को सारे देश में श्रद्धांजलियां दी गई । राष्ट्रपति और प्रधानमन्त्री, लोकसभा व विपक्षी नेताओं द्वारा अलग अलग शोक सन्देशों में दिवंगतों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई । अखिल भारतीय साधु समाज,

जगद्गुरु शंकराचार्य व विभिन्न मठों के महामण्डलेश्वरों द्वारा विशेष सत्संग सभाओं में दिवंगतों को पुष्पांजलि देते हुए घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की गई ।

प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य स्वामीजी द्वारा भी एक शोक सन्देश में दिवंगत आत्माओं के लिए मोक्ष की कामना की गई ।

कुम्भ पर्व के मध्य पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

साधु संग से तरत है, कलियुग में नर नार ।
कह टेऊँ सत्संग कर मन में श्रद्धा धार ।।

प्रेमियो ! कलियुग में इस भव सागर से तरने के लिए साधु संग एक सरल साधन है । श्रद्धा व विश्वास के साथ संतों के पास आकर सत्संग का लाभ प्राप्त करें । जीवन का यह समय सफल है जो सत्संग व शुभ कर्मों में व्यतीत हो शेष जीवन व्यर्थ है । एक धनवान को सुन्दर सुशील सुपुत्र था । वह विवाह करना नहीं चाहता था । उसके मां-बाप ने आदेश दिया कि तुम्हें शादी करनी ही पड़ेगी । तब बेटे ने कहा कि मैं लड़कियों की परीक्षा लूंगा, जो लड़की परीक्षा में उत्तीर्ण होगी, मैं उससे ही विवाह करूंगा । मां बाप प्रसन्न हुए । बेटे ने अलग अलग लड़कियों से एक ही प्रश्न पूछा कि ऋतु कौन सी अच्छी है? किसी ने कहा बंसत ऋतु, किसी ने कहा शीतकाल, किसी ने वर्षा का महत्व बताया । उन लड़कियों में से एक लड़की ने कहा कि ऋतु वह अच्छी है जिस में पति पत्नि से प्रसन्न हो, उसे स्नेह दे । यह उत्तर सुनकर वह युवक संतुष्ट हुआ और उस लड़की से उसने विवाह किया ।

प्रेमियो ! जीवन की वे घड़ियां सफल हैं जो सत्संग, स्मरण सेवा में बीतें । सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं-

चौरासी लख योन का, मानुष है सरताज ।
कह टेऊं हरि भजन का, कर इस तन में काज ।।

यह अमोलक मानव जीवन आपको उस प्रभू परमात्मा से मिलने व प्राप्त करने के लिये मिला है । इसलिये इस दुर्लभ मानव देह को व्यर्थ में ही न गंवाये । सत्संग में आकर के आप जो भी श्रवण करें

बाद में उस पर सतत् चिन्तन करें। सत्संग में आने का लाभ तभी प्राप्त होगा जब आप उन शिक्षाओं पर अमल करेंगे। प्रभु नाम बिना मानव जीवन बिल्कुल शून्य है। अतः यह अमूल्य मानव जीवन, प्रभु नाम स्मरण में सफल करें।

१९ अप्रैल पूज्य स्वामीजी प्रेम प्रकाश मंदिर दिल्ली पधारे। वहां उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन किया। २२ अप्रैल स्वामीजी ने पलवल में प्रवचन किया। २४ अप्रैल वे अमरापुर स्थान जयपुर पहुंचे। वहां उन्होंने तीन दिन अमृत वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। श्री ढालूराम दौलतराम की सुपुत्री के विवाह उत्सव के सम्बंध में पूज्य स्वामीजी २८ अप्रैल अहमदाबाद पधारे और वर-वधु को आशीर्वाद दिया। ३० अप्रैल वे प्रेम प्रकाश आश्रम कोटा पधारे। वहां उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन किया। संत मनोहरलालजी ने उनका आभार माना।

पूज्य स्वामी मुरलीधरजी महाराज के पुण्य तिथि उत्सव सम्बंध में पूज्य स्वामीजी २ मई इन्दौर पधारे। वहां उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि स्वामी मुरलीधरजी ने अपना सारा जीवन सत्गुरु महाराज को अर्पण कर प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ा। प्रेमियो ! आप भी परमात्मा से स्नेह सम्बंध रखें, संसार के सभी नाते रिश्ते झूठे हैं। सांसारिक इच्छाएं कभी पूरी नहीं होंगी। आप सदैव सुख चाहते हैं, इससे प्रमाणित होता है कि आप सच्चे सुख से बिछड़े हुए हैं, उसे प्राप्त करने का प्रयास करें। जब तक आपने अपने साक्षी रूप को नहीं पहचाना है तब तक आपको आनन्द की उपलब्धि नहीं होगी, जगत् में मृग तृष्णा आपको भटकाती रहेगी। जैसे चक्रवृति राजा का शासन छीन लिया जाय और उसे एक दो गांव राज्य करने के लिए दिये जायें तो वह प्रसन्न नहीं होगा। वह छीने हुए शासन को प्राप्त करने का अथक प्रयास करेगा वैसे ही आप भी स्वयं को पहचानने का प्रयास करें। आत्मसाक्षात्कार से आपको अद्वितीय आनंद का अनुभव होगा। आत्म साक्षात्कार के लिए परिपूर्ण गुरु की आवश्यकता है। साधक को गुरु के वचनों में पूरा पूरा विश्वास रखना चाहिए। सत्गुरु महाराजजी फरमाते हैं-

पूरन गुर के वचन में, पूरन जहं विश्वास।
कह टेऊँ तिस दास को, होवे ज्ञान प्रकास ॥

६ मई प्रातः १० बजे पूज्य स्वामीजी ने सिन्धुनगर-५ चालीहो साहब के नये मंदिर का भूमि पूजन करवाया। उन्होंने भक्त खानूराम, कन्हैयालाल सभनदासाणी, कन्हैयालाल माखीजा, नामदेव रोहड़ा, खीअलदास विश्नदास, पी. रामचन्द एवं अन्य सेवकों को धन्यवाद दिया। साधु वासवाणी नगर थाना के सिन्धी दुकानदार पंचायत ने १०-११ मई सत्संग यज्ञ का आयोजन किया। वहां पूज्य स्वामीजी ने दो दिन सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि प्रेमियों ! आपके पास जो कुछ धन पदार्थ, विद्वता, ज्ञान है, वह प्रभु की देन है, धरोहर है, उसे दूसरों को देने में कंजूसी न करें। उदारता से धन, पदार्थ परोपकार के कार्यों में खर्च करें। इन पदार्थों व पदों पर अभिमान न करें। एक बार भगवान श्री राम की माता कौशल्या बगीचे में घूम रही ती, तो अचानक वहां श्री हनुमानजी की माता अंजनी व अगसत्य मुनि की माता भी बगीचे में आईं। आपस में बातचीत करते अंजनी देवी ने कहा कि मेरा पुत्र हनुमान इतना तो बलवान है कि उसने एक छलांग लगाकर सहस्र योजन समुद्र पार किया। श्री अगसत्य मुनि की माता ने कहा कि मेरा बेटा इतना तो शक्तिशाली है कि वह सारे समुद्र को एक साथ पी गया। इनकी बातें सुनकर कौशल्या माता ने कुछ नहीं कहा किन्तु मन में उदास हुई कि वह सुपुत्र राम के लिए क्या कहें? वह शान्त होकर राज महल लौट आई। माता को उदास देखकर भगवान श्री राम ने उससे उदासी का कारण पूछा। माता ने कहा "बेटा ! अंजनी देवी ने हनुमान के बल का और अगसत्य मुनि की मां ने अगसत्य की शक्ति का वर्णन किया किन्तु मैं तुम्हारी शक्ति का वर्णन नहीं कर सकी। भगवान श्री राम ने माता को सांत्वना देते हुए कहा कि अब आप जाकर उनसे पूछे कि हनुमान व मुनि अगसत्य को किसका बल है? कुछ दिनों के पश्चात् तीनों माताएं आपस में मिली। तब माता कौशल्या ने उन दोनों माताओं से पूछा कि तुम्हारे बेटों को किसका बल है? तब दोनों माताओं ने नम्रता से कहा कि उन्हें तो श्री रामजी का ही बल है। यह उत्तर सुनकर कौशल्या माता अत्यन्त प्रसन्न हुई। प्रेमियो ! हम सब कों एक प्रभु की ही शक्ति है, उसके बिना हम किसी काम के नहीं। इसलिए परम पिता परमात्मा की शरण लें। सब कुछ उसका समझकर उसे सौंप दें।

प्रेम प्रकाश मंदिर गांधी नगर के चौथे वार्षिक उत्सव के सम्बंध में पूज्य स्वामीजी १५ मई गांधीनगर, कोल्हापुर पधारे ! उन्होंने वहां चार दिन अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की । स्वामी सर्वानन्द स्कूल में रमेश तनवाणी ने स्वामीजी का स्वागत करते उनके परोपकारी जीवन का वर्णन किया । स्वामीजी ने विद्यार्थियों और अध्यापकों को आशीर्वाद दिया । उत्सव का समापन करते हुए स्वामीजी ने कहा-

धन विद्या गुण रुप बल भावत ना भगवान ।
टेऊँ हरि को भावहिं, प्रेम एक प्रधान ।।

प्रेमियो ! परमात्मा आपकी विद्वता, ज्ञान, सुन्दरता, धन पदार्थ देखकर प्रसन्न नहीं होगा । वह तो आपकी प्रेमा भक्ति देखकर प्रसन्न होगा। ब्रज के न केवल लोग किन्तु पशु पक्षी भी भगवान श्रीकृष्ण के लिए प्रेम के आंसू बहाते थे । उनके मुख से "जय श्री कृष्ण" "जय श्री कृष्ण" ध्वनि ध्वनित होती थी । आप भी ऐसी तड़प प्रभु के दर्शन के लिए पैदा करें । एक बार भगवान श्याम सुन्दर ने श्री उद्धव को ब्रज का समाचार ले आने के लिए भेजा । जब श्री उद्धव ब्रज भूमि में आया तो उसने वहां देखा कि सभी लोगों की आंखों में आंसू हैं । तब उद्धव ने मन में विचार किया कि मैं किससे कुशल क्षेम पूछूँ । यहां तो सब श्रीकृष्ण के वियोग से व्यथित हैं । जब उद्धव लौटने लगा तब उसने यमुना नदी से पूछा कि ब्रज के लोग तो भगवान श्री कृष्ण के विरह में रो रोकर सूख गये हैं तुम कैसे जल से भरपूर हो? यमुनाजी ने कहा ब्रज के प्रेमियों ने इतने आंसू बहाये हैं कि मैं उनके आंसुओं से भर गई हूं ।

प्रेम तो ऐसा ! भगवद् प्रेम के कारण कभी हमारी आंखों में दो आंसू आयेंगे भी तो अभिमान होता है कि हम श्री श्याम सुन्दर के भक्त हैं । प्रेम के पथ में तो सारा जीवन प्रेम के आंसू बहाने हैं । प्रभु अपने प्रेमियों के आंसू पोंछकर उन्हें गले लगाता है । इसलिए प्रभु के दर्शन के लिए प्रेम के आंसू बहाएं ।

पूज्य स्वामीजी ने सिन्धु मंच कोल्हापुर की ओर से श्री हकीकतराय हीराणी धर्मशाला के निर्माण के लिए उसकी नींव रखते हुए ब्रजलाल

हीराणी को धन्यवाद दिया जिसने पूज्य पिता की पावन स्मृति में धर्मशाला के लिए मुफ्त प्लाट दिया। स्वामीजी ने मंच के प्रधान शशि गजवाणी एवं अन्य कार्यकर्ताओं को भी इस उत्तम कार्य के लिए धन्यवाद देते कहा कि इस धर्मशाला में मांस व शराब के प्रयोग पर प्रतिबन्ध लगाया जायेगा। स्वामीजी ने धर्मशाला के लिए स्वयं भी पांच हचार रुपये भेंट किये।

१९ मई सिन्धुनगर-२ में पूज्य संत खानूरामज़ी ब्रह्मलीन हुए। २२ मई उनके चौथे पर स्वामीजी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि संत खानूरामजी परोपकारी एवं दयालु संत थे। उनके साथ ज्ञान गोष्ठी करते आनन्द आता था। जब वे गाते थे तो श्रोतागण मंत्रमुग्ध हो जाते थे। उन्हें जो धन इत्यादि मिलता था, वह दीन दुखियों की सेवा में खर्च करते थे। वे अपने गुरु पूज्य स्वामी ईसरदास हंस के संग में हंस बन गये।

श्री लीलाराम पुरस्वाणी के निमंत्रण पर स्वामीजी २४ मई बड़ौदा पधारे। प्रातः ११ बजे स्वामी प्रेमदास नगर में स्वामी प्रेमदास वृद्धाश्रम के निर्माण के लिए भूमि पूजा सम्पन्न करवाई। इसी अवसर पर स्वामी ने श्री लीलाराम पुरस्वाणी को धन्यवाद देते कहा कि श्री लीलाराम कितने ही लोक सेवा के कार्य कर रहा है। मुझे बहुत प्रसन्नता है कि अब वह अपने सत्गुरु स्वामी प्रेमदासजी की पावन स्मृति में वृद्धाश्रम का निर्माण कर रहा हैं, इस वृद्धाश्रम में वृद्ध लोग सुखी जीवन बिता सकेंगे। वृद्धों, अपाहिजों व दीन दुखियों की सेवा भी प्रभु की भक्ति है। अधिकांशतः आज की युवा पीढ़ी, वृद्धों का तिरस्कार करती है, उनका सम्मान व सेवा नहीं करती, यह कदापि उचित नहीं है, इन वृध्दों का आशीर्वाद आप को मालामाल (धन, धान्य से सम्पन्न) करेगा। डा. दयाल 'आशा' ने वृद्धाश्रम की सहायता के लिए अनुरोध किया। बहन गोस्वामी इन्दिराजी एवं अन्य सज्जनों ने भी विचार व्यक्त किये।

सायं ६ बजे पूज्य स्वामीजी ने श्री लीलाराम पुरस्वाणी के नये भवन में सत्संग प्रवचन किये।

३१ मई स्वामीजी गोंदिया पधारे। वहां रात्रि को उन्होंने सत्संग प्रवचन किया। १ जून वहां सामूहिक विवाहों का आयोजन किया

गया । पूज्य स्वामीजी ने वर वधुओं का आशीर्वाद देते हुए कहा कि घर में बड़ों की आज्ञा पालन करते हुए उनकी सेवा करें । घर गृहस्थ व आपस में मेल जोल के साथ रहेंगे तो सुखमय जीवन बिता सकेंगे। २ जून पूज्य स्वामीजी कोरबा पधारे । ३ जून प्रातः वहां पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज एवं पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा की गई । इस अवसर पर पूज्य स्वामीजी ने कहा कि यदि आप इन मूर्तियों को साक्षात् स्वरूप समझकर प्रार्थना करेंगे तो आपका कल्याण होगा, आपकी मनोकामनायें पूरी होंगी । सत्गुरु महाराज से प्रार्थना करें ।

भव सागर के बीच में, डूबत हूं गुरदेव ।
कह टेऊँ मोहि काढले, दे निज आत्म भेव ।।

४ जून पूज्य स्वामीजी चाम्पा पधारे । वहां रात्रि को उन्होंने सत्संग प्रवचन किया । ५ जून आप बालाघाट पधारे वहां नये मंदिर के निर्माण के लिए उन्होंने भूमि पूजन किया । इसी अवसर पर उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि आप सभी प्रेमियों को धन्यवाद है जो आप यहां प्रेम प्रकाश मंदिर का निर्माण करवा रहे हैं । अपने लिए तो सभी लोग मकान बनवाते हैं। मंदिरों, धर्मशालाओं या विद्यालयों व अस्पतालों का निर्माण करवाना उत्तम कार्य है । आप नियमित रूप से प्रभु का स्मरण करें । ६ जून स्वामीजी सिवनी पधारे । श्री केवलराम एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत सत्कार किया । उन्होंने रात्रि को वहां सत्संग प्रवचन किये ।

१९ जून स्वामीजी, स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर कुमारनगर धुलिया पधारे । संत पहिलाजप्रकाश एवं अन्य प्रेमिगों ने उनका स्वागत किया। स्वामीजी ने तीन दिन वहां अमृत वचनों की वर्षा की । उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि आप सभी को साधुवाद है कि आप प्रतिवर्ष संत हरिप्रकाशजी की पुण्य तिथि मनाते हैं । उनके जीवन से कोई न कोई गुण ग्रहण कर जीवन सफल करें, नाम स्मरण करें । किसी न. किसी संत महात्मा की शरण लें और उनकी सेवा करें । उनकी सेवा से भगवान भी प्रसन्न होंगे ।

सब स्वार्थ के मीत हैं, बिन स्वार्थ हैं संत ।
कह टेऊं तहं सेव से, राजी हो भगवंत ।।

संत जिस पर दया दृष्टि करते हैं वह मालामाल हो जाता है । जिस पर संत की कृपा होती है वह भाग्यशाली है ।

२२ जून स्वामीजी मालेगांव पधारे । वहां उन्होंने रात्रि को सत्संग प्रवचन किया। २९ जून आप गोधरा पहुंचे वहां श्री अर्जनदास माखीजाणी ने उनका स्वागत किया । पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा-

रे मन राखो राम में, पूरन तुम विश्वास ।
कह टेऊँ विश्वास से, होवे सब दुख नास ।।

प्रेमियो ! मन में प्रभु के प्रति विश्वास धारण करें तो आपका बेड़ा भव सागर से पार हो जायेगा । प्रभु जो कुछ करे उसमें प्रसन्न रहें, उसमें ही हमारा भला है । एक बार अर्जुन ने भगवान श्री कृष्ण से पूछा कि सारे संसार का बोझा किस के ऊपर है? भगवान ने कहा ''मुझ पर ! लोग व्यर्थ बोझा अपने सिर पर समझते हैं । एक गंवार ऊँट पर बोझा ले जाता था । एक बार बोझा थोड़ा सा अधिक था। जितना बोझा वह ऊँट पर रखता था उतना बोझा ऊँट पर रखकर स्वयं ऊँट पर बैठकर शेष बोझा उसने अपने सिर पर रखकर ऊँट को आगे चलाया । थोड़े समय के पश्चात् ऊँट गिर गया तो ऊँटवाला भी गिर पड़ा । उसे चोट आई । यह गंवार की मूर्खता थी, उसके सिर का बोझा भी ऊँट पर ही था । हम भी उसी गंवार की भांति चिन्ताओं व तनाव का बेझा अपने सिर पर लाद कर दुखी हो रहे हैं । हम ऐसा समझते हैं कि यदि हम नहीं होते तो अमुक कार्य नहीं होता। सारी सृष्टि प्रभु की कृपा से ही चल रही है, उस ब्रह्म की सत्ता ही काम कर रही है, जीव तो निर्बल है, हम स्वयं को व्यर्थ कर्ता समझकर दुखी हो रहे हैं ।

१ जुलाई प्रातः १० बजे गोधरा में जूहरपुर स्कूल में पुष्पा रांवलाणी की स्मृति में पुरुस्कार उत्सव आयोजित किया गया । पूज्य स्वामीजी ने विद्यार्थियों को पुरुस्कार देते हुए कहा कि पाठ्य पुस्तकों के अभ्यास के साथ साथ प्रति दिन सेवा का कार्य करें और माता-पिता व गुरुजनों की आज्ञा का पालन करें, उनकी सेवा करें । उनकी आशीर्वाद से आपका जीवन चमक जायेगा । धार्मिक पुस्तकों का भी अभ्यास करें

तो आपके ज्ञान में वृद्धि होगी ।

६ जुलाई रविवार प्रातः पूज्य स्वामीजी ने स्वामी शान्तिप्रकाश मंदिर ट्रस्ट की ओर से कुबेरनगर में गरीब विद्यार्थियों में नोट बुक्स और स्कूल यूनीफार्म वितरित किये । इस उत्सव में भी स्वामीजी ने विद्यार्थियों से कहा कि पाठ्य पुस्तकों का अध्ययन करते माता-पिता और गरुजनों की सेवा करें । सत्य, स्नेह, सेवा, सादगी व संयम जैसे गुण अपनाएं। पूज्य स्वामीजी ने ट्रस्ट के सदस्यों भगवानदास, संतूमल, चन्द्रलाल गोवर्धनदास, लक्ष्मीचन्द जयकिशनदास एवं लक्ष्मणदास गोबिन्दराम को इस सेवा कार्य के लिए धन्यवाद दिया ।

सन्त भजनदासजी प्रेमप्रकाशी का ६ जुलाई १९८६ को दोपहर १२-३० बजे हृदय गति रुक जाने के कारण आकस्मिक निधन हो गया । स्वामी भजनदासजी महाराज के अमरापुर धाम पधारने पर पूज्य स्वामीजी ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि दिवंगत संत भजनदासजी प्रेम प्रकाश मण्डल के सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के समय के सन्त थे । संत भजनदासजी का श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ की रचना में विशेष योगदान रहा । संत भजनदासजी के निधन से जो अपूरणीय क्षति मण्डल को हुई है उसकी पूर्ति सम्भव नहीं है ।

प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य अनन्त श्री विभूषित पूज्य सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का जन्म शताब्दी समारोह ८ जुलाई से अजमेर में रंगारंग कार्यक्रमों के साथ प्रारम्भ हुआ । इसके साथ ही स्वामीजी का जन्मोत्सव देश-विदेश के अनेक स्थानों पर ८ जुलाई से १२ जुलाई तक मनाया गया । इस अवसर पर कई लोक कल्याणकारी कार्यों का शुभारम्भ भी हुआ ।

दिल्ली गेट अजमेर स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम पर पूज्य सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का जन्म शताब्दी समारोह पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में ८ जुलाई से १२ जुलाई तक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया ।

समारोह का शुभारम्भ ८ जुलाई १९८६ को प्रातः साढे पांच बजे ध्यान व श्री गुरु महाराजजी के मन्त्रोपासना के साथ किया गया । इसी दिन प्रातः श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ व श्रीमद्भगवत् गीता के पाठ रखे गये । प्रतिदिन प्रातः ७ से ११ बजे व सांय ४ से ८ बजे तक

उच्चकोटि के विद्वान-महापुरुषों ने भक्ति-वेदान्त व पूज्य सद्गुरु महाराजजी के जीवन पर व्याख्यान अपनी मधुर एवं ओजस्वी वाणी में किये।

समोरोह के दौरान प्रेम प्रकाश आश्रम दुल्हन की भांति सजाया गया था। जगमगाहट भरी रोशनी रात्रि को देखते ही बनती थी। ९ जुलाई दोपहर ४ बजे आश्रम से एक भव्य चल समारोह पूज्य सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज, पूज्य सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज व वेदान्त केसरी स्वामी बसन्तरामजी महाराज के चित्रों व झांकियों के साथ पूज्यपाद् सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के नेतृत्व में निकाला गया। चल समारोह नगर के मुख्य मार्गों से घूमता हुआ रात्रि ८ बजे वापस आश्रम पहुंचा। चल-समारोह में प्रेमी नाचते-गाते-धुनि लगाते श्री गुरु महाराजजी के ध्यान में तन्मय होकर अलौकिक मस्ती में चल रहे थे। चल समारोह में हजारों की संख्या में प्रेमी सम्मिलित थे। चल समारोह को देखने के लिये सड़कों के दोनों ओर हज़ारों की संख्या में नागरिक कतार बद्ध खड़े थे।

१२ जुलाई पाठों के पारायण पश्चात् आम भण्डारे का आयोजन हुआ एवं गरीबों, असहायों, विधवाओं को अन्न-वस्त्रादि भेंट किये गये।

१२ जुलाई पूज्यपाद् गुरुदेवजी का जन्मदिन, उस दिन संयोगवश शनिवार भी था सायं ७ बजे के लगभग १०० दीपक जन्मदिन के खुशी में मंच के पास प्रज्वलित किये गये। यह दृश्य अपने आप में एक अलौकिक, अद्वितीय दृश्य था, इस दृश्य को कई छायाकारों ने अपने कैमरों में कैद कर लिया।

उसी दिन सायं राजस्थान के राज्यपाल महोदय माननीय श्री वसन्त दादा पाटिल ने वेदान्त केसरी स्वामी बसन्तरामजी महाराज द्वारा रचित पद्यबद्ध "सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का जीवन चरित्र" तालियों की गड़गड़ाहट व गुरु महाराज की जयजयकार के साथ विमोचित किया। इस अवसर पर बोलते हुए श्री पाटिल ने सद्गुरु महाराज को एक युग पुरुष निरुपित किया व श्री प्रेम प्रकाश मण्डल को सामाजिक-आध्यात्मिक कार्यों में अग्रणी संस्था बताया।

रात्रि ११ बजे स्वामीजी द्वारा सर्वजन हितार्थ पल्लव पाकर समारोह

की समाप्ति की गयी। समारोह में स्वामी प्रकाशानन्दजी महाराज (हरिद्वार), स्वामी जगदानन्दजी महाराज (वृन्दावन), स्वामी मनोहरदासजी महाराज (अजमेर), सुप्रसिदन्ध कथा गायक कला निधि पं. श्री निवासजी (करनाल), कीर्तन कला निधि श्री हेमनदास शास्त्री, श्री विशनदास बख्शी (करनाल), बहिन ललिता सखी (वृन्दावन) पधारने वालों में से प्रमुख थे।

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के हिन्दी निदेशालय की ओर से १६ जुलाई से २२ जुलाई स्वामी टेऊँराम आश्रम सिन्धुनगर-५ में सिन्धी अनुवाद कार्यशाला का आयोजन किया या। स्वामीजी ने १६ जुलाई इस कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए कहा कि विभिन्न भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्य के अनुवाद करने से विचारों का आदान प्रदान होता है। सिन्धी साहित्य की श्रेष्ठ रचानाएं अन्य भारतीय भाओं में अनुवाद करें और अन्य भाषाओं की श्रेष्ठ कृतियां सिन्धी भाषा में अनुवाद कर साहित्य की निधि बढ़ाएं। सिन्धी भाषा को नहीं भुलाएं। अपनी मातृ भाषा का अपने व्यवहारिक जीवन में प्रयोग करें। इस शिविर के निदेशक डा. दयाल 'आशा' ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत एवं आभार प्रदर्शन किया।

पूज्य स्वामीजी ने विदेश के प्रेमियों के नेह निमंत्रण पर २६ जुलाई रात्रि को जकार्ता के लिए प्रस्थान किया। उनके साथ संत देवप्रकाश, संत अनंतप्रकाश, हरगुनलाल व ज्ञानलाल भी थे। २७ जुलाई प्रातः वे जकार्ता हवाई अड्डे पर पधारे। गोप-शंकर सामताणी, लाल वास्वाणी एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का भव्य स्वागत किया। वे माता कृष्ण सामताणी के घर पर ही ठहरे। उसी दिन ही पूज्य स्वामीजी ने वहां सत्संग यज्ञ आरंभ किया।

२ अगस्त जकार्ता में स्वामीजी की अध्यक्षता में पूज्य दादा जशन वास्वाणी का जन्म दिवस उत्सव मनाया गया। प्राचार्य वी. राम एवं अन्य प्रेमियों ने दादाजी के गुणों का वर्णन किया। स्वामीजी ने पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि श्री जशन वास्वाणी प्रेम, दया व विनम्रता की मूर्ति हैं। वे अपने गुरुदेव साधु वास्वाणी की शिक्षाओं और सिद्धांतों का देश विदेश में प्रचार कर स्मरण व सेवा का संदेश दे रहे हैं।

परमात्मा से प्रार्थना है कि उन्हें दीर्घायु प्रदान करें जिससे वे अधिक से अधिक प्रेमियों का मार्ग दर्शन करें।

३ अगस्त स्वामीजी को प्रेमी जकार्ता स्थिति सुन्दर व रमणीक स्थान बालीनगर ले गये। स्वामीजी वहां तीन दिन ठहरे। ६ अगस्त वे जकार्ता लौट आये। वहां स्वामीजी ने प्रेम व ज्ञान की गंगा प्रवाहित की।

एक दिन वहां स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि जहां प्रेम है वहां परमात्मा है। जिसके मन में प्रेम है प्रभु उससे दूर नहीं। सत्गुरु महाराज भी कहते हैं-

प्रियतम का जहं प्रेम है, प्रियतम है तहं ठोर।
कह टेऊँ बिन प्रेम के, रहत न सो फल ओर॥

प्रेमियो ! किसी न किसी रूप में प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ें। कुछ प्रेमी वात्सल्य भाव से कुछ सखा भाव से कुछ पति भाव से प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ते हैं। विष्णु उचित की बेटी कोदई प्रभु की पति रूप में उपासना करती थी। वह भगवान की मूर्ति के लिए जो पुष्प माला बनाती ती, उसे प्रथम वह स्वयं पहनकर दर्पण में देखती थी कि वह माला अच्छी लगती है या नहीं। यदि वह पुष्प माला सुन्दर लगती थी तो वह पुजारी को भगवान की मूर्ति पर चढ़ाने हेतु देती थी। एक दिन मंदिर के पुजारी ने माला में एक बाल देखकर वह माला विष्णु उचित को लौटा दी और कहा कि आपकी माला में मनुष्य का एक बाल अटका हुआ है इसलिए यह पुष्प माला भगवान की मूर्ति के लिये उपयुक्त नहीं है।

श्री विष्णु उचित ने यह सुनकर विचार किया कि इसमें भी कोई रहस्य है। उसने माला में बाल होने का कारण खोजने का प्रयास किया। तीसरे दिन उसने देखा कि उसकी बेटी, जिसके मन में प्रभु के प्रति अगाध श्रद्धा है, वह भगवान के मूर्ति की माला सर्व प्रथम स्वयं पहनकर दर्पण में देख रही है। वह शीघ्र ही बेटी के समीप आया और उसने बेटी से पूछा "पुत्री ! तुम यह क्या कर रही हो? पहनी हुई माला प्रभु को कैसे अर्पण की जा सकती है? विष्णु उचित ने दूसरी माला बनाकर भगवान की मूर्ति को पहनाई। उसी रात विष्णु

उचित को स्वप्न में भगवान ने दर्शन देते हुए कहा कि मुझे कोदई आंडांल की माला ही सुन्दर लगती है। भविष्य में मुझे उसकी वरण की हुई माला ही अर्पण करें। ततूपश्चात् स्वप्न में मिली आज्ञानुसार भगवान को कोदई की वरण की हुई पुष्प माला ही अर्पित की जाती थी। भगवान अपने भक्तों की इच्छा किसी न किसी रूप में पूर्ण करता है, वह उन्हें अधिक महत्व देता है। प्रेमियो आप भी प्रभु से किसी न किसी रूप में प्रेम का नाता जोड़ें।

१२ अगस्त प्रेम प्रकाश मंण्डलाचार्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का जन्मशताब्दी उत्सव मनाया गया। पूज्य स्वामीजी ने इस अवसर पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि परम पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज अवतारी पुरुष थे, जिन्होंने जगत् के कल्याण के लिए प्रेम प्रकाश मण्डल की स्थापना कर हज़ारों प्रेमियों को नाम का अमृत पिलाया। आप लोगों को साधुवाद है कि आप यहां सत्गुरु महाराज का जन्मशताब्दी उत्सव मना रहे हैं। सत्गुरु महाराज ने अमूल्य वाणी लिखी है जिसके पठन एवं श्रवण से आनन्द की उपलब्धि भी होगी और व्यवहार के लिए भी आपका मार्गदर्शन होगा। इसलिए आप नियमित रूप से प्रेम प्रकाश ग्रन्थ का पाठ करें व नाम स्मरण करें, स्मरण के साथ आप दीन दुखियों, अनाथों, अपाहिजों की सेवा भी करें और शाकाहारी भोजन खाएं, पशु पक्षियों पर दया दृष्टि करें। मांसाहार से आपकी बुद्धि भी भ्रष्ट होगी। सत्गुरु महाराजजी मांसाहार का खंडन करते हुए कहते हैं-

मांस खान से मनुष्य की, होवे बुद्धि मलीन।
कह टेऊँ बुद्धि भ्रष्ट से, कर्म धर्म हो खीन॥

प्रेमियो ! सात्विक खाना खाने से आपकी बुद्धि भी सात्विक होगी और आप शुभ कर्म करेंगे, शुभ संकल्प करेंगे।

१९ अगस्त को पूज्य स्वामीजी का ८० वां जन्म दिवस था इस परम पावन दिवस को जकार्ता में बड़े ही उल्लासमय वातावरण में पूज्य स्वामीजी की उपस्थिति में मनाया। इस अवसर पर अनेक प्रेमियों ने दहेज न लेने, मांसादि व्यसनों को छोड़ने की प्रतिज्ञा की।

कार्यक्रमों के अन्तर्गत प्रातः पूज्य स्वामीजी को गंगाजल, दूध, इत्र, तुलसी मिश्रित जल से स्नान कराया गया, तत्पश्चात् स्वामीजी को चन्दन का टीका लगाया गया। इसके बाद स्वामीजी व सन्त मडंल ने प्रवचन कर उपस्थित प्रेमियों को भगवन्नाम के रस में भावविभोर कर दिया। स्वामीजी को राखीयां बांधने के बाद प्रात:कालीन कार्यक्रमों का समापन हुआ।

दोपहर सभी प्रेमियों के साथ स्वामीजी स्थानीय वृद्ध आश्रम गये और वहां पर वृद्धों को उपहारादि देकर उनकी सेवा की गयी। स्वामी जी के ८० वें जन्म दिवस की खुशी में ८० कबूतरों को आकाश में उड़ाया गया। सायं ६ बजे से ९ बजे तक स्थानीय सिंधु हाऊस में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। वहां स्वामीजी ने जन्म दिवस केक काटा एवं करीब पचास वृद्ध व्यक्तियों ने स्वामीजी को ८० वें जन्म दिवस की बधाई देकर आशीर्वाद प्रदान किया। पूज्य स्वामीजी ने भी सिंधु हाउस में पधारे इन वृद्धों को विशेष उपहार प्रदान किये। साथ ही भजन कीर्तन का कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ। इसी विशेष कार्यक्रम के अन्तर्गत ही यहां रह रहे सिन्धी सामज के बच्चों ने एक नाटक का सफलतापूर्वक मंचन किया। इस नाटक में यह बताया गया था कि सायंकाल का समय होटल सिनेमा आदि इसी प्रकार के अन्य व्यसनों में बरबाद न करके किसी महात्मा आदि के सान्निध्य में सत्संग वर्खा का पान करना चाहिए जिससे यह लोक भी सुधरे एवं परलोक भी। श्री वी. राम ने स्वामी जी के ८० वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में दिये गए भाषण में परम पूज्य सद्‌गुरु महाराज को एक युग पुरुष की संज्ञा दी एवं जकार्ता वासियों को परम पूज्य स्वामीजी के सान्निध्य में किये जा रहे समाज सुधार एवं गरीबों की सेवा के कार्यों की जानकारी भी दी, जिसे सुनकर जकार्ता वासी प्रसन्न हुए। इसी से प्रेरित होकर जकार्ता वासियों की ओर से चार प्रेमियों ने अलग-अलग व्यसन त्यागने का प्रण किया। एक प्रेमी ने प्रण किया कि हम आज से मांस का सेवन बिल्कुल नहीं करेगे। दूसरे प्रेमी ने घोषणा की कि अपने बच्चों की शादी में दहेज नहीं लेगे। तीसरे प्रेमी ने कहा कि हम किसी प्रकार का पाप नहीं करेंगे। चौथे प्रेमी का व्रत था कि वह प्रतिदिन सत्संग में जरूर आया करेगा।

उपरोक्त कार्यक्रमों के पश्चात् संत अनन्तप्रकाश ने एक भजन गाकर उपस्थित प्रेमियों को आनन्द का भरपूर रसास्वादन कराया। परम पूज्य सद्गुरु महाराजजी ने भी अमृत वचनों की वर्खा की। अन्त में आम भण्डारे का आयोजन किया गया। जिसमें वहां उपस्थित समस्त प्रेमियों ने एक साथ भोजन किया।

सत्संग वर्खा करते हुए कहा कि आज आप लोगों ने जो दास की महिमा गाई, यह मेरी महिमा नहीं, यह तो प्रभु और सत्गुरु महाराजजी की महिमा है। मैं तो एक प्रज्ञाचक्षु हूं, कुछ काम नहीं कर सकता। प्रभु की कृपा और आप लोगों के सहयोग से कार्य हो रहे हैं। प्रभु ने आपको अमूल्य मनुष्य जीवन एवं सुख सम्पत्ति दी है उसका सदुपयोग करें। स्मरण व सेवा द्वारा जीवन सफल करें।

२० अगस्त पूज्य स्वामीजी ने सींगापुर के लिए प्रस्थान किया। हवाई अड्डे पर बहन इन्दिरा मंघाराम, राम छुगाणी, बहन इन्दिरा डीपलदास एवं अन्य प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी का भव्य स्वागत सत्कार किया। उन्होंने वहां प्रेम प्रकाश मंडली, सिन्धु हाऊस एवं प्रेमियों के घरों में ११ दिन अमृत वचनों की वर्खा करते हुए प्रेमियों की प्यास पूरी की। उन्होंने ज्ञान, भक्ति, सेवा, गुरु महिमा एवं विभिन्न विषयों पर प्रवचन किये। एक दिन उन्होंने प्रेमा भक्ति के सम्बंध में प्रवचन करते हुए कहा कि प्रेम के अतिरिक्त मनुष्य पशु से भी गया बीता है। मनुष्य के मन में प्रेम की गंगा प्रवाहित होनी चाहिए। जिस के मन में भगवद् प्रेम होता है वह सभी जीवों में प्रभु का साक्षात् दर्शन करता है। वह सभी प्राणियों को स्नेह देता है। सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते है-

प्रेम जिसे सो मनुष्य है, प्रेम बिना पशु जान।
तांते सब से प्रेम कर, टेऊँ दे सन्मान ॥

लाहौर में गंगा माली नामक भक्त रहता था। उसका विवाहित सुपुत्र अचानक संसार से चल बसा तो उसने उसकी पत्नि से कहा कि यह धन सम्पति सब तेरी है, उसकी रक्षा करने वाला अब भगवान श्रीकृष्ण है, मैं अब ब्रज भूमि जा रहा हूं। उसकी बहू ने कहा कि मैं भी अब धन पदार्थ का क्या करूंगी? मैं भी अब ठाकुरजी की सेवा उपासना

करूंगी । गंगा माली ब्रज की ओर चला गया । उसकी बहू श्री ठाकुरजी की सेवा उपासना करने लगी । वह पहले श्री ठाकुरजी को भोग लगाकर फिर स्वयं खाती थी । श्री ठाकुरजी उसकी श्रद्धा देखकर भोजन ग्रहण करते थे । एक दिन उसके घर में कुछ बालक खेलते कूदते आये और उन्होंने ठाकुरजी पर धूल फेंकी । यह बात वह सहन न कर सकी। उसने उन बालकों को घर के मंदिर से बाहर निकालकर दरवाजा बन्द कर दिया । कुछ समय पश्चात् जब उसने भगवान की मूर्ति के आगे प्रसाद रखा तो भगवान ने भोग ग्रहण नहीं किया । उसने भगवान से भोजन ग्रहण करने के लिए प्रार्थना की । तब श्री ठाकुरजी की मूर्ति से आवाज आई "तुमने मेरे बालकों का तिरस्कार किया है, फिर में तुम्हारा प्रसाद कैसे ग्रहण करूंगा?" फिर उसने विनती की "प्रभु ! उन बालकों ने आपकी मूर्ति पर धूल फेंकी इसलिए ही मैंने उनको बाहर निकालकर दरवाजा बंद किया ।" फिर मूर्ति से आवाज आई "ये बालक मेरे प्यारे हैं, उन्हें यहां मुझसे खेलने कूदने दो ।" भगवान की यह आज्ञा सुनकर वह बाहर आई। उसने उन बालकों को मिठाई के लिए ललचाते बुलाया । उन्हें मंदिर में बिठाकर मिठाई खिलाई तत्पश्चात् श्री ठाकुरजी ने प्रसाद ग्रहण किया। प्रभु कैसे न दयालु हैं, वे बालकों को भी कितना न प्यार करते हैं। ये बालक परमात्मा के बहुत समीप हैं, क्योंकि वे वैर-भाव व विकारों से दूर हैं । प्रेमियो! आप भी प्रभु के द्वार पर मासूम बच्चों की भांति आकर विनय करें, उसके गुण गान करें तो प्रभु आपको प्यार करेगा।

सिंगापुर में भी सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का जन्म शताब्दी उत्सव मनाया गया । इस अवसर पर पूज्य स्वामीजी ने पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के जीवन कार्य का वर्णन करते हुए कहा कि उन्होंने हजारों प्रेमियों को श्री सत्नाम साक्षी का मंत्र देकर आध्यात्मिक मार्गदर्शन किया । प्रेमियो ! आप भी नियमित रूप से गुरु मंत्र का अभ्यास करें । अभ्यास करते करते आप भी आत्मिक आनंद का अनुभव करेंगे । सत्गुर महाराजजी भी कहते हैं-

हृदय में गुरु शब्द की बाजे अनहद बीन ।
कह टेऊँ सुन ताहं को, गुरुमुख हो लवलीन ।।

एक बार सत्गुरु महाराज का खाही गांव में सत्संग का कार्यक्रम था सत्संग के कार्यक्रम के पश्चात् सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने सभी प्रेमियों से कहा कि भंडारे का भोजन खाकर जाना । यह सुनकर खाही के प्रेमी आयोजक वासूराम, सोमनराम घबड़ा गये कि अब इतने प्रेमियों को रात में भोजन कैसे खिलाया जायेगा? भोजन तो थोड़ा होगा । उन्होंने सत्गुरु महाराज से प्रार्थना की "प्रभु ! हमने तो १०० या १२५ प्रेयिमों के लिए भोजन तैयार किया है, किन्तु प्रेमी तो कम से कम ४०० या ५०० होंगे । अब इस समय इतना खाना बनाना सम्भव नहीं । उसी समय सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज स्वयं भंडारे में पधारे और उन्होंने जल पढ़कर 'सत्नाम साक्षी' कहकर तैयार भोजन पर जल डाला, ईश्वर की अनुकम्पा से सभी संतों व प्रेमियों ने तो भोजन खाया फिर भी भोजन बच गया । सत्गुरु महाराजजी सिद्ध पुरुष थे किन्तु दिखावा नहीं करते थे । उन्होंने कई प्रेमियों के मानसिक व शारीरिक दुख दर्द दूर किये । प्रेमियों आप भी नियमित रूप से गुरु मंत्र का जाप करें और परोपकार के कार्य करें ।

सिंगापुर के प्रेमियों ने भी पूज्य स्वामीजी का ८० वां जन्मदिन बड़े उत्साह के साथ मनाया । संत अनन्तप्रकाश व संत देवप्रकाशजी ने पूज्य स्वामीजी के कर्मयोगी जीवन का वर्णन किया । पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आप लोगों ने जो दास की महिमा गाई, वह महिमा प्रभु व सत्गुरु महाराजजी की ही है । उनकी कृपा से दास काम कर रहा है । आप लोगों ने जो मुझे प्रेम व स्नेह दिया है उसके लिए आप सभी को धन्यवाद ।

१ सितम्बर पूज्य स्वामीजी मनीला पधारे । वहां पूज्य स्वामी जी ने हिन्दू टेम्पल, अन्य स्थानों एवं प्रेमियों के घर पर २५ दिन अमृत वचनों की वर्खा कर प्यास पूरी की । श्री देव, श्री अर्जन एवं अन्य प्रेमियो ने स्वामीजी का आभार प्रदर्शन किया । २६ सितम्बर पूज्य स्वामीजी बैंकाक पधारे वहां भी उन्होंने एक सप्ताह सत्संग प्रवचन कर प्रेमियों का मार्ग दर्शन किया ।

२ अक्टूबर रात को पूज्य स्वामीजी विदेश यात्रा पूरी कर बम्बई पधारे । कई प्रेमियों ने उनका स्वागत किया । ३ अक्टूबर प्रातः उन्होंने प्रेम प्रकाश मण्डली माटूंगा बम्बई में प्रवचन किया । तत्पश्चात् वे

सिन्धुनगर प्रेम प्रकाश आश्रम पधारे। शाम को ६ बजे उनका स्वागत किया गया। ४ अक्टूबर उन्होंने स्वयं गौशाला में चलकर गौ माताओं की सेवा की। ५ अक्टूबर जनता जनार्दन परिषद् की ओर से पूज्य स्वामीजी का जन्म दिन उत्सव आश्रम में मनाया गया। हवन यज्ञ के पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने गरीब माताओं की आर्थिक सहायता की। साथ ही चावल, शक्कर, दाल, चादर आदि दिये। सायंकाल सत्संग में कई प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी को पुष्पांजलि अर्पित की। पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आप लोगों ने कितने न उत्साह के साथ मेरा जन्मदिन मनाया है ! आज मैं बालक हूं। आप सब मुझ बालक पर आशीर्वाद करें। जो भी आपने दास की महिमा गाई है यह महिमा कार्य की है। आप भी अपना जीवन सेवा व स्मरण में सफल बनाएं। सत्गुरु महाराज फरमाते हैं-

पूर्व पुण्य प्रताप ते पाई मानुष देह।
कह टेऊँ हरिमिलन का अवसर जानो एह॥

प्रेमियो ! कई जन्मों में किए सत्कर्म के पश्चात् ही यह मानुष योनि मिली है। ऐसी अमूल्य योनि व्यर्थ न गंवायें। इस योनि में ही प्रभु की प्राप्ति सम्भव है और सत्कर्म कर सकते हैं, भगवद् भजन कर सकते है। भगवद् भक्ति करने से अयोग्य भी योग्य बन सकता है। श्रीधर स्वामी जिसने श्रीमद् भागवत् पर टीका लिखी है, वह जब बालक था, तब उसके माता पिता संसार से चल बसे। वह बालक एक खराब बर्तन में तेल लेकर रास्ते में जा रहा था तो उस रास्ते से एक राजा व उसका मंत्री आपस में भगवद् भक्ति की महिमा के सम्बंध में चर्चा करते जा रहे थे। मंत्री ने कहा कि परमात्मा की भक्ति करने से अयोग्य व्यक्ति भी योग्य बन जाता है। सामने गरीब श्रीधर बालक को आते देखकर राजा ने मंत्री से पूछा "क्या यह बालक भी भगवद् भक्ति करने से विद्वान बन सकता है? मंत्री ने कहा "हां, राजन् ! भक्ति में शक्ति होती है।" राजा की आज्ञा के अनुसार उस बालक की भक्तिमय वातावरण में पालना की गई। श्रीधर जैसे बड़ा हुआ तो उसके चित्त की वृत्ति भगवद् भजन में ही लगी रहती थी। आगे चलकर वह महान विद्वान व भक्त बना और भक्त श्रीधर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। प्रेमियो ! आप भी नियमित रूप से भगवद् भजन करें।

प्रेम प्रकाश मंडल एवं निष्काम सेवा मण्डल अहमदाबाद की ओर से प्रेम प्रकाश आश्रम के नवीन भवन में स्वामी ऊद्धवदासजी महाराज का पुण्य तिथि उत्सव ५ अक्टूबर से ९ अक्टूबर तक आयोजित किया गया। इसी उत्सव के सम्बंध में पूज्य स्वामीजी ६ अक्टूबर अहमदाबाद पधारे। सायं उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि संत ऊद्धवदास जी ने वर्षों पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज एवं सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की सेवा की। प्रेमियो ! आप भी संतों, सत्गुरु की श्रद्धा से सेवा करें तो किसी न किसी दिन आप को भी आत्मिक आनन्द की उपलब्धि होगी। सत्गुरु महाराजजी अपनी वाणी में कहते हैं-

जो गुर सत् उपदेश दे, करत पाप मल नास।
कह टेऊँ तिहं सेव कर पाओ ब्रह्म हुलास॥

८ अक्टूबर वहां सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का जन्म शताब्दी उत्सव मनाया गया, पूज्य स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग बताते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की शिक्षाओं व सिद्धांतों पर चलने का प्रयास करें। सत्गुरु महाराजजी फरमाते हैं।

बेल अश्व वानर गधा, मांस नहीं खावत घास।
टेऊँ मानुष होय के, क्यों तुम खावत मांस॥

प्रेमियो ! बेल, घोड़े, बन्दर, गधे मांस भक्षण नहीं करते, तुम मनुष्य होकर मांस भक्षण क्यों करते हो? मांसाहारी खाना क्यों खाते हो? जब निर्दोष बकरों, बकरियों को काटा जाता है तब उनकी करुण पुकार सुनें तो आपको अवश्य दया आयेगी। प्रेमियों ! इन मूक पशु पक्षियों पर दया करें। जैसा आप खाना खायेंगे वैसे ही आपके विचार होंगे। अब सत्गुरु महाराजजी के जन्म शताब्दी उत्सव के पावन अवसर पर मांस भक्षण का परित्याग करने की प्रतिज्ञा करें तो भगवान आपका भला करेगा।

१० अक्टूबर प्रेमियो ने पूज्य स्वामीजी का ८० वां जन्म दिन उत्सव मनाया। स्वामीजी ने आयोजकों को साधुवाद देते कहा कि जीवन

की सार्थकता लोकसेवा एवं नामस्मरण में है। प्रभु को नहीं भूलें और परोपकार के कार्य करते रहें।

१३ अक्टूबर से १८ अक्टूबर पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का ९० वां जन्म दिन उत्सव प्रेम प्रकाश आश्रम, हरिद्वार में आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बंध में स्वामीजी ११ अक्टूबर हरिद्वार पधारे। चारों दिन स्वामीजी एवं अन्य संतों ने सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के गुणों का वर्णन किया। स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज हमारे मार्गदर्शक थे। जैसा उनका नाम था वैसे ही वे सभी को आनन्द देने वाले थे। उनका दर्शन करने से ही मन प्रसन्न हो जाता था। उन्होंने कई परोपकार के कार्य किये।

हरि भक्त हित करत है, सब का जगत् मंझार।
कह टेऊँ स्वार्थ बिना, सदा करे उपकार॥

प्रेमियो ! आप भी प्रभु से स्नेह सम्बंध रखें। यदि आप प्रभु को याद करेंगे तो परमात्मा सदैव आपकी सहायता करेगा। संत तुलसीदासजी के रोम रोम में राम था इसलिए उन्होंने सभी जीवों में सियाराम का दर्शन किया-

सियाराम मय सब जग जानी।
करऊं प्रनाम जोड़ जुग पानी॥

राम भक्त श्री तुलसीदासजी की स्वयं भगवान राम रक्षा करते थे। एक बार अर्द्ध रात्रि को चोर, भक्त तुलसीदासजी के यहां चोरी करने आये। चोरों ने देखा कि-श्री तुलसीदासजी की कुटिया के बाहर एक धनुषधारी जवान प्रहरी बन बैठा हैं। अतः चोर उस समय तो चले गये। परन्तु प्रातः भक्त तुलसीदासजी के पास आये और उन से कहा कि वे रात्रि को उनके यहां चोरी करने के लिए आये थे तो उनकी कुटिया के बाहर एक धनुषधारी तेजस्वी जवान प्रहरी बन बैठा था। हम उसका दर्शन कर लौट गये। आप कृपया कर बतायें कि वह प्रहरी कौन था? हम उनका दर्शन करना चाहते हैं। भक्त तुलसीदासजी रहस्य को समझ गये कि भगवान श्री राम ने स्वयं उसकी कुटिया की रक्षा करने के लिए प्रहरी का रूप धारण किया है। संत तुलसीदासजी

उन चोरों को अंदर भगवान श्री राम की मूर्ति के पास ले गये और कहा कि ये भगवान श्री राम ही प्रहरी का रूप धारण कर आये होंगे। भगवान श्री राम की मूर्ति का दर्शन कर चोरों की विचार धारा में परिवर्तन आ गया । उन्होंने भक्त तुलसीदासजी को प्रणाम कर उनसे राम नाम के मंत्र की दीक्षा ली । उन चोरों के जीवन में आश्चर्यजनक परिवर्तन आ गया । प्रेमियों ! आप भी परमात्मा का स्मरण करें तो प्रभु आपकी रक्षा करेंगे । आपके जीवन में भी अवश्य परिवर्तन आ जायेगा ।

पूज्य स्वामीजी अपने वचनों पर दृढ़ रहते थे । कभी कभी उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था तो डाक्टर उन्हें आराम करने की सलाह देते थे किन्तु वे अपने स्वास्थ्य का कोई भी विचार न कर निर्धारित कार्यक्रमों में भाग लेते थे । डाक्टर उन्हें बाहर जाने से रोकते थे तो वे उन्हें कहते थे कि प्रेमी कितना कष्ट उठाकर उत्साह के साथ सत्संग का कार्यक्रम रखते हैं, यदि मैं नहीं जाऊंगा तो वे हतोत्साहित हो जायेगे । पूज्य स्वामीजी वयोवृद्ध होते हुए भी दिन रात सफर करते रहते थे । प्रेमियो की प्यास पूरी करने व नाम का प्रचार करने के लिए उन्होंने अपने स्वास्थ्य की तनिक भी चिन्ता नहीं की । दूसरों को सुखी करने में ही उन्हें आनन्द का अनुभव होता था ।

संत कंवरराम नगर, जलगांव में २१ से २४ अक्टूबर तक संत कंवरराम साहब एवं संत हरिदासरामजी का पुण्य तिथि उत्सव मनाया गया। इसी उत्सव के सम्बंध में पूज्य स्वामीजी २२ अक्टूबर जलगांव पधारे। २२ अक्टूबर रात्रि को स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि अमर शहीद संत कंवरराम भक्तों के शिरोमणि थे। वे परोपकार व विनम्रता की मूर्ति थे। वे अपाहिजों की निष्काम भावना से सेवा करते थे। संत हरिदासरामजी भी भक्त कंवरराम साहबजी के अनन्य उपासक थे उन्होंने भी अपने गुरु भक्त कंवररामजी के गुणों को अपने जीवन में अपनाया। उन्होंने भी स्मरण व सेवा की ज्योति जगाई । उन्होंने वृद्धों व अनाथों की सेवा की । प्रेमियो ! आप भी इन महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर अपना अमूल्य मानव जीवन सफल बनाऐं ।

अनन्त श्री विभूषित परम पूज्य सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का जन्म शताब्दी समारोह ग्वालियर स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम पर पूज्य वयोवृद्ध संत स्वामी गणेशानन्दजी महाराज के सान्निध्य में २२ से २५

अक्टूबर तक परम पूज्य स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज की अध्यक्षता में बहुत ही धूम-धाम एवं उल्लासमय वातावरण में मनाया गया ।

२२ अक्टूबर परम आदरणीय स्वामीजी का आश्रम पहुंचते ही पुष्प वर्षा सहित भव्य स्वागत किया गया । पूज्य स्वामीजी के अतिरिक्त पूज्य स्वामी हरिदासरामजी महाराज, श्री हेमनदास शास्त्री (जयपुर), प्रो. दयाल 'आशा' (उल्हासनगर), भक्त ऊधवदास (पलवल), स्वामी देवप्रकाश, संत ज्ञानलाल एवं अन्य संत महात्मा भी प्रेम प्रकाश आश्रम पधारे ।

दोपहर ३-३० बजे प्रेम प्रकाश आश्रम से एक विशाल चल समारोह निकाला गया । चल समारोह को चिरस्मरणीय बनाने के लिये अनेक प्रयास किये गये थे । लगभग आधा किलोमीटर लम्बा चल समारोह नगर के प्रमुख मार्गों से होता हुआ रात्रि ८ बजे वापस आश्रम पहुंचा। इस मध्य अनेक स्थानों पर स्वागत द्वार बनाये गये थे जुलूस के स्वागत हेतु नगरवासियों द्वारा ठण्डे जल एवं प्रसाद आदि की व्यवस्था की गई थी । पूरे जुलूस पर जगह जगह पुष्प वर्षा की गई ।

शताब्दी समारोह के अन्तर्गत आश्रम के बाहर वाले मुख्य चौराहे का नामकरण स्वामी टेऊँराम चौक रखा गया था । तथा आश्रम के बाहर बनाये गये विशाल आकर्षक मण्डप को भी प्रेम प्रकाश नगर का नाम दिया गया । चल समारोह के स्वागतार्थ माधवगंज का पूरा बाजार झालरों से शोभायमान हो रहा था । ग्वालियर नगर की पूज्य सिन्धु हिन्दू जनरल पंचायत व अनेक सामाजिक संगठनों ने भी पूज्य पाद् स्वामीजी के जन्म शताब्दी समारोह पर अनेक आयोजन किये। समारोह में प्रतिदिन ५ हजार प्रेमी भाग लेते थे । स्थानीय समाचार पत्रों ने भी समारोह के समाचारों को प्रमुखता से सचित्र प्रकाशित किया। शताब्दी समारोह में जयपुर, उन्हासनगर, पूना, अहमदाबाद, आगरा, झांसी व निकटस्थ नगरों से भी श्रद्धालू पधारे थे ।

२ अक्टूबर प्रात:कालीन सत्संग सभा में पूज्य स्वामीजी ने परम पूज्य सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाचार्य श्री १००८ सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज एक युग महापुरुष थे । आप साक्षात् परोपकार, त्याग, नम्रता·

एवं करुणा की मूर्ति थे । स्वामीजी का व्यक्तित्व प्रतिभा सम्पन्न एवं प्रतिभाशाली था। दयालुता, राग द्वेष शून्यता, उदारता, गम्भीरता, मधुरता, स्वार्थहीनता, निर्मलता, क्षमा, सेवा आदि दैवीय गुण पूज्यपाद् स्वामी टेऊँरामजी महाराज में विद्यमान थे । वस्तुत: भगवान स्वयं ही सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज के रूप में सिन्ध में अवतार लेकर आये थे । स्वामीजी के दर्शन मात्र मे आनन्द की उपलब्धि होती थी । पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में जो भी जिज्ञासु जैसी मनोकामना लेकर आते थे वैसी पूर्ण होती थी ।

बड़ी प्रसन्नता की बात है जो ऐसे महापुरुष का शताब्दी समारोह, ग्वालियर में आयोजित किया गया है । हम ऐसे महापुरुष का जितना गुणगान करें उतना ही कम है। पूज्यपाद् सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने इस प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय का बीज बोकर उसे अंकुरित किया और पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने इस पौधे को गुरु भक्ति से सींचकर एक विशाल वृक्ष का रूप प्रदान किया । जिसका मधुर फल हम खा रहे हैं तथा उस वृक्ष की पावन छाया में बैठे हैं । गुरु महाराज आपकी रक्षा करें ।

तत्पश्चात् सत्संग सभा के बाद ही प्रात: ९ बजे जयपुर नगर से पधारे श्री हेमनदासजी शास्त्री द्वारा हवन कार्यक्रम सम्पन्न कराया गया। परम आदरणीय सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के सान्निध्य में ही हवन कार्यक्रम के बाद प्रेम प्रकाश ध्वजावन्दन सम्पन्न हुआ। दोनों ही कार्यक्रम जन्म शताब्दी समारोह का विशेष आकर्षण थे । सैकड़ों की संख्या में नर-नारी उपरोक्त विशेष कार्यक्रम में उपस्थित थे । परम आदरणीय स्वामीजी ने जय जयकार की उद्घोषों के बीच प्रेम प्रकाश ध्वजा को फहराया । ध्वजा के फहराते ही परम पूज्य स्वाजी के ऊपर पुष्प वर्षा आकाश से की गई, यह दृश्य बहुत ही मनमोहक था ।

२४ अक्टूबर १९८६ प्रात: कालीन सत्संग सभा के तुरन्त बाद ही परम आदरणीय स्वामीजी ने उपस्थित विशाल जन समूह को प्रेम प्रकाश मण्डल की तरफ से आयोजित विशाल आम भण्डारा कार्यक्रम में उपस्थित होकर प्रसाद ग्रहण करने का न्योता दिया । दोपहर १२ बजे जो भण्डारा शुरू हुआ तो सायं ४ बजे तक अबाध गति से चलता रहा ।

सायंकालीन सभा मण्डप को विशेष रूप से सजाया गया था। परम पूज्य स्वामीजी द्वारा प्रेम प्रकाश संप्रदायाचार्य परम पूज्य सद्‌गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के १०० वें जन्म महोत्सव के उपलक्ष्य में १००० दीपों को प्रज्वलित किया गया। साथ ही स्वामी सर्वान्द सेवा समिति द्वारा विशेष रूप से तैयार किये गये १० किलो वज़न के केवल मावे से निर्मित केक को उल्हासनगर से पधारे डा. दयाल 'आशा'की अगवानी में परम आदरणीय स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज द्वारा काटा गया। इस केक को उसी समय उपस्थित जनसमूह में प्रसाद के तौर पर वितरित किया गया। यह विशेष ध्यान रखा गया कि इस विशेष प्रसाद से कोई भी वंचित नहीं रहे।

२५ अक्टूबर १९८६ प्रातः कालीन सभा में परम श्रद्धेय स्वामीजी ने कहा कि सत्गुरु महाराजजी ने टंडे आदम नगर के बाहर बालू के टीलों पर जंगल में कठिन तपस्या की। उनकी भक्ति साधना के कारण जंगल में मंगल हो गया। हज़ारों प्रेमी उनका दर्शन करने आते थे। ऐसे महान संत के वचनों में विश्वास धारण कर गुरु मंत्र की साधना करें ते आपका कल्याण होगा। जिनका मन निर्मल होता है वे प्रभु व गुरु की कृपा शीघ्र प्राप्त कर सकते हैं।

बालक सुखराम पूज्य माता की आज्ञा के अनुसार संत प्रेमदासजी का शिष्य बनने के लिए उनके पास गया। संत प्रेमदास ने उसे 'दादूराम दादूराम' का मंत्र दिया। संत ने उससे कहा कि यह पानी का घड़ा बारह वर्ष से मैं भरता आ रहा हूं। तुम भी आज से बारह वर्ष तक यह घड़ा नदी से भर कर आना तब तुम्हारी साधना सफल होगी। उसी दिन से वह बालक सुखराम श्रद्धा व प्रेम से "दादूराम, दादूराम" का मंत्र जपने लगा। दूसरे दिन गुरु की आज्ञा सुनकर वह बालक घड़ा उठाकर नदी के किनारे आया। घड़ा जलसे भरते समय टूट गया। बालक सुखराम रोने लगा और सोचने लगा कि गुरुजी क्या कहेंगे कि प्रथम दिन ही घड़ा तोड़ दिया? उसी समय सुखराम "दादूराम, दादूराम" का जाप करने लगा। बालक सुखराम की पुकार सुनकर संत दादू वहां प्रकट हुए। उन्होंने बालक को गले लगाया और टूटे घड़े को नया बनाकर अंतर्ध्यान हो गये। संत की कृपा से टूटा घड़ा

फिर जुड़ गया । बालक सुखराम ने सारी घटना गुरु को सुनाई । संत प्रेमदास यह घटना सुनकर आश्चर्य में पड़ गये । उहोंने सुखराम को गले लगाते कहा ''बेटा ! तुम धन्य हो जो एक ही दिन में तुम्हें संत दादूजी के दर्शन हो गये, मुझे चौबीस वर्ष में भी उनके दर्शन नहीं हुए हैं। प्रेमियो ! आप भी परमात्मा एवं सत्गुरु को श्रद्धा एवं प्रेम से याद करें तो आपको उनके दर्शन अवश्य होंगे ।

स्वामीजी ने नवयुवकों को विशेष रूप से आव्हान किया कि मांस मदिरा का सेवन त्यागकर शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण करें । इसी आव्हान के दौरान सभा मण्डप में ही पांच नवयुवकों ने जो कि बचपन से ही मांस आदि का सेवन करते थे । उसी क्षण मांस त्यागने का संकल्प उपस्थित विशाल जन समूह के सामने लिया । पूज्य स्वामीजी ने सभी को आशीर्वाद देते हुए कहा कि कष्टों से मुक्ति का एक मात्र मार्ग भगवान की शरण है, भगवान में आस्था, श्रद्धा, विश्वास तथा उनकी उपासना से ही संसार के पीड़ित मानव जाति को मनः शांति मिल सकती है ।

पूज्य स्वामीजी ने शताब्दी समारोह के मुख्य कार्य कर्ताओं श्री मथुरादास डा तीर्थदास पंजवानी, अर्जनदास चांदवाणी, साधूराम नवलमल, शंकरलाल सबनानी, श्रीचन्द पंजवानी, रेवाचन्द पंजवानी, दयाराम कुकरेजा, हरिओम सहित, स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति के सभी कार्यकर्ताओं को शंताब्दी समारोह के सफलतापूर्वक आयोजन हेतु साधुवाद देते हुए अपनी प्रसन्नता व्यक्त की ।

अन्त में पूज्य स्वामीजी ने संत मण्डल सहित पूज्य गुरुवर से प्रार्थना कर पल्लव पाकर उत्सव की समाप्ति की ।

पूज्य स्वामी गणेशानन्दजी महाराज एवं अन्य संतों ने भी सत्गुरु महाराज को पुष्पांजलि अर्पित की । डा. दयाल 'आशा' ने इसी अवसर पर सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की महिमा गाते हुए उनके जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाये । अन्त में पूज्य स्वामी गणेशानन्द जी महाराज ने सभी का आभार व्यक्त किया ।

२५ अक्टूबर को सायं ७-३०बजे छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस से भोपाल पहुंचने पर पूज्य स्वामीजी का पुष्प वर्षा के साथ भव्य स्वागत किया

गया ।

२६ अक्टूबर रविवार को साधु वास्वाणी डिग्री कालेज, बैरागढ़ भोपाल, के पास, नवनिर्माणाधीन प्रेम प्रकाश आश्रम का शिलान्यास पूज्य स्वामीजी द्वारा दोपहर १२ बजे हज़ारों प्रेमियों की उपस्थिति में परम पूज्य सद्‌गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की जय जयकार की करतल ध्वनि के मध्य किया गया । इस अवसर पर हवन व ध्वजावन्दन कार्यक्रम भी सम्पन्न हुए ।

२७ अक्टूबर पूज्य सद्‌गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में अनेक कार्यक्रम आयोजित किये गये । इस दिन गरीब अनाथों को खाद्य-सामग्री, वस्त्र भेंट स्वरूप अन्य वस्तुए भी दीं गईं। प्रातः ९ से १०-३० बजे तक साधू वासवाणी कालेज में सत्संग वर्खा हुई । सायं ४ बजे से ६ बजे तक नवयुवक सभा में स्वामीजी के उपदेशामृत का पान नवयुवकों द्वारा किया गया ।

पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए बहिन विद्या एवं अन्य कार्यकर्ताओं को धन्यवाद देते हुए कहा कि आप लोग सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज के यश को चिरस्मरणीय बनाए रखने के लिये यहां प्रेम प्रकाश आश्रम की स्थापना कर रहे हैं, सत्गुरु महाराज की कृपा से आप का यश होगा । पूज्य स्वामीजी ने आश्रम के अध्यक्ष स्वामी गणेशदास महाराज को नमस्कार करते हुए कहा कि स्वामी गणेशदासजी मंडल के वयोवृद्ध संत हैं उनकी आज्ञा और आदेशों के अनरूप चलें ।

रात्रि को पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि श्रद्धा व प्रेम के साथ प्रभु की सेवा, भक्ति करें । यदि आप प्रभु के साथ स्नेह सम्बंध रखेंगे तो परमात्मा भी आपको प्यार करेगा । एक रानी एक संत के पास गई और उसने उनसे प्रार्थना की "महाराज ! मेरे पति मुझ से सदैव अप्रसन्न रहते हैं, मुझे कोई उपाय बतायें या कोई मंत्र लिखकर दें जिससे मेरा पति मुझसे प्यार करे और प्रसन्न रहे । संत ने अंदर कुटिया में जाकर एक कागज पर निम्न दोहा लिखा-

मंत्र तंत्र तुम ही सखी, भूल न करिये कोय ।
पति की सेवा कीजिये, आप ही वश में होय ।।

संत ने कागज रानी को देते हुए कहा कि यह बार बार पढ़कर तावीज़ में डालकर बांध दें, सब ठीक हो जायेगा । रानी संतको प्रणाम कर चली गई, रानी ने संत की आज्ञानुसार वह दोहा बार बार पढ़कर तावीज़ में डालकर बांध लिया । तत्पश्चात् रानी रातदिन पति की प्रेम व श्रद्धा से सेवा करने लगी । थोड़े ही दिनों में राजा रानी के वश में हो गया । एक दिन राजा ने रानी से पूछा कि बांह में तुमने यह तावीज़ क्यों बांधी है? तब रानी ने कहा कि आपको वश में करने के लिए संत से एक मंत्र लिखवाकर तावीज़ में डालकर बांध दिया है । राजा ने कहा मुझे भी उस संत के दर्शन कराओ । रानी राजा को उस संत के पास ले आई । राजा ने महात्मा को प्रणाम कर कहा कि जैसे आप ने रानी को मुझे वश में करने का मंत्र दिया है वैसे ही मुझे भी कोई मंत्र लिखकर दें जैसे मैं भी दूसरों को वश में कर सकूं । महात्मा ने कहा "राजन् : मैंने रानी को कोई मंत्र लिखकर नहीं दिया तुम वह कागज पढ़के देखो । राजा ने तावीज़ खोलकर उसमें पड़े कागज को देखा तो उपर्युक्त दोहा पढ़कर, महात्मा को नमस्कार किया । तत्पश्चात् वह लगन के साथ जनता की सेवा करने लगा। जनता उसे अधिक स्नेह व सम्मान देने लगी । प्रेमियो ! आप भी दीन दुखियों, पशुओं की सेवा करें, प्रभु की भक्ति करें तो प्रभु प्रसन्न होकर आपको गले लगाएगा ।

२७ अक्टूबर प्रातः ९ बजे साधु वासवाणी कालेज बैरागढ़ में सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का जन्म शताब्दी उत्सव मनाया गया । सर्वप्रथम कालेज बोर्ड के अध्यक्ष श्री थधाराम ज्ञानचन्दाणी ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत किया । मंत्री श्री मूलचन्द मनवाणी ने कहा कि आज हम यहां जिस महापुरुष स्वामी टेऊँरामजी महाराज का जन्म शताब्दी उत्सव मना रहे हैं । उनके धर्म पीठ के अधिकारी कर्मयोगी संत स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज हमारे कालेज में पधारे हैं, यह हमारा सौभाग्य है । कालेज के चार विद्यार्थियों ने सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के जीवन के सम्बंध में व्याख्यान दिये

पूज्य स्वामीजी ने कार्यकर्ताओं को धन्यवाद देते हुए कहा कि इस महाविद्यालय पर सिन्ध के महान संत साधु वासवाणीजी का नाम रखा

गया है, अत: विद्यालय के विद्यार्थियों व अध्यापकों को साधु वासवाणी के आदर्शों पर चलना चाहिए। विद्यार्थियों को चाहिए कि वे माता पिता एवं गुरुजनों की आज्ञा का पालन करते रहें। डा. दयाल 'आशा' ने सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए मांस भक्षण के परित्याग के लिए प्रार्थना की।

सायं ४ बजे नवयुवक सभा के शहाणी हाल में सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के जीवन कार्य पर व्याख्यान प्रतियोगियता का आयोजन किया गया। विभिन्न विद्यालयों के १५ विद्यार्थियों ने प्रतियोगिता में भाग लिया। पूज्य स्वामीजी ने आशीर्वाद देते हुए विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किये। डा. दयाल 'आशा' ने विद्यार्थियों को धन्यवाद देते हुए सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाये। श्री वासुदेव तुलसियाणी ने आभार प्रदर्शन किया।

प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य अनन्त श्री विभूषित पूज्य सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का जन्म शताब्दी समारोह ४ दिसम्बर गुरुवार से ८ दिसम्बर सोमवार १९८६ तक प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर-५ में आश्रम के सोलहवें स्थापना वार्षिक समारोह के साथ, धूमधाम के साथ मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता पूज्य स्वामीजी ने की।

समारोह का शुभारम्भ ३ दिसम्बर बुधवार को श्रीमद्भगवत् गीता एवं श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ के पाठारम्भ के साथ हुआ। ४ दिसम्बर १९८६ गुरुवार के प्रात: श्री प्रेमप्रकाशी ध्वजावन्दन का कार्यक्रम बड़े ही उमंग व श्रद्धापूर्ण वातावरण के सम्पन्न हुआ, इस अवसर पर प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय का सन्त मंण्डल व हजारों श्रद्धालु उपस्थिति थे।

४ दिसम्बर गुरुवार को प्रात: से ही सारे सिन्धुनगर क्षेत्र में सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की जय जयकार के स्वर गूंज रहे थे, सत्नाम साक्षी, जय श्रीकृष्ण के मन्त्रों का उच्चारण ध्वनि विस्तारक यन्त्रों द्वारा किया जा रहा था। उस दिन सम्पूर्ण सिन्धी हिन्दू समुदाय के मन में उल्लास की भावना थी।

चलसमारोह निकलने के पूर्व सम्पूर्ण वातावरण आध्यात्मिक रस से सराबोर था। दोहपर ठीक दो बजे सिन्धुनगर-१ बस टर्मिनल से सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में भव्य शाही

जुलूस पूज्य स्वामीजी के नेतृत्व में प्रारम्भ हुआ। शोभा यात्रा में भगवान श्री राधाकृष्ण, भगवान श्री राम, भगवान शंकर, व पूज्य सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज, पूज्य सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की मनमोहक झांकिया चल रहीं थी।

पूज्य सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज एक खुली जीप में शोभायमान थे, आपके साथ हज़ारों प्रेमी भगवन्नाम की धुनि लगाते चल रहे थे।

इस बार यह शाही जुलूस सिन्धुनगर के पांचों कैम्पों के मुख्य मार्गों से घूमता हुआ रात्रि ८ बजे वापस आश्रम पर पहुंचा। मार्ग में अनेक संस्थाओं व व्यवसायियों द्वारा इस चित्ताकर्षक शोभा यात्रा का स्वागत किया गया। आश्रम पर चल समारोह के वापस पहुंचते ही स्थानीय युवाओं द्वारा बहुत ही भव्य एवं मोहक आतिशबाज़ी छोड़कर पूज्य सद्गुरुदेव भगवान व प्रेमियों का हार्दिक अभिनन्दन किया गया। पूज्य सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज द्वारा प्रार्थना कर पांच दिवसीय शताब्दी समारोह का विधिवत् शुभारम्भ किया गया।

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी आश्रम के अंदर विशाल प्रांगण में दो भव्य झांकियां प्रदर्शित की गयी थी। श्री नदंलाल बख़त्याणी, कुर्ला कपलेश्वर महादेव मण्डल, बम्बई द्वारा प्रदर्शित झांकी में सिन्धी समाज के साथ-साथ सम्पूर्ण भारत वर्ष के श्रद्धेय सन्त एवं महापुरुषों, देवी देवताओं के विशाल चित्रों को सजा कर रखा गया था।

स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, ग्वालियर द्वारा सिन्धुनगर मेले में प्रथम बार एक झांकी प्रदर्शित की गयी थी, एक अत्यन्त मोहक (अस्थायी) उद्यान का निर्माण कर प्रात: स्मरणीय पूज्यपाद् श्री १००८ सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की मूर्ति प्रदर्शित की गई थी। इस झांकी की समस्त साज सज्जा समिति के उत्साही कार्यकर्ताओं के द्वारा स्वयं की गयी थी। इस झांकी की सन्त-समाज सहित प्रेमियों ने मुक्तकण्ठ से सराहना की।

इस महोत्सव में पधारने वाले सन्त-महात्माओं विद्वानों में से प्रमुख थे, पूज्य संत शिरोमणि स्वामी धर्मदासजी महाराज, स्वामी स्वयंप्रकाश, पूज्य स्वामी हरिदासरामजी महाराज, स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज, स्वामी

रामकृष्णजी महाराज, सन्त वेदप्रकाशजी, सन्त प्रहलाद प्रकाशजी, सन्त अनन्तप्रकाशजी, सन्त अशोकलालजी, सन्त दयाप्रकाशजी, व राजस्थान उच्च न्यायलय के न्यायाधीश श्री इन्द्रकुमार ईसराणी तथा अनके भक्त गायक मण्डलियों ने अपनी अमृतमयी वाणी से गुरु महाराज व भगवान के नाम का स्मरण करवाया।

७ दिसम्बर को प्रातः ११ बजे सिन्धुनगर के समस्त आश्रमों, मठों के महन्त-मण्डलेश्वर, सन्तों का एक सम्मेलन सम्पन्न हुआ, जिसमें उपस्थित सभी पूज्य सन्तों ने प्रेमियो को पूज्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के बताये हुए सद्मार्ग पर चलने का आव्हान किया।

८ दिसम्बर प्रातः को पूज्य स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का यश न केवल भारत में किन्तु विदेशों में भी फैला हुआ है।

भक्ति करे पाताल में, प्रघट होय आकाश।
रजब तीनों लोक में, छिपे न हरि का दास॥

सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने भी सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के सिद्धांतों एवं शिक्षाओं का देश विदेश में प्रचार कर प्रेमियों को नाम का संदेश दिया। प्रेमियो ! आप भी गुरु मंत्र की खूब साधना करें। अपना एक एक श्वास स्मरण में सफल करें। जो मनुष्य नाम स्मरण करता है, वह सभी प्राणियों को प्यार करता है, वह मन वचन कर्म से कभी भी हिंसा नहीं करता। वह तो यत्र तत्र सर्वत्र दया व प्रेम के दीपक जलाता रहता है। संत ज्ञानदास, एवं संत माणिकदास केदार द्वीप में राम नाम का प्रचार करने गये। वहां के दोनों राजा पदम्‌सिंह एवं धरियाजंगमल देवी माता के मंदिर में पशुओं की बलि चढ़ाते थे। दोनों संतों ने वहां बलि चढ़ाने के विरुद्ध प्रचार करते हुए कहा कि ये पशु पक्षी परमात्मा की मूक संतान हैं, उन्हें देवी माता के मंदिर में बलि मत चढ़ाओ, देवी माता आपके कुकर्मों से अत्यन्त अप्रसन्न होगी। जीव दया की ज्योति जगाएं और देवी माता की स्तुति गाएं। दोनों राजा, संतों के बलि विरोधी प्रचार के कारण उन पर क्रोधित हुए। उन्होंने सिपाहियों को आदेश दिया कि दोनों संतों को मौत के घाट उतारा जाये। शासकीय आदेश के अनुसार सिपाहियों

ने दोनों संतों को मारने का प्रयास किया किन्तु विफल गये । संतों का बाल भी बांका न कर सके । यह देखकर दोनों विस्मय में पड़ गये । फिर प्रधान मंत्री को आदेश दिया कि विभिन्न शस्त्रों द्वारा संतों का वध किया जाय । प्रधान मंत्री ने सिपाहियों को लेकर उन संतों को पुनः मारने का प्रयास किया किन्तु संतों ने अपने यौगिक बल से अपनी देह को परिवर्तित कर दिया, कोई भी उन्हें मार नहीं सका। अचानक सभी सिपाहियों के पेट में इतनी तो जलन होने लगी कि वे व्यथित होकर दोनों संतों की शरण में आये और प्रार्थना की कि उनका दर्द दूर करें । संतो ने उन्हें कहा कि राम नाम का उच्चारण करें तो सभी ठीक हो जायेंगे । सभी सैनिकों एवं सेनापति ने राम नाम की धूम मचा दी और उनकी पीड़ा दूर हो गई । राम नाम का इतना प्रभाव देखकर सैनिकों एवं राजाओं के मन में परिवर्तन आ गया। उन्होंने बलि चढ़ाने पर प्रतिबंध लगा दिया । सारा द्वीप राम नाम से गूंज उठा । संत जहां भी जाते हैं वे राम नाम व प्रेम दया का प्रचार करते हैं । प्रेमियो ! आप भी अपने जीवन में स्मरण, स्नेह व दया की ज्योति जगाकर मानव जीवन सफल करें ।

समापन समारोह के अन्त में पूज्य स्वामीजी ने देश की अखण्डता, एकता में पूर्ण विश्वास रखते हुए प्रेमियो को देश की अखण्डता के लिए किसी भी प्रकार की कुर्बानी देने के लिये तत्पर रहने का आग्रह किया । दहेज व तीज त्यौहारों पर लेन देन के प्रदर्शन को भी रोकने की मार्मिक अपील स्वामीजी द्वारा प्रेमियों को की गयी । जुआ, मांस, शराब इत्यादि दुर्व्यसनों से दूर रहने के लिये भी प्रेमियों को कहा । अन्त में स्वामीजी ने दीन दुखियों की सेवा करते हुए भगवन्नाम का स्मरण कर मानव जीवन को सफल बनाने के लिये प्रेमियों से अनुरोध किया ।

१२ दिसम्बर स्वामीजी अहमदाबाद पधारे । वहां संत प्रभाराम साहब के पुण्य तिथि उत्सव के सम्बंध में उन्होंने संत प्रभाराम कालोनी में तीन दिन सत्संग प्रवचन करते हुए संत प्रभारामजी के गुणों का वर्णन किया । २१-२२ दिसम्बर उन्होंने सिद्धपुर में अमृत वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की ।

२६ दिसम्बर स्वामीजी पिम्परी पधारे । वहां उन्होंने जशन हाल में अखिल भारतीय सिन्धी समाज सम्मेलन का उद्घाटन करे हुए कहा कि समाजिक बुराइयों को दूर करने का पूर्ण प्रयास करें । आजकल दहेज व तलाक की समस्या सुरसा की भांति मुंह खोलकर खड़ी हुई है । आज सामाजिक क्रांति की अत्यन्त आवश्यकता है । अत: आपसे अनुरोध है कि आपसी मतभेद भुलाकर समाज का उत्थान करें । दयाल 'आशा' ने भी दहेज के विरुद्ध हृदय स्पर्शी गीत गाकर आव्हान किया कि दहेज प्रथा के विरुद्ध आन्दोलन चलायें । श्री नानकराम ईसराणी ने पूज्य स्वामीजी का आभार माना ।

२७-२८ दिसम्बर स्वामीजी ने प्रेम प्रकाश मण्डली अहमदनगर में सत्संग प्रवचन किये । ३० दिसम्बर सायं उन्होंने साधु वासवाणी बाग सिन्धुनगर में प्रवचन करते हुए प्रेम मण्डल के सेवकों को धन्यवाद दिया जो प्रतिदिन साधु वासवाणी बाग में सत्संग की ज्योति जगाते रहते हैं ।

पूज्य स्वामीजी ने कई प्रेमियो की इच्छाएं पूर्ण की । मुलुन्द कालोनी बम्बई में सेवाराम भम्भाणी रहते हैं, उसे पुत्र संतान नहीं थी । वह स्वामीजी का अनन्य भक्त है, एक बार मुलुन्द कालोनी में स्वामीजी का कार्यक्रम था । स्वामीजी सत्संग प्रवचन कर रहे थे तो श्री जीवणदास ने उन्हें प्रार्थना की कि सेवाराम भम्भाणी को पुत्र सन्तान हो, आप इसके लिए प्रार्थना करें, स्वामीजी ने उसी समय प्रभु से प्रार्थना की, एक वर्ष के पश्चात् सेवाराम को पुत्र संतान हुई । सुन्दरदास नानवाणी जो हांगकांग में रहते हैं, उन्हें भी पुत्र संतान नहीं थी । जब पूज्य स्वामीजी हांगकांग उसके घर में पधारे, तब उसकी माता ने स्वामीजी से पुत्र संतान के लिए प्रार्थना की । स्वामीजी ने उसे जल पढ़कर दिया और फल भी दिया और कहा कि इस फल और जल का सेवन सुन्दर और उसकी पत्नि करें । एक वर्ष के पश्चात् प्रभु की कृपा एवं स्वामीजी के आशीर्वाद से सुन्दरदास के पुत्र संतान हुई ।

साधु वास्वाणी नगर थाना में बेक्करी पंचायत की ओर से २ जनवरी १९८७ से सत्संग यज्ञ का आयोजन किया गया । पूज्य स्वामीजी ने तीन दिन अमृत वचनों की वर्खा करते हुए कहा-

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप ।
जाके हृदे साँच है, तांके हृदे आप ।।

प्रेमियो ! आप व्यवहार व्यवसाय में सत्य बोलें । सत्य बोलना भी एक भक्ति है, तपस्या है, झूठ बोलना पाप है । जहां सत्य है वहां स्वयं परमात्मा है । सत्य बोलने से आत्मिक शक्ति बढ़ती है, मानसिक शान्ति प्राप्त होगी और प्रभु की कृपा भी होगी । झूठ बोलने से आपको कितना भी आर्थिक लाभ हो फिर भी झूठ नहीं बोलें । सभी एकता के सूत्र में बंधकर जाति का उत्थान करें । बेकरी पंचायत के अध्यक्ष लक्ष्मणदास पंजवाणी ने स्वामीजी का आभार प्रदर्शन किया।

भाटापारा में माता समुझबाई के पुण्यतिथि उत्सव के सम्बंध में स्वामीजी १२ जनवरी भाटापारा पधारे । वहां उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन करते हुए माता समुझबाई के गुणों का वर्णन किया । १५-१६ जनवरी स्वामीजी ने कामटी में सत्संग प्रवचन किये । १९-२० जनवरी उन्होंने नागपुर में अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की ।

२५ जनवरी स्वामीजी मुलुन्द कालोनी, बम्बई पधारे । वहां उन्होंने यूथ सर्कल के उत्सव में युवा पीढ़ी को आशीर्वाद देते कहा कि आप ऐसे कार्य करें जिससे सिन्धी जाति का यश हो । युवा पीढ़ी दहेज एवं अन्य सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए तत्पर रहें ।

२६ जनवरी प्रात: स्वामी टेऊँराम आश्रम सिन्धुनगर-५ में पूज्य स्वामीजी ने राष्ट्रीय ध्वज फहराते हुए कहा कि आज हमें राष्ट्रीय एकता का संकल्प करते हुए । देश के नवनिर्माण के लिए जुट जाना चाहिए । झुलेलाल लोकल मंडली ने हीराघाट सिन्धुनगर-३ में वार्षिक उत्सव का आयोजन किया । स्वामीजी ने इस उत्सव में आयोजकों को धन्यवाद देते हुए कहा कि आप प्रतिदिन धंधा व्यवसाय करते लोकल ट्रेन में नाम कीर्तन करते, दीन दुखियों की सेवा करते हैं, आप का जीवन सफल है । प्रभु आपकी सहायता करेगा । सायं ५ बजे स्वामी विवेकानन्द हिन्दी विद्यालय का वार्षिक उत्सव स्वामीजी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। अशोक लालवाणी एवं ओम लालवाणी ने उनका स्वागत सत्कार किया। उन्होंने विद्यार्थियों एवं अध्यापकों को साधुवाद देते हुए कहा कि माता-पिता एवं गरुजनों की आज्ञा का पालन करें, प्रति दिन कोई न कोई सेवा

का कार्य करें। देश भक्तों ने अपना बलिदान देकर जो स्वतंत्रता हमें दिलाई है उसकी सुरक्षा करें।

१ फरवरी रात्रि पूज्य स्वामीजी ने बड़ौदा के लिए प्रस्थान किया। वहां श्री किशोरीलाल एवं उसकी पत्नी हासीबाई की पुण्यतिथि के सम्बंध में उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन किये। पूज्य स्वामी जी ने कहा कि किशोरीलाल घर गृहस्थ में रहते भगवद् भजन एवं परोपकार के कार्य करता था। आप भी नाम स्मरण करें व दीन दुखियों की सेवा करें। नेणूमल पूर्णचन्द एवं महादेव को धन्यवाद है कि वे पूज्य पिता एवं माताजी की ज्योति जगाते आ रहे हैं।

पूज्य स्वामी शिवेंद्रपुरीजी महाराज ने २ फरवरी से ८ फरवरी तक सिन्धुनगर-५ में वैदिक होमात्मक रुद्र यज्ञ का आयोजन किया। ६ फरवरी प्रातः स्वामीजी ने इसी उत्सव में प्रवचन करते हुए कहा कि हवन यज्ञ द्वारा देवतागण प्रसन्न होते हैं। देवताओं के प्रसन्न होने से अन्न, धन्न व सुख सम्पति की प्राप्ति होती है। वायु भी शुद्ध होता है और वर्षा भी अच्छी होती है, आत्मिक उन्नति के लिए भी यज्ञ लाभकारी हैं। स्वामी शिवेंद्रपुरीजी को यज्ञ आयोजन के लिए साधुवाद है। इसी अवसर पर स्वामी शिवेंद्रपुरीजी ने कहा कि पूज्य स्वामीजी की प्रेरणा एवं सहयोग से ही मैंने इस यज्ञ का आयोजन किया है। आशा है कि भविष्य में भी उनका सहयोग व आशार्वाद मिलता रहेगा।

१२ फरवरी सायं पूज्य स्वामीजी ने दयावन्ती टीकमदास हाल, खार (बम्बई) में सत्संग प्रवचन किया। प्रेम प्रकाश मण्डली पिम्परी की ओर से १४-१५ फरवरी सतगुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का जन्म शताब्दी उत्सव आयोजित किया गया। इसी उत्सव के सम्बंध में स्वामीजी १४ फरवरी दोपहर को पिम्परी कालोनी पधारे। सायं ४ बजे मंदिर से स्वामीजी के नेतृत्व में सतगुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज एवं सतगुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की झांकियों सहित एक भव्य जुलूस निकाला गया। रात्रि को स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए माता सती एवं अन्य सेवकों को धन्यवाद देते हुए कहा कि आपने बड़े उत्साह के साथ सतगुरु महाराजजी का जन्म शताब्दी उत्सव मनाया है। गुरु महाराज आपके शुभ मंगल कार्यो पर सदैव आशीर्वाद करेंगे। मानव जीवन

अमूल्य जीवन है, नाम स्मरण एवं परोपकार के कार्यों में सफल करें। किसी न किसी संत महात्मा की शरण लें । संत महात्मा न केवल परमार्थ के लिए किन्तु व्यवहार में भी हमारा मार्गदर्शन करते हैं ।

एक सज्जन अपने तीन बेटों को एक महात्मा के पास ले आया और उन से विनती की कि आप इन तीनों का भविष्य बतायें । महात्मा ने तीनों बेटों को एक एक केला खाने के लिए दिया । उनमें से एक ने केला खाकर उसका छिलका फेंक दिया । दूसरे ने केला खाकर उसका छिलका कचरे की टोकरी में फेंका । तीसरे ने केला खाकर, उसका छिलका बाहर जाकर गाय को खिला दिया । महात्मा ने कहा कि जिसको छिलके की कदर नहीं वह जीवन का क्या मूल्य करेगा? जिसने गाय को केले का छिलका खिलाया वह भविष्य में परोपकारी बनेगा, जिसने छिलका ऐसे फेंक दिया वह मूढ़ होगा । जिसने केले का छिलका टोकरी में डाला वह केवल अपना भला करेगा । महात्मा ने उस सज्जन के पुत्रों के व्यवहार से पता लगा कि उनका भविष्य कैसा है । संत महात्मा हमारा मार्ग दर्शन करते हैं । उनकी शरण लेनी चाहिए । सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने भी हज़ारों प्रेमियों का मार्ग दर्शन किया । आज उनकी वाणी भी हमारा मार्गदर्शन करती है। पूज्य सत्गुरु महाराजजी के पास जो भी भेटाएं आती थीं वे परोपकार के कार्य में खर्च कर देते थे । प्रेमियो ! आप भी अपनी माया को परोपकार के कार्यों में सफल करें ।

एक बार एक धनवान स्वामी रामकृष्ण परमहंसजी के पास पांच हजार रुपये की थैली लेकर आया और उनके पावन श्रीचरणों में भेंट की। स्वामी रामकृणजी ने कहा "बेटा ! अब पैसों की आवश्यकता नहीं। धनवान ने कहा "स्वामीजी ! कृपया इन पैसों को आप किसी बैंक में जमा कर दें या किसी और के पास धरोहर रखें । जब इसकी आवश्यकता हो तब ले लीजियेगा ।" स्वामीजी ने कहा 'बेटा यह माया हमारे पास दुर्गन्ध फैलाएगी, दुर्गन्ध से दूर रहना चाहिए । दुर्गन्ध से स्वास्थ्य बिगड़ता है । संतों को माया अपने पास नहीं रखनी चाहिए और गृहस्थों को माया परोपकार के कार्यों में सफल करनी चाहिए, नहीं तो माया से दुर्गन्ध उत्पन्न होगी । यदि संत होकर माया में फंस

जाये तो फिर वह संत कैसा?

सिन्ध में एक दरवेश के पास जो कुछ भी आता था तो उसी दिन ही वह वितरित कर देता था, कल के लिए कुछ भी नहीं रखता था। यदि घड़े में पानी होता था तो वह भी खाली कर देता था । वह दरवेश कहता था कि खुदा को जो कुछ कल देना होगा, वह अवश्य ही देगा । प्रेमियो ! इन दृष्टांतों से प्रेरणा लेनी चाहिए कि जगत् में अनासक्त भाव से रहें।

स्वामी चन्दनप्रकाशजी महाराज का पुण्य तिथि उत्सव प्रेम प्रकाश आश्रम पुणे में १६ फरवरी से १८ फरवरी तक मनाया गया । पूज्य स्वामीजी ने वहां तीन दिन अमृत वचनों की वर्खा करते हुए स्वामी चन्दनप्रकाशजी महाराज के गुणों का वर्णन किया । पूज्य स्वामीजी ने कहा कि प्रभु एवं सत्गुरु को सदैव याद करें। स्मरण में बड़ी शक्ति है । कूंज अपने अंडे हिमालय पर्वत पर रखकर उड़ जाती है । उन अण्डों पर बर्फ जम जाती है । कूंज अपने अण्डों को याद करती रहती है । उनकी याद करने से अण्डे बर्फ में सुरक्षित रहते हैं । गर्मी के मौसम में जब बर्फ पिघलती है, तब कूंज के अण्डे बाहर निकल आते हैं, और कूंज वहां पहुंच जाती है और अपने अण्डों की देखरेख करती है। कूंज की स्मृति उसके अण्डों को नष्ट नहीं होने देती अर्थात् जीवित रखती है। उसी प्रकार प्रभु और सत्गुरु की स्मृति भी आपको नया जीवन प्रदान करेगी, आप कालचक्र से मुक्त हो जायेंगे । संत अनन्तप्रकाश ने पूज्य स्वामीजी का आभार प्रदर्शन किया ।

२२ फरवरी दोहपर को पूज्य स्वामीजी, श्री एच. के. चैनाणी वृद्ध आश्रम मुलुन्द (बम्बई) पधारे । वहां न्यायाधीश श्री चैनाणी एवं श्री पेसूमल चांडवाणी की पुण्य तिथि मनाई गई । बहन ठाकुरी लखाणी ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत सत्कार किया । बहन कमला हीरानन्द ने कहा कि आज हमारे सौभाग्य हैं कि पूज्य स्वामीजी इस वृद्धाश्रम में पधारे हैं । स्वामीजी ने वृद्धाश्रम के संचालकों को साधुवाद देते हुए श्री पेसूमल चांडवाणी एवं न्यायाधीश हशमतराय चैनाणी को श्रद्धांजलि अर्पित की । पूज्य स्वामीजी ने वृद्धों को सम्बोधित करते हुए कहा कि अब आपके जीवन का संध्याकाल आ गया है इसलिये अपना

शेष समय नाम स्मरण में सफल करें।

सायं ५ बजे कुर्ला कपलेश्वर महादेव मंडल की ओर से शिवरात्रि के उत्सव के सम्बंध में पूज्य स्वामीजी के नेतृत्व में जुलूस निकाला गया। पूज्य स्वामीजी ने तीन दिन कुर्ला (बम्बई) में सत्संग प्रवचन करते हुए भगवान शंकर की महिमा गाई और इस आयोजन के लिए श्री नंदलाल बख्तयाणी को धन्यवाद दिया।

२४ फरवरी सायं पूज्य स्वामीजी ने खार (बम्बई) में श्री भीमनदास भोजराम के घर उसके सुपुत्र के विवाह के उपलक्ष्य में सत्संग प्रवचन किया। श्री मूलचन्द भोजराम ने उनका हृदय से स्वागत सत्कार किया।

२५ फरवरी स्वामीजी ने सिन्धुनगर-३ में भगवान लक्ष्मीनारायण मंदिर का उद्घाटन किया। श्री गोपीचन्द बहराणी, सुन्दर डंगवाणी एवं माता रामदेवी ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत सत्कार किया। पूज्य स्वामीजी ने कहा कि मंदिर पुण्य को प्रदान करने वाले स्थान हैं। कई लोग यहां आकर नाम स्मरण करेंगे, भगवान का दर्शन करेंगे। मानव जीवन की सार्थकता नाम स्मरण में है। प्रभु का सदैव स्मरण करते रहें। कमूमल को धन्यवाद है जिसने इस मंदिर का निर्माण करवाया है। दोपहर नेताजी हाईस्कूल सिन्धुनगर- ४ में सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज के जन्मशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में विद्यार्थियों के व्याख्यान की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। दोपहर १२ बजे स्वामीजी वहां पधारे। उपप्राचार्य श्री ज्ञानचन्द शहदादपुरी ने उनका स्वागत सम्मान किया। १२ विद्यार्थियों ने पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के जीवन के सम्बंध में व्याख्यान दिये। स्वामीजी ने विद्यार्थियों को पुरस्कार देते हुए कहाकि मां-बांप एवं गुरुजनों की आज्ञा का पालन करते हुए उनकी सेवा शुश्रुषा करें। उनकी आशीर्वाद से आपका भविष्य उज्जवल होगा। संत ब्रह्मदास, डा. दयाल 'आशा' एवं श्रीचन्द साबलाणी ने भी पुष्पांजलि अर्पित की। अन्त में श्री राम आइलाणी ने आभार प्रदर्शन किया।

सायं ६ बजे आश्रम में संत रुघूरामजी की पुण्यतिथि मनाई गई। स्वामीजी ने संत रुघूरामजी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि

वे सद्गृहस्थी होते हुए भी दिन रात स्मरण व ईश्वर चिन्तन करते रहते थे। वे सादगी की मूर्ति थे। वे बड़े विद्वान व ईश्वर भक्त के साथ साथ देशभक्त भी थे। संत देवप्रकाश, डा. दयाल 'आशा' एवं जीवणदास आहूजा ने ऋषि रुघूरामजी के गुणों का वर्णन किया।

रात्रि दस बजे स्वामीजी ने संत हरिचूराम धाम सिन्धुनगर-५ में संत डेवनराम की पुण्य तिथि उत्सव के सम्बंध में सत्संग प्रवचन किया संत रुपाराम साहब ने उनका आभार व्यक्त किया।

२७ फरवरी स्वामीजी अहमदाबाद पधारे। प्रात: ८ बजे उन्होंने आदर्श हाई स्कूल कुबेर नगर में स्वामी टेऊँराम पुस्तकालय का उद्‌घाटन किया। आदर्श विद्या मंडल के प्रधान डा. छाडोमल हीरानंदाणी ने स्वामीजी का स्वागत सत्कार किया। इसी अवसर पर स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि पुस्तकों के अभ्यास से ज्ञान में वृद्धि होती है। पुस्तक सच्चे साथी हैं। ऐसे पुस्तकों का अभ्यास करना चाहिए जिनके पढ़ने से ज्ञान में वृद्धि और चरित्र का निर्माण हो। मुझे आशा है कि इस पुस्तकालय से कई विद्यार्थी लाभान्वित होंगे। प्राचार्य भगवानदास आसनाणी ने स्वामीजी का स्वागत किया।

२८ फरवरी स्वामीजी कोटा (राजस्थान) पधारे। प्रेम प्रकाश आश्रम कोटा की ओर से पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का जन्म शताब्दी उत्सव स्वामीजी की अध्यक्षता में धूमधाम से मनाया गया। दोहपर झूलेलाल मंदिर सिन्धी कालोनी से स्वामीजी के नेतृत्व में भव्य जुलूस निकाला गया। हजारों प्रेमी राम नाम व श्री सत्नाम साक्षी की धुनि लगाते चले। जुलूस नगर के मुख्य मार्गों से होता हुआ प्रेम प्रकाश आश्रम पहुंचा। स्वामीजी ने दो दिन सत्संग प्रवचन करते हुए सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला और प्रेमियों से अनुरोध किया कि मांस भक्षण का परित्याग करें। प्रतिदिन प्रभु को याद करें, अपनी माया सत्कर्मों में सफल करें। सत्गुरु महाराज की शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारें।

आकशवाणी, बम्बई से पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के जन्मशताब्दी उपलक्ष्य में कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की महिमा गाते हुए कहा कि वे

एक महान विभूति थे। उन्होंने सिन्ध में प्रेम प्रकाश मण्डल की स्थापना कर हज़ारों लोगों को अज्ञान की नींद से जागृत किया। उन्होंने सिन्धी एवं हिन्दी भाषा में अमूल्य वाणी की रचना की। जो आज भी हमारा मार्गदर्शन करती है। आज देश विदेश में उनका यश फैला हुआ है। सत्गुरु महाराजजी ने प्रेम व दया की ज्योति जगाई। हम भी अपने हृदय में वह ज्योति प्रज्वलित करें।

वडाला सिन्धी ब्रादर मंडल ने वडाला, बम्बई में ४ मार्च से १५ मार्च तक स्वामीजी के सत्संग यज्ञ का आयोजन किया। वहां स्वामीजी चांडूमल नामोमल के घर में ठहरे। स्वामीजी ने ग्यारह दिन वहां अमृत वचनों की वर्खा की। एक दिन उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि प्रेमियो ! यदि आप संसार सागर पार करना चाहते हैं तो नाम की नौका में चढ़े, नहीं तो भव सागर में डूब जायेंगे।

बेड़ा हरि का नाम है, चढ़त न जे नर तांहि।
कहे टेऊँ से मूढ़ नर डूबत भव जल मांहि॥

श्वास श्वास से नाम स्मरण करें। जैसे जैसे आप नाम स्मरण करेंगे वैसे वैसे आपका मन निर्मल होता जायेगा। राम नाम के उच्चारण से अपवित्र जीवन भी पवित्र हो जाता है। नदी किनारे एक गांव बसा हुआ था। गांव वाले पीने के लिए पानी उसी नदी से भरकर आते थे। एक बार एक ब्राह्मण कन्या पानी भरने के लिए वहां गई। उसका बर्तन बड़ा था, इसलिए पानी भरने के पश्चात् वह बर्तन उठा नहीं पा रही थी। वहां नदी के किनारे एक हरिजन खड़ा था। ब्राह्मण कन्या ने उस हरिजन को सम्बोधित करते हुए कहा कि मुझे यह बर्तन उठाने में मदद करो। उसने कहा "तुम मुझे नहीं पहचानतीं मैं अछूत हूं, अपवित्र हूं, तुम ब्राह्मण कन्या हो। यह बर्तन तुम मुझ से कैसे उठाने के लिए कर रही हो? तब ब्राह्मण कन्या ने कहा कि मैं तुम्हें पवित्र बनाकर ही बर्तन उठाने के लिए कह रही हूं। तुम तीन बार 'श्रीराम' का उच्चारण करो तो तुम पवित्र हो जाओगे। उस अछूत ने तीन बार राम नाम का उच्चारण कर वह बर्तन उठाकर ब्राह्मण कन्या के सिर पर रखा। वह कन्या जब घर आई तब उसके पिताजी ने पूछा कि आज तुम्हारे साथ कोई सहेली भी पानी भरने नहीं चली,

फिर किसने यह पानी से भरा बर्तन तुम्हारे सिर पर रखा? कन्या बोली ''पिताजी ! नदी किनारे एक हरिजन खड़ा था, मैंने उससे तीन बार राम नाम उच्चारण कराकर यह बर्तन सिर पर रखवाया । यह सुनकर ब्राह्मण ने कहा, ''बेटी ! राम नाम का एक बार उच्चारण करने से भी अपवित्र जीव पवित्र बन जाता है । तुमने प्रभु को तीन बार पुकारने के लिए कह दिया । यह सुनकर कन्या ने अनुभव किया कि राम के नाम का एक बार भी यदि श्रद्धा व प्रेम से उच्चारण किया जाय तो तन मन शुद्ध हो जाता है ।

प्रेमियों ! आप कहीं भी हों, कैसी भी स्थिति में हों राम का नाम जपें । सिन्ध में ऐसे कितने ही संत हुए जो विद्वान नहीं थे, उन्होंने शास्त्रों का अध्ययन नहीं किया था, किन्तु प्रेम से राम नाम जपते जपते उनकी जिव्हा में सिद्धि आ गई । यह शक्ति राम नाम की थी।

अजामिल पापी था, उसने अंतकाल में अपने बेटे नारायण को बार बार पुकारा । नारायण, नारायण पुकारते प्राण चले गये और उसका उद्धार हो गया । अजामिल जैसे दुष्ट को प्रभु का नाम उच्चारण करने के कारण मोक्ष गति प्राप्त हुई । प्रेमियो ! आप भी किसी न किसी रूप में प्रभु को पुकारते रहें तो आपका भी मोक्ष हो जायेगा ।

प्रेम प्रकाश मंदिर गांधीनगर कोल्हापुर का ५ वां वार्षिक उत्सव १९ मार्च से २२ मार्च तक आयोजित किया गया, साथ साथ पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का जन्म शताब्दी उत्सव भी मनाया गया। इसी उत्सव के सम्बंध में पूज्य स्वामीजी १९ मार्च प्रातः गांधीनगर पधारे । कई प्रेमियों ने उनका स्वागत किया । प्रातः स्वामीजी ने धर्म ध्वजा फहराकर उत्सव आरम्भ किया । उसी समय कोल्हापुर के डी. एस. पी. स्वामीजी से आशीर्वाद लेने आये । डा. दयाल 'आशा', शशि गजवाणी, रमेश तनवाणी एवं रमेश लालवाणी ने स्वामीजी के जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश डाला । डी. एस. पी. ने कहा कि यह धार्मिक उत्सव देखकर और पूज्य स्वामीजी का दर्शन कर मैं कृतार्थ हो गया हूं । पूज्य स्वामी धर्मदासजी महाराज ने भी आशीर्वाद दिया। पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज प्रेम के अवतार थे । आप भी आपस में प्रेम व एकता

के साथ रहकर सिन्धी जाति का नाम ऊँचा करें । आज आप सत्गुरु महाराजजी के जन्मशताब्दी उत्सव के सम्बंध में जुलूस निकाल रहे हैं । आप सभी उस में सम्मिलित होंगे तो गुरु महाराज आपके शुभ मंगल कार्यों में सदैव सम्मिलित होंगे और आशीर्वाद प्रदान करेंगे ।

कोल्हापुर के गणेश मंदिर से सायं पूज्य स्वामीजी के नेतृत्व में भव्य जुलूस निकाला गया । सायं ७ बजे हाल में पूज्य स्वामीजी, स्वामी धर्मदासजी महाराज, डा. दयाल 'आशा', संत अनन्तप्रकाश, रमेश तनवाणी आदि प्रेमियों ने पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज को पुष्पांजलि अर्पित की। हरि-बलि एवं हरिबख्श पंजाबी ने भजन गाये। यह कार्यक्रम आकाशवाणी कोल्हापुर से प्रसारित किया गया । तीनों दिन स्वामीजी एवं अन्य संतों महात्माओं ने अमृत वचनों की वर्खा की । २२ मार्च प्रातः उत्सव का समापन करते हुए स्वामीजी ने कहा कि कोई भी भगवान की भक्ति कर सकता है । भक्ति करने के लिए कोई बंधन नहीं । भक्ति में जात, पात एवं आयु का कोई बंधन नहीं । कई लोग पिछड़ी जाति में पैदा होकर भी अपनी भक्ति साधना के कारण महान बन गये । सधनो कसाई, अजामिल, गणिका इत्यादि प्रभु भक्ति के कारण श्रेष्ठ बन गये । भक्त प्रहलाद, भक्त ध्रुव छोटे बालक थे किन्तु अपनी साधना के कारण अमर हो गये । जैसे नाव में ऊंच- नीच, छोटा- बड़ा, गरीब- अमीर, पशु सभी चढ़कर नदी पार कर सकते हैं इसी प्रकार भक्ति रूपी नाव में कोई भी चढ़कर भव सागर पार कर सकता है । बिना भक्ति के संसार से पार हो पाना सम्भव नहीं। संसार रूपी सागर में अनेक भयानक विकार रूपी जलचर हैं, यदि उन से बचना है तो भक्ति रूपी नाव का सहारा लेना ही प्रड़ेगा । संत कवि नारायणदास कहते हैं-

ईश भक्ति में होत है, सब का ही अधिकार ।
प्रभु नाव में बैठकर, होते हैं सब पार ।।

भक्ति व्यवहार में बाधक नहीं होती । कई लोगों ने घर गृहस्थी में रहते हुए भी भक्ति मार्ग पर अग्रसर हुए हैं । उन्होंने केवल स्वयं भगवान का दर्शन नहीं किया किन्तु औरों को भी भक्ति मार्ग में चलने की प्रेरणा देकर भगवान के दर्शन कराये । साधारणतः कहते हैं दो

खरबूजे एक साथ हाथ में नहीं आयेंगे । पूज्य सतगुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज कहते थे कि दो क्या दस खरबूजे भी एक टोकरी या थैली में डालकर हाथ में उठा सकते हैं । भक्ति मार्ग पर चलने से मनुष्य कई कार्य कर सकता है । आप भी घर गृहस्थ में रहकर भगवद् भक्ति करें ।

२३ मार्च प्रात: स्वामीजी ने झूलेलाल मार्केट एवं हीराणी मार्केट का उद्घाटन करते हुए कहा कि सिन्धियों ने व्यापार के क्षेत्र में बहुत ही नाम कमाया है । सिन्धियों का यह विश्वास है कि कम मुनाफे से अधिक लाभ होता है । प्रेमियो ! अपनी कमाई का कुछ हिस्सा लोक कल्याण के कार्यों में खर्च करें ।

२४ मार्च पूज्य स्वामीजी इचलकरंजी पधारे । वहां ब्रजलाल हीराणी ने अपने घर में स्वामीजी का जन्म दिन मनाया । पूज्य स्वामी जी ने वहां अमृत वचनों की वर्खा की । वहां से स्वामीजी बेलगाम गये। वहां उन्होंने २४-२५ मार्च सत्संग प्रवचन कर प्यासी दिलों की प्यास पूरी की ।

गोधरा में प्रेमियों ने सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का जन्म शताब्दी उत्सव २७-२८ मार्च अर्जुनदास माखीजाणी हाल में पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में आयोजित किया । इस उत्सव के सम्बंध में स्वामीजी २७ मार्च गोधरा पधारे । श्री गागनदास माखीजाणी, गोविन्दराम रांवलाणी एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत सत्कार किया । पूज्य स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के महिमा का भजन गाते हुए कहा कि सत्गुरु महाराजजी ने हजारों प्रेमियों को श्री सत्नाम साक्षी का मंत्र देकर उनका मार्गदर्शन किया । सत्गुरु महाराजजी महान विद्वान व ज्ञानवान थे । वे सादगी व विनम्रता की मूर्ति थे । प्रेमियों ! आप भी सत्गुरु महाराजजी के सिद्धांतों पर चलने का प्रयास करें । घर-गृहस्थ में रह कर नाम स्मरण करें और सभी प्राणियों को प्यार करें ।

२९ मार्च रविवार पूज्य स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम लौट आये । आश्रम में पूज्य स्वामीजी की प्रेरणा एवं सहयोग से उसी दिन ईश्वरी गांधी ने महाराष्ट्र आयुर्वेदिक चिकित्सा मंडल का सम्मेलन एवं चिकित्सा शिविर आयोजित किया । दोपहर स्वामीजी ने आयुर्वेदिक सम्मेलन को

सम्बोधित करते हुए कहा कि आयुर्वेदिक चिकित्सा हमारी प्राचीन चिकित्सा है। काया को निरोगी रखने के लिए आयुर्वेदिक प्रणाली लाभदायक है। हम विदेशी दवाइयों का प्रयोग कर कई और रोगों को निमंत्रण दे रहे हैं। अभी हमें आयुर्वेदिक चिकित्सा का प्रचार करना चाहिए।

३१ मार्च प्रात: सिन्ध नैश्नल हाईस्कूल, सिन्धुनगर-४ में पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के जीवन एवं कार्यों के सम्बंध में विद्यार्थियों की व्याख्यान प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्राचार्य घनश्याम आहूजा ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत सत्कार किया। पूज्य स्वामीजी ने विद्यार्थियों में पुरस्कार वितरण किये। डा. दयाल 'आशा' ने भी सत्गुरु महाराजजी को पुष्पांजलि अर्पित की।

प्रेम प्रकाश साम्प्रदायाचार्य अनन्त श्री विभूषित पूज्यपाद् १००८ सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का जन्म शताब्दी समारोह एवं ६६ वां चैत्र मेला अमरापुर स्थान जयपुर में अति आकर्षक चल समारोह के साथ पूर्ण भक्ति भाव से उत्साह पूर्वक अनेक भव्य कार्यक्रमों के साथ, पूज्य स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की अध्यक्षता में मनाया गया। इस अवसर पर विशेष रूप से पूज्य स्वामी रामसुखदासजी महाराज भी प्रेमियों को आशीर्वचन देते हेतु पधारे।

चैत्र मेला की पूर्व संध्या पर पूज्य स्वामी गुरुमुखदासजी महाराज को वर्सी उत्सव भी मनाया गया।

११ अप्रैल से १५ अप्रैल १९८७, शनिवार से बुधवार तक प्रेम प्रकाश मण्डल के मुख्यालय, अमरापुर स्थान पर सम्पन्न स्वामी टेऊँराम जन्म शताब्दी समारोह के प्रथम दिन ११ अप्रैल प्रात: प्रवचनों के उपरान्त ८ से ९-३० बजे तक यज्ञ भगवान को आहुति देकर कार्यक्रमों का प्रारम्भ हुआ। यज्ञ कार्यक्रम स्वामी ब्रह्मानन्द शास्त्री द्वारा सम्पन्न कराया गया। तदुपरान्त ध्वजावन्दन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, प्रेम प्रकाशी धर्म ध्वजा की पूजा अर्चना पूज्य सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज द्वारा सन्त मण्डल के साथ मिलकर की गयी। पूजा अर्चना के तुरन्त बाद प्रात: लगभग ९-४५ पर सन्त नारायण प्रकाशजी ने लगभग ५०-६० फुट की ऊंचाई पर जाकर प्रेम प्रकाशी ध्वजा फहराई। ध्वजा के फहराते ही वातावरण तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा और ६० फुट की

ऊंचाई से ही पूज्य सन्त मण्डल व उपस्थिति अपार प्रेमियों पर पुष्प वर्षा की गयी एवं वहीं पर ही नारियल फोड़ा गया इस मौके पर गुब्बारे छोड़कर ध्वजा का अभिवादन भी किया गया। पुन: तालियों की गड़गड़ाहट के साथ प्रेमी ध्वजा के प्रति नतमस्तक हो उठे। निश्चय ही यह क्षण कितने आनन्ददायी रहे होंगे, इसकी कल्पना सहज में ही नहीं की जा सकती है। हवन- ध्वजावन्दन के बाद श्री अमरापुर नवयुवक मण्डल व अन्य मण्डलियों द्वारा अति आकर्षक व मन को मोहने वाला डण्डा नाच (छेज) बैण्ड द्वारा प्रदत धुनों पर किया गया।

दोपहर को निकलने वाले चल समारोह के लिये जयपुर के नगर वासियों में अति उल्हास छाया हुआ था, जुलूस निकालने से पूर्व प्रेम प्रकाश सन्देश के प्रतिनिधि द्वारा जुलूस मार्ग का अवलोकन करने पर पाया कि प्रात: से ही ध्वनि विस्तारक यंत्रो द्वारा पूज्य स्वामीजी के भजन व भक्ति संगीत के गीत प्रसारित किये जा रहे थे। स्थान स्थान पर कुल मिलाकर जुलूस की अगवानी के लिए लगभग एक सौ से अधिक तोरण द्वार बनाये गये थे और इससे कहीं अधिक स्थानों पर नगरवासियों द्वारा ठण्डे शरबत व प्रसाद वितरण का कार्यक्रम चल रहा था। समस्त मार्गों को स्वामी टेऊँराम जन्म शताब्दी समारोह व ॐ सत्नाम साक्षी अंकित झण्डियों से सुसज्जित किया गया था।

दोपहर ३-१५ पर प्रेम प्रकाशियों के पवित्र तीर्थ स्थल अमरापुर स्थान से सद्गुरु टेऊँराम जन्म शताब्दी समारोह एवं ६६ वें चैत्र मेले के उपलक्ष्य में ऐतिहासिक चल समारोह का प्रारम्भ हुआ। इस भव्य एवं आकर्षक चल समारोह का नेतृत्व पूजनीय स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज, सन्त मण्डल के साथ कर रहे थे। इस महान ऐतिहासिक जुलूस का प्रथम आर्कषण था एक विशाल श्री प्रेम प्रकाश धर्म ध्वजा जो कि ॐ गाड़ी पर प्रेमी लेकर चल रहे थे। प्रेम प्रकाशी ध्वजा लिये हुए २ गजराज, ६ ऊंट, २४ अश्वों पर भी सन्त व प्रेमी गण विराजमान थे।

माधव गौरेश्वर मण्डल की झांकी में प्रभु श्रीपाद रूप गोस्वामीजी के भक्तगण भगवद् भजन में लीन थे जो प्रेमियों दर्शकों को अनायास ही भगवद् भजन की ओर आकर्षित कर रहे थे। "खेत की रखवाली

या सत्संग'' शीर्षक से पूज्पाद् सद्‌गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की झांकी दर्शायी गयी थी, श्री अमरापुर नवयुवक मण्डल द्वारा ।

एक आकर्षक रथ में सजी हुई आचार्य सद्‌गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के चित्र से सुसज्जित झांकी के पश्चात् आदर्श कन्या विद्यालय (अजमेर) की बालिकाओं द्वारा सुन्दर रूप से सजायी गई झांकी में भगवान विष्णु भगवती लक्ष्मी के साथ दिखाये गये थे । परम पूजनीय सद्‌गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के विशाल चित्र के साथ सुसज्जित झांकी जोकि ''स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, ग्वालियर के उत्साही कार्यकर्ताओं द्वारा तैयार की गयी थी, चल समारोह की शोभा बढ़ा रही थी ।

'सत्नाम साक्षी' अंकित पूज्यपाद् सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की सुसज्जित झांकी । ''गुरु गोविन्द दोनो खड़े काको लांगू पाय बलिहारी गुरु की जिसने दिया प्रभु मिलाय'' उक्ति पर आधारित भक्त भगवान व गुरुदेव की झांकी के पश्चात् कल्याण मण्डली के प्रेमी सत्नाम साक्षी व भगवन्नाम की धुनि लगाते हुए, नाचते गाते गुरुदेव के प्रेम में मस्त हो रहे थे । पूज्यपाद् सद्‌गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के जीवन की झलक जिसमें बाल्यावस्था से स्वामीजी के जीवन की झलक चित्रों के माध्यम से दर्शायी गयी थी । सिन्ध का महान तीर्थ श्री साधुबेला भी सम्मिलित था । पूज्यपाद् गुरुदेव के जन्म शताब्दी चल समारोह में, लखनऊ प्रेम प्रकाश मण्डली, कोटा, दिल्ली, बैरागढ़ भोपाल की प्रेम प्रकाश मण्डलियों द्वारा भी आकर्षक झांकियां चल समारोह में निकाली गयीं ।

चल समारोह का सर्वाधिक आकर्षण केन्द्र था, ''टण्डे आदम'' में सत्गुरु टेऊँरामजी महाराज द्वारा स्थापित अमरापुर स्थान का अलौकिक दृश्य जो कि कुशल कलाकारों द्वारा तैयार किया गया था । प्रेमियों के मन में उसे देख प्रेमाश्रू छलक उठे और बरबस ही ''टण्डे आदम'' की स्मृति हो आयी, ऐसा लग रहा था, जैसे आज हम वास्तव में सद्‌गुरु महाराज के उस ऐतिहासिक तपस्या स्थल ''टण्डे आदम'' में ही खड़े हैं ।

मां सरस्वती, त्रिलोकीनाथ भगवान शंकर, मर्यादा पुरुषोत्तम राम-लक्ष्मण-हनुमान, राम-सीता सुसज्जित आकर्षक रथों में बैठकर सद्गुरु महाराज की शोभा यात्रा में सम्मिलित थे। इसके अतिरिक्त, पूज्यपाद् सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज, सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज, स्वामी गुरुमुखदासजी महाराज के विशाल चित्रों से सुसज्जित और भी झाँकियां प्रस्तुत की गयीं थीं।

जीया बैण्ड अगवानी कर रहा था पूज्यपाद् स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज की, जो कि एक आकर्षक बग्घी में स्वामी धर्मदासजी महाराज, स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज, स्वामी देवप्रकाशजी महाराज के साथ विराजमान थे। देश-विदेश से आये असंख्य प्रेमीगण नगरवासियों के साथ चल समारोह में सद्गुरु महाराज की जय जयकार करते हुए चल रहे थे। प्रेम प्रकाश सन्त मण्डली भी जुलूस में शोभायमान थी।

जुलूस में लगभग २ दर्जन से अधिक झाँकियां व जीया प्रकाश बैण्ड के अतिरिक्त लगभग एक दर्जन से अधिक बैण्ड सम्मिलित थे।

चल समारोह के मार्ग पर सायं ५-३०, ५-३५, ५-४५, ६- ६-२० ६-३५, ६-४५ पर वायुयान द्वारा जुलूस पर पूज्यपाद् श्री गुरुदेवजी पर पुष्प वर्षा की गयी। उस समय ऐसा दृष्टिगोचर हो रहा था जैसे कि स्वर्ग से उतर कर इस महान पवित्र दिन स्वयं देवतागण श्री गुरु महाराज के ऊपर पुष्प वर्षा कर अपना हर्ष प्रकट कर रहें हों, और ऐसे दिव्य दृष्य का आनन्द उठा रहें हो।

रात्रि ८-३० जयपुर नगर के विभिन्न मार्गों से होता हुआ चल समारोह अमरापुर वापस पहुंचा, जहां पर श्री अमरापुर नवयुवक मण्डल द्वारा आकर्षक आतिशबाजी प्रदर्शन के साथ चल समारोह का स्वागत किया गया।

रात्रि ठीक ९-१५ पर पूज्यपाद् सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज द्वारा प्रार्थना (पल्लव) पाकर समारोह का विधिवत् शुभारम्भ किया। ११ अप्रैल रात्रि १२ बजे तक कार्यक्रम चला।

१२ अप्रैल प्रात: ५ बजे प्रभात फेरी के साथ कार्यक्रमों का प्रारम्भ होकर रात्रि ११-३० तक भजन कीर्तन और प्रवचन हुए। इसके अन्तर्गत परम पूजनीय स्वामी रामसुखदासजी महाराज व स्वामी शांतिप्रकाशजी

महाराज के प्रवचनों में प्रेमियों की उपस्थिति अत्यधिक रही। प्रातः पूज्यपाद् सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज, सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की विशेष पूजा अर्चना भी की गयी।

१२ अप्रैल पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि एक सौ वर्ष पूर्व सिन्ध की पावन भूमि पर पूज्य स्वामी टेऊँरामजी महाराज अवतार धारण कर आये। उन्होंने प्रेम प्रकाश मण्डल की स्थापना कर भगवन् नाम का प्रचार किया। जब वे इकतारा लेकर गाते थे तो आनन्द की उपलब्धि होती थी। हिन्दू एवं मुसलमान उनके प्रवचन एवं संगीत से प्रभावित होते थे। इस वर्ष देश-विदेश में उनकी जन्मशताब्दी मनाई जा रही है। उनकी अमूल्य वाणी श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ में संग्रहित है। उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारें। वे प्रेम व दया की साक्षात् मूर्ति थे। हम भी अपने जीवन में प्रेम, दया की ज्योति जगाएं। नियमित रूप से संतों महात्माओं की कथा श्रवण करें। सत्गुरु महाराजजी अपनी वाणी में कहते हैं-

सत्संग तीर्थ रुप है, सत्संग मोक्ष द्वार।
कह टेऊँ तज कुसंग को सत्संग कर निरधार॥

प्रेमियो ! सत्संग तीर्थ स्थान समान है, सत्संग मुक्ति का द्वार है। इसीलिए आप प्रतिदिन सत्संग में आकर सत्पुरुषों के वचन श्रवण करें और उन वचनों पर चलने का प्रयास करें। जैसे मनुष्य के लिए खान पान आवश्यक है वैसे सत्संग भी अत्यन्त आवश्यक है। कुछ लोग बहाना बनाते हैं कि वे इतने तो व्यस्त हैं कि उन्हें सत्संग में आने के लिए समय ही नहीं। दिन में तीन चार बार खाने पीने के लिए समय है किन्तु संतों के दर्शन एवं कथा श्रवण के लिए समय नहीं! जहां चाह वहां राह। यदि आप सुखी रहना चाहते हैं तो सत्संग में अवश्य आयें। सत्गुरु महाराजजी भी अपनी वाणी में फरमाते हैं-

कह टेऊं इस जगत् में जो चाहो आराम।
साधु संग नित ही करो, सुमरो हरि का नाम॥
कह टेऊँ सत्संग से मिलत पदार्थ चार।
तांते तुम सत्संग कर निश्चय मन में धार॥

संतो का संग चारों पदार्थ, अर्थात्, धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष देने वाला है। इसलिए सदैव संतो का संग करें।

१३ अप्रैल १९८७ को भी प्रातः ५ से आधी रात तक पूजनीय संत मण्डल के प्रवचन, गायकों द्वारा पूजनीय गुरुदेवजी की महिमा के गीत सुनाये गये, विद्वानों द्वारा व्याख्यान दिये गये। रात्रि ७ से ८ तक पूज्यपाद् स्वामी रामसुखदासजी महाराज के सदुपदेशों को भी प्रेमियों ने ग्रहण किया।

१४ अप्रैल प्रातः ५ बजे से कार्यक्रम प्रारम्भ होकर अगले दिन १५ अप्रैल बुधवार प्रातः ८-३० बजे समारोह समाप्ति तक चले जिसमें रात्रि ७ से ८ बजे तक पूजनीय स्वामी रामसुखदासजी महाराज के प्रवचनों के अतिरिक्त पूजनीय स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज, स्वामी धर्मदासजी महाराज, स्वामी हरिदासराम जी महाराज, स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज, स्वामी देवप्रकाशजी महाराज प्रमुख थे। गायकों भक्तों में सुश्री कमला केसवाणी, बहन मीरा, किशन भक्त प्रमुख थे।

१५ अप्रैल १९८७, सोमवार प्रातः काल सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के आशीर्वचनों की कैसेट के पश्चात् स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज द्वारा निर्विघ्न रूप से सम्पन्न इस ऐतिहासिक समारोह के समस्त सेवाधारियों, सन्त मण्डल, प्रेमियों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए श्री गुरुदेव भगवान से प्रार्थना (पल्लव) के साथ मेले का समापन किया। तत्पश्चात् श्री अमरापुर नवयुवक मण्डल के कार्यकर्ताओं ने प्रेमियों के साथ पूज्यपाद् सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के चित्रों, बैण्ड व शहनाई के साथ अमरापुर स्थान की परिक्रमा लगायी।

उपरोक्त समारोह के प्रत्येक कार्यक्रम में शुभारम्भ से लेकर समापन तक विशाल जन-समुदाय ने भाग लिया एवं अनुशासनबद्ध रहकर अखण्ड भजन, भोजन का रसास्वादन किया।

सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी जन्म शताब्दी सामरोह के अवसर पर जन्म शताब्दी अंकित १८८७-१९८७ व आचार्यजी के चित्र से अंकित चांदी के सिक्के स्मृति रूप में जारी किये गये थे। इसके अतिरिक्त प्रेम प्रकाश संदेश द्वारा "सिन्ध के महान सन्त पूज्यपाद् सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी

महाराज'' पुस्तक का विमोचन समारोह में पूजनीय स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज द्वारा किया गया ।

स्वामीजी के अनेक आकर्षक चित्र व चित्रों से युक्त दीवार घड़ियां भी स्मृति रूप में उपलब्ध थीं ।

अमरापुर स्थान पर संत अनन्तप्रकाश को जकार्ता से लवीना नाथाणी ने फोन किया कि उसकी बहन रीटा ठाकुरदास की सोनोग्राफी कराई गई जिसमें दिखाया गया है कि उसे लड़की होगी । उसे पहले ही दो पुत्रियां हैं । रीटा इस कारण बहुत दुखी है । कृपया आप पूज्य स्वामी जी को हमारी ओर से विनय करें कि वे प्रभु से ऐसी प्रार्थना करें जैसे रीटा को पुत्र संतान हो । उत्सव चल ही रहा था, हजारों की संख्या में श्रद्धालू वहां उपस्थित थे इस कारण स्वामीजी सार्वजनिक रूप से किसी विशेष व्यक्ति के लिए तो प्रार्थना नहीं कर सकते थे। स्वामीजी जब जयपुर से इन्दौर जा रहे थे, तब चित्तौड़गढ़ स्टेशन पर संत अनन्तप्रकाशजी ने स्वामीजी से रीटा ठाकुरदास को पुत्र संतान होने के लिए पल्लव पाने की विनती की । तब स्वामीजी ने कहा बेटा! जब सोनो ग्राफी में पुत्री दिखाई गई है तो अब पुत्र कैसे होगा! तब फिर संत अनन्तप्रकाश ने स्वामीजी को प्रार्थना करते कहा कि आप समर्थ हैं रीटा की अभिलाषा पूर्ण करें । तब स्वामीजी ने कहा कि मैं तो अशक्त हूं, पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज व प्रभू परमात्मा ही समर्थ हैं । उनसे प्रार्थना करते हैं । पूज्य स्वामीजी ने उसी समय प्रभु से प्रार्थना की एक महीने के पश्चात् जकार्ता से फोन आया कि पूज्य स्वामीजी के हम अत्यन्त आभारी हैं, रीटा को पुत्र संतान हुई है ।

संत ऊद्धवदास ब्रह्मचारी ने सिन्धु गीता ज्ञान भवन ट्रस्ट की ओर से बड़ौदा में २५ अप्रैल से ५ मई गीता ज्ञान महायज्ञ का आयोजन किया । इसी उत्सव के सम्बंध में स्वामीजी ३० अक्टूबर बड़ौदा पधारे। स्वामी ऊद्धवदास एवं प्रताप रामचन्दाणी ने उनका स्वागत किया। स्वामीजी ने तीन दिन वहां प्रवचन करते हुए कहा कि श्रीमद् भगवद् गीता हमारी अमूल्य निधि है । भगवान श्री कृष्ण के मुख से यह वाणी प्रवाहित हुई है । यह वाणी श्रवण करने से ही आनंद की प्राप्ति होती है ।

प्रेमियो ! आप भाग्यशाली हैं कि हर वर्ष संत ऊद्धवदासजी आपको यहां गीता ज्ञान यज्ञ का आयोजन कर अमृत पिलाते हैं । इस महान ग्रन्थ का अभ्यास करें और इसकी शिक्षाओं को जीवन में उतारें ।

प्रेम प्रकाश आश्रम आगरा में सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का जन्मशताब्दी उत्सव २४ मई से २८ मई तक आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी २६ मई आगरा पधारे। श्री भगवानदास एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया । सायं ४ बजे उनके नेतृत्व में जुलूस निकाला । २ मई सिन्धी धर्मशाला काला महल में सिन्धी समाज की ओर से कार्यक्रम रखा गया । विभिन्न वक्ताओं ने सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के जीवन के सम्बन्ध में व्याख्यान दिये । पूज्य स्वामीजी ने सत्गुरु महाराज की महिमा गाते हुए उनके जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाये ।

२१ जून रविवार एकादशी के दिन प्रात: पिम्परी सिन्धी कालोनी में संत केवल प्रकाशजी के त्रयोदशी पर उन्हें श्रध्दांजलि अर्पित करते हुए, पूज्य स्वामीजी ने कहा कि वे पूज्य स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज के शिष्य थे । वे एकांतप्रिय थे, नाम स्मरण में उन्होंने जीवन सफल किया । शारीरिक पीड़ा होते हुए भी वे दुख में भी मुस्कुराते रहते थे ।

२१ जून सायं स्वामी ओंकाराननन्द आश्रम सिन्धुनगर-५ में, स्वामी ओंकारानन्दजी महाराज के पुण्यतिथि उत्सव के सम्बंध में पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि स्वामी ओंकारानन्दजी महाराज महानं विद्वान, ज्ञानवान एवं शास्त्रों के मर्मज्ञ थे । उन्होंने कई प्रेमियों को मार्गदर्शन किया । उनकी शिक्षाओं को अपनायें ।

पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का १०१ वां जन्म दिन उत्सव स्वामी बसंतराम प्रेम प्रकाश आश्रम, दिल्ली गेट, अजमेर में २७ जून से १ जुलाई तक मनाया गया । उसी उत्सव के सम्बंध में स्वामीजी २६ जून अजमेर पधारे । वहां उन्होंने चार दिन सत्संग प्रवचन करते हुए सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के गुणों का वर्णन किया ।

२ जुलाई पूज्य स्वामीजी जोधपुर पधारे । वहां गुरुसंगत दरबार में श्री लोंगमल मेखाणी ने उनका स्वागत किया । वहां उन्होंने दो दिन

अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की । ५ जुलाई स्वामी जी ने, स्वामी विवेकानन्द हाल समर्थनगर, अहमदाबाद में सत्संग प्रवचन किया ।

११ जुलाई गुरु पूर्णिमा का उत्सव सिन्धुनगर आश्रम में मनाया गया। हजारों प्रेमियों ने सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज कीं मूर्तियों और पूज्य स्वामीजी की पूजा उपासना की । स्वामीजी ने गुरु की महिमा का वर्णन करते हुए कहा कि

संसा सकल निवारहिं, देकर आत्मज्ञान ।
कह टेऊं इस जगत में, सत्गुरु सो पहचान ।।

प्रेमियो ! सत्गुरु शिष्य को आत्मज्ञान देकर उसके संशय को दूर करता है । आप भी गुरु मंत्र का अभ्यास करें । गुरु मंत्र का जाप करते करते आपका अनुभव द्वार खुल जायेगा । गुरु मंत्र की साधना में बड़ी शक्ति है । विश्वास धारण कर साधना करें तो सफलता अवश्य मिलेगी।

१३ जुलाई १९८७ प्रातः १० बजे पूज्य स्वामीजी ने सिन्धुनगर-२ में स्वामी टेऊँराम मण्डली के नवीन मंदिर के निर्माण के लिए भूमि पूजा करवाई । पूज्य स्वामीजी ने जीवणदास आहूजा, मोटूमल चांडवाणी, भगवानदास केसवाणी, नानकराम रामचन्द, माता मीरा एवं अन्य प्रेमियों को सत्संग हाल व मंदिर के निर्माण हेतु धन्यवाद दिया ।

सौराष्ट्र में सूखे की स्थिति के कारण अकाल पड़ा । पूज्य स्वामीजी ने दयाल 'आशा' एवं अन्य सेवकों को सहायता कार्य के लिए सौराष्ट्र भेजा । श्री नेवंदराम लोकवाणी के सहयोग से सौराष्ट्र के जोधपुर, केशूद, सोरठवंथली, कुत्याना, बांटवां एवं अन्य गांवों में पानी के बोरिंग लगवाए गये। पीड़ितों को अन्न, धन, वस्त्रों की सहायता की गई । बिहार में बाढ़ पीड़ितों के लिए स्वामीजी ने द्वारकोभाई सुन्दराणी के सहयोग से एक सौ झोपड़ियों का निर्माण करवाया ।

बैंगलोर सिन्धी मर्चेंट ऐसोसिएशन के निमंत्रण पर स्वामीजी ३ अगस्त बैंगलोर पहुंचे । ४ अगस्त प्रातः उन्होंने बहन लीला के घर पर सत्संग प्रवचन किया । सायं उन्होंने गुरुमंदिर में प्रवचन किया । ५ अगस्त प्रातः गुरु मंदिर में स्वामीजी ने अमृत वचनों की वर्खा करते हुए कहा

कि प्रभु को न केवल जिव्हा से याद करें किन्तु दिल से याद करें परमात्मा का कोई भी नाम यदि आप श्रद्धा व प्रेम से जपेंगे तो अवश्य सफलता मिलेगी। मथुरा में एक पंडित कथा करता था। एक दिन वह पंडित कथा कर रहा था तो रास्ते से दूध बेचनेवाली एक माता जा रही थी। वह पंडितजी की आवाज सुनकर कथा श्रवण करने के लिए बैठ गई। पंडितजी भगवान के नाम की महिमा का वर्णन कर रहे थे कि भगवान का नाम लेने से मनुष्य भवसागर को पार कर सकता है। उस माता ने पंडित के इस वचन में विश्वास रखा। वह यमुना के उस पार रहती थी। वह दूध बेचने के लिए नाव में चढ़कर आती थी। उसने विचार किया कि जब भगवान का नाम भवसागर से पार कर सकता है तो क्या इस यमुना से भगवान का नाम मुझे पार नहीं करेगा? दूसरे दिन जब वह दूध लेकर यमुना के किनारे आई तो उसने पंडितजी के वचन को याद कर हरेकृष्ण हरेराम उच्चारण कर नदी में प्रवेश किया। वह राम का नाम उच्चारण करती यमुना के उस पार पहुंच गई, वह पानी पर ऐसे चल रही थी जैसे पृथ्वी पर चला जाता है। उस माता ने राम नाम में शक्ति का अनुभव किया। अब तो वह राम नाम उच्चारण करती यमुना के उस पार आती जाती रही। दस बारह दिनों के पश्चात् उसने विचार किया कि नाविक को जो मैं दो पैसे प्रति दिन देती थी, वे पैसे अब बच गये हैं, क्यों न मैं उसी पंडित से प्रार्थना करूं कि वह मेरे घर में आकर एक दिन भोजन ग्रहण करें। उसके वचनों से मुझे लाभ हुआ है। वह माता पंडितजी के पास आई और उसने उससे प्रार्थना की कि यमुना के उस पार मेरा घर है। कृपया आप वहां पधारकर भोजन स्वीकार करें। पण्डितजी ने कहा कि तुम कल दूध बेचकर मुझे लेने आना, मैं तुम्हारे साथ चलूंगा। दूसरे दिन वह माता पण्डितजी को अपने घर ले जाने के लिए आई। पण्डितजी साथ में चले। जब दोनों यमुना किनारे आये तो उस माता ने पण्डितजी से कहा कि अब यमुना में प्रवेश करें। पण्डितजी ने कहा कि नाव आये तो उस के द्वारा यमुना पार चलेंगे, ऐसे नदी में कैसे प्रवेश करूंगा। उस माता ने कहा कि मैं तो प्रतिदिन नदी में प्रवेश कर ऐसे चलती हूं जैसे कोई पृथ्वी पर चलता हो, आप मेरे साथ राम नाम का उच्चारण करते चलिए, आपको कोई कष्ट नहीं

होगा । पण्डितजी ने कहा "माई ! तुम तो पगली हो । क्या तुम मुझे नदी में डुबाना चाहती हो? मुझे तुम्हारा भोजन नहीं चाहिए । तब उस माता ने कहा "पण्डितजी आपने ही उस दिन कथा में कहा था कि राम का नाम उच्चारण करने से मनुष्य भवसागर से तर जाता है । यदि राम का नाम भवसागर पार करा सकता है तो क्या वह नाम यमुना से हमें पार नहीं करेगा? मैं तो उसी दिन से आपके वचनों में विश्वास रखकर नाम उच्चारण करती नदी में प्रवेश कर उस पार पहुंच जाती हूं । मुझे अब नाव की आवश्यकता नहीं पड़ती है । आप भी नाम उच्चारण करते मेरे पीछे आयें तो यमुना पार कर भोजन ग्रहण करें ।" पण्डितजी यह सुनकर आश्चर्य में पड़ गये । उसने डूब जाने के भय से माता के साथ नदी पार नहीं की । उसके सामने वह माता राम नाम उच्चारण करती यमुना पार हो गई । यह देखकर पण्डितजी आश्चर्य में पड़ गये । पण्डितजी केवल कथा में राम नाम की महिमा गाते थे, किन्तु उनका राम नाम में पूर्ण विश्वास नहीं था, जबकि माता ने सिर्फ एक बार सुना कि राम नाम जीव को भवसागर से पार लगा सकता है, उसी वचनों पर विश्वास रखकर वह बिना नाव के प्रतिदिन यमुना पार करती थी । प्रेमियो ! आप भी परमात्मा में पूर्ण विश्वास व श्रद्धा रखकर नाम स्मरण करेंगे तो आपका बेड़ा पार हो जायेगा। राम नाम में बड़ी शक्ति होती है ।

५ अगस्त पूज्य स्वामीजी ने दादा अमर के सत्संग हाल में प्रवचन किया । दादा अमर ने उनका स्वागत सत्कार किया । ६ अगस्त स्वामीजी ने बहन लीला के सत्संग हाल में अमृत वचनों की वर्खा की । ७ अगस्त आप सिन्धुनगर आश्रम लौट आये ।

९ अगस्त रविवार पूज्य स्वमीजी का जन्म दिन उत्सव जनता जनार्दन परिषद् की ओर से आश्रम में मनाया गया। प्रातः यज्ञ के पश्चात् स्वामीजी ने गरीबों की आर्थिक सहायता की और साथ साथ वस्त्र व खाद्य सामग्री भी उन्हें भेट की । सायं विशेष कार्यक्रम में भक्ति संगीत की वर्खा की गई । डा. दयाल 'आशा' ने जनता जनार्दन परिषद् के कार्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पूज्य स्वामीजी महाराज के आशीर्वाद से ही सेवा के कार्य हो रहे हैं । वे महान कर्मयोगी संत हैं । अन्य वक्ताओं

ने भी स्वामीजी के गुणों का वर्णन किया। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

इक भगवद् के नाम बिन, बोल न दूजी बात।
कह टेऊँ हरि नाम का सुमरन कर दिन रात॥

प्रेमियो ! मानव जीवन की सार्थकता नाम स्मरण और सेवा में ही है। कई विद्वान प्रभु से वंचित रह जाते हैं। प्रभु की प्राप्ति के लिए प्रेम की आवश्यकता है। संत कबीरदासजी कहते हैं-

पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई अक्षर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय॥

प्रभु प्रेम के बिना जीवन सूना है। संतो के संग में प्रेम भक्ति बढ़ाते जाओ, तो प्रभु के समीप होते जाओगे। प्रति दिन कोई न कोई सेवा का काम करें।

३१ अगस्त रात्रि शालीमार सोसाइटी सिन्धुनगर-३ में पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि आज डा.जी. एस. गुरनाणी के सुपुत्र का जन्म दिवस है। जन्म दिन आशाओं का भंडार होता है। बालक भविष्य में मां-बाप, संतों व समाज की सेवा करेगा। बालक का जैसा नाम "रत्न" है, भगवद् कृपा से भविष्य में अपने नाम को सार्थक करेगा। प्रेमियो ! समय बचाकर आप नियमित रूप से सत्संग में आयें। संतों के संग में पशु पक्षी भी तर जाते हैं। जटायु पक्षी भगवान श्री राम के काम में आया तो वह अमर हो गया। संत कबीरदासजी, भक्त कंवररामजी, सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज अपने कार्यों के कारण महान बन गये। सत् कर्म से मनुष्य की शोभा बढ़ती है। शुभ कर्म करने वाले का तो यश होता है। किन्तु उसका कुल भी यशस्वी हो जाता है। गाड़ी में जिसको टिकिट होता है वह निर्भय होकर यात्रा करता है, जिसे टिकट नहीं होता है वह टी. सी. से डरता रहता है, वैसे ही यदि आप को नाम रूपी टिकट होगा तो आपको संसार की यात्रा करने में कोई बाधा नहीं होगी। आप सरलता से सफर कर सकेंगे। इसलिए नाम स्मरण व शुभ कार्य कर जीवन सफल करें।

दुबई के प्रेमियों की प्यास पूरी करने के लिए २ सितम्बर पूज्य स्वामीजी मण्डली सहित दुबई पधारे। स्वामीजी के साथ संत देवप्रकाश, संत अनन्तप्रकाश, डा. दयाल 'आशा', संत टोपणदास व संत ज्ञानप्रकाश जी भी साथ में थे। हवाई अड्डे पर श्री राम बख्शाणी, डा. आसूदाणी, गंगाधर होतचन्द रोहड़ा, भगवान उद्धराणी, हरेश खेमाणी, हरेश ककवाणी, मनोहर रामचन्द, मोहन मनसुखाणी एवं अन्य प्रेमियों ने स्वागत किया। वहां पूज्य स्वामीजी गंगाधर रोहड़ा के घर में ठहरे। बहिन वंदना गंगाधर ने संतों की प्रेम से सेवा की। सायं पूज्य स्वामी जी ने गुरुमंदिर में प्रवचन करते हुए कहा-

सुत दारा और लक्ष्मी, पापी को भी होय।
संत समागम हरि कथा, तुलसी दुर्लभ दोय।

प्रेमियो ! आपको धन्यवाद है कि आप प्रतिदिन यहां आकर नाम कीर्तन करते हैं, कथा श्रवण करते हैं। सांसारिक सम्बंधी तो पापियों को भी होते हैं, किंतु संतों का दर्शन, सत्संग, भगवद्कथा श्रवण का अवसर भाग्यवान को ही मिलता है। जैसे वायु के सम्बंध से फूलों की सुगंधि नासिका तक पहुंचती है, वैसे सत्पुरुषों, सत्गुरु के सम्बंध व सेवा से निर्मल चित्त की वृत्ति परमात्मा से लग जाती है। इसलिए किसी न किसी संत महात्मा से स्नेह सम्बन्ध रखें जो आपको सत्मार्ग बताए, प्रभु से मिलाने का प्रयास करें। सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं-

कह टेऊँ नित नियम से सत्संग में जो जाय।
संतन के प्रसाद से, सो जन मुक्ति पाय॥

पूज्य स्वामीजी ने दुबई के प्रेमियों के घरों में, गुरमंदिर, टी. चोइथराम हाल व एस्टोरिया होटल हाल में १२ दिन अमृत वचनों की वर्खा की। ऐसा लग रहा था जैसे दुबई में प्रेमा-भक्ति सरिता प्रवाहित हो रही हो। पूज्य स्वामीजी ने भगवान उद्धराणी के घर में सत्संग प्रवचन करते कहा, हम प्यारे भगवान के पिता श्री वादुसेव को भुला नहीं सकते, उनके मन में कितनी न श्रद्धा थी। आप भी मन में श्रद्धा धारण कर प्रेम से प्रभु को याद करें और संतों एवं वृद्धों की सेवा करें तो आपका जीवन सफल हो जायेगा।

प्रेमियो ! कभी भी भगवान के भक्त या उनके द्वारा दी गई वस्तु का तिरस्कार न करें। शबरी ने भगवान श्रीराम के श्रीचरणों में कुछ फल खाने के लिए रखे थे। भगवान ने तो प्रेमपूर्वक फल खाये किन्तु श्री लक्ष्मण ने फल उठाकर फेंक दिये। वहां लक्ष्मण ने बहुत बड़ी भूल की। श्रीराम-रावण युद्ध में जब मेंघनाद से लड़ाई करते श्री लक्ष्मण को मूर्छित कर दिया तब राजकीय वैद्य ने सलाह दी कि लक्ष्मण को सचेत करने के लिए संजीवनी बूटी की आवश्यकता है। राम भक्त श्री हनुमान सुमेरु पर्वत पर वह संजीवन बूटी लेने गये। वह बूटी उसी फल से ही पैदा हुई थी, शबरी के जिस फल को लक्ष्मण ने फेंक दिया था। उस बूटी द्वारा ही श्री लक्ष्मण के प्राणों की रक्षा हो सकी। प्रेमियो इसलिए किसी भी संत द्वारा दिये प्रसाद का तिरस्कार न करें।

राजा तंगध्वज ने श्री सत्यनारायण स्वामी के प्रसाद को गृहण नहीं किया तो उसका सर्वस्व नष्ट हो गया। जब फिर उसने पश्चात्ताप करके सत्यनारायण स्वामी की कथा प्रेम से श्रवण कर प्रसाद ग्रहण किया, तब पुनः राज्य की प्राप्ति हुई। भगवान की माता अनन्दीबाई ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत किया। वहां भोजन ग्रहण करने के पश्चात् पूज्य स्वामीजी खूबचन्द उद्धराणी के घर गये।

टी. चोइथराम हाल, दुबई में पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा-

टेऊं हरि को भावते, केवल मन का प्रेम।
जानो मन के प्रेम बिन, सूने जप, तप, नेम॥

प्रेमियो ! प्रभु प्रेम द्वारा ही प्रसन्न होते हैं। भगवद् प्रेम के बिना सभी साधनाएं अधूरी हैं। परमात्मा स्वयं आकर प्रेमियों की देखरेख करता है। भक्त चतुरदास के मन में भगवान श्रीकृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम था। वह परिवार का परित्याग कर ब्रज भूमि में आकर बसा। वहां वह सारा समय नन्दनन्दन भगवान श्री श्यामसुन्दर की भक्ति में तल्लीन रहता था। एक बार नन्दगांव में वह बहुत ही भूखा व प्यासा था, किन्तु प्रेम के आवेश में वह 'श्री कृष्ण' श्री कृष्ण पुकारता रहा। उसी समय भगवान श्री कृष्ण, कुमार अवस्था में एक दूध का लोटा

लेकर उसके सामने गए। भक्त चतुरदास भगवान का दर्शन कर अत्यन्त प्रसन्न हुआ। भगवान उसे दूध पिलाकर अंतर्ध्यांन हो गये। भगत चतुरदास फिर प्रेम से पुकारने लगा "मेरे प्रियतम ! मुझे आकर प्रेम का अमृत पिलाओ, प्यास बुझाओ।" सारी रात आंसू बहाता प्रभु को पुकारता वह सो गया। रात्रि को नींद में भगवान ने उसे दर्शन देते हुए कहा "प्यारे चतुर, ब्रजवासी प्रतिदिन तुम्हें आकर दूध पिलाएंगे, तुम प्रेमा भक्ति में मग्न रहो।" प्रातः होते ही कुछ ब्रजवासी उसके पास दूध लेकर आते हैं। उसी दिन से वे प्रतिदिन इसके पास दूध ले आने लगे। वह भगवान श्यामसुन्दर को दूध का भोग लगाकर उसके पश्चात् ही स्वयं सेवन करता था और दूसरों को भी दूध पिलाता था। भगवान अपने भक्तों की कितनी न देख रेख करता है। प्रेमियो! आप भी प्रेम से प्रभु को याद करें।

ऐस्टोरिया होटल के हाल में पूज्य स्वामीजी का कार्यक्रम रखा गया। श्री राम बख्शाणी, श्री राजू लक्ष्मीचन्द लुल्ला, श्री गंगाधर होतचन्द रोहड़ा ने स्वामीजी का स्वागत किया। पूज्य स्वामीजी ने वहां प्रवचन करते हुए कहा कि आप दुबई में व्यवसाय इत्यादि करें किन्तु सिन्धु संस्कृति व सिन्धी भाषा को नहीं भुलाएं। आपस में एकता के सूत्र में बंध जायें। आप यहां विदेश में भी ऐसे कार्य करें जिससे सिन्धी जाति का नाम ऊँचा हो। अपनी कमाई का कुछ हिस्सा दीन दुखियों की सेवा में खर्च करें और भगवान को नहीं भुलायें। जीवन में कम खाना व गम खाना सीखें। क्रोध करने से कई बीमारियां होती हैं। क्रोध से शारीरिक, मानसिक, आत्मिक एवं आर्थिक हानि होती है। पूज्य सतुगुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज फरमाते हैं=

टेऊँ क्रोध न कीजिये, मन में शान्ति धार।
शान्ति से सुख होत है, पाप, ताप, प्रहार॥

क्रोध अन्धकार के समान है। जैसे अन्धकार में अच्छी तरह देख नहीं सकते, उसी प्रकार क्रोध आते ही मनुष्य को कुछ भी नहीं सूझ पड़ता है कि वह किससे बात कर रहा है। इसलिए कहा जाता है कि क्रोधी को दर्पण में उसी का मुंह दिखाना चाहिए, उसे अपने मुंह से भी नफरत होगी। यदि कोई क्रोधी थूक दे और उस पर उसी

समय मक्खी आकर बैठे तो वह मक्खी भी मर जायेगी। क्रोधी के थूक में ज़हर होता है। डाक्टरों ने ऐसे अनुभव किये हैं। क्रोधी माता का दूध भी विषैला बन जाता है। यदि कोई माता क्रोध में बालक को अपना दूध पिलाती है तो वह बालक बीमार पड़ जायेगा।

क्रोध चांडाल है। क्रोध करने से की हुई तपस्या का भी विनाश होता है। क्रोधी मनुष्य ब्लडप्रेशर (रक्त चाप) एवं अन्य रोगों का शिकार बनता है। क्रोध बड़ा विष है। विष सांप के पास होता है किन्तु उसे वह हानि नहीं पहुंचाता, जबकि क्रोध ऐसा विष है जो क्रोधी को भी और जिस पर क्रोध किया जाता है, दोनों को हानि पहुंचाता है, दोनों को भस्म करता है।

नर्क के तीन द्वार हैं : काम, क्रोध एवं लोभ। इसलिए इन तीनों विकारों का त्याग करना चाहिए। क्रोध करने से कितने झगड़े होते हैं! क्रोध एक भयानक रोग है। क्रोधी सदैव दुखी रहता है।

किसी राजा ने क्रोधित होकर अपने पुरोहित को छोटी सी गलती के कारण निकाल दिया। पुरोहित ने राजा का क्रोध कम करने का बहुत प्रयास किया किन्तु राजा का क्रोध कम नहीं हुआ। पुरोहित बहुत दुखी हुआ। राज महल में झाडू लगाने वाले हरिजन ने पुरोहित को दुखी देखकर उसका कारण पूछा। पुरोहित ने कहा कि राजा ने क्रोधित होकर उसे निकाल दिया है, इसलिए, वह दुखी है। वह हरिजन राजमहल झाडू लगाने के पश्चात् राजा के पास आया और उनसे राजा से कहा कि मुझे न्याय चाहिए। राजा ने उससे पूछा कि तुम्हारे साथ कौन सा अन्याय हुआ है? हरिजन बोला "राजन्, आपने मेरे भाई को अपने पास रोक कर अपने पास बिठा दिया है। राजा विस्मय होकर पूछने लगा "मैंने तुम्हारे कौन से भाई को रोककर अपने पास बिठाया है?" हरिजन बोला "राजन्, मैं जाति का चांडाल हूं, और क्रोध भी चांडाल है, जिससे वह मेरा भाई हुआ न! यह सुनकर राजा ने क्रोध त्याग दिया। उसने फिर राज पुरोहित को अपने पास रखा। प्रेमियो! आप भी क्रोध का त्याग करें और संतों का संग करें। संतों का संग करने से आप लाभान्वित होंगे।

कबीर संगति साध की, जव को बूसी खाइ।
खीर खंड रस भोजन मिले, मूर्ख संग न जाइ॥

संत कबीरदासजी कहते हैं कि मूर्खों के संग में नाना प्रकार के स्वादिष्ट भोजन मिलें फिर भी उनका परित्याग करना चाहिए । संतो से संग में यदि जौ की रोटी भी मिले तो भी उनका संग नहीं छोड़ना चाहिए । प्रेमियो ! प्रतिदिन एकांत में बैठकर भगवत् चिन्तन करें । आप खान, पान, नींद, व्यवहार इत्यादि के लिए समय देते हैं, उससे अधिक समय नाम स्मरण में सफल करें । जो समय आप स्मरण में सफल करते हैं उसका ही मूल्य है ।

पूज्य स्वामीजी ने ढालूमल जतवाणी, श्री वाशूलाल श्राफ, मोहनलाल मन्सुखाणी, राजू लक्ष्मीचन्द लुला, हरेश किशनचन्द खेमाणी, सुन्दर मंघनाणी, हीरानन्द अदनाणी, डा. आसूदाणी, गंगाधर रोहड़ा, हरेश लौंगाणी, लोकेश उद्धराणी, डा. चरणकमल खियाणी आदि प्रेमियों के घरों एवं गुरु मंदिर में अमृत वचनों की वर्खा करते हुए उपदेश दिया कि और सभी बातों को भूल जायं परन्तु नाम को नहीं भूलें । नाम स्मरण व परोपकार के कार्यो में जीवन सफल करें । दूसरों को सुखी करने का यत्न करें । भक्ति आपके व्यवहार में बाधक नहीं होगी । भक्ति द्वारा आपको आत्मिक शक्ति मिलेगी, आपके कठिन काम आसान हो जायेंगे ।

बाधक होता है नहीं, भक्ति मांहि व्यवहार ।
जनक, भीष्म पृथू आदि नृप भये सहज भव पार ।।

पूज्य स्वामीजी ने श्री मूरिजमल मंघनाणी एवं श्री राम बख्शाणी के बंगले पर सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि ये दोनों सज्जन सिन्धि जाति के रत्न हैं, परोपकारी पुरुष हैं । धनवान होते हुए भी विनम्र हैं । प्रेमियो ! आप माया, ज्ञान विज्ञान में कितनी भी उन्नति करें । भक्ति मार्ग पर चलें, किन्तु अभिमान नहीं करें । अहंकार मनुष्य को नीचे गिराता है । एक संत अपने शिष्य के साथ कहीं जा रहा था, रास्ते में विद्यार्थी फुटबाल खेल रहे थे । शिष्य ने यह दृश्य देखकर गुरुजी से पूछा "गुरुजी ! इस गेंद ने क्या गुनाह किया है, कि सब विद्यार्थी इसे लातें मार रहे हैं? ऐसे क्यों फेंक रहे हैं?" संत ने कहा "बेटा ! यह गेंद हवा से भरा हुआ है, तभी उसको खेल खेलने में लातें लगाई जा रहीं हैं । मनुष्य भी अहंकार रूपी हवा के कारण अभिमानी

बन जाता है तब उसे कष्ट झेलने पड़ते हैं । अभिमान कई दुखों का कारण हैं । व्यवहार चाहे परमार्थ में अभिमान का त्याग करना चाहिए। विनम्रता उन्नति में सहायक होती है । सत्गुरु महाराजजी भी अपनी वाणी में फरमाते हैं-

नम्र भाव मन धारले, त्यागे मन अभिमान ।

टेऊँ शील स्वभाव से अपना कर कल्याण ।।

प्रेमियो ! किसी न किसी संत महात्मा का संग करें । उसके सन्निध्य में आप अशुभ कर्मों से दूर रहेंगे और शुभ कर्म करेंगे । मूर्खों का संग मनुष्य को बिगाड़ देता है और संतों का संग सुधारता है । संसार सागर पार करने के लिए किसी न किसी पूर्णं गुरु की शरण लें, जो आप को नाम की नौका में चढ़ाकर भव सागर से पार लगाये । गुरुदेव से प्रार्थना करें ।

भव सागर के बीच में डूबत हूँ गुरुदेव ।

कह टेऊँ मोह काढ़ले, दे निज आत्म मेव ।।

चरनों का चाकर करो, सत्गुर कृपा धार ।

कह टेऊँ मोहि दीजिए, चरन कमल की सेव ।।

१३ सितम्बर सायं टी. चोइथराम हाल में दुबई के सिन्धी समाज की ओर से पूज्य स्वामीजी के बिदाई समारोह का आयोजन किया गया । उसी समय डा. दयाल 'आशा' ने पूज्य स्वामीजी के कर्मयोगी जीवन का वर्णन किया । संत अनन्त प्रकाश ने भजन गाते हुए स्वामीजी की महिमा गाई । सिन्धी समाज की ओर से पूज्य स्वामीजी को सम्मान पत्र दिया गया । श्री राम बख्शाणी ने सम्मान पत्र पढ़ते हुए कहा कि पूज्य स्वामीजी के यहां पधारने से प्रेम की गंगा प्रवाहित हुई है। उन्होंने विभिन्न स्थलों पर अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की है । इसलिए हम उनके हृदय से कृतज्ञ है । उन्होंने अपने प्रवचनों द्वारा हमें आनंद एवं संतोष प्रदान किया है । आज मैं आप सभी की ओर से उन्हें प्रार्थना करता हूं कि पुनः शीघ्र दुबई पधारकर हमारा मार्ग दर्शन करें ।

पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आप लोगों ने मुझे

कितना न स्नेह व सम्मान दिया है ! आपने जो दास की महिमा गाई वह महिमा दास की नहीं, किन्तु कार्य की महिमा है । आप से मेरा अनुरोध है कि धन कमाकर, वह शुभ कर्मों में सफल करें । जीवन में प्रेम व दया की ज्योति जगाएं । जिसके मन में दया है वह देवता है । दयालु अर्थात् दया का घर । भगवान का घर है दया । प्रेमियो ! आप यदि प्रभु का दर्शन करना चाहते हैं तो पहले दया रूपी घर में प्रवेश करें अर्थात् जीवन में दया का गुण अपनायें । एक बार कुछ संत भगवान के पास गये और उनसे प्रार्थना की, "कि प्रभु ! हमारे ऊपर दया करें ।" भगवान ने उनसे पूछा "क्या आप लोगों ने कभी किसी पर दया की है"? संत बोले नहीं । भगवान ने कहा "आपने जीवन में दया का बीज बोया ही नहीं तो मैं कैसे उसका विकास करूं । आपने ज्ञान प्राप्त किया है, अन्य साधनाएं की हैं, किन्तु दया बिना ये सब साधनाएं अधूरी हैं । दया द्वारा मन निर्मल एवं कोमल होता है और प्रभु के निकट होता जाता है । इसीलिए न केवल मानव मात्र किन्तु सभी प्राणियों पर दया करें । पशु पक्षियों को भी प्यार करें । प्रेम से प्रभु को सदैव प्रार्थना करें । आपके कठिन कार्य आसान हो जायेंगे । विदेश में रहकर भारत को नहीं भुलायें । भारतीय संस्कृति के संरक्षक बनें ।

१५ सितम्बर पूज्य स्वामीजी दुबई से बम्बई लौट आये ।

स्वामी ऊधवदासजी के पुण्य तिथि उत्सव के सम्बंध में पूज्य स्वामीजी २२ सितम्बर अहमदाबाद पधारे । वहां स्वामीजी ने चार दिन अमृत वर्खा करते हुए स्वामी ऊधवदासजी के गुणों का वर्णन किया। निष्काम सेवा मण्डल की ओर से २५ सितम्बर पूज्य स्वामीजी का जन्म दिन उत्सव मनाया गया । कई प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी के परोपकारी जीवन का उल्लेख किया ।

२७ सितम्बर जनता जनार्दन परिषद् की ओर से पूज्य स्वामीजी का ८१ वां जन्म दिन उत्सव मनाया गया । प्रातःकाल स्वामीजी को गंगाजल व दूध से स्नान करा कर उनकी पूजा उपासना की गई । प्रातः ८ बजे हवन यज्ञ किया गया । तत्पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने चार सौ गरीब बहनों को आर्थिक सहायता के साथ चावल, दाल, इत्यादि

सामग्री भेंट की। अपंगों, अपाहिजों, गूंगे, बहरे व नेत्रहीनों की सेवा की गई। सायं ५ बजे भक्ति संगीत की वर्खा की गई। दयाल 'आशा' ने जनता जनार्दन परिषद् का कार्य विवरण प्रस्तुत करते हुए पूज्य स्वामीजी के गुणों की महिमा गाई। अन्य वक्ताओं ने भी स्वामीजी को पुष्पांजलि अर्पित की। स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि जीवन में देना सीखें। देने में ही आनन्द है। देने वाले का जगत् में यश होता है।

परमात्मा ने आप को धन दिया है तो वह धन निर्धनों की सेवा में सफल करें। इस धन द्वारा दुखियों के दुख दूर करें। अपने श्वास स्मरण में सफल करें। सत्गुरु महाराजजी फरमाते हैं-

काम करो हरि भजन का मीत करो भगवान।
संत वचन संगी करो, टेऊँ हो कल्याण॥

पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का ६१ वां जन्मदिन उत्सव प्रेम प्रकाश आश्रम, हरिद्वार में ३ से ७ अक्टूबर तक आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बंध में पूज्य स्वामीजी ३० सितम्बर हरिद्वार पधारे। वहां पूज्य स्वामीजी एवं मण्डल के अन्य संतों ने चारों दिन सत्संग प्रवचन करते हुए पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के गुणों का वर्णन किया। पूज्य स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा-

मंदा किस का ना करो, मंदे मंदा होय।
बोये कीकर बीज को, सुख ना पावत कोय॥

प्रेमियो ! किसी का भी बुरा न चाहें, न किसी के साथ बुरा व्यवहार करें। जो आपके साथ बुरा व्यवहार करता है, प्रकृति उसे अवश्य ही दण्ड देगी। आप सदैव सभी के साथ भलाई करें।

एक नगर में किसी लकड़ियों के व्यापारी ने चंदन की लकड़ियां खरीदकर रखी थी। कई वर्षों से चन्दन की लकड़ियां खरीदने वाला कोई नहीं आया। एक दिन उस व्यापारी के मन में विचार आया कि यदि नगर का राजा संसार से चल बसे तो मेरी ये चन्दन की लकड़ियां बिक जायेंगी। दूसरे ही दिन राजा अचानक सैर करता उस बाज़ार से गुजरा जिसमें उस व्यापारी के लकड़ियों का गोदाम था। राजा

ने मन्त्री से कहा कि इस बाज़ार में यह लकड़ियों का गोदाम शोभा नहीं देता । इस व्यापारी को गोदाम के लिए कहीं और स्थान दे दो। मन्त्री ने राजा से हां कह दी । तत्पश्चात् घर आकर मन्त्री विचारने लगा कि राजा किसी का बुरा नहीं चाहता परन्तु आज यह विचार राजा को क्यों आया । मन्त्री ने लकड़ियों के व्यापारी को अपने पास बुलाया, वह व्यापारी घबरा गया । मन्त्री ने कहा "तुम घबराओ नहीं, सत्य बताओगे तो तुम्हारा भला होगा । अब तुम मुझे बताओ कि क्या तुम्हारे मन में राजा के प्रति कोई बुरा विचार पैदा हुआ है? व्यापारी ने कांपते स्वर में कहा "क्षमा करें, कई वर्षों से मैंने चन्दन की लकड़ियां खरीद रखी हैं परन्तु आज तक कोई खरीदने वाला नहीं आया । अचानक मेरे मन में यह बुरा विचार पैदा हुआ कि यदि हमारे नगर के राजा की मृत्यु हो जाये तो चन्दन की लकड़ियां शीघ्र ही बिक जायेंगी ।' यह विचार मैंने किसी को बताया तक नहीं ।

मन्त्री, प्रकृति का नियम समझ गया । उसने व्यापारी से कहा कि तुम्हारे मन में स्वार्थवश बुरा विचार पैदा हुआ तो राजा के मन में भी तुम्हारे सम्बंध में बुरा विचार आया कि इसका गोदाम इस बाजार में शोभा नहीं देता, इसे यहां से हटाया जाये । अब तुम प्रभु से प्रार्थना करो "हमारा राजा एक न्यायकारी राजा है, परोपकारी है, वह दीर्घायु हो, तथा सदैव निरोगी रहे ।" उस व्यापारी ने मन्त्री की मंत्रणा अनुसार प्रातः एवं सायंकाल प्रभु से प्रार्थना करना शुरू की कि हमारे परोपकारी पुण्यात्मा राजा को स्वस्थ जीवन प्रदान करें, वह दीर्घायु हो ।" तीन चार दिन के पश्चात् राजा ने मन्त्री से कहा कि जिस लकड़ियों के गोदाम को हटाने के लिए मैंने आदेश दिया था, वह गोदाम नहीं हटाना, क्यों व्यर्थ में व्यापारी का नुकसान हो । प्रेमियो ! व्यापारी के मन में राजा के प्रति सद्भावना पैदा होते ही राजा के मन में भी उसके लिए सद्भावना उत्पन्न हुई । आप भी किसी के लिए बुरा विचार हृदय में न लायें व सभी के लिए सद्भावना रखें तो दूसरों के मन में भी आप के लिए सद्भावना पैदा होगी ।

२५ अक्टूबर पूज्य स्वामीजी ने श्री माधवदास जयरामदास अच्छरा के श्री गीता प्रिंटिंग प्रेस की नई इमारत का उद्घाटन करते हुए श्री

माधवदास, उसके सुपुत्र खीअलदास एवं अजीत को धन्यवाद दिया।

२९ अक्टूबर गोपाष्टमी के दिन प्रातः आश्रम पर पूज्य स्वामीजी ने गौ सेवा के महत्व के सम्बंध में प्रवचन किये । सायं श्री राधेश्याम गौशाला में गोपाष्टमी उत्सव पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में मनाया गया। उन्होंने व्याख्यान करते हुए कहा कि गौ धन राष्ट्र का सच्चा धन है, उसकी रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है। हमें आंदोलन चलाकर गौ वध पर प्रतिबंध लगाने का पूर्ण प्रयास करना चाहिए ।

२ नवम्बर प्रातः सत्संग प्रवचनों के पश्चात् पूज्य स्वामीजी पूना गये । वहां स्वामी चन्दनप्रकाश प्रेम प्रकाश मन्दिर में उन्होंने तीन दिन सत्संग प्रवचन करते हुए श्री गुरुनानकदेव महाराज के जीवन के कई दृष्टांत सुनाये ।

५ नवम्बर सायं स्वामीजी महाराज सिन्धुनगर आश्रम लौट आये। सायं श्री गुरुनानक जयन्ती के उपलक्ष्य में प्रवचन करते हुए कहा कि आज देश विदेश में श्री गुरु नानकदेवजी महाराज का जन्म दिन मनाया जा रहा है उनकी शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें। रात्रि १२ बजे पूज्य स्वामीजी ने जयबाबा धाम में श्री गुरु नानकदेवजी महाराज की महिमा गाते हुए उनके जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाये। संत ब्रह्मदास ने उनका आभार माना ।

अखिल भारतीय सिन्धी साधु समाज की ओर से १३ से १५ नवम्बर १९८७ तक इन्दौर में सिन्धी सन्त सम्मेलन आयोजित किया गया । भारत के विभिन्न नगरों से संत महंत इस सम्मेलन में पधारे । इसी अवसर पर पूज्य स्वामीजी ने व्याख्यान करते हुए कहा कि आज के युग में संतों महात्माओं पर भी देश व समाज की बड़ी ज़िम्मेदारी है । संत सत् विचारों द्वारा, शुभ संस्कारों द्वारा समाज का रूप बदल सकते हैं । संत महात्मा न केवल आत्म ज्ञान की दीक्षा देकर कल्याण करें किन्तु साथ साथ सामाजिक समस्याओं को दूर करने का भी प्रयास करे । जब तक व्यवहार नहीं सुधरता तब तक परमार्थ नहीं सुधरेगा। आज हमारी कई कन्याएं दहेज की कुप्रथा के कारण विवाह से वंचित रह गई हैं । तलाक की कुप्रथा भी बढ़ गई है । संतों से मेरा अनुरोध

है कि सामाजिक क्रांति लाने का ठोस कार्य करें । संत स्वामी संतोषदास एवं अन्य आयोजकों को इस सम्मेलन के आयोजन के लिए साधुवाद है ।

स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम, सिन्धुनगर-५ के मंदिर का वार्षिक उत्सव २३ से २७ नवम्बर तक आयोजित किया गया । २३ नवम्बर सबेरे पूज्य स्वामीजी ने धर्म ध्वजा फहराकर उत्सव का श्री गणेश किया। दोपहर ३ बजे उनके मार्गदर्शन में जुलूस निकला । चारों दिन पूज्य स्वामीजी एवं अन्य संतों महात्माओं ने अमृत वचनों की वर्खा की। २७ नवम्बर प्रातः पूज्य स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा-

हरि नाम आनन्द निधि, कह टेऊँ जप तांहि ।
जा के जप ते हो सदा, आनन्द मनके मांहि ॥

प्रेमियो ! प्रभु का नाम आनन्द की अमर निधि है । नाम स्मरण करने से मन सदैव प्रसन्न रहता है । योग साधना भी अच्छी, ब्रह्म ज्ञान भी अच्छा, परन्तु कलियुग में नाम स्मरण आसान है । खाना वह खाना चाहिए जो पचा सकें । प्रेमियो ! नाम स्मरण व संतों का संग करें, दीन दुखियों एवं पशु पक्षियों की सेवा करें । अपनी कमाई का कुछ हिस्सा दान करें । भगवान से पूछा कि आप जो चाहें वह संकल्प द्वारा कर सकते हैं फिर क्यों अवतार धारण करते हैं? भगवान ने उत्तर दिया "मैं लोगों को कर्म व सेवा का मार्ग दिखाने के लिए अवतार धारण करता हूं ।" आप भी प्रेम व निष्काम भावना से जनता की सेवा करें । जो फल की इच्छा करे वह तो नौकर होता है । निष्काम भावना से सेवा करने वाले को ही सेवक कहा जाता है । इसलिए निष्काम भाव से सेवा करें ।

२० दिसम्बर रविवार प्रातः अखिल भारतीय कृषि गौ सेवा संघ के कार्याध्यक्ष श्री राधाकृष्ण बजाज स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर-५ पर पधारे । पूज्य स्वामीजी ने उनका स्वागत करते हुए कहा कि श्री बजाज ने अपना सारा जीवन गौ सेवा में अर्पित किया है । इनका नाम ही युगल सरकार अर्थात् राधाकृष्ण है । हमें भी इनकी भांति निष्ठा व निष्काम भावना से गौ सेवा करनी चाहिए । भगवान

श्रीकृष्ण स्वयं गौ सेवा करते थे। विश्वकर्मा जब देवताओं एवं भगवान के अलग अलग अवतारों के लिए भवन बना रहे थे, तब भगवान शंकर ने अपने लोक को ''शिव लोक'', भगवान विष्णु ने ''विष्णु लोक'' नाम दिया, किन्तु भगवान श्रीकृष्ण ने अपने लोक को ''गौ लोक'' नाम दिया। वे गाय को इतना महत्व देते थे। आज इस पावन भूमि पर प्रतिदिन हज़ारों गायें मौत के घाट उतारी जाती हैं। यह हमारे लिए शर्म की बात है। जागो, अपना बलिदान देकर भी गौ माता की रक्षा करो। गौ की रक्षा हिन्दू सनातन धर्म की रक्षा है। पूज्य स्वामीजी ने गौ रक्षा आंदोलन के लिए पांच हजार रुपये श्री बजाज को दिये। इस अवसर पर भाई आसनदास भेरवाणी, बहन लक्ष्मी सिध्वा एवं परसराम कांग्रेसी ने भी विचार व्यक्त किये।

रात्रि ९ बजे श्री मोटूमल खेराजमल चांडवाणी ने अपने घर के प्रांगण में अपने सुपुत्र चन्द्रलाल की मंगनी एवं सुपुत्र किशोरलाल के सुपुत्रों ललित एवं धीरज के जन्म सम्बंध में पूज्य स्वामीजी के सत्संग प्रवचन के कार्यक्रम का आयोजन किया। पूज्य स्वामीजी ने मोटूमल चांडवाणी एवं उसके भाई दौलतराम चांडवाणी को धन्यवाद देते हुए कहा कि उन्होंने अपने बेटों के बिना दहेज विवाह किये हैं। इन्होंने संतों की शिक्षा को अपने जीवन में उतारा है। ऐसे त्यागी कम मिलेंगे। आज भी सुपुत्र की मंगनी के अवसर पर वे एक श्रीफल एवं मिश्री स्वीकार कर रहे हैं। भावना सभी ऐसी त्याग भावना सभी को दे।

एक बार रेल्वे प्लेटफार्म पर कुछ यात्री रेल के आने की प्रतीक्षा में बैठे थे। एक सज्जन वहां रामचरित्र मानस पढ़ रहा था, तो एक दूसरा यात्री जो पत्नी सहित वहां बैठा था उसने उस रामायण पढ़ने वाले यात्री पर व्यंग करते हुए कहा कि तुम क्या रामायण का पाठ करते हो, रामायण में क्या है? यह सुनकर रामायण पढ़ने वाले भक्त ने कहा कि रामायण शिक्षाओं का सागर है। व्यवहार एवं परमार्थ की प्रगति के लिए रामायण पथ प्रदर्शक है। तुम भी प्रेम व श्रद्धा से रामायण पढ़ो और सुनो। परन्तु उस व्यक्ति ने भक्त की सुनी अनसुनी कर दी। रेल आई, वह भक्त भी रेल में बैठा और वह यात्री भी रेल में बैठ गया ओर गाड़ी चलने लगी। इधर उसकी पत्नी प्लेटफार्म

पर ही रह गई । तब उस यात्री ने क्रोधित होते हुए उस भक्त से कहा कि मैंने तुम्हारी रामायण नहीं सुनी, तुमने सिर्फ रामायण के सम्बंध में कहा तो मेरी पत्नी प्लेटफार्म पर रह गई । अब मुझे लौटकर उसी स्टेशन पर जाकर पत्नी को लाना पड़ेगा । व्यर्थ में मैं परेशान हो गया मेरा समय भी व्यर्थ गया । तब भक्त ने उसे समझाते हुए कहा कि यदि तुमने सारी रामायण सुनी होती या पढ़ी होती या नाटक के रूप में रामायण देखी होती तो तुम्हारी पत्नी प्लेटफार्म पर नहीं रह जाती। भगवान श्री राम को जब नदी पार करनी थी तब पहले उन्होंने सीता को नाव पर चढ़ाया बाद में वह स्वयं चढ़े । स्त्री अमूल्य धन है। गाड़ी में पहले सामान रखा जाता है और यदि कोई मूल्यवान वस्तु होती है तो अपने साथ रखते हैं। प्यारे यदि तुमने रामायण पढ़ी होती तो तुमने पहले अपनी पत्नी को चढ़ाने का प्रयास किया होता, तत्पश्चात् स्वयं चढ़ते । फिर तुम्हें परेशान होना नहीं पड़ता । रामायण, महाभारत व अन्य धार्मिक शास्त्र व्यवहार एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए मार्गदर्शन करते हैं। उनकी शिक्षाओं के अनुसार चलेंगे तो संसार का सफर सहज व सरल होगा । प्रेमियो ! आप भी ऐसे धार्मिक ग्रन्थों का अभ्यास करें और अपने बच्चों को भी ऐसे ग्रन्थ एवं पुस्तकें पढ़ायें । जैसे उन पर शुभ संस्कार पड़ें ।

मनुष्य की उत्तम योनि प्राप्त कर धार्मिक शास्त्रों का अभ्यास करने के पश्चात भी यदि मनुष्य नाम स्मरण नहीं करता, प्रभु से वह विमुख रहता है तो वह भाग्यहीन है । काशी में एक व्यक्ति प्रति दिन राम नाम का उच्चारण करते हुए कहता था कि मुझ पापी को भिक्षा दें। एक दिन संत तुलसीदासजी ने उसकी करुण पुकार सुनकर उसे प्रसाद दिया । कुछ पंडितों ने इस बात से संत तुलसीदास पर क्रोधित होते हुए उनसे कहा कि तुमने पापी को प्रसाद देकर अपराध किया है । योग्य मनुष्य को ही प्रभु का प्रसाद देना चाहिए । संत तुलसीदासजी ने प्रेम से कहा ''उसने बार बार प्रभु का नाम प्रेम से उच्चारण कर भिक्षा मांगी । आप उसे पापी कहते हैं ! राम नाम उच्चारण करने से हेय मनुष्य भी महान हो जाता है । इसलिए आप क्रोधित न हों।'' उन पंडितो ने कहा कि यदि भगवान विश्वनाथ का बैल इस दुष्ट के

हाथ का प्रसाद खा जाय तब हमें विश्वास होगा कि यह दुष्ट नहीं पुण्यात्मा है। तत्पश्चात् उस व्यक्ति को श्री विश्वनाथजी के मंदिर ले गये। मंदिर के बाहर पत्थर का बैल स्थापित था। जब उस व्यक्ति ने अपने हाथ से उस बैल को खाने के लिए प्रसाद दिया तो वह पत्थर का बैल प्रसाद खाने लगा। यह दृश्य देखकर पंडित लोग आश्चर्य में पड़ गये। पंडितं जिसे दुष्ट, दुराचारी समझ रहे थे, वह प्रभु विश्वनाथ के दया का पात्र बना। प्रेमियो ! आप किसी को भी पापी, दुष्ट समझकर उसका तिरस्कार न करें। कोई भी राम नाम के स्मरण द्वारा पवित्र पुण्यात्मा बन सकता है। राम नाम में बड़ी शक्ति है। आप प्रेम व श्रद्धा से नाम स्मरण करें। प्यारे मोटूराम, प्यारे दौलतराम परिवार को धन्यवाद है जो उन्होंने सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज एवं अन्य संतों के संग से शिक्षाएं ग्रहण कर अपना जीवन सफल बनाया है। आजकल दहेज की प्रथा कितनी न बढ़ गई है ! इन दोनो भाइयों ने अपने सुपुत्रों घनश्याम, किशोर, चन्द्र, वासू एव प्रकाश का विवाह बिना दहेज करवाकर एक प्रशंसनीय कार्य किया है। इसलिए वे धन्यवाद के पात्र हैं।

१ जनवरी १९८८ रात्रि पूज्य स्वामीजी राजकोट पधारे, जवाहर भाई लक्ष्मणदास, माता मोहिनी, डा. जीवतराम एवं अन्य प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत किया। रात्रि को श्री गीता मंदिर में पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा-

जा घट प्रेम न सिंचइ, सो घट जान मसान।
जैसे खाल लुहार की सांस लेत बिन प्रान ॥

जिसके मन में प्रेम नहीं उसका मन श्मशान भूमि की भांति है। जिसके मन में प्रभु के प्रति प्रेम नहीं है वह लोहार की खाल की भांति बिना प्राणों श्वास लेता है अर्थात् उसका जीवन व्यर्थ है। आज संसार में प्रेम का अकाल है। यदि सभी मनुष्यों के मन में प्रेम होता तो लूटमार, लड़ाइयां, आतंकवाद नहीं होता। परिवारों में अशान्ति एवं तनाव नहीं होता। प्रेमियो ! सभी प्राणियों को प्यार दें। सब से उत्तम है प्रभु प्रेम ! अपने मन मन्दिर में प्रभु प्रेम की ज्योति जगाओ।

जिसके मन में प्रभु प्रेम पैदा हो गया उसे संसार के असत् पदार्थ नहीं भाते । उसे परमात्मा के अतिरिक्त और कोई भी वस्तु मीठी (प्रिय) नहीं लगती है ।

२ जनवरी प्रातः पूज्य स्वामीजी जेतपुर गये । वहां प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी का भव्य स्वागत किया। सायं चार बजे स्वामीजी की अध्यक्षता में सिन्धी धर्मशाला में अखिल सौराष्ट्र सिन्धी पंचायत सम्मेलन सम्पन्न हुआ। श्री उद्धाराम गोलाणी ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। श्री नेवंदराम लोकवाणी ने पूज्य स्वामीजी एवं अन्य अतिथियों का स्वागत सत्कार करते हुए कहा कि पूज्य स्वामीजी की अपार आशीर्वाद से यह पंचायत दुखियों की सेवा कर रही है । इस अवसर पर पद्म श्री जीवणदास जयरामदास, श्री थांवरदास खूबचन्दाणी ने भी अपने विचार व्यक्त किये। पूज्य स्वामीजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि आप लोगों को धन्यवाद है कि सौराष्ट्र में आप संगठन के सूत्र में बंधकर सामाजिक समस्याओं को दूर करने का प्रयास कर रहे हैं । दहेज की समस्या इतनी बढ़ गई है कि बड़ी आयु की लड़कियां विवाह से वंचित रह गई हैं । प्रेमियो ! जागृत होकर इस समस्या को दूर करने का प्रयास करें । तलाक की बीमारी भी बहुत बढ़ गई है । यह महापाप है । परिवारों को स्वर्ग बनायें और नाम को नहीं भुलाएं। दीन, दुखियों, अपाहिजों की सेवा करें। डा. दयाल 'आशा' ने दहेज के सम्बंध में श्री परसराम 'ज़िया' की कविता करुण स्वर में गाई ।

४ जनवरी पूज्य स्वामीजी राजकोट में साधु वास्वाणी मिशन द्वारा आयेजित गौ शिविर में पधारे । वहां बाशाराम गोगिया एवं उसकी पत्नी विद्या ने उनका स्वागत किया । वहां पूज्य स्वामीजी ने गौ सेवा का महत्व बताते हुए कहा कि गौ की सेवा करना हमारा परम कर्त्तव्य है । आप उनकी सेवा करेंगे तो भगवान श्री कृष्ण आपकी रक्षा करेंगे। रात्रि को पूज्य स्वामीजी ने गाइकवाड़ी प्लाट राजकोट में अमृत वचनों की वर्खा की । ५ जनवरी प्रातः १०.०० बजे वे स्वामी टेऊँराम हाय स्कूल में पधारे । प्राचार्य टोपणदासजी ने उनका स्वागत करते हुए कहा कि स्वामीजी की असीम कृपा एवं सहयोग से इस विद्यालय का नया भवन बन सका है । इस अवसर पर पूज्य स्वामीजी ने विद्यालय को

रंग लगाने के लिए दस हजार रुपये देते हुएं कहा कि विद्यार्थियों को माता पिता व आचार्यों की आज्ञा का पालन करना चाहिए। अध्यापकों से भी अनुरोध है कि वे विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक एवं शैक्षणिक विकास की और पूरा पूरा ध्यान दें। डा. दयाल 'आशा' ने भी विद्यार्थियों को मांस भक्षण का परित्याग करने के लिए प्रेरित किया। राजकोट के प्रेमियों ने प्रेम प्रकाश सेवा मण्डल की स्थापना की जिसके द्वारा स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मंदिर के निर्माण का निश्चय किया गया। ५ जनवरी प्रातः पूज्य स्वामीजी ने मंदिर के निर्माण के लिए भूमि पूजा करवाई। पूज्य स्वामीजी ने इस अवसर पर उपदेश देते हुए कहा कि ऐसे उत्तम कार्यों के लिए धन का सद्उपयोग करें। यहां शीघ्र ही मंदिर बन जायेगा। प्रतिदिन आप सत्संग एवं संतों के दर्शन का लाभ प्राप्त कर सकेंगे। माता मोहिनी, जवाहरलाल, डा. जीवतराम, डेटाराम एवं अन्य प्रेमियों को इस शुभ कार्य के लिए धन्यवाद है।

डा. दयाल 'आशा' ने मन्दिर निर्माण के लिए दान दाताओं से अनुरोध किया। उसी समय ही ३५ हजार रुपये उक्त कार्य के लिए मिल गये। पूज्य स्वामीजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि आप निर्माण कार्य आरम्भ करें, अधिक धन की जरूरत होगी तो सतगुरु महाराज आकर कार्य पूर्ण करेंगे।

५ जनवरी मंगलवार रात्रि को पूज्य स्वामीजी ने गाइकवाड़ी प्लाट, राजकोट में सत्संग प्रवचन करते हुए मार्ग दर्शन किया। ६ जनवरी वे जामनगर पधारे। वहां बहिन धनी नियमित रूप से सत्संग का कार्यक्रम आयोजित करती हैं। श्री परमानन्द खट्टर एवं अन्य प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत किया। डा. दयाल 'आशा' ने पूज्य स्वामीजी के परोपकारी जीवन का वर्णन करते हुए दहेज के सम्बंध में करुण स्वर में एक कविता गाई। उसके पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आप सब को धन्यवाद है कि आप यहां सत्संग की ज्योति जगा रहे हैं। सत्संग के साथ प्रतिदिन कोई न कोई परोपकार का कार्य भी करें। सतगुरु महाराजजी भी फरमाते हैं।

अपना स्वार्थ छोड़ जो करता परोपकार।
कह टेऊं यश होत है तांका जगत् मंझार॥

एक दिन एक शिकारी पक्षियों को फंसाने के लिए जंगल में घूमता रहा किन्तु उसे एक भी पक्षी नहीं मिला । उस दिन बहुत वर्षा हुई। अत: वह सारी रात एक वृक्ष के नीचे भूखा बैठा रहा । वह ठण्ड के कारण कांप भी रहा था । उसी वृक्ष पर एक कबूतर का जोड़ा बैठा हुआ था । उनको उस शिकारी पर दया आ गई । यद्यपि शिकारी उनका दुश्मन था परन्तु फिर भी पक्षियों ने उसके लिए अपनी सहानुभूति दिखाई । उस कबूतर जोड़े ने अपना घोंसला तोड़कर वृक्ष के नीचे फेंका और कबूतरी ने फिर कहीं से चिंगारी लेकर उस टूटे घोंसले पर रखकर आग जलाई । आग की तपन से उस शिकारी की कंपन कम हो गई । तत्पश्चात् उस कबूतर जोड़े ने उस शिकारी की भूख मिटाने के लिए स्वयं को आग में डाल दिया जिससे वह भूखा शिकारी अपनी भूख मिटा सके । कबूतर जोड़े ने अपना जीवन बलिदान कर भूखे की भूख मिटाई, उसे जीवन दान दिया । प्रेमियो ! पक्षी भी इतना परोपकार करते हैं तो मनुष्य को भी ऐसे परोपकार के कार्य करने चाहिए। परोपकारी मनुष्य अमर हो जाता है । उसका सदैव यश रहता है । जिसका जगत् में यश होता है वह ही अमर है आप भी परोपकार के कार्य कर मानव जीवन सफल करें ।

७ जनवरी पूज्य स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये । ११ जनवरी सायंकाल सत्संग कार्यक्रम में पूज्य स्वामीजी ने भारत के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके गुणों का वर्णन किया । १८ जनवरी सायं आश्रम में संत वाधूरामजी की पुण्यतिथि मनाई गई । पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि संत वाधूराम गृहस्थी होते हुए भी नाम स्मरण करते रहे। वे व्यवसाय करते हुए भी नाम जपते थे । प्रेमियो ! आप भी सांसारिक काम काज करते हुए प्रभु का स्मरण कर सकते हैं । संत वाधूराम प्रतिदिन पक्षियों को अन्न देते थे । आप भी प्रतिदिन पक्षियों को अन्न खिलाए, पिलाएं। चीटिंयों को शक्कर खिलाएं । प्राणी मात्र की सेवा में धन सफल करें तो आप प्रभु की आशीर्वाद के अधिक पात्र बनेंगे ।

२२-२३ जनवरी पूज्य स्वामीजी ने बड़ौदा में श्री नेणूमल किशोरी लाल के घर पर सत्संग हाल में अमृत वचनों की वर्खा करते हुए

परिवार को धन्यवाद दिया कि आप प्रतिवर्ष पूज्य पिता किशोरीलाल एवं माता हासीबाई की पुण्य तिथि के अवसर पर सत्संग का आयोजन करते हैं । श्री किशोरीलाल का पूज्य सत्गुरु टेऊँरामजी महाराज एवं पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से स्नेह सम्बंध था । आप भी संतों से वही प्रेम का नाता जोड़कर जीवन में स्मरण व सेवा की ज्योति जगाते रहे हैं । नियमित रूप से नाम स्मरण करें और दुखियों के दुख दर्द दूर करने का प्रयास करें । सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं-

कह टेऊँ सम वृक्ष के सिर पर सहके दूख ।
सब जीवों को दीजिये, सर्व भांति से सूख ।।

जम्मू-कश्मीर का राजा प्रतापसिंह वेश बदलकर प्रजा की देख-रेख करने जाता था । एक बार वह घूमता फिरता एक तालाब के पास आया । उसने देखा कि एक युवक किसी पीड़ा के कारण एक वृक्ष के नीचे सोया हुआ है । राजा ने स्वयं अपने हाथों से उस युवक की मालिश की और उस युवक से पूछा कि तुम्हें कहां जाना है? युवक ने कहा "मैं जम्मू-काश्मीर के महाराजा की महाराणी लक्ष्मीबाई की दासी का दामाद हूं । मैं उनके पास जा रहा था तो ठण्ड के कारण मुझे पीड़ा हुई ।" राजा ने उसे सांत्वना देते हुए कहा कि तुम घबराओ नहीं मेरे घोड़े पर चढ़ जाओ मैं तुम्हें गंतव्य स्थल पर पहुंचा दूंगा । राजा प्रतापसिंह उस युवक को अपने महल में लेकर आया। जहां उस युवक की सास भी खड़ी थी । वह अपने दामाद को राजा के साथ देखकर आश्चर्य में पड़ गई । उस युवक को भी यह पता नहीं था कि राजा स्वयं उसे महल में लाया है । जब उसे यह जानकारी हुई कि उसे मालिश करने वाला और घोड़े पर चढ़ाकर ले आने वाला स्वयं काश्मीर का राजा है तो वह युवक राजा से क्षमा याचना करने लगा । राजा ने कहा "मैं प्रथम मनुष्य हूं, फिर राजा । मनुष्य यदि दूसरे मनुष्य को व्ययित देखकर उसका दुख दूर नही करे तो वह मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं है । तुम जंगल में वृक्ष के नीचे पीड़ा से व्यथित थे । यदि मैंने तुम्हारी सेवा की तो मैंने मानवता का कर्तव्य पालन किया । राजा का काम है प्रजा की सेवा करना।" प्रेमियो ! आप भी ऐसे परोपकार के कार्य कर जीवन सफल करें ।

२७ जनवरी पूज्य स्वामीजी गोधरा पधारे और रात्रि को वहां उन्होंने सत्संग प्रवचन किया । श्री किशोरीलाल मयाणी गोधरा नगरपालिका के उपाध्यक्ष चुने गये थे, उनके सम्मान में २८ जनवरी माखीजाणी हाल में पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में उत्सव आयोजित किया गया। गोबिन्दराम रांवलाणी ने श्री किशोरीलाल की सेवाओं का उल्लेख किया। स्वामीजी ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा कि सिन्धी समाज के लिए यह गौरव की बात है कि हमारे किशोरीलाल उपाध्यक्ष चुने गये हैं। मुझे आशा है कि वे अधिक सेवा कर जीवन सफल करेंगे ।

सायं पूज्य स्वामीजी ने उपदेश करते हुए कहा कि आप संसार में अकेले आयें हैं और अकेले लौट जायेंगे । संसार की कोई वस्तु आपके साथ नहीं चलेगी । आप ऐसा समझते हैं कि आज घर में आपकी आवश्यकता है, आपके बिना घर परिवार का व्यवहार नहीं चल सकेगा, यह आपका भ्रम ही है । आपकी मृत्यु के पश्चात् धीरे धीरे आपको परिवार-जन भुला देंगे । जैसे आप अपने पूर्वजों को भूल गये हैं वैसे आपकी संतान भी आपको भुला देगी । आप व्यर्थ में ही मोह जाल में फंस गये हैं । एक दिन ये सांसारिक सम्बंध टूट जायेंगे । ये सब सम्बंध झूठे हैं, इनके लिए आप कुकर्म कर व्यर्थ अमूल्य जीवन गंवा रहे हैं ! आप जगत् के प्रपंच में इतने व्यस्त हैं कि आप प्रभु को भी भुला बैठे हैं । आप सांसारिक कर्तव्यों की पालना करते हुए अपने चित्त की वृत्ति प्रभु से जोड़ें । प्रभु एवं प्रभु के प्रेमियों के साथ स्नेह सम्बंध रखें ।

पूज्य बेकरी पंचायत, साधु वास्वाणी नगर, थाना की ओर से विश्व शान्ति के लिए २९ जनवरी से ३१ जनवरी तक सत्संग यज्ञ का आयोजन किया गया । इसी सत्संग यज्ञ के सम्बंध में पूज्य स्वामीजी २९ जनवरी सायं थाना पधारे । रात्रि को श्री लक्ष्मणदास पंजवाणी एवं अन्य प्रेमियो ने स्वामीजी का स्वागत किया । पूज्य सत्गुरु महाराज ने अमृत वचनों की वर्खा करते हुए कहा कि आप लोग प्रतिवर्ष सत्संग यज्ञ का आयोजन करते हैं इसलिए आप सब को धन्यवाद है । सत्संग भी भाग्यवान को मिलता है । कई लोग धन पदार्थों के पीछे दौड़ रहे हैं और दौड़-दौड़ कर दुखी हैं । जैसे प्यासा मृग सूर्य के प्रकाश के कारण बालू (रेत)

को जल समझकर भटक भटक कर प्राण गंवा देता है, वैसे ही मनुष्य जगत् के असत् पदार्थों को सत् समझ कर रात दिन उनकी प्राप्ति के लिए भटक रहा है। अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ गंवा रहा है। आप ऐसा नहीं करें। संतो का संग कर नाम स्मरण करें। संतों के संग से बुद्धि निर्मल होती है, सत् व असत् का ज्ञान होता है एवं आनंद की प्राप्ति होती है। इसीलिए किसी न किसी संत महात्मा की शरण लें।

३० जनवरी रात्रि पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि गोस्वामी संत तुलसीदासजी मानव जीवन का महत्व बताते हुए कहते हैं-

बड़े भाग मानुष तन पावा।

सुर दुर्लभ सब ग्रन्थन गावा॥

सभी धार्मिक ग्रन्थ, शास्त्र एवं देवतागण मनुष्य योनि की महिमा गाते हैं। आप का सौभाग्य है कि आपको मनुष्य का जन्म मिला है। भगवान ने जो यह पवित्र योनि दी है उसे कलंकित न करें। व्यसनों का परित्याग कर सत्कर्म करें। आपको यदि कोई खराब आम दे तो आप वह नहीं खायेंगे। वैसे ही यदि इस मनुष्य के चोले पर दाग लगे होंगे तो प्रभु आपके स्वीकार नहीं करेगा। इसलिए तन मन निर्मल रखें। आपका विचार और व्यवहार भी शुद्ध होना चाहिए तो प्रभु का आप ध्यान कर सकेंगे।

३१ जनवरी प्रातः श्री गुरुग्रन्थ साहब के पाठ की समाप्ति के पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने आशीर्वाद करते हुए कहा कि अब श्री गुरुग्रन्थ साहबजी से वचन निकला कि सत्य की कमाई करें। सत्य से प्रभु भी प्रसन्न होते हैं।

एक धनवान ने बहुत ही दान पुण्य के कार्य किए व बाग बगीचों का निर्माण करवाया। एक दूसरे गरीब ने अपने लिए दो रोटियां पकाई अचानक उसके सामने एक भूखी कुतिया आई। उसने एक रोटी उस कुतिया को खिलाई और एक रोटी स्वयं खाई। कुछ वर्षों पश्चात् धनवान व गरीब दोनों की मृत्यु हुई। चित्रगुप्त ने दोनों का कर्म लेखा देखकर निर्णय दिया कि धनवान को नर्क में और गरीब को स्वर्ग में भेजा जाय। धनवान ने प्रार्थना की कि उसने बहुत ही परोपकार के

कार्य किये हैं, उसे नर्क में क्यों भेजा जा रहा है? चित्रगुप्त ने कहा "धनवान ! तुमने गरीबों का रक्त चूसकर धन संग्रह किया । उस धन से बाग बगीचे बनवाये और परोपकार के कार्य किए इसलिए तुम नर्क के अधिकारी हो । यह गरीब दयावान है । उसने अपने परिश्रम की कमाई की रोटियां पकाकर स्वयं एक रोटी न खाकर भूखी कुतिया को रोटी खिलाकर उसके प्राणों की रक्षा की । यह पुण्य का काम किया, इसलिए वह गरीब स्वर्ग का अधिकारी है ।

प्रेमियो ! आप भी परिश्रम एवं सत्य की कमाई करें । अपने परिश्रम द्वारा अर्जित धन से दीन दुखियों व पशु पक्षियों की सेवा करें । दोपहर स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम लौट आये । रात्रि को स्वामीजी बजाज हाल सिन्धुनगर-२ में दयाल 'आशा' की सुपुत्री मीना के विवाहोत्सव में पधारे । उन्होंने सुपुत्री मीना एवं उसके पति हरिदयाल अटलाणी को आशीर्वाद दिया ।

१ फरवरी दोहपर को पूज्य स्वामीजी पिम्परी कालोनी प्रेम प्रकाश मंदिर पधारे । बहन सतीदेवी एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। रात्रि को उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि शुभ कर्म करने में विलम्ब न करें । यह शरीर क्षण भंगुर है, कब काल का संदेश आए कोई भरोसा नहीं । एक धनवान बीस हज़ार रुपये दान करने के लिए हरिद्वार गया। गंगा घाट पर ब्राह्मण ने उसे दान करने हेतु संकल्प लेने के लिए कहा। धनवान ने कहा कि प्रथम गंगा मैया में डुबकी मार आऊं तत्पश्चात् दान का संकल्प करूंगा । धनवान ने जैसे ही मां गंगा में डुबकी लगाई तो गंगा की लहरों की लपेटों में आकर डूब गया । वह दान हेतु जो धन लाया था वह उसके सम्बंधी अपने साथ लौटाकर ले गये । यदि उस धनवान ने दान करने का संकल्प पहले ले लिया होता तो उसका धन सफल हो जाता । प्रेमियो ! इसलिए दान करने में, शुभ कर्म करने में विलम्ब न करें । अपने श्वासों का सद्उपयोग करे । संत कबीरदासजी कहते हैं-

सांस सफल सो जानिये, जो सुमिरन में जाय ।
और सांस यूं ही गए, कर कर बहुत उपाय ॥

२ फरवरी पूज्य स्वामीजी ने उपदेश करते हुए कहा कि परमात्मा

को हर समय याद करें। परमात्मा ही आपके दुख दर्द दूर कर सकता है। श्री गुरु अर्जनदेव महाराजजी श्री सुखमनी साहब में फरमाते हैं-

टूटी गांढन हार गोपाल,
सर्व जीआं आपे प्रतिपाल।

प्रभु ही टटी हुई वस्तु को जोड़ सकता है। वह ही सब जीवों की रक्षा और पालना करता है। इसलिए प्रभु को प्रेम से प्रार्थना करें। प्रभु प्रेमियों की किसी न किसी रूप में आकर रक्षा करता है। एक बार भक्त नीलाम्बरदास जगदीशपुरी जा रहे थे। मार्ग में उन्हें गंगा नदी पार करनी थी, इसलिए वह नाव में चढ़े। नाविक दुष्ट प्रवृत्ति का था। उसने भक्त नीलाम्बरदास को अकेला समझकर, उन्हें नदी में डुबाकर उनका माल लूटना चाहा। भक्त की अंतरात्मा उस दुष्ट की दुर्भावना को समझ गई। भक्त ने नाविक से कहा कि नाव किनारे पर लौटा चलो, नाविक ने सुनी अनसुनी कर दी। नाविक नाव को बीच नदी में ले आया। भक्त ने नाव में प्रभु से रक्षा के लिए प्रार्थना की। उसी समय किसी अजनबी आदमी ने नाविक को किनारे से ललकारते हुए कहा "यदि तुम अपना भला चाहते हो तो शीघ्र ही नाव को किनारे ले आओ।" नाविक यह आवाज सुनकर घबरा गया। वह नाव को शीघ्र ही किनारे ले आया। भक्त नीलाम्बरदास सुरक्षित किनारे पर पहुंच गये। परमात्मा ने भक्त की रक्षा की। प्रेमियो ! आप भी प्रेम से प्रभु को प्रार्थना करें तो अवश्य ही परमात्मा आपकी सहायता करेगा, आपके जीवन की नैया पार लगाएगा।

३ फरवरी पूज्य स्वामीजी, स्वामी चन्दनप्रकाश महाराज के पुण्य तिथि उत्सव के सम्बंध में पूना पधारे। वहां स्वामी टेऊंराम प्रेम प्रकाश मंदिर में उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि संत अनन्तप्रकाश एवं प्रेमियों को धन्यवाद है कि वे बड़े उत्साह व श्रद्धा के साथ स्वामी चन्दनप्रकाशजी महाराज का पुण्य तिथि उत्सव मनाते हैं। स्वामी चन्दनप्रकाशजी, प्रेम प्रकाश मण्डल के प्रमुख संत थे। वे उदारचित एवं परोपकारी संत थे। संत कबीरदासजी कहते हैं-

कमल पत्र है साध जन, बसे जगत् के मांहि।
बालक केरी धाय ज्यों अपना जानत नांहि॥

संत संसार में कमल के पत्र अर्थात् कमल की भांति निर्लिप्त रहते हैं। जैसे धाय बालक को जन्म दिलवाकर चली जाती है, उस बालक को अपना नहीं समझती है, वैसे संत साधु भी धन और जगत् के पदार्थों को अपना नहीं समझते हैं। वे इसलिए जगत् में अनासक्त भाव से रहते हैं। स्वामी चन्दनप्रकाशजी महाराज के पास भी लाखों रुपये आते थे किन्तु वे उस धन को परोपकार के कार्यों में सफल करते थे। प्रेमियो ! आप भी सगे सम्बंधियों एवं जगत् के नाना पदार्थों को सत् समझकर, उन में आसक्ति रखकर भगवान को नहीं भूलें।

स्मरो स्मर स्मर सुख पावह,
कल कलेश तन मांहि मिटावह।

नाम स्मरण करने से ही आपको आनन्द की प्राप्ति होगी।

४ फरवरी पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि परमात्मा में पूर्ण विश्वास धारण कर नाम स्मरण करें तो आपके सब दुख दर्द दूर हो जायेंगे। सत्गुरु महाराजजी अपनी वाणी में कहते हैं-

टेऊँ भरोसे राम के; पूरन हो सब काम।
कष्ट विघ्न दुख दूर हो, मन में हो आराम॥

प्रेमियो ! भगवान में पूर्ण विश्वास रखकर उसे याद करें तो वह आपकी सुरक्षा एवं सहायता करेगा। उड़ीसा के गजपति वंश का राजा शक्तिहीन हो गया। यह देखकर कटक के बादशाह लालबेग ने उस पर आक्रमण कर उसका राज्य छीन लिया। लालबेग अत्याचारी था। वह एक विधवा ब्राह्मणी को भगा के लाया। उससे उसे एक बेटा हुआ। जिसना नाम सालबेग रखा। सालबेग बड़ा हुआ तो लड़ाई में उसे चोट लगी। बाप ने उसका इलाज किया किन्तु वह ठीक नहीं हुआ। लालबेग ने उस रानी के घर में जाना बंद कर दिया। उस रानी ने बीमार बेटे से कहा कि तुम बारह दिन श्रद्धा व विश्वास के साथ भगवान श्री कृष्ण का स्मरण करो तो अवश्य ही तुम्हारा दर्द दूर हो जायेगा। बेटा सालबेग मां की आज्ञा अनुसार रात दिन भगवान श्रीकृष्ण का नाम जपता रहा। बारहवें दिन रात्रि को भगवान श्रीकृष्ण ने उसे नींद में दर्शन देकर विभूति देते हुए कहा कि यह चोट ग्रस्त

स्थान पर लगाना तो ठीक हो जायेगा । सालबेग उसी समय नींद से जागा तो उसके हाथ में विभूति थी । उसने वह विभूति चोट ग्रस्त स्थान पर लगाई तो उसी समय ही वह ठीक हो गया, दर्द दूर हो गया । उसके खुशी की सीमा न रही । उसका भगवान श्रीकृष्ण में विश्वास बढ़ा । वह मुसलमान होते हुए भी भगवान श्रीकृष्ण का भक्त बन गया । भगवान जात-पात नहीं देखते, जो भी उसे श्रद्धा व विश्वास से याद करता है वह उसके दुख दर्द दूर करता है।

५ फरवरी पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि एक संत संसार में नाम का संदेश लेकर आता है और अज्ञान की नीद में सोए हुए लोगों को जागृत करता है । स्वामी चन्दनप्रकाशजी महाराज ने भी देश विदेश में प्रेमियों को जागृत कर नाम का संदेश दिया । संतों का काम ही नाम जपाना है । प्रेमियो ! आप भी अपने जीवन में नाम की ज्योति जगाएं । सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं-

राम नाम के प्रेम की पाती पढ़ो हमेश ।
कह टेऊँ मन शांत हो, छूटे पाप कलेश ।।

कई जिज्ञासु पूछते हैं कि नाम स्मरण में चित्त क्यों नहीं लगता? जब तक मन में काम क्रोध, लोभ मोह अहंकार की लहरें उठती रहेंगी तब तक नाम में चित्त की वृत्ति नहीं लगेगी । ये विकार भगवद् भजन में विक्षेप डालते हैं । पांव में कांटा लगता है तो चल नहीं सकते, आंखों में धूल पड़ जाती है तो ठीक तरह देख नहीं सकते वैसे ही जब तक मन में विकार होंगे तो प्रभु स्मरण में मन नहीं लगेगा, आध्यात्मिक पथ पर प्रगति नहीं कर सकेंगे । प्रेमियो ! वैराग्य एवं अभ्यास द्वारा मन का भटकना बन्द होगा और स्मरण में चित्त की वृत्ति लगेगी । मन नाम स्मरण में लगे न लगे आप नाम जपते रहें । बीमार को दवाई ज़बरदस्ती पिलाई जाये फिर भी उसका प्रभाव होगा । आप नाम से विमुख न हों । जैसे जैसे आप नाम स्मरण करेंगे वैसे आपका चित्त शुद्ध व निर्मल होता जायेगा ।

नाम जपै मन निर्मल होइ

जैसे-जैसे मन निर्मल होता जायेगा वैसे हम प्रभु के निकट होते जायेंगे ।

रोहड़ा ब्रादर मंडल का वार्षिक उत्सव ७ फरवरी रविवार प्रातः ११ बजे स्वामी टेउँराम आश्रम, सिन्धुनगर-५ में आयोजित किया गया। पूज्य स्वामीजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि प्रेमियो ! आप को धन्यवाद है कि आप प्रति वर्ष यह उत्सव आयोजित करते हैं। मेलाप में ही आनंद है। आज कई परिवारों में अशान्ति है, प्रेम व संगठन नहीं है ! गम खाकर भी आपस में एक हो जायें। यदि परिवार में अशान्ति होगी तो आई हुई लक्ष्मी भी लौट जायेगी। आपका आहार, विचार और व्यवहार शुद्ध होना चाहिए तब आप सुखमय जीवन बिता सकेंगे।

सायं कुर्ला कपलेश्वर महादेव मण्डल की ओर से शिवरात्रि उत्सव के सम्बंध में पूज्य स्वामीजी के नेतृत्व में जुलूस निकाला गया। रात्रि को पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन किया। ८ फरवरी रात्रि को भी स्वामीजी ने उपदेश देते हुए श्री नंदलाल बख्तियाणी एवं अन्य आयोजकों को धन्यवाद देते हुए कहा कि आप प्रतिवर्ष यहां शिवरात्रि उत्सव मनाते हैं, साथ ही साथ निष्काम भावना से जन सेवा करते हैं, भगवान आपका भला करेगा। आप भगवान शंकर को प्रेम से पुकारें, वे भोलानाथ हैं, अवश्य ही आपकी प्रार्थना सुनेंगे।

२० फरवरी से ४ मार्च वडाला बम्बई में सिन्धी ब्रादर मण्डल की ओर से पूज्य स्वामीजी के सत्संग प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया। रात्रि को सत्संग यज्ञ का शुभारंभ करते हुए पूज्य स्वामीजी ने कहा कि सत्संग की प्राप्ति भी भाग्यवानों को होती है। संतों महात्माओं के दर्शन से भगवान याद आते हैं। उनके सान्निध्य में जो समय बिताते हैं वह समय ही सफल है, शेष जीवन व्यर्थ है। संत कबीरदासजी अपनी वाणी में कहते हैं-

कबीर दर्शन साध के सहिब आवे याद।
लेखे में सोई घड़ी, बाकी के दिन बाद ॥

संतो के संग में अंत:करण शुद्ध होता है। यदि अन्त:करण शुद्ध है तो नाम स्मरण से भी आनन्द की प्राप्ति होती है। जैसे स्वस्थ मनुष्य यदि भोजन खाएगा तो उसे भोजन खाने में स्वाद भी आयेगा और शक्ति भी मिलेगी। वैसे ही यदि वही भोजन बीमार मनुष्य खाएगा

तो उसे भोजन स्वादिष्ट नहीं लगेगा । प्रेमियो ! आप भी स्वस्थ मन से नाम स्मरण करें तो आपको आत्मिक आनन्द की प्राप्ति होगी ।

२२ फरवरी रविवार सायं पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा-

कंचन दीआ कर्ण ने, द्रौपदी दीआ चीर ।
जो दीआ सो पाइया, ऐसे कहे कबीर ॥

आप जैसी वस्तु दान करेंगे, वैसी वस्तु ही आपको मिलेगी । दानवीर कर्ण ने स्वर्ण दान किया तो उसे स्वर्ण मिला, द्रौपदी ने वस्त्र दान किया तो भगवान ने उसकी रक्षा करते हुए अनन्त साड़ियाँ प्रदान की। प्रेमियो ! आप भी अन्न, धन, वस्त्र व विद्या दान करें । यदि आप लोग दान पुण्य करेंगे तो भगवान किसी न किसी रूप में आकर आपकी सहायता अवश्य करेगा । भदरेश्वर गांव में श्री जुगडू रहता था । वह उदारचित्त था, खूब दान करता था । कोई भी उसके द्वार पर जाता था तो वह उसकी झोली भर देता था । अचानक उसकी कमाई कम हो गई । उसने मन में विचार किया कि ऐसा न हो कि धन की कमी होने के कारण कोई उसके द्वार से निराश लौट न जाये । एक दिन उसके गांव से बकरियां जा रही थी । उसकी दृष्टि एक बकरी पर पड़ी जिसके गले में एक धागा था और उस धागे में एक मणि थी । श्री जगडू ने वह बकरी खरीद ली और उस बकरी को घर ले आकर वह मणी अपने पास रखी । वह साधारण मणी नहीं थी, परन्तु पारसमणी थी । इस पारसमणी के कारण श्री जुगडू फिर धनवान हो गया । वह उदारचित्त होकर दान करने लगा । परमात्मा ने किसी न किसी रूप में उसकी सहायता की । वह जीवन भर दान करता रहा । प्रेमियो ! आप भी शुद्ध व निष्काम भावना से दान करते रहें, तो आपके पास अन्न, धन व संतान की कमी नहीं होगी । कूप से कितना भी पानी निकालें किन्तु कूप का पानी कम नहीं होगा । दान करने से धन बढ़ता है ।

२२ फरवरी रात्रि को पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि संत क्षमाशील होते हैं । प्रेमियो ! आप भी क्षमाशील बनें । क्षमा मनुष्य का भूषण है । शिवाजी महाराज के गुरु संत रामदास दो तीन घरों से ही भिक्षा लेने जाते थे । उन्हें जो कुछ मिलता था, वे प्रसन्नचित्त

होकर खाते थे । एक बार प्रातः वे भिक्षा लेने एक घर में गये । उस घर की मालकिन उस समय कपड़े से घर के फर्श को साफ कर रही थी । वह स्त्री स्वभाव से क्रोधी थी । उसने वह पोंछने वाला कपड़ा समर्थ गुरु रामदास जी के मुंह पर फेंका । संत रामदासजी वह कपड़ा नदी के किनारे लेकर आये । उन्होंने वहां स्वयं भी नहाया और वह कपड़ा भी धो लिया । सायंकाल संत रामदासजी ने उस कपड़े की बाती बनाकर ज्योति जलाई और प्रभु से प्रार्थना की कि जैसे यह ज्योति प्रकाश दे रही है वेसे ही उस क्रोधित माता के मन में भी ज्ञान का प्रकाश हो । संत बुरे का भी भला करना चाहते हैं। सत्गुरु महाराजजी क्षमा की महिमा गाते हुए कहते हैं-

क्षमा जांके मन बसे, तिस हरि अन्तर नाहिं ।
कह टेऊँ सुर नर सभी दर्शन चाहत तांहि ।।

२३ फरवरी रात्रि को पूज्य स्वामीजी ने उपदेश करते हुए कहा कि जो मनुष्य आसक्ति के जाल से मुक्त हुआ है वह सदैव सुखी रहता है । जिसका भगवान में भरोसा है, नाम में विश्वास है उसे कोई भी परिस्थिति विचलित नहीं कर सकती । जो सांसारिक पदार्थों की कोई इच्छा नहीं करता, केवल प्रभु की भक्ति में तल्लीन रहता है, उसके लिए स्वयं परस्थितियां भी अनुकूल हो जाती हैं । जो मनुष्य भगवान का आधार लेता है, शरण लेता है वह निश्चिन्त रहता है । उसके लिए जिस वस्तु की आवश्यकता है, भगवान उसकी पूर्ण करता है।

२३ फरवरी १९८८ मंगलवार सायं ६ बजे श्रद्धेय सन्त स्वामी रविप्रकाशजी महाराज नश्वर देह त्यागकर अमरापुर धाम पधारे । आपकी अंतिम यात्रा में परम पूज्य संत मण्डल व कई प्रेमीगण सम्मिलित हुए। शनिवार के दिन अमरापुर स्थान पर एक शोक सभा आयोजित की गयी, जिसमें परम पूज्य सत्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज व उपस्थित सभी सन्त, प्रेमियों व सेवा मण्डलियों ने पूज्य स्वामी रविप्रकाशजी महाराज के जीवन के सम्बंध में विचार प्रकट किए एवं आपके कार्यों की सराहना की गयी ।

२४-२५ फरवरी रात्रि को पूज्य स्वामीजी ने अपने उपदेशों द्वारा मार्ग दर्शन किया । २६ फरवरी सायं दयावन्ती टीकमदास हाल में समाज

सेवक दादा गोपलदास जमियतराय के देहांत के कारण उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए शोक सभा का आयोजन किया गया । पूज्य स्वामीजी ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि श्री गोपालदास निष्काम समाज सेवक थे । उन्होंने सिन्ध में देश के स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भाग लिया । वे निष्ठावान कार्यकर्ता थे वे स्वयं तो सेवा करते थे किन्तु दूसरों को भी सेवा करने के लिए उत्साहित करते थे ।

२७ फरवरी प्रात: १० बजे पूज्य स्वामीजी श्री नंदलाल बदलाणी के घर बांद्रा पधारे । प्यारे नंदलाल एवं उसकी पत्नी चन्द्रा देवी ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत सत्कार किया । पूज्य स्वामीजी ने वहां सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि यदि आप आध्यात्मिक पथ पर उन्नति करना चाहते हैं तो विनम्र बने । भगवान को अभिमान नहीं भाता । आप अहंकार का त्याग कर सतों का संग करें तो आप को राम का रंग लग जायेगा । जब राम का रंग लग जायेगा तो जगत् के पदार्थ फीके लगेंगे और चित्त की वृत्ति भगवान से जुड़ी रहेगी ।

२७ फरवरी रात्रि पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा। प्रेमियो ! सदैव नाम स्मरण करें, किन्तु प्रात:काल का समय नाम स्मरण के लिए अत्याधिक महत्व पूर्ण हैं । हमारे ऋषि मुनियों ने प्रात:काल के समय को "ब्रह्म मुहूर्त" कहा है । ऐसा अमूल्य समय व्यर्थ नहीं गंवायें । प्रात:काल, अमृत वेले उठकर नाम स्मरण कर प्रभु से प्रार्थना करें तो प्रभु अवश्य ही कृपा करेंगे ।

२८ फरवरी रविवार सायं को पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि अपना व्यवहार एवं परमार्थ सुधारने के लिए केवल पुस्तकीय ज्ञान आवश्यक नहीं । शास्त्रों द्वारा प्राप्त ज्ञान शिक्षा को अपने जीवन में उतारें । जो भी कुछ आप पढ़ें, श्रवण करें उस पर चिन्तन कर तत्पश्चात् उस पर मनन करें । कुछ विद्वान अपनी विद्वता का प्रदर्शन करते हैं । फूलों की सुगंधि स्वयं आती है । एक ब्राह्मण काशी से विद्या प्राप्त कर लौट आया । उसने राजा को संदेश भेजा कि उसने श्रीमद् भगवद्गीता का गहन अध्ययन किया है । राजा ने उसे कहलवा भेजा कि तुमने श्रीमद् भगवद्गीता का अर्थ ही नहीं समझा है । वह ब्राह्मण राजा का यह उत्तर सुनकर फिर काशी गया । वहां श्रीमद् भगवद्

गीता पर विभिन्न टीकाओं का अध्ययन कर लौट आया । उसने पुनः राजा को सदेश भेजा कि वह अच्छी तरह गीता का अध्ययन करके आया है । राजा ने फिर उसे कहला भेजा कि तुमने अभी गीता के रहस्य को नहीं जाना है । तत्पश्चात् ब्राह्मण किसी महत्मा के श्री चरणों में बैठकर गीता का अभ्यास करने लगा । ऐसा करने से उसके मन में जो अहंभाव एवं धनसंग्रह करने की भावना थी वह नष्ट हो गई। वह वैराग्य वृत्ति से जीवन व्यतीत करने लगा । राजा को जब उस ब्राह्मण के इस मनः स्थिति का पता चला तो राजा स्वयं उस ब्राह्मण के पास गया और उसने उसे प्रणाम कर कहा कि अब आप ने गीता के रहस्य का ज्ञान प्राप्त किया है ।

प्रेमियो ! धार्मिक ग्रन्थों, शास्त्रों का श्रवण एवं पठन पाठन सरल है, परन्तु उनके सिद्धांतों पर चलना अत्यंत कठिन है । उन सिद्धांतों पर चलने से ही आनन्द की प्राप्ति होगी ।

१ मार्च रात्रि पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि एकाग्र-चित्त होकर नाम स्मरण करें और विकारों का त्याग करें । जब आप विकारों का त्याग करेंगे तब चित्त की वृत्ति भगवद् भजन में लगेगी। संत कबीरदासजी फरमाते हैं-

कामी क्रोधी लालची, इनते भक्ति न होय ।

कामी पुरुष, क्रोधी आदमी, लोभी व्यक्ति नाम स्मरण नहीं कर पाते। ये विकार आध्यात्मिक मार्ग में रुकावटें पैदा करते हैं । यदि आप भगवान का सहारा लेंगे तो विकारों रूपी दुश्मन भाग जायेंगे । प्रभु की शरण लेने से विकार मन से भाग जायेंगे । सिन्ध से एक प्रेमी हुकूमतराय ने पत्र लिखा "मेरा मार्गदर्शन करें कि कैसे मैं संसारी बंधनों से मुक्त होकर प्रभु प्राप्ति के पथ पर आगे बढ़ूं?" मैंने उसे उतर लिखा, "संसार से मुक्त होने के लिए प्रयास मत करो, तुम्हें जिस दिशा में आगे बढ़ना है उसी दिशा में आगे बढ़ो तो तुम्हें फिर जगत् दृश्यमान नहीं होगा। यदि तुम्हारी इच्छा प्रभु प्राप्ति की है तो उसी पथ पर प्रगति करो, और अन्य किसी बात का चिन्तन ही नहीं करो । किसी न किसी दिन तुम्हें अवश्य प्रभु की प्राप्ति होगी ।

३ मार्च पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज होली

दिन तुम्हें अवश्य प्रभु की प्राप्ति होगी ।

३ मार्च पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज होली का पर्व है । होली भक्त प्रह्लाद की स्मृति दिलाती है । भगवान ने भक्त प्रह्लाद को आग की लपटों से बचाया ! होलिका जल गई । भक्त प्रहलाद को पर्वत की शिखर से गिराया गया जिससे वह मर जाय, किन्तु भक्त प्रह्लाद राम नाम का उच्चारण करता हुआ ऐसे गिरा कि उसका बाल भी बांका न हुआ । उसका भगवान में पूर्ण विश्वास था । प्रभु ने उसकी रक्षा की । प्रेमियो ! आप भी प्रभु में पूर्ण विश्वास धारण करें तो प्रभु अवश्य ही आपकी रक्षा करेगा ।

४ मार्च सायं वडाला सिन्धी ब्रादर मण्डल की ओर से प्रवीण विद्यार्थियों को पूज्य स्वामीजी द्वारा पुरस्कार वितरण किये गये । पूज्य स्वामीजी ने आयोजकों मुखी चोइथराम बेगराज, श्री परियाणी, निहचलदास मंगतराम, जीअंदराम वाधवा, नंदीराम टहलराम एवं अन्य प्रेमियों को धन्यवाद देते हुए कहा कि आप लोगों न कितने न उत्साह व उमंग के साथ इस सत्संग यज्ञ का आयोजन किया । कई प्रेमियों ने सत्संग प्रवचन का लाभ प्राप्त किया । सत्संग यज्ञ का उद्धेश्य है नाम स्मरण करना और नाम स्मरण कराना । प्रभु को न केवल मुख से याद करें किन्तु मन मंदिर में भी उसका ध्यान करें । संत कबीरदासजी कहते है-

कबीरा मुख ते राम कहु, मन ही राम को ध्यान ।
राम का सुमरन ध्यान नित यही भक्ति यह ज्ञान ।।

राम नाम का स्मरण और उसका ध्यान ही सच्ची भक्ति व ज्ञान है । जैसे आप्र सांसारिक बातों के लिए समय देते हैं वैसे ही कुछ समय निकाल कर प्रभु का चिन्तन करें । प्रभू ने आपको धन दिया है उसका कुछ हिस्सा दीन दुखियों की सेवा में खर्च करें । आप की लाखों करोड़ों की सम्पति यहा ही रह जायेंगी । धन, पदार्थ वही सफल है, जो शुभ कर्मों में खर्च हो जाय ।

६ मार्च प्रातः ११ बजे पूज्य सत्गुरु महाराज स्वामी विवेकानन्द एज्यूकेशन सोसाइटी के स्कूल बिल्डिंग के लोकार्पण उत्सव सम्बन्ध में सिन्धी सोसाइटी चेम्बूर में उत्सव की अध्यक्षता की । स्पेन के प्रेम नारवाणी ने अपने पूज्य पिता श्री नथरमल ताराचन्द नारवाणी एवं माता

सीताबाई नारवाणी की पावन स्मृति में दस लाख रुपये स्कूल भवन के लिए दान रूप में भेंट किये । उसकी यह इच्छा थी कि पूज्य स्वामीजी इस उत्सव में सम्मिलित होकर आशीर्वाद प्रदान करें । महाराष्ट्र शासन के पूर्व मंत्री श्री हशु आडवाणी एवं श्री झमटमल वाधवाणी ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत किया। पूज्य स्वामीजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि प्रेम नारवाणी को धन्यवाद है जिसने पूज्य माता पिता की पावन स्मृति में इस विद्यालय को दस लाख रुपये दान में भेंट किये हैं । विद्यादान उत्तम दान है । हज़ारों विद्यार्थी इस विद्यालय से विद्या ग्रहण करके आदर्श नागरिक बनेंगे । श्री हशू आडवाणी, श्री झमटमल वाधवाणी एवं उसके साथियों को धन्यवाद है जो निष्काम भावना से विद्या की ज्योति जगा रहे हैं, सेवा के अन्य कार्य भी कर रहे हैं ।

प्रेम प्रकाश मंदिर गांधीनगर कोल्हापुर का वार्षिक उत्सव ९ मार्च से १३ मार्च १९८८ पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में मनाया गया । ९ मार्च प्रातः पूज्य स्वामीजी गांधी नगर पधारे । कई प्रेमियों ने पुष्प मालाओं से उनका स्वागत किया । पूज्य स्वामीजी ने धर्म ध्वजा फहराकर उत्सव आरम्भ किया । सायं ४ बजे पूज्य स्वामीजी के स्वागत में शोभा यात्रा निकाली गई । रात्रि को पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन किया । १० मार्च प्रातः पूज्य स्वामीजी, स्वामी सर्वानन्द स्कूल पधारे। भाई रमेश तनवाणी ने उनका स्वागत किया । उन्होंने विद्यार्थियों को कई शिक्षाप्रद क़हानियां सुनाकर मार्गदर्शन किया । १२ मार्च महिला मण्डल में पूज्य स्वामीजी ने उपदेश करते हुए कहा कि अपने पति, सास एवं ससुर की प्रेम व श्रद्धा से सेवा करें । आपके बालक भी भगवद् रूप हैं । उनकी भी प्रेम से पालना करें । मँण्डल की संचालिका बहन राणी दयालदास ने पूजनीय स्वामीजी का स्वागत करते हुए कृतज्ञता प्रकट की ।

१३ मार्च प्रातः पूज्य स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि मुखी राधाकृष्ण, ब्रजलाल, हरि-बली, रमेश तनवाणी एवं अन्य प्रेमियो को धन्यवाद है जो यहां सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज की ज्योति जगा रहे हैं । प्रेमियो ! आप बड़े उत्साह के साथ प्रति वर्ष यह उत्सव मनाते हैं । इसी उत्सव में संत महात्मा आकर आपको

नाम का अमृत पिलाते हैं । आपने चारों दिन प्रेम व श्रद्धा से संतों के वचनों को श्रवण किया है । संतों की शिक्षाओं के अनुरूप चलने का प्रयास करें श्री गुरुग्रन्थ साहब में गुरु महाराजजी फरमाते हैं-

मेरे माधवजी सत्संग मिले सो तरिया ।

गुरु प्रसाद परम पद पाया, सूखे काष्ट हरिया ।।

जिसे सत्संग प्राप्त होता है, वह भवसागर से तर जाता है । सत्गुरु की कृपा द्वारा ही परम पद को प्राप्त किया जा कता है । प्रभु की कृपा से सूखी लकड़ियां भी हरी हो जाती हैं । इसलिए प्रेमियो ! किसी न किसी परिपूर्ण गुरु की शरण लें जो आपका मार्गदर्शन करे । आप मोह ममत्व का परित्याग कर प्रभु के कमल चरणों में चित्त की वृत्ति जोड़ें । यह सारा संसार एवं संसार के पदार्थ प्रभु के ही हैं । जीव अज्ञान के कारण इन पदार्थों को अपना समझकर दुखी हो रहा है । प्रेमियो ! आप यदि सुखी होना चाहते हैं तो स्वयं को कर्ता न समझें। स्वयं को अतिथि समझकर संसार में रहें ।काम काज भी प्रभु का समझकर करें । यदि आप स्वयं को कर्ता नहीं समझेंगे तो दुखी नहीं होंगे । स्वयं को प्रभु का दास समझकर कर्त्तव्य पालन करें । सब प्रभु का समझकर सेवा करें । ऐसा करने से प्रभु भी प्रसन्न होंगे और जीव स्वयं भी आनन्द में रहेगा ।

१३ मार्च ११ बजे पूज्य स्वामीजी इचलकरंजी पधारे । ब्रजलाल हीराणी एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया । पूज्य स्वामीजी ने वहां प्रवचन करते हुए कहा-

क्षमा जांके मन बसे, तिस हरि अंतर नांहि ।

कह टेऊँ सुरनर सभी, दर्शन चाहत तांहि ।।

संत क्षमा का रूप होते हैं । इसीलिए संतों एवं प्रभु में कोई अंतर नहीं । देवता भी संतों का दर्शन करना चाहते हैं । प्रेमियो ! आप किसी भी क्षेत्र में उन्नति करें किन्तु सदैव क्षमाशील रहें । क्षमा मनुष्य का बड़ा गुण है ।

एक बार ब्रज में भक्त व्यास के पास एक साधु आया, उसने उनसे भोजन खिलाने के लिए कहा । भक्त व्यास ने उसे कहा कि भगवान

को भोग लगाकर भोजन ले आता हूं। भक्त व्यास ने भगवान की मूर्ति के सामने भोजन रखकर भोग लगाकर प्रार्थना की। शायद वह साधु बहुत भूखा था। भोजन मिलने में थोड़ा विलम्ब हानेके कारण वह भक्त व्यास पर क्रोधित हुआ। भक्त व्यास भगवान को भोग लगाकर भोजन साधु के पास ले आया। भक्त व्यास ने उस क्रोधित साधु से कहा कृपया क्षमा करें, आपको भोजन देने में थोड़ा विलम्ब हो गया। कृपया अब भोजन ग्रहण करें। शेष अपशब्द प्रसादी ग्रहण करने के पश्चात् मुझसे कहें, भक्त व्यास में कितनी न सहनशीलता थी। प्रेमियो ! आप भी क्षमाशील एवं सहनशील बनें।

१३ मार्च रात्रि पूज्य स्वामीजी बेलगाम पधारे। वहां उन्होंने अमृतवचनों की वर्खा करते हुए कहा कि आप यदि सुखी होना चाहते हैं तो दूसरों को सुखी करने का प्रयास करें। संत सत्पुरुष अपने सुख का कोई विचार नहीं करते हैं। वे पहले दूसरों को प्रसन्न करना चाहते हैं। एक बार रात्रि को संत एकनाथजी की कुटिया में चार ब्राह्मण आये संत एकनाथ ने उनका सत्कार किया। उसने पत्नी से भोजन तैयार करने के लिए कहा। सात दिन से वर्षा हो रही थी। घर में आग जलाने के लिए सूखी लकड़ियां भी नहीं थी। पत्नी गरजाबाई ने पति से प्रार्थना की कि सूखी लकड़ियां नहीं है आग कैसे जलाएं? तब एकनाथजी ने अपनी चारपाई को तोड़कर वे लकड़ियां पत्नी को आग जलाने के लिए दीं और कहा अब शीघ्र ही भोजन तैयार करो, गरजा ने भोजन तैयार कर ब्राह्मणों को खिलाया। संत एकनाथ ने अपने सुख का विचार न कर, आये हुए अतिथियों को प्रसन्न किया। प्रेमियो आप भी दूसरों को प्रसन्न करने का प्रयास करें।

१४ मार्च पूज्य स्वामीजी हुबली पधारे। वहां सिन्धी पंचायत ने उनका स्वागत किया। वहां उन्होंने दो दिन अमृत वचनों की वर्खा की। उन्होंने उपदेश करते हुए कहा कि अपनी संतान में शुभ संस्कारों का संचार करें। स्वयं भी प्रति दिन कुछ समय एकांत में भगवद् भजन करें और परोपकार के कार्य करें। तुमंगल नामक एक बालक जंगल में गौएं चरा रहा था। वहां से एक महात्मा जा रहा था। बालक के उस महात्मा को प्रणाम करते हुए प्रार्थना की कि अब उसकी मां

उसके लिए भोजन लेकर आयेगी, आप भी वह भोजन खाकर तत्पश्चात् प्रस्थान करें। महात्मा ने कहा ''बेटा ! तुम्हारी मां तो तुम्हारे लिए भोजन लेकर आयेगी, मेरे लिए भोजन तो नहीं ले आयेगी। बालक ने कहा ''स्वामीजी ! पहले आप भोजन खाना, मां मेरे लिए दूसरा भोजन लेकर आयेगी। संत बालक की विनती सुनकर रूक गया। जब बालक की माता भोजन लेकर आई, तब संत ने भोजन खाकर बालक को एक डंडा मारा। फिर उसे दूसरा डंडा मारा। यह देखकर माता बोली ''महाराज ! यदि मेरे बालक से कोई अपराध हो गया हो तो उसे क्षमा करें। बालक अनजान है। फिर उस महात्मा ने बालक को डंडा मारा, सात बार बालक को डंडा मारकर उसे वरदान दिया कि सात जन्मों तक तुम राजा बनोगे। यह वरदान देकर वह महात्मा चला गया। महात्मा की कृपा से उसी जन्म में ही वह बालक आगे चलकर राजा बना और अगले ६ जन्मों में भी वह राजा बना। बालक ने अपना भोजन स्वयं न खाकर संत को भोजन खिलाया तो सात जन्मों तक वह राजा बना। संत के डंडे से बालक के भाग्य उद्य हो गये। प्रेमियो ! संतो की हर बात में कोई न कोई रहस्य होता है। रोहड़ी (सिन्ध) में संत बाबा नेंभराज जब भी किसी को लाठी मारते थे तो उसकी इच्छा पूर्ण हो जाती थी।

१८ मार्च सायं ६ बजे पूज्य स्वामीजी, स्वामी तिलोकदासजी महाराज के जयन्ती उत्सव के सम्बंध में जयबाबा धाम पधारे। संत ब्रह्मदास ने उनका स्वागत किया। पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि वर्षों से मेरा स्वामी तिलोकदासजी महाराज से स्नेह सम्बंध रहा। उनके ज्ञान गर्भित प्रवचन श्रोताओं को प्रभावित करते थे, वे परोपकारी संत थे। संत ब्रह्मदास को साधुवाद है कि वह अपने गुरुदेव की ज्योति जगा रहा है। आप भी प्रभु को न भुलायें और साथ-साथ निष्काम सेवा कार्य करते रहें। संत ब्रह्मदास ने पूज्य स्वामीजी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि पूज्य स्वामीजी के जीवन कार्यों से मुझे बहुत प्रेरणा मिली है। उनके आशीर्वाद से मेरी उलझी हुई समस्याओं का समाधान हुआ है। पूज्य स्वामीजी ने संत ब्रह्मदास के कैसेट का विमोचन किया।

१९ मार्च चेटी चांद (गुड़ी पड़वा) के दिन पूज्य स्वामीजी ने चालीहे साहब के नये तालाब की भूमि पूजा की । उन्होंने चालीहे साहब के सेवकों और वीरुमल राघाणी को सेवा कार्य के लिए धन्यवाद दिया। सायं आश्रम पर पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज के पावन दिन वरुण देवता ने सिन्ध के नसरपुर नगर में श्री उडेरोलाल का अवतार धारण किया, आज सारे देश में सिन्धियत दिवस मनाया जाता है । प्रेमियो ! आप सिन्धी संस्कृति व सभ्यता की सुरक्षा करें। अपनी संतान को सिन्धी भाषा पढ़ाएं । श्री उडेरोलाल की उपासना करें ।

प्रेम प्रकाश मण्डल का वार्षिक उत्सव ३१ मार्च से ४ अप्रैल तक अमरापुर स्थान जयपुर में आयोजित किया गया । इसी उत्सव के सम्बंध में पूज्य स्वामीजी २५ मार्च अमरापुर स्थान जयपुर पधारे । ३० मार्च स्वामी गुरुमुखदासजी महाराज की पुण्य तिथि मनाई गई । स्वामीजी ने उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि स्वामी गुरुमुखदासजी प्रेम प्रकाश मण्डल के स्तम्भ थे । उन्होंने पूज्य सतगुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज के साथ भ्रमण कर नाम का प्रचार किया । भजन गाते गाते प्रेमियों को मंत्र मुग्ध कर देते थे । ३१ मार्च प्रात: स्वामीजी ने मंडल के संतों के साथ प्रेम प्रकाश ध्वजा फहराकर उत्सव का शुभारम्भ किया। सायं ४ बजे उनके नेतृत्व में जुलूस निकाला गया ।

१ अप्रैल सायं पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि पूज्य सतगुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज एक युग पुरुष थे। वे विद्वान, ज्ञानवान व स्वभाव से विनम्र थे । उनकी वाणी ज्ञान गर्भित है । आजकल अहं की भावना कितनी न बढ़ गई है । किसी को माया का अभिमान है तो किसी को पद का घमंड है । नम्रता मनुष्य का आभूषण है। श्री नाभा महाराज भक्तमाला की रचना कर रहे थे । जैसे माला में सुमरे दाना होता है । नाभादास भक्त माला के ऐसे महत्त्वपूर्ण भक्त की खोज में थे उन्होंने इसलिए भक्तों के भंडारे का आयोजन किया। कई संत सम्मिलित हुए । आये हुए भक्त जन अपने-अपने स्थान पर बैठे, भक्त तुलसीदासजी थोड़ा देरी से आए । श्री नाभादास ने उनसे नीचे पृथ्वी पर बैठने के लिए कहा और वह धरती पर बैठ गये ।

आये हुए अन्य संतो को खीर के प्याले दिये गये, किन्तु श्री नाभादास ने संत तुलसीदास को जूते में खीर डाल कर दी। इतने पर भी भक्त तुलसीदास ने अपना अपमान नहीं समझा। वह मुस्कराते हुए पृथ्वी पर भोजन ग्रहण करने लगे, तभी नाभादास ने उन्हें खीर खाने से रोका और उनके श्री चरणों पर गिर गये। भक्त तुलसीदासजी की विनम्रता देखकर भक्त नाभादासजी ने कहा कि भक्त माला के जिस सुमेर दाने की मैं खोज में था वह आज मुझे भक्त तुलसीदासजी के रूप में मिल गया। भक्त तुलसीदास संतों के शिरोमणि थे। प्रेमियो ! आप भी यदि आध्यात्मिक मार्ग में उन्नति चाहते हैं तो विनम्र बने। व्यवहार में नम्रता की आवश्यकता है।

चैत्र मेले के सुअवसर पर मासिक प्रेम प्रकाश सन्देश द्वारा "प्रेम प्रकाशी संत दर्शन अंक" प्रकाशित किया गया। इस विशेषांक का विमोचन पूज्य स्वामीजी के करकमलों द्वारा किया गया। इस अंक में प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय के प्रमुख पूज्य संतों के संक्षेप में जीवन चरित्र प्रस्तुत किये गये थे।

इस विशेषांक हेतु भेजे गये आशीष वचनों में पूज्य स्वामीजी ने कहा था कि अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि प्रेम प्रकाश मंडल के ६७ वें चैत्र मेले के सुअवसर पर "प्रेम प्रकाश सन्देश" का विशेषांक "प्रेम प्रकाशी सन्त दर्शन अंक" प्रकाशित कर रहे हैं।

संतों का जीवन प्रेरणा स्रोत है, इस अमृत तुल्य स्रोत से प्यास पूरी की जा सकती है। विश्व का इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब जब धर्म का पतन व अधर्म की अभिवृद्धि होती है तब तब परमेश्वर किसी न किसी संत के रूप में अवतार लेकर पतनोन्मुख धर्म की रक्षा करके पथभ्रष्ट हुए मानव को धर्म-मार्ग में लगाते हुए धर्म की स्थापना करता है।

विश्वास किया जाता है कि सन्तों के जीवन से प्रेरणा पाकर आज की युवा पीढ़ी सत्य और मर्यादा के मार्ग को अपनायेगी।

२ अप्रैल प्रातः पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि प्रातः काल का समय अमृत वेला का समय है, ऐसा अमूल्य समय व्यर्थ न गंवाए, नाम स्मरण करें। पूज्य सतगुरु महाराजजी भी अपनी वाणी

में फरमाते हैं-

अमृत वेले उठ के छोड़ कल्पना काम ।
कह टेऊँ हरि ध्यान धर सुमरो गुरु का नाम ।।

कर्म भी समय के अनुकूल करना चाहिए । जिसका समय गया उसके श्वास गये । व्यर्थ श्वास गये तो लोक परलोक दोनों गये । जो अमृत वेले उठकर नाम चिंतन करता है वह सदैव जागृत है । जो प्रात: काल में सोता है वह सदैव सोया हुआ समझें । सत्गुरु महाराजजी भी प्रात: काल उठकर नाम स्मरण करते थे । संत उसी समय जागृत होकर नाम स्मरण करते हैं जब साधारण लोग सोए हुए होते हैं । संत हरिचूराम साहिबजी के स्थान शाहपुर में डियालदास भंडारी था, एक रात वह तीन बजे नींद से जाग पड़ा, उसने देखा कि संत हरिचूराम साहिब भगवद् भजन में लीन हैं । वह उठकर फिर वहां घूमने लगा। उसकी आहट के कारण संत हरिचूरामजी ने आंखें खोलीं । डियालदास उनकी ओर देखने लगा । तब संत हरिचूरामजी ने उससे कहा कि बिल्ली की भांति क्यों झांक रहे हो । भक्ति ऐसे करें जैसे किसी को पता नहीं चले ।

भोजन, भजन व नारी, ये परदे के अधिकारी ।

प्रेमियो ! प्रात:काल के समय कुत्ते भी जागते रहते हैं । इसलिए आप भी ब्रह्म मुहूर्त में नींद से उठकर भगवद् भजन करें ।

२ अप्रैल सायं पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि आध्यात्मिक मार्ग में इन्द्रियों के सुख का त्याग करने से ही आगे बढ़ सकेंगे । भक्तजन भक्ति मार्ग में अड़चनों को दूर करते हुए अपने सुख का परित्याग करते हैं । बिलवामंगल ब्रज की ओर जा रहा था। मार्ग में वह एक सुन्दर स्त्री को देखकर उसके पीछे पीछे जाने लगा। वह स्त्री अपने घर चली गई, बिलवामंगल उस स्त्री के घर के बाहर खड़ा हो गया । उस स्त्री का पति भी भक्त था वह उसे घर के अन्दर ले गया उसने बिलवामंगल की प्रेम से सेवा की, उसे भोजन खिलाया। बिलवामंगल ने मन में विचार किया कि यदि वह अपनी आंखों से उस सुन्दर स्त्री को नहीं देखता तो उस में उसकी आसक्ति नहीं होती। वह भक्ति के मार्ग से विचलित हो गया । उसने मन ही मन में अपनी

भूल का अनुभव किया। उसने स्त्री से ही कहा कि दो बड़े कांटे लेकर आओ। बिलवामंगल ने उसी समय ही दोनों कांटे अपनी दोनों आंखों में डालकर स्वयं को प्रज्ञाचक्षु बना दिया। फिर वह सारा जीवन भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति में तल्लीन रहा और श्रीकृष्ण भक्ति के गीत गाता रहा।

प्रेमियो ! कर्म इन्द्रियों से सत् कर्म करें। जगत् के विभिन्न पदार्थ देखकर कभी भी मन फिसल सकता है इसलिए सदैव प्रभु से प्रार्थना करें कि प्रभु आपके श्रीचरणों में प्रीति बढ़ती रहे।

३ अप्रैल सायं पूज्य स्वामीजी ने उपदेश देते हुए कहा कि इस उत्सव में कई संत महात्मा पधारे हैं। हमारे लिये उनका दर्शन ही लाभकारी है। महात्मा, माता-पिता हैं। यदि कोई पीड़ा हो, दुख दर्द हो तो उनसे एकांत में उसका समाधान पूछना चाहिए। संतों को अपनी व्यथा सुनाने से हृदय का भार कम होता है। कहते हैं कि किसी वृक्ष से अपना दुख दर्द सुनाने से भी व्यथा कम होती है। एक प्रकार का बुखार आता था तो बुढ़िया कहती थी कि किसी वृक्ष से जाकर कहो कि मुझे नानी के पास जाना है,यह बुखार तुम ले लो। प्रभु की कृपा से इस प्रकार कहने से रोगी स्वस्थ हो जाता था। संतों को भी यदि अपनी व्यथा सुनायेंगे तो अवश्य ही हमारी व्यथा दूर हो जायेगी। जब संत, गुरु कृपादृष्टि करते हैं तो सब दुख दर्द व तनाव दूर हो जाते हैं। इसी लिए संतों महात्माओं की शरण लें।

४ अप्रैल प्रातः पूज्य स्वामीजी ने मण्डल के संतों के साथ उत्सव का समापन करते हुए कहा कि प्रभु की कृपा एवं पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज एवं पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की दया व कृपा से वार्षिक उत्सव समाप्त हुआ। सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने इस उत्सव को इसलिए शुरू किया कि एक ही स्थान पर प्रेमी आकर संतों के दर्शन करें, उनके ज्ञान गर्भित प्रवचन सुनकर चिन्तन, मनन करें। सभी संतों का मूल उद्देश्य है नाम स्मरण करना और नाम जपाना। पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज एवं सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने हजारों लोगों को अज्ञान की नींद से जागृत

कर स्मरण व स्नेह का संदेश दिया । आप भी यहां से नाम पदार्थ लेकर जायें । नाम की बड़ी महिमा है । सत्गुरु महाराजजी फरमाते हैं-

कह टेऊँ नित कीजिये, राम नाम से प्रेम ।
राम नाम के सम नहीं, जप तप संयम नेम ।।

प्रेमियो ! आप भी घर गृहस्थ में रहकर कुछ समय नाम स्मरण करें । संसार के काम काज कभी पूरे नहीं होंगे । राम नाम के समान और कोई साधन नहीं । इसीलिए सदैव नाम स्मरण करते रहें । श्री गुरु रामदास साहब आध्यात्मिक साधना करते प्रतिदिन, रात को अपनी चोटी कड़ी से बांध कर भगवद् स्मरण करते थे, जैसे नींद न आये रात का समय एकांत का समय होता है । उस समय भजन करने में कोई बाधा नहीं डाल सकता । इसलिए कई सत्पुरुष रात को जागरण कर नाम स्मरण करते हैं । श्री गुरु रामदास साहब वर्षों तक यह साधना करते रहे । जब उनको गद्दी पर विराजमान किया गया तब भी वे अपना वही नियम निभाते रहे । एक बार किसी प्रेमी ने उन्हें विनय की, कि अब आप गुरु हैं, अपने शरीर को इतना कष्ट नहीं दें । तब गुरु श्री रामदास साहब ने कहा कि जिस भक्ति साधना द्वारा मैंने इस पद को प्राप्त किया है उसी भक्ति साधना को कैसे छोड़ सकता हूं । प्रेमियो ! हम सब पर प्रभु की असीम कृपा है । उस प्रभु को नहीं भुलायें । उसे सदैव याद करें तो आपका कल्याण होगा ।

स्वामी मुरलीधरजी महाराज के पुण्यतिथि उत्सव के सम्बंध में पूज्य सत्गुरु महाराज ८ अप्रैल प्रेम प्रकाश मंदिर इन्दौर में पधारे । स्वामी गंगारामजी एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत सत्कार किया । पूज्य सत्गुरु महाराज ने एक सप्ताह तक अमृत वचनों की वर्खा की । एक दिन उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि व्यवहार में एवं परमार्थ में क्षमाशील बनें, क्रोध का त्याग करें और एक दूसरे को समझने का प्रयास करें। १५ अप्रैल पूज्य सत्गुरु महाराज ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि यदि तुम्हें कोई भी दुख दर्द हो, या तुम पर कोई विपत्ति आये तो यह दोहा बार बार उच्चारण कर प्रभु से प्रार्थना करना-

सेवक की रक्षा करें, सेवक के प्रतिपाल।
सेवक की बाहर चढ़े दादू दीन दयाल ।।

उस युवक ने संतो के इन वचनों में पूर्ण विश्वास रखा। जब भी कोई दुख या आपत्ति आती थी तो वह युवक उपर्युक्त दोहे का उच्चारण करता था और उसके कष्ट क्लेश दूर हो जाते थे। एक बार ठण्ड की मौसम में वह युवक अपने खेत की देख रेख कर रहा था तो अचानक भारी वर्षा होने लगी, उसकी फसल भी तैयार थी, वह घबराया नहीं। उसने उपर्युक्त दोहे का बार बार स्मरण किया। समीप के खेतों की फसल नष्ट हो गई किन्तु इस युवक के खेत में फसल को कुछ भी हानि नहीं हुई। उसकी प्रार्थना का यह परिणाम हुआ। इससे उसका संतों के वचनों में विश्वास बढ़ा। प्रभु ने उसकी रक्षा की। प्रेमियो ! आप भी संतों एवं शास्त्रों के वचनों में पूर्ण विश्वास धारण कर उनके अनुकूल चलेंगे तो आप की भी प्रभु एवं सत्गुरु महाराज सहायता करेंगे।

बड़ौदा में स्वामी उद्धवदासजी ब्रह्मचारी ने गीता ज्ञान यज्ञ का आयोजन किया। इसी उत्सव के सम्बंध में पूज्य सत्गुरु महाराज १७ अप्रैल बड़ौदा पधारे। स्वामी उद्धवदासजी एवं प्रताप रामचन्दाणी ने उनका स्वागत सत्कार किया। पूज्य सत्गुरु महाराज ने प्रवचन करते हुए कहा कि श्रीमद् भगवत् गीता भगवान श्री कृष्ण की वाणी है। उनके सिद्धांतों एवं शिक्षाओं के अनुरूप चलने से व्यवहारिक एवं आध्यात्मिक उन्नति होती है। भगवान की इस अमृत तुल्य वाणी का प्रेम व श्रद्धा से अभ्यास एवं श्रवण करें। इसका पठन व श्रवण तो लाभकारी है, किन्तु मनन तो अत्यन्त कल्याणकारी है।

एक राजा ने अपने दो कर्मचारियों को किसी काम के लिए दूसरे नगर भेजा। कुछ दिनों के पश्चात् राजा ने दोनों कर्मचारियों को पत्र लिखे, उन में उन्हें अलग अलग आदेश दिये थे। एक कर्मचारी ने राजा के लिखे हुए आदेश का पालन किया और दूसरा कर्मचारी राजा के उस पत्र को धूप दीप देने लगा, उसे नमस्कर करने लगा। जब दोनों कर्मचारी राजा के पास लौट आये तब राजा ने दोनों से समाचार पूछा कि उन्होंने उनके पत्र में लिखे आदेश का कहां तक

पालन किया। जिसने राजा के आदेश के अनुसार कार्य किया था, राजा ने उसे विशेष पद दिया और जिसने राजा का पत्र मस्तक पर रखकर, उसकी केवल पूजा की राजा ने उसे नौकरी से निकाल दिया। प्रेमियो ! आप शास्त्रों का अध्ययन करें पूजा उपासना करें किन्तु शास्त्रों के अनुरूप चलने से ही आप लाभान्वित होंगे । संत उद्धवदासजी को धन्यवाद है, कि वह प्रति वर्ष इस गीता ज्ञान यज्ञ का आयोजन करता है ।

२५ अप्रैल रात्रि पूज्य स्वामीजी ने संत खानूरामजी के पुण्यतिथि उत्सव के सम्बंध में हंसधाम, सिन्धुनगर-२ में सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि संत खानूरामजी के स्वर में माधुर्य था । उन्हें कई संतों की वाणी कंठस्थ थी । वे परोपकारी संत थे । प्रेमियों आप भी उनकी भांति जीवन में नाम स्मरण एवं परोपकार की ज्योति जगाएं ।

२६ अप्रैल प्रातः ११ बजे उसी स्थान पर उत्सव का समापन करते हुए पूज्य स्वामीजी ने संत खानूरामजी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की । २८ अप्रैल स्वामीजी पुनः बड़ौदा पधारे । वहां स्वामी प्रेमदास थल्हे वाले संतों के पुण्य तिथि उत्सव के सम्बंधमें उन्होंने दो दिन अमृत वचनों की वर्खा की । संत वासुदेव एवं दादा लीलाराम पुरस्वाणी ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत करते हुए आभार माना । पूज्य स्वामीजी ने कहा कि आपको धन्यवाद है कि आप प्रतिवर्ष उत्साह के साथ अपने सत्गुरु स्वामी प्रेमदासजी महाराज का पुण्य तिथि उत्सव मनाते हैं । सत्गुरु की अनुकम्पा आवश्यक है । पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज अपनी वाणी में फरमाते हैं-

सत्गुर की कृपा बिना, मिले न मोक्ष द्वार ।
कह टेऊँ गुर शरण ले, अपना करो उद्धार ।।

गुरु की कृपा से ही जीव आवागमन से मुक्त होता है, कार्य सिद्धि होती है । इसलिए श्रद्धा के साथ गुरु की शरण लें । स्वामी प्रेमदास ने कई प्रेमियों को नाम का संदेश देकर उनका मार्गदर्शन किया । आप भी नाम स्मरण व परोपकार के कार्य कर जीवन सफल बनायें ।

३० अप्रैल सायं ४ बजे वर्ल्ड सिन्धी कांग्रेस ने इंडियन मर्चेन्ट चेम्बर हाल, चर्चगेट, बम्बई में सभा का आयोजन किया । पूज्य स्वामी जी

उस सभा में पधारे । श्री कुन्दनदास तोतलदास रोहड़ा ने उनका स्वागत सत्कार किया । वहां पूज्य स्वामीजी ने व्याख्यान करते हुए कहा कि यदि आप सरकार से अधिकार लेना चाहते हैं तो प्रथम आपसी मतभेदों को भुलाकर एक बनें । एक दूसरे के लिए सद्भावना रखें। जहां एकता है वहां आनन्द है । एक दूसरे को सहयोग देकर सिन्धी जाति व राष्ट्र के लिए समर्पित भाव से सेवा करें ।

१ मई प्रातः ११ बजे पीरगोठ पंचायत का वार्षिक उत्सव साधु वास्वाणी नगर, थाणा में आयोजित किया गया । उसी अवसर पर स्वामीजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि आजकल परिवारों में अशान्ति है, देश में अशान्ति है । परिवारों में शान्ति का वातावरण उत्पन्न करें। संतान में धार्मिक संस्कारों के बीज बोएं । जहां शान्ति है, लक्ष्मी का वास भी वहां होता है । अशान्ति में बीमारियां भी प्रवेश करती हैं। आपस में मिल जुल कर रहें ।

७ मई दोपहर पूज्य स्वामीजी चालीसगांव पधारे । सिन्धी पंचायत ने उनका स्वागत किया । वहां स्वामीजी ने उपदेश करते हुए कहा कि आप एकता के सूत्र में बन्ध जायें । एकता में ही शक्ति व आनंद है । अपना काम काज करते हुए नाम स्मरण करें तो आपका कल्याण होगा । उसी दिन दोपहर तीन बजे पूज्य स्वामीजी कुमारनगर धुलिया प्रेम प्रकाश मन्दिर पहुंचे । संत पहिलाजप्रकाशजी, श्री मेंघराज रेलन ने उनका स्वागत सत्कार किया । वहां पूज्य स्वामीजी ने मंदिर के वार्षिक उत्सव एवं संत हरिप्रकाशजी के पुण्य तिथि उत्सव के सम्बंध में तीन दिन अमृत वचनों की वर्खा की । पूज्य स्वामीजी ने उपदेश देते हुए कहा कि सत्य बोलना धर्म है। सत्य बोलने से आपकी आध्यात्मिक शक्ति बढ़ेगी । सत्य बोलना भी एक तपस्या है । पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज भी सत्य की महिमा गाते हुए कहते हैं-

सत्य तुल्य नहीं धर्म पुन, योग यज्ञ तप जाप ।
कह टेऊँ नहीं जगत् में झूठ तुल्य को पाप ।।

दसवीं सदी में ईरान के एक गांव में हजरत सैयद आबी स्यालह रहता था । उसके बेटे अब्दुलकादिर को पढ़ने का शौक था । गांव में छोटा सा मदरसा था । पहले वह उस मदरसे में पढ़ा । कुछ समय

के बाद उसका बाप संसार से चल बसा । बगदाद में बड़ा मदरसा था, जहां पढ़ने की अच्छी व्यवस्था थी । बालक अब्दुलकादिर ने अपनी मां से कहा कि वह उसे बगदाद में पढ़ने की अनुमति दे । उस समय ईरान में अधिकतर ऊंट की सवारी होती थी । कोई अकेला आदमी सफर नहीं करता था । दस बारह लोग मिलकर ऊँटों द्वारा सफर करते थे । कुछ व्यापारी बगदाद व्यापार के लिए जा रहे थे। अब्दुलकादिर आगे की पढ़ाई के लिए उनके साथ बगदाद जाने के लिए तैयार हुआ । उसकी मां ने उसे दुआ देते हुए कहा "बेटा ! "सदैव सत्य बोलना, सत्य बोलने से खुदा खुश होते हैं।" अब्दुलकादिर मां को सजदा कर उन व्यापारियों के साथ बगदाद के लिए निकल पड़ा । रास्ते में डाकुओं ने उन व्यापारियों से सब कुछ लूट लिया। बालक अब्दुलकादिर डाकुओं को देखकर उनसे भयभीत नहीं हुआ। डाकुओं के सरदार ने बालक अब्दुलकादिर से पूछा कि तुम्हारे पास क्या है? बालक ने कहा "मेरे पास चालीस अशर्फियां हैं । सरदार ने फिर पूछा वे अशर्फियां कहां हैं? अब्दुलकादिर ने चालीस अशर्फियां निकालकर उसे दे दीं । डाकुओं के सरदार ने फिर बालक से कहा कि तुम्हें पता चल गया कि हम डाकू हैं और अशर्फियां तुमसे लूट लेंगे, फिर भी तुमने उन्हें बिना छिपाये अपनी अशर्फियां हमें क्यों दे दीं? बालक अब्दुलकादिर ने कहा कि आपने मुझ से पूछा कि मेरे पास क्या है? मैंने सत्य सत्य बता दिया । मैं पढ़ाई के लिए बगदाद जा रहा हूं, इसलिए मेरी मां ने मुझे ये अशर्फियां खर्च के लिए दी थीं । मां ने मुझे हिदायत की थी कि "बेटा ! सदैव सत्य बोलना सत्य बोलने से खुदा खुश होते हैं । खुदा तेरा निगेहबान होगा ।" बालक अब्दुलकादिर का यह जवाब सुनकर डाकुओं ने उसे न केवल वे चालीस अशर्फियां लौटा दीं किन्तु बालक को बासलामत बगदाद पहुंचा दिया । प्रेमियो ! आप भी अपने जीवन में स्वयं भी सत्य बोलें और संतान में भी सत्य के बीज बोएं तो परमात्मा प्रसन्न होंगे ।

पूज्य स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि सत्संग में नियमित रूप से आकर लाभ प्राप्त करें । संसार के काम कभी पूरे नहीं होंगे । हमारी आयु पूरी हो जायेगी फिर भी हमारी इच्छाएं पूरी नहीं होंगी । इसलिए मोह की नींद से जागृत होकर नाम स्मरण

करें, दीन दुखियों एवं पशु पक्षियों की सेवा करें।

१० मई स्वामीजी ने मालेगांव में प्रवचन करते हुए कहा कि श्रद्धा व प्रेम से नाम स्मरण करें। नाम स्मरण से लाभ ही लाभ है, कोई हानि नहीं। नाम स्मरण से कई शारीरिक एवं मानसिक दुख दर्द दूर हो जाते हैं। पूज्य सतगुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज अपनी वाणी में कहते हैं-

कह टेऊं नित कीजिये राम नाम से प्रेम।
राम नाम के सम नहीं जप तप संयम नेम॥

मनुष्य योनि होते हुए और शास्त्रों का अभ्यास करते हुए भी यदि नाम से विमुख रहें तो जीवन व्यर्थ है! काशी में एक व्यक्ति राम नाम का उच्चारण करते कहता था कि मैं पापी हूं, मुझे भिक्षा दें। एक बार संत तुलसीदास जी ने उसकी यह करुण आवाज सुनकर उसे प्रभु का प्रसाद दिया। इस कारण कुछ पंडित संत तुलसीदास जी पर क्रोधित हुए। उन्होंने भक्त तुलसीदास जी से कहा कि तुमने एक पापी को भगवान का प्रसाद देकर पाप किया है। योग्य व्यक्ति को ही प्रभु का प्रसाद देना चाहिए। भक्त तुलसीदास ने कहा कि जिस व्यक्ति को मैंने प्रसाद दिया, उसने बार-बार प्रभु के पवित्र नाम का उच्चारण किया आप उसे पापी नहीं कहें। पापी व्यक्ति भी नाम उच्चारण से भगवान के दया का पात्र हो सकता है, इसलिए आप क्रोधित मत हो, मैंने उसे प्रसाद देकर कोई अपराध नहीं किया। पंडितों ने कहा कि भगवान विश्वनाथ का बैल नंदी यदि इस दुष्ट के हाथ का प्रसाद पाए तो हमें निश्चय होगा कि वह व्यक्ति पापी नहीं पवित्र है। तत्पश्चात् उसी व्यक्ति को विश्वनाथ मंदिर में ले गये। वहां जब उस व्यक्ति ने प्रभु का प्रसाद उस नंदी बैल को दिया तो वह पत्थर का नंदी प्रसाद पाने लगा। यह देखकर पंडित लोग आश्चर्य में पड़ गये! जिस व्यक्ति को पंडित पापी समझकर भक्त तुलसीदास पर भी क्रोधित हुए वह व्यक्ति भगवान शंकर की दया का पात्र बन गया। प्रेमियों! नाम स्मरण से पापी व्यक्ति भी भक्त बन सकता है। राम नाम में वह जादू है कि वह पापी को भी पुण्यात्मा बना देता है।

कवि पहिलाजराम के पुण्य तिथि उत्सव के सम्बंध में स्वामीजी

१२ मई देवलाली पधारे । संत नारायणप्रकाश एवं अन्य संतों ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत किया । स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि कवि पहिलाजराम सिन्ध के रत्न थे । न केवल सिन्धी गायक किन्तु साधारण से साधारण व्यक्ति भी उनके भजन गाते थे । वे सत्संग प्रवचन करते हुए सामाजिक कुप्रथाओं का खंडन भी करते थे। प्रेमियों ! आज एकादशी का पवित्र दिन है, रात्रि को आप जागरण कर नाम का स्मरण करें ।

१२ मई स्वामी टेऊंराम आश्रम सिन्धुनगर-५ में पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में जनता जनार्दन परिषद् की सभा हुई । उन्होंने आशीर्वाद देते हुए कहा कि लोकसेवा के कार्य करते रहें, प्रभु किसी न किसी रूप में आपको सहायता करता रहेगा । आप केवल निष्काम भावना से कार्य करें । देने वाला दाता "राम" है, आप तो केवल निमित्त मात्र हैं । विशाल हृदय होकर पीड़ितों की सेवा करें । १७ मई प्रातः स्वामीजी स्वामी टेऊंराम मण्डली सिन्धुनगर-२ में पधारे । श्री जीवणदास आहूजा, बहन मीरा एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया । पूज्य स्वामीजी ने अमृत वचनों की वर्खा की ।

खार सिन्धी सेवा मण्डल ने १८ मई से २४ मई तक दयावन्ती टीकमदास हाल खार बम्बई में पूज्य स्वामीजी ने एक सप्ताह तक ज्ञान व प्रेम की गंगा प्रवाहित की । १८ मई को उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि लाखों लोग रात दिन अपने व्यवसाय (धंधे) में व्यस्त हैं। साधारण लोग धन में सुख समझते हैं किन्तु धन पदार्थों में सुख नहीं। आपको कई धनवान मिलेंगे तो मानसिक व शारीरिक पीड़ा से पीड़ित हैं । रात दिन चिन्ता व तनाव के कारण संतुलन खो बैठते हैं । यदि आप आनन्द चाहते हैं तो नाम स्मरण करें दीनदुखियों की सेवा करें और संतों का संग करें । सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं-

कह टेऊं इस जगत् में जो चाहो आराम ।
साध संग नित ही करो, सुमरो हरि का नाम ।।

प्रेमियो ! सत्संग में आकर संतों से नाम दान मांगो । अन्य इच्छाओं के कारण जीव भटकता रहता है । प्रुभ के दर्शन की प्यास बढ़ाओ, गोबिन्द के गुण गाओ ।

१९ मई पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि नाम स्मरण के साथ साथ परोपकार के कार्य करते रहें। प्रतिदिन कोई न कोई उपकार का कार्य करें। वह दिन आपका सफल है जिस दिन आप किसी न किसी की सेवा करते हैं। पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज भी फरमाते हैं-

परोपकारी पुरुष जे जीवन सफला तांहि।
कह टेऊं धन धन वही, भल आये जग मांहि॥

जयपुर के रहने वाले संत कृष्णदास वनमें भगवद्भजन में तल्लीन थे तो एक भूखा शेर उनके सामने आ खड़ा हुआ। संत कृष्णदास ने अपनी टांग का हिस्सा काट कर उस भूखे शेर को खाने के लिए दिया। संत का ऐसा उपकार का कार्य देखकर भगवान ने उसी समय उन्हें साक्षात् दर्शन देकर, स्वस्थ कर दिया। प्रभु के भक्त तो अपने खाने पीने एवं स्वास्थ्य की भी चिन्ता नहीं करते हैं, प्रभु स्वयं आकर उनकी देख रेख करता है। प्रेमियो ! आप भी परोपकार के कार्य में जुटे रहें।

२० मई पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि क्षमा बड़ा गुण है। व्यवहार में एवं परमार्थ में यह गुण बड़ा सहायक होता है। पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज भी फरमाते हैं-

क्रोध त्याग क्षमा धरे सो है पूजन योग।
कह टेऊं तांह दरसते मिट जावत सब रोग॥

संतों ने अपने जीवन में इस गुण को अपनाया है। क्रोध एवं अहंकार मनुष्य को गिराता है, क्षमा मनुष्य को महान बनाती है। एक बार ऋषि दुर्वासा द्वारिका में भ्रमण करते करते ऊंची आवाज से बोलने लगे "मैं छोटी सी गलती के कारण भी क्रोधित होता हूं, मुझे कोई आश्रय देने वाला है?" साधारण लोग उनके क्रोध से भयभीत थे। किसी ने उन्हें आश्रय नहीं दिया, केवल भगवान श्रीकृष्ण ने उन्हें रहने के लिए, उनकी सेवा करने के लिए अपने यहां आश्रय दिया। ऋषि दुर्वासा ने भगवान श्रीकृष्ण से कहा कि मैं एक वृत धारण करुंगा, उसके लिए कोई भी कमी नहीं होनी चाहिए। भगवान ने कहा कि कोई भी कमी नहीं होगी। ऋषि दुर्वासा भगवान श्रीकृष्ण के यहां

ठहर गये । किसी दिन वे एक सौ व्यक्तियों का भोजन ग्रहण करते तो किसी दिन एक व्यक्ति जितना भोजन खाते थे । वे कभी रोते थे तो कभी हंसते थे । एक दिन उन्होंने कुछ कन्याओं को भस्म कर डाला । एक दिन वे भगवान श्रीकृष्ण एवं उनकी पत्नि रुकमणी को रथ से बांधकर रथ चलाने लगे । भगवान श्रीकृष्ण ऋषि दुर्वासा का ऐसा व्यवहार देखकर भी कभी अप्रसन्न नहीं हुए । श्रीकृष्ण स्वयं भगवान होते हुए भी कितने न क्षमाशील थे । प्रेमियो ! आप भी जीवन में क्षमाशील बनें ।

२२ मई प्रातः कोलीवाड़ा, बम्बई में पूज्य स्वामीजी ने श्री माधवदास हेमनदास वाधवा के नये गृह में गृह प्रवेश कर आशीर्वाद देते हुए निम्न भजन गाया-

सत्गुर तेरा हो रखवारा,
औखी घड़ी न देखन देवे, सत्गुर दया भंडारा ।
१. आगे राखे पीछे राखे, अर्द्ध उर्द्ध गुर राखे,
इर्द गिर्द गुर तुझको राखे, राखे गुर चौधारा ।
२. दिन को राखे, निश को राखे, शाम सुबह गुर राखे,
आठ पहर गुर तुझको राखे, राखे गुर हरिवारा ।
३. जल में राखे थल में राखे नभ में भी गुर राखे,
तीन लोक में निश्चे होवे, राखा गुरु तुम्हारा ।
४. तन को राखे, धन को राखे, मन बुद्धि को गुर राखे,
सब वस्तुति को सत्गुर राखे, सद्गुर पे बलिहारा ।
५. पाप से राखे, ताप से राखे, शेर सांप से राखे,
सब विघ्नों से हरिदम राखे कहे टेऊं गुर प्यारा ।

२४ मई रविवार सायं पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि सत्संग का मूल उद्देश्य है नाम स्मरण करना । आप सांसारिक कर्तव्यों का पालन करते हुए प्रुभ को नही भूलें । यदि आप प्रभु को याद करेंगे तो प्रभु भी आपको याद करेंगे । उनकी कृपा की वर्षा सदैव होती रहती है । भगवान को निष्काम भावना से याद करें तो प्रभु आपकी अवश्य सहायता करेगा । भक्त जब समर्पित भाव से स्मरण

करता है तो भगवान स्वयं प्रकट होकर उसे दर्शन देता है । सत्गुरु महाराज अपनी वाणी में फरमाते हैं-

हरिजन के पीछे फिरूं, सुन नारद यह गाथ ।
कह टेऊं निज भक्त के, सदा रहूँ मैं साथ ।।

भगवान, ऋषि नारद से कहते हैं कि मैं अपने भक्तों के पीछे-पीछे फिरता रहता हूं । मैं सदैव उनके साथ हूं । एक बार भगवान शंकर पार्वती के साथ कहीं जा रहे थो तो मार्ग में वे दो स्थानों पर रुक गये और उन्होंने प्रणाम किया । पार्वतीजी ने पूछा "महराज ! आप रास्ते में दो बार रुक गये और वहां प्रणाम किया, वहां तो कोई मंदिर भी नहीं था । आपने ऐसा क्यों किया?" भगबान शंकर ने कहा "पार्वती ! जिस स्थान पर मैं पहले रूक गया था और प्रणाम किया वहां मेरे भक्त ने दस हजार वर्ष भक्ति की थी, इसीलिए उस स्थल का मैंने प्रणाम किया । दूसरे स्थान पर मैं इसलिए रूक गया, कि वहां मेरा दूसरा भक्त दस हजार वर्ष भक्ति करेगा, इसलिए वहां मैंने प्रणाम किया ।" भक्ति की इतनी महिमा सुनकर माता पार्वती अत्यन्त प्रभावित हुई । भगवान न केवल अपने भक्तों को, परन्तु भक्तजन जहां भक्ति करते हैं उन स्थलों को भी इतना महत्व देते हैं । प्रेमियों ! आप भी सांसारिक झंझटों से समय बचाकर भगवान भजन करें । गोविन्दराम बूलचन्दाणी चन्द्रू पहूजा, हीरानन्द रोहड़ा, गोविन्दराम दुलहनोमल एवं अन्य प्रेमियों को धन्यवाद है, जिन्होंने इस सत्संग यज्ञ का आयोजन किया ।

२५ मई सोमवार सायं को प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर ५ में पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज देवयानी पद्मा एकादशी है । आज के दिन भगवान विष्णु सोते हैं और कार्तिक शुक्ल पक्ष हरिप्रबोधनी एकादशी के दिन भगवान जागते हैं । चतुर्मास का वृत आज से ही आरंभ होता है । जो प्रेमी ब्रह्मचर्य का पालन कर चतुर्मास का वृत धारण करते हैं, वे भगवान को अत्यन्त प्रिय लगते हैं । देवता भी उन्हें प्रणाम करते हैं । चतुर्मास में जो प्रतिदिन केवल एक बार भोजन ग्रहण करते हैं और गरीबों को खाना खिलाते हैं वे वैकुंठ में निवास करते हैं ।

सूर्यवंशी राजा मानधाता अयोध्या में राज्य करता था । एक बार

उनके राज्य में अकाल पड़ा। प्रजा व्यथित होकर मरने लगी। राजा को चिन्ता हुई। वह वन में अंगरा ऋषि के पास आश्रम में गया। उसने अंगरा ऋषि से प्रार्थना की "हे महर्षि ! अकाल के कारण प्रजा बहुत दुखी है। प्रजा का कहना है कि मेरे किए हुए किसी पाप के कारण ही राज्य में अकाल पड़ा है। मैंने तो अपने जीवन काल में ऐसा कोई दुष्कर्म नहीं किया है। आप अपनी दिव्य दृष्टि द्वारा विचार कर सुनायें कि मैंने कौनसा पाप किया है? अकाल को दूर करने के लिए क्या करूं? कृपया मेरा मार्गदर्शन करें। अंगारा ऋषि ने कहा "राजन ! तुम प्रजा के साथ देवयानी वृत धारण करो तो चार माह तक वर्षा होगी। वर्षा होने के कारण सूखे की समस्या हल हो जायेगी, प्रजा प्रसन्न होगी। अंगरा ऋषि की आज्ञानुसार राजा ने प्रजा के साथ देवयानी एकादशी का वृत धारण किया। परिणाम स्वरूप चार महीने तक वर्षा हुई। प्रजा अत्यन्त प्रसन्न हुई। प्रेमियो ! आप भी श्रद्धा से वृत धारण करेंगे तो आपका कल्याण होगा। आज के दिन तुलसी की पूजा करने का भी बड़ा महत्व है।

५ जून रविवार के दिन प्रातः ११ बजे पूज्य स्वामीजी ने चैम्बूर बम्बई में गूंगे बहरे बच्चों के स्कूल का उद्घाटन करते हुए श्री झमटमल वाधवाणी एवं अन्य कार्यकर्ताओं को धन्यवाद देते हुए कहा कि आप लोगों ने मासूम गूंगे व बहरे बच्चों के लिए यह शिक्षा केन्द्र खोलकर उत्तम कार्य किया है। उनकी सेवा भी प्रभु की भक्ति है। अपाहिजों, दीन दुखियों के प्रति सहानुमति हो, यह मानवता का गुण है। आज देश को निष्काम भावना व पीड़ितों के प्रति सहानुभूति रखने वाले सेवकों की आवश्यकता है।

गुजरात के राष्ट्रीय कवि झवेरचन्द मेंघाणी के मन में बचपन से ही दीन दुखियों, बीमारों एवं अपाहिजों के लिए सहानुभूति थी। उसके पिता पुलिस अफसर थे। एक दिन पिता श्री ने अपने घर में अन्य सरकारी अफसरों के लिए भोज की व्यवस्था की। पुलिस अफसर होने के कारण समीप के गांवों का सारा दूध उसी भोज के लिए पहुंच गया। आये हुए अतिथि बड़े मजे के साथ मालपुए और खीर का सेवन कर रहे थे। खीर स्वादिष्ट थी, उसमें पिस्ते, बादाम आदि डाले

गये थे । बालक झवेरचन्द को भी खीर का कटोरा दिया गया किन्तु उसने खीर पीने से इन्कार करते हुए कहा कि आज प्रातः दूध ले आने वाले से मुझे पता चला कि समीप के गांव का सारा दूध यहां इस भोज के लिए लाया गया है । गांवों के बच्चों और बीमारों को आज दूध पीने के लिए नहीं मिलेगा । बछड़े भी दूध पीने से वंचित रह जायेंगे । गांव के बीमार बच्चे और बछड़े आज दूध पीने से वंचित रहेंगे तो फिर मैं खीर का सेवन कैसे करूंगा ! यदि मुझे खीर जबरदस्ती पिलाया जायेगा तो वह कंठ पर रुक जायेगा ! बालक का यह उत्तर सुनकर माँ बाप की आँखों में आँसू आ गये और उन्होंने प्रतिज्ञा की कि भविष्य में वे ऐसे भोज की व्यवस्था नहीं करेंगे । प्रेमियों ! आप भी ऐसी दया भावना धारण करें । दूसरों के प्रति सहानुभूति धारण करें तो आप ईश्वर की दया के पात्र बनेंगे ।

७ जून पूज्य स्वामीजी हरिद्वार में पधारे । वहां वे एक सप्ताह ठहरे। उन्होंने संत अर्जनप्रकाश एवं अशोकलाल से कुशल क्षेम पूछा । पूज्य स्वामीजी तीन- चार बार हरि की पैड़ी पर भी गंगा स्नान करने गये और आश्रम में उन्होंने संतों के लिए भंडारा भी किया । प्रातः पूज्य स्वामी जी के पास जिज्ञासु आते थे जिनकी शंकाओं के समाधान करते थे और सायं पूज्य स्वामीजी सत्संग प्रवचन करते थे ।

१४ जून पूज्य स्वामीजी, स्वामी टेऊंराम प्रेम प्रकाश मंदिर दिल्ली पधारे । वहां पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज के पुण्य तिथि उत्सव के सम्बन्ध में उन्होंने दो दिन अमृत वचनों की वर्खा करते हुए कहा कि पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज ने हज़ारों लोगों को अविद्या की नींद से जागृत कर सतनाम साक्षी का मंत्र देकर उनका भविष्य उज्वल किया । सत्गुरु महाराज गुरू मंत्र की महिमा गाते हुए कहते हैं-

सत्गुरु के सत् शब्द का करले निष दिन जाप ।
कह टेऊं जिस जाप ते, मिटे सकल संताप ।।

गुरू मंत्र का सदैव चिन्तन करना चाहिए । उस मंत्र के जाप द्वारा सब कष्ट क्लेश नष्ट हो जायेंगे । सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज के पुण्य तिथि उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी १६ जून आदर्श

नगर स्वामी माधवदास के स्थान अजमेर पधारे। श्री मुरलीधर करनाणी एवं अन्य प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत सत्कार किया। सायं पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि आपको धन्यवाद है कि आप बड़े उत्साह के साथ पूज्य सत्गुरु महाराज एवं स्वामी माधवदासजी महाराज का पुण्य तिथि उत्सव मनाते हैं। सत्गुरु महाराज ज्ञान व भक्ति की मूर्ति थे। उनके दर्शन से ही आनंद आता था। उनकी वाणी आज भी हमारा मार्गदर्शन करती है।

१७ जून सायं पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज बचपन से ही एकांतप्रिय थे। वे एकांत में बैठकर भगवद् भजन करते थे। अमरापुर स्थान पर वे रात्रि को नींद का त्याग कर नाम स्मरण में तल्लीन रहते थे। ऐसे संतों के भजन में विक्षेप डालना नहीं चाहिए। उनका दर्शन भी लाभकारी है। सत्गुरु महाराजजी कहते हैं-

निर्दोषी जे संत जन, से हरि मूर्ति मान।
टेऊं तिन के दरस से, पापन की हो हानि॥

एक भजनशील संत भगवद् भजन में तल्लीन था। एक व्यक्ति उनके पास आया और उसने उस भक्त से कुछ पूछना चाहा। भक्त ने कहा कि पूछने, कहने व श्रवण करने से भगवद् भजन करना अधिक महत्वपूर्ण है। फिर भी उसी व्यक्ति ने भक्त से प्रश्न किया कि मनुष्यों में श्रेष्ठ कौन है? भक्त ने उतर दिया "जिसको भगवान श्रेष्ठ बताए वही श्रेष्ठ है।" फिर उस व्यक्ति ने दूसरा प्रश्न किया "क्या आप यहां अकेले रहते हैं?" भक्त ने कहा "मैं यहां अकेला नहीं रहता हूं, मेरे साथ भगवान रहते हैं।" फिर उस व्यक्ति नें तीसरा प्रश्न पूछा "आनंद का मार्ग कौनसा है?" भक्त आकाश की ओर देखकर वहां से चलने लगा। प्रेमियो ! संतों के स्मरण में ऐसा विक्षेप डालना पाप है। देखना चाहिए यदि कोई संत भगवद् भजन में लीन बैठा है या अपनी आनंदावस्था में है तो उससे कोई भी प्रश्न पूछना नहीं चाहिए। संतों से व्यर्थ बातें नहीं करनी चाहिए। उनका समय अमूल्य है। उनका ध्यान व दर्शन भी कल्याणकारी है। आपको अपने प्रश्नों के उतर स्वयं मिल जायेंगे।

१८ जून पूज्य स्वामीजी ने अमृत वचनों की वर्खा करते हुए पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज के परोपकारी जीवन का वर्णन करते हुए कहा कि आप भी सबका भला करें। आप दूसरों की भलाई करेंगे तो प्रभु आपकी भलाई करेगा सत्गुरु महाराजजी कहते हैं-

हरि भक्त हित करत है, सबका जगत् मंझार।
कह टेऊं स्वार्थ बिना सदा करे उपकार॥

१३ जून उत्सव का समापन करते हुए पूज्य स्वामीजी ने कहा कि भक्ति में ही बड़ी शक्ति होती है पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊंराम महाराजजी ने अपना जीवन नामस्मरण में सफल किया, आज चारों ओर उनका यश फैला हुआ है। उन्होंने कई प्रेमियों के दुख दर्द दूर किये यह उनकी भक्ति ही शक्ति है।

संत सुन्दरदास वन में बैठा था। अचानक वहां से एक नवाब शिकार कर अपने सिपाहियों के साथ लौट रहा था। एक सिपाही को बहुत प्यास लगी थी। उसने इस संत के पास तुंबी देखकर कहा ''महाराज! प्यास लगी है, कृपया पानी पिलाए।'' संत सुन्दरदास जी ने कहा। ''प्यारे ! इस में जल नहीं छाछ है'' सिपाही ने कहा कि छाछ ही पिलाएं। संत ने उसे छाछ पिलाई। ऐसे और भी प्यासे सिपाही संत के पास आए, संत ने सबको छाछ पिलाकर उनकी प्यास पूरी की। सिपाही आश्चर्य में पड़ गये कि इतनी छोटी सी तुंबी से इतनी छाछ कैसे निकल रही है; उन्होंने यह बात नवाब को सुनाई। नवाब उसी संत के पास आया और उसने संत से पूछा कि क्या यह तुंबी जादू की तुंबी है; आपने इस तुंबी से इतने सिपहियों की प्यास कैसे पूरी की है? संत सुंदरदास ने कहा कि जादू वाली वस्तु केवल दृश्यमान होती है, उससे किसका पेट नहीं भरता। यह प्रभु की भक्ति का प्रताप है। आप भी भगवद् भक्ति करें तो आपको शक्ति मिल जायेगी। प्रेमियो आप भी भक्ति व परोपकार में जीवन सफल करें।

२० जून पूज्य स्वामीजी नसीराबाद पधारे। वहां उन्होंने सत्संग प्रचवन करते हुए कहा कि परमार्थ में प्रगति करने के लिए क्षमाशील बनें। क्षमा करने से, गलती करने वाला स्वयं लज्जित होगा। आप अपनी

आनंदावस्था में रहें । एक बार एक दुष्ट आदमी भगवान बुद्ध को अपशब्द कह रहा था । उसी समय किसी श्रद्धालु ने कहा कि महाराज वह आदमी आपको अपशब्द बोल रहा है, आप उसको कुछ भी नही कहते ! गौतम बुद्ध ने कहा कि हमें कुछ दे रहा है, ले तो नहीं रहा है ! जिसके पास जो वस्तु होगी वह वैसी वस्तु देगा । उसके पास अपशब्द हैं तो वह अपशब्द ही देगा । देने वाला धन्यवाद का पात्र है । उसे धन्यवाद है कि वह मुझे अपशब्द दे रहा है ।

२२ जून पूज्य स्वामीजी अमरापुर स्थान जयपुर पधारे । उन्होंने पहले पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज एवं सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की मूर्तियों को नत मस्तक होकर प्रणाम किया । सायं उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि भगवान भक्त वत्सल हैं । वे किसी न किसी रूप में भक्त की देख रेख करते हैं ।

एक नगर में रामदेव ब्राह्मण रहता था वह भगवान का भक्त था। उसकी पत्नी भी संतोषी, सतोगुणी व संत सेवी थी । उनका यश सुनकर राजा वेश बदलकर उनके घर में आया । पती पत्नी ने उसका सत्कार किया । गरीबी के कारण उनके घर में और कोई खाद्य पदार्थ नहीं था, केवल थोड़ा दूध पड़ा था । ब्राह्मण ने दूध को गर्म कर उसे पीने के लिए दिया । राजा दूध पीकर प्रसन्न हुआ । उसने अपना परिचय देते हुए कहा कि मैं राजा हूं, वेश बदलकर, आपका यश सुनकर यहां आया हूं । आपने मुझे जो दूध पिलाया ऐसा स्वादिष्ट दूध मैंने कभी नहीं पिया है । आप लोग गरीबी में रहते हुए भी संतोष धारण कर मन में भगवद् भजन करते हैं, इसलिए मैं आपसे अत्यन्त प्रसन्न हुआ हूं । आज से आजीवन आपके खाने पीने का उत्तरदायित्व मेरा होगा, आप भगवद् भजन में लीन रहें । यह सुनकर ब्राह्मण व उसकी पत्नी का मन भर आया क प्रभु किसी न किसी रूप में कैसे उनकी देख रेख करता है । प्रेमियो । आप भी प्रेम से प्रभु को याद करेंगे तो प्रभु आपके कार्य पूरे करेंगे । नियमित रूप से सत्संग श्रवण कर नाम स्मरण करें तो आपका कल्याण होगा । अतिथि को ईश्वर रूप समझकर उसकी सेवा करें ।

२४ जून पूज्य स्वामीजी प्रेम प्रकाश आश्रम कोटा में पधारे। संत मनोहरलाल ने उनका स्वागत किया। सायं उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि मनुष्य मोहवश होकर प्रभु को भुला बैठा है। वह अपने अमूल्य श्वास व्यर्थ गंवा रहा है। हम श्वासों का मूल्य नहीं जानते ये श्वास हीरे जवाहरातों से भी अधिक मल्यवान हैं। एक व्यक्ति ने अपने तीन बेटों को एक-एक सौ रुपये देकर कहा कि उन पैसों से तुम वस्तुएं खरीदकर अपनी-अपनी दुकान को भर कर दिखाओ। जिसकी दुकान अच्छी होगी, उसे ही मैं घर की सारी पूंजी प्रदान करूंगा।

बड़ा बेटा जुआ खेलता था। उसने तो पिताजी के एक सौ रुपये जुआ में गंवा दिये। उसने विचार किया कि अब दुकान कैसे भरूं! उसने नगरपालिका की कचरे की गाड़ियां मुफ्त मंगवाकर, कचरे से दुकान भर दी। दुसरा बेटा शराबी था। उसने दो तीन दिन खूब शराब पीकर ७५ रुपये तो खर्च कर दिये। शेष २५ रुपयों दुकान कैसे भर सके। उसने २५ रुपये का घास मंगवाकर अपनी दुकान भर दी। तीसरा बेटा आज्ञाकारी, चरित्रवान था। उसे कोई बुरी आदत नहीं थी। उसने एक सौ रुपये के विभिन्न प्रकार के फूल खरीदकर अपनी दुकान भर दी। पिता बड़े बेटे की दुकान कचरे से भरी देखकर दुखी हुआ। दूसरे बेटे की दुकान घास से भरी देखकर अप्रसन्न हुआ। जब उसने छोटे बेटे की दुकान फूलों से भरी देखी तो अत्यन्त प्रसन्न हुआ। उसने एक रुपया भी व्यर्थ नहीं गंवाया था। पिताजी ने सारी पूंजी छोटे बेटे को दे दी। प्रेमियो। प्रभु ने हमें अमूल्य मनुष्य योनि दी है, वह व्यर्थ नहीं गंवायें। छोटे बेटे की भांति हम भी अपनी जीवन रूपी दुकान शुभ गुणों से भर दें तो प्रभु प्रसन्न होंगे।

२५ जून सायं सिन्धुनगर आश्रम सें संत कबीर की जयन्ती मनाई गई। पूज्य स्वामीजी ने संत कबीरदासजी के जीवन व काव्य का वर्णन करते हुए कहा कि कबीर का अर्थ है महान। जैसे उनका नाम था वैसे ही वे महान हुए। उन्होंने अपना व्यवसाय करते सद्गृहस्थी होते हुए भगवान की भक्ति की। उन्होंने नाम स्मरण करते काव्य रचना भी की। वे हिन्दी के निगुर्ण काव्य धारा के सर्वश्रेष्ठ कवि थे। उनकी

वाणी आज भी हमारा मार्गदर्शन करती है। प्रेमियो। आप भी संसार में रहकर संत कबीर की भांति नाम स्मरण करें।

१ जुलाई पूज्य स्वामीजी जबलपुर पधारे। संत रामदास ने अपने गुरु स्वामी दयालदास की पावन स्मृति में नर्मदा नदी के किनारे 'गुरूधाम' के निर्माण के लिए २ जुलाई सवेरे भूमिपूजन का कार्यक्रम रखा। पूज्य स्वामीजी महाराज ने गुरुधाम की नींव डालते हुए संत रामदास एवं अन्य श्रद्धालु प्रेमियों को धन्यवाद दिया। स्वामीजी ने इस अवसर पर कहा कि यह धाम स्वामी दयालदासजी का अमर यादगार रहेगा। प्रेमियो ! जैसे स्वामी दयालदासजी ने प्रभु से प्रेम का नाता जोडा वैसे आप भी प्रभु परमात्मा से स्नेह सम्बंध रखें। सांसारिक काम काज करते प्रभु को नही भूलें।

२ जुलाई संध्याकाल एवं ३ जुलाई पूज्य स्वामीजी ने जबलपुर की सिन्धी धर्मशाला में सत्संग प्रवचन कर जबलपुर वासियों की प्यास पूरी की। ४ जुलाई वे कटनी पधारे। ४-५ जुलाई उन्होंने वहां अमृत वचनों की वर्खा की।

१० जुलाई- आश्रम में श्री पेसूमल प्रभदास की पुण्य तिथि मनाई गई। पूज्य स्वामीजी ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे निष्काम समाज सेवक थे। उन्होंने इस मन्दिर के निर्माण कार्य में भी योगदान दिया। वे दीन दुखियों व बीमारों की सेवा भी बड़ी लगन के साथ करते थे। १४ जुलाई पूज्य स्वामीजी बड़ौदा गए। १५ जुलाई को वहां गोबिन्दराम मीरपुरी की सुपुत्री ज्योति का विवाह प्रताप रामचन्दानी के सुपुत्र से सम्पन्न हुआ। पूज्य स्वामीजी ने वर-वधू को आशीर्वाद दिया। १६ जुलाई को पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन किए।

२८ जुलाईं सायं निजधाम आश्रम सिन्धुनगर-५ में गुरु पूर्णिमा उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी ने ने प्रवचन करते हुए कहा कि प्रेमियो ! आप सौभाग्यशाली हैं कि आपको स्वामी तिलोकदास जी महाराज सद्गुरु रूप में प्राप्त हुए। वे ब्रह्मज्ञानी संत थे। उन्होंने आपको गुरुमन्त्र की दीक्षा देकर मार्गदर्शन किया। शास्त्रों में गुरुमन्त्र का बड़ा महत्व बताया गया है। सद्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज, सद्गुरु की महिमा गाते हुए कहते है:

टेऊँ दीपक ज्ञान बिन, शोभत धार न देह।
गुर बिन ज्ञान न होत है, तांते गुर कर लेह।।

गुरु के ज्ञान बिना मनुष्य का जीवन अन्धकारमय है। सत्गुरु ज्ञान का प्रकाश देकर पथ प्रशस्त करता है। प्रेमियों ! गुरु मन्त्र की साधना करते रहें। संत विशनदास ने पूज्य स्वामीजी का आभार माना।

३० जुलाई प्रात: से स्वामी टेऊंराम आश्रम सिन्धुनगर-५ में गुरु पूर्णिमा उत्सव मनाया गया। सर्व प्रथम सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की मूर्तियों की पूजा अर्चना की गई। तत्पश्चात् हज़ारों प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी की पूजा उपासना करते हुए आशीर्वाद लिया। पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज का दिन बड़े महत्व का दिन है। सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज फरमाते हैं:

गुर को कर तुम वंदना, श्रद्धा मन में धार।
कह टेऊँ इस जगत में पाय पदार्थ चार।।

प्रेमियो ! मन में श्रद्धा व विश्वास धारण कर सत्गुरु को प्रणाम करें तो आपको चारों पदार्थ प्राप्त होंगे। जिस पर गुरु की कृपा दृष्टि होती है, वह भाग्यवान है। गुरु ही ज्ञान व मोक्ष का दाता है। गुरु द्वारा ही हम भगवद् दर्शन कर सकते हैं। प्राचीन काल से यह दिन व्यास-पूजा के रूप में मनाया जाता है। आप भी गुरु की पूजा उपासना कर गुरुमंत्र की साधना करें तो आपका कल्याण होगा।

१ अगस्त सायं आश्रम में श्री लोकमान्य तिलक की पुण्य तिथि मनाई गई। पूज्य स्वामीजी ने श्रद्धान्जलि अर्पित करते हुए कहा कि श्री लोकमान्य तिलक महान राष्ट्रभक्त थे। आज भारत को ऐसे निडर निष्काम नेताओं की अत्यन्त आवश्यकता है। ३ अगस्त प्रात: १ बजे पूज्य स्वामीजी ने चालीहो साहब सिन्धुनगर-५ में श्री उडेरोलाल, भगवान श्रीकृष्ण एवं अन्य मूर्तियों की पूजा उपासना करवाई। उन्होंने भक्त खानूराम, श्री नामदेव, पी. रामचन्द्र, खीअलदास एवं अन्य सेवकों को धन्यवाद देते हुए कहा कि इन मूर्तियों की प्राण-प्रतिष्ठा हो गई, अब आप ऐसा समझें कि श्री उडेरोलालजी साक्षात् विराजमान हैं। आप

नियमित रूप से इनकी पूजा उपासना करें, तो आपके पास किसी बात की कमी नहीं रहेगी ।

१३ अगस्त पूज्य स्वामीजी दतिया पधारे । श्री रामचन्द एवं अन्य प्रेयिमों ने उनका स्वागत-सत्कार किया । वहां उन्होंने तीन दिन अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की । पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि परमात्मा आप से दूर नहीं है, आप उनके लिए मन में प्रेम धारण करें ते वह आपके अत्यन्त निकट है । आपका प्रेम सांसारिक सम्बन्धियों से है । अब प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ें। सत्गुरु महाराज जी फरमाते हैं:

प्रेम जगत में बहुत है, प्रेम बिना नहीं कोय ।
टेऊँ सांचा प्रेम सो, जो हरि से ही होय ।।

किसी धनवान का धन बैंकों में हो, उसके पास कुछ भी न हो तो उस धन से क्या लाभ? हमारे मन का प्रेम केवल सम्बन्धियों से हो, प्रभु से न हो तो उसका क्या लाभ? सांसारिक पदार्थों एवं सम्बन्धियों से आसक्ति हटा कर प्रभु कमल चरणों से प्रीति जोड़ें, उसमें ही जीवन की सार्थकता है ।

२६ अगस्त से २८ अगस्त तक पूज्य स्वामीजी का जन्म दिन उत्सव जनता जनार्दन परिषद् की ओर से सिन्धुनगर-५ आश्रम में मनाया गया। २६ अगस्त को श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठ का आरम्भ किया। रोगियों व अपाहिजों की सेवा की गई । २७ अगस्त को रक्षा बन्धन के पावन दिन कई प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी को राखियाँ बांधकर आशीर्वाद लिया। सायं विद्यार्थियों की भक्ति संगीत प्रतियोगिता आयोजित की गई। २८ अगस्त प्रातः पूज्य स्वामीजी के मधुर उपदेश के पश्चात् यज्ञ किया गया । तत्पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने जनता जनार्दन परिषद् की ओर से चार सौ गरीब बहनों को आर्थिक सहायता व चादर, चावल, दाल आदि के पैकेट प्रदान किए ।

सायं कई कलाकारों ने भक्ति संगीत की वर्खा की । डॉ. दयाल 'आशा' ने पूज्य स्वामीजी की महिमा का गीत गाते हुए कहा कि उनकी असीम कृपा एवं सभी प्रेमियों के सहयोग से जनता जनार्दन परिषद् की ओर से सेवा के कई कार्य हो रहे हैं । पूज्य स्वामीजी

ने प्रवचन करते हुए कहा कि आप लोगों ने जो मेरी महिमा गाई, यह मेरी महिमा नहीं सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँरामजी महाराज एवं सत्गुरु स्वामी श्री सर्वानन्दजी महाराज की महिमा है । प्रेमियो ! आप भी अपनी माया परोपकार के कार्यों में सफल करें । स्वयं कष्ट झेलकर भी दूसरों की सेवा करें तो प्रभु आपकी सहायता व सुरक्षा करेगा । सत्गुरु महाराज परोपकार की महिमा गाते हुए कहते हैं :

तन मन धन वचन प्रान से करना परोपकार ।
ऐसा पुण्य न और को, टेऊँ इस संसार ।।

प्रेमियो ! आप तन, मन, धन व वचन से दूसरों का भला करें तो प्रभु आपका भला करेगा ।

कांचीपुर में एक गरीब ब्राह्मण रहता था । उसे सन्तान नहीं थी। घर में केवल पति-पत्नी रहते थे । दोनों भगवद् भजन में समय सफल करते थे । भिक्षा से ही जीवन निर्वाह करते थे । एक दिन ब्राह्मण दामोदर को भिक्षा में कुछ भी नहीं मिला । उसने विचार किया कि आज भगवान ने उन्हें उपवास रखने का अवसर प्रदान किया है। वह जैसे ही घर लौटकर आया तो भगवान एक बूढ़े के रूप में उसके घर अतिथि बनकर आए । पति-पत्नी ने उसे जल पिलाकर सत्कार किया । उनके घर में खाने के लिये कुछ भी नहीं था । ब्राह्मण दामोदर की पत्नि ने अपने बाल काट कर, उनकी एक डोरी बनाकर, पति को दी कि यह डोरी बेचकर बाजार से भोजन सामग्री ले आओ। श्री दामोदर वह डोरी बेचकर भोजन सामग्री ले आया । पत्नी ने भोजन तैयार कर घर में आये हुए बूढ़े अतिथि को खिलाया । रात्रि को भगवान ने ब्राह्मण पति-पत्नी को स्वप्न में दर्शन देकर धन-धान्य से सम्पन्न कर दिया । प्रेमियो ! आप भी भगवद्भजन करें और परोपकार के कार्य करें तो प्रभु अवश्य आपको दर्शन देकर आशीर्वाद देंगे ।

३ सितम्बर प्रातः एवं सायं पूज्य स्वामीजी ने भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन करते हुए कहा कि श्री श्यामसुन्दर प्रेम के अवतार थे । आप भगवान श्रीकृष्ण को प्रेम से पुकारें तो आपके प्रेम की पुकार सुनकर वे अवश्य ही आपको दर्शन देंगे । कवि रसखान ने जब भगवान श्रीकृष्ण की मूर्ति देखी तब उसके मन में श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम की

चिन्गारी लग गई। उसे रात को नींद नही आई, दूसरे दिन वह ब्रजभूमि में गया। वह जाति का मुसलमान पठाण था, इसलिए वेश बदलकर भगवान के मंदिरों में दर्शन के लिए गया। मंदिर के एक पुजारी ने उसे प्रवेश नही दिया। वह गोबिंदकुंड के पास तीन दिन भूखा प्यासा बैठा रहा और भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन के लिए आँसू बहाता रहा। श्री श्यामसुंदर ने उसे दर्शन देकर उसकी प्यास पूरी की, फिर तो रसखान के मन में कृष्ण भक्ति की काव्य धारा प्रवाहित हुई। प्रेमियो ! आप भी रसखान की भाँति प्रभु के दर्शन के लिए प्रेम के आँसू बहाएं तो श्री बांके बिहारी अवश्य ही आपको दर्शन देंगे।

२६ सितम्बर रात्रि को पूज्य स्वामीजी ने सांई हरिचूराम साहिब की पुण्य तिथि उत्सव के सम्बन्ध में उनके स्थान सिन्धुनगर-५ में सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि संत हरिचूराम साहिब सिद्ध पुरुष थे फिर भी वे स्वयं परिश्रम की कमाई से अपना गुजारा करते थे। यहाँ तक कि किसी का भोजन भी मुश्किल से खाते थे। यदि प्रेमी के अति आग्रह पर उसके घर में भोजन खाते थे तो उसके बच्चों को दुगने पैसे खर्ची के रूप में दे आते थे। कई शारीरिक रोगी उनके पास आते थे, तो वे उन्हें कहते थे कि मंदिर की ज्योति का तेल लगाएं, भगवान की कृपा हो जायेगी। मुझ पर भी उनकी कृपा दष्टि रही। संत रूपाराम जी को साधुवाद है कि वे अब संतों की ज्योति जगा रहे हैं।

२ अक्टूबर, रविवार सायं टेऊँराम आश्रम सिन्धुनगर-५ में महात्मा गाँधी एवं श्री लालबहादुर शास्त्री की जयन्ती मनाई गई। पूज्य स्वामीजी ने दोनों देश भक्तों को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि दोनों राष्ट्र भक्त, ईश्वर भक्त, निष्काम-निपुण नेता थे। आज राष्ट्र को ऐसे नेताओं की अत्यंत आवश्यकता है। इसी अवसर पर डॉ. दयाल 'आशा' एवं श्री परसराम कांगेसी ने भी दोनों नेताओं के गुणों का वर्णन किया।

१२ से १५ अक्टूबर तक सरदार नगर, अहमदाबाद में स्वामी ऊद्दवदास जी महाराज की पुण्य तिथि उत्सव का आयोजन किया गया। इस उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी १२ अक्टूबर अहमदाबाद पधारे। उनके स्वागत में जुलूस निकाला गया। सायं उन्होंने सत्संग प्रवचन

करते हुए कहा कि आप सब प्रेमियों को यह उत्सव मनाने के लिए धन्यवाद है । स्वामी ऊद्धवदास जी संतोषी संत थे । हमारा उनके साथ बचपन से ही स्नेह सम्बन्ध था । उन्होंने सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज की सेवा कर स्वयं भी नाम स्मरण किया और सिन्ध के विभिन्न नगरों में जाकर प्रेयिमों को नाम जपवाया । सत्गुरु महाराज जी संत की महिमा गाते हुए कहते हैं :

जो माया वश होत नहिं, जो नहिं भोगत भोग ।
टेऊँ सुमरे नाम नहिं, सोई संत अरोग ।।

प्रेमियो ! आप भी प्रेम से नाम स्मरण करें, गुरु मंत्र की खूब साधना करें । सत्गुरु महाराज जी फरमाते हैं :

हृदय में गुर शब्द की बाजे अनहद बीन ।
कह टेऊँ सुन तांहि को गुरमुख हो लवलीन ।।

प्रेमियो ! आप सांसारिक कर्त्तव्यों का पालन करते हुए प्रभु को नहीं भुलाएं और अपनी कमाई का कुछ हिस्सा दान करें । दान करने से धन बढ़ता है, कुएं से कितना भी पानी निकालें फिर भी कुएं का पानी कम नहीं होता । दान करने से दु:ख-दर्द भी दूर होते हैं ।

१३ अक्टूबर पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आजकल घरों में, पड़ौस में, नगरों में, चारों ओर अशांति है । एकता लुप्त होती जा रही है । जहाँ एकता है वहाँ शान्ति व शक्ति है । आपस में मेल-मिलाप से रहने में आप अधिक सुखमय जीवन बिता सकेंगे। देश के विकास एवं आजादी की सुरक्षा के लिये भी एकता की अत्यंत आवश्यकता है । एक गाँव में भयानक आग लगी । गाँव वाले अपने अपने परिवार एवं पशुओं को भी बाहर ले गये । वहां पर सूरदास व एक लंगड़ा आदमी रह गया । वहां से उनका अलग-अलग निकलना मुश्किल था । दोनों उलझे हुए थे । तब सूरदास को एक बात सूझी। उसने लंगड़े आदमी से कहा कि तुम मेरी पीठ पर चढ़ जाओ और मुझे रास्ता बताते चलो तो दोनों ही इस आग से बच जायेंगे । लंगड़ा आदमी सूरदास की पीठ पर चढ़ा और उसने उसे रास्ता बताया । दोनों अपाहिज आग की लपेट से बचकर गाँव से बाहर निकल आये ।

प्रेमियो ! आप भी एक दूसरों को सहयोग दें, सहायता करें तो आप कई कष्टों से बच सकते हैं।

१४ अक्टूबर पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि सत्पुरुष स्वयं को कष्ट देकर भी दूसरों को सुखी करते हैं।

सज्जन स्वयं को कष्ट दे, औरों को सुख देत।

पर पीड़ा को रच समझ, शीघ्र हैं हर लेत ॥

एक ब्राह्मण की गायें कोई चोर चोरी कर ले गया। वह राजा युधिष्ठिर के पास शिकायत करने आया। उस समय वहां अर्जुन बैठे थे। उन्होंने उस ब्राह्मण की पुकार सुनी। वह शीघ्र ही कमरे में शस्त्र लेने के लिए गया। उसी समय उस कमरे में युधिष्ठिर द्रौपदी के साथ बैठे थे। पांचों पांडव भाइयों ने यह नियम बनाया था कि उनमें से एक एक भाई दो महीने बारह दिन द्रौपदी के साथ रहे। यदि उनमें से कोई भी इस नियम का उल्लंघन करेगा तो बारह वर्ष वन में रहना पड़ेगा। अर्जुन ब्राह्मण की चोरी की गई गायें बचाने एवं चोरों को दण्ड देने के लिए अपने कष्ट का विचार न करके युधिष्ठर के कमरे में शस्त्र लेने गया। उसने शस्त्र उठाकर चोरों को पकड़कर उन्हें मारकर ब्राह्मण को उसकी गायें वापस कर दीं। नियम के अनुसार वह वन में चला गया। स्वयं कष्ट झेलकर अर्जुन ने ब्राह्मण का उपकार किया। सत्पुरूष स्वयं को बाधा में डालकर, दुःख सहनकर, दूसरों का दुःख दूर करते हैं। प्रेमियो ! आप भी दूसरों के कष्ट दूर करने का प्रयास करें तो प्रभु आपके दुःख दूर करेगा।

१५ अक्टूबर पूज्य सतगुरु महाराज ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि सब प्राणियों में प्रभु व्याप्त है। उनकी प्रेम से सेवा करें। घर में आये हुए अतिथि का सत्कार करें। अतिथि को ईश्वर का रूप समझकर उसकी सेवा करें। सतगुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज भी फरमाते है :

गोबिन्द सब घट जान के, सबसे करले प्रीत।

कह टेऊँ हर भेद तम सेवो सबको मीत ॥

स्वामी रामकृष्ण का शिष्य दुर्गाचरण स्वयं को कष्ट देकर भी अतिथि

का सत्कार करता था। एक बार वर्षा के मौसम में उसके घर कुछ अतिथि आये। उसके घर में केवल दो ही कमरे थे। एक कमरे में वर्षा का पानी गिर रहा तो वह स्वयं पत्नी सहित दूसरे कमरे में रहता था। घर में आये हुए अतिथियों को उसने अपने कमरें में सुलाया और स्वयं व उसकी पत्नी दूसरे कमरे में वर्षा के कारण सारी रात भीगते रहे। दूसरे दिन उसके घर में चावल नहीं थे। उसे उसी दिन पेट में दर्द था, फिर भी वह चावल की बोरी अपने सिर पर उठाकर लाया। भोजन तैयार करने में थोड़ा सा विलम्ब हो गया, इसलिये उसने अतिथियों से क्षमा याचना की। प्रेमियो ! आप भी व्यवहार में क्षमाशील बनें और अतिथियों का सत्कार करें।

१६ अक्टूबर प्रेम प्रकाश सेवा मंडल की ओर से पूज्य स्वामीजी का ८२वां जन्मदिन मनाया गया। कई प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी को फूल मालाएं भेंट की। श्री संतूमल, श्री जीवणदास जयरामदास, श्री थांवरदास खूबचन्दानी ने पूज्य स्वामीजी के गुणों का वर्णन किया।

पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आपने जो मेरी महिमा गाई है, यह महिमा परमात्मा और सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज की है। मैं ते कौड़ी का भी नहीं हूँ, यह शान मान सभी उस प्रभु का है। जो भी सेवा व उपकार के कार्य हो रहे है ये सब आपके सहयोग व प्रभु की कृपा से ही हो रहे हैं। कार्य का ही यश होता है न कि मनुष्य का। आज आप मेरा जन्मदिन मना रहे हैं, आज मैं बालक रूप में दया रूपी खर्ची माँग रहा हूँ। अपने जीवन में दया की ज्योति जगाएं। न केवल मानव मात्र किन्तु पशु पक्षियों पर भी दया दृष्टि करें। माँस भक्षण का परित्याग करें। ये पशु-पक्षी भी प्रभु की संतान हैं। प्रतिदिन कोई-न-कोई दया का काम करें, भूखों को खाना खिलाएं, वस्त्रहीनों को वस्त्र प्रदान करें, आज मुझे आप यही खर्ची दें। पूज्य स्वामीजी के हृदयस्पर्शी वचन सुनकर कई प्रेमियों ने माँस भक्षण का परित्याग किया।

१९ अक्टूबर सायं ग्वालियर के झूलेलाल मंदिर में पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में निष्काम समाज सेवकों का सन्मान उत्सव आयोजित किया। श्री ऐंशीराम ठकुर ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत करते हुए

कहा कि हमारा सौभाग्य है कि यहाँ सिन्धी संतों के शिरोमणि संत, कर्मयोगी पूज्य सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज पधारे हैं । वे आज हम सभी को आशीर्वाद देंगे । पूज्य स्वामीजी ने सन्मानित सज्जनों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि जनता की सेवा जनार्दन की भक्ति है । आप लोगों ने अपने-अपने क्षेत्र में जो समाज सेवा की है उसके लिये आपको धन्यवाद ! सेवा के साथ प्रभु को नहीं भुलाएं । जीवन की सार्थकता नाम स्मरण एवं सेवा में है ।

पूज्य स्वामी ग्वालानन्द जी महाराज की पुण्य तिथि उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी ४ नवम्बर को स्वामी ग्वालानद आश्रम पूना पधारे। स्वामी रामकृष्णजी ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत करते हुए कहा कि पूज्य स्वामीजी प्रतिवर्ष इस उत्सव में सम्मिलित होकर सत्गुरु स्वामी ग्वालानन्द जी महाराज को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं । पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि स्वामी ग्वालानन्द महाराज महान् विद्वान व ज्ञानवान संत थे । ग्वालानन्द ग्रन्थ उनकी अमूल्य कृति है । ६ नवम्बर पूज्य स्वामीजी सिन्धुनगर लौट आये । सायं उन्होंने स्वामी ग्वालानन्द आश्रम में अमृत वचनों की वर्खा की । स्वामी नारायणदासजी ने आभार व्यक्त किया । ९ नवम्बर दीपावली के पावन दिन, कुछ प्रेमी पूज्य स्वामीजी को बम्बई ले गये । १० नवम्बर वे सिन्धुनगर आश्रम लौट आये । ११ नवम्बर प्रात: पूज्य स्वामीजी ने श्री कार्तिक कथा का श्रीगणेश किया । वे प्रतिदिन प्रात: श्री कार्तिक कथा सुनाकर अमृत वर्खा करते थे ।

१७ नवम्बर गोपाष्टमी के दिन प्रात: पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि आज के पावन दिन भगवान श्रीकृष्ण ने गौ चाराना प्रारम्भ किया था । भगवान को स्वयं से अधिक गायें प्रिय थीं । भगवान श्रीकृष्ण ने अपने लोक को अपना नाम न देकर 'गौलोक' नाम दिया। इस से प्रमाणित होता है कि वे गौ माता को कितना महत्व देते थे। आज भारत में गौ माता की दयनीय दशा है । प्रतिदिन हजारों गायें मौत के घाट उतारी जाती हैं । गौ रक्षा राष्ट्र की रक्षा है । प्रेमियों ! गाय की सेवा कर गौ धन की सुरक्षा करें ।

सायं श्री राधेश्याम गौशाला में गोपाष्टमी उत्सव पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में मनाया गया । सर्वप्रथम श्री नंदीराम टहलराम ने गौशाला के सेवा कार्य पर प्रकाश डाला । तत्पश्चात् संत रूपाराम, संत ब्रह्मदास, एवं अन्य संतों ने गौ सेवा का महत्व बताया । डॉ. दयाल 'आशा' ने गौ माता की महिमा गाते हुए दानवीरों से गौशाला के लिये दान देने का अनुरोध किया । पूज्य स्वामीजी ने श्री तुलसीदास मोटवानी एवं अन्य गौ सेवकों को धन्यवाद देते हुए कहा कि गौ सेवा व्यवहार एवं परमार्थ की उन्नति के लिये कल्याणकारी है ।

२० नवम्बर प्रात: पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि आज 'हरि प्रबोधनी एकदाशी है' इस एकादशी का बड़ा महत्व है । जिसके मन में इस एकादशी व्रत धारण करने की इच्छा होती है, उसके एक सौ जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं । जो मनुष्य इस एकादशी का व्रत धारण करता है, उसके अनन्त जन्मों के पाप नष्ट होते हैं, उसे आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है । जो आज भगवान श्री विष्णु की कथा श्रवण करता है उसे सात द्वीपों के दान का फल प्राप्त होता है । कार्तिक में जो तुलसी से भगवान की पूजा उपासना करते है उसके दो हजार वर्षों के पाप नष्ट हो जाते हैं । जो इस कार्तिक महीने में ब्रजभूमि का दर्शन करता है वह युगों तक वैकुण्ठ में वास करता है । जो तुलसी बोता है उसके घर में कोई भी नि:संतान नहीं होता है । जो नियमित रूप से तुलसी को जल से सींचता है, उसका परिवार सदैव फलता-फूलता रहता है। जो तुलसी के समीप श्रद्धा के दीपक जलाते हैं, उसे दिव्य प्रकाश मिलता है। जो श्री ठाकुरजी के चरणामृत में तुलसी मिलाकर पीता है, उसके घर में अकाल मृत्यु नहीं होती। वह रोगों एवं आवागमन के चक्र से मुक्त हो जाता है। पवित्र तुलसी की अर्चना 'ओम श्रीबृन्दाय नम:' के मंत्र द्वारा करनी चाहिये। जो चतुर्मास या एकादशी के दिन मौन धारण करता है, उसे स्वर्ण व तिल दान करना चाहिये । जो चतुर्मास में नमक का त्याग करता है, उसे शक्कर दान करनी चाहिये । आज के दिन मंदिरों में दीपक जलाने का बड़ा महत्व है। ज्ञानी पुरुष कार्तिक का सारा महीना नदी के किनारे एवं अन्य पूजा स्थलों पर दीपक जलाते हैं। हरि प्रबोधनी एकादशी के महातम श्रवण करने से गौ दान का फल प्राप्त होता है।

प्रेमियो ! आज सारी रात जागरण कर 'जय श्रीकृष्ण' का नाम जपते

रहें तो आपकी जीवन नैया भवसागर से पार लग जायेगी।

सायं पूज्य स्वामीजी ने भगवान श्री श्यामसुन्दर की महिमा का निम्न भजन गाया :

धन श्रीकृष्ण, धन श्री मोहन, धन धन मदन मुरारी।

१. धन धन मात यशोदा तेरी, जिससे प्रकट आप हुए,
दर्शन देकर आनंद दिया, खेले गोद मंझारी।

२. धन नंदराइ पिता तुम्हारे, जिसके सुत कहलाये जी,
ब्रज बचाकर आनंद दिया नाम पड़ा गिरधारी।

३. धन धन ग्वाल बाल सभ तेरे, जिन संग बहुत कलोल किये,
मक्खन चुराकर तिन्हें खिलाया, लीला बहु विस्तारी।

४. धन धन गोविन्द गैयां तेरी, जिन्को वन में ले जाते,
घास खिलाते नीर पिलाते, करत सदा रखवारी।

५. धन धन ब्रज मंडल है तेरा, रहकर जहाँ बहु खेल किये,
बीन बजाकर रास रचाकर, मोही सृष्टि सारी।

६. कहे टेऊं धन गीता तेरी, जामें निर्मल ज्ञान भरा,
पढ़कर सुनकर भक्त तुम्हारे, जावन बलि बलिहारी।

पूज्य स्वामीजी ने भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं का वर्णन करते हुए कहा कि एक बार स्वर्गलोक में ऋषि नारद ने भगवान श्रीकृष्ण की महिमा गाते हुये कहा कि भगवान श्रीकृष्ण ने मथुरा में अवतार धारण किया है। वे प्रेम के अवतार हैं। ब्रज व गोकुल में हज़ारों गोपियां एवं ग्वाल उनके प्रेम में मतवाले हैं। यह सुनकर देवराज इन्द्र को संशय हुआ। अतः इन्द्र पृथ्वी पर उतर आये। वे कुत्ते का रूप धारण कर ब्रज में एक मार्ग पर सो गये। उस कुत्ते के शरीर पर बहुत ही ज़ख्म थे, उस से दुर्गन्ध आ रही थी। वहां से गुजरते हुए लोग दुर्गन्ध के कारण दूर भागने लगे। भगवान श्रीकृष्ण गौ माताओं के साथ जंगल से लौट रहे थे तो उन्होंने रास्ते में उस कुत्ते को देखकर कहा "इसके दांत कितने न सुन्दर हैं।" भगवान ने उस कुत्ते के शरीर

से आती हुई दुर्गन्ध की ओर जरा भी ध्यान नहीं दिया अर्थात् भगवान ने कुत्ते के अवगुणों का विचार न कर उसके दांतों की प्रशंसा की। उसी समय ही इन्द्र देव (कुत्ते का रूप बदलकर) भगवान श्रीकृष्ण के चरणों पर गिर पड़े। भगवान ने उसे गले लगाया। प्रेमियो ! आप भी प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ें, आज सारी रात जागरण कर नाम स्मरण करें।

२१ नवम्बर प्रातः पूज्य स्वामीजी ने पूना के लिये प्रस्थान किया। वहां स्वामी चन्दनप्रकाश स्वामी टेऊंराम मंदिर में उन्होंने तीन दिन अमृत वचनों की वर्खा की। सायं संत अनन्तप्रकाशजी ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत करते हुए कहा कि उनके पधारने से हम फूले नहीं समाते। पूज्य स्वामीजी अपनी वाणी द्वारा हमारा मार्गदर्शन करते हैं। मन चाहता है कि वे सदैव यहां ही ठहरें। यह स्थान भी उनका ही स्थान है। पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि यह कार्तिक का महीना बड़े महत्व का महीना है, व्यर्थ मत गंवाएं। प्रेमियो ! नाम स्मरण करें और शुभ कर्म करें। साधक को सुस्ती नहीं करनी चाहिए। यदि वह सुस्ती करेगा तो उसे सफलता नहीं मिलेगी। राजा भागीरथ निरन्तर कठिन तपस्या कर माता गंगा को पृथ्वी पर लाये। यदि वे इतनी साधना नहीं करते तो गंगा मैया को धरती पर लाना सम्भव नहीं था। साधना सफलता की सीढ़ी है।

२२ नवम्बर पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि कल श्री गुरुनानकदेवजी महाराज का जन्मदिन है। वे अवतारी पुरुष होते हुए भी सारा समय नाम स्मरण करते थे और औरों को भी नाम जपाते थे।

वे सिद्ध पुरुष थे, फिर भी उनकी वृत्ति नाम से जुड़ी हुई थी। प्रेमियो ! आप भी सांसारिक प्रपंच में फँसकर नाम को नहीं भूलें। पूज्य सतगुरु महाराज जी फरमाते हैं :

कह टेऊँ हरि नाम जप, भूलो ना क्षण एक।
भोगत भोगत विषय रस, बीते जन्म अनेक॥

सांसारिक विषय भोग भोगते भोगते कई जन्म बीत गए। यह मनुष्य जन्म व्यर्थ न गवांए। प्रेम से प्रभु को पुकारें।

बहुत जन्म बिछुड़े थे माधव, यह जन्म तुम्हारे लेखे ।

हम प्रभु के हैं और उनके ही रहें, उसमें ही आनंद है । २३ नवम्बर श्री गुरुनानक देव जयन्ती के दिन प्रातः पूज्य स्वामीजी ने श्री गुरुनानकदेवजी महाराज के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उनकी वाणी अमृत तुल्य है । यह वाणी श्रवण करने से ही आनंद की प्राप्ति होती है; यदि हम इस वाणी के अनुकूल चलें तो हमारा जीवन सफल हो जाये। इस वाणी का खूब अभ्यास करें । इस वाणी का अभ्यास करते-करते आपको नाम का नशा चढ़ जायेगा ।

नाम खुमारी नानका, चढ़ी रहे दिन रात ।

पूज्य स्वामीजी सायं सिन्धुनगर आश्रम लौट आये। सायं उन्होंने श्री गुरुग्रन्थ साहब के पाठ का समापन करते हुए श्री गुरु नानकदेवजी महाराज के जीवन के कुछ प्रसंग सुनाते हुए कहा कि आप भी श्री गुरुनानकदेवजी महाराज की भांति विनम्र बनें। वे गरीबों को कितना प्यार करते थे। आप भी दीन-दुःखियों को प्यार करें। श्री गुरुनानकदेवजी ने मलिक भागू के मालपूए न खाकर लालू बढई की ज्वार की रोटी खाई। उन्होंने गरीब की रोटी एक हाथ में और धनवान का मालपुआ दूसरे हाथ में दबोचकर प्रमाणित किया कि धनवान के मालपुए से रक्त टपकता है और गरीब की रोटी से दूध की धारा। अर्थात् धनवान की कमाई में गरीबों का रक्त है और गरीब की कमाई उसके पसीने व सच्चाई की कमाई है। प्रेमियो ! आप भी सच्चाई व परिश्रम की कमाई से जीवन व्यतीत करें तो परमात्मा प्रसन्न होंगे।

रात्रि को पूज्य स्वामीजी ने सिन्धुनगर-२ में, जयबाबा धाम एवं सरदार राजलसिंह बठीजा के यहां श्री गुरुनानक देवजी महाराज के जन्मदिन उत्सव के सम्बन्ध में अमृत वचनों की वर्खा की ।

स्वामी टेऊंराम प्रेम प्रकाश मंदिर सिन्धुनगर- ५ का १८वां वार्षिक उत्सव ११ दिसम्बर से १५ दिसम्बर तक आयोजित किया गया । १० दिसम्बर को श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ पाठ का आरम्भ किया गया । पूज्य स्वामीजी ने सायं सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि इस ग्रन्थ में सतगुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की सारी वाणी संग्रहित है । जो प्रेमी श्रद्धा व प्रेम से इस वाणी का पाठ करेगा या श्रवण करके उसके अनुकूल

चलेगा तो वह अवश्य ही लाभान्वित होगा । संतों की वाणी सदैव हमारा मार्गदर्शन करती है । ११ दिसम्बर प्रातः पूज्य स्वामीजी ने अन्य संतों के साथ धर्म-ध्वजा फहराकर उत्सव का शुभारंभ किया । दोपहर २ बजे आश्रम से पूज्य स्वामीजी के नेतृत्व में राम नाम की धुनि लगाते हुए जलूस निकाला । ६ बजे सायं पूज्य स्वामीजी, अन्य संत एवं कई प्रेमी श्री मोटूमल खेराजमल चांडवानी के घर पधारे । वहां श्री मोटूमलजी ने जलपान की व्यवस्था की थी । श्री मोटूमल चांडवानी ने पूज्य स्वामीजी एवं संतों का स्वागत किया । रात्रि ७-३० बजे जुलूस आश्रम पर लौट आया । पूज्य स्वामीजी ने उसी समय सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि हमारा सौभाग्य है कि आज यहां कई संत पधारे हैं । वे पांचों दिन आपको अमृत वचनों का पान कराएंगे। सत्गुरु महाराज जी फरमाते हैं :

तीर्थ दो प्रकार का, चल पुन अचल पछान ।
गंगा आदिक अचल है, चल है संत सुजान ॥

तीर्थ दो प्रकार के होते है, एक अचल तीर्थ, जैसे बद्रीनाथ, हरिद्वार, केदारनाथ आदि । दूसरे तीर्थ चलने वाले, वे हैं- संत महात्मा, जो विभिन्न स्थानों पर जाकर लाखों प्रेमियों की प्यास पूरी करते हैं ।

१२ दिसम्बर सायं पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि धार्मिक शास्त्रों की शिक्षा का अनुसरण करें । संतों की वाणी पढ़ें और श्रवण करें तत्पश्चात् चिन्तन व मनन करें तब आपको लाभ प्राप्त होगा । केवल शास्त्रों का वास धूप करेंगे तो फल की प्राप्ति नहीं होगी । १३ दिसम्बर पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने अपने स्थान का नाम ही 'अमरापुर स्थान' रखा । उन्होंने अपनी वाणी में अमर देश का बार-बार उल्लेख किया है । लाखों लोग माया के चक्कर में अमर देश को भूल गये हैं । जिस उद्देश्य के लिए यह मानव जीवन प्राप्त हुआ है, उस उद्देश्य को भूल गए हैं । प्रेमियो ! आप यदि सच्चा आनन्द चाहते हैं तो सांसारिक पदार्थों का मोह त्याग कर प्रभु प्राप्ति के लिए प्रयास करें। सत्गुरु महाराज भी फरमाते है :

हरि आनंद स्वरूप है, मुक्ति भक्ति जं पास ।

कह टेऊँ तिस पाइये, तजे जगत् की आस ।।

१५ दिसम्बर प्रातः पूज्य स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि हमें यह मनुष्य जन्म मिला है । ऐसा अमूल्य जीवन व्यर्थ न गवाएं । अधिकांश लोग अज्ञान की नींद में सोए हुए हैं । संत आकर इस अज्ञान की नींद से जागृत करते है । सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज भी जीव को जागृत करते हुए कहते हैं :

ग़फलत में न गंवाइये, मानव देह महान ।

कह टेऊँ तुम जाग के, भज ले श्री भगवान ।।

प्रेमियो ! अविद्या की नींद से जागकर भगवद् भजन कर एवं उपकार के कार्यों में अपना तन, मन व धन सफल करें । गुरु मंत्र की साधना करें । गुरु मंत्र की साधना से आपको आत्मिक शक्ति मिलेगी । सत्गुरु महाराज गुरु मंत्र की महिमा गाते हुए कहते हैं :

सफल करो निज श्वास को, गुरु का शब्द कमाय ।

कह टेऊँ गुर शब्द बिन, वृथा नाहिं गवांय ।।

प्रेमियो ! आप विभिन्न नगरों एवं देशों से आकर इस उत्सव में सम्मिलित हुए हैं, इसलिए आप सभी को धन्यवाद । सत्गुरु महाराज जी भी आपके शुभ मंगल उत्सवों में सम्मिलित होंगे और आपको सहायता करेंगे । मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि माँस, शराब और जुआ का परित्याग करें । ये तो अशान्ति के द्वार हैं । इन से शारीरिक, मानसिक व्यथा होती है और संसार में ग्लानि भी होती है । जीवन में दया की ज्योति जगाएं । प्रेमियो ! दहेज की भीख न मांगे । इस कुप्रथा के कारण कई कन्याएं आंसू बहा रही हैं । उत्सव में यदि किसी सेवक से कोई गलती हुई हो तो कृपया मुझे क्षमा करें ।

२६ दिसम्बर पूज्य सत्गुरु महाराज, संत प्रभारामजी की पुण्य तिथि उत्सव के सम्बन्ध में अहमदाबाद पधारे । पूज्य सत्गुरु महाराज ने संत प्रभाराम सोसायटी के प्रांगण में तीन दिन अमृत वचनों की वर्षा की। उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि संत प्रभाराम जी सांसारिक धंधा-व्यवहार करते, प्रतिदिन कई कोस पैदल जाकर गुरु की सेवा करते थे । वे

गुरु की सेवा करते, नाम स्मरण भी करते थे । वे गुरु कृपा से भक्ति में लाल हो गए । फिर वे सांसारिक व्यवहार से दूर रहकर भगवद् भजन में लीन रहते थे । समर्पित भक्त अपनी सुख सुविधा का कोई विचार नहीं करता । वह रात-दिन भगवद् चिन्तन में तल्लीन रहता है। एक बार भगवान विष्णु ने नारदजी से कहा- "मुझे घबराहट हो रही है । तुम शीघ्र ही किसी भक्त के चरणों का जल लेकर आओ। उस जल के पीने से मेरी घबराहट दूर हो जायेगी ।" ऋषि नारद भगवान की आज्ञानुसार किसी भक्त के चरणों का जल लेने गये । वे कई भक्तों के पास गये और उनसे उनके चरणों का जल भगवान के लिए मांगा किन्तु उन्होंने उनको यह उत्तर दिया कि यदि वे अपने चरणों का जल भगवान के लिए देंगे तो यह बड़ा पाप होगा । उन्हें इस पाप के लिए नरक में जाना पड़ेगा । इसलिए वे अपने चरणों का जल भगवान को पीने के लिए नहीं देंगे । श्री नारदजी यह उत्तर सुनकर निराश होकर लौट रहे थे तो मार्ग में उन्हें एक भक्त मिल गया जिसने भगवान के लिए उन्हें अपने चरणों का जल दे दिया । ऋषि नारद ने उससे पूछा कि तुम्हें नरक जाने का भय नहीं है? तुम्हारे चरणों का जल प्रभु पीएंगे क्या यह महापाप नहीं? भक्त ने कहा- "ऋषि नारद ! इस पाप के कारण मुझे नरक में जाने का कोई भी डर नहीं । मेरे परम प्रिय प्रभु यदि इस जल का सेवन करने से प्रसन्न हो जाएं तो मुझे कई नरकों में जाना पड़े तो भी मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानूँगा । मेरे प्रियतम के सुख में ही मेरा सुख समाहित है । नारद वह जल लेकर भवगान के पास आये । भगवान ने मुस्कराते हुए कहा- "नारद ! मुझे ऐसे ही भक्त प्रिय हैं । भगवान ने उस भक्त को साक्षात् दर्शन देकर कृतार्थ किया । प्रेमियो ! आप भी समर्पित भाव से प्रभु की शरण लें, सेवा करें, उसका नाम स्मरण करें, उसका ही चिंतन करें। प्रकाश नेणूमल, संतूमल एवं अन्य सेवकों को धन्यवाद है जो प्रतिवर्ष यह उत्सव आयोजित करते हैं ।

१ जनवरी सन् १९८९ सायं स्वामी टेऊंराम आश्रम, सिन्धुनगर-५ में पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज नव वर्ष का पहला दिन है । प्रभु एवं सत्गुरु महाराज की कृपा से यह वर्ष आप

सभी के लिए सुखद भाग्यशाली हो । आप भी प्रभु से प्रार्थना करें कि सारे देश में शान्ति का वातावरण हो । आज आपके लिए यह सन्देश है कि नाम को नहीं भूलें । जब किसी को बुखार होता है तो खाना-पीना नहीं भाता । उसे मीठी मिश्री भी कड़वी लगती है। फिर भी मिश्री का सेवन करना चाहिए क्योंकि वह शक्ति प्रदान करती है । जैसे पित्त के अधिक हाने के कारण मिश्री कड़वी लगती है वैसे ही विकारों के प्रभाव के कारण नाम मीठा नहीं लगता है । हमारा मन सांसारिक पदार्थों व विषयों के पीछे भटकता रहता है । आपका चित्त नाम स्मरण में लगे या न लगे फिर भी आप नाम जपते रहें। नाम स्मरण करते, भगवद् भजन करते-करते, जैसे-जैसे आपके पाप नष्ट होंगे तो आपको नाम स्मरण से आनन्द का अनुभव होगा । सत्गुरु महाराज जी फरमाते हैं :

राम नाम के प्रेम की, पाती पढ़ो हमेश ।
कह टेऊँ मन शान्त हो, घूटे ताप कलेश ।।

६ जनवरी काटजू कॉलोनी इन्दौर स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम पर परम पूजनीय सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज ने यहां आयोजित सत्संग में युवा वर्ग का आव्हान करते हुए कहा कि आप अपने बुज़ुर्गों का विशेष ख्याल रखें । उनकी सेवा करना युवा वर्ग का परम कर्तव्य है । हम आज जिस स्थिति में हैं वह हमारे बुज़ुर्गों की कृपा एवं स्नेह के कारण ही है । माता ने जन्म दिया, शिक्षक ने शिक्षा दी, पिता ने स्नेह देकर बड़ा किया । हमें आज की स्थिति तक पहुँचाने में किसी-न-किसी रूप में किसी-न-किसी बुजुर्ग का सहयोग रहा है ।

स्वामीजी ने आगे कहा कि बुजुर्गों का भी परम कर्तव्य है कि वे अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा व प्यार दें क्योंकि जैसा बुजुर्ग अपने बच्चों को सिखाएंगे कल का समाज भी वैसा बनेगा ।

स्वामीजी ने विशेष रूप से सास-बहू के रिश्ते को मधुर बनाने हेतु ज़ोर दिया । बहू को बेटी की तरह समझना चाहिए क्योंकि एक तो बहू कुछ लेकर ही आती है, दूसरे वह अपना घर द्वार, माता-पिता

को छोड़कर नये माहौल में आती है और तीसरे बहू ही बुजुर्गों की मृत्यु के बाद श्राद्ध आदि करती है। इस प्रकार अन्ततः बहू बेटी की तुलना में अधिक विपरीत परिस्थियों से होकर गुजरती है। इसलिये यह बुजुर्गों का परम कर्तव्य हो जाता है कि वे अपनी बहूओं को बेटी की तरह प्यार एवं सन्मान से रखें। अगर बुजुर्ग बहूओं को बेटी की तरह रखेंगे तो बहू भी अपने सास-ससुर की माता-पिता की तरह ही सेवा करेगी। घर में एकता का होना अति आवश्यक है। एक और एक मिलकर ग्यारह होते हैं। दो भाई मिलकर ग्यारह भाईयों के समान हैं। आज घर टूटते जा रहे, जबकि आवश्यकता है संयुक्त परिवार की। बाप-बेटे में नहीं बन रही है। सास-ससुर में नहीं बन रही है। इसी कारण आज के समय में परिवार में एकता की सबसे अधिक आवश्यकता है। संयुक्त परिवार के अपने अलग ही फायदे हैं। घर की बचत अधिक होती है। मिलकर कोई भी कार्य करने से शीघ्र समाप्त होता है। समय अच्छा बीतता है। युवाओं को अपने माता-पिता की सेवा करने का मौका मिल जाता है। यदि माता-पिता साथ ही नहीं रहेंगे तो पुत्र-पुत्री, बहू उनकी सेवा कैसे कर पाएंगे। मिलकर रहने में ही आनन्द है।

९ जनवरी प्रातः पूज्य स्वामीजी भोपाल पधारे। कई प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। पूज्य स्वामीजी मंडली सहित संत हिरदाराम के आश्रम आये। वहां उन्होंने संत हिरदाराम साहिब से ज्ञान-गोष्ठी की। पूज्य स्वामीजी के स्वागत में प्रेमियों ने जुलूस निकाला। सायं प्रेम प्रकाश मंदिर बैरागढ़ में पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि बहिन विद्या, मिरचूमल, गोप एवं अन्य सेवकों को धन्यवाद है जो यहाँ सत्गुरु महाराज की ज्योति जगा रहे हैं।

सत्संग प्रसूते सद् बुद्धिम।

सत्संग सत् बुद्धि को जन्म देता है।

अर्थात् सत्संग से बुद्धि शुद्ध व निर्मल होती है। आप न केवल संतों का संग करें किन्तु अपनी संतान को सत्संग के लाएं जिससे उनमें भी शुभ संस्कारों का संचार हो।

१० जनवरी सायं भोपाल के अटलराम धर्मशाला में पूज्य स्वामीजी

का कार्यक्रम रखा गया । श्री मूलचन्द मनवाणी ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत किया । पूज्य स्वामीजी ने उपदेश देते हुए कहा कि दूसरों के दुःख दूर करने का प्रयास करें तो प्रभु आपके दुःख दूर करेंगे । एक संत ने देखा कि एक कुत्ता बहुत चीख रहा है, वह संत उस कुत्ते के समीप गया । संत ने देखा कि कुत्ते के कान में बहुत कीड़े पड़े हैं, इसलिये वह व्यथित होकर पीड़ा से चीख रहा है । संत ने उस कुत्ते के कान से कीड़े निकालने शुरू किये । तब उसे विचार आया यदि वह कीड़े धरती पर फैंक देगा तो वे कीड़े मर जाएंगे । उन कीड़ों को जीवन दान देने के लिए उस संत ने अपनी टांग में ज़ख़्म कर, कीड़े उस ज़ख़्म में डाले । संत के मन में कीड़ों के प्रति भी कितनी दया भावना थी । सत्पुरुष स्वयं को कष्ट देकर भी दूसरों को सुखी करते हैं । प्रेमियो ! आप भी दूसरों को सुखी करने का प्रयास करें। 'परोपकाराय इदं शरीरम्' पूज्य स्वामीजी ने वयोवृद्ध क़वि खीअलदास 'फानी' को शॉल पहनाते हुए सम्मानित किया ।

प्रयाग में कुम्भ मेले के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी १२ जनवरी को प्रयाग पधारे । वहां प्रेम प्रकाश मंडल की ओर से मंडप लगाया गया। १३ जनवरी पूज्य स्वामीजी ने स्वामी टेऊंराम अन्न क्षेत्र आरम्भ किया। वहाँ पूज्य स्वामीजी, मंडल के संत एवं अन्य संत महात्मा प्रातः व सायं अमृत वचनों की वर्षा करते थे । देश-विदेश से हजारों प्रेमी त्रिवेणी संगम में डुबकी लगाने के लिए आए । उन्होंने पूज्य स्वामीजी से आशीर्वाद लिया । १४ जनवरी मकर संक्राति के पावन दिन पूज्य स्वामीजी ने प्रचवन करते हुए कहा कि आज के दिन का बड़ा महत्व है । आज के दिन त्रिवेणी में डुबकी लगाने से जन्म-जन्म के पाप नष्ट हो जाते हैं । हम यदि कोई छोटा-बड़ा उत्सव आयोजित करते हैं तो प्रेमियों या मित्रों को निमन्त्रण भेजते हैं, किन्तु कुम्भ के अवसर पर बिना निमन्त्रण ही लाखों लोग देश-विदेश से आकर सम्मिलित होते हैं । इस महापर्व पर महान संतों, नागा संतों के दर्शन प्राप्त होते हैं अन्यत्र उनका दर्शन सम्भव नहीं है । ऐसे पावन तीर्थों पर आकर नाम स्मरण करें, शुभ कर्म करें, दान-पुण्य करें । सत्गुरु महाराज जी फरमाते हैं :

कह टेऊँ तुम ना करो, दान करन में देर ।
शुभ कर्मों से पलक में, मन देता है फेर ।।

शुभ कर्म करने में तनिक भी विलम्ब न करें, क्योंकि मन पर कोई भरोसा नहीं है । संत, सत्पुरुष सारा जीवन दूसरों की भलाई करने में एवं स्मरण में सफल करते हैं । दूसरों को सुखी करने में ही वे आनन्द का अनुभव करते हैं । संत दयाराम एक छोटी-सी कुटिया में रहता था । वह दिन में केवल एक बार ही भोजन खाता था । स्वयं ही खाना बनाकर खाता था । एक रात को जैसे ही वह खाना तैयार करके खाने के लिए बैठा तभी उसके पास अचानक एक अतिथि आया। उसके पास और खाद्य-सामग्री भी नहीं थी । उसने दीपक बुझाकर अपने भोजन की थाली अतिथि के समक्ष रखी अपने सामने खाली थाली रखकर खाना खाने का स्वांग करने लगा । अतिथि भोजन खाकर प्रसन्न हुआ । संत दयाराम ने स्वयं भोजन न खाकर अतिथि को अपना भोजन खिलाकर प्रसन्न किया । संत ने दीपक इसलिए बुझाया जिससे अतिथि को पता न चले कि उसकी थाली खाली है । परोपकारी लोग दूसरों को सुखी करते हैं । प्रेमियो ! आप भी दूसरों को सुखी करें तो प्रभु आपको सुखी करेगा ।

२५ जनवरी पूज्य स्वामीजी ने उपदेश करते हुए कहा कि संतों का संग भी किसी किसी भाग्यवान को प्राप्त होता है । सांसारिक बातों को छोड़कर प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ना चाहिये । सत्गुरु महाराज जी फरमाते हैं :

बड़ भागी भक्ति करे, कर न सकें दुभार्ग ।
टेऊँ तांते सर्व तज, हरि भक्ति में लाग ।।

भक्त होथी काठियावाड़ के नेकनाम गांव में रहता था । वह सिकन्दर नामक एक मुसलमान का बेटा था, किन्तु वह बचपन से ही संत मुरारीजी की मंडली के साथ रहकर भगवान के भजन गाता था, राम नाम की धुनि लगाता था । वह जैसे बड़ा हुआ, वैसे ही उसी मार्ग पर आगे बढ़ता रहा । बाप ने उसे बहुत समझाया कि हम मुसलमान हैं, यह तुम्हें शोभा नहीं देता कि तुम हिन्दू भक्तों के साथ मिलकर राम नाम

स्मरण करते रहो । होथी ने अपने पिता से विनय की कि पिताजी! राम नाम सब प्राणियों का है और सभी में व्याप्त है । मैं इन का संग कभी नहीं छोड़ूंगा । पिताजी ने और कोई रास्ता न देखकर एक दिन ज़हर का प्याला बेटे के सामने रखकर कहा कि तुम्हारे कारण हमारे समाज में मेरा नाम बदनाम हो रहा है, इसलिए यह ज़हर का प्याला या तो तुम पीओ या मैं पीता हूँ । होथी ने कहा- "पिताजी! आप यह ज़हर का प्याला क्यों पीएं, मैं ही इसे पीता हूँ ।" ऐसा कहकर होथी ने ज़हर का प्याला पी लिया । उसके पिता ने उसे एक कमरे में बन्द कर दिया जिससे वह अन्दर कमरे में ही मर जाय । सायं को भक्त मुरारी की मंडली संकीर्तन करती जा रही थी । उसी मंडली में होथी को देखकर सिकन्दर आश्चर्य में पड़ गया । वह शीघ्र ही घर आया, उसने जिस कमरे में होथी को बन्द किया था, उसे खोला तो वहाँ भी होथी नाम कीर्तन कर रहा था । उस पर मीरा की भांति जहर का कुछ भी असर नहीं हुआ । यह दृश्य देखकर कि होथी कमरे में भी नाम कीर्तन कर रहा है और मंडली में भी कीर्तन कर रहा है, सिकन्दर मन-ही-मन प्रसन्न हुआ और उसने फिर बेटे को भक्तों की मंडली में सम्मिलित होने के लिये कभी नहीं रोका । भगवान स्वयं आकर भक्तों की रक्षा करते हैं ।

प्रेम प्रकाश मंडल का वार्षिक उत्सव प्रयागराज में ही ५ फरवरी से ९ फरवरी तक मनाया गया । ४ फरवरी को स्वामी गुरुमुखदास जी महाराज की पुण्य तिथि मनाई गई । पूज्य स्वामीजी ने स्वामी गुरुमुखदास जी के गुणों का वर्णन किया ।

४ फरवरी प्रातः १०-३० बजे पूज्य गुरुवर स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज ने प्रेम प्रकाश सन्देश के हिन्दी संस्करण के कुम्भ मेला अवसर पर प्रकाशित 'संकल्प शक्ति' विशेषांक का विमोचन पूज्य सद्गुरु भगवान की जय-जयकार के मध्य किया ।

प्रेम प्रकाश सन्देश के सिन्धी संस्करण के विशेषांक 'सत्संग सुधा' का विमोचन सन्त शिरोमणि पूज्य स्वामी धर्मदास जी महाराज ने किया।

'संक्लप शक्ति' विशेषांक हेतु भेजे अपने सन्देश में पूज्य स्वामीजी ने लिखा था कि- धार्मिक अनुष्ठान के प्रारम्भ में संकल्प करना आवश्यक

है । क्रिया में समानता होते हुए भी संकल्प में भिन्नता होने से क्रिया के फल में अन्तर आ जाता है । यही विचार कर क्रिया के प्रारम्भ में संकल्प को महत्व दिया गया है । इसे समझकर सभी मनुष्यों को अपने संक्रुप को पवित्र बनाना चाहिये, तभी विश्व कल्याण सम्भव है । प्रभु परमात्मा एवं गुरुदेव की कृपा आप सभी पर बनी रहे ।

५ फरवरी प्रात: पूज्य स्वामीजी ने धर्म-ध्वजा फहराकर उत्सव आरम्भ किया । चारों दिन पूज्य स्वामीजी, संत हरिदासराम, संत ब्रह्मानन्द, संत स्वयंप्रकाश, संत अनन्तप्रकाश, संत देवप्रकाश, संत सेवप्रकाश एवं अन्य संतों महात्माओं ने सत्संग प्रवचन किये । ८ फरवरी सायं वार्षिक उत्सव का समापन करते हुए पूज्य स्वामीजी ने कहा कि हम सभी का सौभाग्य है कि एक तो कुम्भक महापर्व और दूसरा मंडल का वार्षिक उत्सव प्रयाग राज में, यह तो सोने पर सुहागा है। ऐसे अवसर हमें संतों महात्माओं की अमूल्य वाणी श्रवण करने के लिये मिलते हैं । इस पवित्र पुण्य स्थान पर आकर अपने श्वास नाम स्मरण में सफल करें । मनुष्य जीवन के मर्म को पहचाने सत्गुरु महाराज जी फरमाते हैं :

जूण चौरासी कोट में, मानुष तन है द्वार ।
कह टेऊँ तज जगत् को पाओ हरि दीदार ॥

प्रभु की प्राप्ति एवं शुभकर्म करने के लिये मनुष्य योनि के अतिरिक्त और कोई योनि नहीं । इस मानव जीवन में ही आप नाम स्मरण एवं शुभ कर्म कर सकते हैं । ऐसा अमूल्य जीवन आप व्यर्थ न गंवाएं। मानव जीवन एक ऐसा जंक्शन है, आप जिस ओर जाना चाहें जा सकते हैं । स्वर्ग की ओर भी जा सकते हैं तो नर्क की ओर भी जा सकते है । आपको यदि कोई विशेष महत्व वाली वस्तु मिल जाये तो उसका सद्उपयोग करना चाहिये । यदि कोई व्यक्ति पारस का चटनी बनाने के लिये प्रयोग करे तो वह मूर्ख होगा । हम में से अधिकतर लोग मानव जीवन का दुरुपयोग कर रहे हैं । क्या मनुष्य जीवन अशुभ कर्म, पाप कर्म करने के लिए प्राप्त हुआ है? संतान उत्पत्ति के लिए मिला हैं? कदाचित नहीं । पशु-पक्षी भी संतान की उत्पति करते हैं, भोग भोगते हैं । यदि आपने भी केवल धन संग्रह किया और संतान

को जन्म दिया तो क्या लाभ? मानव जीवन का मर्म पहचान कर शुभ कर्म करें।

परमात्मा का नाम गंगाजल जैसा पवित्र है। यदि गंगाजल मृतक की खोपड़ी पर लग जाय तो उसे भी पवित्र कर देता है। वैसे ही परमात्मा का नाम रूपी गंगाजल जापक के मस्तिष्क रूपी खोपड़ी में आकर जन्मजन्मान्तर के संचित समस्त विकारों को दूर कर देता है।

प्रभु नाम का निरन्तर उच्चारण अथवा उसका जप महा मंगलकारी है। प्रभु का स्मरण करते-करते घर-गृहस्थी का समूचा कार्य करें। यह भी एक प्रकार की भक्ति ही है। बहुत-सी बार माताओं को लगता है कि परिवार बहुत बड़ा है जिससे सारा दिन रसोईघर में चला जाता है। पूजा, ध्यान इत्यादि कुछ हो नहीं पाता। परन्तु घर में ही सभी को भगवद् रूप मानकर की हुई सेवा भी भक्ति ही है। इसलिये परिवार में वृद्ध सास-ससुर व बच्चों की तन्मयता से सेवा करें। लौकिक कार्यों से विश्राम लेने के पश्चात् जो भी समय मिले, उसमें भक्ति करना यह मर्यादा-भक्ति कही जाती है। जो धर्म की मर्यादा का पालन करते हैं, उनका मन शुद्ध होता है। आप भक्ति करें परन्तु धर्म का पालन न करें तो वह भक्ति सफल नहीं होगी। धर्म का फल शांति और अधर्म का फल अशांति है। जो धर्म की मर्यादा का पालन नहीं करता है उसे शांति नहीं मिलेगी। स्त्री, स्त्री की मर्यादा और पुरुष, पुरुष की मर्यादा में रहे। मनुष्य जब मर्यादा का उल्लंघन करता है तभी अशांति आती है। भक्ति धर्मानुकूल हो तो सार्थक है और तभी मन को शांति प्राप्त होगी। धर्म का भक्ति के साथ कोई विरोध नहीं। भक्ति धर्म-मर्यादा विरुद्ध है तो वह भक्ति नहीं।

इस कारण आप स्वधर्म का पालन करते हुए ही भक्ति करें। पहले अपने देश में इतने अधिक रोग नहीं थे जितने आजकल हैं। अस्पतालों में जहां देखो, वहां बहुत भीड़ दिखाई देती है। मुझे तो इसका एक ही कारण दिखाई देता है कि आपने सूर्योदय के दर्शन करना छोड़ दिए हैं। आज अधिकांश व्यक्ति देर रात को सोते हैं और प्रातः देर से जागते हैं। भोगों के साधन बढ़ गये हैं। जीवन बहुत विलासी हो गया है। जीवन में संयम और सदाचार नहीं रहा। सूर्यनारायण

की उपासना नहीं रही, इससे रोग बढ़ गए।

यदि आप निरोगी रहना चाहते हैं तो प्रातःकाल चार-साढ़े चार बजे के बाद सोओ नहीं। नित्यप्रति सूर्योदय से पहले स्नानादि क्रियाओं से निवृत होकर प्रभु नाम का स्मरण करेंगे तो आपका कल्याण होगा।

१२ फरवरी पूज्य स्वामी जी काशी पधारे। वहां उन्होंने प्रेम प्रकाश मंदिर में सत्संग प्रवचन किये। नन्दलाल एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत सत्कार किया। १३ फरवरी वे बौद्ध गया गये। वहां समन्वय आश्रम में भाई द्वारको सुन्दराणी जी संत विनोबा भावे की ज्योति जगा रहे हैं। पूज्य स्वामीजी की प्रेरणा व प्रोत्साहन से श्री द्वारको भाई सुन्दराणी ने बौद्ध गया से कुछ दूर आदिवासी क्षेत्र में आदिवासियों के रहने के लिये मकान बनवाये। एक गांव का नाम स्वामी टेऊंराम गांव और दूसरे गांव का नाम स्वामी सर्वानन्द गांव रखा गया। पूज्य स्वामीजी ने दोनों गांवों का उद्घाटन करते हुए श्री द्वारको भाई को सेवा कार्य के लिये साधुवाद दिया। १४ फरवरी पूज्य स्वामी जी काशी लौट आये। वहां उन्होंने तीन दिन अमृत वचनों की वर्खा की। पूज्य स्वामीजी जी ने उपदेश देते हुए कहा कि नियमित रूप से यहां सत्संग की ज्योति जगाते रहें। अपने मन की वृत्ति प्रभु से जोड़ें। जिसका मन माया के प्रपंच में फंसा हुआ है, उसका जन्म ही व्यर्थ है। सत्गुरु महाराज जी भी फरमाते हैं !

राम नाम में रत नहीं, मन माया में जास।
कह टेऊँ संसार में जन्म व्यर्थ है तास॥

प्रेमियों ! आप समर्पित भाव से प्रभु के बनकर रहें तो प्रभु आपकी रक्षा व सहायता करेंगे। भक्त त्रिलोचन के पास कई संत महात्मा आते थे। वे स्वयं एवं उनकी पत्नी प्रसन्नचित्त से उनकी सेवा करते थे। उनकी इच्छा थी कि कोई सेवक मिल जाए जो आये हुए सन्तों की उनके अनुकूल सेवा करें। भगवान अपने भक्त त्रिलोचन की यह इच्छा पूरी करने के लिए स्वयं एक सेवक के रूप में उनके पास आये और भक्त त्रिलोचन से कहा कि मैं आपके घर में आपकी और आए हुए अतिथि सन्तों की सेवा करूंगा और केवल खाना खाऊंगा, पैसा

नहीं लूंगा । मेरी एक और शर्त है कि यदि आप मेरे यहां रहने की बात दूसरे से करेंगे तो मैं यहां से चला जाऊंगा। भक्त त्रिलोचन को उस सेवक ने प्रभावित किया । वह प्रेम से तेरह महीनों तक सन्तों की सेवा करता रहा । भक्त त्रिलोचन एवं उनकी पत्नी उस सेवक की सेवा से अत्यन्त प्रसन्न थे । न केवल उस सेवक की सेवा किन्तु उसका स्वभाव एवं रूप भी आनन्दप्रद था । एक बार त्रिलोचन की पत्नी ने अपनी एक पड़ोसन से उस सेवक का उल्लेख करते हुए कहा कि हमारा सेवक भलामानुस है, हमारी और अतिथियों की बहुत सेवा करता है, केवल भोजन अधिक खाता है । त्रिलोचन की पत्नी का ऐसा कहना और सेवक अन्तर्ध्यान हो गया । भगवान ने दास बनकर भक्त के घर की सेवा की । ऐसे दीन दयाल, भक्त वत्सल करुणामय भगवान को नहीं भुलायें ।

१७ फरवरी पूज्य स्वामी जी सिन्धुनगर आश्रम लौट आये । १८ से २० फरवरी उन्होंने आश्रम पर ही सत्संग प्रवचन किए। स्वामी चन्दनप्रकाश महाराज के पुण्यतिथि उत्सव के सम्बन्ध में वे २१ फरवरी पूना पधारे। संत अनन्तप्रकाश एवं अन्य प्रेमियों ने स्वामीजी का स्वागत किया । तीन दिन उन्होंने अमृत वचनों की वर्खा की । २३ फरवरी सायं उत्सव का समापन करते हुए पूज्य स्वामी जी ने कहा कि आप प्रति वर्ष स्वामी चन्दनप्रकाशजी महाराज की पुण्य तिथि उत्सव उत्साह से मनाते हैं, इसलिए आप सभी को धन्यवाद है । स्वामी चन्दनप्रकाश जी ने शुभ कार्यों में माया सफल की, साथ-साथ उन्होंने कई प्रेमियों को नाम का दान देकर उनका मार्गदर्शन किया। वे विदेशों में भी नाम का सन्देश देकर आये, आप लोगों को सांसारिक वस्तुओं की प्राप्ति में सुख भासता है किन्तु सच्चा सुख नाम स्मरण में और दूसरों का कल्याण करने में ही हैं, दूसरों को प्रेम व सहानुभूति देने में ही आपको आनन्द की प्राप्ति होगी। सत्गुरु महाराज जी फरमाते हैं ।

जितना सुख संसार में, उन से बहु दुख जान ।
कह टेऊं जग आस तज, भजन करो भगवान ॥

२६ फरवरी जनता जर्नादन परिषद् एवं सौराष्ट्र सिन्धी फडरेशन पंचायत की ओर से सोमनाथ प्रभास-पाटण में सामूहिक विवाहों का आयोजन

किया गया । इसी उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामी जी २५ फरवरी को प्रभास पाटण पधारे । श्री नेवन्दराम लोकवाणी ने उनका स्वागत किया । पूज्य स्वामीजी जी ने १२३ वर-वधुओं को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आज से आपका नया जीवन आरम्भ हो रहा है। घरों में शान्ति व प्रेम का वातारवण पैदा करें, घर में वृद्धों की श्रद्धा से सेवा करें, उन्हें सम्मान दें, मांस व शराब का परित्याग करें । बच्चों को भगवद् रूप समझकर उन्हें प्यार दें । प्रति दिन प्रभु से प्रार्थना करें । नेवन्दराम लोकवाणी एवं अन्य आयोजकों को धन्यवाद है । डा. दयाल आशा ने भी वर-वधुओं को जीवन में जीवदया की ज्योति जगाने का अनुरोध किया । इसी उत्सव में पूज्य स्वामी जी के साथ श्री आसनदास भेरवाणी, कन्हैयालाल जशनमल पहूजा, पोकरदास टेकचन्दाणी, भगवानदास नारायणदास भी सम्मिलित हुए ।

२७ फरवरी प्रात: ३ बजे वीरावल स्वामी शान्तिप्रकाश हाई स्कूल में स्वागत समारोह का आयोजन किया गया। स्वामी लीलाशाह एज्यूकेशन ट्रस्ट प्रधान नेवन्दराम लोकवाणी ने स्कूल के कार्यों पर प्रकाश डालते हुये, पूज्य स्वामीजी का स्वागत किया । पूज्य स्वामीजी ने उपदेश करते हुए विद्यार्थियों से कहा कि माता-पिता वृद्धों एवं आचार्यों को सम्मान दें, उनकी आज्ञा का पालन करें, उनकी सेवा करें । उनके आशीर्वाद से आप संसार में उन्नति कर सकेंगे ।

३ मार्च साधु वासवाणी नगर में पूज्य बेकरी पंचायत ने प्रति वर्ष की भांति विश्व कल्याण के लिये सत्संग यज्ञ एवं श्री गुरुग्रन्थ साहब के अखण्ड पाठ का आयोजन किया । इस उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामी जी ने तीन दिन अमृत वचनों की वर्खा करते हुए कहा कि कई झगड़े, लड़ाइयां, अशान्ति अहं भाव के कारण होती हैं । आप यदि आध्यात्मिक मार्ग पर प्रगति करना चाहते हैं तो अहं भाव का परित्याग करें । व्यवहार में भी अहम् भाव बाधक है । सबसे मधुर व्यवहार करें । मधुर भाषी को सब प्यार करते हैं । मधुर भाषी स्वयं भी आनन्द का अनुभव करता है तो दूसरों को भी आनन्द देता है।

ऐसी वाणी बोलिये, मन का आपा खोय ।
औरों को शीतल करे, आप भी शीतल होय ।।

प्रेमियो ! ऐसी वाणी बोलें कि आपका अतं नष्ट हो जाये । आप

अपनी वाणी व विचारों द्वारा दूसरों को प्रसन्न व शीतल करें । आप अपने सुख की चिन्ता मत करें । दूसरों को सुखी करेंगे तो आप भी अवश्य सुखी होंगे । सन्त सत्पुरुष दूसरों को प्रसन्न करने के लिए स्वयं कष्ट झेलते हैं । जयपुर के निकट गलता गंगा के समीप एक गुफा में संत कृष्णदास रहता था । एक दिन वहां एक भूखा शेर आया । संत कृष्णदास ने उस शेर को भूखा देखकर, अपनी टांग का टुकड़ा काटकर उसे खाने के लिए दिया । शेर वह टांग का टुकड़ा खाकर रमता रहा । उसी समय ही सन्त कृष्णदास को भगवान ने साक्षात् दर्शन दिया । प्रेमियों ! आप भी उपकार के कार्य कर जीवन सफल करें और भगवान को नहीं भुलायें । स्मरण व सेवा की ज्योति जगायें। लक्ष्मणदास पंजवाणी ने पूज्य स्वामी जी का आभार व्यक्त किया।

५ मार्च सायं पूज्य स्वामी जी ने स्वामी सर्वानन्द हास्पीटल सिन्धुनगर में दांतों के विभाग एवं आंखों की कम्प्यूटर मशीन का उद्‌घाटन करते हुए दान दाता, कान हासानन्द लखाणी, चतुरी मंघाराम पंजाबी को धन्यवाद दिया । स्वामी जी ने दांतों के विभाग के डॉ. श्याम मुखी को भी धन्यवाद दिया । स्वामीजी ने डॉक्टरों को सम्बोधित करते हुए कहा कि बीमारों की सेवा प्रेम व सहानुभूति से करें । श्री सभागचन्द चावला ने पूज्य स्वामीजी एवं अन्य अतिथियों का स्वागत किया ।

बम्बई वडाला सिन्धी ब्रादर मंडल ने कैलाश कुन्ज के प्रांगण में १० मार्च से २२ मार्च तक पूज्य सतगुरु स्वामी शान्तिप्रकाजी महाराज के सत्संग प्रचवन का कार्यक्रम रखा । पूज्य स्वामीजी ने रविवार १० मार्च सायं आयोजकों को इस सत्संग यज्ञ के आयोजन के लिये धन्यवाद देते हुये कहा कि प्रेमियो ! सत्संग की बड़ी महिमा है । संत गोस्वामी तुलसीदास जी सत्संग की महिमा गाते हुये कहते हैं :

भजन फल पेखिअ तत्काला

काक होंहि पिक बकऊ मराला

सत्संग का फल तत्काल मिलता है । कौआ कोयल बन जाता है, बगुला हँस बन जाता है । उनके रूप में परिवर्तन नहीं होता किन्तु उनका स्वभाव बदल जाता है । अर्थात् जिसकी वाणी कौए जैसी है, सत्संग के प्रभाव के कारण वह कोयल जैसा मीठा बोलता है । बगुले

जैसे स्वभाव वाला मनुष्य हँस जैसा विवेकी बन जाता है । विचार शुद्ध होते ही उसका आचरण भी शुद्ध होता है । प्रेमियो ! आप भी इस यज्ञ में नियमित रूप से आकर लाभ प्राप्त करें ।

११ मार्च रात्रि पूज्य स्वामीजी ने उपदेश देते हुये कहा :

हरि मैं तेरा हूँ तेरा, गुरु मैं तेरा हूँ तेरा ।

वह भगवान भक्त है जो प्रभु से उपयुक्त प्रार्थना करता है । हम मन, वचन व कर्म से परमात्मा के बनें तो आनन्द-ही-आनन्द है । यदि आप किसी से प्रेम से कहेंगे कि मैं तुम्हारा ही हूँ तो फिर वह भी आपको वैसे ही मधुर वचन कहेगा । यदि हम समर्पित भाव से प्रभु की शरण लेंगे तो अवश्य ही उनकी अनुकम्पा होगी । भगवान श्रीकृष्ण भी अर्जुन से श्रीमद्भगवद् गीता में कहते हैं :

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं बज ।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षपिष्यानि मा शुचः ।।

१२ मार्च पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि अज्ञान की नींद से जागृत होकर अपने स्वरूप को पहचानें । आत्मज्ञान की प्राप्ति के पश्चात् ही आप सांसारिक दुःखों से मुक्त हो सकेंगे । सतगुरु महाराज जी फरमाते हैं :

टेऊँ गफलत नींद तज, देखो अपना रूप ।
जिस देखन से जगत् के, मिटहिं पाप संताप ।।

एक शराबी रास्ते में खड़ा था, उसी समय वहां का राजा अपने रथ पर सवार होकर जा रहा था । वह शराबी नशे के कारण कहने लगा कि यह रथ मैं खरीदूँगा । यह सुनकर राजा क्रोधित होकर बोला- "मूर्ख ! क्या यह रथ तू खरीदेगा? यह मेरा रथ है, मैं देश का राजा हूँ ।" शराबी ने कहा कि मैं राजा को भी खरीद लूँगा । राजा यह सुनकर आग बबूला हो गया । उसने आदेश दिया कि इसे कैद कर कल मेरे सामने पेश किया जाये । राजा के आदेश का पालन किया गया । दूसरे दिन उसे राज दरबार में पेश किया गया । राजा ने उससे पूछा अब तुम क्या-क्या खरीदोगे? शराबी ने हाथ जोड़कर विनय की "राजन् ! खरीदने वाला अर्थात् नशा तो चला गया । मैंने शराब के

नशे में जो कुछ कहा, उस दोष के लिये कृपया क्षमा करें।'' प्रेमियो! वह आदमी शराब के नशे के कारण स्वयं को भी भूल गया और उसने राजा को भी नहीं पहचाना। उसे ज्ञान ही नहीं रहा कि वह राजा से क्या बोल रहा है। मनुष्य भी माया के मद में, पद के नशे में किसी के साथ क्या व्यवहार करता है, वह भूल गया है। जब यह नशा उतरता है तो यर्थाथ का ज्ञान होता है। ज्ञान होने से आनन्द भी प्राप्त होता है।

१३ मार्च पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि इस संसार के पार होने के लिये किसी-न-किसी परिपूर्ण सत्गुरु की शरण लें। सत्गरु नाविक है जो आपको नाम रूपी नाव में बिठाकर भवसागर से पार लगायेगा। सत्गुरु महाराज जी अपनी वाणी में फरमाते है :

टेऊँ नौका नाम की, करणधार गुर होय।
बिन श्रम भव सिन्धु से, पार जात सब कोय॥

गुरु वेदान्त व सनातन धर्म का मर्मज्ञ होना चाहिए, वैरागी एवं ज्ञानी होना चाहिए। आजकल पाखण्ड बहुत बढ़ गया है। पाखंण्डियों के फंदे में नहीं फँसना। प्रेमियो। आप गृहस्थी में रहते, अपना धंधा व्यवहार करते, प्रभु को नहीं भुलायें और प्रतिदिन कोई-न-कोई दया परोपकार का कार्य करें तो अवश्य प्रभु की अनुकम्पा होगी।

१४ मार्च रात्रि पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि मनुष्य को एकान्त में ही अपने किये हुए पाप-पुण्य याद आते हैं। प्रेमियो ! आप भी कभी-कभी एकान्त में बैठकर अपने शुभ-अशुभ कर्मों पर विचार कर, किये हुए अशुभ कर्मों के लिये आँसू बहाएं तो आपका चित्त निर्मल होगा। एक बार एक राजा अकेला सोया हुआ था, अचानक उसे विचार आया कि पिताजी मर गये, दादाजी का स्वर्गवास हो गया, उनके साथ काली कुतिया भी नहीं गई। वे राज्य पदार्थ सभी कुछ यहां छोड़ गये, मैं भी पिताजी के साथ नहीं गया तो मेरे साथ फिर कौन चलेगा? मुझे भी अकेला जाना पड़ेगा। ऐसा सोचते-सोचते राजा रो पड़ा। उस रात को ही राजा, राज-पाट व वस्त्रों को त्याग कर साधारण वस्त्र धारणकर जंगल की ओर चल पड़ा। प्रातः रानियाँ जब नींद से उठीं, राजा को न देखकर चिन्तित

हुईं, मन्त्रीगण आश्चर्य में पड़ गये। मन्त्रीगण राजा की खोज में निकले। वे जंगल में आये। वहां उन्होंने देखा कि राजा एक कुटिया में राम नाम का जाप कर रहा है। मन्त्रियों ने राजा से प्रार्थना की- "महाराज! आप राज्य त्यागकर यहां जंगल में क्यों बैठ गये हैं? कृपया राजमहल में चलें।" राजा ने कहा- "सभी को इस संसार से अकेला जाना है, फिर क्यों ममत्व के जाल में फँसा रहूँ? अब यहां से राजमहल में नहीं लौटूँगा।" प्रेमियो ! आप भी जगत् में अनासक्त भाव से रहें। एकान्त में बैठकर भगवद् चिन्तन करें तो आपका कल्याण होगा।

१५ मार्च पूज्य स्वामीजी ने उपदेश करते हुए कहा कि निष्काम भाव से सेवा करें। आजकल कई लोग स्वार्थ के लिए सेवा करते है। उनको सेवक नहीं मज़दूर कहेंगे। प्रभु के सेवक बनें, देश के सेवक बनें। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने अपना सारा जीवन राष्ट्र को समर्पित किया। उसने न कभी अपने सुख का विचार किया न अपनी सन्तान के लिए धन संग्रह किया, मकान तक नहीं बनाया। उसका प्रयाग में एक मकान किराये पर था। जब वह वहां था तब वह उसी मकान में रहता था। भारत के गृहमंत्री होते हुए उसे अपना मकान नहीं था। किसी कारण उसे वह किराये वाला मकान भी छोड़ना पड़ा। कुछ मित्र उसे कहते थे कि आप कम से कम सन्तान के लिए एक मकान तो बनायें। तब श्री लालबहादुर शास्त्री उन्हें कहते कि मैं बिना घर के गृहमंत्री हूँ। वे महान त्यागी व निष्कामी देशभक्त थे। भारत के प्रधानमंत्री होने के बाद भी उन्होंने अपने लिए मकान नहीं बनवाया। आज राष्ट्र को ऐसे निष्ठावान राष्ट्र भक्तों की अत्यन्त आवश्यकता है।

१६ मार्च पूज्य स्वामी जी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि कर्म व ज्ञान दोनों की आवश्यकता है। पांव है कर्म, व आंखें है ज्ञान। आंखें रास्ता दिखाती हैं, पांव आगे बढ़ते हैं। किसी लड़की को खाना तैयार करने का ज्ञान हो, उसने ऐसी परीक्षा भी उत्तीर्ण की हो किन्तु वह अपने ज्ञान के अनुसार खाना तैयार नहीं करे, केवल बैठी रहे, तो उसका ज्ञान किस काम का ! किसी लड़की को खाना बनाने का कुछ भी ज्ञान नहीं, तो वह अच्छी तरह खाना तैयार नहीं

कर सकेगी । सफलता के लिए ज्ञान व कर्म दोनों की आवश्यकता है । कर्म के सिवाय ज्ञान भी बोझ है । कोई मनुष्य बड़े-बड़े ग्रन्थों का अध्ययन करे किन्तु उसकी करनी कथनी शास्त्रों के अनुकूल नहीं हो तो उस ज्ञान से क्या लाभ? जीवन में ज्ञान, भक्ति व कर्म का सुन्दर समन्वय होना चाहिए । भगवान श्रीकृष्ण ने भी श्रीमद् भगवद् गीता में ज्ञान, भक्ति व कर्म का महत्व बताया है । प्रेमियों । आप भी श्रीमद् भगवद् गीता का अभ्यास कर उनके सिद्धांतों पर चलकर जीवन सफल बनायें ।

१७ मार्च पूज्य स्वामी जी ने प्रवचन करते हुए कहा कि स्मरण में श्वास सफलकरें । नाम स्मरण भी निष्काम भावना से करें, दुख दर्द को दूर करने के लिए भी नाम का सहारा लेना चाहिए, किन्तु निष्काम नाम स्मरण का बड़ा महत्व है । सन्त कबीरदास जी भी फरमाते हैं :

राजा रानी राव रंक बड़ा जो सुमरे नाम ।
कहे कबीर बड़े में बड़ा, जो सुमरे निःकाम ।।

राजा हो या रानी, धनवान हो या निर्धन, सबसे महान वह है जो नाम स्मरण करता है । जिसने नाम निधि प्राप्त की है, वही सच्चा धनवान है । श्री सुखमनी साहिब में श्री गुरु अर्जनदेव जी महाराज फरमाते हैं :

प्रभ कै स्मरह से धनवन्ते ।
प्रभ कै स्मरह से पतवन्ते ।।

प्रेमियो ! नाम-धन संग्रह करें जो आपको इस लोक एवं परलोक में काम आये ।

१८ मार्च पूज्य स्वामी जी ने प्रवचन करते हुए कहा कि भक्ति मार्ग में प्रगति करने के लिए वैराग्य आवश्यक है । आसक्ति माया में फंसायेगी, अनासक्ति प्रभु से मिलायेगी । प्रेमियो ! आप यदि प्रभु का दर्शन करना चाहते हैं तो माया के प्रपंच से दूर रहकर चित्त की वृत्ति प्रभु से जोड़ें । आपको आत्मिक आनन्द की उपलब्धि होगी । एक प्रभु की ही शरण लें तो बेड़ा पार लग जायेगा ।

१९ मार्च प्रातः ११ बजे पूज्य स्वामीजी सिन्धुवाड़ी घाटकोपर, बम्बई पधारे। श्री आसनदास भेरवाणी ने उनका स्वागत किया। डॉ. दयाल 'आशा' ने पूज्य स्वामी जी के परोपकारी जीवन का वर्णन किया। पूज्य स्वामी जी ने प्रवचन करते हुए कहा कि जैसे आप सांसारिक पदार्थों की प्राप्ति के लिए प्रयास करते हैं वैसे ही उससे अधिक प्रयास प्रभु प्राप्ति के लिये करें। कुमोदवली नामक एक कन्या थी। उसके मन में भगवान श्री कृष्ण के प्रति अटूट भक्ति भावना थी। बड़े-बड़े राजा उससे विवाह करना चाहते थे, किन्तु उसने यह दृढ़ संकल्प किया कि वह भगवान श्री कृष्ण के भक्त से ही विवाह करेगी। नीलन नामक एक युवा राजा की तीव्र इच्छा थी कि वह कुमोदवली से विवाह करे। कुमोदवली ने उससे यह शर्त रखी कि सर्वप्रथम आप एक वर्ष तक प्रतिदिन एक हजार आठ संतों को भोजन कराएं। तत्पश्चात् वह विवाह करेगी। नीलन ने कुमोदवली के कहे अनुसार प्रति दिन एक हजार आठ संतों को भोजन कराना आरम्भ किया। संतों की सेवा करते-करते नीलन का चित्त निर्मल होता गया। उन संतों के संग में नीलन भी भक्त बन गया। फिर कुमोदवली ने उससे विवाह कर उसकी इच्छा पूरी की। आप भी किसी न किसी संत की शरण लें। उसकी आशीर्वाद एवं संग से आपका जीवन नया बन जायेगा। संतों महात्माओं प्रभु व वृद्धों की दया दृष्टि से सूखे खेत भी हरे हो जाते हैं।

जब दया दृष्टि हो जाती है।
तो सूखी खेती भी हरियाती है॥

प्रेमियों ! आप भी यदि चाहते हैं कि प्रभु आप पर दया करें तो आप भी दूसरों पर दया करें। आप यदि प्रभु का प्यार चाहते हैं तो पहले आप दूसरों को प्यार करें, सहानुभूति दें। ऐसा व्यवहार करने से आपके परिवार स्वर्ग हो जायेंगे।

दोपहर को पूज्य स्वामी जी ने बहन कौशल्या पोकरदास टेकचन्दाणी के घर भोजन ग्रहण कर विश्राम किया।

सायं पूज्य स्वामी जी ने वडाला में उपदेश देते हुए कहा कि श्रद्धा व प्रेम से नाम का स्मरण करें और दान करें। दान निष्काम भावना से करना चाहिए। संत कबीरदास से किसी साधक ने पूछा कि प्रभु

प्राप्ति का उपाय बतायें। सन्त कबीरदास जी ने कहा।

कबीरा हरि मिलन की बात सुनी है दो।
इक साहिब का नाम ले, और कर ऊंचा हो ॥

प्रभु प्राप्ति के लिए एक तो भगवद् भजन कर। दूसरा आपका हाथ सदैव ऊपर होना चाहिये, अर्थात् जो कुछ प्रभु ने दिया है, वह दूसरों को देते जाओ, देने वाले का हाथ सदैव ऊपर होता है। प्रेमियों आप भी इस शिक्षा को अपने जीवन में उतारें।

२१ मार्च होली के दिन पूज्य स्वामी जी ने भक्त प्रह्लाद के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रह्लाद ने बाल्यावस्था में ही भक्ति साधना प्रारम्भ की। उसे कितने न कष्ट दिए गये किन्तु भगवान ने अपने बालक भक्त की रक्षा की। हम प्रभु से विमुख होकर अपने अमूल्य श्वास गंवा रहे हैं। हम भी प्रह्लाद की तरह प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ें, नाम स्मरण में मग्न हो जायें। सत्गुरु महाराज जी नाम स्मरण की महिमा गाते हुए कहते हैं :

कहे टेऊं नित कीजिए राम नाम से प्रेम।
राम नाम के सम नहीं, जप तप संयम नेम ॥

२२ मार्च दयाल 'आशा' ने पूज्य स्वामीजी की महिमा का गीत गाते हुए उनके परोपकारी जीवन का वर्णन किया। तत्पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने सभी प्रेमियों पर पुष्पों की वर्खा की और प्रवीण विद्यार्थियों को वडाला सिन्धी ब्रादर मंडली की ओर से पुरस्कार दिये। उन्होंने प्रवचन करते कहा कि ब्रज में होली विशेष रूप से मनाई जाती है। भगवान बांकेबिहारी ने गोपियों व ग्वालों को प्रेम के रंग से ओतप्रोत कर दिया। कुछ अज्ञानी लोग आज के दिन शराब पीते हैं और मांस भक्षण करते हैं। ऐसे त्यौहारों के दिन तो प्रभु का विशेष स्मरण करना चाहिए। प्रभु के प्रेम के रंग में रंग जाना चाहिए। प्यारे चोइथराम बेगराज, परयाणी, जीअंदराम हेमनदास,निहचलदास मंगतराम एवं अन्य सेवकों को इस सत्संग यज्ञ के अयोजन के लिए धन्यवाद है।

२३ मार्च प्रातः १० बजे शहीद हेमू कालाणी मैदान, चेम्बूर, बम्बई

में पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में शहीद वीर हेमू कालाणी का जन्मदिन उत्सव मनाया गया । उसी मैदान पर शहीद वीर हेमू का स्मारक बनवाने के लिए भूमि पूजा की गई । श्री तीर्थ सभाणी एवं श्री आसनदास भेरवाणी ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत किया । पूज्य स्वामीजी ने इस स्मारक के लिये ११ हजार रुपये दिये । उन्होंने शहीद को पुष्पांजलि अर्पित करते हुये कहा कि हेमू ने देश की आजादी के लिए अपने जीवन का बलिदान दिया । ऐसे निडर देशभक्त का स्मारक बनवाना हमारा कर्तव्य है । आज देश की आजादी की सुरक्षा एवं नवनिर्माण के लिए हमें भी कुछ कुर्बानी देनी चाहिए । ऐसे देश भक्तों का जीवन हमारे लिये प्रेरणा का स्त्रोत है ।

२४ मार्च सायं आश्रम में ऋषि रुघुराम की पुण्यतिथि मनाई गई। पूज्य स्वामीजी ने संत ऋषि रुघुराम को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये कहा कि वे राष्ट्र-भक्त एवं ईश्वर-भक्त थे । वे महान विद्वान होते हुए भी सादगी से रहते थे । वे भगवान श्रीकृष्ण के अनन्य उपासक थे। उन्होंने श्रीमद्भगवद् गीता के सिद्धांतों पर चलने का प्रयास किया। जीवणदास आहूजा एवं दयाल 'आशा' ने भी ऋषि रुघुराम के सद्गुणों का वर्णन किया ।

बैंक ऑफ बड़ौदा सिन्धी सभा का वार्षिक उत्सव २५ मार्च सिन्धु यूथ सर्किल, सिन्धुनगर-३ में आयोजित किया गया । पूज्य स्वामीजी इस उत्सव के मुख्य अतिथि थे । श्री ठाकुरदास आहूजा ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत किया । श्री ओम लालवाणी ने पूज्य स्वामीजी का उल्लेख करते हुये कहा कि वे आध्यात्मिक पूंजी के धनी हैं । वे आज हमारी वार्षिक साहित्यिक पत्रिका 'पूंजी' के विमोचन उत्सव पर हमें आशीर्वाद देने के लिये पधारे हैं । वे महान् विभूति हैं, आध्यात्मिक मार्गदर्शक है । डॉ. दयाल 'आशा' ने 'पूंजी' का विमोचन करते हुए कहा कि 'पूंजी' जैसी पत्रिकाएँ सिन्धी साहित्य की सच्ची निधि हैं । प्यारे भाई नंद छुगाणी को धन्यवाद है जो प्रतिवर्ष ऐसी सुन्दर, ज्ञान-वर्धक पत्रिका का सम्पादन करता है । पूज्य स्वामीजी देश विदेश के किसी भी नगर में जाते हैं तो वे अपने प्रवचन में सिन्धी भाषा व सिन्धु संस्कृति की सुरक्षा के लिये प्रेरित करते हैं । पूज्य स्वामीजी ने उपदेश देते हुये

कहा कि पशु-पक्षियों को भी अपनी भाषा प्रिय होती है, वे अपनी भाषा में ही बोलते हैं। हमें भी अपनी मातृ भाषा सिन्धी का प्रयोग करना चाहिये। आप सिन्धी भाषा को न भुलाएं भाषा ज़िंदह है तो जाति ज़िंदह है। सिन्धी भाषा में हमारे संतों व सूफियों की अमूल्य वाणी है, उसकी सुरक्षा करें।

२५ मार्च- स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, ग्वालियर के प्रमुख मार्ग दर्शन एवं प्रेम प्रकाश सन्देश के प्रमुख सूत्रधार श्री श्याम सुन्दर भम्भाणी रात्रि ११ बजे अमरापुर धाम पधारे। २७ मार्च सिन्धुनगर प्रेम प्रकाश आश्रम पर पूज्य गुरुवर स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज द्वारा सत्संग में दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थनाकी गई।

प्रेम प्रकाश मंदिर गांधीनगर कोल्हापुर का वार्षिकोत्सव २९ मार्च से २ अप्रैल तक कोल्हापुर में आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी २९ मार्च प्रातः गांधी नगर पधारे। कई प्रेमियों ने उन्हें पुष्प-मालाएँ भेंट की। प्रातः ९ बजे पूज्य स्वामीजी ने धर्म ध्वजा फहराकर उत्सव आरम्भ किया। सायं ४ बजे मन्दिर से पूज्य स्वामीजी के नेतृत्व में शोभा यात्रा निकाली गई। रात्रि को पूज्य स्वामीजी ने अमृत वचनों की वर्खा की। ३० मार्च प्रातः १० बजे पूज्य स्वामीजी द्वारा गरीबों को आर्थिक सहायता एवं अनाज वितरण किया गया। सायं ४ बजे स्वामी सर्वानन्द स्कूल में पूज्य स्वामीजी का स्वागत करते हुए रमेश तनवाणी ने कहा कि पूज्य स्वामीजी सच्चे मार्गदर्शक हैं। इनकी कृपा से ही हमने इस विद्या मन्दिर की स्थापना की। अब कई विद्यार्थी इस विद्या मन्दिर से लाभान्वित हो रहे हैं।

पूज्य स्वामीजी ने विद्या मन्दिर में उपदेश करते हुए कहा कि माता-पिता की आज्ञा का पालन करें। उनकी आज्ञानुसार चलेंगे तो उन्नति कर सकेंगे। उन्हें सन्मान दें, उनकी सेवा करें। प्रातः प्रभु से प्रार्थना करें। एक दूसरे के साथ स्नेह व सहानुभूति का व्यवहार करें। ३०-३१ मार्च रात्रि को मन्दिर के मैदान में पहले संत अनन्तप्रकाश एवं अन्य संतों ने सत्संग प्रवचन किया, तत्पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों का मार्ग दर्शन किया।

१ अप्रैल सायं स्वामी टेऊँराम महिला मंडली गांधी नगर में पूज्य

स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुये कहा कि माता राणी को धन्यवाद है जो यहाँ नियमित रूप से सत्संग की ज्योति जगा रही है। सत्संग में अमृत वचनों की वर्खा होती है, जो तीनों तापों को दूर करती है। सत्संग कल्पवृक्ष की भांति मन वांछित फल देता है।

सत्संग निज कल्पतरु सकल कामना देत।
अमृत रूपी वचन कह, तीनों ताप हरि लेत ॥

माताओ ! आप अपनी सन्तान को भगवद् रूप समझकर उनकी सेवा करें। उनमें उत्तम संस्कारों का संचार करें। घर के काम काज करते हुए राम नाम का स्मरण करें। छोटी-छोटी बातों के लिये अशान्ति का वातावरण पैदा न करें। गम खाने से यश होगा।

१ अप्रैल रात्रि संत देव प्रकाश, संत अनन्तप्रकाश एवं अन्य संतों ने सत्संग प्रवचन किये। २ अप्रैल को प्रातः पूज्य स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि मुखी राधोमल, ब्रजलाल हीराणी, हरि बली, रमेश तनवाणी सभी सेवकों को इस उत्सव के आयोजन हेतु धन्यवाद है। ऐसे उत्सवों का उद्देश्य यही है कि किसी-न-किसी प्रकार आप लोगों को नाम जपवाना। नाम के बिना जीवन मरु भूमि है। नाम स्मरण द्वारा जीवन सफल बनाएँ। एक बार जंगल में एक मेहवाल भैंस चरा रहा था वहां से एक संत गुजरा। उसने मेहवाल से पूछा- क्या तुम प्रतिदिन भगवद् भजन करते हो? मेहवाल बोला- मुझे भगवद् भजन करने की कोई जानकारी ही नहीं तो भजन कैसे करूँगा?'' संत ने कहा कि प्रतिदिन प्रातः एवं रात्रि इक्कीस-इक्कीस मालाएँ राम नाम की जपा करो। मेहवाल ने उत्तर दिया कि वह इतनी बार राम के नाम का जाप नहीं कर सकेगा। संत के समझाने पर मेहवाल ने पांच पांच बार राम नाम जपने की प्रतिज्ञा की। संत अपनी राह चला गया। इधर मेहवाल प्रतिदिन व रात पांच पांच बार रामनाम का जाप करता था, परन्तु राम नाम के जाप के पूर्व तीन-चार घण्टे वह राम नाम जपने का चिन्तन करता था कि अमुक समय उसे राम नाम जपना है। वह मेहवाल जब संसार से चल बसा तब चित्रगुप्त ने उसके कर्मों का खाता खोला तो उसमें इसके भगवद् भजन करने के प्रति दिन ६ घण्डे लिखे थे। यह देखकर मेहवाल आश्चर्य में पड़ गया।

उसे वैकुंठ में ले गए । प्रेमियो । मेहवाल केवल पांच-पांच बार राम नाम जपता था, किन्तु उस जाप करने का वह जितने घण्टे पहले चिन्तन करता था, वह चिन्तन करने वाला समय भी प्रभु के नाम स्मरण में बीता समय माना गया । प्रभु कितना न दयालु है । आप भी प्रेम से नाम स्मरण करें । दुकान पर बैठे, कार्यालय में काम करते करते नाम चिन्तन करें ।

२ अप्रैल सायं पूज्य स्वामीजी इचलकंरजी पधारे । श्री ब्रजलाल हीरानी, पहिलाजराम राधाकृष्ण एवं प्रेमियों ने उनका स्वागत किया । रात्रि पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा ।

कह टेऊँ किस मनुष्य के दिल को दुख दे नाहिं ।
दुखी जीव के आह से, नाश होत क्षण माहिं ।।

प्रेमियो ! किसी भी प्राणी को मन वचन व कर्म से दुख न दें। उसकी आह से आप नष्ट हो जाओगे । यह प्रकृति का नियम है कि जो दूसरों को दुखी करता है, उसे उसके कर्मफल का दुःख भुगतना पड़ता है, आप दूसरों को सुखी करेंगे तो परमात्मा आप को सुखी करेगा । सभी प्रेमियों में प्रभु व्यापक है ।

सन्तों महात्माओं के मन में न केवल मनुष्य मात्र के लिए प्रेम व सहानभूति होती है किंतु वे पशु पक्षियों को भी प्यार करते हैं । वे उन पशु पक्षियों का दुख भी अपना दुख समझकर उसे दूर करने का प्रयास करते हैं । एक बार नोखा गांव के ठाकुर की बेटी का विवाह होने वाला था । विवाह के सम्बन्ध में ठाकुर ने चालीस बकरियों को बांध दिया । वह माँसाहारी भोज बनाने वाले थे । अचानक वहीं से सन्त गुलाबदासजी जा रहे थे । उसने बकरियों को देखकर पूछा कि इनको क्यों बांधा गया है? तब सन्त गुलाबदास को बताया गया कि ठाकुर की बेटी के विवाह के सम्बन्ध में होने वाले मांसाहारी भोजन के लिये इनको बांधा गया है । परसों ये पशु मौत के घाट उतारे जायेंगे। सन्त गुलाबदास ने वहां बैठकर प्रतिज्ञा की कि यदि इनको मौत के घाट उतारा गया तो वह अन्न जल सेवन न कर प्राण त्याग देगा । यह खबर जब उस गांव के ठाकुर को पड़ी तब वह सन्त गुलाबदास जी के पास आया । सन्त गुलाबदास की कृपा से ठाकुर के मन में

परिवर्तन आ गया । उसने शीघ्र ही सभी बकरियों को मुक्त कर जीवन दान दिया । प्रेमियो ! आप भी अपने जीवन में जीव दया की ज्योति जगायें ।

३ अप्रैल को पूज्य स्वामी जी बेलगाम पधारे । वहां उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि जो भी शुभ कार्य करें उका प्रदर्शन नहीं करें । जो शुभ कार्य कर अभिमान करता है, उसके शुभ कार्य का फल नष्ट होता है । इसलिए नाम स्मरण, दान पुण्य आदि शुभ कार्य करते अभिमान नहीं करना चाहिए ।

कबीरा गर्व न कीजिए, लोक न हसीये कोय ।
अजहूँ नाव दरियाह में, क्या जाने क्या होय ।।

प्रेमियों ! काया, माया, धन पदार्थ एवं विद्या का भी अभिमान नहीं करें । किसी दुखी मनुष्य की भी हंसी नहीं उड़ायें । उपर्युक्त दोहे में सन्त कबीरदास फरमाते हैं कि अभी तो जीवन नैया मझधार में है, पता नहीं उस नैया का क्या होगा? प्रभु से प्रार्थना करें ।

नानक पत सेती घर जाय

स्वामी तिलोकदास जी महाराज के जन्मदिन उत्सव के संबंध में ६ अप्रैल सायं पूज्य स्वामीजी जयबाबाधाम सिन्धुनगर पधारे। संत ब्रह्मदास ने उनका स्वागत किया । पूज्य स्वामीजी ने स्वामी तिलोकदास जी महाराज को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि मेरा उनके साथ वर्षों से स्नेह सम्बन्ध रहा है वे विद्वान, ज्ञानवान और मधुर भाषी थे। प्रेमियों ! आप भी उनके सिद्धांतों पर चलने का प्रयास करें ।

७ अप्रैल सायं चेटी चांद के दिन आश्रम में पूज्य स्वामीजी ने सिन्ध के अवतार श्री उडेरोलाल की महिमा गाते हुए कहा कि आज के दिन ही श्री उडेरोलाल ने सिन्ध में अवतार धारण कर दुष्टों का दमन कर हिन्दू धर्म की रक्षा की । वे वरुण देवता के अवतार थे। इसलिए हमारा सिन्धी समुदाय विशेष रूप से आज का दिन मनाते हैं, आज से हमारा नया वर्ष भी प्रारम्भ होता है । आज शुभ संकल्प करें । उडेरोलाल से प्रार्थना करें कि देश धर्म की रक्षा हो ।

८ अप्रैल को प्रात: पूज्य स्वामीजी धर्म दरबार सिन्धुनगर-३ में पधारे।

वहां स्वामी धर्मदासजी महाराज के जन्मदिन उत्सव के सम्बंध में सन्तों की संगोष्ठी में उन्होंने अपने विचार व्यक्त किये ! रात्रि को कुर्ला (बम्बई) झूलेलाल मंदिर में उन्होंने अमृत वचनों की वर्खा की । ९ अप्रैल को गोधरा पधारे । गोविन्दराम रावलाणी, राजू माखीजानी एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया । रात को पूज्य स्वामी जी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा क़ि परमात्मा में पूर्ण विश्वास रखकर प्रार्थना करें । सत्गुरु महाराज भी फरमाते हैं :

रे मन राखो राम में, पूर्ण तुम विश्वास ।
कह टेऊँ विश्वास से होवे सब दुख नास ।।

महाराष्ट्र के सितारा जिला के वटी गांव में गोपाल पंत गरीब ब्राह्मण रहता था । वह विद्यार्थियों को पढ़ाकर जीवन निर्वाह करता था, उसका बेटा ज्योति पंत मंद बुद्धि था । वह ६ महीने में श्री गायत्री मंत्र कठंस्थ नहीं कर सका । एक दिन उसके पिता ने क्रोधित होकर कहा कि यदि तुम्हें घर में रहना है तो विद्या पढ़कर आओ । ज्योति पंत जंगल में भगवान श्री गणेश के मंदिर में आया । उस मन्दिर में वह ६ दिन बिना अन्न जल लिये भगवान श्री गणेश से प्रार्थना करता रहा । उसके विश्वास की विजय हुई । सातवें दिन भगवान श्री गणेश ने प्रसन्न होकर उसकी जिव्हा पर 'ओम' 'ॐ' शब्द लिखा । उसी समय ही उसकी बुद्धि में परिर्वतन आ गया । वह घर लौट आया और पूज्य पिताजी को दण्डवत प्रणाम कर आशीर्वाद लिया । भगवान श्री गणेश की कृपा से मंद बुद्धि ज्योति विद्वान बन गया । वह बिना विद्या अध्ययन के ही प्रवीण बन गया । यह देखकर उसके माता-पिता बहुत्त प्रसन्न हुए। प्रेमियो ! आप भी भगवान में पूर्ण विश्वास धारण कर प्रार्थना करें तो प्रभु अवश्य आपकी मनोकामनाएं पूर्ण करेगा । भगवान श्री गणेश को विघ्ननाशक कहते हैं । आप जो भी कार्य प्रारम्भ करें, पहले श्री गणेश की स्तुति करें तो आपको सफलता मिलेगी ।

१२ अप्रैल पूज्य स्वामीजी हरिद्वार पधारे । वहां वे तीन चार दिन ठहरे और गंगा माता की गोद में नहाये । १५ अप्रैल वे दिल्ली लौट आये । वहां प्रेम प्रकाश आश्रम में उन्होंने सत्संग प्रवचन किये । १७

अप्रैल आप सिन्धुनगर आश्रम लौट आये !

२७ अप्रैल से २९ अप्रैल तक संत कंवर कालोनी बड़ौदा में स्वामी प्रेमदास महाराज का जन्म दिन उत्सव मनाया गया । इस उत्सव के सम्बंध में पूज्य स्वामी जी २७ अप्रैल बड़ौदा पधारे । संत वासुदेव एवं श्री लीलाराम पुरुस्वाणी ने उनका स्वागत किया ; तीनों दिन पूज्य स्वामीजी ने अमृत वचनों की वर्खा करते हुए कहा कि स्वामी प्रेमदास जी ने अपना जीवन नाम स्मरण एवं परोपकार के कार्यों में सफल किया । सत्गुरु महाराज जी फरमाते हैं ।

परोपकारी पुरुष जे, जीवन सपला तांहि ।
कह टेऊं धन धन वही, भल आये जग मांहि ।।

परोपकारी मनुष्यों का जीवन सफल है । वे धन्य है, जो दूसरों की भलाई करते हैं । स्वामी प्रेमदासजी ने न केवल स्वयं परापेकार के कार्य किये किन्तु उनके परम शिष्य संत वासुदेव एवं लीलाराम पुरुस्वाणी अपने गुरुदेव के कई सेवा व उपकार के कार्य कर रहे हैं । स्वामी प्रेमदास ने गायन विद्या में भी कई लोगों का मार्गदर्शन किया। प्रेमियों ! आप भी सन्तों के आदर्शों पर चलने का प्रयास करें । प्रति दिन प्रभु से प्रार्थना करें ।

प्रार्थना कर प्रेम से, कह टेऊँ बन दास ।
शुद्ध हृदय की सुनत हरि, राखो मन विश्वास ।।

मोहन राणा एक राजा के पास नौकरी करता था । वह ईमानदार एवं सत्यवादी था । वह सद्ग्रहस्थी होते भगवद् भजन भी करता था। किसी ने वैमनस्य के कारण उसके विरुद्ध राजा के कान भरे । राजा ने बिना जांच किये ही मोहन राणा को जेल में बन्द करने का आदेश दिया । वह जेल में भी प्रभु से प्रार्थना करता रहा कि- "हे प्रभु ! मैं निर्दोष हूँ, मेरी लाज राखो, और न कोई मेरा, मैं तो तेरा बालक हूँ, तू मेरा पालक, तू मेरा मालिक मुझ पर अपनी दया करो, यह कष्ट हरो ।" प्रभु ने अपने भक्त की पुकार सुनी । उसके हाथों में लगी ज्रंजीरें स्वयं टूटकर गिर पड़ीं । जेलर यह दृश्य देखकर आश्चर्य

में पड़ गया । जेलर ने यह घटना राजा को जाकर बताई । राजा ने शीघ्र ही मोहन राणा के मुक्त किया । वह समझ गया कि मोहन निर्दोष है । प्रेमियो ! आप भी प्रभु में विश्वास धारण कर प्रार्थना करें तो परमात्मा आपको बन्धनों से मुक्त करेंगे ।

३० अप्रैल पूज्य स्वामीजी प्रेम प्रकाश मन्दिर इन्दौर पधारे । वहां स्वामी मुरलीधर जी महाराज की पुण्य तिथि उत्सव के सम्बन्ध में उन्होंने पांच दिन सत्संग प्रवचन किये । उन्होंने उत्सव का समापन करते हुये कहा कि स्वामी मुरलीधरजी ने सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के साथ भारत के भिन्न-भिन्न नगरों में भ्रमण कर प्रेमियों को नाम का सन्देश दिया । संत मुरलीधर मधुर भाषी एवं सन्तोषी थे । उन्होंने यहां इस मन्दिर की स्थापना कर नाम की ज्योति जगाई । वे सत्गुरु की सेवा के लिये सदैव तत्पर रहते थे । जिसने भी सेवा की है उसे पद प्राप्त हुआ है, उसका यश हुआ है । सेवा श्रद्धा भावना से करनी चाहिए । श्री गुरुनानकदेवजी ने कितना भ्रमण किया । भ्रमण में उनके साथ भाई बालो एवं भाई मर्दानो अधिकतर साथ रहते थे । श्री गुरुनानकदेवजी को अपनी सन्तान भी थी फिर भी उन्होंने गद्दी श्री अंगददेवजी को दी । श्री गुरु अंगददेवजी महाराज ने जब श्री गुरुनानकदेवजी महाराज का जीवन चरित्र लिखना आरम्भ किया तब उन्होंने भाई बालो से श्री गुरुनानकदेवजी महाराज के सम्बन्ध में कुछ पूछा, तब भाई बालो ने कहा कि आप गादी पर विराजमान हैं, मुझे कुछ प्रश्न पूछने में भी संकोच होता है । गुरु अंगद देवजी ने कहा कि आप बिना संकोच प्रश्न पूछ सकते हैं । भाई बालो ने कहा- "मैंने श्री गुरुनानकदेवजी महाराज के साथ बहुत भ्रमण किया, उनकी सेवा भी की । भाई मर्दानो तो कभी कभी चले भी जाते थे, किन्तु मैं सदैव उनकी सेवा में उपस्थित रहता था । आप उनके पास मेरे बाद में आये, उनके साथ भ्रमण भी नहीं किया । उन्होंने गद्दी मुझे न देकर आपको क्यों दी?

श्री गुरु अंगददेव ने उत्तर देते हुए कहा कि मुझे अपने लिए कुछ कहना नहीं चाहिये, किन्तु आपने प्रश्न किया है, इसलिए उत्तर देना पड़ रहा है । यह बराबर है कि आप श्री गुरुनानकदेवजी महाराज के पास मुझ से पहले आये, उनके साथ भ्रमण भी किया, उनकी सेवा

भी की, आपसे एक प्रश्न पूछूं कि आप उनको क्या समझते थे? भाई बालो ने कहा कि मैं उन्हें एक महान संत, दरवेश समझता था। गुरु अंगद देवजी ने कहा कि आप उन्हें महान संत समझते थे तो आप भी संत बन गये किन्तु मैं उन्हें महापुरुष नहीं, भगवान समझकर उनकी सेवा करता था। भावना की जय होती है। मुझे न तो गद्दी की चाहना थी न मैंने उनके साथ भ्रमण किया। मैं तो केवल उनकी कृपा का इच्छुक था।

प्रेमियो ! आप भी अपने सत्गुरु को साधारण संत महात्मा न समझकर भगवद्रूप समझकर सेवा करें, प्रभु का चिन्तन करें, नाम स्मरण करें तो परमपद को प्राप्त कर सकेंगे।

६ मई प्रातः १० बजे पूज्य स्वामीजी बड़ौदा के केन्द्रीय जेल में पधारे। उस जेल में लगभग ११००० कैदी थे। कैदियों ने पूज्य स्वामी का स्वागत किया और भजन गाए। प्रताप रामचन्दाणी ने पूज्य स्वामीजी का परिचय दिया। जेल में उस समय सत्संग का वातावरण उत्पन्न हो गया। पूज्य स्वामीजी ने कैदियों को उपदेश देते हुए कहा कि आप यहां अपने किये हुए पापों का पश्चात्ताप कर जेल से नये होकर मुक्त हों। यहां से मुक्त होकर आप शुभ कर्म करें। परमात्मा दयालु हैं, आप मन से अपने किये हुए दुष्कर्मों की प्रभु से क्षमा याचना करें, वे अवश्य क्षमा करेंगे। ऋषि वाल्मीक भारत के आदि कवि, नाम स्मरण के कारण डाकू से महान ऋषि बन गये। आप भी यहाँ प्रभु का स्मरण करें तो आपके जीवन में परिवर्तन आ सकता है, फिर लोग आपको भी सन्मान देंगे।

६ मई से ८ मई गीता ज्ञान यज्ञ उत्सव के सम्बन्ध में, स्वामी ऊद्धवदास ब्रह्मचारी के स्थान बड़ौदा में पूज्य स्वामी जी ने विभिन्न विषयों पर प्रचवन करते हुए श्रीमद् भगवद्गीता की महिमा प्रतिपादित की।

१४ मई से १६ मई प्रेम प्रकाश मंदिर कुमारनगर धुलिया के मंदिर का वार्षिक उत्सव आयोजित किया गया और सन्त हरिप्रकाश महाराज की पुण्य तिथि मनाई गई। इस उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी १४ मई धुलिया पधारे। संत पहिलाजप्रकाश, मेघराज रेलन ने उनका स्वागत किया। पूज्य स्वामीजी ने वहां तीन दिन अमृत वचनों की

वर्खा की । उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि भक्त को सर्वस्व प्रभु के श्रीचरणों में समर्पित करना चाहिए । शिष्य को अर्पणम् की भावना से सेवा करनी चाहिए । ऐसा करने से उसकी अहंकार की भावना नष्ट होगी । अहंकार आध्यात्मिक मार्ग में बाधक है । प्रेमियो ! अहंकार मनुष्य को नीचे गिराता है । इसलिए उसका परित्याग करें, विनम्र बनकर प्रभु से प्रार्थना करें । स्वामी हरिप्रकाश ने यहां सत्संग का बीज बोया। सन्त पहिलाजप्रकाश ने उसे सींचा । आपको धन्यवाद है कि प्रति वर्ष आप इस उत्सव का आयोजन करते हैं । ऐसे उत्सवों का यही ध्येय हैं कि आप लोग किसी न किसी प्रकार नाम स्मरण करें, आप सर्वस्व प्रभु के श्रीचरणों में अर्पित करें तो प्रभु आपकी रक्षा करेंगे।

महर्षि नारद भगवान श्री विष्णु के पास आते जाते थे, भगवान भी उसे प्यार करते थे । एक बार उसे अहंकार हुआ कि वह ही भगवान का महान् भक्त है । भगवान ने उसका अहम् भाव देखकर कहा "नारद मुझे पेट में बहुत दर्द है ।" नारद ने पूछा "महाराज : मैं क्या उपचार की व्ययस्था करूं?" तब भगवान ने कहा "नारद ! मेरा कोई उत्तम भक्त अपना दिल मुझे निकाल कर दे तो यह पीड़ा दूर होगी ।" तब नारद किसी उत्तम भक्त की खोज में निकले । उन्होंने कई भक्तों से दिल मांगा किन्तु उसे कोई भी अपना दिल निकालकर देने के लिए तैयार नहीं था । वह निराश होकर लौट रहा था कि रास्ते में उसे एक ऐसा समर्पित भक्त मिल गया जिसने भगवान के लिए अपना दिल निकालकर दिया । नारद वह दिल भगवान के पास ले आए । भगवान ने कहा "तुमने बहुत ही देर की ।" नारद ने कहा "भगवन्, उत्तम भक्त खोजने में देरी हो गई जो अपना दिल निकाल कर दे । "भगवान ने मुस्कराते हुए कहा" प्रिय नारद ! तुम भी तो मेरे परम प्रिय भक्त हो" यह सुनकर नारद बहुत लज्जित हुआ और वह समझ गया कि भगवान ने उसका अहंकार नष्ट करने के लिए ही उसकी ही परीक्षा ली, किन्तु वह परीक्षा में सफल नहीं हुआ । महर्षि नारद पश्चात्ताप करता हुआ भगवान के श्री चरणों पर गिर पड़ा । जिस भक्त ने भगवान के लिए अपना दिल निकालकर दिया था, भगवान ने उसे साक्षात् दर्शन देकर स्वस्थ बना दिया ।

प्रेमियो ! सच्चा भक्त भगवान एवं गुरु को सर्वस्व समर्पित करता है। वह अपने सुख की कुछ भी चिन्ता नहीं करता। भक्त को कभी भी अहंकार नहीं करना चाहिए। अहंकार अवनति की ओर ले जाने वाला है।

१७ मई पूज्य स्वामी जी मालेगांव पधारे। रात्रि को उन्होंने परोपकार के सम्बन्ध में प्रवचन करते हुए कहा :

जिन जिन परोपाकर में सहे कष्ट निरधार।
तिन की महिमा करत नित साधु पुन संसार॥

प्रेमियो ! जिन लोगों ने दूसरों की भलाई करने के लिए स्वयं कष्ट झेले हैं, वे सदैव अमर है। सन्त महात्मा भी उनका यश गाते हैं। ऐसे परोपकारी मनुष्य अपने सुख का कभी विचार नहीं करते वे परोपकार में ही आनन्द का अनुभव करते हैं। आप भी तन, मन, धन एवं वचम से दूसरों का उपकार करें तो भगवान आपका कल्याण करेगा।

१८ मई पूज्य स्वामी जी सिन्धुनगर आश्रम लौट आये। तीन दिन वहां उन्होंने अमृत वचनों की वर्षा की। २१ मई वे साजनदास अनन्दराम की सुपुत्री के विवाह के सम्बन्ध में अहमदाबाद पधारे और वर-वधु को आशीर्वाद देकर २२ मई प्रातः बम्बई लौट आये।

२२ मई से २८ मई रात्रि को दयावन्ती टीकमदास हाल खार बम्बई में पूजनीय स्वामीजी के सत्संग प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। २२ मई रात्रि उन्होंने प्रवचन करते हुये कहा :

येषां न विद्या तपो न दानं ज्ञानं शील गुणो न धर्मम्।
ते मृत्यु लोके भुवी भार भूता मनुष्यारुपेण मृगा चरन्ती॥

जिनको न विद्या है, न ज्ञान है, जो न भगवद् भजन करता है, न दान पुण्य करता है, जो न गुणवान है, जो न धर्म के अनुसार व्यवहार करता है, ऐसा मनुष्य इस भूमि पर बोझ है। वह मनुष्य के रूप में मृग की भांति विचरण करता है। मृग बालू (रेत) को जल समझकर उसके पीछे दौड़-दौड़ कर प्यासा मर जाता है, वैसे अज्ञानी मनुष्य भी सांसारिक पदार्थों को सत्य समझकर उनके पीछे रात दिन भटकता रहता है, किन्त वह मृग की भांति प्यासा ही मर जाता है। हमें ऐसा

अमूल्य जीवन व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए । नाम स्मरण एवं शुभ कर्मों में जीवन सफल करना चाहिये ।

२३ मई रात्रि पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि दया-धर्म के काम कर अपने श्वास व धन पदार्थ सफल करें । प्रभु ने आपको अमूल्य अवसर दिया है, उसका सदुपयोग करें । दया के बिना आत्म पशु से भी गया बीता है । सत्गुरु महाराज जी अपनी वाणी में फरमाते हैं ।

कह टेऊँ तुम चेतले, अब कुछ बिगड़ी नांहि ।
दया धर्म शुभ कर्म कर हरि सुमरो मन मांहि ।।

द्रौपदी के पांचों पुत्रों को सोते समय अश्वसत्थामा ने मार दिया।

अर्जुन उसे बंदी बनाकर द्रौपदी के पास लाया । द्रौपदी के मन में दया आ गई । उसने अर्जुन से कहा "अश्वत्थामा हमारे गुरु का पुत्र है, उसको मार डालने से हमारे गुरु की पत्नी को भी दुख होगा जैसे मैं अपनी सन्तान के वियोग में व्यथित हूं ! सभी को अपनी सन्तान अति प्रिय होती है । इसलिये आप अश्वत्थामा को मृत्यु दंड न देकर क्षमा करें । यद्यपि अपनी सन्तान को मौत के घाट उतारने वाले व्यक्ति को छोड़ देना यह क्षत्रिय को शोभा नहीं देता, फिर भी अर्जुन ने द्रौपदी की दया व क्षमा भावना के कारण अश्वत्थामा को जीवनदान दिया। प्रेमियो ! आप भी जीवन में प्रेम व दया की ज्योति जगाएं ।

२४ मई पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुये कहा कि सच्चा शिष्य न केवल स्वयं अपने गुरु के सिद्धान्तों एवं आदर्शों पर चलता है किन्त कष्ट क्लेश सहन कर भी गुरु के सिद्धांतों व शिक्षा का प्रचार करता है । सत्गुरु महाराज भी ऐसे शिष्य का अपनी वाणी में उल्लेख करते हुए कहते हैं ।

स्वामी आज्ञा में रहे, सहे सीस पर दूख ।
कह टेऊँ सेवक वही, जो नहीं चाहत सूख ।।

एक बार श्री गौतम बुद्ध ने एक शिष्य को एक गांव में जाकर उपदेश देने की आज्ञा दी । महात्मा बुद्ध ने उससे कहा कि इस गांव

के लोग ठीक नहीं, वे किसी की निन्दा करने, अपशब्द कहने में संकोच नहीं करते हैं। शिष्य ने कहा "गुरुदेव ! वे अपशब्द कहेंगे, निंदा करेंगे, मारेंगे तो नहीं ! फिर भी अच्छे हैं।" तब महात्मा बुद्ध ने कहा "वे मार भी सकते हैं।" शिष्य ने कहा कि हाथ से डण्डा मारेंगे और क्या करेंगे। इस पर महात्मा बुद्ध ने कहा "वे तुम्हें तलवार भी मार सकते हैं। शिष्य ने कहा "महाराज, आपके सिद्धांतों का प्रचार करते, उनको सत्मार्ग बताते यदि मुझे उन्होंने तलवार से मार भी डाला तो मेरा जीवन सफल हुआ। श्री गौतम बुद्ध शिष्य का उत्तर सुनकर प्रसन्न हुए और उसे आशीर्वाद दिया। प्रेमियो ! आप भी गुरु के सिद्धांतों पर चलने का प्रयास करें।

२५ मई रात्रि पूज्य स्वामीजी ने 'सेवा' के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि सच्चा सेवक अपने प्राणों की भी चिन्ता न कर सेवा मार्ग पर अडिग रहता है। सत्गुरु महाराज जी फरमाते हैं।

अपना स्वार्थ छोड़ जो, करता परोपकार।
कह टेऊँ यश होत है, तांका जगत् मंझार ॥

जटायु पक्षी ने भगवान श्रीराम की कितनी सेवा की। उसने अपने प्राण भी त्याग दिए। भगवान श्रीराम ने अपने हाथों से उसका अन्तिम संस्कार कर उसे अपने धाम भेजा। प्रभु अपने सेवकों की कितनी देख भाल करता है। आज भी जटायु का यश गाया जाता है। प्रेमियो ! आप भी सेवा व परोपकार के कार्य करते रहें।

२६-२७ मई रात्रि को भी पूज्य स्वामीजी ने अपने अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। २८ मई रविवार सायं उन्होंने आयोजकों को धन्यवाद देते हुए कहा कि आप लोगों ने यहां, एक सप्ताह का सत्संग यज्ञ आयोजित कर उत्तम कार्य किया। संतों का तो काम ही है नाम जपना व नाम जपाना। महल-मकान या बड़ा परिवार होना जीवन का उद्देश्य नहीं है।संत तुलसीदास जी महाराज फरमाते हैं।

सुत दारा और लक्ष्मी, पापी को भी होय।
संत समागम हरि कथा, तुलसी दुर्लभ दोय ॥

नरीना गांव में भगवान श्रीराम का सुन्दर मन्दिर था । वहां एक बार संत दादूजी ठहर गए । उस मन्दिर में विशेष चित्रकारी के कारण लोगों की भीड़ रहती थी । इसलिए संत दादूजी ने भगवद् भजन में बाधा अनुभव की । उन्होंने विचार किया कि यदि इस मन्दिर में ऐसी आकर्षक चित्रकारी नहीं होती तो लोगों की इतनी भीड़ नहीं होती और मेरे स्मरण में भी बाधा नहीं पड़ती । संत दादूजी के ऐसा विचार करने से उसी समय ही उस मन्दिरकी वह चित्रकारी मिट गई । उसके पश्चात् उस मन्दिर में कम लोग आने लगे, जिन्हें भगवान श्रीराम के प्रति श्रद्धा थी केवल वे ही आते थे । संत, लोगों की भीड़ एवं बाह्य दिखावे से दूर रहते हैं । उन्हें प्रभु के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहिये। प्रेमियो ! आप भी प्रतिदिन सांसारिक बातों से हटकर एकान्त में बैठकर नाम चिन्तन करें, दया व उपकारके कार्य करें ।

पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज एवं पूज्य स्वामी माधवदास जी महाराज के पुण्यतिथि उत्सव के सम्बन्ध पें पूज्य स्वांमीजी ४ जून आदर्शनगर अजमेर पधारे । ५ जून सायं उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि स्वामी माधवदासजी महाराज प्रेम प्रकाश मंडल के प्रमुख संत थे । उन्होंने हैदराबाद सिन्ध एवं अजमेर में पूज्य सत्गरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज की ज्योति जगायी, देश विदेश में नाम का सन्देश दिया। तीर्थराज पुष्कर में उन्होंने भव्य मन्दिर बनवाया जो उनका स्मृति-चिन्ह रहेगा । वे प्रेम व दया की मूर्ति थे । वे विशाल हृदय थे । उन्होंने अपनी माया परोपकार के कार्यों में सफल की । सत्गुरु महाराज जी फरमाते हैं ।

मोह नहीं ममता नहीं, नहीं जांको अभिमान ।
कहं टेऊँ तां संत पर, वारूं तन मन प्रान ॥

प्रेमियो ! आप सौभाग्यशाली हैं कि ऐसे संत का आपको संग मिला। संतों का संग जीव को संत बना देता है । पारस लोहे को स्पर्श करता है तो उसे स्वर्ण बना देता है किन्तु जिनको संतों का संग प्राप्त होता है, संत उन्हें स्वयं जैसा बना देते हैं ।

पारस मणि और संत में बड़ो अंतर जान ।
वो लोहा कंचन करे, वो कर लें आप समान ॥

६ जून पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि प्रेमियो! आपको धन्यवाद है कि आप बड़े उत्साह व उमंग के साथ सत्गुरु महाराज जी का यह उत्सव मनाते हैं। ऐसे उत्सवों में सम्मिलित होकर आप भगवान एवं संतों से यह आशार्वाद लें कि हमारी बुद्धि निर्मल हो। गुरु श्री अमरदासजी फरमाते हैं कि यदि आप प्रभु को प्रसन्न करना चाहते हैं तो :

तन मन धन सब सौंप गुरु को हुकम मजे पाइए।

प्रेमियो ! अपना तन मन धन सर्वस्व सत्गुरु के श्री चरणों में समर्पित करें और जो भी प्रभु करे उसी में आप प्रसन्नचित्त रहें।

'तेरा भाणा मीठा लागे, नाम पदार्थ नानक मांगे'

प्रेमियो ! सांसारिक सम्बंधियों एवं पदार्थों में ममत्व मूर्खता है। आप जगत् में निष्काम व्यवस्थापक की भांति रहें। लाभ व हानि की चिन्ता न करें। जब सभी कुछ परमपिता परमात्मा का है फिर आप क्यों व्यर्थ व्यथित होते हैं। सच्चा सुख सांसारिक पदार्थों में नहीं। यदि ऐसा होता तो राजा भृतहरि, राजा गोपीचंद संसार का राज्य त्याग क्यों करते ! संतान में भी सुख नहीं। धन पदार्थ वाले भी दुखी हैं तो संतान वाले भी दुखी हैं, निःसंतान भी दुखी है। चांदी के बर्तनों और वातानुकूल घरों में रहने वाले भी दुखी है। परन्तु जो प्रभु की शरण लेता है, वही सुखी है। श्री गुरुनानकदेवजी ने भी कहा है :

'नानक दुखिया सगल संसार'

प्रेमियो ! इसलिए संतों का संग कर, नाम स्मरण करें। प्रभु से कोई न कोई नाता जोड़कर उसका स्मरण करें। भक्ति करें। ७ जून सायं पूज्य स्वामी जी ने प्रवचन करते हुये कहा कि संतों में तो शक्ति होती है किन्तु उनके नाम में भी शक्ति होती हैं। एक बार जयपुर के धीरजपुरा गांव में भयानक आग लगी। दादू पंथी संत मंशाराम के कुछ प्रेमियों ने अग्नि देवता को प्रणाम कर विनती की कि आपको संत मंशाराम की दुहाई है अब शांत हो जाओ। प्रेमियो के ऐसा कहने से अग्नि शीघ्र ही शांत हो गई। प्रेमियो ! आप यदि अपने मन में

कुविचारों की आग बुझाना चाहते हैं तो रात दिन, रसना से, मन से, एवं श्वासों से राम नाम का जाप जपें । सत्गुरु महाराज जी अपनी वाणी में फरमाते हैं :

अन्तर बाहर रैन दिन, भूलो ना हरि नाम ।
जिव्हा मनवा प्रान से कह टेऊँ रट राम ।।

८ जून सायं सत्संग प्रवचन करते हुये पूज्य स्वामीजी ने कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज महान भजनीक तो थे, साथ ही साथ वे दीन दुखियों की देखभाल भी करते थे । गरीबों एवं असहायों के घरों में वे अनाज व वस्त्र भेजते थे । वे सेवकों को कहते थे, अमरापुर स्थान पर सदैव भोजन व भजन का भण्डारा चालू रहना चाहिए। कोई भी अतिथी निराश न जाय; वह प्रसन्न हो जाय, अमरापुर स्थान पर यदि देर रात को भी कोई संत या अतिथी आता था तो उसकी सेवा की जांती थी । प्रेमियों ! आप भी नाम स्मरण के साथ-साथ दान व सेवा के कार्य करें । इसी जन्म में शुभ कार्यों के बीज बोएंगे तो भविष्य में आप को उसके फल की प्राप्ति होगी। विदर्भ के राजा श्वेत महान् तपस्वी थे । स्थूल शरीर त्यागने के पश्चात् कर्मानुसार उसे ब्रह्मलोक में स्थान दिया गया वहां वह भूख-प्यास से तड़पने लगा। उसने ब्रह्म से इसका कारण पूछा । ब्रह्म ने कहा कि आपने पूर्व जन्म में तपस्या तो बहुत की किन्तु किसी प्यासे को पानी नहीं पिलाया, किसी भूखे को खाना नहीं खिलाया, किसी अतिथि का सत्कार नहीं किया, दुखियों की सेवा नहीं की, इसलिए तुम यहां भूख व प्यास से तड़प रहे हो । प्रेमियों ! इसलिये ज्ञान व दान, भक्ति व सेवा अत्यन्त आवश्यक हैं । आप किसी वस्त्रहीन को वस्त्र देंगे तो प्रभु आपको वस्त्र देगा ।

११ जून रविवार प्रात: ११ बजे जनता जर्नादन परिषद् के सर्व साधारण सदस्यों की सभा पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में हुई । श्री शेवकराम वनवाड़ी ने गत वर्ष के सेवा कार्य पर प्रकाश डाला । डॉ. दयाल 'आशा' ने बताया कि ईश्वर के आशीर्वाद एवं पूज्य स्वामीजी की कृपा से परिषद् की ओर से विभिन्न सेवा कार्य चल रहे है, इसलिए

खर्चा बढ़ गया है, मेरा सभी सदस्यों से अनुरोध है कि सेवा के यज्ञ में पूर्ण सहयोग दें। पूज्य स्वामीजी ने ११ हजार रुपये दिये और अन्य प्रमियों ने भी दान दिया। पूज्य स्वामीजी ने आशीर्वाद देते हुये कहा कि घबराओं नहीं, खूब सेवा करें, प्रभु आपका भंडारा भरेगा।

१२ जून प्रातः १० बजे पूज्य स्वामीजी ने स्वामी टेऊँराम मंडली सिन्धुनगर-२ में सत्संग प्रवचन किए। १३ जून सायं आश्रम में उन्होंने प्रचवन करते हुए कहा कि कल रात को मैं विदेश यात्रा के लिए प्रस्थान कर रहा हूँ। आप सभी मुझे आशीर्वाद दें कि विदेश यात्रा सफल हो। १४ जून पातः पूज्य स्वामीजी बम्बई गये। सायं उन्होंने प्रेम प्रकाश मंडली माटुँगा बम्बई में अमृत वचनों की वर्खा की।

१५ जून प्रातःकाल पूज्य स्वामीजी ने विदेश यात्रा के लिए प्रस्थान किया। उसी दिन ही हांगकांग पहुँचे। सायं प्रेम प्रकाश मन्दिर कोलून, हांगकांग में पूज्य स्वामीजी के सत्संग का कार्यक्रम रखा गया। सन्त नामदेव, श्रीमुनि समताणी, श्री होतचन्द वाधवाणी एवं अन्य प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत-सत्कार किया। सर्वप्रथम संत अनन्तप्रकाश ने भजन गाया, तत्पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि प्रभु की शरण लें जो आपको इस संसार के भवसागर से पार लगायेगा। परमात्मा सर्वसमर्थ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी और दयालु हैं। ऐसे दाता के द्वार यदि हम प्रेम से पुकारेंगे तो वे अवश्य ही दुःख दूर करेंगे। सत्गुरु महाराज जी अपनी वाणी में फरमाते हैं :-

राम भरोसा राख तुम, और भरोसा त्याग।
कह टेऊँ हरि शरण ले, खोलो अपना भाग॥

किसी व्यक्ति की बकरी कमजोर हो गई। वह दूध तो नहीं देती थी उसे व्यर्थ खिलाना पड़ता था। इसलिए वह व्यक्ति, उस बकरी को जंगल में छोड़ आया। बकरी चल भी नहीं सकती थी। अचानक उस जंगल में शेर आया। वह अपने सामने बकरी को देखकर प्रसन्न हुआ कि शीघ्र ही उसे खाकर अपना पेट भरेगा। बकरी अपने सामने शेर देखकर उसके आगे सिर झुकाकर खड़ी हो गई। शेर आश्चर्य में पड़ गया कि वह भागी नहीं। जबकि शेर को देखकर पशु भाग जाते हैं, किन्तु बकरी उसके सामने ऐसे खड़ी थी जैसे वह उसकी

शरण में आई है । शेर ने विचार किया कि शरण में आई इस बकरी की रक्षा करनी चाहिए, जो भी शरण में आए उसे मारना उचित नहीं है । शेर ने बकरी को नहीं मारा । उसने हाथी को बुलाकर कहा कि प्रतिदिन इस बकरी को अपनी कन्धे पर बिठाकर जंगल के फल व पत्ते खिलाकर आओ, यह बेचारी बहुत ही कमजोर हो गई है । शेर की आज्ञानुसार हाथी प्रतिदिन उस बकरी को पीठ पर बिठाकर उसे हरे पत्ते एवं फल खिलाकर आता था । बकरी जंगल के फल व पत्ते खा-खाकर सबल हो गई । वह शेर का आभार मानने लगी ।

प्रेमियो ! शेर ने शरण आई बकरी की रक्षा की । क्या यदि हम प्रभु की शरण लेंगे, तो वे हमारी रक्षा नहीं करेंगे? अनन्य भक्ति भावना से प्रभु की शरण लेंगे तो परमात्मा हमारी सदैव रक्षा व सहायता करेंगे।

१६ जून सायं प्रेम प्रकाश मन्दिर में पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि पाप-कर्मों से किनारा कर सदैव शुभ कर्म करें । सत्गुरु महाराज जी फरमतो हैं :-

थोड़े जीवन हेतु तुम, करो न पाप अजान ।
कह टेऊँ मन जीत कर, पुण्य करो प्रधान ।।

अपने स्वार्थ के लिए दूसरों को कष्ट न दें । कुछ लोग स्वयं को हानि पहुँचाकर भी दूसरों की अहित करना चाहते हैं । यह प्रवृति ठीक नहीं है । दूसरों का अहित करना, दूसरों को दुःखी करना पाप है । काठियावाड़ में किसी धनवान की कार कीचड़ में फँस गई । वहां अचानक चार आदमी आये । धनवान ने उनसे विनती की कि मुझे इस कीचड़ से कार निकालकर दें । चारों लोगों ने कहा कि हम आपकी कार निकालकर देंगे किन्तु इसके लिए आपको, हमें कुछ पैसे देने पड़ेंगे। धनवान ने कहा कि मैं पैसे दूँगा । चारों लोगों ने कार कीचड़ से निकाली । धनवान ने उन्हें पैसे देकर खुश किया और सहायता के लिए उन्हें धन्यवाद भी दिया । धनवान ने उनसे पूछा कि आप क्या व्यवसाय करते हैं? उन्होंने कहा कि हमारा यही धन्धा है, रास्ते में कीचड़ करके, लोगों को कीचड़ से बाहर निकालकर उनसे पैसे लेकर जीवन निर्वाह करते हैं । धनवान यह उत्तर सुनकर आश्चर्य में पड़ गया। प्रेमियो ! आप ऐसे काम मत करें । स्वार्थ के लिए दूसरों को

दुखी करना पाप है। आप दूसरों को सुखी करने का प्रयत्न करें।

· १७ जून प्रेम प्रकाश मन्दिर में पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुये कहा कि जो मजदूरी लेता है वह मालिक नहीं होगा। जो निष्काम भावना से काम करेगा, वह भविष्य में मालिक बनेगा। मजदूर यदि कोई गलती करता है तो वह सहन नहीं की जाती! यदि कोई सेवक गलती करता है तो उसे प्यार से समझाया जाता है। सेवक, सेवा निष्काम भावना से करेगा तो उसका भला होगा। भगवान के भक्त भी भगवान से सांसारिक पदार्थ नहीं माँगते। वे निष्काम भावना से भक्ति करते हैं, तो प्रभु भी किसी न किसी रूप में उनकी देख रेख व रक्षा करता है। ऐसे निष्काम भक्त प्रभु को प्रिय लगते हैं। राजा भृतहरि संसार का त्याग कर जंगल में रहते थे। वह गोबर जलाकर उस में रोटी पकाकर खाते थे। एक दिन माता पार्वती ने यह देखकर भगवान शंकर से कहा "आप! अपने भक्तों की देख रेख नहीं करते, आपका भक्त भृतहरि फीकी रोटी चबा रहा है, मैं उसके लिए नमक लेकर जाती हूँ।" पार्वती नमक लेकर भृतहरि के पास आई और पूछा "तुम्हें क्या चाहिए" वर मांगो! भृतहरि ने कहा जो चाहता था, उसको तो मैंने त्याग दिया। अब कुछ नहीं चाहिये। पार्वती ने कहा कि तुम यदि मुझसे वर नहीं मांगोगे तो मैं तुम्हें श्राप दूंगी। तब भृतहरि ने कहा "मां मुझे ऐसा वर दें कि मैं आप से कुछ मांगू फिर भी आप मुझे कुछ न दें।" माता पार्वती भृतहरि की ऐसी त्यागवृत्ति देखकर आश्चर्य में पड़ गई। उसने लौटकर सारा समाचार भगवान शंकर को सुनाया। तब भगवान शंकर ने कहा "पार्वती! मेरे भक्त ऐसे त्यागी होते हैं। वे निश्चिंत होकर भक्ति करते हैं। प्रेमियों! आप भी निष्काम भावना से नाम स्मरण करें।

१९ जून सायं प्रेम प्रकाश मन्दिर में सर्वप्रथम संत टोपणदास पंजवाणी, सन्त अनन्तप्रकाश ने भक्ति संगीत की वर्खा की। तत्पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने अमृत वचनों की वर्खा करते हुये कहा कि आप यदि चाहते हैं कि सत्गुरु आपको प्यार करे, तो आप गुरु मंत्र की साधना करें। अपना व्यवहार करते, चलते फिरते भी नाम जपें। परमात्मा ने संतों को नाम जपाने के लिये ही भेजा है, संत प्रभु के प्रतिनिधि

होते हैं । जैसे प्रतिनिधि अपनी कम्पनी के माल की प्रशंसा करते हैं, वैसे संत भी यत्र तत्र नाम की ही महिमा गाते हैं, नाम का ही संदेश देते है । प्रभु का नाम ही सुखदाई है । आप भी नाम से प्रीति रखें। नाम स्मरण ही सर्वश्रेष्ठ है ।'' गुरु महाराज भी नाम की महिमा गाते हुए कहते हैं :

'सगल धर्म में उत्तम धर्म, सगल धर्म में उत्तम कर्म

प्रेमियो ! श्वास श्वास से 'जय श्री कृष्ण' 'जय श्री कृष्ण' बोलें तो आपके श्वास सफल होंगे ।

२० जून पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुये कहा कि भगवान निर्मल है तो हमें भी निर्मल होना चाहिए । मैले को कौन गले लगाएगा? अब हम मैले हैं । हमारे मन पर विकारों की मैल चढ़ी हुए है । हम निर्मल कैसे बनें । जब हम किसी संत महात्मा का संग करेंगे तो वह हमें नाम पदार्थ देगा । उस नाम के स्मरण से हम निर्मल हो जायेंगे। ''नाम जपै मुख ऊजर होई ।'' गुरु महाराजा ज़ी भी अपनी वाणी में कहते हैं कि नाम जपने से मुख निर्मल होगा । नाम केवल रसना से नहीं किन्तु मन से जपना चाहिए । ध्यान भी एकाग्रचित्त होकर करना चाहिए । प्रभु की प्राप्ति के कई साधन हैं । जिस साधन द्वारा चित्त की वृत्ति प्रभु से लग जाय वह साधन अपनाएं । प्रेमियो ! नोट भी कागज के बने हुये हैं । यदि आपको नोट जैसा साधारण कागज दिया जाय तो क्या वह आप तिजोरी में रखेंगे? कदापि नहीं । नोट पर सरकारी मुहर लगी है, इसलिए उसका मूल्य है। वैसे संसार में अनंत लोग हैं उनका कोई महत्व नहीं । किन्तु सन्तों पर नाम रूपी मुहर लगी है इसलिये उनका महत्व है । नाम स्मरण करने के कारण उनका यत्र तत्र यश होता है उन्हें सर्वत्र सम्मान मिलता है । यह नाम का ही महत्व है । प्रेमियों ! आप भी नाम को नहीं भूलें । सदैव नाम जपते रहें तो आपका भी यश होगा, जीवन सफल होगा ।

२१ जून पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि क्षमाशील यशस्वी होता है और अहंकारी का अपयश होता है । जो विनम्र है वही गुरु एवं परमात्मा की कृपा का पात्र बनता है । किसी साधक ने महात्मा से पूछा कि संत किसे कहते हैं । महात्मा ने कहा जो

मन का करे अन्त वही है सच्चा सन्त । मन के गुलाम मत बनो। सन्तों का मन पर नियन्त्रण होता है । मन, माया की उत्पत्ति है । जैसे माया चंचल है, असत् है वैसे मन भी चंचल होता है । मन की दौड़ सूर्य के प्रकाश से भी अधिक है। घर में बैठे बैठे मन कहीं-का-कहीं पहुँच जाता है । वह भटकता रहता है । वह जीव को विषयासक्ति की ओर ले जाता है। प्रेमियो ! मन पर नियन्त्रण करें ।

यह मन बन्दर की भांति कभी कहीं तो कभी कहीं कूदता रहता है । यह मन न केवल जागृत अवस्था में अपितु निंद्रावस्था में भी भटकता रहता है । इसलिए इस मन रूपी बन्दर को वश में करें । मन जीते जग जीत । आज एकादशी है । रात को एकान्त में बैठकर नाम स्मरण करें । यदि नाम स्मरण में मन नहीं लगे तो चिन्ता न करें। धीरे-धीरे मन नाम स्मरण में लग जायेगा । मन भटक-भटककर कभी तो थकेगा । बालक को जब पाठशाला में बिठाया जाता है, तो उसका मन पढ़ने में नहीं लगता । वह बार-बार घर भाग आता है। हमारी भी वही दशा है। चिन्ता नहीं करें। किसी-न-किसी दिन आपका मन प्रभु के चरण कमलों में लग जायेगा ।

२२ जून सायं पूज्य स्वामीजी ने वचनामृत वर्खा करते हुए कहा :

जेते सुख संसार में, से सब सत्संग मांहि ।
अनन्त पापी तर गये, जिनकी गिनती नाहिं ।।

प्रेमियो ! आप घर-गृहस्थी में रहें, अपना धन्धा-व्यवहार करें, किन्तु प्रतिदिन सत्संग रूपी नदी में आकर नहाएँ । नहाने से पानी तो शरीर से गिरता जाता है किन्तु उसकी ठण्डक शरीर को लगती है, शरीर को पोंछने के पश्चात् भी शीतलता का अनुभव होता हैं और स्वस्थ रहते हैं । वैसे ही सत्संग में आकर शुभ विचार श्रवण करने के बाद कुछ शुभ विचार भुला भी दें किन्तु मन प्रफुल्लित रहता है, आनन्द की उपलब्धि होती है । मन तनाव चिन्ताओं से हट जाता है । सन्तों के दर्शन से भी मन प्रसन्न होता है, चित शुद्ध होता है । सत्संग के द्वारा कई पापी भी पुण्यआत्मा बन जाते है, भवसागर से तर जाते हैं । प्रेमियों ! सत्संग की बडी महिमा है । गोस्वामी सन्त तुलसीदास जी महाराज सत्सग की महिमा गाते हुए कहते हैं ।

'तुलसी हरि हैं हृदे अन्दर, साध संगति बिन हाथ न आवे ।'

परमात्मा आपके मन में व्यापक है । आप स्वयं सत् चित् आनन्द रूप हैं । यह ज्ञान आपको सन्तों महात्माओं के द्वारा ही होगा । इसलिए सन्तों के संग की अत्यन्त आवश्यकता है । नियमित रूप से सन्तों की वाणी श्रवण कर उनके वचन रूपी हीरे-जवाहारात प्राप्त कर लाभान्वित हों । प्रेमियो ! आप लोगों ने मुझे कितना स्नेह व सम्मान दिया है। आप विदेश में रहकर मातृभाषा सिन्धी को न भूलें । सन्त नामेदव को भी इस मन्दिर के सेवा कार्य में पूर्ण सहयोग देते रहें ।

२३ जून पूज्य स्वामीजी टोक्यो (जापान) पधारे । वहां पूज्य स्वामीजी मंडली सहित श्री भगवानदास डास्वाणी के घर ठहरे । उन्होंने वहां पांच दिन विभिन्न घरों में अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की । पूज्य स्वामीजी ने वहां उपदेश करते हुए कहा कि आप यहां कितना भी धन संग्रह करें किन्तु नाम-धन के बिना इस धन का कोई मूल्य नहीं है । नियमित रूप से प्रभु को प्रार्थना करें, नाम स्मरण करें तो आपको आत्मिक शक्ति प्राप्त होगी । इस शक्ति के कारण आपके दुख दर्द दूर हो जायेंगे । प्रार्थना व पुरुषार्थ से आप सुखी व सम्पन्न होंगे । सत्य मार्ग पर चलें । माया के प्रलोभन में फँसकर प्रभु को नहीं भुलायें । पूज्य सतगुरु महाराज फरमाते हैं:-

प्रार्थना कर प्रेम से, पुन पुरुषार्थ तात ।
कह टेऊँ इनके किये, होवे तब कुशलात ।।

प्रभु का नाम भी प्रेम व दीर्घ स्वर से ऐसे कहें जैसे शरीर का रोम-रोम नाम का उच्चारण करे । बालक भी जब माता को प्रेम से दीर्घ स्वर में पुकारता है, तभी मां सभी काम छोड़कर बालक को उठाकर गले लगाती है, वैसे प्रभु भी अपने प्रेमियों को गले लगाता है ।

राम नाम सब को कहे, कहने का विचार ।
वो ही राम साधु कहे, वो ही कहे संसार ।।

सन्तों के स्थान पर भोजन खिलाते समय भी नाम जपवाते हैं । भोजन देने वाला बार-बार पूछता है, चोखा राम, भाजी राम, पूरी राम । राम नाम भी ऐसे जपें जैसे आप उस जाप से ऊब न जायें।

आप यदि किसी मित्र के पास जायें और वह आपके सामने पिस्ता बदाम की प्लेट रखकर, रुखे स्वभाव से बात करे तो क्या आप उसके पिस्ते बदाम खायेंगे? कदाचित नहीं ! प्रेम के बिना स्वादिष्ट वस्तुएं भी फीकी लगती हैं । भगवान को भी प्रेम ही भाता है । प्रभु प्रेम से प्रसन्न होता है । आप पभु को प्रेम से पुकारें, उसके प्यार में आंसू बहाये तो प्रभु अवश्य आपको गले लगायेगा । प्रेमियों ! आप घर में आये हुए अतिथि को भी स्नेह व सम्मान दें । सिन्ध में लोग विशाल हृदय होते थे । अतिथि को भगवद् रूप समझकर सत्कार किया जाता था परन्तु यहां ऐसी भावना नहीं रही । आप दीन दुखियों, पशु पक्षियों की भी सेवा करें तो आपका जीवन सफल होगा ।

२८ जून पूज्य स्वामीजी टोक्यो से लास ऐंजिलिस (अमेरिका) पधारे। हवाई अड्डे पर कई प्रेमियों ने उनका स्वगत किया । आप पद्मा होतचंद वाधाणी के घर में ठहरे । पूज्य स्वामीजी ने वहां विभिन्न घरों व स्थानों पर अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। ३० जून राधाकृष्ण मन्दिर में पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि जो मार्ग जहां तक ले चले उस मार्ग को उसी स्थल से सम्बोधित किया जाता है । जैसे आगरा रोड़, उस रास्ते से आगे बढ़ते जायेंगे तो किसी न किसी दिन अवश्य आगरा पहुंच जायेंगे। नासिक जाने वाले मार्ग को नासिक रोड कहते हैं । संत, भक्त जीव को भगवान से मिलाते हैं, भगवान की ओर ले चलते हैं, इसलिए संतों को भी भगवान कहा जाता है । जो गाड़ी जहां ले जाती है, उस गाड़ी पर भी वही नाम्र पड़ जाता है । जैसे देहरादून एक्सप्रेस 'दिल्ली जनता, बड़ौदा एक्सप्रेस' आदि । ये गाड़ियां गंतव्य स्थल पर पहुंचायेंगी । इसीलिए प्रेमियो ! आप किसी न किसी महात्मा की शरण लें जो आपको भगवान की प्राप्ति का मार्ग बतायेगा और उससे मिलायेगा। यह मार्ग लम्बा है। धीरे धीरे प्रेम व विश्वास के साथ आगे बढ़ेगे तो एक दिन आपको प्रभु का दर्शन अवश्य होगा । इसी मार्ग में नाम की पूंजी साथ में लें, तो आप दिव्य दर्शन कर सकेंगे । श्री गुरु अर्जनदेव जी महाराज फरमाते हैं ।

जिह मार्ग के गनी जाह न कोसा ।
हरि का नाम ऊहाइ संग तोसा ॥

१ जुलाई को पूज्य स्वामीजी की उपस्थिति में मोहन केसवाणी की बेटी की मंगनी हुई । पूज्य स्वामीजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि विवाह दो आत्माओं का मिलन है । शीघ्र ही आपका विवाह होगा। आप घर गृहस्थ में रहकर सुखमय जीवन बितायें परन्तु प्रभु को नहीं भुलायें और मर्यादा में रहकर माता पिता, सास ससुर की सेवा करें। घर में प्रेम व सद्भावना का वातावरण पैदा करें तो आपका घर स्वर्ग हो जायेगा । अपनी कमाई का कुछ हिस्सा दीन दुखियों की सेवा में खर्च करें ।

पूज्य स्वामीजी ने, शोभा रमेश शामदासाणी, वीणा गोप माखीजाणी, गोप रामचन्दाणी, पुष्पा मीरपुरी, लाल वसंदाणी, राम मनवाणी एवं अन्य प्रेमियों के घरों में भी अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की । ५ जुलाई पूज्य स्वामीजी ने राधाकृष्ण मन्दिर में उपदेश करते हुये कहा कि जगत् में देने वाले का ही यश होता है । देने में ही आनन्द है । परमात्मा ने हमें क्या-क्या नहीं दिया, उनके हमारे ऊपर लाखों उपकार हैं । प्रभु ने हमें जो कुछ दिया है, उसमें से हम दूसरों को भी देंगे तो प्रभु प्रसन्न होंगे । सम्पति तो मालिक की ही है, किन्तु हम स्वयं को मालिक समझ बैठे हैं । संत कहते हैं :-

जब लग तेरी देहं है, देइ देइ कछु देइ ।
देह क्षेय हो जायेगी, कौन कहेगा देइ ॥

मनुष्य ज़िन्दा है तो उससे कोई भी मांग सकता है, यदि उसकी मृत्यु हो जायेगी तो फिर उससे कौन मांगेगा? प्रेमियो ! आपको भी जब तक यह काया है, माया है तब तक तन-मन-धन से दूसरों का उपकार करते रहें, दुखियों को सुखी करने का प्रयास करें । परोपकारी सदैव अमर रहते हैं ।

६ जुलाई पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि किसी भी भक्त का अपमान न करें । जो व्यक्ति भक्त का अपमान करता है,

भगवान भी उसे क्षमा नहीं करता । रावण ने जब मरते समय भगवान श्रीराम से क्षमा याचना की तब भगवान श्रीराम ने कहा कि मैं तुम्हारे किए हुए और पाप तो क्षमा करूँगा किन्तु तुमने जो मेरे भक्त, अपने भाई विभीषण को लात मारकर अपमानित किया वह पाप मैं क्षमा नहीं कर सकता । इस पाप की क्षमा याचना तुम विभीषण से करो। प्रेमियो ! भगवान अपने भक्तों को कितना महत्व देते हैं । हमें भी सन्तों महात्माओं का सम्मान करना चाहिए जैसे वे प्रसन्नचित होकर आशीर्वाद करें । भक्त प्रसन्न तो भगवान प्रसन्न । भक्तों की सेवा भगवान की सेवा है। सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज भी अपनी वाणी में फरमाते है :-

सब स्वार्थ के मीत हैं, बिन स्वार्थ हैं संत ।
कह टेऊँ तिंह सेव से, राजी हो भगवन्त ॥

७ जुलाई पूज्य स्वामीजी मंडली सहित सैनफ्रैंसिस्को (कैलीफोरिन्या) पधारे । वहां वे सुमित्र चावला के यहां ठहरे । उन्होंने चार दिन प्रेमियों के घरों में सत्संग प्रवचन किये । ८ जुलाई हिन्दू मन्दिर में सत्संग का कार्यक्रम आयोजित किया गया । सन्त अनन्तप्रकाशजी ने भजन गाते हुए सत्गुरु की महिमा का उल्लेख किया । तत्पश्चात् न्यायधीश श्री मोतीलाल बुटाणी ने पूज्य स्वामीजी के सम्बन्ध में विचार व्यक्त करते हुए कहा कि पूज्य सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज महान कर्मयोगी सन्त हैं । वे हमारे आध्यात्मिक मार्गदर्शक हैं । पूज्य स्वामीजी ने उपदेश करते हुए कहा कि प्रेमियो ! आप अपना धन्धा व्यवसाय करते हुए घर गृहस्थी के उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हुए प्रतिदिन कुछ समय एकान्त में बैठकर नाम चिन्तन करें, आत्म निरीक्षण करें। सत्गुरु महाराज जी एकान्त की महिमा गाते हुए कहते हैं :-

जो सुख है एकांत में, सो सुख सुर पुर नांहि ।
दया धर्म शुभ कर्म कर, हरि सुमरो मन मांहि ॥

१० जुलाई पूज्य स्वामीजी लास ऐंजिलिस लौट आये । वहां हैरी वाधवाणी के घर में ११ जुलाई को उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि प्यारे हैरी (होतचन्द) वाधवाणी, उनकी पत्नि एवं सारे परिवार ने प्रेम व श्रद्धा से हमारी सेवा की है । उनके मन में सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी

महाराज एवं सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के प्रति अगाध श्रद्धा है। प्रेमियो ! श्रद्धावान को ही लाभ होता है। श्रद्धावान लभते ज्ञानम्। आप भी भगवान में, सत्गुरु महाराज एवं सन्तों में पूर्ण श्रद्धा धारण कर नाम स्मरण करें तो आपके जीवन की नैया संसार से पार हो जायेगी। नाम स्मरण के साथ-साथ परोपकार के कार्य भी करें। आप केवल अपने सुख के लिए प्रयास न करें। आप दूसरों को भी सुखी करने का प्रयास करें। दूसरों के लिये जीने में ही आनन्द है। सत्गुरु महाराज जी फरमाते हैं :-

तन मन धन वा प्रान से, करना पर उपकार।
ऐसा पुण्य न और को, टेऊँ इस संसार॥

प्रेमियो ! अपने शरीर, मन, वचन, धन एवं श्वासों से भी दूसरों का उपकार करें। सन्त कबीरदास से किसी ने पूछा कि भगवान को प्रसन्न करने के लिये कौन-कौन से उपाय हैं? सन्त कबीर ने कहा- "भगवान व मनुष्य का दिल एक जैसा है। आपके घर में दो बेटे हैं, उनमें से एक जो कुछ ले आता है,वह परिवार में बांटकर खाता है, दूसरा इतना स्वार्थी है कि वह केवल स्वयं ही खाता-पीता है। तो आप किसे अधिक प्यार करेंगे? उस व्यक्ति ने कहा जो बेटा स्वयं भी खाता है और दूसरों को भी खिलाता हैं, हम उसे प्यार करेंगे। सन्त कबीर ने कहा कि हम सब प्रभु की सन्तान है, हमें परमात्मा ने जो कुछ भी दिया है। वह बांट कर खायेंगे तो प्रभु प्रसन्न होंगे। हम परोपकार के कार्य करेंगे तो परमपिता परमात्मा हमें बहुत ही प्यार करेंगे। किसी सन्त ने कहा है।

वंडके खाना, बैंकुंठ जाना, छिप के खाना, धूड़ पाना'

१२ जुलाई पूज्य सत्गुरु महाराज मयामी फिलोरेडा पधारे। वहां वे रेशमा किशोर पारवाणी के घर ठहरे। वहां उन्होंने विभिन्न प्रेमियों के घरों में एक सप्ताह तक सत्संग प्रवचन कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। १६ जुलाई गुरु पूर्णिमा के पावन दिन प्रातः किशोर पारवाणी के घर में उन्होंने उपदेश करते हुये कहा कि आज के दिन का बड़ा महत्व है। प्राचीन काल से हमारे ऋषि मुनि आज का दिन गुरु पूजा दिवस के रूप में मनाते हैं। गुरु अन्धकार से निकाल कर हमें ज्ञान

का प्रकाश देता है। गुरु असत् मार्ग से हमें सत् मार्ग पर लाता हैं। सत्गुरु व्यवहार एवं परमार्थ के लिए हमारा मार्ग दर्शन करता है। प्रेमियो! सत्गुरु से प्रेम व श्रद्धा से प्रार्थना करें तो आपको चारों पदार्थों, अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष की प्राप्ति होगी। सत्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज भी अपनी वाणी में फरमाते हैं :

गुरु को कर तुम वंदना, श्रद्धा मन में धार।
कह टेऊँ इस जगत् में पाय पदार्थ चार॥

१६ जुलाई मयामी के मसान्क हाल में पूज्य स्वामीजी के सत्संग प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया। श्री हैरी वाधवाणी एवं संत अनन्तप्रकाश ने भजन गाये। तत्पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि सत् पुरुष वह है जो सदैव सम अवस्था में रहकर भक्ति व सेवा करता है। वह स्वयं विनम्र रहकर दूसरों को सम्मान दे। सत्गुरु महाराज जी अपनी वाणी में फरमाते है :-

स्वार्थ बिना सेवा करे, सबको दे सम्मान।
टेऊं समता में रहे, सोई संत पछान॥

प्रेमियो ! सम्मान कें लिए कोई भी साधना नहीं करनी चाहिये। साधना प्रभु प्राप्ति के लिए करनी चाहिए नहीं तो मन दुखी होगा। एक योगी छः माह तक समाधि में रहता था। वह छः महीने के पश्चात् जब बाहर आता था तो राजा एवं प्रजा उसके चरणों में कई वस्तुएं भेंट करती थी। एक बार एक महात्मा वहां के राजा के यहां पधारे। राजा ने उस संत को उस योगी का समाचार सुनाते हुये कहा कि वह योगी जब समाधि से उठता है तो प्रसन्नता की मुद्रा में होता है। तब उस महात्मा ने कहा कि संत को तो सदैव प्रसन्नता की मुद्रा में होना चाहिए। अब जब वह योगी समाधि से बाहर आ जाये तब आप उसके पास नहीं जायें, न प्रजा वहां जाये और वस्तुएं भी उसे भेंट नहीं करें, केवल एक व्यक्ति को भेजें। फिर आप उस योगी की दशा देखें, तो आपको उसके मन की स्थिति का पता चल जायेगा। महात्मा की आज्ञा अनुसार जब वह योगी समाधि से उठकर बाहर आया तो राजा ने केवल एक व्यक्ति को वहां भेजा। वह योगी समाधि के पश्चात् राजा व प्रजा को न देखकर उदास दिखने में आया। किसी

ने उसके चरणों में कोई वस्तु भी भेंट नहीं की । वह मन ही मन बहुत व्यथित हुआ । उस व्यक्ति ने राजा को योगी की मन:स्थिति बताई । राजा समझ गये कि वह योगी केवल लौकिक मान सम्मान के लिए साधना करता है । संतों को मान अपमान, निन्दा स्तुति से दूर रहना चाहिये । प्रेमियो ! आप भी मान सम्मान की प्राप्ति के लिये सेवा कार्य नहीं करें । सेवा निष्काम भावना से करें तो आपको आनन्द प्राप्त होगा ।

१८ जुलाई पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि दुख दर्द आए उसके पूर्व ही सचेत होना चाहिये । चोर, चोरी करके जाये बाद में प्रहरी नियुक्त करने से क्या लाभ? स्वास्थ्य के लिए यदि पहले ही हम अपने खान पान पर नियंत्रण रखेंगे तो बीमारियों से मुक्त रहेंगे वैसे ही यदि हम पहले ही नाम स्मरण आदि शुभ कार्य करेंगे तो मानसिक एवं शारीरिक बीमारियों से मुक्त रहेंगे । सिन्ध में गर्मी के मौसम में सत्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज नीम कें बौर का सेवन करते थे। किसी प्रेमी ने उनसे पूछा कि आप यह सेवन क्यों करते हैं? पूज्य सत्गुरु महाराज ने कहा इसके सेवन से गर्मी का असर नहीं होगा । प्रेमियो ! साधारणत: हम लोग भी कष्ट क्लेश आने पर प्रभु का स्मरण करते हैं ।

दुख में सब सुमरण करे, सुख में करे न कोय ।
जो सुख में सुमरण करे, तो दुख काहू ते होय ॥

कष्ट, क्लेश, विपदा आने के पूर्व ही हमें नाम स्मरण करना चाहिए, तो विपदा टल जायेगी । यदि कोई कष्ट आयेगा भी तो सूली से कांटा बन जायेगा । इसीलिए प्रेमियों ! नियमित रूप से नाम स्मरण करें । सत्गुरु महाराज जी भी नाम की महिमा गाते हुए कहते हैं ।

कह टेऊँ नित कीजिए, राम नाम से प्रेम ।
राम नाम के सम नहीं, जप तप संयम नेम ॥

मयामी में कई प्रेमी, बेलीज, सेंट थामस एवं अन्य देशों से पूज्य स्वामीजी का आशीर्वाद लेने के लिए गये । १९ जुलाई पूज्य स्वामी जी सेंटथामस गये । वहां वर्जिन आईलंड में वे पांच दिन कविता चंदू

सुखराणी के घर में ठहरे और विभिन्न घरों में उन्होंने सत्संग प्रवचन किये। भगवानदास सुखरामाणी ने पूज्य स्वामीजी का आभार मानते हुए कहा कि हमारा सौभाग्य है कि घर बैठे हमें सतगुरु महाराजजी ने दर्शन देकर व अपने अमृत वचनों का पान कराकर कृतार्थ किया है। पूज्य स्वामीजी ने उपदेश देते हुए कहा।

'जननी जने तो हरि जन जने या दाता या सूर'

माता ऐसी संतान को जन्म दे जो, भक्त हो, दानवीर या शूरवीर हो अन्यथा संतान किस काम की ! माता तो मदालसा ! वह विश्वासु की सुपुत्री थी। स्वयं एवं उसके पति ऋतुध्वज ज्ञानी एवं भक्त थे। माता मदालसा कहती थी कि वह ऐसे पुत्र को जन्म देगी जो ब्रह्मज्ञानी होगा। इसीलिए माता मदालसा बचपन में ही अपने सुपुत्रों को ब्रह्मज्ञान की लोरी देती थी। उसके तीन बेटे ब्रह्मज्ञानी हुए, वे जीवन मुक्त हो गए। उन्होंने राज गद्दी का त्याग कर जंगल में जाकर तपस्या की। वंश वृद्धि के विचार से माता मदालसा का चौथा बेटा राजगद्दी पर विराजमान हुआ। ब्रह्मज्ञानी सुपुत्रों के कारण ही आज माता मदालसा अमर है। श्री गुरुनानकदेवजी महाराज ने ब्रह्मज्ञानी की महिमा गाते हुए उसकी उपमा भगवान से की है।

'ब्रह्मज्ञानी आप परमेश्वर'

माताओ ! आप भी माता मदालसा की भांति ब्रह्मज्ञानी, वीर, दानवीर सन्तान को जन्म दें, जिससे आपके वंश का यश हो। जिसका जगत् में यश है वह ही अमर है।

२२ जुलाई पूज्य स्वामी ने प्रवचन करते हुए कहा कि परमात्मा की दया, सन्तों की दया ऐसी औषधि है जिसके द्वारा कठिन काम भी आसान हो जाता है। असम्भव भी सम्भव हो जाता है।

यदि कोई परिपूर्ण महात्मा हमें मिल जाये तो उसके आशीर्वाद से न केवल हमारे कष्ट क्लेश दूर हो जायेंगे किन्तु उसकी कृपा से प्रभु का दर्शन भी हो जायेगा। उसके दिए हुए ज्ञान के प्रकाश से आत्म साक्षात्कार होगा। प्रेमियो ! इसीलिए आप किसी न किसी परिपूर्ण संत महात्मा की शरण लें, जो आपका मार्गदर्शन करें।

२४ जुलाई पूज्य स्वामीजी मयामी लौट आये। वहां कुछ घंटे विश्राम कर फिर वे वायुयान द्वारा पिट्सबर्ग पेनिसोन्या पधारे। वहां वे कविता जमनादास ठाकुर के घर ठहरे। जमनादास व कविता का विवाह कुछ वर्ष पूर्व अजमेर में पूज्य स्वामीजी की उपस्थिति में हुआ था। वहां पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए बताया कि कविता का नाम पहले जमना था। विवाह के समय ब्राह्मण ने उसका नाम कविता रखा क्योंकि पति-पत्नी की एक ही राशि होने के कारण उनकी आपस में नहीं बनती। आज ये सद्‌गृहस्थ सुखमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। प्रेमियो ! आप भी अपने परिवार में प्रेम व शान्ति का वातावरण पैदा करें तो आपके घर स्र्वग सम हो जायेंगे। घर का, व्यापार-धन्धे का कामकाज करते हुए प्रभु को नहीं भूलें। प्रभु ही आपकी यत्र तत्र रक्षा करेंगे।

पूज्य स्वामीजी ने कुछ प्रेमियों के घरों में अमृत वचनों की वर्खा की। वहां कई मन्दिर हैं, प्रेमी पूज्य स्वामीजी को कुछ मन्दिरों में ले गये। २८ जुलाई पूज्य स्वामीजी ने एक मन्दिर में प्रवचन करते हुए कहा कि परमात्मा में पूर्ण विश्वास धारण कर उनकी शरण लें तो आपके भाग्य उदय होंगे। सत्गुरु महाराज जी अपनी वाणी में फरमाते हैं :-

राम भरोसा राख तुम, और भरोसा त्याग।
कह टेऊँ हरि शरण ले, खोले अपना भाग॥

देवराज इन्द्र मनु तपस्वी राजा था। वह एक बार भगवद् ध्यान में मग्न था, उसी समय वहां से ऋषि दुर्वासा गुजरे, राजा ध्यान मग्न था इसलिए उसने ऋषि को नहीं देखा और उसे प्रमाण नहीं किया। ऋषि दुर्वासा ने अपना अपमान समझकर राजा को श्राप दिया- "राजन्! तुम जड़ बुद्धि हो, तुम अब हाथी बनोगे।" ऋषि के श्राप के कारण राजा ने त्रिकूट पर्वत पर गज की देह में जन्म लिया। इस गज में दस हजार हाथियों का बल था। इसलिये उसे 'गजेंद्र' के नाम से सम्बोधित किया गया। वह गजेंद्र एक दिन हथिनियों के साथ जल पीने के लिए सुन्दर तालाब पर गया। वह वहां हथिनियों के साथ क्रीड़ा करता रहा। अचानक एक मगरमच्छ ने उसके पिछले पांव को

पकड़ लिया । गजेंद्र, मगरमच्छ से पांव छुड़ाने का प्रयास करता रहा किन्तु इतना बलवान होते हुए भी वह पांव छुड़ाने में विफल रहा । तब गजेंद्र ने परमात्मा को रक्षा के लिये पुकारा । परमात्मा प्रकट होकर उसे मगरमच्छ से मुक्त कराते हैं । गजेंद्र ने प्रभु को प्रणाम किया । हमारी भी गजेंद्र जैसी दयनीय दशा है । माया रूपी मगरमच्छ ने हमें इतना जकड़ पकड़ रखा है, कि बिना ईश्वर की सहायता के हम उससे मुक्त नहीं हो सकते । गजेंद्र की भांति प्रभु से माया रूपी मगरमच्छ से मुक्त होने की प्रार्थना करें । प्रेमियो ! प्रभु से प्रार्थना करें जो आपकी सदैव रक्षा करेंगे । सांसारिक सम्बन्धी आपको संसार रूपी सागर पार करने के लिये कोई सहायता नहीं करेंगे । सांसारिक पदार्थ भी सहायक नहीं बनेंगे । इसीलिये प्रतिदिन प्रभु से विनय करें :-

भक्त वत्सल भव भय हरन हरि, करुणाशील निधान् ।
कह टेऊँ कलि काल में, लाज राख़ भगवान ।।

पूज्य स्वामीजी ने जमनादास को धन्यवाद देते हुए कहा कि उसके पिता श्री किशोरीलाल एवं माता सत्गुरु महाराज के अनन्य श्रद्धालु थे। अब भी श्री नेणूमल एवं सारा परिवार गुरु भक्ति से ओतप्रोत है। उन्होंने अपनी दुकान का नाम भी अमरापुर स्टोर रखा है । सत्गुरु महारा देश विदेश में आपकी रक्षा करेंगे ।

३१ जुलाई पूज्य स्वामीजी न्यूयार्क पधारे ।वे वहां आर.एल. चैनृ के घर ठहरे । वहाँ किरन स्वरूप सदारंगाणी एवं उनकी सास इन्दिरा सदारंगाणी ने पूज्य स्वामीजी की सेवा की । कई प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी से गुरुमंत्र की दीक्षा ली । पूज्य स्वामीजी ने वहां आठ दिन अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की । इसी दिन सायं सत्यनारायण मन्दिर में सत्संग का कार्यक्रम आयोजित किया गया । प्रहलाद आडवाणी ने पूज्य स्वामीजी के जीवन व कार्य पर प्रकाश डाला । तत्पश्चात् संत ज्ञानप्रकाश और सन्त अनन्तप्रकाशजी ने भजन गाये ।

अन्त में पूज्य स्वामीजी ने उपदेश करते हुये कहा कि आप यहां कितना भी धन संग्रह करें किन्तु प्रभु को न भूलें । सांसारिक कामकाज करते हुए नाम जपते रहें । किसी-न-किसी महात्मा की शरण लें । ऐसे शुभ कार्य करें कि सन्त महात्मा स्वयं आपको आशीर्वाद दें ।

आशीर्वाद हृदय से निकलता है, जिव्हा से नहीं । यदि कोई महात्मा आपकी पीठ पर हाथ रखे तो उस आशीर्वाद का अर्थ है कि आपका वंश बढ़ता रहेगा । यदि कोई सन्त आपके माथे पर हाथ रखे, तो समझो आपका परलोक सुधरेगा ! आपके दिमाग में शुभ विचार उत्पन्न होंगे । घर में आप माता-पिता एवं अन्य वृद्धों का आशीर्वाद लें । वे आपको आशीर्वाद तब देंगे जब आप उनकी आज्ञानुसार चलेंगे, उनके आदर्शों को अपनायेंगे,, सभी से प्रेम भाव रखेंगे तो दूसरे भी आपको स्नेह व सम्मान देंगे ।

६ अगस्त पूज्य स्वामीजी ने न्यूयार्क में अन्तिम प्रवचन करते हुये कहा कि सन्त भी निंदा करते हैं, किन्तु उनकी निंदा करते हैं जो नाम नहीं जपते, जो अमूल्य मानव जीवन प्राप्त करके भी प्रभु से विमुख रहते हैं । प्रेमियो ! मैं जब यहां से लौटकर भारत जाऊं तो आपकी प्रशंसा करूँ कि न्यूयार्क के प्रेमी भगवद् भक्त हैं । यदि किसी माता की साड़ी पर दाग लग जाये तो वह उस साड़ी को पसन्द नहीं करेगी। वैसे ही मनुष्य देह पर यदि कोई दाग-धब्बा लगायेंगे या लग जायेगा, तो परमात्मा के सामने हमें लज्जित होना पड़ेगा । "मैली चादर ओढ़के, प्रभु, कैसे द्वार तुम्हारे आऊं?" यदि हम ऐसी अमूल्य देह को दाग लगायेंगे, तो प्रभु हमें नहीं अपनायेंगे । हम कोई भी ऐसा बुरा काम या बुरा संकल्प नहीं करें जिससे हमारा जीवन कलंकित हो । प्रभु से बार-बार यही प्रार्थना करें :-

भक्त भाव से मूल मैं, चाहत विषय विकार ।

कह टेऊँ मोह दीजिए, सत्गुरु सत् विचार ।।

प्रेमियो ! आप यहाँ विदेश में रहते हैं, ऐसे काम करें जिससे सिन्धी समाज का यश हो । ऐसा कोई काम न करें, जिससे सिन्धी समाज का अपयश हो । विदेश में रहते हुए आप अपनी मातृभूमि, पितृभूमि भारत को न भूलें । भगवान विष्णु की सवारी गरुड़ पर होती है । एक बार गरुड़ ने भगवान से कहा कि मुझे कुछ समय छुट्टी दें तो मैं अपने जन्मस्थल होकर आऊं । तब माता लक्ष्मी ने उससे कहा कि यहां वैकुण्ठ में ही तुम इतने सुखी हो, फिर अपने गाँव जाकर क्या करोगे? किन्तु भगवान ने उसकी तीव्र इच्छा देखकर गरूड़ को

अपने गाँव जाने की अनुमति दे दी । गरुड़ उड़ता-उड़ता एक निर्जन स्थान पर आया । वहां एक बड़ा सूखा पेड़ था, वह उस पेड़ पर बैठकर बहुत ही प्रसन्न हुआ । भगवान भी दूसरा रूप धारण कर गरुड़ के पीछे आए । भगवान विचार करने लगे, ऐसे निर्जन स्थान पर गरुड़ फूला नहीं समाता । प्रेमियों ! गरुड़ को भी अपना जन्म स्थल कितना प्रिय था । वह वैकुण्ठ में रहकर भी अपने जन्मस्थान को नहीं भूला। आप भी विदेश में रहकर भारत को न भूलें ।

श्री लालचन्दाणी ने नये मन्दिर के निर्माण के लिये अनुरोध किया। सन्त अनन्तप्रकाशजी ने भजन गाते हुए मन्दिर बनाने के लिए उत्साहित किया । पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि मन्दिर धर्म के केन्द्र हैं । यह हम सबका कार्य है । अपने लिए तो सभी महल, मकान बनवाते हैं किन्तु जिस प्रभु ने हमें सुन्दर अमूल्य तन व धन दिया है, उसके लिए मन्दिर बनवाना हमारा परम कर्तव्य है । पूज्य स्वामीजी ने पांच हजांर डॉलर भेंट किए । श्री हैरी वाधवाणी ने पन्द्रह हजार डॉलर एवं अन्य प्रेमियों ने भी मन्दिर निर्माण हेतु सहायता दी।

११ अगस्त पूज्य स्वामीजी कुरासाऊ में पधारे । वहां वे निशा सन्तू दरियाणी के घर ठहरे । वहां उन्होंने दो दिन अमृत वचनों की वर्खा की । १४ अगस्त पूज्य स्वामीजी आरेंज वाक, बेलीज पधारे। वहां वे जगदीश पंजाबी के घर में ठहरे । १५ अगस्त को वहां पूज्य स्वामीजी का जन्मदिन बड़े, हर्षोल्लास के साथ मनाया गया । पहले श्री हैरी वाधवाणी, सन्त अनन्तप्रकाश, सन्त टोपणदास ने पूज्य स्वामीजी की महिमा के भजन गाते हुए उनके गुणों का वर्णन किया । पूज्य स्वामीजी ने कहा कि आज आपने मेरा जन्बदिन मनाया है, मैं आज बालक हूँ । बालक होने में ही आनन्द है । आप भी बालक बन जाएं । बालक सांसारिक प्रपंच से दूर होते हैं, राग-द्वेष से दूर होते हैं, इसलिए भगवान के निकट होते हैं । प्रभु प्राप्ति के लिए मन में प्यास पैदा करें। आप धन संग्रह के लिए कितना प्रयास करते हैं, यदि आप इतना प्रयास प्रभु प्राप्ति के लिए करते तो प्रभु स्वयं आकर आपको गले लगाते । सभी बातों को भूल जाएं किन्तु प्रभु को न भुलाएं । सतगुरु महाराज जी फरमाते हैं :-

चोरासी लख योनि का मानुष है सरताज ।
कहे टेऊँ हरि भजन का, कर इस तन में काज ॥

मनुष्य योनि उत्तम योनि है । ऐसी अमूल्य योनि व्यर्थ नहीं गंवायें। नाम स्मरण, दीन दुखियों, पशु पक्षियों की सेवा एवं शुभ कार्यों में जीवन सफल बनायें । पूज्य स्वामीजी ने विभिन्न प्रेमियों के घरों एवं स्थानों पर अमृच वचनों की वर्खा कर प्रमियों की प्यास पूरी की। १९ अगस्त को पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रचवन करते हुए कहा कि नियमित रूप से प्रभु को प्रार्थना करें । भगवान भक्त वत्सल हैं । वे अपने प्रेमियों की भूलों को क्षमा करते हैं । जैसे माता अपनी बुरी संतान को भी गले लगाती हैं, वैसे प्रभु भी हमारी गलतियों को न देखकर अपना बनाते हैं । केवल हम समर्पित भाव से उनके बनें ।

ब्राह्मण नारायणजी, भक्त पदरेशु के नाम से प्रसिद्ध हुआ । वह बड़ा वैरागी भक्त था । एक दिन वह जंगल में अपनी कुटि के बाहर तुलसी को जल दे रहा था । वहां रंग मंदिर की देवदासी भ्रमण करती आ गई । वह इस भक्त को युवास्था में वैरागी देखकर आश्चर्य में पड़ गई। किसी ने उस देवदासी को धन देकर कहा था कि पदरेणु को पथ भ्रष्ट करके आओ । वह देवदासी सन्यासित्ती के वेश में वहां आई थी । उसने भक्त से कहा कि उसका संसार से मन ऊब गया है, वह भी जंगल में रहना चाहती है । संत दयालु होते हैं । भक्त पदरेणु ने उसे अपनी कुटिया के बाहर ठहरने के लिये कहा । एक दिन बहुत वर्षा होने के कारण वह वर्षा में बहुत भीग गई । भक्त को उस पर दया आ गई, उसने उससे अपनी कुटिया में ठहरने के लिए कहा । उसी दिन दुर्भाग्य से वह भक्त पथभ्रष्ट हो गया । देवदासी ने उस भक्त से सब कुछ छीन कर कुटिया से बाहर निकाल दिया । भक्त ने अपनी गलती पर पश्चात्ताप करते आँसू बहाये । वह प्रभु से क्षमा याचना करते कहने लगा हे प्रभु ! मैंने कामवश अपनी की हुई भक्ति साधना नष्ट कर दी । अब आप मुझे क्षमा करें ।'' भगवान दयालु हैं । भगवान एक नौकर के रूप में मंदिर से स्वर्ण का बर्तन उठाकर उस देवदासी के पास ले आये और उससे कहा कि भक्त नारायण ने यह स्वर्ण बर्तन आपके लिए दिया है । वह स्वर्ण का बर्तन प्राप्त कर बहुत

ही प्रसन्न हुई । भगवान तो अन्तर्ध्यान हो गये ! प्रातः पुजारी ने मंदिर में वह स्वर्ण बर्तन न देखकर राजा से शिकायत की । राजा की ओर से जांच की गई तो वह बर्तन देवदासी के यहाँ से मिला । उसे बन्दी बनाया गया । देवदासी ने कहा कि उसने यह स्वर्ण बर्तन चोरी नहीं किया है, वह बर्तन भक्त नारायण ने ही उसे भेजा है । राजा ने आदेश दिया कि भक्त नारायण को भी बन्दी बनाया जाये । राजा के आदेश अनुसार भक्त नारायण को भी बन्दी बनाया गया । भक्त नारायण ने जेल में भगवान से प्रार्थना करते हुए कहा "हे दीननाथ : भक्त वत्सल ! मैंने तो यह स्वर्ण बर्तन चोरी नहीं किया, देखा तक नहीं । मेरी की गई पूर्व गलती के लिए क्षमा करें, मैं अनजान भूला भटका आपका ही बालक हूँ ।" भगवान भक्त वत्सल हैं । उसने राजा को नींद में दर्शन देते हुए कहा कि मंदिर का स्वर्ण बर्तन न तो नारायण ने चोरी किया है न देवदासी ने चोरी किया है । आप इन दोनों को जेल से मुक्त करें और भक्त नारायण को उसकी कुटिया में रहने की व्यवस्था करें। राजा स्वपन में भगवान का दर्शन पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ। उसने भगवान के आदेश के अनुसार दोनों को जेल से मुक्त किया और भक्त नारायण को अपनी कुटिया में रहने के लिए कहा । तत्पश्चात् भक्त नारायण सारा समय अपनी कुटि में रहकर भगवद् भजन में तल्लीन रहने लगा । प्रभु कैसे न दीन दयालु हैं ! वे अपने भक्तों की भूलें क्षमा कर पवित्र बना देते हैं । प्रेमियो ! आप भी प्रभु से अपने किए हुए पापों की क्षमा याचना कर भक्ति के मार्ग में आगे बढ़े, तो किसी न किसी दिन प्रभु परमात्मा आपको अपना बनायेगा ।

२० अगस्त पूज्य स्वामीजी अमरीका लौट आए । वहां वे एक दिन ठहरे फिर आप लन्दन पहुंचे । यहां आपने विभिन्न स्थानों पर अमृत वचनों की वर्खा की । २३ अगस्त उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि हर एक संत अपने जीवन में दया, प्रेम व परोपकार की ज्योति जगाता है । संत महात्मा न केवल मानव मात्र किन्तु सभी प्राणियों का भला करना चाहते हैं। एक बार अलवर का राजा बख्तावरसिंह जंगल में शिकार करने के लिए आया । वह एक काले मृग को मारना चाहता था । जंगल में संत निर्भयराम की कुटि थी । संत निर्भयराम ने राजा को विनय की कि मृग पर गोली न चलाए जीवन में जीव

दया की ज्योति जगायें। किन्तु राजा ने संत की बात सुनी अनसुनी कर मृग पर गोली चला दी। गोली लगते ही वह काला मृग काली गाय में बदल गया। यह देखकर राजा पश्चात्ताप करने लगा कि उसने गौ हत्या कर महापाप किया हैं। वह जल्द ही संत निर्भयराम के पास लौट आया और उसके चरणों में नतमस्तक होकर अपनी की हुई गलती के लिए क्षमा याचना करने लगा। संत निर्भयराम ने उसे उपदेश देते हुये कहा कि आप राजा महाराजा लोग मनोरंजन के लिए शिकार करते हैं और पशुंओं की मौत होती है। ये पशु पक्षी भी प्रभु की सन्तान हैं। उनका शिकार करना महापाप है। पाप का फल सबको भुगतना पड़ेगा। मैंने आपको शिकार से रोका किन्तु आपने मनमानी की यदि अब आप इस पाप का पश्चात्ताप करते हुये भविष्य में जीव हत्या न करने का संकल्प करें तो प्रभु आपको क्षमा करेंगे। राजा ने संत की आज्ञा का पालन करते हुए जीव हत्या न करने का संकल्प लिया और किए हुये दुष्कर्म के लिये पश्चात्ताप कर परमात्मा से क्षमा याचना करने लगा। तब राजा को वहीं, काली गाय के स्थान पर काला मृग देखने में आया। संत ने उसे समझाया कि अब आपको गौहत्या का नहीं मृग हत्या के पाप की सजा मिलेगी। संत महात्मा पशु पक्षियों के जीवन रक्षा के लिये भी प्रयत्न करते हैं। तत्पश्चात् राजा ने अपने जीवन में प्रेम व दया की ज्योति जगाई।

प्रेमियो ! आप में से कई लोग मांसाहारी खाना खाते हैं। यह महापाप है। आप भी जीवन में प्रेम व दया की ज्योति जगाएं।

दादा ईश्वर बालाणी ने लन्दन में मन्दिर की स्थापना की है। २५ अगस्त पूज्य स्वामीजी ने वहां अमृत वचनों की वर्खा करते हुए कहा कि इस पवित्र स्थान पर नियमित रूप से नाम कीर्तन होता है, यहां श्री गुरुग्रन्थ साहब बिराजमान है, उसे साक्षात् गुरु समझें। इस ग्रंथ में जो वाणी है, वह अमृत से भी अधिक महत्वपूर्ण एवं मीठी है। गुरुओं की वाणी, संतों की वाणी सदैव हमारा मार्ग दर्शन करती रहती, हमें अज्ञान की नींद से जागृत करती है। आप लोगों ने लाखों रुपये कमाये, वे लाखों रुपये किस काम के ! सुन्दर बंगले बनवाए, वे किस काम के ! नाम के बिना सब शून्य हैं। अधिकतर लोग मानव जीवन

का उद्धेश्य भूल गये हैं ! हम सब यात्री हैं। संसार रूपी यात्री भवन को हम अपना मकान समझ बैठे हैं। अभिमान के नशे में रहते हैं, प्रभु से विमुख होकर माया जाल में फंस गये हैं।

दो दिन जग में जीव का, मत कर तू अभिमान।
मेरा मेरा करत है, तेरा घर श्मशान॥

प्रेमियो ! जिस सुन्दर काया पर आप इतना अभिमान करते हैं, वह एक दिन श्मशान भूमि में जल कर राख हो जायेगी। इसलिए मोह की नींद से जागृत होकर नाम स्मरण करें। नाम को नहीं भूलें। सत्गुरु महाराज जी भी फरमाते हैं।

अन्तर बाहर रैन दिन, भूलो ना हरि नाम।
जिव्हा मन वा प्राण से, कह टेऊँ रट राम॥

प्रेमियो ! रोम रोम से राम का जाप जपें और अहंकार का त्याग करें। पूज्य स्वामीजी ने बहन किशा आत्माराम के घर में चार दिन सत्संग प्रवचन किए। १ सितम्बर वे लासपालमास (स्पेन) पधारे। वहाँ वे मन्डली सहित मोहन रामचन्दाणी के घर ठहरे। २ सितम्बर पूज्य स्वामीजी ने श्री सत्नाम साक्षी मन्दिर का उद्घाटन किया। इस अवसर पर लासपालमास के महापौर भी वहां पधारे। उन्होंने सिन्धी जाति की प्रशंसा की। श्री रामचन्द बूलचंद, खुशी, बिन्दू, हरि नन्दवाणी, गोवर्धन टहलरामाणी ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत करते हुए उनके जीवन कार्य पर प्रकाश डाला। पूज्य स्वामीजी ने उपदेश करते हुए कहा कि आप सब प्रेमियों को धन्यवाद है कि आप विदेश में रहते हुए भी सत्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की ज्योति जगा रहे है। आप यहां आकर नियमित रूप से हरि कीर्तन करें, नाम स्मरण करें। इस पवित्र स्थान पर समय समय पर संत महात्मा आकर आपको अमृत वचनों का पान करायेंगे, यह मन्दिर सनातन धर्म के केन्द्र हैं। अपने लिए तो सब लोग बंगले महल बनवाते हैं, किन्तु प्रभु के लिए मन्दिर बनाना, जन कल्याण का कार्य है। यहां सब मिलकर हरिगुण गायें। आप कितने भी धनवान हों किन्तु नाम रूपी पूंजी के बिना आपका जीवन व्यर्थ है। नाम निधि ही सच्ची निधि है। इसकी पूंजी संग्रह करें। संत कबीरदास जी फरमाते

हैं।

जग सारा दरिद्री भया, धनवन्ता नहीं कोय।

धनवन्ता सोई जानिए, राम पदार्थ होय॥

किसी न किसी संत महात्मा से नाम लेकर, उसकी साधना करें। नाम स्मरण से आपको आत्मिक आनन्द का अनुभव होगा। नाम की पूंजी आपको इस संसार एवं परलोक में काम आयेगी। आप और सभी बातों को भूलकर गुरु-गोबिन्द का चिन्तन करें, ध्यान करें। प्रभु ने यदि आँपको माया दी है, तो वह माया परोपकार के कार्यों में सफल करें। श्री रामचंद बूलचंद भारत में आकर दीन दुखियों की सेवा में अपनी माया सफल करता है। आप भी ऐसे परोपकार के कार्य करें।

इसी अवसर पर पूज्य स्वामीजी ने "प्रेम सागर" पुस्तक का विमोचन किया। इस पुस्तक में सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज, सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के सुन्दर चित्र, उनकी कुछ वाणी एवं आरतियां प्रकाशित की गई थी।

४ सितम्बर श्री सत्नाम साक्षी मन्दिर में पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा:

केले के पात पात में पात है।

संतों के बात बात में बात है।

संतों की बोली निराली होती है। यदि उनकी वाणी आप न समझ पावें तो बिना संकोच के उनसे उसका अर्थ अवश्य पूछें।

एक महात्मा के पास एक नया प्रेमी आया, उसने महात्मा से विनय की कि कृपया आशीर्वाद दें। संत ने आशीर्वाद करते हुए कहा कि सभी मर जायें। यह आशीर्वाद वचन सुनकर वह प्रेमी आश्चर्य में पड़ गया। वह प्रेमी निराश होकर वहां से उठकर चलने लगा तो संत ने कहा "लौट नहीं आयेगा।" संत का दूसरा वचन सुनकर भी प्रेमी बहुत दुखी हुआ और घर लौट आया। घर में भी उसे आराम नहीं आया। वह बार बार संतों के वचनों का चिन्तन कर दुखी रहने लगा। उसके घर के निकट एक ज्ञानी प्रेमी रहता था। वह अपने मन का

बोझ कम करने के लिए उसके पास गया और उसे बताया कि अमुक महात्मा ने उसे आशीर्वाद न देकर श्राप दिया कि 'सभी मर जायें' 'लौट नहीं आयेगा' वह व्यक्ति ज्ञानी व गंभीर था । उसने कहा कि संतों के सत् वचनों में कोई रहस्य अवश्य होगा, जिसको साधारण लोग समझ नहीं सकते, वह प्रेमी पुनः उस व्यक्ति को उसी महात्मा के पास लेकर आया । संत उस प्रेमी को जानता था । दोनों ने संत को प्रणाम किया। उस प्रेमी ने संत से प्रार्थना की कि यह व्यक्ति पहली बार आपके पास आशार्वाद लेने आया था । इसलिए इसनें आपकी वाणी का रहस्य नहीं समझा । कृपया इसे अपने वचनों का अर्थ सुनाकर अनुग्रहीत करें ।

महात्मा ने कहा कि मैंने इसे पहले कहा कि सभी मर जायें, अर्थात् तुम्हारे सभी पाप नष्ट हो जायें । जब जीव के सब पाप नष्ट हो जाते है तो वह माया से मुक्त हो जाता है । इसलिए मैंने उसे आशीर्वाद देते हुए कहा कि तू लौट नहीं आयेगा, अर्थात् तू मुक्त हो जाएगा।

संत के वचनों का भावार्थ सुनकर दोनों प्रेमी प्रसन्न हुए । संतों की प्रत्येक बात में कोई न कोई रहस्य होता है, उसे समझने का प्रयास करें।

६ सितम्बर पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि किसी न किसी संत महात्मा की शरण लें, जो आपका मार्ग दर्शन करे । आप फिर सरलता से संसार सागर से पार हो जाएंगे । एक धनवान था, उसे सभी सांसारिक सुख थे, किन्तु सन्तान न होने के कारण वह बहुत दु:खी रहता था । एक दिन वह अपने कमरे में रोते-रोते प्रभु से कह रहा था- "हे प्रभु ! आपने मुझे धन-पदार्थ दिए, किन्तु सन्तान नहीं दी ।" अचानक उसी समय उसका एक मित्र आया, उसने उससे पूछा कि तुम्हें क्या चिन्ता है? धनवान ने कहा कि मुझे सन्तान की ही चिन्ता है, सन्तान पुत्र ही हो । वह उसे एक महात्मा के पास ले गया । महात्मा ने पूछा- "आप किस लिये आए हो?" मित्र ने महात्मा से कहा कि मेरे इस दोस्त को पुत्र सन्तान नहीं, कृपया इसकी खाली झोली भरें । महात्मा ने कहा कि इसके भाग्य में पुत्र सन्तान लिखी हुई नहीं है । धनवान ने विनती करते हुए कहा कि यदि मेरे भाग्य में सन्तान होती तो मैं क्यों यहां आता? आप कृपया आशीर्वाद

देकर मेरी झोली भर दें । महात्मा को दया आ गई । उन्होंने कहा कि तुम्हें पुत्र सन्तान होगी, किन्तु वह बेटा तुम्हें प्रसन्न नहीं रखेगा। धनवान ने मोहवश कहा कि आप मुझे पुत्र सन्तान दें, फिर देखा जायेगा, महात्मा ने आशीर्वाद के रूप में उसे एक फल दिया । वह फल धनवान व उसकी पत्नी ने खाया । एक वर्ष पश्चात् उन्हें पुत्र सन्तान हुई । वे बहुत ही प्रसन्न हुए । बेटा बड़ा हुआ तो वह बुरी संगत में फँस गया । बेटे ने इतने दुष्कर्म किए मि माँ-बाप परेशान हो गए । पिता ने व्यथित होकर कहा कि उसने महात्मा से सन्तान मांगकर बड़ी भूल की । इससे तो अच्छा था कि वह निःसन्तान रहता । प्रेमियो ! यदि सन्तान हो तो शीलवान, आज्ञाकारी व चरित्रवान हो । वह धनवान अत्यन्त दुःखी होकर उसी महात्मा के पास आया और महात्मा को अपने मन की व्यथा सुनाई ।

महात्मा ने धनवान से कहा कि आप अपने बेटे को मुझे दे दें, मेरे पास वह सुधर जायेगा । सत्संग से जीव सुधर जाता है, कुसंग से डूब जाता है । पिता किसी तरह पुत्र को बहलाकर उस महात्मा के पास लेकर आया । सन्त ने दया दृष्टि कर उसे अपनी सेवा में लगाया । वह लड़का महात्मा के चमत्कार देखकर आश्चर्य में पड़ गया । फिर तो वह सदैव सन्त की सेवा में लगा रहा । उसके जीवन में परिवर्तन आ गया । सन्त के संग में वह सुधर गया । वह सेवा के साथ-साथ नाम स्मरण भी करता रहा । आप भी सन्तों का संग करें, उनकी शरण लें तो वे आपको नई दिशा देकर आपका भविष्य उज्ज्वल करेंगे । धनवान व उसकी पत्नी पुत्र में इतना परिवर्तन देखकर सन्त का आभार मानने लगे ।

८ सितम्बर पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुये कहा कि आप अपने जीवन में दूसरों के गुण ग्रहण करें । दूसरों के अवगुण नहीं देखें । एक पुत्र अपने पिता के साथ बाजार गया । उसने वहां अपने पिताजी की निंदा सुनी । लोग बिना विचारे ही दूसरों की निंदा करते हैं । निंदक का बड़ा नुकसान होता है, इसीलिए न किसी की निंदा करनी चाहिये न श्रवण करनी चाहिये । पुत्र ने पिताजी से कहा कि अमुक व्यक्ति आपकी निंदा कर रहा था । पिता ने कहा- "बेटा !

यह संसार भी एक बाजार है। यहां भांति-भांति की वस्तुएं हैं। जो अपने काम की चीज़ हो वह खरीदनी चाहिये। दूसरी बातों से हमारा कोई प्रयोजन नहीं। दूसरी बातों की ओर ध्यान देना भी ठीक नहीं है। अवगुण व्यक्तिगत सम्पति है और सद्‌गुण सर्वसाधारण की सम्पति है। सदैव गुण ग्रहण करना चाहिए। जो निंदा करता है करने दो वह अपनी ही हानि करता है।

श्रृँगेरी (कर्नाटक) में श्रृँगेरी शारदापीठ्म के ३५वें जगद्‌गुरु शंकराचार्य श्री अभिनव विद्यातीर्थ जी महास्वामी २१ सितम्बर दोंपहर ११ बजकर २५ मिनट पर ब्रह्मलीन हो गए। पूज्य स्वामीजी उस समय स्पेन की यात्रा पर थे। पूज्य स्वामीजी ने अपने एक सन्देश में श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये जगद्‌गुरु पूज्यपाद श्री अभिनव विद्यातीर्थजी महाराज के ब्रह्मलीन होने को आध्यात्मिक जगत् के लिए अपूरणीय क्षति बताया। स्वामीजी ने कहा कि जगद्‌गुरु शंकराचार्य जी महाराज एक सच्चे धार्मिक सन्त थे। आपको स्मरण हो कि जगद्‌गुरु शंकाराचार्य श्री अभिनव विद्यातीर्थ जी महास्वामी २२ मार्च, १९८२ को प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर-५ में पधारे थे। उन्होंने आश्रम पर प्रचवन कर प्रेमियों को अपनी अमृतमयी वाणी का रसास्वादन कराया था।

परम पूजनीय स्वामीजी ने तनरीफ, साऊथा, मलाया, मैडरिड, स्पेन के अन्य नगरों में २६ सितम्बर तक अमृत वचनों की वर्खा कर हजारों प्रेमियों की प्यास पूरी की। इसी दिन श्री सत्‌नाम साक्षी मन्दिर में पूज्य स्वामीजी के सत्संग प्रचवन का कार्यक्रम रखा गया। सर्वप्रथम खुशी-बिन्दु और सन्त अनन्तप्रकाशजी ने गुरु महाराज की महिमा के भजन गाये। पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि आप लोगों को धन्यवाद है कि आपने सन्तों को इतना स्नेह व सम्मान दिया है। यह सारी महिमा सत्गरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज एवं सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की ही है। अन्यथा मुझे यहां कौन पहचानता? प्रेमियो! आप यहां स्पेन में रहकर भी भारत की संस्कृति व हिन्दू सनातन धर्म के सिद्धांतों को नहीं भूलें। अपनी सन्तान से अपनी मातृभाषा सिन्धी में बातचीत करें। अपना कामकाज करते हुए प्रभु को न भुलाएं। बार-बार उसे प्रेम से पुकारें तो किसी-न-किसी दिन प्रभु आपको अपने

गले लगाएगा । सत्गुरु महाराज जी भी फरमाते हैं :-

प्रेम बिना पहुंचे नहीं,को जन हरि के धाम ।
कह टेऊँ तांते जपो, प्रेम सहित हरिनाम ॥

पूर्वजन्म की किसी गलती के कारण साधना के फल की प्राप्ति में विलम्ब होता है, तो कभी-कभी अनुष्ठान पूरी विधि से नहीं करने के कारण भी फल प्राप्ति में देरी होती है । श्री मधुसूदन सरस्वती ने ब्रज में जाकर भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन के लिए अनुष्ठान किया। उसने गोपाल मन्त्र की साधना की । अनुष्ठान पूरा होने के पश्चात् भी उसे भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन नहीं हुए । भक्त मधुसूदन ने समझा कि शायद साधना करते-करते उससे कोई गलती हो गई है, इसी कारण ही उसे भगवान श्री श्यामसुन्दर के दर्शन नहीं हुए हैं । उसने फिर श्री गोपाल मन्त्र की साधना की । परन्तु अनुष्ठान समाप्त होने के पश्चात् भी उसे भगवान श्री गोपालकृष्ण के दर्शन नहीं हुए । एक दिन वह आश्रम के बाहर बैठा था, अचानक वहां से एक महात्मा कहीं जा रहे थे । उन्होंने उसे उदास देखकर उदासी का कारण पूछा । मधुसूदन ने निराश होकर महात्मा से कहा कि वेदों के वचन भी झूठे हैं । इसलिए मैं उदास बैठा हूँ । मैंनें यहां ब्रज में दो बार श्री गोपाल मन्त्र का अनुष्ठान किया है फिर भी मुझे अनुष्ठान के पश्चात् भगवान श्यामसुन्दर के दर्शन नहीं हुए हैं । महात्मा ने कहा- "बेटे ! वेदों की वाणी कभी असत्य नहीं हो सकती । तुम्हारे पूर्वजन्मों में किए पापों के कारण ही तुम्हें भगवान के दर्शन नहीं हुए हैं । तुम निराश मत हो । अब काशी में जाकर इसी मन्त्र का अनुष्ठान करो ।

महात्मा की आज्ञानुसार वह काशी में आया और उसने वहां एक बार पुन: श्री गोपाल मन्त्र की साधना की । अनुष्ठान समाप्ति के पश्चात् भगवान की मूर्ति से आवाज आई कि तुम्हें क्या चाहिए? मधुसूदन ने पूछा आप कौन हैं? और पीछे से क्यों बोल रहे हैं? सामने आकर बात करें । फिर मूर्ति से आवाज आई मैं काशी का कोतवाल भैरव हूं, तुम्हारे सामने नहीं आ सकता ।" मधुसूदन ने कहा कि मुझे तुमसे कुछ मांगना नहीं । मुझे तो प्रभु दर्शन की प्यास हैं, और कुछ नहीं चाहिए ।" फिर तीसरी बार भैरव की आवाज आई, "तुम ब्रज में

जाकर अब फिर उसी मन्त्र का अनुष्ठान करो तो तुम्हें भगवान बांके बिहारी के दर्शन होंगे।" मधुसूदन ने कहा कि "मैंने दो बार तो वहां अनुष्ठान किया है, फिर भी मुझे भगवान का दिव्य दर्शन नहीं हुआ है।" भैरव ने कहा "तुमने पूर्व जन्म में तीन हत्याएं की थी। उन तीन हत्याओं के कारण ही तुम्हें भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन नहीं हुए। अब तुमने तीन बार श्री गोपाल मन्त्र का अनुष्ठान किया है, इसलिए उन तीन-हत्याओं का पाप अब क्षय हुआ है। अब तुम ब्रज में जाकर श्री गोपाल मन्त्र का अनुष्ठान करो तो अवश्य ही तुम्हे प्रभु का दर्शन होगा।

मधुसूदन ने ब्रज भूमि में जाकर श्री गोपाल मन्त्र का अनुष्ठान किया। अनुष्ठान समाप्ति के पश्चात् मधुसूदन को भगवान श्री श्यामसुन्दर के दर्शन हुए। दर्शन करते ही उसकी आंखों में प्रेम के आंसू उमड़ आए। भगवान ने उन्हें उठाकर अपने गले लगाकर उसकी इच्छा पूर्ण की। प्रेमियों ! आप भी भक्ति साधना करते रहें किसी न किसी दिन आपको भी भगवान का दर्शन अवश्य होगा। आप लोगों ने जो मुझे स्नेह व सम्मान दिया है, उसके लिए आप सभी को धन्यवाद है। मेरा यही आशीर्वाद है कि आप गुरु भक्ति एवं ईश्वर भक्ति के पथ पर प्रगति करते रहें।

२८ सितम्बर रात्रि पूज्य स्वामीजी विदेश यात्रा पूर्ण कर बम्बई लौट आए। कई प्रेमियों ने पुष्प मालाओं से उनका स्वागत सत्कार किया। २९ सितम्बर प्रातः पूज्य स्वामीजी ने प्रेम प्रकाश मंडली माटूंगा में सत्संग प्रवचन किए। श्री गागनदास सचानन्दाणी एवं अन्य प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत किया। दोफ्हर पूज्य स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम पधारे। सायं उनके जन्म दिन उत्सव के सम्बन्ध में विद्यार्थियों की भक्ति संगीत की प्रतियोगिता आयोजित की गई। पूज्य स्वामीजी ने विद्यार्थियों को पुरुस्कार प्रदान किए।

१ अक्टूबर जनता जनार्दन परिषद् की ओर से पूज्य स्वामीजी का ८३ वां जन्म दिन उत्सव स्वामी टेऊंराम आश्रम सिन्धुनगर-५ में मनाया गया। प्रातः प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी को दूध से स्नान कराया और पूजा उपासना की। पूज्य स्वामीजी ने अमृत वचनों की वर्खा की।

'श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ' एवं श्रीमद् भगवद् गीता के पाठों का समापन किया गया । हवन यज्ञ के पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने सेवा यज्ञ का शुभारम्भ करते, दीन दुखियों को आर्थिक सहायता के साथ चद्दर, चावल इत्यादि वितरित किये । सायं कई प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी को पुष्पांजलि अर्पित की । डॉ. दयाल 'आशा' ने जनता जनार्दन परिषद के सेवा कार्य का विवरण प्रस्तुत करते हुए पूज्य स्वामीजी की महिमा का भजन गाया ।

पूज्य स्वामीजी ने प्रचवन करते हुए कहा कि आप लोगों ने जो मेरी महिमा गाई, यह मेरी महिमा नहीं, कार्य की महिमा है । आप भी जीवन में नाम स्मरण व सेवा कार्य करें । नाम स्मरण में कोई खर्चा नहीं । प्रतिदिन प्रभु को याद करें और दीन दुखियों की सेवा करें । देश में कितनी न गरीबी है ! माया का सद्उपयोग करें । माया प्रभु परमात्मा की धरोहर है; उसे गरीबों की सेवा में खर्च करें ।

स्वामी ऊध्दवदासजी महाराज के पुण्यतिथि उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी २ अक्टूबर सायं अहमदाबाद पधारे । श्री संतूमल मूलचंदाणी, श्री लोकूमल तुलसियाणी, साजनदास अनन्दराम, प्रकाश नेणूमल, चंद्रलाल, कन्हैयालाल एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया । २ अक्टूबर से ४ अक्टूबर तक पूज्य स्वामीजी ने वहां अमृत वचनों की वर्खा की । उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि संत ऊद्धवदासजी ने संतगुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज से गुरु मंत्र की दीक्षा लेकर, उसकी साधना की, उन्होंने स्वयं भी नाम स्मरण किया और औरों को भी नाम जपाया । वे मेरे बचपन के साथी एवं गुरु भाई थे । आपको धन्यवाद है कि आप प्रतिवर्ष यहां संत उद्धवदास जी महाराज का पुण्य तिथि उत्सव मनाते हैं । प्रेमियों को नाम जपाना और भगवद् भक्ति की ओर आकर्षित करना ही इन उत्सवों का उद्देश्य है ।

प्रेमियों ! आप यदि सांसारिक दुखों से बचना चाहते हैं तो प्रभु की शरण लें । प्रति दिन कुछ समय एकांत में बैठकर नाम चिन्तन करें । परमात्मा के साकार रूप का ध्यान करें जैसे आपके चित्त की वृत्ति उसमें लग जाये । अपने इष्ट का ध्यान करते करते आपको आनंद का अनुभव होगा । आपको प्रभु का दर्शन भी हो जायेगा ।

संत गोस्वामी तुलसीदासजी महाराज यात्रा करते करते ब्रजभूमि आये। वहां वे एक मन्दिर में गए । उस मंदिर का मंहत गोपालदास भगवान श्रीकृष्ण का उपासक था । वह 'श्री कृष्ण' कहने वालों को अधिक अन्न देता और 'राम राम' कहने वालों को कम अन्न देता था । यह भेद रखकर संत तुलसीदासजी ने गोपालदास से कहा कि आप यह अंतर क्यों रखते हैं? गोपालदास ने कहा कि यहां की यह पद्धति हैं। आप यदि यहां भगवान श्रीराम का दर्शन करायें तो अधिक अन्न दिया जायेगा । उसी समय ही संत तुलसीदास ने मन्दिर में भगवान से प्रार्थना की तो वहां स्थापित भगवान श्री कृष्ण की मूर्ति में परिवर्तन आ गया। वह मूर्ति भगवान श्रीराम की बन गई । यह चमत्कार देखकर महंत गोपालदास विस्मय में पड़ गया । उसने संत तुलसीदास को दण्डवत् प्रणाम किया । प्रेमियो ! भगवान श्रीकृष्ण एवं भगवान श्रीराम सब एक ही हैं, आप सब में उस प्रभु का दर्शन कर सब प्राणियों को प्यार करें, सहानुभूति दें । मांसाहार न कर सात्विक भोजन खाएं । पाप की कमाई से दूर रहकर सत्य के मार्ग पर चलें तो आपका कल्याण होगा।

५ अक्टूबर को प्रेम प्रकाश मंडल एवं निष्काम सेवा मंडल की ओर से अहमदाबाद में पूज्य स्वामीजी का ८३ वां जन्म दिवस मनाया गया। श्री जीवनदास जयरामदास, श्री थांवरदास खूबचदाणी, श्री संतूमल मूलचंदाणी, चन्द्र सांवलाणी ने पूज्य स्वामीजी के जीवन कार्य पर प्रकाश डाला और कई प्रेमियों ने उन्हें पुष्प मालाएं अर्पित की। पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आप लोगों ने जो मेरी महीमा गाई यह कार्य की महिमा है । प्रभु की कृपा, सत्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की अनुकम्पा एवं आप लोगों के सहयोग से सभी सेवा कार्य हो रहे हैं । मैं तो किसी काम का नहीं। सत्गुरु ने मुझे नया बनाया, नई दिशा दी । प्रेमियों ! आप भी किसी न किसी परिपूर्ण गुरु की शरण लेकर अपना जीवन नया बनायें । गुरु मंत्र की साधना करें । परोपकार के कार्य में जीवन सफल बनाएं । सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज भी फरमाते हैं ।

कह टेऊँ तुम चेत ले, अब कछु बिगड़ी नाहिं ।
दया धर्म शुभ कर्म कर, हरि सुमरो मन माहिं ।।

९ अक्टूबर से १३ अक्टूबर तक स्वामी टेऊंराम प्रेम प्रकाश आश्रम,

हरिद्वार में पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का ९३ वां जन्म उत्सव आयोजित किया गया। इसी उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी ७ अक्टूबर हरिद्वार पधारे। ९ अक्टूबर श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ एवं श्रीमद् भगवद् गीता के पाठ रखे गये। सायं पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के जन्म-दिन उत्सव के उपलक्ष्य में कई प्रेमी देश विदेश से यहां आए हैं, उनको साधुवाद है। आप गुरु के उत्सव में सम्मिलित हुए हैं, गुरु महाराज जी आपके उत्सवों में सम्मिलित होंगे। सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज यहां ऋषिकेश में एकांत में, भगवद् भजन करते थे। आप भी इस पवित्र स्थान पर आए हैं, तो रात-दिन नाम स्मरण करें। हरिद्वार में आकर भी आप नाम स्मरण एवं संतों के दर्शन न करें, गंगा में डुबकी न लगायें, तो यहां आने से क्या लाभ? गंगा मैया की गोद में बैठकर नाम का जाप करें तो आपकी शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा दूर हो जायेगी। सत्गुरु महाराज जी फरमाते हैं :

गंगा हरिती पाप को, शशि हरिता है ताप।
पाप ताप दोनों हरे, टेऊँ हरि का जाप॥

१० अक्टूबर प्रातः पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि प्रातःकाल उठकर राम नाम रूपी अमृत पीकर आनंदित हों। सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की भांति आप भी कुछ समय मौन धारण कर भगवद् चिन्तन करें, सत् शास्त्रों का अभ्यास करें। सत्गुरु महाराज मौन की महिमा गाते हुए कहते हैं :

मीठी वस्तु मौन सम, नंहि देखी इस जग मांहि,
टेऊँ तांते मौन गह, व्यर्थ बोलत कांहि॥

प्रेमियो ! व्यर्थ की बातों में अपने अमूल्य श्वास न गंवाये। श्वास श्वास से नाम का जाप करें।

"समरो सुमर- सुमर सुख पावह,
कल कलेश तन मांहि मिटांवह।"

गुरुवाणी एवं संतों की वाणी का अभ्यास करें। अभ्यास करते करते अन्तःकरण शुद्ध हो जाएगा। अन्तःकरण शुद्ध होने से आप साक्षी

चेतन का दर्शन कर सकेंगे । साक्षी स्वरूप का ज्ञान हुआ, तो फिर आनन्द ही आनन्द है ।

साक्षी चेतन रम रहा, जल थल पुन आकाश ।
कह टेऊँ तंहि जान के पाओ सुख अविनाश ।।

११ अक्टूबर सायं पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करत हुए कहा कि किसी-न-किसी सत्पुरुष की शरण लें और उसमें विश्वास रखें । सन्त स्वयं तो शक्तिशाली हैं किन्तु उनके दर की धूलि (मिट्टी) भी दुःख-दर्द दूर करती है । कुछ प्रेमी पूज्य स्वामीजी से जल पढ़ाकर पीते थे तो उनका दुःख दूर हो जाता था । कंधार में मुस्लिम शासन के कारण हिन्दुओं के पूजा-पाठ करने पर प्रतिबन्ध था । वे छिपकर भगवान की पूजा उपासना करते थे । पूजा के समय वे शंख भी नहीं बजा सकते थे । वहां पण्डित लक्ष्मणदास के घर में भगवान का छोटा-सा मन्दिर था । वह नियमित रूप से वहां पूजा-पाठ करता था । एक बार वह किसी कार्यवश बाहर गया । उसके बेटे रामरत्न द्वारा भगवान की पूजा उपासना के पश्चात् शंख बजाने पर उनके समीप रहने वाले एक कट्टर मुसलमान मौलवी ने शंख बजाने वाले रामरत्न को कैद करवाया। उससे कहा गया कि या तो तुम मुसलमान बन जाओ या मौत की सजा कबूल करो । रामरत्न एवं उसके माँ-बाप बहुत घबरा गए । मासूम बच्चे को शंख बजाने के लिए मृत्युदण्ड देना ठीक नहीं । उन दिनों श्री गुरुनानक साहब के सुपुत्र बाबा श्रीचन्द वहां कंधार आये हुए थे। पण्डित लक्ष्मणदास उनके पास गये और उन्हें सारी व्यथा सुनाकर बालक की रक्षा के लिए विनती की । बाबा श्रीचन्द्रजी ने विभूति देते हुए कहा कि यह विभूति बालक के मस्तक पर जाकर लगाये, उसका बाल भी बांका नहीं होगा । पन्डित लक्ष्मणदास ने बादशाह को एक अनुरोध पत्र भेजा, जिसमें उसने निवेदन किया कि उसे अपने बालक से मिलने की अनुमति दी जाय । बादशाह ने पन्डित को पुत्र से मिलने के लिये अनुमति दी । पिता पुत्र से मिलने के लिए जेल में गया । उसने बाबा श्रीचंद्र भगवान की दी हुई विभूति सुपुत्र रामरत्न के मस्तक पर लगाई। विभूति लगने से बालक में नई चेतना और वीरत्व की भावना उत्पन्न हुई । बालक ने जेलर से कहा कि मैं कदापि इस्लाम स्वीकार नहीं

करूंगा, तुमको जो कुछ करना हैं करो । जेलर ने सिपाहियों से कहा इसको तुरन्त रस्सियों से बाँध दो । जेलर की आज्ञानुसार सिपाहियों ने जैसे ही रामरत्न को बांधने का प्रयास किया तो वे और वहाँ खड़ा जेलर पत्थर की भाँति जड़वत से हो गये । उनके हाथ पांव वहीं के वहीं रुक से गये । यह चमत्कार देखकर वे आश्चर्य में पड़ गये । जब बादशाह एवं वज़ीरों को इस बात का पता चला, तो वे जेल में आये। वहां पहुँचकर उक्त दृश्य देखकर सभी विस्मय में पड़ गये! बादशाह के दोस्त गिल अकबर जिसका दरवेशों से प्रेम का नाता था, उसने बादशाह से कहा कि कंधार में हिन्दुओं के महापुरुष श्रीचन्द्रजी आए हैं, चल कर उनकी शरण लें, संत सभी का भला करते हैं । बादशाह एवं वज़ीर और कोई रास्ता न देखकर बाबा श्रीचन्द्रजी के पास आये और उनसे विनती की कि जेलर और सिपाहियों पर दया दृष्टि करें। बाबा श्रीचन्द्रजी ने कहा कि पहले आप रामरत्न को मुक्त करें और कट्टरपन को त्याग दें । मासूम बालक को शंख बजाने के लिए मृत्यु दण्ड देना कहां तक उचित है । अलग-अलग धर्म, जाति, अलग-अलग प्रकार से उस परमात्मा की पूजा उपासना करते हैं । आप हिन्दुओं पर धार्मिक प्रतिबन्ध नहीं लगाएं । बादशाह और वज़ीरों ने प्रतिज्ञा की कि भविष्य में वे ऐसा काम नहीं करेंगे । बादशाह ने राम रत्न को मुक्त किया और हिन्दुओं पर जो धार्मिक प्रतिबंध था वह भी हटा दिया । बाबा श्रीचन्द्र भगवान की कृपा से जेलर व सिपाही भी ठीक हो गये । बाबा श्रीचन्द्र की विभूति में कितनी शक्ति थी। प्रेमियो! महा पुरुषों के संग से, शरण लेने से आप लाभान्वित होंगे।

पूज्य स्वामीजी ने पांचों दिन प्रातः एवं संध्याकाल अमृत वचनों की वर्खा की । १३ अक्टूबर सांयकाल को उत्सव का समापन करते हुए पूज्य स्वामीजी ने कहा कि प्रभु के लिये हृदय में प्रेम है तो किसी न किसी दिन भगवान आपको दर्शन देंगे । प्रभु प्रेम पैदा करने के लिए वैराग्य आवश्यक है । भक्तों को प्रभु के अतिरिक्त और कोई वस्तु नहीं सुहाती है । सत्गुरु महाराज जी फरमाते है :

कह टेऊँ भगवान को, चाहत भक्त सुजान ।
निश दिन भगवद् चरण में, प्रेम करत प्रधान ।।

१७ अक्टूबर प्रेम प्रकाश मन्दिर आगरा में पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि किसी न किसी संत महात्मा की शरण लें जो आपका मार्गदर्शन करें। संत न केवल स्वयं दुख दूर करते हैं किन्तु उनकी वाणी में भी बड़ी शक्ति होती है। उनकी वाणी का पाठ करने से, या पाठ कर जल पीने से भी पीड़ा मिट जाती है। कुछ श्रद्धालु श्री गुरुग्रन्थ साहब पर चढ़े हुए वस्त्र का कोना जल में डुबो कर पीते हैं। सदैव विश्वास की ही विजय होती है। एक बार संत दादू के किसी गृहस्थी प्रेमी को पेट में दर्द हुआ। वह संत दादू के शिष्य स्वामी हरिजीराम के पास आया। श्री हरिजीराम ने श्री दादू वाणी ग्रंथ के रुमाल का कोना जल में डुबो कर, वह जल पिलाया तो उसकी पीड़ा मिट गई। प्रेमियो ! आप प्रभु व सन्तों पर पूरा पूरा विश्वास रखकर प्रार्थना करें तो वे आपकी समस्याओं का समाधान अवश्य करेंगे, आपके दुख दर्द मिटाएंगे। आप यहां नियमित रूप से आकर सन्तों की वाणी का श्रवण करें। आपको साधुवाद है जो आप भक्तप्रकाश को सहयोग देते हैं। भक्तप्रकाश सरलचित्त है। सरलचित्त भक्त प्रभु के निकट होते हैं।

भक्त शिरोमणि संत कंवरराम साहब के पुण्य तिथि उत्सव के संबन्ध में परम पूज्य स्वामीजी १८ अक्टूबर कोटा पधारे। संत मनोहरलाल एवं अन्य प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत किया। तीन दिन प्रात: उन्होंने प्रेम प्रकाश आश्रम में अमृत वचनों की वर्खा की और तीनों रात्रि उन्होंने भक्त कंवरराम साहब के पुण्य तिथि उत्सव के संबन्ध में सत्संग प्रवचन किया। पूज्य स्वामीजी ने भक्त कंवरराम साहब को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि उन्होंने अपाहिजों दीन दुखियों की तन, मन व धन से सेवा की। सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज ऐसे संतों की महिमा गाते हुए कहते है :

जांकी दृष्टि सम रहे, सो सम दृष्टि जान।
कह टेऊँ तां पुरुष को, कहते संत सुजान॥

भक्त कंवरराम साहब सद् गृहस्थी होते हुए भी उन्होंने कितने न परोपकार के कार्य किए। उन्हें भजन गाते हुए जो कुछ धन, पदार्थ भेंट में मिलता था, वह धन पदार्थ गरीबों में बांट देते थे। उनका

जीवन हमारे लिये प्रकाश स्तम्भ है । प्रेमियों ! आप भी जीवन में परोपकार के कार्य करें और प्रभु का स्मरण करते रहें तो आपका जन्म सफल होगा । इसी अवसर पर डा. दयाल 'आशा' ने भी भक्त कंवरराम साहब के जीवन कार्यों पर प्रकाश डालते हुए सिन्धी समाज से अनुरोध किया कि दहेज व मांस भक्षण का परित्याग करें ।

श्री ज्ञानचन्द मसंद ने कोटा की एक बाजार में एक प्याऊ का निर्माण करवाया । पूज्य स्वामी ने उसका उद्घाटन करते हुए ज्ञानचंद मसंद को इस उत्तम कार्य के लिए धन्यवाद दिया ।

स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज के पुण्य तिथि उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी २५ अक्टूबर स्वामी रामकृष्ण आश्रम पुणे में पधारे। उन्होंने दो दिन वहां सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज महान विद्वान एवं ओजस्वी कवि थे । उनके कंठ में माता सरस्वती का वास था । स्वामी रामकृष्ण को साधुवाद हैं कि उन्होंने उनकी वाणी का संग्रह "ग्वालानन्द ग्रन्थ" दूसरी बार प्रकाशित किया है, जिससे अधिक से अधिक प्रेमी संतों की वाणी का अभ्यास कर लाभान्वित हों । संत सदैव अमर हैं और उनकी वाणीं भी अमर हैं। प्रेमियो ! जैसे स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज ने भगवद् भजन किया, आप भी वैसे ही प्रभु से प्रेम का नाता जोड़े तो आपका कल्याण होगा ।

दीपावली पर्व के उपलक्ष्य में जनता जर्नादन परिषद् की ओर से स्वामी टेऊंराम प्रेम प्रकाश आश्रम, सिन्धुनगर-५ में पूज्य स्वामीजी ने चार सौ गरीब बहनों को मिठाई, चावल, दाल शक्कर के पैकेट व बच्चों के लिए फुलझड़िया-पटाखे वितरित किए। तत्पश्चात् सिन्धुनगर २ में भी पूज्य स्वामीजी ने मिठाई के पैकेट गरीबों में वितरित कीये। भागचंद खानवाणी एवं भगवानदास केसवाणी ने पूज्य स्वामीजी का आभार व्यक्त किया । सायं पूज्य स्वामीजी बम्बई पहुँचे । वे रात्रि जीअन्दराम हेमनदास के घर ठहरे । २९ अक्टूबर पूज्य स्वामीजी को प्रेमी कपड़ा मार्केट ले गये और पूज्य स्वामीजी का आशीर्वाद लेकर नये चौपड़ों को आरम्भ किया । दीपवाली की रात पूज्य स्वामीजी प्रीतमदास देवनाणी के घर ठहरे और ३० अक्टूबर सिन्धुनगर आश्रम

लौट आये।

कार्तिक उत्सव के सम्बन्ध में १ नवम्बर प्रातः पूज्य स्वामीजी ने कर्तिक कथा का आरम्भ किया। ९ नवम्बर तक प्रतिदिन प्रातः वे कार्तिक कथा के साथ-साथ श्री गुरुग्रन्थ साहब की वाणी की व्याख्या भी करते थे और नाम-अमृत पिलाते थे। ६ नवम्बर गोपाष्टमी के शुभ दिन प्रातः पूज्य स्वामीजी ने प्रचवन करते हुये गौ माता की महिमा का वर्णन किया। तत्पश्चात् पूज्य स्वामीजी, प्रेमियों और गौ माताओं के साथ राम नाम की धुनि लगाते हुए आश्रम से निकले और परिक्रमा देकर आश्रम लौट आए। सांय ४ बजे श्री राधेश्याम गौशाला में गोपाष्टमी का उत्सव पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में मनाया गया। गौशाला के मन्त्री नन्दीराम टहलराम ने गौशाला का कार्य विवरण प्रस्तुत किया। सन्त ब्रह्मदास ने गौ माता की महिमा गायी। डॉ. दयाल 'आशा' ने गौ सेवा के लिये दानदाताओं से अनुरोध किया। पूज्य स्वामीजी ने व्याख्यान करते हुये कहा कि गौ सेवा करना और उसकी रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है। गौ हमारी माता है, उसके साथ देश धर्म का नाता है। भगवान श्रीकृष्ण स्वयं गौ सेवा करते थे। उनके मन में गौ के प्रति इतनी श्रद्दा थी कि उन्होंने अपने लोक को अपना नाम न देकर 'गौ लोक' नाम दिया। प्रेमियो! आप भी श्रद्धा से गौ सेवा करें तो आपका कल्याण होगा।

७ नवम्बर रात्रि पूज्य स्वामीजी ने ब्राह्मण श्री नारायणदास के स्थान पर सत्संग प्रवचन किया। ९ नवम्बर कार्तिक एकादशी के पावन दिन प्रातः पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कार्तिक एकादशी का महत्व प्रतिपादित किया। हज़ारों प्रेमी पूज्य स्वामीजी के साथ राम नाम की धुनि लगाते श्मशान भूमि आये। वहां पूज्य स्वामीजी ने व्याख्यान करते हुए कहा कि गरीब हो या अमीर, सुन्दर हो या कुरूप, विद्वान हो या अनपढ़ सभी को एक दिन यहां आना है। एक दिन सभी की सुन्दर काया भस्म हो जायेगी। इसीलिए काल (मृत्यु) आने से पूर्व ही शुभ कर्म कर अपना जीवन सफल करें। शुभ कर्म करने में देरी न करें प्राणों पर कोई भरोसा नहीं है। युधिष्ठर के पास एक ब्राह्मण दान लेने आया। युधिष्ठर ने उससे कहा कि कल दान लेने

आना । ब्राह्मण लौटने लगा । द्वार पर भीम ने उससे पूछा कि तुम निराश क्यों हो? ब्राह्मण ने कहा कि युधिष्ठिर ने कहा है कि दान लेने कल आना । भीम ने यह सुनकर नगाड़ा बजाया । नगाड़े की आवाज़ सुनकर युधिष्ठिर बाहर आ गये । उसने भीम से नगाड़ा बजाने का कारण पूछा । भीम ने आदर सहित कहा- "आज आपने 'काल' पर विजय प्राप्त की है, इसलिए मैंने नगाड़ा बजाया । तब युधिष्ठिर ने कहा- "वह कैसे?" भीम ने कहा कि आपने ब्राह्मण को दान लेने के लिए कल बुलाया है, तो आपको यह भरोसा है कि आप कल जीवित रहेंगे? भीम का यह उत्तर सुनकर युधिष्ठिर शान्त हो गये । प्रेमियो ! काल का कुछ भरोसा नहीं । जो भी आप शुभ कार्य करना चाहते हैं, उसमें विलम्ब नहीं करें ।

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब ।

१० नवम्बर पूज्य स्वामीजी, स्वामी चन्दनप्रकाश स्वामी टेऊँराम मन्दिर पुना में पधारे । सायं वहां उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि प्रभु जो कुछ करता है, वह हमारी भलाई के लिये ही करता है। इसी लिए सदैव प्रसन्न रहें ।

जो कछु करै भलो सो जान । भूला काहे फिरौ अजान ।।

हमारा ज्ञान सीमित हैं, इसलिए यदि हमारे विचारों के प्रतिकूल कोई बात होती है, तो हमें शीघ्र ही क्रोध आ जाता है । परमात्मा जो कुछ करता है, उसमें कोई-न-कोई रहस्य होता है, उसकी हमें पूरी जानकारी नहीं रहती, इसलिए हम दुःखी होते हैं । प्रेमियो ! आप यदि आध्यात्मिक पथ पर प्रगति करना चाहते हैं तो प्रतिकूल परिस्थितियों में भी प्रसन्नचित्त रहें । यदि आपका चित्त प्रसन्न है तो आपका मन भगवद् भक्ति में लग सकता है । हम छोटी-छोटी बातों पर क्रोधित होकर स्वयं भी दुःखी होते हैं और दूसरों को भी दुःखी करते हैं । भोजन में यदि नमक अधिक है या मिर्च अधिक है, तो हम क्रोधित होते हैं । गाड़ी छूट जाती है, फिर भी दुःखी होते हैं । व्यवहार में कोई कहना नहीं मानता है, तो हम दुःखी होते हैं । इसलिए मन पर नियन्त्रण रखकर सदैव समभाव रहने का प्रयास करें । जो भी परिस्थिति हो उसमें आनन्दावस्था में रहें । उसमें ही आपका भला है ।

११ नवम्बर प्रात: पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि ठूँठ ने नाव से पूछा कि बहन तुम भी लकड़ी से बनी हो और मैं भी लकड़ी का हूँ, तुम पानी में तैरती हो और दूसरों को भी पार लगाती हो, दूसरों का बोझा भी उठाती हो, परन्तु मेरी यह दशा क्यों है कि कभी तैरता हूँ तो कभी डूबता हूँ? नाव ने उत्तर देते हुए कहा- "भाई ठूँठ ! तुम भी लकड़ी के हो मैं भी लकड़ी से बनी हुई हूँ किन्तु मुझे कारीगर (मिस्त्री) ने काट-छांटकर बनाया है, इसलिए मैं पानी मैं तैर सकती हूँ और दूसरों को भी पार लगाती हूँ और मुझे चलाने वाला भी नाविक है। प्रेमियो ! आप भी किसी परिपूर्ण गुरु या सन्त की शरण लें जो आपके जीवन को नया रूप प्रदान करेगा, तो फिर आप स्वयं भी संसार सागर से पार हो जायेंगे और दूसरों को भी पार लगा सकेंगे।

१२ नवम्बर सायं पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि यह कार्तिक का महीना बड़ा उत्तम महीना है। प्रात: जागकर नाम स्मरण करें। रात दिन आप लोग सांसारिक पदार्थों से मन बहलाते रहते हैं किन्तु ये सांसारिक पदार्थ क्षणभंगुर हैं, नश्वर हैं। नाम पदार्थ ही सत् पदार्थ है, इसलिए नाम से ही नाता जोड़ें। नाम पदार्थ आपको इस लोक एवं परलोक में सहायक होगा। सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज भी नाम की महिमा गाते हुए कहते है :

कलियुग में हरिनाम है, सब साधन का सार।
कह टेऊँ तिंह सुमरके, पाओ मोक्ष द्वार॥

१३ नवम्बर की प्रात: पूज्य स्वामीजी ने श्री गुरुनानकदेव जी महाराज के जीवन एवं वाणी का वर्णन करते हुए कहा कि गुरुनानक साहब सद्ग्रहस्थी होते हुए अनासक्त भाव से रहते थे। स्वयं अवतारी पुरुष होते हुए भी सदैव उनकी वृत्ति नाम से जुड़ी रहती थी। उन्होंने लोक कल्याण के लिए देश विदेश की यात्राएं की। एक बार जंगल में भाई मर्दाने को बहुत ही भूख लगी। उसने श्री गुरुनानकजी से कहा "मुझे बहुत भूख लगी है।" श्री गुरुनानकदेवजी महाराज ने कहा सामने अकऊए के पेड़ से फूल तोड़कर खाओं, किन्तु खाने में लालच नहीं करना। भाई मर्दाने ने आज्ञानुसार अकऊए के फूल खायें। साधारणत:

अकऊए के फूल कड़वे होते हैं । किन्तु गुरुनानकदेवजी महाराज की कृपा से मर्दाने को बहुत स्वादिष्ट लगे । मर्दाने ने लालचवश उस समय तो अकऊए के फूल अधिक खाए ही किन्तु दूसरे दिन भी उसी अकऊए के फूल तोड़कर खाये । दूसरे दिन जैसे ही उसने अकऊए के फूल खाए तो उसे पेट में इतना तो दर्द हुआ कि वह कराहने लगा। तब श्री गुरुनानकदेव ने उससे कहा "प्यारे ! मैंने पहले ही तुम्हें कहा था कि लालचवश इनका अधिक सेवन नहीं करना । जो लालच करता हैं, उस ऐसा परिणाम भुगतना पड़ता हैं ।" श्री गुरु नानकदेव ने फिर उसे अकऊए के पत्ते तोड़कर खिलाये, तब उसकी पीड़ा दूर हो गई। प्रेमियो ! सन्त महात्मा बार- बार आपको समझाते हैं कि सांसारिक पदार्थों की लालच नहीं करें । अगर लालच करेंगे तो पीड़ा सहन करनी पड़ेगी ।

जितनी खुशियां माण्या उत्ना भया रोग ।

भोग होते हैं रोग, इसलिए भोगों के पीछे अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ न गवाएं । श्री गुरुनानक देवजी महाराज की शिक्षा अपने जीवन में उतारें ।

सायं पूज्य स्वामीजी सिन्धुनगर लौट आए । संध्याकालीन सत्संग कार्यक्रम में उन्होंने श्री गुरुग्रन्थ साहब व श्री प्रेमप्रकाश ग्रन्थ के पाठों का समापन करते हुए श्री गुरुनानकदेवजी महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला। रात्रि को उन्होंने सिन्धुनगर, जय बाबा धाम एवं सरदार राजलसिंघ बठीजा के घर के प्रांगण में श्री गुरु नानकदेवजी महाराज की महिमा गाते हुए उनके जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग सुनाये।

स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मन्दिर सिन्धुनगर का ११वां वार्षिक उत्सव १ दिसम्बर से ५ दिसम्बर तक आयोजित किया गया । १ दिसम्बर प्रातः पूज्य स्वामीजी ने सन्तों के साथ धर्म ध्वजा फहराकर उत्सव का श्रीगणेश किया । दोपहर ३ बजे पूज्य स्वामीजी के नेतृत्व में राम नाम की धुन लगाता जलूस निकला, जिसमें भगवान और सत्गुरु महाराज की झांकियां थी । सायं पूज्य स्वामीजी एवं जलूस में सम्मिलित अन्य सन्त श्री मोटूमल खेराजमल चांडवाणी के घर के प्रांगण में पधारे। श्री मोटूमल चांडवाणी, उनकी पत्नी ईश्वरीबाई, सुपुत्र घनश्यामदास,

किशोरलाल चन्द्रलाल, भगवान एवं भाई दौलतराम खेराजमल चांडवाणी ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत सत्कार कर आशीर्वाद लिया।

रात्रि ८ बजे आश्रम में पूज्य स्वामीजी ने उत्सव में पधारे हुए सन्तों का स्वागत करते हुये सत्संग प्रवचन किया। चारों दिन प्रातः सन्तों महात्माओं ने अमृत वचनों की वर्षा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। ४ दिसम्बर प्रातः १० बजे सन्त समागम का आयोजन किया गया। पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा :

संतन चरन पधारिया, दया करे मम धाम।
कह टेऊँ पूरन भये, आज हमारे काम॥

आज हम सभी का सौभाग्य है कि यहाँ कई पूज्य सन्त साधु पधारे है। सन्त परमात्मा के प्रतिनिधि होते हैं। सन्तों का दर्शन भी परमात्मा का दर्शन समझें। आज आपको सन्तों के दर्शन और उनके प्रवचन श्रवण करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। ५ दिसम्बर प्रातः पूज्य स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि परमात्मा एवं सत्गुरु में पूर्ण विश्वास धारण कर उनका स्मरण करें तो आपके सभी कष्ट क्लेश मिट जायेंगे। सत्गुरु महाराज जी भी फरमाते हैं।

रे मन राखो राम में, पूर्ण तुम विश्वास।
कह टेऊँ विश्वास से, होवे सब दुख नास॥

विश्वास धारण करने वाले की सदैव विजय होती है। सन्तों, गुरुजनों एवं वृद्धों के वचनों में यदि विश्वास रखेंगे तो जीवन की नैया पार लग जायेगी। लंका के एक व्यक्ति को समुद्र पार कर भारत में आना था। भक्त विभीषण ने उसे छोटी सी वस्तु देते हुए कहा कि यह वस्तु वस्त्र में बांधकर तुम समुद्र में प्रवेश करो तो इसके सहारे तुम समुद्र पार कर भारत पहुंच जाओगे। इसमें इतनी शक्ति है कि तुम जल पर चल सकोगे, किन्तु इस वस्तु को खोलकर कभी नहीं देखना। यदि खोलकर देखोगे तो समुद्र में डूब जाओगे। उस व्यक्ति ने विभीषण की आज्ञानुसार वह वस्तु वस्त्र में बांधकर समुद्र में प्रवेश किया। वह समुद्र में ऐसे चल रहा था मानो वह पृथ्वी पर चल रहा है। थोड़े ही समय के पश्चात् समुद्र यात्रा पूरी कर भारत पहुंचने वाला

ही था तो उसके मन में विचार आया कि वह क्यों न उस वस्तु को खोलकर देखे जिसके सहारे उसने इतनी समुद्र यात्रा पूर्ण की है। "विनाश काले विपरीत बुद्धि।" उसने जैसे ही गांठ खोली तो उसमें एक छोटे कागज पर 'श्रीराम' 'श्रीराम' लिखा था। वह व्यक्ति उसी समय समुंद्र में डूब गया। उसने विभीषण की आज्ञा का पूरा पूरा पालन नहीं किया। यदि वह विभीषण के कहे अनुसार वह वस्तु खोलकर नहीं देखता तो, समुद्र पार कर भारत में आसानी से पहुंच जाता। प्रेमियों ! सन्तों, भक्तों, माता पिता, गुरुजनों वृद्धों की आज्ञा का पालन करेंगे तो आप भी संसार सागर से पार हो जायेंगे। प्रतिदिन कोई न कोई परोपकार सेवा का कार्य करें। आप दूसरों को सुखी करेंगे तो प्रभु आपको सुखी करेगा। शराब व मांस का परित्याग करें। पशु पक्षी भी प्रभु की सन्तान है, उन्हें प्यार दें। इस उत्सव में किसी भी सन्त या प्रेमी को कोई कष्ट हुआ हो तो मुझे क्षमा करें।

सन्त उद्धवदास ब्रह्मचारीजी ने बड़ौदा में गीता ज्ञान यज्ञ का आयोजन किया। उसी उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वमाजी ९ दिसम्बर बड़ौदा पधारे। प्रताप रामचंदाणी ने उनका स्वागत सत्कार किया। पूज्य स्वमीजी ने तीन दिन वहां श्रीमद् भगवद् गीता से सम्बन्धित विषयों पर ज्ञान गर्भित प्रवचन किये। अजमेर में पन्डित शीतलदास के परिवार ने गीता जयन्ती उत्सव का आयोजन किया। पूज्य स्वामीजी इस उत्सव के सम्बन्ध में १३ दिसम्बर अजमेर पधारे। उन्होंने वहां गीता के कर्म योग की महत्ता प्रतिपादित करते हुए मार्ग दर्शन किया। उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि शुभ कर्म करने में ही जीवन की सार्थकता है। किसी भी वस्तु का आप यदि उपयोग नहीं करेंगे तो वह खराब हो जायेगी। जिन लोगों का भी जगत् में नाम है, वे कर्म योगी थे, कर्म शील थे। उन्होंने सत्कर्म करते कितने ही कष्ट झेलें, इस कारण आज अमर हैं। कर्म करना आपका कर्तव्य है, आप जीवन में कर्तव्य विभूढ़ न हों। श्रीमद् भगवद् गीता की शिक्षाओं को जीवन में उतारें।

प्रेमियो ! श्रद्धा व विश्वास से भगवान की मूर्तियों की पूजा उपासना करें, उन्हें पत्थर की मूर्ति न समझकर साक्षात् भगवद् रूप समझकर

उनका ध्यान व पूजा करेंगे तो आपको अवश्य ही उसका फल मिलेगा। एक भक्त नामदेव को कोन्तल गांव जाना था । वह अकेला था । रास्ते में चलते चलते दो रास्ते आये, कौन सा रास्ता कोन्तल जायेगा, इसकी जानकारी उसे नहीं थी और उस समय उस रास्ते से आने जाने वाला कोई व्यक्ति भी दिखाई नहीं दिया । वहाँ रास्ते पर भगवान की एक छोटी सी मूर्ति स्थापित थी । सन्त नामदेव ने विश्वास धारण कर भगवान की मूर्ति से पूछा कि कौन सा रास्ता कोन्तल जायेगा? भगवान की मूर्ति ने हाथ से कोन्तल जाने वाले रास्ते की ओर संकेत किया। नामदेव उस रास्ते से आगे चलकर कोन्तल पहुंच गया। सन्त नामदेव ने भगवान की मूर्ति को चेतन समझकर रास्ता पूछा। भावना की विजय होती है। प्रेमियो ! आप भी परमात्मा या सत्गुरु की मूर्तियों को साक्षात् समझकर प्रार्थना करें तो प्रभु अवश्य आपको भावना का फल देगा।

१६ दिसम्बर प्रातः पूज्य स्वामीजी कुबेरनगर, अहमदाबाद पधारे। उन्होंने महात्मा गांधी हाई स्कूल के प्राथमिक शाला के नये भवन की नींव रखी । श्री थांवरदास खूबचन्दाणी ने उनका स्वागत किया । पूज्य स्वामीजी ने विद्या मन्दिर के निर्माण कार्य के लिए पच्चीस हजार रुपये दिए । उन्होंने प्रचवन करते हुए कहा कि विद्या उत्तम दान है । विद्या मन्दिर ज्ञान के केन्द्र हैं । यहां से हज़ारों विद्यार्थी विद्या ग्रहण कर अपना भविष्य उज्जवल करेंगे । कार्यकर्ताओं को उनकी सेवा के लिए धन्यवाद है ।

सन्त प्रभाराम सोसाइटी, कुबेर नगर में सन्त प्रभारामजी का पुण्य तिथि उत्सव मनाया गया । इस उत्सव के उपलक्ष्य में पूज्य स्वामी जी ने वहां १६ दिसम्बर से १८ दिसम्बर तक सत्संग प्रवचन किया। उन्होंने सन्त प्रभारामजी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सन्त प्रभाराम सद्गृहस्थी थे । दिन को धन्धा- व्यवसाय कर रात्रि में अपने गुरु की सेवा करते थे और साथ-साथ नाम स्मरण भी करते थे । नाम स्मरण करते करते वे स्वयं सन्त बन गये । प्रेमियो ! आप भी नाम को नहीं भूलें और प्रतिदिन कोई-न-कोई सेवा का कार्य करें ।

२० दिसम्बर पूज्य स्वामीजी गोधरा पधारे । वहां उन्होंने तीन दिन अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियो की प्यास पूरी की । २३ दिसम्बर

वे हथीन जिला फरीदाबाद पधारे । २४ दिसम्बर उन्होंने वहां मूर्तियों की स्थापना की । इस अवसर पर उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि इन मूर्तियों को आप पत्थर की मूर्तियां नहीं समझें । अब इनकी प्राण प्रतिष्ठा हुई है । इन्हें साक्षात् स्वरूप समझें । इनमें विश्वास रखकर इनकी पूजा उपासना करेंगे तो आपकी आशाएं पूर्ण होंगी । यहां नियमित रूप से आकर सत्संगका लाभ प्राप्त करें । नाम स्मरण से ही आपका कल्याण होगा । पूज्य स्वामीजी ने २८ दिसम्बर तक वहां विभिन्न विषयों पर प्रवचन करते हुए प्रेमियों का मार्ग दर्शन किया ।

भाई मेहरसिंह अतुरसिंह ने साधु वास्वाणी नगर, थाना में श्री गुरु गोबिन्दसिंह जी महाराज का जन्म दिवस मनाया । ३ जनवरी १९९० रात्रि को वहां पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि श्री गुरु गोबिन्दसिंहजी महाराज भक्ति व शक्ति की प्रतिमूर्ति थे । उन्होंने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए अपने बच्चों का बलिदान दिया । आज भारत को ऐसे वीर पुरुषों की अत्यन्त आवश्यकता है, जो राष्ट्र की, हिन्दू धर्म की रक्षा करें ।

५ जनवरी से ७ जनवरी १९९० तक स्वामी टेऊंराम प्रेम प्रकाश आश्रम पर अखिल भारतीय सिन्धी सन्त सम्मेलन का आयोजन किया गया । इस सम्मेलन में भारत के विभिन्न नगरों से तीन सौ सन्त पधारे। पूज्य सतुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज स्वागत अध्यक्ष थे । उन्होंने ही सम्मेलन की समूची व्यवस्था की थी । पूज्य स्वामीजी ने सन्तों का स्वागत करते हुए कहा कि आज हमारा सौभाग्य है कि यहां देश-विदेश से सन्त पधारे हैं, जिनका एक साथ दर्शन होना सम्भव नहीं, हमें घर बैठे इतने सन्तों का दर्शन हुआ है और उनके अमूल्य वचन श्रवण करने का अवसर भी मिला । सन्त प्रभु के प्रतिनिधि होते हैं । सन्त युगदृष्टा भी हैं तो युगसृष्टा भी हैं । वे चाहें तो समाज की काया पलट सकते हैं ।

सम्मेलन के तीनों दिन पूज्य स्वामीजी, स्वामी तुलसीदास जी महाराज (गांधीधाम), स्वामी मेहरदास (अलखधाम), सांई आत्माराम साहब (सांई वसणशाह स्थान), स्वामी नारायणदास (अमरधाम), स्वामी सन्तोषदास, स्वामी साधूराम, स्वामी क्षमादास, सन्त रूपाराम, सन्त

देवप्रकाश, सन्त अनन्तप्रकाश, सन्त ब्रह्मदास, सन्त वेदप्रकाश एवं अन्य सन्तों ने अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की।

७ जनवरी पूज्य स्वामीजी ने पधारे हुए सभी सन्तों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि सन्त समाज के संरक्षक हैं। संतों को न केवल आध्यात्मिक मार्गदर्शन करना चाहिए वरन् व्यवहार के लिए भी मार्गदर्शन करना चाहिए। आप समाजिक बुराइयों को भी दूर करने के प्रयास करें। सन्तों से मेरा सविनय अनुरोध है कि आप धार्मिक विद्या का प्रचार व प्रसार करें। सन्तों के आने से यह आश्रम स्वर्ग सम बन गया है। सन्तों की सेवा में यदि कोई कमी रह गई हो, तो कृपया मुझे क्षमा करें। राष्ट्र की रक्षा के लिये भी सन्त प्रयत्न करें। राष्ट्र की रक्षा हमारी रक्षा है। आप अपनी आध्यात्मिक शक्ति एव प्रचवनों द्वारा समाज व देश का कल्याण करें, शान्ति का वातावरण पैदा करें।

७ जनवरी सायं स्वामी टेऊंराम आश्रम में पूज्य स्वामीजी की प्रेरणा से सामूहिक विवाह का आयोजन किया गया। पूज्य स्वामीजी ने वर-वधुओं को आशीर्वाद देते हुये कहा कि आज से आपका नया जीवन प्रारम्भ हुआ है। आप गृहस्थ जीवन में प्रेम, शान्ति, एकता, सहनशीलता आदि गुणों को अपनाएं तो जीवन सुखमय होगा। घरों में माता-पिता एवं वृद्धों की सेवा करें, उन्हें सम्मान दें। डॉ. दयाल 'आशा' ने कहा कि पूज्य स्वामीजी के आशीर्वाद से विभिन्न स्थानों पर सामूहिक विवाहों का आयोजन किया जाता है। यह सामाजिक क्रान्ति है। आडम्बर रहित विवाह आयोजित किये जाते हैं। इस अवसर पर स्वामी क्षमादास, स्वामी नारायणदास, सन्त ब्रह्मदास ने वर-वधुओं को आशीर्वाद दिया।

९ जनवरी पूज्य स्वामीजी भोपाल पधारे। वे पहले बैरागढ़ में स्वामी हरिदासराम साहब के स्थान पर आए। उनसे मिलकर ज्ञान गोष्ठी की। पूज्य स्वामीजी के स्वागत में शोभा-यात्रा निकाली गई। पूज्य स्वामीजी ने स्वामी टेऊंराम मन्दिर में धर्म-ध्वजा फहराकर उत्सव आरम्भ किया। सायं ४ बजे भोपाल में स्वामी अटलराम धर्मशालां में पूज्य स्वामीजी के सत्संग प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया। बहन विद्या, मूलचन्द मनवाणी एवं मिर्चूमल ने स्वामीजी का स्वागत-सत्कार किया। डॉ. दयाल 'आशा'

ने भक्ति संगीत गाते हुए कवि खीअलदास बेगवाणी 'फानी' के साहित्यिक योगदान का वर्णन किया। पूज्य स्वामीजी ने कवि 'फानी' को आशीर्वाद देते हुए शाल भेंट की। पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आजकल अधिकांश लोग असत्य बोलते हैं, असत्य बोलने से आत्मिक शक्ति कम होती है। हमारे सभी ऋषि मुनियों ने यही आदेश दिया- "सत्यं वद" सत्य बोले, सत्य का व्यवहार करो, सत्य के मार्ग पर चलने से परमात्मा भी प्रसन्न होता हैं। जो मनुष्य मन, वचन व कर्म से सदैव सत्य बोलता है, वह दूसरे के मन की भावनाओं को भांप सकता है। न केवल इतना, कौन सी वस्तु कहां छिपी है? उसे भी जान सकता है। एक बार भक्त राका पत्नी सहित वैराग्यवृत्ति धारण कर वन में जा रहा था। मार्ग में भक्त राका ने स्वर्ण (सोना) के टुकड़े को देखकर उस पर मिटी डाली। जिससे उसकी पत्नी सोने को देखकर मोहित न हो जाय क्योंकि माया प्रबल होती है। इतने में उसकी पत्नी वहां आ पहुँची और उसने पूछा कि आप क्या कर रहे हैं? मिट्टी पर मिट्टी डाल रह हैं। आप मुझ से क्या छुपा रहे हैं। मुझे पृथ्वी पर पड़ी हुई वस्तु की पहचान आती है। यह सुनकर राका ने पत्नी से कहाकि वैराग्य वृति में तुम मुझसे कहीं आगे हो।

१० जनवरी प्रातः बैरागढ़ में प्रेम प्रकाश मन्दिर के निर्माण के लिए भूमि पूजा एवं नींव रखने का उत्सव आयोजित किया गया। पूज्य स्वामीजी ने मध्य प्रदेश के मन्त्री श्री कन्हैयालाल शर्मा के साथ मन्दिर निर्माण के लिये नींव रखी। मूलचन्द मनवाणी ने पूज्य स्वामीजी एवं मन्त्री महोदय का स्वागत किया। श्री कन्हैयालाल शर्मा ने भाषण करते हुए कहा कि आज मेरा सौभाग्य है, कि मुझे महान मूर्ति पूज्य स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के दर्शन एवं आशीर्वाद लेने का अवसर मिला है। डॉ. दयाल 'आशा' ने दानदाताओं से इस शुभ कार्य में योगदान के लिये अनुरोध किया। पूज्य स्वामीजी ने मन्दिर निर्माण के लिये एक लाख रुपये दिये और अन्य प्रेमियों ने भी दान देने की घोषणा की।

पूज्य स्वामीजी ने मन्त्री महोदय, मूलचन्द मनवाणी, डॉ. डांदवाणी, बहन विद्या, मिर्चूमल, सोभामल, गोप, कन्हैयालाल एवं अन्य प्रेमियों

बहन विद्या, मिर्चूमल, सोभामल, गोप, कन्हैयालाल एवं अन्य प्रेमियों को धन्यवाद देते हुए कहा कि बैरागढ़ में आप यह सत्गुरु महाराज का मन्दिर बनायेंगे तो सत्गुरु महाराज फिर आपके मकान बनायेंगे। ये मन्दिर भक्ति के केन्द्र हैं। यहां कई प्रेमी आकर सत्संग का लाभ उठायेंगे। प्रेमियो ! प्रभु के लिए प्यास उत्पन्न करें। सांसारिक सम्बन्धियों के प्रति आपको कितना लगाव और मोह होता है, ऐसा लगाव व प्रेम आप यदि परमात्मा के प्रति रखें तो आपका कल्याण होगा।

कर्मवती, खंडेले के राज-पुरोहित परशुराम की सुपुत्री थी। उसके मन में भगवान श्रीकृष्ण के प्रति अटूट प्रेम था। इसलिये उसने विवाह करने से इन्कार कर दिया। उसके पिता ने उसका जबरदस्ती विवाह कर दिया। उसके ससुराल वाले नास्तिक थे। जब वह अपने मायके आई तब उसने फिर ससुराल जाना ठीक नहीं समझा। उसने मन ही मन वृन्दावन जाने का विचार किया। एक रात्रि जब परिवार के सभी सदस्य नींद में सोये हुए थे, वह अर्द्धरात्रि को अकेली घर से निकल कर वृन्दावन की ओर चल पड़ी। वह 'जय श्रीकृष्ण', 'जय श्रीकृष्ण' उच्चारण करती साहस बांधकर दौड़कर चली। इधर प्रातः परिवारजनों ने देखा कि कर्मवती घर पर नहीं है। तब परशुराम राजा से सिपाहियों की सहायता लेकर सुपुत्री की खोज में निकला। अपने पीछे घोड़ों के आने की आवाज़ सुनकर कर्मवती एक मृत ऊँट की खाल में छिप गई। सिपाहियों का इस ओर ध्यान ही नहीं गया क्योंकि उधर से दुर्गंध आ रही थी। सिपाही एवं परशुराम निराश होकर लौट आए। तत्पश्चात् कर्मवंती ऊँट की खाल से बाहर निकलकर पुनः वृन्दावन की ओर आगे बढ़ी। चौथे दिन वह वृन्दावन पहुँच गई। वहां वह भगवान श्री बांकेबिहारी का दर्शन कर फूली नहीं समाई। फिर तो उसने सारा जीवन वहां भगवान श्रीकृष्ण के पावन श्रीचरणों में समर्पित कर दिया। प्रेमियो ! आप भी भगवान श्री श्यामसुन्दर के श्रीचरणों में स्वयं को समर्पित करें। आप भी यदि श्री बांकेबिहारी के दर्शन करना चाहते हैं तो वैराग्यवृत्ति धारण करें। प्रेम से प्रभु को पुकारें तो अवश्य ही किसी-न-किसी दिन प्रभु आपको दर्शन देंगे।

११ जनवरी पूज्य स्वामीजी खंडवा पधारे। श्री भगवानदास एवं

अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। वहां पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि सन्तों के प्रेमियों को, या किसी भी प्राणी को सताना ठीक नहीं, उसका परिणाम दुख भुगतना पड़ेगा। संत फरीद कहते हैं कि कख (तिनके) को भी सताना नहीं चाहिए यदि वह उड़कर आपकी आंख में चला जाय तो आपको कष्ट देगा। सन्त दयालदास के आश्रम के बाहर एक मृग रहता था। एक मुगल, मृग का शिकार करने के लिए वहां अपना पालतू चीता लेकर आया। सन्त दयाल ने उसे समझाया कि मृग का शिकार मत करो। मुगल ने मनमानी कर चीते को छोड़ दिया। चीता जैसे ही मृग को मारने हेतु उसके समीप आया मृग ने उसे ऐसी जगह पर सींग मारा कि चीता बेहोश होकर गिर पड़ा और मर गया। यह देखकर वह मुगल बहुत दुखी हुआ और उसने महसूस किया कि उसने सन्त की आज्ञा के विपरीत काम किया इसलिए चीता मर गया। कहां मृग कहां चीता! सन्त की कृपा से ही मृग, चीते को मार सका। वह मुगल सन्त दयालदास के चरणों पर गिर पड़ा। प्रेमियों ! घर में, परिवार में, व्यवहार में माता पिता सन्त एवं वृद्धों की आज्ञा का पालन करें। सन्त आपके यहां आये हैं नाम जपाने के लिए। प्रभु का सदैव स्मरण करते रहें। जो प्रभु से विमुख है, उन्हें कष्ट झेलने पड़ते हैं।

पन्डित हरेश भारद्वाज ने साधु वास्वाणी बाग सिन्धुनगर-१ में ७ जनवरी से १७ जनवरी श्री सहस्त्र चंडी महायज्ञ का आयोजन किया, १२ जनवरी सायं पूज्य स्वामीजी ने वहां प्रवचन करते हुए कहा कि हवन यज्ञ करना हमारी प्राचीन परम्परा है। हवन यज्ञ द्वारा जहाँ देवतागण प्रसन्न होते हैं तो विश्व का भी कल्याण होता है। इसके द्वारा कई रोगों का उपचार भी हो जाता हैं और वातावरण भी शुद्ध होता है। आजकल हवन, यज्ञ करने की अत्यंत आवश्यकता है। आजकल कारखाने इतने बढ़ गए हैं कि वायु दूषित हो रही हैं, उसे शुद्ध करने के लिए हमें हवन यज्ञ करना चाहिए। हवन यज्ञ के कारण वर्षा भी अच्छी होती है। पन्डित हरेश कुमार, उद्धाराम सन्तोषी एवं अन्य आयोजकों को इस हवन यज्ञ आयोजन के लिए साधुवाद है।

१३ जनवरी पूज्य स्वामीजी ने दयावन्ती टीकमदास हाल में सत्संग प्रवचन किया। चेम्बूर, कालोनी में युवक मण्डल की ओर से गूंगे बहरे बच्चों की उन्नति के लिए स्कूल खोला गया। जिसका नाम रोचीराम टी. थधाणी स्कूल फार हैंडीकैप्ड रखा गया। १४ जनवरी ११ बजे पूज्य स्वामीजी ने उस स्कूल का उद्घाटन करते हुए इस संस्था के अध्यक्ष श्री हशू आडवाणी, श्री झमटमल वाधवाणी एवं अन्य आयोजकों को साधुवाद देते हुए कहा कि अपाहिज बच्चों की सेवा एक अत्यन्त उतम कार्य है। इस प्रकार के स्कूल का निर्माण कर आप कई अपाहिज बच्चों का भविष्य उज्जवल कर सकते हैं। ये बालक प्रभु के रूप हैं। ऐसे सेवा कार्यों की ज्योति जगाते रहें। परमात्मा एवं सन्तों का आशीर्वाद सदैव आपके साथ है।

प्रेमियों के निमन्त्रण पर पूज्य स्वामीजी १८ जनवरी कलकत्ता पधारे। वे वहां श्री ठाकुरदास पंजाबी के घर ठहरे। उन्होंने वहाँ दस दिन विभिन्न स्थानों पर अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। एक दिन उन्होंने वहां सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि कुकर्मों से किनारा करें। राजा हो या रंक, स्त्री हो या पुरुष, सभी को अपने अपने कर्मों का परिणाम भुगतना पड़ेगा। कर्मों के अनुसार ही जीव को फल मिलता है। आप सदैव शुभ कर्म करें। मन वचन व कर्म से सभी का भला करें। सत्गुरु महाराज जी भी यह शिक्षा देते हुए कहते हैं।

बुरा किसी का ना करो, सब का भला विचार।
टेऊँ बुराई जो करे, तांका कर उपकार॥

जीव जैसा कर्म करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है। शुभ कर्मों का फल सुख मिलता है और दुष्कर्मो का परिणाम दुख भुगतना पड़ता है। कुछ लोग कहते है कि कर्म कुछ नहीं, सबसे अधिक मनुष्य का दिमाग हैं। मनुष्य अपने ज्ञान द्वारा सब कुछ कर सकता हैं। परन्तु शास्त्र कहते हैं कि मनुष्य अपने कर्मों के अनुसार दुख सुख भोगता है। केवल इस जन्म के कर्म नहीं किन्तु पूर्व जन्मों के कर्मो का भी लेखा-जोखा चलता रहता हैं, उसके अनुकूल ही जीवन को सुख दुख भुगतना पड़ता हैं। मनुष्य के वश में कुछ नहीं। कुछ लोग

इस जन्म में बुरे काम करते हुए भी सुखमय जीवन बिता रहे हैं तो कुछ लोग इस जन्म में शुभ कर्म करने के पश्चात् भी कष्ट झेल रहे हैं। यह कई जन्मों के कर्मों का परिणाम ही हैं।

एक राजा के पुत्र का विवाह हुआ। वर वधु की डोली राजनगरी में आ रही थी। किसी ज्योतिषी ने राजा से कहा कि इस समय वर वधु का गृह प्रवेश ठीक नहीं। वे आज रात नगर के बाहर ही ठहरें। राजनगरी के बाहर एक मन्दिर था। राजा ने उस मन्दिर के कमरों में ठहरने की व्यवस्था की। वर- वधु को एक कमरा दिया गया और मित्र सम्बन्धी दूसरे कमरों में ठहरे। दूल्हा बहुत थका हुआ था अत: उसे शीघ्र ही नींद आ गई। वधु की इच्छा थी कि वह अपने नवविवाहित पति से बातचीत करें किन्तु संकोचवश उसने उसे जगाया नहीं। राजकुमार के सिरहाने एक तलवार पड़ी थी जिसके हत्थे पर सुन्दर हीरे जवाहरात लगे हुए थे। पत्नी ने हीरे जवाहरातोंको देखने के लिए तलवार उठाई, जैसे ही वह हीरे जवाहरातों को देख रही थी तो वह तलवार अचानक उसके हाथ से छूटकर उसके पति के गर्दन पर जा पड़ी। अत: राजकुमार घायल होकर वहीं मर गया। प्रभु की इच्छा यही थी। भावी बड़ी बलवान होती हैं। ईश्वर के आगे किसीकी नहीं चलती। पति की यह दशा देखकर विचारी वधु भी बेहोश होकर गिर पड़ी। वह कुछ समय पश्चात् जब होश में आई तो सोचने लगी कि लोग क्या कहेंगे कि यह वधु अभागिन थी, सुहागरात को ही विधवा बन गई ! सुबह हुई, दासियों ने दरवाजा खोला तो यह दृश्य देखकर आश्चर्य एवं दुख में पड़ गई। चारों ओर हाहाकार मच गया, राजा रानी एवं मन्त्री आ गए, वधु भी बेहोश पड़ी थी। सभी ने यही अन्दाज़ लगाया कि मन्दिर के महन्त ने इस वधु पर मोहित होकर यह कुकर्म किया है। राजा एवं मन्त्री ने महंत को धमकाते हुए कहा कि सच-सच कहो कि यह कुकर्म किसने किया है? महंत ने कहा राजन् "मुझे कुछ भी पता नहीं।" महंत के इस उत्तर पर किसी को भी विश्वास नहीं हुआ। राजा ने आदेश दिया कि महंत के दोनों हाथ काट दिये जायें।

यद्यपि महन्त निर्दोष था, फिर भी कुछ कर नहीं सकता था। राजा के आदेशानुसार उसके दोनों हाथ काट दिए गये। महन्त इस घटना को प्रभु की इच्छा मानकर विचार करने लगा कि यह क्या अत्याचार है। एक तो मैंने उन्हें मन्दिर के कमरे ठहरने के लिये दिये और उधर बिना किसी दोष के कारण मेरे हाथ भी कटवाये गये। महंत बिचारा शर्म का मारा, वह नगर छोड़कर काशी चला गया। वहां उसने किसी प्रवीण ज्योतिषी की खोज की। वह ज्योतिषी के घर आया। घर में उसकी पत्नी बैठी थी। महन्त ने पूछा- "ज्योतिषी महाराज कहाँ हैं?" पत्नी कोधित होकर बोली- "मुझे क्या पता वह कहां धक्के खाता फिरता है?" ज्योतिषी की पत्नि के मुख से ठीक से उत्तर न मिलने के कारण वह निराश हुआ और आश्चर्य में पड़ गया कि वह अपने पण्डित पति के लिए कैसे अपशब्द बोल रही है। महंत को बाद में पता चला कि वह ज्योतिषी नदी के घाट पर बैठा है। अतः वह वहां गया। महन्त ने देखा कि यह ज्योतिषी शांत स्वभाव का है और उसकी पत्नी तो अग्नि के समान गर्म थी। पण्डित ने महन्त से पूछा कि आपका यहां कैसे आना हुआ? महन्त ने कहा कि मैं तो आपके पास अपने बारे में पूछने आया हूँ किन्तु पहले आप अपना हाल तो सुनाएँ कि आपकी पत्नी का स्वभाव क्रोधी क्यों है? क्या आप उसे शिक्षा नहीं दे सकते?

पण्डित ने कहा- "यह सब कर्मों का फल है। कर्मफल ज्ञानवान्, राजा-रंक, पण्डित सभी को भुगतना पड़ता है।" महन्त ने फिर शंका की। पण्डित ने कहा कि यह मेरी पत्नी पूर्वजन्म में गधी थी और उसकी पीठ पर बहुत ज़ख़्म थे। मैं कौआ था और स्वभाव के कारण बार-बार उसके ज़ख़्मों को चोंच मारता था। एक दिन मेरी चोंच उसकी हड्डी में फँस गई और निकल नहीं सकी। वह तड़पती-तड़पती गंगा नदी में जाकर गिरी, मैं भी उसके साथ था। दोनों गंगाजी में डूब गये और दोनों की मृत्यु हो गई। गंगा मैया की कृपा के कारण इस जन्म में मैं पण्डित और वह पण्डिताइन हुई। पूर्व जन्म में मैंने उसे चोंच मारकर दुखी किया था अब इस जन्म में मुझे वह अपनी जिव्हा द्वारा अपशब्द बोलकर दुखी कर रही है। यह सब कर्मों का फल है इसमें किसी का दोष नहीं।

महंत ने फिर अपनी व्यथा ज्योतिषी को बताई और उसका कारण पूछा कि निर्दोष होते हुए भी उसके दोनों हाथ क्यों कटवाये गए? पण्डित ने कहा "आप पूर्व जन्म में ब्रह्मचारी थे, एक दिन नदी के किनारे गायत्री मन्त्र का जाप कर रहे थे, उस समय एक गाय वहां से जा रही थी। उसके पीछे एक कसाई था। कसाई ने आपसे पूछा कि गाय किस ओर गई? आपने कसाई को हाथों से संकेत किया कि गाय अमुक ओर गई है। आपका संकेत मिलते ही कसाई ने उस गाय को पकड़ कर मार डाला। उस गौ हत्या का फल आपको भुगतना पड़ा है। कसाई ने राजकुमार का जन्म लिया, और उसकी नव विवाहित वधु ही गाय थी। गाय को प्रतिशोध लेना था उसने राजकुमार से प्रतिशोध लिया। आप ने गाय के लिये हाथों से संकेत किया था, इस कारण आपके हाथ कटवाये गये।

प्रेमियो ! कर्मों का फल सभी को भुगतना पड़ता है। आप न केवल बुरा कर्म किन्तु बुरा संकल्प, बुरा विचार भी नहीं करें। अन्यथा उसका दुष्परिणाम भी आपको भुगतना पड़ेगा।

२७ जनवरी पूज्य स्वामीजी ने कलकत्ता में अन्तिम प्रवचन करते हुए कहा कि आप लोगों ने जो स्नेह दिया है, सेवा की है, उसके लिए आपको धन्यवाद है। सन्त आपको जागृत कर नाम स्मरण करने की याद दिलाने आए हैं। आप अपना कामकाज करते हुए प्रभु को न भूलें। मनुष्य जीवन बार बार नहीं मिलेगा। अपने अमूल्य श्वास, नाम स्मरण एवं शुभ कर्मों में सफल करें। सत्गुरु महाराज जी भी फरमाते हैं।

कह टेऊँ हरि नाम जप, भूलो ना क्षण एक।
भोगत भोगत विषय रस, बीते जन्म अनेक॥

एकांत में बैठकर अपने मन से पूछें कि संसार में आकर आपने कौन कौन से कार्य किये है। 'ए शरीरा इस जग में आकर क्या तुध कर्म कमाया' जिस कार्य के लिए प्रभु ने आपको इस जगत् में भेजा है, जो वस्तुएं आपको परलोक के लिए खरीदनी हैं, वे वस्तुएं आपको सन्तों के यहां ही मिलेंगी।

'जिस वखर को लेन तू आया, राम नाम संतन घर पाया'

नाम स्मरण के साथ-साथ प्रतिदिन कोई न कोई सेवा का काम भी करें। आप दूसरों का उपकार करेंगे तो प्रभु आपका उपकार करेगा।

२९ जनवरी पूज्य स्वामीजी रायगढ़ पधारे। वहां दीपचंद रोहड़ा एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। उन्होंने वहां दो दिन सत्संग प्रवचन किए। एक दिन प्रवचन करते हुए पूज्य स्वामीजी ने कहा कि अपना अमूल्य जीवन मोह के चक्कर में व्यर्थ न गँवायें। सन्तान व धन पदार्थों के मोह में आप कितने ही जन्म भटके हैं। अब इस जन्म में नाम स्मरण करें और जीवन में दया की ज्योति जगाएं जगत् में अनासक्त भाव से रहें। एक प्रभु से ही प्रेम का नाता जोड़े और संसार में उस एक ब्रह्म का दर्शन करें तो फिर आप आनन्द का अनुभव करेंगे।

कभी भी अपनी गलतियों के कारण मन में ग्लानि होती है और मन में वैराग्य वृत्ति उत्पन्न होती है। वाजीन्द एक बार शिकार करने गया। उसने शिकार करते हुये एक गर्भवती हिरनी को तीर मारा। बिचारी हिरनी व्यथित होकर गिर पड़ी और गर्भ से उसका बच्चा भी नीचे गिर पड़ा। यह दृश्य देखकर वाजीन्द का दिल पिघल गया, उसके मन में दया भावना पैदा हुई। वह अपनी गलती पर पश्चात्ताप करने लगा और उसके मन में वैराग्य वृत्ति पैदा हुई। उसने उसी समय ही अपना धनुष बाण तोड़कर फेंक दिया। उसने भोगमय जीवन का त्याग कर दिया और वह सन्त दादू की शरण में आया। उसने सन्त दादू से गुरुमन्त्र की दीक्षा लेकर उसकी साधना की। नाम की साधना करते करते वाजीन्द स्वयं सन्त बन गया। प्रेमियो ! आप भी किसी न किसी संत महात्मा की शरण लें जो आपका मार्गदर्शन करे। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भी फरमाते हैं:

जो जन गुरु की शरण ले, सुमरे हरि का नाम।
तांको माया ना लगे कहता टेऊँराम॥

१ फरवरी को पूज्य स्वामीजी कोरबा पधारे। वहां माता पम्मी एवं परमेश्वरी, (प्रेम प्रकाश मन्दिर की व्यवस्थापिकाओं) ने स्वागत सत्कार किया। पूज्य स्वामीजी ने वहां प्रवचन करते हुए कहा कि प्रेमियो! आप प्रतिदिन यहां आकर नाम कीर्तन करते हैं, इसलिए आप सभी

को धन्यवाद है।

जीवन की सार्थकता नाम स्मरण एवं सेवा में हैं। इन दोनों बातों को आप यदि अपने जीवन में अपनायेंगे तो आपका इस जगत् में जन्म लेना सफल होगा और आपका भविष्य भी उज्जवल होगा।

'इह लोक सुहेला परलोक सुहेला'

मैं मुलुन्द, बम्बई में प्रवचन कर रहा था, तब मास्टर ध्यानदास वास्वाणी ने शंका की कि आप कहते हैं कि भगवान सर्वव्यापी है तो लोग आपकी पूजा क्यों करते हैं और सम्मान देते हैं? हमारी पूजा नहीं होती! हम भी तो भगवद् रूप हैं! कृपया इस शंका का समाधान करें। मैंने कहा 'जल सर्वत्र व्यापक है। धरती के नीचे भी जल ही जल है, परन्तु जहां जल प्रकट होता है, अर्थात् जहां नदी या समुद्र है वहां ही जल की पूजा उपासना होती है। वैसे ही परमात्मा संतों के रूप में प्रकट होता है। आप सभी में भी वह ब्रह्म ही व्यापक है। इसलिए सन्तों की पूजा होती है। जिसने भक्ति साधना कर साक्षात्कार किया है। उसकी भक्ति होती है। आप भी भक्ति साधना करें तो आपका भी यश होगा, पूजा होगी किन्तु भक्त अपनी महिमा के लिए या उनकी पूजा की जाय, इसलिये भगवद् भजन नहीं करते। वे तो सर्वस्व प्रभु के कमल चरणों में समर्पित करते हैं। आप भी निष्काम भावना से भगवद् भजन करें तो आप यशस्वी होंगे।

२ फरवरी पूज्य स्वामीजी ने चापा में सत्संग प्रवचन किया। ३ फरवरी आप भाटापारा पधारे। बहिन मोहनी करतारलाल, विद्या ठारुमल माखीजा एवं अन्य प्रेमी वहां प्रेम प्रकाश मन्दिर की सेवा करते हैं। वहां पूज्य स्वामीजी ने तीन दिन अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। उन्होंने प्रवचन करते हुये कहा कि सन्तों का संग करने से आपको राम का रंग लगेगा और राम-रंग में रंगकर लाल हो जायेंगे। सतुगुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज भी फरमाते हैं।

टेऊँ जेते कर्म शुभ लिखे वेद के मांहि ॥

साधु संग गुरु नाम सम और कर्म को नाँहि ॥

एक बार श्री गुरुनानकदेवजी महाराज कहीं जा रहे थे, उसी समय एक माता अपने बेटे को 'मरंदा मरंदा' नाम से पुकार रही थी। श्री

गुरु महाराज ने उस माता से पूछा कि तुम अपने बेटे को 'मरंदा' नाम से क्यों पुकार रही हो? तब उस माता ने उत्तर दिया "इसके पहले मुझे जितने भी बच्चे हुए हैं, वे थोड़े थोड़े समय के बाद मर जाते थे। इसलिये इस बालक को मैं 'मरंदा' नाम से पुकारती हूँ, जिससे इसे किसी की नज़र नहीं लगे। यह मेरा इकलौता बेटा है। इस पर श्री गुरुनानकदेवजी ने कहा "माता ! यह बालक मरेगा नहीं, सदैव अमर रहेगा। आज से इसे मरंदा नहीं 'मर्दाना' कह कर पुकारें। भविष्य में यह प्रसिद्ध रबाबी (एक प्रकार का वाद्य यन्त्र "रबाब" बजाने वाला) बनेगा और सन्तों के संग में अमर हो जायेगा।" आगे चलकर वही मर्दाना श्री गुरु नानकदेवजी महाराज के संग में आया और उनके साथ रबाब बजाते, यात्रा करते अमर हो गया। आज भी यदि श्री गुरुनानकदेवजी महाराज का कहीं उल्लेख करते हैं तो भाई बालो एवं भाई मर्दाने को अवश्य याद करते हैं। दोनों सज्जनों ने गुरुनानकदेवजी महाराज के साथ यात्रा कर उनकी सेवा करते हुए अपने-अपने साज़ (वाद्य यंत्र) बजाकर अमर पद प्राप्त किया। प्रेमियो ! आपको धन्यवाद है कि प्रतिदिन यहां आकर नाम कीर्तन करते हैं, शास्त्रों का अभ्यास करते हैं। अधिक-से-अधिक समय नाम स्मरण कर जीवन सफल करें।

६ फरवरी पूज्य स्वामीजी ने रायपुर में सत्संग प्रवचन किया। ७ फरवरी पूज्य स्वामाजी कामटी पधारे। श्री ढोलणदास फुंदूमल, गिरधारीलाल मंगताणी एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। वहां पूज्य स्वामीजी ने तीन दिन अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की।

११ फरवरी रविवार प्रातः ११ बजे रोहड़ा ब्रादर मण्डल का वार्षिक उत्सव पन्तनगर, घाटकोपर, बम्बई में पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। श्री मोहनलाल रोहड़ा ने रोहड़ा ब्रादर मण्डल के कार्यों पर प्रकाश डाला। पूज्य स्वामीजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि आपस में एकता रखेंगे तो सफलता आपके चरण चूमेगी। जहां एकता है, वहां आनन्द है, शक्ति है। सामाजिक कुप्रथाओं से किनारा करें। बच्चों को धार्मिक विद्या पढ़ाएँ, उनमें अच्छे संस्कार डालें, जिससे वे भविष्य में आदर्श नागरिक बनें। आप घरों में भी प्रेम का वातावरण पैदा करें।

१२ फरवरी से १४ फरवरी तक स्वामी टेऊंराम प्रेम प्रकाश मन्दिर,

पूना में स्वामी चन्दनप्रकाशजी महाराज का पुण्य-तिथि उत्सव मनाया गया । इस उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी १२ फरवरी को पूना पधारे । सायं के सत्संग में सन्त अनन्तप्रकाश ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत-सत्कार किया । पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुये कहा कि स्वामी चन्दनप्रकाशजी शांत स्वभाव के थे । उन्होंने अपने नाम को सार्थक किया । उनका यश देश-विदेश में फैला हुआ है । वे बचपन में ही सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज के सान्निध्य में आये । उनकी कृपा से ही उन्होंने भक्ति मार्ग में प्रगति की । उन्होंने प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ा, हज़ारों प्रेमियों का मार्गदर्शन किया । प्रेमियो ! आप भी गुरुमन्त्र की साधना कर आध्यात्मिक उन्नति करें । यदि आप प्रभु को प्रसन्न करना चाहते हैं तो विनम्र बनें । व्यवहार एवं परमार्थ में विनम्रता अत्यंत आवश्यक है ।

पूज्य स्वामीजी ने तीनों दिन प्रातः एवं सायं अमृत वचनों की वर्खा की । १४ फरवरी पूज्य स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि प्रेमियो ! प्रभु का हमें सदैव आभारी होना चाहिये, उसने हमें क्या-क्या नहीं दिया । अमूल्य मनुष्य योनि एवं बुद्दि दी है वह हम व्यर्थ गंवा रहे हैं । अपने श्वास स्मरण में सफल करें । धन, पदार्थ, काया, माया सभी क्षणभंगुर है । प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ें। सत्गुरु महाराजजी फरमाते हैं :-

मन बुद्धि इन्द्रिय प्राण धन, जन दीनी नर देह ।
कह टेऊँ तिस राम का, नित सुमिरन कर लेह ॥

१५ फरवरी पूज्य स्वामीजी सतारा पधारे और वहां उन्होंने सत्संग प्रवचन कर प्रेमियों की प्यास पूरी की । २३ फरवरी शिवरात्रि के पावन दिन प्रातः पूज्य स्वामीर्जी हीरा घाट, सिन्धुनगर में पधारे। वहां उन्होंने नदी में डुबकी लगाई । तत्पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने भगवान शंकर की महिमा गाते हुए श्री परसराम को धन्यवाद दिया । प्रातः आश्रम पर भी पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए भगवान श्री शंकर के दृष्टांत सुनाए । संध्याकालीन सत्संग में भी पूज्य स्वाजी ने भगवान शंकर की महिमा गाते हुए कहा कि भगवान शंकर भोलेनाथ हैं । शीघ्र

ही प्रसन्न होते हैं । आज सारी रात जागरण कर 'ॐनमः शिवाय' मन्त्र की साधना करें तो आपकी मनोकामनाएँ पूरी होंगी ।

२५ फरवरी प्रातः पूज्य स्वामीजी ने प्रेम प्रकाश मण्डल माटुंगा, बम्बई में सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि प्रभु प्राप्ति के लिए वैराग्य अत्यंत आवश्यक है । जब तीव्र वैराग्य वृत्ति उत्पन्न होती है तब सांसारिक पदार्थों एवं सम्बन्धियों में आसक्ति नहीं रहती है । गौतम बुद्ध के मन में जब वैराग्य वृत्ति पैदा हुई तो वे रात्रि को ही अपनी पत्नी यशोधरा एवं पुत्र राहुल को सोता हुआ छोड़कर जंगल की ओर चल पड़े । जंगल में उन्होंने अपने हाथों से अपने सुन्दर बाल काट दिये, राजकीय वस्त्रों का भी त्याग कर दिया । उन्हें राज्य सत्ता प्रिय नहीं लगी । सन्त दादू ग्यारह वर्ष की आयु में कांकरिया तालाब के पास अपने साथियों के साथ खेल रहे थे तो भगवान ने उन्हें एक ब्राह्मण के रूप में दर्शन दिए । उसी समय ही उनके मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ । वे सांसारिक पदार्थों को तुच्छ समझकर, उनका त्यागकर भगवद् भजन करने लगे ।

२५ फरवरी सायं पूज्य स्वामीजी ने दयावन्ती टीकमदास हॉल, खार, बम्बई में सत्संग प्रवचन किया ।

२८ फरवरी पूज्य स्वामीजी प्रभास पाटण पधारे । सायं को वहां अखिल सौराष्ट्र सिन्धी पंचायत फेडरेशन की वार्षिक सभा हुई । अध्यक्ष नेवन्दराम लोकवाणी ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत किया । पद्मश्री जीवनदास जयरामदास, डॉ. दयाल 'आशा' श्री थांवरदास खूबचन्दानी, श्री उद्धाराम गोलाणी मुख्य अतिथि थे । सामाजिक समस्याओं पर विचारों का आदान प्रदान किया गया । पंचायत के चुनाव भी किए गये । पूज्य स्वामीजी ने आशीर्वाद देते हुये कहा कि हम जहां भी जाते हैं वहां सौराष्ट्र सिन्धी पंचायत की प्रशंसा करते हैं कि इस पंचायत में एकता है । जहां मेल-मिलाप है वहां मुहब्बत होती है। आजकल दहेज एवं तलाक की कुप्रथा के कारण कई कन्याएँ दुःखी हैं। आज मैं आप से अपील करता हूँ कि इन समस्याओं को दूर करने के लिए ठोस कार्य करें। दहेज के कारण हमारे समाज में बड़ी बड़ी विवाह योग्य कन्याएँ विवाह से वंचित बैठी हैं,यह धरती पर बड़ा बोझा है । स्वामी लीलाशाह

महाराज ने इस समस्या के विरुद्ध बहुत प्रचार किया। आप भी इन सामाजिक समस्याओं को दूर करने का प्रयास करें।

१ मार्च सोमनाथ मन्दिर के निकट अखिल सौराष्ट्र सिन्धी फेडरेशन पंचायत एवं जनता जनार्दन परिषद् की ओर से सामूहिक विवाहों का आयोजन किया गया। श्री नेवंदराम लोकवानी ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत करते हुए कहा कि उनके आशीर्वाद एवं सहयोग से प्रतिवर्ष सामूहिक विवाहों का आयोजन किया जाता है। पूज्य स्वामीजी हमारे सच्चे मार्गदर्शक हैं। डॉ. दयाल 'आशा' एवं सन्त अनन्तप्रकाशजी ने शुभमंगल कामनाएँ दी। पूज्य स्वामीजी ने वर-वधुओं को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आप अब गृहस्थाश्रम में रह कर अपने-अपने कर्तव्यों का अच्छी तरह पालन करें। अपना कामकाज करते हुए प्रभु को नहीं भुलाना। दुःखी-दरिद्रों की सेवा करते रहना। घर में माता-पिता, सास-ससुर की श्रद्धा एवं मर्यादा से सेवा कर उनका अशीर्वाद प्राप्त करें। घर-गृहस्थी में गम खाकर चलेंगे तो उसमें ही आपका भला होगा।

१ मार्च रात्रि स्वामी लीलाशाह सोसायटी में पूज्य स्वामीजी ने अमृत वचनों की वर्खा करते हुए कहा कि सन्तों का काम नाम जपना और जपाना है। प्रेमियो ! नाम जपने में आलस्य नहीं करें, क्योंकि पता नहीं काल कब आ जाय। उसके आने के पूर्व ही नामरूपी पूंजी संग्रह कर लें।

३ मार्च से १२ मार्च तक वडाला ब्रादर मण्डल वडाला, बम्बई में पूज्य स्वामीजी के सत्संग यज्ञ का आयोजन किया गया। रात्रि को मुखी चोइथराम बेगराज, निहचलदास मंगतराम, जीअन्दराम वाधवा, माधवदास, हेमनदास एवं अन्य प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी का हार्दिक स्वागत किया। पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आप सभी को धन्यवाद है कि आप प्रति वर्ष इन होली के दिनों में यहां सत्संग यज्ञ का आयोजन करते हैं। सत्संग की प्राप्ति भी सौभाग्यशाली को होती है। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज फरमाते हैं :

पूर्व पुण्य से मिलत है, सन्तों का सत्संग।
कह टेऊँ जिंह सेवते, मिटहिं मस्तक अंग॥

४ मार्च रविवार प्रात: कंबर दरबार कांदिवली में पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि माता गोपी एवं अन्य प्रेमियों को धन्यवाद है, जो यहां सांई विलायतराम एवं सांई जीवतराम की ज्योति जगा रहे हैं। सुपुत्र वो जो अपने बड़ों का नाम रोशन करे। संत विलायतराम एवं संत जीवतराम सिद्धपुरुष थे। भक्ति साधना करते करते उन्हें सिद्धि प्राप्त हो गई थी ! प्रेमियो ! आप भी नाम को नहीं भूलें। सदैव परमात्मा का चिन्तन करें, घर गृहस्थ में रहकर सन्तों का संग करें तो आपको भी नाम का रंग लग जायेगा। फिर आप भी लालों लाल हो जायेंगे, सन्त कबीर जी कहते हैं :

लाली मेरे लाल की, जित देखूं तित लाल।
लाली देखन मैं गई तो मैं भी हो गई लाल॥

वह मनुष्य सौभाग्यशाली है जो राम के रंग में रंग जाता है। प्रेमियो ! आप भी नाम स्मरण एवं परोपकार के कार्यों में जीवन सफल करें।

सायं पूज्य स्वामीजी ने वडाला में प्रवचन करते हुए कहा कि सन्तों की वाणी में भी शक्ति होती है। वे सदैव सत्य बोलते हैं, और नाम स्मरण करते हैं इसलिए उनकी वाणी में शक्ति होती है। वे जो कुछ बोलते है, वही होता है। जोधपुर नगर के बाहर सन्त तेजानन्द का आश्रम था। कोई व्यक्ति अपने कमज़ोर बैल को जंगल में छोड़कर आया। उधर बैल जंगल में घास खाकर शक्तिशाली हो गया। एक दिन एक शेर उस जंगल में आया। वह उस बैल को मारकर खाना चाहता था। निरीह बैल सन्त तेजानन्द की ओर भागता आया। सन्त तेजानन्द ने बैल के पीछे शेर को आते देखकर कहा "रुक जाओ।" शेर सन्त की आज्ञानुसार रुक गया। सन्त ने शेर से कहा कि यह बैल तुम्हारा गुरु भाई है। अब इसको नहीं मारना। सन्त के इस उपदेश के कारण शेर व बैल उसी जंगल में साथ साथ रहने लगे। सन्त के वचनों का प्रभाव शेर जैसे हिसंक पशु पर भी पड़ा। तो क्या मनुष्यों पर सन्तों के वचनों का प्रभाव नहीं पड़ सकता? प्रेमियो ! आप भी किसी न किसी सन्त महात्मा का संग करें। सन्त आपकी रक्षा करेंगे। सदैव सत्य बोलें और रसना से नाम स्मरण करें। सत्य

बोलने से आत्मिक शक्ति बढ़ेगी।

वडाला बम्बई में पूज्य स्वामीजी ने विभिन्न विषयों पर सत्संग प्रवचन कर प्रेमियों का मार्गदर्शन किया। रविवार ११ माचे सायं उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि प्रेमियो ! आप प्रभु के पथ पर आगे बढ़ें तो प्रभु स्वयं आकर आपकी देख रेख करेगा।

भगता के कार्ज प्रभु आप खलाइया, हरि कम करावन आया

शान्तोबा नामक एक धनवान था। सन्त तुकाराम के संग में उसके मन में वैराग्य वृत्ति पैदा हुई। वह अपना सर्वस्व दीन दुखियों की सेवा में खर्च कर जंगल में भगवद् भजन करने लगा। उसके सम्बन्धियों ने उसे बहुत ही समझाया कि घर में आकर रहे किंतु वह जंगल में ही आनन्द में स्थित रहा। उसकी पतिव्रता पत्नी भी उसके साथ वन में भगवद्भजन करने लगी। वह गांव से भिक्षा करके आती थी, जो कछ मिलता था, दोनों पति-पत्नी ग्रहण कर आनन्द में रहते थे। एक दिन वह जैसे ही भिक्षा करके वन में आ रही थी तो बहुत वर्षा हुई। भींमा नदी का प्रवाह तेज़ हो गया। तब वह सोचने लगी कि वह अब नदी कैसे पार करेगी ! पतिदेव को भोजन पहुँचाने में भी विलम्ब हो जायेगा। इतने में भगवान एक नाविक के रूप में नाव लेकर भीमा नदी के किनारे आ गया। उस नाविक को शान्तोबा की पत्नी से कहा, "माता ! आप नाव में बैठें तो आपको उस पार ले जाऊं। यह सुनकर माता आश्चर्य में पड़ गई क्योंकि इसके पूर्व वहां कोई नाव नहीं थी और कोई नाविक भी नहीं था। यह नाव और नाविक कहां से आया ! माता नाव में चढ़कर उस पार पहुंची तो देखा नाव एवं नाविक दोनों नहीं ! वह भिक्षा में मिला हुआ भोजन पति के पास ले आई और उक्त घटना उसने पतिदेव को सुनाई। भक्त शान्तोबा समझ गए कि प्रभु ने स्वयं नाविक का रूप धारण कर उसकी पत्नी को नाव में लाकर इस पार लाया। प्रेमियो ! भगवान अपने प्रेमियों की किसी न किसी रूप में आकर सहायता करता है। आप भी श्रद्धा व विश्वास के साथ उन्हें याद करें तो वे अवश्य आपको संसार सागर से पार लगाएंगे।

१३ मार्च सायं वडाला ब्रादर मण्डल की ओर से प्रवीण विद्यार्थियों को पूज्य स्वामीजी ने पुरस्कार दिये। श्री चोइथराम बेगराज, श्री सभागचन्द चावला, श्री नन्दीराम टहलराम, श्री निहचलदास मंगतराम ने पूज्य स्वामीजी के आभार मानते हुए कहा कि वे प्रतिवर्ष यहां आकर ज्ञान की गंगा प्रवाहित कर हमारी प्यास पूरी करते हैं, उनसे प्रार्थना है कि ऐसी दया दृष्टि वे सदैव करते रहें।

पूज्य स्वामीजी ने सत्संग यज्ञ आयोजकों को साधुवाद देते हुए कहा कि कल आप सभी प्रेमियों ने मिलकर होली का त्यौहार मनाया। त्यौहार प्रेम का पैगाम लेकर आते हैं। अपने मन से एक दूसरे के लिए वैमनस्य एवं घृणा की भावना निकालकर एक दूसरे को स्नेह व सम्मान दें। होली भक्त प्रहलाद की स्मृति दिलाती है। आप भी भक्त प्रहलाद की भांति नाम स्मरण करें। उसको पिताजी ने कितने ही कष्ट दिए, किन्तु उसका बाल भी बांका न कर सका। प्रभु ने उसकी आकर रक्षा की। आप भी प्रभु का स्मरण करेंगे तो वे आपकी रक्षा करेंगे।

१६ मार्च पूज्य स्वामीजी स्वामी चंदनप्रकाश आश्रम पूना पधारे। दोपहर को उन्होंने बहन पद्मा सुन्दरदास शिवदासाणी एवं श्री नारी लख्याणी के नये मकानों के गृह प्रवेश समारोहो में सम्मिलित होकर उन्हें आशीर्वाद दिया। सायं वे स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मन्दिर के उद्घाटन उत्सव के सम्बन्ध में पिम्परी पधारे। सायं उनके स्वागत में शोभा यात्रा निकाली गई। रात्रि को पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि, माता सती, गोपीचंद, किशोरलाल एवं अन्य प्रेमियों को धन्यवाद है। उनके पुरुषार्थ से इस नये मन्दिर का निर्माण हुआ है। अपने लिये तो सभी लोग सुन्दर मकान बनवाते हैं किन्तु प्रभु के लिए मन्दिर धर्मशाला या परोपकार के लिये वृद्धाश्रम या अस्पताल थोड़े ही लोग बनवाते हैं। इस मन्दिर में भक्ति की ज्योति जलती रहेगी। समय समय पर यहां सन्त महात्मा आकर सत्संग प्रवचन कर आपका मार्गदर्शन करेंगे। आप उनके अमृत वचन श्रवण कर लाभान्वित होंगे। आप नियमित रूप से यहां आकर सत्संग का लाभ प्राप्त करें।

प्रेम प्रकाश मन्दिर गांधीनगर, कोल्हापुर के वार्षिक उत्सव के सम्बन्ध

में पूज्य स्वामीजी १८ मार्च प्रातः गांधीनगर पधारे । कई प्रेमियों ने उनका स्वागत किया । प्रातः १० बजे पूज्य स्वामीजी ने धर्म ध्वजा फहराकर उत्सव आरम्भ किया । सायं शोभा यात्रा निकाली गई। रात्रि पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन किया । १९ मार्च प्रातः सामूहिक यज्ञोपवीत कार्यक्रम रखा गया । पूज्य स्वामीजी ने बालकों को आशीर्वाद करते हुए कहा कि घर में माता पिता, एवं वृद्धों की सेवा करें । उनकी आज्ञा का पालन कर आशीर्वाद प्राप्त करें । रात्रि को भी पूज्य स्वामीजी ने अपने अमृत वचनों की वर्खा की । २० मार्च प्रातः वे स्वामी सर्वानन्द स्कूल पधारे । भाई रमेश तनवाणी ने उनका स्वागत किया । रात्रि पूज्य स्वामी ने प्रवचन करते हुए कहा कि घर में आये हुए अतिथि का स्वागत करें । अतिथि को भगवान का रूप माना जाता था । जिसके घर में अतिथि आता था वह स्वयं को सौभाग्यशाली समझता था । किन्तु आजकल अतिथि को देखकर अधिकांश लोग बाहर से प्रसन्नता का दिखावा करते हैं, परन्तु मन ही मन प्रसन्न नहीं होंते । आप ऐसा न करें । "अतिथि देवो भव ।"

२१ मार्च सन्त सम्मेलन हुआ । रात्रि पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन किया । २२ मार्च प्रातः पूज्य स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि प्रातः काल प्रभु से प्रार्थना करें । प्रार्थना में बड़ी शक्ति होती है । प्रभु आपके कष्ट-क्लेश दूर करेगा । परमात्मा से माया नहीं, सुमति का दान मांगें । गौमाता की सेवा करें । प्रतिदिन पशु-पक्षियों को खाना खिलाएं । प्रतिदिन कोई-न-कोई परोपकार का कार्य करें तो परमात्मा प्रसन्न होंगे ।

२२ मार्च को पूज्य स्वामीजी इचलकरंजी पधारे । श्री ब्रजलाल हीराणी ने उनका स्वागत किया । उन्होंने वहां अमृत वचनों की वर्खा की ।

२३ मार्च बेकरी पंचायत साधू वास्वाणी नगर, थाना में सत्संग यज्ञ का आयोजन किया । पूज्य स्वामीजी ने इस सत्संग के सम्बन्ध में वहां २३-२४ मार्च की रात को एवं २५ मार्च प्रातः सत्संग प्रवचन किया । अध्यक्ष लक्ष्मणदास पंजवाणी ने उनका आभार व्यक्त किया। पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आप लोगों को धन्यवाद है कि आप प्रतिवर्ष विश्व कल्याण के लिए श्री गुरुग्रन्थ साहब का

पाठ रखाते हैं और सत्संग यज्ञ का आयोजन करते हैं। श्री गुरुग्रन्थ साहब में नाम की कितनी महिमा गाई गई है। आप भी सांसारिक कामकाज करते हुए नाम को न बिसारें। अपनी कमाई का कुछ हिस्सा शुभ कर्मों में खर्च करें।

२८ मार्च जयपुर में सिन्धी समाज की ओर से चेटीचांद (गुड़ी पड़वा) का उत्सव आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी २७ मार्च अमरापुर स्थान जयपुर पधारे। आयोजकों ने उत्सव में पूज्य स्वामीजी का भव्य स्वागत किया। पूज्य स्वामीजी ने व्याख्यान देते हुए कहा कि आज के दिन सिन्ध में हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए नसरपुर में अमर उडेरोलाल ने अवतार धारण किया। वे वरुणदेव के अवतार थे। सिन्धी समाज आज का पावन दिन यत्र-तत्र बड़े उत्साह के साथ मनाता है। आज के दिन हमें संकल्प करना चाहिए कि हम सब एकता के सूत्र में बंधकर कौम की नैया पार लगाएंगे। प्रेमियो! आप मातृभाषा सिन्धी को नहीं भुलाएं। भाषा ज़िंदा है तो जाति ज़िंदा है। हमारे सिन्धी भाइयों ने देश-विदेश में अपने पुरुषार्थ व परिश्रम से प्रगति की है, इसके लिए हमें गर्व होना चाहिए। आप अपने मन से एक दूसरे के लिए वैमनस्य की भावना निकालकर एक दूसरे को सहयोग व स्नेह दें तो उसमें आपका और जाति का कल्याण होगा।

२९ मार्च से ३१ मार्च तक पूज्य स्वामीजी ने स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम कोटा में सत्संग प्रवचन किए। १ अप्रैल को व अमरापुर स्थान जयपुर पधारे। २ अप्रैल जयपुर के समीप बगरू बस्ती में पशु चिकित्सा शिबिर का आयोजन किया गया। उसी शिबिर का उद्घाटन करते हुए, पूज्य स्वामीजी ने कहा कि ये पशु भी प्रभु की सन्तान हैं। इनकी सेवा करना, इनका शारीरिक दु:ख दूर करना हमारा कर्तव्य है। इन पशुओं की भी अपनी बोली होती है, किन्तु इनकी भाषा हम नहीं समझ सकते। आज इन पशुओं के रोगों का उपचार करने के लिए विशेषज्ञ डॉक्टर आए हुए हैं। इन सभी डॉक्टरों को साधुवाद है साथ ही आयोजकों को भी इस शिबिर के आयोजन हेतु धन्यवाद है। इस शिबिर में चिकित्सा के लिए हजारों गौएं, भैंसें, बैल, बकरियाँ, ऊंट आदि आए थे। पूज्य स्वामीजी ने इस उत्तम कार्य के लिए ११

हजार रुपये दान में भेंट किए ।

८ अप्रैल प्रातः अमरापुर स्थान पर पूज्य स्वामीजी ने हवन यज्ञ करवाया । इसी दिन वहां स्वामी गुरुमुखदास जी महाराज की पुण्यतिथि मनाई गई । सायं पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि स्वामी गुरुमुखदासजी ने सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज के सान्निध्य में विभिन्न नगरों में नाम का प्रचार किया । वे अच्छे गायक एवं कवि भी थे । वे जब इकतारे पर भजन गाते थे तो श्रोतागण मन्त्रमुग्ध हो जाते थे ।

९ अप्रैल से १३ अप्रैल तक प्रेम प्रकाश मण्डल का वार्षिक उत्सव अमरापुर स्थान पर आयोजित किया गया । ९ अप्रैल प्रातः पूज्य स्वामीजी ने धर्म-ध्वजा फहराकर उत्सव आरम्भ किया । दोहपर ३ बजे आश्रम से पूज्य स्वामीजी के नेतृत्व में शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज व सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की सुन्दर झांकियां थी । शोभायात्रा में हज़ारों प्रेमी राम नाम की धुनि लगाते चल रहे थे । चारों दिन सन्तों, महात्माओं ने अमृत वचनों की वर्खा की । पूज्य स्वामीजी ने भी सत्संग प्रवचन किए ।

१० अप्रैल प्रातः १० बजे प्रेम प्रकाश सन्देश के विशेषांक "श्रद्धा-विश्वास" अंक का विमोचन करते हुए पूज्य स्वामीजी ने कहा कि आज के जनमानस हृदय में सन्त महात्मा गुरुजनों के वचनों एवं सद्ग्रंथों के प्रति जिस तरह से श्रद्धा व विश्वास की कमी आती जा रही है यह एक चिन्तनीय विषय है । जबकि संसार की प्रत्येक व्यवहारिक या पारमार्थिक क्रिया "श्रद्धा एवं विश्वास" के बल पर ही पूर्ण होती है । गुरु के वचनों पर अटल विश्वास के कारण ही बालक ध्रुव को परम पद की प्राप्ति हुई । भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में स्पष्ट कहा है कि जिस मनुष्य के मन में ईश्वर पर श्रद्धा है और सद्गुरु तथा सत् शास्त्रों में जिसे विश्वास है ऐसा साधक ज्ञान को प्राप्त कर लेता है और ठीक इसके विपरीत, जो किसी में श्रद्धा नहीं रखता वह मनुष्य संशय और विपर्यय में ही गोते खाया करता है । श्रद्धा के बिना किए हुए यज्ञ दानादि एवं श्रद्धा रहित किया हुआ कोई भी कर्म फल नहीं

देता वह व्यर्थ जाता है । श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ में भी पूज्य गुरु महाराज जी ने कहा है:-

जप तप सेवा कर्म शुभ, तीर्थ दान स्नान ।
श्रद्धा बिन फल देत नहीं, कहे टेऊँ सत् मान ।।

इसलिए समाज में श्रद्धा व विश्वास की पुनर्स्थापना करना आवश्यक है तभी हमारे ग्रन्थों में वर्णित शिक्षाओं पर व्यक्ति विश्वास कर उसके अनुसार आचरण कर अपना कल्याण कर सकता है । संक्षेप में यह कहें कि श्रद्धा विश्वास रहित जीवन जीना अपना लोक एवं परलोक बिगाड़ना है ।

१३ अप्रैल प्रातः पूज्य स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि सतगुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने अपना सारा जीवन स्मरण एवं परोपकार के कार्यों में सफल किया । प्रेमियो ! आप अपने अपने सांसारिक कर्तव्यों का पालन करते हुए, प्रभु को न भुलाएं और प्रतिदिन कोई न कोई परोपकार का कार्य अवश्य करें । इसमें ही जीवन की सार्थकता है ।

तरुवर सरुवर सन्त जन, चौथा बर्से मेह ।
परमार्थ के कारणे, चारों धारे देह ।।

वृक्ष, सरोवर, सन्त एवं वर्षा चारों दूसरों की भलाई के लिए होते हैं । आप भी इन गुणों को जीवन में अपनाएं ।

१६ अप्रैल पूज्य स्वामीजी प्रेम प्रकाश आश्रम आगरा पधारे। वहां सायं पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा:-

सत्संग से होत है, सहसा ही वैराग ।
वाल्मीक हरि पुरुष हर, भजन लगे घर त्याग ।।

प्रेमियो ! नियमित रूप से सत्संग में आएं और किसी न किसी सन्त से प्रेम का नाता जोड़ें, फिर आपके मन में वैराग्य भावना पैदा होगी । ऋषि वाल्मीक पहले रत्नाकर डाकू के नाम से लूटमार करता रहा । जब उसे ऋषि नारद का सान्निध्य मिला, उसने उसे सत् मार्ग बताया, तब उसने व्यवहार व परिवार का त्याग कर अपने चित्त की

वृत्ति राम से जोड़ी। राम नाम स्मरण करते वह महान ऋषि एवं संस्कृत के आदि कवि हुए। प्रेमियो ! आप भी सन्तों महात्माओं के अमृत वचनों का श्रवण कर परमात्मा से स्नेह सम्बन्ध रखकर मानव जीवन सफल करें।

जैसा संग मिलता है वैसा ही उसका जीवन बनने बिगड़ने लगता है। विलासी संग होगा तो मनुष्य विलासी हो जाएगा और विरक्त का संग होगा तो विरक्त। संग का रंग मन को लगता ही है। ज्ञान सदाचरण, भक्ति वैराग्य आदि में जो महापुरुष आपसे बढ़कर हों उन्हीं का आदर्श अपनी दृष्टि समक्ष रखें।

मनुष्य सत्संग में जितना समय बिताता है, उतना ही वह सही अर्थ में जगा है। सन्तों के मिलन में केवल परमात्मा की ही चर्चा होती है। सन्त से मिलन होने पर आप अपनी लौकिक बातें मत करें।

मन पर सत्संग-सेवा का अकुंश रखो।

स्वामी मुरलीधरजी के पुण्य तिथि उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी १७ अप्रैल को स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मन्दिर इन्दौर पधारे। स्वामी गंगाराम एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। पूज्य स्वामीजी ने वहां एक सप्ताह सत्संग प्रवचन किया। उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि स्वामी मुरलीधरजी ने सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज एवं सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के संग में रहकर ज्ञान व अनुभव प्राप्त किया। उन्होंने नाम का प्रचार भी किया। आप भी सत्गुरु द्वारा दिये गए नाम का अभ्यास करें। जैसे जैसे आप नाम का अभ्यास करेंगे वैसे वैसे आपका अन्तःकरण शुद्ध होता जायेगा। किसी न किसी दिन आपको दिव्य ज्योति का दर्शन होगा। सत्गुरु अमृत की खान है और यह शरीर जहर से भरा हुआ है। गुरु की कृपा से जीवन अमृत तुल्य हो जायेगा। सत्गुरु की प्राप्ति के लिए यदि शीश की कुर्बानी भी देनी पड़े, फिर भी यह सौदा आप सस्ता समझें।

यह तन विख की बेलड़ी, गुर अमृत कि खानि।
सीस दिए जे गुर मिले, तो भी सस्ता जान॥

परन्तु आजकल गुरु के लिए इतनी कुर्बानी कौन करेगा? सत्गुरु

की शिक्षा को जीवन में उतारें, उनके सिद्धांतों पर चलें तो आपका कल्याण हो सकता है । आध्यात्मिक उन्नति के लिये प्रयास करें । पुरुषार्थ ही देव है ।

स्वामी प्रेमदास महाराज के जन्मदिन उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी २८ अप्रैल बड़ौदा पधारे । सन्त वासुदेव एवं श्री लीलाराम पुरुस्वानी ने उनका स्वागत किया । वहां पूज्य स्वामीजी ने दो दिन अमृत वचनों की वर्खा करते हुए कहा कि स्वामी प्रेमदास विनम्रता की मूर्ति थे । उन्होंने अपने जीवन में स्मरण व परोपकार की ज्योति जगाई । आज भी सन्त वासुदेव एवं लीलाराम उनके सेवा कार्य की ज्योति जगा रहे हैं । प्रेमियों ! आप भी अपना जीवन नाम स्मरण एवं सेवा के कार्यों में सफल करें । व्यर्थ बातों में अमूल्य श्वास नहीं गंवायें। सन्त आते हैं आपको अज्ञान की नींद से जागृत करने के लिए। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज फरमाते हैं :

सोए अविद्या नींद में, कह टेऊँ बहु काल ।
अब तो गफ्लत छोड़ के, सुमरो दीन दयाल ।।

३० अप्रैल पूज्य स्वामीजी रामनगर, सूरत पधारे । वहां उन्होंने दो दिन अमृत वचनों की वर्खा करते हुए कहा

बुरा किसी का ना करो, सब का भला विचार ।
टेऊँ बुराई जो करे, तांका कर उपकार ।।

प्रेमियो ! आप सभी का भला करें । किसी के प्रति बुरा विचार नहीं करें, किसी से भी बुरा व्यवहार नहीं करें । सदैव भगवान से डरते रहें । यदि आप किसी के प्रति बुरा विचार करेंगे तो उसके मन में भी आपके प्रति बुरे विचार पैदा होंगे । एक भिक्षुक भिक्षा लेते समय पुकारता था, "बुराई करने वाले का बुरा होगा, भला करने वाले का भला होगा । भला करने वाले भलाई किए जा ।" एक दिन एक माता ने उससे पूछा कि क्या यह सत्य है कि बुरा करने वाले का बुरा होता है? फकीर ने कहा जैसा करेगा वैसा भरेगा । यदि तुम्हें विश्वास नहीं तो तुम करके देखो । दूसरे दिन उस माता ने उस फ़कीर को लड्डूओं में ज़हर मिलाकर दिया । फकीर लड्डू लेकर अपनी झोपड़ी

में आया । उस समय एक भूखा और थका हुआ जवान उसके पास आया । फ़कीर ने वे लड्डू उस जवान को खाने के लिए दिये । जवान ने जैसे ही लड्डू खाये तो उसी समय ही उसकी मृत्यु हो गई । यह दुर्घटना देखकर वह फकीर आश्चर्य में पड़ गया। वह उसी समय नगर में गया और नगरवासियों को इस दुर्घटना का समाचार सुनाया । वह जवान कोई और नहीं, उस माता का ही बेटा था जिसने ज़हरयुक्त लड्डू फकीर को खाने के लिये दिये थे । जब उसे अपने बेटे का यह दुखद समाचार मिला तब वह बेहोश हो गई। उसे अपनी बुराई का फल उसी दिन भुगतना पड़ा। प्रेमियो ! आप सभी का भला करें तो परमात्मा आपका भला करेगा ।

३ मई रात्रि संत खानूराम साहब के पुण्य तिथि उत्सव के उपलक्ष्य में, उनके स्थान पर पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि संत खानूरामजी के आवाज में दर्द था । जब वे गाते थे तो श्रोतागण मन्त्रमुग्ध हो जाते थे । उन्हें जो कुछ धन पदार्थ आदि मिलते थे, वे दीन दुखियों की सेवा में खर्च कर देते थे। प्रेमियों ! आपको धन्यवाद है कि आप यहां उनकी ज्योति जगा रहे हैं । सन्तों का उद्देश्य है नाम जपना और नाम जपाना । आप भी खूब नाम जपें ।

५ मई पूज्य स्वामीजी नागपुर पधारे । वहां उन्होंने तीन दिन अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की । उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि किसी न किसी परिपूर्ण संत की, गुरु की शरण लेनी चाहिये, जो दयादृष्टि कर आपको ज्ञानामृत पिलाए । वह व्यक्ति सौभाग्यशाली है जिसे ऐसा ब्रह्मज्ञानी सत्गुरु मिलता हैं । सत्गुरु महाराज जी साधक से कहते हैं :

सत्गुरु ऐसा कीजिए, तम अज्ञान मिटाय ।
कह टेऊँ उर में सदा, अनुभव ज्योति जगाय ।।

श्री रजब पहले चोर था, परन्तु सत्गुरु की कृपा से वह स्वयं सन्त बन गया । जब वह दूल्हे के वेश में था, तब उसे सन्त दादू दयाल का उपदेश मिला, तब से उसके जीवन में परिवर्तन आ गया । वह सारा जीवन दूल्हे के वेश में ही रहा । गुरु मन्त्र की साधना करते वह राम के रंग में रंग गया । एक बार किसी सन्त ने उससे कहा

कि आप अब संत हैं, दूल्हे के वेश में क्यों रहते हैं? संत रजब ने कहा जिस वेश में मुझे सत्गुरु प्राप्त हुए मैं उसी वेश का त्याग कैसे करूंगा! उसके मन में गुरु के प्रति अगाध श्रद्धा व निष्ठा थी। प्रमियो! सन्त रजब में गुरु के प्रति कितनी न श्रद्दा थी, गुरु भक्ति की भावना थी। आप भी अपने सत्गुरु के प्रति इतनी श्रद्धा धारण करें।

८ मई पूज्य स्वामीजी गोंदिया पधारे। वहां उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन किया। दो दिन उन्होंने बालाघाट में अमृत वचनों की वर्खा की। १२ मई वे सिवनी पधारे। वहां भी उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। १४-१५ मई उन्होंने कामटी में, १६ मई अमरावती और १७ मई बदनेरा में सत्संग प्रवचन कर प्रेमियों का मार्ग दर्शन किया। १८ मई वे सिन्धुनगर आश्रम लौट आये!

कुछ दिनों से सिन्धुनगर में आपसी फूट के कारण अशान्ति का वातावरण था। श्री पप्पू कालाणी नगरपलिका अध्यक्ष एवं विधान सभा सदस्य और श्री गोपीचन्द बहरानी के बीच में कुछ मतभेद थे, इसे सुलझाने के लिए सर्वश्री विजय मंगतानी, रमेश आहूजा और राम चंचलाणी ने प्रयास किये। उक्त सभी महानुभाव, नगरपालिका के सदस्य एवं कई पत्रकार १८ मई दोपहर पूज्य स्वामीजी का आशीर्वाद लेने के लिए एवं उनकी उपस्थिति में एकता का संकल्प लेने के लिये आये। उन्होंने पूज्य स्वामीजी की उपस्थिति में संकल्प लिया कि वे सभी मिलकर सिन्धुनगर के विकास के लिये कार्य करेंगे। पूज्य स्वामीजी ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा कि आप सभी समझदार हैं, पढ़े लिखे और अनुभवी हैं। आपसी फूट के कारण नगर व जाति का नुकसान हुआ है। मैं आप सभी से प्रार्थना करता हूँ कि आज से आप सभी मिल-जुलकर सिन्धी जाति और सिन्धुनगर की उन्नति के लिए प्रयास करें। एक दूसरे के लिये स्नेह व सहानुभूति रखें।

१९ मई प्रातः १० बजे पूज्य स्वामीजी न सिन्धु भारती ट्रस्ट द्वारा आयोजित नेत्रदान शिबिर का उद्घाटन करते हुए कहा कि नेत्रदान करना, उत्तम दान हैं। मृत्यु के बाद यदि आंखे जलकर राख हो जायें, उससे अच्छा है कि वे आंखे किसी के काम आ जायें, किसी प्रज्ञाचक्षु को प्रकाश मिल जाये, तो उसे नया जीवन मिल जायेगा। आयोजकों को

इस शिबिर के लिये धन्यवाद है। श्री नारायण सुखेजा ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत किया। इस अवसर पर डॉ. दयाल 'आशा' ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मैं अपने नेत्रदान की घोषणा करता हूं।

१९ मई शनिवार प्रातः ११ बजे आश्रम में पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में जनता जनार्दन परिषद् की वार्षिक सभा हुई। पहले श्री शेवकराम वनवाड़ी ने परिषद् के सेवा कार्यों पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात् डॉ. दयाल 'आशा' ने कहा कि पूज्य स्वामीजी की कृपा एवं आशीर्वाद से परिषद् के सेवा कार्य हो रहे हैं पूज्य स्वामीजी ने आशीर्वाद करते हुए सेवको को उत्साहित किया और सेवा कार्य के लिए पच्चीस हजार रुपये दान भी दिए।

सायं ६ बजे भारतीय संस्कार आश्रम सिन्धुनगर-३ में श्री सीतलदास हरचंदाणी पूर्व विधान सभा सदस्य का सम्मान समारोह पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। श्री सलामतराय पुरुस्वाणी ने कहा कि पूज्य स्वामीजी न केवल धार्मिक गुरु हैं परन्तु महान कर्मयोगी सन्त भी हैं। सत्कार समिति की ओर से श्री सीतलदास हरचंदाणी को पूज्य स्वामीजी द्वारा कार भेंट की गई। पूज्य स्वामीजी ने अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि आपको धन्यवाद है कि आपने श्री सीतलदास हरचंदाणी का सम्मान उत्सव आयोजित किया है। प्यारे सीतलदासजी विधानसभा में तीन बार चुनाव जीतकर आये, यह उसके लोकप्रियता का द्योतक है। मुझे आशा है कि वह भविष्य में भी अधिक से अधिक सेवा कर जाति का नाम ऊँचा करेगा।

इसी अवसर पर श्री सलामतराय पुरुस्वाणी, डॉ. दयाल 'आशा' श्री टेकचंद मीरपुरी, श्री लक्ष्मण आहूजा, श्री दयाल बजाज ने श्री सीतलदास की सेवाओं का वर्णन किया। श्री सीतलदास ने पूज्य स्वामीजी का आभार व्यक्त करते हुये कहा कि भगवान की कृपा एवं पूज्य स्वामीजी की दया दृष्टि से ही सेवा के क्षेत्र में मैंने योगदान दिया है। जनता का भी मुझे पूर्ण सहयोग मिलता रहा है।

२० मई प्रातः ११ बजे श्री श्रीचंद आहूजा ने प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर-५ में सिन्धुनगर के पत्रकारों की सभा आयोजित की। पूज्य

स्वामीजी ने पत्रकारों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि एक दूसरे के विरुद्ध प्रचार नहीं करें। सिन्धुनगर में शान्ति का वातावरण उत्पन्न करने का प्रयास करें। ऐसे लेख प्रकाशित करें जिससे जाति और नगर का यश हो। कलम में बड़ी शक्ति होती है, इसलिए उसका सदुपयोग करें।

२१ मई पूज्य स्वामीजी अहमदनगर पधारे। वहां उन्होंने स्वामी टेऊंराम मन्दिर में सत्संग प्रवचन किया। २२ मई वे जालना आए। वहां उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन किया। २४ मई उन्होंने औरंगाबाद में अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। २५ मई आप दिल्ली पधारे। उन्होंने सायं प्रेम प्रकाश मन्दिर में सत्संग प्रवचन किया।

पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज के पुण्यतिथि उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी २७ मई स्वामी माधवदास जी के स्थान आर्दश नगर अजमेर पधारे। वहां उन्होंने चार दिन प्रातः एवं सायं सत्संग प्रवचन करते हुए सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज एवं स्वामी माधवदास जी महाराज के गुणों का वर्णन किया। ३० मई उत्सव का समापन करते हुए उन्होंने कहा कि वे भाग्यशाली हैं, जो अपने गुरुदेव को याद करते हैं और उनके सिद्धान्तों पर चलते हैं। मुरलीधर करनाणी एवं सभी प्रेमी बड़े उत्साह के साथ सत्गुरु महाराज का पुण्य तिथि उत्सव प्रतिवर्ष मनाते हैं, देश विदेश से प्रेमी आते हैं, सभी को गुरु महाराज का आशीर्वाद एवं साधुवाद है। प्रेमियो! सभी प्राणियों में परमात्मा को व्यापक समझकर उन्हें स्नेह व सहानुभूति दें। सत्गुरु महाराज जी भी फरमाते हैं :

साक्षी चेतन ब्रह्म का सब घट में है वास।
कह टेऊँ शशि सूर्य में तांका है प्रकाश॥

एक बार रात को संत नामदेव कुएं से पानी भरने के लिए जा रहे थे तो किसी ने उन्हें रोककर कहा कि रात को वहां भूत आता है, इस कारण वहां न जाएं। संत नामदेव तो समदृष्टा थे। वे सभी में प्रभु का दर्शन करते थे, उन्हें भूत का भय नहीं हुआ। वे जैसे ही कुएं के पास आये तो भूत उनके सामने आया। संत नामदेव ने

भूत में भी सर्वव्यापी भगवान जानकर उसकी स्तुति करने लगे। तब वहां भूत में से भगवान प्रकट होकर बोले "नामदेव ! तुमने मुझे भूत में विद्यमान कैसे समझा?" संत नामदेव ने कहा "प्रभु ! आप तो सर्वव्यापी हैं। भक्त का यह उत्तर सुनकर भगवान ने उसे गले लगाया। सन्त नामदेव ने तो कुत्ते में भी प्रभु का दर्शन किया। वे एक बार जंगल में रोटी पका रहे थे। रोटियां पकाकर नीचे रखी तो एक कुत्ता वे रोटियां उठाकर भागा, संत नामदेव उसके पीछे पीछे भागकर कहने लगे, "प्रभु ! आप यह रोटियां कैसे खायेंगे। जरा रुकिये तो मैं रोटियों पर घी लगाकर दूँ।" प्रेमियों संतों एवं साधारण लोगों में यही अन्तर है कि संत सभी प्राणियों में साक्षी चेतन ब्रह्म का दर्शन करते हैं और साधारण लोग भेदभाव रखते हैं। आप भी भक्ति मार्ग पर चलें तो किसी न किसी दिन आप भी सर्वत्र प्रभु का दर्शन करेंगे।

३० मई पूज्य स्वामीजी बियावर पधारे। श्री सुंदरदास एवं अन्य प्रेमियों ने उनका भव्य स्वागत किया। पूज्य स्वामी ने वहां दो दिन सत्संग प्रवचन किया। पूज्य स्वामीजी ने उपस्थित जन समुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा कि सन्तों की सेवा करना ही श्रेयस्कर है, सन्तों की सेवा करने से ही दुनिया की हर वस्तु प्राप्त की जा सकती है। सन्त की प्रसन्नता ही दुनिया का हर वैभव देने में समर्थ है। इसलिये आप तन-मन-धन से अपने को सन्त-सेवा में लगाएँ। एक गरीब, सन्तों की खूब सेवा किया करता था। वह प्रतिदिन जंगल से लकड़ियां तोड़कर, बेचकर जो भी मिलता उससे अपना गुजारा करता व रोज मन्दिर जाकर सन्तों को भी कुछ देता था। एक दिन मन्दिर में एक शरीरधारी नाम का सन्त आया तो उस गरीब को लगा कि यह सन्त बहुत बीमार व भूखा लग रहा है, तो उस सन्त से उसने कहा कि महाराज आप कहीं जाना नहीं। मैं आपके लिए भोजन लाता हूँ। यह कहकर वह घर आया तो उसकी घरवाली मायके गई हुई थी तथा अनाज भी पिसा हुआ नहीं था, फिर भी वह निराश नहीं हुआ और तीव्रता से उसने वह अनाज पीसा, रोटी-सब्जी तैयार कर सन्त के लिये भोजन लेकर वहां पहुँचा तो सन्त ने उससे कहा कि क्या कारण है कि आपने बहुत देर की। तो उस गरीब ने पूरी बात

बताई । पूरी बात सुनकर सन्त ने कहा कि तुमने इतनी मेहनत की मेरे लिए तुम धन्य हो । सन्त हम नहीं तुम हो । सन्त ने गरीब से कहा कि आपको क्या चाहिये । तो गरीब बोला कि मुझ पर इतनी दया करें कि मेरे दुःख दूर हो जाएं । इतना धन दें कि मुझे गृहस्थी चलाने में आसानी रहे व सन्तों की सेवा भी करता रहूँ । सन्त ने कहा कि आपके पास धन दौलत होगी । आप बहुत सुखी व प्रसन्न रहेंगे ।

दूसरे दिन वह गरीब जंगल में लकड़ी काटने गया तो उसे दो बहुत सुन्दर स्त्री व पुरुष दिखे । उनका तेज इतना था कि अन्धेरे में भी प्रकाश लग रहा था । उनमें एक महालक्ष्मी व दूसरा दानी कर्ण था। तब महालक्ष्मी व दानी कर्ण आपस में तर्क कर रहे थे कि कौन बड़ा दानी है? तब लक्ष्मीजी बोली कि चलो देख लेते हैं कि कौन अधिक दानी है? इसकी परीक्षा कर लेते हैं । तब लक्ष्मीजी ने उस गरीब को बुलाकर कहा कि मेरे भाई यह कीमती हार मैं आपको देती हूँ । आप जाकर अपना घर-बार सुखी रखो । आपको कभी किसी बात की कमी नहीं आयेगी । वह गंवार कीमती हार को क्या जाने, उसने उस हार को अपनी पगड़ी में रख दिया। वह पगड़ी भी कटी-फटी थी । कुछ हार अन्दर व कुछ बाहर की तरफ दिख रहा था । फिर वह लकड़ियां तोड़कर अपने घर की ओर चला । रास्ते में उसे प्यास लगी तो वह कुण्ड के पास जाकर पानी पीने लगा । तब वहां से एक पक्षी उड़ता हुआ आया । वह मांस समझकर हार पगड़ी सहित ले उड़ा । वह घर पर आकर बहुत रोया तथा हार की पूरी कहानी अपनी पत्नी को सुनाई । तब उसकी पत्नी ने उससे अपना धैर्य रखने को कहा, अपना क्या, हम गरीबी में खुश हैं । दो-चार बातें और समझाकर अपने पति को धैर्य दिया । दूसरे दिन वह गरीब लकड़ियां काटने फिर जंगल में गया तो लक्ष्मीजी ने कहा कि आपको किस बात की चिन्ता है जो फिर लकड़ियां तोड़ने आये हो । इतना सुनकर उस गरीब ने हार खोने की पूरी कहानी लक्ष्मीजी को सुनाई । लक्ष्मीजी ने कहा कि कोई बात नहीं, आज मैं आपको चार हीरे दे रही हूँ। इन्हें सम्भालकर ले जाना।

कहीं गिरा मत देना। वह गरीब फिर लकड़ियां तोड़कर अपने घर जाने लगा, रास्ते में उसे प्यास लगी । गर्मी का मौसम था, वह जैसे ही पानी पीने लगा तो चारों हीरे कुएं में गिर गए । घर आकर दुःखी मन से अपनी पत्नी को पूरी बात बताई । उसकी पत्नी ने उसे फिर धैर्य दिलाया, कहा कि कोई चीज मिलती है तो उसे सम्भालकर लाना चाहिए । तीसरे दिन वह फिर जंगल गया तो लक्ष्मीजी उसे देखकर आश्चर्यचकित रह गई । उस गरीब ने फिर पूरी कहानी लक्ष्मीजी को बताई । तब लक्ष्मीजी बोली अब मैं तुमको यह पांच सौ अशरफियों की थैली दे रही हूँ। इसे सम्भालकर हाथ में रखना और जाकर अपनी पत्नी को दे देना ।

वह गरीब खुश होता, झूमता हुआ थैली को हाथ में लिए घर आया और बाहर से ही पत्नी को आवाज देता रहा- "ओ मुन्ने की अम्मा ! देख तो सही मैं क्या लाया हूँ?" उस समय उसकी पत्नी मोहल्ले में किसी मकान में गई हुई थी, तो वह थैली अपने घर में रखकर पत्नी को बुलाने गया । जब वह गया तो उसके घर से पड़ौस की कोई औरत आकर वह थैली ले गई । जब वह पत्नी को, खुश होकर थैली व अशरफिथों की पूरी बात सुनाकर घर लाया तो वहां थैली न देखकर बहुत रोया । उसने कहा कि आज तो थैली मैं घर तक लाया हूँ और घर में ही रखी, तुझे बुलाने के चक्कर में घर के दरवाजे भी खुले रह गये थे । खैर फिर पत्नी ने ढाढस बंधाया।

चौथे दिन वह फिर जंगल में गया । तब लक्ष्मीजी को फिर पूरी कहानी बताई और कहा कि आपने मुझे बच्चा समझकर बहुत दान दिया । परंतु मेरी तकदीर ही ऐसी है तो आप क्या कर सकती हैं? अब कर्ण बोला कि लक्ष्मीजी तुमने जो दान दिया सो तो दिया, अब मेरी बारी है । तब दानवीर कर्ण ने उस गरीब को 'दो' पैसे दिए । वह गरीब खुश होता हुआ लकड़ियां उठाकर घर जा रहा ता, तब उसने सोचा क्यों न दो पैसे की बड़ी मछली ले चलूँ, ताकि आज बीबी बच्चे सभी साथ मिलकर खा लेंगे । वह दो पैसे में बड़ी मछली

लेकर (उस समय में दो पैसे में बहुत कुछ आता था) घर की ओर आ रहा था, थकावट होने के कारण एक पेड़ के नीचे बैठ गया। तब उसकी नजर ऊपर पेड़ की ओर गई तो उसने देखा कि ऊपर कोई चीज चमक रही है। वह पेड़ पर चढ़कर उस वस्तु को लाया तो वह वही हार था। वह बहुत ही खुश होता घर आया। अपनी पत्नी को पूरी बात बताई। वह उस हार को पाकर बहुत ही खुश हुई। तब मियां बीबी खुश होकर घर के बाहर खुशी में नाचते कूदते बोल रहे थे। मिल गया, मिल गया, तो पड़ौस वाली औरत ने समझा कि शायद मुझे इन्होंने अशरफियों की थैली उठाते देख लिया होगा तो वह औरत 'मिल गया-मिल गया' सुनकर डर गई और वह थैली लाकर उस गरीब को देकर कहने लगी कि उस दिन तुम में से कोई भी घर में नहीं था। मैं वहां से गुजर रही थी तो देखा कि कोई यह थैली ले न जाए, इसलिए मैंने यह सम्भालकर रखी थी। मैं कोई चोर नहीं हूँ। मेरे ध्यान से उतर जाने के कारण मैं तुम्हें बता न सकी।

अब तो मियां-बीबी और भी ज्यादा प्रसन्न हुए उन्होंने कहा कि अब तो मछली खा लेते हैं। उसकी पत्नी मछली बनाने लगी तो उसके अन्दर से वे चार हीरे जो नदी में गिर गये थे, निकल आए। अब उनकी दरिद्रता समाप्त हो गई। फिर वे सन्तों की खूब सेवा करने लगे।

तात्पर्य यह है कि सन्तों की सेवा से हर किसी को लाभ मिलता है। सन्तों का सम्बन्ध भगवान से होता है। सन्तों जैसा ज्ञान किसी भी मनुष्य में नहीं होता है। इसलिए सन्तों की खूब सेवा करनी चाहिये और दूसरी बात यह कि स्त्रियों को इतनी हिम्मतवाली होना चाहिये कि पति की कमज़ोरियों पर भी उन्हें धैर्य बंधाना चाहिए।

सन्त जिस वस्तु को हाथ लगाते हैं उस वस्तु का मूल्य लाखों गुना बढ़ जाता है।

पूज्य गुरु महाराज ने आगे कहा कि एक बार महात्मा गांधी कहीं गए थे तो उन्हें बहुत सारे कीमती उपहार मिल रहे थे, तब भीड़ में एक बुढ़िया चिल्ला रही थी। गांधी मुझसे भी उपहार ले जाओ और तब महात्मा गांधी ने वह आवाज सुन ली। वे भीड़ में से सबको

हटाते हुए उस बुढ़िया के पास पहुँच गए । तब बुढ़िया ने उन्हें वह चीज हाथ में दे दी । उसे देखकर गांधीजी बहुत खुश हुए और प्रेम से उनके आंसू निकल पड़े । तब लोगों ने उनसे पूछा कि आपको बुढ़िया ने क्या दिया? तब गांधीजी बोले जो मुझे मेरी माँ देती थी। आज मुझे मेरी माँ की याद आ गई । तब लोगों ने उत्सुकता वश कहा कि गांधीजी हम भी देखें क्या चीज़ है? तब गांधीजी ने दिखाया कि वह 'एक' पैसा है । वह एक पैसा वहां पर ही सवा लाख रुपये में बिका । स्वामीजी ने इस प्रकार कहा कि सन्त के हाथ की चीज़ लाखों में बिकती है ।

३१ मई पूज्य स्वामीजी ने बूंदी में और १ जून झालरा में सत्संग प्रवचन किये । २ जून वे स्वामी टेऊंराम प्रेम प्रकाश आश्रम कोटा पधारे । वहां उन्होंने तीन दिन अमृत वचनों की वर्खा की । उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि सदैव परमात्मा एवं सत्गुरु को याद करें तो वे आपकी सहायता एवं सुरक्षा करेंगे । उन्हें एक क्षण भी न भूलें । सत्गुरु महाराज जी भी फरमाते हैं :-

कह टेऊँ हरि नाम जप, भूलो ना क्षण एक ।
भोगत भोगत विषय रस, बीते जन्म अनेक ।।

एक ईश्वर भक्त ब्राह्मण की सुन्दर कन्या थी । कुछ मुसलमान बदमाशों की उस कन्या पर बुरी नज़र थी । अचानक चार मुसलमान उस कन्या को भगा ले जाने के उद्देश्य से उस ब्राह्मण के घर आये । ब्राह्मण ने भगवान से प्रार्थना की तो अचानक वहां डाकुओं की एक टोली आ पहुँची । वे डाकू कौन थे पता नहीं । किन्तु उन डाकुओं ने बुरी नजर रखने वाले चारों मुसलमानों को मौत के घाट उतार कर उस ब्राह्मण कन्या की रक्षा की और चले गये । परमात्मा किसी न किसी रूप में आकर अपने भक्तों की रक्षा करते हैं । प्रेमियों आप भी मन से प्रभु की प्रार्थना करें तो वे आपकी सहायता करेंगे ।

६ जून सायं सक्खर धर्मशाला वडाला, बम्बई में पूज्य स्वामीजी ने श्री जीअन्दराम हेमनदास वाधवा के सुपुत्र जगदीश के विवाह के सम्बन्ध में सत्संग प्रवचन किया । ८ जून से १० जून तक उन्होंने

सिन्धुनगर आश्रम पर सत्संग प्रवचन किया ।

दुबई के प्रेमियों के निमन्त्रण पर पूज्य स्वामीजी १२ जून दुबई पहुँचे। उनके साथ स्वामी देवप्रकाशजी, डॉ. दयाल 'आशा', सन्त अनन्तप्रकाश, सन्त मनोहरलाल एवं सन्त ज्ञानप्रकाश भी थे । दुबई हवाई अड्डे पर श्री राम बख्शाणी, श्री लक्ष्मीचन्द लुल्ला, गंगाधर रोहड़ा, वाशूलाल श्राफ, डॉ. जमनू आसूदाणी, मोहनलाल मन्सुखाणी, हरेश खेमाणी, मनोहर रामचन्द, अशोकलाल एवं अन्य प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी का हार्दिक स्वागत किया । सायं पूज्य स्वामीजी ने गुरु मन्दिर में सत्संग प्रवचन किया । १३ जून उन्होंने रूपा ईश्वर उधराणी के घर पर प्रवचन करते हुए कहा कि ईश्वरलाल के पिता प्यारे वासुदेव उधराणी ने हमें पहली बार यहां आमन्त्रित किया था । उसने चाहे उसकी पत्नी आनन्दीबाई ने हमारी खूब सेवा की थी । सन्तों का काम है नाम जपना, नाम जपाना । आप भी धन्धा व्यवहार करते नाम जपते रहें । सन्तों की शिक्षा को ग्रहण करेंगे तो अवश्य ही लाभान्वित होंगे। रात को पूज्य स्वामीजी ने माया लक्ष्मणदास के घर में सत्संग प्रवचन किये और भोजन ग्रहण किया ।

१४ जून प्रातः ११ बजे पूज्य स्वामीजी ने श्रीराम तोलाणी के घर पर सत्संग प्रवचन किया । रात को चोइथराम हाल में श्री गुरुबख्श ढालूमल अमरनाणी ने पूज्य स्वामीजी के सत्संग का कार्यक्रम रखा। पहले संत मनोहरलाल एवं डॉ. दयाल 'आशा' ने भक्ति संगीत गाया। तत्पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि प्रेमियो ! आप धंधे-व्यवसाय के लिए भारत को छोड़कर यहां विदेश आये हैं । यहां आप हिन्दू धर्म के सिद्धान्तों पर चलेंगे तो भगवान आपका कल्याण करेगा । आप अपना काम-काज करें, नौकरी करें किन्तु परमात्मा को नहीं भूलें । मानव जीवन का मूल्यांकन करें, उसे व्यर्थ में नहीं गंवाये। सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं :-

चौरासी लख योनि का मानुष है सिरताज ।
कह टेऊँ हरि भजन का, कर इस तन में काज ।।

परमात्मा ने हमें अमूल्य मानुष तन दिया है, वह हम व्यर्थ गंवा

रहे हैं। संत बार-बार हमें जागृत कर कहते हैं कि अपने श्वास स्मरण में सफल करें, सत्कर्म करें किन्तु हम माया के प्रपंच में सब भूल गये हैं। श्री टी. चोइथराम को धन्यवाद है, जिसके पुरुषार्थ से यह प्रार्थना हाल बना, जहां आप समय-समय पर नाम कीर्तन-सत्संग करते हैं।

दुबई में प्रेमियों ने एक बिल्डिंग में प्रेम प्रकाश मन्दिर की स्थापना की थी। हरेश खेमाणी, मनोहरलाल, रामचन्द, बीना बख्शाणी, कविता चांडवाणी एवं अन्य प्रेमी वहां सत्संग की ज्योति जगा रहे हैं। १५ जून शुक्रवार के दिन वहां सत्संग का कार्यक्रम रखा गया। पहले महाराज चिमनलाल शर्मा, संत अनन्तप्रकाश एवं डॉ. दयाल 'आशा' ने भक्ति संगीत की वर्खा करते हुए पूज्य स्वामीजी के जीवन-कार्यों का वर्णन किया। पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आप सभी को धन्यवाद है कि यहां भगवान एवं सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की पूजा उपासना करते हैं। प्रभु से अधिक से अधिक प्रेम का नाता जोड़ें। सांसारिक उत्तरदायित्व निभाते हुए परमात्मा को नहीं भुलाएं। प्रभु ने दिल एक दिया है, वह दिल प्रभु को अर्पण करें। भगवान प्रेम का प्यासा है। उसे आपके आभूषण, पदार्थ, प्रसाद की आवश्यकता नहीं है। वह आपकी भीगी पलकें देखकर आपको गले लगाएगा। सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं :-

टेऊं हरि को भावते, केवल मन का प्रेम।
जानो मन के प्रेम बिन, सूने जप-तप नेम॥

भक्त विदुर भगवान श्रीकृष्ण का अनन्य उपासक था। वह सद्ग्रहस्थ होते हुए भी श्रीकृष्ण के प्रेम में आंसू बहाता था। एक बार भगवान श्रीकृष्ण भक्त विदुर के घर आए। उस समय विदुर घर पर नहीं था। विदुर की पत्नी भगवान को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुई। उसने भगवान को बिठा के उसके सामने केले खाने को रखे। वह प्रेम में इतनी तो मग्न थी कि केले के छिलके उतारकर भगवान को खाने के लिए दे रही थी और केले का गूदा स्वयं खाने लगी। भगवान भी केले छिलके बड़े प्रेम से खाने लगे। उसी समय विदुर भी घर में आ गया।

वह भगवान को केले के छिलके खाते देखकर आश्चर्य में पड़ गया। उसने पत्नी से कहा कि तुम यह कैसा पाप कर रही हो? भगवान को खाने के लिए केले के छिलके दे रही हो ।

भगवान श्री श्यामसुन्दर ने विदुर की बात सुनकर मुस्कराते हुए कहा "विदुर ! ये छिलके भी प्रेम रस से पूर्ण हैं । इनको खाने में मुझे आनन्द आ गया । तुम घबराओ नहीं । तुम दोनों मुझे प्रिय हो। विदुर एवं उसकी पत्नी पश्चात्ताप के आंसू बहाते हुए प्रभु के कमल चरणों में गिर पड़े । श्री बांकेबिहारी ने दोनों को उठाकर अपने गले लगाया। प्रेमियो ! प्रभु तो प्रेम देखता है, बाह्य आडम्बर उसे नहीं भाता । आप भी प्रभु के प्रति प्रेम बढ़ाएं तो प्रभु किसी न किसी दिन आपको भी आकर गले लगाएगा ।

१५ जून रात्रि भाई सुन्दर मंघनाणी एवं भाई मोहनलाल मन्सुखाणी ने एस्टोरिया होटल के हाल में पूज्य स्वामीजी के सत्संग प्रवचन का कार्यक्रम रखा । श्री राम बख़्शाणी ने पूज्य स्वामीजी एवं अन्य पधारे सन्तों का स्वागत किया । पूज्य स्वामीजी ने उपदेश करते हुए कहा कि आप यहां जो कुछ पैसे कमाते हैं, उनमें से कुछ हिस्सा परोपकार के कार्यों में खर्च करें । श्री ढालूमल जतवाणी, श्री लक्ष्मीचन्द लुल्ला, श्री मूरिजमल मंघनाणी, भाई विक्योमल श्राफ, राम बख्शाणी, सुन्दर मंघनाणी, मोहनलाल मन्सुखाणी एवं अन्य उदारचित्त होकर दान करते हैं । आप भी उदारचित्त होकर दान करें । दान के साथ-साथ दया धारण करें । इस सांसारिक पूंजी के साथ नाम की पूंजी भी संग्रह करें । यह पूंजी आपको सन्तों के संग से प्राप्त होगी । इसीलिए किसी न किसी सन्त महात्मा का संग करें तो आप संसार सागर को पार कर सकेंगे ।

प्रेमियो ! अपने बच्चों में शुभ संस्कार डालें । उन्हें धार्मिक विद्या पढ़ाएं । बच्चे देश की सच्ची धरोहर हैं । जैसे स्वस्थ शरीर के लिए साफ हवा, निर्मल जल और शक्तिवर्धक भोजन की आवश्यकता है वैसे ही मानसिक विकास के लिए शुभ संस्कारों की आवश्यकता है। बच्चे के विकास में माँ का बड़ा योगदान होता है । माता ही बालक को ईश्वर भक्त, देश भक्त, दानी, दाता, शूरवीर बना सकती है । किसी

महात्मा ने हातिमताई की उदारता की प्रशंसा सुनी । वह हातिम के पड़ोस में आया । वहां बालक खेल-कूद रहे थे । उस महात्मा ने उन बालकों में से एक बालक से पूछा कि हातिम कहाँ है? बालक ने कहा, "मैं हातिम हूं । आज्ञा करें । महात्मा ने कहा कि तुम वचन दो तो मैं आज्ञा करूं । बालक हातिम ने कहा, "वचन दिया ।" तब महात्मा ने कहा "बालक ! मैं तेरा सिर (सीस) चाहता हूं ।" बालक हातिम यह सुनकर उदास नहीं हुआ । उसने महात्मा से कहा कि मैं वचन-बद्ध हूँ, केवल मैं एक बार माँ से आशीर्वाद लेकर आऊं। बालक हातिम घर आया और उसने माता से कहा, "माँ ! एक महात्मा आया है, उसने मुझसे सीस माँगा है, मैंने उसे वचन भी दिया है ।" माँ ने कहा बेटा ! फिर तुमने उसे सीस देने में देर क्यों की? अब यदि वह महात्मा तुम्हारा सीस स्वीकार नहीं करे तो तुम्हारा यह सीस किस काम का? मुझसे क्यों पूछने आये? जाओ शीघ्र ही सीस देकर वचन का पालन करो ।" घर के बाहर खड़े महात्मा ने हातिम की माँ के वचन सुने । बालक हातिम घर से बाहर आया, उसने महात्मा के श्रीचरणों में नतमस्तक होकर कहा, "स्वामीजी ! अब मेरा सीस ले लें ।" महात्मा ने बालक से कहा, "हातिम ! तुम धन्य हो, तुम्हारी माता तो धन्य-धन्य है, जिसने तुम्हें जन्म दिया है । मुझे तुम्हारा सीस नहीं चाहिए । मैं तो तुम्हारी परीक्षा लेने आया था ।

प्रेमियो ! शताब्दियां गुजर जायेंगी, किन्तु हातिम का नाम उसकी उदारता के कारण अमर रहेगा । हातिम की उदारता का श्रेय उसकी माँ को है, जिसने उसमें ऐसे संस्कारों के बीज बोए । आप भी अपनी सन्तान में स्नेह, सहानुभूति, सच्चाई, सादगी, वीरता, भक्ति, उदारता आदि शुभ संस्कार के बीज बोएं । जिससे वे भविष्य में अपने कुल व जाति का नाम ऊंचा करें ।

१६ जून दोपहर पूज्य स्वामीजी ने शारजाह में बहन कविता चांडवाणी के घर में सत्संग प्रवचन किया । १७ जून प्रातः उन्होंने गुरु मन्दिर में अमृत वचनों की वर्खा करते हुए कहा कि प्रेमियो ! आपको धन्यवाद है कि आप सभी नियमित रूप से आकर गुरुवाणी का श्रवण कर लाभ प्राप्त करते हैं । नाम में बड़ी शक्ति है । सब कर्मों में उत्तम

कर्म है नाम स्मरण। सांसारिक काम तो पूरे होने वाले नहीं हैं। इसलिए प्रतिदिन कुछ समय बचाकर भगवद् भजन करना चाहिए।

कह टेऊं संसार के छोड़के सभी काम।
जागत सोवत राम जप, जो सत् चित्त सुख धाम॥

नाम स्मरण एवं सेवा में ही जीवन की सार्थकता है। दोहपर को पूज्य स्वामीजी श्री वासूलाल श्राफ के घर पधारे और भोजन ग्रहण किया। रात को उन्होंने डॉ. जमनू आसूदाणी के घर में सत्संग प्रवचन किया। १९ जून प्रातः उन्होंने सुशीला ढालूमल लखयाणी के घर में सत्संग प्रवचन किया। रात्रि को श्री नारायणदास अमरनाणी के घर में पूज्य स्वामीजी ने अमृत वचनों की वर्खा की। श्री नारायणदास की पत्नी दादी धनी के मन में भी प्रभु के लिए, सन्तों के लिए अगाध श्रद्धा व प्रेम है। उसने भजन गाते हुए पूज्य स्वामीजी का स्वागत किया। डॉ. दयाल 'आशा' ने भी भक्ति संगीत की वर्खा की। श्री नारायणदास अमरनाणी ने गौशाला एवं अन्य सेवा कार्यों के लिए धन भेंट किया।

२० जून प्रातः ११ बजे श्री शंकर मनवाणी के घर में पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन किया और भोजन ग्रहण किया। रात्रि को पूज्य स्वामीजी श्री मूरिजमल मंघनाणी और श्री राम बख्शाणी के घर में पधारे। बहन कमला मूरिजमल, बहन वीणा गुरुबख्शाणी ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत किया। उन्होंने वहां अमृत वचनों की वर्खा करते हुए कहा कि आप सांसारिक धन्धा व्यवहार करते प्रभु को नहीं भूलें। नाम की पूंजी संग्रह करें जो आपको इस लोक और परलोक में काम आयेगी। परमात्मा ने आपको क्या नहीं दिया है ! सबसे मूल्यवान मनुष्य शरीर दिया है, वह व्यर्थ नहीं गंवायें। सत्गुरु महराजजी भी फरमाते हैं:-

पूर्व पुण्य ते पाइया मानुष का अवतार।
कह टेऊं तिहं सफल कर, सुमरे सृजनहार॥

२१ जून को पूज्य स्वामीजी अशोक उद्धराणी के घर पधारे। वहां उन्होंने प्रवचन किया। और परिवार को आशीर्वाद दिया। रात्रि को श्री हरेश कलवाणी के घर पर उन्होंने अमृत वचनों की वर्खा करते हुए कहा कि प्रभु को मन की गहराई से प्रार्थना करें तो प्रभु अवश्य ही आपकी प्रार्थना सुनेंगे।

हृदय से जब प्रार्थना, कह टेऊं कर कोय ।
भगवत के तब कान में, पहुंचत शीघ्र सोय ।।

२२ जून प्रातः १० बजे प्रेम प्रकाश मन्दिर में सत्संग प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया । पहले सन्त मनोहरलाल, बहन कविता, बहन वीणा बख़्शणी, माता धनी अमरनाणी, महाराज चिमनलाल, सन्त अनन्त प्रकाश ने भजन गाये । तत्पश्चात् डॉ. दयाल 'आशा' ने पूज्य स्वामीजी के जीवन एवं सेवा कार्य की महिमा गाई । पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा:-

साधु मिले साहिब मिले, अन्तर रहे न रेख ।
मनसा वाचा कर्मना, साधु साहिब एक ।।

सच्चे सन्त एवं परमात्मा में कोई अन्तर नहीं है । आपको यदि किसी परिपूर्ण महात्मा का दर्शन हो जाये तो ऐसा समझो कि आपको प्रभु का दर्शन हो गया । सन्त प्रभु के नित अवतार हैं । ऐसे परिपूर्ण सन्त की कृपा से आपके भाग्य उदय होंगे । इन सन्तों की समर्पित भाव से सेवा करें । सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं:-

सन्त जनों की सेवा से, पूर्ण होवे आस ।
कह टेऊं ऋद्धि सिद्धि मिले, विपत विघन हो नास ।।

पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज भी पूर्ण महात्मा थे । वे प्रतिदिन घण्टों भगवद् भजन में मग्न रहते थे । उनके ललाट से आत्मिक प्रकाश झलकता था । वे परोपकार एवं दया की मूर्ति थे । प्रेमियो! आप भी नाम स्मरण, सेवा, परोपकार के कार्यों में तन, मन व धन सफल करें । प्रभु सदैव आपकी रक्षा करेगा, सहायता करेगा । जैसे एक माता बालक की देख रेख करती है, भगवान भी वैसे ही अपने भक्तों की देख रेख करते हैं । एक बार भक्त माधवदास बीमार हो गया। भगवान स्वयं उसकी सेवा के लिये आए । यह देखकर भक्त की आंखों में आंसू उमड़ आये । उसने प्रभु से कहा- "प्रभु! आप इतना कष्ट करके मेरे पास आये, इससे तो आप मुझे बीमार ही नहीं करते ।" भगवान ने कहा- "प्रकृति के नियमानुसार दुःख-सुख कार्मों का फल है । वह सभी को भुगतना पड़ता है । मैं भक्तों का दुःख सहन नहीं

कर सकता हूँ। इसी लिये मैं तुम्हारे पास आया हूँ।" भगवान के वचन सुनकर भक्त माधवदास का मन भर आया, वह भगवान के चरण-कमलों में गिर पड़ा। प्रभु ने उसे अपने गले लगाया। भगवान के स्पर्शमात्र से उसका दु:ख-दर्द दूर हो गया और भगवान अन्तर्ध्यान हो गये। प्रेमियो ! आप भी प्रभु के होकर रहें, इस समय आप माया के वश में हैं। प्रभु से स्नेह सम्बन्ध रखें तो वे आपकी सदैव सहायता करेंगे। आज हमारे प्यारे गंगाधर रोहड़ा और उसकी पत्नी वंदना ने भंडारे का आयोजन किया है, आप सभी प्रसाद ग्रहण करें। इन प्यारों ने सन्तों की बहुत सेवा की है आप भी स्मरण व सेवा करते रहें, नियमित रूप से इस मन्दिर में आकर नाम संकीर्तन करें।

२२ जून रात्रि श्री चन्दू मूलचन्दाणी ने एस्टोरिया होटल के हॉल में पूज्य स्वामीजी के सत्संग प्रवचन का कार्यक्रम रखा। पहले डॉ. दयाल 'आशा', सन्त अनन्तप्रकाश, सन्त देवप्रकाश ने सत्संग प्रवचन किया। तत्पश्चात पूज्य स्वामीजी ने अमृत वचनों की वर्खा करते हुये कहा कि आप यदि सुखी रहना चाहते हैं तो दूसरों को स्नेह व सहानुभूति दें। एक-दूसरे को प्रेम देने में कोई हानि तो नहीं, लाभ-ही-लाभ है। जहां एक-दूसरे के लिए प्रेम भावना है, वहां एकता भी अवश्य होगी। सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं:-

प्रेम जहां तहं एकता, तहां सदा सुख शान्ति।

सांसारिक सम्बन्धियों में भी आसक्ति न रखकर, उन्हें भगवद् रूप समझकर प्यार दें ! प्रेम अमृत धारा है और आसक्ति जहर (विष) के समान है। आप सभी को प्रेम का प्याला पिलाएं सत्गुरु महाराज जी कहते हैं:-

प्रेम जिसे सो मनुष है, प्रेम बिना पशु जान।
तांते सब से प्रेम कर, टेऊँ दे सन्मान॥

२३ जून प्रात: पूज्य स्वामीजी ने किशोर राजवाणी के घर सत्संग प्रवचन किया। रात्रि को उन्होंने चन्द्रसेन ढालूमल जतवाणी के घर में अमृत वचनों की वर्खा करते हुये कहा कि श्री ढालूमल जतवाणी के परिवार में एकता व स्नेह देखकर हमें प्रसन्नता होती है। प्यारे ढालूमल के मन में दीन-दुखियों के प्रति सहानुभूति है, इसलिए वे

उनकी सेवा के लिए उदारचित्त होकर दान करते हैं। जीवन को नाम स्मरण में और धन-पदार्थ शुभ कर्मों में, अर्थात् परोपकार के कार्यों में सफल करना चाहिए। भाई दिलीप जतवाणी ने सेवा-कार्यों के लिए सहयोग दिया।

२४ जून प्रातः पूज्य स्वामीजी ने पशु शेवकरामाणी के घर पर सत्संग प्रवचन किया। रात्रि को उन्होंने श्री हीरानन्द अदनाणी के घर पर अमृत वचनों की वर्खा की। श्री हीरानन्द की पत्नी बहिन इन्दिरा ने सन्तों की खूब सेवा की। २५ जून प्रातः पूज्य स्वामीजी ने श्री लोकेश उधराणी के घर सत्संग कर भोजन ग्रहण किया।

प्रेमियों की प्यास पूरी कर पूज्य स्वामीजी ने सन्त-मण्डल सहित २५ जून रात्रि को दुबई से बम्बई के लिए प्रस्थान किया। २ बजे रात्रि को वे बम्बई हवाई अड्डे पर पधारे। वहां पर कई प्रेमियों ने स्वागत किया। २६ जून प्रातः उन्होंने प्रेम प्रकाश मंडली माटुंगा में सत्संग प्रवचन किया। दोपहर को वे सिन्धुनगर आश्रम लौट आए।

पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज का जन्मदिन उत्सव स्वामी बसन्तराम महाराजजी के स्थान अजमेर में ३० जून से आयोजित किया गया। पूज्य स्वामीजी २८ जून रात्रि को इस उत्सव के सम्बन्ध में अजमेर पधारे। सन्त ब्रह्मानन्द ने उनका स्वागत-सत्कार किया। पूज्य स्वामीजी ने वहां तीन दिन अमृत वचनों की वर्खा करते हुए तप्त-हृदयों को शीतलता प्रदान की। उन्होंने सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज की महिमा गाते हुए कहा कि वे दया व नम्रता की मूर्ति थे। एक बार सत्गुरु महाराज जी जंगल से लौटकर अमरापुर स्थान पर आये तो देखा कि आश्रम का एक सेवक बाहर से आये एक सन्त से कुछ कड़ुआ बोल रहा था। तब सत्गुरु महाराज जी ने उस सेवक से पूछा कि तुम इस सन्त पर क्रोधित क्यों हो रहे हो? सेवक ने कहा- "गुरुदेव! यह सन्त आपके आसन पर आकर बैठ गया। यह देखकर मैंने इनसे कहा कि यहां से उठकर दूसरे आसन पर बैठें, तो दूसरे आसन पर नहीं बैठ रहे हैं। इसलिए मैं इन पर कोधित हुआ हूँ।" सत्गुरु महाराज ने कहा- "सन्त मेरे आसन पर आकर बैठ गया, तो क्या गलत किया है? मेरे आसन पर तो कभी चीटिंयां, तो कभी चिड़ियां भी आकर

बैठती हैं, ये तो फिर भी सन्त हैं। इन्हें बैठने दो, जिससे उनका मन प्रसन्न हो। थोड़ी-सी बात के लिए तुम सन्त को व्यर्थ में अप्रसन्न कर रहे हो। सन्त एवं सेवक सत्गुरु महाराज जी की विनम्रता देखकर आश्चर्य में पड़ गए। सत्गुरु महाराज ने उस सन्त से क्षमा याचना कर उनका स्वागत सत्कार किया और उन्हें भोजन खिलाया। आजकल अहंकार कितना बढ़ गया है। सत्गुरु महाराज निर्अभिमानी थे। अभिमान, अहंकार आध्यात्मिक मार्ग में बाधक है। यदि आप प्रभु को प्रसन्न करना चाहते हैं तो अहंकार का त्याग करें। प्रेमियो ! किसी-न-किसी परिपूर्ण गुरु की शरण लें और उन से गुरुमन्त्र की दीक्षा लेकर गुरुमन्त्र की साधना करें तो आपका कल्याण होगा। सत्गुरु महाराज जी फरमाते हैं:-

सत्गुरु की कृपा बिना, सरे न कोई काज।
तांते गुरु की शरण ले, कह टेऊँ तज लाज॥

७ जुलाई गुरु पूर्णिमा के दिन प्रातः सिन्धुनगर प्रेम प्रकाश आश्रम में हजारों प्रेमी पूज्य स्वामीजी की पूजा-उपासना करने के लिए पहुँचे। उस दिन पूज्य स्वामीजी ने उपदेश करते हुए कहा कि आज का दिन प्राचीन काल से गुरु-पूजा-दिवस के रूप में मनाया जाता है। गुरु ही ज्ञान का दाता है। गुरु के बिना किसी की मुक्ति नहीं होती। सत्गुरु महाराज भी गुरु की महिमा गाते हुए कहते हैं:-

कह टेऊँ गुरुदेव है, तीर्थराज प्रयाग।
गंगा यमुना चरण युग, सरस्वती जान प्रयाग॥

सत्गुरु तीर्थराज प्रयाग के समान है, उनके दोनों चरण गंगा व यमुना के समान पवित्र हैं और उनके चरणों की धूलि सरस्वती नदी के समान पवित्र है। हर एक सन्त ने गुरु की बड़ी महिमा प्रतिपादित की है। सन्त कबीरदासजी तो परमात्मा से भी अधिक गुरु को महत्व देते हैं। वे कहते हैं :-

गुरु गोबिन्द दोनों खड़े, काके लागूं पांय।
बलिहारी गुरु आपणे, जिन गोबिन्द दियो बताय॥

सत्गुरु ही व्यवहार एवं आध्यात्मिक मार्ग के लिये हमारा मार्गदर्शन

करते हैं तथा प्रभु प्राप्ति का मार्ग दिखाते हैं। प्रेमियो ! गुरु से यह प्रार्थना करें :-

चरणों का चाकर करो, सत्गुरु कृपा धार।
कह टेऊँ सेवा करूँ निश दिन तेरे द्वार॥

प्रातः ११ बजे पूज्य स्वामीजी ने स्वामी ग्वालानन्द महाराज जी की पुण्य तिथि उत्सव के सम्बन्ध में उनके स्थान पर प्रवचन करते हुए कहा कि स्वामी ग्वालानन्द जी महाराज न केवल महान सन्त थे अपितु उच्चकोटि के सन्त-कवि भी थे। उनकी वाणी 'श्री ग्वालानन्द ग्रन्थ' में संग्रहीत है। इस वाणी के श्रवण एवं पठन से आनन्द की प्राप्ति होती है। स्वामी नारायणदासजी को धन्यवाद है कि वे यहां स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज की ज्योति जगा रहे हैं।

५ जुलाई पूज्य स्वामीजी कुमारनगर धुलिया पधारे। वहां प्रेम प्रकाश मन्दिर के वार्षिक उत्सव के सम्बन्ध में उन्होंने तीन दिन अमृत वचनों की वर्खा की। १० जुलाई दोपहर को पूज्य स्वामीजी के स्वागत में शोभा यात्रा निकाली गई। ११ जुलाई प्रातः ११ बजे पूज्य स्वामीजी ने स्वामी टेऊँराम सिन्धी हाईस्कूल के नवीन भवन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर डॉ. दयाल 'आशा' ने कहा कि पूज्य स्वामीजी ने इस नव-निर्मित विद्यालय के लिए ढाई लाख रुपये दिये हैं। अन्य दानदाताओं से भी मेरा अनुरोध है कि विद्या मन्दिर के लिए आर्थिक सहायता दान स्वरूप भेंट करें।

पूज्य स्वामीजी ने सभी को आशीर्वाद देते हुए कहा कि सभी कार्यकर्ताओं को साधुवाद है। श्री मेंघराज रेलन के पुरुषार्थ से यह निर्माण कार्य आरम्भ हुआ। प्यारे मेंघराज अपाहिज बच्चों की बहुत सेवा करते थे। ऐसे निष्काम सेवकों की आवश्यकता है। ये विद्यालय शिक्षा के केन्द्र हैं। इस विद्यालय में विद्यार्थियों को न केवल पाठ्य पुस्तकें पढ़ाई जायें किन्तु उन्हें धार्मिक शास्त्रों की शिक्षा भी दी जाय। विद्यार्थियों में शुभ संस्कारों का संचार करें जिससे भविष्य में वे आदर्श नागरिक बनें।

सांय मन्दिर में पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि सन्त पहिलाजप्रकाश ने यहां राम नाम की धूम मचाई। प्रेमियों!

आप भी यहां नियमित रूप से आकर सत्संग का लाभ उठायें। मानव जीवन नाम स्मरण में सफल बनायें। एक गुरु ने एक शिष्य से कहा कि परमात्मा को सर्वव्यापी समझो, सर्वरूप जानों, सब प्राणियों में वह ब्रह्म व्यापक है। एक दिन वह शिष्य रास्ते से जा रहा था। उधर उसके सामने एक हाथी आ रहा था। महावत ने उस युवा शिष्य को आवाज दी कि रास्ते से हट जाओ, परन्तु उस युवा ने विचार किया कि गुरु ने कहा है कि सभी जीवों में परमात्मा व्यापक है, फिर मैं हाथी से डर कर रास्ते से क्यों हटूं। जैसे ही वह युवक आगे बढ़ा तो उस मस्त हाथी ने उसे उठाकर दूर फेंक दिया। उसे बहुत चोट लगी। वह मन में सोचने लगा कि गुरु ने मुझे क्या उपदेश दिया है। उनके उपदेश के अनुसार चलने से मुझे तो पीड़ा भुगतनी पड़ी है। जैसे ही वह युवक ठीक हो गया तो कुछ दिनों पश्चात् गुरु के पास आया। उसने गुरु को सारी घटना सुनाई। गुरु ने उसे समझाया बेटा ! हाथी में वह परमात्मा था तो महावत में भी वही ब्रह्म व्यापक था। जब महावत ने तुम्हें दूर हटने का संकेत किया तो तुमने उसकी अवहेलना क्यों की? यदि तुम उसकी अवहेलना नहीं करते तो तुम्हें यह पीड़ा भुगतनी नहीं पड़ती। प्रेमियों ! आप सन्तों की शिक्षा को अच्छी तरह समझने का प्रयास करें, तत्पश्चात् उसका अनुसरण करें तो कोई आपका बाल भी बांका नहीं कर सकता।

१२ जुलाई पूज्य स्वामीजी मालेगांव पधारे और वहां उन्होंने सत्संग प्रवचन किया। १३ जुलाई वे सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये।

श्री गोवर्धन टहलरामानी बम्बई में रहता है। सिन्ध से ही उसके पिता श्री तेजूराम एवं उसके परिवार का स्नेह सम्बन्ध सतगुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज, सतगुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज एवं पूज्य स्वामीजी से रहा है। पूज्य स्वामीजी बम्बई (खार) में थे तब श्री गोवर्धन उनके पास आया। पूज्य स्वामीजी ने उससे पूछा कि तुम अकेले क्यों आये हो, तुम्हारी पत्नी लाज क्यों नहीं आई है? गोवर्धन ने कहा कि उसे टांग में बहुत दर्द है, वह चल नहीं सकती। एक महीने से वह बिस्तर पर लेटी है, इसीलिए वह आ नहीं सकी। पूज्य स्वामीजी ने कहा "सायंकाल तुम्हारे घर आयेंगे।" गोवर्धन बहुत प्रसन्न हुआ। वह

घर आया और उसने पत्नी से पूज्य स्वामीजी के आने का समाचार सुनाया ! सायं पूज्य स्वामीजी गोवर्धन की पत्नी लाज की देख-रेख करने के लिए उसके घर पधारे । उसी समय लाज उमंग में आकर बिस्तर से उठकर द्वार पर पूज्य स्वामीजी का स्वागत करने के लिये खड़ी हो गई । जैसे ही द्वार पर पूज्य स्वामीजी को उसने प्रणाम किया तो पूज्य स्वामीजी ने उससे कहा "बेटी ! हम तुम्हें देखने के लिए आये हैं।" कल से वडाला में सत्संग में आओ । बाजार से महानारायणी तेल मंगवाकर जहां दर्द है वहां पर मालिश करो तो भगवद् कृपा से ठीक हो जाओगी । बहन लाज पूज्य स्वामीजी का दर्शन कर और आशीर्वाद वचन सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुई । उसका आधा दर्द तो वहीं दूर हो गया । उसने पूज्य स्वामीजी की आज्ञानुसार महानारायणी तेल मंगवाकर जहां दर्द था वहां लगाया तो प्रभु की कृपा एवं सत्गुरु महाराज के आशीर्वाद से वह ठीक हो गई । दूसरे दिन ही वह पूज्य स्वामीजी के आदेशानुसार सत्संग में भी गई और उसने पूज्य स्वामीजी से आशीर्वाद भी लिया । स्वामीजी ने बहन लाज पर ऐसी दया दृष्टि की कि वह एक ही दिन में ठीक हो गई ।

पूज्य स्वामीजी ने कई प्रेमियों के दुःख दर्द दूर किये, किन्तु वे दिखावा नहीं करते थे । कोई भी शारीरिक या मानसिक रोगी उनके पास आते थे तो वे उनसे कहते थे कि सर्वप्रथम भगवान और सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की मूर्ति को नतमस्तक प्रणाम करके आओ तो प्रभु एवं सत्गुरु महाराज आपका कल्याण करेंगे ।

एक बार मनोरवा लैबेरिया में रहने वाले भाई मोहन ददाणी को कमर में असहनीय दर्द हुआ । उसने वहां उपचार किया, किन्तु दर्द दूर नहीं हुआ । तत्पश्चात् वह भारत में अपने घर पूना में आया । उसके मन में विचार आया कि क्यों न मैं सिन्धुनगर में सत्गुरु महाराजजी के वार्षिक उत्सव में जाकर पूज्य स्वामीजी से आशीर्वाद लूं जिससे यह कमर का दर्द दूर हो जाये । वह इस विचार से सिन्धुनगर आश्रम पर वार्षिक उत्सव में आया । उत्सव की अन्तिम रात्रि वह सारी रात जागरण कर सत्संग प्रवचन सुनता रहा और मन ही मन में पूज्य स्वामी से प्रार्थना करता रहा कि कमर का दर्द दूर हो जाये । पूज्य स्वामीजी

की कृपा से श्री मोहनलाल का दर्द उसी दिन दूर हो गया। विश्वास की सदैव विजय होती है।

१५ जुलाई से २२ जुलाई तक लोकहित कुटीर हाल खार, बम्बई में पूज्य स्वामीजी के सत्संग प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। गोबिन्दराम बूलचन्दाणी, हीरानन्द रोहड़ा, गोबिन्दराम दुल्हनोमल, चन्दू पहूजा एवं अन्य प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत किया। १५ जुलाई सायं पूज्य स्वामीजी ने सत्संग यज्ञ का आरम्भ करते हुए कहा कि यहां सत्संग में एकाग्रचित्त होकर सन्तों के वचन श्रवण करें और घर में जाकर उनका चिन्तन करें। चिन्तन के पश्चात् उन वचनों पर मनन करें। सन्तों की शिक्षा को अपने जीवन में उतारें। सत्संग द्वारा आपको चारों पदार्थों की प्राप्ति होगी। धन्धे व्यवहार से आपकी कितनी प्रीति है, इससे अधिक प्रीति प्रभु के प्रति होनी चाहिए तो आपको आनन्द की प्राप्ति होगी। सतगुरु महाराजजी भी फरमाते हैं:-

कह टेऊँ सत्संग से, मिलत पदार्थ चार।
तांते तुम सत्संग कर, निश्चय मन में धार॥

१६ जुलाई पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि व्यवहार में स्वार्थी नहीं होना चाहिए। आजकल हर क्षेत्र में स्वार्थ बढ़ गया है। निष्काम नि:स्वार्थी मनुष्य का ही जगत् में यश होता है। भक्त प्रहलाद का सुपुत्र विरोचन एवं ब्राह्मण कुमार अंगरा का बेटा सिधनवा दोनों केशनी नामक कन्या से विवाह करना चाहते थे। इस बात पर दोनों युवाओं का आपस में वादविवाद हुआ। अन्त में दोनों ने यह निर्णय किया कि दोनों में से जो श्रेष्ठ हो वह केशनी से विवाह करे और दूसरा अपने प्राण त्यागे। फिर प्रश्न उठा कि दोनों में से श्रेष्ठ कौन है? इसका निर्णय कौन करे? विरोचन ने कहा कि मेरा देवताओं में विश्वास नहीं है। अत: निर्णय कौन करे? तब सिधनवा ने भक्त प्रहलाद को निर्णायक के रूप में चुना। भक्त प्रहलाद ने अपना निर्णय देते हुए कहा "बेटा विरोचन ! श्री अंगरा मुझसे और सिधनवा की माता तुम्हारी माता से श्रेष्ठ हैं, इसलिए सिधनवा तुम से श्रेष्ठ है, सिधनवा ही केशनी से विवाह करे।" भक्त प्रहलाद ने निष्पक्ष होकर

अपना निर्णय दिया। उसने अपने बेटे विरोचन के सम्बन्ध में तनिक भी विचार नहीं किया। यदि आज शासक या जनता ऐसी निःस्वार्थी हो तो देश का कल्याण हो जाये। भक्त प्रहलाद का निर्णय सुनकर सिधनवा इतना तो प्रसन्न हुआ कि उसने न तो विरोचन को मृत्यु दण्ड दिया और न ही उसने केशनी से विवाह किया। उसने केशनी का विवाह विरोचन से ही करवाया। इसलिए सिधनवा के त्याग और भक्त प्रहलाद की निष्पक्षता का संसार में यश हुआ। प्रेमियों ! आप भी स्वार्थ का त्याग करें निष्पक्ष भावना से व्यवहार करें तो सारा देश सुखी व सम्पन्न हो जाये। आप दूसरों का भला करेंगे तो प्रभु आपका भला करेगा।

१७ जुलाई रात्रि पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि यदि किसी गांव या नगर में कोई विशेषज्ञ डाक्टर आ जाये तो रोगी उसके पास जाकर उपचार करवाएंगे तो उनके शारीरिक रोग दूर हो जायेंगे। वैसे ही यदि आपको मन की शान्ति चाहिए तो उसका उपचार सन्तों के पास है। सन्त मन के चिकित्सक हैं। आप उनकी शरण लेंगे तो आपको मानसिक पीड़ा से मुक्ति मिल जायेगी। यदि गांव में या नगर में कोई सन्त महात्मा पधारे तो आप उनकी शरण लें और अपनी व्यथा उन्हें सुनायें तो वे अवश्य ही आपका उपचार करेंगे। पूज्य स्वामीजी ने निम्प भजन गाया

सन्तों का कर संग मन तू, सन्तों का कर संग।
सन्तों के संग होय सुधारा, बिगड़े मनुष कुसंग ।।
(१) साध संगति में जो कोई आवे, रंग उसी में रंग ही जावे।
जैसे कीट भृंग, मन तू सन्तों का कर संग ।।
(२) सन्तों का संग है सम चन्दन, बन जाये सारा चन्दन वन।
देता आत्म रंग, मन तू सन्तों का कर सग ।।
(३) सन्तों का संग दीप उजारा, दूर करत अज्ञान अंधारा।
रोशन हो सब अंग, मन तू संतों का कर संग ।।

(४) सन्तों का संग परम पवित्र, हरकर अवगुण करे स्वतन्त्र।
मारे न माया डंग, मन तू सन्तों का कर संग ॥
(५) कहे टेऊँ कर संग विचारे, साध संगति है उत्तम प्यारे।
जग से करे नि:संग, मन तू सन्तों का कर संग ॥

पूज्य स्वामीजी ने २१ जुलाई तक प्रतिदिन रात्रि को विभिन्न विषयों पर प्रवचन कर मार्ग दर्शन किया । २२ जुलाई रविवार को प्रात: ८ बजे पूज्य स्वामीजी ने बहनजी की दरबार में अमृत वचनों की वर्खा की । सायं उन्होंने लोकहित कुटीर हाल में सत्संग यज्ञ का समापन करते हुए आयोजकों को साधुवाद दिया । उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि घर में माता, पिता, दादा दादी, सास ससुर, वृद्धों, सन्तों एवं दीन दुखियों की सेवा करें तो उनके आशीर्वाद से आप भाग्यशाली हो जायेंगे । प्रेमियों ! आशीर्वाद हृदय से निकलता है । इसीलिए दूसरों के दिलों को प्रसन्न करें । किसी को भी अप्रसन्न नहीं करें । सदैव मधुर बोलें, सभी को स्नेह व सम्मान दें, पशु पक्षियों को भी प्यार करें । प्रेमी मनुष्य प्रभु के निकट होता है । आप प्रभु को प्रेम से पुकारेंगे तो प्रभु भी किसी न किसी रूप में प्रकट होकर आपकी प्यास पूरी करेगा । सत्गुरु महाराजी भी फरमाते हैं :-

प्रेम जिस सो मनुष्य है, प्रेम बिना पशु जान ।
तांते सब से प्रेम कर, टेऊं दे सन्मान ॥

प्रेमियो ! आप सबको धन्यवाद है कि आप लोगों ने एक सप्ताह तक सन्तों के वचन श्रवण किये, किन्तु आपको सच्चा लाभ तब प्राप्त होगा जब इन वचनों का अनुसरण करेंगे ।

२२ जुलाई रात्रि पूज्य स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम पर लौट आये। २७ जुलाई उन्होंने भोपाल के लिए प्रस्थान किया । वे २८ जुलाई प्रात: भोपाल में पधारे । पूज्य स्वामीजी सन्त हिरदारामजी के स्थान पर आये । वहां उन्होंने सन्त हिरदाराम साहब से ज्ञान गोष्ठी की । सायं उन्होंने प्रेम प्रकाश मन्दिर में सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि शीघ्र ही इस मन्दिर का निर्माण-कार्य पूरा करें, जैसे यहां सन्त-महात्मा, विद्वान आकर आपका मार्गदर्शन करें । माता विद्या, प्यारे मिरचूमल,

गोप कन्हैयालाल, सूमोमल, नारायण को धन्यवाद है जो उत्साह से यह कार्य कर रहे हैं । आप सत्गुरु महाराज का मन्दिर बनाएंगे तो सत्गुरु महाराज आपके भवन बनाएंगे । प्रेमियो ! सत्संग का मूल उद्देश्य है, प्रभु के निकट आना । प्रभु के निकट वह मनुष्य हो सकता है, जिसके मन में प्रभु के लिए प्यास होगी, जो प्रेम के आंसू बहाता बार-बार प्रभु को पुकारेगा । पुकार भी होठों से नहीं, हृदय से होनी चाहिए । सांसारिक कामकाज करते हुए परमात्मा को न भूलें । पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महराज एक उदाहरण देते थे कि सिन्धी में कहावत है कि एक हाथ में दो खरबूजे नहीं उठा सकते। अर्थात् सांसारिक काम और साथ-साथ भगवद् भक्ति दोनों सम्भव नहीं हैं । किन्तु यदि आप किसी थैले में तीन-चार खरबूजे डालकर हाथ में थैला उठाएं तो आसानी से पांच खरबूजे भी उठा सकते हैं, वैसे ही आप यदि चाहें तो सांसारिक कर्तव्यों का पालन करते हुए सेवा, परोपकार एवं भगवद् भक्ति कर सकते हैं, जहां चाह है वहां राह है। नाम की पूंजी संग्रह करें, सत्कर्मों का फल संग्रह करें तो आपका यह लोक तो सुधरेगा ही साथ ही परलोक भी सुधर जायेगा।

२९ जुलाई भी पूज्य स्वामीजी ने बैरागढ़ में अमृत वचनों की वर्खा की । ३० जुलाई वे गंज बासोदा पधारे । वहां भी उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन कर प्रेमियों की प्यास पूरी की । १ अगस्त पूज्य स्वामीजी दतिया आये । वहां उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि यदि हम मनुष्य देह प्राप्त करके भी प्रभु से प्रेम का नाता नहीं जोड़ें, तो किस योनि में प्रभु को याद करेंगे? हमारे मन में जगत् के पदार्थों एवं सांसारिक सम्बन्धियों के प्रति आसक्ति है, प्रभु को तो हम भूल ही गए हैं । प्रेमियो ! और सब बातों को भुला दें किन्तु परमात्मा को न भूलें । सत्गुरु महाराज भी फरमाते हैं:-

राम नाम में रत नहीं, मन माया में जास ।
कह टेऊँ संसार में, जन्म व्यर्थ है तास ।।

सन्तों का काम ही है नाम जपना और नाम जपाना । सन्त आज आपके पास नाम का सन्देश लेकर आये हैं । बहुत वर्षों के पश्चात्

हम यहां आएं है । सिन्धी समुदाय से हमारा अनुरोध है कि आपस में एकता के सूत्र में बँधकर सिन्धी जाति का नाम ऊंचा करें, अपने अमूल्य श्वास नाम स्मरण एवं सत्कर्मों में सफल करें ।

३ अगस्त ९० को पूज्य स्वामीजी गंज बासौदा, दतिया व डबरा होते हुए ठीक ११.५० बजे ग्वालियर पहुँचे । ग्वालियर पहुँचने पर पूज्य स्वामीजी का हार्दिक स्वागत-सत्कार किया गया ।

५ अगस्त दोपहर ११ बजे नगरवासियों की ओर से सिन्धी जनरल पंचायत के तत्वावधान में सिन्धी धर्मशाला में पूज्य स्वामीजी का अभिनन्दन किया गया । पूज्य स्वामीजी ने इसी दिन सायंकाल श्री झूलेलाल मन्दिर दानाओली में झूलेलाल मण्डल व झूलेलाल परमार्थ ट्रस्ट द्वारा आयोजित अभिनन्दन समारोह में भाग लिया ।

६ अगस्त पूज्य स्वामीजी की ८४वीं जयंती का पावन दिवस, इस दिन रक्षाबन्धन होने के कारण भी कई प्रेमियों ने स्वामीजी को राखियाँ बांधी । ज्ञात हो कि स्वामीजी उल्हासनगर के बाहर जन्म दिवस पर कहीं बाहर रहे तो उसका परम सौभाग्य ग्वालियर वासियों को ही मिला। इस दिन पूज्य स्वामीजी का ८४वां जन्म-दिन पूज्य स्वामीजी की उपस्थिति में पूज्य स्वामी गणेशानन्दजी महाराज के सान्निध्य में भक्ति भाव व उल्लासमय वातावरण में श्रद्धा उमंग के साथ मनाया गया ।

प्रातः ५.३० बजे पूज्य स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज को गौदुग्ध मिश्रित पवित्र नदियों के पावन जल से स्नान कराया गया । तत्पश्चात् स्वामीजी द्वारा परम पूजनीय सद्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज, सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज, विघ्न विनाशक श्रीगणेश भगवान, श्रीराम दरबार, त्रिपुरारी भगवान शंकर, राधा-कृष्ण के श्री विग्रहों (स्वरूपों) का अभिषेक किया गया । प्रातः ७.३० से ८.३० बजे तक हवन कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ । प्रातः ९ बजे से ११ बजे तक प्रवचनामृत की वर्षा प्रेमियों पर हुई । इसी मध्य माधव अन्धाश्रम के नेत्रहीन बालकों व समाज की सफेदपोश महिलाओं को वस्त्र वितरण पूज्य स्वामीजी के करकमलों द्वारा दिए गए । दोपहर ११.३० बजे सर्वसाधारण के लिये भंडारा आरम्भ होकर ३ बजे तक चला जिसमें हजारों की संख्या में

नगरवासियां द्वारा श्री गुरु महाराज का पावन प्रसाद ग्रहण किया गया।

रात्रि ९ बजे से ११.३० बजे तक विशेष सत्संग सभा हुई, जिसमें पूज्य स्वामीजी का प्रेम प्रकाश मण्डल की ओर से स्वागत किया गया। स्वागत कार्यक्रम के पश्चात् पूज्य स्वामीजी द्वारा ८४ चिन्हित दीपक जलाया गया। तालियों की गड़गड़ाहट व सतगुरु महाराज जी की गगनभेदी जय-जयकार के मध्य विशेष रूप से तैयार ८४ पाव दूध का केक पूज्य स्वामीजी द्वारा काटा गया। इसके बाद पूज्य स्वामी गणेशानन्द जी महाराज द्वारा पूज्य स्वामीजी को 'प्रेम प्रकाश सन्देश', 'प्रेम प्रकाश मण्डल' व 'स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति' द्वारा तैयार स्वामीजी के चित्रयुक्त स्मृति-चिन्ह, वर्षग्रन्थि प्रतीक स्वरूप भेंट किया गया।

इस अवसर पर पूज्य स्वामीजी का स्वागत करते हुए प्रेम प्रकाश आश्रम ग्वालियर के महन्त पूज्य स्वामी गणेशानन्दजी महाराज ने स्वामीजी से सद्गुणों का बखान करते हुए स्वामीजी द्वारा किए जा रहे पारमार्थिक व सामाजिक कार्यों के बारे में विस्तार से बताया। आपने कहा कि स्वामीजी नाम स्मरण के साथ-साथ समाज सेवा के कार्यों में भी अग्रणी हैं। प्रेम प्रकाश आश्रम की महिलाओं द्वारा भी स्वामीजी को प्रतीक स्वरूप उपहार भेंट किए गये।

पूज्य स्वामीजी ने अपने आशीर्वचन से उपस्थित विशाल जन समुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा कि आप को ईश्वर से सदैव यही मांगना चाहिये कि आपका मन सदैव प्रभु स्मरण में लगा रहे। पूज्य स्वामीजी ने कहा कि आज हर व्यक्ति में अभिमान और ईर्ष्या की मात्रा बढ़ गई है जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए, इसलिए आज श्रावण पूर्णिमा के अवसर पर हमें नम्रता से व्यवहार करने का संकल्प करना चाहिए। मन में नम्रता रखने से दिमाग भी नम्र रहता है, अन्दर-बाहर एक जैसी नम्रता होनी चाहिए। इससे सम्पर्क में आने वाला व्यक्ति भी प्रसन्न रहेगा। पूज्य स्वामीजी ने सभी को आव्हान करते हुए कहा कि गरीबों, यतीमों, मूक प्राणियों की सेवा करें व आपस में प्रेम पूर्ण एकता में रहें। आपसी कटुता-द्वेष का नाश करें, इसी के साथ अपना जीवन प्रभु नाम स्मरण में सफल करें। आप कुसंग त्याग करें। मांस, मदिरा,

जुआ जैसे दुर्व्यसनों व दहेज लेन-देन जैसी सामाजिक कुरीतियों से दूर रहने की सलाह दी। इस सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी ने प्रेमियों को कई दृष्टान्तों द्वारा भी समझाने का प्रयास किया।

पूज्य स्वामीजी के ८४वें जन्म दिवस पर देश-विदेश से कई प्रेमियों द्वारा ग्वालियर प्रेम प्रकाश आश्रम पर पूज्य स्वामीजी को विभिन्न संचार माध्यमों से शुभ कामनाएं देते हुए पूज्य स्वामीजी के चिरायु होने की शुभ कामना सन्देश भी प्राप्त हुए। स्वामीजी के वर्षग्रंथि समारोह में जयपुर, उल्हासनगर, बम्बई, कानपुर, कोटा, आगरा, झांसी, मुरैना, डबरा व दतिया से लगभग दो सौ प्रेमी सम्मिलित हुए। पूज्य स्वामीजी की वर्षग्रंथि समारोह के लिए मंच को अति आकर्षक रूप से विभिन्न प्रकार के फूलों से सजाया गया था एवं सुगंधित इत्र की फुहार प्रेमियों पर वर्षायी जा रही थी। समारोह के अन्त में प्रेम प्रकाश मण्डल ग्वालियर द्वारा पूज्य स्वामीजी व बाहर से पधारे हुये सभी माननीय अतिथियों व पूज्य सन्त मण्डल का आभार व्यक्त करते हुये पूज्य स्वामीजी के चिरायु होने की कामना की गई।

८ अगस्त पूज्य स्वामीजी वृन्दावन पधारे। श्रावण मास होने के कारण ब्रज में चारों ओर आनन्द की छटा छाई हुई थी। पूज्य स्वामीजी बांकेबिहारी मन्दिर में भगवान के दर्शन के लिए गए और वहां पर रसेश्वर की रासलीलाओं का उन्होंने रसास्वादन किया। ९ अगस्त पूज्य स्वामीजी हरिद्वार पहुँचे। वहां वे चार दिन ठहरे। वहां उन्होंने सन्त अर्जनप्रकाश, सन्त अशोकलाल से आश्रम एवं स्वामी सर्वानन्द घाट के निर्माण के सम्बन्ध में विचार-विमर्श किया। चारों दिन पूज्य स्वामीजी ने गंगा मैया में पावन स्नान किया और सायं सत्संग प्रवचन भी किए। १३ अगस्त वे अमरापुर स्थान जयपुर पधारे। १४ अगस्त श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन दिन पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि भगवान श्रीकृष्ण सोलह कला सम्पूर्ण अवतार थे। ऐसे परिपूर्ण परब्रह्म को प्रेम से पुकारें। पूज्य स्वामी ने भगवान श्री श्यामसुन्दर की महिमा का निम्न भजन गाया :

धन श्रीकृष्ण, धन श्री मोहन, धन धन मदन मुरारी।

(१) धन धन मात यशोदा तेरी, जिससे प्रकट आप हुए ।
दर्शन देकर आनन्द दिया, खेले गोद मंझारी ।।
(२) धन नन्दराइ पिता तुम्हारे, जिसके सुत कहलाये ।
ब्रज बचाकर आनन्द दिया, नाम पड़ा गिरधारी ।।
(३) धन धन ग्वाल बाल सभी तेरे, जिन सगं बहुत कलोल किये।
माखन चुराकर तिन्हें खिलाया, लीला बहुत विस्तारी ।।
(४) धन धन गोविन्द गैया तेरी, जिनको वन में ले जाते।
घास खिलाते नीर पिलाते, करत सदा रखवारी ।
(५) धन धन ब्रज मंडल है तेरा, रहकर जहाँ बहु खेल किये।
बीन बजाकर रास रचाकर, मोही सखियाँ सारी ।
(६) कहे टेऊं धन गीता तेरी, जिसमें निर्मल ज्ञान भरा ।
पढ़कर, सुनकर भक्त तुम्हारे, जावन बलि बलिहारी ।।

प्रेमियो ! आज सारी रात जागरण कर भगवान श्रीकृष्ण का ध्यान करें और नाम जपें तो आपका कल्याण होगा ।

जे जागया तिन पाया पाया, जो सोया तिन खोया खोया ।

१६ अगस्त तक पूज्य स्वामीजी अमरापुर स्थान पर सत्संग प्रवचन करते रहे । १७ अगस्त वे सिन्धुनगर लौट आये ।

जनता जनार्दन परिषद् की ओर से पूज्य स्वामीजी का जन्म दिन उत्सव १७ अगस्त से १९ अगस्त तक सिन्धुनगर आश्रम पर मनाया गया । १७ अगस्त श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ का पाठ आरम्भ किया गया। दोपहर को सेन्ट्रल हास्पीटल में बीमारों एवं अपाहिज बच्चों में फल बांटे गये । १८ अगस्त सायं आश्रम में विद्यार्थियों की भक्ति संगीत प्रतियोगिता रखी गई । विभिन्न विद्यालयों के ३० विद्यार्थियों ने भाग लिया । उन्हें पूज्य स्वामीजी ने पुरस्कार दिये । १९ अगस्त प्रातः प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी को दूध व गंगा जल से स्नान कराया। प्रातः प्रेम

प्रकाश ग्रन्थ के पाठ की समाप्ति के पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने अमृत वचनों की वर्खा की । तत्पश्चात् श्री चांडूमल 'परदेसी' ने हवन यज्ञ किया । यज्ञ के बाद पूज्य स्वामीजी ने जनता जनार्दन परिषद् की ओर से ४०० गरीब बहनों को अन्न-धन की सहायता की । अनाथ-अपाहिज बच्चों की सेवा की गई ।

सायं कई गायकों ने पूज्य स्वामीजी की महिमा गाते हुए भक्ति संगीत की वर्खा की । डॉ. दयाल 'आशा' ने जनता जनार्दन परिषद् के सेवा कार्य का विवरण प्रस्तुत करते हुए पूज्य स्वामीजी के परोपकारी जीवन की महिमा गाई । श्री सभागचन्द चावला, परसराम कांग्रेसी, हीरालाल सभनदासाणी, जीवणदास आहूजा, लक्ष्मणदास पंजवाणी, प्रो. गोप रूपचन्दाणी ने पूज्य स्वामीजी को पुष्पांजलि अर्पित की ।

पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आप लोगों ने जो मेरी प्रशंसा की, यह प्रशंसा मेरी नहीं, कार्य की महिमा है ! ईश्वर की अनुकम्पा, पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज, पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के आशीर्वाद एवं आप सभी प्रेमियों के सहयोग से सभी सेवा कार्य हो रहे हैं । स्मरण एवं सेवा में ही जीवन की सार्थकता है । प्रभु हमारी कितनी न देखरेख करता है । उसने हमें यह अमूल्य मनुष्य योनि दी है, सुख दिये हैं, फिर भी हम उसे भुला बैठे हैं । सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं :-

चौरासी लख योनि फिर, पाइ दुर्लभ देह ।
कह टेऊँ हरि भजन से, सफली कर ले एह ॥

प्रेमियो ! नाम स्मरण के साथ-साथ प्रतिदिन कोई न कोई परोपकार का कार्य करें, दीन दुखियों, पशु पक्षियों की सेवा करें तो प्रभु अवश्य प्रसन्न होंगे ।

२१-२२ अगस्त पूज्य स्वामीजी ने झूलेलाल मन्दिर कुर्ला, बम्बई में सत्संग प्रवचन करते हुए श्री अमर उडेरोलाल की महिमा गाई । २६ अगस्त रात्रि को उन्होंने चालीहे साहब के स्थान पर सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि उन प्रेमियों को धन्यवाद है जो चालीस दिन तक

श्री वरुणदेव का व्रत धारण कर श्री वरुणदेवता की पूजा उपासना करते हैं । कुछ प्रेमी इस व्रत समापन के पश्चात् जल देवता की सन्तान मछलियां खाते हैं, यह पाप है । वे अज्ञानी एवं स्वार्थी लोग कहते हैं कि मछलियां जल देवता का फल हैं, परन्तु यह फल नहीं जल देवता की सन्तान हैं । इससे जल देवता अप्रसन्न होंगे । प्रेमियो ! आप माँस भक्षण एवं शराब का परित्याग करें तो श्री वरुण देवता आशीर्वाद करेंगे ।

२७ अगस्त रात्रि पूज्य स्वामीजी चालीहे साहब पर ज्योति का दर्शन करने गये । वहां भक्त खानूमल, खीअलदास विशनदास, पूज्य स्वामीजी का स्वागत किया । २८ अगस्त को वे स्वामी क्षमादास के स्थान पर सिन्धुनगर-३ में बाबा श्रीचन्द भगवान के जन्म उत्सव में सम्मिलित हुए । दोपहर को उन्होंने कानपुर के लिए प्रस्थान किया। उन्होंने तीन दिन प्रेम प्रकाश मन्दिर कौशलपुरी में अमृत वचनों की वर्खा की । उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि आप सभी प्रेमियों को धन्यवाद है कि यहां आप सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज व सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की ज्योति जगा रहे हैं ।

एक प्रेमी सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज के पास आया और उसने सत्गुरु महाराज से कहा कि भगवान की कृपा से मेरे पास सब कुछ है किन्तु मन की शान्ति नहीं है । कृपया आप मुझे मन की शान्ति के लिए उपाय सुनायें । सत्गुरु महाराज ने कहा "प्यारे ! यदि तुम्हें मन की शान्ति चाहिए तो कामनाएं कम करो । कांटा पांव में लगता है किन्तु सारा शरीर दर्द अनुभव करता है, पांव के दर्द के कारण, आंखों में भी आंसू आ जाते हैं । वैसे ही वासनाएं, तृष्णाएं मन में पैदा होती हैं किन्तु तन मन को दु:खी करती हैं ।" प्रेमियो ! आप भले ही संसार में रहें किन्तु जगत् में अनासक्त भाव से रहें, उसी में ही आनन्द है । जो प्रभु से विमुख रहेगा वह इस लोक एवं परलोक में दु:खी होगा । सत्गुरु महाराजजी फरमाते हैं :-

बेमुख हो करतार से, करत जगत् से प्यार
कह टेऊँ तिस मनुष्य का कबहु न होत उद्धार ॥

२ सितम्बर पूज्य स्वामीजी ने उपदेश करते हुए कहा कि व्यवहार व परमार्थ की प्रगति के लिए निष्ठा से काम करें तो आपको सफलता मिलेगी।

बिहार में रहने वाला गणेशदत्त १८-१९ वर्ष की आयु तक अनपढ़ रहा। एक दिन किसी काम से उसे पटना न्यायालय में जाना पड़ा। उसकी अर्जी लिखने में, लिखने वाले ने देर कर दी इस कारण वह उस पर क्रोधित हुआ। तत्पश्चात् उसने विचार किया कि यदि वह स्वयं पढ़ा लिखा होता तो उसे दूसरे किसी की सहायता नहीं लेनी पड़ती। उसने १९ वर्ष की आयु में पढ़ना-लिखना आरम्भ किया। उसने निष्ठा से इतना अभ्यास किया कि अंग्रेज सरकार ने उसे 'सर' की उपाधि प्रदान की। आगे चलकर वह बिहार का मन्त्री बना। वह अपनी कमाई का अधिक हिस्सा गरीब विद्यार्थियों व अनाथ आश्रमों की सेवा के लिए खर्च करता था।

प्रेमियो ! आप भी धन संग्रह करें, किन्तु वह धन दीन दुखियों की सेवा में सफल करें और नाम को नहीं भुलायें। धन्धा व्यवहार करते प्रभु को याद करते रहें।

३ सितम्बर पूज्य स्वामीजी प्रेम प्रकाश आश्रम गोलागंज, लखनऊ पधारे। श्री नानकराम, रामचन्द एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। उन्होंने वहां एक सप्ताह अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। ३ सितम्बर पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि मन में प्रभु के लिए प्यास पैदा करें। प्रभु निर्मल व नर्म दिल वालों को प्यार करता है। हममें से कई संगदिल हैं। पथरीली जमीन पर खेती नहीं हो सकती। भक्ति के बीज बोने हों तो नर्म दिल होना चाहिए। बालक नामदेव ने प्रेम भरी पुकार से प्रभु को दूध पीने के लिए प्रार्थना की, तो भगवान ने स्वयं आकर उसका दूध पीया। बालक नामदेव भगवान का दर्शन कर फूला न समाया। उसके पिता प्रतिदिन भगवान को भोग लगाते थे किन्तु भगवान ने कभी प्रकट होकर भोग स्वीकार नहीं किया। किन्तु बालक नामदेव मासूम था, उसकी प्रेम भरी पुकार भगवान हरिविठ्ठल को उसके घर में ले आई। प्रेमियो ! आप भी प्रेम व श्रद्धा से ऐसे प्रभु को पुकारें, उसके बिरह

में आंसू बहाएं तो प्रभु अवश्य आपको दर्शन देंगे ।

४ सितम्बर पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि सांसारिक प्रपंच में फंसकर हमने परमात्मा को भुला दिया है । जब प्राण निकल जाते हैं तब स्थूल शरीर को श्मशान भूमि ले जाते समय 'राम राम संग है' पुकारते हैं । वह मुर्दा राम राम कैसे सुनेगा । सुनने वाली वस्तु तो चली गई । जब मनुष्य गंभीर स्थिति में होता है या मृतक होता है, तब कुछ लोग श्रीमद् भगवद्गीता का पाठ पढ़ते हैं, उसका उस समय क्या लाभ ! प्राणी पर क्या प्रभाव पड़ेगा? जब मनुष्य समर्थ है, ज़िंदा है तब उसे धार्मिक शास्त्रों का अध्ययन करना चाहिए, नाम स्मरण करना चाहिए । सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज भी फरमाते हैं :-

कह टेऊँ मरन पीछे, कहत सभी संग राम ।
जीवत कोई न कहे, संगी है हरिनाम ।।

५ सितम्बर पूज्य स्वामीजी ने सत्संग का महत्व प्रतिपादित करते हुए कहा कि भाग्यवान को ही सत्संग का लाभ प्राप्त होता है । सत्संग भी प्रभु कृपा से मिलता है । प्रभु प्राप्ति एवं मन की शान्ति के लिए सत्संग एक मुख्य साधन है । सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं :-

सन्त समागम सम नहीं, साधन को जग माहिं ।
कह टेऊँ बिन हरि कृपा, सत्संग मिलता नाहिं ।।

प्रेमियो ! आप भाग्यवान हैं कि यहाँ नियमित रूप से आकर सत्संग का लाभ उठाते हैं । आपको सत्संग का सच्चा लाभ तब प्राप्त होगा जब आप सन्तों के वचनों पर चलेंगे ।

पूज्य स्वामीजी ने लखनऊ के विभिन्न प्रेमियों के घरों में पधार कर उनकी प्यास पूरी की । उन्होंने प्रतिदिन सायं प्रेम प्रकाश मन्दिर में सत्संग प्रवचन किये । १० सितम्बर सायं उन्होंने वहां अन्तिम उपदेश करते हुए कहा कि प्रभु से नाम पदार्थ मांगे । नाम पदार्थ ही सच्चा पदार्थ है । जो नाम की पूंजी संग्रह करता है वह भाग्यवान है। सन्त महात्मा इसलिए माया से सम्बन्ध तोड़कर परमात्मा से स्नेह सम्बन्ध जोड़ते हैं ।

सन्त नामदेव की आर्थिक दशा ठीक नहीं थी। उसकी पत्नी की सहेली कमालसा ने सन्त नामदेव की पत्नी राजाबाई को एक दिन के लिए पारस दिया और उससे कहा कि यह लोहे को लगायेगी तो वह स्वर्ण हो जायेगा और तू मालामाल हो जायेगी। राजाबाई पारस प्राप्त कर फूली नहीं समाई। उसने वह पारस पति नामदेव को दिखाया। तब वह अत्यन्त अप्रसन्न हुआ और उसने वह पारस कुएं में फेंक दिया। यह देखकर राजाबाई बहुत दुखी हुई कि वह पारस कल, कैसे वापस सहेली को लौटा सकेगी। दूसरे दिन जब सहेली उससे पारस लेने आई तब उसने उसे कल की घटना सुनाई। कमालसा यह घटना सुनकर पश्चात्ताप करने लगी कि सन्त नामदेव के परिवार पर दया करने से उसकी भारी हानि हो गई। उसका पति भी उस पर अत्यन्त क्रोधित हुआ और गुस्से में वह सन्त नामदेव के पास आया। उसने सन्त नामदेव पर क्रोधित होते हुए कहा कि शीघ्र ही मुझे वह पारस दे दो। उस समय ही सन्त नामदेव ने समीप में बह रही नहर में हाथ डालकर, हाथों से पारस भरकर उसे दिखाए। यह चमत्कार देखकर कमालसा का पति आश्चर्य में पड़ गया। सन्त नामदेव ने कहा- "तुम असत्य पारस को प्राप्त करके कितने प्रसन्न हुए थे? तुम सच्चे पारस भगवत् नाम को भूल गये हो। तुम 'नाम' रूपी पारस की प्राप्ति के लिए प्रयास करो। सांसारिक पारस का क्या करोगे? ये तो दुःखदाई होते हैं।" कमालसा का पति सन्त नामदेव के वचन सुनकर अज्ञान की नींद से जागृत हो गया। उसके जीवन में परिवर्तन आ गया। सन्त माया में आसक्ति नहीं रखते।

प्रेमियो ! आप भी नाम को नहीं भुलाएं। घर में, कार्यलय में, दुकान पर, अपना कामकाज करते हुए मन की वृत्ति परमात्मा से लगाएं सत्गुरु महाराज जी भी फरमाते हैं :-

अन्तर बाहर रैन दिन, भूलो ना हरि नाम।

जिव्हा मन वा प्राण से, कह टेऊँ रट राम॥

जैसे-जैसे आप नाम की साधना करेंगे, वैसे-वैसे आनन्द का अनुभव करेंगे। नाम के बिना सब सांसारिक काम असत्य हैं।

११ सितम्बर प्रातः पूज्य स्वामीजी फैजाबाद पधारे। वहां उन्होंने

प्रेम प्रकाश मन्दिर रामनगर कॉलोनीं में तीन दिन सत्संग प्रवचन किए। पूज्य स्वामीजी ने उपदेश करते हुए कहा कि आप सभी प्रेमियों को धन्यवाद है कि आप यहां सत्गुरु महाराज की ज्योति जगा रहे हैं। जिसके मन में गुरु भक्ति है वह भाग्यवान है। सत्गुरु महाराज जी भी गुरु की महिमा गाते हुए कहते हैं :-

गुरु से अधिक न और को, देवी देव पछान।

सत्गुरु सब से श्रेष्ठ है, कह टेऊँ सत् जान॥

गुरु भक्ति द्वारा ही मन में ईश्वर भक्ति उत्पन्न होती है। सच्चे सत्गुरु की प्राप्ति के लिए कभी कभी कठिन परीक्षा देनी पड़ती है।

सिर दीए सत्गुरु मिले, तो भी सस्ता जान।

एक परिपूर्ण महात्मा थे, उनके दर्शन के लिए कई लोग उत्सुक रहते थे। परन्तु उस सन्त के पास पहुँचने के लिए तीन बाधाएं पार करनी होती थीं। प्रथम कोई भी श्रद्धालु यदि उनके पास आता था तो उनके घर के बाहर एक कुत्ता न केवल बहुत भौंकता था किन्तु आने वाले प्रेमी को काटता था। उसके पश्चात् एक गाय आने वाले प्रेमी को टक्कर लगाकर घायल कर देती थी। तीसरी बाधा सन्त की पत्नी थी जो प्रेमियों पर बहुत ही क्रोधित होती थी। जो भी लोग महात्मा का दर्शन करने जाते थे, उन्हें कभी कुत्ता काटता था, कभी गाय घायल कर देती थी। अधिकांश प्रेमी रास्ते से ही लौट जाते थे। एक प्रेमी के मन में उस महात्मा के दर्शन करने की तीव्र इच्छा उत्पन्न हुई। उसने अपने साथ चार रोटियाँ, घास एवं नए वस्त्र व आभूषण लिये। जैसे ही कुत्ता उसके सामने आया तो उसने उसे चार रोटियाँ खाने के लिए दी, तो कुत्ता रोटियाँ खाने में लग गया। वह प्रेमी आगे बढ़ा तो उसने गाय को देखा, प्रेमी ने अपने साथ लाई घास उसके सामने फेंक दी तो वह घास खाने लग गई। वह प्रेमी जैसे ही सन्त की कुटिया के बाहर पहुंचा तो उस महात्मा की पत्नी कुटिया से बाहर निकल आई तब प्रेमी ने जो वस्त्र एवं आभूषण अपने साथ लाये थे वे सन्त की पत्नी के चरणों में भेंट किए। वह वस्त्र एवं आभूषणों को प्राप्त कर प्रसन्न हो गई और उन्हें देखने में व्यस्त हो गई। तब वह प्रेमी सन्त की कुटिया में अन्दर पहुंचा। उसने महात्मा

का दर्शन किया, उनसे ज्ञान गोष्ठी की और आशीर्वाद प्राप्त किया। प्रेमियो ! जैसे उस सन्त के दर्शन करने के लिए मार्ग में अड़चनें (बाधाएं) आती थीं, ठीक उसी प्रकार आध्यात्मिक मार्ग में बढ़ते समय अड़चनें आती हैं, किन्तु अड़चनों से डर कर पीछे हटना नहीं चाहिए, उनका सामना कर आगे बढ़ना चाहिए । १२ सितम्बर पूज्य स्वामीजी प्रेम प्रकाश मन्दिर, काशी में पधारे । श्री नन्दलाल एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया । वहां उन्होंने तीन दिन अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की । पूज्य स्वामीजी ने उपदेश करते हुए कहा कि प्रेमियो ! आप भाग्यशाली हैं कि आप भूतभावन भगवान शंकर एवं गंगा मैया की गोद में बैठे हैं । ऐसे शुद्ध पवित्र वातावरण में भी यदि आप नाम स्मरण नहीं करें तो दोष आपका ही है । लोग कहां कहां से आकर यहां भगवान विश्वनाथ के दर्शन करते हैं । आपके घर में गंगा बह रही है और आप उसका लाभ नहीं उठाते ! फिर यहाँ रहने से क्या फायदा ! यह पवित्र भूमि है, अधिक से अधिक समय नाम स्मरण में सफल करें ! सतगुरु महाराजजी भी फरमाते हैं :-

कह टेऊँ इस जगत्में, एक कर्म है सार ।
सतगुरु से सत् शब्द ले, सुमिरन कर हर बार ।।

१५ सितम्बर पूज्य स्वामीजी प्रयाग पधारे । वहां उन्होंने सन्तों व प्रेमियों के साथ त्रिवेणी में स्नान किया । उन्होंने वहां दो दिन सत्संग प्रवचन किये । १८ सितम्बर वे सिन्धुनगर आश्रम में लौट आये।

२० सितम्बर पूज्य स्वामीजी नड़ियाद पधारे । उन्होंने वहाँ सत्संग प्रवचन किया । स्वामी उद्धवदासजी महाराज का पुण्यतिथि उत्सव २१ सितम्बर से २३ सितम्बर तक सरदारनगर, अहमदाबाद में आयोजित किया गया । इसी उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी २१ सितम्बर अहमदाबाद पहुंचे । वहां उन्होंने तीन दिन प्रात: एवं सायंकाल सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि हम दोनों ने एक साथ ही सतगुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की शरण ली थी । दोनों ने सतगुरु महाराज के संग में नाम का प्रचार किया । सन्त उद्धवदास ने कई प्रेमियों को नाम का अमृत पिलाया । सतगुरु महाराज सन्तों की महिमा गाते हुए कहते हैं :-

बादल के सम सन्त हैं, वचन जान बरसात ।
कह टेऊँ नित पान कर, चात्रक के सम तात ।।

सन्त मेघ की भांति हैं जो अपने पवित्र मुख से अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों रूपी चात्रक की प्यास पूरी करते हैं । प्रेमियों ! आप भी चात्रक बनकर सन्तों के अमृत वचनों का पान करें । आप सभी को धन्यवाद है कि प्रतिवर्ष यह आयोजन करते हैं । सन्तों की शिक्षा को अपने जीवन में उतारें ।

२४ सितम्बर निष्काम सेवा मण्डल की ओर से पूज्य स्वामीजी का जन्म उत्सव मनाया गया । श्री सन्तूमल एवं अन्य प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी के जीवन पर प्रकाश डाला । पूज्य स्वामीजी ने कहा कि सन्त जगत् में नाम का सौदा बेचते हैं । आप सत्संग रूपी दुकान पर आये हैं तो नाम रूपी सौदा ले लें ।

'जिस वखर को लेन तू आया, राम नाम सन्तन घर पाया ।।

हम सांसारिक पदार्थों में इतने तो आकर्षित हो गये हैं कि जिस काम के लिए संसार में आये हैं वह काम ही भूल गये हैं । एक बार एक बेटा अपने पिताजी के साथ बाजार गया । बेटे ने बाजार में कहीं अपने कुल की निंदा सुनी । बेटे ने अपने पिता से कहा ''पिताजी ये लोग क्या कह रहे हैं? बाप ने कहा बेटा ''यह संसार एक बाजार है, यहां भांति भांति की वस्तुएं मिलती हैं जिसको जो चाहिए वह खरीद ले । जो चीज़ हमारे काम की हो वह हम खरीदेंगे, और बातों की ओर हमें ध्यान ही नहीं देना चाहिए । जिसके पास जो वस्तु होगी वह वही देगा ।''

हम मृग की भांति रात-दिन सांसारिक पदार्थों की प्राप्ति के लिए भटक रहे हैं, अपने अमूल्य श्वास व्यर्थ नहीं गंवाने चाहिए । जब सिर पर काल (मृत्यु) आयेगा तो पश्चात्ताप के आँसू बहाने पड़ेंगे ।

'अब पछताये होत क्या, जब चिड़ियां चुग गईं खेत ।'

प्रेमियों ! सन्त अपने साथ नाम का सन्देश लाते हैं । आप हमें भोजन खिलायें या नहीं खिलायें, हमारी सेवा करें या नहीं करें किन्तु प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ें, नाम स्मरण करें, पशु पक्षियों पर दया

दृष्टि करें। ये पशु पक्षी प्रभु की मूक संतान हैं। उनका मांस भक्षण नहीं करें। शुभ कर्म कर जीवन सफल बनाएं।

सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का ९४वां जन्म दिन उत्सव स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम हरिद्वार में २८ सितम्बर से २ अक्टूबर तक आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी २५ सितम्बर हरिद्वार पधारे। २८ सितम्बर प्रातः पूज्य स्वामीजी ने धर्म ध्वजा फहराकर जन्म उत्सव आरम्भ किया। पांचों दिन सन्तों महात्माओं ने अमृत वचनों की वर्खा की। इस अवसर पर पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने अपने नाम को सार्थक किया। वे सभी को आनन्द देने वाले थे। उनके मस्तक पर एक अलौकिक तेज था। उनके दर्शन से ही दुःख दर्द दूर हो जाते थे। उन्होने युवावस्था में बहुत समय ऋषिकेश में एकांत स्थलों पर भगवत् भजन में सफल किया। वे प्रति शनिवार मौन धारण करते थे। प्रेमियो ! आप भी कुछ समय एकांत में बैठकर नाम स्मरण करें। सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं :-

जो सुख है एकांत में, सो सुख सुरपुर नाहिं।
कह टेऊँ एकांत जहं, सदा रहो तुम ताहिं॥

आप एकांत में बैठकर भगवद् भजन करें तो आनन्द का अनुभव करेंगे। भगवत् नाम बड़ी अमूल्य निधि है जो इस लोक एवं परलोक में सहायता करती है। शासक बदल जाते हैं तो नोट (मुद्रा) भी बदल

ही सच्ची पूंजी है। सत्गुरु महाराजजी फरमाते हैं:-

हरि नाम आनन्द निधि, कह टेऊं जप ताहिं।
जांके जप ते हो सदा, आनन्द मन के माहिं॥

प्रेमियो ! आप हरिद्वार में आये हैं तो गंगा मैया में स्नान करके मन्दिरों मे जाकर भगवान का दर्शन करें। यहां आकर आप यदि होटल या सिनेमा में जाएं तो हरिद्वार आने का क्या लाभ? ऋषिकेश व कनखल में जाकर सन्त-महातमाओं के दर्शन करें। सन्तों का दर्शन फलदायक होता है। जब सत्संग में या हरिद्वार जैसे पावन तीर्थ स्थल पर आएं

तो सांसारिक बातों को भूलकर भगवद् चिन्तन करें। सत्गुरु महाराज जी कहते हैं :

साधु संगति में जाइए, चिन्ता घर की छोड़।
कह टेऊँ सत् वचन में, दीजे मन को मोड़॥

माह अक्टूबर १९९० में मासिक प्रेम प्रकाश सन्देश की आयु के १० वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 'आदर्श ऋषि-महर्षि' नामक विशेषांक प्रकाशित किया गया था। इस अंक हेतु पूज्य स्वामीजी द्वारा भेजे गए अपने अमृताशीष सन्देश में लिखा था कि- "गत दस वर्षों से 'प्रेम प्रकाश सन्देश' हिन्दू संस्कृति के सन्देश को हिन्दू संस्कृति के अनुरागियों तक पहुँचाने का कार्य कर रहा है। अतः मुझे यह जानकर विशेष हर्ष हुआ कि वह अपनी आयु के ११वें वर्ष में प्रातः स्मरणीय प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के ९४वें जन्मोत्सव के सुअवसर पर 'आदर्श ऋषि-महर्षियों' के जीवन पर एक विशेषांक प्रकाशित कर रहे हैं। आशा है कि पाठक गण इन जीवन चरित्रों का अध्ययन कर ऋषि-महर्षियों के जीवन में विद्यमान गुणों को अपने में धारण कर सत्य एवं मर्यादा के मार्ग को अपनाएंगे। मैं इस अंक की महती सफलता की कामना करता हूँ।

उक्त अंक का विमोचन करते हुए पूज्य स्वामीजी ने कहा कि- "ऋषियों-महर्षियों, सन्तों-महात्माओं ने ही पथ-भ्रष्ट मानव को धर्म मार्ग पर लगाया है। अपना सर्वस्व न्यौछावर कर, अपने को मिटाकर हमारी संस्कृति एवं धर्म की रक्षा की है, आज भी कर रहे हैं तथा जब तक इनकी काया में प्रभु द्वारा प्रदत्त अंतिम सांस रहेगी, अवश्य करते रहेंगे। इन भगवद्-स्वरूप आदर्श ऋषि-महर्षियों के जीवन चरित्र का अध्ययन कर, प्राप्त प्रेरणा को अपने जीवन में उतारें तभी इस अंक की सार्थकता सिद्ध होगी। इस अंक में प्रकाशित महान ऋषि-महर्षियों के जीवन चरित्र पढ़ने से आपको नई दिशा मिलेगी।

अन्त में पूज्य स्वामीजी ने प्रेम प्रकाश सन्देश के दोनों सम्पादकों शंकर सबनाणी एवं श्रीचन्द पंजवाणी को आशीर्वाद प्रदान किया।

२ अक्टूबर पूज्य स्वामीजी ने सभी सन्तों के साथ मिलकर उत्सव का समापन करते हुए पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की महिमा

का भजन गाया।

९ अक्टूबर पूज्य स्वामीजी कोटा पधारे। वहां सिन्धी पंचायत की ओर से सन्त कंवरराम धर्मशाला में अमर शहीद सन्त कंवरराम साहब का पुण्यतिथि उत्सव मनाया गया। पूज्य स्वामीजी ने वहां सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि भक्त कंवरराम जी महान परोपकारी परमार्थी सन्त थे। उनके कण्ठ में सरस्वती का निवास था। भजन कीर्तन करते हुये उन्हें जो कुछ भी धन-पदार्थ मिलते थे, वे वह धन पदार्थ दीन-दु:खियों एवं अपाहिजों की सेवा में खर्च कर देते थे। प्रेमियों ! आप भी परोपकार के कार्य करें, भगवद् भजन करें तो आपका कल्याण होगा। पंचायत के अध्यक्ष कन्हैयालाल ने पूज्य स्वामीजी का आभार व्यक्त किया।

१० अक्टूबर प्रात: पूज्य स्वामीजी ने स्वामी टेऊंराम प्रेम प्रकाश आश्रम कोटा में उपदेश करते हुए कहा कि जीव सीमित है ब्रह्म असीम है। जीव अशक्त है, परमात्मा सर्वशक्तिमान है। उसकी शक्ति के बिना जीव कुछ भी नहीं कर सकता। किन्तु फिर भी वह अहंकार के नशे में स्वयं को शक्तिशाली समझता है। प्रेमियो ! उसी शक्तिमान की ही शरण लेनी चाहिए जो रक्षा करे। इसलिये आप प्रभु परमात्मा की शरण लें। जो सर्वशक्तिमान है। वह आपकी यत्र-तत्र सर्वत्र रक्षा करेगा। सत्गुरु महाराज जी भी कहते हैं :-

राम भरोसा राख तुम, और भरोसा त्याग।
कह टेऊँ हरि शरण ले, खोलो अपना भाग ।।

१४ अक्टूबर रात्रि पूज्य स्वामीजी ने बाबा ढोलूरामजी के पुण्य तिथि के सम्बन्ध में उनके स्थान सिन्धुनगर-१ में प्रवचन करते हुए सन्त बाबा ढोलूरामजी के गुणों का वर्णन किया। भाई रतनलाल ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत किया।

स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज के पुण्यतिथि उत्सव के सम्बंध में पूज्य स्वामीजी १५ अक्टूबर पूना पधारे। सायं स्वामी रामकृष्ण के स्थान पर उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि स्वामी ग्वालानन्दजी महाराज न केवल महान सन्त थे वरन् विद्वान भी थे। उन्होंने सिन्धी एवं हिन्दी में अमृतमयी वाणी की रचना की। जिसके पठन व श्रवण से आनन्द

की प्राप्ति होती है । प्रेमियों ! किसी-न-किसी सन्त का संग करें तो आपको प्रभु का रंग लगेगा ।

कह टेऊँ संसार में, सन्तों का कर संग ।
सन्तों के सत्संग में, लागत आतम रंग ।।

१६ अक्टूबर पूज्य स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम लौट आये और उन्होंने स्वामी ग्वालानन्द आश्रम में सत्संग प्रवचन किए । १७ अक्टूबर जनता जनार्दन परिषद की ओर से दीपावली के उपलक्ष्य में पूज्य स्वामीजी ने चार सौ बहनों को मिष्ठान्न व दुपट्टे एवं बच्चों के लिये फुलझड़ियां व पटाखे प्रदान किए । तत्पश्चात् उन्होंने सिन्धुनगर-२ में भी मिष्ठान्न का वितरण किया । १८ अक्टूबर दीपावली के पावन दिन कुछ प्रेमी पूज्य स्वामीजी को बम्बई में अपनी दुकानों पर ले गए । २० अक्टूबर को उन्होंने आश्रम में कर्तिक-कथा प्रारंभ की । कार्तिक के दिनों में वे प्रातः श्री कार्तिक-कथा के बाद श्री गुरुग्रन्थ साहब की वाणी की व्याख्या करते थे ।

२७ अक्टूबर गोपाष्टमी के पावन दिन प्रातः उन्होंने उपदेश करते हुए गौमाता की महिमा का वर्णन किया । प्रातः ८ बजे आश्रम से गौमाताओं के साथ शोभायात्रा निकाली गई । सायं ५ बजे श्री राधेश्याम गौशाला में गोपाष्टमी उत्सव पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में मनाया गया । श्री नन्दीराम टहलराम ने सन्तों का स्वागत करते हुए गौशाला के कार्यों पर प्रकाश डाला । पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आप यदि भगवान श्रीकृष्ण को प्रसन्न करना चाहते हैं तो गौ सेवा करें । भगवान को स्वयं से अधिक गौएं प्रिय लगती हैं । आज हमारे देश में प्रतिदिन हज़ारों गौमाताओं को मौत के घाट उतारा जाता है। सरकार सोयी हुई है, हमें जागृत होकर गौरक्षा करनी चाहिए । गौधन ही देश का सच्चा धन है ।

३० अक्टूबर कार्तिक एकादशी के पावन दिन प्रातः पूज्य स्वामीजी ने कार्तिक एकादशी का महत्व प्रतिपादित करते हुये कहा कि आज सारा दिन व रात नाम स्मरण और शुभकर्म करें । प्रातः ८ बजे पूज्य स्वामीजी के साथ सन्त देवप्रकाश, सन्त रूपाराम साहब, सन्त ब्रह्मदास एवं हज़ारों प्रेमी राम नाम की धुनि लगाते हुए श्मशान भूमि आए।

वहां सन्तों ने उपदेश किया । तत्पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने व्याख्यान करते हुए कहा आज के दिन श्मशान-भूमि, देवस्थल और अस्पतालों में अवश्य जाना चाहिये । अस्पताल में विभिन्न रोगियों को देखकर दया व वैराग्य भावना पैदा होगी । श्मशान-भूमि में आने पर भी मन में वैराग्य भावना पैदा होगी । भक्ति मार्ग में दया व वैराग्य भावना अत्यन्त आवश्यक है ।

श्मशान भूमि के कार्यक्रम के बाद श्री अमरलाल बलेच्छा एवं श्री किशनचन्द, पूज्य स्वामीजी व अन्य सन्तों को अमरनाथ जल आश्रम में ले गये । वहां भी पूज्य स्वामीजी ने श्रीकृष्ण की महिमा का भजन गाते हुए प्रेमियों को आशीर्वाद दिया । सायं पूज्य स्वामीजी ने आश्रम में प्रवचन करते हुए कहा कि आज सारी रात्रि जागरण कर भगवान श्रीकृष्ण का ध्यान व स्मरण करें । सत्गुरु महाराज जी भी फरमाते हैं :-

हरि सुमरो तुम जाग के, सोय न निद्रा मांहि ।
कह टेऊँ जागे बिना हरि दर्शन दे नाहि ।।

प्रेमियो ! प्रियतम आपके घर में आये और आप सोत रहें तो उसका दर्शन कौन करेगा? इसलिए जागृत होकर प्रभु के गुण गाएं । प्रेम के आंसू बहाते हुए उनका ध्यान करें तो अवश्य प्रभु आपको दर्शन देकर गले लगाएगें ।

३१ अक्टूबर प्रातः पूज्य स्वामीजी स्वामी चन्दनप्रकाश प्रेम प्रकाश मन्दिर पूना पधारे । सन्त अनन्तप्रकाशजी ने उनका स्वागत किया। वहां उन्होंने तीन दिन प्रातः एवं सायं ज्ञान व प्रेम की गंगा-यमुना प्रवाहित की । २ नवम्बर प्रातः पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि यह कार्तिक का महीना उत्तम महीना है, इसे व्यर्थ न गंवाए । संसार के कामकाज कभी पूरे नहीं होंगे । नाम स्मरण एवं शुभ कर्म करने में आलस्य नहीं करें । सत्गुरु महाराज भी फरमाते हैं :-

कह टेऊं तुम चेत ले, अब कछु बिगड़ी नाहिं ।
दया धर्म शुभ कर्म कर, हरि सुमरो मन माहिं ।।

प्रेमियों ! श्री गुरुनानकदेवजी महाराज के जन्मदिन उत्सव सम्बन्ध

में यत्र तत्र श्री गुरुग्रन्थ साहब के पाठ रखे जाते हैं, किंतु उस अमृत तुल्यवाणी का लाभ कोई कोई उठाता है । थोड़ा ही पढ़ना चाहिए किन्तु उस वाणी का चिन्तन कर, मनन करना चाहिए । आज हम श्री गुरु नानकदेवजी महाराज की शिक्षा को भूल बैठे हैं, केवल बाह्य आडम्बर में समय व पैसा व्यर्थ गंवा रहे हैं । श्री गुरु नानकदेवजी महाराज अवतारी पुरुष होते हुए भी कितने न विनम्र थे और स्वयं स्मरण करते थे । उन्होंने हजारों लोगों को नाम जपाया, फिर भी वे नाम को नहीं भूले । प्रेमियों ! आप भी श्री गुरु नानकदेवजी महाराज की शिक्षा को अपने जीवन में उतारें ।

२ नवम्बर सायं ४ बजे पूज्य स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम लौट आये। सायं उन्होंने कार्तिक उत्सव के सम्बन्ध में रखे पाठों का समापन करते हुए कहा कि प्रेमियों ! कार्तिक महीने के पन्द्रह दिन आप लोगों ने यहां आकर अमृत पान किया है । नाम रस है सच्चा अमृत । आप लोगों ने सांसारिक रसों के पीछे कितने जन्म गंवाये हैं ! अब जागृत होकर खूब नाम जपें :-

सोए अविद्या नींद में, कह टेऊं बहु काल ।
अब तो गफ्लत छोड़के, सुमरो दीन दयाल ।।

सन्त प्रसन्न तो परमात्मा प्रसन्न । एक बार श्री गुरुनानकदेव महाराज भ्रमण करते करते एक गांव में आये । वह गांव अब कर्तारपुर के नाम से प्रसिद्ध है । वहां उन्होंने देखा कि एक प्रेमी गरीबों में दूध बांट रहा है । श्री गुरुनानकदेवजी उस प्रेमी का यह सेवा कार्य देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए और उन्होंने उससे कहा कि जो कुछ तुम्हें चाहिए मांगो । उस प्रेमी ने कहा "पुत्र सन्तान की आवश्यता है ।" श्री गुरु नानकदेवजी ने कहा "भगवान तुम्हारी इच्छा पूरी करेगा ।" श्री गुरु नानकदेव महाराज के आशीर्वाद से उसे पुत्र सन्तान हुई । श्री गुरुनानकदेव महाराज ने कई प्रेमियों की इच्छाएं पूर्ण की । प्रेमियों ! आप भी नाम स्मरण व सेवा करेंगे तो भगवान अवश्य आपकी मनोंकामनाएं पूर्ण करेगा ।

रात्रि पूज्य स्वामीजी ने जय बाबा धाम, सरदार राजलसिंह बठीजा

के घर एवं सिन्धुनगर-२ में श्री गुरु नानकदेवजी महाराज के जन्म दिन उत्सव के सम्बन्ध में प्रवचन करते हुए उनकी महिमा का वर्णन किया।

४ नवम्बर रविवार प्रात: ११ बजे पूज्य स्वामीजी ने कपलेश्वर महादेव मण्डल की ओर से कुर्ला, बम्बई में आयोजित नेत्र चिकित्सा शिविर का उद्घाटन करते हुए कहा कि प्यारे नन्दलाल बख्तियाणी एवं उसके साथियों को धन्यवाद है जो प्रतिवर्ष इस शिबिर का आयोजन करते है। ऐसी शिबिरों द्वारा कई नेत्र रोगियों को ज्योति मिलती है। प्रेमियों! आप भी ऐसे परोपकार के कार्य करते रहें।

८ नवम्बर स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर-५ में पद्मश्री डॉ. एम.सी.मोदी का सन्मान किया गया। पूज्य स्वामीजी ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा कि डॉ. मोदी मानव जाति के बड़े सेवक हैं। उन्होंने देश विदेश के कई नगरों में जाकर नेत्रहीनों एवं नेत्र रोगियों को प्रकाश देकर नया जीवन दिया है। डॉ. दयाल 'आशा' एवँ श्री प्रहलाद चंचलाणी ने भी डॉ. मोदी की सेवाओं का वर्णन किया। डॉ. मोदी ने कहा कि पूज्य स्वामीजी हमारे आध्यात्मिक डाक्टर हैं, मैं तो इनके पास अन्त:करण के प्रकाश के लिए आता हूँ। मैं तो केवल बाह्य आँखों का आपरेशन करता हूँ परन्तु स्वामीजी अन्दर की आंखों का आपरेशन करते हैं।

१० नवम्बर प्रात: ११ बजे आश्रम में पूज्य स्वामीजी ने ब्रह्म भोज का आयोजन किया। सायं वे मुरैना गये। वहां श्री वसणाराम एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। पूज्य स्वामीजी ने मुरैना में दो दिन सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि मन जीते जग जीत। जिसने अपने मन को जीत लिया वह आसानी से आध्यात्मिक पथ पर प्रगति कर सकता है। सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज भी फरमाते हैं :-

कह टेऊं मन की गति, अधिक पवन से जान।
ताको जो जन वश करे, सोई पुरुष सुजान॥

मन की गति वायु से भी तीव्र है। जो मन को वश में कर सकता है, वह ज्ञानी है। एक सन्त ने साधना कर रिद्धि-सिद्धि प्राप्त की।

वह नदी के किनारे रहता था । एक दिन वह ध्यान मग्न बैठा था तो वहां से एक स्त्री जा रही थी । उस स्त्री के पायल की आवाज से उसकी ध्यान मुद्रा टूट गई और उस स्त्री को देखते ही उस सन्त का मन विचलित हो गया । उसने उस स्त्री से कहा कि रुक जाओ! तुम यहां मेरे साथ रहो । वह पतिव्रता स्त्री थी । उसने कहा कि मैं यहां क्यों ठहरू? मैं खेत पर अपने पति के लिए खाना ले जा रही हूँ । मैं यहाँ नहीं ठहरूगी । सन्त ने कहा मैं अपनी शक्ति द्वारा तुम्हें यहां रोक सकता हूँ । मैं इस नदी के प्रवाह को भी रोक सकता हूँ। वह पतिव्रता नारी बड़ी चतुर थी । उसने उससे कहा कि तुम इतने शक्तिशाली हो तो नदी का प्रवाह रोको । सन्त ने अपनी सिद्धी द्वारा नदी का प्रवाह रोक कर कहा "देखो मेरी शक्ति !" तब उस नारी ने कहा "सन्त जी ! तुमने नदी का प्रवाह तो रोक लिया किन्तु मन का प्रवाह नहीं रोक सकते, फिर तुम्हारी फकीरी किस काम की !" स्त्री के ये वचन सुनकर उस सन्त की आँखें खुल गईं और अपनी गलती पर पश्चात्ताप करता हुआ उस स्त्री के पांवों पर गिर पड़ा ।

प्रेमियो ! मन को वश करना बहुत ही कठिन काम है । परन्तु अभ्यास एवं वैराग्य वृत्ति द्वारा धीरे-धीरे मन को वश में कर सकते हैं । यदि मन वश में हो गया तो चित्त की वृत्ति प्रभु में आसानी से लग सकेगी । आप भी मन को वश में करने का प्रयास करें । विनम्र बनें । अहंकार का परित्याग कर सच्ची श्रद्धा व भावना से प्रभु की शरण लें तो आपका कल्याण होगा ।

१३ नवम्बर पूज्य स्वामीजी प्रेम प्रकाश आश्रम ग्वालियर पधारे। वहाँ उन्होंने स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति द्वारा आयोजित नेत्र चिकित्सा शिबिर का उद्घाटन किया । पूज्य स्वामीजी ने शंकरलाल सबनाणी, श्रीचन्द पंजवाणी एवं अन्य सेवकों को निःशुल्क नेत्र आपरेशन कैम्प का आयोजन करने के लिए आशीर्वाद दिया । उन्होंने स्वामी गणेशानन्दजी महाराज से क्षेम कुशल पूछा । उन्होंने दो दिन वहां अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की । पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि मन में दया भावना होनी चाहिए । दया के बिना मनुष्य

हुए कहा कि मन में दया भावना होनी चाहिए। दया के बिना मनुष्य कसाई है। दया ही सभी धर्मों का मूल है। दयावान मनुष्य मोम दिल होता है, इसलिए वह परमात्मा के निकट हो सकता है।

एक दिन गौतम अपनी फुलवाड़ी में टहल रहा था, तो अचानक उसके सामने एक ज़ख्मी हंस आकर गिर पड़ा। उसने उस ज़ख्मी हंस को उठाकर छाती से लगाया। उसे जो बाण लगा हुआ था, वह बाण निकालकर, गौतम ने उसका ज़ख्म साफ किया। उसी हंस को बाण लगाने वाले देवदत्त ने फुलवाड़ी में श्री गौतम से जख्मी हंस माँगा तब गौतम ने हंस लौटाने से इनकार किया। देवदत्त ने राज दरबार में शिकायत की। राज दरबार में निर्णय हुआ कि हंस गौतम के पास ही रहेगा क्योंकि उसने ही उसकी सुरक्षा की है। जब हंस का जख्म ठीक हो गया तब गौतम ने उसे आकाश में उड़ा दिया। गौतम के मन में बचपन से ही दया भावना थी। प्रेमियो ! आप भी जीवन में दया व प्रेम की ज्योति जगाएं। आप न केवल मनुष्य मात्र किन्तु सभी प्राणियों पर दया दृष्टि करें। पशु पक्षियों को कटवाकर उनके मांस का सेवन न करें। जैसा आप अन्न अर्थात् खाना (भोजन) खायेंगे, वैसा ही आपका मन होगा।

१७ नवम्बर प्रात: पूज्य स्वामीजी ने प्रेम प्रकाश मण्डली सिन्धुनगर-२ में सत्संग प्रवचन किये। १८ नवम्बर सिन्धुनगर-३ में श्री दौलतराम जग्यासी ने पूज्य पिताजी सन्त ईदनदास जग्यासी की पुण्य तिथि मनाई। पूज्य स्वामीजी ने वहां सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि सन्त ईदनदास ने घर गृहस्थी होते हुए नाम स्मरण किया। उन्होंने न केवल स्वयं नाम स्मरण किया किन्तु औरों को भी नाम जपाया। वे संसार में अनासक्त भाव से रहे। गुरुवाणी से उनका प्रेम था। प्रेमियों ! आप भी सन्तों की शिक्षा को अपने जीवन में अपनायें।

प्रेम प्रकाश मन्दिर सिन्धुनगर-५ का वार्षिक उत्सव २० नवम्बर से २४ नवम्बर तक आयोजित किया गया। २० नवम्बर प्रात: पूज्य स्वामीजी ने धर्म ध्वजा फहराकर उत्सव का श्री गणेश किया। दोपहर ३ बजे आश्रम से भगवान, सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज, सत्गुरु स्वामी

सर्वानन्दजी महाराज की झांकियों के साथ शोभा यात्रा पूज्य स्वामीजी के नेतृत्व में निकाली गई । हजारों प्रेमी 'सत्नाम साक्षी' 'जय श्री कृष्ण' 'जय सियाराम' की धुनि लगाते चले । श्री मोटूमल खेराजमल चाँडवाणी ने अपने घर के प्रांगण में जलपान की व्यवस्था की थी । पूज्य स्वामीजी, कुछ सन्त एवं प्रेमी उसके घर पधारे । चारों दिन प्रातः एवं सायं पूज्य स्वामीजी एवं अन्य सन्तों ने सत्संग प्रवचन किया । २३ नवम्बर प्रातः सन्त समागम का आयोजन किया गया । पूज्य स्वामीजी ने सन्तों का स्वागत करते हुए कहा कि आज हमारा सौभाग्य है कि घर में बैठे हमें इतने सन्तों का दर्शन हुआ है । सन्त तप्त हृदयों को ठंडक (शांति) प्रदान करते हैं । वे नाम का संदेश देकर लोगों को जागृत करते हैं।

आग लगी आकाश में, झर झर बरस अंगार ।
सन्त न होवन जगत् में, तो जल मरता संसार ।।

प्रेमियों ! सन्तों एवं प्रभु में पूर्ण विश्वास धारण करें । सन्त प्रभु के प्रतिनिधि हैं । जिसका प्रभु में विश्वास है वह विपदाओं से कभी नहीं डरता । उसके मन में यह विश्वास होता है कि परमपिता परमात्मा अपनी संतान का कभी भी बुरा नहीं करेगा । एक बार एक अंग्रेज एवं उसकी नव विवाहिता पत्नी पानी के जहाज में यात्रा कर रहे थे। अचानक तूफान लगने से जहाज में यात्रा करने वाले यात्री बहुत घबरा गये किन्तु वह अंग्रेज नहीं घबराया । वह मुस्कुराता रहा । उसकी पत्नी तो बहुत डर गई । उस अंग्रेज युवक ने अपनी तलवार निकाल कर अपनी पत्नी के सिर पर रखकर पूछा कि क्या तुम्हें तलवार से डर लग रहा है? पत्नी बोली "तलवार आपके हाथ में है, आप मुझे बहुत प्यार करते हैं, फिर आप मुझे तलवार से कैसे मारेंगे ! इसलिए तलवार से मुझे किसी तरह का डर नहीं ।" पति ने कहा "जैसे मैं तुम्हें प्यार करता हूँ, वैसे ही भगवान हम सभी को प्यार करता है, वह हमारी हानि कैसे करेगा ! वह जो कुछ करता है, उसमें हमारा भला है । इसलिए तुम आई हुई विपदा से मत डरो ।

२४ नवम्बर प्रातः पूज्य स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए निम्न भजन गाया:-

सत्गुरु तेरा हो रखवारा।

औखी घड़ी न वेखण देवे, सत्गुरु दया भण्डारा॥

(१) आगे राखे पीछे राखे, अर्ध ऊर्ध्व गुरु राखे।

इर्द गिर्द गुरु तुझको राखे, राखे गुरु चौधारा॥

(२) दिन को राखे, निश को राखे, शाम सुबह गुरु राखे।

आठ पहर गुरु तुझको राखे, राखा गुरु हरवारा।

(३) जल में राखे थल में राखे, नभ में भी गुरु राखे।

तीन लोक में निश्चय होवे, राखा गुरु तुम्हारा॥

(४) तन को राखे, धन को राखे, मन बुद्धि को गुर राखे।

अन्तःकाल गुरु तुझको राखे, सत्गुरु पै बलिहारा॥

(५) पाप से राखे, ताप से राखे, शेर सांप से राखे :

सब विघ्नों सै सदैव राखे, कहे टेऊं गुरु प्यारा॥

प्रेमियों ! यह अमृत वेला है। यदि इस समय श्रद्धा से प्रभु की प्रार्थना करेंगे तो अवश्य ही परमात्मा आपकी विनती स्वीकर करेंगे। आप जैसा बीज बोएंगे वैसा ही फल प्राप्त करेंगे। आप यदि प्रभु को प्रसन्न करना चाहते हैं तो दूसरों को प्रसन्न करें। किसी को नहीं सतायें। मुर्गे मुर्गियों, बकरे प्रभु की मूक सन्तान हैं, उन्हें कटवाकर मांसाहार भोजन नहीं खायें। शराब का त्याग करें। विवाहों में व्यर्थ खर्चा नहीं करें। दहेज की प्रथा को कम करें, दीन दुखियों की सेवा व नाम स्मरण करें तो परमात्मा आपका कल्याण करेगा।

सन्त उद्धवदास ब्रह्मचारी ने बड़ौदा में गीता ज्ञान यज्ञ का आयोजन किया। इस उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी २८ नवम्बर बड़ौदा पधारे। सन्त उद्धवदास ब्रह्मचारी एवं प्रताप रामचन्दाणी ने उनका स्वागत किया। पूज्य स्वामीजी ने श्रीमद् भगवद् गीता के विभिन्न विषयों पर तीन दिन प्रचवन करते हुए कहा कि श्रीमद् भगवद् गीता भगवान श्रीकृण के मुख की वाणी है। भगवान ने अर्जुन के मन का मोह मिटाने के लिए उसे ज्ञान गर्भित उपदेश दिया। यह उपदेश न केवल अर्जुन के लिए था, किन्तु मानव मात्र के लिए था और सदैव के लिए श्रीमद्भगवद्

गीता हमारा मार्ग दर्शन करती रहेगी । यह महान ग्रन्थ व्यवहार एवं आध्यात्मिक प्रगति व कल्याण के लिए हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा। श्रीमद् भगवद् गीता के श्लोक श्रवण करने से ही आनन्द आता है। ऐसे अमूल्य ग्रन्थ का अभ्यास करें और उसकी शिक्षा को अपने जीवन में उतारें ।

प्रेमियों ! डॉक्टर का मुंह देखने से दर्द दूर नहीं होता है, जब उसकी दी हुई दवा का सेवन करेंगे और परहेज करेंगे, तभी पीड़ा दूर होगी। केवल दवा पीएंगे और परहेज नहीं करेंगे तब भी पूरा लाभ नहीं होगा। नाम रूपी औषधि पीने से मन में संतोष, वैराग्य, प्रेम भक्ति पैदा होगी, विकारों से किनारा करेंगे, तो नाम रूपी औषधि से अवश्य लाभ होगा और आत्मिक शक्ति बढ़ेगी । सन्त डॉक्टर हैं । उनके वचनें रूपी दवा पीने से अर्थात् उन वचनों के अनुरूप चलने पर ही लाभ होगा ।

अजमेर प्रेम प्रकाश आश्रम, दिल्ली गेट में स्वामी बसन्तरामजी महाराज का पुण्य तिथि उत्सव स्वामी ब्रह्मानन्दजी द्वारा मनाया गया एवं अजमेर गीता मन्दिर में गीता जयन्ती उत्सव मनाया गया । उसी उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी १ दिसम्बर को अजमेर पधारे । उन्होंने तीन दिन सत्संग प्रवचन कर प्रेमियों का मार्गदर्शन किया । ३ दिसम्बर उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि यहां पंडित शीतलदास ने श्री गीता जयन्ती उत्सव मनाना आरम्भ किया । आप लोगों ने वही परम्परा कायम रखी है, इसलिए आपको धन्यवाद है । आप भाग्यशाली हैं कि आपको घर बैठे सन्तों के दर्शन और प्रवचन श्रवण करने का अवसर मिलता है । सन्त तो आपको सत् मार्ग बताते हैं, किन्तु उस मार्ग पर चलना तो आपको ही है । रास्तों पर बोर्ड (सूचना पटल) लगे रहते हैं जिन पर लिखा रहता है कि अमुक मार्ग दिल्ली या बम्बई की ओर जायेगा। जब आप उसी मार्ग पर आगे बढ़ेंगे तो गन्तव्य स्थल पर पहुंच जायेंगे। प्रेमियो ! सन्तों के बताये रास्ते पर चलने का प्रयास करेंगे तो किसी न किसी दिन आप अवश्य प्रभु का दर्शन कर सकेंगे ।

अहमदाबाद में सन्त प्रभाराम साहब के पुण्य तिथि उत्सव सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी ५ दिसम्बर प्रभाराम सोसायटी अहमदाबाद पधारे। वहां उन्होंने तीन दिन अमृत वचनों की वर्खा करते हुए प्रेमियों की

प्यास पूरी की । ६ दिसम्बर प्रातः बहन पुष्पा के मन्दिर में प्रवचन किये। ७ दिसम्बर सायं उत्सव का समापन करते हुए पूज्य स्वामीजी ने कहा कि सन्त प्रभाराम आपके सगे सम्बन्धी नहीं थे किन्तु फिर भी आप प्रतिवर्ष उनका पुण्यतिथि उत्सव मनाते हैं। उन्होंने तो सांसारिक सम्बन्ध तोड़कर प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ा तो आप आज उन्हें याद कर रहे हैं। आप भी कुछ समय बचाकर भगवद् चिन्तन करें। सत्गुरु महाराजजी फरमाते हैं :

गंगा हरती पाप को, शशि हरता है ताप।
पाप ताप दोनों हरे, टेऊँ हरि का जाप ।।

गंगा नदी में नहाने से पाप नाश होते हैं, चन्द्रमा ताप को मिटाकर शीतलता प्रदान करता है, किंतु नाम स्मरण से पाप का भी नाश होता है और मन भी प्रसन्न रहता है। इसलिए जितना हो सके नाम का जप करें। हमारी बाह्य क्रिया शुद्ध होने के साथ-साथ अन्तःकरण की शुद्धता भी अत्यंत आवश्यक है। हमारे मन पर जन्म-जन्मान्तरों की मैल चढ़ी हुई है। नाम स्मरण से धीरे-धीरे अन्तःकरण शुद्ध होता जायेगा।

आप अपने शरीर को साफ करने के लिए और बाह्य सुन्दरता बढ़ाने के लिए भांति-भांति के साबुनों का प्रयोग करते हैं। किन्तु मन के मैल का निवारण करने के लिये प्रयास नहीं करते हैं। जैसे-जैसे आप नाम स्मरण करेंगे, गुरुमन्त्र की साधना करेंगे तो आपका अन्तःकरण शुद्ध होता जायेगा और आपको परमात्मा का साक्षात्कार होगा। जिस इष्ट का आप ध्यान व चिंतन करते हैं वह स्वयं आकर आपको दर्शन देगा। प्यारे प्रकाश एवं अन्य सेवकों को इस आयोजन के लिए धन्यवाद है।

९ दिसम्बर खार, बम्बई में रोहड़ा ब्रादर मण्डल की वार्षिक सभा हुई। मोहनलाल रोहड़ा ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत किया। पूज्य स्वामीजी नें आशीर्वाद देते हुए कहा कि आपस में मिल-जुलकर रहें। आप वृद्धों को सम्मान देंगे तो परमात्मा आपका सम्मान करेगा। दहेज की समस्या को दूर करने का संकल्प करें। तलाक देना महापाप है। ऐसे पाप-कर्मों से दूर रहें। ब्रादर मण्डल की ओर से लोक कल्याण

के कार्य करते रहें।

१५ दिसम्बर शनिवार सायं जनता जनार्दन परिषद् की ओर से स्वामी टेऊंराम धर्मशाला, सिन्धुनगर-५ में सामूहिक विवाहों का आयोजन किया गया। पूज्य स्वामीजी ने नव-विवाहित वर-वधुओं को आशीर्वाद देते हुए कहा कि परिवार में शान्ति व प्रेम का वातावरण पैदा करें। घर में बड़ों की आज्ञा का पालन करें और उनकी सेवा करें। उनके आशीर्वाद से आप प्रगति कर सकेंगे। शादी का अर्थ है खुशी। आप स्वयं भी खुश रहें और दूसरों को भी खुश करने का प्रयास करें यदि आप मांस-भक्षण करते हैं, शराब पीते हैं तो आज से मांस-भक्षण व शराब का त्याग करें। प्यारे दयाल 'आशा' को इस आयोजन के लिए धन्यवाद है।

जनता जनार्दन परिषद् की ओर से २० से २२ दिसम्बर तक स्वामी टेऊंराम धर्मशाला सिन्धुनगर-५ में भाई दिलीप ढालूमल जतवाणी के सहयोग से प्राकृतिक चिकित्सा शिबिर का आयोजन किया गया। २० दिसम्बर पूज्य स्वामीजी ने इस शिबिर का उद्घाटन करते हुए कहा कि प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा कई बीमारियों से मुक्ति मिल सकती है। हम जितना प्रकृति के निकट जाएंगे उतना स्वयं को सुखी अनुभव करेंगे। शुद्ध वायु और साफ पानी स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। सात्विक खाना खाएं तो आप ठीक हो जाएंगे। श्री आसनदास भेरवाणी, डॉ मंघिरमलाणी एवं अन्य डॉक्टरों को इस शिबिर के लिए धन्यवाद है।

२२ दिसम्बर पूज्य स्वामीजी ने कांदिवली बम्बई में उपदेश करते हुए कहा कि धर्म रूपी बैल दया का पुत्र है। धर्म रूपी बैल पर यह धरती खड़ी है। इसलिए दिल में दया धारण करें। जहां लोभ होता है वहां दया नहीं होती। लोभी मनुष्य अपना स्वार्थ सिद्ध करने में मग्न रहता है। 'मिरवां मौत मलूका शिकार' पशुओं की मौत और अमीरों का शौक शिकार। बादशाह या अमीर लोग अपने मनोरंजन के लिए पशुओं को मारते थे। यह ठीक नहीं, पाप का काम है, अपने मनोरंजन के लिए पशुओं की हत्या करना कहाँ तक उचित है? प्रेमियो ! आप कभी ऐसा न करें। आप दूसरों पर दया करेंगे तो

परमात्मा आप पर दया करेगा । दस दरवेश भगवान के पास आए और भगवान को प्रणाम कर बैठ गये । भगवान ने पूछा "आपको क्या चाहिये? दरवेशों ने कहा- "हम आपसे दया व आशीर्वाद मांगने आये हैं ।" भगवान ने मुस्कुराते हुए कहा- "मेरे पास तो दया की बोरियां भरी पड़ीं हैं किन्तु आपने किसी पर दया की है या नहीं? सारा संसार दया के आधार पर चल रहा है ।" यह सुनकर दरवेश शान्त हो गये । उन्होंने कुछ समय पश्चात् कहा- "हमने आपकी भक्ति की है ।" भगवान ने कहा- 'भक्ति का फल आपको अवश्य मिलेगा।' आपने जो वस्तु बोअी है, उसका फल तो आपको अवश्य मिलेगा।" भक्ति करना एक उत्तम कार्य है किंतु साथ-साथ दया व परोपकार के कार्य भी करें, दीन-दुखियों, पशु-पक्षियों की सेवा करें तो आप दया के पात्र हो सकते हैं । जीवन में दया की ज्योति जगाएं ।

२४ दिसम्बर सायं आश्रम में पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में डॉ. चोइथराम गिदवानी का जन्मदिन उत्सव मनाया गया । श्री आसनदास भेरवाणी, परसराम कांग्रेसी, डॉ. दयाल 'आशा', गौतम शिकारपुरी ने डॉ. चोइथराम के जीवन-कार्यों पर प्रकाश डाला । पूज्य स्वामीजी ने पुष्पांजलि अर्पित करते हुये कहा कि डॉ. चोइथराम ने आजीवन ब्रह्मचारी रहकर देश व जाति की निष्काम भावना से सेवा की । देश के स्वतन्त्रता संग्राम में उन्होंने सक्रिय भाग लिया । आज राष्ट्र को ऐसे निष्काम व निष्ठावान नेताओं की आवश्यकता है ।

बहन पुष्पा ने प्रतिवर्ष की भांति अपने मन्दिर कुबरेनगर अहमदाबाद में अपने गुरुदेव स्वामी बसन्तरामजी महाराज का जन्मदिन उत्सव २७ दिसम्बर से ३० दिसम्बर तक आयोजित किया । इसी उत्सव केसम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी २८ दिसम्बर अहमदाबाद पधारे । बहन पुष्पा ने उनका स्वागत किया । पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि स्वामी बसन्तरामजी हमारे प्रेम प्रकाश मण्डल की महान मूर्ति थे । वे बड़े विद्वान एवं सन्त कवि भी थे । उन्होंने सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज की सेवा की और स्वयं भी सन्त बन गये । उन्होंने कई प्रेमियों को प्रभु प्राप्ति की राह बताई । ऐसे सन्त सदैव अजर-अमर हैं । सत्गुरु महाराज जी भी फरमाते हैं :-

अमर देश में संतजन, नित ही करत निवास ।
कह टेऊँ करते नहीं, काल कर्म तहं वास ।।

एक-एक सन्त महात्मा प्रभु का पैगाम लेकर आता है । परन्तु हममें से कुछ ही लोग सन्तों का सन्देश सुनकर उस पर मनन करते हैं । अधिकांश व्यक्ति एक कान से वचन सुनकर दूसरे कान से निकाल देते हैं । माया का बड़ा प्रभाव है । श्री गुरु तेगबहादुरजी महाराज भी फरमाते हैं :-

माया कारण धावई, मूर्ख लोग अजान ।
कह नानक सुनरे मना, क्यों न भजे भगवान ।।

अज्ञानी मनुष्य रात-दिन माया के लिये भटक रहे हैं, उनसे भगवान भी बिसर गया है । सन्त हमें प्रभु की स्मृति दिलाने आते हैं । सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज भी फरमाते हैं:-

उदर भरन के कारने, भटकत कांहि अजान ।
त्यागे चिन्ता पेट की, स्मरो श्री भगवान ।।

प्रेमियो ! सांसारिक अभिलाषाएं पूरी नहीं होंगी । एक परमात्मा का चिंतन करें तो आपको आनन्द की प्राप्ति होगी ।

३१ दिसम्बर प्रात: ७ बजे पूज्य स्वामीजी ने हरि कीर्तन दरबार सिन्धुनगर-३ में प्रवचन करते हुए कहा कि प्यारे रेवाचन्द केसवाणी, प्यारे साधूराम एवं अन्य सेवकों को धन्यवाद है जो इस गुरु मन्दिर की निष्काम भावना से सेवा कर रहे हैं । आज आप लोगों ने मुझे नये हॉल के निर्माण के भूमि-पूजन के लिए आमन्त्रित किया है । आप प्रभु के लिए और जनता के सुख के लिए मन्दिर व हॉल बनाएंगे तो परमात्मा आपके लिये सुन्दर मकान बनावाएंगे । ऐसे शुभ कार्यों के लिए दिल खोलकर दान करें । आप भाग्यशाली हैं कि प्रतिदिन यहां प्रात:काल आकर अमृतपान करते हैं । नाम की बड़ी महिमा है। नाम स्मरण से, नाम कीर्तन द्वारा आपके जन्म-जन्म के पाप नष्ट हो जाएंगे ।

काम धेनु अर कल्पतरु, चिन्तामणि हरि नाम।
कह टेऊँ जंहि सेवते, पूर्ण होवे काम॥

श्री गुरुनानकदेवजी महाराज अवतारी पुरुष होते हुए भी अधिक समय नाम स्मरण में सफल करते थे और दूसरों को भी नाम जपवाते थे। प्रेमियो ! आप भी खूब नाम जपें तो आपके काम स्वयं पूरे हो जायेंगे। आपने यात्रियों की सुविधा के लिए धर्मशाला का निर्माण करवाकर उत्तम कार्य किया है। प्रवचन के पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने हाल के निर्माण के लिए भूमि पूजा करवाई।

पूज्य स्वामीजी के पास कुछ शारीरिक बीमार भी आते थे। पूज्य स्वामीजी उन्हें साधन बताकर दुख दर्द दूर करते थे। प्यारे अजीत माधवदास अछड़िया को अलसर की तकलीफ हुई उसने कई डाक्टरों का उपाचर किया किन्तु रोग दूर नहीं हुआ। वह जसलोक बम्बई में भी उपचार के लिए गया परन्त अलसर से मुक्ति नहीं मिली। अजीत विश्वास रखकर पूज्य स्वामीजी के पास आया और अपनी अलसर की व्यथा सुनाई। सन्त परम दयालु होते हैं। स्वामीजी ने उसे सांत्वना देते हुए कहा कि घबराओ नहीं। प्रात: खाने पीने के पहले पांच सात दाने काली मिर्च को खाकर थोड़ा सा गर्म पानी पी लेना। भगवान भला करेगा। अजीत ने पूज्य स्वामीजी की आज्ञानुसार काली मिर्चों का सेवन किया। प्रभु की कृपा से उसे अलसर के रोग से मुक्ति मिल गई।

श्रीलाल बखतराम पूज्य स्वामीजी का भक्त है। सद् ग्रहस्थी होते हुए उसके मन में वैराग्य भावना है। उसके घर के बाहर उसकी कुटिया बनी हुई है, जहां वह एकांत में नाम चिन्तन करता है। एक दिन दोपहर को वह घर से अपना भोजन लेकर कुटिया में गया। उसका यह नियम है भोजन के पूर्व वह एक घंटा नाम स्मरण करता है फिर भोजन ग्रहण करता है। उसी दिन भजन करने के पश्चात् जैसे ही वह भोजन खाने के लिए उठा तो अचानक उसकी स्थिति गंभीर हो गई, उसने ऐसा अनुभव किया कि अब अन्तिम समय आ गया है। वह कुटिया में अकेला था, किसी को बुला भी नहीं सकता था। उस समय उसने साहस कर समीप में रखे घड़े से पानी निकाल कर पूज्य

स्वामीजी का ध्यान करते 'जय श्रीकृष्ण' 'सत्नाम साक्षी' मन्त्र उच्चारण कर वह जल पी लिया। तत्पश्चात् उसने यह अनुभव किया कि पूज्य स्वामीजी की आज्ञा से ही उनसे मन्त्र उच्चारण कर जल लिया है। जल पीने के पश्चात् उसके स्वास्थ्य में सुधार हुआ। पूज्य स्वामीजी का ध्यान करने से और मन्त्र उच्चारण करने से लाल भाई पीड़ा से मुक्त हुआ।

३ जनवरी १९९१ प्रातः ११ बजे पूज्य स्वामीजी एच.ए.सी. सिन्ध हाई स्कूल नासिक पधारे। विद्यार्थियों ने उनका स्वागत करते हुए 'श्री सत्नाम साक्षी' की धुनि लगाई। प्राध्यापिका पद्मा शहाणी ने पूज्य स्वामीजी का अभिनन्दन करते हुए उनके परोपकारी जीवन का वर्णन किया। नासिक शिक्षण मण्डल के प्रधान सुन्दरदास राजपाल ने पूज्य स्वामीजी एवं दयाल 'आशा' को शाल भेंट करते हुए कहा कि हमारा सौभाग्य है कि आज हमारे राष्ट्रीय सन्त सत्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाशजी महाराज यहाँ पधारे हैं। उनकी कृपा व योगदान से हम विद्यार्थियों के लिए बस खरीद सके है, जिसका उद्घाटन आज पूज्य स्वामीजी करेंगे। पूज्य स्वामीजी ने बस का उद्घाटन करते हुए कहा कि विद्यार्थियों में शुभ संस्कार डालें, जैसे वे माँ-बाप व गुरुजनों को सम्मान दें व उनकी सेवा करें। एक बार किसी कार्यक्रम में महात्मा गांधी मंच पर बैठे थे तो उनकी दृष्टि अपने अध्यापक पर पड़ी जो श्रोतागणों में नीचे बैठा था। गांधीजी ने स्वयं मंच से उतरकर अपने अध्यापक को मंच पर लाकर बिठाया। यह देखकर लोग विस्मय में पड़ गये। महात्मा गांधी को अपने अध्यापकों के प्रति कितनी न आदर की भावना थी। प्रेमियो ! आज आप से अनुरोध करता हूँ कि आप कितनी भी भाषाएं सीखें किन्तु अपनी मातृभाषा सिन्धी को नहीं भूलें। पहले मातृभाषा सीखें, अपने बच्चों को मातृभाषा से वंचित न रखें। पशु पक्षियों को भी अपनी भाषा प्रिय लगती है। डॉ. दयाल 'आशा' ने भी शिक्षाप्रद व्याख्यान दिया। पूज्य स्वामीजी ने सभी विद्यार्थियों को एक एक बालपेन भेंट की। श्री मयाराम कुकरेजा ने कार्यक्रम का संचालन किया।

४ जनवरी १९९१ पूज्य स्वामीजी साधु वासवाणी नगर थाणा में

पधारे । वहां प्रतिवर्ष की भांति बेकरी पंचायत ने श्री गुरु ग्रन्थ साहब की वाणी का अखण्ड पाठ रखवाया और पूज्य स्वामीजी के सत्संग प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया। श्री लक्ष्मणदास पंजवाणी, सुन्दरदास आडवाणी एवं अन्य प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत किया । रात्रि को उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि आपका सांसारिक पदार्थों में मोह है, मोह के स्थान पर आप प्रभु के प्रति प्रेम रखें क्योंकि भगवद् प्रेम के बिना जीवन व्यर्थ है । सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं :-

धन विद्या गुण रूप बल, भावत ना भगवान ।
टेऊं हरि को भावहीं, प्रेम एक प्रधान ।।

मीरा का यश सुनकर अकबर बादशाह वेश बदलकर तानसेन के साथ मेवाड़ में मीरा के दर्शन के लिये आया । मीरा उस समय भगवान रणछोड़ के मन्दिर में भगवान श्रीकृष्ण के गीत गा रही थी । उसके गायन में दर्द था । जो श्रवण करता था वह प्रभावित हो जाता था। वह लोगों के लिए नहीं गाती थी, वह तो भक्ति की मस्ती में प्रभु को प्रसन्न करने के लिए गाती थी । अकबर बादशाह भी मीरा की प्रेमाभक्ति देखकर अत्यन्त प्रभावित हुआ । जब राणा विक्रमादित्य को यह पता चला कि अकबर बादशाह वेश बदलकर मीरा के दर्शन के लिए आए थे तब उसने मीरा को दंडित किया । जबकि मीरा का कोई दोष नहीं था। वह तो प्रेम के आँसू बहाती हुई श्री श्यामसुन्दर को पुकारती रही। प्रभु के प्रेमियों ने कितने न कष्ट झेले हैं । मीरा व्याकुल एवं उदास हो गई । वह मेवाड़ के राजमहल का परित्याग कर भगवान श्रीकृष्ण की ब्रजभूमि एवं अन्य तीर्थों की यात्रा के लिए निकल पड़ी ! मीरा मुरली मनोहर की मस्ती में गाती है :-

चलो मन गंगा यमुना तीर ।
गंगा यमुना निर्मल पानी शीतल होत शरीर ।
बन्सी बजावत गावत कान्हा, संग लिए बलवीर ।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, कुंडल झलकत हीर ।
मीरा के प्रभु गिरधर, चरण कमल पै सीर ।

प्रेमियो ! आपको धन्यवाद है कि आप प्रतिवर्ष सत्संग यज्ञ का आयोजन करते है। सत्संग का मूल उद्देश्य है नाम जपना, नाम जपाना, मन की वृत्ति प्रभु से जोड़ना और शुभ कर्म करना।

७ जनवरी पूज्य स्वामीजी प्रेम प्रकाश मन्दिर, इन्दौर पधारे। वहाँ उन्होंने चार दिन अमृत वचनों की वर्खा की। उन्होने प्रवचन करते हुए कहा कि सन्तों की निन्दा मत करें। मैं तो चाहता हूं किसी की भी निन्दा नहीं करें।

सन्त की निन्दा नानका बहुर बहुर अवतार।

राजा कुलशेखर धर्मिष्ठ और भक्त राजा था। एक दिन उसके कोष से एक अमूल्य हीरा गायब हो गया। मन्त्रियों ने राजा के पास आने वाले सन्तों पर हीरा चोरी करने का आरोप लगाया। कुलशेखर ने यह सुनकर अपने मन्त्रियों को बुलाकर कहा कि सन्त लोग हीरे क्या करेंगे ! कुलशेखर ने एक विषैले सांप वाली पिंडी मंगवाकर मन्त्रियों और नौकरों से कहा कि आप में से जो हीरे उठाने का आरोप सन्तों पर लगता है, वह इस सांप वाली पिंडी में हाथ डाले। यदि उसका आरोप सत्य होगा तो सांप उसे डंक नहीं मारेगा और आरोप झूठा होगा तो सांप उसे अवश्य डंक मारेगा। यह सुनकर सभी मन्त्री एवं राजा के नौकर डर गये। राजा ने स्वयं उस पिंडी में हाथ डाला तो सांप शान्त बैठा रहा। सांप ने राजा कुलशेखर को स्पर्श तक नहीं किया। यह देखकर वहां बैठे मन्त्री एवं लोग आश्चर्य में पड़ गये। राजा कुलशेखर ने उन्हें समझाते हुए कहा कि जो सन्तों की निन्दा करता है, उन पर झूठे आरोप लगाता है वह पाप की भागी बनता है। भक्त लोग सांसारिक पदार्थों को क्या करेंगे? जिन्होंने आत्मिक आनन्द प्राप्त किया वे सांसारिक रसों को क्या करेंगे? प्रेमियो ! किसी पर झूठा आरोप नहीं लगाएं, किसी की निन्दा न करें। आप नाम स्मरण एवं उपकार के कार्य कर मानव जीवन सफल करें।

१२ जनवरी पूज्य स्वामीजी अमरापुर स्थान जयपुर पधारे। वहाँ उन्होंने चार दिन अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। उन्होंने उपदेश करते हुए कहा कि कितने भी सूर्य व चांद उदय हों किंतु फिर भी मन का अन्धेरा दूर नहीं हो सकता। अपने मन

में ज्ञान का दीप जलाने से ही मन का अन्धकार दूर होगा, अपने साक्षी रूप का भास होगा । कोई मनुष्य घर की सफाई न कर रास्ते की सफाई करे, वह मूर्ख होगा । घर साफ स्वच्छ होता तो घर में रहने में भी आनन्द आयेगा वैसे ही मन भी साफ होगा, निर्मल होगा तो आनन्द का अनुभव कर सकेंगे । प्रेमियों ! सन्तों की वाणी द्वारा मन को निर्मल करें । गुरु ही ज्ञान व मोक्ष का दाता है, सत्मार्ग दर्शाता है । सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं :-

गुरु बिन रंग न लागही, गुरु बिन ज्ञान न होय ।
कह टेऊं सत्गुरु बिना, मुक्ति न पावे कोय ।।

प्रेमियो ! गुरुमन्त्र का खूब अभ्यास करें । साधना करते करते किसी न किसी दिन आप की वृत्ति प्रभु से जुड़ जायेगी । परमात्मा से बार-बार यह प्रार्थना करें:-

इन्द्र-राज वैकुंठ सुख, नहीं मांगू धन धाम ।
कह टेऊं मुझ दीजिये, हे हरि अपना नाम ।।

१८ जनवरी को प्रात: १० बजे स्वामी टेऊँराम धर्मशाला सिन्धुनगर-५ में सावित्रीबाई फुले बाल मन्दिर एव प्राथमिक शाला का भूमि पूजा उत्सव आयोजित किया गया । पूज्य स्वामीजी इस उत्सव के मुख्य अतिथि थे । उन्होंने आशीर्वाद देते हुए कहा कि बच्चों में शुभ संस्कार डालें । बालक सुधर जायेंगे तो देश सुधर जायेगा । विद्यार्थियों के न केवल पढ़ाई किन्तु मानसिक एवं शारीरिक विकास की ओर पूरा पूरा ध्यान देना चाहिए जिससे भविष्य में वे नेक और एक बनें ।

बड़ौदा में सन्त उद्धवदास ब्रह्मचारी ने गीता ज्ञान यज्ञ का आयोजन किया । इसी उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी २१ जनवरी बड़ौदा पधारे । वहां उन्होंने तीन दिन अमृत वचनों की वर्खा की । उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि सांसारिक सम्बन्धी स्वार्थ के हैं । सन्त और परमात्मा आपके सच्चे सहायक व साथी हैं । वे इस लोक एवं परलोक में आपकी सुरक्षा करेंगे । मोह वश आप कितने ही कष्ट झेलते हैं । परिवार की पालना करनी चाहिए किन्तु उसके लिए बेईमानी, ठगी व लालच नहीं करनी चाहिए । जगत् में अनासक्त भाव से रहकर

नाम चिन्तन करना चाहिए। निष्काम भावना से दीन दुखियों की सेवा करें। सत्गुरु महाराजी भी फरमाते हैं :-

सन्त गुरु परमात्मा, साचे संगी जान।
कह टेऊं इन तीन से, करले प्रेम सुजान ।।

अवतारी पुरुष, कई सन्त संसार में सद्गृहस्थी होकर रहे, फिर भी उनकी वृत्ति नाम से जुड़ी हुई थी। वे जगत् में कमल की भांति निर्लेप रहे। आप भी ऐसे ही संसार में रहें। यही गीता का ज्ञान है।

२३ जनवरी पूज्य स्वामीजी नागपुर पधारे। सायं उन्होंने वहां सत्संग प्रवचन किये। २४ जनवरी उन्होंने कामठी में सत्संग प्रवचन किये। २५ जनवरी प्रातः १० बजे प्राध्यापक श्री खूबचन्द बजाज ने महात्मा गांधी स्कूल में पूज्य स्वामीजी का सम्मान समारोह आयोजित किया। कई प्रेमियों ने उन्हें फूल मालाएं भेंट की। श्री बजाज ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत कर स्कूल की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि स्कूल की ओर से एक भव्य हाल बनाने की योजना है, पूज्य स्वामीजी आशीर्वाद करें जैसे यह योजना शीघ्र ही कार्यान्वित हो। डॉ. दयाल 'आशा' ने पूज्य स्वामीजी के गुणों का वर्णन करते हुए कहा पूज्य स्वामीजी हाल के निर्माण के लिए पच्चीस हजार रुपये दे रहे हैं। आप भी इस हाल के निर्माण हेतु दान करें। स्कूल के विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

पूज्य स्वामीजी ने विद्यार्थियों में पुरस्कार वितरण करते हुए कहा कि आपका यह विद्या मन्दिर एक आदर्श विद्या मन्दिर है। विद्यार्थियो! आप अपने गुरुजनों एवं माँ बाप को सम्मान दें और उनकी आज्ञा का पालन करें तो आपको उनका आशीर्वाद प्राप्त होगा। आप ईमानदारी से पुरुषार्थ करेंगे तो सफलता आप सभी के चरण चूमेगी। आज सारे देश का वातावरण दूषित हो गया है, अधिकांश लोग स्वार्थी बन गये हैं। यदि प्रत्येक भारतवासी अपना अपना कर्तव्य पालन करे तो देश की फिज़ा बदल जाये।

जापान में एक अमरीकी कम्पनी ने एक कारखाना खोला। अमरीका में सप्ताह में पांच दिन काम किया जाता है, और दो दिन शनिवार और रविवार छुट्टी की जाती है। अमरीकी कम्पनी ने जापान में अपने

कारखाने में भी सप्ताह में दो दिन छुट्टी की। कारखाने में काम करने वाले सब जापानी थे। उन्होंने कारखाने के व्यवस्थापक से कहा कि आप हमें सप्ताह में दो दिन छुट्टी देकर आलसी बना रहे हैं। हमें दो दिन छुट्टी नहीं चाहिए। छुट्टी के दिन व्यर्थ खर्चा भी होता है और उत्पादन में भी कमी आती है। अमरीकी फर्म के व्यवस्थापक को जापानियों की बात माननी पड़ी। प्रेमियों ! जापानियों में परिश्रम का अधिक गुण है, इसलिए जापान ने अधिक प्रगति की है। आप भी परिश्रम करें। कर्तव्य पालन करने में आलस्य नहीं करें।

२६ जनवरी पूज्य स्वामीजी गोंदिया पधारे। वहां उन्होंने दो दिन अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। २८ जनवरी वे भाटापारा आये। वहां माता समुझबाई के पुण्यतिथि उत्सव के सम्बन्ध में उन्होंने तीन दिन विभिन्न विषयों पर प्रवचन किया। कई प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी से नाम दान लिया। पूज्य स्वामीजी ने उपदेश करते हुए कहा कि आजकल आपको नाम दान शीघ्र मिल जाता है। पहिले गुरु कठिन परीक्षाएं लेकर गुरु मन्त्र देते थे। साधक वर्षों तक गुरु के यहां सेवा व साधना करते थे। जब गुरु शिष्य पर प्रसन्न होता था तब दयादृष्टि करता था। आप भी सत्गुरु से प्रार्थना करें :-

तुम बिन सत्गुरु देव, मुझ और नहीं है ठोर।
चरण शरण में राख ले, सुन विनती यह मोर॥

प्रेमियो ! आप भी परमात्मा और सत्गुरु में पूर्ण विश्वास धारण कर नाम स्मरण करें। माता समुझ आपकी सगी सम्बन्धी नहीं थी फिर भी आप प्रतिवर्ष उसका पुण्यतिथि उत्सव मनाते है क्योंकि उसने अपना जीवन स्मरण में सफल किया। वह प्रभु प्रेम में विभोर होकर भजन गाती थी। आप भी नियमित रूप से यहां आकर सत्संग का लाभ उठायें।

कलि काल में कठिन है, योग यज्ञ तप ध्यान।
साध संगति हरि नाम से, टेऊं हो कल्यान॥

प्रेमियो ! कलियुग में आप कठिन तपस्या नहीं कर सकेंगे। इस लिए घर गृहस्थ में रहकर सन्तों का संग करें, नाम स्मरण व शुभ

कर्म करें तो आपका कल्याण होगा।

सन्त अनन्तप्रकाश ने ४ फरवरी से ६ फरवरी तक पूना स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मन्दिर में स्वामी चन्दनप्रकाश के पुण्य तिथि उत्सव का आयोजन किया। इसी उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी ४ फरवरी को वहां पधारे। वहां उन्होंने तीन दिन ज्ञान की गंगा प्रवाहित करते हुए स्वामी चन्दनप्रकाश के गुणों का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि स्वामी चन्दनप्रकाश, सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज एवं सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की दया दृष्टि से स्वयं भी सन्त बन गये। वे परोपकारी सन्त थे। आप भी जीवन में नाम स्मरण करें और सेवा के कार्य करें जिससे गुरु कृपा के पात्र बन सके।

सत्गुरु बादल बरसिया, अपनी कृपा धार।
कह टेऊं हर ताप को, दीना सूख अपार॥

श्री नन्दलाल बख्तियाणी एवं साथियों ने कपलेश्वर महादेव मन्दिर कुर्ला, बम्बई में शिव रात्रि के उपलक्ष्य में उत्सव का आयोजन किया। पूज्य स्वामीजी ने ७ फरवरी को वहां सत्संग प्रवचन करते हुये कहा कि सन्तों के संग में सच्चे सुख की प्राप्ति होती है। सुख सांसारिक विषय-पदार्थ भोगने में नहीं है। किसी न किसी सन्त महात्मा का संग करें। एक बार भगवान श्री शंकर बैल पर सैर करते- करते बैल से उतर कर बालू पर लेट गए। यह देखकर पार्वतीजी ने पूछा- 'महाराज! आप बालू पर क्यों लेट गए?'भगवान शंकर ने कहा- 'पार्वती ! इस बालू पर किसी महात्मा ने भक्ति- साधना की है। उसकी भक्ति- साधना के कारण यह स्थान पवित्र हो गया है। जहां भक्त भक्ति करते हैं, वह भूमि भाग्यशाली है, वहां लेटने- बैठने में आनन्द आता है।' प्रेमियों ! भगवान शंकर भोलानाथ भक्ति को इतना महत्व देते थे। आप भी भगवद् भक्ति करें तो प्रभु प्रसन्न होंगे।

८ फरवरी पूज्य स्वामीजी कटनी पधारे। वहां उन्होंने दो दिन अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। उन्होंने उपदेश करते हुए कहा कि मनुष्य जीवन व्यर्थ नहीं गंवाएं। अपने श्वास नाम स्मरण एवं शुभ कर्मों में सफल करें। सत्गुरु महाराजजी भी जीव को जागृत करते हुए कहते हैं:-

मुक्ति द्वार मानव तन, पाया पूरब भाग।
कह टेऊँ पा मुक्ति को, गुरु चरणों में लाग ।।

प्रेमियो ! मनुष्य योनि में ही प्रभु प्राप्ति सम्भव है । देवताओं का शरीर हमसे अधिक शुद्ध व पवित्र होता है और हमारा शरीर अपवित्र है । विकारों की कीचड़ में फंस जाने के कारण मैला है । जैसे कोई कीचड़ से भरा सूकर (सूअर) हमारे निकट आये तो हमें दुर्गंध आयेगी, वैसे ही देवताओं को मनुष्य शरीर से दुर्गंध आती है । देवताओं का शरीर दिव्य होता है, उसमें तेजस तत्व अधिक होता है फिर भी देवताओं की तुलना में मनुष्य को जल्द भगवान की प्राप्ति हो सकती है । काक भुसुण्डी से गरुड़ ने पूछा कि उत्तम योनि कौन- सी है ? काक भुसुण्डी ने कहा-

नर तन सम नहीं, कोऊ देही,
जीव चराचर जाचत चेही ।

सभी जीव मनुष्य देही के इच्छुक रहते हैं, किंतु हम मनुष्य जीवन प्राप्त कर उसका मूल्यांकन नहीं कर इसे व्यर्थ गंवा रहे है । प्रेमियो! मनुष्य जीवन का क्षण- क्षण नाम चिंतन में सफल करें ।

सिन्धुनगर की दो संस्थाओं- 'प्रेम मण्डल' एवं 'गुरुनानक बाल जगत सभा' के कार्यकर्ताओं ने मिलकर 'श्री गुरुनानक प्रेम मण्डल' एक संगठन बनाया । १३ फरवरी सायं साधु वासवाणी उद्यान के पीछे सिन्धुनगर- १ में पूज्य स्वामीजी के प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया। पूज्य स्वामीजी मण्डली सहित वहां पधारे । मदन रहेजा ने उनका स्वागत किया । डॉ. दयाल 'आशा' ने कहा कि सन्त जोड़ते हैं । आज पूज्य स्वामीजी आपकी दोनों संस्थाओं को जोड़ने के लिये आशीर्वाद देने आए है। कृष्णलाल बजाज ने भी पूज्य स्वामीजी की महिमा गाई। पूज्य स्वामीजी ने कार्यकर्ताओं को धन्यवाद देते हुए कहा कि जो पैसा लेकर सेवा करे उसे नौकर कहते हैं किंतु जो निष्काम भावना से सेवा करता है, वही सच्चा सेवक है । आप लोगों ने संस्था का नाम ही गुरुनानक प्रेम मण्डल रखा है, तो आप श्री गुरुनानक की भांति सभी प्राणियों

को प्यार दें। आपस में एकता के साथ कार्य करें। आप प्रतिदिन सत्संग का आयोजन करते है, इसलिए आपको बहुत- बहुत धन्यवाद! सत्संग का उद्देश्य है नाम स्मरण करना। नाम स्मरण एवं सेवा करने में विलम्ब नहीं करें।

पूज्य स्वामीजी की कई वर्षों से चाह थी और प्रेमियों का भी आग्रह था कि वृन्दावन में मण्डल की और से होली उत्सव आयोजित किया जाये। इसीलिए प्रेम प्रकाश मण्डल की और से १७ फरवरी से २ मार्च तक वृन्दावन में होली उत्सव आयोजित किया गया। इसी उत्सव के उपलक्ष्य में पूज्य स्वामीजी १६ फरवरी वृन्दावन धाम पधारे। उन्होंने वहां स्वामी टेऊंराम अन्नक्षेत्र आरम्भ किया। इस उत्सव में कई सन्त एवं हज़ारों प्रेमी सम्मिलित हुए। प्रतिदिन पूज्य स्वामीजी एवं अन्य सन्त अमृत वचनों की वर्खा करते रहे। वे राजराजेश्वर भगवान श्यामसुन्दर की लीलाओं का वर्णन कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देते थे। सायं के समय रासलीला का आयोजन होता था। प्रेमी रासलीलाओं का आस्वादन कर प्रसन्न होते थे। सन्त वैरागी बाबा भी समय- समय पर आकर भगवान श्रीकृष्ण के प्रेम की गाथाएं सुनाते थे। वह स्वयं भी श्री चैतन्य महाप्रभु को भांति भक्ति विभोर होकर नाचते तो और प्रेमी भी नाच उठते थे।

२४ फरवरी रविवार के दिन पूज्य स्वामीजी सन्तों व प्रेमियों के साथ वृन्दावन के पावन स्थल बरसाना, नंदगांव, श्री गिरिराज, राधाकुण्ड, श्री गोकुल, ब्रह्मकुण्ड, रमणरेती, द्वारकाधीश मन्दिर आदि की यात्रा कर आये। २५ फरवरी एकादशी के दिन प्रातः पूज्य स्वामीजी ने एकादशी का महत्व बताते हुए भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन क़िया। उसके पश्चात् पूज्य स्वामीजी, अन्य सन्त एवं प्रेमी वृन्दावन धाम की परिक्रमा देने के लिये राधाकृष्ण की धुनि लगाते निकले। होली के दिन कई प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी एवं अन्य सन्तों एवं एक दूसरे को गुलाल व रंगों से लबालब कर दिया। चारों ओर आनंद बरस रहा था।

३ मार्च पूज्य स्वामीजी आगरा पधारे। उन्होंने वहां प्रेम प्रकाश

मन्दिर में सत्संग प्रवचन किया। ५ मार्च उन्होंने बोरिवली बम्बई में संत गंगानाथ के पुण्यतिथि उत्सव के सम्बंध में सत्संग प्रवचन किये। श्री लोकूमल ने स्वामीजी का आभार माना। ८ मार्च को उन्होंने सौराष्ट्र के लिये प्रस्थान किया।

९ मार्च पूज्य स्वामीजी प्रभास पाटण सोमनाथ में पधारे। वहां १० मार्च को जनता जनार्दन परिषद् एवं सौराष्ट्र सिन्धी फेडरेशन पंचायत की ओर से सामूहिक यज्ञोपवीत एवं सामूहिक विवाहों का आयोजन किया गया। पंचायत के प्रधान श्री नेवंदराम लोकवाणी ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत करते हुए कहा कि पूज्य स्वामीजी हमारे सच्चे मार्गदर्शक हैं। उनके सहयोग एवं आशीर्वाद से ही यह सामूहिक विवाहों का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाता है। पूज्य स्वामीजी ने नव विवाहित वर- वधुओं को आशीर्वाद देते हुये कहा कि आप गृहस्थ जीवन में प्रवेश कर रहे हैं। माता- पिता, सास- ससुर को सम्मान दें, छोटों को प्यार करें। प्रतिदिन प्रभु की प्रार्थना करें और मांसाहार से सदैव दूर रहें तब आपका जीवन सुखमय होगा। डॉ. दयाल 'आशा' ने भी वर- वधुओं से अनुरोध किया कि मांसाहार से दूर रहें।

१० मार्च रात्रि को पूज्य स्वामीजी ने स्वामी लीलाशाह सोसायटी के प्रांगण में अमृत वचनों की वर्खा की। ११ मार्च सोमवार को अम्बिका नगर, जुनागढ़ में पूज्य स्वामीजी ने 'स्वामी सर्वानन्द एज्यूकेशन ट्रस्ट' की ओर से सिन्धी प्राथमिक शाला के निर्माण हेतु भूमि- पूजन किया। ट्रस्ट के प्रधान श्री सीरूमल वापारीमल ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत किया। पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुये कहा कि मुझे प्रसन्नता हो रही है कि आप लोग यहां सिन्धी प्राथमिक शाला के लिये विद्या- मंदिर बनवा रहे हैं। अपनी भाषा पशु- पक्षियों को भी प्रिय लगती है, आप मातृभाषा सिन्धी को नहीं भुलाएं। पूज्य स्वामीजी की ओर से इस विद्या- मंदिर के निर्माण के लिये पचास हजार रुपये दान की घोषणा की गई। डॉ. दयाल 'आशा' ने दानदाताओं से दान देने के लिए अनुरोध किया। पोकरदास थधोमल टेकचन्दाणी, हिम्मथसिंह ने अपनी पत्नी सुमन आडवाणी की स्मृति में पांच- पांच हजार रुपये दिए और भाइयों ने भी सहायता दी। डॉ. रेवाचन्द गोधवाणी ने आभार

प्रदर्शन किया ।

रात्रि को जुनागढ़ के स्वामी लीलाशाह सोसायटी के हॉल में कर्मयोगी स्वामी लीलाशाहजी महाराज का जन्मदिन उत्सव पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में मनाया गया । प्रधानाध्यापक श्री हेमंतकुमार तोलाणी ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत किया । पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि स्वामी लीलाशाह न केवल महान सन्त थे अपितु समाज सुधारक और देश भक्त भी थे । उन्होंने दहेज एवं अन्य सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध प्रचार कर समाज को जागृत किया । वे आध्यात्मिक मार्गदर्शक भी थे । डॉ. दयाल 'आशा' ने भक्ति संगीत की वर्खा करते हुए पूज्य स्वामी लीलाशाह के कुछ संस्मरण सुनाये ।

१३- १४ मार्च को पूज्य स्वामीजी ने राजकोट में अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की । १५ मार्च वे सिन्धुनगर लौट आये । स्वामी जीवनमुक्तजी के शिष्य सन्त योगीराज के ७ मार्च को अहमदनगर में ब्रह्मलीन हुए । उनके त्रियोदशी उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी १९ मार्च को अहमदनगर पधारे । पूज्य स्वामीजी ने योगीराज को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उन्होंने स्वामी जीवनमुक्त की बहुत सेवा की । हरिद्वार एवं अमरापुर स्थान जयपुर में उत्सवों के समय योगीराज बहुत ही सेवा करते थे और प्रेमियों को नाम जपाते थे । परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें ।

२१- २२ मार्च पूज्य स्वामीजी ने ब्यावर में अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की । प्रेम प्रकाश मण्डल के वार्षिक उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी २३ मार्च अमरापुर स्थान जयपुर पधारे। २८ मार्च को वहां स्वामी गुरुमुखदासजी महाराज की पुण्यतिथि मनाई गई । पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामी गुरुमुखदासजी के गुणों का वर्णन किया । २९ मार्च से २ अप्रैल मण्डल का वार्षिक उत्सव मनाया गया । २९ मार्च प्रातः पूज्य स्वामीजी ने धर्म ध्वजा फहराकर उत्सव आरम्भ किया । ३ बजे दोपहर अमरापुर स्थान से पूज्य स्वामीजी के नेतृत्व में शोभायात्रा निकाली गई । शोभायात्रा में कई सन्त एवं हजारों श्रद्धालु 'सत्नाम साक्षी' की धूम मचाते चल रहे

थे।

३० मार्च प्रातः पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि प्रेमियों ! अमृत वेला व्यर्थ नहीं गंवायें। प्रातःकाल उठकर गुरुमन्त्र का अभ्यास करें। निर्धारित स्थान व निर्धारित समय पर यदि आप गुरुमन्त्र की साधना करेंगे तो आपको आत्मिक आनन्द व शक्ति का अनुभव होगा। सांसारिक बातों को भूलकर एक प्रभु का ही ध्यान व चिन्तन करें। सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं :-

अमृत वेले ऊठके छोड़, कल्पना काम।
कह टेऊं हरि ध्यान धर, सुमरो गुरु का नाम॥

चैत्र मेले के सुअवसर पर प्रेम प्रकाश संदेश द्वारा 'क्षमा' विषय पर विशेषांक प्रकाशित किया गया। इस विशेषांक हेतु 'विशेषांक यशस्वी बने' नामक शीर्षक से भेजे गये संदेश में पूज्य स्वामीजी ने कहा था- 'क्षमा वीरस्य भूषणम्' क्षमा वीर के लिये अलंकार रूप है। किसी के अपकार करने पर इसके प्रतिशोध की सामर्थ्य रहने पर भी अपकार न करना और उसके अपराध को भगवान से प्रार्थना करके क्षमा करवा देना- 'क्षमा' है।

'ब्राह्मणं बलं क्षमा' अर्थात् ब्राह्मणों (सन्तों) का बल क्षमा ही है। गुरु महाराजजी ने भी श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ में कहा है-

'क्षमा कफनी पहन के, शोभा पावत सन्त।'
कह टेऊं तज क्रोध को पाया मोद अनन्त॥

जो मनुष्य क्षमावान है, वह धन्य है, क्योंकि क्षमा वृत्ति को प्राप्त किये बिना मनुष्य आत्मा- का अनुभव कर ही नहीं सकता।

चैत्र मेले के सुअवसर पर 'प्रेम प्रकाश सन्देश' 'क्षमा' पर विशेषांक प्रकाशित कर रहा है- यह प्रसन्नता का विषय है। यह विशेषांक भगवान श्रीकृष्ण तथा पूज्य गुरुवर द्वय की अनुकम्पा से सफल और यशस्वी बने।

उक्त विशेषांक का विमोचन करते हुए पूज्य स्वामीजी ने उपस्थित जन समुदाय को सम्बोधित करते हुए कहा कि 'क्षमा' एक अलौकिक गुण है। इस अलौकिक गुण के बारे में कभी- कभी भ्रान्त धारणा

हो जाया करती है। निर्बल या कायर लोग तथाकथित क्षमा का अवलंबन (सहारा लेकर) कर अन्याय सहन कर लेते हैं और गर्व करते हैं कि वे क्षमावान है। किन्तु सही बात यह है कि शक्ति होने पर भी जो मनुष्य अपने दिमाग पर प्रभुत्व जमाये रहते हैं वे ही यथार्थ रीति से क्षमावान हैं। पूज्य गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं :-

क्षमां जांके मन बसे, सो देवों का देव।
कह टेऊं तिस पुरुष की, सभ जन करते सेव ॥

पुराणों एवं अन्य धर्म ग्रन्थों में क्षमा के सम्बन्ध में अनेकों प्रसंग आए हैं। महर्षि वशिष्ठ जी तो साक्षात् मूर्तिमान क्षमा थे। विश्वामित्र जी के समस्त अस्त्र शस्त्र, बल को वसिष्ठजी ने अपने क्षमा बल से परास्त कर दिया था। इसके अतिरिक्त अनेक ऋषियों, महापुरुषों, सूफी सन्तों महात्माओं जैसे भगवान बुद्ध, भगवान महावीर, भक्त प्रहलाद, सती द्रौपदी, सन्त नामदेव, सुकरात, समर्थ गुरु रामदासजी, श्री गुरुनानक देवजी महाराज, पूज्य गुरुवर स्वामी टेऊंरामजी महाराज, पूज्य गुरुवर स्वामी सर्वानन्दजी महाराज इत्यादि की क्षमाशीलता की कथाएं बड़ी ही हृदय स्पर्शी हैं।

क्षमा के माध्यम से बड़े से बड़े विवादों का अन्त हो जाता है। क्षमावान पुरुष इस लोक में तो सम्मान पाता ही है। परन्तु उसे परलोक में भी परमगति प्राप्त होती है। इसलिये आप सभी अपने जीवन में 'क्षमा' को अपनायें तो आपको आनन्द की प्राप्ति होगी। पूज्य गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं-

क्षमा जांके मन बसे, तांको अति आनन्द।
कह टेऊँ तिस पुरुष को, मेरी है निस वन्द ॥

पूज्य स्वामीजी ने उत्सव के पांचों दिन विभिन्न विषयों पर प्रवचन करते हुए प्रेमियों का मार्ग दर्शन किया। २ अप्रैल प्रातः पूज्य स्वामीजी ने मण्डल के सन्तों के साथ उत्सव का समापन करते हुए कहा कि सिन्ध में पूज्य सतगुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज ने इस उत्सव की स्थापना की थी। 'मेले' का अर्थ है मेलाप अर्थात् प्रेमियों का मेलाप तब होता है जब मुहब्बत होती है। सन्तों व प्रेमियों का स्नेह सम्बन्ध

बढ़ता रहे। ऐसे उत्सवों का मूल उद्धेश्य है नाम जपना व नाम जपाना। इस पवित्र स्थान पर चार दिन विभिन्न सन्तों महात्माओं ने ज्ञान व भक्ति की गंगा प्रवाहित कर हज़ारों प्रेमियों की प्यास पूरी की। आप यदि इस भवसागर से पार होना चाहते हैं तो सत्संग रूपी जहाज़ द्वारा पार लग सकते हैं। सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं :-

पार करत भव सिन्धु से, सत्संग परम जहाज।
कह टेऊं ता में चढ़ो, छोड़ जगत् की लाज ॥

सत्संग में आने से संकोच नहीं करें। संतों के वचन श्रवण कर उनकी शिक्षा को जीवन में अपनायें। हम सब भाग्यवान हैं कि हमें सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज और सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज, सत्गुरु रूप में प्राप्त हुए, जिन्होंने हमें श्री 'सतूनाम साक्षी' मन्त्र देकर मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया।

सत्गुरु पूर्ण पाइया, होया कार्ज रास।
कह टेऊं मंगल भया, टूटी यम की फास ॥

सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज भजनशील सन्त थे। वे कई कई रातें जागकर भगवद् स्मरण करते थे। वे नाम जपते जपते लालों लाल हो गये। सन्त कबीर ने यह अनुभव बताते हुए कहा :-

लाली मेरे लाल की, जित देखूं तित लाल।
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल ॥

उनके मुख से वाणी रूप मंदाकिनी प्रवाहित हुई। उस वाणी के पढ़ने एवं श्रवण करने से भी आनन्द की प्राप्ति होती है। प्रेमियों। आप भी सत्गुरु महाराजजी की वाणी 'प्रेम प्रकाश ग्रन्थ' का अभ्यास करें। प्रतिदिन उसमें से एक वचन लेकर उसका अनुसरण करें। यदि आप किसी समस्या में उलझे हुए हैं तो श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ से वचन लेने से समाधान मिल जायेगा। सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने मण्डल का नाम ही प्रेम प्रकाश मण्डल रखा। आज आप यहां से प्रेम का पैगाम ले जाएं। प्रेम द्वारा ही आप को परमात्मा की प्राप्ति होगी। सत्गुरु महारजजी भी अपनी वाणी में कहते हैं :-

कह टेऊँ मैं देखिया, करके मन ही विवेक ।
सब साधन का मूल है, प्रेम प्रभु का एक ।।

जिसके मन में प्रभु के प्रति प्रेम है, वह सब प्राणियों को प्यार करता है । आप भी न केवल परिवार के सम्बन्धियों को वरन् मानव मात्र एवं पशु पक्षियों को भी प्यार करें । किसी के दिल को ठेस मत पहुँचाओ । परमात्मा और सत्गुरु महाराज आप की रक्षा करेंगे।

५ अप्रैल को पूज्य स्वामीजी चित्तौड़गढ़ पधारे और उन्होंने वहां अमृत वर्खा की । ६-७ अप्रैल को उन्होंने रतलाम में सत्संग प्रवचन कर प्रेमियों की प्यास पूरी की । ८ अप्रैल से १४ अप्रैल इन्दौर प्रेम प्रकाश आश्रम पर स्वामी मुरलीधरजी महाराज का पुण्यतिथि उत्सव आयोजित किया गया । इस उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी ८ अप्रैल को इन्दौर पधारे । वहां उन्होंने छः दिन अमृत वचनों की वर्खा की । उत्सव का समापन करते हुए पूज्य स्वामीजी ने कहा कि स्वामी मुरलीधरजी ने कितने ही वर्ष सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के साथ मनन करते हुए कई प्रेमियों को नाम जपाया । आप भी खूब नाम स्मरण करें । आप लोगों ने वहां सत्संग में आकर जो कुछ श्रवण किया है, उसका अनुसरण करें । सत्संग भी एक तीर्थ स्थल है, जिसके द्वारा आपकी आत्मिक प्यास पूरी होगी । सत्गुरु महाराज जी भी फरमाते है :-

सत्संग तीर्थ रूप है, सत्संग मोक्ष द्वार ।
कह टेऊँ तज कुसंग को, सत्संग कर निरधार ।।

१८- १९ अप्रैल पूज्य स्वामीजी ने प्रेम प्रकाश मन्दिर पिम्परी में अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की । मन्दिर की ओर से सामूहिक यज्ञोपवीत का कार्यक्रम रखा गया । पूज्य स्वामीजी ने बालकों को आशीर्वाद दिया । उन्होंने माता सती एवं अन्य श्रद्धालु सेवकों का उत्सव के आयोजन के लिए धन्यवाद दिया । २० अप्रैल से २४ अप्रैल तक गांधीनगर कोल्हापुर में प्रेम प्रकाश मन्दिर का वार्षिक उत्सव आयोजित किया गया । इस उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी

२० अप्रैल को प्रातः गांधीनगर पधारे । कई प्रेमियों ने उनका स्वागत किया । सायं चार बजे पूज्य स्वामीजी के नेतृत्व में शोभायात्रा निकाली गई । रात्रि को पूज्य स्वामीजी ने उपदेश करते हुए कहा कि सन्तों के पास आएं तो उनसे नाम दान मांगें । नाम ही अमूल्य धन है, जो आपसे कोई छीन नहीं सकता । इसलिए नाम की पूंजी संग्रह करें। आप सांसारिक विषय भोगों में फँसकर प्रभु को भुला बैठे हैं। माता के गर्भ में जो प्रतिज्ञा की थी उसे पूरा करने का प्रयास करें। सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं:-

मात गर्भ में तुम किया, हरि से जो इकरार ।
कह टेऊँ तिंह याद कर, सुमरो सत् करतार ।।

२१ अप्रैल सायं पूज्य स्वामीजी महिला मण्डल के मन्दिर में पधारे। बहन राणी दयालदास ने उनका स्वागत किया । पूज्य स्वामीजी ने बहन राणी एवं अन्य बहनों को धन्यवाद देते हुए कहा कि आप प्रतिदिन यहां सत्संग कीर्तन करती हैं, यह बड़ा उत्तम कार्य है । घर गृहस्थी में रहकर भी नाम स्मरण किया जा सकता है । नाम स्मरण तो मन से होता है । आप घर में भी मर्यादा, विनम्रता व सहनशीलता के साथ रहेंगी तो आपके घर स्वर्ग बन सकते हैं । बड़ों को सम्मान दें और बच्चों को प्यार । वे सभी भगवद् स्वरूप हैं । सन्तान में शुभ संस्कार डालें । उनमें ईश्वरभक्ति व देशभक्ति के बीज बोएं । माता मदालसा, सती सावित्री, जीजाबाई, लक्ष्मीबाई के गुण अपने जीवन में अपनाएं ।

देश के स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारी गतिविधियों के कारण रामप्रसाद बिस्मिल को १९ दिसम्बर के दिन फाँसी लगने वाली थी । उससे एक दिन पूर्व उसके माता-पिता उससे जेल में मिलने आये । यह उनकी अन्तिम मुलाकात थी । माता-पिता को प्रणाम करते हुए रामप्रसाद की आंखों में आंसू आ गये । यह देखकर माता ने ऊँचे स्वर में कहा- 'बेटा ! मैं यह क्या देख रही हूँ? आज तुम्हारी आंखों में आंसू हैं। मैं बाहर लोगों से कहकर आई हूँ कि मेरा बेटा बिस्मिल हँसते हँसते फाँसी को चूमेगा और तुम आंसू बहा रहे हो, यह एक देशभक्त को शोभा नहीं देता ।' बिस्मिल ने कहा- "माँ ! तुम मुझे गलत समझ

रही हो । मेरे ये आंसू दुःख के नहीं, खुशी के आंसू हैं, मैं तो अत्यंत प्रसन्न हूँ कि मैं भारत माता की आज़ादी के लिए प्राणों की आहुति दे रहा हूँ । परमात्मा से प्रार्थना है कि पुनः दूसरे जन्म में भी मैं आपका बेटा बनूं ।'' बहनो ! आज राष्ट्र को ऐसी माताओं की आवश्यकता है ।

उत्सव के चारों दिन रात्रि को पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन कर प्रेमियों का मार्गदर्शन किया । २४ अप्रैल प्रातः उन्होंने उत्सव का समापन करते हुये कहा कि प्यारे ब्रजलाल, मुखी राधोमल, हरि- बली, रमेश तनवाणी, पेसूमल तनवाणी एवं सभी प्रेमियों को धन्यवाद है कि जो प्रतिवर्ष इस उत्सव का आयोजन करते हैं । इन उत्सवों का उद्देश्य यह है कि आप लोग सन्त महात्माओं के दर्शन कर और प्रवचन सुनकर, उनके वचनों के अनुरूप चलने का प्रयास करें । नाम स्मरण करें और शुभ गुणों को अपनाकर मानव जीवन सफल बनाएं। मांस, शराब व दहेज का परित्याग करें । बहुओं को बेटियों जैसा प्यार दें, पशु पक्षियों की सेवा करें ।

२४ अप्रैल पूज्य स्वामीजी इचलकरंजी पधारे । श्री ब्रजलाल हीराणी, पहिलाजराम राधोमल और अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। पूज्य स्वामीजी ने वहाँ गुरु मन्दिर में अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की । २५ अप्रैल वे बेलगाम आये । वहाँ उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन किये । उन्होंने उपदेश करते हुए कहा कि परमात्मा में यदि पूर्ण विश्वास रखकर प्रार्थना करेंगे तो प्रभु अवश्य आपके कष्ट क्लेश दूर करेगा और मनोकामना भी पूरी करेगा । सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं :-

रे मन राखो राम में, पूरन तुम विश्वास ।
कह टेऊं विश्वास से होवे, सब दुख नास ।।

जिसका परमात्मा में पूर्ण विश्वास है, उसका बेड़ा पार है । प्रेमियो ! आप भी प्रभु में श्रद्धा व विश्वास रखकर प्रेम से पुकारें तो प्रभु अवश्य ही आपके दुख दर्द दूर करेगा । २७ अप्रैल पूज्य स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम लौट आये ।

वडाला सिन्धी ब्रादर मण्डल की ओर से वडाला बम्बई में १ मई

से १२ मई तक परम पूजनीय स्वामीजी के सत्संग यज्ञ का आयोजन किया गया । १ मई सायं पूज्य स्वामीजी ने सत्संग यज्ञ का आरम्भ करते हुए कहा कि आपको साधुवाद है कि आप प्रतिवर्ष सत्संग यज्ञ का आयोजन करते हैं । सत्संग द्वारा आपको आत्मिक शक्ति प्राप्त होगी, सत्य और असत्य का ज्ञान मिलेगा । सत्गुरु महाराजजी फरमाते हैं :-

साध संग से तरत है, कलियुग में नर नार ।
कह टेऊं सत्संग कर, मन में श्रद्धा धार ।।

कलयुग में सत्संग का बड़ा महत्व है । सत्संग द्वारा जीवन का विवेक जागृत होता है । यदि आप संसार रूपी भव सागर से पार होना चाहते हैं तो नियमित रूप से सन्तों का संग कर उनके वचनों के अनुरूप चलें ।

४ मई शनिवार सायं ५ बजे पूज्य स्वामीजी एस. एन. डी. टी. महिला महाविद्यालय के वातानुकूल हाल जुहू (बम्बई) में पधारे। वहाँ डॉ. जी. एस. गुरनाणी ने ज्ञान गोष्ठी का आयोजन किया । पहले डॉ. दयाल 'आशा' ने पूज्य स्वामीजी का जीवन परिचय देते हुए भजन गाया । तत्पश्चात् श्री रामानन्द सागर ने कहा कि मैं भगवान श्रीराम व भगवान श्रीकृष्ण का सन्देश वाहक हूँ। उनकी कृपा से मुझे 'रामायण' एवं 'श्रीकृष्ण' टी. वी. सीरियल में सफलता मिली। आज मैं सौभाग्यशाली हूँ कि मुझे परमपूज्य स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के दर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ है ।

पूज्य स्वामीजी ने आत्मा, परमात्मा, जीव जगत्, माया, मृत्यु आदि विषयों पर अपने दार्शनिक विचार व्यक्त किये । कुछ प्रेमियों ने शंकाएं की, पूज्य स्वामीजी ने उनकी शंकाओं का भी समाधान किया । पूज्य स्वामीजी का यह सारा कार्यक्रम 'सभ जो साईं' नामक फिल्म के लिए रिकार्ड किया गया ।

पूज्य स्वामीजी ने वडाला में रविवार सायं और अन्य दिनों में रात्रि को अपने अमृत वचनों की वर्खा करके प्रेमियों की प्यास पूरी की। १२ मई ब्रादर मण्डल की ओर से प्रवीण विद्यार्थियों को पूज्य स्वामीजी द्वारा पुरस्कार दिये गये । पूज्य स्वामीजी ने सत्संग यज्ञ का समापन

करते हुए आयोजकों और निहचलदास मंगतराम, जीअंदराम वाधवा, श्री परियाणी, सभागचन्द चावला, नंदीराम टहलराम, माधवदास वाधवा एवं अन्य प्रेमियों को धन्यवाद देते हुए कहा कि प्रेमियों ! प्रभु के लिए प्यास बढ़ाएं। सांसारिक प्यास कभी पूरी नहीं होगी।

बिलवा मंगल के मन में एक सुन्दर स्त्री के लिए आसक्ति पैदा हुई। उसने अपनी गलती अनुभव कर अपनी दोनों आँखों में कांटे चुभो स्वयं को प्रज्ञाचक्षु (सूरदास) बना दिया। तत्पश्चात् उसके मन में भगवान श्री श्यामसुन्दर के दर्शन की तीव्र इच्छा उत्पन्न हुई। वह वृन्दावन की ओर चल पड़ा। मार्ग में भगवान श्रीकृष्ण ने बाल रूप धारण कर बिलवामंगल को खाना खिलाया, पानी पिलाया और उसे अपने हाथ से लेकर ब्रजभूमि पहुंचा दिया। बिलवा मंगल ने अनुभव किया कि वह साधारण बालक नहीं, वह बाल गोपाल भगवान श्रीकृष्ण हैं। बिलवा मंगल ने उसका हाथ पकड़कर कहा कि आपके लिए तो मैं यहाँ आया हूँ आपका हाथ कैसे छोडूंगा? भगवान बाल रूप भगवान श्रीकृष्ण जैसे ही अन्त ध्र्यान होने के लिए अपना हाथ छुड़ाने लगे तब वह कहता है आप मेरे मन से स्वयं को छुड़ा नहीं सकते। आप मेरे मन में स्थित हैं। बिलवा मंगल की ऐसी भक्ति भावना देखकर भगवान ने जैसे ही उसे गले लगाया तो उसकी आंखों की ज्योति पुनः लौट आई। बिलवा मंगल भगवान श्यामसुन्दर का दर्शन कर अत्यन्त प्रसन्न हुआ। प्रेमियो ! भगवान श्रीकृष्ण ने अपने भक्त बिलवा मंगल की देख रेख की। उसका प्रेम देखकर उसे अपना दिव्य दर्शन दिया। आप भी प्रभु को दर्शन्र देने के लिए प्रेम से पुकारेंगे तो किसी न किसी दिन प्रभु आपकी प्यास पूरी करेंगे। सतगुरु महाराजजी फरमाते हैं :-

प्रीतम का जहं प्रेम है, प्रीतम है तहं ठोर।
कह टेऊं बिन प्रेम के, रहत न सो थल ओर॥

अहमदाबाद में स्वामी लीलाशाह समूह लग्न ट्रस्ट की ओर से १६ मई को सामूहिक यज्ञोपवीत और सामूहिक विवाहों का आयोजन किया गया। इस उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी १५ मई प्रातः अहमदाबाद पधारे और वे वहाँ प्रकाश नेणूमल के निवास प्रभाराम सोसायटी में

ठहरे । १५ मई सायं महात्मा गाँधी हाई स्कूल के प्रांगण में पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि बहनें शान्ति का वातावरण पैदा कर घरों को स्वर्ग बना सकती हैं । माताओं का लोभी स्वभाव हो गया है इसलिए दहेज की प्रथा बढ़ गई है । दहेज की इस कुप्रथा के कारण कुछ कन्याएं जहर खाकर आत्महत्या करती हैं । माताएं यदि बहुओं को बेटियों जैसा प्यार देंगी और बहुएं सास ससुर को माँ बाप जैसा सम्मान देंगी, उनकी सेवा करेंगी तो घर स्वर्ग बन जायेंगे। प्यारे भाइयो ! आप ग्राहक को भगवान रूप समझकर उसके साथ ईमानदारी से व्यवहार करेंगे तो आपकी कमाई में वृद्धि होगी । आजकल लोग लाखों रुपये कमाते हैं परन्तु फिर भी दुखी रहते हैं । अपना धन्धा व्यवहार सच्चाई से करें ।

१६ मई को सामूहिक यज्ञोपवीत एवं सामूहिक विवाह उत्सव महात्मा गांधी हाई स्कूल में आयोजित किये गये । पूज्य स्वामीजी इस उत्सव में पधारे । मुखी खेराजमल, प्यारे साजनदास अनंदराम ने उनका स्वागत किया । पूज्य स्वामीजी ने वर- वधुओं को आशीर्वाद देते हुए कहा कि जीवन में दया व प्रेम की ज्योति जगाएं ।

२२- २३ मई पूज्य स्वामीजी ने खार (बम्बई) में सत्संग प्रवचन किये । २८ मई दतिया पधारे । वहां उन्होंने उपदेश करते हुए कहा कि सन्तों का सगं करें । उनके संग से आप लाभान्वित होंगे। सन्त तुलसीदासजी फरमाते हैं :-

तुलसी संगति साध की, वृथा कबहु न जाय ।
सूली माथे में लिखी, कांटे से कट जाय ।।

प्रेमियो ! सन्तों के संग से आई हुई विपदाएं टल जायेंगी (सूली से कांटा हो जायेगा) । इसलिए नियमित रूप से सन्तों का संग करें। सन्तों का संग भी बड़भागी को प्राप्त होता है । दो भाई थे । छोटा भाई प्रतिदिन सत्संग में जाता था और बड़ा भाई भोग विलास में समय और पैसे व्यर्थ गंवाता था । अनुज उससे बार बार बिनती करता था कि सन्तों के पास चलकर उनका दर्शन करें और उनके वचन श्रवण करें । अग्रज सुनी अनसुनी कर देता था । अनुज के आग्रह पर एक दिन अग्रज उसके साथ सन्तों के पास गया । रास्ते में चलते चलते

दोनों भाई गिर पड़े। अग्रज जैसे ही नीचे गिरा तो उसको हाथ में एक सोने की गिन्नी मिली और अनुज जैसे नीचे गिरा तब उसे पांव में कांटा लगा। तब बड़े भाई ने हंसते हुए छोटे भाई से कहा कि तुम नियमित रूप से सत्संग में जाते हो तो तुम्हें पांव में कांटा लगा और मैं सत्संग में नहीं जाता, आज पहली बार तुम्हारे साथ चल रहा हूं तो मुझे सोने की गिन्नी मिली है। जब दोनों भाई सत्संग के मण्डल में आये, तब छोटे भाई ने रोते हुए सन्त से कहा कि मैं प्रतिदिन यहां आता हूं तो आज रास्ते में गिरते समय पांव में कांटा लगा और मैं आज अपने बड़े भाई को पहली बार यहां ले आ रहा था तो उसको गिरते समय सोने की गिन्नी मिली। ऐसा क्यों हुआ? सन्त ने उसे सांत्वता देते हुए कहा कि जहां तुम दोनों भाई गिरे वह स्थान मुझे दिखाओ। दोनों भाई सत्संग के पश्चात् उस सन्त को उस स्थान पर ले गये जहां वे गिर पड़े थे। अनुज ने सन्त को वह जगह दिखाई जहां वह गिरा था। सन्त ने कहा कि यहाँ जमीन को खोदो। सन्त की आज्ञा अनुसार जैसे ही उस जगह को खोदा गया तो वहां से एक जली हुई गिन्नियों का बड़ा बर्तन मिला। सन्त ने कहा 'तुम्हारे भाग्य में यह गिन्नियों से भरा बर्तन लिखा हुआ था, किन्तु सत्संग से विमुख रहने के कारण और दुष्कर्मों की ओर प्रवृत रहे, इसलिए ये सभी स्वर्ण की गिन्नियां जल गई हैं। तुम आज पहली बार सत्संग में आ रहे थे तो तुम्हें एक गिन्नी प्राप्त हुई है। यदि प्रति दिन सत्संग में आते रहते तो आज तुम बड़े धनवान होते !'' अनुज ने फिर सन्त को वह स्थान दिखाया जहां वह गिर पड़ा था और उसे पांव में कांटा चुभ गया था। सन्त ने कहा 'बेटा! देखो यहां कई कांटे जले पड़े हैं, एक कांटा बच गया है जो तुमको लग गया है। तुम्हारे भाग्य में कई कांटे (तुम्हें) लगने वाले थे किन्तु सत्संग के परिणाम स्वरूप तुम्हें केवल एक ही कांटा लगा। यदि तुम्हें इतने सारे कांटे लगते तो तुम्हारी क्या दशा होती? प्रेमियो ! भाग्य में लिखी विपदा आयेगी, किन्तु सत्संग के प्रभाव के कारण थोड़ा सा कष्ट देकर चली जावेगी। जैसे कोई बालक पहली मंजिल से गिर पड़े और नीचे दस गद्दे पड़े हों तो उस बालक को चोट नहीं लगेगी। वैसे ही प्रभु भी अपने भक्तो की रक्षा करते हैं। इसलिए उनकी शरण लें। सन्तों की शिक्षा का अनुसरण

करें।

प्रेम प्रकाश मण्डल के सन्त स्वामी गंगारामजी महाराज २९ मई को इन्दौर में ब्रह्मलीन हुए। यह शोक समाचार सुनते ही पूज्य स्वामीजी ३० मई इन्दौर पहुँचे। उन्होंने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी गंगाराम २४ वर्ष की युवावस्था में सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की शरण में आये। वे कोठारी बनकर प्रेम प्रकाश मण्डल की सेवा करते रहे। तत्पश्चात् वे यहां सेवा करते रहे।

डॉ. जी. एस. गुरनानी ने पूज्य स्वामीजी के जीवन पर एक फिल्म निर्माण का कार्य आरम्भ किया। उसके सम्बन्ध में वे ४ जून प्रातः पूज्य स्वामीजी को बम्बई ले गए। वहां पूज्य स्वामीजी ने श्रीमद् भगवद् गीता के सम्बन्ध में प्रवचन किये। १० जून आप सूरत पधारे। वहां स्वामी टेऊँराम मंन्दिर रामनगर में उन्होंने दो दिन अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। १२ जून वे प्रेम प्रकाश मन्दिर, दिल्ली आये। वहां सन्त जयदेव ने सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की पुण्यतिथि मनाई। वहां पूज्य स्वामीजी ने दो दिन सत्संग प्रवचन करते हुए पूज्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की महिमा गाई।

स्वामी माधवदास जी महाराज के स्थान आदर्शनगर, अजमेर में सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का पुण्यतिथि उत्सव मनाया गया। इस उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी १४ जून वहां पधारे। श्री मुरलीधर करनाणी ने उनका स्वागत-सत्कर किया। उन्होंने वहाँ पांच दिन प्रातः एवं सायंकाल अमृत वचनों की वर्खा करते हुए प्रेमियों की प्यास पूरी की। उन्होंने उपदेश करते हुए कहा कि सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज महान विभूति थे। उन्होंने हज़ारों लोगों को श्री सत्नाम साक्षी का मंत्र देकर उनका आध्यात्मिक मार्गदर्शन किया। उन्होंने लोक सेवा, परोपकार के भी उत्तम कार्य किए। हमारा सौभाग्य था कि उनके चरणों में बैठने का हमें अवसर मिला। पारस लोहे को स्पर्श करता है तो लोहा स्वर्ण बन जाता है किंतु सन्तों का संग मनुष्य को सन्त बना देता है। सन्तों का उद्देश्य है नाम स्मरण और लोगों को भी जपवाना। प्रेमियो! आप भी नाम स्मरण और उपकार के कार्य कर जीवन को सफल बनाएं।

११ जून को पूज्य स्वामीजी प्रेम प्रकाश मन्दिर ग्वालियर पधारे । वहां उन्होंने तीन दिन सत्संग प्रवचन किए । २२ जून वे पलवल आए। वहां उन्होंने दो दिन अमृत वचनों की वर्खा करते हुए कहा कि जो मनुष्य प्रभु से विमुख है वह मृतक मनुष्य के समान है । मानव जीवन का मूल उद्देश्य है भगवद् चिंतन करना । उसके बिना जीवन व्यर्थ है । मनुष्य को कितने भी सांसारिक सुख भोग हों किंतु किसी काम के नहीं । सांसारिक पदार्थ-वैभव का कुछ भी मूल्य नहीं है । सन्त महात्मा सांसारिक पदार्थों का त्याग करे प्रभु से प्रेम का नाता जोड़ते हैं । राजा पीपा, राजा भृतहरि, मीराबाई आदि यदि सांसारिक वैभव का त्यागकर भक्ति मार्ग पर नहीं चलते तो उन्हें आज कौन याद करता? प्रेमियो ! आप भी जगत् के पदार्थों व सम्बन्धियों में आसक्ति न रखकर भगवद् चिंतन व ध्यान करें ।

अजमेर में पारब्रह्म छड़ी स्थान पर वार्षिक उत्सव मनाया गया। श्री हीरानन्द नैन पूज्य स्वामीजी को वहां ले गये । पूज्य स्वामीजी ने वहां अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की ।

२८ जून सिन्धुनगर आश्रम पर सन्त कबीरदास जी की जयंती पूज्य स्वामीजी का अध्यक्षता में मनाई गई । सन्त देवप्रकाश, डॉ. दयाल 'आशा' ने सन्त कबीरदास जी के काव्य के सम्बन्ध में विचार व्यक्त किए । पूज्य स्वामीजी ने सन्त कबीर को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि सन्त कबीर सद्गृहस्थ होते हुए महान सन्त बने । उनकी वाणी हिन्दी भक्ति काव्य की अमर निधि है । उनकी अमृत तुल्य वाणी आज भी व्यवहार एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए हमारा मार्गदर्शन करती है ।

५ जुलाई वे मुलुंद सिन्धी कॉलोनी (बम्बई) पधारे । वहां उन्होंने तीन दिन सत्संग प्रवचन किया । सेवाराम भम्भाणी ने उनका स्वागत किया । पूज्य स्वामीजी ने उपदेश करते हुए कहा कि यह शरीर भी प्रभु का मंदिर है । उसकी अच्छी तरह देख रेख करें । शरीर व मन से कोई बुरा काम नहीं करें । यह अमूल्य मनुष्य योनि आपको सत्कर्म करने के लिए मिली है उसका सदुपयोग करें । स्वास्थ्य की दृष्टि से तामसी खान पान से दूर रहें और समय-समय पर उपवास रखें । सत्गुरु

महाराजजी भी फरमाते हैं :-

समय-समय में कीजिए, कर टेऊँ उपवास ।
रोग समय में चेत कर, हो उपवासी खास ।।

१४ जुलाई सायं पूज्य स्वामीजी ने प्रेम प्रकाश मण्डली माटूँगा (बम्बई) में सत्संग प्रवचन किये। १५ जुलाई वे सोलापुर पधारे। वहां श्री लेखराज, उनकी पत्नी शीला एवं अन्य प्रेमियों ने सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज का जन्म दिवस मनाया । पूज्य स्वामीजी ने वहां तीन दिन सत्संग प्रवचन करते हुए सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज के गुणों का वर्णन किया । उन्होंने सभा का समापन करते हुए कहा कि परमात्मा में पूर्ण विश्वास रखकर नियमित रूप से प्रार्थना करें, सत्संग करेंगे तो संसार-सागर से पार हो जायेंगे । सांसारिक चिंताओं का त्याग कर, प्रभु की शरण लें तो वह आपकी देख रेख करेगा। सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं :-

चिन्ता भोजन वसन की, टेऊँ करते कांहि ।
हरि विश्वम्बर दे सबहि, क्या तुम देवहं नाहिं ।।

एक व्यक्ति विदेश जा रहा था । विदेश जाने से पूर्व उसने अपनी पत्नी से कहा- "विदेश जा रहा हूँ, तुम्हारे लिए कितने दिन के लिए खानपान की वस्तुएं खरीद कर, घर रख जाऊं जिससे तुम्हें कोई कठिनाई नहीं हो । पत्नी बहुत चतुर थी और उसने सन्तों का संग किया था। उसने पति से कहा कि जितनी मेरी आयु है, उतने दिनों के लिए चावल, गेहूँ, दाल व तेल खरीद कर रख जाओ । पति ने कहा कि- "मुझे पता नहीं कि तुम्हारी आयु कितनी होगी?" पत्नि ने कहा कि आप मेरी चिन्ता नहीं करें, जिस प्रभु को मेरी आयु की जानकारी है वह मेरी देख रेख करेगा । आप निश्चिंत होकर विदेश जायें । पति विदेश चला गया । दूसरे दिन उसकी पड़ोसन उसके पास आई और उसने उससे पूछा कि तुम्हारे पति विदेश गये हैं, क्या उसने तुम्हारे खाने पीने की व्यवस्था कर दी । उसने उत्तर दिया "खाने वाले पति तो विदेश गये हैं किन्तु खिलाने वाले पति अर्थात् भगवान तो मेरे साथ हैं, फिर मैं चिन्ता क्यों करूं । प्रेमियो ! आप भी प्रभु पर ऐसा विश्वास

रखकर रात दिन सांसारिक इच्छाओं को पूरा करने के लिये नहीं भटकें। अपना अपना कर्तव्य पूरा करते चित्त की वृत्ति प्रभु से जोड़ें । आपको धन्यवाद है कि आप लोग यहां सत्गुरु महाराज की ज्योति जगा रहे हैं । आपके मन में गुरु के प्रति श्रद्धा व प्रेम है, उसे और अधिक बढ़ाएं । सत्गुरु महाराजजी, सत्गरु की महिमा गाते हुए कहते हैं:-

गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, है गुरु शेष महेश ।
कह टेऊं गुरु सूर्य शशि, है गुरु गोर गणेश ।।

१९ जुलाई सिन्धुनगर आश्रम में सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी का जन्म दिन उत्सव मनाया गया । प्रातः ११ बजे पूज्य स्वामीजी ने ब्रह्म भोज का आयोजन किया । शाम को प्रवचन करते हुए पूज्य स्वामीजी ने सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे महान मूर्ति थे । उन्होंने बालू के टीलों पर बैठकर कितनी न तपस्या की ।

"जंगल में मंगल बनाया सत्गुरु प्यारे ने"

सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने हजारों लोगों को प्रभु की राह बताई । आज भी उनकी वाणी हमारा मार्गदर्शन कर रही है । हम भी उनके सिद्धान्तों पर चलने का प्रयास करें ।

२६ जुलाई गुरु पूर्णिमा के पवित्र दिन प्रातःकाल प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी को दूध से स्नान कराकर उनकी पूजा उपासना की । पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज व्यास पूजा अर्थात् गुरु पूजा का उत्तम दिवस है । प्राचीन काल से शिष्य व प्रेमी आज के पावन दिन गुरु की पूजा उपासना करते आये है । सत्गुरु महाराजजी गुरु की महिमा गाते हुए कहते हैं :

गुर का दर्शन देख के, टेऊं भया निहाल ।
सब अंग फूले फाग, ज्यों देखा दीनदयाल ।।

सत्गुरु महाराजजी फरमाते हैं कि जैसे फागुन के महीने में अर्थात् बसन्त ऋतु में फूल खिलते हैं वैसे सत्गुरु का दर्शन पाकर मेरा रोम रोम प्रसन्न हुआ है और मैं कृतार्थ हुआ हूँ । प्रेमियो ! किसी न किसी परिपूर्ण गुरु की शरण लें जो आपको सत्मार्ग बताए । गुरु मन्त्र की

साधना करें, उनके कमल-चरणों का ध्यान करें तो आपको ब्रह्म ज्ञान की उपलब्धि होगी।

जप मंत्र गुरु देव का, धर गुर चरनी ध्यान।
अर्थ विचारे शब्द का, पाओ ब्रह्म ज्ञान॥

२९ जुलाई पूज्य स्वामीजी हरिद्वार गये। वे वहां प्रेम प्रकाश आश्रम में ३ अगस्त तक रहे। उन्होंने स्वामी सर्वानन्द घाट का निरीक्षण किया। हरि की पैड़ी पर भी गये और मण्डल के सन्तों से विचार विमर्श भी किया। ४ अगस्त वे प्रेम प्रकाश मन्दिर दिल्ली पधारे। वहां उन्होंने दो दिन अमृतवचनों की वर्खा की और सन्त जयदेव को आज्ञा की कि शीघ्र ही मन्दिर के नव निर्माण का कार्य आरम्भ करें। ७ अगस्त वे सिन्धुनगर आश्रम में लौट आये।

१४ अगस्त से ७ सितम्बर तक नासिक एवं त्रयम्बकेश्वर में कुंभ का मेला था। उसके सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी ने दोनों पवित्र स्थलों पर स्वामी टेऊंरामजी अन्न क्षेत्र का आरम्भ किया। उन्होंने वहां यात्रियों के आवास और खान-पान की अच्छी व्यवस्था की।

नासिक में पूज्य स्वामी चन्दनप्रकाश महाराज द्वारा निर्मित प्रेम प्रकाश मन्दिर में प्रतिदिन पूज्य स्वामीजी, सन्त देवप्रकाश, सन्त देव प्रकाश, सन्त अनन्तप्रकाश सत्संग प्रवचन करते रहे।

श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय के प्रमुख सन्त, सन्त शिरोमणि पूज्यपाद् स्वामी धर्मदास जी महाराज दिनांक २० अगस्त १९९१ मंगलवार सायं ३ बजकर ४० मिनट पर अपनी नश्वर देह त्याग कर श्री सद्गुरुदेव भगवान के पावन श्रीचरणों में सर्वदा के लिये लीन हो गये। यह शोक समाचार सुनते ही पूज्य स्वामीजी तुन्त बड़ौदा पहुँचे।

लगभग ८० वर्षीय सन्त शिरोमणि पूज्य स्वामी धर्मदास जी महाराज की पार्थिवदेह २१ अगस्त श्रद्धालुओं के दर्शनार्थ स्थानीय प्रेम प्रकाश आश्रम बड़ौदा में रखी गयी। पूज्य स्वामीजी को नगर की कई सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि भेंट की इसके अतिरिक्त ५ हजार से भी अधिक प्रेमियों ने आश्रम पर पहुँच कर पूज्य स्वामी जी को अश्रुपूरित पुष्पांजलि अर्पित की।

२२ अगस्त गुरुवार प्रातः पूज्य स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के

नेतृत्व में श्री प्रेम प्रकाश सन्त मण्डल ने पूज्य स्वामी धर्मदास जी महाराज को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इसी के साथ अन्तिम महायात्रा की तैयारियां आरम्भ हो गयीं। पूज्य स्वामीजी को फूलों से सजे हुए एक वाहन पर रखा गया। प्रातः ९-४५ बजे पूज्य स्वामीजी की महायात्रा सन्त कंवर कालोनी प्रेम प्रकाश आश्रम से आरम्भ होकर बड़ौदा के मुख्यतम मार्गों से होती जल समाधि के लिये नर्मदा की ओर रवाना हुई।

दोपहर ३ बजे चाँदोल गुजरात में नर्मदा के किनारे महायात्रा समाप्त हुई। यहां पर ठीक ४ बजकर ५५ मिनिट पर पवित्रतम नर्मदा पर वेद मन्त्रोच्चारण के साथ पूज्य स्वामीजी के पार्थिव शरीर को माँ नर्मदे की पवित्र गोद में सुपुर्द कर दिया गया, इस समय उपस्थित हज़ारों प्रेमियों की आँखें नम हो गयीं और पूज्य सत्गुरु महाराज की व पूज्य स्वामी धर्मदास जी महाराज की गगन-भेदी जयजयकार व पुष्प वर्षा के साथ अन्तिम विदाई दी गई।

पूज्य स्वामी धर्मदास जी महाराज परम पूजनीय महर्षि सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के अनुज थे। पूज्य स्वामीजी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा, कि पूज्य स्वामी धर्मदास जी महाराज की वाणी पर सरस्वती की अपार कृपा थी। वे अपने प्रचवनों में सद्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज, सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की महिमा भजनों, कव्वालियों के माध्य मे प्रेमियों को सुनाते थे एवं गुरुवाणी भी पूज्य स्वामीजी को कंठस्थ थी। आपने कई बार देशाटन भी किया और प्रेमियों की प्यास पूरी की। आप भी बचपन से ही सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की भाँति सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज (जो कि सांसारिक रिश्ते में उनके मामा लगते थे) जी के अनुयायी थे। पूज्य स्वामीजी की रिक्तता प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय में सदा अनुभव की जाती रहेगी।

३ सितम्बर से ७ सितम्बर तक प्रेम प्रकाश मन्दिर नासिक में सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का जन्म दिन उत्सव मनाया गया। पांचों दिन प्रातः एवं सायंकाल पूज्य स्वामीजी एवं अन्य सन्तों ने प्रवचन करते हुए सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला।

७ सितम्बर सायं पूज्य स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा, ‘‘प्रेमियो ! प्रभु को नहीं भूलें, सदैव उसका स्मरण करते रहें । भक्ति मार्ग पर चलते चलते यदि कुछ रुकावटें आ भी जायें तो घबरायें नहीं। किसी न किसी दिन अवश्य ही आपको भगवद् दर्शन होगा।’’

प्रेमियो ! आप यहां तीर्थ स्थान पर कुम्भ मेले में आये और सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के जन्मदिन उत्सव में सम्मिलित हुए हैं, तो सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की शिक्षाओं को आज प्रसाद-रूप में यहां से ले जाकर उनके अनुरूप चलने का प्रयास करें, तो आपका कल्याण होगा । आइये मिलकर गुरु महाराज से प्रार्थना करें:-

दुख भंजन गुरुदेव, हरले दूख विशाल ।
कह टेऊं निज दास पर, कर कृपा कृपाल ।।

स्वामी धर्मदासजी महाराज के तेरहवें के उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी ११ सितम्बर प्रेम प्रकाश मन्दिर बड़ौदा पधारे । उन्होंने तीनों दिन प्रातः एवं सायंकाल सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामी धर्मदास महाराज के गुणों की महिमा का वर्णन किया । १३ सितम्बर प्रातः कई सन्त महात्मा एवं हज़ारों प्रेमी तेरहवें के उत्सव में सम्मिलित हुए पूज्य स्वामीजी ने इस अवसर पर स्वामी धर्मदासजी महाराज के गुणों का वर्णन करते हुए सन्त अशोकलाल को आश्रम का व्यवस्थापक नियुक्त किया ।

सन्त स्वामी क्षमादास ने सिन्धुनगर-३ में योगीराज आचार्य जगत् गुरु बाबा श्रीचन्द भगवान का जन्म दिन उत्सव मनाया । १६ सितम्बर को वहाँ पूज्य स्वामीजी ने बाबा श्रीचन्द भगवान की महिमा गाते हुए कहा कि उन्होंने उदासीन सम्प्रदाय का श्रीगणेश कर महान कार्य किया।

२३ सितम्बर से २५ सितम्बर तक सन्त साईं हरिचूराम साहब की पुण्य तिथि उनके स्थान सिन्धुनगर-५ पर मनाई गयी । २४ सितम्बर रात्रि को पूज्य स्वामीजी ने वहां सत्संग प्रवचन करते हुए सन्त हरिचूराम साहब की महिमा गाई । सन्त हरिचूराम साहब अपने परिश्रम की रोटी खाते थे वे सिद्ध पुरुष होते हुए भी दिखावा नहीं करते थे, काम काज करते हरिनाम जपते थे । सन्त रूपाराम साहब ने पूज्य स्वामीजी का आभार व्यक्त किया ।

जनता जनार्दन परिषद् की ओर से पूज्य सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज का ८५वाँ जन्म दिन उत्सव २७ सितम्बर से २९ सितम्बर तक प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर-५ में मनाया गया । २७ सितम्बर प्रातः श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ का पाठ रखा गया । दोपहर को अपाहिज बच्चों की सेवा की गई । २८ सितम्बर सेन्ट्रल हास्पीटल में रोगियों की सेवा की गई। और सायं को विद्यार्थियों की भक्ति संगीत प्रतियोगिता आयोजित की गई । पूज्य स्वामीजी ने विद्यार्थियों को पुरस्कार दिये। २३ सितम्बर रविवार प्रातः प्रेमियों ने पूज्य स्वमीजी को गंगा जल एवं दूध से स्नान कराया । हवन यज्ञ के पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने जनता जनार्दन परिषद् की ओर से ४०० गरीब बहनों को आर्थिक सहायता एवं चावल-दाल तेल आदि वस्तुएं वितरित की ।

सायं डॉ. दयाल 'आशा' ने पूज्य स्वामीजी की महिमा गाते हुए परिषद् की गतिविधियों पर प्रकाश डाला । अन्य प्रेमियों ने भी पूज्य स्वामीजी के गुणों का वर्णन किया । पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आप लोगों ने जो मेरी स्तुति की है यह महिमा कार्य की है । संसार में चारों ओर दुख ही दुख है । प्रेमियों ! दुखी-दरिद्रों को सुखी करने का प्रयास करें । प्रभु को नहीं भुलाएं । एक दूसरे को स्नेह व सहानुभूति दें । मधुर भाषी बनें । हम आप लोग कभी कभी व्यवहार में कितना न कड़वा बोलते हैं ! कड़वी चीज़ किसी को नहीं भाती, तो कड़वे बोलने वाले मनुष्य को कौन प्यार करेगा।

स्वामी उद्धवदासजा महाराज का पुण्यतिथि उत्सव १० अक्टूबर से १३ अक्टूबर तक अम्बावाड़ी, अहमदाबाद में आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी १० अक्टूबर को अहमदाबाद पधारे । पूज्य स्वामीजी ने चारों दिन अमृत वचनों की वर्खा करते हुए स्वामी उद्धवदासजी महाराज के गुणों का वर्णन किया । १३ अक्टूबर रविवार को प्रातः निष्काम सेवा मण्डल की ओर से पूज्य स्वामीजी का ८५वाँ जन्म दिवस मनाया गया । कई प्रेमियों ने उन्हें फूल मालाएं भेंट की । पूज्य स्वामीजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि सन्तों का काम है नाम स्मरण करना और दूसरों को भी नाम जपाना । आप लोगों ने मुझे कितना न स्नेह व सम्मान दिया है, ऐसा ही स्नेह आप

एक दूसरे को दें और नाम से चित्त की वृत्ती को जोड़ें तो आपका जीवन सफल हो जायेगा ।

भाग्यावान ही नाम स्मरण करते हैं। एक वृद्ध व्यक्ति मरने की स्थिति में था । वह सारा जीवन प्रभु के नाम से विमुख रहा । उसके परिवार के सम्बन्धी उससे राम नाम जपाने लगे फिर भी उसके मुख से राम का नाम नहीं निकला । सम्बन्धियों ने विचार किया कि यदि अन्तकाल में यह नाम जपेगा, प्रभु का नाम लेगा तो उसकी मुक्ति हो जायेगी। घर वालों ने फिर जोर जोर से उससे कहा "बाबा ! राम राम बोलो !" वृद्ध को शायद राम के नाम से घृणा थी । उसके बड़े बेटे ने चतुराई करके अपने बहनोई को बुलाकर पूज्य पिताजी के सामने खड़ा किया। बहनोई का नाम सीताराम था । बड़े बेटे की इच्छा थी कि पिताजी किसी भी तरह राम के नाम का उच्चारण करें । उसने पिताजी से पूछा क्या आप इसे पहचानते हैं? पिताजी ने कहा कि मैं बेहोश नहीं हुआ हूँ, यह मेरा दामाद है ! वृद्ध ने फिर भी दामाद का नाम सीताराम न कहकर दामाद ही कहा । वृद्ध के भाग्य में शायद राम नाम उच्चारण करना ही नहीं लिखा था ।

प्रेमियो ! आप ऐसा नहीं करें, उठते बैठते राम का नाम लें। जिसका चित्त निर्मल होगा वही नाम स्मरण कर सकेगा । जिसके मन में प्रभु के लिए प्यास होगी वही नाम स्मरण कर सकेगा । जो इस जन्म में अपनी रसना भगवद् भजन करने में सफल नहीं करता वह दूसरे जन्म में गूंगा होगा । आप यदि भविष्य में गूंगा होना चाहते हैं तो फिर राम नाम से विमुख रहें । आप यदि अपना भविष्य उज्जवल करना चाहते है तो खूब नाम स्मरण करें ।

१४ अक्टूबर पूज्य स्वामीजी बम्बई पधारे । वहां उन्होंने लोकहित कुटीर हाल, खार में एक सप्ताह अमृत वचनों की वर्खा करते हुए प्रेमियों की प्यास बुझाई । बम्बई दूरदर्शन की ओर से पूज्य स्वामीजी के कुछ प्रवचन रिकार्ड किये गये । २० अक्टूबर सायं पूज्य स्वामीजी ने सत्संग यज्ञ का समापन करते हुए आयोजकों को धन्यवाद दिया। २१ अक्टूबर पूज्य स्वामीजी कोटा पधारे । वहाँ सिन्धी समाज की ओर से अमर शहीद भक्त कंवरराम का पुण्यतिथि उत्सव मनाया गया।

पूज्य स्वामीजी ने इस उत्सव के सम्बन्ध में तीन दिन वहाँ सत्संग प्रवचन करते हुए सन्त कंवरराम साहब के परोपकारी जीवन का उल्लेख किया। पूज्य स्वामीजी ने स्वामी टेऊंराम प्रेम प्रकाश आश्रम में भी ज्ञान गंगा प्रवाहित की।

जलगांव में बाबा हरिदासराम के स्थान पर भी भक्त कंवरराम साहब का पुण्यतिथि उत्सव मनाया गया। इसी उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी २७ अक्टूबर को जलगाँव पधारे। उन्होंने वहाँ प्रवचन करते हुए सन्त कंवरराम साहब के गुणों का वर्णन किया। सिन्धुनगर में साईं वसणशाह का पुण्यतिथि उत्सव मनाया जा रहा था। ३० अक्टूबर को पूज्य स्वामीजी वहां उस उत्सव में पधारे। सांई आत्माराम साहब ने उनका स्वागत सत्कार किया।

स्वामी ग्वालानन्द महाराज के पुण्यतिथि उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी १ नवम्बर को पूना में स्वामी रामकृष्ण के मन्दिर पर पधारे। उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन करते हुए स्वामी ग्वालानन्द महाराज के जीवन व काव्य पर प्रकाश डाला। ४ नवम्बर पूज्य स्वामीजी ने सिन्धुनगर आश्रम में जनता जनार्दन परिषद् की ओर से दीपावली के उपलक्ष्य में मिठाई वितरित की। सायं को वे बम्बई गये। ५ नवम्बर दीपावली के दिंन राम लक्ष्मण पहूजा पूज्य स्वामीजी को कालबादेवी, बम्बई में अपनी दुकान पर ले गये। वहाँ कई प्रेमी उनसे आशीर्वाद लेने आये।

८ नवम्बर प्रातः आश्रम में पूज्य स्वामीजी ने कार्तिक कथा प्रारम्भ की। वे प्रतिदिन प्रातः कार्तिक कथा का महत्व प्रतिपादित करते हुए श्री गुरुग्रन्थ साहब की वाणी की व्याख्या भी करते थे। १४ नवम्बर गोपाष्टमी के दिन प्रातः पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि गौ माता की सेवा उत्तम सेवा है। गाय में सभी देवताओं का वास होता है। गौ हत्या हमारे देश पर बहुत बड़ा कलंक है। गौ हत्या के विरुद्ध बहुत बड़ा अभियान शुरू करना चाहिए। धर्म की दृष्टि से एवं आर्थिक दृष्टि से गो धन ही सच्ची सम्पति है। गउओं का विनाश, देश का विनाश है। गौ रक्षा, देश व धर्म की रक्षा है। प्रातः ८ बजे आश्रम से शोभायात्रा निकाली गई जिसमें कई

सन्त, गायें एवं हज़ारों प्रेमी सम्मिलित हुए। सायं राधेश्याम गौशाला में गोपाष्टमी उत्सव पूज्य स्वामीजी की अध्यक्षता में मनाया गया। पूज्य स्वामीजी ने "भगवान श्रीकृष्ण एवं गाय" के सम्बन्ध में विचार व्यक्त करते हुए गौशाला के सेवकों को धन्यवाद दिया।

१८ नवम्बर कार्तिक एकादशी के पावन दिन प्रात: पूज्य स्वामीजी ने कार्तिक एकादशी का महत्व बताते हुये कहा कि आज सारी रात जागरण कर नाम स्मरण करें। तत्पश्चात् स्वामीजी के साथ सन्त व हज़ारों प्रेमी राम नाम की धूम मचाते श्मशान भूमि पधारे। वहां उन्होंने वैरागी भजन गाते हुए कहा कि सभी को एक दिन यहां आना ही है, किंतु उसके पूर्व ही कर्मों की पूंजी संग्रह करें तो आपकी इस संसार व परलोक की यात्रा सुखद होगी। सायं पूज्य स्वामीजी ने भगवान श्रीकृष्ण की महिमा का भजन गाते हुए कहा कि प्रेमियों ! आज कार्तिक एकादशी के उपलक्ष्य में आप लोगों ने उपवास रखा है, इसलिए एकांत में बैठकर भगवद् चिंतन करें, मौन धारण करें, किसी पर क्रोध नहीं करें, गौसेवा एवं अन्य शुभ कार्य करें।

१९ नवम्बर दोपहर पूज्य स्वामीजी स्वामी टेऊंराम, स्वामी चन्दनप्रकाश मन्दिर पूना पधारे। वहां उन्होंने तीन दिन अमृत वचनों की वर्खा की। उन्होंने प्रचवन करते हुये कहा कि ये कार्तिक के दिन विशेष महत्व के दिन हैं। अमृत वेले उठकर नाम स्मरण करें और अन्य शुभ कर्म करें। सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं:-

प्रात:काल जो ऊठकर, करत हरि गुण गान।
कह टेऊँ सो जगत में, होवत सन्त सुजान ।।

प्रात: को केवल भगवद् चिंतन करें तो आपको आत्मिक शक्ति मिलेगी। २१ नवम्बर गुरु नानकदेव महाराज की जयन्ती है। वे अवतारी पुरुष होते हुए भी रात दिन स्मरण में सफल करते थे। वे विनम्रता की मूर्ति थे। आप भी उनके सिद्धान्तों पर चलने का प्रयास करें।

२१ नवम्बर सायं पूज्य स्वामीजी सिन्धुनगर आश्रम लौट आये। वहां उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि आज चारों ओर अशान्ति एवं आतंकवाद का वातावरण है। आज हमें उनकी शिक्षाओं को अपनाने की अत्यन्त आवश्यकता है। उन्होंने अपनी वाणी व व्यवहार द्वारा

एकता का सन्देश दिया। रात्रि को पूज्य स्वामीजी ने श्री गुरु नानकदेवजी महाराज के जन्म दिन उत्सव के उपलक्ष्य में विभिन्न स्थानों पर प्रवचन करते हुए गुरु नानकदेवजी महाराज की महिमा गाई।

२२ नवम्बर पूज्य स्वामीजी ने नागपुर की ओर प्रस्थान किया। वहां उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन किए। २५-२६ नवम्बर उन्होंने कामठी में अमृत वचनों की वर्खा की। २७ नवम्बर वे भाटापारा पधारे। वहां माता समुझबाई की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए माता समुझबाई की सेवाओं का उल्लेख किया। २ दिसम्बर पूज्य स्वामीजी रामनगर, सूरत पधारे। वहां प्यारे केशवलाल एवं अन्य प्रेमियों ने उनका भव्य स्वागत किया। पूज्य स्वामीजी ने वहां दो दिन अमृत वचनों की वर्खा की प्रेमियों की प्यास पूरी की।

स्वामी टेऊंराम प्रेम प्रकाश मंदिर सिन्धुनगर-५ का वार्षिक उत्सव ८ दिसम्बर से १२ दिसम्बर तक आयोजित किया गया। ८ दिसम्बर प्रातः पूज्य स्वामीजी ने मंडल के सन्तों के साथ धर्म ध्वजा फहराकर उत्सव का शुभारम्भ किया। दोपहर ३ बजे पूज्य स्वामीजी के नेतृत्व में आश्रम से शोभा यात्रा निकाली गई, जिसमें कई सन्त एवं हज़ारों प्रेमी 'श्री सत्नाम साक्षी' व राम नाम की धुनियाँ लगाते चले। शोभा यात्रा में भगवान श्रीकृष्ण, भगवान श्रीराम, भगवान शंकर, सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की झांकियां दर्शाई गई। सायं ६ बजे शोभा यात्रा श्री मोटूमल खेराजमल चांडवाणी के निवास स्थान पहुँची। पूज्य स्वामीजी, कुछ सन्त एवं प्रेमी श्री मोटूमल के निवास स्थान पर पधारे। श्री मोटूमल चांडवाणी, श्री दौलतराम चांडवाणी व समस्त परिवार ने पूज्य स्वामीजी एवं अन्य सन्तों का स्वागत किया ८ बजे शोभा यात्रा आश्रम पर लौट आई। उत्सव के चारों दिन पूज्य स्वामीजी एवं अन्य सन्त-महात्माओं ने भक्ति व ज्ञान की सरिता प्रवाहित की। ११ दिसम्बर प्रातः १० बजे सन्त समागम आयोजित किया गया। पूज्य स्वामीजी ने सभी सन्तों का स्वागत करते हुए कहा कि आज हमारे भाग्योदय हुए हैं कि यहां घर बैठे हम सभी को इतने सन्तों का दर्शन हुआ है और उनके अमृत वचन श्रवण करने का सुअवसर मिला। सन्तों की शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारें तो आपका कल्याण होगा।

१२ दिसम्बर प्रातः पूज्य स्वामीजी ने सन्तों के साथ उत्सव का समापन करते हुए कहा कि उत्सव में यदि किसी सन्त को या प्रेमी को कोई कष्ट हुआ हो और किसी सेवक से सेवा करने में कोई गलती हुई हो तो मुझे क्षमा करें। हम सब मिलकर आज भगवान एवं सत्गुरु महाराज से प्रार्थना करें कि सम्पूर्ण विश्व में सुख-शान्ति का वातावरण हो। मैं आज सभी प्रेमियों से बिनती करता हूँ कि दहेज के कारण बहुओं को दुःखी न करें, उन्हें अपनी बेटियों जैसा प्यार दें। आप अपना कामकाज करते हुए प्रभु को नहीं भुलायें तो प्रभु आपकी मनोकामनाएं पूर्ण करेंगे।

१४ दिसम्बर सायं स्वामी टेऊंराम धर्मशाला सिन्धुनगर-५ में जनता जनार्दन परिषद् की ओर से पूज्य स्वामीजी महाराज की प्रेरणा से सामूहिक विवाहों का आयोजन किया गया। डॉ. दयाल 'आशा' ने विवाहोत्सव में आए अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि प्रतिवर्ष न केवल यहां वरन् विभिन्न नगरों में पूज्य स्वामीजी महाराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से सामूहिक विवाहों का आयोजन किया जाता है। पूज्य स्वामीजी ने वर-वधुओं को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आज से आपका नया जीवन आरम्भ हो रहा है। अतः गृहस्थ जीवन में प्रेम व शान्ति का वातावरण उत्पन्न करें। घर में माता-पिता, सास-ससुर का सम्मान करें, उनकी आज्ञा शिरोधार्य कर सेवा करेंगे तो अवश्य आपका कल्याण होगा। प्यारे विक्योमल श्राफ, प्यारे छाडोमल नाना ने इस आयोजन में जो सहयोग दिया है, उनको धन्यवाद है।

१५ दिसम्बर रात्रि ८ बजे बजाज हॉल सिन्धुनगर-३ में डॉ. दयाल 'आशा' के सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक सेवाओं के उपलक्ष्य में सन्मान समारोह श्री नारी गुरसहानी की अध्यक्षता में रखा गया। पूज्य स्वामीजी इस उत्सव के मुख्य अतिथि थे। श्री विजय मंगतानी, श्री गोपीचन्द बहरानी, श्री रमेश आहूजा और श्री राम चंचलानी इस उत्सव के आयोजक थे। श्री नारी गुरसहानी, श्री गोपीचन्द बहरानी, श्री हरदास माखीजा, श्री गुल शर्मा एवं अन्य वक्ताओं ने डॉ. दयाल 'आशा' की सेवाओं का उल्लेख किया। पूज्य स्वामीजी द्वारा डॉ.

दयाल 'आशा' को स्वर्ण पदक प्रदान किया गया।

सन्त प्रभाराम साहिब का पुण्यतिथि उत्सव २२ दिसम्बर से २४ दिसम्बर तक सन्त प्रभाराम सोसायटी, अहमदाबाद में आयोजित किया गया। इस उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी २२ दिसम्बर अहमदाबाद पधारे। सन्तूमल, प्रकाश नेणूमल एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। पूज्य स्वामीजी ने वहां तीनों दिन सत्संग प्रवचन करते हुए सन्त प्रभाराम साहब के गुणों का वर्णन करते हुए कहा कि वे प्रति दिन गुरु के पास जाकर उनकी सेवा सुश्रषा करने के ण्श्चात् ही अपना कामकाज करते थे। सत्गुरु की सेवा करते व नाम स्मरण करते करते वे स्वयं भी सन्त बन गये। सन्त आकाश से उड़कर नहीं आते। साधारण लोग भी अपने शुभ कर्मों के कारण सन्त बन जाते हैं। सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं :-

गुर की सेवा जो करे, गुर की आज्ञा मान।
कह टेऊँ गुर नाम रट, गुर-मुख सो पहिचान॥

प्रेमियो ! सत्गुरु और सन्तों की सेवा करें। गुरु मन्त्र की साधना करें ! घर गृहस्थ में रहकर अपने कर्तव्यों का पालन करें किन्तु उनमें आसक्ति नहीं रखें। मन में प्रभु के लिए प्यास बढ़ाएं, प्रेम के आँसू बहाएं।

१ जनवरी १९९२ सायं ६ बजे प्रेम प्रकाश मण्डली माटूंगा, बम्बई में पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि यहाँ नियमित रूप से आकर भगवद् भजन करें। बम्बई "माया-नगरी" है। माया के पीछे भटक भटक कर जीवन व्यर्थ नहीं गंवायें। परस्त्री को उसके पति के पास भेजना चाहिए, उसे अपने पास रखना पाप है। लक्ष्मी भगवान श्रीनारायण की पत्नी हैं, उसे भगवान को समर्पित करना चाहिए। अर्थात् माया प्रभु को समर्पित करनी चाहिए, अर्थात् शुभ कर्मों में खर्च करनी चाहिए। सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं कि यदि आपको सच्चा सुख चाहिए तो मोह ममत्व का त्याग करें। निष्काम भावना से नाम स्मरण करें:-

कह टेऊं त्रिलोक में, जे चाहो विश्राम।
माया ममता मोह तज, हरि सुमरो निष्काम ॥

रात्रि को पूज्य स्वामीजी ने श्री कन्हैयालाल पहूजा के घर कुर्ला (बम्बई) में कछ घण्टे विश्राम किया। प्रातः चार बजे वे बम्बई हवाई अड्डे पर आये। वहाँ से उन्होंने विदेश यात्रा के लिए प्रस्थान किया। उनके साथ सन्त देवप्रकाश, सन्त अनन्तप्रकाश, सन्त टोपणदास व सन्त ज्ञानप्रकाश भी थे।

२ जनवरी १९९२ पूज्य स्वामीजी मण्डली सहित जकार्ता पहुँचे। वहाँ शंकर-गोप सामताणी, माता कृष्णा, लाल वासवाणी एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। पूज्य स्वामीजी ने वहाँ माता कृष्णा सामताणी के घर में एवं अन्य स्थानों पर १६ जनवरी तक अमृत वचनों की वर्खा की। प्रातः कुछ साधक पूज्य स्वामीजी के पास आते थे, पूज्य स्वामीजी उनकी शंकाओं का समाधान कर मार्गदर्शन करते थे। वहाँ सत्नाम साक्षी हाल में प्रवचन करते हुए पूज्य स्वामीजी ने कहा कि परमात्मा सर्वव्यापक है। प्रकृति की सत्ता भी परमात्मा के कारण ही है। सत्गुरु महाराजजी फरमाते हैं :-

साक्षी चेतन ब्रह्म का, सब घट में है वास।
कह टेऊँ शशि सूर्य में, ताकां है प्रकाश ॥

कई लोग कहते हैं कि उन्हें ईश्वर का दर्शन नहीं हो रहा है। भगवद् दर्शन क्या है? पहले वह ज्ञान होना चाहिए। भगवद् दर्शन के पूर्व यह विचार करना चाहिए कि दर्शन करने वाला कौन है? जिस ईश्वर का आप दर्शन करना चाहते है, उसके स्वरूप क्या है? एक बार स्वामी रामतीर्थजी महाराज श्री कीर्तिशाह के यहां ठहरे हुए थे। एक दिन महाराज ने उनसे पूछा कि भगवान क्या है? स्वामी रामतीर्थजी ने कहा कि क्या आपको ईश्वर के सम्बन्ध में सन्देह है? महाराज ने कहा कि जब तक मैंने अपनी आँखों से उसको नहीं देखा, तब तक केवल शब्दों को नहीं मानूंगा। तब स्वामीजी ने पूछा कि मैं जो शब्द बोल रहा हूँ, क्या आप वे शब्द देख रहे हो? राजा ने कहा "नहीं, किन्तु आपके शब्द सुन तो रहा हूँ, परन्तु ईश्वर तो सुनने में नहीं आता! स्वामी रामतीर्थजी ने राजा को एक इत्र की शीशी खोलकर

दी और कहा कि इसे सूंघे। राजा ने इत्र सूंघ कर कहा कि इसकी सुगन्धि बहुत अच्छी है। स्वामी रामतीर्थजी ने कहा कि इसकी सुगन्धि देखने में तो नहीं आती और सुनने में भी नहीं आती है फिर भी क्या सुगन्ध या दुर्गन्ध से इनकार किया जा सकता है? राजा ने कहा "नहीं, सुगन्ध या दुर्गन्ध आँखों व कानों से सम्बन्ध नहीं रखती, किन्तु नाक उसे ग्रहण कर सकता है। परन्तु ईश्वर तो न आँखों से देखने में आता है, न ही उसको कानों से सुन सकते हैं, न ही उसकी सुगन्ध नाक से ग्रहण कर सकते हैं।" स्वामीजी ने फिर राजा को एक आम खाने के लिए दिया। राजा ने आम खाते हुए कहा यह आम बड़ा मीठा है। स्वामीजी ने कहा "राजन ! अब आप विचार करें कि आम की मिठास न देखने में, न सुनने में, न ही सूंघने में आती है, फिर भी उसमें मिठास है।" राजा ने कहा कि मिठास का अनुभव जिव्हा तो करती है। आप तो ईश्वर के सम्बन्ध में सदैव कहते हैं कि वह इन्द्रियों से अगोचर है। मुझे ऐसा लगता है कि ईश्वर एक कल्पना है, और कुछ नहीं ! राजा का उत्तर सुनकर स्वामी रामतीर्थ हंस पड़े और उन्होंने एक रेशमी वस्त्र राजा को देते हुए कहा कि बताओ तो यह कैसा है? राजा ने कहा यह वस्त्र बहुत ही मुलायम (चिकना) है परन्तु स्वामीजी आप ये पहेलियाँ क्यों पूछ रहे हैं?

स्वामी रामतीर्थजी ने कहा 'राजन ! थोड़ा धीरज रखो, आपको किसी न किसी प्रकार ईश्वर दर्शन करा रहा हूँ। आपको कपड़े का चिकनापन देखने में नही आता, सुनने में भी नहीं आता, सूंघने में भी नहीं आता फिर भी आप उसकी चिकनाई से इन्कार नहीं कर सकते। आप उसका अनुभव कर सकते हैं। इसी प्रकार ईश्वर बाह्य इन्द्रियों से सम्बन्ध नहीं रखता किन्तु वह है अवश्य। सारे जगत् में केवल उसकी ही सत्ता है। ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखने वाला व्यक्ति उसे सुन भी सकता है और उससे अधिक उसका अनुभव कर सकता है।

राजा ने फिर प्रश्न किया "मैं ईश्वर की सत्ता को कैसे मानूं?" स्वामी रामतीर्थजी ने कहा "राजन ! आज आपको प्रभु का दर्शन करवाता हूँ, किन्तु आप नत-मस्तक होकर, मुझे नमस्कार करें। राजा ने जैसे

ही नत-मस्तक होकर स्वामी रामतीर्थ को प्रणाम किया तो स्वामीजी ने उसकी पीठ पर जोर से मुक्का मारा। राजा चीखकर चिल्लाने लगा! स्वामी रामतीर्थजी ने पूछा "क्या हुआ?" राजा ने कहा आप मुझसे पूछते हैं कि क्या हुआ? आपने इतने जोर से मुक्का मारा है कि मैं दर्द से चिल्ला रहा हूँ ! स्वामीजी ने कहा "राजन् ! दर्द देखने में तो नहीं आता ! आप झूठ बोल रहे हैं।" राजा ने कहा "स्वामीजी! मुझे बहुत दर्द है किन्तु वह पीड़ा मैं दिखा नहीं सकता ! स्वामीजी ने कहा "राजन् ! आपका यह दर्द देखा जा सकता है, सुना या सूंघा जा सकता है? क्या इसे स्पर्श किया जा सकता है? राजा ने कहा कि पीड़ा को कैसे देखा, सुना, सूंघा या स्पर्श किया जा सकता है?" स्वामी रामतीर्थ ने कहा कि फिर मैं कैसे मानूं कि आपको पीड़ा है? राजा ने कहा "स्वामीजी ! पीड़ा का केवल अनुभव होता है। अनुभव भी उसे होता है जिसे पीड़ा होती है।

स्वामी रामतीर्थ ने कहा "राजन् ! इसी प्रकार ईश्वर का भी अनुभव होता है। यह अनुभव भी तब होगा जब वैराग्य रूपी चोट लगेगी। जिसके मन में कामना है, वासना है, वह ईश्वर का अनुभव नहीं कर सकेगा। जिसके मन में प्रभु के प्रति प्यास है, तड़प है, वह व्यक्ति प्रभु के निकट हो सकता है। वह किसी न किसी दिन अवश्य सत् चित् आनन्द रूप का साक्षात्कार करेगा।

१५ जनवरी शिव मन्दिर जकार्ता में पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आप प्रति शनिवार माता कृष्णा सामताणी के घर में सत्संग करते हैं इसके लिए आपको धन्यवाद है। कलियुग में सत्संग एवं सेवा का बड़ा महत्व है। सत्गुरु महाराजजी फरमाते हैं :-

श्रद्धा से सत्संग कर, सेवा करो निष्काम।
कह टेऊँ तेरे सभी, पूर्ण होवे काम ।।

माता कृष्णा, प्यारे शंकरलाल, गोप सामताणी, प्यारे लाल वासवाणी, अर्जन, दीपा, शीला नन्दवाणी, चन्द्रा नन्दवाणी, हरेश नन्दवाणी एवं सभी प्रेमियों को धन्यवाद है कि आप यहां सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज की ज्योति जगा रहे हैं। जिनको गुरु याद है, गुरु महाराज उनको शाद व आबाद करेगा। आप कभी बुरे दिन नहीं देखेंगे। भगवद्

कृपा भी गुरु की आशीर्वाद से होती है । गुरु एवं सन्तों को प्रसन्न किया तो आपने भगवान को प्रसन्न किया । गुरु एवं सन्त कैसे प्रसन्न होंगे? जब आप उनके सिद्धान्तों के अनुकूल चलेंगे उनकी शिक्षाओं को अपनायेंगे तब वे प्रसन्न होकर आपको आशीर्वाद देंगे । सन्तों की शिक्षा बहुत ही सरल है, नाम स्मरण करें और परोपकार के कार्य करें ।

'जिंदगी बे बंदगी शर्मिन्दगी'

स्मरण के बिना जीवन व्यर्थ है । उस मनुष्य को धिक्कार है जो प्रभु से विमुख हैं । प्रेमियो ! सब कर्मों में नाम स्मरण सर्वश्रेष्ठ कर्म है । परमात्मा ने आपको माया दी है तो वह परोपकार के कार्यों में सफल करें । इसी माया द्वारा ऐसा कोई कर्म नहीं करें जिससे आपका जीवन कलंकित हो । आप यहां विदेश में रहकर भी भारतीय संस्कृति को न भूलें । सनातन धर्म के सिद्धान्तों के अनुकूल चलें ।

पूज्य स्वामीजी १७ जनवरी मंडली सहित सिंगापुर पधारे । बहिन इन्दिरा, श्री मंघाराम सदारगांणी, टीकम मूलाणी, राम छुगाणी, आत्माराम, इन्द्रा जीअलदास, ज्योति पिशु एवं अन्य प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत किया । पूज्य स्वामीजी, सन्त देवप्रकाश, सन्त अनन्त प्रकाश ने पांच दिन वहां अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की । सिन्धु हाउस में पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि प्रेमियो ! आप कितनी भी माया संग्रह करें किन्तु भगवान को नहीं भुलाएं । सांसारिक सम्पत्ति किसी काम की नहीं है, नाम की पूंजी संग्रह करें । सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं :-

मात गर्भ में तुम किया, हरि से जो इकरार ।
कह टेऊं तिंह याद कर, सुमरो सत् करतार ॥

माता के गर्भ की तुलना कुंभी नर्क से की गई है । जीव माता के गर्भ में उलटा लटका रहता है । उस कुंभी नर्क से बाहर निकलने के लिए वह प्रभु से प्रार्थना करता है कि मुझे बाहर निकालें तो मैं संसार में जाकर आपका नाम स्मरण करूंगा । परन्तु जीव माया के प्रपंच में फंस के प्रभु को भुला बैठा है । सत्गुरु महाराजजी फरमाते हैं कि जो मनुष्य इस जन्म में नाम स्मरण नहीं करता, सत्य नहीं बोलता,

मधुर भाषी नहीं है, उसे दूसरे जन्म गूंगा बनना पड़ेगा:-

राम नाम सत्य वचन, पुन मधुर न बोलत जाय।
टेऊं दूजे जन्म में, सो नर गूंगा होय॥

प्रेमियो ! अपनी रसना नाम स्मरण में सफल करें, क्रोध से किनारा कर मधुर भाषी बने, सत्य बोलें। क्रोध व्यवहारिक एवं आध्यात्मिक उन्नति में बड़ी रुकावट है। क्रोध करने से मानसिक एवं शारीरिक बीमारियां होती हैं। किसी प्रतिकूल परिस्थिति के कारण यदि मन में क्रोध पैदा हो तो मन पर नियन्त्रण रखें। उसी समय मुस्कारते हुए ऐसे बात करनी चाहिए जिससे जिस पर आप क्रोधित हो रहे हैं वह स्वयं ही लज्जित हो जाये। कुछ लोगों का ऐसा स्वभाव होता है कि वे छोटी मोटी बात पर क्रोधित हो जाते हैं। क्रोधी व्यक्ति मृतक समान होते है। क्रोध नर्क का द्वार है। क्रोध से किनारा करने के लिए आप विनोदी बनें। यदि कोई आपके ऊपर क्रोध करता है तो आप मुस्कुराते हुए उसकी बात टाल दें तो वह स्वयं लज्जित होगा। एक सज्जन की पत्नी क्रोधी स्वभाव की थी। वह थोड़ी थोड़ी सी बात पर क्रोधित हो जाती थी। यदि कभी उसका पति कार्यालय से देर से आता तो वह उसके ऊपर क्रोधित होती थी।

एक दिन पति किसी कार्य-वश कार्यालय से घर देर से लौटा, तब पत्नी ने क्रोधित होते कहा कि भोजन ठडा हो गया है, क्या मैं तुम्हारे लिए फिर आग लगाकर खाना गर्म करूं? अब तुम ठंडा खाना ही खाओ। पति विनोदी स्वभाव का था। उसने सब्जी का बर्तन उठाकर अपनी पत्नी के सिर पर रखा। पत्नी फिर आग बबूला होकर बोली कि यह क्या कर रहे हो? पति ने कहा कि मैं सब्ज़ी गर्म कर रहा हूं। पत्नी ने पूछा कि इसका मतलब ! तब पति ने मुस्कुराते हुए कहा कि क्रोध की अग्नि के कारण तुम्हारा सिर बहुत गर्म हो गया है। तुम्हारे सिर पर सब्ज़ी का बर्तन रखने से सब्ज़ी गर्म हो जावेगी। पति का उत्तर सुनकर पत्नि का क्रोध शांत हो गया और वह हंसने लगी। प्रेमियो ! ऐसी दशा में यदि पति पत्नी पर क्रोधित होता तो बात बढ़ जाती। पति ने अपने विनोदी स्वभाव से पत्नी का क्रोध ठण्डा कर दिया। आप भी ऐसा करें। यदि कभी मन में क्रोध पैदा

हो तो गम खाकर, क्रोध को शांत कर दें तो इस में आपका यश होगा।

२१ जनवरी बहन इन्दिरा मंघाराम के घर मन्दिर में पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि संतों महात्माओं के पास जाने से मन प्रसन्न हो जाता है। धनवानों या राजाओं के पास जाने से मन प्रसन्न नहीं होता है। अज्ञानियों व मूर्खों का संग करने से मन अशांत रहता है। इसलिए प्रेमियों ! संतों महात्माओं का दर्शन करें, उनका संग करें।

"संत का संग बढ़ भागी पाए।"

जो मनुष्य संतों के संग में आता है, संत उसे स्वयं जैसा बना देते हैं। आप यदि किसी भी संत महात्मा के पास जायेंगे तो वह भगवद् भजन, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति की चर्चा करेगा। किसी सांसारिक व्यक्ति के पास जायेंगे तो वह सांसारिक बातें करेगा। जो समय संतों के संग में, नाम स्मरण में व्यतीत होता है, वह समय ही सफल जानें। सत्गुरु एवं संतों के संग में आप का कल्याण होगा। सत्गुरु महाराज जी फरमाते हैं।

सन्त हरि गुरुदेव बिन, किसका हो न उद्धार।
कह टेऊँ इस बात को, कहते वेद पुकार॥

बहिन इन्दिरा को धन्यवाद है कि प्रति शनिवार यहां सत्संग का आयोजन करती हैं। बहिन इन्दिरा एवं उसके पति मंघाराम के मन में सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज एवं सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के प्रति अगाध श्रद्धा है। आप भी इसी भक्ति भावना में बढ़ते रहें।

२२ जनवरी पूज्य स्वामीजी मनीला पधारे। वहां देव, गोपी सहजवाणी, अर्जनदास, गुरुनामल, पिशू मीरपुरी, लवीना सजन थधाणी एवं अन्य प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत किया। वहां वे देव सहजवाणी के घर ठहरे। वहां उन्होंने हिन्दु मन्दिर एवं विभिन्न स्थानों पर ९ दिन अमृत वचनों की वर्खा करते हुए प्रेमियों की प्यास पूरी की। उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि आपको सांसारिक सम्बन्धियों के प्रति स्नेह है, परन्तु उससे अधिक प्रेम प्रभु से करें। प्रभु का नाम

प्रेम व श्रद्धा से याद करेंगे तो आपका कल्याण होगा। सत्गुरु महाराज जी फरमाते हैं :

प्रेम बिना पहुंचे नहीं, को जन हरि के धाम।
कह टेऊँ तांते जपो, प्रेम सहित हरिनाम॥

जगत् के पदार्थों और परिवार के सम्बन्धियों में आप जितना मोह रखेंगे उतना ही दुखी होगे। प्रभु के प्रति प्रेम में आप आनन्दमय जीवन बितायेंगे। हमारे धार्मिक शास्त्रों में लिखा है कि जो मनुष्य अन्तकाल में नाम स्मरण करता है उसकी भक्ति होती है। एक सज्जन ने किसी संत से यह शंका की कि कोई व्यक्ति सारा जीवन नाम से विमुख रहे और अन्तकाल में राम नाम उच्चारण करे तो उसकी मुक्ति कैसे होगी? फिर तो लोग सारा जीवन पाप कर्म करें और अन्तकाल में नाम जपें! संत ने कहा २ अक्टूबर को गांधी जयन्ती के उपलक्ष्य में एक सप्ताह या एक महीना खादी की खरीद पर छुट देते हैं। एक १०० रुपये की खादी ८० रुपये में देते हैं। इस प्रकार प्रभु की ओर से भी यह छुट होती हैं कि जो अन्त समय में नाम स्मरण करता है, उसका कल्याण होता है। अजामिल पापी था किन्तु अन्तकाल में उसने अपने बेटे नारायण को बार बार पुकारा। यद्यपि उसने बेटे को पुकारा किन्तु नारायण भगवान का नाम भी है, इसलिए अजामिल पापी संसार सागर से पार हो गया। शास्त्र के भाव को समझने का प्रयास करो। यदि तुम्हें खादी खरीदनी हैं, तो तुम्हें पहले पैसे इकट्ठे करने होंगे तभी गांधी जयन्ती के अवसर पर खादी तुम्हें सस्ते भाव में मिलेगी। वैसे यदि तुम प्रभु के लिए पहले ही प्यास रखोगे तो अवश्य ही तुम अन्तकाल में उसका स्मरण कर सकोगे, किन्तु यदि तुम सारा जीवन दुकान की वस्तुओं का विचार करते रहोगे तो अन्त समय वे वस्तुएं तुम्हारी आंखों के सामने घूमेंगी और बार बार उनके नाम लोगे।

एक वृद्ध मरने की अवस्था में था। उसके चारों बेटे उसके चारों ओर खड़े हो गए। बूढ़े की आंखों से आंसू टपक रहे थे, पिता को रोते देखकर बड़े बेटे ने पूछा "पिताजी! आपको क्या कष्ट है कि

आप रो रहे हैं? अब राम को याद करें।'' पिताजी ने पूछा, दूसरा बेटा कहां है? दूसरे बेटे ने कहा ''पिताजी ! कोई आज्ञा हो मैं यहीं खड़ा हूं। अब आप आंसू न बहाकर चित्त की वृत्ति प्रभु से जोड़े।'' तीसरे और चौथे बेटे ने कहा कि ''पिताजी ! हम दोनों भी आपकी सेवा में खड़े हैं। आपको क्या पीड़ा है? बूढ़े पिताजी ने ऊंची आवाज में कहा ''क्या पीड़ा हैं ! मुझे अब बड़ी पीड़ा तो यह है कि आप चारों बेटे यहां बैठे हैं, दुकान का क्या हाल होगा? वहां कौन बैठा है? तुम्हें दुकान की कोई चिन्ता नहीं है।'' ऐसा कहते कहते वह बूढ़ा मर गया किन्तु उसके मुख से राम का नाम नहीं निकला। ऐसे जीवन से क्या लाभ?

प्रेमियो ! आप संसार में रहें किन्तु जगत् के व्यवहार में आसक्ति न रखें। नहीं तो अन्तकाल में भी आप सांसारिक सम्बन्धियों व पदार्थों का चिन्तन करेंगे। संसार में रहते हुए अपना अपना कर्तव्य भी पालन करें और नाम चिन्तन करें।

२ फरवरी पूज्य स्वामीजी हांगकांग प्रेम प्रकाश मन्दिर पधारे। सायं सन्त नामदेव, श्री होतचन्द वाधवाणी ने उनका स्वागत किया। पहले संत अनन्तप्रकाश व संत टोपणदास ने भजन गाये। तत्पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि सूर्य का काम है अंधेरा दूर करना और चन्द्रमा का काम है शीतलता प्रदान करना संतों का काम है अज्ञान, अंधेरा, संशय, भ्रम दूर करना, नाम जपना व जपाना। सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के पास कई प्रेमी शंकाएं लेकर आते थे। सत्गुरु महाराज जी इनकी शंकाओं का समाधान करते थे। संतो का उपदेश हितकारी होता है। जो श्रद्धा से उनका उपदेश सुनकर उनके अनुरूप चलता है, उसका दुख दर्द दूर होता है।

सब जन के हित होत है, सन्तों का उपदेश !
श्रद्धा से जो लेत हैं, तांका मिटे कलेश ॥

कुछ साधक आपस में चर्चा कर रहे थे कि उन्होंने संसार का भी त्याग किया और उन्हें भगवान की प्राप्ति भी नहीं हुई, फिर क्या लाभ! वे साधक सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज के पास आये और उनसे

पूछा कि प्रभु की प्राप्ति कैसे हो? सत्गुरु महाराज ने कहा कि संत तुलसीदास जी महाराज फरमाते हैं :

सत्य वचन और दीनता, पर त्रिया मात समान ।
इतने में हरि न मिले तुलसीदास जमान ।।

प्रभु को प्राप्त करना सुलभ है । सदैव सत्य बोलें, विनम्र बने परस्त्री को माता समझकर व्यवहार करें तो आपको भगवान की प्राप्ति हो जायेगी । यदि ऐसे करने से भी प्रभु आप को नहीं मिले तो सत तुलसीदास गवाह हैं । आज कल यत्र तत्र झूठ का व्यवहार चल रहा है । लोग सत्य की राह पर चलते थे तो उनकी जिव्हा में भी शक्ति रहती थी। जितना हम असत्य बोलेंगे उतनी हमारी आत्मिक शक्ति कम होगी। सत्य ही भगवान है। आप सदैव सत्य बोलें, सत्य का व्यवहार करें, विनम्र बनें, अपनी पत्नी को छोड़कर सभी बहनों, माताओं को मात रूप समझे तो किसी न किसी दिन आपको प्रभु का दर्शन अवश्य होगा । आप अधिक से अधिक माया संग्रह करने के लिए कितना झूठ बोलते हैं ! ये लाखों करोड़ों किस काम के जो आपकी आत्मिक शक्ति कम करें ।

पूज्य स्वामीजी प्रतिदिन सायं प्रेम प्रकाश मन्दिर में अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियोंकी प्यास पूरी करते थे । १० फरवरी सायं उन्होंने हिन्दू टेम्पल में सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि सन्त सदैव प्रसन्न चित्त रहते हैं । दु:ख में एवं सुख में वे समभाव रहते है । जब सन्त नरसी मेहता का बेटा संसार से चल बसा तब उसने अपनी पत्नी को समझाते हुए कहा :-

'भल थियो भागे जंजाल, सुखी भजेछू गोपाल ।'

(यह भी अच्छा हुआ कि अब हम जगत् के जंजाल से मुक्त हुए। अब हम निश्चिंत होकर भगवद् भजन करेंगे । प्रेमियो ! सन्तान का वियोग बड़ा दु:खदाई होता है किंतु सन्त ऐसी दशा में भी अपनी आनन्द अवस्था में रहते हैं । उनकी आसक्ति सांसारिक सम्बन्धियों एवं पदार्थों में नहीं रहती । सुखी जीवन की यह चाबी है कि परमात्मा जो कुछ भी करता है, आप उसमें प्रसन्नचित्त रहें । हमें यदि सफलता नहीं मिलती

या कभी प्रतिकूल बातें होती हैं तो हम अप्रसन्न होते हैं, तन में अशान्ति व तनाव पैदा होता है । यदि गुरुवाणी का यह वचन 'तेरा भाणा मीठा लागे' अपने जीवन में अपनाएं तो मन की अशान्ति मिट जायेगी । जो कुछ प्रभु करता है, उसमें ही हमारी भलाई है ।

१२ फरवरी प्रेम प्रकाश मन्दिर में पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि कुछ प्रेमी सन्तों के पास कुछ खानपान की वस्तुएं भेंट करके आग्रह करते हैं कि वे अब उन वस्तुओं का सेवन करें। सन्तों को खाने-पीने के लिए बार-बार आग्रह नहीं करना चाहिए। आप उन्हें जो कुछ भेंट करना चाहते हैं वह सद्भाव से भेंट करें, वे उस वस्तु का किस प्रकार उपयोग करते हैं आप उसकी चिंता न करें ।

एक बार बसन्त ऋतु में सन्त हरिदासजी महाराज वृन्दावन में पवित्र यमुना के किनारे बालू के टीले पर बैठे थे । वहां उपस्थित एक कृष्ण प्रेमी ने उन्हें एक इत्र की शीशी भेंट करते हुए कहा कि महाराज मेरी प्रार्थना है कि आप यह इत्र भगवान श्यामसुन्दर बांके बिहारी को लगाएं सन्त हरिदासजी ने वहीं सर्वव्यापी भगवान कृष्ण का ध्यान किया और तुरन्त भगवान श्यामसुन्दर आ गये तथा वह इत्र की शीशी उन्होंने बांकेबिहारीजी के ऊपर उड़ेल दी। (अब यह दृश्य तो मात्र सन्त हरिदासजी महाराज ही देख रहे थे वहां उपस्थित प्रेमियों में से तो किसी को भी भगवान के दर्शन नहीं हुये ।)

इधर अपने बाह्य नेत्रों से सभी ने देखा कि सन्त हरिदासजी ने वह इत्र की शीशी बालू के टीले पर रेत के ऊपर उड़ेल दी। (जबकि वास्तव में यह इत्र की शीशी उन्होंने बांके बिहारी पर उड़ेल दी थी।)

यह दृश्य देखकर इत्र भेंट करने वाले व्यक्ति को मन ही मन बड़ा दुःख हुआ । सन्त हरिदासजी का जब ध्यान टूटा तो उस व्यक्ति को उदास देखकर कहने लगे कि आपके द्वारा दी गई इत्र की शीशी तो बांकेबिहारी को अर्पित कर दी आप चिंता न करें ।

तब सन्त हरिदासजी ने उस प्रेमी की मनःस्थिति समझकर उसे अपने शिष्यों के साथ बांकेबिहारीजी के दर्शनार्थ भेजा । वहां पहुँचकर उस व्यक्ति ने देखा कि समूचा मन्दिर उस इत्र की खूशबू से सराबोर (सुगंधित)

हो रहा है। तत्पश्चात् वह व्यक्ति वहां से दौड़ता हुआ सन्त हरिदसजी महाराज के पास आकर उनके पावन श्रीचरणों में गिरकर क्षमा याचना करने लगा।

'भक्तां दी चाल निराली'। आप किसी भी भक्त को भावना से जो कुछ भी अर्पित करते हैं, वह उसका किस प्रकार उपयोग करता है, यह वह जाने। आप उसकी चिंता नहीं करें।

१५ फरवरी पूज्य स्वामीजी ने प्रेम प्रकाश मन्दिर में सत्संग करते हुए कहा- "प्रेमियो ! आपने हमें कितना स्नेह व सन्मान दिया है उसके लिए आप सभी को धन्यवाद है। आप संसार के किसी भी देश में रहें किंतु अपनी मातृभाषा सिन्धी को नहीं भूलें। अपनी सन्तान को धार्मिक शिक्षा दें, उन्हें प्राचीन भारतीय संस्कृति की जानकारी दें। उन्हें सन्तों भक्तों के जीवन चरित्र सुनाकर उनका मार्ग दर्शन करें। अपनी कमाई का कुछ हिस्सा दीन दु:खियों की सेवा में खर्च करें और पशु पक्षियों की सेवा करें। आपका सच्चा धन वह है जो आप परोपकार के कार्यों में खर्च करते हैं। सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं :-

भूखे भोजन देत जो, प्यासे को जल दान।
नंगे को पट देत जो, टेऊँ सो धन जान॥

१६ फरवरी पूज्य स्वामीजी बैंकाक पधारे। वहां वे किशनचन्द गंगुलानी के घर पर ठहरे। वहां विभिन्न घरों में पूज्य स्वामीजी ने पांच दिन सत्संग प्रवचन किए। १६ फरवरी पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुये कहा कि मानव जीवन उत्तम जीवन है। ऐसे अमूल्य जीवन को व्यर्थ नहीं गंवाएं। सत्गुरु महाराजजी भी अज्ञानी जीवोंको जागृत करते हुये कहते हैं :-

टेऊँ गफलत नींद में, बीते जन्म अनेक।
मनुष्य जन्म को पाय तुम, तजी न सोवन टेक॥

प्रेमियो ! काल का नगाड़ा बज रहा है और हम आराम से सोये हुये हैं। कई योनियों में भटकने के पश्चात् यह उत्तम (मनुष्य) योनि

प्राप्त हुई है। ऐसा अमूल्य जीवन हमें नाम स्मरण एवं अन्य सत्कर्मों में सफल करना चाहिए। परन्तु हम जगत् के भोगों में इतने खो गये हैं कि प्रभु को भूल गये हैं। सत्गुरु महाराज जी हमें उपदेश देते हैं:-

टेऊँ तांते रैन दिन, नींद तजे तुम जाग।
राम भजन ध्यान धर, पाओ सुख सुहाग ॥

मनुष्य देह की बड़ी महिमा है। परमात्मा ने मनुष्य को पांच कर्मेन्द्रियाँ एवं पांच ज्ञानेन्द्रियाँ दी हैं। जितना ज्ञान, बुद्धि मनुष्य को है, उतना ज्ञान व बुद्धि और किसी जीव को नहीं, फिर भी हम अज्ञानी। प्रेमियो! अज्ञान की नींद से जागृत होकर अपने श्वास नाम स्मरण में सफल करें। १७ फरवरी पूज्य स्वामीजी नें उपदेश करते हुये कहा कि आप यदि प्रभु की ओर एक कदम भी आगे बढ़ाएंगे तो परमात्मा आपके कामकाज स्वयं आकर पूरा करेंगे, परन्तु उसमें विश्वास व निष्ठा होनी चाहिये। हम ऐसा समझते हैं कि हमारे सिवाय काम ही नहीं होगा, यह हमारी मूर्खता है, अज्ञान है। जगत् अनन्त है, असीम है, उसका हर्ताकर्ता प्रभु सारे संसार को चला रहा है। सारी सत्ता उस परमपिता परमात्मा की है, बेचारा अज्ञानी जीव व्यर्थ आकाश में तलवारें चला रहा है। उसे व्यर्थ का अभिमान है। आजकल अहंकार कितना बढ़ गया है? कोई किसी को मानने के लिए तैयार नहीं है। सारा दिन बकरी की भांति 'मैं-मैं' करते रहते हैं। 'मैं-मैं' अर्थात् अहम् को बिसार कर प्रभु को याद करें। सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं :

मैं को तज मैं पाइये, मैं में मैं न सुहाय।
कह टेऊँ मैं छोड़के, मैं के बीच समाय ॥

प्रेमियो! 'मैं-मैं' का परित्याग कर मालिक से मिल जाएं। ध्यानावस्था में जब ध्यानी स्वयं को भूल जाता है, तब उसे साक्षात्कार होता है। सत्संग में आएं तो सांसारिक बातों को भूलकर, तन्मय होकर नाम में लीन हो जाएं। प्रभु आपकी स्वयं देख रेख करेगा।

करे करावन आपन हार, बंदे के कछु नहीं हाथ।

एक बार शिवाजी महाराज सन्त तुकारामजी के सत्संग में बैठे थे

और बड़ी तन्मयता के साथ वे सन्त तुकारामजी का उपदेश श्रवण कर रहे थे। अचानक उनका एक कर्मचारी सन्देश लेकर आया कि दुश्मन ने आक्रमण कर दिया है। शिवाजी महाराज यह सन्देश सुनकर भी सत्संग में निश्चिंत बैठे रहे। उधर दुश्मन ने देखा कि सैकड़ों शिवाजी तलवारें लेकर, घोड़ों पर सवार होकर सामना करने आ रहे हैं। दुश्मन यह देखकर विस्मय में पड़ गया। वह स्वयं ही भाग कर लौट गया। इधर यह समाचार सुनकर शिवाजी महाराज समझ गये कि यह सब सत्संग एवं सन्त तुकारामजी की कृपा का ही परिणाम है। प्रेमियों! आप भी शिवाजी महाराज की भांति तन्मय होकर सन्तों की कथा, उपदेश श्रवण करें। नाम स्मरण करें तो आपके शत्रु भी भाग जाएंगे।

१९ फरवरी पूज्य स्वामीजी ने बैंकाक में अन्तिम प्रवचन करते हुए कहा कि गुरु भक्ति, ईश्वर भक्ति के लिये मार्ग प्रशस्त करती है। सभी सन्तों ने गुरु की महिमा गाई है। आप भी गुरु भक्ति की भावना में आगे बढ़ते रहें। सन्त मलूकदासजी अपने सत्गुरु की महिमा गाते हुये कहते हैं :-

जीती बाज़ी गुरु प्रसादे, माया मोह निवार।
कह मलूक गुरु कृपा ते उतरिया भव जल पार॥

संत मलूकदास जी कहते हैं कि सत्गुरु की शक्ति एवं कृपा से ही मैंने हारी हुई बाजी जीत ली और मोह माया के जाल से मुक्त हुआ हूं। उनकी आशीर्वाद से ही मैं भव सागर से पार हुआ हूं। हममें से हर एक माया जाल में फंसा हुआ है। इस माया जाल से हमें सत्गुरु ही मुक्त करवाकर प्रभु का दर्शन करायेंगे। इसलिए सत्गुरु एवं परमात्मा में पूर्ण विश्वास धारण कर गुरु मन्त्र की साधना करें। सत्गुरु महाराज जी फरमाते हैं :

गुरु बिन जुगत न मिलत है, गुरु बिन नहीं प्रकाश।
कह टेऊँ गुरु नाम बिन, विर्था है सब श्वास॥

प्रेमियो ! आप यहां विदेश में रहकर भी भारत को नहीं भुलायें। भारत के ऋषि मुनियों के संदेश को जीवन में अपनायें। घरों में संतान

को धार्मिक शिक्षा दें। जीवन में दया व उपकार की ज्योति जगाएं। प्यारे किशन व उसके सारे परिवार एवं आप सभी को धन्यवाद है।

२० फरवरी रात्रि पूज्य स्वामीजी विदेश यात्रा कर बम्बई लौट आये। वहां कई प्रेमियों ने हवाई अड्डे पर उनका स्वागत किया। २३ फरवरी उन्होंने साधु वासवाणी नगर थाणा में प्रवचन किए। २५ फरवरी से २७ फरवरी स्वामी टेऊंराम स्वामी चन्दनप्रकाश मन्दिर अग्रवाल कालोनी पूना में स्वामी चन्दनप्रकाश का पुण्यतिथि उत्सव मनाया गया। पूज्य स्वामीजी इस उत्सव के सम्बन्ध में २५ फरवरी को पूना पधारे। उन्होंने वहां तीन दिन अमृत वचनों की वर्खा करते हुए प्रेमियों की प्यास पूरी की। २५ सायं उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि स्वामी चन्दनप्रकाश, चन्दन जैसे शीतल थे। उन्होंने अपना समस्त जीवन सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराजजी के चरणों में समर्पित किया। उन्होंने न केवल भारत में किन्तु विदेश में जाकर प्रेमियों की प्यास पूरी की। सत्गुरु महाराज संतों की महिमा गाते हुए कहते हैं :

परोपकारी जगत् में, है इक सन्त सुजान।
कह टेऊँ नित देत है, सबको भक्ति ज्ञान॥

संत परोपकारी होते हैं। वे प्रेमियों को भक्ति ज्ञान का प्रकाश देते हैं। स्वामी चन्दन प्रकाश ने भी कई परोपकार के कार्य किये। कुंभ के उत्सव में वे बड़ी उदारता के साथ दान करते थे। प्रेमियों! आप भी अपने जीवन में दया, उपकार, सेवा स्मरण की ज्योति जगाएं।

२६ फरवरी सायं पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आप यदि आध्यात्मिक मार्ग में उन्नति करना चाहते हैं तो मधुर भाषी बनें, विनम्र बनें और अपने हाथों से कुछ दान करें। संत फरीद साहब फरमाते हैं कि जो मनुष्य अपने जीवन में इन गुणों को अपनाता है, उसे परमात्मा प्राप्ति के लिए बाहर भटकने की आवश्यकता नहीं। उसे मन मन्दिर में ही प्रभु का दर्शन होगा।

मिठा बोलण निव चलण, कुछ हथां भी दे।
रब तिना दे बगुले, जंगल क्यों ढूंढे॥

२७ फरवरी पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि किसी की बुद्धि भ्रष्ट न हो ! यदि बुद्धि भ्रष्ट हुई तो सर्वनाश! जिसमें मर्यादा नहीं वह मुर्दा है । जिसको समझ नहीं वह सूरदास है। सूरदास तो लाठी के सहारे चल सकता है किन्तु बुद्धि से जो सूरदास है वह कभी नहीं चल सकता । मूर्ख का जन्म ही व्यर्थ ! मूर्ख स्वयं भी दुखी और वह दूसरों को भी दुखी करता है । प्रेमियों ! इसलिए गुरुदेव को नियमित रूप से प्रार्थना करें कि सदैव सुमति व सद्बुद्धि दें, भगवत् भक्ति का दान दें ।

सत्गुरु मुझको दान दे, प्रेम भक्ति विश्वास ।
कह टेऊँ नित सुमति दे संतन माह निवास ।।

२९ फरवरी पूज्य स्वामीजी हरिद्वार पधारे । प्रेम प्रकाश मंडल की ओर से हरिद्वार स्थित भीम गोड़ा चौक पर हरिद्वार नगरपालिका के सहायता से १ मार्च प्रातः ९ बजे पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानंद महाराज की मूर्ति स्थापित की गई । उसका उद्घाटन माननीय श्री लालकृष्ण आडवाणीजी ने किया । इस अवसर पर पूज्य स्वामीजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि महापुरुषों के ये यादगार हमारे लिए प्रेरणा स्रोत हैं। सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज महान संत थे । उन्होंने प्रेम प्रकाश मण्डल की स्थापना कर लाखों लोगों का मार्गदर्शन किया । मण्डल की ओर से पावन नदी के किनारे घाट नम्बर १० 'स्वामी सर्वानन्द घाट' विशेष संतों की सुविधा के लिए बनाया गया है, जिसका उद्घाटन भी हमारे प्यारे मंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी ने किया । सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज हमारे आध्यात्मिक मार्गदर्शक थे । वे महान ज्ञानवान व विद्वान थे । उन्होंने अपने नाम को सार्थक किया । इसी अवसर पर उत्तर प्रदेश के सिंचाई मन्त्री श्री पृथ्वीसिंह जी एवं कई संत महात्मा पधारे । संत भक्तप्रकाश ने आये हुए अतिथियों एवं संतों का स्वागत किया ।

३ मार्च पूज्य स्वामीजी अमरापुर स्थान जयपुर पधारे । वहां उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन किये । वडाला सिन्धी ब्रादर मंडल की ओर से वडाला बम्बई में ७ मार्च से ११ मार्च तक सत्संग यज्ञ का आयोजन किया गया । वहां पूज्य स्वामीजी ने प्रतिदिन रात को और रविवार

सायं को ज्ञान व भक्ति की गंगा प्रवाहित की । ७ मार्च रात्रि उन्होंने इस सत्संग यज्ञ का आरम्भ करते हुए कहा कि प्रेमियो ! आपको धन्यवाद है कि प्रतिवर्ष होली के दिनों में आप इस महायज्ञ का आयोजन करते हैं । सत्संग द्वारा मनुष्य को धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष चारों पदार्थों की प्राप्ति होती है । सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं :-

कह टेऊँ सत्संग से, मिलत पदार्थ चार ।
तांते तुम सत्संग कर, निश्चय मन में धार ॥

सन्तों के उपदेश श्रवण करने से आत्मिक आनन्द की उपलब्धि होती है । यह आनन्द आपको सिनेमा या होटलों में नहीं मिलेगा । वहां तो व्यर्थ के पैसे भी गंवाते हैं और आंखों व स्वास्थ्य की हानि भी होती है । आप नियमित रूप से सन्तों की कथा श्रवण करें, नाम स्मरण करें तो आपका कल्याण होगा ।

८ मार्च सायं पहले सन्त टोपणदास ने भजन गाया । डॉ. दयाल 'आशा' ने पूज्य स्वामीजी की महिमा का वर्णन किया । तत्पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने उपदेश करते हुए कहा कि प्रभु की उपासना निष्काम भावना से करनी चाहिए । वरुणदेवता का एक उपासक प्रतिदिन नदी के किनारे बैठकर जल देवता की उपासना करता था । एक दिन उसकी पत्नी ने कहा कि क्या आपने लालसाईं (वरूणदेव) से धन पदार्थ की मांग भी की है? यदि नहीं तो आज जाकर उनसे धन पदार्थ की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करें । पत्नी के कहने के अनुसार वह उसी दिन वरुण देवता की उपासना के बाद प्रार्थना करने लगा कि उसे धनधान्य से सम्पन्न करें । इस प्रकार प्रार्थना करते करते कई दिन व्यतीत हो गये किन्तु उसकी यह इच्छा पूरी नहीं हुई । एक दिन उसने आँसू बहाते हुए वही प्रार्थना दुहराई कि उसे धन आदि पदार्थों से सम्पन्न करें । अचानक एक लहर आई और उसमें एक सोने की ईंट किनारे पर उसके सामने आ पड़ी । उसे देख वह फूला नहीं समाया । तत्पश्चात् उसने उठकर उसको उठाने का प्रयास किया, किन्तु वह सोने की ईंट उठा नहीं सका । वह धीरे धीरे उस ईंट को नदी किनारे पानी के समीप ले आया और उसे जल से धोने लगा । जैसे ही वह ईंट को पानी से साफ कर रह था तो पानी में ऐसी लहर आई कि वह उस स्वर्ण

ईंट को ले गई। अपने हाथों से सोने की ईंट जाते देखकर वह व्यक्ति बहुत व्यथित हुआ और बार बार कहने लगा "धोते धोते गई।" घर जाना भी भूल गया। वह प्रेमी घर में नहीं लौटा तो घरवालों को भी चिन्ता हुई। उसकी पत्नी उसे ढूंढते ढूंढते वहां आ पहुँची तो उसने देखा कि उसका पतिदेव बार बार कह रहा था "धोते धोते गई।" पत्नी ने कहा क्यों आपने धोई? वह भी पागलों की तरह बार बार कहने लगी कि आपने क्यों धोई? माता पिता को घर में न देखकर बालक ने अपनी बहन से पूछा कि मां बाप कहां गये हैं? बहन ने कहा कि पिताजी प्रातः नदी किनारे गये थे, वे नहीं लौटे इसलिए माताजी उन्हें ढूंढने वहां गई हैं किन्तु वह भी अभी तक नहीं लौटी हैं। वहां पहुँचकर उसने देखा कि पिताजी किनारे पर बैठे बार बार कह रहे हैं 'धोते धोते गई' माताजी उसके उत्तर में बार बार कह रही थीं "क्यों धोया तूने क्यों धोया" ! बेटे ने कहा "घर क्यों नहीं धोया।" तीनों अपना अपना वाक्य वहां दुहराने लगे। उधर बिटिया को चिन्ता हुई। वह उन्हें ढूंढती हुई नदी किनारे आई। उसने देखा कि पिताजी बार बार कह रहे हैं 'धोते धोते गई' उसके उत्तर में माताजी कह रही थीं 'क्यों धोया'? और भाई कह रहा था "घर में क्यों नहीं धोया?" तब चतुर बेटी ने कहा "अब क्या होगा?" बेटी के वचन सुनकर आँखे खुल गयीं कि अब क्या होगा? जो होना था सो हो गया? फिर माता पिता, पुत्र-पुत्री चारों घर लौट आये। माया का ऐसा चक्र है कि घर परिवार को भी भूल जाते हैं। प्रेमियों! माया की प्राप्ति के लिए जीवन व्यर्थ नहीं गंवाएं। यदि भगवान ने आपको अधिक धन पदार्थ दिये हैं तो परोपकार के कार्यों में खर्च करें।

१५ मार्च रविवार सायं पहले श्यामलाल, डॉ. दयाल 'आशा', सन्त अनन्तप्रकाश ने भजन गाये। तत्पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने उपदेश करते हुए कहा कि परिवार सहित आप सब सन्त बन जायें। सन्तों के संग में आनन्द ही आनन्द है। परन्तु आपके ऊपर परिवार का उत्तरदायित्व है। अपना कर्तव्य पूरा करते हुए प्रभु को नही भुलायें। नाम के बिना जीवन व्यर्थ है। आप जैसे जैसे भगवद् भजन करेंगे, वैसे वैसे आप शान्ति का अनुभव करेंगे।

राम नाम के प्रेम की, पाती पढ़ो हमेश ।
कह टेऊं मन शान्त हो, छूटे पाप कलेश ।।

प्रेमियो ! राम नाम की साधना द्वारा आपके सभी पाप क्लेश नष्ट हो जायेंगे । अपनी सन्तान को प्रभु की संतान समझकर उन्हें प्यार दें, किन्तु आसक्ति नहीं रखें । घर परिवार की सेवा भी करें और प्रभु की भक्ति भी करें, दीन दुखियों की भी सेवा करें । एक राजा का मुख्यमन्त्री मर गया । उसने ढिंढोरा पिटवाया कि मुख्यमन्त्री बनने के इच्छुक व्यक्ति अपनी अर्जी प्रस्तुत करे । राजा के पास बहुत सी अर्जियाँ आ गई । उसने तीन व्यक्तियों को बुलाया । राजा ने उनकी मौखिक परीक्षा ली । राजा ने पहले व्यक्ति से पूछा कि यदि तुम्हारे बालों में आग लग जाय और उसी समय मेरे बालों में भी आग लग जाये तो तुम पहले किसकी आग बुझाओगे । उस व्यक्ति ने कहा कि आग एक साथ क्यों लगेगी? राजा ने कहा कि यदि आग लग जाये तो फिर तुम पहले अपनी आग बुझाओगे या मेरी? उस व्यक्ति ने कहा मुझे अपने प्राण प्यारे हैं, मैं पहले अपनी आग बुझाऊंगा, बाद में आपकी । राजा ने उस व्यक्ति को एक कमरे में बिठा दिया । फिर दूसरे को बुलाया कि यदि मेरी व तुम्हारी दाढ़ी में एक साथ आग लग जाये तो तुम पहले किसकी आग बुझाओगे? उस व्यक्ति ने कहा "राजन्, मैं आपका सेवक हूँ तो पहले आपकी आग बुझाऊंगा । राजा ने उसे दूसरे कमरे में बिठा दिया ।

राजा ने तीसरे व्यक्ति को बुलाया और पूछा "यदि मेरे वस्त्रों और तुम्हारे वस्त्रों में एक साथ आग लग जाये तो तुम पहले अपने वस्त्रों की आग बुझाओगे या मेरे वस्त्रों की आग बुझाओगे? तीसरे व्यक्ति ने कहा कि यह तो आसान काम है । भगवान ने दो हाथ दिये हैं, एक हाथ से आपके वस्त्रों की बुझाऊंगा और दूसरे हाथ से अपने वस्त्रों की आग बुझाऊंगा । राजा तीसरे व्यक्ति का उत्तर सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ, उसे तुरन्त मन्त्री नियुक्त कर दिया ।

प्रेमियो ! आप भी प्रभु को प्रसन्न करने का प्रयत्न करें और घर के सम्बन्धियों को भी खुश रखें । केवल स्वार्थी नहीं बनें । दीन दु:खियों की भी सेवा करें और बाल-बच्चों की भी देखरेख करें ।

१८ मार्च होली के दिन रात्रि को पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज भक्त प्रह्लाद की याद आ रही है। बालक प्रह्लाद का भगवान में कितना विश्वास था। उसके पिता ने उसे कितने कष्ट दिये। परन्तु प्रह्लाद बार-बार प्रभु को पुकार रहा था। पर्वत शिखर से उसे नीचे गिराया जिससे उसकी मृत्यु हो जाये। किंतु भगवान ने भक्त की रक्षा की। प्रह्लाद को आग में जलाकर मारने की योजना बनाई गई, परन्तु होलिका जल गई प्रह्लाद बच गया। जिस पर प्रभु की अनुकम्पा है उसका कोई भी बाल बांका नहीं कर सकता है। प्रेमियो ! आप भी भक्त प्रह्लाद की भांति प्रभु में पूर्ण विश्वास धारण कर उसे प्रेम से याद करें तो प्रभु आपकी रक्षा करेगा। जो परमात्मा को भूल जाता है वह मूर्ख है, अज्ञानी है। जीवन की सार्थकता ही नाम स्मरण और सेवा में है। सत्गुरु महाराजजी फरमाते हैं :-

जीवन में हरि न जपे, भोगे विषय विकार।
कह टेऊँ सो मूढ़ नर, है भूमि पर भार॥

प्रेमियो ! आप समझदार हैं, व्यर्थ में अपने श्वास नहीं गवाएं। नाम स्मरण में श्वास सफल करें।

१९ मार्च प्रात: प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी पर गुलाल की वर्खा की। सायं पूज्य स्वमाजी ने वडाला सिन्धी ब्रादर मण्डल की ओर से प्रवीण विद्यार्थियों को पुरस्कार दिये। उन्होंने श्री निहचलदास मंगतराम, जीअन्दराम हेमनदास एवं अन्य आयोजकों को धन्यवाद देते हुए कहा कि सन्तों ने दस दिन यहां जो आपको उपदेश, शिक्षाएं दी हैं उनके अनुसार चलने का प्रयास करेंगे तो आपका कल्याण होगा। डॉक्टर द्वारा दी गई दवा का जब आप सेवन करेंगे और साथ में परहेज करेंगे तो दवा का अवश्य ही प्रभाव होगा। सन्तों की दवाई है 'नाम'। नाम नहीं भूलें।

'सर्व रोग का औषधि नाम'

सभी सांसारिक एवं मानसिक बीमारियों का सरल सस्ता साधन है 'नाम'। एक सन्त के पास जो भी रोगी रोग दूर करने के लिये आकर प्रार्थना करता था, तो सन्त उसे कहते थे जाकर छोटी हरीड (हरड) का सेवन करो। बीमारी कोई सी भी हो उस सन्त का बस एक ही

इलाज छोटी हरड़। रोगियों का उस सन्त में पूर्ण विश्वास था इसलिये सभी ठीक हो जाते थे। प्रेमियो ! आप भी नाम रूपी दवा का प्रयोग करें तो आपके सभी दुःख-दर्द दूर हो जाएंगे।

आज श्री चैतन्य महाप्रभु का स्मृति दिवस भी है। वे भगवान श्रीकृष्ण की प्रेमा-भक्ति में मग्न होकर नाचते थे। वे विस्मृत होकर नाम कीर्तन करते थे। प्रेमियो ! आप भी श्री चैतन्य महाप्रभु की भांति भगवान श्यामसुन्दर की प्रेमा-भक्ति की रसधार में डूब जाएं। 'हरि बोल'! 'हरि बोल' ! की धूम मचाएं।

२२ मार्च को सौराष्ट्र के प्रभास पाटण नगर में श्री सोमनाथ मन्दिर के निकट जनता जनार्दन परिषद् सिन्धुनगर एवं स्वराष्ट्र सिन्धी पंचायत के सहयोग से सामूहिक विवाहों का आयोजन किया गया। इस उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी २१ मार्च वीरावल पधारे। सायं ६ बजे पूज्य स्वामीजी के नाम निर्मित 'स्वामी शान्तिप्रकाश हाई स्कूल' का उद्घाटन समारोह हुआ। उसी उत्सव में बम्बई से श्री विक्योमल श्राफ, आर. जे. आडवाणी, सावित्री गोपाल गुरुबख्शाणी, बहिन सुरी लखमीचन्द लुल्ला, कान हासानन्द लखाणी, चतुरी मंघाराम पंजाबी आदि महानुभाव सम्मिलित हुए। श्री नेवन्दराम लोकवानी ने पूज्य स्वामीजी एवं अन्य अतिथियों का स्वागत किया और डॉ. दयाल 'आशा' ने पूज्य स्वामीजी के सेवा कार्यों का वर्णन किया।

पूज्य स्वामीजी ने स्कूल के लिए नवनिर्मित भवन का उद्घाटन करते हुये कहा कि इस विद्या मन्दिर में वर्षों तक विद्यार्थी विद्या ग्रहण करेंगे। विद्या दान उत्तम दान है। प्यारे विक्योमल श्राफ एवं अन्य दानदाताओं को सहयोग के लिए धन्यवाद हैं।

२२ मार्च प्रातः पूज्य स्वामीजी श्री सोमनाथ मन्दिर गए, वहां उन्होंने भगवान शंकर की पूजा-उपासना की। पूज्य स्वामीजी के साथ सन्त देवप्रकाश, सन्त अनन्तप्रकाश एवं ज्ञानलाल भी थे। प्रातः ९ बजे मण्डप में सामूहिक यज्ञोपवीत कार्यक्रम रखा गया। पूज्य स्वामीजी ने बालकों को आज्ञा करते हुए कहा कि माँ-बाप व गुरु की आज्ञा का पालन करें।

दोपहर को सामूहिक विवाहों का आयोजन हुआ। डॉ. दयाल 'आशा'

ने नवविवाहित वर-वधुओं से अनुरोध किया कि आज से आप नया जीवन आरम्भ कर रहे हैं, जीवन में भी प्रेम व दया की ज्योति जगाएं, मांस भक्षण का परित्याग करें।

पूज्य स्वामीजी ने वर-वधुओं को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आज मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है कि आप ने आज से जीवन भर मांस भक्षण का परित्याग करने का संकल्प किया है। आप दूसरों को सुखी करेंगे तो प्रभु आपको सुखी करेगा। यह प्रकृति का नियम है। गृहस्थ जीवन में आप एक दूसरे को प्यार दें, बड़ों को सम्मान दें, सहनशील व विनम्र बनें तो भगवान आपका भला करेगा। सन्त अनन्तप्रकाश और श्री आसनदास भेरवाणी ने भी आशीर्वाद वचन कहे और नेवन्दराम लोकवाणी ने आभार प्रदर्शन किया।

रात्रि ९ बजे स्वामी लीलाशाह सोसायटी, वीरावल में सन्त घनश्यामदास के सुपुत्रों खुशालदास, अर्जनदास नन्दलाल ने सत्संग का कार्यक्रम रखा। पहले श्री गोप रूपचन्दाणी, डॉ. दयाल 'आशा' एवं सन्त अनन्त प्रकाश ने भजन गाये। तत्पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने उपदेश करते हुए कहा कि जीव रात-दिन आशा तृष्णा चिन्ता व ईर्ष्या की आग में जल रहा है। सांसारिक वैभव होते हुए भी वह अशान्त रहता है। जिसको आत्मज्ञान है वह आनन्दावस्था में रहता है। ज्ञान व भक्ति द्वारा आध्यात्मिक आनन्द की प्राप्ति होती है। प्रेमियो ! आप ऐसे गुरु की शरण लें जो आपको ज्ञान व भक्ति का मार्ग दिखाए। सत्गुरु महाराजजी फरमाते है:-

आशा तृष्णा ईर्ष्या, चौथी चिन्ता आग।
टेऊं इसमें जलत सब, बाचे को बड़ भाग॥

वीरावल नगर के बाहर कुछ प्रेमियों ने स्वामी लीलाशाह हाल बनवाया गया। २३ मार्च प्रातः पूज्य स्वामीजी वहां पधारे। उन्होंने स्वामी लीलाशाहजी के प्रेमियों को इस सेवा कार्य के लिये धन्यवाद देते हुए अमृत वचनों की वर्खा की।

पूज्य स्वामीजी की आज्ञा से डॉ. दयाल 'आशा', मंघाराम पंजाबी, चतुरी मंघाराम, कान लखाणी, रीटा लखाणी दीन दुःखियों की सेवा करने के लिए वंथली बांटवा और कुतियाना में गए। २३ मार्च पूज्य

स्वामीजी राजकोट पधारे । रात्रि को उन्होंने वहां सत्संग प्रवचन किये। २५ मार्च वे सिन्धुनगर आश्रम लौट आये ।

२५ मार्च रात्रि को ही पूज्य स्वामीजी ने गांधीनगर कोल्हापुर के लिए प्रस्थान किया । २६ मार्च प्रातः वे गांधीनगर में पधारे । कई प्रेमियों ने उनका स्वागत किया । प्रात ९ बजे उन्होंने धर्म ध्वजा फहराकर वार्षिक उत्सव आरम्भ किया । दोपहर को पूज्य स्वामीजी के स्वागत में शोभायात्रा निकाली । उन्होंने तीन दिन वहां अमृत वचनों की वर्खा की । २७ मार्च सायं उन्होंने माता राणी के मन्दिर में उपदेश दिया। २७ मार्च प्रातः ९ बजे पूज्य स्वामीजी स्वामी सर्वानन्द हाईस्कूल में पधारे । रमेश तनवाणी ने उनका स्वागत किया । उन्होंने विद्यार्थियों, अध्यापकों और विद्यालय के आयोजकों को आशीर्वाद दिया ।

२८ मार्च रात्रि पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि जो व्यक्ति गुरु की शिक्षाओं के अनुरूप चलता है उस पर गुरु की विशेष कृपा होती है । गुरु की सेवा भी समर्पित भाव से करनी चाहिए ।

'जिन सेविया तिन पाया मान,
नानक गावत गुणी निधान'

श्री गुरु नानकदेव महाराजजी की आज्ञा अनुसार भाई लहणा रात-दिन स्मरण करता था और हर प्रकार की सेवा करने के लिए तत्पर रहता था । एक बार श्री गुरुनानकदेवजी महाराज खेत में खड़े थे । वहां उन्होंने गायों के लिए घास की गठरियां बंधवाई । गुरु नानकदेवजी ने बेटे श्रीचन्द्र को घास की गठरियां उठाने के लिए कहा । इस पर उनके पुत्र श्रीचन्द्रजी ने कहा कि मेरे वस्त्र नये हैं । यदि मैं घास की गठरियां उठाऊंगा तो वस्त्र (कपड़े) खराब हो जायेंगे । तब श्री गुरु नानकदेवजी ने दूसरे बेटे श्री लक्ष्मीचन्द को घास की गठरियां उठाने के लिए कहा किन्तु उसने भी कहा कि कोई मजदूर आ जाये तो उससे यह गठरियां उठवा लाता हूं । इतने में वहां भाई लहणो आ गया और उसने श्री गुरुनानकदेवजी को नतमस्तक प्रणाम किया। वह बिना कहे ही घास की गठरियां उठाकर डेरे पर ले आया। श्री गुरुनानकदेवजी उस पर बहुत प्रसन्न हुए । संतान वह प्रिय लगती हैं जो बिना कहे

ही काम काज करे। पत्नि यदि पति के कहे बिना ही उसकी इच्छा के अनुकूल सेवा करेगी तो पति उसे बहुत प्यार करेगा। भाई लहणे ने बिना कहे ही सेवा का काम किया। इसलिए ही वह श्री गुरुनानकदेवजी की कृपा का विशेष पात्र बना। वह श्री गुरु अगन्ददेवजी के नाम से प्रसिद्ध हुआ और श्री गुरुनानकदेवजी महाराज के धर्मपीठ का अधिकारी बना।

प्रेमियों ! आप भी प्रभु व सत्गुरु के निष्काम सेवक बनें तो आप भी कृपा के पात्र बनेंगे। २६ मार्च प्रात: पूज्य स्वामीजी ने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि यह अमृत वेला है। आप अब भगवान व गुरु महाराज से प्रार्थना करेंगे, वे आपकी मनोकामना पूरी करेंगे। प्रभु से सांसारिक पदार्थ नहीं मांगें। धन धान्य व संतान से संपन्न लोग भी बहुत दुखी हैं। वे ही सुखी हैं जो प्रभु की शरण लेते हैं। प्रभु से नाम पदार्थ मांगे ! परमात्मा से यह प्रार्थना करें।

हे समर्थ सर्वज्ञ हरि, दीन बंधु दातार।
कह टेऊँ कृपा करे, दे शुभ गुणन भंडार ॥

प्रेमियो ! आपको धन्यवाद है कि आप यहां गांधीनगर में सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज की ज्योति जगा रहें है। आप गुरु को याद करेंगे तो गुरु महाराज फिर आपको हर तरह से संपन्न बना देंगे। सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज के प्रेम प्रकाश ग्रंथ का अभ्यास करें तो आपके मन का तनाव दूर हो जायेगा। गुरु की वाणी को गुरु रूप समझकर उसके चलने का प्रयत्न करें। सत्गुरु महाराजजी फरमाते हैं :

गुरु की वाणी जान तुम, सत्गुरु की ही रूप।
कह टेऊं पढ़ प्रेम से, पाओ सुख स्वरूप ॥

सत्गुरु की वाणी का अभ्यास करते करते आपको आध्यात्मिक आनन्द की प्राप्ति होगी। प्यारे ब्रजलाल हीराणी, मुखी राधोमल, हरि-बलि रमेशलाल, तनवाणी, पेसूमल तनवाणी, प्यारे हरिबख्श पंजाबी सभी सेवकों को इस आयोजन के लिए धन्यवाद है।

३ अप्रैल पूज्य स्वामीजी रायगढ़ पधारे। वहां उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि प्रेमियों ! आपने सांसारिक सम्बन्धियों का

बहुत संग किया है, अब संतों महात्माओं का संग करें । सांसारिक लोगों का संग दुखदाई होता है और संतों का संग सुखदाई है । आप किसी व्यक्ति के दस काम करें यदि किसी कारण उसका एक काम नहीं करेंगे तो वह अप्रसन्न हो जायेगा । सांसारिक लोग अधिकांशत: स्वार्थी होते हैं । उनका सम्बन्ध थोड़े समय के लिए होता है, किन्तु परमात्मा का सम्बन्ध सदैव के लिए होता है इस लिए सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं कि यदि आप संसार रूपी सागर से पार होना चाहते हैं तो संतों का संग करें ।

साध संगति से तरत है, कलियुग में नरनार ।
कह टेऊँ सत्संग कर, मन में श्रद्धा धार ।।

४ अप्रैल पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि नाम स्मरण के लिए कोई भी बहाना न बनायें कि आज आप व्यस्त हैं, कल अतिथि आने वाले हैं, ऐसे तो सांसारिक कामों से आपको कभी फुर्सत नहीं मिलेगी । नाम तो दिल में याद किया जाता है । नाम रसना से जपना भी अच्छा है किन्तु श्वासों से नाम स्मरण करने का बड़ा महत्व हैं । साधक के मन की तार प्रभु से जुड़ी रहती है । वह सांसारिक काम करते भी प्रभु को नहीं भुलाता । हर समय प्रभु को याद करता है, जो मनुष्य सांसारिक पदार्थों का त्याग कर नाम स्मरण करता है, उसे मालिक भी मिलता है तो धन पदार्थ भी । परन्तु वह धन पदार्थों में आसक्ति नहीं रखता । सत्गुरु महाराज भी फरमाते है :

जो जन माया को तजे, सुमरे हरि का नाम ।
कह टेऊं तां पुरुष को, मिले दाम पुन राम ।।

५ अप्रैल पूज्य स्वमाजी दुर्ग पधारे । वहां उन्होंने दो दिन सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि गुरु महाराजजी फरमाते हैं :

जे रत लगे कपड़े, जामा होई पलीत ।
सो रत पीवे माणसा, तनि किअं निर्मल चीत ।।

प्रेमियों ! जब रक्त लगने से मनुष्य के वस्त्र गंदे (अपवित्र) हो जाते हैं, तो यदि वह रक्त पीयेगा तो उसका चित निर्मल व शुद्ध कैसे होगा । आप में से कई लोग मांस भक्षण करते हैं । आप विचार

करें कि किस प्रकार इन पशु पक्षियों को मौत के घाट उतारा जाता है ! मेरी आपसे हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि कृपया मांसाहार का परित्याग करें । आप मनुष्य है, मनुष्य में तो प्रेम व सहानुभूति होनी चाहिए। न केवल मानव मात्र के लिये किन्तु सभी प्राणियों के लिए । जब तक आप शुद्ध आहार नहीं करेंगे तब तक आपका मन शुद्ध नहीं होगा। यदि आपका मन शुद्ध नहीं है तो भगवद् भजन में आपका मन नहीं लगेगा । आप यदि प्रभु को प्राप्त करना चाहते हैं, मानव जीवन सफल करना चाहते हैं तो सभी प्राणियों को प्यार करें । आहार शुद्ध विचार शुद्ध, व्यवहार शुद्ध तो आप अवश्य ही प्रभु का दर्शन कर सकेगे।

७ अप्रैल पूज्य स्वामीजी नागपुर पधारे । वहां उन्होंने उपदेश देते हुए कहा कि आप यदि प्रभु के निकट होना चाहते हैं तो मधुरभाषी बनें । मधुर मनुष्य किसी को पीड़ा नहीं देता । सत्गुरु महाराज जी भी आदेश देते हैं :

कह टेऊँ किस मनुष्य की दिल को दुख दे नांहिं ।
दुखी जीव के आह से, नाश होत क्षण मांहि ।।

मिश्री कितनी न मीठी होती, आप उससे भी अधिक मीठे बनें, कड़वा न बोलें । आपको बहुत ही प्यास लगी हो, उस समय आपको समुद्र का पानी दिया जाये तो क्या आप समुद्र के पानी से अपनी प्यास बुझा सकेंगे? कदापि नहीं : परन्तु आपको यदि मीठे पानी का आधा ग्लास भी दिया जाये तो वह प्रेम से पी लेंगे । खारा पानी आपको अच्छा नहीं लगेगा तो खारा अर्थात् कड़वा बोलने वाला मनुष्य आपको पसंद नहीं अयेगा । संत महात्मा स्वभाव से कितने न मधुर होते हैं । इसलिए उनके सान्निध्य में बैठने के लिए मन तड़पता हैं। मन चाहता है, कि ऐसे महानुभावों के निकट सदैव बैठे रहें । आप कितने भी संतों महात्माओं के उपदेश श्रवण करें, उपासना करें, पाठ पूजा करें, परंतु जब तक आपका व्यवहार व विचार शुद्ध नहीं, तब तक आप प्रभु की राह में आगे उन्नति नहीं कर सकेंगे । किसी को भी अपने मन, वचन व कर्म से दुखी नहीं करें । सभी को सुखी करने का प्रयत्न करें तो प्रभु परमात्मा आपको सुखी रखेगा ।

१० अप्रैल से १२ अप्रैल तक साधु वासवाणी नगर, थाणा में बेकरी पंचायत की ओर से सत्संग का आयोजन किया गया । इसी उत्सव के संबन्ध में पूज्य स्वामीजी १० अप्रैल को थाणा पधारे । श्री लक्ष्मणदास पंजवाणी एवं अन्य प्रेमियो ने उनका स्वागत किया । पूज्य स्वामीजी ने उपदेश करते हुए कहा कि संत प्रभु के नित अवतार हैं । आप यदि उन में पूरा- पूरा विश्वास रखकर बिनती करेंगे तो आपकी कामना पूर्ण होगी सत्गरु महाराज जी फरमाते है ।

जो संतन को सेवता, सो भगवत मन भाय ।

कह टेऊँ हरि सँत इक, वेद ग्रन्थ यूं गाय ॥

एक बार संत नामदेव रास्ते से गुजर रहे थे तो एक बैलगाड़ी वाले ने उन्हें नमस्कार कर कहा कि भक्त जी, गाड़ी खींचते समय मेरा बैल गिर पड़ा है और वह मर गया । वह बैल मेरा सहायक था । उसके बिना मैं कैसे गाड़ी चला सकूंगा ! कृपया आप मेरे मृतक बैल को जिन्दा कर दें । संत नामदेव मुस्कराते हुए कहा "प्यारे ! जीवन और मृत्यु की डोरी तो परमात्मा के हाथ में है मेरे हाथ में नहीं । तुम जाकर प्रभु से प्रार्थना करो तो सब अच्छा हो जायेगा । गाड़ीवान ने कहा मुझे तो प्रार्थना करनी भी नहीं आती । आप कृपया मेरे साथ चलकर प्रार्थना करें । संत नामदेव उसके साथ वहां आए और इसे कहा कि जैसे मैं भजन गाऊँ तुम भी वैसे भजन गाना, श्रद्धा से प्रार्थना करो । संत नामदेव प्रेम से प्रभु प्रार्थना का भजन गाने लगे साथ में वह गाड़ीवान भजन गाने लगा । प्रार्थना के पश्चात संत नामदेव ने गाड़ीवान से कहा कि भगवान का नाम लेकर नदी से जल लेकर आओ ! 'जय पांडुरंगा' पुकारते वह जल मृत बैल पर छिड़काओ और उसके मुंह में भी डालो । गाड़ीवान ने नदी से जल लाकर भगवान का नाम लेकर वह जल बैल पर डाला और जैसे ही उसके मुंह में जल डाला तो वह बैल उठ खड़ा हुआ । गाड़ीवान भगवान के नाम में इतनी शक्ति देखकर आश्चर्य में पड़ गया । सन्त स्वयं को छिपाकर भगवान के द्वारा ही काम करवाते हैं । प्रेमियो ! आप भी सच्ची भावना से प्रभु को, सन्तों को विनय करेंगे तो वे अवश्य आपकी प्रार्थना सुनेंगे।

११ अप्रैल रामनवमी के पावन दिन प्रेम प्रकाश मन्दिर पिम्परी कालोनी

में भगवान श्रीकृष्ण, भगवान श्रीराम, भगवान श्री शंकर महादेव, सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा की गई । इस उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी १२ अप्रैल सायं पिम्परी पहुँचे । रात्रि को उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि आज यहाँ भगवान एवं गुरु महाराज के मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई । आज से इन मूर्तियों को मूर्तियां नहीं, परन्तु साक्षात् भगवद् रूप समझें । इनकी श्रद्धा से पूजा उपासना करें । माता सती एवं अन्य प्रेमियों को साधुवाद है जिन्होंने यह सुन्दर मन्दिर बनवाया है । इस स्थान पर सत्संग के साथ-साथ दीन दुखियों व पशु पक्षियों की सेवा भी करें । प्रेमियो ! धन्धे व्यवहार और परिवार में गम खाकर चलें तो सुखी होंगे । आजकल कई परिवारों में अशान्ति है, जहां अशान्ति है वहां देवताओं का वास नहीं होगा । इसलिए एक दूसरे से प्रेम के साथ चलें, गुरु मन्त्र की साधना करें । सत्गुरु की शरण लें तो आपका कल्याण होगा ।

गुर बिन प्रेम न उपजे, गुर बिन जगे न भाग ।
कह टेऊँ तांते सदा, गुर चरणों में लाग ॥

१२ अप्रैल प्रात: सत्संग प्रवचन करते हुए पूज्य स्वामीजी ने आयोजकों को धन्यवाद दिया । उन्होंने उपदेश देते हुए कहा कि सन्तों के पास आयें तो उनसे ज्ञान की दीक्षा माँगे । आत्मज्ञान की प्राप्ति के बाद आपको सर्वत्र भगवान का दर्शन होगा । गुरु महाराज से सदैव यही प्रार्थना करें-

सत्गुरु आत्म ज्ञान दे, हरो देह अभिमान ।
कह टेऊँ सब घट दिखे, दिखलाओ भगवान ॥

भगवान की प्राप्ति हुई तो मानो सब कुछ मिल गया । प्रेमियो ! आपस में एकता के साथ रहें, एक दूसरे के लिए सहानुभूति रखें । दुख सुख में एक दूसरे के सहायक बनें । सांसारिक काम काज करते प्रभु को याद करें ।

इस शताब्दी का अन्तिम सिंहस्थ महापर्व (कुम्भ मेला) पौराणिक नगरी उज्जैन में १६ अप्रैल से १७ मई तक आयोजित किया गया।

इस पावन अवसर के उपलक्ष्य में पूज्य स्वामीजी १५ अप्रैल को उज्जैन पधारे । १६ अप्रैल को प्रातः उन्होंने उज्जैन स्थित नरसिंह घाट पर ''स्वामी टेऊंराम अन्न क्षेत्र'' आरम्भ किया ।

२० अप्रैल को प्रातः पूज्य स्वामीजी ने वहां सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि हम कोई उत्सव मनाते हैं तो उसके लिए निमन्त्रण पत्र छपवाकर प्रेमियों को भेजते हैं किन्तु यह कुम्भ का मेला एक ऐसा उत्सव है जिसमें बिना किसी औपचारिक निमन्त्रण के लाखों लोग सम्मिलित होते हैं, पवित्र क्षिप्रा नदी में स्नान करते हैं सन्तों का दर्शन करते हैं । इस मेले में आपको ऐसे सन्तों महात्माओं के दर्शन होंगे जिनका दर्शन पाना असम्भव है । प्रेमियो ! आप सौभाग्यशाली हैं जो इस पवित्र तीर्थ स्थल पर आये हैं । ऐसे स्थानों पर आप खूब नाम स्मरण करें व दान करें । यहां आकर भी आप नाम स्मरण नहीं करेंगे तो यहां आने से क्या लाभ?

२६ अप्रैल से ३० अप्रैल तक प्रेम प्रकाश मन्दिर इन्दौर में स्वामी मुरलीधरजी महाराज की पुण्यतिथि मनाई गई । इस उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी २६ अप्रैल को इन्दौर पधारे । वहां उन्होंने पांच दिन सत्संग प्रवचन किये । उन्होंने उपदेश करते हुए कहा कि यहां स्वामी मुरलीधरजी ने सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज की ज्योति जगाकर कई प्रेमियों को नाम का सन्देश दिया । सन्त आत्मज्ञान का उपदेश देकर हमें साक्षी चेतन का साक्षात्कार करवाते है, मोह के बन्धनों से मुक्त कर मुक्ति मार्ग बताते हैं :-

दुनिया में महापुरुष, बड़े काम को आते है ।
मिटाके खौफ मरने का, अमर बनाना सिखाते हैं ।।

प्रेमियो ! गुरुमन्त्र की साधना करते आत्मिक आनन्द में स्थित रहें। जगत् एवं जगत् के पदार्थ दृश्य मात्र हैं, उनका कोई अस्तित्व नहीं है, वे स्वप्न तुल्य हैं । जैसे स्वप्न के पदार्थ मिथ्या हैं, वैसे जगत् के पदार्थ भी मिथ्या हैं, इसलिए आप जगत् में अनासक्त भाव से रह कर नाम चिंतन करें । जैसे जैसे आप नाम का अभ्यास करते जायेंगे तो आपको दिव्य ज्योति का दर्शन होगा । स्वामी मुरलीधरजी ने सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के साथ यात्रा कर सोये हुए लोगों

को जगाया । सन्त हमें मोह व अज्ञान की नींद से जागृत करने आते हैं। आप सजग होकर नाम स्मरण करें, अपने साक्षी रूप को पहचाने।

२ मई को अमावस्या के दिन कुम्भ मेले में लाखों प्रेमियों ने क्षिप्रा नदी में स्नान किया । उसी दिन सायं पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि प्रेमियो ! आप सौभाग्यशाली हैं कि आपको आज पवित्र क्षिप्रा में स्नान करने का सुअवसर मिला । आज बड़ा महत्व का दिन है । आज खूब दान पुण्य करें । दान करने, से धन बढ़ता है । सन्त कबीरदासजी कहते हैं :-

पानी बाढ़े नाव में, घर में बाढ़े दाम ।
दोनों हाथ उलीचिये, यही सज्जन का काम ।।

प्रेमियो ! दान करने व नाम स्मरण करने में विलम्ब नहीं करें । मन पर, शरीर पर कोई भरोसा नहीं । आलस्य का त्याग कर श्वास स्मरण में और माया परोपकार के कार्यों में सफल करें । श्री गुरुनानकदेवजी महाराज के सत्संग में एक छोटा बालक नियमित रूप से आगे आकर बैठता था । एक दिन उन्होंने बालक से पूछा "बेटा ! तुम प्रतिदिन यहां सत्संग में आकर बैठते हो, यह शिक्षा तुम्हें किसने दी है?" बालक बोला "महाराज ! मेरी माँ ने घर में आग जलाई, मैंने देखा कि छोटी छोटी लकड़ियां पहले जल जाती थीं और बड़ी व मोटी लकड़ियां देर से जलती थीं । यह देखकर मेरे मन में विचार आया कि काल रूपी आग में भी छोटे छोटे पहले भस्म हो जाते हैं, फिर मैं क्यों न सत्संग में आकर लाभ प्राप्त करूं । जीवन पर कोई भरोसा नहीं । मुझे भी किसी भी समय काल रूपी आग भस्म कर सकती है, इसलिये उसके पूर्व सत्संग में आकर नाम स्मरण करूं ।" बालक का उत्तर सुनकर श्री गुरुनानकदेवजी महाराज अत्यन्त प्रभावित हुए और उन्होंने बालक को गले लगाते हुए कहा "तू बालक नहीं, तुमने तो वृद्धों जैसा उत्तर दिया है, तू बूढ़ा होगा ।" वह बालक आगे चलकर 'बाबा बूढ़ा' नाम से प्रसिद्ध हुआ । प्रेमियों ! आप यहां तीर्थ स्थान पर आये हैं, भोजन तो आपको तैयार मिलता ही है, इसलिये आप निश्चिंत होकर नाम स्मरण करें ।

४ मई सोमवार चन्द्र दर्शन के दिन सायं पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि कल अक्षय तीज है, प्रातः उठकर क्षिप्रा नदी में स्नान कर सन्तों महात्माओं के दर्शन करें। यह दिन दान करने के लिए भी विशेष महत्व रखता है। कल कोई न कोई शुभ कार्य अवश्य करें। शुभ कर्म करने में आलस्य नहीं करें।

५ मई अक्षय तीज के पावन दिन लाखों प्रेमियों ने क्षिप्रा नदी में पवित्र स्नान किया। सायं को पूज्य स्वामीजी ने अक्षय तीज के महत्व पर प्रकाश डाला। कुम्भ पर्व पर पूज्य स्वामीजी कई सन्तों महात्माओं से मिले और ज्ञान गोष्ठी की।

नरसिंह घाट स्थित प्रेम प्रकाश मण्डप में अचानक बिजली के तारों में खराबी आ जाने के कारण लगी आग में ७ लोगों की मृत्यु हो गई।

प्रेम प्रकाश मण्डल का वार्षिक उत्सव भी उज्जैन में ११ मई से १५ मई तक आयोजित किया गया। पूज्य स्वामीजी ने ११ मई प्रातः एवं सायंकाल पूज्य स्वामीजी, स्वामी स्वयंप्रकाश, सन्त हरिदासराम, सन्त ब्रह्मानन्द, सन्त वेदप्रकाश, सन्त अशोकलाल, जयदेव और अन्य सन्त महात्माओं ने सत्संग प्रवचन करते हुए सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के जीवन-कार्यों पर प्रकाश डाला।

पवित्र उज्जैन नगरी में आयोजित इस महाकुम्भ पर्व के सुअवसर पर मासिक प्रेम प्रकाश सन्देश द्वारा 'भारतीय संस्कृति' विशेषांक प्रकाशित किया गया। इस विशेषांक हेतु भेजे गए अपने आशीर्वचन में पूज्य स्वामीजी ने कहा था कि भारतीय संस्कृति अनेक गुणों की खान है। कृतज्ञता हमारी संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। जो कुछ इस जीवन से प्राप्त हुआ है एवं जिसके माध्यम से प्राप्त हुआ है, उसके प्रति मन में 'कृतज्ञता' का भाव होना चाहिये। व्यवहार में जब कोई व्यक्ति हमारा थोड़ा सा भी काम कर देता है तो हम उसे धन्यवाद देते हैं। जीवन में कई बार स्मरण करते हैं। इसी प्रकार वह परम पिता परमात्मा जिसने हमें यह अमूल्य शरीर दिया है उसके प्रति भी कृतज्ञता का भाव रखना चाहिये एवं उसे सदैव स्मरण करते रहना चाहिये। जो मनुष्य ऐसा नहीं करता वह कृतघ्न है। कृतघ्न के लिये शास्त्रों में

प्रायश्चित का भी विधान नहीं है।

'कृतज्ञता' ऐसा गुण है जिसके रहने पर नम्रता इत्यादि अनके प्रकार के गुण मनुष्य में स्वतः आ जाते हैं जबकि कृतघ्नता से अहंकार इत्यादि दुर्गुण उत्पन्न होते हैं जो कि अन्त में मनुष्य के विनाश एवं पतन का कारण बनते हैं। जीवन में जो कुछ भी हमें अच्छा प्राप्त होता है उसके लिये हम परमात्मा का उपकार मानते रहें एवं जो कुछ भी अशुभ प्राप्त होता हो हम अपने कर्मों का फल मानकर धैर्य धारण करें तो बहुत शीघ्र ही मनुष्य का मन निर्मल हो सकता है। अशुभ प्राप्ति के समय इसके लिये दूसरों को दोष देना पतन का कारण है इससे हमें बचना चाहिये।

इस शताब्दी के अन्तिम सिंहस्थ पर्व पर 'प्रेम प्रकाश सन्देश' भारतीय संस्कृति पर विशेषांक प्रकाशित कर रहा है, यह प्रसन्नता का विषय है।

यह विशेषांक भगवान महाकालेश्वर एवं पूज्यपाद सत्गुरु भगवान की अनुकम्पा से सफल, यशस्वी बने साथ ही साथ पूज्य सत्गुरु भगवान की महती कृपा व आशीर्वाद हम सभी पर बना रहे।

१५ मई सायं उत्सव का समापन करते हुये पूज्य स्वामीजी ने कहा कि प्रेमियो ! इस उत्सव में आपको कोई कष्ट या असुविधा हुई हो तो इसके लिये मैं क्षमा चाहता हूँ। आप गुरु महाराज के उत्सव में सम्मिलित हुये हैं तो सत्गुरु महाराज जी आपके उत्सवों में पधारेंगे। अपने हृदय में गुरु भक्ति की भावना को बढ़ाते रहें। तीर्थ पर आकर किसी न किसी वस्तु का त्याग करते हैं। आप प्रिय वस्तु नहीं, कम से कम अप्रिय वस्तु अर्थात् अपना कोई न कोई अवगुण छोड़कर जाएं। यदि कोई मांसभक्षण करता है तो आज से उसका परित्याग करें। यदि कोई शराब पीता है तो आज से शराब न पीने का संकल्प करें। यदि कोई असत्य बोलता है तो आज से सत्य बोलने का संकल्प करें। जीवन में प्रेम व दया की ज्योति जगायें।

१६ मई पूर्णिमा के पावन दिन कुंभ पर्व का विशेष शाही स्नान था। इस अवसर पर लाखों प्रेमियों ने क्षिप्रा नदी में डुबकियां लगाईं। सत्गुरु महाराज के पास कई प्रेमी आशीर्वाद लेने आये। १७ मई पूज्य

स्वामीजी इन्दौर आये। १९ मई वे सिन्धुनगर प्रेम प्रकाश आश्रम लौट आये। वहां उन्होंने २४ मई तक प्रातः एवं सायं सत्संग प्रवचन किए। २५ मई वे प्रेम प्रकाश मन्दिर धुलिया पधारे। कई प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। सायं को पूज्य स्वामीजी के आगमन के उपलक्ष्य में शोभा यात्रा निकाली गई। उन्होंने वहां तीन दिन अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। २७ मई रात्रि को उन्होंने उत्सव का समापन करते हुए कहा कि आप लोगों को धन्यवाद है कि आप यहां सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज की ज्योति जगा रहे है। आप यदि सत्गुरु महाराज की ज्योति जगाते रहेगें तो गुरु महाराज आपकी ज्योति जगाएंगे। इन उत्सवों का एक ही उद्देश्य है कि आपको प्रभु का स्मरण करायें जिससे आप नाम स्मरण करें। मनुष्य जीवन में भी यदि आप नाम स्मरण नहीं करेंगे तो और किस योनि में स्मरण करेंगे। सत्गुरु महाराजजी फरमाते हैं :

चौरासी लाख योनि, फिर पाई दुलर्भ देह।
कह टेऊँ हरि भजन से, सफली कर ले एह॥

२८ मई पूज्य स्वामीजी मालेगांव पधारे, वहां उन्होंने सायं व रात्रि सत्संग प्रवचन किए। कवि पहिलाजराम के पुण्यतिथि उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी २८ मई को बाबाजी का बाग देवलाली पधारे। संत नारायणप्रकाश ने उनका स्वागत किया। सायं उन्होंने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि कवि पहिलाजराम सिन्ध के कवि रत्न थे। उनकी वाणी सिन्ध में घर घर में गाई जाती थी। वे यदि किसी में भी कोई गलती देखते थे तो सत्य कहने में हिचकते नहीं थे। आप उनकी वाणी का अभ्यास करें तो आपको भक्ति रस की प्राप्ति होगी।

३१ मई पूज्य स्वामीजी ने दिल्ली के लिए प्रस्थान किया। वहां प्रेम प्रकाश मन्दिर मलिकागंज में संत जयदेव ने सत्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज का पुण्यतिथि उत्सव मनाया। उसके उपलक्ष्य में पूज्य स्वामीजी ने वहां १-२ जून सायं सत्संग प्रवचन करते हुए सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज की महिमा बताई। उन्होंने उपदेश देते हुए कहा कि मनुष्य इतने सुखों के पश्चात् भी चिन्ताओं के चक्र में व्यथित हो रहा है। प्रेमियों आप दुख सुख प्रभु को अर्पण करें। आप यदि

दृष्टा होकर रहेंगे ते दुखी नहीं होंगे। जिसने दुख दर्द दिया है, वह दूर भी करेगा। एक दरवेश ने कहा है :

दिल तू फिकर मत कर, तेरा खुदा भी है।
मुश्किल पड़ी तो क्या, मुश्किल कुशा भी है॥

अड़चनें, आपत्तियां हर क्षेत्र में हर मनुष्य के सामने आती हैं। सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने बालू के टीले पर संतों के लिए झोपड़ियाँ बनवाई, तब कुछ प्यारों से सत्गुरु महाराज का यश सहन नहीं हुआ। उन्होंने अंग्रेज़ अफसर के सत्गुरु महाराज के विरुद्ध कान भरे। इसलिए झोपड़ियों को आग लगा दी गई किन्तु सत्गुरु महाराज जी ने इसकी कोई चिन्ता नहीं की। मुस्कुराते रहे और कहने लगे कि हमारा तो कुछ है नहीं फिर हम क्यों चिन्ता करें! शायद भगवान की यही इच्छा है कि यहां इससे अच्छी व सुन्दर कुटियां बनें। प्रभु की लीला में कोई रहस्य अवश्य है। कुछ दिनों के पश्चात एक अंग्रेज अफसर वहां आया। उसने सारी जमीन सरकार की ओर से सत्गुरु महाराज को सौप दी और कहा कि आप यहां रमणीक स्थान बनायें। प्रभु किसी न किसी रूप में आकर अपने भक्तों की सहायता व रक्षा करता है। प्रेमियो ! आप प्रभु को नहीं बिसारें। वह सदैव आपकी रक्षा करता है। प्रभु से प्रार्थना करें :

भक्त वत्सल भय हरन हरि, करुणाशील निधान।
कह टेऊँ कलिकाल में, लाज राख भगवान॥

३ जून से ७ जून तक पूज्य स्वामी माधवदासजी के स्थान आदर्श नगर, अजमेर में सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का पुण्यतिथि उत्सव मनाया गया। इस उत्सव के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी ३ जून अजमेर पधारे। प्यारे मुरलीधर करनाणी एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया। पूज्य स्वामीजी ने पांच दिन वहां अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। उन्होने सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज एवं स्वामी माधवदास की महिमा गाते हुए कहा कि वे अधिक समय भगवद् भजन में लीन रहते थे। सत्गुरु महाराज ने विभिन्न नगरों व गांवों में यात्रा कर अज्ञान की नींद में सोए हुये लोगों को सजग कर नाम का संदेश दिया, प्रेम का पैगाम दिया। हम सांसारिक प्रपंच में

प्रभु को भुला बैठे है । श्री गुरु तेगबहादुरजी महाराज फरमाते हैं :

प्रानी नाम न चेतई, मद माया कै अंध ।
कह नानक हरि भजन बिन, परत ताह जम फंद ।।

प्रेमियो ! आप और सभी बातों को भूलें किन्तु नाम को नहीं भूलें। परमात्मा को हृदय से पुकारें, याद करें । आप यदि किसी को प्रेम से पुकारेंगे तो वह भी आपको प्रेम से उत्तर देगा । आप प्रभु को प्रेम व श्रद्दा से पुकारेंगे तो वह अवश्य आपकी प्रार्थना सुनेगा । एक महात्मा कहीं राम नाम की महिमा गा रहा था । एक नास्तिक व्यक्ति वहां बैठा था । सत्संग के पश्चात नास्तिक व्यक्ति ने शंका की कि आपने राम नाम की इतनी महिमा की है? मैं इसके सम्बन्ध में आपसे तर्क करना चाहता हूं । महात्मा को थोड़ी सी थकान थी । उसने उस व्यक्ति को कहा कि जहां मैं ठहरा हुआ हूं वहां तुम आ जाओ तो तुम्हारी शंका का समाधान करूंगा । उस व्यक्ति ने पूछा कि आप कहां ठहरे हुए हैं? संत ने कहा "सामने जो रास्ता है, उसके दाईं ओर जाकर फिर बाईं ओर आओ फिर वहां से दाईं ओर आओ मैं वहां ठहरा हुआ हूं । संत चले गये । कुछ समय पश्चात् वह व्यक्ति उस रास्ते पर चलता हुआ दाएं बाएं संत के निवास के लिए पूछता रहा किन्तु संत के निवास स्थान पर नहीं पहुंच सका क्योंकि उसके पास पूरा पता नहीं था । वह भटक भटक कर लौट आया । दूसरे दिन वह फिर संत के सत्संग में आया । उसने संत से कहा कि मैं आपके निवास स्थान को ढूढ़ते ढूढ़ते थक गया किन्तु पूरा पता न होने के कारण लौट आया । आप कृपया बताए कि आप किसके यहां ठहरे हैं तो फिर मैं वहां आ जाऊं । संत ने कहा कि वहां एक नया कमरा बना हुआ है मैं वहां ठहरा हुआ हूं । वह व्यक्ति फिर संत के निवास पर आने के लिये निकल पड़ा । वहां बहुत ही नये कमरे बने थे । उस व्यक्ति ने संत के बारे में पूछताछ की किन्तु वह संत के निवास स्थल पर पहुंच नहीं सका । वह निराश होकर तीसरे दिन फिर सत्संग में आया । उसने महात्मा से कहा कि कल और परसों मैंने आपके निवास स्थल का पता लगाने की कोशिश की किन्तु पूरा पता न होने के कारण लौट आया । कृपया आप मुझे अपना

पूरा पता दें ताकि आज आपके निवास स्थान पर पहुंच जाऊं। महात्मा ने कहा "बेटा ! मैं सीताराम वकील के घर में ठहरा हूं। महात्मा सत्संग के पश्चात् चला गया। कुछ समय पश्चात् वह व्यक्ति उसी रास्ते में सीताराम वकील के घर का पता पूछता पूछता वहां आ पहुचा। वहां संत का दर्शन कर वह प्रसन्न हुआ। और संत से कहा कि आज अपने मकान मालिक का नाम बताया तो मैं आसानी से यहां पहुंच गया। अब आप मेरी शंका का समाधान करें कि राम के नाम का उच्चारण करने से क्या लाभ है?

महात्मा ने कहा कि तुम अज्ञानी हो। अब तक तुम्हें राम नाम उच्चारण के लाभ की जानकारी नहीं हुई ! तुम दो दिन इस मकान की पूछताछ करते लौट गये। आज मैंने तुम्हें केवल मकान मालिक का नाम बताया तो तुम आसानी से मेरे पास पहुंच गये हो। यह है नाम की महिमा। यदि तुम प्रतिदिन प्रभु का नाम उच्चारण करोगे, उसका स्मरण करोगे तो किसी न किसी दिन तुम्हें भगवद् दर्शन होगा। वह व्यक्ति संत का यह उत्तर सुनकर संत के श्री चरणों में गिर पड़ा। उसके मन में परिवर्तन आ गया। वह श्रद्धा व प्रेम से राम नाम का स्मरण करने लगा।

प्रेमियों ! सत्गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज अधिकांश समय भगवद् भजन में लीन रहते थे। उन्होंने अपनी वाणी में भी राम नाम की महिमा गाई है। आप भी प्रतिदिन नाम स्मरण करें, दुखी लोगों की सेवा करें तो परमात्मा और गुरु महाराज की अवश्य अनुकम्पा होगी।

८ जून पूज्य स्वामीजी गोधरा पधारे। वहां उन्होंने तीन दिन सत्संग प्रवचन किये। उन्होंने उपदेश करते हुए कहा कि परमात्मा के किसी न किसी नाम का उच्चारण करें। सत्गुरु महाराजजी फरमाते हैं :-

हरि के मंत्र अनन्त हैं, जामे श्रद्धा होय।
कह टेऊं नित प्रेम से, जपले मन्त्र सोय ॥

प्रभु के अनन्त नाम हैं,उनके किसी भी नाम का श्रद्धा व प्रेम से उच्चारण करें तो प्रभु आपका काम अवश्य पूरा करेंगे। रत्नाकर डाकू जो बाद में आदि कवि ऋषि वाल्मीक के नाम से प्रसिद्ध हुआ वह राम राम जपते मरा मरा जपता रहा। उसका वह जाप भी परमात्मा

ने स्वीकार किया। परमात्मा मन की श्रद्धा व भावना से प्रसन्न होता है।

खार सिन्धी मण्डल ने लोकहित कुटीर खार, (बम्बई) में २१ जून से २८ जून तक पूज्य स्वामीजी के सत्संग प्रवचन का कार्यक्रम रखा। पूज्य स्वामीजी ने २१ जून को सत्संग यज्ञ का शुभारम्भ करते हुए कहा कि प्रेमियो ! आपको धन्यवाद है कि आप प्रतिवर्ष सत्संग यज्ञ का आयोजन करते हैं । आप यदि सच्चा आनन्द प्राप्त करना चाहते हैं तो सत्संग में आकर सन्तों महात्माओं के वचन श्रवण कर उनका मनन व निध्यासन करें । सत्गुरु महाराजजी भी फरमाते हैं :-

कह टेऊं इस जगत् में, जो चाहो आराम ।
साध संगति नित ही करो, सुमरो हरि का नाम ॥

सत्संग में आने से आप सत् विचार श्रवण करेंगे । सन्तों महात्माओं की वाणी श्रवण करने से आपके मन की अशान्ति व तनाव दूर हो जायेगा । आपकी समस्याओं का समाधान हो जायेगा । प्रतिवर्ष आप केवल एक गुण ग्रहण करें, तो भी आपका जीवन एक गुलदस्ता बन जायेगा ।

२२ जून पूज्य स्वामीजी ने उपदेश करते हुए कहा कि जिस घर में एकता है, वहां आनन्द है । आप धन्धे व्यवहार में कितना भी धन संग्रह करें । यदि परिवार में अशान्ति है, एकता नहीं है तो वह माया किसी काम की नहीं है । आप सुखी जीवन के लिये गम खायें और कम खायें । गम खाने से परिवार में एकता बनी रहेगी और कम खाने से स्वास्थ्य ठीक रहेगा । जिस घर में एकांत है, आनन्द है, वह घर स्वर्ग समान है। आप अपने घरों को नर्क नहीं बनाएं।

२८ जून स्वामीजी ने नाम की महिमा गाते हुए कहा कि नाम ही सभी दुखों की सरल व सस्ती औषधि है । नाम स्मरण द्वारा आपके शारीरिक, मानसिक आदि भौतिक दुख दर्द दूर हो जायेंगे । जिसके मुख में रात-दिन नाम ही नाम है, उसे चिन्ता किस बात की ! इसलिए जागृत अवस्था चाहे निद्रावस्था में आप नाम जपते रहें। सत्गुरु महाराजजी फरमाते हैं :-

दीपक बिन शोभत नहीं, जैसे सुन्दर धाम ।
तैसे मुख शोभत नहीं, टेऊं बिन हरिनाम ।।

२५ जून पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि प्रेमियो! आप कितने समय तक अज्ञान की नींद में सोये हैं। सन्त आप को सजग करने के लिए आते हैं। अविद्या की नींद से जागृत होकर अपने साक्षी चेतन रूप को पहचानें। सतगुरु महाराजजी फरमाते हैं:-

कह टेऊं सो जागता, जांको आत्म ज्ञान ।
सोया सो पहचानिए, जांके डर अज्ञान ।।

प्रेमियो ! जागृत होकर नाम स्मरण करें । सत्कर्म करें । तन मन शुद्धी के लिए उपवास रखें तो आपका स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा और चित्त की वृत्ती प्रभु से जुड़ेगी । अपने अमूल्य श्वास नाम स्मरण में सफल करें । यह मनुष्य देह बार बार नहीं मिलेगी । इसी जन्म में जीव शुभकर्म कर सकता है । परमात्मा ने हमें कितने सुख व साधन दिये हैं फिर भी हम प्रभु का उपकार नहीं मानते।

२८ जून प्रात: ११ बजे खार सिन्धी सेवा समाज मण्डल की ओर से दयावन्ती टीकमदास हाल में विवाह से सम्बन्धित समस्याओं (दहेज इत्यादि) को सुलझाने के लिए युवा लड़कों एवं लड़कियों का मिलन 'एक दूजे के लिए' आयोजित किया गया । उसी अवसर पर पूज्य स्वामीजी वहां पधारे और इस सामाजिक कार्य के लिए उन्होंने कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिया । मुखी लक्ष्मणदास, श्री गंगीमल धामेजा, श्री मेंघराज धामेजा ने पूज्य स्वामीजी एवं दयाल 'आशा' का स्वागत किया।

२८ जून रविवार सायं खार में सत्संग यज्ञ का समापन करते हुए पूज्य स्वामीजी ने आयोजकों श्री गोविन्दराम बूलचन्दाणी, गोविन्दराम दुल्हनोमल, हीरानन्द रोहड़ा, चन्दू पहूजा, भरत वाधवा एवं अन्य प्रेमियों को सत्संग यज्ञ के आयोजन के लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि प्रेमियो! सन्तों ने जो कुछ आठ दिनों में आपको सुनाया है उसका सार ग्रहण करें । सन्तों की शिक्षा को अपने जीवन में उतारें । सत्संग का मूल उद्देश्य है चित्त की वृत्ति प्रभु से जोडना । आप लोगों ने बंगले बनवाये, धन संग्रह किया वह किसी काम का नहीं । नाम की पूंजी संग्रह करें,

अपनी माया (धन इत्यादि) दीन दुखियों, बीमारों, गौ माता की सेवा में सफल करें । परिपूर्ण गुरु से गुर मन्त्र लेकर सुरति शब्द से जोड़े। सत्गुरु महाराजी भी फरमाते हैं :-

हरि से वृती जोड़िये, ले गुर से उपदेश ।

कह टेऊं इस जोग से, लगे न दूख कलेश ।।

श्री मोहनलाल रोहड़ा ने पूज्य स्वामीजी का आभार व्यक्त किया। बड़ौदा कंवरराम कालोनी में स्वामी धर्मप्रकाशजी द्वारा निर्मित स्वामी टेऊंराम प्रेम प्रकाश आश्रम में सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज का जन्मदिन उत्सव ३० जून से आरम्भ हुआ पूज्य स्वामीजी भी ३० जून को वहाँ पधारे । सन्त अशोकलाल, श्री श्रीचन्द गालाणी एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत सत्कार किया । प्रातः पूज्य स्वामीजी ने सभी सन्तों के साथ मिलकर धर्म ध्वजा फहराकर उत्सव आरम्भ किया । पूज्य स्वामीजी ने वहां आश्रम में स्वामी सर्वानन्द अस्पताल', 'स्वामी सर्वानन्द जलाश्रम' 'धर्म द्वार' का उद्घाटन करते हुए सन्त अशोकलाल एवं अन्य प्रेमियों को इस उत्तम कार्य के लिए धन्यवाद दिया । तत्पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आप लोगों ने सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज एवं स्वामी धर्मप्रकाशजी महाराज की पावन स्मृति में अस्पताल व जलाश्रम का निर्माण करवाकर परोपकार का कार्य किया है । इस अस्पताल से रोगी उपचार कराकर स्वस्थ हो जायेंगे । जलाश्रम से कई प्यासे पानी पीकर प्यास बुझाएंगे। सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज एवं सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज को ऐसे कार्य प्रिय लगते थे । सन्त स्वामी धर्मप्रकाशजी की स्मृति में जो आपने 'धर्म द्वार' बनवाया है यह भी उत्तम काम किया है ।

या तो आतम ज्ञान हो, या हो परोपकार ।

टेऊँ जिसमें ये नहीं, सो मानुष है बेकार ।।

सायं ४ बजे पूज्य स्वामीजी के नेतृत्व में शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा में कई सन्त एवं हजारों प्रेमी "धनु गुरु टेऊंराम" की धुनि लगाते चले । सायं ७ बजे यात्रा लौटकर आश्रम में आई । उसी समय पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज के गुणों का वर्णन किया ।

अजमेर में स्वामी बसन्तरामजी महाराज के स्थान पर सन्त ब्रह्मानन्द ने सतगुरु स्वामी टेऊँराम महाराजजी का जन्मोत्सव आयोजित किया। इस उत्सव के उपलक्ष्य में पूज्य स्वामीजी २ जुलाई अजमेर पधारे। स्वामी ब्रह्मानन्द ने उनका स्वागत किया । २ जुलाई प्रातः हवन यज्ञ के पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने सन्त मण्डली के साथ स्वामी टेऊँराम नर्सिंग होम और रिसर्च सेन्टर, स्वामी सर्वानन्द योगाश्रम, श्री बसन्त बहार विश्राम गृह का उद्घाटन किया । स्वामी हरिदाराम, हालाणी दरबार के सन्त साधूराम एवं अन्य सन्तों ने आशीर्वाद वचन कहे । पूज्य स्वामीजी ने आशीर्वाद करते हुए कहा कि प्यारे सन्त ब्रह्मानन्द को धन्यवाद है जिसने सतगुरु महाराज के पावन जन्मोत्सव के शुभ अवसर पर उनकी पावन स्मृति में परोपकार के कार्य आरम्भ किये हैं, जिनसे कई लोगों को लाभ मिलेगा । मुझे भी ऐसे लोक कल्याण के कार्य अच्छे लगते हैं । सुपुत्र वह जो अपने बड़ों का यश चारों ओर फैलाये । सन्त ब्रह्मानन्द ने भी आज ऐसे लोकसेवा के कार्य आरम्भ कर सतगुरु महाराज का यश बढ़ाया है । प्रेमियों ! आप भी सन्त ब्रह्मानन्द को पूर्ण सहयोग दें, जिससे वह भविष्य में भी सेवा परोपकार के कार्य करता रहे । पूज्य स्वामीजी ने वहां तीन दिन अमृत वचनों की वर्खा करते हुए सतगुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की महिमा गाई ।

६ जुलाई प्रेम प्रकाश मण्डली माटूंगा (बम्बई) में सतगुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का जन्मदिन उत्सव मनाया गया । वहां भी पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि सतगुरु महाराज की वाणी 'प्रेम प्रकाश ग्रन्थ' का अभ्यास करें । उस वाणी से आपको जो वचन मिले, वह सतगुरु महाराज का आदेश समझकर पालन करें। परमात्मा ने आपको शुभ कर्म करने का स्वर्ण अवसर दिया है, किन्तु आप उसका उपयोग नहीं करते । आपको जो कुछ करना है वह अभी करें, भविष्य का किसी को पता नहीं । शाहजहाँ बादशाह अपने तख्त पर बैठा था अचानक उसका बेटा ओरंगजेब वहाँ आया और उसने अपने बाप को कैद कर स्वयं बाप के तख्त पर बैठ गया । उसने सिपाहियों से कहा कि शाहजहां को प्यास लगे तो पानी नहीं पिलाना, भूख लगे तो उसे खाना नहीं देना । बेटे औरंगजेब ने ऐसा बुरा व्यवहार

अपने बाप शाहजहां के साथ किया । बादशाह शाहजहां ने यह स्वप्न में भी तसव्वुर (सोचा) नहीं किया होगा । गुरु महाराजजी फरमाते हैं :-

'नजर पुठी जे करे, सुलताना गाह करायदां'

यदि भगवान अपनी दया दृष्टि फेर ले तो बादशाह को भी घास काटना पड़े । प्रेमियो ! परमात्मा को सदैव उसकी दया के लिए प्रार्थना करें । अपने श्वास स्मरण में सफल करें ।

९ जुलाई पूज्य स्वामीजी ने स्वामी चन्दनप्रकाश मन्दिर पूना में सत्संग प्रवचन किया । १०-११ जुलाई उन्होंने प्रेम प्रकाश मण्डली अहमदनगर में अमृत वचनों की वर्षा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। १४ जुलाई गुरु पूर्णिमा का शुभ दिन सिन्धुनगर आश्रम में मनाया। प्रातः प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी को गंगाजल एवं गौ दुग्ध से स्नान कराकर उनकी पूजा उपासना की । हज़ारों प्रेमियों ने पहले दादा आसूराम, सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज, सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की मूर्तियों की पूजा उपासना की । तत्पश्चात् उन्होंने पूज्य स्वामीजी को फूल मालाएं, श्रीफल व मिश्री भेंट कर उनसे आशीर्वाद लिया।

पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि आज का दिन प्राचीनकाल से "व्यास पूजा", गुरु पूर्णिमा का दिन मनाया जाता है । शिष्य गुरु का ऋण कभी भी चुका नहीं सकता है । शिष्य पर गुरु के अनन्त उपकार रहते हैं । आज के दिन प्रत्येक शिष्य को अपने अपने गुरु की पूजा उपासना करनी चाहिए । गुरु के बिना किसी की मुक्ति नहीं होती । व्यवहार एवं आध्यात्मिक उन्नति के लिए गुरु की आवश्यकता होती है । गुरु त्यागी व ब्रह्मज्ञानी होना चाहिए तब शिष्य का कल्याण होगा । सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज भी अपनी वाणी में फरमाते हैं :-

तन मन धन पुन वचन से, कीजे गुर की सेव ।
गुर को प्रसन्न जानके, लीजे आत्म मेव ॥

१५ जुलाई पूज्य स्वामीजी प्यारे दयाल 'आशा', अनन्दराम कोटूमल धामेजा के घर पधारे । उन्होंने वहाँ भोजन ग्रहण किया और सारे परिवार

को आशीर्वाद दिया । माता पारीबाई कोटूमल, लाज दयाल 'आशा' ईश्वरी कोटूमल एवं अन्य सम्बन्धियों ने सत्गुरु महाराज का अभिनन्दन किया ।

प्रेमियों के नेह निमन्त्रण पर पूज्य स्वामीजी १७ जुलाई को बैंगलोर पधारे ।वहां दादा अमर, ठाकुरदास पुरुषोत्तमदास, अशोक खिलनाणी, बहन पदमा एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया । वहां विभिन्न स्थानों पर उन्होंने चार दिन अमृत वचनों की वर्खा की । दादा अमर के स्थान पर उन्होंने प्रवचन करते हुए कहा कि दादा अमर यहां कई प्रशंसनीय परोपकार के कार्य कर रहे हैं । इन कार्यों के साथ साथ वह यहाँ सत्संग की ज्योति भी जगा रहा है । प्रेमियों ! आप सांसारिक काम काज करते प्रभु को नहीं बिसारें । पल पल प्रभु को प्रेम से पुकारें और अपनी माया (धन इत्यादि) परोपकार के कार्यों में सफल करें । सत्गुरु महाराजजी भी परमाते हैं :-

अपना स्वार्थ छोड़, जो करता परोपकार ।
कह टेऊं यश होत है, तांका जगत् मंझार ।।

जो मनुष्य निष्काम भावना से सेवा व उपकार के काम करता है उसका संसार में यश होता है । माया (धन पदार्थ) मालिक की धरोहर है, उसे प्रभु को अर्पित करें । बैंगलोर सिन्धी मर्चेन्ट एसोसिएशन ने पूज्य स्वामीजी के सत्संग प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया । पहले संस्था के कार्यकर्ताओं ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत किया । तत्पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने उपदेश देते हुए कहा :-

'तन से दुख ना दे किसे, वचन कटु मत बोल'

प्रेमियो ! मन वचन व कर्म से किसी को भी दुखी नहीं करें । दूसरों का दिल लेना सीखें । संसार में आज यदि कमी है तो प्रेम की ही कमी है । चारों ओर आज एक दूसरे के प्रति घृणा, असहयोग, अशान्ति का वातावरण है । आप न केवल मानव मात्र किन्तु पशु पक्षियों को भी प्यार करें । मांसाहर से दूर रहें । आपस में एकता रखेंगे तो आपका यश होगा ।

२० जुलाई पूज्य स्वामीजी ने सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि

आपके घर में यदि अतिथि आये तो उसे भगवान या देवता समझकर उसकी सेवा करें । 'अतिथि देवो भव' पहले लोग विशाल हृदय होते थे, घर में यदि कोई अतिथि आता था तो फूले नहीं समाते थे । आजकल सुख सुविधाएं और धन पदार्थ बढ़ गए हैं फिर भी लोग संकीर्ण हृदय हो गये हैं । वे अपना स्वार्थ साधने में इतना समय गंवाते हैं कि दूसरों के लिए उन्हें समय ही नहीं है । पांच पांडव, माता कुन्ती व पत्नी द्रौपदी के साथ अपनी वन यात्रा करते ऋषि वेद व्यास के आश्रम में आये । तभी ऋषि वेद व्यास ने उन्हें कुछ समय पश्चात् चक्रा नगरी में एक ब्राह्मण के पास आश्रय लेने के लिए भेजा । ब्राह्मण दम्पति गरीब थे किन्तु उनका हृदय विशाल था । उन्होंने पांडवों, उनकी माता व पत्नी का प्रसन्नता से स्वागत किया और अपने मकान में आश्रय दिया । ब्राह्मण दम्पति उन्हें भोजन खिलाते थे, उनके वस्त्र धोने के साथ साथ हर प्रकार की सेवा करते थे । एक दिन प्रातः कुन्ती जैसे नहा कर लौट रही थी तो उसने ब्राह्मण दम्पति का वार्तालाप सुना । ब्राह्मण अपनी पत्नि से कह रहा था कि जब तक ये अतिथि यहां ठहरे हुए हैं इनको पेट भर भोजन खिलाना है, हमने यदि कभी खाया या नहीं खाया या कभी कम खाया तो कोई चिन्ता नहीं । पहले अतिथि फिर हम । रात्रि को एकांत में कुन्ती ने पाडवों को बताया कि यह गरीब परिवार है । इस कारण वे स्वयं कम खाकर हमें पूरा-पूरा भोजन खिलाते हैं, हमारी कितनी सेवा करते हैं । अब आप वेश बदल कर भिक्षा लेकर आएं तो अच्छा है ।

प्रेमियो ! ब्राह्मण दम्पत्ति स्वयं न खाकर या कम खाकर पांडवों को भर पेट भोजन खिलाते रहे, प्रसन्नचित्त रहकर उनकी सेवा करते रहे । आप भी इसी प्रकार अतिथियों की सेवा करें ।

२१ जुलाई पूज्य स्वामीजी मद्रास पधारे । वहां श्री भगवानदास छुगाणी, श्री ठाकुरदास शेवकरामाणी, श्री राधेश्याम एवं अन्य प्रेमियों ने उनका स्वागत किया । २२ जुलाई पूज्य स्वामीजी ने स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश मन्दिर का उद्घाटन करते हुए श्री ठाकुरदास एवं उनके परिवार को नये मन्दिर की स्थापना के लिए धन्यवाद दिया । पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुए कहा कि इस पवित्र स्थान पर समय समय पर सन्त

महात्मा आकर आपको नाम रूपी अमृत पिलाएंगे। आपने सत्गुरु महाराज का मन्दिर बनवाया है, तो सत्गुरु महाराज आपके महल (मकान) बनवाएंगे। इन मन्दिरों की स्थापना का मूल उद्देश्य है नाम स्मरण कराना । आप प्रभु का कोई भी नाम जपें किंतु गुरु के द्वारा प्रदत्त नाम का अधिक महत्व है । सत्गुरु महाराज जी फरमाते हैं :-

गुरु मूर्ति का ध्यान धर, गुरु है देवन देव ।
कह टेऊँ गुरु नाम जप, पाओ आत्म मेव ।।

प्रेमियो ! मनुष्य देहि प्राप्त करके भी आप नाम स्मरण नहीं करेंगे तो फिर किस योनि में नाम स्मरण करेंगे? अवसर हाथों से निकल जायेगा फिर रोना पड़ेगा । श्री गुरु तेगबहादुर महाराज जी फरमाते हैं :-

करना हो तो ना कीयो, पड़ियो लोभ के फंद ।
नानक समयो रम गयो, अब क्यों रोवत अंध ।।

२३ जुलाई राधेश्याम मन्दिर मद्रास में श्री जशन सोभराज ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत करते हुए उनकी महानता का वर्णन किया। पूज्य स्वामीजी ने प्यारे सोभराज एवं उसकी पत्नी स्व. विमला को धन्यवाद दिया जिन्होंने राधेश्याम मन्दिर की स्थापना की थी । इस मन्दिर में भगवान श्यामसुन्दर की सुन्दर मूर्ति स्थापित है । पूज्य स्वामीजी ने प्रवचन करते हुये कहा कि प्यारा जशन न केवल इस मन्दिर का संचालक है, वरन् वह दीन-दु:खियों, रोगियों की सेवा भी करता है। निष्काम सेवा ही प्रभु की भक्ति है । प्रेमियों ! आप भी भगवान श्रीकृष्ण के गुण गाएं और अपाहिजों, दुखियों, पशु-पक्षियों की सेवा करें । जीवन की सार्थकता स्मरण व सेवा में है ।

२४ जुलाई पूज्य स्वामीजी ने प्रेम प्रकाश मन्दिर में सत्संग प्रवचन करते हुये कहा कि सांसारिक तृष्णाएं कभी भी पूरी नहीं होंगी इसलिये केवल एक प्रभु की प्यास रखें । सत्गुरु महाराजजी को प्रार्थना करें :-

सत्गुरु तुम पूर्ण करो, मेरी यह अरदास ।
कह टेऊँ मन में कभी, रहे न जग की आस ।।

यदि सांसारिक वैभव पदार्थों में सुख होता तो राजा भृतहरि, राजा पीपा, याज्ञवलक्य राज्य का त्याग कर क्यों प्रभु प्राप्ति के लिये पुरुषार्थ करते । प्रेमियो ! सांसारिक सुख दुःखदाई है । हरि का नाम सदा सुखदाई है । हम सत्, चित, आनन्द ब्रह्म को भुलाकर माया के पीछे भटक रहे हैं और भटक-भटककर प्राण देते हैं :-

मानुष तन हरि ने दिया, दिया धन सुत धाम ।
टेऊँ ताहिं बिसार के, होय न नमक हराम ॥

प्रेमियो ! आप और सभी बातों को भुला दें परन्तु जित परमात्मा ने आपको सब कुछ दिया है, उसे न भुलाएं ।

२७ जुलाई पूज्य स्वामीजी हैदराबाद पधारे । प्यारे प्रियतमदास एवं अन्य प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी का स्वागत किया । उन्होंने हैदराबाद एवं सिकन्दराबाद के विभिन्न स्थानों पर चार दिन अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की । २ अगस्त वे जालना पधारे। वहां उन्होंने शादी हॉल का उद्घाटन करते हुए कहा कि इस शादी हॉल के निर्माण के लिये आपको धन्यवाद है, ऐसे उत्तम कार्य करते रहें। अपना धन्धा-व्यवहार करते हुए कुछ समय एकांत में बैठकर भगवद् चिंतन करें । घरों में शान्ति व प्रेम का वातावरण उत्पन्न करें । पूज्य स्वामीजी ने जालना में दो दिन अमृत वचनों की वर्खा की । जाड़ोमल वलरमल वाधवा ने स्वामीजी का आभार व्यक्त किया । जालना से पूज्य स्वामीजी औरंगाबाद पधारे । वहां सिन्धी कॉलोनी में पंचायत की ओर से श्री हेमनदास जग्यासी ने उनका स्वागत किया । पूज्य स्वामीजी ने वहां सत्संग प्रवचन करते हुए सिन्धी समुदाय से अनुरोध किया कि आपस में एकता के सूत्र में बंध जाएं तो आपका यश होगा। रात-दिन केवल धन संग्रह व सांसारिक प्रपंच में व्यर्थ समय नहीं गंवाएं। श्वासों का सदुपयोग करें । पूज्य स्वामीजी परभणी व श्रीरामपुर पधारे। वहां भी उन्होंने अमृत वचनों की वर्खा कर प्रेमियों की प्यास पूरी की। वे ६ अगस्त को सिन्धुनगर आश्रम में लौट आये ।

११ अगस्त प्रातः पूज्य स्वामीजी बम्बई में पूज्य सन्त श्री मुरारी

बापू से मिलने गये । दोनों सन्तों ने आपस में ज्ञान गोष्ठी की । पूज्य स्वामीजी ने उन्हें सिन्धुनगर आश्रम पर आने का निमन्त्रण दिया। तत्पश्चात् पूज्य स्वामीजी आकाशवाणी, बम्बई केन्द्र पधारे । आकाशवाणी बम्बई के सिन्धी विभाग के अधिकारी श्री हरेश मीरचन्दानी ने उनका स्वागत किया । श्री जन्माष्टमी के सम्बन्ध में पूज्य स्वामीजी का प्रवचन रिकार्ड किया गया । पूज्य स्वामीजी ने भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन करते हुए उनकी महिमा गाई । किसको पता था कि पूज्य स्वामीजी की आकाशवाणी केन्द्र में यह अन्तिम रिकार्डिंग होगी !

११ अगस्त सायं सिन्धुनगर आश्रम में पूज्य स्वामीजी के जन्मदिन उत्सव के सम्बन्ध में विद्यार्थियों की भक्ति संगीत प्रतियोगिता आयोजित की गई । जिसमें २५ विद्यार्थियों ने भाग लिया । पूज्य स्वामीजी ने भाग लेने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार दिये ।

१३ अगस्त प्रातः प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी को गंगाजल व गौ-दुग्ध से स्नान कराकर उनकी महिमा के गीत गाये । प्रातः ७ बजे श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ, श्रीमद् भगवत गीता के पाठों का समापन किया गया। हवन यज्ञ के पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने जनता जनार्दन परिषद् की ओर से चार सौ गरीब बहनों को आर्थिक सहायता के साथ-साथ चावल, दाल, चादर इत्यादि वितरण किये ।

सायं ५ बजे पूज्य स्वामीजी के जन्मदिन उत्सव के सम्बन्ध में बहन चम्पा ईसराणी, बहन नीलम बालाणी, प्रो. गोप रूपचन्दाणी, सन्त श्यामलाल, सन्त टोपणदास पंजवाणी, सन्त बुधरलाल, भक्त खानूमल ने भक्ति संगीत की वर्खा की । डॉ. दयाल 'आशा' ने जनता जनार्दन परिषद् के सेवा कार्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पूज्य सद्‌गुरु स्वामी शान्ति प्रकाशजी महाराज की प्रेरणा व आशीर्वाद से ही जनता जनार्दन परिषद् कई सेवा कार्य कर रहा है । पूज्य सत्गुरु महाराजजी प्रेम व दया के अवतार हैं । वे देश-विदेश में जाकर प्यासों को प्रेमामृत पिलाकर उनकी प्यास पूरी करते हैं । सन्त अनन्तप्रकाश, सन्त ब्रह्मदास, सन्त रूपाराम, श्री सभागचन्द चावला, परसराम कांग्रेसी, आसनदास भेरवाणी, श्री सीतलदास हरचन्दाणी, श्री गोपीचन्द बहराणी, श्री लक्ष्मणदास

पंजवाणी एवं अन्य प्रेमियों ने सत्गुरु महाराज के गुणों का वर्णन किया। बहन कान्ता शंकरलाल कुकरेजा ने दो मिनट के लिये पूज्य स्वामीजी महाराज को मुकुट पहनाकर, हाथों में बांसुरी बजाने के लिये दी। जब पूज्य स्वामीजी ने उसी वेश में बांसुरी बजाई तब ऐसा लग रहा था कि साक्षात् भगवान श्रीकृष्ण स्वयं बांसुरी बजा रहे हैं।

पूज्य स्वामीजी ने जनता जनार्दन परिषद् की स्मारिका का विमोचन किया। सिन्धु सभ्यतिक केंद्र की ओर से प्रति वर्ष श्री आसनदास भेरवाणी पूज्य स्वामीजी के जन्मदिन उत्सव में एक शील्ड भेट करते हैं जो भक्ति संगीत गाने वाले गायक को दी जाती थी। इस वर्ष वह शील्ड पूज्य स्वामीजी ने प्रो. गोप रूपचन्दाणी को दी।

पूज्य स्वामीजी ने उपदेश देते हुए कहा कि आज आप लोगों ने मेरा जन्मदिन मनाया है। आज मैं बालक रूप में हूं, आप मुझे आशीर्वाद करें कि मैं स्वयं भी नाम स्मरण करता रहूं, और औरों को भी नाम जपाता रहूं। जो भी सेवा के कार्य हो रहे हैं, यह सब ईश्वर की कृपा और सत्गुरु महाराज की दया का परिणाम है। आप सभी का पूर्ण सहयोग भी मिलता रहा है। प्यारे दयाल 'आशा' को धन्यवाद है। आप भी उसे आशीर्वाद करें कि वह उत्साह के साथ अधिक सेवा कार्य करता रहे। प्रेमियो ! आप अपने श्वास नाम स्मरण में सफल करें।

जीवन के लिए जैसे अन्न, जल एवं वायु अत्यन्त आवश्यक है। इसी प्रकार मनुष्य के लिए सत्संग भी आवश्यक है। आप नियमित रूप से सत्संग में आयें और हरिगुण गाएं। संतो महात्माओं के प्रवचन श्रवण कर उनके अनुरूप चलने का प्रयास करें। महाप्रभु चैतन्य, मीराबाई, संत तुकाराम, सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज एवं अन्य भक्तों ने परमात्मा से चित्त की वृत्ति जोड़ी। महाप्रभु ने बंगाल के घर घर में "हरे कृष्ण, हरे राम, राम राम, राम हरे" की धूम मचाई। उसने चौदह बार भगवान का दर्शन किया। उसने भगवान श्री जगन्नाथ की मूर्ति के सामने इतनी तो तन्मयता के साथ नाम कीर्तन करते हुए नृत्य किया कि भगवान ने उसे स्वयं में समा लिया। संत तुकाराम ने भी पंढ़रपुर में भगवान श्री हरिविठ्ठल की मूर्ति के सामने इतनी तन्मयता से प्रभु

की महिमा गाई कि भगवान ने उसे भी स्वयं में समा लिया। मीराबाई के मन में भी भगवान श्यामसुन्दर के प्रति अनन्य भक्ति भावना थी। भगवान श्रीकृष्ण ने उसे स्वयं में समा लिया। प्रेमियो! आप भी ऐसी तन्मयता के साथ नाम स्मरण करें कि प्रभु आपको स्वयं में समा ले। भगवद् स्मरण के साथ साथ दीन दुखियों, अपाहिजों रोगियों, पशु पक्षियों और गौ माताओं की सेवा करें।

१५ अगस्त बैरागढ़ भोपाल में बहन विद्या, भाई मिर्चूमल एवं प्रेम प्रकाश मन्दिर के प्रेमियों ने पूज्य स्वामीजी का ८६ वां जन्म दिन उत्सव का आयोजन किया था। १४ अगस्त को मुझे (डा. दयाल 'आशा') भोपाल के लिए प्रस्थान करना था। इसलिए मैं १४ अगस्त प्रातः पूज्य सत्गुरु महाराज के पास आशीर्वाद लेने आया। मुझे पता नहीं था कि उनका यह अन्तिम दर्शन और आशीर्वाद प्राप्त करने का सुअवसर है। उन्होंने प्रसन्नता पूर्वक मुझे आशीर्वाद दे कर भोपाल जाने की आज्ञा की। वे उस समय प्यारे प्रभुदास को दो तीन नये भजन लिखा रहे थे। उस भजनों में एक यह भी भजन था :

"काल कुल्हनि ते ज़ाणि मन तूं, खबर न आहे कहिं पल मारे"

(हे जीव ! तू अपने कंधों पर काल को सदैव सवार समझ, पता नहीं कब वह तुमको अपना निशाना बनाये)

१४ अगस्त को ही उन्होंने अगम देश को जाने का उल्लेख अपने भजन में किया।

१४ अगस्त प्रातः ११ बजे पूज्य स्वामीजी ने सिन्धुनगर-२ में नवजीवन कोआपरेटिव बैंक की शाखा का उद्घाटन करते हुए श्री सीतलदास हरचन्दाणी एवं उनके साथियों को धन्यवाद दिया। पूज्य स्वामीजी वहां से फिर बम्बई गाये। सायं ६ बजे उन्होंने प्रेम प्रकाश मंडली माटूंगा बम्बई में सत्संग प्रवचन करते हुए कहा कि प्रेमियो ! संतों का संग आपको सत्मार्ग पर ले चलेगा। किसी न किसी संत का संग अवश्य करें। सत्संग कल्पवृक्ष की भांति इच्छाएं पूर्ण करता है किन्तु आप सांसारिक इच्छाओं का त्याग कर दें। सत्संग द्वारा आपका विवेक जागृत होगा। एक लकड़हारा थकान के कारण एक वृक्ष के नीचे बैठ गया। उसे प्यास लगी, उसी समय ही वहां जल प्रकट हुआ

और उसने ठंडा पानी पीकर प्यास पूरी की । वह जिस वृक्ष के नीचे बैठा था वह कल्पवृक्ष था किन्तु उस को यह पता नहीं था । फिर उसे भोजन खाने की इच्छा हुई, तो शीघ्र ही भोजन की थाली आ गई, वह भोजन खाकर प्रसन्न हुआ । फिर उसके मन में विचार आया कि यदि कोई पंलग हो तो सो जाऊँ । इतमें में एक सुन्दर पलंग वहां आ गया । विषय भोग की पूर्ति के लिए उसने स्त्री की कामना की तो उस समय ही एक सुन्दर अप्सरा आ गई । फिर सुन्दर अप्सरा को देखकर उसके मन में विचार आया कि उस स्त्री के सगे सम्बन्धी मुझे मारने न आयें । इतने में वहां तीन चार पहलवान प्रकट हुए और उन्होंने लकड़हारे का काम तमाम कर दिया । आपकी कामनाएं कभी पूरी नहीं होंगी । भोग भोगते भोगते काल रूपी पहलवान आपका काम भी तमाम कर देगा । प्रेमियो ! इच्छा भी विवेक के अनुकूल करें, जिससे आप का लाभ हो । सत्संग द्वारा आपको सत्य असत्य का भास होगा । नाम स्मरण सर्वश्रेष्ठ कर्म है । आप साधारण सांसारिक काम तो करते हैं । किन्तु उत्तम काम नाम स्मरण नहीं करते। स्मरण भी कई प्रकार का है । सुमरनी (स्मरणी) हाथ में लेकर नाम स्मरण करना, मुख से नाम जपना । इनसे महत्वपूर्ण हैं मन से नाम स्मरण करना । मन के स्मरण से अधिक है बुद्धि से स्मरण करना। उससे अधिक उत्तम है श्वासों से नाम स्मरण करना । उससे अति उत्तम है आत्मा से नाम स्मरण करना । ऐसा स्मरण करने से मनुष्य तद्रूप (भगवत स्वरूप) हो जाता है ।

'नानक लीन भयो गोबिन्द सूं ज्यों पानी संग पानी !'

यह है महापुरुषों की निशानी, सत्य कहानी और सब है फानी । प्रेमियो ! आप भी आत्मा से स्मरण कर तद्रूप हो जाएं ।

१६ अगस्त जकार्ता में श्री शंकर सामताणी की पुत्री सोनिया का विवाह सम्पन्न होने वाला था । सोनिया की हार्दिक इच्छा थी कि पूज्य स्वामीजी उसके विवाह उत्सव में पधार कर उसे आशीर्वाद दें। माता कृष्णा सामताणी, शंकर सामताणी, गोप सामताणी ने पूज्य स्वामीजी से प्रार्थना की कि कृपया आप जकार्ता पधारकर सोनिया के विवाह उत्सव में आशीर्वाद दें । पूज्य स्वामीजी स्वयं को कष्ट देकर भी प्रेमियों

की इच्छा पूरी करते थे। उन्होंने इस विवाह उत्सव में सम्मिलित होने के लिए १४ अगस्त रात्रि ११-३० बजे सहार हवाई अड्डे बम्बई से जकार्ता के लिए प्रस्थान किया। पूज्य स्वामीजी के साथ संत देवप्रकाश, संत अनन्तप्रकाश एवं संत ज्ञानप्रकाश भी थे।

पूज्य स्वामीजी विमान में बैठे थे। दिनांक १५ अगस्त १९९२ पूज्य स्वामीजी प्रात: ३-४५ पर हवाई जहाज में ही शौचादि क्रिया से निवृत होकर समाधिस्थ अवस्था में अपनी निर्धारित सीट पर बैठ गये। पूज्य सत्गुरु महाराज प्रात: ब्रह्म वेला में ४ बजकर ५ मिनट पर उसी अवस्था में ब्रह्मलोक की अनन्त यात्रा पर रवाना हो गये। इस अप्रत्याशित घटना से संत देवप्रकाश, संत अनन्तप्रकाश व संत ज्ञानप्रकाश स्तब्ध से रह गये। जैसे तैसे स्वयं को सम्भालकर विमान चालक की सहायता से इस दु:खद समाचार को जकार्ता एवं बम्बई पहुंचाया। यहां से यह शोक समाचार समूचे विश्व में पहुंचा।

प्रात: ५-३० बजे विमान के सिंगापुर उतरते ही पूज्य स्वामीजी की पार्थिव देह को वहां के अधिकारी आवश्यक जांच हेतु सीधा अस्पताल ले गये। तत्पश्चात् भारत सरकार के रक्षामन्त्री माननीय शरद पवार जी एवं लोक सभा में विपक्ष के नेता माननीय श्री लालकृष्ण आडवाणी जी एवं श्री पप्पू कालानी विधायक व हिन्दुजा परिवार के प्रयास से सिंगापुर सरकार द्वारा पूज्य स्वामीजी का पार्थिव शरीर बिना किसी आवश्यक जांच किए ही दिनांक १६ अगस्त ९२ को ससम्मान वापस किया गया।

दिनांक १६ अगस्त ९२ को ही एयर इण्डिया का विमान पूज्य स्वामीजी का पार्थिव शरीर लेकर रात्रि ९-०० बजे सिंगापुर से बम्बई विमानतल पर उतरा। जहां पर शोकाकुल पूज्य संत मण्डल व सहस्रों की संख्या में भक्तजन उपस्थित थे इस हृदय विदारक दृश्य का वर्णन कर पाना एक दुरूह सा कार्य है। माननीय श्री पप्पू कालानी, विधायक विधान सभा, महाराष्ट्र प्रदेश के अथक प्रयासों से ही पूज्य स्वामीजी की पार्थिव देह विमान से उतरते ही अविलम्ब संत मण्डल को सौंप दी गई।

तत्पश्चात् पूज्य स्वामीजी का स्थूल शरीर आदर सहित फूलों से सजे एक वाहन में सिंहासन पर रखा गया। पुष्प वर्षा व नाम ध्वनि

के साथ दो हजार से भी अधिक वाहनों के काफिले के साथ पूज्य स्वामीजी की देह कुर्ला (बम्बई) लाई गई जहां पर उपस्थित प्रेमियों ने अश्रुपूरित नेत्रों से नमन कर पूज्य गुरुवर के श्रीचरणों में सादर पुष्प मालाएं अर्पित की।

लगभग रात्रि ११.३० बजे इस महायात्रा ने उल्हासनगर की धरा पर प्रवेश किया। जहां पर उदास अधीर एवं प्रतीक्षा रत भक्तजन मार्ग के दोनों ओर मकानों की छतों पर खड़े हुये थे। एक बार फिर चीत्कार करते, रोते हुये, फूल अर्पित करते प्रेमी प्रभु परमात्मा से वंदना करते हुये प्रेमी, कि हे प्रभु हमारा प्राण-धन कुछ समय के लिये लौटा दीजिये। धीरे-धीरे उल्हासनगर के मार्ग से होती हुई यह महायात्रा एक खामोशी लिए आश्रम की ओर बढ़ रही थी और हज़ारों प्रेमी भारी वर्षा के बावजूद सम्मिलित होते जा रहे थे।

१७ अगस्त रात्रि के १.२५ बजे परम पूज्य, ब्रह्मनिष्ठ सत्गुरु श्री स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की पार्थिव देह को ले आने वाला वाहन आश्रम के मुख्य द्वार से प्रविष्ट हुआ। सहस्त्रों अश्रुपूर्ण नेत्रों ने पूज्य स्वामीजी की जय-जयकार, पुष्प वर्षा के साथ पूज्य स्वामीजी की अगवानी की। पूज्य स्वामीजी के निश्चल देह वाले बक्से को जब वाहन से उतारा जाने लगा, असंख्य हाथ उन्हें थामने के लिये उठ गए। पूज्य स्वामीजी के पार्थिव देह का मन्दिर में प्रवेश १ बजकर ४० मिनट पर हुआ। ठीक १ बजकर ५० मिनट पर पूज्य स्वामीजी के शरीर को असंख्य हाथों द्वारा पूज्य स्वामीजी के अन्तिम दर्शन के लिए बनाये गए विशेष सिंहासन (मंच) पर, जो कि परमपूज्य आचार्य सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज व राधाकृष्ण के पावन श्रीचरणों में, फूलों से बनाया गया था, रखा गया।

अन्तिम दर्शन के लिए रात्रि २.१५ बजे पूज्य स्वामीजी की पार्थिव देह श्रद्धालुओं के अन्तिम दर्शनार्थ मन्दिर के दायें-बायें द्वार खोल दिए गए, एक-एक करके कतार बद्ध व्याकुल प्रेमी अन्दर आकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते और मौन श्रद्धांजलि देते बाहर की ओर प्रस्थान करते रहे। १७ अगस्त रात्रि २.१५ बजे से आरम्भ हुए, दर्शन १७ अगस्त पुरा दिवस १८ अगस्त की प्रातः ६ बजे तक अविराम गति

से प्रेमी दर्शन के लिए आते रहे । लगभग ४ लाख से भी अधिक श्रद्धालुओं ने पूज्य स्वामीजी के अन्तिम दर्शन किये, जिसमें सभी समुदायों के लोग शामिल थे । पूज्य स्वामीजी के अन्तिम दर्शनों का सीधा प्रसारण पूरे उल्हासनगर में केबल टी. वी. के माध्यम से किया जा रहा था जो निरन्तर जारी रहा ।

१८ अगस्त प्रात: ६.४५ बजे से महायात्रा की तैयारी आरम्भ हो गई, वैदिक मन्त्रोच्चारण के मध्य श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का पूज्य सन्त मण्डल, स्वामी ब्रह्मानन्दजी, स्वामी देवप्रकाशजी के नेतृत्व में महायात्रा की तैयारियों में व्यस्त था । ठीक ८-०० बजे विशेष रूप से सजाई डोली पर पूज्य स्वामीजी का पार्थिव शरीर रखा गया । पूर्व निर्धारित समय पर परम पूज्य सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के पार्थिव देह की महायात्रा ठीक ९.०० बजे आश्रम से आरम्भ हुई। सन्त नारायण प्रकाशजी द्वारा शंख बजाकर महायात्रा आरम्भ होने की सूचना दी गई । सर्वप्रथम कन्धा देने वालों में पूज्य सन्त मण्डल प्रमुख था इसके बाद तो हजारों हाथ उठ गये डोली थामने को, पूज्य स्वामीजी की डोली तो किसी कन्धे को छू तक नहीं पायी, हाथों में ही उठाये प्रेमी मन्दिर से बाहर आश्रम परिसर में से चलते हुए श्री राधेश्याम गौ शाला की ओर से परिक्रमा लगाते हुए पिछले द्वार से स्वामी टेऊँराम धर्मशाला के बाहरी छोर से होते हुए आश्रम के मुख्य द्वार से महायात्रा आरंभ हुई । इसके पूर्व नारायण नारायण हरि-हरि व 'रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम' की धुनी के साथ बैण्ड वादक चल रहे थे । स्वामी ब्रह्मानन्द जी, संत अनन्त प्रकाशजी, संत हंसप्रकाश जी, संत वाशदेवजी, संत नामदेवजी, सांई चाण्डूराम सहित हजारों प्रेमी आंसू बहाते हुए महायात्रा में चल रहे थे । महायात्रा में लगभग दो लाख से अधिक लोग सम्मिलित थे । जिस मार्ग पर यात्रा चल रही थी, उस मार्ग के दोनों ओर मकानों की छज्जों और छतों पर भी लोगों की अपार भीड़ थी, फूल बरसाते रास्ते के मन्दिरों आश्रमों व अनेक संस्थाओं की ओर से पुष्प चक्र व पुष्प मालायें पूज्य स्वामीजी के पावन श्री चरणों में अर्पित की जा रही थी । युवा वर्ग "स्वामी शांतिप्रकाशजी अमर रहे" जब तक सूरज चांद रहेगा "स्वामी शान्ति प्रकाश जी का नाम अमर रहेगा" अपनी पुरजोर आवाज में कहते

चल रहे थे। महायात्रा लगभग १-३० बजे आश्रम के मुख्य द्वार पर लौट आई।

आश्रम परिसर के अन्दर दस बजे से ही भक्तजनों ने बाद में स्थान न मिलने की आशंका से आश्रम में बने मन्दिर व आवास स्थलों के उपर बनी छतों व छज्जों पर हजारों की संख्या में महायात्रा की वापसी के पूर्व ही स्थान घेर लिया था।

समाधि स्थल सत्संग हाल की दाहिनी ओर बनाया गया। पूज्य स्वामीजी के पार्थिव देह के अन्तिम संस्कार के लिए लगभग चार फुट ऊंचा दस फुट लम्बाई व ५ फुट चौड़ाई के आकार का चबूतरा समाधि स्थल के रूप में बनाया गया था।

१-५० पर चिता स्थल पर पूज्य स्वामीजी के पार्थिव देह को रखा गया इसी समय प्रेमियों की असंख्य निगाहें पूज्य स्वामीजी के अन्तिम दर्शन के लिए चितास्थल की ओर निहारने लगीं। पूज्य स्वामीजी का पार्थिव शरीर चंदन की लकड़ियों पर रखा गया। गौ दुग्ध से बने घी को आहुति हेतु लाया गया। इसके पूर्व पुरोहित द्वारा संत ज्ञानप्रकाशजी से विधि पूर्वक पूजन करवाया गया। चिता में मुख़ाग्नि संत ज्ञानप्रकाशजी ने दी, इसी के साथ सनातन संस्कृति के अप्रतिम सन्देश वाहक कर्म, भक्ति एवं ज्ञान की त्रिवेणी परम पूज्य सतगुरु स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज की मानव कल्याणार्थ यात्रा समापन हुई।

परम पूज्य स्वामीजी के स्थूल देह का अस्थि संचय २० अगस्त १९९२ प्रातः ७-३० बजे से चिता स्थल पर प्रेम प्रकाश संत मण्डल के नेतृत्व में पुरोहित द्वारा पूजा करवाने के उपरान्त किया गया।

२२ अगस्त पूज्यपाद सद्‌गुरु महाराजजी के अन्तिम संस्कार होने के (चाऊथा) चौथे दिन प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर में एक श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन सायं ३-४५ से ७ बजे तक किया गया। प्रेमियों के चेहरे मुरझाए हुए और दिल उदास थे तथा आंखों में विरह के आंसू थे। इस अवसर पर महामण्डलेश्वर स्वामी गोविंदानन्द, श्री साधुबेला आश्रम के महंत आचार्य स्वामी गणेशदास महाराज के प्रतिनिधि, संत आतमाराम साहिब, स्वामी नारायणदास, प्रधान सिन्धी साधु समाज, सन्त रूपाराम, स्वामी सन्तोषदास (इन्दौर), सन्त ब्रह्मानन्द, सन्त वेदप्रकाश,

सन्त अनन्तप्रकाश, सन्त उधवदास ब्रह्मचारी, सन्त नामदेव, सन्त जयदेव, सन्त अशोकप्रकाश, सन्त ब्रह्मदास, सन्त विशनदास, सन्त देवप्रकाश, सन्त श्यामलाल, सन्त टोपणदास आदि सन्तों ने पूज्य सतगुरु महाराजजी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

महाराष्ट्र के राज्य मंत्री श्री मदन बाफना, लोक सभा के सदस्य प्रो. राम कापसे, श्री पप्पू कालाणी विधान सभा सदस्य एवं उल्हासनगर पालिका के अध्यक्ष, श्री सीतलदास हरचन्दाणी पूर्व सदस्य विधान सभा, डॉ. लक्ष्मण भोजवाणी, श्री होतचन्द वाधवाणी, श्री सलामतराम पुरस्वाणी, श्री गोप बहराणी, श्री विक्योमल श्राफ, श्री वाशूलाल श्राफ, श्री ढालूमल दौलतराम, श्री सभागचन्द चावला, श्री आसनदास भेरवाणी, हीरालाल सभनदासाणी, कुन्दनदास तोतलदास, नेवन्दराम लोकवाणी, डा. अर्जन सिकायल, श्रीचन्द आहूजा, गुल शर्मा, जीवणदास आहूजा, हरदास माखीजा, मनोहर जेसवाणी, टेकचन्द मीरपुरी, बहिन लक्ष्मी सिध्वा, लीलाराम पुरस्वाणी, गोप रूपचन्दाणी एवं अन्य प्रेमियों ने पूज्य सतगुरु महाराज के गुणों का वर्णन करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। दयाल 'आशा' ने पूज्य सतगुरु महाराज के वियोग में करुणा स्वर में विरह गीत गाया। न केवल उसकी आंखों में आंसू बह रहे थे किन्तु उपस्थित सभी श्रोतागण भी विरह गीत सुनकर आंसू बहा रहे थे।

पूज्य स्वामीजी का पवित्र अस्थिकलश २३ अगस्त १९९२ रविवार को प्रात: बम्बई से जयपुर लाया गया। रेल्वे स्टेशन पर पूज्य स्वामी जी के अस्थिकलश की अगवानी के लिए पूज्य संत मण्डल के साथ हजारों की संख्या में प्रेमी उपस्थित थे। स्टेशन से अमरापुर स्थान तक एक विशेष सजे हुए रथ में पूज्य स्वामीजी का अस्थिकलश एक जूलस के रूप में लाया गया, जहां पर हजारों की संख्या में प्रेमियों ने अस्थिकलश पर श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

२६ अगस्त सायं ४ बजे से ६ बजे तक अमरापुर स्थान पर श्रद्धांजलि समारोह का कार्यक्रम रखा गया जिसमें पूज्य सन्त मण्डल, राजस्थान के विभिन्न मन्दिरों-आश्रमों के महंत, महामण्डलेश्वर, सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधि व विभिन्न राजनैतिक दलों के प्रमुखों, सांसदों, विधायकों, मन्त्रियों ने मुख्यमन्त्री श्री भैरोंसिंह शेखावत के नेतृत्व में श्रद्धांजलि

समारोह में भाग लिया व पूज्य गुरुदेव भगवान को श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

पूज्य स्वामीजी का पवित्र अस्थिकलश अमरापुर स्थान से एक विशेष वाहन में पूज्य सन्त देवप्रकाश, सन्त अनन्तप्रकाश, सन्त ज्ञानप्रकाशजी व प्रेमियों द्वारा हरिद्वार ले जाया गया जहां पर पूर्ण वैदिक मन्त्रोच्चारण के मध्य २७ अगस्त १९९२ को माँ गंगा में पूज्य स्वामीजी के अस्थियों को प्रवाहित किया गया।

नवभारत टाईम्स, जनसत्ता, इंडियन एक्सप्रेस, महाराष्ट्र टाईम्स, बम्बई सकाळ, राष्ट्रदूत (जयपुर), हिन्दुस्थान (सिन्धी), हिन्दू (सिन्धी), राजस्थान पत्रिका (जयपुर), गुजरात समाचार, पंजाब केसरी, संझा जनसत्ता, अजमेर केसरी एवं अन्य समाचार पत्रों में पूज्य सत्गुरु महाराजजी की अन्तिम महायात्रा का विवरण एवं श्रद्धांजलियां प्रकाशित हुईं।

मासिक प्रेम प्रकाश सन्देश के श्रद्धांजलि अंक में 'ज्योति में ज्योति समा गई' नामक शीर्षक के अन्तर्गत विशेष सम्पादकीय प्रकाशित किया गया जिसमें सम्पादक शंकरलाल सबनाणी व श्रीचन्द पंजवाणी ने भाव भीनी श्रद्धांजलि दी।

देश-विदेश के महानुभावों, संस्थाओं ने पूज्य सत्गुरु महाराज के प्रति अपनी श्रद्धांजलियां अर्पित करते हुये सहानुभूति पत्र भेजे। उनमें से दादा जशन वासवाणी, पूज्य स्वामी शिवेन्द्रपुरीजी, दादा गंगाराम साजनदास, श्री नारी गुरसहाणी, राष्ट्रीय कवि हूँदराज दुखायल, श्री द्वारको सुन्दराणी, दादा अमर, श्री मूरिजमल मंघनाणी, श्री राम बख्शाणी, श्री गोविन्द माल्ही, श्री रामकृष्ण आडवाणी, गुजरात विधान सभा सदस्य श्री गोपालदास भोजवाणी, श्री लोकूमल तुल्सियाणी, दादा दीपचन्द्र बेलाणी, डॉ. रेवाचन्द गोदवाणी, बहन राणी गिदवाणी, श्री बाशाराम गोगिया, कवि हरि दिलगीर, श्री हरी लौंगाणी, हेमनदास वासवाणी आदि उल्लेखनीय हैं।

पूज्य दादा जशन वासवाणी ने पुणे में श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि यह विश्वास करना कठिन है कि पूज्य स्वामी 'शान्तिप्रकाशजी' महाराज हमारे बीच नहीं रहे, परन्तु सब कुछ ईश्वर की इच्छा से ही हो रहा है। "तेरा भाणा मीठा लागे"। ईश्वर की इच्छा में ही मनुष्य की

भलाई है।

स्वामी 'शान्तिप्रकाशजी' महाराज प्रकाश स्तम्भ थे। स्तम्भ तो टूट गया है परन्तु प्रकाश अभी विद्यमान है। स्वामी 'शान्तिप्रकाशजी' महाराज शान्ति की एक मूर्ति थे। श्री स्वामीजी सेवा धर्म में विश्वास करते थे। उनके लिये जीने का अर्थ देना था। जो कुछ अपने पास है उसे गरीबों में बाँटना ही जीवन का लक्ष्य था। आज जो अजन्मे है वे भी सत्गुरु स्वामीजी को शत शत नमन करेंगे क्योंकि वे एक सच्चे महापुरुष थे। उन्होंने जो सोचा वही कहा और जो कहा वही किया। उनकी याद सदा बनी रहेगी एवं खूब महकेगी।

पूज्य स्वामी गणेशानन्दजी महाराज ने कहा कि पूज्य स्वामी शान्ति प्रकाशजी महाराज कर्मयोगी व परोपकारी सन्त थे। समाज कल्याण के अनन्त कार्यों को वे रुचि के साथ करते रहे। जैसा कि गौशाला, अस्पताल, वृद्ध आश्रम, विद्यालय, कालेज, सामूहिक विवाह, सामूहिक यज्ञोपवीत कार्य सर्व प्रशंसनीय है। इसके साथ-साथ वे ईश्वर उपासक, गुरु भक्त भी थे। ज्ञान, वैराग्य, भक्तिपूर्ण उपदेशों से न केवल सिन्ध हिन्द बल्कि विदेश के अनन्त जीवों को भी प्रकाश देकर मार्गदर्शन किया।

अन्त में ईश्वर समक्ष यही प्रार्थना करते हैं कि ऐसे महान दिव्य आत्मा स्वरूप महान पुरुष इस संसार में आयें जिससे संसार के अज्ञान, अंधकार में लोगों को तेजोमयी प्रकाश मिलता रहे व प्रेम का प्रकाश होता रहे।

स्वामी हरिदासरामजी महाराज ने कहा कि आत्मा अजर अमर है। इसका कभी नाश नहीं होता है। संयोग वियोग संसार का धर्म है। पूज्य सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज हिन्दू समाज की एकता एवं अखण्डता के लिये सतत् प्रयत्नशील थे। हमें भी इसी एकता को बनाए रखना है।

इस संकट की वेला में हम सभी का यह परम कर्तव्य है कि पूज्य श्री स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के दिखलाये मार्ग पर चलकर उनके उपदेशों एवं आदर्शों का अनुपालन करें, जिनके लिये उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि

होगी।

लालकृष्ण आडवाणी, (विपक्ष के नेता, लोकसभा) ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि पूज्यपाद सद्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाशजी महाराज के आकस्मिक देहावसान का शोक समाचार मुझे १५ अगस्त को ही मिल गया था। समाचार पाकर अत्यन्त दुःख हुआ। मुझे यह सूचना सिंगापुर से ही मिली थी। प्रभु से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को चिरशांति प्राप्त हो तथा उनके लाखों अनुयाई भक्तजनों को सहन शक्ति। स्वामी शान्ति प्रकाश जी का स्थूल शरीर भले ही नष्ट हो गया हो लेकिन अमर यशः शरीर हमें निरन्तर प्रेरणा देता रहेगा।

भैरोसिंह शेखावत (मुख्यमन्त्री, राजस्थान) ने कहा कि पूज्य स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के परलोक पधारने का समाचार पाकर अत्यन्त दुःख हुआ। हमें स्वामीजी के बताए हुए मार्ग पर चलते हुए उनके उपदेशों को अपने दैनिक जीवन में उतारना चाहिए जिससे हमे अपने देश, समाज की सेवा कर सकें। देश की एकता व अखण्डता में साधू, सन्यासियों का बड़ा योगदान रहा है। हम ऐसा समझते हैं कि वे हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनकी समाज सेवा, परोपकार चिरस्थायी है उनका मार्गदर्शन हमारे जीवन का प्रकाश है।

भारतीय संस्कृति में गुरु की महिमा अन्य विदेशी संस्कृतियों से सर्वथा भिन्न है। यहां गुरु को कहीं परमात्मा के समकक्ष तो कहीं परमात्मा से अधिक माना गया है : क्योंकि गुरु के माध्यम से ही मानव को परमात्मा का साक्षात्कार होता है। शिष्य के श्रेय एवं प्रेय के प्रदाता गुरु ही हैं।

३० अगस्त व ४ सितम्बर को तेरहवें/ सत्रहवें पर पाठों के भोग ध्वजावन्दन व भण्डारे का आयोजन किया गया। समस्त कार्यक्रमों में सहस्त्रों की संख्या में प्रेमियों द्वारा भाग लिया गया। जहां पर प्रेम प्रकाश आश्रम हैं, वहां प्रेम प्रकाश आश्रमों में व सिन्धी धर्मशालाओं में या अन्य मन्दिरों में श्रद्धांजलि समारोह आयोजित हुए। इसके अतिरिक्त विदेशों में भी श्रद्धांजलि समारोह आयोजित किये गये।

परमपूज्य सत्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाशजी महाराज की कृपा से ही श्री राधेश्याम गौशाला, जनता जनार्दन परिषद, सुन्दर शेवक सभा, स्वामी

सर्वानन्द अस्पताल के सेवा कार्य होते रहे हैं। पूज्य सत्गुरु महाराज के ब्रह्मलीन होने के कारण तीनों संस्थाओं की सभा बुलाई गई। सर्व प्रथम परम आदरणीय सत्गुरु महाराज के शरीरान्त के कारण शोक प्रस्ताव पास किया गया और उन्हें अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित की गई। तीनों संस्थाओं के सदस्यों ने परम पूज्य सत्गुरु महाराज के स्थान पर स्वामी देवप्रकाशजी महाराज को अध्यक्ष नियुक्त किया। स्वर्गधाम श्मशान भूमि का अध्यक्ष भी स्वामी देवप्रकाशजी महाराज को चुना गया। बचपन से ही स्वामी देवप्रकाशजी महाराज, सत्गुरु महाराजजी के संग में रहे। वे यत्र तत्र गुरु महाराज की सेवा करते रहे हैं। पूज्य स्वामी देवप्रकाशजी स्वभाव से विनम्र, संतोषी एवं सरलचित्त विद्वान हैं। वे सत्गुरु महाराज की ज्योति जगाते रहेंगे।

पूज्य सत्गुरु महाराज की जीवन लीला समाप्त हुई किन्तु उनकी आशीर्वाद एवं उनकी शक्ति से आज भी लोगों की मनोकामनाएं पूरी हो रही हैं। ऐसा एक निजी अनुभव श्री शंकरलाल सबनानी (ग्वालियर) से सुनाया।

बात (घटना) परम पूज्य स्वामीजी के शरीरान्त के पश्चात् की है। नवम्बर १९९२ में प्रतिवर्ष की भांति "स्वामी शान्तिप्रकाश धमार्थ चिकित्सालय, ग्वालियर द्वारा मुफ्त आँखों के आपरेशन का कैम्प, परम पूज्य गुरुवर स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज की पावन स्मृति में आयोजित किया गया।

उक्त कैम्प में अर्जनदास नामक व्यक्ति को आपरेशन हेतु भर्ती किया गया था। वह मधुमेह से पीड़ित था परन्तु भर्ती होते समय उसके रक्त एवं पिशाब में शक्कर (शुगर) की जांच के दौरान शक्कर की मात्रा सही पाई गयी और उसे भर्ती कर तत्पश्चात् उसकी आंख का आपरेशन कर दिया गया।

दो दिन पश्चात् सायं को अचानक उनके रक्त में शक्कर की मात्रा कम हो जाने के कारण वे अचेत हो गये (उस समय अन्य सभी रोगी घबरा गये) तुरन्त डाक्टरों को बुलाया गया। डॉ. किशोर मंघनानी संस्था के चिकित्सक संयोगवश उस समय वहीं थे। उन्होंने तुरन्त स्थिति को भांपकर शक्कर के दो चम्मच पानी में मिलाकर पिला दिये। इधर

सभी कार्यकर्ता पूज्य गुरुजनों को पुकारने लगे कि हे गुरुजनों हम सभी की रक्षा करना हम लोगों की लाज आपके हाथों में है । आश्रम पर भी पूज्य स्वामी गणेशानन्दजी महाराज ने गुरुजनों से प्रार्थना कर कहा कि आप चिंता न करे केवल गुरुजनों से प्रार्थना करें सब ठीक हो जायेगा । प्रत्येक कार्यकर्ता नर चाहे नारी उस समय मन ही मन पूज्य स्वामीजी को याद कर रहा था । चारों ओर एक खामोशी छाई हुई थी ।

पूज्य स्वामीजी की कृपा से कुछ ही समय में ४-५ डाक्टर वहाँ आ पहुँचे । इतने समय में इतने डाक्टर तो अस्पताल में भी नहीं पहुँच पाते । उन्होंने आवश्यक जांच कर वहीं उपचार शुरु कर दिया ।

कार्यकर्ताओं की हृदय से की गई प्रार्थना फलीभूत हुई । पूज्य गुरुजनों की कृपा से अर्जनदास जी सचेत होकर ठीक उसी प्रकार बोलने लगे जैसे वह अचेत होने से पूर्व बोल रहे थे । सभी ने मन ही मन गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता प्रकट की । साथ ही डाक्टरों ने उनके पुत्रों से पूछा कि इनको मधुमेह के लिये कौन-सी गोली कितनी मात्रा में देते हैं। उत्तर से पता चला कि उन्हें एक चौथाई के स्थान पर आधी गोली रोज (रात १ माह से) दी जाती थी जिससे कि कैम्प में जांच के दौरान शुगर की मात्रा अधिक न आ पावे । दवा की अधिक मात्रा शरीर में पहुँचने के कारण शुगर कम हो गई और वह बेहोश हो गये।

अब डाक्टरों का विचार था कि इनकी नेत्र में ज्योति (प्रकाश) शायद ही आ पावे (अमूमन मधुमेह के रोगी का जख्म बड़ी मुश्किल से ठीक हो पाता है) यह सुनकर पुनः सभी कार्यकर्ताओं को तनाव हो गया और सभी प्रातः एवं सायं आरती के समय मन ही मन गुरुजनों से याजना करने लगे ।

पूज्य स्वामीजी से की गई प्रार्थना फलीभूत हुई जब आंख की पट्टी खोली गयी तो गुरुजनों की कृपा व आशीर्वाद से उसकी आंख का आपरेशन शत प्रतिशत सफल रहा । यह देखकर नेत्र विशेषज्ञ चिकित्सक भी हैरान से हो गये । यह सब पूज्य स्वामीजी की कृपा का ही परिणाम था ।

पूज्य सतगुरु महाराज को भक्ति की शक्ति थी, किन्तु वे दिखावा

नहीं करते थे। जो भी मानसिक व शारीरिक पीड़ित उनके पास आता था वे उसे सांत्वना देते हुए कहते थे कि मन्दिर में भगवान और सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज, सत्गुरु स्वामी. सर्वानन्द महाराज की मूर्तियों को नत मस्तक प्रणाम कर आयें, वे आपको स्वस्थ करेंगे।

श्री अशोक बजाज पूना में रहता है। वह स्वयं एवं परिवार के सदस्य एवं सभी सम्बन्धी पूज्य स्वामीजी के प्रेमी हैं। अशोक बजाज की पत्नी माया को कैंसर हो गया। उसे उपचार के लिए टाटा मेमोरियल अस्पताल में ले गयें। उसकी आवश्यक जांच की गई। डाक्टरों ने सलाह दी कि उपचार करेंगे किन्तु उसकी स्वस्थ होना सम्भव नहीं। अशोकलाल उदास होकर स्वामी टेऊंराम प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धुनगर में पूज्य स्वामीजी के पास आया और उनसे अपनी पत्नी के लिए प्रार्थना की कि उस पर दया दृष्टि करें। पूज्य स्वमीजी ने उसे सांत्वना देते हुए कहा कि घबराओ नहीं, भगवान एवं सत्गुरु महाराज भला करेंगे। तुम पत्नी को यहां ले आओ। आज्ञानुसार अशोक पत्नी को पूज्य स्वामीजी के पास ले आया। पूज्य स्वामीजी ने आज्ञा की कि पहले उसे मन्दिर में ले जाओ, वहां भगवान और सत्गुरु महाराज को दण्डवत प्रणाम करवाके आओ। तत्पश्चात् पूज्य स्वामीजी ने उसे जल पढ़ करके दिया। भगवद् कृपा से अशोक बजाज की पत्नी जिसे कैंसर था वह इस भयंकर रोग से मुक्त हो गई। डाक्टरों ने दोबारा टाटा हास्पीटल में उसकी जांच की तो उसे कैंसर से मुक्त देखकर वे आश्चर्य में पड़ गये। प्यारे अशोक बजाज व उसकी पत्नी माया देवी अत्यन्त प्रसन्न हुए। आज भी माया अपने परिवार के साथ अत्यन्त प्रसन्न है।

आश्रम के निकट एक बहन मीना रहती थी। उसे जो भी सन्तान होती थी वह जन्म लेते ही मर जाती थी। उसने एक दिन करुण स्वर में पूज्य स्वामीजी को प्रार्थना की कि उसे निरोगी एवं दीर्घायु पुत्र संतान दें। उस समय पूज्य स्वामीजी के पास अखरोट पड़े थे। उन्होंने अखरोट प्रसाद रूप में मीना को दिये। मीना ने वे अखरोट आंखोंपर रखकर, तीनों अखरोट बिना तोड़े ही धीरे धीरे खा लिए। साधारणतः अखरोट तोड़कर उसका छिलका उतार कर बाद में खाया जाता है किन्तु मीना ने श्रद्धा रखकर अखरोट ऐसे ही जबा कर खा

लिए । तत्पश्चात् उसने एक दूसरे के बाद तीन पुत्रों को जन्म दिया। पूज्य सत्गुरु महाराज ने मुख से उसे कुछ नहीं कहा किन्तु प्रसाद रूप में उसे अखरोट दिये । तीन अखरोट खाने से मीना को तीन स्वस्थ पुत्र संतान प्राप्त हुई ।

मयामी में पूज्य स्वामीजी एक प्रेमी के घर में भोजन खा रहे थे वहां पर उसी बिल्डिंग में रहने वाली एक बहन पूज्य स्वामीजी का दर्शन करने आई । जिस बहन के घर में पूज्य स्वामीजी पधारे थे, उसने पूज्य स्वामीजी से विनय की कि यह बहन यहाँ ही रहती है, इसे पुत्र संतान नहीं है, कृपया आप इस पर दया दृष्टि करें । पूज्य स्वामीजी के पास उस समय फल पड़े थे । उन्होंने उस बहन को दो फल प्रसाद रूप में दिये । उस बहन ने विश्वास रखकर वे दोनों फल खाये । ग्यारहवें महीने के पश्चात् उसे एक साथ दो पुत्र हुए । पति पत्नी फूले नहीं समाये । वे भगवान व पूज्य स्वामीजी का बार बार आभार मानने लगे । उन्होंने मयामी से यह शुभ समाचार पत्र द्वारा भेजा । वह पत्र मैंने स्वयं पढ़ा । उन्होंने पत्र के साथ दोनों बेटों का एक फोटा भी भेजा ।

प्यारे नन्दलाल बदलाणी की पत्नी चन्द्रा को असहनीय पीड़ा हुई। डाक्टरों ने उपचार किया किन्तु फिर भी वह स्वस्थ नहीं हुई । दोनों पति-पत्नी का पूज्य स्वामीजी में अटूट विश्वास था । श्री नन्दलाल बदलाणी परम पूज्य सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के भांजे हैं। पूज्य स्वामीजी किसी कार्यवश बम्बई गये । श्री नन्दलाल पूज्य स्वामीजी को अस्पताल ले गये । पूज्य स्वामीजी को देखकर चन्द्रा (नन्दलाल की पत्नी) उठ खड़ी हुई और उसने प्रसन्नचित्त होकर उन्हें प्रणाम किया। पूज्य स्वामीजी ने उसके सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद करते हुए कहा ''पगली ! तुम क्यों सोई हो? तुम स्वस्थ हो । घबराओ नहीं, घर चली जाओ ! भगवान एवं सत्गुरु महाराज भला करेंगे । पूज्य स्वामीजी की कृपा से चन्द्रा ठीक हो गई । डाक्टरों ने फिर जब बहन चन्द्रा का एक्सरे लिया तो वे उसे स्वस्थ देखकर आश्चर्य में पड़ गये। उन्होंने श्री नन्दलाल से पूछा यह कैसा चमत्कार ! श्री नन्दलाल बदलाणी ने कहा ''हमारे सबसे बड़े डाक्टर पूज्य सत्गुरु महाराज यहां आये

थे। उनके आशीर्वाद से ही चन्द्रा स्वस्थ हो गई है।

भूरा नामक युवक बम्बई से सिन्धुनगर आते गुम हो गया। वह रात्रि को घर नहीं आया। माता पिता बहुत चिन्तित हुए। दूसरे दिन भी वह घर नहीं आया। तब उसकी बम्बई में खोज की गई। बम्बई विशाल नगरी है, प्रयासों के बाद भी भूरे का कुछ पता नहीं चला। उसकी माता रोती हुई प्रात: पूज्य स्वामीजी के पास आई और उसने बेटे के न लौटने की बात उन्हें सुनाई। पूज्य स्वामीजी ने उसे सांत्वना देते हुए कहा कि तुम घबराओ नहीं। प्रात:काल का समय है, तुम प्रभु को और सतगुर स्वामी टेऊंराम जी महाराज को मन्दिर में जाकर प्रार्थना करो तुम्हारा बेटा स्वयं घर लौट आयेगा। प्रेम व श्रद्धा से प्रात:काल में की हुई प्रार्थना प्रभु अवश्य सुनते हैं। भूरे की माता ने पूज्य स्वामीजी की आज्ञा के अनुसार मन्दिर में जाकर अश्रु युक्त प्रार्थना की। भगवद् कृपा, सत्गुरु महाराज की दया और पूज्य स्वामीजी की कृपा से भूरा चार दिन पश्चात् स्वयं घर लौट आया।

एक बार पूज्य स्वामीजी पीरगोठ के नजदीक लाड़कनि गांव में थे। प्रात: के समय एक माता फोनीबाई अपने मृतक बच्चे की झोली में ले आई। उसने द्रवित हृदय से स्वामीजी से प्रार्थना की कि इस बालक को लोरी दें। पूज्य स्वामीजी समझ गये कि यह लोरी देने का समय नहीं है। यह माता मुझसे करामाती (चमत्कार) कार्य करवाना चाहती है। पूज्य स्वामीजी ने कहा कि मैं (चमत्कारी) नहीं हूँ। प्रभु की इच्छा से जो कुछ होता है उसको सत् कर मानो। तब वह माता रोती हुई बोली "स्वामीजी ! यह ही बालक मेरे नयनों की ज्योति था। इसके बिना मैं सूरदास हूँ। कृपया आप मुझ पर दया दृष्टि कर बालक को जीवन दान दें। स्वामीजी बोले "तुम चिन्ता नहीं करो। प्रभु तुम्हें और पुत्र सन्तान प्रदान करेगा।" उस माता ने पूज्य स्वामीजी के वचनों पर विश्वास किया। एक वर्ष के पश्चात् उस माता को पुत्र सन्तान हुई और वह सत्गुरु महाराज का आभार मानने लगी। पूज्य स्वामीजी चमत्कार दिखाने से दूर रहते थे। वे कभी भी अपनी शक्ति का प्रदर्शन नहीं करते थे। वे कहते थे कि सन्त को चमत्कार दिखाना नहीं चाहिए। ऋद्धि सिद्धि प्राप्त कर सांसारिक कार्यों में उनका

चमत्कार दिखाना ठीक नहीं है।

गांधीनगर, कोल्हापुर में एक बहिन पुत्र सन्तान की इच्छा पूज्य स्वामीजी के पास आई और उसने विनम्रता से प्रार्थना की- "सत्गुरु महाराज! मुझे पुत्र प्रदान करें।" स्वामीजी ने कहा- "बेटी, पुत्र देने वाला तो दाता है, तुम्हें जो कुछ चाहिये उनसे मांगो।" उस बहन ने बार बार पूज्य स्वामीजी से पुत्र प्राप्ति के लिए विनती की। तब उन्होंने उसे आशीर्वाद करते एक फल खाने के लिये दिया और कहा जाकर प्रभु से प्रार्थना करो। घर आकर उसने वह फल खाया और परमात्मा से प्रार्थना की। एक वर्ष के पश्चात् उसे पुत्र संतान हुई। पुत्र प्राप्ति के पश्चात् जब वह स्वामी टेऊंराम प्रेम प्रकाश आश्रम, सिन्धुनगर-५ में आई और बड़ी प्रसन्नता के साथ पूज्य स्वामीजी का आभर व्यक्त कर कहने लगी- "सत्गुरु महाराज ! आपने मेरी झोली भरी है, मेरे सूने घर में दीपक जगाया है। मैं आपको हृदय से ऋणी हूँ। पूज्य स्वामीजी बोले- "बेटी ! हमने तो कुछ नहीं किया, देने वाले (सत्गुरु महाराज) ने तुम्हें पुत्र प्रदान किया है। उन्हीं की ऋणी रहना।

पूज्य स्वामीजी के एक श्रद्धालु शिष्य की बेटी अत्यन्त अस्वस्थ हो गई। डॉक्टरों ने कहा कि इसके दिल का वाल्व खराब है, उसका ऑपरेशन होगा। एक दिन दोहपर को मैं पूज्य स्वामीजी के श्रीचरणों में बैठा था तो एक लेडी डॉक्टर अन्दर आई और उसने पूज्य स्वामीजी से कहा- "इस लड़की के दिल के दोनों वाल्व खराब हो गये हैं, मेरी सलाह है कि शीर्घ ही, के.ई.एम. अस्पताल में उसके दिल का ऑपरेशन करवाया जाय। लड़की खाती पीती भी नहीं, बहुत कमजोर हो गई है, उसकी शीघ्र ही व्यवस्था की जाय।" यह सुनकर स्वामीजी शांत रहे। संध्याकाल परिवार के सम्बन्धियों को इस बात का पता चल गया। दूसरे दिन लड़की को के.ई.एम. अस्पताल में दाखिल किया गया। विशेषज्ञों ने उसकी जांच की। उन्होंने भी सलाह दी कि लड़की के वाल्व खराब हो गये हैं, ऑपरेशन करके दूसरे वाल्व लगाने पड़ेंगे। इस ऑपरेशन एवं वाल्व के लिये कम से कम दस-बारह हजार खर्च होगा। घर की आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं थी; और मेजर ऑपरेशन होने के कारण यह भी निश्चय नहीं था कि ऑपरेशन

के बाद लड़की बच सकती है या नहीं, क्यों कि वह बहुत ही कमज़ोर हो गई थी। घर के सम्बन्धी बीमार बेटी को पूज्य स्वामीजी के यहां ले आए और विनती की- "प्रभु हम लौटकर नहीं जायेंगे, बेटी आपकी शरण में है, जब तक वह स्वस्थ नहीं होगी तब तक हम भी उसके साथ यहीं रहेंगे। आप ही सच्चे डॉक्टर हैं, इसका इलाज आपके द्वारा ही सम्भव है।" लड़की के पिता ने आंसू बहाते हुये कहा-

भटक भटक मैं हारा, अब स्वामी तेरा सहारा।
लौट नहीं हम जायेंगे, मन की मुरादें पायेंगे।।
तेरी ही यह बेटी है यहां पायेगी छुटकारा।
नहीं छोड़ेगीं ये द्वारा, है स्वामी तेरा सहारा।।

स्वामीजी ने कहा- "बेटा ! घबराओ नहीं, सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज कुशल करेंगे। प्रतिदिन सुबह को उठकर बेटी को साथ लेकर सत्गुरु टेऊँरामजी महाराज की मूर्ति के पास जाकर प्रार्थना करो, सब ठीक हो जायेगा। बेटी, माँ-बाप के साथ एक महीना वहां आश्रम में रही और बड़ी श्रद्धा के साथ स्वामीजी की आज्ञानुसार सुबह-शाम गुरु महाराज की मूर्ति के पास जाकर प्रार्थना करी रही। प्रभु एवं सत्गुरु की कृपा से वह स्वस्थ हो गई। स्वामीजी का एक अन्य प्रेमी श्री भगवानदास केसवाणी किसी शारीरिक पीड़ा से पीड़ित हुआ। वह स्वामीजी की शरण में आया। कुछ दिनों के लिए मौन धारण कर स्वामीजी के चरण कमलों में बैठ गया। बस कुछ ही दिनों में उसे पीड़ा से मुक्ति मिल गई।

माता रुकीबाई जो सदैव भोजन बनाती है, जब कभी वह बीमार होती है और मन में ही स्वामीजी से प्रार्थना करती है तो उसका दुख दूर हो जाता है।

एक बार डॉ. कोटूमल रामरख्याणी अस्वस्थ थे। वे श्रद्धा और विश्वास के साथ प्रतिदिन स्वामीजी के चरण कमलों के आकर बैठते थे। प्रभु की कृपा से स्वस्थ हो गये। कई दुखी प्रेमी स्वामीजी से जल पढ़ाकर ले जाते थे। वे उस जल को अमृततुल्य पान कर दुखों से निवृत्ति प्राप्त करते थे।

पुणे में रहने वाले नवयुवक मुरली का दिमाग खराब हो गया, उसके सम्बन्धी उसे स्वामीजी के पास ले आए । सत्गुरु महाराज की कृपा से वह नौजवान ठीक हो गया । अब वह नौजवान सिंगापुर में व्यवसाय करता है ।

माता रुकीबाई के पति टोपणदास को ऐसी बीमारी हुई, जिससे छुटकारा पाना मुश्किल होता है । इलाज तो किया गया किंतु माता रुकीबाई ने प्रार्थना की- "स्वामीजी ! मेरी बिगड़ी बनाना ।" स्वामीजी ने कहा- "भगवान भला करेगा ।" स्वामीजी के वचन सत् हुए । श्री टोपणदासजी स्वस्थ हो गए । ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जिसका इलाज सांसारिक डॉक्टरों व वैद्यों के पास नहीं, उसका इलाज सन्तों के पास है । केवल श्रद्धा व विश्वास के साथ प्रभु व सन्तों की शरण लेनी चाहिए ।

श्री मुरलीधर खेमाणी की धर्मपत्नी रत्नाबाई को सिर में इतना दर्द हुआ कि सिन्धुनगर के सभी डॉक्टरों ने इलाज किया किंतु छुटकारा नहीं मिला । बम्बई की बड़ी बड़ी अस्पतालों के डॉक्टरों ने निरीक्षण किया और राय दी कि रत्नाबाई के दिमाग का ऑपरेशन होगा । नायर अस्पताल के मस्तिष्क विशेषज्ञ डॉ. चौबल ने उसके दिमाग के ऑपरेशन की तिथि निर्धारित की । भाई मुरलीधर पूज्य स्वामीजी के पास आया और उसने यह समाचार स्वामीजी को सुनाया । स्वामीजी ने कहा कि रत्ना का ऑपरेशन नहीं करवाना । मुरलीधर फिर भी पत्नी को निर्धारित तिथि पर नायर अस्पताल ले गया । किसी कारण वश डॉक्टर ने उस दिन ऑपरेशन नहीं किया । मुरलीधर पत्नी को सिन्धुनगर लौटा लाए। पत्नी को घर में बिठाकर स्वयं स्वामीजी के पास आया और बोला, "स्वामीजी ! दया करो, रत्ना को बहुत दर्द है, हमने आपका कहना नहीं माना, आज उसे ऑपरेशन के लिये ले गये किंतु डॉक्टर ने ऑपरेशन के लिए फिर दूसरी तिथि निर्धारित की है । रत्ना तो घबरा रही है, बहुत व्यथित है, आशीर्वाद करें ।" स्वामीजी ने कहा- "जाओ, जल्दी जाओ, जो घरके नजदीक डॉक्टर हो उसकी जाकर दवा करो ।" मुरलीधर जैसे ही घर आया अपनी पत्नी रत्ना को ज्वर से अत्यंत व्यथित देखा। वह स्वामीजी की अज्ञानुसार घर के नजदीक डॉ. सतरामदास के अस्पताल में गया । वहां उस समय डॉ. नाथाणी बैठे थे, मुरलीधर उस डॉक्टर

को घर ले आया। डॉक्टर ने कैप्सूल लिखकर दिये। उस समय रत्ना का ज्वर १०३ था। मुरलीधर बाजार से कैप्सूल लेकर आया और सत्नाम साक्षी कहकर स्वामीजी का ध्यान कर वह कैपसूल रत्ना को दिया। दो घण्टे बाद ज्वर तो चला गया, जो सिर में दर्द था वह दर्द भी खत्म हो गया। जहां दिमाग विशेषज्ञों ने ऑपरेशन के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं बताया, सन्तों की आशीर्वाद ने असम्भव को सम्भव बनाया, सूली को कांटों में बदल दिया। मुरलीधर और रत्नाबाई स्वामीजी का आभार मानने लगे।

स्वामीजी विद्वान, ज्ञानी, ध्यानी एवं सिन्ध के महान् सन्त स्वामी टेऊंरामजी महाराज के पीठाधिपति होते हुए भी नम्रता की प्रतिमूर्ति थे। उनके पुरुषार्थ, परिश्रम, प्रेरणा, प्रयास से अनेक सेवा के कार्य चलते थे, कई बड़े बड़े उत्सव होते रहे, कई बार विभिन्न सम्मेलनों का आयोजन किया जाता रहा। ऐसे उत्सवों पर सदैव पूज्य स्वामीजी आभार मानते हुए जब व्याख्यान देते थे तो मन भर आता था। वे कहते हैं- "मैं प्रज्ञाचक्षु हूँ, मैं अपनी क्रिया स्वयं नहीं कर सकता, किसी दूसरे का सहारा लेना पड़ता है, ये जो कुछ कार्य या उत्सव हो रहे हैं वह प्रभु एवं सत्गुरु महाराज की कृपा व आप लोगों के सहयोग से। आप लोग ही सब कार्य करते हैं, इसलिये मैं आप लोगों का आभारी हूँ।"

पूज्य स्वामीजी के पास जब कभी कोई सन्त महात्मा आते थे तो वे स्वयं उठकर उन्हें नमस्कार करते थे। कभी कभी तो उनके पांव भी छूते थे, उनका सत्कार करते थे और तत्पश्चात् ऐसा भी कहते थे- "महाराज ! दास से कोई गलती हो गई हो तो क्षमा करना।"

रास्ते में चलते चलते कई छोटे बच्चे स्वामीजी के पांव छूते थे तो स्वामीजी रुक जाते थे और जो प्रेमी उनके साथ होता था उससे कहते थे धीरे धीरे चलो ताकि इन बच्चों को ठेस न लगे। ये सब मेरी आंखों के तारे हैं।

स्वामीजी के पास कई गुणीजन, सन्त, गायक आते थे तो संध्याकलीन सत्संग में कई बार स्वामीजी स्वयं प्रवचन न कर उनको प्रमुखता देते थे।

एक बार बड़ौदा स्टेशन पर स्वामीजी रेलगाड़ी की प्रतीक्षा में खड़े थे, कई प्रेमी उनके साथ थे। वहां एक सज्जन, जो स्वामीजी के गांव का था, उसने स्वामीजी से प्रश्न पूछा- "सत्गुरु करने से क्या लाभ है?" स्वामीजी ने कहा- "भाई, इसका उत्तर दूं या प्रत्यक्ष दिखाऊं।" प्रेमी ने कहा- "प्रत्यक्ष दिखाएं तो अच्छा है।" स्वामीजी ने विनम्र भाव से कहा- "आप मेरे गांव के रहने वाले हैं, आप मुझे बचपन से पहचानते हैं, तब मैं क्या था, अब में क्या हूँ?" प्रेमी ने कहा- "तब तो आप एक साधारण व्यक्ति थे, अब लाखों लोग आपके पांव छूते हैं, आपकी शरण में आते हैं, आप एक महान सन्त हैं।" स्वामीजी बोले- "तब और अब में जो अन्तर तुम्हें दिखाई पड़ात है यह सब सत्गुरु की ही कृपा है। गुरु महाराज ने ही मुझे नाम का दान दिया, आध्यात्मिक मार्ग बताया।"

स्वामीजी अपना श्रेय सत्गुरु स्वामी टेऊंरामीजी महाराज एवं सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज को देते थे। वे इतने तो विनम्र थे कि अपने काव्य में अपने नाम के स्थान पर सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का नाम लिखते थे।

प्रेम प्रकाश आश्रम उल्हासनगर के वार्षिक उत्सव में जब सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज पधारते थे, तो स्वामीजी फूले नहीं समाते थे, बड़ी विनम्रता के साथ उनकी सेवा करते थे, उनके श्रीचरणों में बैठते थे। उन दिनों अगर कोई सवाली आता था तो स्वामीजी उसे सत्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के पास भेजते थे।

उत्सव में बड़ी भीड़ रहती है, फिर भी स्वामीजी ने केवल सन्तों के कमरों में जाकर वरन् सद्गृहस्थ प्रेमियों के कमरों में भी जाकर पूछते थे- "आपको कोई कष्ट तो नहीं? यदि कोई त्रुटि हो तो दास को क्षमा करना।"

स्वामीजी मांस भक्षण के विरुद्ध प्रचार करते थे, जीव दया की ज्योति जगाते थे, किसी भी ऐसे उत्सव में सम्मिलित नहीं होते थे, जहां मांस आदि तामसी भोज होता था।

एक बार पूज्य स्वामीजी गांधीनगर कोल्हापुर में श्री राधामल के पुत्र के विवाहोत्सव में जाने वाले थे, उसी उत्सव में सन्त साईं जीवणराम एक दिन पहले वहां पहुँच गये। श्री राधामल ने विचार किया कि

स्वामीजी रात को आ जायेंगे, इसके पहले सन्त जीवणराम को मांस खिलाया जाय, क्योंकि स्वामीजी की उपस्थिति में तो मांस खिलाया नहीं जा सकता। दोहपर के समय जब सन्त जीवणराम को खाने के लिये मांस दिया गया तब सन्त जीवणराम ने क्रोधित होकर मांस का कटोरा फेंकते हुए कहा कि तुम लोगों ने मांस क्यों बनाया है? तुम को पता नहीं कि आज शान्तिप्रकाशजी यहां आने वाले हैं? सब मांस फेंक दो। स्वामीजी के संकल्प ने सन्त जीवणराम के मन में भी परिवर्तन ला दिया।

सन्तों के आशीर्वाद से असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाते हैं। स्वामीजी का एक प्रेमी अमृतलाल कुकरेजा बैंक ऑफ इण्डिया की मौखिक परीक्षा में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर गलत दे आया। जब वह स्वामीजी के पास आया तब स्वामीजी ने पूछा- "बेटा! परीक्षा कैसी रही?" अमृत ने उदासीनता के स्वर में कहा- "स्वामीजी! प्रश्नों के उत्तर गलत दे आया हूँ।" स्वामीजी ने कहा- "बेटा! घबराओ नहीं, तुम से पूछे गये प्रश्नों के उत्तर हम देंगे।" कुछ दिनों के पश्चात् अमृतलाल को बैंक से पत्र आया कि तुम अनुत्तीर्ण हुए हो। अमृत ने यह बात स्वामीजी को सुनाई। स्वामीजी ने कहा- "बेटा! चिंता न करो, सब ठीक हो जाएगा, जो कुछ होता है वह प्रभु के आदेश से होता है। जब प्रभु चाहेंगे तब तुम्हें उसी बैंक में नौकरी मिल जाएगी।" स्वामीजी के वचन सत्य हुए। कुछ महीनों के पश्चात् अमृत को उसी बैंक में नौकरी की नियुक्ति का आदेश आया। अनुत्तीर्ण को उत्तीर्ण किया गया। यह सन्तों की ही कृपा थी।

सच्चे सन्त अन्तर्यामी होते हैं, घट-घट के जाननहार होते हैं। स्वामीजी के बड़े श्रद्धालु एवं प्रेमी श्री द्वारकादास अचानक अस्वस्थ हो गए और उनकी अन्तिम घड़ी दीख पड़ती थी, उस समय उनकी धर्मपत्नी ने स्वामीजी की मूर्ति का आव्हान करते हुए कहा-"हे स्वामीजी! दास के यहां अब न आओगे तो कब आओगे? अपने शिष्य को अन्तिम दर्शन दो।" माता ने भीगी आंखों से ऐसी पुकार की कि उसी समय स्वामीजी वहां पहुँच गये और श्री द्वारकादास जी को दर्शन दिया। श्री द्वारकादास जी की पत्नी यह देखकर आश्चर्य में पड़ गई कि अभी अभी स्वामीजी को पुकार रही थी और वे आ भी गए। मेरा अनुभव है जब जब मैं पूज्य स्वामीजी को याद करता हूँ तब

तब उनका दर्शन हो जाता है, कभी जागृत में तो कभी स्वप्न में भी। कभी कभी तो रास्ते में चलते चलते ही दर्शन हो जाते हैं।

एक बार मैं अपने घर में पूज्य स्वामीजी के विषय में कुछ लिख रहा था और लिखते-लिखते उनका ध्यान कर रहा था, तो दरवाजे पर खटखटाहट हुई। मैंने दरवाजा खोला तो वहीं स्वामीजी के परम शिष्य श्री सन्मुखलाल (देवप्रकाशजी) थे, "दयाल जी ! परम पूज्य स्वामी जी आये है" मैंने पूछा कहा हैं? मैं अभी-अभी उन्हें याद कर रहा था। वे बोले स्वामीजी बाहर कार में बैठे हैं, संत वाधूराम की पुण्य तिथि के उत्सव में सत्संग करने के लिए उल्हासनगर-४ चलेंगे। स्वामीजी ने आज्ञा की है कि आप भी हमारे साथ चलें। मैं शीघ्र ही उनके साथ गया। मन में विचार किया कि मैंने स्वामीजी को घर में याद किया वे घर के नजदीक आ गये।

मुझे स्वामीजी के नजदीक रहने के सौभाग्य प्राप्त हुआ है। कई बार मेरे मन में जो बातें या विचार उत्पन्न होते थे वे ही थोड़े समय के बाद परम पूज्य स्वामीजी के मुख से सुनता थे और सुनकर यह प्रतीत होता था कि स्वामीजी मेरे मन की बात जान गये है। ये गुरु-शिष्य की विचार धारा में यह समानता गुरु की ही अनुकम्पा का परिणाम है।

काव्य रचना:- भक्ति साधना करते करते जो विचार-तरंगें पूज्य स्वामीजी के मन में तरंगित हुई, वे काव्य रूप में प्रकट हुई। उन्होंने सिन्धी एवं हिन्दी भाषा में काव्य रचना की है। उनके सिन्धी काव्य का संग्रह 'भजन बहार' 'भजन फुलवाड़ी' 'भजन सुधा' प्रकाशित हुए हैं। उनके हिन्दी काव्य का संक्षेप में उल्लेख प्रस्तुत है। वे संगीत के भी मर्मज्ञ थे। उन्होंने भिन्न-भिन्न भारतीय रग-रागनियों के आधार पर काव्य रचना की। उनके पदों में लय है, संगीतात्मता है।

गुरु महिमा:- भारतीय संत कवियों की परम्परानुसार पूज्य स्वामी जी ने भी अपने काव्य में गुरुदेव की महिमा गाई है। उनके मन में गुरु के प्रति अगाध श्रद्धा एवं निष्ठा थी जो उनके काव्य से प्रतिभासित होती है। स्वामीजी ने अपने प्रत्येक पद में अपना नाम प्रयोग न कर अपने सत्गुरु स्वामी टेऊंराम महाराजजी का नाम प्रयोग किया है। स्वामीजी गुरु की स्तुति गाते हुए कहते हैं।

सत्गुरु कीना कार्ज पूरा,

बहुत जन्म से बिछड़ी हुई सुरति अपने घर से,

दया करके गुर मेल मिलाया हरिया सकल विसूरा ।

माया के पटल के कारण जीवात्मा अपने सत् स्वरूप अर्थात् ब्रह्म स्वरूप को भूल गया, उनकी सुरति संसार की ओर थी, गुरु की अनुकम्पा से अन्धेरा मिट गया, जीवात्मा का ब्रह्म से मिलन हुआ, भ्रमों एवं क्लेशों का विनाश हुआ ।

मछली जैसे जल को चाहे, भौरा चाहे पुष्पन को

भूखा जैसे अन्न को चाहे, गुरमुख चाहे संतन को,

सत्गुर ऐसे तुमको चाहूं जैसे ताल मराल को ।

उपर्युक्त पंक्तियों में पूज्य स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज उपमालंकार द्वारा गुरु के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करते हुए कहते हैं कि जैसे जल बिन मीन तड़पती है, वह जल की प्यासी होती है, भ्रमर पुष्पों को चाहते हैं, भूखा मनुष्य अन्न का इछुक होता है, गुरमुख मनुष्य संतों के संग का चाहक होता है उसी प्रकार मैं भी सत्गुरु महाराज के दर्शन का अभिलाषी हूं ।

कहे टेऊं गुर से श्रवन कीजे, दूरेपन की भ्रान्ति छीजे,

निकट लखावे मेल मिलावे ऐसे सत्गुर पर बलहारी ।

जीव, भ्रान्ति के कारण परमात्मा को अपने से दूर मान बैठा है। जब वह गुरु से ज्ञान की प्राप्ति करेगा तब उसे यथार्थ का भास होगा। अर्थात् जिसे वह दूर समझ बैठा था वह उसे निकट दीख पड़ता है। और जीव का ब्रह्म से तादात्मय हो जाता है । स्वामीजी कहते हैं मैं ऐसे सत्गुरु महाराज पर न्यौछावर जाऊं जो मेरा ब्रह्म से तादात्यम करवाता है ।

दर्शनिक विचार:- स्वामीजी ने ब्रह्म के निगुर्ण एवं सगुण रूप दोनों का अपने काव्य में उल्लेख किया ।

ब्रह्म:- कबीर की भांति स्वामीजी ने ब्रह्म के लिए नारायण, राम कृष्ण, हरि इत्यादि नामों का प्रयोग किया है । वे यत्र तत्र सर्वत्र एक

ब्रह्म का साक्षात्कार करते हुए कहते हैं:-

आदि नारायण अन्त नारायण, मध्य नारायण नित नारायण,

इहां नारायण उहां नारायण, नारायण से जीउ जकड़िये ।

ब्रह्म अनादि है, अर्वचनीय है, सर्वव्यापी है ।

मन में मोहन तन में कृष्ण, नस नस में नन्दलाल रे ।

मालिक बिन घट को ना खाली, सभ घट में दुनिया का वाली।

स्वामीजी 'तत् त्वम असि' महावाक्य का निरूपण करते हुए कहते हैं-

साक्षी बनकर देख तमाशा, हर्ष शोक मत करना ।

खोज रहे जिस पारब्रह्म को सो तो अपना आप तूं ही

काहे कारण खोजो हरि को जल थल जंगल मध्ये,

तेरे से भिन्न और न को हरि सुमर शिवोहं जाप तू ही ।

तुम ही ब्रह्म हो । जिस सत् चित् आनन्द रूप की तू खोज में हो वह तू स्वयं हो । इसलिए 'सोऽहं' के मन्त्र की साधना करो ।

जीव:- स्वामीजी कहते हैं कि जीव अविद्या एवं मोह की नींद के कारण अपने वास्तविक स्वरूप को भूल गया हैं, जब वह जागृत अवस्था में होगा तब उसे साक्षी स्वरूप का साक्षात्कार होगा :-

जागो जागो मेरे मनवा मोह नींद से जागो रे ।

जीव अज्ञानवश अपने आत्म स्वरूप को भूल कर ब्रह्म को खोजने के लिए मथुरा, द्वारका इत्यादि स्थानों पर जाता हैं । वे कहते हैं वह पारब्रह्म तो हमारे शरीर में व्यापक है उसे ढूंढने के लिए मथुरा द्वारका जाना व्यर्थ है ।

खोज रहे जिस परमेश्वर को दूर नहीं वह पास तुम्हारे,

मोहन मिलने के लिए सुजाना मथुरा द्वारका धाम न जाना,

मन में मोहन तन में कृष्ण, नस नस में नन्दलाल रे ।

जीव बहिर्मुखी होकर दुख अनुभव करता है, और स्वयं को ब्रह्म से दूर समझता है । जैसे ही वह अंतर्मुखी होता है, उसे आत्मान्द

की उपलब्धि होती है । इसलिए स्वामीजी जीव को अन्तर्मुखी होने का आदेश देते हुए कहते हैं :-

बाहरमुक्त को मन त्यागो, अन्तरमुख हो जाना रे
अन्तर मुखिया सदा सुखिया, बाहर मुखिया सदा दुखी,
बाह्य वस्तु बाहर त्यागो, अन्तर सुरत जमाना रे ।

जीव इन्द्रिय भोग के चक्र में आकर युगों से जन्मों के चक्र में फिर रहा है ।

इन्द्रिय घाट पर बैठ युगों से, बाहर जग को देख रहे,
देखत देखत बहु युग बीते, अब ना अलसान रे ।

जगत्:- जिस प्रकार कोई जादूगर अपनी माया शक्ति के द्वारा विचित्र सृष्टि करने में समर्थ होता है, वही दशा ईश्वर की भी है । जादू उन्हीं लोगों को मोह में डाल सकता है जो उस इन्द्रजाल के रहस्य को नहीं जानते हैं, परन्तु उसके रहस्य जानने वाले पुरुषों के लिये वह इंद्रजाल मोह का विषय नहीं होता । ठीक इसी प्रकार अद्वैत तत्व ज्ञानियों के लिए इस जगत् की सत्ता निर्मूल है । स्वामीजी जगत् को ब्रह्म रूपी जादूगर का खेल मानते हैं, जिसका कोई अस्तित्व नहीं जगत् भी ब्रह्म की मिथ्या माया है...

जादूगर की मिथ्या माया, देखने मात्र को खग छाया,
ज्यों नट खेला, मार्ग मेला, जानो वैसे जागत् तमाशा ।

यह जगत् स्वप्न मात्र है, मरुस्थल समान सत् भासता हैं, परन्तु है असत्य एवं नश्वर । जिस प्रकार मृग मरुस्थल को जलस्थल समझकर दौड़-दौड़ कर मर जात है, उस प्रकार जीव भी संसार को सत् समझकर संसार के नाना पदार्थों को प्राप्त करने के लिये दौड़ता फिरता है, दौड़ दौड़ कर मर जाता है । चातक भी अज्ञानवश धुएं को मेघ समझकर अपने नेत्रों को गंवाता है, जीव भी इस प्रकार असत् जगत् को सत् समझकर अपने पांवों पर आप कुल्हाड़ी मारता है । इसलिए स्वामीजी साधक को सचेत करते हुए कहते हैं :-

ब्रह्म पिपासू उत्तम जज्ञासू, छोड़ जगत् की सगरी आशा,
सपने सम जग मिथ्या जानो मरुस्थलके सलिल समानो,
मृग धावे बूंद न पावे, भटकत दे निज स्वासा ।
मेघ मानकर चातक धावे, पड़कर धुएं नैन गंवावे ।
कांपत निशि भर रहत उदासा ॥

पूज्य स्वामीजी के इष्ट भगवान श्रीकृष्ण थे । भगवान कृष्ण की अनुकम्पा का उल्लेख करते हुए स्वामीजी कहते हैं :-

कृष्ण भजन से जो कुछ मिलिया सब को सो बतलाता हूं ।
बहुत जन्म से पीते आए दूध माता की गोदी में,
ऐसी चाल चली श्रीकृष्ण दूध नहीं वह पीता हूं ।
दासोहम् यह मंत्र गुर का रैन दिवस मैं रटता था,
माखन चोर ने दा हर लीनी, दा बिन अब तो गाता हूं ।
चौरासी लख योनि नगर में, फिर फिर चक्र लगाते थे,
कर्मन का धन खोई लिया हरि, अब तो वहां न जाता हूं ।
बहुत कल्प से कृष्ण मेरा झगड़ा चलता आता था,
कह टेऊं गुर ऐसे कीने अलग नज़र नहीं आता हूं ।

कवि के अन्त:करण में भगवान श्री कृष्ण के प्रति इतना तो अनुराग उत्पन्न हुआ कि वे श्रीकृष्ण का साक्षात्कार कर जीवन मुक्त हो गए। अब उन्हें माता के दूध पीने की आवश्यकता नहीं अर्थात् अब वे जन्म मरण के चक्र में नहीं आएंगे । कवि कहते हैं कि वे साधनावस्था में दासोहं के मंत्र का जाप करते थे, अर्थात् स्वयं को कृष्ण का दास मानकर विनती करते थे । अब भगवान कृष्ण ने ऐसी कृपा कर दी कि उनसे 'दा' हर लिया, इसलिए कवि अब सोऽहं का मंत्र साधते हैं, अर्थात् वह मैं ही हूं ।

जै श्री कृष्ण बोल प्यारे ।
भवसागर से बेड़ा तेरा पल में पार उतारे ।
जै श्री कृष्ण पांच वरण का मन्त्र बड़ा उत्तम है,

गुर कृपा से जिसको मिलिया तिसके दूख निवारे।

कलिकाल में नाम का अधिक महत्व है पूज्य स्वामीजी कहते हैं जय श्रीकृष्ण का यह मन्त्र सर्वोत्तम हैं, इस मन्त्र की साधना करने से जीव संसार रूपी भवसागर से पार उतर जायेगा। जिसको यह मन्त्र गुरु कृपा से मिलता है उसके सभी कष्ट दुःख दूर हो जाते हैं।

पूज्य स्वामीजी नाथ सम्प्रदाय एवं सगुण सम्प्रदाय से प्रभावित दीख पड़ते हैं। उन पर कबीर व सूरदास का प्रभाव विशेषकर है। हठ योग की साधना में साधक समाधि लगाकर अपनी सुरति शब्द अर्थात् गुरु मन्त्र के साथ जोड़कर आनन्दावस्था में मग्न रहता है।

सुरति शब्द मिल पवन कला से अपने घर में आई,

निति बासर वहां करे क्रीड़ा- पाय सुख भरपूरा।

मेरु दशा में प्राणवायु को वहन करने वाली कई नाड़ियाँ हैं जिनमें से कुछ का आभास हम सांस लेते समय पाते हैं। जो नाड़ी बाईं ओर है उसे इड़ा और जो दाहिनी ओर है उसे पिंगला कहते हैं। मौजी कबीर ने अनुप्रास मिलाने के लिए इनकी जोड़ी का नाम 'इंगला-पिंगला' बना लिया था। स्वामीजी ने भी कबीर की भांति इंगला-पिंगला का वर्णन किया है।

इंगला-पिंगला सुख मन अंदर, सुमरो सोऽहं निरंतर,

प्रान अपान की मुक्ति लेकर स्वास उठाओ नासन से।

योग साधना द्वारा आनन्द की उपलब्धि का उल्लेख करते हुए पूज्य स्वामीजी कहते हैं-

भवन चतुर्दश आनन्द छाय, देन लागे बधाई,

आये कमल पुनि दशमें द्वारे, बाजे अनहद तूरा।

योगी के नादासक्त चित का चित्रण प्रस्तुत करते हुए स्वामीजी अनहद् आवाज की चर्चा करते हैं :-

घट अन्दर नित घंटा बाजे, अति सूक्ष्म अति मीठा रे।

अंतर्मुख हो तांको सुनते, चलना प्रिय मकाना रे।

कहे टेऊं हरि रंग महल में, बहु विधि बाजे बाज रहे।

योगि सुन सुन आनन्द पावहिं गुर बिन होय न ज्ञाना रे ।

राम नाम की महिमा:- स्वामीजी नाम की महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं, इस भवसागर से पार जाने के लिए राम नाम के स्मरण के बिना कोई दूसरा साधन नहीं । स्वामीजी ने यद्यपि योग मार्ग का उल्लेख अपने काव्य में किया हैं तदापि उन्होंने नाम स्मरण को अधिक महत्व दिया है ।

राम नाम का सुमरण कीजै, जाते होइ उद्धारा,

राम नाम सम और न साधन, भव से तारन हारा ।

स्वामीजी के राम, धनुर्धारी राम हैं, उन्होंने परब्रह्म के लिए भी राम शब्द का प्रयोग किया है ।

पूज्य स्वामीजी राम नाम के स्मरण का आदेश देते हुए कहते हैं-

बंदा राम नाम मुख बोल रे तेरा लागे कछु ना मोल ।

भजन की महत्ता:- भजन की महत्ता दर्शाते हुए स्वामीजी कहते हैं भजन द्वारा जीव प्रभु का साक्षात्कार कर सकता है, जीवन मुक्त हो सकता है ।

भजन हरि का हरि से मेले, यम से दे छुटकारा ।

भजन की परिभाषा देते हुए स्वामीजी कहते हैं-

भजन नाम है चित्त चिन्तन का ।

ब्रह्म का चिन्तन ही भजन है ।

भगवद् भजन बिना जीव इस संसार रूपी भवसागर से पार नहीं हो सकता ।

रेती से भले घृत निकाले, बांझ पुत्र भले ऊपजे,

भजन बिना नर तरे न भव से, तुलसीदास परमानी ।

संसार के जितने भी व्यापार हैं वे झूठे हैं, भगवद् भजन रूपी व्यापार ही साचा है-

भजन हरि का करो प्राणी, हरि भजन है साचा जग में ।

कलियुग में प्रभु प्राप्ति का सुगम साधन भजन है-

बंदा भजन करो भगवान का यह मार्ग है कल्याण का,

कलिकाल में पार तरण को सुगम यत्न है हरि स्मरण का,

यह कहना वेद पुरान का

हरि सेवा एवं हरि स्मरण ही सत्कर्म है, इसलिए जीव को भ्रम एवं चिन्ताओं का परित्याग कर प्रभु स्मरण में प्रवृत्त होना चाहिए ।

काम जगत् में काम न आए, काम सच्चा हरि सेवा,

कहे टेऊं हरि भजन करो नित छोड़ फिक्र सब फंदा ।

सोऽहम् का जाप- कवि 'सोऽहम्' मन्त्र की साधना पर बल देते हुए कहते हैं-

रे मन मेरे सोहम् रटले,

स्वास स्वास से सोहम् रटकर, जग के बंधन कटले ।

जितने मन्त्र मुक्ति के हैं, इकते दूजे ऊंचे,

सब से ऊंचा सोहम् मन्त्र महा बीज सो समझले ।

ब्रह्म ज्ञानिन की सहजे भाषा, सोहं सोहम् जानो,

जीवन मुक्ति आनन्द पावहिं ताते उर में रटले ।

मुक्ति प्राप्ति के लिये जितने भी मन्त्रों की साधना की जाती है, कवि कहते हैं उन सब मन्त्रों में 'सोऽहम्' का मन्त्र सर्वोत्तम सर्वोपरि है । ब्रह्म ज्ञानी तो निशदिन इसी मन्त्र का जाप करते हैं । यह मन्त्र आनंद एवं जीवन मुक्ति प्रदान करता है ।

सत्संग- ज्ञानोपार्जन के लिए सत्संग अर्थात् संतों के संग की आवश्यकता है । स्वामीजी सत्संग की महिमा गाते हुए कहते हैं-

अमृत वेला अमृत बरसे भर भर प्याला पीजे जी

साध संगति में वचन सुधा के साधु बरसा करते जी,

चलकर वहां अमृत पीजे, पीकर युग युग जीयो जी ।

सत्संग में सन्तजन अमृत रूपी वचनों की वर्षा करते हैं । वहां जाकर अमृत रूपी वचनों का श्रवण करने से आध्यात्मिक ज्ञान की वृद्धि कर सकते हैं ।

मनुष्य देह का महत्व- पूज्य स्वामीजी मनुष्य-देह का महत्त्व बखानते हुए कहते हैं।

हरि मन्दिर में हरि बिराजे, ता में नित दीदार करो,
मानुष तन ही हरि मन्दिर है, महिमा जाकी वेद कहे,
चतुर पदार्थ का यह केन्द्र तांका तुम सत्कार करो।
परम मनोहर हरि मन्दिर यह नित ही तेरे साथ रहे,
दूर गमन की नहीं जरूरत अपने पर ऐतिबार करो।

मनुष्य की देह प्रभु का पवित्र मन्दिर है। मनुष्य जन्म में ही चारों पदार्थ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। हम इस मानव-जीवन का मूल्यांकन नहीं करते। परम मनोहर प्रियतम को ढूंढने के लिए बहिर्मुखी होने के आवश्यकता नहीं। प्रभु तो हमारे मन मन्दिर में व्यापक है। स्वास स्वास में उनका स्मरण कर उनका साक्षात्कार करें।

ब्रह्म नगर यह मानव तन है, जाकी आसा देव करे।
ब्रह्म मिले इस नगरी माहीं, बात कही मैं सत् सत् रे।
चौरासी लाख योनियों अन्दर ब्रह्म ज्ञान न होय कहीं,
जैसे पुष्प हिमाचल ऊपर, होवे ना कब उत्पति रे।

देवता भी मनुष्य जन्म के इच्छुक रहते हैं, क्योंकि इस मनुष्य योनि में ही ब्रह्म ज्ञान की उपलब्धि हो सकती है। अगर मनुष्य इस मनुष्य योनि में जागृत न होकर विषय वासनाओं में फंसा रहेगा तो उसे चौरासी लाख योनियों में चक्र काटने पड़ेंगे।

काव्य कला- पूज्य स्वामी शान्तिप्रकाशजी काव्य कला के प्रति संलग्न नहीं है, फिर भी कुछ काव्य कलात्मक विशेषताएं इनके काव्य में है, वे मूलत: सन्त हैं और उनका भक्ति काव्य उनकी भक्ति साधना की उपज है। इनके काव्य में वर्ण मैत्री, वर्ण-संगति, छेकानुप्रास उपमालंकार, रूपक अलंकार मुहावरों आदि का श्लाघनीय प्रयोग हुआ है।

वर्ण मैत्री- जा पर तेरा हाथ बिराजे, लाज काज तिस संवरे साजे ।
सुख दुख रचना प्रभु की है हरि आज्ञा में रहिये ।
उलट सुलट कर सोहं जप लो...

यहां लाज काज, सुख-दुख, उलट-सुलट वर्ण मैत्री के उदाहरण है ।

वर्ण संगति- स्वास स्वास में सोहं रटकर यम के बंधन काट ले ।
मन में मोहन तन में मोहन नस नस में नंदलाल रे।
बंदा राम राम मुख बोल रे तेरा लागे कछु न मोल रे।

यहां स्वास स्वास, नस-नस, राम-राम वर्ण संगति के उदाहरण हैं।

छेकानुप्रास- काम क्रोध मद लोभ मोह पुनि मत्सर ममता माया।
कंचन कीर्ति काया कामिनि ये हैं शत्रु जन के ।
सोहं सोहं सुमरो साधो सुरति लगाकर स्वासन से।

उपर्युक्त काव्य- पंक्तियों में छेकानुप्रास का अच्छा प्रयोग हुआ है।

वृत्यानुप्रास- सुरति शब्द मिल पवन कला से अपने घर में आई।
आत्म काँक्षी आत्म के हित आत्म का अभ्यास करो।

यहां सुरति शब्द,मिल पवन, अपने घर, आत्म कांक्षी आत्म के,आत्मा का अभगयास वृत्यानुप्रास के उदाहरण हैं ।

उपमालंकार- सपने सम जग मिथ्या जानो,
मरु स्थल के सलिल समानो ।

यह जगत् स्वप्न एवं मरुस्थल के जल समान मिथ्या है ।

रूपक अलंकार- शान्ति वधु से भई सगाई ज्ञान पुत्र वर पाया।
तिस प्रतापे मुक्त भये हम, होया वंश विकासा।

शान्ति रूपी वधु से विवाह हुआ और जिससे ज्ञान रूपी पुत्र की प्राप्ति हुई और आत्मज्ञान के कारण मुक्ति की उपलब्धि हुई ।

धीरज रूपी नौका चढ़कर भवसागर से तरना ।

कवि धीरज रूपी नौका में चढ़कर संसार रूपी भवसागर से तरने का परमार्श देते हैं ।

सत्गुरु ने यहां जग में आकर, खोली बड़ी दुकान रे ।

सत्संग रूपी हाट निकाला तामें वस्तु नाना रे ।

कर्म, उपासना, योग समाधि, ज्ञान ध्यान विज्ञान रे ।

सत्गुरु ने संसार में सत्संग रूपी दुकान खोली है, जहां से कर्म, उपासना, योग समाधि, ध्यान ज्ञान विज्ञान रूपी वस्तुएं उपलब्ध हो सकती हैं ।

मुहावरे- चक्र शुरु से चलता रहता किस के पल्ले न पड़ना ।
दुख देख कर ना घबराना सुख में फूल न जाना ।

स्वामीजी के काव्य में शान्त रस प्रधान है। उनके काव्य में संगीतात्मकता है । भाषा सरल एवं सरस है ।

ॐ शान्ति

Published by
Swami Devprakashji Maharaj
President
Swami Teeonram Prem Prakash Ashram
Swami Shanti Prakash Marg, Sindhunagar - 421005

Printed by
ART SPOT (Ram Lalchandani)
at 212, Allied Industrial Estate, Mahim, Mumbai - 400 016.
Tel.: 66662315 Cell : 9323726436

डॉ. दयाल 'आशा' की कुछ कृतियाँ...

पुरस्कृत:

- सिन्धी कवियों की हिन्दी साधना
- बीसवीं शती के सिन्धी कवियों का हिन्दी में योगदान
- साहित्य सुरभि
- दादा जशन वासवाणी जीवन दर्शन
- बापूअ जे बाग मां
- श्री लालबहादुर शास्त्री
- शल अहिड़ा लाल ज़मन
- असीं सभ भारत जी संतान
- महकंदड़ मुखिड़ियू
- दादा दर्शन
- वतन सदके

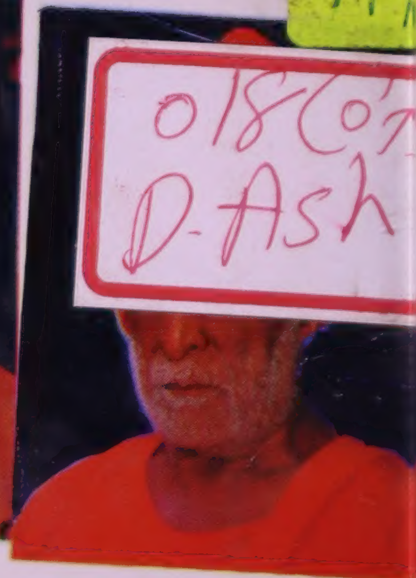
अन्य रचनाएँ :

- उपहार
- वंदना किशोर
- भारत के महापुरुष साधु वासवाणी
- स्वामी शान्तिप्रकाश जीवन दर्शन
- सिन्धी शेर जी तारीख़
- सिन्धी सन्त - काव्य विवेचन
- सिन्ध के सन्त
- भारत जा भक्त
- सिन्ध जा सन्त
- पुष्प पंखड़ियूं
- तख़युल
- ग़ाइ कवि तूं ग़ाइ
- वीहं सदीअ जो महान सन्त कवि साधु वासवाणी
- नई रोशनी
- अदबी सुरहाण

डॉ. दयाल 'आशा' की कुछ हिन्दी कृतियाँ

- सिन्ध के कबीर स्वामी टेऊँराम महाराज और उनकी परम्परा के अन्य कवी
- विश्व विख्यात संत दादा जशन वासवाणी
- जीवन चरित्र सिन्ध के महान संत साधू टी. एल. वासवाणी
- सिन्ध के संत
- वंदना के स्वर
- स्वामी शांती प्रकाश के जीवन की झांकियाँ
- दादा जशन वासवाणी जीवन झलकीयाँ
- परीगुंठित पुष्प





परम् पूज्नीय सत्गुरु स्वामी सर्वानंदजी महाराज
परम् पूज्नीय सत्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज
परम् पूज्नीय सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महा



परम् पूज्यनीय स्वामी शान्तिप्रकाशजी व
आदरणीय दादा जशन वासवाणीजी
आपस में प्यार बांटते ।



सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज,
सेवा में हैं स्वामी देव प्रकाशजी महाराज
व दयाल 'आशा'